LB:4:6
152H6-7
5331
Haridasvaidya
Chikitsachandroday

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

3084

LB'.4.6
152H6.7

5331

SHRI JAGADGURU VISHWARADHYA JNANAMANDIR
(LIBRARY)
JANGAMAWADIMATH, VARANASI

❁❁❁❁❁

Please return this volume on or before the date last stamped
Overdue volume will be charged 1/- per day.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Gr. 4

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

LB:4:6
162H0.7
1623

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 5331

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्वास्थ्यरक्षा और चिकित्सा-चन्द्रोदय के लेखक एवं नीतिशतक आदि अनेक
ग्रन्थों के अनुवादक हरिदास एण्ड कम्पनी के एक मात्र स्वत्वाधिकारी

बाबू हरिदास वैद्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आनन्दकन्द भगवान् कृष्णचन्द्र की असीम अनुकम्पा है, जो मैं सत्तरवीं साल में क़दम रखकर, अपने लिखे ग्रन्थ, चिकित्सा-चन्द्रोदय सातवें भाग पर स्वयं वक्तव्य लिख रहा हूँ। इष्टदेव जगदीश कृष्णकी कृपासे ही इस ग्रन्थके संस्करण-पर-संस्करण छपते जा रहे हैं। उनकी दयासे ही भारतकी सैन्ट-पर-सैन्ट जनताने इस ग्रन्थको जी-जानसे पसन्द किया है। आधी क़ीमत कई साल रहनेसे हज़ारों ग़रीबोंने भी इसे ख़रीदकर अपने घरोंमें रख लिया है। जिस घर और गाँवमें चिकित्सा-चन्द्रोदय है उस घर और ग्रामके लोग निरोग और सुखी रहते हैं। अकाल मृत्यु उनके पास भी नहीं फटकती। इच्छामय भगवान् कृष्णकी इच्छासे ही यह ग्रन्थ लिखा गया और उनकी इच्छासे ही इसका प्रचार घर-घरमें हो रहा है।

आजकल मेरा शरीर मेरे कहनेमें नहीं है। स्वास्थ्य गिरा रहता है, इसीसे काया जर्ज्जर हो गई है। और भी कितने ही झंझटोंसे दिल दुखी रहता है। मैं हर समय शान्तिकी खोजमें रहता हूँ, पर वह मुझे मिलती नहीं। मुझे उन गिरिवरधारी, कुञ्जविहारी, मुरलीमुकुटधारीका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही भरोसा है, उनकी जरा-सी भी दया होनेसे मेरे शोक-दुःख दूर होकर मुझे शान्ति मिलेगी।

मेरा बच्चा राजेन्द्र अभी बहुत छोटा नौ सालका है। उसे भी तकलीफ रहती है; इसीका मुझे बहुत रंज रहता है। मैं मुरलीधरसे उसके आरोग्यके लिए नित्य प्रार्थना करता हूँ, आशा है वह मुझे निराश नहीं करेंगे। आज रात है तो कभी सुप्रभात भी होगा।

मेरी सुपुत्री—दूसरी जहानआरा—इस कलिकालमें पिताकी सच्ची भक्ति करनेवाली—सौभाग्यवती चमेली देवी हर तरह सुयोग्य है, वही आज कई सालोंसे इस फर्मका कार्य सुचार रूपेण सञ्चालन करती है। वह नेक है, सती है, कर्त्तव्यपरायणा है, ग़रीबों और दुखियाओं पर दया करनेवाली है। सवेरे ही ग़रीब दुःखी स्त्रियोंकी तकलीफोंको सुनती है, उन्हें तसल्ली और तशफ्फी देती हुई उनके रोगोंका निदान करके अच्छी-से-अच्छी दवाएँ देती है। सैकड़ों अमीर-ग़रीब औरतें उसे आते जाते दिल खोलकर आशीर्वाद देती हैं। मैं चाहता हूँ, इस लड़कीका चरित्र सदा ऐसा ही रहे, इसकी सच्चरित्रता और पाकदामनीमें धब्बा न लगे। जो देखा है और देख रहा हूँ, उससे दृढ़ आशा होती है कि, वह मेरे नामको कायम रखेगी। इस फर्मको चलाती हुई, ग़रीब रोगियोंके रोग—दुःख दूर करेगी।

मुमकिन है, कभी यह सवाल उठे कि इस ग्रन्थके लेखक अपनी सन्तानों में क्यों चमेली देवी की ही भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे, क्यों उसे ही अपने कारोबार की कर्त्ताधर्त्ता या सञ्चालिका बना गये। इस जगत्में योग्योंका ही आदर होता है, लायक़ोंकी ही क़दर होती है, विश्वासयोग्योंका ही विश्वास किया जाता है, पिता अपनी सेवा-सुश्रूषा करनेवाली फर्मांबर्दार सन्तानको ही चाहता है। चमेली देवी को सर्वगुणसम्पन्ना पाकर ही मैं उसे सबसे अधिक चाहता हूँ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन् १९३८ में, शिलांगके एक भले आदमीपर मुझे आगरेकी जजीमें केस चलाना पड़ा, क्योंकि उसने चिकित्सा-चन्द्रोदयके तीसरे और चौथे भागका कुछ मैटर चुराकर, "आसामी तिलिस्मीराज़" या "ख़ज़ाने-ये करामात" नामकी पुस्तक लिखी। बहुत क्या, अन्तमें हज़रतको बिना शर्त्तकी माफ़ी माँगनी पड़ी। जज साहबने उनके ख़िलाफ़ मुझे डिग्री दी। आशा है, अब लोग इस केससे सबक सीखेंगे। बे फायदे मुक़दमेबाज़ीके झंझटमें पड़कर अपना धन बर्बाद न करेंगे। पराई पुस्तकोंका मसाला उड़ाकर पाँचवें सवार बननेवाले संसारके सामने लज्जित होते हैं और अन्तमें सुयोग्य न्यायप्रिय विद्वान् जजों द्वारा सज़ा पाते हैं। सत्य कभी छिपा या दबा नहीं रहता, वह कार्कको तरह कितना भी दबाये जानेपर पानीके ऊपर आता ही है।

मेरे जीवन के अन्त होने के बाद अगर किसी ने फिर चिकित्सा-चन्द्रोदय या स्वास्थ्यरक्षा का मैटर चुराया तो मेरी पुत्री चमेली देवी उस पर मुक़द्दमा चलाने की अधिकारिणी होगी। क्योंकि मेरे बाद मेरे लिखित और प्रकाशित ग्रन्थों के सर्वाधिकार उसी के पास रहेंगे।

आज मुझे समय नहीं है, क्योंकि इलाहाबाद जा रहा हूँ। हो सका, तो और किसी भागमें अपने मनकी शेष बातें लिखूँगा।

मथुरा
१०-९-१९४०

निवेदक—
हरिदास।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निवेदन।

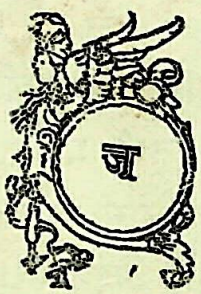

जगदाधार, जगदात्मा जगदीशको लाख-लाख धन्यवाद हैं कि, उनकी कृपा और अनुग्रहसे, हज़ारों विघ्न-बाधाओं और आधि-व्याधियोंके सामने आनेपर भी, "चिकित्सा-चन्द्रोदय"के छठे और सातवें भाग छपकर प्रकाशित हो गये।

"चिकित्सा-चन्द्रोदय"के सम्बन्धमें हमें आज कोई नई बात नहीं कहनी; जो पहले कह चुके हैं, वही आज भी कहना है। पर कही हुई बातको बारम्बार कहनेमें आनन्द नहीं, इसलिये हम दो-चार ज़रूरी बातें कहकर ही अपना निवेदन समाप्त करना चाहते हैं।

पाठक जानते हैं कि, "चिकित्सा-चन्द्रोदय" किसी अन्य भाषाके ग्रन्थका अविकल या छाया अनुवाद नहीं; किन्तु चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, बंगसेन, शार्ङ्गधर, चक्रदत्त, वृन्दविनोद, वैद्यजीवन, वैद्यविनोद, वैद्यरत्न, तिब्बे अकबरी, मुजर्ब्बात अकबरी, इलाजुलगुर्ब्बा प्रभृति कोई एक सौसे ऊपर वैद्यक और हिकमतकी किताबों तथा डाक्टर गन्ज फैमिली फ़ीज़ीशियन, डिज़ीज़ैज़ आव् दी नरवस सिष्टम और स्टैलवैगन्ज़ डिज़ीज़ैज़ आव् दी स्किन प्रभृति कितनी ही अँगरेज़ी पुस्तकोंका नवनीत है। उपरोक्त छोटे-बड़े ग्रन्थ हमें कई बार आद्योपान्त देखने और समझने पड़े हैं, तब यह वृहत्काय ग्रन्थ तैयार हुआ है। इस ग्रन्थके तैयार करनेमें हमें कितना परिश्रम करना पड़ा है, इसे वे ही जान सकते हैं, जिन्हें ऐसे कामोंका अनुभव है। जिनको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस कामका अनुभव नहीं, उनकी रायमें तो यह एक संग्रह-मात्र है। वास्तवमें यह संग्रह ही है भी; पर निरा संग्रह नहीं। इस संग्रहमें हमने अपने तन और मनको बेकाम कर दिया है; आँखोंसे कम दीखने लगा है, दिमाग़ बेकाम-सा हो गया है और उदर-रोगोंने हमें अपना शिकार बना लिया है। पर हमें इतनेसे ही प्रसन्नता है कि, हिन्दी-भाषा-भाषी जनताने इस ग्रन्थकी आशातीत क़दर की है। भिषक्श्रेष्ठ आयुर्वेद-केशरी श्रीमान् पण्डित रामेश्वरजी मिश्र वैद्यशास्त्री महोदय प्रभृति कतिपय विद्वानोंने कई पत्र-पत्रिकाओंमें इसकी प्रशंसा करके हमारा उत्साह बढ़ाया है। उनके सिवा भारतके और भी अनेकानेक आयुर्वेद आचार्य, वैद्यशास्त्री और वैद्यरत्न प्रभृति पदवीधारी वैद्यवरोंने प्रशंसात्मक और उत्साहवर्द्धक पत्र लिख-लिखकर हमें अपना आभारी बनाया है। वर्तमान, विश्वमित्र, माधुरी, सरस्वती, मनोरञ्जन, वैद्य, धन्वन्तरि, स्त्रीदर्पण, ब्राह्मण सर्वस्व और कर्त्तव्य प्रभृति पत्र-पत्रिकाओंके सम्पादक महोदयोंने इस ग्रन्थकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है और साधारण जनता भी इस ग्रन्थको हिन्दीमें, वैद्यक विषयपर, पहला और लाजवाब कहती और उसी तरह धड़ाधड़ ख़रीदती है, इसीसे हम अपने सब कष्ट और क्लेशोंको भूलकर दिलो-जानसे काम करते रहे। जिसका यह नतीजा है कि, दो-तीन सालके अर्सेमें ही कोई चार हज़ार पृष्ठोंका बड़ा पोथा तैयार हो गया। पाँच भाग पहले निकल चुके हैं, जिनमेंसे कइयोंके तो नवीन संस्करण भी हो गये। आज छठा और सातवाँ भाग तैयार है। पहलेके पाँच भागोंकी तरह अगर ये दो भाग भी हमारे क़दरदान और सहृदय पाठकोंके पसन्द आजायँगे और जनता इनसे लाभान्वित होगी, तो हमारा सारा परिश्रम सफल होगा और हमारी प्रसन्नताकी सीमा न रहेगी।

हम लिख आये हैं कि, आजकल हमारी दृष्टि अत्यन्त कमज़ोर हो गई है; अतः यदि इन दोनों भागोंमें प्रूफ-संशोधन सम्बन्धी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भूलें रह गई हों, तो पाठक हमें दयाकर क्षमा करें, क्योंकि हमें रोगपीड़ित होनेके कारण, अनेक बार प्रूफ दूसरोंसे दिखाने पड़े हैं। जो प्रूफ-रीडर मिले, वह वैद्य न थे और जो वैद्य थे वे हिन्दी लिखना न जानते थे। इससे हमें इन दो भागोंमें बड़ी-बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा है। फिर भी हमने पं० गुरुदयालजी शर्मा वैद्य-शास्त्री, अलवर निवासी, से इस ग्रन्थका रिवीज़न करा लिया है। वैद्यशास्त्रीजीने जो भूलें निकालीं, उनको शुद्धाशुद्ध पत्रके रूपमें छपवा-कर हमने पुस्तकके अन्तमें लगवा दिया है। यों तो हमने आज तक ऐसी एक भी पुस्तक न देखी जिसमें कमोबेश भूलें न हों, फिर भी हमें अपने ग्रन्थकी भूलोंके लिये दुःख है। इतना ही अच्छा है कि, जो भूलें वैद्यशास्त्रीजीने निकाली हैं, उनसे पाठकोंकी कोई विशेष हानि नहीं। क्योंकि उनमेंसे चौदह आने भूलें एकार-ऊकार प्रभृति मात्राओंके टूट जानेसे हुई हैं। वास्तविक भूलें बहुत ही कम नज़र आई हैं। फिर भी; जिन ग़लतियोंको हम और वैद्यशास्त्रीजी दोनों ही न समझे हों उनके लिये विद्वान् पाठक हमें क्षमा प्रदान करें और उन्हें कृपया हमारे पास लिख भेजें। हम बिना किसी तरहके पशोपेश और हठके आगामी संस्करणमें उन्हें सुधार देंगे और भूल बतानेवाले सज्जनोंके यावज्जीवन आभारी रहेंगे।

पाँचवें भागके निवेदनमें हमने अपने प्रेमी पाठकोंसे कहा था कि, हम समय पाकर उनकी सेवामें एक ऐसी पुस्तक भेजेंगे, जिसमें इस ग्रन्थकी त्रुटियों और भूलोंका सुधार या संशोधन होगा और जो बातें अच्छी तरह समझानेपर भी खूब खोलकर न समझाई गई होंगी, उनको उसमें और भी अच्छी तरह समझा देंगे। उस पुस्तकके लिये हमें अनेक पाठक तंग करते हैं। उनसे विनीत प्रार्थना है कि, वे धैर्य्य धारण करें। पुस्तक ऐसी चीज़ नहीं, जो जिस-तिससे लिखवाकर भेज दी जाय। जब हमारा स्वास्थ्य ठीक होगा, हमें समय मिलेगा, हम स्वयं अपना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वादा पूरा करनेकी कोशिश करेंगे। बिना आरोग्य लाभ किये, अब इस काममें लगना मौतको बुलाना है। अतः मेहरबान लोग अब कार्ड और चिट्ठियाँ लिख-लिखकर हमें और तंग न करें। ऐसी फालतू बातोंमें दोनों तरफका समय वृथा नष्ट होता है।

इन दोनों भागोंमें, हमने मौक़े-मौक़ेसे सादा और रंगीन हाफटोन चित्र भी लगा दिये हैं। यों तो और भी वैद्यक-ग्रन्थोंमें चित्र हैं, पर इतने और ऐसे क़ीमती चित्र अँगरेज़ी पुस्तकोंके सिवा भारतीय भाषाओंकी वैद्यक-पुस्तकोंमें नहीं के समान हैं। इन चित्रोंके लिए हमें बड़ी तक-लीफें उठानी पड़ी हैं और रुपया भी खूब ख़र्च हुआ है। इन्हीं वजूहातोंसे गत सितम्बरमें निकलनेवाला ग्रन्थ जनवरीमें निकला है। आशा है, इन चित्रोंसे वैद्यक-विद्या सीखनेवालोंको बहुत कुछ मदद मिलेगी।

छठे भागमें हमने खाँसी, ज़ुकाम, श्वास और रक्तपित्त प्रभृति आठ-दस रोगोंकी ही चिकित्सा लिखी है, पर जो लिखी है वह अपनी भरसक विस्तारसे लिखी है। एक खाँसीकी चिकित्सा ही प्रायः १००।१२५ सफोंमें शेष हुई है। सातवें भागमें बाक़ी रहे हुए प्रायः सभी रोगोंकी चिकित्सा लिख दी है। उम्मीद है, अब सज्जनोंको शिकायत न करनी पड़ेगी। क्योंकि कोई साहब लिखते थे, इस भागमें अमुक रोगकी चिकित्सा नहीं है; कोई लिखते थे, अगले भागमें वात-व्याधियोंपर अवश्य लिखिये। सिन्ध-मीरपुर ख़ासके एक ऐसिस्टैण्ट इञ्जीनियर साहबने हमें लिखा था कि, आपका ग्रन्थ मैं आद्योपान्त पढ़ गया। ग्रन्थ हर तरहसे उत्तम और उपादेय है। ऐसा ग्रन्थ हिन्दीमें अब तक और नहीं देखा, पर आपके ग्रन्थमें नेत्र-रोग चिकित्साका न होना भारी त्रुटि है। इञ्जीनियर साहबकी बातका हमारे दिलपर बड़ा असर हुआ। सच तो यह है, उनकी बात हमारे दिलमें चुभ गई, इसीसे हमने इस भागमें आँख, कान, नाक और मुँह प्रभृति सभी अङ्गोंसे सम्बन्ध रखनेवाले रोगोंपर विस्तारसे लिखा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर भी प्लेग प्रभृति कई जनपद-विध्वंसकारी रोगोंपर हम न लिख सके, इसका हमें सख्त अफ़सोस है। यदि परमात्माकी इच्छा हुई, तो आठवें भागमें हम प्लेग और क्षय वग़ैरःपर विस्तारसे लिखेंगे।

बहुतसे पाठक हमारा ध्यान निघण्टुकी ओर खींचते हैं। हमें स्वयं मालूम है कि, हिन्दीमें जैसा चाहिये वैसा एक भी निघण्टु नहीं। जो निघण्टु अब तक निकले हैं, उनमें बड़ी भारी कमी है। निघण्टु ऐसा होना चाहिये, जिसमें प्रत्येक वनौषधिका सादा या रंगीन चित्र हो, जिसके देखने-मात्रसे अनजान भी जड़ी-बूटी या रूखड़ियोंको पहचान ले। साथ ही औषधियोंके ज़ियादा-से-ज़ियादा विवरण और उनके अनेकानेक प्रयोग हों। पर ऐसे निघण्टुका तैयार करना और छपाना खेल नहीं है। इसमें घोर परिश्रम और प्रायः पचास हज़ार रुपयोंके ख़र्चकी दरकार है। यदि हमारी ज़िन्दगी रही, तो हम ऐसा निघण्टु ज़रूर निकालेंगे, क्योंकि ऐसे निघण्टु बिना आयुर्वेदकी सच्ची उन्नति हो ही नहीं सकती। आजकलके नामी-मामी आयुर्वेद-आचार्य्य भी सभी वनौषधियोंको नहीं पहचानते। पहचानते हैं उन्हें ही, जिनका रोज़मर्रह काम पड़ता रहता है। इससे आयुर्वेदकी भारी क्षति हो रही है। पर ऐसे सर्व्वाङ्ग-सुन्दर निघण्टुकी तैयारीमें सबसे बड़ा काम धनका है, किन्तु हम धनकी भिक्षा माँगना नहीं चाहते, चन्दा कराना नहीं चाहते; सिर्फ़ इतनी ही कृपा चाहते हैं कि, हमारे क़दरदान और प्रेमी पाठक जब इस ग्रन्थको स्वयं ख़रीद-ख़रीदकर हमारा उत्साह बढ़ा रहे हैं, तब अपने मित्रों और रिश्तेदारोंको भी इस ग्रन्थकी एक-एक सेट ख़रीदनेपर आमादः करें। बस, इतनेसे ही रुपयोंका सवाल हल हो जायगा और वह निघण्टु, जिसकी भारतको सबसे अधिक ज़रूरत है, जिसके बिना आयुर्वेदकी उन्नति हो नहीं सकती और जो अब तकके निघण्टुओंमें सबसे बढ़-चढ़कर होगा, तैयार होकर पाठकोंकी सेवामें पहुँच जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमने इस ग्रन्थके पहले भाग और पीछेके भागोंमें दवाएँ बनाने और सेवन करने वग़ैरःके नियम अच्छी तरह समझा-समझाकर लिख दिये हैं, पर अनेक पाठक उन नियमोंको नहीं देखते और हमें लिखते हैं, आपने अमुक नुसख़ेमें दवाओंकी तोल नहीं लिखी, फलाँ नुसख़ेमें मात्रा नहीं लिखी इत्यादि । पाठकोंको चाहिये कि, उन नियमोंको कण्ठस्थ कर लें, हर नुसख़ेमें तोल और मात्रा लिखना बड़ा कठिन काम है। इसीसे पहलेके ग्रन्थकार भी ऐसा नहीं कर सके। फिर भी हमने तो, जहाँ तक बन पड़ा है, हरेक बात खोल-खोलकर हर जगह स्पष्ट लिख दी है। पाठकोंके विशेष सुभीतेके लिए, छठे भागके अन्तमें भी ऐसे नियम फिरसे रूप बदलकर लिख दिये हैं। उनमें कितनी ही नई बातें भी आ गई हैं। आशा है, पाठकोंको अब उतना कष्ट न होगा।

हमने इस ग्रन्थमें परीक्षित, सुपरीक्षित, पराये परीक्षित और अपरीक्षित चार तरहके नुसख़े लिखे हैं । पहलेके पाँच भागोंमें तीन ही तरहके नुसख़े लिखे हैं, पर इन दो भागोंमें "पराये परीक्षित" और अधिक लिखे हैं। पराये परीक्षित नुसख़े भी हमारे परीक्षित और सुपरीक्षित नुसख़ोंकी तरह ही विश्वासयोग्य हैं। इन दस-पाँच सालोंमें जो नुसख़े वैद्य-हकीमोंने आज़मा-आज़माकर कहीं छपाये हैं, वे ही पराये परीक्षित हैं। हमारे लिखे अपरीक्षित नुसख़े भी बेकाम नहीं हैं; वे ग्रन्थका कलेवर-मात्र बढ़ानेके लिए ही नहीं लिखे गये हैं । जिन्हें हमने उपयोगी और तत्काल फलप्रद समझा है, उन्हें ही अपने ग्रन्थमें स्थान दिया है, अतः समय पड़ेपर पाठक उनसे भी काम लें। बड़ी खुशीकी बात है कि, अनेक पाठकोंने हमारे परीक्षित नुसख़े आज़मा-आज़माकर हमें लिखा है,—"आपके परीक्षित नुसख़े वास्तवमें रामबाण हैं।" लेकिन बहुत बार ऐसा होता है कि, परीक्षित नुसख़ा काम नहीं करता और अपरीक्षित तीरे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हद्‌फका काम कर जाता है। क्योंकि कोई एक नुसख़ा सभी रोगियोंको आराम नहीं कर सकता। अगर ऐसा होता तो ऋषि-मुनि एक-एक रोगपर हज़ार-हज़ार नुसख़े न लिखते। अनेक बार देखते हैं, जो दवा दस मरीज़ोंको फ़ायदा करती है, ग्यारहवेंको उससे कुछ भी लाभ नहीं होता। बाज़-बाज़ औक़ात वही मुजर्रब नुसख़ा, मिज़ाजके ख़िलाफ़ होनेसे, उल्टा नुक़सान करता है। यही वजह है कि, जो लोग आजकलके विज्ञापन-दाताओंकी सौ-सौ रोगोंकी एक-एक दवा ख़रीदकर सेवन करते हैं, वे अपना धन और स्वास्थ्य दोनों नष्ट करते हैं। ऐसी दवाओंसे कदाचित एक रोग आराम हो भी जाता है, तो और चार भयङ्कर रोग तत्काल या देरसे पैदा हो जाते हैं।

देशके धनी सज्जनोंसे भी हमारी प्रार्थना है कि, वे अपने दानमें इस "चिकित्सा-चन्द्रोदय"को अवश्य रखें, क्योंकि और दानोंसे उतना लाभ नहीं, जितना इससे है। इस ग्रन्थकी एक-एक प्रति भी यदि एक-एक गाँवमें पहुँच जायगी, तो जिन गँवई-गाँवोंमें अच्छे-अच्छे वैद्य-हकीम गूलरके फूलके समान हैं, वहाँ कितने प्राणी असमयकी मृत्युसे बचेंगे, कितने निराधार जीविका विहीन प्राणियोंके कुटुम्बोंकी गुज़र होने लगेगी, यह हम लिखकर नहीं बता सकते; ज़रा-सी भी अक़्ल रखनेवाला इस बातको समझ सकता है। यह ग्रन्थ अतीव सरल हिन्दीमें है। थोड़ी-सी हिन्दी-मात्र जाननेवाला भी इसे समझकर काम कर सकता है। जो लोग संस्कृत नहीं जानते, वे इसे पढ़कर निश्चय ही अच्छी चिकित्सा कर सकेंगे। जिन लोगोंका ख़याल है कि, संस्कृत जाने बिना कोई अच्छा चिकित्सक नहीं हो सकता, वे भूल करते हैं। जो अरबी, फ़ारसी, जापानी, अँगरेज़ी, फ्रेंच और जर्मन प्रभृति भाषाएँ सीखकर चिकित्सा-कर्म करते हैं, क्या वे संस्कृतज्ञ पण्डितोंसे कम दर्जेके हैं? चिकित्सा-विद्या किसी भी भाषामें सीखी जाय, बराबर काम देगी, पर सीखनी चाहिये अच्छी तरहसे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शेषमें हम कानपुरके भिषक्चूड़ामणि आयुर्वेद-केशरी पण्डितवर रामेश्वरजी मिश्र वैद्यशास्त्री, इटावेके पण्डितवर ब्रह्मदेवजी शर्म्मा शास्त्री, वर्त्तमान सम्पादक पण्डित रमाशंकरजी अवस्थी, वैद्य सम्पादक बाबू शङ्करलालजी, धन्वन्तरि सम्पादक बाबू बाँकेलालजी और विश्वमित्र सम्पादक बाबू मूलचन्दजी बी० ए० को हार्दिक धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने हमारा उत्साह खूब बढ़ाया है। इन सज्जनोंके सिवाय, हम उन सभी पत्र-सम्पादकोंको भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने इस ग्रन्थकी प्रसिद्धिमें हमें दिल खोलकर सहायता दी है। हम अपने उन भाइयोंको भी हृदयसे धन्यवाद देते हैं, जिनको स्वभावसे ही परछिद्रान्वेषणका मर्ज़ है। क्योंकि उन्होंने, हमारी पुस्तकके त्रुटियोंका ख़ज़ाना होनेपर भी, कदाचित हमारा दिल टूट जानेके ख़यालसे ही, हमारे मामलेमें अपने स्वभावका परिचय नहीं दिया है। उन्होंने चुप्पी साधकर भी हमपर कम कृपा नहीं की है। दोष निकालनेवाले तो रामचन्द्र और कृष्ण भगवान्में भी दोष निकालते हैं, फिर हम तो चीज़ ही क्या हैं? ऐसी कौनसी पुस्तक है, जिसमें कमोबेश दोष नहीं हैं और ऐसा कौनसा काम है जिसमें ऐबजोई करनेवाले ऐब नहीं निकाल सकते? अन्तमें हम अपने ग्रन्थके ख़रीदारोंको भी तहेदिलसे शुक्रिया अदा करते हैं, क्योंकि उनकी कृपा और क़दरदानीके बिना तो हम एक क़दम भी आगे चल नहीं सकते। अब तक हमारे मिहरबान सज्जनोंने इस ग्रन्थको ख़रीदकर हमारा उत्साह खूब बढ़ाया है, आशा है, भविष्यमें वे अपनी कृपाकी मात्रा और भी ज़ियादा बढ़ायेंगे।

विनीत—

हरिदास।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रत्येक मनुष्यको आयुर्वेद पढ़ना परमावश्यक है।

आयुर्वेद न पढ़ना पाप है।

इस जगत्में ऐसा कोई विरला ही प्राणी होगा, जो दीर्घायु और आरोग्यता न चाहता हो। इन्हें चाहते सब हैं, पर ये दोनों अमूल्य पदार्थ कैसे मिल सकते हैं, इसे बहुत कम लोग जानते और जाननेकी चेष्टा करते हैं। एक ज़माना था, जब भारतवासी "धर्मार्थ काममोक्षाणां आरोग्यं मूल कारणं" इस महामन्त्रको सब मन्त्रोंसे अधिक समझते थे; जिस विद्याके पढ़नेसे शरीर सदा नीरोग रह सकता है, रोग हमले कर नहीं सकते और अकाल मृत्यु हज़ारों कोस दूर भागती है, उसे पढ़ना और उसपर अमल करना अपना परम कर्त्तव्य समझते थे। इसीसे वे हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ट रहते थे, सौ सवासौ बरसकी पूर्णायु भोगते थे और आधिव्याधि उन्हें बहुत ही कम सताती थीं। पर आजकल उस समयके विपरीत हो रहा है। इस समयके लोग उस विद्याको जो कल्पवृक्षके समान मन-चाहे फल देनेवाली, लोक-परलोक बनानेवाली और परमपद या मोक्ष दिलानेवाली है नहीं पढ़ते। वे ही पढ़ते हैं, जो उससे अपनी रोज़ी चलाते हैं। इसीका नतीजा है कि, लोग आजकल सदा रोगग्रस्त, मन मलीन और तन क्षीण रहते हैं। २०।२५ सालकी उम्रमें ही उनके बाल सफेद होने लगते, दाँत गिरने लगते, आँखोंकी ज्योति मारी जाती और शरीरकी आधारस्तम्भ धातुएँ क्षय होने लगती हैं। अन्तमें वे उस उम्रमें ही जो उनके फलने-फूलने और अपने-पराये लिये कुछ कर गुज़रनेकी होती है, अपने प्यारोंको रोता-विलपता छोड़कर यम-सदनके राही होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो शख्स इस बातको जानता है कि मैं कुएँमें गिरनेसे मर जाऊँगा, अगाध अलमें घुसनेसे डूब जाऊँगा और जलती आगमें पैठनेसे जल जाऊँगा, वह नदी, कूप और अग्निमें अपने प्राण हरगिज़ न गँवायेगा; पर जो इस बातको न जानता होगा, वह इनमें अपने प्राण गँवा सकता है। बालक सर्पको खिलौना समझकर पकड़ ले सकता है, पर जानकार सयाना आदमी साँपके फनपर हरगिज़ हाथ न डालेगा। जो इस बातको जानता है कि, दूध और मछली संयोग-विरुद्ध पदार्थ हैं, इनको एक साथ खानेसे कोढ़ आदि भयंकर रोग हो जायँगे, वह इन्हें एक साथ कभी न खायेगा; पर जो इस बातको जानता ही न होगा, वह इन्हें एक साथ खायेगा और कोढ़ जैसे घृणित रोगका शिकार होगा। जो इस बातको जानता है कि, मल-मूत्रादिके वेगोंके रोकने और अपने बल-बूतेसे अधिक परिश्रम करने अथवा अतीव स्त्री-प्रसंग करनेसे राजयक्ष्मा या क्षय-रोग हो जाता है, वह इन कामोंसे अवश्य बचेगा; पर जो इन बातोंको जानता ही न होगा, वह इन सबको करेगा और क्षय जैसे मूजी रोगके पञ्जेमें फँसेगा। मतलब यह है कि, अज्ञानतासे ही मनुष्य मिथ्या आहार-विहार सेवन करता और रोगोंको न्योता देकर जल्दी ही—बिना समय आये इस दुनियासे कूच कर जाता है। अतः इन बातोंको जानना प्रत्येक मनुष्यका पहला कर्त्तव्य है।

आजकलके लोग समझते हैं कि, हमें इन बातोंके जाननेकी क्या जरूरत है? हम धनी हैं, यदि कोई रोग हमें हो भी जायगा, तो वैद्य-डाक्टर हमारे रुपयेके बलसे हमें अच्छा कर देंगे। पर यह बड़ी भारी भूल और नादानी है। इस तरह हरेक आदमी अपने तईं परतन्त्रताकी बेड़ियोंमें जकड़ता है। गोस्वामी तुलसीदासजीने बहुत ही ठीक कहा है—"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।" अर्थात् पराधीनको सपनेमें भी सुख नहीं। संसारके सभी दुःख पराधीनताके सामने तुच्छ हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पराधीनता सब दुःख और क्लेशोंकी जननी है। पशु-पक्षी भी आज़ादीकी क़ीमत समझते हैं। वे भी पराधीन रहना पसन्द नहीं करते। फिर मनुष्य होकर परतन्त्र रहना कैसी भद्दी बात है! जिनका शरीर परतन्त्र है वे अगर सुखी हैं तो दुखिया कौन है? आजकल सौमें नव्वे आदमियोंके शरीर वैद्य-डाक्टरोंके अधीन हैं। बहुत कम लोग ऐसे होंगे, जो नित्यप्रति चिकित्सकोंकी ताबेदारी न बजाते हों। दिन निकलते ही वैद्य या डाक्टरोंके घर पहुँचना, उनके मुँहकी तरफ ताकना, तरह-तरहकी लल्लोचप्पो और ख़ुशामदें करना, बड़ी ही दीनता और आजिज़ीसे कहना—आप दूसरे परमेश्वर हैं, आप प्राणदाता हैं, आपने हज़ारोंकी जानें बचाई हैं, आपके हाथमें अमृत है, आप इस युगके लुकमान या धन्वन्तरि हैं, आशा है, आप इस सेवकको भी प्राणदान देकर चिरकृतज्ञ बना लेंगे; वग़ैरः-वग़ैरः बातें कह-कहकर ख़ुशामद करना आजकलके आदमियोंका नित्य कर्म है। पहले ज़मानेके लोग सदा नीरोग रहते थे। उन्हें जीवनमें कभी ही चिकित्सकोंका मुँह देखना पड़ता था। वे सवेरे उठते ही परमात्माकी स्तुति करते और उससे फ़ारिग़ होकर कुछ पौष्टिक पदार्थ खाते थे; पर आजकलके लोग सवेरे ही वैद्य-डाक्टरोंकी स्तुति करते और कड़वी-कषैली यहाँ तक कि धर्म-ईमान खोनेवाली मदिरा मिश्रित दवाएँ तक गटकते हैं। कितने ही जन्मरोगी तो दवा खाने और चिकित्सकोंकी ग़ुलामी करनेमें ही सारी उम्र व्यतीत कर देते हैं। बहुत-से अमीरोंकी ज़िन्दगीकी नाव दवाओंके बलसे ही चलती है। वैद्य-डाक्टर उनकी जीवनरूपी नौकाके केवट हैं। क्या ऐसे लोगोंको कोई स्वतन्त्र कहनेका साहस कर सकता है? ऐसे लोगोंकी हालतपर तरस आता है।

भाइयो! जिस शरीरके तुम खुद मालिक हो, जो तुम्हारा अपना शरीर है, जिस शरीरपर तुम्हारा पूरा आधिपत्य है, दुःखकी बात है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कि, वही तुम्हारा शरीर आज तुम्हारा नहीं। आज उस शरीरपर रोगोंने, दवाओंने और चिकित्सकोंने अपना पूरा आधिपत्य जमा रखा है। उस शरीरको अपना कहना महज़ नादानी और हँसीकी बात है। जिस शरीरपर रोग, दवा और चिकित्सक हावी हैं, वह निश्चय ही परतन्त्र है।

आजकल बहुत कम लोग होंगे, जिन्हें मन्दाग्नि, धातुरोग और प्रमेह प्रभृतिमेंसे किसी न किसी रोगकी शिकायत न हो। देखना चाहिये कि, ये रोग क्यों होते हैं; क्योंकि बिना किसी कारणके तो कोई काम होता ही नहीं। मालूम होता है, इन सब रोगोंकी जड़ रोगीकी अज्ञानता है। जो आयुर्वेदको न जाननेसे अज्ञानी हैं, वे ही बारम्बार रोगोंके चंगुलोंमें फँसते हैं। रोग-पीड़ित होते ही दान-दक्षिणा लेकर वैद्यजीकी शरणमें जाते हैं। वैद्यजी दवा-दारू खिलाकर उनके रोगको समूल नाश कर सकते हैं, पर उसके पुनः-पुनः आक्रमण करनेको नहीं रोक सकते। क्योंकि वे अज्ञानतावश फिर मिथ्या आहार-विहार सेवन करेंगे और रोग फिर होगा ही। रोगको रोकना उनका अपना काम है—वैद्यजीका नहीं। वैद्य शब्द "विद्" धातुसे बना है, उसका अर्थ 'जानना' है। जो जाननेवाला है वही वैद्य है। मतलब यह है कि, जो आयु और आरोग्यताके तत्त्वोंको जानता है, वही वैद्य है। प्रत्येक मनुष्यको अपनी आयु और शरीरकी रक्षा एवं नीरोग रहनेके लिए वैद्य बनना ज़रूरी है। क्योंकि यह काम वैद्यका नहीं—प्रत्येक मनुष्यका है। यह ज़रूरी नहीं है कि, हरेक आदमी दवाख़ाना, औषधालय या फार्मेसी खोले; चूर्ण, गोली, अवलेह, आसव और रसोंको तैयार रखे; खुद दवाएँ सेवन करे और लोगोंको सेवन करावे। हमारा मतलब यह है कि, हर शख़्स वैद्य या आयु सम्बन्धी विद्याका जानकार बने और वैद्य या जानकार होनेके कारण ऐसे उपाय करे, जिनसे रोग पैदा ही न हों, क्योंकि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दवा सेवन करनेसे रोगकी उत्पत्तिको रोकना अच्छा है। किसीने कहा है:—"एक औन्स रोगकी रुकावट एक पौण्ड इलाजसे बेहतर है।"

मगर जो रोगके रोकनेकी विधियाँ जानता होगा, वही रोगको रोक सकेगा, अतः प्रत्येक मनुष्यको आयुर्वेद पढ़ना और वैद्य बनना जरूरी है। डाक्टर गन महोदयने बहुत ही ठीक कहा है—"Obedience to the Laws of Health should be made a matter of individual and personal duty. It is therefore, every individual's duty to study the laws of his being, and to conform to them Ignorance, or inattention on this subject, is sin." तन्दुरुस्तीके उसूल-ए-क़वानीनकी इताअत या फ़रमाँबर्दारी करना—स्वास्थ्यरक्षा सम्बन्धी नियमों और विधानों के अधीन रहना, हरेक मनुष्यका अपना निजी धर्म, कर्त्तव्य और फ़र्ज़ होना चाहिये; अर्थात् प्रत्येक मनुष्यका कर्त्तव्य-धर्म है कि, वह स्वास्थ्यरक्षा सम्बन्धी विधानोंके अनुसार चले। अतः प्रत्येक मनुष्यका कर्त्तव्य है कि, वह अपनी सत्ता या हस्तीके नियम और क़ानूनोंको अध्ययन और मनन करे, उनका पाबन्द रहे; क़दम-क़दमपर उनके मुताबिक़ चले; उनके ख़िलाफ़ कोई काम न करे। इस विषयसे अनजान रहना या इसपर ध्यान न देना "गुनाह और पाप" है। मतलब यह है कि, हर मनुष्यको चाहे वह पुरुष हो या स्त्री स्वास्थ्यरक्षा सम्बन्धी नियमोंका पाबन्द रहना चाहिये। उन नियमोंके विरुद्ध कोई भी काम न करना चाहिये। पर जो स्वास्थ्यरक्षाके नियमोंको जानेगा, वही उनका पाबन्द रहेगा, उनके अनुसार चलेगा। जो उन्हें जानता ही नहीं, वह उनके अनुसार कैसे चल सकेगा? इसीसे डाक्टर साहब मज़कूर फरमाते हैं कि, जिस तरह उन नियमोंको मानना प्रत्येक मनुष्यका धर्म या फ़र्ज़ है; उसी तरह जिस शास्त्रमें वे लिखे हैं उसको पढ़ना, समझना और तदनुसार चलना भी प्रत्येक मनुष्यका कर्त्तव्य है। "उस शास्त्रको न पढ़ना या उस तरफ ध्यान न देना पाप है।" कहिये पाठक, अब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तो आँखें खुलीं। हमारे ऋषि-मुनि ही आयुर्वेदका अध्ययन करना मनुष्य-मात्रका धर्म नहीं ठहराते; बल्कि वे पाश्चात्य विद्वान् भी, जिनकी मति-गतिका अनुकरण करना आजकलके अधिकांश भारत-वासी अपना कर्त्तव्य समझते हैं, आयुर्वेदके अध्ययनकी इस ज़ोरसे राय देते हैं और इस शास्त्रसे कोरे रहनेको घोर पातक कहते हैं।

हमारे ऋषि-मुनियोंने यद्यपि वेदके मन्त्र-भागको शूद्रोंको पढ़ानेकी आज्ञा नहीं दी है, तथापि आयुर्वेदके पढ़ानेकी खुली आज्ञा दी है। क्योंकि यह ही शास्त्र ऐसा है, जिससे मनुष्य-मात्रका सम्बन्ध है। इस शास्त्रके जाने बिना, मनुष्यका इस जगत्में अस्तित्व ही दुःख-पूर्ण है, उसे क्षण-भर भी सुख नहीं। प्रत्येक मनुष्य इसे पढ़े-समझे, इसी लिये महात्माओंने इसकी तारीफ भी खूब की है। उनका कहना है—"जो आयुर्वेदकी युक्तियोंके अनुसार चलते हैं, उनको रोग नहीं होते. बल्कि आयुकी वृद्धि होती है। इस विद्यासे कहीं धन मिलता है, कहीं दोस्ती होती है, कहीं धर्म होता है, कहीं यश मिलता है और कहीं काम करनेसे अभ्यास ही बढ़ता है। और विद्याएँ कदाचित फल न दें, उनसे कोई लाभ न हो, पर इससे तो हर मनुष्यको कोई न कोई लाभ हुए विना नहीं रहता। और कुछ भी नहीं, तो पढ़नेवालेका स्वास्थ्य तो सदा अच्छा रहता ही है।" यह क्या कम लाभ है? हमारे शास्त्रोंमें जितने सुख कहे हैं उनमें "निरोगता" को प्रधान सुख माना है। धनसे सुख और दुःख दोनों मिलते हैं। सच पूछो तो धनमें दुःख ही अधिक है। धनके अर्ज्जन, रक्षण और नाश तीनों अवस्थाओंमें ही घोर क्लेश और चिन्ता है। जिसमें सुखकी अपेक्षा दुःखकी मात्रा अधिक है, उसके लिए तो लोग जान देते और सारी उम्र पागल बने रहते हैं; पर जिस शरीरके सुखी करनेके लिए धन कमाया जाता है उस शरीरके सुखी और नीरोग रखनेवाली विद्याकी ओर लोग क़तई ध्यान नहीं देते, यह कैसी अज्ञानता, मूर्खता और नादानी है!

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आजके पाँच-सात साल पहले लोग शिकायत किया करते थे कि, हिन्दीमें आयुर्वेद-ग्रन्थ नहीं हैं। हम लोग संस्कृत जानते नहीं, फिर उसे पढ़ें कैसे? अनेक संस्कृत-ग्रन्थोंका हिन्दी अनुवाद भी हो गया है, पर उसका होना न होना समान है, क्योंकि उस अनुवादके समझने योग्य बुद्धि हममें नहीं। उसके समझनेके लिए खासे पाण्डित्यकी जरूरत है। इसके सिवा, उन ग्रन्थोंके पढ़नेमें आनन्द नहीं आता, दिल घबरा और ऊब उठता है। पब्लिककी यह शिकायत बारम्बार हमारे कानों तक पहुँचनेसे ही, उतनी योग्यता और विद्वत्ता न होनेपर भी, हमने बौनेके चाँद छूनेके प्रयासकी तरह, साहस किया। परमात्माकी दयासे, हमें सफलता भी मिली जान पड़ती है। क्योंकि देशके अनेक विद्वान् और साधारण जनता कहती है कि, "चिकित्सा-चन्द्रोदय"की भाषा उपन्यासोंकी-सी है, अतः उसके पढ़नेमें खूब मन लगता और जी नहीं ऊबता वग़ैरः-वग़ैरः। जब जनताके मनलायक चीज तैयार हो गई है, तब प्रत्येक हिन्दी-भाषा-भाषीका कर्त्तव्य है कि, अब वह इस ग्रन्थको आद्योपान्त पढ़े-समझे और अपना-पराया भला करे। इतना ही नहीं, प्रत्येक जानकारको चाहिये कि, वह अपने मित्रों और रिश्तेदारोंसे इसके पढ़नेकी ज़ोरोंसे सिफ़ारिश करे। अमीर-उमराओं, सेठ-साहूकारों एवं राजा-महाराजा और ज़मीन्दारोंसे मिलनेवालों, उनको सलाह-सूत देनेवालों और उनके प्राइवेट सेक्रेटरियोंको—यदि उन्हें देश और देशकी विद्यासे कुछ भी प्रेम है तो—चाहिये कि, उन्हें समझा-बुझाकर इस ग्रन्थकी दस-दस, पाँच-पाँच और सौ-सौ प्रतियाँ ग़रीब और निस्सहाय विद्यार्थियोंको मुफ्त बँटवावें। सोचिये तो सही, जब प्रत्येक मनुष्य इस ग्रन्थका पाठ नियम-पूर्व्वक करेगा, तब हमारे देशकी क्या हालत हो जायगी। आजकलकी तरह रोगोंकी भरमार न रहेगी, लोग हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ट होंगे, छोटी उम्रमें ही मौतके निवाले या कालके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कौर न होंगे, डाक्टरी दवाओंके लिए धन नष्ट न करना होगा और करोड़ों रुपया इस देशसे सात समन्दर चौदह नदियों पार जानेसे बचेगा; यहाँका धन यहीं रहेगा। हमने इस ग्रन्थकी रचना यही सब समझकर की है। खासकर इसी गरजसे, आँखोंकी ज्योति मारी जाने और शरीरमें बल न होनेपर भी, बुढ़ापेमें घोर कष्ट उठाया है। लोग इसमें हमारा स्वार्थ समझेंगे और हमारी बातोंपर हँसेंगे भी। हम उनकी बातको झूठी नहीं कहते, निस्सन्देह इस ग्रन्थकी आयके एक अंशसे हमारी और हमारे आश्रितोंकी गुजर होती है। हम जब रात-दिन इसी काममें लगे रहते हैं और किसी तरहकी आजीविकाका उपाय नहीं करते, गुजरका और जरिया नहीं है, तब हम इस ग्रन्थकी आयसे अपना और अपने आश्रितोंका पेट पालते हैं, इसमें क्या बुराई करते हैं? पर इसमें जरा भी झूठ नहीं कि, हमारा असल उद्देश देशमें फिरसे आयुर्वेदकी तूती बुलवाना, देशका धन देशमें रखवाना और लोगोंको रोग रहित देखना है। अगर यह उद्देश न होता, तो हम भगवानकी दी हुई काफी दाल-रोटीपर सन्तोष करके आनन्दसे हर भजन करते और इस तरह जल्दी ही मरनेका सामान न करते। खैर, जो हमसे बना हमने किया और करेंगे, अगर जनता इस ग्रन्थसे कुछ भी लाभ उठायेगी, फाल्तू उपन्यासोंके बजाय इस ग्रन्थको मन लगाकर पढ़े-समझेगी, तो वह निस्सन्देह नीरोग, सुखी और दीर्घजीवी होगी और साथ ही अपनी कड़ी कमाईका पैसा बचानेमें भी समर्थ होगी। आशा है, मनोरथदाता भक्तवत्सल दीनबन्धु कृष्ण हमारी मनोकामना सफल करेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वितीय संस्करण

पर

निवेदन ।

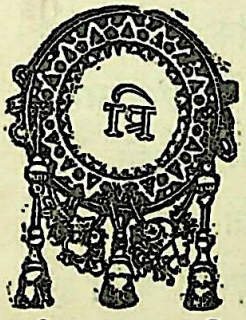

य पाठक गण ! जिस समय मैंने यह सातवाँ भाग लिखा था, तब मुझे ज़रा भी आशा न थी कि, इसका अगला संस्करण मैं अपनी इसी ज़िन्दगीमें देख सकूँगा। प्रूफ़-संशोधनकी दिक्कतोंके मारे इस भागकी तीन हज़ार प्रतियाँ छपा ली थीं, इससे इसके देरमें कटनेकी आशा थी। पर पिछली हाफ़-प्राइस-सेलके समय इसकी फटी-कटी कापियाँ तक बिक गईं। कोई अढ़ाई-तीन सौ ग्राहक इसके लिए टापते रह गये, इसीसे यह भाग फिर छपाया गया और आज यह भक्तवत्सल भगवान् कृष्णचन्द्रकी कृपासे नई सजधजसे छपकर तैयार है। पहले इस भागमें, किसी-किसी रोगका पथ्यापथ्य लिखना रह गया था। इस बार वह कमी भी पूरी कर दी है, इसीसे १२१६ पेजोंकी जगह अब १२६८ सफे हो गये हैं। अब पाठकोंको पथ्यापथ्य जाननेके लिए और ग्रन्थ खोजनेकी दरकार नहीं होगी।

मैंने चिकित्सा-चन्द्रोदयके लिखनेके लिए, अपनी घोर मुसीबतके १५ बरस, आयुर्वेद और हिकमत सम्बन्धी अनेकों ग्रन्थ देखनेमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगाये। उन दिनों खाने और पढ़नेके सिवाय, कमानेका काम बहुत ही कम था। विश्वास कीजिये, प्रायः दो-ढाई सौ आयुर्वेद-ग्रन्थ, २५–३० हिकमतके ग्रन्थ और अनेकों मासिक-पत्र पढ़-पढ़कर नोट किये। पर इस विशालकाय ग्रन्थके छपानेके लिए हज़ारों रुपयोंकी ज़रूरत थी। मेरे पास बीस कौड़ी भी न थीं, इसलिए यह न छप सका। कलकत्तेमें जाने और नरसिंह प्रेस खोलनेसे मेरी आर्थिक स्थिति खूब अच्छी हो गई। तब विचार हुआ कि उस १५–२० सालकी मिहनतसे कुछ काम लेना चाहिये। उधर देखा, तो हिन्दीमें सिवाय "अमृत-सागर"के कोई ग्रन्थ ऐसा नज़र न आया, जिसके पढ़नेसे संस्कृतसे कोरा आदमी उतनी ही योग्यता प्राप्त कर ले जितनी कि चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, बंगसेन, शार्ङ्गधर प्रभृति बड़े-बड़े ग्रन्थोंके पढ़नेसे प्राप्त करता है और आयुर्वेदका आचार्य (एम० ए०) कहलाता है। फिर समय भी बहुत लगता है। इसीसे ऐरे-गैरे पचकल्यानी लोग अपनी रोटी कमानेके लिए "अमृत-सागर"के सहारे वैद्यराज बन बैठते और यमराजका काम करते हैं। अगर हिन्दीमें कोई सर्व्वाङ्गपूर्ण ग्रन्थ हो तो लोग ज़रूर पढ़ेंगे।

एक बात और दिलपर जमी हुई थी कि, संसारमें आकर परोपकार करना ही मनुष्य-मात्रका कर्त्तव्य है। ईश्वर या इस सृष्टिको पैदा करने-वालेकी इच्छा भी यही है। हमें उसकी सृष्टिसे ही परोपकारकी शिक्षा मिलती है। एफ० ए० के कोर्सकी रघुवंश और भर्तृहरि-शतक वग़ैरःके सिवाय, मेरे प्राईवेट ट्यूटर, मथुरा हाई स्कूलके उस समयके हैड पण्डितजी, ने मुझे अलीगढ़के लाला तोतारामजी वकीलका नीति-संग्रह भी गर्मियोंकी छुट्टियोंमें पढ़ा दिया। उस ग्रन्थमें परोपकार विषयपर संस्कृतके सभी श्लोक संग्रह करके एकत्र सजा दिये थे। उनका आशय यह था, "संसारमें जन्म लेकर परोपकार करना ही जन्म लेनेका फल है। जिसने इस जगत्में आकर दूसरोंकी भलाईका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काम नहीं किया, उसने अपनी जननीकी जवानी वृथा नष्ट की। पर परोपकार करनेमें घोर मुसीबतोंका सामना करना पड़ता है। तन-मन-धन तीनोंकी माया-ममता छोड़नी होती है। जब तक मनुष्य अपने सर्वस्वसे लापरवाह नहीं होता, अपना अस्तित्व तक मिटानेको तैयार नहीं होता, आत्मोत्सर्ग या बलिदान नहीं करता, परोपकार नहीं होता।

"घरमें आप जो चिराग़ जलाते हैं, उसके तेल और बत्ती खुद जल-जलकर आपके घरमें रोशनी करते हैं। उनका अस्तित्व मिट जाता है तब आपके घरमें उजियाला होता है। संसारमें नाना प्रकारके वृक्ष पैदा होकर मेघ, आँधी और तूफ़ान वग़ैरःसे भयानक दुःख भोगते हैं, पर आपके लिए तरह-तरहके रसीले सुस्वाद फल खानेको देते हैं। क्या वे इन फलोंको आप खाते हैं? इसी तरह पृथ्वीपर हज़ारों नदियाँ बहती हैं। वे अपने जलसे पृथ्वीके प्राणियोंकी प्यास बुझाकर उन्हें जीवित रखती हैं। खेतोंमें जल पहुँचाकर प्राणियोंके खानेको अनाज पैदा करती हैं। आकाशमें बादल पैदा होकर पृथ्वीपर वर्षा करते हैं, जिससे इस जगत्के मनुष्य और पशु-पक्षी जीवन धारण करते हैं। पर्वतोंसे भी इस जगत्के प्राणियोंका उपकार होता है। सिंहादि जीव और तपस्वी उनकी कन्दराओंमें रहते हैं। लोग उनके अङ्ग-भङ्ग करके पत्थर लाते हैं, उनसे मकानात बनाते हैं और भी हज़ारों काम निकालते हैं। सूर्य चौबीसों घण्टों चक्कर लगाता हुआ स्वयं असह्य कष्ट भोगता, पर जगत्की जीवन-रक्षा करता है। उसकी गरमीसे मनुष्य, पशु-पक्षी और वनस्पति वग़ैरः जीवित रहते हैं। वही समन्दरका जल ऊपर खींचकर ग्रीष्ममें बादल बनाता और वर्षा ऋतुमें वृष्टि करके जगत्की प्राणरक्षा करता है।" कहाँ तक लिखें, जगत्कर्त्ताकी सिरजन की हुई हरेक चीज़से मनुष्यको परोपकारकी शिक्षा मिलती है। बहुत क्या, इन नसीहतोंका असर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेरे दिलपर लड़कपनमें ही पड़ गया। ये श्लोक हृदयपटपर जम गये। इसीसे जो दो-चार सालमें कमाया था, स्वयं अपने सुखभोगमें न लगाकर इन पुस्तकोंमें लगा दिया। पर जो काम सद्भावनासे किया जाता है उसका फल शुभ ही होता है। इस ग्रन्थसे मुझे यश, मान और धन तीनों मिले।

सच बात यह है कि, मुझमें इस विशालकाय ग्रन्थके लिखने योग्य न विद्या है, न बुद्धि और अनुभव है। पर मैंने यह सोचकर कि, कुछ नहीं से कुछ अच्छा है। बौनेके चाँद छूनेकी तरह यह दुस्साहस किया। आज इस ग्रन्थकी सहायता वह वैद्य तक लेते हैं जो आयुर्वेद आचार्य प्रभृति अनेक पदवियोंका पुंछल्ला लगाये रहते हैं। हज़ारों बेकार बाकार होकर सौ-सौ, दो-दो सौ रुपया माहवारी कमा रहे हैं। एक आदमीने केवल ५ वें भागसे १३६ काले भुजङ्गोंके काटे हुओंकी जानें बचा लीं। क्या यह सफलता कम है ? इस सफलताका कारण क्या है ? इसका असल कारण है, जगदात्मा, परमात्मा, महाभारतकी युद्धभूमि या मैदाने जङ्गमें अर्जुनका मोह और विषाद दूर करके उसे स्थिरमति बनाकर युद्धपर आरूढ़ करनेवाले, पाण्डवोंके सिरपर जयका सेहरा बाँधनेवाले, उनको घोर आफ़तोंसे बचानेवाले महा योगेश्वर दीनबन्धु दीनानाथकी अपने एक अदनासे भक्तपर कृपा करना। उनकी महिमाको कोई जान नहीं सकता। ऋषियोंने हज़ारों वर्ष तपस्या करके भी उनकी मायाका ओर-छोर न पाया। इसमें कोई शक नहीं कि, जो उनमें सच्ची भक्ति रखता है, उसके सभी काम सफल होते हैं। कामयाबी उसके सामने हाथ बाँधे खड़ी रहती है। उनकी कृपासे लूले, लँगड़े पर्वत लाँघ जाते हैं, गूँगे वाचाल होकर बड़े-बड़े व्याख्यान फटकारने लगते हैं, अन्धे देखने लगते हैं, बहरे सुनने लगते हैं, तब मेरे जैसे उनके एक तुच्छातितुच्छ सेवकको सफलता क्यों न मिले ? मैंने अपनी ६४ सालकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिन्दगीमें उनके अनेक करिश्मे देखे हैं। असम्भव सम्भव हो गया है। रेलवे ट्रेन मेरे ऊपर होकर पास होगई है, पर मेरे ज़रा-सी खुर-सट भी नहीं आई। टमटमके घोड़ेके बिगड़ जानसे मैं और मेरी बराबरकी सीटपर बैठनेवाले गिर गये। मेरे पेटपर पहिया फिर गया। पर मेरे ज़रा भी चोट न आई। दूसरा आदमी कट गया और अन्तमें मर गया। मेरी मुसीबतमें सैकड़ों शिक्षित, अशिक्षित भले आदमी मेरी दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति देखकर मुझे पुलिसमें पकड़वा देनेपर तुल गये। घबड़ाकर मैंने उस समयके भूतपूर्व वाइसरायसे, जो अपनी सङ्गदिलीके लिए प्रसिद्ध थे, लिखा-पढ़ी की। उनको मुझपर सदय होना पड़ा। मेरे लिए ख़ास तौरसे बंगालके गवर्नरके प्राइवेट सेक्रेटरी मिस्टर गोरले आई० सी० एस०, सी० आई० ई० को उन्होंने तार देकर दार्जिलिङ्गसे देहली बुलाया। मेरा केस उनके हाथोंमें दिया और सिफ़ारिश कर दी कि, सच्चा इन्साफ़ करना। अन्तमें दूधका दूध और पानीका पानी हो गया। सोचिये, एक मामूली बुकसेलरकी इतनी पहुँच किसीने आज तक भारतके किसी वाइसराय तक सुनी-देखी है। अब इन्हें मैं उस नन्दनन्दनकी कृपा न समझूँ—उनकी भक्तवत्सलता न समझूँ तो क्या समझूँ? अलीगढ़के एक नामी वैद्यराजको मेरी उन्नतिके कारण मुझसे द्वेष हुआ। उन्होंने मेरे सम्बन्धमें बुरी बातें फैलानेका विचार किया। दूसरे दिन उनका घर-द्वार—सर्वस्व अग्निदेवने स्वाहा कर दिया। देरसे या जल्दी वे मेरी ख़बर लेते हैं, इसलिए मैं खुद शत्रुओंसे नहीं भिड़ता।

आजकल, चिकित्सा-चन्द्रोदय निकलनेके बाद, कई पत्र ऐसे निकल गये हैं जो परीक्षित योग छापते हैं। मैंने देखा है, कितने ही नामधारी वैद्य सज्जन ज़रा भी मिहनत किये बिना, "स्वास्थ्यरक्षा" या "चिकित्सा-चन्द्रोदय"से परीक्षित नुसख़े उठाकर पत्रोंमें भेज देते हैं। मेरा नुसख़ा तो होता ही है—यहाँ तक कि मेरे शब्द और भाषा तक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं बदलते। इतना परिश्रम कौन करे? जो काम मैंने १५-२० साल परिश्रम करके किया, उसे वे चन्द मिनटोंमें कर लेते हैं और वाहवाही लूटते हैं।

एक सज्जनने तो यहाँ तक किया है कि चिकित्सा-चन्द्रोदयके निदान, लक्षण और नुसख़े भाषामें बहुत ही कम फेर-फार करके, रोगोंके लक्षणोंकी टेबिल या नक़शे बनाकर एक किताब अपने नामसे रच डाली है। अपने नामके आगे "विज्ञान" शब्द रखकर ग्रन्थकार बन गये हैं। आपने भूमिकामें दबी क़लमसे स्वीकार किया है कि, मुझे चिकित्सा-चन्द्रोदयसे मदद मिली है। पर ज़ियादातर गाना किसी फ़र्ज़ी गुरुका गाया है। यह नहीं लिखा कि, इसमें जो कुछ है वह चिकित्सा-चन्द्रोदयकी माया है। मैंने यह मामला कलकत्तेके वकील-बैरिस्टरोंको बताया। वे कहने लगे कि मामला साफ़ है, बिना हमारे बहुत परिश्रम किये आप जीत जावेंगे। अगर इसमें सन्देह हो तो आप मुक़दमा जीतनेपर हमें अदालतकी फ़ीस, हमारा मिहन्ताना सब दे देना। अगर आप हार जावें तो हम एक पाई न लेंगे। इसपर मैंने ग़ौर किया। मनने कहा कि ऐसे डाकुओंपर केस चलाना ही चाहिये, पर मैं कृष्णका फैसला देखनेके लिए रुका हुआ हूँ। इतना तो हो गया है, उनके घरमें चिराग़ जलानेवाला भी नहीं रहा है। पुस्तकें अचारका-सा घड़ा पड़ी हैं। तीन या चार रुपये मूल्य होनेपर भी कोई उन्हें नहीं पूछता। लेखक महाशय घरके घाटेमें हैं। एक और भले आदमीने स्वास्थ्य-रक्षा और चिकित्सा-चन्द्रोदयसे कुछ ले-लेकर एक नवीन "स्वास्थ्य-रक्षा" रचनी चाही। उसे वे अपने पत्रमें देने लगे। मुझे मालूम होते ही मैंने कलकत्तेके एक नामी अटरनीके द्वारा नोटिस दिलाया। आपने माफ़ी माँग ली और उसे अपने नौकरोंकी करतूत बताकर, आगेके लिए ऐसे कामोंसे तोबा कर ली। मेरी सारी पुस्तकोंकी सरकारमें रजिस्ट्री हो गई है। तिसपर भी डाकू लोग अपनी इज्ज़त-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आबरूका ख़याल नहीं करते। उन्हें न सरकारका भय है और न परमात्माका ख़ौफ़ है। मेरी दो युगकी मिहनतको सहजमें हथियाकर लेखक बनना चाहते हैं। अरे भाई, मेरी तरह मिहनत करो, बीसियों साल जान लड़ाओ, मुझसे भी अच्छा ग्रन्थ लिखो, कोई मना तो नहीं करता। मैं तो कई भागोंकी भूमिकामें लिख चुका हूँ कि, इन मेरे ग्रन्थोंमें मेरा कुछ भी नहीं है, जो है वह सब पराया है। मैंने बरसों मिहनत करके, जनताके लाभार्थ नोट किये थे, उन्हें ही सजाकर पुस्तकाकार छपा दिया है। आप मुझसे भी अच्छा काम करो, पर पराई मिहनतपर पानी मत फेरो—पराये नामको मत मिटाओ। यहाँ रहूँगा तो, महात्मा गाँधीका अनुयायी होनेपर भी, लाचारीसे मजबूर होकर केस चलाऊँगा। हज़ारों रुपये स्वाहा होंगे। आपका और मेरा दोनोंका नुक़सान होगा। भरसक महात्माजीके उसूलोंपर चलूँगा, पर सब्रकी भी तो एक हद होती है। इतना भी नहीं सोचते कि, अगर वकील लोग जिरहमें यह पूछेंगे कि आपने यह मैटर कहाँसे लिया तो क्या जवाब देंगे। अच्छे ग्रन्थ सैकड़ों दूसरे ग्रन्थोंका अध्ययन करनेसे ही लिखे जाते हैं, आप भी वही करें। ख़ैर बहुत हुआ। साहित्यिक डाकेज़नी करनेवालोंसे मेरी यही प्रार्थना है कि, आप लोग इस कामको छोड़ दो। इस तरह आप मालामाल नहीं हो सकते।

इसके अगले ऐडिशन तक मैं इस नापाएदार दुनियामें रहूँ या न रहूँ, इसलिये हिन्दी भाषा-भाषियोंसे विनम्र प्रार्थना है कि, वे इसे हर गाँवमें पहुँचानेकी कोशिश करें, जिससे भारतका भला हो। ग़रीब ग्रामीण अकाल मृत्युके शिकार न हों। परीक्षा हो चुकी है, जिस घर या गाँवमें ये आठों पुस्तकें होती हैं, उनमें, कोई अकाल मृत्यु या सर्प वग़ैरःके काटनेसे नहीं मरने पाता।

जो लोग हिन्दी, अङ्गरेज़ी मिडिल या ऐन्ट्रेन्स पास करके नौकरियोंके लिए दर-दर मारे-मारे फिरते हैं, निराश होकर आत्म-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हत्या कर लेते हैं, के इसे घरपर बिना गुरुके पढ़कर, चिकित्सा करें। उन्हें यश और धन अवश्य मिलेंगे। पर बिना आठों पुस्तकोंके कंठस्थ किये कोई चिकित्सा-कर्म न करे। ऐसा करनेसे इस लोक और परलोक दोनोंमें बुरा होगा।

मथुरा
१० अगस्त, १९३५ ई०।

आपका—
हरिदास।

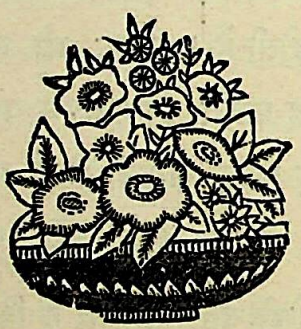

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

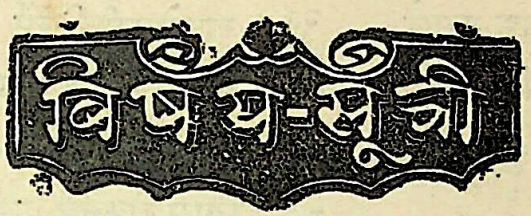

सातवाँ भाग

पहला अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क	विषय	पृष्ठाङ्क
मूर्च्छा रोगका वर्णन	१	खूनकी मूर्च्छाके लक्षण	६
मूर्च्छाका स्वरूप	१	मद्यकी मूर्च्छाके लक्षण	७
मूर्च्छाके निदान-कारण	२	विषकी मूर्च्छाके लक्षण	७
निदान पूर्वक सम्प्राप्ति	२	संन्यासके लक्षण	७
मूर्च्छाके सामान्य लक्षण	३	मूर्च्छा और संन्यासमें फ़र्क़	८
मूर्च्छाके भेद	३	मूर्च्छा, संन्यास और भ्रममें भेद	९
मूर्च्छाके पूर्वरूप	४	तन्द्रा और निद्रामें भेद	९
वातज मूर्च्छाके लक्षण	४	मूर्च्छा-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	१०
पित्तज मूर्च्छाके लक्षण	५	मूर्च्छारोगमें पथ्यापथ्य	१२
कफज मूर्च्छाके लक्षण	५	मूर्च्छा नाशक नुसख़े	१३
त्रिदोषकी मूर्च्छाके लक्षण	५	अश्वगन्धारिष्ट	१९
खूनकी मूर्च्छाके कारण	६		

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
विशेष चिकित्सा	२१
संन्यास रोगकी चिकित्सा	२४
भ्रमकी चिकित्सा	२५
तन्दा-निद्रा नाशक नुसख़े	२७
सकतेपर हकीमी नुसख़े	२६
दूसरा अध्याय ।	
मदात्यय-वर्णन	३०
मदात्ययका निदान	३७
मद्य या शराबसे होनेवाले विकार	३७
मदात्ययके सामान्य लक्षण	३८
मदात्ययके भेद	३८
मदात्ययकी विशेष चिकित्सा	४१
वातज मदात्ययकी चिकित्सा	४१
पित्तज मदात्ययकी चिकित्सा	४३
कफज मदात्ययकी चिकित्सा	४३
सन्निपातज मदात्ययकी चिकित्सा	४४
पानात्यय-चिकित्सा	४५
और कई तरहके मदोंकी चिकित्सा	४५
शराब पीनेवालोंके लिये हितकारी शिक्षा	४७
मदात्ययकी सामान्य चिकित्सा	४८

विषय	पृष्ठाङ्क
तीसरा अध्याय ।	
दाहरोग वर्णन	५१
दाहके सामान्य लक्षण	५१
दाहरोगकी क़िस्में	५१
पित्तके दाहके लक्षण	५१
रुधिरके दाहके लक्षण	५२
प्यास रोकनेके दाहके लक्षण	५२
रक्तपूर्ण कोष्ठज दाह	५३
मद्यके दाहके लक्षण	५३
धातुक्षयका दाह	५३
मर्माभिघातज दाहके लक्षण	५४
दाहकी असाध्यता	५४
दाह-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	५५
दाह नाशक नुसख़े	५६
चौथा अध्याय ।	
उन्माद-रोगका वर्णन	६१
उन्मादके निदान या कारण	६४
उन्माद-रोगकी क़िस्में	६४
उन्मादकी सम्प्राप्ति	६४
उन्मादके पूर्वरूप या सामान्य लक्षण	६५
उन्मादके विशेष लक्षण	६५
वातज उन्मादके कारण	६५
वातज उन्मादके लक्षण	६६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
पित्तज उन्मादके कारण	६७
पित्तज उन्मादके लक्षण	६७
कफज उन्मादके कारण	६८
कफज उन्मादके लक्षण	६८
सन्निपातज उन्मादके लक्षण	६९
शोकज उन्मादके कारण	६९
शोकज उन्मादके लक्षण	७०
विषजन्य उन्मादके लक्षण	७१
असाध्य उन्मादके लक्षण	७२
भूतोन्मादके लक्षण	७२
उन्माद-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	७६
उन्माद नाशक नुसख़े	७८
अमीरी नुसख़े	८५
हिकमतके मतसे उन्मादके निदान, लक्षण और चिकित्सा	९६
मालीखोलिया-वर्णन	९६
मालीखोलियाके भेद	९७
मालीखोलियाके पहले भेदके लक्षण	९९
मालीखोलियाके दूसरे भेदके लक्षण	१०१
तीसरे भेद या मालीखोलिया मिराकीके लक्षण	१०२
दीवानापन या उन्माद	१०३
कुतरुबका वर्णन	१०३
मानियाके लक्षण	१०४
दाउलकल्बके लक्षण	१०५
सुवारा या विशेष जिनूके लक्षण	१०६
मालीखोलियाके और भेद	१०७
बहकनेका वर्णन	१०८
अहङ्कार और मूर्खताका वर्णन	११०
इश्क़ या प्रेमका वर्णन	११०
मालीखोलियाका इलाज	११२
खूनी मालीखोलियाका इलाज	११२
पित्तज मालीखोलियाका इलाज	११४
वातज मालीखोलियाका इलाज	११५
कफज मालीखोलियाका इलाज	११८
मालीखोलियाकी सामान्य चिकित्सा	११९
मालीखोलियाके दूसरे भेदका इलाज	११९
मालीखोलिया मिराकीका इलाज	१२१
कुतरुबका इलाज	१२४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
मानिया और दाउलकल्बका इलाज	१२५
सुवारा या विशेष जिनूका इलाज	१२५
अहङ्कार या मूर्खताका इलाज	१२६
इश्क़-उन्मादका इलाज	१२७
ख़फ़क़ान या हौलदिल	१२९
ख़फ़क़ान रोगके पहले कारणके लक्षण और चिकित्सा	१३०
ख़फ़क़ान रोगके दूसरे कारणके लक्षण और चिकित्सा	१३५
ख़फ़क़ान रोगके तीसरे कारणके लक्षण और चिकित्सा	१३७
ख़फ़क़ान रोगके चौथे कारणके लक्षण और चिकित्सा	१३९
ख़फ़क़ान रोगके पाँचवें कारणके लक्षण और चिकित्सा	१४१
ख़फ़क़ान रोगके छठे कारणके लक्षण और चिकित्सा	१४३
ख़फ़क़ान रोगके सातवें कारणके लक्षण और चिकित्सा	१४४
ख़फ़क़ान रोगके आठवें कारणके लक्षण और चिकित्सा	१४५
उन्माद नाशक नुसख़े	१४६
फुटकर नुसख़े	१४८

पाँचवाँ अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
अपस्मार वर्णन	१५०
अपस्मार शब्दकी निरुक्ति	१५०
अपस्मारके सामान्य लक्षण	१५१
निदान और सम्प्राप्ति	१५४
पूर्वरूप	१५५
अपस्मारकी संख्या	१५६
वातज मृगीके लक्षण	१५६
पित्तज मृगीके लक्षण	१५७
कफज मृगीके लक्षण	१५८
सन्निपातज मृगीके लक्षण	१५९
योषापस्मारका वर्णन	१५९
हिस्टीरिया सम्बन्धी नयी नयी बातें	१६१
हिकमतके मतसे मृगीका वर्णन	१६६
मृगीकी पहली क़िस्म दिमागी मृगीके लक्षणादि	१६९
मृगीकी दूसरी क़िस्म कण्ठके नीचेके अङ्गोंसे होनेवाली मृगी	१७१
मृगीकी तीसरी क़िस्म	

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
विषैले जानवर वगैरःसे होनेवाली	१७५
अपस्मार-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	१७७
अपस्मार नाशक नुसखे	१८२
मृगीपर हकीमी नुसखे	१९०
अपस्मार नाशक उत्तमोत्तम योग	१९२
आयुर्वेद-विधिसे मृगीकी विशेष चिकित्सा	१९७
योषापस्मार-हिस्टीरियाकी चिकित्सा	१९८
डाक्टर गनकी चिकित्सा-विधि	२००
हिकमतकी विधिसे मृगीकी विशेष चिकित्सा	२०२
कफकी मृगीकी चिकित्सा	२०२
बादीकी मृगीकी चिकित्सा	२०३
खूनकी मृगीकी चिकित्सा	२०३
पित्तकी मृगीकी चिकित्सा	२०४
आमाशयकी मृगीकी चिकित्सा	२०४
तिल्ली वगैरःकी मृगियोंकी चिकित्सा	२०६
पाँव या हाथमें दोष जमा होकर होनेवाली मृगीकी चिकित्सा	२०७
डाक्टरी मतसे मृगीरोगका वर्णन	२०९

छठा अध्याय ।

विषय	पृष्ठाङ्क
वातव्याधि-वर्णन	२१४
निदान-कारण	२१४
वातरोगोंकी संप्राप्ति	२१६
वात-कोपके समय	२१६
कुपित वातसे होनेवाले रोग	२१६
वात कुपित होनेके लक्षण	२१८
पूर्वरूप, रूप और अपाय	२१८
हेतु-भेद और स्थान-भेदसे रोगोंकी भिन्नता	२१९
हेतुओंके भेदसे वात-व्याधि	२१९
स्थान-भेदसे वात-व्याधि	२२०
स्थान विशेषसे वात-व्याधि	२२२
कान आदि इन्द्रियोंकी वायुके लक्षण	२२३
शिराग्रहके लक्षण	२२५
जँभाईके लक्षण	२२५
हनुग्रहके लक्षण	२२५
जिह्वास्तम्भके लक्षण	२२६
गद्गदत्व, मिन्मिनत्व और मूकताके लक्षण	२२६
प्रलापके लक्षण	२२७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
रसाज्ञानके लक्षण	२२७
त्वक् शून्यताके लक्षण	२२८
मन्यास्तम्भके लक्षण	२२८
बाहुशोषके लक्षण	२२८
अपबाहुकके लक्षण	२२८
वश्वाचीके लक्षण	२२९
ऊर्द्ध्ववातके लक्षण	२२९
आध्मानके लक्षण	२२९
प्रत्याध्मानके लक्षण	२२९
वात अष्ठीलाके लक्षण	२२९
प्रत्यष्ठीलाके लक्षण	२३०
तूनीके लक्षण	२३०
प्रतितूनीके लक्षण	२३०
मुहुर्मूत्र और मूत्रनिग्रहके लक्षण	२३१
खञ्जता और पंगुताके लक्षण	२३१
कलायखञ्जके लक्षण	२३१
क्रोष्टुकशीर्षके लक्षण	२३२
खल्लीके लक्षण	२३२
वातकण्टकके लक्षण	२३२
पाद-दाहके लक्षण	२३२
पाद हर्षके लक्षण	२३३
कुब्जकके लक्षण	२३३
तन्द्राके लक्षण	२३३
कम्पवायुके लक्षण	२३४
आक्षेपक वातके सामान्य लक्षण	२३४
अपतन्त्रकके लक्षण	२३४
अपतानकके लक्षण	२३५
दण्डापतानकके लक्षण	२३५
धनुस्तम्भके लक्षण	२३५
अन्तरायामके लक्षण	२३६
बाह्यायामके लक्षण	२३६
अभिघाताक्षेपक वात	२३७
सर्वाङ्ग वातके लक्षण	२३८
गृध्रसीके भेद	२३८
आयुर्वेदीय मतसे अर्दित वात या लकवेका वर्णन	२३९
हिकमतके मतसे अर्दित वात या लकवेका वर्णन	२४२
डाक्टरी मतसे लकवेका वर्णन	२४५
पक्षाघात वर्णन	२४५
लक्षण	२४५
साध्यासाध्यत्व जाननेके लक्षण	२४६
असाध्य लक्षण	२४७
लकवे और फालिजमें फर्क़	२४८
हकीमी मतसे फालिजका वर्णन	२४८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
लक्षण	२४८
निदान-कारण	२४९
जानने योग्य बातें	२५१
याद रखने योग्य हकीमी हिदायतें	२५१
डाक्टरी मतसे लकवे और फालिजका वर्णन	२५३
लक्षण	२५५
कारण	२५६
इलाज	२५६
प्रसंगवश एपोप्लेक्सी या सकतेका इलाज	२५७
पैरेलिसिसका इलाज	२६०
वात-व्याधियोंकी सामान्य चिकित्सा	२६१
योगराज गुग्गुल	२६१
महा योगराज गुग्गुल	२६३
तीसरी योगराज गुग्गुल	२६४
त्रयोदशांग गूगल	२६४
चौथी योगराज गूगल	२६५
अश्वगन्धा घृत	२६६
स्वच्छन्द भैरव रस	२६६
विष्णु तैल	२६७
महा विष्णु तैल	२६७
नारायण तैल	२६८
मध्यम नारायण तैल	२६९
महा नारायण तैल	२७०
महा माषादि तैल	२७१
दूसरा महामाषादि तैल	२७२
प्रसारिणी तैल	२७३
बला तैल	२७४
लशुनादि तैल	२७५
रसोन कल्क	२७६
दूसरा रसोन कल्क	२७६
रसोनाष्टक	२७७
लशुन योग	२७८
लशुनादि चूर्ण	२७८
इन्द्रबीजादि चूर्ण	२७९
रास्नादि चूर्ण	२७९
रास्नादि क्वाथ	२७९
महा रास्नादि क्वाथ	२७९
वात-गजकेशरी अर्क	२८०
विषगर्भ तैल	२८१
वातारि तैल	२८१
सैंधवादि तैल	२८२
हिमसागर तैल	२८२
पुष्पराज प्रसारिणी तैल	२८३
वृहत् छागलाद्य घृत	२८४
दूसरा छागलाद्य घृत	२८६
अश्वगन्धाद्य घृत	२८६
महा नारायण तैल	२८७
कल्याण लेह	२८८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
रसराज रस	२८८
चिन्तामणि रस	२८८
चतुर्मुख रस	२८९
योगेन्द्र रस	२८९
वात-गजांकुश वटी	२८९
अश्वगन्धादि मोदक	२९०
वत्सनाभादि गुटिका	२९०
धत्तूर तैल	२९०
निर्गुण्डी चूर्ण	२९१
लघु मृगाङ्क	२९१
वात-गजकेसरी बटी	२९१
वातरोगान्तक चूर्ण	२९२
षड्धरण योग	२९२
वातारि रस	२९३
हरताल रस	२९३
वात नाशक तैल	२९३
विषमुष्टि गुटिका	२९४
वात नाशक रस	२९४
वातान्तक बटी	२९५
वातारि तैल	२९५
रसोन पाक	२९६
एरण्ड पाक	२९७
लहसन पाक	२९७
मेथी पाक	२९८
असगन्ध पाक	२९९
समस्त वात-रोगान्तक तैल	३००
शुंठ्यादि चूर्ण	३०१
वात-व्याधियोंकी विशेष चिकित्सा	३०१
अर्दित-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	३०१
अर्दित या लकव नाशक नुसखे	३०३
पक्षाघात चिकित्सा	३०७
पक्षाघात नाशक नुसखे	३०७
लकवा और फालिजपर यूनानी नुसखे	३१३
चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें	३१३
वात-रोग नाशक नुसखे	३१४
गृध्रसी चिकित्सा	३१८
गृध्रसी नाशक नुसखे	३१८
डाक्टरी मतसे गृध्रसीकी चिकित्सा	३२४
लक्षण	३२४
इलाज	३२४
कुब्जक चिकित्सा	३२६
कुब्जक नाशक नुसखे	३२६
हनुग्रह चिकित्सा	३२७
हनुग्रह नाशक नुसखे	३२७
क्रोष्टुकशीर्ष चिकित्सा	३२९
क्रोष्टुकशीर्ष नाशक नुसखे	३३०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
मन्यास्तम्भ चिकित्सा	३३१
मन्यास्तम्भ नाशक नुसखे	३३१
चारों आक्षेपकोंकी चिकित्सा	३३२
आक्षेपक रोग नाशक नुसखे	३३२
महाबला तैल	३३२
अपतानक चिकित्सा	३३४
अपतानक रोग नाशक नुसखे	३३४
अपतन्त्रक चिकित्सा	३३५
अपतन्त्रक नाशक नुसखे	३३६
धनुस्तम्भ चिकित्सा	३३७
धनुर्वात नाशक नुसखे	३३७
अन्तरायाम और बाह्यायाम चिकित्सा	३३८
ऊर्ध्ववात चिकित्सा	३३९
ऊर्ध्ववात नाशक नुसखे	३३९
वाताष्ठीला चिकित्सा	३४०
वाताष्ठीला नाशक नुसखे	३४०
प्रत्यष्ठीला नाशक नुसखे	३४१
आध्मान चिकित्सा	३४१
आध्मान नाशक नुसखे	३४१
प्रत्याध्मान चिकित्सा	३४४
प्रत्याध्मान नाशक नुसखे	३४४
विश्वाची चिकित्सा	३४४
विश्वाची नाशक नुसखे	३४४
जिह्वास्तम्भ चिकित्सा	३४५
जम्हाई रोगकी चिकित्सा	३४५
गद्गदत्व, मिन्मिनत्व और मूकताकी चिकित्सा	३४६
प्रलाप चिकित्सा	३४७
रसाज्ञान चिकित्सा	३४७
वातकण्टक चिकित्सा	३४८
खल्ली चिकित्सा	३४८
कलायखञ्ज चिकित्सा	३४९
खञ्जता और पंगुताकी चिकित्सा	३४९
बाहुशोष चिकित्सा	३५०
पाददाह चिकित्सा	३५०
तूनी-प्रतितूनी चिकित्सा	३५१
पादहर्ष चिकित्सा	३५२
अपबाहुक चिकित्सा	३५२
अपबाहुक नाशक नुसखे	३५२
माष तैल	३५३
मुहुर्मूत्र और मूत्रनिग्रह चिकित्सा	३५४
मुहुर्मूत्र और मूत्रनिग्रह नाशक नुसखे	३५४
त्रिकशूल चिकित्सा	३५६
त्रिकशूल नाशक नुसखे	३५६
कमरके दर्दपर यूनानी नुसखे	३५७
सर्वाङ्गवात चिकित्सा	३५९

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
सर्व्वाङ्गवात नाशक नुसखे	३५६
त्वचाशून्य चिकित्सा	३६०
चमड़ेका सूनापन नाश करने-वाले नुसखे	३६०
कोष्ठगत वायुकी चिकित्सा	३६१
आमाशयगत वायुकी चिकित्सा	३६२
पक्वाशयगत वायुकी चिकित्सा	३६३
उदरवात चिकित्सा	३६४
गुदागत वायुकी चिकित्सा	३६५
हृदयगत वायुकी चिकित्सा	३६५
कानादि इन्द्रियोंमें घुसी हुई वायुकी चिकित्सा	३६६
सप्त धातुगत वात चिकित्सा	३६७
स्नायुगत वात चिकित्सा	३६६
शिरागत वायु चिकित्सा	३६६
सन्धिगत वात चिकित्सा	३७०
जोड़ोंकी पीड़ापर यूनानी नुसखे	३७३
स्नायुमण्डलका वर्णन	३८०
मस्तिष्क वर्णन	३८३
वृहत्मस्तिष्क वर्णन	३८४
लघु मस्तिष्क वर्णन	३८८
चतुष्कोण मज्जा वर्णन	३८६
सुषुम्ना वर्णन	३८६
न्यूरेलजिया या स्नायुगत वात	४००
स्नायविक रोगोंके रोकनेके उपाय	४०६

सातवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठाङ्क
वातरक्त वर्णन	४०६
वातरक्तके निदान-कारण	४०६
वातरक्तकी सम्प्राप्ति	४१०
वातरक्तके पूर्वरूप	४१०
वातरक्तके भेद	४१२
वाताधिक्य वातरक्तके लक्षण	४१२
रक्ताधिक्य वातरक्तके लक्षण	४१२
पित्ताधिक्य वातरक्तके लक्षण	४१३
कफाधिक्य वातरक्तके लक्षण	४१३
द्विदोषाधिक्य और त्रिदोषा-धिक्य वातरक्तके लक्षण	४१४
पैरोंके सिवा वातरक्तके और स्थान	४१४
वातरक्तके उपद्रव	४१४
साध्यासाध्यता	४१५
वातरक्त चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	४१६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
सामान्य चिकित्सा	४२३
वातरक्त नाशक योग	४२३
वातरक्त नाशक ग़रीबी नुसख़े	४४०
वातरक्तकी विशेष चिकित्सा	४४७
वातप्रबल वातरक्त नाशक नुसख़े	४४७
पित्ताधिक्य वातरक्त नाशक नुसख़े	४४८
कफाधिक्य वातरक्त नाशक नुसख़े	४४९
आठवाँ अध्याय।	
उरुस्तम्भ वर्णन	४५१
चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें	४५४
उरुस्तम्भ नाशक नुसख़े	४५५
उत्तमोत्तम नुसख़े	४६०
नवाँ अध्याय।	
आमवात वर्णन	४६४
आमवात चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	४६८
आमवात नाशक नुसख़े	४६९
आमवात नाशक ग़रीबी नुसख़े	४८४
दसवाँ अध्याय।	
शूलरोग वर्णन	४८८
शूल किसे कहते हैं ?	४८८
शूल-रोगकी उत्पत्ति	४८८
शूलके सन्निकृष्ट निदान	४८९
शूल-रोगोंकी संख्या	४८९
आठों शूलोंके निदान-लक्षण	४९०
वातज शूलके निदान	४९०
वातज शूलके लक्षण	४९१
उपयोगी प्रश्नोत्तर	४९२
पित्तज शूलके निदान	४९३
पित्तज शूलके लक्षण	४९३
प्रश्नोत्तर	४९४
कफज शूलके निदान	४९५
कफज शूलके लक्षण	४९५
दो दोषों और तीन दोषोंके शूलके लक्षण	४९६
आमशूलके लक्षण	४९६
दोषोंके भेदसे आमशूलके स्थान	४९७
शूलका भेद—परिणाम शूल	४९७
अन्नद्रव शूलके लक्षण	४९८
दर्द कुलञ्ज	४९८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
शूलके उपद्रव	४६६
साध्यासाध्य लक्षण	४६६
शूलके अरिष्ट लक्षण	४६६
शूल चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	४६६
शूलकी सामान्य चिकित्सा	५१०
लरोगपर उत्तमोत्तम नुसखे	५१४
जरूरी सूचना	५१८
शूलकी विशेष चिकित्सा	५१८
वातज शूल नाशक नुसखे	५१८
पित्तज शूल नाशक नुसखे	५२२
कफशूल नाशक नुसखे	५२३
त्रिदोष शूलकी चिकित्सा	५२४
आमशूल नाशक नुसखे	५२५
परिणाम शूल नाशक नुसखे	५२७
अन्नद्रव शूल नाशक नुसखे	५३७
हृदय शूल नाशक नुसखे	५३८
वस्तिशूल, कुक्षिशूल, बिट्-शूलादि नाशक नुसखे	५३६
ग्यारहवाँ अध्याय ।	
उदावर्त्त-रोग वर्णन	५४१
उदावर्त्तके सामान्य लक्षण	५४१
उदावर्त्तके निदान-कारण	५४१
उदावर्त्तकी संख्या	५४३
अपान वायुके उदावर्त्तके लक्षण	५४३
मल रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण	५४३
मूत्र रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४४
जँभाई रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४४
आँसू रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४५
छींक रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४५
डकार रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४५
वमन रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४६
वीर्य रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४६
भूख रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४७
प्यास रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४७
श्वास रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४७
नींद रोकनेके उदावर्त्तके ल०	५४८
अपथ्य भोजनके उदावर्त्तकेल०	५४८
उदावर्त्तके संक्षिप्त निदान और लक्षण	५४६
सब तरहके उदावर्त्तोंमें मुख्य दोष कौनसा है ?	५४६
उदावर्त्तके असाध्य लक्षण	५४६
उदावर्त्त-रोगकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	५५०
उदावर्त्तकी विशेष चिकित्सा	५५४
उदावर्त्त-रोग नाशक नुसखे	५५७
चन्द परीक्षित फुटकर नुसखे	५६०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
बारहवाँ अध्याय ।	
आनाह-रोग वर्णन	५६२
सामान्य लक्षण	५६२
आमके आनाहके लक्षण	५६२
मलके आनाहके लक्षण	५६२
आनाह चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	५६३
आनाह नाशक नुसखे	५६३
तेरहवाँ अध्याय ।	
गुल्म-रोग वर्णन	५६६
गुल्म किसे कहते हैं ?	५६६
गुल्मके निदान-कारण	५६६
गुल्मके पाँच भेद	५६७
गुल्मके स्थान	५६६
गुल्मके सामान्य लक्षण	५७०
गुल्मके पूर्वरूप	५७१
वातज गुल्मके निदान-कारण	५७१
वातज गुल्मके लक्षण	५७२
पित्तज गुल्मके निदान-कारण	५७२
पित्तज गुल्मके लक्षण	५७२
कफज गुल्मके निदान	५७३
कफज गुल्मके लक्षण	५७३
दो दोषोंके गुल्मकी कल्पना	५७४
त्रिदोषज गुल्मके लक्षण	५७४
रक्तगुल्मके निदान	५७४
रक्त-धातुसे पैदा हुए गुल्मके निदान	५७५
रक्त-धातुसे हुए गुल्मके ल०	५७६
आर्त्तव या रजके गुल्मके ल०	५७६
गुल्मके असाध्य लक्षण	५७६
गुल्म चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	५८०
गुल्मकी विशेष चिकित्सा	५८२
वातज गुल्मकी चिकित्सा	५८२
पित्तज गुल्म नाशक नुसखे	५८६
कफज गुल्म नाशक नुसखे	५८८
द्वन्द्वज गुल्म नाशक नुसखे	५८६
त्रिदोषज गुल्म नाशक नुसखे	५६०
रक्तज गुल्म नाशक नुसखे	५६२
समस्त गुल्म नाशक नुसखे	५६४
चौदहवाँ अध्याय ।	
प्लीहा वर्णन	६०१
प्लीहावृद्धिके सामान्य ल०	६०२
निदान और सम्प्राप्ति	६०४
रुधिरसे हुई प्लीहाके लक्षण	६०५
पित्तसे हुई प्लीहाके लक्षण	६०५
कफसे हुई प्लीहाके लक्षण	६०६
वायुसे हुई प्लीहाके लक्षण	६०६
असाध्य लक्षण	६०६
प्लीहा नाशक नुसखे	६०६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
प्लीहा नाशक उत्तमोत्तम योग	६१५
तिल्ली-रोगपर हकीमी नुसख़े	६२२

पन्द्रहवाँ अध्याय ।

यकृत-रोग वर्णन	६२८
यकृतपर आयुर्वेद	६२८
यकृतका स्थान और आकारादि	६२९
यकृतके काम	६२९
यकृतकी विकृतिके कारण	६३०
यकृतकी विकृतिके लक्षण	६३०
यकृत चिकित्सा	६३२

सोलहवाँ अध्याय ।

हृदय-रोग वर्णन	६३७
हृदय-रोगके निदान	६३७
सम्प्राप्ति पूर्वक लक्षण	६३७
हृदय-रोगोंकी क़िस्में	६३८
सामान्य लक्षण	६३८
वातज हृदय-रोगके लक्षण	६३८
पित्तज हृदय-रोगके लक्षण	६३८
कफज हृदय-रोगके लक्षण	६३९
त्रिदोषज हृदय-रोगके लक्षण	६३९
कृमिज हृदय-रोगके लक्षण	६३९
हृदय-रोगके उपद्रव	६४०
हृदय-रोगमें याद रखने योग्य बातें	६४०
हृदय-रोगकी विशेष चिकित्सा	६४१
वातज हृदय-रोग नाशक नु०	६४१
पित्तज हृदय-रोग नाशक नुसख़े	६४२
कफज हृदय-रोग नाशक नुसख़े	६४३
त्रिदोषज हृदय-रोग नाशक नुसख़े	६४४
कृमिज हृदय-रोग नाशक नुसख़े	६४४
समस्त हृदय-रोग नाशक नुसख़े	६४५
उरोग्रह वर्णन	६४९
निदान और लक्षण	६४९
चिकित्सा	६४९

सत्रहवाँ अध्याय ।

मूत्रकृच्छ्र-रोग वर्णन	६५०
मूत्रकृच्छ्र किसे कहते हैं ?	६५०
मूत्रकृच्छ्रके सामान्य लक्षण	६५०
मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें भेद	६५०
मूत्रकृच्छ्रके निदान	६५१
मूत्रकृच्छ्रकी क़िस्में	६५१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
वातज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५१
पित्तज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५२
कफज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५२
सन्निपातज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५२
आगन्तुक मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५२
पुरीषज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५२
अश्मरीज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५३
शुक्रज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण	६५३
मूत्रकृच्छ्रकी विशेष चिकित्सा	६५४
वातज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५४
पित्तज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५४
कफज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५५
त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५६
आगन्तुक मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५६
रीषज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५७
अश्मरी मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५७
शुक्रज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५८
सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसखे	६५८
मूत्रकृच्छ्र नाशक उत्तमोत्तम योग	६६६
मूत्रकृच्छ्रान्तक रस	६६६
कृच्छ्रान्तक रस	६६६
कुशावलेह	६६७

अठारहवाँ अध्याय ।

मूत्राघात वर्णन	६६८
मूत्राघातके निदान-कारण	६६८
मूत्राघातके लक्षण	६६८
मूत्राघातके भेद	६६९
वातकुण्डलिकाके लक्षण	६६९
अष्ठीलाके लक्षण	६६९
वातवस्तिके लक्षण	६६९
मूत्रातीतके लक्षण	६७०
मूत्र जठरके लक्षण	६७०
मूत्रोत्संगके लक्षण	६७०
मूत्रक्षयके लक्षण	६७०
मूत्रग्रन्थिके लक्षण	६७१
मूत्रशुक्रके लक्षण	६७१
उष्णवातके लक्षण	६७१
मूत्रसादके लक्षण	६७१
विड्विघातके लक्षण	६७२
वस्तिकुण्डलके लक्षण	६७२

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
मूत्राघात चिकित्सा	६७३
मूत्राघात नाशक उत्तमोत्तम योग	६७७
शिलोद्भवादि तैल	६७७
धान्यगोक्षुरक घृत	६७८
विदारी घृत	६७८
चित्रकाद्य घृत	६७९
वरुणाद्य लौह	६८०

उन्नीसवाँ अध्याय।

अश्मरी-पथरी वर्णन	६८१
पथरीकी संख्या और निदान	६८१
पथरीकी सम्प्राप्ति	६८१
पथरीके पूर्व्वरूप	६८२
पथरीके साधारण लक्षण	६८२
वातोल्वण पथरीके लक्षण	६८३
पित्तोल्वण पथरीके लक्षण	६८३
कफोल्वण पथरीके लक्षण	६८३
वीर्यकी पथरीके निदान-लक्षणादि	६८४
शुक्राश्मरीके दो भेद	६८४
पथरीके उपद्रव	६८५
सांघातिक लक्षण	६८५
पथरी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	६८५
पथरी-रोगकी विशेष चिकित्सा	६८६
वातोल्वण पथरीकी चिकित्सा	६८६
एलादि क्वाथ	६८६
वरुणादि क्वाथ	६८६
पाषाणभेदाद्य घृत	६८७
वीरतरादिगण	६८७
पित्तोल्वण पथरीकी चिकित्सा	६८७
कुशाद्य घृत	६८७
कफोल्वण पथरीकी चिकित्सा	६८८
वरुणादि घृत	६८८
शुक्रजाश्मरीकी चिकित्सा	६८८
कुशाद्य तैल	६८८
तृणपञ्चमूलाद्य घृत	६८९
वरुण तैल	६८९
सब तरहकी पथरियोंकी सामान्य चिकित्सा	६८९
ग़रीबी नुसख़े	६८९
हकीमी नुसख़े	६९३
पथरी नाशक उत्तमोत्तम योग	६९६
वृहत् वरुणादि क्वाथ	६९६
कुलत्थाद्य घृत	६९६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
वरुणादि चूर्ण	६९६
पुनर्नवाद्य तैल	६९७
पाषाण भिन्न रस	६९७
पाषाण बज्र रस	६९८
अंगूरके पत्तोंका शर्बत	६९८
हजरल यहूदकी फंकी	६९८

बीसवाँ अध्याय।

मेदरोग वर्णन	६९९
निदान-कारण	६९९
मेदवृद्धिकी सम्प्राप्ति	६९९
मेदरोगके लक्षण	६९९
मेदवृद्धि या मुटाई नाशक ग़रीबी नुसख़े	७००
मेदरोग या मुटाई नाशक उत्तमोत्तम योग	७०४
अमृतादि गूगल	७०४
दशांग गुग्गुल	७०४
त्र्यूषणादि लौह	७०५
त्रिफलाद्य तैल	७०५
महासुगन्धि तैल	७०५
लोह रसायन	७०६
शरीरकी दुर्गन्ध और पसीने नाशक नुसख़े	७०७
शीतके पसीनोंके उपाय	७०९
काश्य-वर्णन	७१०
कृशता या दुबलेपनके निदान	७११
कृश या दुबले आदमीके ल०	७११
अत्यन्त कृशता या दुबलेपनके रोग	७११
कृश होनेपर भी बलवान होनेका कारण	७१२
मोटा होनेपर भी बलहीनताका कारण	७१२
काश्य-रोग या दुबलेकी चिकित्सा	७१२
अश्वगन्धा तैल	७१२

इक्कीसवाँ अध्याय।

बाईसवाँ अध्याय।

उदररोगके निदान-कारण	७१४
उदररोगकी सम्प्राप्ति	७१४
उदररोगके सामान्य रूप	७१५
उदररोगोंकी संख्या	७१५
वातोदरके लक्षण	७१६
पित्तोदरके लक्षण	७१६
कफोदरके लक्षण	७१७
सन्निपातोदर या दूष्योदरके लक्षण	७१७
प्लीहोदरके लक्षण	७१८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
बद्धगुदोदरके लक्षण	७१६
क्षतोदरके लक्षण	७२०
जलोदरके लक्षण	७२०
हिकमतसे जलन्धरके लक्षण	७२१
उदररोगोंकी साध्यासाध्यता	७२१
उदररोग चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	७२३
उदररोगोंकी विशेष चिकित्सा	७२५
वातोदर चिकित्सा	७२५
कुष्ठादि चूर्ण	७२६
समुद्राद्य चूर्ण	७२६
लशुन तैल	७२७
पित्तोदर चिकित्सा	७२७
कफोदर चिकित्सा	७२८
सन्निपातोदर चिकित्सा	७२६
प्लीहोदर चिकित्सा	७२६
जलोदर, बद्धोदर और क्षतोदर चिकित्सा	७३२
शोथोदर नाशक नुसखे	७३३
उदररोगोंकी सामान्य चिकित्सा	७३४
उदररोग नाशक उत्तमोत्तम योग	७३८
नारायण चूर्ण	७३८
नाराच घृत	७३६
नाराच रस	७३६
इच्छाभेदी रस	७४०
विन्दु घृत	७४०
चित्रक घृत	७४०
पिप्पल्यादि लौह	७४१
शोथोदरारि लौह	७४१
पुनर्नवादि क्वाथ	७४२
पथ्यादि क्वाथ	७४२
पुनर्नवादि क्वाथ	७४२
त्रिवृताद्य घृत	७४२
कुमार्यासव	७४३
वज्र कल्क	७४३
ब्रह्म घृत	७४४
शंखद्राव	७४४
कुमार्यासव	७४४
पेटके रोगोंपर हकीमी नुसखे	७४५

तेईसवाँ अध्याय।

शोथ-रोग वर्णन	७४८
शोथ-रोगके निदान-कारण	७४८
शोथ-रोगकी सम्प्राप्ति	७४६
शोथ-रोगके सामान्य लक्षण	७४६
शोथ-रोगके संख्याभेद	७४६
शोथ-रोगके पूर्वरूप	७५०
वातज शोथके लक्षण	७५०
पित्तज शोथ या सूजनके ल०	७५०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
कफज शोथ या सूजनके ल०	७५१
द्वन्द्वज और सन्निपातज सूजनके लक्षण	७५२
अभिघातज सूजनके ल०	७५२
विषज सूजनके लक्षण	७५२
किस स्थानमें रहा हुआ दोष कहाँ सूजन करता है ?	७५३
सूजनके उपद्रव	७५३
सूजनके कृच्छ्रादि भेद	७५३
असाध्य लक्षण	७५३
सूजन चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	७५५
शोथ या सूजन-रोगकी विशेष चिकित्सा	७५७
वातज सूजन नाशक नुसखे	७५७
पित्तज सूजन नाशक नुसखे	७५७
कफज सूजन नाशक नुसखे	७५८
पुनर्नवादि लेह	७५९
त्रिदोषजन्य सूजन नाशक नुसखे	७५९
आगन्तुक सूजन नाशक नुसखे	७६१
विषज सूजन नाशक नुसखे	७६१
शोथ या सूजन-रोगकी सामान्य चिकित्सा	७६२
सूजन-रोग नाशक उत्तमोत्तम योग	७६७
गुड़ादि चूर्ण	७६७
पुनर्नवाद्य चूर्ण	७६७
मानक घृत	७६७
शुष्क मूलक तैल	७६८
पुनर्नवाष्टक क्वाथ	७६८
पुनर्नवा स्वरस	७६९
पथ्यादि क्वाथ	७७०
सिंहास्यादि क्वाथ	७७०
शोथारि चूर्ण	७७०
चित्रकाद्य घृत	७७०
पुनर्नवाद्य तैल	७७१
दुग्धबटी	७७१
तक्र मण्डूर	७७२
पंचामृत रस	७७२
त्रिकट्वादि लौह	७७२
कंस हरीतकी	७७३
शोथ या सूजन-रोगपर हकीमी नुसखे	७७३
चौबीसवाँ अध्याय ।	
अन्त्रवृद्धि या कोषवृद्धि-वर्णन	७७७
निदान और संख्या	७७७
सम्प्राप्ति	७७७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
वातवृद्धिके लक्षण	७७८
पित्तवृद्धिके लक्षण	७७८
कफज वृद्धिके लक्षण	७७८
रुधिरकी वृद्धिके लक्षण	७७८
मेदकी वृद्धिके लक्षण	७७८
मूत्रकी वृद्धिके लक्षण	७७९
अन्त्रवृद्धिके लक्षण	७७९
इसकी उपेक्षाका फल	७७९
अन्त्रवृद्धिके असाध्य लक्षण	७८०
एकशिरा और वातशिराके लक्षण	७८०
अण्डवृद्धि चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	७८०
अण्डवृद्धिकी चिकित्सा	७८२
वातवृद्धि नाशक नुसखे	७८२
पित्तज वृद्धि नाशक नुसखे	७८२
कफज वृद्धि नाशक नुसखे	७८३
रुधिरकी वृद्धि नाशक नुसखे	७८४
मेदज अण्डवृद्धि नाशक नुसखे	७८४
मूत्रज अण्डवृद्धि नाशक नुसखे	७८५
सब तरहकी अण्डवृद्धि नाशक नुसखे	७८५
कुरण्ड-रोगके लक्षण और चिकित्सा	७८६
अण्डवृद्धि नाशक उत्तमोत्तम योग	७८७
वृद्धि वाधिका बटिका	७८७
अण्डवृद्धि नाशक नुसखे	७८८
सैंधवाद्य घृत	७८८
शतपुष्पाद्य घृत	७८९
गन्धर्वहस्त तैल	७८९
नारायण तैल	७९०
अण्डवृद्धिपर हकीमी नुसखे	७९०

पच्चीसवाँ अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
गलगण्ड वर्णन	७९३
सम्प्राप्ति	७९३
वातज गलगण्डके लक्षण	७९४
कफज गलगण्डके लक्षण	७९४
मेदज गलगण्डके लक्षण	७९४
असाध्य गलगण्डके लक्षण	७९५
गलगण्ड चिकित्सा	७९६
गलगण्ड नाशक उत्तमोत्तम योग	७९९
अमृतादि तैल	७९९
तूम्बी तैल	७९९
हिंस्राद्य तैल	७९९
शाखोटाद्य तैल	८००
कांचनार गुग्गुल गुटिका	८००

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
छब्बीसवाँ अध्याय।	
गण्डमाला और अपची वर्णन	८०१
गण्डमाला और अपचीके लक्षण	८०१
साध्यासाध्य लक्षण	८०१
गण्डमाला और अपची नाशक नुसखे	८०२
गण्डमाला नाशक उत्तमोत्तम योग	८०४
चन्दनाद्य तैल	८०४
गुञ्जाद्य तैल	८०५
दूसरा गुञ्जाद्य तैल	८०५
निर्गुण्डी तैल	८०५
चक्रमर्दादि सिन्दूर तैल	८०६
शाखोटक बिल्वाद्य तैल	८०६
काकादन्यादि तैल	८०६
व्योषाद्य तैल	८०७
कांचनार गुग्गुल	८०७
सत्ताईसवाँ अध्याय।	
ग्रन्थि और अर्बुद वर्णन	८०८
ग्रन्थिके लक्षण	८०८
वातज ग्रन्थिके लक्षण	८०८
पित्तज ग्रन्थिके लक्षण	८०८
कफज ग्रन्थिके लक्षण	८०९
मेदज ग्रन्थिके लक्षण	८०९
शिराज ग्रन्थिके लक्षण	८०९
साध्यासाध्य लक्षण	८०९
अर्बुदके निदान-कारण	८१०
रक्तार्बुदके लक्षण	८१०
मांसार्बुदके लक्षण	८१०
अध्यर्बुदके लक्षण	८११
द्विरर्बुदके लक्षण	८११
अर्बुद न पकनेके कारण	८११
ग्रन्थ्यर्बुद चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	८१२
ग्रन्थि और अर्बुद रोगकी चिकित्सा	८१३
अट्ठाईसवाँ अध्याय।	
श्लीपद-रोग वर्णन (हाथीपाँव)	८१६
श्लीपदके निदान-कारण	८१६
श्लीपदके सामान्य लक्षण	८१६
वातज श्लीपदके लक्षण	८१६
पित्तज श्लीपदके लक्षण	८१७
कफज श्लीपदके लक्षण	८१७
असाध्य लक्षण	८१७
श्लीपद या हाथीपाँव नाशक नुसखे	८१७
श्लीपद नाशक उत्तमोत्तम योग	८२०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
पिप्पल्यादि चूर्ण	८२०
श्लीपद-गजकेशरी	८२०
विड़ङ्गादि तैल	८२०
नित्यानन्द रस	८२१
मदनादि लेप	८२१
सोरेश्वर घृत	८२१
कृष्णाद्य मोदक	८२२
दूसरा पिप्पल्यादि चूर्ण	८२२
गोमूत्र हरीतकी	८२२

उन्तीसवाँ अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
विद्रधि वर्णन	८२३
विद्रधिके सामान्य ल०	८२३
विद्रधिके निदान-कारण	८२३
विद्रधिके मुख्य दो भेद	८२४
बाह्य विद्रधिके भेद	८२४
वातज विद्रधिके लक्षण	८२४
पित्तज विद्रधिके लक्षण	८२४
कफज विद्रधिके लक्षण	८२५
राधके भेदसे पहचान	८२५
सन्निपातज विद्रधिके ल०	८२५
आगन्तुक विद्रधिके लक्षण	८२५
रक्तज विद्रधिके लक्षण	८२५
अन्तर्विद्रधियोंके स्थान	८२६
अन्तर्विद्रधियोंके लक्षण	८२६
भीतरी विद्रधियोंकी राध निकलनेकी राहें	८२७
स्तन-विद्रधिके लक्षण	८२७
साध्यासाध्य लक्षण	८२८
गुल्म विद्रधिकी तरह क्यों नहीं पकता ?	८२८
विद्रधि चिकित्सा	८२९
वातज विद्रधि नाशक नुसख़े	८२९
पित्तज विद्रधि नाशक नुसख़े	८३०
कफज विद्रधि नाशक नुसख़े	८३०
रक्तज और आगन्तुक विद्रधि चिकित्सा	८३१
अन्तर्विद्रधिकी चिकित्सा	८३१
पकाने, फोड़ने और भरनेके उपाय	८३२
विद्रधि नाशक उत्तमोत्तम योग	८३३
प्रियंग्वाद्य तैल	८३३
वरुणाद्य घृत	८३३
करञ्ज घृत	८३३

तीसवाँ अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
व्रणरोग वर्णन	८३५
व्रणशोथका पूर्वरूप	८३५
व्रणपाकके लक्षण	८३५

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
पच्यमान व्रण शोथके लक्षण	८३६
पक्व व्रण-शोथके लक्षण	८३६
गम्भीर पाकके लक्षण	८३७
एक दोषसे पैदा हुई सूजनका भी पकनेके समय तीनों दोषोंसे सम्बन्ध	८३७
पके हुये फोड़ेसे राध न निकालनेका नतीजा	८३८
वैद्यक गुण-दोष	८३८
व्रण-रोगके निदान	८३८
व्रणोंके लक्षण	८३८
साध्यासाध्य लक्षण	८३९
व्रण चिकित्सा	८४०
सूजन नाशक लेप	८४१
सूजनपर तरड़े	८४२
विस्लापन कर्म	८४३
उपनाह स्वेद	८४३
रक्तमोक्षण—खून निकालना	८४४
पकाना या पाचन करना	८४४
भेदन करना या फोड़ना	८४४
पीड़न या दबाकर मवाद निकालना	८४५
शोधन करना या साफ करना	८४५
रोपण यानी घाव भरना	८४६
पथ्यापथ्य	८४६
सद्योव्रण वर्णन	८५०
सद्योव्रण या आगन्तुक व्रणके लक्षण	८५०
छिन्नके लक्षण	८५०
भिन्नके लक्षण	८५०
विद्ध व्रणके लक्षण	८५१
क्षतके लक्षण	८५१
पिच्चितके लक्षण	८५१
घृष्टके लक्षण	८५१
सद्योव्रण चिकित्सा	८५२
व्रण नाशक उत्तमोत्तम योग	८५४
जात्यादि घृत	८५४
जात्यादि तैल	८५४
विपरीत मद्य तैल	८५५
दूर्वाद्य तैल	८५५
तिक्ताद्य घृत	८५५
व्रण राक्षस तैल	८५६
अमृता गुग्गुल	८५६
तूल तैल	८५७
अग्निदग्ध व्रण वर्णन	८५७
अग्निदग्ध व्रणके निदान-कारण	८५७
अग्निदग्ध चिकित्सा	८५८
घरेलू चीज़ोंसे आगसे जले हुओंकी चिकित्सा	८६१
साधारण दग्धके परीक्षित उपाय	८६१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
गम्भीर दग्ध नाशक उपाय	८६४
जले हुए घावकी शुद्धि	८६६
सांघातिक दग्ध नाशक उपाय	८६६
अग्निदग्धपर यूनानी नुसखे	८६७
समस्त व्रण नाशक ग़रीबी नुसखे	८६६
खून बन्द करनेके हकीमी उपाय	८७५
समस्त व्रण नाशक यूनानी मरहमें	८७६

इकत्तीसवाँ अध्याय।

नाड़ी-व्रण वर्णन	८८१
नाड़ी-व्रणके निदान-कारण	८८१
नाड़ी-व्रणकी संख्या	८८२
वातज नाड़ी-व्रणके लक्षण	८८२
पित्तज नाड़ी-व्रणके लक्षण	८८२
कफज नाड़ी-व्रणके लक्षण	८८२
त्रिदोषज नाड़ी-व्रणके लक्षण	८८२
शल्यज नाड़ी-व्रणके लक्षण	८८३
साध्यासाध्य लक्षण	८८३
नासूरकी विशेष चिकित्सा	८८३
वातज नाड़ी-व्रणकी चिकित्सा	८८३
पित्तज नाड़ी-व्रणकी चि०	८८४
कफज नाड़ी-व्रणकी चिकित्सा	८८४
शल्यज नाड़ी-व्रण चिकित्सा	८८५
नाड़ी-व्रण या नासूरकी सामान्य चिकित्सा	८८६
नासूर नाशक यूनानी नुसखे	८८८

बत्तीसवाँ अध्याय।

भग्नरोग वर्णन	८९०
भग्नरोगका निदान	८९०
काण्डभग्नके सामान्य लक्षण	८९०
सन्धिभग्नके सामान्य लक्षण	८९१
भग्न-चिकित्सामें जानने योग्य बातें	८९१
भग्न-रोग चिकित्सा	८९२
चोट वग़ैरःपर हकीमी नुसखे	८९७

तेतीसवाँ अध्याय।

भगन्दर-रोग वर्णन	९००
भगन्दरके लक्षण	९००
भगन्दरके पूर्वरूप	९०१
वातज शतपोनक भगन्दरके लक्षण	९०१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
पित्तज उष्ट्रग्रीव भगन्दरके लक्षण	६०१
श्लैष्मिक परिस्रावी भगन्दरके लक्षण	६०२
त्रिदोषज शम्बूकावर्त्त भगन्दरके लक्षण	६०२
साध्यासाध्यता	६०३
भगन्दर चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	६०३
भगन्दर चिकित्सा	६०४
निस्पन्दन तैल	६०७
निशाद्य तैल	६०७
करवीराद्य तैल	६०७
नव कार्षिक गुग्गुल	६०८
चौंतीसवाँ अध्याय।	
कुष्ठरोग वर्णन	६०६
कोढ़के निदान-कारण	६०६
कोढ़ होनेके विशेष कारण	६१०
कोढ़की सम्प्राप्ति और संख्या	६११
सात महाकुष्ठोंके नाम	६११
ग्यारह क्षुद्र कोढ़ोंके नाम	६१२
कोढ़ोंके पूर्वरूप	६१२
किस दोषकी उल्वणतासे कौनसा कोढ़ उत्पन्न होता है ?	६१३
कोढ़ोंके लक्षण	६१४
कापाल कुष्ठके ल०	६१४
औदुम्बरके ल०	६१४
मण्डलके ल०	६१४
सिध्मके ल०	६१४
काकणकके ल०	६१५
पुण्डरीकके ल०	६१५
ऋक्षजिह्वके ल०	६१५
एककुष्ठके ल०	६१५
गजचर्मके ल०	६१६
चर्मदलके ल०	६१६
विचर्चिकाके ल०	६१६
विपादिकाके ल०	६१६
पामाके ल०	६१७
कच्छुके ल०	६१७
विस्फोटके ल०	६१७
किटिभ कोढ़के ल०	६१७
अलसकके ल०	६१७
शतारूके ल०	६१८
सप्तधातुगत कोढ़ोंके ल०	६१८
रसगत कोढ़के ल०	६१८
रुधिरगत कोढ़के ल०	६१८
मांसगत कोढ़के ल०	६१८
मेदगत कोढ़के ल०	६१८
अस्थि और मज्जागत कोढ़के लक्षण	६१६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
शुक्रगत कोढ़के लक्षण	६१६
कोढ़में वातादि दोषोंकी उल्वणताके चिह्न	६१६
साध्यासाध्य लक्षण	६१६
श्वित्र कुष्ठके ल०	६२०
कुष्ठ और श्वित्रमें भेद	६२०
दोष-भेदसे लक्षण-भेद	६२०
श्वित्रकी साध्यासाध्यता	६२१
कोढ़ संयोगसे भी होता है	६२१
चन्द छुतहे रोगोंके नाम	६२२
कोढ़की चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	६२२
अवस्था-भेदसे चिकित्सा	६२४
सिध्म कोढ़ नाशक नुसख़े	६२४
दाद नाशक नुसख़े	६२६
कण्डू-पामा नाशक नुसख़े	६२७
विपादिका बिवाई नाशक नुसख़े	६२८
चर्मदल कोढ़ नाशक नुसख़े	६३०
कच्छु कोढ़ नाशक नुसख़े	६३०
विचर्चिका नाशक नुसख़े	६३१
किटिभ कुष्ठ नाशक नुसख़े	६३१
कोढ़ नाशक नुसख़े	६३२
श्वित्र कुष्ठ नाशक नुसख़े	६३४
कुष्ठ नाशक उत्तमोत्तम योग	६३६
वृहन्मरिचादि तैल	६३६
मरिचादि तैल	६३७
सोमराजी तैल	६३७
विष तैल	६३७
श्वेतकरवीराद्य तैल	६३८
सिन्दूराद्य तैल	६३८
महासिन्दूराद्य तैल	६३८
मंजिष्ठादि क्वाथ	६३८
पञ्चनिम्ब	६३८
पञ्चनिम्बकावलेह	६३६
सोमराज्युद्वर्त्तन	६४१
पथ्यादि लेप	६४१
एकविंशतिक गुग्गुल	६४१
लघु मञ्जिष्ठादि क्वाथ	६४१
वृहन्मंजिष्ठादि क्वाथ	६४२
पञ्चतिक्त घृत	६४२
तालकेश्वर रस	६४३
सोमराजी घृत	६४३
कन्दर्पसार तैल	६४४
अमृत भल्लातक	६४५
दाद नाशक हकीमी नुसख़े	६४५
तर और खुश्क खुजली नाशक नुसख़े	६४८
कोढ़, दाद और खुजली प्रभृति-पर मिश्रित नुसख़े	६५३
शीतपित्त, उदर्द, कोठ और उत्कोठ	६६१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
निदान-सम्प्राप्ति	६६१
पूर्वरूप	६६१
शीतपित्तके लक्षण	६६१
उदर्दके लक्षण	६६१
कोठ और उत्कोठके लक्षण	६६१
शीतपित्तादिकी चिकित्सा	६६२
आद्रक खण्ड	६६२
हरिद्रा खण्ड	६६२
पैंतीसवाँ अध्याय।	
विसर्प-रोग वर्णन	६६५
विसर्पका निदान	६६५
विसर्प नामका कारण	६६५
विसर्पकी संख्या	६६५
विसर्पके लक्षण	६६६
विसर्पके उपद्रव	६६७
साध्यासाध्य	६६७
विसर्प चिकित्सा	६६८
अमृतादि क्वाथ	६७०
भूनिम्बादि कषाय	६७०
करञ्ज तैल	६७०
अमृतादि कषाय	६७०
पंचतिक्तक घृत	६७१
विसर्पान्तक तैल	६७१
छत्तीसवाँ अध्याय।	
स्नायुरोग वर्णन	६७२
निदान-कारण लक्षण	६७२
नहरुआ नाशक नुसख़े	६७३
नारु नाशक हकीमी नुसख़े	६७५
सैंतीसवाँ अध्याय।	
विस्फोटक वर्णन	६७७
विस्फोटकके निदान-कारण	६७७
विस्फोटकके सामान्य लक्षण	६७७
दोष-भेदसे विस्फोटकके लक्षण	६७८
विस्फोटकके उपद्रव	६७६
विस्फोटकके साध्यासाध्य लक्षण	६७६
विस्फोट नाशक नुसख़े	६७६
विस्फोटकान्तक तैल	६८०
विस्फोटकारि तैल	६८१
अड़तीसवाँ अध्याय।	
शिरोरोग वर्णन	६८२
शिरोरोगके सामान्य लक्षण	६८२
शिरोरोगकी क़िस्में	६८२
वातज शिरोरोगके ल०	६८२
पित्तज शिरोरोगके ल०	६८३
कफज शिरोरोगके ल०	६८३
सन्निपातज शिरोरोगके ल०	६८३
रक्तज शिरोरोगके ल०	६८३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
क्षयज शिरोरोगके लक्षण	६८४
कृमिज शिरोरोगके लक्षण	६८४
सूर्यावर्त्त शिरोरोगके ल०	६८४
अनन्तवात शिरोरोगके ल०	६८५
शंखक शिरोरोगके लक्षण	६८५
अर्धावभेदकके लक्षण	६८६
और सिरके दर्दोंके ल०	६८७
ज्वरादिजनित शिरोरोगके लक्षण	६८७
दस्तक़ब्ज और अजीर्णसे हुए सिर-दर्दके ल०	६८७
जुकामके सिर-दर्दके लक्षण	६८७
खाँसी और क्षयके सिरदर्दके लक्षण	६८७
उपदंश आदिके सिरदर्दके लक्षण	६८८
स्नायविक दुर्बलताजनित सिरदर्दके लक्षण	६८८
नेत्रादि रोगोंसे हुए सिर-दर्दके लक्षण	६८८
मस्तिष्क सम्बन्धी सिरदर्दके लक्षण	६८८
यकृत दोषके सिरदर्दके लक्षण	६८८
गर्भाशय आदिके सिरदर्दके लक्षण	६८६
शिरोरोग चिकित्सामें याद रखने योग्य नियम और परीक्षित नुसखे	६८६
शिरोरोगकी विशेष चिकित्सा	६६६
वातज शिरोरोगकी चिकित्सा	६६६
पित्तज शिरोरोगकी चिकित्सा	६६८
रक्तज शिरोरोगकी चिकित्सा	१०००
कफज शिरोरोगकी चिकित्सा	१०००
वातपित्तज शिरोरोगकी चिकित्सा	१००१
वात कफज शिरोरोगकी चिकित्सा	१००१
त्रिदोषज शिरोरोगकी चिकित्सा	१००१
कृमिज शिरोरोगकी चिकित्सा	१००२
सूर्यावर्त्त शिरोरोगकी चिकित्सा	१००४
अर्द्धावभेद शिरोरोगकी चिकित्सा	१००५

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
शंखक शिरोरोगकी चिकित्सा	१००८
अनन्तवात शिरोरोगकी चिकित्सा	१००९
समस्त शिरोरोग नाशक नुसखे	१०१०
शिरोरोग नाशक उत्तमोत्तम योग	१०१२
चन्द्रकान्त रस	१०१२
बिडंग तैल	१०१३
हरिद्राद्य तैल	१०१३
कुमारी तैल	१०१३
षड्बिन्दु तैल	१०१४
षड्बिन्दु घृत	१०१४
अपामार्ग तैल	१०१५
शिरशूलान्तक रस	१०१५
सब तरहके सिरदर्दोंपर हकीमी नुसखे	१०१६
गरमी सर्दीके सिरदर्दपर नुसखे	१०१६
केवल गरमीके सिरदर्दपर नुसखे	१०१८
सर्दीके सिरदर्दपर हकीमी नुसखे	१०२०
आधाशीशी नाशक हकीमी नुसखे	१०२२
शिरोरोग नाशक मिश्रित नुसखे	१०२५
कानके भीतर गिरी चीज निकालनेके उपाय	१०२७

उन्तालीसवाँ अध्याय।

नेत्र-रोग वर्णन	१०२८
नेत्ररोगोंके निदान-कारण	१०२८
नेत्ररोगकी सम्प्राप्ति	१०२९
दृष्टि रोगोंके लक्षण	१०२९
दृष्टिके लक्षण	१०२९
नेत्रमें चार पटल	१०२९
पहले पटलमें दोष	१०३०
दूसरे पटलमें दोष	१०३०
तीसरे पटलमें दोष	१०३०
चौथे पटलमें दोष	१०३१
दृष्टि रोगोंके नाम और गिन्ती	१०३१
वातज लिङ्गनाशके लक्षण	१०३२
पित्तज लिङ्गनाशके ल०	१०३२
कफज लिङ्गनाशके ल०	१०३२
सन्निपातज लिङ्गनाशके ल०	१०३२
रक्तज लिङ्गनाशके ल०	१०३२
परिम्लायी लिङ्गनाशके ल०	१०३३
पित्तविदग्ध दृष्टिके ल०	१०३३
कफ विदग्ध दृष्टिके ल०	१०३३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
धूमदर्शीके लक्षण	१०३४
ह्रस्वजात्यके ल०	१०३४
नकुलांध्यके ल०	१०३४
गम्भीरिकाके ल०	१०३४
सनिमित्त और अनिमित्त लिङ्ग-नाशादिके ल०	१०३४
कृष्णमण्डलगत रोग	१०३५
आँखके काले घेरेके रोग	१०३५
काले मण्डलके रोगोंके नाम	१०३५
सव्रण शुक्रके लक्षण	१०३५
अव्रण शुक्रके ल०	१०३६
अक्षिपाकात्यके ल०	१०३६
अजकाके ल०	१०३६
नेत्रके सफेद भागमें होनेवाले रोग	१०३७
सफेद भागमें होनेवाले रोगोंके नाम	१०३७
प्रस्तार्यर्मके लक्षण	१०३७
शुक्लार्मके लक्षण	१०३७
रक्तार्मके लक्षण	१०३७
अधिमांसार्मके लक्षण	१०३७
स्नाय्वर्मके लक्षण	१०३८
शुक्तिके लक्षण	१०३८
अर्जुनके लक्षण	१०३८
पिष्टकके लक्षण	१०३८
शिराजालके लक्षण	१०३८

विषय	पृष्ठाङ्क
शिराज पिड़िकाके लक्षण	१०३८
वलास ग्रन्थिके लक्षण	१०३८
वर्त्मज रोगोंका वर्णन	१०३९
पलकोंमें होनेवाले रोग	१०३९
उत्सङ्गिनीके लक्षण	१०३९
कुम्भिकाके लक्षण	१०३९
पोथकीके लक्षण	१०४०
वर्त्म शर्कराके लक्षण	१०४०
अर्शोवर्त्मके लक्षण	१०४०
शुष्कार्शके लक्षण	१०४०
अंजन नामिकाके लक्षण	१०४०
वहल वर्त्मके लक्षण	१०४०
वर्त्मवन्धकके लक्षण	१०४०
क्लिष्टवर्त्मके लक्षण	१०४१
वर्त्मकर्दमके लक्षण	१०४१
श्यामवर्त्मके लक्षण	१०४१
प्रक्लिन्न वर्त्मके लक्षण	१०४१
अक्लिन्न वर्त्मके लक्षण	१०४१
वाताहत वर्त्मके लक्षण	१०४१
वर्त्मार्बुदके लक्षण	१०४१
निमेषके लक्षण	१०४१
शोणितार्शके लक्षण	१०४१
लगणके लक्षण	१०४२
विसवर्त्मके लक्षण	१०४२
कुंचनके लक्षण	१०४२
पद्मरोग वर्णन	१०४३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
पलकोंके बालोंके रोग	१०४३
पद्मकोपके लक्षण	१०४३
पद्मशातके लक्षण	१०४३
सन्धिज रोग वर्णन	१०४३
सन्धिज रोगोंके नाम	१०४३
पूयालसके लक्षण	१०४४
उपनाहके लक्षण	१०४४
पित्तज स्रावके लक्षण	१०४४
कफज स्रावके लक्षण	१०४४
सन्निपातज स्रावके लक्षण	१०४४
रुधिरजन्य स्रावके लक्षण	१०४४
पर्वणी और अलजीके ल०	१०४५
ज़तुग्रन्थिके लक्षण	१०४५
सारी आँखोंमें होनेवाले रोग	१०४५
सारी आँखोंमें होनेवाले रोगोंके नाम	१०४५
वाताभिष्यन्दके लक्षण	१०४६
पित्ताभिष्यन्दके लक्षण	१०४६
कफाभिष्यन्दके लक्षण	१०४६
रक्ताभिष्यन्दके लक्षण	१०४६
अधिमन्थके लक्षण	१०४७
सशोथपाक और अशोथ-पाकके लक्षण	१०४७
हताधिमन्थके लक्षण	१०४८
वातपर्ययके लक्षण	१०४८
शुष्काक्षिपाकके लक्षण	१०४८
अन्यतो वातके लक्षण	१०४८
अम्लाध्युषितके लक्षण	१०४८
शिरोत्पातके लक्षण	१०४९
शिराहर्षके लक्षण	१०४९
निराम और साम नेत्रोंके लक्षण	१०४९
आयुर्वेदके मतसे नेत्र-रोग चिकित्सा और याद रखने योग्य बातें	१०५०
सेककी विधि	१०५२
आश्चोतन विधि	१०५२
पिण्डी विधि	१०५३
विडालक विधि	१०५३
तर्पण विधि	१०५४
पुटपाक विधि	१०५५
अञ्जन विधि	१०५५
नेत्ररोग नाशक नुसखे	१०५६
सेक	१०५७
आश्चोतन	१०५७
पिण्डी	१०५८
विडालक	१०५९
तर्पण	१०५९
दृष्टि प्रसादनी सलाई	१०६०
स्नेहनी बटिका	१०६०
रोपणी बटी	१०६०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
लेखनी चन्द्रोदय बटिका	१०६१
पुष्पहरी वर्त्ति	१०६१
स्नेहन रसक्रिया	१०६१
रोपण रसक्रिया	१०६१
लेखन रसक्रिया	१०६१
स्नेहन चूर्ण	१०६२
रोपण चूर्ण	१०६२
लेखन चूर्ण	१०६२
मुक्तादि महाञ्जन	१०६२
नयन शोणाञ्जन	१०६३
चन्द्रोदय बटी	१०६३
चन्द्रप्रभा वर्त्ति	१०६४
कणा या मरिच प्रयोग	१०६४
त्रिफलाद्य घृत	१०६४
दूसरा त्रिफलाद्य घृत	१०६५
वासकादि क्वाथ	१०६६
नागार्जुनाञ्जन	१०६६
त्रिफलादि घृत	१०६६
सुरमा आँख	१०६७
परमोत्तम सलाई	१०६७
लाजवाब अञ्जन	१०६८
नेत्ररोगोंकी विशेष चिकित्सा	१०६८
(हकीमी नुसखे)	
रमद, अभिष्यन्द या नेत्रपीड़ा नाशक नुसखे	१०६९
रतौंधी नाशक हकीमी नुसखे	१०७८
मोतियाबिन्दु नाशक हकीमी नुसखे	१०८१
नेत्रों और पलकोंकी खुजली नाशक नुसखे	१०८३
नेत्रज्योति बढ़ानेवाले नुसखे	१०८४
सवल, माड़ा, फूला, नाखूना और जाला वगैरः नाशक नुसखे	१०८७
ढलका नाशक नुसखे	१०९६
कञ्जापन नाशक नुसखे	१०९७
अरब नामक आँखके नासूरकी चिकित्सा	१०९८
समस्त नेत्र-रोगोंपर आयुर्वेदीय और यूनानी नुसखे	१०९९
आँखका वर्णन	१११९
चालीसवाँ अध्याय ।	
कर्णरोग वर्णन	११२१
कर्णशूलके लक्षण	११२१
कर्णनादके लक्षण	११२१
वाधिर्य या बहरेपनके ल०	११२१
कर्णक्ष्वेणके ल०	११२२
कर्णस्रावके ल०	११२२
कर्णकण्डूके ल०	११२२

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
कर्णगूथके लक्षण	११२२
कर्ण प्रतिनाहके ल०	११२३
कृमि कर्णके ल०	११२३
पूतिकर्णके ल०	११२३
कर्णपाकके ल०	११२३
कानमें पतङ्ग आदि घुसनेके लक्षण	११२३
द्विविध कर्ण-विद्रधिके लक्षण	११२३
कर्णशोथ आदिके ल०	११२४
वातज कर्णरोगके ल०	११२४
पित्तज कर्णरोगके ल०	११२४
कफज कर्णरोगके ल०	११२४
सन्निपातज कर्णरोगके लक्षण	११२४
परिपोटकके ल०	११२५
उत्पातके ल०	११२५
उन्मन्थके ल०	११२५
दुःखवर्द्धनके ल०	११२५
परिलेहीके ल०	११२५
कर्णरोग चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	११२६
कर्णरोग चिकित्सा	११२६
कर्णरोग नाशक उत्तमोत्तम योग	११३५
श्योनाक तैल	११३५
हिंग्वादि तैल	११३५
देवदार्वादि तैल	११३५
एरण्डादि तैल	११३५
स्वर्जिका तैल	११३६
बिल्व तैल	११३६
अपामार्गक्षार तैल	११३६
भैरव रस	११३७
विषगर्भ तैल	११३७
कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमि-कर्णादिकी चिकित्सा	११३८
पूतिकर्णादिपर उत्तमोत्तम योग	११४१
पञ्च वल्कल तैल	११४१
चतुष्पर्ण तैल	११४२
चतुष्पल्लव तैल	११४२
कुष्ठाद्य तैल	११४२
शम्बूक तैल	११४२
गन्धकाद्य तैल	११४३
कानकी पालीके रोगोंकी चिकित्सा	११४३
कानके रोगोंपर हकीमी नुसखे	११४४
कानके घाव नाश करने-वाले नुसखे	११४४
कानकी सूजन नाश करने-वाले नुसखे	११४६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
कानके कीड़े नाश करने-वाले नुसखे	११४७
कानकी खुजली नाश करने-वाले नुसखे	११४७
कानका पानी निकालनेके उपाय	११४८
ऊँचा सुननेका उपाय	११४८
कानका दर्द नाश करने-वाले नुसखे	११४९

इकतालीसवाँ अध्याय ।

नाकके रोगोंका वर्णन	११५२
नाम और संख्या	११५२
पीनसके लक्षण	११५३
पीनसके हकीमी ल०	११५४
कच्चे पीनसके ल०	११५४
पके पीनसके ल०	११५४
पूतिनस्य रोगके ल०	११५४
नासापाकके ल०	११५५
पूय शोणितके ल०	११५५
क्षवथुके ल०	११५५
भ्रंशथके ल०	११५५
दीप्तिके ल०	११५५
प्रतिनाहके ल०	११५६
स्रावके ल०	११५६
नासाशोषके ल०	११५६
नाकके और रोगोंके ल०	११५६
नाकके रोगोंकी चिकित्सा	११५७

ब्यालीसवाँ अध्याय ।

मुखरोग वर्णन	११६२
मुँहके रोगोंके स्थान	११६२
वात-जनित ओष्ठरोगके ल०	११६२
पित्तज ओष्ठरोगके ल०	११६२
कफज ओष्ठरोगके ल०	११६३
रक्तज ओष्ठरोगके ल०	११६३
मांस-जनित ओष्ठरोगके ल०	११६३
मेदज ओष्ठरोगके ल०	११६३
अभिघातज ओष्ठरोगके ल०	११६३
दन्तवेष्ट रोगोंकी संख्या और नाम	११६४
शीतादके ल०	११६४
दन्तपुप्पुटके ल०	११६४
दन्तवेष्टके ल०	११६४
शौषिरके ल०	११६४
महाशौषिरके ल०	११६५
उपकुशके ल०	११६५
वैदर्भके ल०	११६५
खल्लिवर्द्धनके ल०	११६५
करालके ल०	११६६
अधिमांसके ल०	११६६

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
पाँच तरहकी दन्त-नाड़ियोंके लक्षण	११६६
दन्तरोगोंके लक्षण	११६६
दालनके ल०	११६६
कृमिदन्तके ल०	११६६
भञ्जनकके ल०	११६७
दन्तहर्षके ल०	११६७
दन्तविद्रधिके ल०	११६७
दन्तशर्कराके ल०	११६७
कपालिकाके ल०	११६७
श्यावदन्तके ल०	११६८
हनुमोक्षके ल०	११६८
जिह्वा रोगोंके ल०	११६८
वातज जिह्वाके ल०	११६८
पित्तज जिह्वाके ल०	११६८
कफज जिह्वाके ल०	११६८
अल्लासके ल०	११६८
उपजिह्वाके ल०	११६९
तालुरोग निदान	११६९
तालुगत शुण्डिके ल०	११६९
तुण्डिकेरीके ल०	११६९
अधृषके ल०	११६९
कच्छपके ल०	११६९
तालुबुर्दके ल०	११७०
मांस संघातके ल०	११७०
तालुपुप्पुटके ल०	११७०

विषय	पृष्ठाङ्क
तालुशोषके लक्षण	११७०
तालुपाकके ल०	११७०
गलरोग निदान	११७०
रोहिणीके ल०	११७०
वातजाके ल०	११७१
पित्तजाके ल०	११७१
कफजाके ल०	११७१
त्रिदोषजाके ल०	११७१
रक्तजाके ल०	११७१
रोहिणीके मारनेकी अवधि	११७१
कण्ठशालूकके ल०	११७१
अधजिह्वके ल०	११७२
वलयके ल०	११७२
वलासके ल०	११७२
एकवृन्दके ल०	११७२
वृन्दके ल०	११७२
शतघ्नीके ल०	११७३
गिलायुके ल०	११७३
गलविद्रधिके ल०	११७३
गलौघके ल०	११७३
स्वरघ्नके ल०	११७३
मांसतानके ल०	११७४
विदारीके ल०	११७४
सर्वमुखगत रोग निदान	११७४
वातज मुखपाकके ल०	११७४
पित्तज मुखपाकके ल०	११७४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
कफज मुखपाकके लक्षण	११७४
मुखके रोगोंमें असाध्य रोग	११७४
होठके रोगोंकी चिकित्सा	११७५
दन्तरक्षासे लाभ और उसके उपाय	११७७
दन्तरक्षा-विधि	११८२
दन्तरोग चिकित्सा	११८३
दाँतोंके रोगोंपर हकीमी नुसखे	११८६
बालकोंके दाँत निकलनेके समयकी तकलीफोंके उपाय	११६१
दन्त-रोगोंपर उत्तमोत्तम योग	१२०२
बकुलाद्य तैल	१२०२
सहचराद्य तैल	१२०३
मुस्तादि बटिका	१२०३
जात्यादि तैल	१२०३
लाक्षाद्य तैल	१२०४
दन्तरोगान्तक चूर्ण	१२०४
दन्तरोग नाशक मंजन	१२०५
दशनकान्ति चूर्ण	१२०५
अपूर्व दन्तमंजन	१२०६
दन्तवज्र मंजन	१२०६
जीभके रोगोंकी चिकित्सा	१२०७
जीभके रोगोंपर हकीमी नुसखे	१२०६
तालुरोग चिकित्सा	१२१२
गलरोग चिकित्सा	१२१३
उत्तमोत्तम योग	१२१४
कालक चूर्ण	१२१४
यवाक्षारादि गुटिका	१२१४
क्षार गुटिका	१२१४
सितादि घृत	१२१५
सर्वसर मुखरोग चिकित्सा	१२१५—१२१७
मूर्च्छा, भ्रम और संन्यासमें पथ्यापथ्य	१२१८
मदात्यय-रोगमें पथ्यापथ्य	१२१६
दाह-रोगमें पथ्यापथ्य	१२२१
उन्माद-रोगमें पथ्यापथ्य	१२२२
अपस्मार या मृगी-रोगमें पथ्यापथ्य	१२२४
वातरोगमें पथ्यापथ्य	१२२५
वातरक्त रोगमें पथ्यापथ्य	१२२७
उरुस्तम्भ-रोगमें पथ्यापथ्य	१२२८
आमवात रोगमें पथ्यापथ्य	१२२६
शूलरोगमें पथ्यापथ्य	१२३०
उदावर्त्त-रोगमें पथ्यापथ्य	१२३२
गुल्म-रोगमें पथ्यापथ्य	१२३४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठाङ्क
हृद्रोगमें पथ्यापथ्य	१२३५
मूत्रकृच्छ्रमें पथ्यापथ्य	१२३६
मूत्राघातमें पथ्यापथ्य	१२३८
पथरी-रोगमें पथ्यापथ्य	१२३८
प्रमेह-रोगमें पथ्यापथ्य	१२३९
बहुमूत्र रोगमें पथ्यापथ्य	१२४०
शुक्र-तारल्य, ध्वजभंगमें पथ्यापथ्य	१२४१
मेदरोगमें पथ्यापथ्य	१२४२
उदर-रोगमें पथ्यापथ्य	१२४४
शोथ-रोगमें पथ्यापथ्य	१२४५
कोष-वृद्धिमें पथ्यापथ्य	१२४७
गलगण्ड-रोगमें पथ्यापथ्य	१२४८
श्लीपद रोगमें पथ्यापथ्य	१२४९
विद्रधिमें पथ्यापथ्य	१२४९
व्रण-शोथमें पथ्यापथ्य	१२५०
भग्न-रोगमें पथ्यापथ्य	१२५१
भगन्दर-रोगमें पथ्यापथ्य	१२५२
उपदंश-रोगमें पथ्यापथ्य	१२५२
कुष्ठरोगमें पथ्यापथ्य	१२५३
शीतपित्त रोगमें पथ्यापथ्य	१२५४
अम्लपित्त रोगमें पथ्या०	१२५५
विसर्प रोगमें पथ्यापथ्य	१२५६
विस्फोटक रोगमें पथ्या०	१२५६
मसूरिका-चेचकमें पथ्या०	१२५७
मुखरोगमें पथ्यापथ्य	१२५८
कानरोगमें पथ्यापथ्य	१२५९
नाकके रोगोंमें पथ्यापथ्य	१२५९
नेत्ररोगमें पथ्यापथ्य	१२६०
सिरके रोगमें पथ्यापथ्य	१२६२
प्रदर-रोगमें पथ्यापथ्य	१२६३
गर्भवतीके पथ्यापथ्य	१२६३
प्रसूतिकाको पथ्यापथ्य	१२६५
सूतिका रोगमें पथ्यापथ्य	१२६५
स्तन-रोगमें पथ्यापथ्य	१२६६
बाल-रोगमें पथ्यापथ्य	१२६६
क्षय-थाइसिस रोगमें पथ्यापथ्य	१२६७

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दो हज़ार वर्षमें नई बात !

भर्तृहरि महाराजके शतक त्रय !

कोई ९३ हाफटोन चित्र !

१४४० पृष्ठोंमें ग्रन्थकी समाप्ति ।

मूल श्लोक, हिन्दी-अनुवाद, सरल व्याख्या, टीका,
कविता-अनुवाद और अङ्गरेज़ी अनुवाद ।

महाराज भर्तृहरिके नीति, वैराग्य और शृङ्गार शतक सारे संसारमें मशहूर हैं। ऐसा कौन पढ़ा-लिखा है, जो इनकी बात नहीं जानता ? इनके अनेकों अनुवाद हो चुके हैं, पर आज तक इनका ऐसा विस्तृत और सचित्र अनुवाद कहीं नहीं हुआ । तीनों शतकोंमें कोई ९३ मनोमुग्धकारी हाफटोन चित्र हैं। चित्र देखते ही आत्मा फड़क उठती है। श्लोकका भाव चट दिमाग़में घुस जाता है। अगर एक-एक चित्रका दाम दो-दो आना भी समझें तो १०) रु० के चित्र ही हो जाते हैं । १४०० पृष्ठोंकी पुस्तकें मुफ्तमें हैं। ऊपर मूल श्लोक, नीचे हिन्दी अर्थ, उसके नीचे विस्तृत टीका, उसके नीचे कविता-अनुवाद और शेषमें अङ्गरेज़ी अनुवाद है। हम ठीक कहते हैं, ऐसा अनुवाद आपने ख्वाबमें भी न देखा होगा। अनुवाद ही नहीं है, भर्तृहरि महाराजके श्लोकोंके भावोंसे टक्कर खानेवाली उर्दू शायरी, संस्कृत कवियों और अङ्गरेज़ी, फ़ारसीके विद्वानोंकी वाणियाँ जगह-व-जगह अँगूठीमें हीरोंकी तरह अलग जड़ी हुई हैं। आपने अगर ये तीनों शतक देख लिये, तो संसारके नीति, वैराग्य और शृङ्गारपर कहनेवालोंकी अनमोल कविताएँ और वाणियाँ भी देख लीं । आप इन्हें अवश्य देखिये, इनके लिये आप भूलकर भी लालच मत कीजिये ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्र-सूची ।

१—उन्माद रोगी	...	...	६५
२—अपस्मार या मृगी रोगी	...	...	१५१
३—सन्धिगत वात रोगी	...	...	२२४
४—हनुग्रह रोगी	...	...	२२५
५—बाहुशोष रोगी	...	...	२२८
६—आध्मान रोगी	...	...	२२९
७—अष्ठीला रोगी	...	...	२२९
८—प्रत्यष्ठीला रोगी	...	...	२३०
९—खञ्ज-पंगु रोगी	...	...	२३१
१०—क्रोष्टुकशीर्ष रोगी	...	...	२३२
११—कुब्ज या कुबड़ा	...	...	२३३
१२—अर्दितवात या लकवेका रोगी	...	...	२४०
१३—पक्षाघात और अर्दित रोगी	...	...	२४२
१४—क्रोष्टुकशीर्ष रोगी (दूसरा)	...	...	३३०
१५—सुषुम्ना और मस्तिष्क वगैरह (रंगीन)	...		३८८
१६—वातरक्त रोगी (रंगीन)	...	...	४०८
१७—वातरक्त रोगीकी टाँग	...	...	४१३
१८—गलगण्ड रोगी	...	...	७९५
१९—गण्डमाला रोगी	...	...	८०३

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२०—श्लीपद या हाथीपाँव रोगी (रंगीन) ८१७
२१—कोढ़ रोगी ९०८
२२—गाँठदार कोढ़का रोगी ९१३
२३—भैंसादाद रोगी (रंगीन) ९१४
२४—केशदद्रु रोगी ९१७
२५—केशदद्रु रोगी ९१७
२६—श्वित्र या धवल कुष्ठ रोगी ९२०
२७—एककोढ़ीका पाँव ९२२
२८—गलित कोढ़ रोगी ९२५
२९—दद्रु रोगी ९२७
३०—कच्छु-पामा या स्कैबियायी खुजली ... ९२९
३१—दाढ़ीका दाद ९३०
३२—कोढ़ीका पञ्जा ९३७
३३—उकवत या ऐकजैमाका रोगी ९३८
३४—कोढ़ रोगी ९४०
३५—दद्रु रोगीकी भुजा ९४४
३६—गञ्ज-दाद ९४६
३७—गाँठदार कोढ़का रोगी ९४८
३८—कोढ़ रोगी ९५२

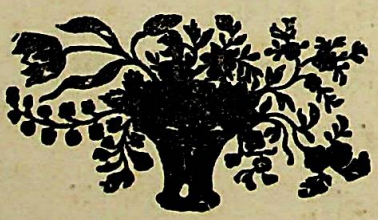

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चिकित्सा-चन्द्रोदय

सातवाँ भाग।

पहला अध्याय

मूर्च्छा-रोगका वर्णन।

मूर्च्छाका स्वरूप।

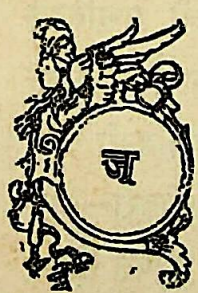

जब मनुष्यमें सुख-दुःख आदिके अनुभव करनेकी सामर्थ्य नहीं रहती—जब उसे सुख-दुःख आदिका ज्ञान नहीं रहता और वह काठकी तरह, बेहोश होकर, ज़मीन-पर गिर पड़ता है, तब कहते हैं कि इसे "मूर्च्छा" या "मोह" रोग हो गया है। साधारण बोलचालकी भाषामें मूर्च्छाको बेहोश होना, ग़श आना या ज़ोफ़ आना कहते हैं।

नोट—थोड़ी-सी बेहोशीको "मोह" और एकदम बेहोश हो जानेको "मूर्च्छा" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूर्च्छाके निदान-कारण।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे मूर्च्छा-रोग होता है:—

(१) क्षीणता होना।

(२) पित्त-दोषका बहुत ही बढ़ जाना।

(३) विरुद्ध भोजन करना।

(४) मल-मूत्रादिके वेगोंको रोकना।

(५) लकड़ी वग़ैरःकी चोट लगना।

(६) सत्वगुणकी कमी होना।

निदान पूर्व्वक सम्प्राप्ति।

जो मनुष्य क्षीण हो जाता है, जिसका पित्त-दोष बहुत ही बढ़ जाता है, जो विरुद्ध आहार सेवन करता है, जो मल-मूत्र आदि वेगोंको रोकता है, जिसके किसी तरहकी चोट लग जाती है और जो हीन-सत्व हो जाता है, उस मनुष्यकी इन्द्रियोंके बाहरी और भीतरी स्थानोंमें जब उग्र दोष जम जाते हैं, तब मनुष्य मूर्च्छित या बेहोश हो जाता है।

खुलासा—जो आदमी क्षीण हो जाते हैं, जो दूध-मछली प्रभृतिको एक साथ खाते हैं, जो दिशा-पेशाब वग़ैरःको रोकते हैं, जिनके लट्ठ वग़ैरःकी भारी चोट लग जाती है, जिनमें सतोगुणकी कमी और तमोगुणकी अधिकता होती है, उनके बाहरी और भीतरी—नेत्र प्रभृति इन्द्रियवाही और मनोवाही स्रोतोंमें जब दोष कुपित होकर ठहर जाते हैं, तब उन्हें "मूर्च्छा" होती है।

नोट (१)—कोई ज्ञानेन्द्रियोंका स्थान हृदयको मानते हैं और कोई दिमाग़को।

नोट (२)—एक-एक दोषसे मूर्च्छा होती है। तीनों दोषोंके समुदायसे मूर्च्छा होती है, ऐसा नहीं समझना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट (३)—"अल्प सत्वगुणवालेको मूर्च्छा होती है", इसका अर्थ यह है कि, अधिक तमोगुणवालेको मूर्च्छा होती है; क्योंकि मूर्च्छामें पित्त और तमोगुणकी अधिकता होती है।

नोट (४)—"हारीत-संहिता" में लिखा है—मनुष्यकी पाँचों इन्द्रियोंसे बारह-बारह नाड़ियोंका सम्बन्ध है; यानी कुल मिलाकर १२ × ५ = ६०नाड़ियाँ हैं, जिनका इन्द्रियोंसे लगाव है। जब कुपित हुए दोष इन नाड़ियोंके द्वारोंको रोकते हैं, तब मनुष्य मूर्च्छित होता है।

मूर्च्छाके सामान्य लक्षण।

संज्ञाको बहानेवाली नाड़ियोंके, वायु आदि दोषोंसे, पीड़ित होने-पर, यकायक, सुख और दुःखका ज्ञान नाश करनेवाला 'तमोगुण' प्राप्त होता है। जब तमोगुणका दौरदौरा हो जाता है, तब मनुष्यको सुख-दुःखका ज्ञान नहीं रहता और वह काठ या लकड़ीकी तरह ज़मीनपर गिर पड़ता है। इस रोगको 'मूर्च्छा' या 'मोह' कहते हैं।

मूर्च्छाके पर्याय शब्द—संज्ञोपघात, मूर्च्छाय, मूर्च्छा, मूर्च्छन, कश्मल, प्रलय और मोह हैं।

जिस मोहसे मनुष्य मुर्देके समान हो जाता है, उसे "संन्यास" कहते हैं।

मूर्च्छाके भेद।

मूर्च्छा-रोग छै प्रकारका होता है। "सुश्रुत" में लिखा है:—

वातादिभिः शोणितेन मद्येन च विषेण च।
षट्स्वपि तासु पित्तं हि प्रभुत्वेनावतिष्ठते॥

वातसे, पित्तसे, कफसे, खूनसे, शराबसे और विषसे—इस तरह छै प्रकारकी मूर्च्छा होती है। इन सभी तरहकी मूर्च्छाओंमें ही "पित्त"की प्रधानता होती है। कहा है—"मूर्च्छा पित्ततमः प्रायेति"। अर्थात् मूर्च्छामें पित्त और तमोगुणकी अधिकता होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा यह है, कि यों तो वातसे, पित्तसे, कफसे, खूनसे, शराबसे और विषसे मूर्च्छा होती है; पर सभी तरहकी मूर्च्छाओंमें पित्तका ज़ोर ज़ियादा होता है। खाली पित्तसे ही मूर्च्छा नहीं होती; वातसे भी होती है और कफसे भी होती है, पर इनमें राजा पित्त ही रहता है। पित्त तो सभी मूर्च्छाओंमें रहता है, पर जिसमें वातका ज़ोर ज़ियादा होता है, वह वातज मूर्च्छा कहलाती है। इसी तरह जिसमें कफ ज़ियादा होता है, वह कफज मूर्च्छा कहलाती है। मूर्च्छाके छै भेद ये हैं:—

(१) वातज,	(२) पित्तज,
(३) कफज,	(४) रक्तज,
(५) मद्यज,	(६) विषज।

नोट—यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि, पित्त तो सत्वगुण-प्रधान और चैतन्यताका कारण है, फिर उससे मूर्च्छा क्यों होती है? इसका जवाब यह है कि, अपने स्थानपर रहा हुआ शुद्ध पित्त सत्वगुण-प्रधान और चैतन्यताका हेतु होता है, पर दूषित और उद्रिक्त पित्त अज्ञानकारक हो जाता है।

मूर्च्छाके पूर्वरूप।

मूर्च्छा-रोग होनेसे पहले नीचे लिखे हुए लक्षण या रूप देखनेमें आते हैं:—

(१) हृदयमें पीड़ा या कलमलाहट-सा होना,
(२) जँभाइयाँ आना,
(३) ग्लानि होना,
(४) संज्ञाका नाश होना या होश-हवास बिगड़ना,
(५) बलका नाश होना या कमज़ोरी आना।

वातज मूर्च्छाके लक्षण।

जिसे वातकी मूर्च्छा होती है, वह मनुष्य आकाशको नीला, काला या लाल देखता-देखता बेहोश हो जाता है और फिर तत्काल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही होशमें आ जाता है। ऐसे रोगीके शरीरमें कँप-कँपी आती है, अंगोंमें तोड़नेकी पीड़ा होती है, हृदयमें वेदना होती है, शरीर दुबला हो जाता है और उसका रंग स्याही-माइल लाल हो जाता है।

पित्तज मूर्च्छाके लक्षण।

अगर रोगी आकाशको लाल, हरा अथवा पीले रंगका देखता-देखता बेहोश हो जाय और पसीने आकर फिर होशमें आ जाय, प्यास लगे, सन्ताप हो, आँखें लाल और पित्तसे व्याकुल हो जायँ, दस्त पतला होने लगे और शरीरका रंग पीला हो जाय, तो समझो कि पित्तकी मूर्च्छा है।

कफज मूर्च्छाके लक्षण।

अगर आदमी आकाशको सफेद बादलोंसे ढका हुआ देखकर अथवा घोर अन्धकारसे घिरा हुआ देखकर बेहोश हो जाय और फिर बहुत देर बाद होशमें आवे, शरीर गीले चमड़ेसे ढके हुएकी तरह भारी जान पड़े, मुँहमें पानी भर-भर आवे और उबकाइयाँ आवें, तो समझो कि कफज मूर्च्छा है।

त्रिदोषकी मूर्च्छाके लक्षण।

जो मूर्च्छा सन्निपात या वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंसे होती है, उसमें तीनों ही दोषोंके लक्षण देखनेमें आते हैं। इस मूर्च्छावाला, अपस्मार या मृगीवालेकी तरह, बड़े ज़ोरसे गिर जाता और गिरकर बहुत समय बाद होशमें आता है। कहा है:—

सर्वाकृतिः सन्निपातादपस्मारइवाऽपरः।
शीघ्रं सा नाशयेत्प्राणान्तस्माद्यत्नेनसाधयेत्॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्निपातकी मूर्च्छामें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं। यह रोग दूसरा अपस्मार या मृगी है। यह मूर्च्छा तत्काल प्राण नाश करती है, अतः इसका इलाज होशियारीसे करना चाहिये।

नोट—यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि, जब मृगी और सन्निपातकी मूर्च्छा के लक्षण एक ही से हैं, तब इन दोनोंमें फ़र्क कैसे समझा जाय? इसका जवाब चरक मुनि इस तरह देते हैं कि, मृगी-रोगमें रोगी झागदार वमन करता है, दाँत चबाता है और उसके नेत्रोंका ढँग और ही तरहका हो जाता है वग़ैरः-वग़ैरः, पर सन्निपातकी मूर्च्छामें ये लक्षण और चेष्टायें नहीं होतीं।

खूनकी मूर्च्छाके कारण।

पृथ्वी और पानीमें तमोगुणके अंश बहुत ज़ियादा हैं और गन्ध तथा खून—पृथ्वी और पानीके पदार्थरूप हैं, यानी गन्ध और खून पृथ्वी और पानीके अंशोंसे बने हैं—तन्मय हैं; इसलिये सतोगुणी और रजोगुणी नहीं, किन्तु तमोगुणी मनुष्य खूनकी बू या रुधिरकी गन्ध सूँघने या सुँघानेसे बेहोश हो जाते हैं।

इस विषयमें बहुतसे मत हैं। कोई-कोई कहते हैं, कि यह युक्ति ठीक नहीं है, क्योंकि चम्पाकी गन्ध भी तो पृथ्वी-सम्बन्धी है, अतः उसकी गन्धसे भी मूर्च्छा होनी चाहिये, पर उसकी गन्धसे मूर्च्छा नहीं होती।

कोई-कोई कहते हैं, कि खूनकी गन्धसे नहीं, किन्तु उसके देखनेसे मूर्च्छा होती है। यह मूर्च्छा रुधिर या खूनके ऐसा स्वभाव होनेसे होती है। किन्तु "भोज" कहता है कि, खूनके देखनेसे भी मूर्च्छा होती है और उसकी गन्धसे भी मूर्च्छा होती है।

खूनकी मूर्च्छाके लक्षण।

अगर रुधिर या खूनकी गन्ध या देखनेसे मूर्च्छा होती है, तो शरीर स्तब्ध या जकड़ा-सा हो जाता है, शरीर और दृष्टि ज्यों-के-त्यों रह जाते हैं तथा गूढ़ या गम्भीर श्वास आते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मद्यकी मूर्च्छाके लक्षण।

शराब पीनेसे जो मूर्च्छा होती है, उसमें मन सर्वथा स्मृतिहीन हो जाता है, याद्दाश्त एकदम मारी जाती है। यहाँ तक होता है, कि ऐसा आदमी रस्सीको साँप समझने लगता है। जब तक पीयी हुई शराब जीर्ण नहीं हो जाती, तब तक वह अपने अङ्गोंको ज़मीन-पर पटका करता है। असल मतलब यह है, कि इस मूर्च्छावाला विलाप करता है और उसका अन्तःकरण नष्ट या विभ्रान्त-सा हो जाता है।

विषकी मूर्च्छाके लक्षण।

विषकी मूर्च्छा होनेके कम्प, प्यास, लार गिरना, निद्रा, अँधेरी आना और ग्लानि ये लक्षण होते हैं। विषकी मूर्च्छा शराबकी मूर्च्छासे तेज़ होती है। किन्तु संज्ञा या होश-हवास नाश करनेके लक्षण विष और मद्य दोनोंमें समान हैं।

संन्यासके लक्षण।

अत्यन्त कुपित हुए बलवान वातादिक दोष—वाणीकी, देहकी और मनकी यानी शरीर-सम्बन्धी सब क्रियाओंको नाश करके—बल-हीन आदमीको मूर्च्छित या बेहोश कर देते हैं। इस रोगको "संन्यास" कहते हैं। इस रोगमें मनुष्य प्राणोंसे रहित, काठकी तरह, मुर्देके जैसा हो जाता है; इसलिये, इस रोगमें, वैद्यको तत्काल फल देनेवाली क्रिया शीघ्र ही करनी चाहिये। अगर तत्काल फलदायक क्रियाएँ जल्दी ही नहीं की जातीं; तो मनुष्य शीघ्र ही मर जाता है।

नोट—संन्यास-रोगीके शरीरमें सूई चुभोना, नेत्रोंमें तेज़ अञ्जन लगाना, कौंचकी फली घिस कर लगाना और बिच्छू आदिसे कटवाना हित है। ये क्रियाएँ तत्काल फल देती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिसके दोष बहुत ही बढ़ जाते हैं, तमोगुणकी बहुत ही अधिकता होती है, वह मूर्च्छित चैतन्य नहीं होता। ऐसे रोगीको "संन्यास" रोगवाला कहते हैं। संन्यास-रोगीको दुश्चिकित्स्य समझना चाहिए।

जिस तरह कच्ची मिट्टीकी डली पानी में गिरते ही—भीगनेसे पहले ही—निकाल ली जाय तो रह सकती है; उसी तरह सुख-दुःखकी वेदनासे रहित—मृत्युपाशमें फँसे हुए—संन्यास-रोगीकी जल्दी ही चिकित्सा की जाय, तो वह बच सकता है अन्यथा नहीं।

जो संन्यास रोगी तेज़ अञ्जन लगाने, धूनी देने, नाकमें नस्य निचोड़ने या फूँकनीसे सूखी नस्य फूँकने, सूई चुभोने, नाखूनोंमें आग-से दाग देने, बाल और रोएँ उखाड़ने, दाँतोंसे काटने, शरीरपर कौंचकी फली घिसने और बिच्छूसे कटवाने तथा मारने-पीटने या अङ्गोंको दबानेसे भी होशमें न आवे, जिसका पेट फूल रहा हो, मुँहसे लार या पानी बहता हो, श्वास चलता हो या बन्द हो गया हो, उसे वैद्य त्याग दे, उसका इलाज न करे; क्योंकि मिहनत व्यर्थ जायगी; अगर उपरोक्त उपायोंसे रोगीको होश हो जाय, तो उसे तेज़ वमन और विरेचन देकर शुद्ध करे और हल्का पथ्य भोजन दे। ऐसे रोगी-को पुराना घी पिलाना सर्वोत्तम उपाय है।

मूर्च्छा और संन्यासमें फ़र्क।

दोषोंके वेग बीतने पर मूर्च्छा और न बढ़ा हुआ उन्माद, बिना दवाके, आप-से-आप शान्त हो जाते हैं; परन्तु संन्यास-रोग बिना दवाओंके शान्त नहीं होता। यही मूर्च्छा और संन्यास-रोगमें फ़र्क है।

खुलासा—मूर्च्छा-रोगी देर-अबेरसे, बिना दवाके भी, होशमें आ जाता है; पर संन्यास-रोगी बेहोश होकर, बिना दवाके होशमें नहीं आता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूर्च्छा, संन्यास और भ्रममें भेद।

मूर्च्छा—पित्त और तमोगुणकी अधिकतासे होती है; पर भ्रम—रजोगुण, पित्त और वायु से होता है।

मूर्च्छा होनेसे प्राणीको सुख-दुःखादि किसी बातका ज्ञान नहीं रहता और वह काठकी तरह गिर पड़ता है; पर भ्रम होनेसे मनुष्य अपने शरीर और सामनेकी सब चीज़ोंको घूमती हुई देखता है।

मूर्च्छा होनेसे मनुष्य, दोषोंके वेग शान्त होनेपर, बिना दवा-दारूके भी, होशमें आकर उठ बैठता है; पर संन्यास होनेसे वह बिना दवाके होशमें नहीं आता।

तन्द्रा और निद्रामें भेद।

तन्द्रा होनेसे मनुष्यको, नींदसे घिरे हुएकी तरह, विषयोंका ज्ञान रहता है, शरीरमें भारीपन जान पड़ता है, जँभाइयाँ आती हैं और क्लम* या ग्लानि होती है।

नींद आनेसे मन ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियोंके विषयोंके ग्रहण करनेसे रुक जाता है। उस समय मनुष्य सो जाता है।

खुलासा—तन्द्रावाले आदमीके शरीरमें, नींदवालेकी तरह, घोर आलस्य रहता है, उसे जँभाइयाँ आती हैं, आँखोंके पलक कुछ खुले और कुछ बन्द रहते हैं, ज़ोरसे पुकारनेपर वह आँखें खोलकर देखने लगता है, पर आलस्यके मारे उन्हें फिर बन्द कर लेता है।

निद्रावालेको अगर पुकारो तो वह होशमें आ जाता है और उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियाँ अपने-अपने काम करने लगती हैं;

---

* बिना मिहनत किये ही, श्वासके साथ जो ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियोंके विषयोंको अत्यन्त रोकनेवाला श्रम होता है, उसे "क्लम" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु तन्द्रावालेको बहुत पुकारनेपर भी, उसकी इन्द्रियाँ चैतन्य नहीं होतीं। बहुत हल्ला मचानेसे तन्द्रावाला आँखें खोल देता है, पर उसे शीघ्र ही फिर बेहोशी आ जाती है; निद्रामें यह बात नहीं होती। तन्द्रा और निद्रामें यही भेद है।

मूर्च्छा-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर किसीपर मूर्च्छाका आक्रमण हो, तो पहले साधारण उपायोंसे रोगीको होश कराना चाहिये। जैसे, पहले मुँह और आँखों-पर जलके छींटे मारने चाहियें। इसके बाद रोगीको नर्म बिछौनेपर सुलाकर, ताड़के पंखेसे हवा करनी चाहिये। अगर पानीके छींटे वग़ैरः-से रोगी होशमें न आवे, तो "एमोनिया" सुँघाना चाहिये। अथवा आगे लिखी हुई नस्य और अञ्जनोंमेंसे किसीसे काम लेना चाहिये।

(२) भ्रम-रोगमें, दस सालका पुराना घी शरीरमें मालिश करना चाहिये। यह रोग वात और पित्तसे होता है; अतः वातपित्त शामक चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) संन्यास-रोगमें, मृगी-रोगमें लिखे हुए तेज़ अञ्जन और नस्य आदिका प्रयोग करना चाहिये। सूई चुभाना, गरम लोहेसे दागना, दाँतोंसे काटना, कौंचकी फली शरीरमें घिसना, बाल खींचना आदि उपायोंसे संन्यास-रोगीको होशमें लाना चाहिये। जब रोगीको होश हो जाय, उसे "मूर्च्छा-रोग-नाशक दवा" सेवन करानी चाहिये।

(४) अगर बालकको या बड़े आदमीको कृमिरोगकी वजहसे संन्यास-रोग हो जाय, तो "कृमिरोग-नाशक दवा" से उसे नाश करना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिये। कृमि-रोगकी चिकित्सा, "चिकित्सा-चन्द्रोदय" तीसरे भागमें लिखी है।

(५) रुधिरजन्य मूर्च्छामें, शीतल इलाज करना चाहिये।

(६) शराब पीनेसे हुई मूर्च्छामें, दुबारा फिर शराब ही पिलानी चाहिये। अथवा रोगीको शान्तिसे सुला देना चाहिये।

नोट—शराब पीनेसे हुई मूर्च्छामें ही शराब पिलानी चाहिये। और तरहकी मूर्च्छाओंमें शराब पिलाना मना है।

(७) विषके कारणसे हुई मूर्च्छामें अथवा सर्प आदि ज़हरीले जानवरोंके काटनेसे हुई मूर्च्छामें, "विष-नाशक औषधियाँ" सेवन करानी चाहिये। विष-चिकित्सा "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पाँचवें भागमें लिखी है।

(८) मूर्च्छा-रोगीके लिए जो काम मना हैं या अपथ्य हैं, उनसे उसे खूब रोकना चाहिये।

(९) शिरोविरेचन करने यानी नस्य देकर नाक द्वारा दिमाग़ी मलामत निकाल देनेसे भी मूर्च्छा नाश हो जाती है। बहुधा नस्य देनेसे मूर्च्छा टूट जाती है; इसलिये मूर्च्छामें नस्यका प्रयोग अवश्य करना चाहिये।

(१०) जिस तरह नस्य देनेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है; उसी तरह तेज़ वमनकारक दवा देनेसे भी मूर्च्छा नाश हो जाती है। जैसी ज़रूरत हो वैसा ही काम वैद्यको विचारकर करना चाहिये। मद्यसे हुई मूर्च्छामें बहुधा वमन करा देनेसे मूर्च्छा तत्काल जाती रहती है।

(११) मूर्च्छा पित्तसे होती है; भ्रम वात-पित्तसे होता है; तन्द्रा वात-कफसे होती है और निद्रा कफसे होती है,—इस बातको सदा याद रखकर, वैद्यको मूर्च्छा और भ्रमादिका इलाज करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूर्च्छा-रोगमें पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

शीतल जलके छींटे देना, मणि अथवा हार पहनना, शीतल पदार्थोंका लेप करना, तिलका तेल मलवाना, बहती हुई नदी या तालाबमें स्नान करना, पंखेकी हवा, शीतल सुगन्धित द्रव्य मिले हुए पीनेके पदार्थ, फव्वारेवाला मकान, चन्द्रमाकी शीतल किरणें, धूम्रपान—धूआँ पीना, अञ्जन आँजना, नस्य लेना, फ़स्द खोलना, दागना, सूई चुभोना, रोएँ और बड़े-बड़े बाल उखाड़ना, नाखून दबाना, दाँतोंसे काटना, नाक और मुँहसे निकलनेवाली हवा रोकना, जुलाब देना, लंघन कराना, क्रोध कराना, डराना, दुःखदायी खाट-पर सुलाना, रोगीका मन बहलानेवाली विचित्र-विचित्र कहानियाँ कहना, ऊँची आवाज़से बोलना, मनोहर बाजे ज़ोरसे बजाना, रोगीका भूली हुई बातोंको याद करना, आत्म-ज्ञानमें लगना और धीरज धरना—ये सब मूर्च्छा-रोगमें पथ्य हैं ।

छाया, वर्षाका पानी, सौ बारका धोया घी, कोमल और तीखे रस, खीलोंका माँड, पुराने जौ, लाल चावल, हाँड़ीका घी, मूँग और मटरका यूष, जंगली जीवोंका मांसरस, राग-खांडव, गायका दूध, मिश्री, पुराना पेठा, परवल, केलेकी गहर, अनार, नारियल, चौलाई, हल्के अन्न, नदी-तटके कुएँका पानी, सफेद चन्दन, कपूरका जल, नेत्रवाला और शीतल बालू—ये सब मूर्च्छा-रोगमें पथ्य हैं ।

दिनके समय पुराने चावलोंका भात, मूँग, मसूर, चना और उड़द-की दाल; परवल, पका कुम्हड़ा, बैंगन और गूलर आदिका साग; दही,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मक्खन, दाख, अनार, पके आम, पका पपीता, शरीफा और कच्चा नारियल वग़ैरः मूर्च्छा-रोगीको पथ्य हैं।

रातके समय, पूरी, रोटी, हलवा, मोहनभोग, दूध, घी, मैदा या सूजीके पदार्थ और मिठाई देना पथ्य है।

सवेरेके समय, गायका धारोष्ण दूध और शर्बत पीना पथ्य है। अन्य समय, मिश्री-मिला और कपूरसे सुवासित किया हुआ आमले आदिका पना, मधुर औषधियोंके द्वारा पका हुआ दूध, अनारका रस मिला हुआ जंगली जानवरोंका मांस-रस ये सब भी पथ्य और रोगनाशक हैं।

अपथ्य।

ताम्बूल—पान, मेथी आदि पत्तोंके साग, दाँत घिसना, धूपमें फिरना, विरुद्ध अन्न-पान, स्त्री-प्रसङ्ग, पसीने निकालना, चरपरे रस सेवन करना; प्यास, नींद और मल-मूत्र आदिके वेग रोकना और माठा या छाछ पीना,—ये सब मूर्च्छा-रोगमें अपथ्य हैं।

देरमें हज़म होनेवाले, तीक्ष्ण-वीर्य, रूखे और खट्टे पदार्थ खाना; मिहनत करना, चिन्ता करना, डरना, क्रोध या शोक करना, शराब पीना, रात-दिन बैठा रहना, आग तापना, इच्छा-विरुद्ध काम करना, घोड़े आदिकी सवारी करना, रातको जागना और दाँतुन करना—ये सब भी मूर्च्छा-रोगमें अपथ्य हैं।

मूर्च्छा-नाशक नुसख़े।

(१) शीतल जलके छींटे मारना, शीतल जलमें स्नान कराना, चन्द्रकान्त मणि या मोतियोंके हार पहनाना, कपूर और चन्दनका लेपन करना, पंखेसे हवा करना, शर्बत चन्दन या और शर्बत पिलाना, गुलाब-जल छिड़कना, गुलाबका अर्क़ और केवड़ेका अर्क़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिलाना; मिश्री मिलाकर और कपूरसे सुवासित करके आमले वग़ैरः के रसका पना पिलाना; मिश्री, चिरौंजी, दाख और महुएका रस मिलाकर पिलाना; मधुर औषधियोंके साथ पकाया हुआ दूध पिलाना; जंगली जानवरोंके मांस-रसमें अनारका रस मिलाकर पिलाना; जौ, लाल चावल, मटर और मूँगके भोजन देना—ये सब आहार-विहार सब तरहकी मूर्च्छाओंमें पथ्य या हितकारी हैं।

नोट—शीतल जलके छींटे और शीतल जलका स्नान प्रभृति शीतल उपाय पित्तकी मूर्च्छामें तो हितकारी हैं ही, पर वातज और कफज मूर्च्छामें कैसे हितकारी हो सकते हैं, यह सवाल मनुष्यके मनमें उठता है। उसका जवाब यही है, कि सभी मूर्च्छाओंमें "पित्त"की प्रधानता रहती है, अतः ये शीतल उपाय सभी तरहकी मूर्च्छाओंमें हितकारी हैं। वाग्भट्टने कहा है:—

मदेषु वातांपत्तघ्नं प्रायो मूर्च्छासु चेष्टते।
सर्वत्रापि विशेषेण पित्तमेवोपलक्षयेत्॥

प्रायः मद और मूर्च्छा-रोगोंमें वात-पित्त-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये और सब तरहके मद और मूर्च्छा-रोगोंमें, विशेषकरके, पित्तकी अधिकता समझनी चाहिये।

(२) एक माशे कपूर और छै माशे सफेद चन्दनको गुलाबके अर्क़में घिसकर, सारे शरीर, दिमाग़ और छातीपर लेप करनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(३) कुछ देर तक, हाथसे नाक और मुँहको बन्द रखनेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है। कहा है:—

नासावदनरोधेन नस्यैर्मरिचनिर्मितैः।
नरं जागरयेद्भूमौ मूर्च्छितं मन्दमारुतैः॥

मुँह और नाक बन्द करनेसे, कालीमिर्चकी नस्य देनेसे और हल्की-हल्की हवा करनेसे ज़मीनमें पड़े हुए बेहोश आदमीको होशमें लाना चाहिये।

(४) लोबानकी धूनी नाकमें देनेसे मूर्च्छा जाती रहती है।

(५) खीरा काटकर सुँघानेसे मूर्च्छा जाती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) कौंचकी सूखी फली शरीरमें रगड़नेसे मूर्च्छा जाती रहती है; पर रोगीके होशमें आनेपर, जहाँ कौंचकी फली रगड़ी हो वहाँ, "गायका घी" लगाना चाहिये, ताकि फलीका विष नाश हो जावे।

(७) बेरोंका गूदा, कालीमिर्च, ख़स और नागकेशरको बराबर-बराबर लेकर, सिलपर ठण्डे पानीके साथ महीन पीस लो और फिर ठण्डे पानीमें घोलकर पिला दो। इस नुसख़ेसे मूर्च्छित होशमें आ जाता है। सुपरीक्षित और सर्वोत्तम नुसख़ा है।

(८) छोटी पीपरोंका महीन चूर्ण "शहद" में मिलाकर चटानेसे मूर्च्छा-रोग नष्ट हो जाता है। सुपरीक्षित है।

(९) पंचमूलका कषाय—काढ़ा "मिश्री और शहद" मिलाकर पिलानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) कमलका कन्द या जड़, कमलकी नाल, पीपर और हरड़—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीस-छानकर "शहद" के साथ चटानेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है।

(११) स्त्रीका दूध पिलानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है। वाग्भट्टने स्त्रीका दूध पिलानेके साथ ही, उसीके दूधकी नस्य देनेकी भी राय दी है। कहा है:—

"पिवेद्वा मानुषी क्षीरं तेन दद्याच्च नावनम्"।

स्त्रीका दूध पीना चाहिये और उसीके दूधकी नास देनी चाहिये।

(१२) दाख, चीनी, अनार, धानकी खीलें, दही का तोड़ या दहीका पानी, नीले कमल और सफ़ेद कमल—इन सबका हिम या शीत-कषाय पीनेसे मूर्च्छा नष्ट हो जाती है।

नोट—हिमकी विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ ५५५ और पृष्ठ १८३ के नम्बर १५ में देखो।

(१३) "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १८०-१८४में लिखे हुए "पित्तज्वर-नाशक काढ़े" पिलानेसे मूर्च्छा-रोग चला जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) आमलोंके स्वरसके साथ पकाया हुआ घी पिलानेसे मूर्च्छा-रोग आराम हो जाता है।

(१५) सिरसके बीज, पीपर, कालीमिर्च, सैंधानमक, लहसन, मैनसिल और बच,—इनको बराबर-बराबर लेकर, गोमूत्रमें महीन पीस लो और अञ्जन-सा बनाकर आँखोंमें आँजो। इस अञ्जनसे मूर्च्छित होशमें आ जाता है।

(१६) शहद, सैंधानोन, मैनसिल और कालीमिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर, काजलके समान महीन पीस लो और आँखोंमें आँजो। इस अञ्जनसे भी मूर्च्छा जाती रहती है।

(१७) महुएका सार, सैंधानोन, बच, कालीमिर्च और छोटी पीपर—समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। फिर जलमें पीसकर नस्य दो। इस नस्यसे मूर्च्छा जाती रहेगी—रोगीको होश हो जायगा।

(१८) छोटी कटेरी, गिलोय, सोंठ और पीपरामूल—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बना लो। इस काढ़ेके पीनेसे दारुण मूर्च्छा नष्ट हो जाती है। अगर इस काढ़ेके पक जानेपर, इसमें छोटी पीपरोंका २ माशे चूर्ण भी मिला लिया जाय, तब तो कहना ही क्या? सुपरीक्षित है।

(१९) अगर मूर्च्छाका दौरा होता हो, तो शिरोविरेचन नस्य देकर अथवा तेज़ वमन करानेवाली दवा देकर अथवा ऐसे ही और उपाय करके मूर्च्छाको नाश करना चाहिये।

(२०) मूर्च्छा-रोगका हमला होते ही मुँह वग़ैरःपर शीतल जल या गुलाब-जलके छींटे मारने, फिर नर्मानर्म साफ बिछौनोंपर सुलाकर ताड़के पंखेकी हवा करनेसे मूर्च्छित होशमें आ जाता है।

(२१) अगर पानीके छींटे वग़ैरःसे रोगी होशमें न आवे, तो उसे "एमोनिया" सुँघाना चाहिये। अगर विलायती एमोनिया न हो, तो नौसादर ६ माशे और सूखा चूना ३ माशे,—एक शीशीमें रखकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुँघाओ अथवा इन दोनोंको हथेलीपर रखकर और ज़रा-सा पानी डालकर दूसरी हथेलीसे रगड़ो और सुँघाओ। यही "एमोनिया" है।

(२२) ताम्बेकी भस्म, खसका छना हुआ चूर्ण और नागकेशरका छना हुआ चूर्ण एक-एक माशे लेकर मिला लो। इसमेंसे तीन-तीन रत्ती चूर्ण, शीतल जलके साथ, लेनेसे मूर्च्छा इस तरह नष्ट हो जाती है, जिस तरह बिजलीसे वृक्ष।

(२३) पारेकी भस्म यानी रस-सिन्दूरको पीपलके चूर्ण और शहदके साथ चटानेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है। पर इसके साथ रोगीके ऊपर शीतल जलके छींटे मारने चाहिये और उसे शीतल जलमें डुबकी लगवानी चाहिये तथा ज़बर्दस्तीसे उसके अंग दबाने चाहियें।

नोट—रस-सिन्दूर और छोटी पीपरोंके पिसे-छने चूर्णको बराबर-बराबर लेकर और एकत्र मिलाकर रख लो। इसमेंसे चार-चार रत्ती चूर्ण ४ या ६ माशे शहदमें मिलाकर चटानेसे मूर्च्छा, भ्रम और संन्याससें अवश्य लाभ होता है। इसका नाम "सुधानिधि रस" है।

(२४) हारीत-संहितामें लिखा है, जिस मनुष्यकी संज्ञा जाती रहे, होश-हवास न रहें, उसका अँगूठा मरोड़ो और इसके बाद नाक मरोड़ो, पर इस तरह नहीं कि वे टूट जायँ, बल्कि इस तरह कि उनमें पीड़ा हो। अगर इतनेपर भी होश न हो, तो दाँत और नाखूनोंसे शरीरको पीड़ित करो और मस्तक तथा पीठमें आगमें तपाई हुई लोहेकी शलाका वग़ैरःसे दाह कर दो यानी दाग दो। अगर इन उपायोंसे भी बेहोश होश न करे, तो उसे हिंडोलेमें पटककर झुलाओ। उन्होंने कहा है:—

मूर्च्छातुरं सकल शीतल जलेन सिञ्चेत
संवीजयेच्च शिखिपिच्छकवीजनैस्तु।
दोलायनं हि विहितं मनुजस्य,
मूर्च्छामोहंभ्रमञ्च हरते च मदात्ययवा॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूर्च्छा-रोगीपर पानीके छींटे मारने चाहिये, मोरपंखके बने हुए पंखेकी हवा करनी चाहिये और दोले या हिंडोलेमें रोगीको झुलाना चाहिये। इन उपायोंसे मूर्च्छा, मोह, भ्रम और मदात्यय-रोग नाश हो जाते हैं।

वृन्द महाशय लिखते हैं:—

लुञ्चनं केशलोम्नाञ्च दन्तर्दशनमेवच।
आत्मगुप्ता च हर्षश्च हितस्तस्याऽवबोधने॥

मूर्च्छितको होशमें लानेके लिए, उसके सिरके बाल और शरीरके रोम नोंचने चाहिये, उसे दाँतोंसे काटना चाहिये और उसके शरीरमें कौंचकी फली घिसनी चाहिये तथा खुशी पैदा करनेवाली बातें कहनी चाहिये।

(२५) हारीत महाराज लिखते हैं, कि मूर्च्छा और मोहकी शान्तिके लिए, चतुर वैद्य शरीरके खूनको घटाते हैं। यह फ़स्द खोलने या रक्तमोक्षण करनेका इशारा है। हिकमतवाले भी ऐसी ही राय देते हैं। पर यह काम बड़ी सावधानी और समझ-बूझके साथ करना चाहिये। जिसे फ़स्द खोलनेका अनुभव हो, वही इस कामको करे।

(२६) मुलहटीके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "घी" भी मूर्च्छा-रोगमें फायदा करता है।

(२७) आमलोंके स्वरसमें "धानकी खीलोंका चूर्ण और मिश्री" मिलाकर पीनेसे भी मूर्च्छामें लाभ होता है।

(२८) सूखे हुए आमलोंकी गुठलियाँ निकालकर छिलकोंको महीन पीस लो, फिर उन्हें ईखके रसमें ४८ घण्टे तक खरल करो। जितना ही ईखका रस पिलाया जा सके, पिलाओ। अन्तमें सुखाकर फिर पीसो और कपड़ेमें छानकर रख लो। इस चूर्णको दो-दो या तीन-तीन माशेकी मात्रासे, दिनमें दो बार, ताज़ा पानीके साथ, फँकानेसे मूर्च्छा, प्यास, प्रमेह, दाह और पित्तके विकार शान्त हो जाते हैं। अनेक बारका परीक्षित है।

(२९) केवड़ेका अर्क़ और सफेद चन्दन घिसकर शीशीमें रख लो। शीशीके मुँहपर महीन कपड़ा बाँध दो और हिला-हिलाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोगीको सुँघाओ। इससे मूर्च्छा और गरमीका सिरदर्द आराम हो जाता है। सुपरीक्षित है।

(३०) ब्राह्मीके पत्तोंके रसके साथ "घी" पकाकर सेवन करनेसे पित्तजन्य मृगी और मूर्च्छामें लाभ होता है।

(३१) ब्राह्मीके पत्तोंका रस १ तोले, कुलींजन ३ माशे और शहद ३ माशे मिलाकर, सवेरे-शाम, चाटनेसे उन्माद, चित्तभ्रम, मूर्च्छा और मृगी-रोगमें अवश्य लाभ होता है। इन रोगोंपर "ब्राह्मी" अक्सीर दवा है।

(३२) सफेद कमलकी पंखड़ी, मुलहटी और मिश्री—इनका काढ़ा, शीतल होनेपर, पीनेसे पित्तज्वर और पित्तकी मूर्च्छा नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३३) बाँझ-ककोड़ेकी जड़को "घी" में घिसकर और शक्कर मिलाकर नास लेनेसे मृगी और मूर्च्छा नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३४) केवड़ेकी बालका चूरा तम्बाखूकी तरह बारम्बार सूँघनेसे मृगी और मूर्च्छामें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३५) सिरका, गुलाबजल और धनिया—इन तीनोंको एक शीशीमें भरकर सुँघानेसे ग़श या मूर्च्छा-रोगसे आदमी उठ बैठता है। पर इसे, होश न हो तबतक, बारम्बार सुँघाना चाहिये। साथ ही गुलाबका अर्क़ मिश्री मिला कर रोगीको पिलाना चाहिये और पाँवके तलवोंमें मक्खनकी मालिश करनी चाहिये। इससे दिलमें ताक़त आती है। याद रखो, मूर्च्छा-रोग दिलसे सम्बन्ध रखता है।

अश्वगन्धारिष्ट।

(३६) नागौरी असगन्ध २०० तोले, तालमूली ८० तोले, मँजीठ ४० तोले, बड़ी हरड़ ४० तोले, हल्दी ४० तोले, दारुहल्दी ४० तोले, मुलेठी ४० तोले, रास्ना ४० तोले, बिदारीकन्द ४० तोले, अर्जुनकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छाल ४० तोले, नागरमोथा ४० तोले और तेवड़ी ४० तोले, अनन्तमूल ३२ तोले, श्यामलता ३२ तोले, सफेद चन्दन ३२ तोले, लाल चन्दन ३२ तोले, बच ३२ तोले और चीतेकी छाल ३२ तोले, सबको जौकुट करके १२ मन ३२ सेर जलमें पकाओ। जब ६४ सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतारकर कपड़ेमें छान लो और चीनी या मिट्टीके चिकने और मज़बूत घड़ेमें भर दो।

इसके बाद धायके सूखे फूल ८ सेर, उत्तम शहद अड़तीस सेर, सोंठ ८ तोले, कालीमिर्च ८ तोले, छोटी पीपर ८ तोले, दालचीनी १६ तोले, तेजपात १६ तोले, इलायची १६ तोले, फूलप्रियंगू १६ तोले और नागकेशर ८ तोले—इन सब दवाओंको पीस-छानकर उसी घड़ेमें भर दो और मुँहको बन्द करके मुद्रा दे दो और १ महीने तक मत छेड़ो। महीने भर बाद, छानकर बोतलोंमें भर लो। यही "अश्वगन्धारिष्ट" है।

सेवन-विधि—१ महीनेसे ६ महीनेके बालकको ५ से १२ बूँद तक; ३ महीनेसे २ साल तकके बालकको १५ से ३० बूँद; दो से ५ वर्ष तकके बालकको ३० से ६० बूँद, ५ से १२ वर्ष तककी उम्र-वालेको १ तोले तक; इसके बाद जवान आदमीको बलानुसार १॥ तोले-से ४ तोले तककी मात्रा है।

रोग-नाश—इसके सेवन करनेसे २० तरहके प्रमेह, ध्वजभङ्गता, नामर्दी, दिमाग़की कमज़ोरी, नज़रकी कमज़ोरी, याद्दाश्त कम होना, आँखोंके आगे अँधेरी आना, मूर्च्छा, भ्रम, संन्यास, मानसिक विशृङ्खलता, उत्साहकी कमी, किसी काममें दिल न लगना, ज़रूरतसे ज़ियादा डरना, सिर घूमना, छातीका दर्द, थोड़े परिश्रमसे थकावट आना प्रभृति तकलीफें निश्चय ही आराम हो जाती हैं।

यह "अश्वगन्धारिष्ट" उम्र बढ़ानेवाला, पुष्टि करनेवाला, पाचन-शक्ति बढ़ानेवाला, धातुओंको शुद्ध करनेवाला, दुबले शरीरको पुष्ट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करनेवाला, सदा एक समान आरोग्य रखनेवाला; खूनके लाल कणोंको बढ़ानेवाला, इन्द्रियोंको बलवान करनेवाला, स्मरणशक्तिको बढ़ानेवाला, मेधाशक्ति की वृद्धि करनेवाला, नष्ट शुक्र या वीर्यको बढ़ानेवाला और स्वप्नदोषको नाश करनेवाला है। इतना ही नहीं, इस अमोघ शक्तिशाली महा कल्याणदायिनी महौषधिको यथाविधि पीनेसे स्नायु-तन्तु सबल होकर शरीरके यन्त्र बलवान होते हैं। इससे स्त्री-पुरुषोंके रज-वीर्य शुद्ध होकर गर्भोत्पादक कीटाणु सजीव होते हैं और निःसन्तानके सन्तान होती है।

विशेष चिकित्सा।

रक्तजादि मूर्च्छा-नाशक नुसखे।

(३७) खूनी मूर्च्छामें शीतल चिकित्सा करनी चाहिये। पंखेकी हवा और शीतल जलके छींटे आदि नं० १ में लिखे उपाय करने चाहिये।

(३८) शराबकी मूर्च्छामें फिर दुबारा शराब पीनी चाहिये अथवा सुखसे सोना चाहिये। किन्तु वृन्द लिखता है—

"मद्यजायां वमेत्सद्यो निद्रां सेवेत वा सुखम्।"

मद्यसे हुई मूर्च्छामें तत्काल वमन या क़य करनी चाहिये अथवा सुखपूर्वक सोना चाहिये।

(३९) विषकी मूर्च्छामें विष-नाशक दवाओंसे काम लेना चाहिये।

(४०) अगर बालकको कृमियोंकी वजहसे मूर्च्छा होती हो, तो केशर और कपूर दूधके साथ घिस-घिसकर पिलानेसे अवश्य लाभ होता है। कृमि नाश करनेमें यह नुसखा रामवाण है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४१) बालकको कृमियोंकी वजहसे मूर्च्छा आती हो, तो सफ़ेद प्याज़ काटकर सुँघाओ; चन्दन और कपूर पीसकर सिरपर लेप करो; सफ़ेद प्याज़का रस आँजो और सफ़ेद प्याज़का रस पिलाओ। सफ़ेद प्याज़का रस नाकमें डालनेसे भी मूर्च्छा और उन्मादमें लाभ होते देखा है। यह प्याज़का नुसख़ा बड़े और बालक दोनोंको लाभदायक है। सफ़ेद प्याज़ काटकर मीठे दहीमें मिलाने और मिश्री डालकर खानेसे भी पित्तविकार और मूर्च्छामें लाभ होता है।

चोट लगने या गिरने-पड़नेसे हुई मूर्च्छाकी चिकित्सा।

(४२) शुद्ध शिलाजीत २ तोले और पीपरकी लाख ८ तोले लेकर पीस लो और शीशीमें रख दो। इसकी मात्रा दो या तीन माशेकी है। दिनमें तीन-चार बार, एक-एक मात्रा खाकर, गरम दूध पीनेसे रक्तपित्त—नाक-कान आदिसे खून गिरना, दिमाग़ या छातीमें टक्कर लगने या ऊँचेसे गिरनेपर मूर्च्छा आना आदि रोगोंमें इस नुसख़ेसे बड़ा लाभ होता है। जो आदमी चोट लगनेसे बेहोश हो गये थे, उनको हमने यही नुसख़ा सेवन कराया और अच्छा लाभ उठाया।

हिस्टीरियाकी मूर्च्छाको चिकित्सा।

(४३) अगर हिस्टीरिया-रोगीकी मूर्च्छा दूर करनी हो, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहियेः—

(१) अगर रोगीकी दाँती भिंच जाय, तो घबराना न चाहिये। अगर रोगीको बेहोश हुए देर हो जाय, तो भी चिन्ताकी बात नहीं है। पहले रोगीके मुँहपर तीन-चार बार जलके छींटे दो। अगर इससे भी होश न हो, तो एक लोटा पानी धीरे-धीरे धाराके रूपमें रोगीके सिरपर डालो। अगर इससे भी लाभ न हो, तो सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—एक-एक रत्ती पीस-छानकर, काग़ज़की फूँकनीमें रखकर नाकमें फूँको। अगर इस उपायसे भी मूर्च्छा न खुले, तो नीचेका उपाय करोः—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) नौसादर और चूना बराबर-बराबर लेकर एक शीशीमें भर दो और कुछ देर तक काग बन्द करके रक्खी रहने दो। फिर उसका मुँह खोलकर रोगीकी नाकके सामने लगा दो, जिससे उसकी तेज़ गन्ध नाकमें जावे। इसको रोगीकी नाकके सामने लगाकर झट हटा लो, बहुत देर तक नाकके सामने मत रखो। हिस्टीरिया-रोगी जो मुर्देकी तरह बेहोश पड़ा होगा, फौरन उठ आवेगा। परीक्षित है।

(३) कालीमिर्चोंका चूर्ण तुलसीके पत्तोंके रसमें पीसकर नास देनेसे बेहोश रोगी तत्काल होशमें आ जाता है।

(४) लौंगको दूध या घीमें घिसकर आँखोंमें आँजनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(५) लौंग, सोंठ, मिर्च और पीपरोंको महीन पीसकर दाँतों या मसूड़ोंपर मलनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(६) मोरपंखकी धूनी देनेसे अथवा मोरपंखके चंदोवेको जलाकर, उसकी राख शहदमें मिलाकर, रोगीके दाँतोंपर घिसनेसे दाँत खुल जाते हैं और मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(७) सफेद प्याज़ कूटकर नाकके सामने रखनेसे हिस्टीरियाकी मूर्च्छा दूर हो जाती है।

(८) महुएके बीज, सहँजनेके बीज, बायबिडंग और कालीमिर्च—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और हिस्टीरियावालेको सुँघाओ, फ़ौरन होश होगा।

नोट—इन उपायोंमेंसे किसी न किसी उपायसे हिस्टीरियावालेको होश आ जायगा। यदि इनसे लाभ न हो, तो रोगीको पड़ा रहने दो; कुछ समय बाद आप ही होश हो जायगा। ये सब हिस्टीरियाकी मूर्च्छा नाश करनेके परीक्षित उपाय हैं। इस रोगके लक्षण और चिकित्सा हम आगे अपस्मार प्रकरणमें लिखेंगे। आजकल यह रोग औरतोंको बहुत होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

संन्यास-रोगकी चिकित्सा।

हृदयमें ठहरे हुए वात, पित्त और कफ—हृदयको दूषित करके "संन्यास" रोग पैदा करते हैं। उससे मनुष्य मुर्देके समान हो जाता है। अगर संन्यासवालेका इलाज जल्दी ही नहीं किया जाता, तो वह शीघ्र ही मर जाता है। यह रोग बहुत ही भयानक है।

संन्यास-रोगी मुर्देके समान तो हो ही जाते हैं। उस समय वे जीते हैं या मर गये, इसकी पहिचान करना कठिन हो जाता है, अतः बहुत-से अनाड़ी रोगियोंको मरा हुआ कह देते हैं और घरवाले "राम नाम सत्य है" चिल्लाते हुए बेचारोंको मरघटपर लेजाकर फूँक आते हैं, अतः बिना परीक्षा किये संन्यास-रोगीको जलाना या गाड़ना भयानक भूल है।

संन्यास-रोगी या मूर्च्छा-रोगी वास्तवमें मरा है या नहीं, इसकी परीक्षा करनेकी उत्तमोत्तम पाँच तरकीबें हमने "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पाँचवें भागके पृष्ठ १६०–१६१ में लिखी हैं। वैद्य ही नहीं प्रत्येक आदमीको, चाहे वह वैद्यका धन्धा करता हो और चाहे न करता हो, उन तरकीबोंको जरूर याद कर लेना चाहिये।

संन्यास-रोग होते ही, बिना ज़रा-सी भी देर किये, वैद्यको शीघ्र-फलदायिनी क्रियाएँ करनी चाहिये। वाग्भट्ट आदि सभी आचार्योंने नीचे लिखी चिकित्सा करनेकी राय दी है:—

(१) रोगीकी आँखोंमें तेज़ अञ्जन आँजो और नाकमें अति तीव्र नस्य दो।

(२) नाकमें धूनी दो और फूँकनीसे प्रधमन नस्य नाकमें फूँको।

(३) नाखूनोंके बीचमें सूई चुभाओ या गरम लोहेकी सलाईसे नखोंके भीतर दागो।

(४) बाल उखाड़ो और रोएँ खींचो।

(५) दाह-कर्म करो। हारीतने मस्तक और पीठमें दागनेकी राय दी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) दाँतोंसे काटो।

(७) बिच्छुओंसे कटाओ।

(८) कालीमिर्च और बिजौरा नीबू आदिका रस मुँहमें डालो।

(९) शरीरपर कौंचकी फलियाँ घिसो। जब रोगी होशमें आ जाय; जहाँ फलियाँ घिसो वहाँ, गायका ताज़ा मक्खन लगाओ।

(१०) होशमें आये हुए रोगीको "लहसनका रस" पिलाओ अथवा सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सैंधानोन मिलाकर बिजौरे नीबूकी केशर खिलाओ। स्रोतोंकी सफाईके लिए हल्का, कड़वा, तीक्ष्ण और गरम अन्न खिलाओ।

(११) बालकोंको संन्यास-रोग हो, तो कास्टर आयल या रैंडीका विशुद्ध तेल, अवस्था और बलानुसार, पिलाकर दस्त करा दो और पेटमें स्वेद करो। अगर कृमिरोगकी वजहसे संन्यास-रोग हो, तो कृमिनाशक दवा खिलाओ-पिलाओ। कृमिरोगका इलाज "चिकित्सा-चन्द्रोदय" तीसरे भागमें लिखा है।

भ्रमकी चिकित्सा।

(१) लाल रंगका दो तोले जवासा लाकर, पाव-भर पानीमें औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो और गायका आधी छटाँक "घी" मिलाकर पिला दो। इसका नाम "दुरालभा काथ" है। इसके पीनेसे ३।४ दिनमें ही "भ्रम" नाश हो जाता है। सुपरीक्षित है। वैद्यजीवनमें लिखा है:—

दुरालभाकषायस्य घृतयुक्तस्य सेवनात।
भ्रमः शाम्यति गोविन्दचरणस्मरणादिव॥

जवासेके काढ़ेमें घी डालकर पीनेसे भ्रम इस तरह नाश हो जाता है, जिस तरह गोविन्दके याद करनेसे संसारका भ्रम नाश हो जाता है। और भी कहा है:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिवेद्दुरालभाक्वाथं सघृतं भ्रमशान्तये।

जवासेका काढ़ा घी मिलाकर पीनेसे भ्रमादि रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—जवासा १ तोले, छिली मुलेठी १ तोले, छोटी इलायचीके दाने २ रत्ती और मिश्री २ तोले—इन सबको कूट-पीसकर डेढ़ पाव पानीमें औटाओ; जब चौथाई पानी बाक़ी रह जाय, मलकर छान लो और ४ माशे "घी" मिलाकर पीलो। यह १ ख़ूराक है। इसी तरह सवेरे-शाम इस काढ़ेके पीनेसे भ्रम-रोग, घुमरी आना, चक्कर आना, शरीर घूमना और दिल घबराना प्रभृति शिकायतें नाश हो जाती हैं। अनेकों बारका परीक्षित नुसख़ा है। इसी तरह केवल दो तोले जवासेका काढ़ा भी बनता है।

(२) बरियारेके बीज ६ माशे और मिश्री १ तोले मिलाकर खानेसे भ्रम निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) त्रिफलेके तीनों फलोंके छिलके तीन-तीन माशे लेकर, महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो और तोले भर "शहदमें" मिलाकर रातको चाटो और सवेरे ही ३ माशे अदरख और ६ माशे गुड़ मिलाकर खाओ। इन उपायोंसे "भ्रम" नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) आमलोंके रसके साथ पकाया हुआ "कल्याण घृत" पिलानेसे भ्रम नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५) हरड़ोंके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "घी" पिलानेसे भ्रम नाश हो जाता है।

(६) सोंठ, पीपर, शतावर और हरड़ चार-चार तोले और गुड़ २४ तोले,—इन सबको मिलाकर बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे भ्रम नाश हो जाता है।

(७) ताम्बेकी भस्मको, जवासेके काढ़ेमें घी मिलाकर, उसके साथ खानेसे भ्रम तुरन्त ही भाग जाता है।

नोट—जवासेका काढ़ा १ छटाँक तैयार करो, उसमें आधी छटाँक घी मिला दो। फिर उसमें दो रत्ती ताम्बा-भस्म मिलाकर पीलो। यह नुसख़ा बहुत उत्तम है। कई बार परीक्षा की है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) "दस सालका पुराना घी" भी भ्रम-रोगमें बहुत फायदा करता है। कहा है:—

व्यजनांजन शीताद्यो मूर्च्छासु भ्रमके घृतम्।

मूर्च्छा-रोगमें ताड़ आदिके पंखोंकी शीतल हवा, अञ्जन और अत्यन्त शीतल उपचार करने चाहिये तथा भ्रम-रोगमें घीका सेवन करना चाहिये।

हिकमतका मत।

जिस रोगमें हरेक चीज़ घूमती हुई जान पड़ती है, उसे "द्वार" कहते हैं और जिस रोगमें आँखोंके सामने अँधेरी आती है, उसे "सदर" कहते हैं। यह रोग दोषोंकी भाफके हिलने और उसके ब्रह्माण्डमें भरनेसे होता है।

(९) धनिया ६ माशे और आमले ६ माशे कुचलकर, रातको जलमें भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर और २ तोला मिश्री मिलाकर पीलो। इससे पित्तके कारणसे हुआ भ्रम-रोग आराम हो जाता है।

(१०) सरफोंका, पिसा हुआ धनिया और हरड़की जड़—कुल मिलाकर साढ़े तीन तोले लेलो और काढ़ा करके ७ दिन तक पीओ। इसके पीनेसे "द्वार" रोग नाश हो जाता है।

(११) पटसनके बीज पीसकर और गेहूँके आटेमें मिलाकर रोटी पका खानेसे "द्वार" या भ्रम-रोग जाता रहता है।

(१२) सफेद खशखाश, धनिया और बिनौलोंकी मींगी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर कुल चूर्णके वज़नसे दूनी मिश्री पीसकर मिला दो और हर दिन १ से ३ माशे तक अर्क़ गुलाब या पानीके साथ फाँको। इस चूर्णसे "द्वार" और "सदर" यानी घुमरी आना और अँधेरी आना दोनों आराम हो जाते हैं।

तन्द्रा-निद्रा नाशक नुसखे।

(१) घोड़ेके मुँहके झागोंमें कालीमिर्च घिसकर, दोनों आँखोंमें आँजनेसे तन्द्रा जाती रहती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) सैंधानोन, सहँजनेके बीज, सरसों और कूट—इनको ३।३ माशे लेकर महीन पीस लो। फिर बकरीके पेशाबमें घोटकर, नाकमें नस्य देनेसे घोर तन्द्रावाला भी चैतन्य हो जाता है। परीक्षित है।

(३) घोड़ेकी लारमें सैंधानोन, कपूर, मैनसिल, पीपर और शहदको महीन पीसकर आँखोंमें आँजनेसे निद्रा और तन्द्रा नाश हो जाती हैं।

(४) सोंठ, पीपर, बच और सैंधानोन—बराबर-बराबर लेकर और महीन पीस-छानकर नस्य देनेसे घोर तन्द्रा भी नष्ट हो जाती है।

(५) कटेहरी, गिलोय, पोहकरमूल, सोंठ, भारंगी और हरड़—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाने और पीनेसे तन्द्रा और निद्रा दोनों नाश हो जाती हैं।

(६) करंजुएके बीज, सैंधानोन, लहसनके पत्तोंका रस, भाँगरा, हरड़ और बच—इनको बराबर-बराबर लेकर, पानीके साथ खूब महीन पीस लो और आँखोंमें आँजो। इस अञ्जनसे तन्द्रा नाश हो जाती है।

(७) वचको महीन पीसकर, उसका अञ्जन नेत्रोंमें लगाने तथा नस्य देने और रुधिरस्राव करानेसे तन्द्रा-रोग नाश हो जाता है। कहा है:—

वचाञ्जनं स्यात्तन्द्रायां नस्यासृक्स्रावणौ तथा।

(८) सिरका सूँघनेसे नींदका ज़ियादा आना मिट जाता है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, सिर या भेजेमें अधिक मलके जमा होनेसे यह रोग होता है। इस रोग और द्वार तथा सदर रोगमें "इत्रीफल" बहुत फ़ायदा करता है। "इत्रीफल"की तरकीब नीचे लिखते हैं:—

काबुली हरड़की छाल, पीली हरड़की छाल, आमलेकी छाल, बहेड़ेका बक्कल और काली हरड़—ये सब पाँच-पाँच तोले लो। गुलाबके फूल २० माशे, सनाय २० माशे, तुरबुदकी छाल २० माशे और सोंठ २ माशे इनको कूट-पीसकर छान लो और बादामके तेल में भून लो। इसके बाद, इसमें तिगुना शहद या मिश्री मिला दो। इसी को "इत्रीफल मुलय्यन" कहते हैं। इससे स्वभाव नरम होता और हानिकारक दोष दिमाग़ और पक्काशयसे निकल जाते हैं। इससे कानके शब्द, भिनभिनाहट और नेत्रों की स्याही दूर होती है। इसके सिवा चक्कर आना, शरीर घूमना, नेत्रोंके सामने अँधेरी आना और बहुत नींद आना आराम होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सकतेपर हकीमी नुसखे।

(१) स्त्रीका दूध नाकमें टपकाने और सिरपर दुहनेसे मूर्च्छामें लाभ होता है। अगर स्त्रीका दूध न मिले, तो बकरीके दूधसे काम लेना चाहिये।

(२) खीरे-ककड़ीके बीजोंका पानी थोड़े-से सिरकेमें मिलाकर शीशीमें रख लो। इसके सूँघनेसे मूर्च्छामें लाभ होता है।

(३) हरी कासनीके रस और तरबूजके पानीमें सफेद चन्दनको घिसो और जरा-सा कपूर भी मिला लो। इसके सूँघनेसे मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(४) चन्दन और कपूर घिसकर और काहूके पत्तोंके रसमें मिला कर नाकमें टपकानेसे गर्मीकी मूर्च्छा नाश हो जाती है।

(५) कुन्दश, पपड़िया कत्था और एलुवा इनको चुकन्दरके रसमें घोटकर कजली कर लो और छान लो। इसमेंसे कुछ बूँदें नाकमें टपकानेसे होश हो जाता है।

(६) जरा-सी हींग अर्क़ सौंफमें पीसकर कण्ठमें टपकानेसे मूर्च्छा या सकतेमें लाभ होता है।

(७) हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है कि, सकतेकी बीमारीमें हाथ-पाँव मलना और बाँधना अच्छा है। अगर यह रोग खूनसे हो, तो सरेरुकी फ़स्द खोलनी चाहिये। अगर कफ़की अधिकतासे हो, तो बस्ति-कर्म और शाफ़ेके ज़रियेसे मल निकालना चाहिये। कानमें दवा टपकाना, नाकमें सुँघाना और वमन कराना भी अच्छा है।

नोट—अगर सकतेवालेका साँस चलता हो, तो आराम होनेकी उम्मीद है। अगर साँस न चलता हो, तो आराम होनेकी आशा नहीं। सकता वह रोग है, जिसमें आदमी हिल-डुल भी नहीं सकता—रोगी ठीक मुर्दा-सा मालूम होता है। इसका मुख्य कारण भेजेमें मलकी गाँठ पड़ना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

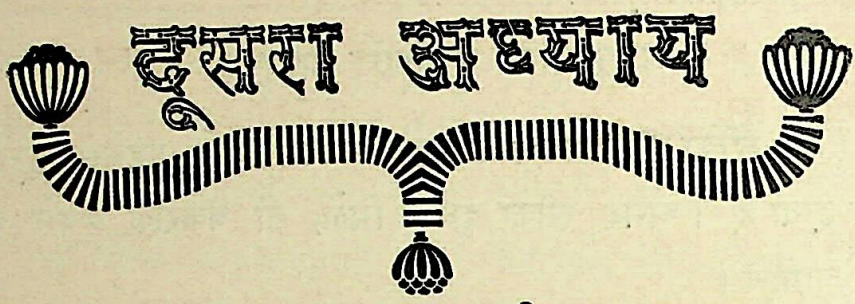

मदात्यय-वर्णन ।

जिस चीज़को आजकल शराब कहते हैं, उसे ही संस्कृत-भाषामें मद्य या मदिरा कहते हैं। मदिरा पीनेकी चाल आज-कलकी या सौ दो सौ बरसकी नहीं है। आयुर्वेद-ग्रन्थ और पुराणादि पढ़नेसे मालूम होता है, कि मदिरा-पानकी चाल उस समयसे है, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते। लाखों-करोड़ों बरस पहले रामचन्द्रजीके ज़मानेमें इसे पीनेवाले पीते थे और रामचन्द्रजीके बाद कृष्णचन्द्रजीके समयमें, जिसे पाँच हज़ार बरससे ज़ियादा नहीं हुए, लोग इसे पीते थे। पुराणोंसे मालूम होता है, कि यह क्षत्रियोंके पीनेकी चीज़ थी। और लोग क्यों नहीं पीते थे, यह हमारी समझमें नहीं आता। अगर इससे धर्महानि होती है, तो इसे चारों वर्णोंमेंसे किसीको भी न पीना चाहिये। क्या क्षत्रियोंपर शराबके दुर्गुणोंका प्रभाव नहीं होता? यह असम्भव है। क्योंकि जैसे शरीर क्षत्रियोंके हैं, वैसे ही ब्राह्मण और वैश्यादिकोंके हैं। अगर इससे स्वास्थ्यलाभ होता है, रोगोंका नाश होता है, तो इसका पीना सभीके लिए ज़रूरी है। आयुर्वेदमें ऐसा कहीं नहीं लिखा कि, इसको क्षत्रिय ही पीवें; और वर्णके लोग न पीवें। हाँ, साधु, संन्यासी या वैरागियोंको यह न पीनी चाहिये, क्योंकि इससे स्त्री-गमनकी इच्छा प्रबल हो उठती है। संसार-त्यागियोंका और स्त्रियोंका क्या मेल? असल बात यह है, कि शराब पीना बुरा नहीं, पर उसका बेक़ायदे पीना बुरा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्न खाना अच्छा है, पर उसको नियमविरुद्ध या नाक तक ठूँस-ठूँस-कर खाना बुरा है। विष खानेसे मृत्यु हो जाती है, पर नियमानुसार अल्प मात्रामें खानेसे वही प्राणनाशक विष अमृतका काम करता है। आयुर्वेदमें लिखा है:—

मद्यं स्वभावतः प्राज्ञैर्यथैवान्नं तथा स्मृतम्।
अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं रसायनम्॥
विधिना मात्राया काले हितैरन्नैर्यथाबलम्।
प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतं यथा॥

विद्वानोंने कहा है, कि मद्य स्वभावसे ही अन्नके समान है। अगर वह युक्तिके साथ सेवन नहीं किया जाता, तो अनेक रोग पैदा करता है; पर अगर युक्तिके साथ पिया जाता है, तो रसायनका काम करता है।

जो मनुष्य आनन्दके साथ, विधिपूर्वक, यथायोग्य समयपर, मात्रानुसार, बलाबल-अनुसार, हितकारी अन्नोंके साथ, मद्य पीता है, उसे मद्य अमृतके समान गुण करता है।

मतलब यह है, कि जिस तरह अन्न शरीर-रक्षक होनेपर भी, बेक़ायदे खानेसे प्राणनाशक होता है, पानी प्राणरक्षक और प्राणीका जीवन होनेपर भी, बेक़ायदे या बहुत ज़ियादा पीनेसे अनेक रोग पैदा करनेवाला है; कसरत शरीरको हृष्ट-पुष्ट, बलिष्ट और सुन्दर-सुडौल करनेवाली होनेपर भी, बेक़ायदे की जाने या बहुत ही ज़ियादा की जानेसे भ्रम, श्वास, खाँसी और शोषादि रोग पैदा कर देती है; उसी तरह शराब बल, तेज, पुरुषार्थ और फुरती आदि बढ़ानेवाली होनेपर भी, बहुत ही ज़ियादा या बेक़ायदे पीयी जानेसे नाना प्रकारके रोग कर देती है। जो दोष शराबमें हैं, वही अन्नमें भी हैं। अगर अन्नमें गुण हैं, तो शराबमें भी गुण हैं। हाँ, फ़र्क भी ज़रूर है। अन्न बिना मनुष्य जी नहीं सकता, पर शराब बिना जी सकता है। अन्नकी ज़रूरत पहली है, पर शराबकी ज़रूरत उसके बादकी है। ख़ैर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हम अब शराबके गुण-दोष, उसकी सेवन-विधि आदि शास्त्रोंसे लिखते हैं; क्योंकि शराब त्याज्य और घृणित होनेपर भी पीयी जाती है और पीयी जायगी। अगर संसारमें इसका नाम भी न रहे, तो सबसे अच्छा। पर यह असम्भव है, इसलिये लोगोंको इसके सम्बन्धकी सभी बातें जाननी चाहिये।

शराबकी तारीफ।

मनुष्य-शरीरमें ओजका प्रधान स्थान हृदय है। मद्य या शराब उस हृदयमें घुसकर, अपने दश गुणोंसे ओजके दश गुणोंको क्षुभित करके, चित्तमें विकार उत्पन्न करती है। हृदयमें शराबके पहुँचनेसे हर्ष, प्यास, रतिसुख और प्रकृतिके अनुसार नींद तक—रजोगुण और तमोगुणके विचित्र विकार उत्पन्न होते हैं। ये मद्यके स्वरूप या लक्षण हैं।

जो लोग मद्यसे मदका सुख चाहें, वही मद्यको युक्तिपूर्वक पीवें। क्योंकि युक्तिके साथ पीनेसे मद्य तत्काल हर्ष, ओज, बल, पुष्टि, आरोग्यता और पुरुषार्थ उत्पन्न करता है। युक्तिसे पीयी हुई मदिरा या शराब अग्निको दीप्त करती, स्वर और वर्णको शुद्ध करती, तृप्ति करती, धातुओंको पुष्ट करती, बल बढ़ाती, भय-शोक और थकानको हरती, नींद न आनेवालोंको नींद लाती, गूँगोंकी बोलीको ठीक करती, अत्यन्त नींद आनेको नाश करती, मलबन्धवालोंका मलबन्ध तोड़ती—यानी क़ब्ज नाश करती, बध-बन्धन और क्लेशादि दुःखोंके ज्ञानको हरती, युक्तिसे पीयी हुई शराब बूढ़े आदमियोंको भी स्वाभाविक रीतिसे परमानन्द उत्पन्न करती है। अनेक प्रकारके दुःखोंसे दुःखी, ज़ख्मी, तरह-तरहके क्लेश और मुसीबतोंमें फँसे हुए और शोक-चिन्तासे घबराये हुए पुरुषोंके लिए शराब जगत्में विश्राम रूप है। "चरक"में ही लिखा है कि, शराबके समान शोक हरनेवाली दूसरी चीज़ जगत्में नहीं है। कैसा ही दुखिया क्यों न हो, इसके पीते ही मस्त हो जाता है, उसके सारे रंजोग़म हवा हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहते हैं, शराब पीनेसे मनुष्य निर्लज्ज और बेहया हो जाता है, अगम्या स्त्रियोंमें गमन करने लगता है और बहिन-बेटी तकसे नहीं बचता, यह बात ठीक है; पर सभी शराब पीनेवाले ऐसा नहीं करते। एक ही शराब तीन तरहके आदमियोंमें तीन तरहका मद पैदा करती है। अधिक सतोगुणवाले पुरुष अगर शराब पीते हैं, तो उन्हें और ही तरहका मद आता है। अधिक रजोगुणवाले अगर शराब पीते हैं, तो उन्हें और ही तरहका मद आता है; इसी तरह तमोगुणी पुरुषोंको और ही तरहका मद आता है। जिस तरह आगपर तपानेसे सोनेकी उत्तमता, मध्यमता और अधमता मालूम हो जाती है; उसी तरह शराबसे पुरुषकी उत्तम, मध्यम और अधम प्रकृतिकी परीक्षा हो जाती है।

त्रिगुण मदके लक्षण।

मद तीन तरहके होते हैं:—

(१) सात्त्विक मद।

(२) राजस मद।

(३) तामस मद।

नोट—सुश्रुतने चौथा मद और माना है, उसका नाम "अति तामस मद" है।

पहले मदके लक्षण।

पहला मद स्मरणशक्ति, प्रीति, सुख, भूख, प्यास, निद्रा और कामदेवको बढ़ाता है; पढ़ने और गानेकी रुचि करता और स्वरको सुन्दर करता है। यह मद, मनको विकृत करनेपर भी, दुःखदायी नहीं होता। यही "सात्त्विक मद" है।

दूसरे मदके लक्षण।

दूसरा मद बुद्धि, स्मरणशक्ति और बोलनेकी शक्तिको कम करता है। इस मदवाला आदमी विरुद्ध चेष्टायें करता है। अत्यन्त प्रचण्ड होकर मतवालेके-से काम करता और बारम्बार आलस्य तथा नींदसे पीड़ित होता है। इसीको "राजस मद" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीसरे मदके लक्षण।

तीसरे या तमोगुणके मदसे मतवाला मनुष्य मदके परवश हो जाता है। वह स्वतंत्र होकर अगम्या स्त्रियोंसे भोग करता है, अभक्ष्य भक्षण करता है, माता-पिता आदि बड़ोंका अपमान करता है, उसका ज्ञान नष्ट हो जाता है, उसे होश नहीं रहता और वह दिलमें छिपी हुई बातोंको प्रकाशित करता है।

सुश्रुतोक्त चौथे मदके लक्षण।

चौथे मदवाला आदमी बेहोश हो जाता है, टूटे हुए वृक्षकी तरह क्रिया-रहित होकर पृथ्वीपर गिर पड़ता है, मृतकसे भी अधिक मृतक हो जाता है और उसे कार्य-अकार्यकी सुध-बुध नहीं रहती। इसीको "सुश्रुत" ने "अति तामस मद" लिखा है।

खुलासा यह है कि, शराब पीनेसे जिनकी बुद्धि, स्मरणशक्ति और प्रीति आदि बढ़ती हैं, वे अधिक सतोगुणी हैं। जो पागलोंकी-सी सूरत बना लेते हैं और पागलोंके-से ही काम करते हैं, वे अधिक रजोगुणी हैं। जो शराब पीकर इतने बेहोश हो जाते हैं कि, अगम्या स्त्रियों तकसे भोग कर बैठते हैं, न खाने योग्य गोमांस आदिक खा लेते हैं और गुरुजनोंका अनादर करते हैं तथा ज्ञान-रहित होकर छिपी बातोंको बकते हैं, वे तमोगुणी हैं। हमने फौजमें रहते समय देखा था कि बड़े-बड़े खान्दानी अँगरेज़ शराब पीकर पढ़ते-लिखते रहते थे, मिलनेवालोंसे होश-हवासमें सभ्यतापूर्व्वक बातें करते थे, समयपर परेड देखते और आफ़िसके काम करते थे; पर गोरे सिपाही शराब पीकर ठीक मतवाले हो जाते थे, गालियाँ बकते थे और अपने अफ़सरों तकका लिहाज़ न करके अनाप-शनाप अश्लील बातें कहते और जिस स्त्रीको देखते उसीपर झपटते थे। अपने यहाँके चमार कोली और मोची वग़ैरः शराब पीकर मतवाले हो जाते हैं और घर जाकर माँ-बहिन तकके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सामने भद्दी-से-भद्दी अश्लील बातें मुँहसे निकालते हैं; पर राजा महाराजा और ठाकुर लोग शराब पीकर, एक तरहके मदसे झूमते हुए, अपना काम करते रहते हैं।

शराब पीनेकी विधि।

मल-मूत्र आदि त्यागकर—पाखाने-पेशाबसे फारिग़ होकर, दाँतुन कुल्ले और स्नान करके, शरीरमें इत्र-फुलेल लगाकर, उत्तम सुवासित नर्म या महीन कपड़े पहनकर, फूलोंकी माला गलेमें डालकर, खूब आनन्दमें मग्न होकर, सावधानीके साथ, धीरे-धीरे, ठहर-ठहरकर, थोड़ी-थोड़ी शराब पीनी चाहिये।

शराब पीनेकी जगह।

जहाँ तरह-तरहके उत्तमोत्तम फूल खिल रहे हों, उनपर मधुर ध्वनिसे भौंरे गूँज रहे हों, जहाँ कोयल कुहू-कुहू करती हों, जहाँ शीतल मन्द सुगन्ध पवन चल रही हो,—ऐसे बाग़में बने हुए, सफेद क़लईसे पुते हुए बँगलेमें उत्तम पलँगपर लेटकर, बैठकर या तिरछे लेटकर, रूप-यौवनसे मदमाती, गहनों और फूलोंसे सजी हुई कामिनियोंके हाथोंसे शराब पीनी चाहिये।

शराबकी मात्रा।

दिशा-फराग़तसे निपटकर, सवेरे ही, दाल, सेब आदि नमकीन चाटके साथ, आठ तोले शराब पीनी चाहिये। दोपहरके समय सोलह रुपये भर शराब पीनी चाहिये और उसके बाद खूब चिकने घीके पदार्थ खाने चाहिये। सन्ध्या समय, ३२ रुपये भर शराब पीनी चाहिये। यह मात्रा रसायन-रूप है। शराब पीनेवालेको मात्रामें भूल न करनी चाहिये। अधिक मात्रा रोग पैदा करती है। यह शास्त्रोक्त मात्रा है। आजकलके लोगोंको इतनी भी जियादा है; आदीकी बात और है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऋतु-अनुसार मदिरा।

गरमीके मौसममें शीतल और मधुर "माधवी" नामक मदिरा पीनी चाहिये। जाड़ेमें गरम और तीक्ष्ण "गौड़िक और पौष्टिक" मदिरा पीनी चाहिये।

मदिराके साथ हितकारी अन्न।

शराब पीनेवालेको शराबके अनुकूल फल, सुगन्धित और प्यारे नमकीन पदार्थ, तरह-तरहके मांस, पापड़, भात, लड्डू और फेनी वग़ैरः चिकने पदार्थोंके साथ शराब पीनी चाहिये।

वात-प्रकृतिवालेको गरम तेल आदिकी मालिश कराकर, अगर आदि सुगन्धित पदार्थ शरीरमें लगवाकर यानी स्नान और अनुलेपन आदिसे निपटकर, पहले कही विधिसे, अन्नके साथ, शराब पीनी चाहिये। वात-प्रकृतिवालेको भोजनके बीचमें शराब पीनी चाहिये; यानी कुछ खावे, फिर थोड़ी-सी शराब पीवे; फिर कुछ खावे और थोड़ी शराब पीवे। भोजनके पहले ही और भोजनके अन्तमें शराब न पीनी चाहिए। वात-प्रकृतिवालेको गुड़की और जौके आटेकी शराब पीनी चाहिए।

पित्त-प्रकृतिवालेको कपूर और चन्दनका लेप करके, शीतल फूलोंकी माला पहनकर, मीठे-चिकने एवं शीतल फल और अन्नोंके साथ शराब पीनी चाहिये। इस प्रकृतिवालेको भोजन कर लेनेके बाद शराब पीनी चाहिये। पित्त-प्रकृतिवालेको चीनी वग़ैरः मीठे पदार्थोंकी शराब हितकारी होती है।

कफ-प्रकृतिवालेको जांगलदेशके जानवरोंके मांस और मिरचोंके साथ, भोजनसे पहले, शराब पीनी चाहिये। इस प्रकृतिवालेको भी चीनी आदि मीठे पदार्थोंकी मदिरा हित है।

चरक आदि ऋषि कहते हैं, यह विधि केवल धनी लोगोंके लिए है, ग़रीबोंको नहीं। ग़रीब लोगोंको जैसी शराब मिल जाय, वैसी ही पी लेनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शराब पीनेसे किनको रोग होते हैं ?

जो बिना अन्नके शराब पीते हैं, जो लगातार बारम्बार शराब पीते हैं, उन्हें महा दुःखदायक "मदात्यय" आदि रोग हो जाते हैं। क्रोधित, भयभीत, प्यासे, शोकयुक्त, भूखे, बोझा ढोने और कसरत करनेसे थके हुए, दिशा-पेशाबकी हाजत रोके हुए, लाठी आदिकी चोट खाये हुए, ज़ियादा खटाई खाये हुए, अजीर्णमें खानेवाले, कमज़ोर और गरमीसे सन्तप्त मनुष्य अगर शराब पीते हैं, तो उनको अनेक रोग हो जाते हैं।

मदात्ययका निदान।

तीनों दोषोंको कुपित करनेवाले जो गुण विषमें हैं, वही गुण मद्य या शराबमें भी होते हैं। फ़र्क इतना ही है, कि विषके गुण बलवान होते हैं, पर शराबके गुण उतने बलवान नहीं होते।

बेक़ायदे पीयी हुई, ज़ियादा पीयी हुई, अहितकारी या नुक़सान-मन्द अन्नोंके साथ पीयी हुई और ठीक समयमें न पीयी हुई शराब या मदिरा "मदात्यय" आदि रोग पैदा करती है।

ये सब मदात्यय-रोगके निदान-कारण हैं, पर इनके सिवा ऊपर लिखे हुए कारण भी मदात्ययके हैं। अब आगे हम यह लिखते हैं, कि मद्य या शराबसे कौन-कौनसे रोग पैदा होते हैं:—

मद्य या शराबसे होनेवाले विकार।

मद्य या शराबसे चार तरहके विकार होते हैं:—

(१) मदात्यय। (२) परमद।
(३) पानाजीर्ण। (४) पानविभ्रम।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदात्ययके सामान्य लक्षण।

जिसको मदात्यय-रोग होता है उसके शरीरमें अत्यन्त दुःख होता है; बड़े ज़ोरका मोह या बेहोशी होती है; हृदयमें पीड़ा होती है; अन्नपर रुचि नहीं होती; प्यासकी डाफ़ी लग जाती है; ठण्डा और गरम ज्वर होता है; सिर, पसली और हड्डियोंकी सन्धियोंमें पके हुए फोड़ेके समान वेदना होती है; जँभाइयाँ बहुत आती हैं; अंग फड़कते और काँपते हैं; थकान होती है; छाती जकड़ जाती है; खाँसी, हिचकी और श्वास-रोग होते हैं; कान, आँख और मुँहमें रोग होते हैं; त्रिकस्थान या पीठके बाँसेमें दर्द होता है; वमन होती हैं; दस्त लगते हैं; वात, पित्त और कफका उत्क्लेद होता है; भ्रम होता है; रोगी आन-तान बकता है; बुरे-बुरे रूप दीखते हैं। भ्रमके कारण रोगीको अपने शरीरपर तिनके, राख, बेल और पत्ते उड़-उड़कर गिरते दीखते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो चारों ओरसे पक्षी उड़े चले आ रहे हैं। अशुभ सुपने दीखते हैं। जिसमें ये लक्षण हों, उसे मदात्यय-रोगसे पीड़ित समझना चाहिये।

मदात्ययके भेद।

मदात्यय-रोग चार तरहका होता है:—

(१) वातज। (२) पित्तज।

(३) कफज। (४) सन्निपातज।

वातज मदात्ययके निदान।

जो मनुष्य मैथुन करने, रंज करने, डरने, बोझ उठाने, राह चलने और थकने आदि कारणोंसे दुबले हो जाते हैं और जो रूखा तथा बहुत थोड़ा खाना खाते हैं, अगर ऐसे लोग रूखी शराब बहुत ज़ियादा पीते हैं, तो वह शराब पेटमें जाकर नींदको नाश कर देती और तत्काल वायु-सम्बन्धी मदात्यय-रोग पैदा करती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातज मदात्ययके लक्षण।

हिचकी, श्वास, सिर काँपना, पसलियोंकी पीड़ा, जागना—नींद न आना और बकवाद करना—ये सब वातज मदात्ययके लक्षण हैं।

पित्तज मदात्ययके निदान।

खट्टे, गरम और तीक्ष्ण पदार्थ खानेवाला, क्रोधी और अज्ञानी मनुष्य अगर तेज, गरम और खट्टी शराब बहुत ज़ियादा पीता है, तो उसे पित्तज मदात्यय हो जाता है।

पित्तज मदात्ययके लक्षण।

प्यास, दाह—जलन, ज्वर, पसीना, मोह—बेहोशी, अतिसार—पतले दस्त, विभ्रम—भौंर आना और शरीरका रङ्ग हरा हो जाना,—ये सब पित्तज मदात्ययके लक्षण हैं।

कफज मदात्ययके निदान।

कसरत या मिहनत न करनेवाला, दिनमें सोनेवाला, हर समय पलँगपर बैठा रहनेवाला अथवा गद्दे-तकियोंके सहारे पड़ा रहनेवाला, मीठे और चिकने पदार्थ खानेवाला मनुष्य अगर बहुत ज़ियादा शराब पीता है, तो उसे कफका मदात्यय हो जाता है।

कफज मदात्ययके लक्षण।

वमन, अरुचि, उबकाई, तन्द्रा, शरीरका भीगे हुए कपड़ेसे ढका रहना मालूम होना, शरीरका भारी रहना और ठण्ड लगना—ये कफज मदात्ययके लक्षण हैं।

सान्निपातज मदात्ययके निदान और लक्षण।

ऊपर लिखे हुए सारे कारणोंसे पैदा हुआ और ऊपरके सारे लक्षणोंवाला मदात्यय "सान्निपातज मदात्यय" कहलाता है।

परमदके लक्षण।

परमद-रोगमें रोगीकी नाकसे कफ गिरता है, शरीर भारी रहता है, मुँहका स्वाद बुरा रहता है, पाखाना-पेशाब रुक जाते हैं, तन्द्रा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आती है, अरुचि होती है, सिरमें दर्द होता और सब सन्धियों या जोड़ोंमें तोड़नेकी-सी पीड़ा होती है।

पानाजीर्णके लक्षण।

पानाजीर्णमें पेट बहुत फूलता है, दाह या जलन होती है, डकारें आती हैं, क़य होती हैं तथा पित्त-कोपके और भी लक्षण नज़र आते हैं।

पान-विभ्रमके लक्षण।

पान-विभ्रममें हृदय और शरीरमें तोड़ने या सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है, नाक और मुँहसे कफ निकलता है, कंठसे धूआँ-सा निकलता मालूम होता है, क़य होती हैं, मद और सिरदर्द होता है, मुँह कफ़से लिहसा-सा रहता है एवं सब तरहकी शराबों और सब तरहके भोजनोंसे द्वेष हो जाता है।

असाध्य मदात्ययादिके लक्षण।

बहुत ही ज़ियादा शराब पीनेसे जिस मनुष्यका ऊपरका होठ ऊपरको सुकड़ गया हो, सर्दी बहुत लगती हो, मुँहका रंग तेलके रंग जैसा हो गया हो—वैद्यको ऐसे रोगीका इलाज नहीं करना चाहिये।

शराब पीनेसे बेहोश हुए आदमीके जीभ, होठ और दाँत काले या नीले हो गये हों, आँखें पीली या लाल हो गई हों, हिचकी, ज्वर, वमन, कम्प, पसलियोंमें दर्द, खाँसी और भ्रम ये उपद्रव हों—तो वैद्यको उसका इलाज न करना चाहिये।

ध्वंसक और विक्षेपकके निदान।

जिसने कभी शराब नहीं पीयी है, अगर वह बहुत-सी शराब बेक़ायदे—शास्त्रनियमके विरुद्ध पीता है, तो उसे "ध्वंसक" और "विक्षेपक" रोग हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ध्वंसकके लक्षण।

ध्वंसक-रोगमें कफ गिरता है तथा हृदय, कंठ और मुँह ये सूखते हैं। असहनशीलता, अत्यन्त बेकली, अत्यन्त तन्द्रा और निद्रा—ये सब भी होते हैं।

विक्षेपकके लक्षण।

विक्षेपक-रोगमें हृदय और गलेमें दर्द होता है; मोह, वमन, सारे शरीरमें पीड़ा, ज्वर, प्यास, खाँसी और सिरमें दर्द—ये सब होते हैं।

मदात्ययकी विशेष चिकित्सा।

वातज मदात्ययकी चिकित्सा।

(१) कालानोन, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर, थोड़े-से जलमें पीसकर शराबके साथ, जीर्ण मद्यवालेको देनेसे वातज पानात्यय आराम हो जाता है।

नोट—यह नुसख़ा पहला पीया हुआ मद्य जीर्ण होनेपर देना चाहिये। मतलब यह है, कि इस दवाके साथ शराब पिलाने या पानीके साथ शराब पिलानेसे वातज मदात्यय नाश हो जाता है।

(२) बिजौरा नीबू, इमली और अनारका पना बनाकर पिलाने, तथा चिकने खट्टे और नमकीन पदार्थोंके साथ जंगली जानवरोंका मांसरस देनेसे वातज मदात्यय नाश हो जाता है।

(३) सिरका, कालानोन, काकड़ासिंगी, त्रिकुटा, अदरख और अजवायन—इनको समान-समान लेकर पीस लो और मिला लो। इस दवाके साथ शराब पीनेसे वातज मदात्यय नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) पुरानी शराबमें नमक डालकर अथवा बिजौरा नीबू, अम्लवेत, बेर, अनार, अजवायन, हाऊबेर, सफेद जीरा और सोंठ—इनका चूर्ण डालकर पिलाने और चिकनी चीज़ घी वग़ैरः मिला हुआ सत्तू मय मसालोंके खिलानेसे वातज मदात्यय नाश होता है।

(५) चव्य, कालानोन, भुनी हींग, बिजौरा नीबू, सोंठ और अजवायन—समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णके साथ शराब पीनेसे वातज मदात्यय नाश होता है।

नोट—अनेक पाठक इस बातसे चकित होंगे, कि जिस शराब या मद्यसे मदात्यय-रोग पैदा होता है, उसमें फिर शराब पिलानेकी आज्ञा क्यों दी गई है। पाठक! असल बात यह है, कि जिस तरह विषकी दवा विष है; उसी तरह मद्यकी दवा मद्य हैं। कहा है—

मद्योत्थानाञ्च रोगाणां मद्यमेव हि भेषजम्।
यथा दहनदग्धानां दहनं स्वेदनं हितम्॥

जिस तरह आगसे जले हुए के लिए दाहन और स्वेदन हित है; उसी तरह मद्यसे पैदा हुए रोगोंकी दवा मद्य ही है। खुलासा यह है कि, किसी अङ्गके आगसे जलनेपर लोग उस अङ्गको आगसे ही तपाना अच्छा समझते हैं; उसी तरह विद्वान् वैद्य मद्यके रोगीको मद्य पिलाकर ही अच्छा करना उचित समझते हैं। मद्यके मिथ्या-योग, अति-योग और हीन-योगसे जो रोग होते हैं, वे मद्यके सम-योगसे या सम-योगमें मद्य पीनेसे शान्त हो जाते हैं।

(६) जिन युवतियोंके शरीरोंमें जीवनकी छटाएँ छिटक रही हैं, जो जवानीकी गरमीसे गरम हो रही हैं, उनके निर्दय आलिङ्गन करने या ज़ोरसे छातीके लगानेसे; उनके नितम्बों, उनकी जाँघों और स्तनोंके बोझसे तथा प्यार करने और दबानेसे; गद्दे-तकियोंपर लेटने, गरम लिहाफ ओढ़ने और सुखदायी भीतरी मकानोंमें रहनेसे प्रबल वातज मदात्यय शान्त हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तज मदात्ययकी चिकित्सा।

नोट—पित्तके मदात्ययमें शीतल चिकित्सा करनी चाहिये। भूलकर भी गरम क्रियाएँ न करनी चाहिये।

(१) शराबमें आधा पानी मिलाकर और थोड़ी-सी मिश्री और शहद डालकर पीनेसे पित्तका मदात्यय आराम हो जाता है।

(२) खजूर, दाख, फालसे और अनारके रसके साथ, मिश्री और सत्तू मिलाकर, शीतल गुणवाली माध्वीक मदिरा—शराब पीनेसे पित्तका मदात्यय नष्ट हो जाता है।

(३) मधुरवर्गकी दवाओंके काढ़ेमें उत्तम गन्धवाली शराब और मिश्री तथा शहद मिलाकर पीनेसे पित्तका मदात्यय नाश हो जाता है।

(४) पित्तके मदात्ययवालेको ख़रगोश, तीतर, लबा और काली पूँछका हिरन—इनका मांस देना चाहिये। मीठे और खट्टे पदार्थ, शालि और साँठी चावलोंका भात, परवलके यूष तथा मटर और मूँग-के यूषके साथ अथवा अनार और आमलोंके रसके साथ बकरेका मांसरस देना चाहिये। इस रोगमें तृप्तिकारक यूष, शीतल अन्न, शीतल पीनेकी चीजें, शीतल पलँग, शीतल आसन, शीतल हवा और शीतल जलका स्पर्श, बाग़-बग़ीचे और चन्द्रमाकी किरणें—हितकारी हैं।

(५) शराब और गाढ़ा ईखका रस मिलाकर पीने और थोड़ी देर बाद क़य कर देनेसे भी पित्तका मदात्यय नाश हो जाता है।

कफज मदात्ययकी चिकित्सा।

(१) कफके मदात्ययमें वमनकारक या क़य लानेवाली दवाएँ शराबमें मिलाकर पिलाने और क़य कराकर कफ निकाल देनेसे लाभ होता है। इस रोगमें लंघन कराना भी हित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) कफके मदात्ययमें रूखे पदार्थोंके साथ बकरेका मांसरस पिलाना चाहिये। अथवा कुछ खटाई डालकर सोंठ, कालीमिर्च और पीपरका यूष देना चाहिये।

(३) मांसको हाँडी या ठीकरेमें सूखा ही भूनकर और उसमें चरपरे, खट्टे और खारी पदार्थ मिलाकर खानेसे कफका मदात्यय आराम हो जाता है।

(४) कुल्थी और सूखी मूलीके रसके साथ जौका भोजन करनेसे कफज मदात्ययमें लाभ होता है।

(५) त्रिफलेके रसमें त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पीनेसे अथवा सूखी मूलीका यूष या कुल्थीका यूष तेज़ शराबमें मिलाकर पीनेसे अथवा जौकी शराब और जंगली जीवोंका मांसरस पीनेसे कफज मदात्यय नाश हो जाता है।

(६) कालानोन १ तोले, मिश्री १ तोले, ज़ीरा, विषांबिल यानी डाँसरिया, अम्लवेत, दालचीनी, छोटी इलायची और कालीमिर्च प्रत्येक छै-छै माशे लेकर कूट-पीस-छान लो। इसका नाम "अष्टांग लवण" है। यह नमक अग्निको दीप्त करता और स्रोतों या शरीरके छेदोंको साफ़ करता है। कफज मदात्ययमें अग्निदीपक दवाएँ लाभ करती हैं, अतः यह चूर्ण भी कफज मदात्ययमें बहुत ही उत्तम है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई इस नुसख़ेमें कालानोन, ज़ीरा, डाँसरिया और अम्लवेत एक-एक तोला, दालचीनी, छोटी इलायची और कालीमिर्च छै-छै माशे और मिश्री ४ तोले लेते हैं।

सान्निपात-मदात्ययकी चिकित्सा।

वातज, पित्तज और कफज मदात्ययकी जो चिकित्सा लिखी है, वही सब सन्निपातज मदात्ययमें करनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—अगर ऊपर लिखे हुए उपायोंसे मदात्यय-रोग शान्त न हो, पर कफ क्षीण हो गया हो, कमज़ोरी के कारण शरीर में हल्कापन आ गया हो—तो मद्य पीनेसे विदग्ध और वातपित्तकी अधिकतावाले मदात्यय-रोगीको एकमात्र दूध उसी तरह हितकारी है, जिस तरह गरमीसे तपे हुए वृक्षको पानी; क्योंकि दूध गुणोंमें ओजके समान और मद्यके विपरीत है। पर इस रोगके जीतनेपर, क्रमशः दूध और शराब अलग-अलग और थोड़े-थोड़े सेवन करने चाहिये—एक साथ और बहुत नहीं।

और भी कहा है—हे मदात्यय रोगी! अगर तू अपने इस मदात्यय-रोगको नाश करना चाहता है, तो जलमें गोते मारकर चन्दनको शरीरपर लेपन करा और घरमें बैठकर सुन्दरी मृगनयनी कामनियोंका नाच-गाना देख-सुन और उपचार समेत उत्तम शराब क़ायदेसे पी।

पानात्यय-चिकित्सा।

(१) चव्य, कालानोन, हींग, सफेद जीरा, सोंठ और अजमोद—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको शराबके साथ खाने से पानात्यय-रोग नाश हो जाता है।

(२) रातके समय त्रिफलेका चूर्ण शहदके साथ और सवेरे ही गुड़के साथ अदरख खाने और पथ्यसे रहनेसे पानात्यय, मद, मूर्च्छा, क़ामला और उन्माद-रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—पानात्यय-रोग सात या आठ दिनों तक रहता है; फिर जीर्ण होकर और गतिको प्राप्त हो जाता है।

और कई तरहके मदोंकी चिकित्सा।

(१) एक तोले पेठेके रसमें ६ माशे गुड़ मिलाकर खानेसे कोदों और मैनफलका मद नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) कच्चे दूधमें मिश्री मिलाकर पीनेसे धतूरेका मद नाश होजाता है*। कोई-कोई मेढ़ीके दूधमें मिश्री मिलाकर पीना अच्छा कहते हैं।

(३) खूब पेटभर शीतल जल पीनेसे वमन, बेहोशी और अतिसार समेत सुपारीका मद नाश हो जाता है।

(४) आरने उपले सूँघनेसे, कंठ तक पानी पीनेसे अथवा नमक या नमक-मिश्री मिलाकर खानेसे सुपारीका मद दूर हो जाता है। बिना जल पीये, पाव-भर शक्कर खानेसे भी सुपारीका मद नाश हो जाता है।

(५) बकरीका मांस और परवल दोनों पकाकर खानेसे चरसका मद दूर हो जाता है।

(६) मदिराके मदात्ययमें बारम्बार एक-एक तोले मदिरा पीने और साँठी चावलोंका भात चीनीके साथ रोज़ खानेसे मदात्यय अवश्य नाश हो जाता है।

(७) दिनमें, हर डेढ़-डेढ़ घण्टेपर, चार-चार लौंग चबानेसे तमाखूका मद दूर हो जाता है।

(८) गरम घी अथवा कटहर के पत्तोंका रस अथवा इमलीका पानी अथवा कच्चे नारियलका पानी पीनेसे भाँगका नशा उतर जाता है। थोड़ी-सी शराब पीनेसे भी भाँगका नशा उतर जाता और शराबका नशा नहीं बढ़ता।

(९) चूनेको हाथोंसे मलकर बारम्बार सूँघनेसे पानका मद उतर जाता है।

(१०) बड़ी हरड़ ६ माशे खानेसे अथवा जलमें घुसनेसे अथवा दही-चीनी मिलाकर खानेसे जायफलका मद नाश हो जाता है।

---

* धतूरेका मद या विष नाश करनेके उपाय "चिकित्सा-चन्द्रोदय पाँचवें भागमें" विस्तारसे लिखे हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) दहीमें बूरा मिलाकर खाने या दही-भात-बूरा मिलाकर खानेसे बहेड़ेका मद नाश हो जाता है।

(१२) अगर चूना ज़ियादा खानेसे जीभ फट जाय, तो मिश्रीका 'कवल' मुखमें रखना चाहिये।

शराब पीनेवालोंके लिए हितकारी शिक्षा।

(१) कायफल १ माशे, नागरमोथा २ माशे और गिलोय ३ माशे—इनको मिलाकर रख लो। शराब पीकर इनको चबानेसे मुँहकी बदबू नाश हो जाती है।

(२) अगर आदमी शराब पीकर, तत्काल, घीमें बूरा मिलाकर चाट ले, तो तेज़-से-तेज़ शराबका नशा न चढ़े।

(३) जो जलमें गोता मारकर स्नान करते हैं, चन्दनादि पदार्थ शरीरपर लगाते हैं और भात, मांस तथा चाटके साथ शराब पीते हैं, उनको मनके नष्ट करनेवाला मद नहीं होता।

(४) मद्यसे क्षीण देहवालोंको तेलकी मालिश, स्नान और घी-दूध पीना हितकारी है।

(५) क्रम-क्रमसे शराब त्यागकर पानी पीने और रातमें त्रिफला शहदके साथ खाने तथा सवेरे ही गुड़ और अदरख खानेसे शराबकी आदत छूट जाती है।

(६) शोक, क्रोध, भूख, प्यास और गरमीकी हालतमें तथा कसरत करके और राह चलनेसे थके हुए मनुष्योंको शराब न पीनी चाहिये, क्योंकि अनेक रोग हो जाते हैं।

(७) मिश्री और घी मिलाकर खानेसे भी मद्यकी दुर्गन्ध दूर हो जाती है।

(८) अन्न के बिना शराब कभी न पीनी चाहिये, क्योंकि ऐसा मद्य और रोग पैदा करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मदात्ययकी सामान्य चिकित्सा ।

(१) चव्य, कालानोन, हींग, बड़े नीबूका छिलका, सोंठ और अजवायनका चूर्ण सब तरहके मदात्ययको नाश करता है।

(२) केवल मोथे का काढ़ा पिलानेसे सब तरहके मदात्ययके दोष परिपाक हो जाते हैं।

(३) जवासा, मोथा और खेतापापड़ेका काढ़ा सब तरहके मदात्यय-दोषोंको परिपाक करता है।

(४) खजूर, किशमिश, दाख, इमली, अनार और आमलेके रसमें धानकी खीलोंका चूर्ण मिला दो। फिर इन सबको पानीमें मिलाकर पी लो। इस उपायसे मद्यसे पैदा हुए सब रोग शान्त हो जाते हैं।

(५) शंखका चूर्ण सूँघनेसे थोड़े-से मद्यका विकार नष्ट हो जाता है।

त्रिफलादि चूर्ण ।

(६) त्रिफला, सफेद निशोथ, श्यामालता, देवदारु, सोंठ, अजवायन, अजमोद, दारुहल्दी, पाँचों नमक, सोया, बच, कूट, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची और एलुआ—सबको समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो। मात्रा १ माशेसे ६ माशेतक। अनुपान—शीतल जल। इस चूर्णसे सब तरहके मद्य-विकार शान्त हो जाते हैं।

एलाद्य मोदक ।

(७) छोटी इलायची, मुलेठी, चीते की छाल, हल्दी, दारुहल्दी, त्रिफला, रक्तशालि, पीपर, दाख, छुहारे, तिल, जौ, विदारीकन्द, गोखरू-के बीज, निशोथ और शतावर—समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर जितना चूर्ण हो उससे दूनी चीनी लेकर चाशनी करो और चूर्ण मिलाकर छै-छै माशेके लड्डू बना लो। एक-एक लड्डू खाकर ऊपरसे धारोष्ण दूध या मूँगका जूस पीनेसे मदात्यय नाश हो जाता है।

नोट—बिहारके दाऊदखानी चावल ही "रक्तशालि" कहाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्रीखण्डासव।

सफेद चन्दन, कालीमिर्च, जटामासी, हल्दी, दारुहल्दी, चीतेकी छाल, मोथा, खसकी जड़, तगरचंडी, दाख, लाल चन्दन, नागकेशर, अम्बष्ठा—मोइया, आमले, छोटी पीपर, चव्य, लौंग, एलुआ और लोध —इन उन्नीस चीज़ोंको दो-दो तोले लेकर कुचल लो और १ मन २४ सेर पानीमें भिगो दो। फिर उसमें मुनक्के डेढ़ सेर, गुड़ १८॥ सेर और धायके फूल पाँच छटाँक डाल दो। फिर बर्तनपर ढकना रखकर कपड़-मिट्टीसे सन्धि बन्द कर दो। १ महीने तक इसको न छेड़ो। इसके बाद, इसे छानकर बोतलोंमें भर दो और फोकको फैंक दो। इसकी मात्रा १ से ३ तोले तक है। इसके पीनेसे मदात्यय रोग चला जाता है।

वृहत् धात्री तैल।

जीवनीयगण, जटामासी, मँजीठ, इन्द्रायणकी जड़, श्यामालता, अनन्तमूल, पत्थर-फूल, सोया, पुनर्नवा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, छोटी इलायची, दालचीनी, पद्ममूल, केलेका फूल, बच, अगर, हरड़ और आमले—इन सबको चार-चार तोले लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी कर लो। फिर आमलोंका रस चार सेर, शतावरका रस चार सेर, विदारीकन्दका रस चार सेर, बकरीका दूध चार सेर, बरियारेका काढ़ा चार सेर, असगन्धका काढ़ा चार सेर, कुल्थीका काढ़ा चार सेर, जौका काढ़ा चार सेर, उड़दोंका काढ़ा चार सेर और काली तिलीका तेल चार सेर तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। तेलमात्र रहनेपर, उतारकर छान लो। यही "वृहत् धात्री तैल" है। यह तेल मदात्यय-रोगीके लिए बहुत उत्तम है।

शुद्ध शराब।

मुनक्के १ सेर, बबूरकी छाल आध सेर, आमले आध पाव, मुण्डी आध पाव, जटामासी २॥ तोले, छरीला २॥ तोले, अजवायन २॥ तोले,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खसकी जड़ २॥ तोले, तज २॥ तोले, तेजपात २॥ तोले, नागरमोथा २॥ तोले, नरकचूर २॥ तोले, सफेद चन्दन २॥ तोले, महँदीके बीज २॥ तोले, सफेद मूसली १। तोले, स्याह मूसली १। तोले, बहमन सफेद १। तोले, बहमन सुर्ख़ १। तोले, बड़ी इलायची १। तोले, इन्द्रजौ १। तोले, तोदरी ज़र्द १। तोले, तोदरी सफेद १। तोले, किशमिश २० तोले, बादामकी गिरी २० तोले, छुहारे २० तोले, मुनक्के २० तोले—इन सबको जौकुट करके एक घड़ेमें एक मन पानी डालकर भिगो दो और ऊपरसे "दस सेर चीनी" भी डाल दो। जब ख़मीर उठ आवे, तब "अढ़ाई सेर गायका दूध" और "आध सेर शन्तरोंका रस" डालकर भभकेसे शराबकी रीतिसे अर्क़ खींच लो।

यह शराब नशा लानेके सिवाय खूब ताक़त भी लाती है और मज़ा यह, कि धर्म नाश नहीं होता। जिनके मुँह शराब लग रही हो, वे इसे पीवें। इससे लाभ-ही-लाभ होगा, हानि कुछ नहीं। पर आज-कल घरमें शराब खींचना जुर्म है; अतः कलक्टर साहबको दरख़्वास्त देकर, आज्ञा ले लेनी ठीक है; फिर कोई भय नहीं। जिन्हें शराब बनाना न आता हो, वे कलारको मज़दूरी देकर शराब खिंचवालें॥ यह नुसख़ा हमारा कई बारका परीक्षित है।

मधुयष्ठ्यादि घृत।

घी ४ सेर, दूध ४ सेर और पुनर्नवेका काढ़ा ३२ सेर तथा मुलेठीका कल्क या लुगदी १ सेर,—सबको मिलाकर घी पका लो॥ जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसको "पुनर्नवादि घृत" भी कहते हैं। वृन्दने लिखा है, जो मद्यपान करनेवाले कमज़ोर और तेजहीन हो जाते हैं, वे इसके पीनेसे पुष्ट हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. .....5331.....

तीसरा अध्याय

दाह-रोग वर्णन।

—:※:—

दाहके सामान्य लक्षण।

विविध कारणोंसे पित्तके कुपित होनेसे, हाथ-पैरोंके तलवे और आँखोंमें अथवा सारे शरीरमें दाह या जलन होती है। उस दाह या जलनको ही "दाह-रोग" कहते हैं।

दाह-रोग की क़िस्में।

दाह-रोग सात तरहका होता है:—

(१) पित्तका दाह। (२) रुधिरका दाह।
(३) प्यास रोकनेका दाह। (४) रक्तपूर्ण कोष्ठज दाह।
(५) मद्यका दाह। (६) धातु क्षयज दाह।
(७) मर्माभिघातज दाह।

पित्तके दाहके लक्षण।

दाह गरमीकी व्याधि है। पित्तके दाहमें, पित्त-ज्वरके-से लक्षण होते हैं; इसलिये इसकी चिकित्सा भी "पित्त-ज्वर"की तरह ही करनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तज्वर और दाहमें फ़र्क़।

पित्त-ज्वरमें, आमाशयके दूषित होनेसे, ज्वर और दाह दोनों होते हैं; किन्तु दाह-रोगमें केवल दाह ही होता है। अथवा पित्त-ज्वरमें अग्नि और आमाशय दोनों दुष्ट होते हैं, किन्तु पित्तके दाहमें अग्नि और आमाशय दूषित नहीं होते--केवल जलन होती है,—यही भेद है।

रुधिरके दाहके लक्षण।

शरीरमें खूनके बहुत ही ज़ियादा बढ़ जानेसे भी दाह होता है; यानी शरीरका खून भी कुपित होकर दाह-रोग पैदा करता है। ऐसा होनेसे, रोगीको सारा संसार आगसे जलता हुआ-सा मालूम होता है। अथवा ऐसा जान पड़ता है, मानो आग मेरे पास रखी है और मैं उससे जला जा रहा हूँ। रोगीको प्यास बहुत लगती है। दोनों आँखें और सारा शरीर ताम्बेके-से रंगका हो जाता है; यानी शरीर और नेत्र लाल हो जाते हैं। शरीर और मुँहसे ऐसी गन्ध निकलती है, जैसी गरम लोहेपर पानी डालनेसे निकलती है। शरीरमें मानो किसीने आग लगा दी है, ऐसी वेदना होती है।

प्यास रोकनेके दाहके लक्षण।

जो आदमी मूर्खतासे प्यासको रोकता है, उसकी जल रूप धातु क्षीण हो जाती है और तेज या पित्तकी गरमी शरीरके भीतर और बाहर दाह—जलन पैदा करती है। उस समय उस आदमीके गला, तालू और होठ सूख जाते हैं और वह जीभको निकालकर हाँफने लगता है।

मतलब यह है कि, पानी न पीनेसे शरीरकी पतली धातुएँ क्रमशः कमती हो जाती हैं और गरमी बढ़ती है। गरमीके बढ़नेसे शरीरके भीतर-बाहर आग-सी लग जाती है; गला, तालू और होठ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूखने लगते हैं और रोगी कुत्तेकी तरह हाँफता और जीभको बाहर निकाल देता है।

रक्तपूर्ण कोष्ठज दाह।

तलवार बरछी या भाले वग़ैरःके लगनेसे आदमीके शरीरमें घाव हो जाते हैं। उन घावोंसे निकले हुए खूनसे जिस आदमीका कोठा भर जाता है, उसके शरीरमें महा दुस्तर दाह पैदा होता है।

मतलब यह है कि, तलवार आदिसे ज़ख्म होनेपर, खूनसे हृदय आदि कोठे भर जाते हैं, तब घोर दुःसह दाह पैदा होता है। इसी-से, युद्धक्षेत्रके घायल पानी-ही-पानीकी रटना लगा देते हैं। ऐसे दाहके लक्षण "सद्योव्रणके" समान होते हैं। अतः ऐसे दाहकी चिकित्सा भी वैसी ही होनी चाहिये।

मद्यके दाहके लक्षण।

मद्यपान करने या शराब पीनेसे पित्त कुपित हो जाता है। उस कुपित पित्तकी गरमी, पित्तरक्तको बढ़ाकर, दाह पैदा कर देती है। इस दाहकी चिकित्सा पित्तके जैसी करनी चाहिये।

धातु-क्षयका दाह।

रस-रक्त आदि धातुओंके क्षय होनेसे भी दाह-रोग होता है। इस दाहवाला रोगी तृषार्त्त, मूर्च्छित, क्षीणस्वर और चेष्टाहीन हो जाता है; अर्थात् धातुओंके क्षय होनेसे जो दाह होता है, उसमें रोगी प्यासके मारे विकल हो उठता है, बेहोश हो जाता है, गला बैठ जाता है, आवाज़ नहीं निकलती और वह चेष्टा-रहित हो जाता है। इस दाहवाला अच्छा इलाज न होनेसे मर जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मर्माभिघातज दाहके लक्षण।

मस्तक या हृदय अथवा मूत्राशय आदि मर्मस्थानोंमें चोट लगनेसे जो दाह होता है, वह असाध्य होता है।

नोट—पित्तसे ही दाह होता है, इसलिए जिन रोगोंमें दाह हो, उनमें "पित्तकी अधिकता" समझनी चाहिये। खूनके बढ़ने या कुपित होनेसे, प्यासके रोकनेसे, घाव होनेसे, शराब पीनेसे, रस-रक्त आदि धातुओंके कम होनेसे और हृदय आदि मर्मस्थानोंमें चोट लगनेसे दाह होता है। धातुक्षयका दाह ख़राब होता है। अच्छा इलाज न होनेसे रोगी मर जाता है। पर मर्ममें चोट लगनेसे जो दाह होता है, वह तो असाध्य ही होता है।

नोट—बंगसेनने लिखा है, क्षत या घाव होनेसे जो दाह होता है, उसमें भूख बहुत कम हो जाती है। जिसे शोक करनेसे दाह होता है, उसके शरीरके भीतर बड़ी जलन होती है तथा प्यास, मूर्च्छा और प्रलाप ये लक्षण होते हैं।

दाहकी असाध्यता।

जिस रोगीके शरीरके भीतर दाह हो, पर ऊपरसे शरीर शीतल हो—उसका दाह असाध्य है। उसका इलाज न करना चाहिये। कहा है :—

पित्तज्वरसमा कार्या चिकित्सा तु भिषग्वरैः।
वर्जनीया प्रयत्नेन शीतगात्रस्य देहिनः॥

दाह-रोगकी चिकित्सा बुद्धिमान् वैद्यको पित्त-ज्वरके समान करनी चाहिये, परन्तु जिसके भीतर दाह हो—भीतरसे शरीर जला जाता हो और ऊपरसे छूनेमें शरीर शीतल हो, उसका इलाज न करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाह-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) दूध और दूधवाले वृक्षोंके सुशीतल चन्दन-मिले हुए काढ़े एवं अन्यान्य शीतल प्रयोगोंसे अन्तर्दाह या भीतरका दाह शान्त होता है।

(२) चमड़ेकी गरमी रुकनेसे शरीरका चमड़ा ठण्डा हो जाता है। ऐसा होनेसे, शरीरपर "अगरका लेप" करना चाहिये।

(३) पित्त और खूनसे बढ़ी हुई शरीरकी गरमी, चमड़ेमें घुसकर, घोर दाह पैदा करती है। इसलिए, उस अवस्थामें, पित्तके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(४) शरीरके खूनके बढ़ने या कुपित होनेसे जो दाह होता है, वह घोर दाह होता है। उसमें मनुष्यकी आँखें लाल और शरीरका चमड़ा ताम्बेके रंगका-सा हो जाता है तथा देहमें आगके-से पतंगे लगते हैं। इस दाहको "अति दाह" भी कहते हैं। चूँकि यह दाह खूनके बढ़नेसे होता है, इसलिये इसमें हाथ या पाँवकी "रोहिणी नामक शिरा—नस" को खोलकर खून निकालना चाहिये। चन्दन और उशीरको बहुत-से पानीमें मिलाकर, रोगीको उसमें स्नान कराना चाहिये। अगर रोगी प्यासके मारे जीभको बाहर निकालकर हाँफता हो, गला और होठ सूखे जाते हों, तो उसे शीतल पानी अथवा मिश्री, पानी और दूध मिलाकर पिलाना चाहिये। ये उपाय इस दाहमें परीक्षित हैं।

खूनके कोपसे हुए दाहमें विधिपूर्वक लंघन कराकर, उत्तम चिकना शीतल और हल्का भोजन देना चाहिये। अथवा जङ्गली जीवोंका मांस-रस पिलाना चाहिये, क्योंकि रसकी तृप्तिसे दाह शान्त होता है। ये काम पहले करने चाहिये। अगर इन उपायोंसे दाह शान्त न हो, तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोहिणी नामक शिरा, जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया है, खोलकर खून निकालना चाहिये।

(५) प्याससे हुए दाहमें, इच्छानुसार, पेट भर करके, जल पीना चाहिये। अथवा मिश्री या चीनीका शर्बत पीना चाहिये। अथवा दूधमें ईखका रस मिलाकर पीना चाहिये।

(६) धातु-क्षयसे हुए दाहको अनेक प्रकारके इष्ट विषयोंसे जीतना चाहिये। मित्रोंमें बैठकर दूध और मांस-रसका भोजन करना चाहिये। इस तरहके दाहमें "रक्तपित्तकी विधि"से इलाज करना और चिकनी वातनाशक दवा या पथ्य देना हित है।

(७) दाह-रोगमें, उपद्रवोंके शान्त होनेपर, शोधन करना चाहिये॥

(८) प्यास और दाहकी शान्तिके लिए—स्नान कराने, छींटे मारने और पंखा वग़ैरः भिगोनेमें शीतल जल ही लेना चाहिये।

(९) सुश्रुतने जो अत्यन्त शोच-फिक्र करनेसे दाहका होना लिखा है, उस दाहका इलाज—रोगीको प्यारे मित्रोंमें बिठाना, दूध और मांसरस पिलाना तथा अन्य शीतल उपचार हैं।

(१०) दाह-रोगमें, रोगीके पेटको साफ़ रखना बहुत ज़रूरी है।

दाह-नाशक नुसख़े।

(१) दाह-रोगीके शरीरपर "सौ बार धुला हुआ घी" लगानेसे दाह शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(२) काँजीके पानीमें कपड़ा भिगोकर, उससे शरीर ढक देनेसे दाह शान्त हो जाता है। अगर प्यासका दाह हो, तो शीतल पानी पिलाना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) जौके सत्तूका शरीरपर लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(४) बेर और आमलोंको एकत्र पीसकर, शरीरपर लगानेसे दाह शान्त हो जाता है।

(५) अनार और इमलीको एकत्र पीसकर, देहपर लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(६) लामज्जक नामकी सुगन्धित घास अथवा चन्दनका लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(७) आमले और अनारके रसमें "जौका सत्तू" मिलाकर लेप करनेसे दाह मिट जाता है।

(८) अगर दाह बहुत ज़ोरसे हो, रोगी प्यासके मारे जीभ निकाले देता हो, कंठ और होठ सूख रहे हों, तो दूध-पानी और मिश्री मिलाकर पिलानेसे दाह शान्त हो जाता है।

(९) दाहवालेको नीचे लिखे हुए पदार्थ हितकारी हैं:—

१—कमलके पत्तोंका पलँग।
२—मनोहर बाला स्त्री।
३—शीतल जलकी बावड़ी।
४—शीतल जलसे भीगे हुए पंखेकी हवा।
५—चन्दनसे तर हार।
६—तोतली बोली बोलनेवाले बच्चे।
७—सुन्दर फव्वारेवाला घर।
८—दूध और मांस-रस पीना।
९—कमल-सहित निर्मल जलके सरोवर।
१०—चन्दन लगाये हुए सुन्दरियाँ।
११—घिसे हुए चन्दनसे तर पंखा।
१२—केलेके पत्तोंका पलँग।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) चन्दनको पानीके साथ घिसकर और ताड़के पंखेपर लगाकर हवा करने और पलँगपर कमलके पत्ते बिछाकर दाहवालेको सुलानेसे अवश्य लाभ होता है।

(११) दाहवालेके शरीरपर शीतल पानीके छींटे देना, शीतल जलमें घुसाकर स्नान कराना, पानीसे भीगे हुए खसके पंखेसे हवा करना—लाभदायक है। इनसे प्यास और दाह अवश्य शान्त होते हैं।

(१२) चन्दनको पत्थरपर घिसकर, शरीरपर पतला-पतला लेप करनेसे दाह शान्त होता है।

(१३) सुगन्धवाला, पद्माख, खस, कमल और चन्दन इनको पानीमें पीसकर, एक पानी भरे टबमें घोल दो। फिर उसमें दाहवालेको डुबकी लगाकर स्नान कराओ। दाह अवश्य शान्त हो जायगा।

(१४) बिजौरे नीबूका रस और शहद—दोनोंको मिलाकर दाहवालेके शरीरपर लेप करनेसे दाह शान्त होता है।

(१५) फूल-प्रियंगू, लोध, पद्माख, लामज्जक घास, सुगन्धवाला और केवटी-मोथा—इनको "पीले चन्दनके रसमें" पीसकर शरीरपर लेप करनेसे दाह शान्त हो जाता है।

(१६) दाहवालेको कमलका जल, चीनीका शर्बत, मिश्री-मिला दूध और ईखका रस पिलाना लाभदायक है। इन चारोंसे पित्त शान्त होता है, अतः दाह नष्ट हो जाता है।

(१७) गायका मक्खन, १०८ बार धोकर, दाहवाले की छातीसे कंठ तक लेप कर दो और हाथ-पैरोंमें फूल-काँसीकी कटोरियोंसे मालिश करो; अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(१८) सफेद चन्दनको गुलाब-जलके साथ घिसकर, उसमें ज़रा-सा कपूर भी घिस लो। पीछे इसको सारे शरीरमें लगा दो। इस लेपसे दाह ज़रूर मिट जायगा। परीक्षित है।

नोट—इस लेपको सिरपर लगानेसे गरमीका सिरदर्द फौरन आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) नीमके पत्तोंको पानीमें सिलपर पीसकर, पानीमें घोल दो और दहीकी तरह मथो। जो झाग आवें उन्हें पेट और छाती अथवा दाहकी जगह, थोड़ी-थोड़ी देरमें कई बार, लगाओ। दाह अवश्य मिट जायगा। परीक्षित है।

नोट—इसी तरह बेरके पत्तोंके झाग लगानेसे भी दाह शान्त हो जाता है।

(२०) सौ बार धोये हुए घीमें जौका सत्तू मिलाकर शरीरपर लगानेसे दाह मिट जाता है। परीक्षित है।

(२१) दो तोले धनियाँ आध पाव पानीमें रातको भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर, उसमें एक तोले "मिश्री" मिलाकर पीलो। इस नुसख़ेसे दाह-रोग अवश्य चला जाता है। परीक्षित है।

(२२) गिलोय और पित्तपापड़ेका रस पीनेसे कैसा ही दाह क्यों न हो, आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२३) फूल-प्रियंगू, खस, पठानी लोध, सुगन्धवाला, सनाय और सोना पाठा,—इनके चूर्णमें "दारुहल्दीका रस" मिलाकर लेप करनेसे दाह अवश्य शान्त हो जाता है; पर लेप महीन और गाढ़ा होना चाहिये।

चन्दनादि क्वाथ।

(२४) सफेद चन्दन, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, खस, नागरमोथा, कमलगट्टेकी गरी, कमलकी डंडी, सौंफ, धनियाँ, पद्माख और आमले—इन सबको मिलाकर दो तोले ले लो और डेढ़ पाव जलमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, उतारकर छान लो। फिर उसमें "मिश्री और शहद" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेके पीनेसे तेज़-से-तेज़ दाह भी शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—शहद तब मिलाना, जब काढ़ा शीतल हो जाय।

कांजिक तैल।

६४ तोले तिलीका तेल और १०२४ तोले काँजी,—दोनोंको मन्दी-मन्दी आगसे औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लो। इस तेल की मालिशसे, दाह और ज्वरका सन्ताप दूर हो जाता है।

दाहान्तक क्वाथ।

पित्त-पापड़ा, खस, नागरमोथा, लाल चन्दन और पद्माख—इनको तीन-तीन माशे लेकर, डेढ़ पाव जल में औटाओ। जब छटाँक-भर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। शीतल हो जोनेपर, काढ़ेमें १ तोले "शहद" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेसे दाह, ज्वर, प्यास और वमन फौरन शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है। निस्सन्देह काममें लाइये।

त्रिफलादि क्वाथ।

त्रिफला और अमलताशका गूदा,—कुल दो तोले लेकर, डेढ़ पाव पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, मल-छानकर पीलो। इससे दाह, रक्तपित्त और पित्तज शूल अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—दाह-रोगमें पेट साफ़ रखना बहुत ज़रूरी है।

स्वास्थ्यरक्षा।

हमारी लिखी हुई "स्वास्थ्यरक्षा" भारतमें खूब मशहूर है। अगर आपने नहीं देखी है, तो अब मँगाकर देखिये एवं अपने मित्रों और पड़ौसियोंको देखने-की सलाह ज़ोरसे दीजिये; क्योंकि संसारमें "स्वास्थ्य-सुख" या तन्दुरुस्ती ही सर्वप्रधान सुख है। जिस घरमें हमारी "स्वास्थ्यरक्षा" पढ़ी जाती है, उस घरमें रोग और वैद्य कदाचित ही जाते हैं। "स्वास्थ्यरक्षा" में स्वास्थ्यरक्षाके अनमोल नियम-क़ायदोंके अलावा, कम-से-कम पाँच सौ परीक्षित नुसख़े हैं, जो देनेके साथ ही तीरेहदफ़का काम करते हैं। उन नुसख़ोंकी क़ीमत पाँच सौ गिन्नी भी कम हैं। गृहस्थीमें किसीको कोई रोग हो, आप "स्वास्थ्यरक्षा" की सूची देख-कर नुसख़ा खोज लीजिये। पहलेके संस्करणोंकी पुस्तकोंमें मामूली रोगोंके ही नुसख़े थे, पर इस आठवें संस्करणमें तो अनेक भयानक-भयानक रोगोंपर भी अचूक नुसख़े लिख दिये गये हैं। दाम सजिल्दका ३॥)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

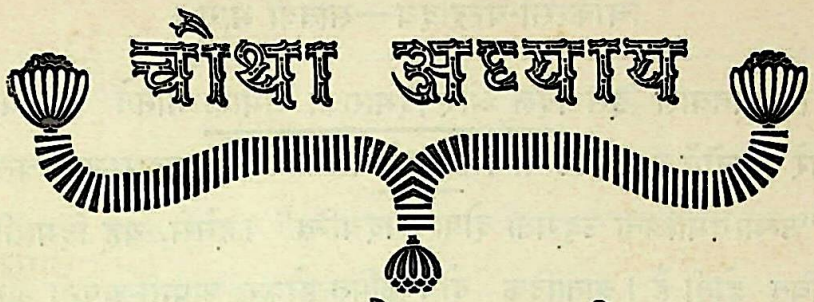

उन्माद-रोगका वर्णन।

—:०:❀:०:—

उन्माद शब्दकी निरुक्ति।

जिस बीमारीमें मनुष्यका मन विकृत या मतवाला हो जाता है, उसे "उन्माद" कहते हैं। उन्मादका अर्थ पागलपन, बावलापन, सिड़, दीवानापन या ख़फ़कानगी है। जिसे उन्माद-रोग होता है, उसे उन्मत्त, सिड़ी, दीवाना या पागल आदि कहते हैं।

उन्माद मानसिक रोग है।

चूँकि उन्माद मनको विकृत कर देता है, इसलिये उसे मानसिक व्याधि या मनका रोग कहते हैं। कहा है:—

उन्मार्गसंस्थिता दोषाः कुपिता मदयन्ति यत्।
ज्ञेयोऽयं मानसो व्याधिरुन्माद इति कीर्तितः॥

वात, पित्त और कफ—बढ़कर, अपनी-अपनी राहोंको छोड़कर और मनके बहनेवाली धमनी नाड़ियोंमें घुसकर, मनको उन्मत्त करते या मनमें भ्रम उत्पन्न करते हैं। इसे ही "उन्माद" कहते हैं और "उन्माद" मानसिक रोग है। खुलासा यह है कि, उन्माद-रोगमें "मन" ख़राब होता है, इसलिये उन्मादको मनकी बीमारी कहते हैं।

उन्माद दिलका रोग है या दिमाग़का?

उन्माद और अपस्मारादि रोग मन और बुद्धिकी विकृति से होते हैं। वैद्यक-शास्त्रवाले इस रोगको प्रायः हृदयके विकारसे मानते हैं;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर हिकमतवाले इसे दिल और दिमाग़की बीमारी मानते हैं। यद्यपि हमारे शास्त्रोंमें इसकी उत्पत्ति हृदयसे लिखी है, पर महाराज धन्वन्तरि-के "उन्मार्गमाश्रिता उद्गता दोषा मदयन्ति" कहनेसे, यह दिमाग़ी भी साबित होती है। वातादिक दोष कुपित होकर, अपनी-अपनी असली राहोंको छोड़ देते हैं और ऊर्द्धगामी होकर या ऊपरकी तरफ जाकर मद या उन्माद-रोग करते हैं, धन्वन्तरि महाराजके कथनका यही अभिप्राय है। इसका यह अर्थ तो प्रायः सभी विद्वान् करते हैं कि, वातादिक दोष कुपित होकर और ऊपर जाकर, हृदय और मनको ख़राब करके, मनोवाही धमनियोंमें जाते और अंतःकरणको मोहित करते हैं। पर धन्वन्तरिजीने हृदयमें ही दोषोंके प्रवेश करनेकी बात साफ तौरसे नहीं लिखी है, किन्तु ऊर्द्धगामी होनेकी बात कही है, इस-से साबित होता है कि, उन्माद हृदयसे भी हो सकता है और दिमाग़से भी। इसके सिवाय एक बात और है, जिससे हमारी बात और भी पक्की हो जाती है। धन्वन्तरिजीने कहा है:—

तीक्ष्णैरुभयतो भागैः शिरश्चापि विशोधयेत्।
पूजां रुद्रस्य कुर्वीत तद्गणानाञ्च नित्यशः॥

वैद्यको चाहिये कि, क़य और दस्त करानेवाली दवाएँ देकर रोगी-के शरीरको नीचे और ऊपरसे शुद्ध करे और सिरका भी शोधन करे; यानी नस्य वग़ैरःसे सिरकी मलामतको भी निकाले। यह श्लोक तो "अपस्मार" रोगमें कहा है। इसके सिवा—उन्माद-रोगकी चिकित्सामें तो शिरोविरेचनकी बात साफ ही लिखी है:—

स्निग्धं स्विन्नं तु मनुजमुन्मादार्त्तं विशोधयेत्।
तीक्ष्णैरुभयतो भागैः शिरश्चविरेचनैः॥

उन्माद-रोगीको स्नेहन और स्वेदन करके तथा तीक्ष्ण वमन-विरे-चन देकर, नीचे-ऊपर दोनों तरफसे खूब शुद्ध करे और शिरोविरेचन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नस्यादिसे सिरको भी खूब शुद्ध करे। खुलासा यह कि, क़यकी दवा देकर क़य करावे और दस्तकी दवा देकर दस्त करावे। इतने ही से सन्तोष न करले, किन्तु सिरकी ग़िलाज़त निकालनेवाला जुलाब—नस्य देकर मस्तकको भी खूब साफ करे।

इससे साफ़ मालूम होता है कि, कुपित हुए दोष हृदय ही नहीं दिमाग़में भी जाते हैं। इसीसे महर्षिने "सिरके जुलाब" या शिरो-विरेचनकी बात कही है। अगर यह रोग हृदयसे ही होता, तो वे शिरोविरेचक नस्यादिसे उसके साफ करनेकी बात न कहते; क्योंकि हृदय-रोगमें, शिरोविरेचनकी वैसी ज़रूरत नहीं। मतलब यह है कि, पाठकोंको उन्माद रोगको दिल और दिमाग़ दोनोंसे ही मानना चाहिये।

हिकमतमें उन्माद-रोग कई तरहका लिखा है। मुख्य "माली-खोलिया" है, और उसके रूपान्तर कुतरुप, मानिया, दाउलकल्ब और सुवारा या विशेष जनून लिखे हैं। इनके लक्षण कमोबेश हमारे "उन्माद" से मिलते हैं।

मालीखोलियामें लिखा है—इस रोगमें, मनके विचार प्रकृतिके अनुसार नहीं रहते। आजकलके हकीम जिसे "मालीखोलिया" कहते हैं, पहलेके हकीम उसे "मैलनकली" कहते थे। दिमाग़ी उन्मादको "जनून" और दिलके फितूरसे होनेवालेको "ख़फ़कान" कहते हैं; इन सबके लक्षण हम आगे विस्तारसे लिखेंगे।

डाक्टर लोग दिमाग़से होनेवाले उन्मादको "इनसैनिटी" और दिलकी धड़कनसे होनेवालेको "पैलपीटेशन ऑव् हार्ट" और एक तरहके सूक्ष्म उन्मादको "मलनकोलिया" कहते हैं।

हिकमत और डाक्टरीमें, उन्माद के पैदा होनेकी बात दिल और दिमाग़से साफ लिखी है, पर वैद्यकमें गोलमोल लिखी है। वास्तवमें, उन्माद-रोग दिलसे भी होता है और दिमाग़से भी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्मादके निदान या कारण।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे उन्माद-रोग होता है:—

(१) संयोग-विरुद्ध भोजन करनेसे।
(२) विष या ज़हर-मिले पदार्थ खाने-पीनेसे।
(३) अपवित्र या नापाक खाना खानेसे।
(४) देवता या गुरु वग़ैरःका अपमान करनेसे।
(५) अत्यन्त खुश होने या अत्यन्त डरनेसे।
(६) अपनेसे ज़बर्दस्तके साथ बैर करनेसे।

नोट—वैद्यकमें उन्मादके ये ही निदान लिखे हैं, पर यह रोग ज़ियादा नशा खा लेने और काम, क्रोध, मोह, लोभसे भी हो जाता है।

उन्माद-रोगकी क़िस्में।

उन्माद-रोग छै तरहका होता है:—

(१) वातसे। (२) पित्तसे।
(३) कफसे। (४) सन्निपातसे।
(५) मनके दुःखसे। (६) विष खानेसे।

नोट—इस रोगमें दोषानुसार चिकित्सा करनी चाहिये। जबतक यह रोग बढ़ नहीं जाता, इसे "मद" कहते हैं।

उन्मादकी सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे वात, पित्त और कफ कुपित होते या बढ़ते हैं। बढ़कर, ये अल्पसत्व या हीनशक्ति-कमज़ोर आदमियोंके बुद्धिके रहनेकी जगह—मन और हृदय—को ख़राब करते हैं। इसके बाद ये मनोवाही धमनी नाड़ियोंमें अपना दख़ल जमाकर, अन्तःकरणमें विकार उत्पन्न करते या उसे मोहित करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

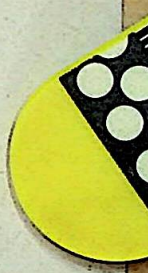

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

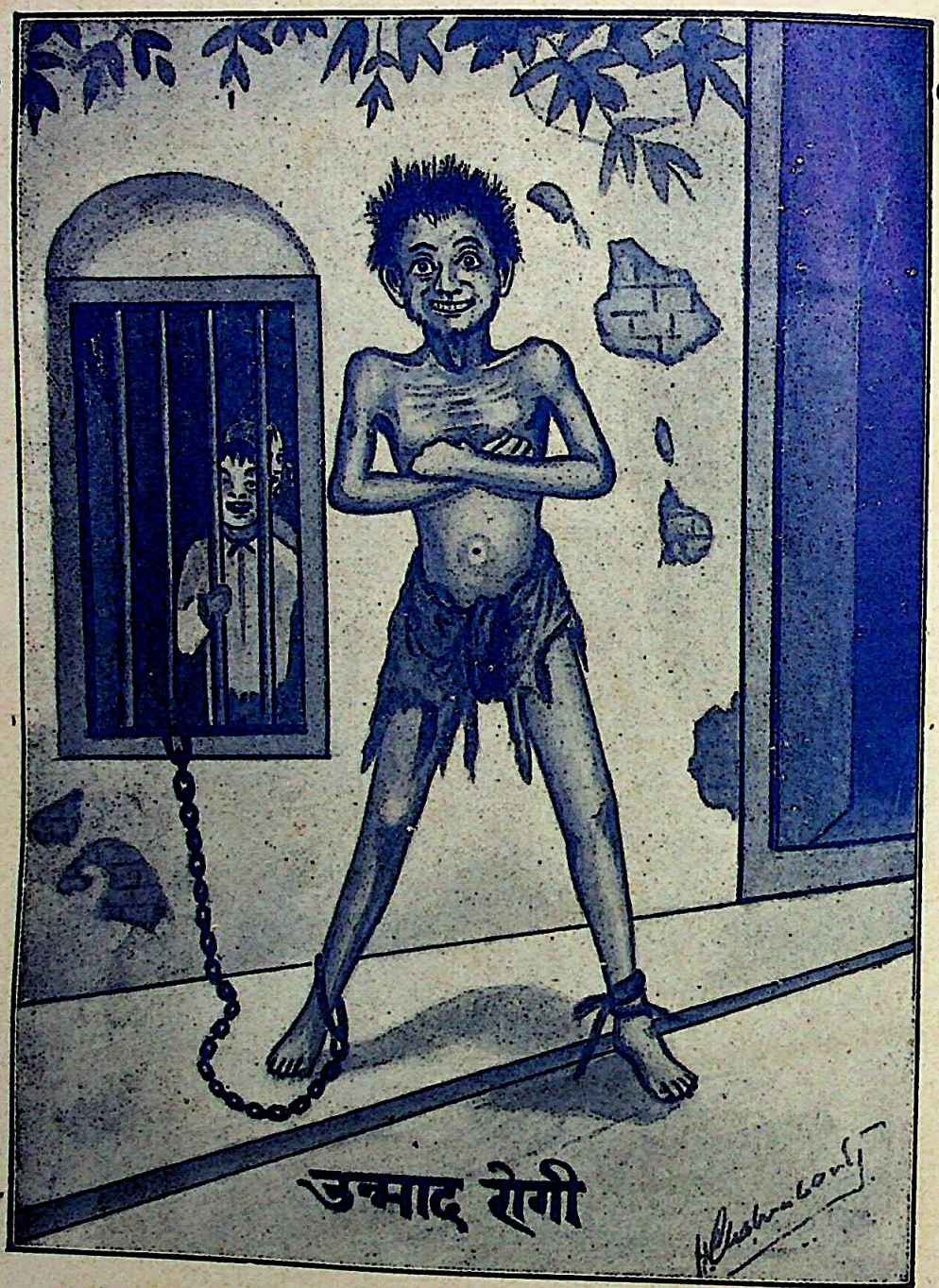

उन्माद रोगी

ऊपर एक उन्माद रोगीका चित्र दिया गया है। देखिये, रोगीको भ्रम हो गया है, मन चंचल है, इसकी दृष्टि भी चंचल और भयावनी है, इसकी विचार-शक्ति मारी गई है और यह ऊटपटांग काम करता है, इसीसे बेड़ियाँ डालकर बाँध रक्खा गया है।

(पृष्ठ ६५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—हिकमतमें लिखा है, जब कोई उपद्रव दिमाग़में पहुँच जाता है, तब दिमाग़ी शक्तियोंके कामोंमें कमी आ जाती है, वे निकम्मी हो जाती हैं और हेतुके बलवान या निर्बल होनेके अनुसार 'घबराहट' पैदा हो जाती है।

उन्मादके पूर्वरूप या सामान्य लक्षण।

उन्माद-रोगके पूरी तरहसे होनेके पहले, नीचे लिखे हुए पूर्वरूप देखनेमें आते हैं। इन्हें उन्मादके 'सामान्य लक्षण' भी कहते हैं:—

(१) बुद्धिमें भ्रम हो जाता है।
(२) मन चंचल हो जाता है।
(३) रोगी इधर-उधर दृष्टि फेरता है।
(४) उसे धीरज नहीं रहता।
(५) कहना चाहिये कुछ और कहता है कुछ।
(६) उसकी विचारशक्ति मारी जाती है।

उन्मादके विशेष लक्षण।

वातज उन्मादके कारण।

वातज उन्मादके कारण ये हैं:—

(१) रूखा और शीतल भोजन करना।
(२) भूखसे कम खाना।
(३) दस्त और क़य होना।
(४) धातुका क्षय होना।
(५) उपवास करना या निराहार रहना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर लिखे पाँचों कारणोंसे "वायु" कुपित होता या बढ़ता है। अगर इस हालतमें रोगी शोक या चिन्तादि करता है, तो वायु और भी कुपित हो जाता है। बढ़े हुए वायुको चिन्ता और शोकादि मददगार मिल जाते हैं। मददगारोंकी मददसे बलवान होकर, कुपित हुआ "वायु" अन्तःकरणको ख़राब कर देता है। अन्तःकरणको ख़राब करके, वायु बुद्धि और स्मृतिका नाश कर देता है और इस तरह "उन्माद-रोग" पैदा कर देता है।

वातज उन्मादके लक्षण।

जब वातज उन्माद हो जाता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण नज़र आते हैं:—

(१) रोगी अकारण हँसता है।
(२) मन्द-मन्द मुस्कराता है।
(३) बिना समय या प्रसंगके नाचता-गाता है।
(४) ज़रूरतसे ज़ियादा बोलता है।
(५) हाथ-पैरोंको इधर-उधर चलाता है।
(६) कर्कश स्वरमें रोता है।
(७) रोगीका शरीर रूखा, दुबला और लाल हो जाता है
(८) भोजन पचनेपर, इस वातज उन्मादका ज़ोर बढ़ता है।

शास्त्रमें लिखा है:—

अस्थाने स्मृति हास्य भाष्य गणना वागंग विक्षेपका।
उन्मादे पवनात्मके बहुविधा भावाः प्रनृत्यादयः॥

बे-मौक़े याद करना, हँसना, बोलना, गिन्ती करना, बातें करना, हाथ-पाँव पटकना और नाच-गान आदि नाना प्रकारकी चेष्टाएँ करना—ये सब वातज या बादीके उन्मादके लक्षण हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तज उन्मादके कारण।

पित्तज उन्मादके कारण ये हैं:—

(१) अधकच्चे या कच्चे पदार्थ खाना।

(२) कड़वे पदार्थ खाना।

(३) खट्टी चीज खाना।

(४) दाहकारक और गरम चीज खाना।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे पित्त बढ़ता है। बढ़ा हुआ तीव्रवेगी "पित्त" अजितेन्द्रिय मनुष्यके हृदय या मनोवाही धमनी नाड़ियोंमें घुस जाता है। वहाँ पहुँचकर और अन्तःकरणको खराब करके, वह बुद्धि और स्मृतिका नाश कर देता और इस तरह उन्माद-रोगको पैदा करता है।

पित्तज उन्मादके लक्षण।

जब पित्तज उन्माद हो जाता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) रोगीमें सहनशीलता नहीं रहती।

(२) वह हाथ-पैर पटका करता है।

(३) शर्म-लिहाज त्यागकर नंगा हो जाता है।

(४) डरकर भागता-दौड़ता है।

(५) उसका शरीर गरम रहता है।

(६) क्रोध या गुस्सा करता है।

(७) छायामें रहना चाहता है।

(८) शीतल जल और शीतल अन्न खाना-पीना चाहता है।

(९) रोगीका चेहरा पीला हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शास्त्रमें लिखा है:—

दाहस्तर्जन नग्न भाव बहुलालापाश्च कोपोष्णता।
कांक्षाशीतजलाशनेषु नितरां तृट् पीतता पैत्तिके॥

दाह—जलन, तर्जन—ज़ोरसे चिल्लाना, नंगा हो जाना, बहुत बकना, क्रोध करना, गरमी लगना, शीतल जल पीनेकी इच्छा, निरन्तर प्यास लगना और पीलापन—ये सब पित्तज उन्मादके चिह्न हैं।

कफज उन्मादके कारण।

कफज उन्मादके कारण ये हैं:—

(१) कम भूखमें पेट भर खाना।

(२) कुछ भी मिहनत न करना।

इन कारणोंसे, पित्त-सहित कफ अत्यन्त बढ़कर हृदयमें जाता है। वहाँ जाकर, वह बुद्धि स्मृति और चित्तकी शक्तिका नाश करके उन्माद-रोग पैदा करता है।

कफज उन्मादके लक्षण।

जब कफज उन्माद होता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं:—

(१) रोगी एकान्तमें रहना पंसन्द करता है।

(२) कम बोलता है।

(३) स्त्रियोंको चाहता है।

(४) नींदमें मग्न रहता है।

(५) भोजनपर रुचि नहीं रहती।

(६) क़य होती हैं।

(७) मुँहसे लार बहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) नाखून, चमड़ा, आँखें और मूत्र सफेद हो जाते हैं।

(९) भोजन करते ही इस उन्मादका जोर बढ़ जाता है।

सन्निपातज उन्मादके लक्षण।

सन्निपातज उन्माद सब तरहके मिले हुए कारणोंसे पैदा होता है, अतः इसमें तीनों दोषोंके लक्षण पाये जाते हैं। यह उन्माद बहुत ही भयङ्कर और दुश्चिकित्स्य होता है। इस असाध्य और विरुद्ध-चिकित्सनीय उन्मादकी चिकित्सा वैद्य नहीं करते।

शास्त्रमें लिखा है:—

नारीविविक्तप्रियता च मांद्यं निद्रावमिः श्लेष्मभवे च लाला।
सर्वाणि रूपाणि भवन्ति यत्र स सन्निपातप्रभवोऽति घोरः॥

स्त्री और एकान्तवासका अच्छा लगना, अग्निमान्द्य, निद्रा, वमन और मुँहसे लार टपकना ये कफोन्मादके लक्षण हैं। जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण दीखें, उसे अति भयंकर सन्निपातोन्माद समझो।

शोकज उन्मादके कारण।

शोकज या मानस उन्मादके कारण ये हैं:—

(१) चोर, शत्रु, राजा या और मनुष्यसे डरना।

(२) सिंह, व्याघ्र या सर्प आदिसे डरना।

(३) धन या सर्वस्व नाश हो जाना।

(४) स्त्री-पुत्रादि नातेदारोंकी मौत हो जाना।

(५) मन-चाही स्त्रीका न मिलना।

इन कारणोंसे मनुष्यके मनमें अत्यन्त दुःख होता है। मनके दुःखी होनेसे, मनमें भयङ्कर विकार उत्पन्न हो जाते हैं। खुलासा यह कि, क्षुभित या दुःखित "अन्तःकरण" मानसिक विकार या शोकज उन्माद पैदा करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखते हैं, कितने ही कंजूस-धनी चोरों द्वारा धन चुराये जानेके भयसे, कितने ही अपराधी राजदण्डसे डरकर, कितने ही ज़ोरावर दुश्मनके ख़ौफसे और कितने ही सर्प, हाथी, सिंह आदिसे सताये जानेपर पागल हो जाते हैं। अनेक आदमी अपने प्यारोंके मर जानेसे, अनेक किसी जगह जमा किया हुआ धन डूब जानेसे और अनेक मन-चाही प्यारी स्त्रीके न मिलनेसे पागल हो जाते हैं। मजनूँ लैलाके न मिलनेसे ही पागल हो गया था; कपड़े फाड़ डालता था और जंगलोंमें मारा-मारा घूमता था। अभी हालकी घटना है, एक मारवाड़ी सेठको बाज़ारका बहुत-सा रुपया देना हो गया। उसकी स्त्रीके पास कोई २५।३० हज़ारका ज़र-ज़ेवर था। सेठ चाहता था कि, उसे बेचकर लोगोंका देना चुका दूँ, पर स्त्रीने साफ इन्कार कर दिया। बस, वह पागल हो गया। रात-दिन चिल्ला-चिल्लाकर कहा करता—"वह आये, वह आये, उनका ऋण कैसे चुकाऊँ ?" कुछ दिन बाद, उसकी हालत और भी ख़राब हो गई और वह मर गया। अतः मनुष्यको अपने मनको कभी न बिगड़ने देना चाहिये। मनके ख़राब होनेसे बड़े-बड़े भयङ्कर प्राणनाशक रोग हो जाते हैं।

शोकज उन्मादके लक्षण।

जिसे शोकज उन्माद होता है, उसमें ये लक्षण पाये जाते हैं:—

(१) शोकज उन्मादवाला गुप्त बातोंको कहता है।

(२) अनेक तरहकी बातें करता है।

(३) हँसता है, गाता है और रोता है।

(४) उसका ज्ञान विपरीत हो जाता है।

(५) वह अत्यन्त मूर्ख हो जाता है।

शास्त्रमें लिखा है:—

ब्रवीति चित्रं च मनोगतं य सत्यतो रोदति चाति मूढ़ं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विषजन्य उन्मादके लक्षण।

जिसे विष या जहर खाने-पीनेसे उन्माद होता है, उसमें ये लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) रोगीकी आँखें अत्यन्त लाल हो जाती हैं।
(२) बल और वर्णका नाश हो जाता है।
(३) इन्द्रियोंकी शक्ति नष्ट हो जाती है।
(४) शरीरकी कान्ति मारी जाती है।
(५) मुँहका रंग काला या श्याम हो जाता है।
(६) संज्ञा जाती रहती है।

शास्त्रमें लिखा है:—

विषोद्भवे स्याद्बलवाग्विहीनः श्यावाननोरक्ततरेक्षणश्च।

विषके उन्मादमें बल और वाणीका नाश हो जाता है। मुँहका रंग श्याम हो जाता है और नेत्र अत्यन्त लाल हो जाते हैं।

सब तरहके उन्मादोंकी ख़ास-ख़ास पहचानें।

१—वातज उन्मादवालेका शरीर रूखा, दुबला और लाल हो जाता है। यह उन्माद भोजन पचनेपर ज़ियादा ज़ोर करता है।

२—पित्तज उन्मादवालेका चेहरा पीला पड़ जाता है। वह शीतल अन्न, शीतल जल और शीतल छायाको पसन्द करता है।

३—कफज उन्मादवालेके नाखून, चमड़ा, नेत्र और मूत्र आदि सफेद हो जाते हैं। उसे स्त्री, एकान्तवास और कम बोलना ये अच्छे लगते हैं।

४—सन्निपातज उन्मादमें ऊपर लिखे हुए तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं।

५—शोकज उन्मादवाला अनेक तरहकी बातें करता और छिपी बातोंको कहता है।

६—विषज उन्मादवालेका चेहरा श्यामवर्ण और नेत्र अत्यन्त लाल हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असाध्य उन्मादके लक्षण।

असाध्य उन्मादमें ये लक्षण होते हैं:—

(१) रोगीका मुँह सदा नीचेकी ओर या ऊपरकी तरफ रहता है।

(२) मांस और बल क्षीण हो जाते हैं।

(३) नींद कभी नहीं आती—जागता ही रहता है।

शास्त्रमें लिखा है:—

अवाङ्मुखस्तून्मुखोवा क्षीणमांसबलोनरः।
जागरुकोह्यसन्देहमुन्मादेन विनश्यति॥

जिस उन्माद-रोगीका मुँह सदैव नीचेकी ओर या ऊपरकी ओर रहता है, जिसके मांस और बल क्षीण हो जाते हैं और जिसकी नींद जाती रहती है, वह उन्मादी उन्मादसे निश्चय ही मर जाता है।

भूतोन्मादके लक्षण।

देवता आदिके ग्रसनेसे जो उन्माद-रोग होता है, उस उन्माद-वालेकी बोल-चाल, पराक्रम, शूरता और चेष्टा आदमियोंकी-सी नहीं होतीं। उस आदमीकी बुद्धि, विचारशक्ति, धारणाशक्ति, स्मरणशक्ति; शिल्प आदिका ज्ञान, बल और अभिमान आदि देवताओंके-से होते हैं। ऐसे उन्मादका समय या तिथि नियत होती है; यानी ऐसे उन्मादका दौरा किसी मुक़र्रर वक्त या मुक़र्रर तारीख़में होता है। यह भूतोन्मादकी पक्की पहचान है।

देवग्रहजुष्टके लक्षण।

देवग्रह ग्रसित उन्मादवाला सन्तोषी होता है और पवित्र रहता है। उसके शरीरसे दिव्य फूलोंकी सुगन्ध निकलती है। उसे नींद नहीं आती। वह शुद्ध संस्कृत भाषा बोलता और तेजस्वी होता है। उसके नेत्र स्थिर होते हैं। वह दूसरोंको वरदान देता और ब्राह्मणोंमें भक्ति रखता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दैत्याविष्टके लक्षण।

जिसे दैत्य-ग्रहके ग्रसित करनेसे उन्माद होता है, वह पसीनोंसे तर हो जाता है; ब्राह्मण, गुरु और देवताओंकी निन्दा करता है। उसकी आँखें टेढ़ी हो जाती हैं और वह किसीसे भी नहीं डरता। वह कुमार्गमें रुचि रखता और किसी भी तरहके खाने-पीनेके पदार्थोंसे सन्तुष्ट नहीं होता। उसका स्वभाव दुष्ट हो जाता है।

गन्धर्वाविष्टके लक्षण।

गन्धर्व-ग्रहसे पीड़ित मनुष्य अन्तःकरणसे खुश रहता है। जलाशय-तट और बन-उपवनोंमें रहता है। उत्तम चालसे चलता है। गाना, खुशबूदार पदार्थ और फूलोंसे प्रेम रखता है और नाचते-नाचते मन्द-मन्द मुस्कराता है।

यक्षाविष्टके लक्षण।

यक्ष-ग्रहसे ग्रसित मनुष्य गम्भीर होता है। उसकी आँखें लाल होती हैं। सुन्दर महीन और रंगीन कपड़े पहनता है। जल्दी-जल्दी चलता और कम बोलता है। सहनशील और तेजस्वी होता है। "किसको क्या हूँ," ऐसा कहता है।

पित्राविष्टके लक्षण।

पितृ-ग्रहसे पीड़ित मनुष्य कुश आदिसे अपने पित्रोंको पिण्ड देता है। शान्त चित्त रहता है। दाहने कन्धेपर कपड़ा रखकर अपने पित्रोंको जल भी देता है। मांस, तिल, गुड़ और खीर खानेकी इच्छा करता है। इन सबके सिवाय, वह पित्रोंकी भक्ति करता है।

नागाविष्टके लक्षण।

सर्प-ग्रहसे ग्रसित मनुष्य कभी-कभी साँप की तरह पेट और छातीके बल चलता है, बारम्बार जीभसे गज़फुओंको चाटता है, क्रोध करता है तथा शहद, घी, दूध और खीर खाना चाहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

राक्षसाविष्टके लक्षण।

राक्षस-ग्रहसे ग्रसित मनुष्य मांस, खून और शराबकी बनी चीज़ चाहता है। वह अत्यन्त बेशर्म, अत्यन्त निर्दयी, अत्यन्त शूर और क्रोधी हो जाता है। उसके शरीरमें अनेक तरहके बज़ आ जाते हैं। वह रातमें घूमा करता और पवित्रतासे नफरत करता है।

ब्रह्मराक्षसाविष्टके लक्षण।

ब्रह्मराक्षससे ग्रसित मनुष्य देवता, ब्राह्मण और गुरुसे द्वेष करता है। वेद-वेदाङ्गोंकी निन्दा करता है। किसी दूसरेको नहीं मारता, किन्तु अपने ही शरीरको तकलीफ देता है।

पिशाचाविष्टके लक्षण।

पिशाच-ग्रहसे पीड़ित आदमी नङ्गा हो जाता तथा दुबला और कमज़ोर रहता है। विरुद्ध बात कहता है। उसके शरीरसे बदबू निकलती है। वह अत्यन्त गन्दा रहता है। रूखा हो जाता है। सब तरहके खाने-पीनेके पदार्थों में लम्पट हो जाता है। बहुत खाता है। सुनसान जगहों और बनोंमें रहता है। विरुद्ध चेष्टा करता-करता और रोता-रोता त्रासको प्राप्त हो जाता है।

हिंसक राक्षसादिक ग्रह ग्रसितका निदान।

जो मनुष्य अपवित्र रहता है और मर्यादा तोड़ता है, वह मनुष्य घावसहित हो चाहे घावरहित हो, राक्षसादि उसे मारनेके लिये या अपनी पूजा करानेके लिए पकड़ते हैं।

हिंसार्थ पकड़े हुएके लक्षण।

पर्वत, हाथी, वृक्ष, दीवार और ऊँचे मकान आदिसे गिरे हुएको राक्षसादि हिंसक लोग ग्रस लेते हैं। उस समय उस मनुष्यके नेत्र जड़ हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साध्यासाध्य लक्षण।

ज़ोरसे जल्दी-जल्दी चले, क़य करे, बहुत सोवे और अत्यन्त काँपे—ऐसे मनुष्यका उन्माद असाध्य है। देवादिक ग्रहोंके कारणसे पैदा हुए उन्माद तेरहवें वर्षमें असाध्य हो जाते हैं।

देवादिक आवेशका समय।

देवादि ग्रह नीचे लिखी हुई तिथियोंमें मनुष्यके शरीरमें प्रवेश करते हैं:—

(१) देवग्रह	...	...	पूर्णमासीके दिन।
(२) दैत्य	...	...	दोनों सन्ध्याकालमें।
(३) गन्धर्व	...	...	अष्टमीके दिन।
(४) यक्ष	...	...	पड़वा के दिन।
(५) पितर-ग्रह	...	...	कृष्ण पक्षमें।
(६) सर्प-ग्रह	...	...	पञ्चमीके दिन।
(७) राक्षस	...	...	रातमें।
(८) पिशाच	....	...	चौदसके दिन।

नोट—पितृ-ग्रह कृष्ण पक्षकी अमावस्याके दिन आदमियोंके शरीरमें आते-हैं। इन तिथियोंसे लक्षण समझनेमें मदद मिलती है और इन्हीं तिथियोंमें बलिदान भी किया जा सकता है।

देवादिक ग्रह मनुष्य-शरीरमें घुसते हुए दीखते क्यों नहीं?

जिस तरह दर्पण, तेल या पानीमें छाया घुसती हुई नहीं दीखती, जिस तरह सर्दी और गरमी मनुष्य-देहमें घुसती हुई नहीं दीखती, जिस तरह सूर्यकी किरणें सूर्यकान्त मणिमें घुसती हुई नहीं दीखतीं, जिस तरह जीव शरीरमें घुसता हुआ नहीं दीखता, उसी तरह देवादि ग्रह मनुष्य-शरीरमें घुसते हुए नहीं दीखते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्माद-चिकित्सामें—

याद रखने योग्य बातें।

(१) वातज उन्मादमें पहले स्नेहपान कराना चाहिये; पित्तके उन्मादमें पहले जुलाब देकर दस्त कराने चाहिये और कफके उन्मादमें पहले वमन करानी चाहिये। और-और उन्मादोंमें पिचकारी वग़ैरः लगानी चाहिये।

(२) उन्माद और मृगीके दोष और दूष्य समान होते हैं, अतः उन्मादकी दवाएँ मृगीमें और मृगीकी उन्मादमें काम आ सकती हैं।

(३) उन्माद-रोगीकी वृक्ष, अग्नि, जल, पर्वत और विषम स्थानोंसे सदा रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि ये तत्काल प्राण नाश करते हैं।

(४) महर्षि, पितृ और गन्धर्व-बाधाके उन्मादमें तीक्ष्ण अंजन, तीक्ष्ण नस्य और सारे क्रूर कर्म त्याग देने चाहिये। घृत आदि मृदु दवाओंसे आराम करना चाहिये।

(५) ग्रह-ग्रसित उन्मादमें, मृगी-रोगमें लिखे हुए काम करने चाहिये तथा शान्ति, दोष-विशोधन और स्नेह-क्रिया ये सब काम करने चाहिये।

(६) विषके उन्मादमें पहले मृदु क्रिया करनी चाहिये और शोकज उन्मादमें शान्ति आदि कर्म करने चाहिये।

(७) उन्माद-रोगीको बिना हवाके स्थानमें बिठाकर, चतुराईसे उर, बाहू और ललाटकी फ़स्द खुलवानी चाहिये।

(८) देवग्रह ग्रसित मनुष्यके आराम करनेके लिए, रौद्र-कर्म न करना चाहिये और पिशाचादिसे ग्रसित होनेपर उनके प्रतिकूल काम न करने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) निज और आगन्तु उन्मादमें देश, अवस्था, सात्म्य, दोष, काल और बलाबलकी परीक्षा करके चिकित्सा करनी चाहिये।

(१०) काम, शोक, भय, क्रोध, हर्ष, ईर्ष्या और लोभसे पैदा हुए उन्मादोंको परस्परके प्रतिद्वन्द्वी या विरोधी उपायोंसे शान्त करना चाहिये। जैसे,—शोक, भय, क्रोध और ईर्ष्यासे हुए उन्मादको काम, हर्ष और लोभ द्वारा जीतना चाहिये।

(११) बलिदान, मंगल, हवन, भूतबाधा दूर करनेवाली दवाओं, सत्य, आचार, तप, ज्ञान, दान, नियम, व्रत, देवता, ब्राह्मण और गुरुकी पूजा, सिद्ध मन्त्र और औषधिसे 'आगन्तु उन्मादको' शान्त करना चाहिये।

(१२) जो प्राणी मांस और शराबसे बचा रहता है, हितकारी भोजन करता है, यत्नसे चलता और पवित्र रहता है, उसे निज अथवा आगन्तु उन्माद कभी नहीं होता।

(१३) उन्माद-रोगमें, बहुधा, नींद नाश हो जाती है और नींद आनेसे उन्माद-रोग आराम होता है। उन्माद-रोगके साथ होनेवाले "निद्रानाश रोग"को अफीम फ़ौरन नाश कर देती है। उन्मादके शुरू होते ही, अगर अफीमकी उचित मात्रा दी जाय, तो उन्माद रुक सकता है। जब उन्माद-रोगमें ज़रा-ज़रा देरमें रोगीको जोश आता और उतरता है, तब अफीमकी रत्ती-रत्ती-भरकी मात्रा देनेसे बड़ा उपकार होता है। उन्मादमें हर बारमें रत्ती-रत्ती अफीम देनेसे कोई हानि नहीं होती; क्योंकि उन्माद-रोगी अफीमकी अधिक मात्रा सह सकता है। पर सभी तरहके उन्मादोंमें, बिना सोचे-समझे अफीम देना भी ठीक नहीं। जब उन्माद-रोगीका चेहरा फीका हो, नाड़ी मन्दी-मन्दी चलती हो और नींद न आनेसे शरीर कमज़ोर हुआ जाता हो, तब अफीम देना लाभदायक है; किन्तु जब उन्माद-रोगीका चेहरा सुर्ख़ हो अथवा मुँह या सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, तब अफीम न देनी चाहिये। इस हालतके सिवा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्मादकी और सब हालतोंमें अफीम देना हितकर है। उन्मादके आरम्भमें, अफीम देनेसे उन्माद रुकते देखा गया है।

(१४) इन्द्रिय, बुद्धि, आत्मा और मनकी प्रसन्नता तथा धातुओंका प्रकृतिस्थ होना—ये उन्मादमुक्तके लक्षण हैं; अर्थात् ये लक्षण होनेसे उन्मादको नष्ट हुआ समझना चाहिये।

उन्माद-नाशक नुसख़े।

(१) ब्राह्मीके पत्तोंका रस ४ तोले, कूटका चूर्ण १२ रत्ती और शहद ४८ रत्ती—इन सबको एकत्र मिलाकर पीनेसे उन्माद-रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(२) पेठेके बीजोंका चूर्ण ४८ रत्ती और कूटका चूर्ण १२ रत्ती,—इन दोनोंको ४ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे उन्माद-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पेठेकी बीजोंकी गरी २ तोले लेकर, रातके समय, पत्थर या मिट्टीके बर्तनमें, पाँच तोले पानी डालकर भिगो दो। सवेरे ही उसे सिलपर पीसकर छान लो और ६ माशे "शहद" मिलाकर पीलो। इस नुसख़ेके लगातार १५ दिन पीनेसे उन्माद-रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) शंखाहूलीका रस ४ तोले, कूटका चूर्ण १२ रत्ती और शहद ४८ रत्ती,—इनको एकत्र मिलाकर पीनेसे उन्माद-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५) चम्पाके फूल दो तोले लेकर और एक तोले शहदमें मिलाकर खा जाओ। इस तरह, कई दिन इस दवाके खानेसे उन्माद-रोग चला जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) दो तोले खूब पकी हुई इमली लाकर, आध पाव पानीमें, पत्थर या काठके बासनमें, भिगो दो। फिर उसे खूब मसल या पीसकर, उसमें एक तोले "मिश्री" डाल दो और मिलाकर पी जाओ। इस तरह कितने ही दिन पीनेसे उन्माद-रोग नाश हो जाता है।

नोट--इमली--बीज, छिलके और रेशे अलग करके--दो तोले लेनी चाहिये।

(७) वाट्याल या पीले फूलकी बलाकी शाखाका रस पीनेसे उन्माद-रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(८) दो तोले रेवन्दचीनीको पानीके साथ सिलपर पीसकर, रोगीके दोनों कन्धोंके बीचमें लगा दो। इस उपायसे उन्माद-रोग चला जाता है।

(९) उन्मादवालेको, बलाबल देखकर, दस बरसका पुराना घी पिलानेसे उन्माद-रोग आराम हो जाता है; पर इसे कुछ दिन तक नित्य सेवन करना चाहिये।

नोट--चरकके चिकित्सा-स्थानमें लिखा है:--विशेषतः पुराणञ्च घृतं तं पाययेद्भिषक्। अर्थात् उन्माद-रोगमें विशेषकर पुराना घी पिलाना चाहिये॥ पुराना घी त्रिदोष नाशक, पवित्र और विशेषकर ग्रह नाशक है। जो घी कड़वा, चरपरा, तेज़ गन्धवाला, दस सालका पुराना, लाखके रसके समान, लाल रंगका और शीतल हो, वही पुराना घी है। दस बरससे ऊपरके पुराने घीको "पुराना घी" कहते हैं। एक सौ वर्षके पुराने घीसे ऐसा कौन-सा रोग है, जो नाश न हो? विशेषकर अपस्मार और ग्रहोन्माद-रोगीके लिये वह परमोत्तम है।

(१०) सरसोंके तेलकी नस्य देने और सरसों ही का तेल आँखोंमें आँजनेसे उन्माद-रोग चला जाता है। अगर सरसोंका तेल उन्माद-वालेके सारे शरीरमें लगाकर उसे धूपमें बिठा दें, तो निश्चय ही उन्माद चला जावे। किसी-किसीने सरसोंका तेल लगाये हुए उन्माद-रोगीको बाँधकर, धूपमें, चित्त सुलानेकी बात भी लिखी है। कहा है:—

कटुतैलाक्तमुत्तानं बंधयित्वातपे न्यसेत।
दर्शयेदद्भुतं किंचिदत्र यादिष्टविनाशनम्॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोगीके शरीरमें सरसोंका तेल लगाकर और उसे बाँधकर चित्त सुलावे; अथवा उसे कोई अद्भुत चीज़ दिखावे; अथवा इष्ट पदार्थ या किसी प्यारेके नाशकी ख़बर सुनावे।

(११) लाल रंगकी कच्ची चिरमिटी दो रत्ती लेकर गायके आध पाव दूधके साथ, कुछ दिन पीनेसे, उन्माद चला जाता है। कहा है:—

अपक्वचटकी क्षीरपीतोन्माद विनाशिनी।

बिना पकी चिरमिटी दूधके साथ पीनेसे उन्मादको नाश करती है।

(१२) भय और शोकसे कामज उन्माद शान्त होता है। भय और क्रोधसे शोकज उन्माद शान्त होता है। काम और शोकसे भयसे पैदा हुआ उन्माद शान्त होता है और इसी तरह कामज उन्माद भी शान्त होता है। मनचाही और अत्यन्त प्यारी चीज़के नाशसे हुआ उन्माद वैसी ही चीज़के मिलनेसे शान्त होता है अथवा विद्वानोंके शान्ति-दायक उपदेशों और समझाने-बुझानेसे शान्त होता है। देवता, गंधर्व, यक्ष, भूत, प्रेत और राक्षस आदिसे पैदा हुआ उन्माद बलिदान करने, हवन करने, जाप करने अथवा पूजा-उपासना करनेसे शान्त होता है।

(१३) उन्मादवालेको उसकी प्यारी चीज़का नाश होनेकी ख़बर सुनाने अथवा अद्भुत खेल दिखाने या कोई अपूर्व चीज़ दिखानेसे उसका उन्माद-रोग नाश हो जाता है।

(१४) उन्माद-रोगीके शरीरमें कौंचकी फली घिसने, अथवा गरम लोहा, गरम तेल या उबलता हुआ पानी उसके शरीरके छुलानेसे उन्माद शान्त हो जाता है।

(१५) उन्माद-रोगीको एकान्त स्थानमें ले जाकर बाँध देने और कोड़े मारने अथवा दाँत निकाले हुए साँपसे कटाने या सिंह और हाथी प्रभृतिसे डरानेसे उन्माद आराम हो जाता है।

(१६) उन्माद-रोगीको पुलिसके सिपाहियों द्वारा पकड़वाकर नगरके बाहर ले जाकर, किसी वृक्षादिसे बाँधकर मार डालनेकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धमकी देनेसे भी उन्माद शान्त हो जाता है, क्योंकि प्राणोंका भय बुरा होता है। प्राण-नाशके भयसे कदाचित विकृत हुआ चित्त ठिकानेपर आ जाता है और चित्तका ठिकाने आना ही उन्मादका आराम होना है।

(१७) उन्माद-रोगीको उसकी खोई हुई या मरी हुई स्त्रीके जैसी ही स्त्री देने और नाश हुई चीज़के समान चीज़ देने अथवा देनेका वायदा करने और उसे धीरज बँधानेसे, उसका चित्त शान्त होकर, उन्माद आराम हो जाता है।

नोट—अनेक उन्माद-रोगी नं० १३ से नं० १७ तककी तरकीबोंसे आराम हो गये हैं। इस रोगमें प्राण-नाशका भय दिखाना अनेक बार काम कर जाता है, क्योंकि प्राण-नाशसे पागल भी डरता है। कहा है:—

सर्वतो विप्लुतं चेति तेनैव परिशाम्यति।
सर्वदुःखभयेभ्योऽपि परं प्राणभयम्महत्॥

समस्त दुःखोंके भयकी अपेक्षा प्राण-नाशका भय बहुत बड़ा होता है, इस-लिए प्राण-नाशके भयसे सर्वथा विषय-शून्य हुआ चित्त भी अपनी असली हालतपर आकर आदमीको होशियार कर देता है।

(१८) ब्राह्मीका स्वरस और शहद, पेठेका स्वरस और शहद, बचका स्वरस और शहद, अथवा शंखाहूलीका स्वरस और शहद, सेवन करनेसे उन्माद-रोग चला जाता है।

नोट—ये चार नुसख़े हैं। इनमेंसे किसी एकके सेवन करनेसे आरोग्य-लाभ होता है।

(१९) उन्माद-रोगीको वृक्ष, अग्नि, जल, पहाड़ और विषम या असमान अथवा ऊँचे-नीचे स्थानोंसे सदा दूर रखना चाहिये, क्योंकि ये उन्माद-रोगीके प्राणोंको तत्काल नाश करते हैं।

(२०) चाँगेरी या नोनियेका स्वरस, काँजी और गुड़ बराबर-बराबर लेकर एकमें मिला लो और खूब मथो। जब एकदिल हो जायँ, रोगीको पिला दो। तीन दिनमें लाभ होगा।

(२१) मंडूकपर्णी या ब्राह्मीके स्वरसमें धतूरेके पत्तोंका स्वरस मिलाकर पीनेसे उन्माद-रोग चला जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२२) सफ़ेद फूलकी खिरेंटीका चूर्ण ३॥ तोले और पुनर्नवाकी जड़का चूर्ण १ तोले—इन दोनोंको, क्षीरपाककी विधिसे, दूधमें पकाकर और शीतल करके, नित्य, सवेरे ही पीनेसे घोर उन्माद-रोग तत्काल नाश हो जाता है।

(२३) तिलों और उड़दोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे उन्माद-रोग आराम हो जाता है।

(२४) सफ़ेद धतूरेकी जड़को, उत्तर दिशाकी तरफ मुँह करके, उखाड़ लाओ। फिर उसकी खीर बनाओ। उस खीरमें अन्दाज़से "घी और गुड़" मिलाकर सेवन करो। इस खीरके खानेसे उन्माद-रोग चला जाता है।

(२५) ब्राह्मी बूटीका रस, बचका रस, कूटका रस और शंखपुष्पीका रस—इन चारोंको बराबर-बराबर पाव-पाव-भर लो और "दस बरसका पुराना घी" पाव-भर लो। सबको क़लईदार बर्तनमें डालकर आगपर पकाओ। जब रस जलकर घी-मात्र रह जाय, उतार लो। इस घीको मात्राके साथ सेवन करनेसे उन्माद-रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—नं० ११, नं० २४ और नं० २५ के नुसख़े एक और वैद्यके आज़मूदा हैं।

(२६) घी और दूधके साथ "बचका चूर्ण" खानेसे उन्माद-रोग चला जाता है। यह योग मृगी और उन्माद दोनोंको आराम करता है। कहा है:—

अपस्मारे तथोन्मादे सद्यीराज्यहिता वचा।

(२७) "दशमूलका पानी" घीके साथ या मांस-रसके साथ अथवा सरसोंके चूर्णके साथ सेवन करनेसे उन्माद-रोग आराम हो जाता है। केवल नया घी अथवा सुगन्धवालाका स्वरस उन्मादको नाश करता है।

(२८) सरसों, बच, हींग, करञ्ज, देवदारु, मँजीठ, त्रिफला, फिटकरी, मालकाँगनी, दालचीनी, त्रिकुटा, प्रियंगू, सिरस और दोनों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हल्दी—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट और छान लो। फिर एक मात्रा चूर्णको बकरीके मूत्रमें पीसकर पीलो। इससे भी उन्माद-रोग चला जाता है।

(२९) त्रिकुटा, हींग, सैंधा नमक, बच, कुटकी, सिरसके बीज, करञ्जके बीज और सफेद सरसों—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन कर लो। फिर गोमूत्रके साथ, सिलपर पीसकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको आँखोंमें आँजनेसे उन्माद, मृगी और चौथैया ज्वर आराम हो जाते हैं। —वृन्द।

(३०) सिरसके बीज, मुलहटी, हींग, लहसनका रस, तगर, वच और कूट बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस-छान लो। इस चूर्णको "बकरीके मूत्रमें" पीसकर नास देने और आँखोंमें आँजनेसे उन्माद-रोग नाश हो जाता है। —चरक।

(३१) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हल्दी, दारुहल्दी, मँजीठ, हींग, सरसों और सिरसके बीज—समान-समान लेकर पीस-छान लो। समयपर, इस चूर्णको "बकरीके मूत्र" में पीसकर, नस्य देने और आँखोंमें आँजनेसे उन्माद, ग्रह और मृगी-रोग नाश हो जाते हैं। —चरक।

(३२) सफेद सरसों, हींग, कञ्जा—गोकरञ्जफल, देवदारु, मँजीठ, त्रिफला, सफेद कोयल, कटभीकी छाल, त्रिकुटा, प्रियंगू, सिरसकी छाल, हल्दी और दारुहल्दी—इन सब चीज़ोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। यह चूर्ण बकरीके मूत्रके साथ पीनेसे "अगद" समझा जाता है। इसके पीने, आँखोंमें आँजने, नाकमें नस्य देने, शरीरपर लेप करने और स्नान-उबटनमें व्यवहार करनेसे मृगी, उन्माद, विष और ज्वर नाश हो जाते हैं तथा भूतका भय दूर होता है और आँखोंमें लगाकर राजाके सामने जानेसे जय होती है। —चरक।

(३३) उन्माद-रोगमें लार गिरती हो और पीनस-रोग हो, तो अपराजिता—कोयल, कटभीकी छाल, त्रिकुटा, प्रियंगू, सिरस, हल्दी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और दारुहल्दी—इनको समान-समान लेकर, महीन पीस-छान लो। फिर "गोमूत्र या बकरीके मूत्र"के साथ खरल करके बत्तियाँ बना लो। इस बत्ती-द्वारा धूमपान करनेसे ऊपरके उपद्रव सहित उन्माद नाश हो जाता है।

(३४) उन्माद-रोगीको सेह, उल्लू, बिल्ली, स्यार, भेड़िया और बकरी—इन जानवरोंके मूत्र, विष्ठा, नाखून, चमड़ा और पित्तकी धूनी देने, आँखोंमें आँजने, नाकमें फूँकने, नस्य देने और सेक करनेसे उन्माद-रोग नष्ट हो जाता है। —चरक।

(३५) सफेद प्याजका रस आँखोंमें आँजनेसे उन्माद-रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(३६) सफेद प्याजका रस नाकमें डालनेसे उन्माद और मृगी दोनों आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३७) बिनौलेका तेल एक, दो या तीन दिनतक लगानेसे माथा शान्त होता और सिरका दर्द भी जाता रहता है। परीक्षित है।

(३८) उन्माद-रोगके शुरू होते ही, अगर अफीमकी उचित मात्रा दी जाय, तो उन्माद रुक सकता है। जब उन्माद-रोगमें, रोगीको ज़रा-ज़रा देरमें जोश आता और उतरता है, तब रत्ती-रत्ती-भर अफीम देनेसे बड़ा उपकार होता है। रत्ती-रत्तीकी मात्रा बारम्बार देनेसे भी हानि नहीं होती—ज़हर नहीं चढ़ता। उन्मादमें जो नींद न आनेका दोष होता है, वह इससे जाता रहता है; नींद आने लगती और रोग घटने लगता है। पर जब उन्माद-रोगी का चेहरा सुर्ख़ हो या सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, तब अफीम देना हानिकर है। परीक्षित है।

नोट—जब उन्माद-रोगीका चेहरा फीका हो, नाड़ी मन्दी चलती हो, नींद न आती हो, शरीर कमज़ोर हुआ जाता हो, तब अफीम देना उचित है; किन्तु जब उन्मादवालेका चेहरा लाल हो और मुँह तथा सिरकी नसोंमें खून भर गया हो, तब अफीम देना ठीक नहीं। याद रखो, उन्मादके आरंभ या पूर्वरूपोंमें अफीम देनेसे लाभ होते देखा गया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमीरी नुसखे।

सारस्वत चूर्ण।

कूट, असगन्ध, सैंधा नमक, अजमोद, सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, पाठा और शंखपुष्पी—इन सबको दो-दो तोले लेकर, कूट-पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णके वज़नके बराबर २२ तोले "बचका चूर्ण" इसी चूर्णमें मिला दो। फिर इस चूर्णको खरलमें डालकर, ऊपरसे "ब्राह्मीके पत्तोंका स्वरस" डाल-डालकर, सात दिन तक, हर दिन बारह-बारह घण्टे, खरल करो। ब्राह्मीका रस जितना ही अधिक डाला और सुखाया जाय, उतना ही अच्छा। जब घुटाई हो जाय और चूर्ण सूख जाय, चूर्णको कपड़ेमें छानकर शीशियोंमें रख लो।

इस चूर्णमेंसे १ तोले चूर्ण लेकर, उसे "ना-बराबर घी और शहद" में मिलाकर, सात रोज़ तक लगातार खाने और पथ्य पालन करनेसे सब तरहके वात-रोग और सब तरहके प्रमेह नाश हो जाते हैं। बंगसेन आदिने लिखा है, इस चूर्णके सेवन करनेसे ऐश्वर्य, धैर्य, मेधा और अवस्थाकी वृद्धि होती है तथा एक दिनमें एक हज़ार श्लोक तक याद कर लेनेकी सामर्थ्य हो जाती है एवं इस चूर्णसे उम्र भी दूनी हो जाती है। इस "सारस्वत चूर्ण" को ब्रह्माजीने लोक-हितार्थ, विकल-चित्त प्राणियोंके चित्त ठीक होनेके लिए, निकाला था।

प्रायः सभी ग्रन्थकारोंने लिखा है—"सप्तदिनं हिताशी" यानी सात दिन खानेसे उपरोक्त लाभ होते हैं, पर वैद्यविनोद-कर्त्ताने "षष्टिदिनं हिताशी" यानी ६० साठ दिन खानेसे उतने लाभ होनेकी बात लिखी है। औरोंने १ तोलेकी मात्रा लिखी है, पर वैद्यविनोदके लेखकने चार टङ्क या १६ माशेकी मात्रा लिखी है और क्रमसे बढ़ा-बढ़ाकर इसकी दूनी मात्रा तक सेवन करानेकी राय दी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमने इस चूर्णकी कितनी ही बार परीक्षा की है; वास्तवमें, यह क़ाबिल तारीफ़ दवा है। यह निश्चय ही फायदा करता है। धृति, स्मृति और मेधाशक्तिको बढ़ाता है। उन्मादकी सर्व्वोत्तम दवा है। सात दिनमें लाभ नज़र आने लगता है, पर सात दिनमें ही हज़ार श्लोक रट लेने या कंठाग्र कर लेने या पाठ करनेकी शक्ति होते हमने नहीं देखी। हमने एक-एक महीने तक लगातार सेवन कराकर पूरा फायदा उठाया, पर साठ दिन किसीको सेवन नहीं कराया। कदाचित साठ दिनमें वैसी ही सामर्थ्य हो जाय।

नोट—अगर यह चूर्ण खिलाया जाय और साथ ही थोड़ा-थोड़ा "ब्राह्मी घृत" भी खिलाया जाय, तो बहुत ही जल्दी और निश्चय ही उन्माद और मृगी-रोग नष्ट हो जायँ। हमने अनेक बार दोनों साथ खिलाकर परीक्षा की है।

ब्राह्मी घृत।

ब्राह्मीके पत्तोंका रस ४ सेर, उत्तम घी ३ सेर तथा बच, कूट और शंखाहूली तीनोंका चूर्ण आध सेर तैयार करके एकमें मिला दो और क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब रस जलकर, घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और साफ बोतलमें रख दो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे एक तोले तक है। इसके नित्य खाने या पीनेसे उन्माद, अपस्मार—मृगी, सन्धिवात और विस्फोटक आदि रोग नाश होते और मस्तक शान्त होता है। ऊपर लेप करनेसे भी कोढ़ आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह घी खाया भी जाता है और लगाया भी जाता है। परीक्षित है।

नोट—(१) अगर बच, कूट और शंखाहूलीका चूर्ण या कल्क आध सेर, घी दो सेर और ब्राह्मीका रस ८ सेर लेकर घी पकाया जाय, तो और भी उत्तम घी बने।

नोट—(२) केवल ब्राह्मीके पत्तोंका रस चार सेर और घी एक सेर मिलाकर घी पका लेने और सेवन करनेसे पित्तज मृगी नाश हो जाती है। मृगी और उन्मादके दवा, हेतु और दोष-दूष्य एक ही हैं; अतः मृगीकी दवा उन्मादमें और उन्मादकी मृगीमें काम देती है। इसलिए इस घीसे पित्तज उन्माद भी आराम हो सकता है। हमने इसे पित्तकी मृगीपर ही आज़माया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्मादान्तक योग।

ब्राह्मीके पत्तोंका स्वरस १ तोले, कुलींजन या अकरकरा ३ माशे और शहद ३ माशे,—इन तीनोंको मिलाकर, नित्य, सवेरे-शाम, २१, ३१ या ४१ दिन खानेसे उन्माद, चित्त-भ्रम और अपस्मार या मृगी-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—खूब याद रखो, मृगी और उन्माद आदि रोगोंपर "ब्राह्मी" अक्सीरका काम करती है। जिनका चित्त ठिकाने न रहता हो, बातें याद न रहती हों अथवा उन्माद आदि रोग हों, वे ब्राह्मीके मेलसे बने हुए नुसख़े अवश्य सेवन करें।

कटुत्रिकाद्यंजन।

त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर), हींग, बच, सिरसके बीज, सैंधा-नोन और सफेद सरसों—इनको समान-समान लेकर, पीस-छान लो। समयपर, इसमेंसे थोड़ा-सा चूर्ण गोमूत्रमें काजलके समान महीन पीस-कर, आँखोंमें आँजनेसे उन्माद और चौथैया ज्वर आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—बंगसेन इसमें कुटकी और करंजके बीज और मिलाने तथा बत्ती बनाकर आँजनेको कहते हैं। वह इसका नाम 'त्र्यूषणादि वर्त्ति" कहते हैं। देखो ८३ वें सफेका नं० २९ नुसख़ा।

पानीय घृत।

त्रिफला, पित्तपापड़ा, देवदारु, शालपर्णी, तगर, हल्दी, दारुहल्दी, इन्द्रायण, सफ़ेद शारिवा, काला शारिवा, चन्दन, पद्माख, कूट, नील कमल, छोटी इलायची, कटेरी, समंगा, तालीसपत्र, निशोथ, बायबिड़ङ्ग, रुदन्ती, नागकेशर, मुलहटी, पृष्टिपर्णी और चमेलीके फूल इन पच्चीस दवाओंको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। फिर इसे चौगुने यानी एक सौ तोले पानीमें घोल दो। फिर एक क़लईदार कढ़ाहीमें यह दवाका पानी और बत्तीस तोले उत्तम "गो-घृत" डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब पानी जलकर घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और रख दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इसके पीनेसे उन्माद, मन्दाग्नि, मेद, अपस्मार—मृगी, पेशाबके रोग और पांडु-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

भूतोन्माद-नाशक धूप।

कपासकी मींगी, मोरका पंख, कटेरी, शिवनिर्माल्य, तज, जटामासी, बिलावकी विष्ठा, धानके तुष, बच, मनुष्यके बाल, काले साँपकी काँचली, हाथी दाँत, गायका सींग, हींग और कालीमिर्च—इन पन्द्रह दवाओंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर, एकमें मिला लो। जो कुचलने योग्य हों उन्हें जौकुट कर लो और एक शीशीमें रख दो। इस धूपको आगपर डालकर धूनी देनेसे स्कन्दोन्माद, पिशाच, राक्षस, देवताका आवेश और ज्वर नाश होते हैं। यह धूप हमारी परीक्षित है। हर गृहस्थको सदा पास रखनी चाहिये। भूत-पलीतोंको भगानेके लिये भी यह धूप परमोत्तम है। भूत-पिशाच आदिके कारणसे जो उन्माद-रोग होता है, उसमें यह अवश्य लाभ दिखाती है।

ऋक्षलोमक धूप।

रीछके बाल, गीदड़के बाल, लहसन, सल्लकी, हींग, बच और बकरेका मूत्र—इनको समान-समान लेकर धूनी देनेसे बड़े-बड़े ज़बर्दस्त ग्रह भी शान्त हो जाते हैं। ग्रह-बाधा नाश करनेमें यह धूनी बहुत ही अच्छी है। गृहस्थोंको यह भी पास रखनी चाहिये। परीक्षित है।

नोट—जिस उन्मादका समय नियत हो या टाइम मुक़र्रर हो, उसे "भूतोन्माद" समझना चाहिये।

हिंग्वाद्य घृत।

हींग ८ तोले, कालानोन ८ तोले और त्रिकुटा ८ तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो। फिर १२८ तोले घी, ५१२ तोले गोमूत्र और ऊपरकी लुगदीको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीके नित्य पीनेसे उन्माद-रोग नाश हो जाता है।

महा पैशाचिक घृत।

बालछड़, हरड़, भूतकेशी, ब्राह्मीके पत्ते, कौंचके बीज, बच, त्रायमाण, अरणी, क्षीर काकोली, चोरपुष्पी, कुटकी, सम्हालू, विदारीकन्द, सौंफ, सोया, गूगल, शतावर, गिलोय, रास्ना, गन्धरास्ना, मालकांगनी, बिछाटी और सरिवन—इन २३ दवाओंको दो-दो तोले लेकर और सिलपर पानीके साथ महीन पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना १८४ तोले घी, ७३६ तोले पानी और लुगदीको क़लईदार कढ़ाहीमें रखकर मन्दाग्निसे घी पका लो।

इस घीके सेवन करनेसे चौथैया ज्वर, उन्माद, ग्रहबाधा और अपस्मार या मृगी-रोग नष्ट हो जाते हैं। यह घी मेधा, बुद्धि और स्मरणशक्तिको बढ़ाता और बालकोंके अङ्गकी वृद्धि करता है। उन्माद और मृगीपर यह घी मशहूर है। मात्रा ६ माशेकी है। एक या दो बार परीक्षा की है।

नोट—कोई ४६ तोले लुगदी, ५६ तोले घी और २२० तोले पानी लेकर घी पकानेको कहते हैं, पर ऊपरकी विधि ठीक है।

सारस्वत घृत।

हरड़, बहेड़ा, आमला, लक्ष्मणाकी जड़, अनन्तमूल, मँजीठ, सारिवा, गिलोय, ब्राह्मीके पत्ते, कटेरी, कटाई, शालपर्णी, पृश्नपर्णी, सफ़ेद पुनर्नवा, लाल पुनर्नवा, सहदेवी, सूरजमुखी, आमले और गिरिकर्णिका—कोइली—इन २० दवाओंको चार-चार तोले लेकर पीस लो और एक घड़ेमें डालो। ऊपरसे १६ गुना यानी सोलह सेर पानी डालकर, मन्दाग्निसे काढ़ा बना लो। जब चौथाई यानी चार सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तगर, रेणुका, बच, कूट, पीपर, सरसों और सैंधानोन—इन सातोंको अढ़ाई-अढ़ाई तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

फिर एक रंगकी गायका दूध १६ सेर, गायका घी एक सेर, ऊपरका छना हुआ काढ़ा और दवाओंकी लुगदी—इन सबको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ, जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीको "पुष्य नक्षत्र" में पकाना चाहिये।

इस "सारस्वत घृत" के पीने और नेत्रोंमें आँजनेसे मेधा, स्मरणशक्ति, आयु और पुष्टि बढ़ती है। राक्षसबाधा और विषबाधा नाश करनेमें यह घी परमोत्तम है।

पानीय कल्याण घृत।

दशमूलकी दसों दवाएँ, रायसन, कौंचके बीज, निशोथ, खिरेंटी, चुरनहार और शतावर—इनमेंसे प्रत्येक दवाको आठ-आठ तोले लेकर जौकुट कर लो और अलग-अलग रखो। फिर हरेक दवामें १२८।१२८ तोले पानीमें मिलाकर अलग-अलग काढ़ा बनाओ। चौथाई यानी ३२।३२ तोले पानी रहनेपर, मल-मलकर छान लो। फिर सातों दवाओंके काढ़ोंको एकमें मिला लो।

इन्द्रायण, हरड़, बहेड़ा, आमला, रेणुका, देवदारु, एलुआ, शालपर्णी, जवासा, हल्दी, दारुहल्दी, शारिवा, अनन्तमूल, फूलप्रियंगू, नीलोफर, छोटी इलायची, मँजीठ, दन्ती, अनारके फलका बक्कल, नागकेशर, बायबिड़ंग, पिठवन, कूट, सफेद चन्दन, पद्माख, तालीसपत्र, कटाई और मालतीके ताजा फूल—इन सबको २।२ तोले लेकर, सिलपर पानीसे साथ पीसकर लुगदी बना लो।

फिर २२४ तोले पानी, ३२ तोले घी, ऊपरकी लुगदी और मिले हुए काढ़ोंके पानी—इन सबको क़लईदार कढ़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे मृगी, ज्वर, शोष, खाँसी, मन्दाग्नि, वातरक्त, जुकाम, तिजारी ज्वर, चौथैया ज्वर, कमरका दर्द, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, खुजली, पाण्डु-रोग, उन्माद, विष, प्रमेह, भूतोन्माद एवं मनसे सम्बन्ध रखनेवाले रोग और बाँझ औरतोंके बाँझपनका रोग—ये सब अवश्य नाश हो जाते हैं। यह "पानीय कल्याण घृत" पुंसवन-कर्ममें भी उत्तम है।

चैतस घृत।

अनन्तमूल, चुरनहार, रास्ना, देवदारु, शतावर, गोखरू और दशमूलकी सब दवाएँ—इनको एक-एक तोले लेकर, १६ गुने यानी ११२ तोले जलमें पकाओ। चौथाई पानी रहनेपर मलकर छान लो।

फिर ऊपरकी अनन्तमूल आदि सातों दवाओंको दुबारा तीन-तीन माशे लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

फिर सात तोले घी, इस लुगदी और ऊपरके काढ़ेको एकमें मिलाकर घी पका लो। इस घीसे चित्तके विकार शान्त होते हैं। उन्माद, मद, मूर्च्छा, ज्वर और मृगीकी यह उत्तम दवा है।

दूसरा चैतस घृत।

बेलगिरीकी जड़, पाटलाकी जड़, अरनीकी जड़, सोनापाठाकी जड़, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, सरिवन, पिठवन, गोखरू, रास्ना, रेंडीकी जड़, बरियारा, मूर्व्वामूल और शतावर,—हरेक दवा आठ-आठ तोले लेकर जौकुट कर लो और ६४ सेर जलमें पकाओ। जब १६ सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

फिर ६४ सेर गायका दूध, १६ सेर काढ़ा, ४ सेर घी और "पानीय कल्याण घृतके कल्ककी दवाओंका कल्क" इन सबको मिलाकर घी पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीसे चित्तके समस्त विकार नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—उधर पृष्ठ ६० में जो "पानीय कल्याण घृत" लिखा है, उसमें इन्द्रायण, हरड़, बहेड़ा, आमला, रेणुका आदि दवाएँ दो-दो तोले लिखी हैं, उन सबको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। यही "पानीय कल्याण घृतकी दवाओंका कल्क" है।

चन्दनाद्य तैल।

चन्दन, नेत्रवाला, सुगन्ध द्रव्य, जवाखार, मुलेठी, शिलारस, पद्माख, मँजीठ, धूप सरल, देवदारु, कचूर, छोटी इलायची, जवादि कस्तूरी, नागकेशर, तेजपात, लोध, कपूरकचरी, बालछड़, शीतलचीनी, फूलप्रियंगू, नागरमोथा, हल्दी, दारुहल्दी, दोनों तरहके शारिवा, कुटकी, सैंधानोन, अगर, केशर, दालचीनी, रेणुका और नली नामकी सुगन्ध द्रव्य—इन ३२ दवाओंको दो-दो तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

फिर काली तिलीका तेल एक सेर, दहीका तोड़ चार सेर, लाखका रस चार सेर और ऊपरकी लुगदी—इन सबको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर, मन्दाग्निसे तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यह "चन्दनाद्य तैल" ग्रहबाधाको दूर करता और मृगी, उन्माद, सब तरहके ग्रह, कृत्या, अज़ब्मी और ज्वरको नाश करता है। यह शरीरको पुष्ट करनेवाला और उत्तम वाजीकरण है।

नोट—लाखका रस बनानेकी विधि चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भागके पृष्ठ ३६४ में देखिये।

कृष्णाञ्जन।

छोटी पीपर, सैंधानोन, कालीमिर्च, शहद और गोरोचन—इन सबको कूट-पीस और कपड़ेमें छानकर "शहद" में मिलाकर अञ्जन बना लो। इस "कृष्णाञ्जन" के आँजनेसे उन्माद नाश हो जाता है।

नारायण तैल।

उन्माद-रोगमें पानीय कल्याण घृत, महा चैतस घृत, नारायण तैल और महा नारायण तैल परमोत्तम औषधि हैं। नारायण तैल और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महा नारायण तैल बनानेकी विधि आगे "वात-व्याधिकी चिकित्सामें" लिखी हैं।

विश्वाद्य चूर्ण।

सोंठ, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, सैंधानोन, बच, मुलेठी, कूट, पीपर और जीरा—इनको बराबर-बराबर लेकर और पीस-कूटकर छान लो। इस चूर्णको घीमें मिलाकर, नित्य सवेरे ही, चाटनेसे साक्षात् सरस्वती मुखमें निवास करती है। इसके सेवनसे उन्माद-रोगीका चित्त ठिकानेपर आ जाता है।

उन्माद-गजाङ्कुश रस।

शुद्ध पारा २ तोले और शुद्ध गन्धक २ तोले दोनोंको खरल करके स्वल्प गजपुटमें फूँक लो। फिर निकालकर, उसीमें शुद्ध धतूरेके बीज २ तोले, अभ्रक-भस्म २ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले और शुद्ध मीठा विष २ तोले मिला दो और पानीके साथ ३ दिन तक खरल करो। यही "उन्माद-गजाङ्कुश रस" है। इसकी मात्रा १ रत्तीकी है और अनुपान वायुनाशक क्वाथ है। इस रसके सेवन करनेसे उन्माद-रोग आराम हो जाता है।

नोट—"वात रोग चिकित्सा" में लिखा हुआ "रास्नादि क्वाथ" या "महा रास्नादि क्वाथ" अनुपानके लिए उत्तम हैं।

उन्माद-भंजन रस।

त्रिकुटा, त्रिफला, गजपीपर, बायबिड़ङ्ग, देवदारु, चिरायता, कुटकी, कंटकारी, मुलहटी, इन्द्रजौ, चीतेकी छाल, बरियारा, पीपरा-मूल, खसकी जड़, सहँजनेकी जड़, तेवड़ीकी जड़ और इन्द्रवारुणी-की जड़—इन सबको एक-एक तोले लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें बंगभस्म १ तोले, अभ्रकभस्म १ तोले, मूँगाभस्म १ तोले, चाँदीभस्म १ तोले और लौहभस्म १ तोले मिला दो और पानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डाल-डालकर खरल करो। जब घुट जाय दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सेवन करनेसे उन्माद-रोग नाश हो जाता है।

कल्याण घृत।

इन्द्रायण, त्रिफला, रेणुका, देवदारु, एलुआ, शालपर्णी, अनन्त-मूल, हल्दी, दारुहल्दी, अनन्तमूल, सारिवा, फूल प्रियंगू, नील कमल, छोटी इलायची, मँजीठ, दन्ती, अनारका बक्कल, नागकेशर, तालीस-पत्र, भटकटैया, मालतीके नये फूल, बायबिड़ंग, पृष्टपर्णी, कूट, लाल चन्दन और पद्माख—इनको दो-दो तोले लेकर, सिलपर पीस लुगदी कर लो। फिर चार सेर घी और सोलह सेर पानी तथा इस लुगदीको क़लईदार बर्तनमें, आगपर चढ़ा, मन्दाग्निसे "घी" पका लो। घी-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस घीके पीनेसे उन्माद और अपस्मार आदि अनेक रोग नाश हो जाते हैं।

हिस्टीरिया-उन्माद-नाशक फल घृत।

शतावरका स्वरस १६ सेर, बछड़ेवाली गायका दूध १६ सेर और उत्तम घी ४ सेर तैयार करके अलग रख दो।

फिर मेदा, मँजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, खिरेंटी, सफेद बिलाई-कन्द, काकोली, क्षीरकाकोली, असगन्ध, अजवायन, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, कुटकी, नीले कमल, दाख, सफेद चन्दन और लाल चन्दन—इनमें-से हरेक दो-दो तोले लेकर, हिमामदस्तेमें कूटकर महीन कर लो। फिर सारे चूर्णको सिलपर रखकर, पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

अब शतावरका रस, दूध, घी और इस लुगदीको क़लईदार कढ़ाहीमें रखकर आगपर चढ़ाओ। जब रस और दूध जलकर घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और साफ चीनी या काँचके बर्तनमें रख दो। इसकी मात्रा छै माशेसे दो तोले तक है।

इसके सेवन करनेसे स्त्रियोंके योनि-रोग, उन्माद, हिस्टीरिया और बाँझपनका रोग—ये सब नाश हो जाते हैं। सच तो यह है कि, ऊपर-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

के सभी रोगोंपर यह घी रामवाण है। जो हिस्टीरिया-उन्मादसे तंग आ गये हैं, जिनके सन्तान नहीं होती, वे इसे अवश्य सेवन करें। परीक्षित है।

महाविष्णु तैल।

शतावरका रस १६ सेर, गायका दूध १६ सेर, पानी ३२ सेर और काले तिलोंका तेल १६ सेर—अलग रख दो।

फिर नागरमोथा, असगन्ध, जीवक, ऋषभक, कचूर, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवन्ती, मुलहटी, देवदारु, पद्माख, सैंधानोन, जटामासी, छोटी इलायची, दालचीनी, पत्थर-फूल, कूट, बच, लाल चन्दन, मँजीठ, कस्तूरी, सफेद चन्दन, केशर, सरिवन, पिथवन, मसवन, मुगवन, कौड़िया लोबान, गठौना, नखी और सौंफ—इन ३१ दवाओंमेंसे हरेकको चार-चार तोले लेकर, हिमामदस्तेमें कूटकर, खूब महीन कर लो। फिर इस कुटे हुए चूर्णको सिलपर रखकर, पानीके साथ महीन पीसकर, लुगदी बना लो।

अब ऊपरके शतावरके रस, दूध, पानी, तेल और इस लुगदीको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब रस, दूध और पानी जलकर तेल-मात्र रह जाय, आगसे उतारकर, कपड़ेमें छान लो और बोतलोंमें भरकर रख दो।

इस तेलकी मालिश करनेसे सब तरहके वात-रोग निश्चय ही आराम होते हैं। उन्मादपर भी विचारपूर्वक देनेसे यह खूब लाभ दिखाता है। हिस्टीरिया-उन्माद या योषापस्मारमें इस तेलकी मालिश करने और पहले पृष्ठ ६४ में लिखा हुआ "फल घृत" खिलानेसे अपूर्व चमत्कार नज़र आता है, पर कम-से-कम १ महीने दोनों चीज़ें सेवन करनी चाहिये। वात-रोगोंपर यह "महाविष्णु तैल" अक्सीरका काम करता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिकमतके मतसे

उन्मादके निदान लक्षण और चिकित्सा।

मालीखोलिया-वर्णन।

मालीखोलिया एक तरहका "उन्माद" है। इसके बहुत-से भेद हैं। उन सबका वर्णन हम आगे करेंगे। यद्यपि हमारे वैद्यक-शास्त्रमें उन्मादपर बहुत-कुछ लिखा है, पर वह काफी नहीं है। निदानके सम्बन्धमें वैद्यकी जानकारी जितनी ही अधिक हो, उतना ही अच्छा।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, मालीखोलिया वात प्रकृतिवालोंके सिवाय औरोंको नहीं होता। इसे आजकलके हकीम "मालीखोलिया" और प्राचीन कालके हकीम "मैलेनकली" कहते थे। डाक्टर लोग इसीको मैलनकोलिया (Meloncholia) कहते हैं।

इस रोगकी पैदायश दिमाग़से है। जब कोई उपद्रव या दूषित दोषके परमाणु दिमाग़में चढ़ जाते हैं, तब दिमाग़की शक्तियाँ निकम्मी या कमज़ोर हो जाती हैं। इस रोगके हेतुकी बलवानता या निर्बलताके अनुसार घबराहट भी पैदा हो जाती है। इस रोगका प्रधान कारण "प्राकृतिक* या अप्राकृतिक वायु" है।

---

*जब किसी दोषकी प्रकृतिमें गरमी आ जाती है, तब कहते हैं कि, दोष जल गया। प्रत्येक दोषके जलनेसे जो चीज़ पैदा होती है, उसे "अप्राकृतिक वात" या वायु कहते हैं। अगर बादी प्रमाणसे ज़ियादा होती है, तो उसे भी "अप्राकृतिक वात" कहते हैं। जो वात या वायु जली हुई नहीं होती; उसे प्राकृतिक वात कहते हैं। मालीखोलिया-रोग दोषोंके जलनेसे पैदा हुई वातसे अथवा अपने प्रमाणसे बढ़ी हुई वायुसे होता है। इन दोनों तरहकी वातोंको ही "अप्राकृतिक" कहते हैं। माली-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालीखोलियाके भेद।

मालीखोलिया, अपने हेतुओंके जुदे-जुदे स्थानोंके कारण, तीन भेदोंमें बाँटा गया है। क्योंकि मालीखोलिया पैदा करनेवाली वात या बादी सिरको छोड़कर, बाक़ी सारी देहमें रहकर रोग करती है; केवल सिरमें रहकर रोग करती है और आमाशय, तिल्ली या मिराकमें रहकर रोग करती है। मतलब यह कि मालीखोलिया पैदा करनेवाला दोष—सिरके सिवा सारी देहमें, केवल सिरमें और आमाशय वग़ैरः अङ्गोंमें ठहरकर रोग पैदा करता है। दोषके तीन स्थानोंमें ठहर कर रोग पैदा करनेके कारण, तीन भेद या क़िस्में हो गई हैं।

पहला भेद।

पहला भेद वह है, जिसमें सदोष या निर्दोष बादी—अप्राकृतिक या प्राकृतिक वायु—सिरको छोड़कर, सारी देहमें भरी रहती है।

खोलिया-रोग जिस तरह अप्राकृतिक वातसे होता है; उसी तरह प्राकृतिक वातसे भी होता है। प्राकृतिक वात उसे कहते हैं, जो जली हुई न हो। वात, पित्त और कफ तथा खून—ये चार दोष हकीमोंने माने हैं। जब इनमें गरमी आ जाती है, तब कहते हैं, कि दोष जल गया। इन चारोंके ही जलने या इनमें गरमी आ जाने-से "अप्राकृतिक वात" पैदा होती है। यह रोग वात, पित्त, कफ और खून इन चारोंके जलने या इनकी प्रकृतिमें गरमी आ जानेसे होता है। क्योंकि इन चारोंके जलनेसे "अप्राकृतिक वात" पैदा होती है; इसीसे वातज, पित्तज, कफज और रक्तज चारों तरहके मालीखोलिया लिखे हैं। इस बीमारीके पैदा होनेके दो मुख्य कारण अप्राकृतिक वात और प्राकृतिक वात इसलिये लिखे हैं कि, वातादिक चारों दोषोंके जलनेसे अप्राकृतिक वात ही तो पैदा होती है। जो वायु प्रमाणसे अधिक बढ़ जाती है, उसे भी अप्राकृतिक वात कहते हैं। जिस तरह दोषोंका जल जाना रोगका कारण है; उसी तरह उनका अपने प्रमाणसे अधिक बढ़ जाना भी रोगका कारण है। सभी जानते हैं कि, जब तक दोष अपने प्रमाणसे अधिक बढ़ नहीं जाता, रोग नहीं करता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काले-काले भाफके परमाणु सिरके सिवा, देहके अन्यान्य अङ्गोंसे उठ-उठकर दिमाग़की तरफ चढ़ते हैं और वहाँ पहुँचकर एक प्रकारका मालीखोलिया पैदा करते हैं।

दूसरा भेद।

दूसरा भेद वह है, जिसमें सदोष या निर्दोष बादी—अप्राकृतिक या प्राकृतिक वायु—सिरमें ठहर जाती है—सारी देहमें नहीं फैलती।

नोट—पहले भेदमें मालीखोलिया पैदा करनेवाला दोष सिरमें नहीं रहता—सिरके सिवाय, सारी देहमें रहता है; पर दूसरे भेदमें मालीखोलिया पैदा करनेवाला दोष केवल सिरमें रहता है—सारे शरीरमें नहीं फैलता। पर कभी-कभी दोषका कुछ अंश शरीरके और हिस्सोंमें भी चला जाता है। यह मालीखोलिया बहुत बुरा है।

तीसरा भेद।

तीसरा भेद वह है, जिसमें मालीखोलिया पैदा करनेवाला दोष आमाशय, मासारीका, तिल्ली या मिराकमें जमा हो जाता है। इन अङ्गोंसे ही काले-काले भाफके परमाणु उठ-उठकर दिमाग़में पहुँचते और मालीखोलिया-रोग पैदा करते हैं। इस भेदका दोष चाहे जिस अङ्गमें क्यों न रुका रहे, परन्तु वह मिराक* को अवश्य फुला देता है, इसीसे तीसरे भेदके मालीखोलियाको "मालीखोलिया मिराकी" कहते हैं।

इस रोगमें यानी मालीखोलिया मिराकीमें दोषका सम्बन्ध आमाशय, मासारीका, तिल्ली और मिराक—इन चार अङ्गोंसे रहता है, इसीलिये इस मालीखोलिया मिराकीके चार भेद माने गये हैं। दोष अगर आमाशयमें ठहर जाता है, तो काले-काले भाफके परमाणु वहाँसे उठ-उठकर दिमाग़की तरफ चढ़ते और वहाँ पहुँचकर रोग पैदा कर देते हैं। अगर इसी तरह दोष मासारीकामें ठहर जाता है, तो काले-काले भाफके परमाणु वहाँसे उठकर दिमाग़में जाते और रोग पैदा करते हैं। इसी तरह और दो के सम्बन्धमें समझ लो।

* देखो फुट नोट सफा १०२ का।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालीखोलियाके पहले भेदके लक्षण।

याद रखो, इस पहले भेदके मालीखोलियेको पैदा करनेवाला दोष सिरको छोड़कर—सारी देहमें रहता है।

सामान्य लक्षण।

यह रोग बहुधा खारी नमक, नमकीन मछली और बैंगन वग़ैरः वातकारक आहार-विहारोंसे होता है।

रोगीकी देहके रंगमें किसी क़दर स्याही आ जाती है, शरीर दुबला और कमज़ोर हो जाता है। पेशाब, दोषके पकनेसे पहले, साफ़ सफेद होता है; पर दोषके पकनेपर काला हो जाता है। यह भेद सब भेदोंकी अपेक्षा सुखसाध्य है, क्योंकि दोष विशेषकर किसी एक अङ्गमें नहीं रहता—सिरको छोड़कर, सारे शरीरमें रहता है।

यह तो हुई सामान्य लक्षणोंकी बात; इस रोगके सूक्ष्म लक्षण इस रोगके हेतुओंके अनुसार होते हैं, उन्हें हम आगे लिखते हैं:—

प्राकृतिक वातसे पैदा होनेवाले मालीखोलियाके लक्षण।

बहकना या आनतान बकना, हँसना, खुश रहना, आँखोंकी सुर्ख़ी, रगोंमें भारीपन, नाड़ीमें गम्भीरता और तेज़ी, देह और चेहरेका रंग लाली लिये हुए काला होना—ये सब लक्षण "प्राकृतिक वायुसे" उत्पन्न होनेवाले मालीखोलियाके हैं।

खून जलनेसे हुए मालीखोलियाके लक्षण।

ऊपर कहे हुए लक्षणोंके होनेपर भी, अगर रोगी जवान हो, उसके शरीरसे मामूली खून निकलना बन्द हो गया हो, गरमी और तरी करनेवाले उपाय पहले काममें लाये गये हों—तो समझो कि खून जल गया है, यानी खूनमें गरमी आ गई है, उसका हल्का भाग नष्ट हो गया है और गाढ़ा भाग बच रहा है।

खुलासा यों समझिये कि, बहकना, हँसना, खुश रहना, नेत्रोंमें सुर्ख़ी रहना, नसोंमें भारीपन, नाड़ीमें गहराई और तेज़ी ये लक्षण हों;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीर और चेहरेका रङ्ग सुर्ख़ी-माइल काला हो तथा रोगीके जवान होनेपर भी, उसके शरीरसे मामूली खून निकलना बन्द हो गया हो, तो आप समझो कि, यह मालीखोलिया "खून-दोषके जलने या उसकी प्रकृतिमें गरमी आ जानेसे" हुआ है।

वायु जलनेसे हुए मालीखोलियाके लक्षण।

सोचमें डूबे रहना, चिन्ता-फिक्र करना, डरना, बुरे-बुरे विचारोंका पैदा होना और एकान्तमें अकेले बैठे रहना—ये सब प्राकृतिक बादीके जल जानेसे पैदा हुई अप्राकृतिक वायुके लक्षण हैं।

पित्तके जलनेसे पैदा हुए मालीखोलियाके लक्षण।

पित्तके जलनेसे भी "अप्राकृतिक बादी" पैदा होती है। जिसे पित्तके जलने या पित्तकी प्रकृतिमें गर्मी आ जानेसे मालीखोलिया होता है, उसमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

अधिक तेज़ी, स्वभावका बिगड़ जाना, बहकना—आनतान बकना, चिल्लाना, घबराना, जागते रहना, किसी भी जगह कम ठहरना, अत्यन्त क्रोध करना, छूनेसे शरीर गरम मालूम होना, शरीरका रंग पीला हो जाना, पशुओंकी तरह देखना और पागल हो जाना।

कफके जलनेसे हुए मालीखोलियाके लक्षण।

कफके जलनेसे भी अप्राकृतिक वात पैदा होती है। जिसे कफके जलने या कफकी प्रकृतिमें गरमी आ जानेसे मालीखोलिया होता है, उसमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

इधर-उधर उचकना, बारम्बार थूकना, सुस्ती रहना, जहाँ बैठना ठहर जाना और शरीर छूनेसे कम गरम मालूम होना।

सूचना—आप अपने दोस्तों, नाते-रिश्तेदारों और जान-पहचानवालोंको सावधान कर दें कि, वे "स्त्रास्थ्यरक्षा" ख़रीदते समय, पुस्तकपर हमारा नाम और हमारा चित्र अवश्य देख लें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालीखोलियाके दूसरे भेदके लक्षण।

आपको याद होगा, हम लिख चुके हैं कि, मालीखोलियाके दूसरे भेदका दोष सिरमें ठहर जाता है—सारे शरीरमें नहीं फैलता। दोष एक जगह रहता है, इसीसे यह मालीखोलिया बहुत बुरा है।

यह मालीखोलिया उन लोगोंको होता है, जो दिमाग़ी मिहनत ज़ियादा करते हैं, रात-दिन पढ़ने-लिखने या गूढ़ अर्थोंका पता लगानेमें मशगूल रहते हैं। हकीम रूफिस कहते हैं कि, यह रोग बहुधा तत्वज्ञानियों या फिलासफरोंको होता है। हकीम तिबरी कहते हैं, मैंने इस रोगमें ऐसे विद्वान् फँसे देखे, जो अकेले रहते थे और पढ़ने-लिखनेके सिवा और काम न करते थे। हमारे यहाँ भी साधारण लोग कहा करते हैं, "अरे भाई! बहुत गीता पढ़ना अच्छा नहीं। फलाँ आदमी गीता पढ़ते-पढ़ते पागल हो गया।"

जिस रोगीके सिरमें मालीखोलियाका दोष ठहर जाता है, उसमें ये लक्षण पाये जाते हैं:—

रोगी सदा सोच-फिक्र या चिन्तामें ग़र्क़ रहता है, टकटकी बाँधकर ज़मीनकी तरफ देखा करता है, उसका सिर और चेहरा—ये दो अंग तो दुबले हो जाते हैं, पर और सब अंगोंमें प्रमाणका मांस रहता है; यानी और अङ्ग जैसे चाहिये वैसे बने रहते हैं। नेत्र खड्डोंमें घुसे रहते हैं। नाड़ी सुस्त, छोटी, कभी कैसी और कभी कैसी एवं कठोर होती है। पेशाब पतला और साफ होता है।

यह रोग बहुत जागने, ज़ियादा चिन्ता करने, धूपमें नंगे सिर फिरने और लहसन, प्याज, गन्दना आदि दिमाग़को हानि पहुँचानेवाले पदार्थ अधिक खानेसे होता है।

नोट—मालीखोलिया पैदा करनेवाला दोष दिमाग़की रगोंमें रुक रहा है या सारे शरीरमें फैल गया है, इसकी पहचान जाननेकी चिकित्सकको बड़ी आवश्यकता

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY,
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc. No. 3084
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इस पहचानके बिना वह धोखा खा सकता है। बिना मर्ज़की ठीक तशख़ीश किये या निदान किये अच्छा इलाज हो नहीं सकता, अतः यहाँ हम "दोष किस जगह है" यह जाननेकी सरल विधि बतलाये देते हैं:—

अगर दोष ख़ाली दिमाग़में ही रुका होगा, तो शरीरके हाथ-पाँव आदि अंगोंकी फ़स्द खोलनेसे, वहाँसे लाल और साफ खून निकलेगा। अगर दोष सारे शरीरमें फैल रहा होगा, तो किसी भी अंगकी फ़स्द खोलनेसे वहाँसे काला या स्याही लिये खून निकलेगा।

तीसरे भेद या मालीखोलिया मिराकीके लक्षण।

अगर मालीखोलियाको पैदा करनेवाला दोष आमाशय, मासारीका, तिल्ली या मिराक* में जमा हो गया होगा, तो नीचे लिखे हुए लक्षण पाये जायेंगे:—

(१) जली हुई खट्टी-खट्टी डकारें आयेंगी।

(२) रिआहके गाढ़ी होनेसे डकारें बन्द भी हो जायेंगी।

(३) बहुत-सा खानेपर भी रस कम बनेगा।

(४) आमाशय और मिराक नामक पेटकी झिल्लीमें जलन और खिंचावट मालूम होगी।

(५) छाती जकड़ी हुई और तंग मालूम होगी।

(६) मुँहसे लार बहुत गिरेगी।

(७) पेटपर बहुत नर्म अफारा होगा।

(८) झूठी भूख ज़ोरसे लगेगी।

(९) रोगीको आमाशय या तिल्ली वग़ैरःसे भाफके परमाणुओंका, दिमाग़की तरफ, ऊपर चढ़ना मालूम होगा।

नोट (१)—अगर रोग तिल्लीसे होगा, तो ऊपर लिखे हुए नौ लक्षणोंके अलावः तिल्ली बढ़ी हुई जान पड़ेगी।

---

* मिराक उस झिल्लीको कहते हैं, जो पेटको घेरे हुए है या जो आमाशय, तिल्ली, जिगर, मासारीका और आँखोंपर खिंच रही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—(२) अगर रोग आमाशयकी सूजनसे होगा, तो गरम या शीतल सूजनके अनुसार, ज्वर, प्यास, पित्तकी क़यके आने या न आनेसे पहचाना जायगा। यही हाल मासारीकामें गाँठ होनेका है।

नोट—(३) जिस रोगमें ऊपर कहे हुए लक्षण मिले हुए पाये जाते हैं, वह रोग तीन-तीन स्थानोंके संयोगसे होता है।

दीवानापन या उन्माद।

दीवानापन या उन्माद, जो चार तरहका होता है, मालीखोलियाका प्रकारान्तर है। दीवानगीके चार भेद ये हैं:—

(१) कुतरुब। (२) मानिया।
(३) दाउलकल्ब। (४) सुवारा या विशेष जिनूँ।

नोट—"इलाजुलगुर्बा"में लिखा है—अगर मालीखोलिया या पागलपन बहुत ही ज़ियादा होता है, तो उसे "जनूँन" कहते हैं। अगर क्रोध और चिन्ता ज़ियादा होते हैं, तो "मानिया" कहते हैं। अगर हँसी-खेल और दुःख देना ये लक्षण ज़ियादा होते हैं, तो "दाउलकल्ब" कहते हैं। अगर अशीलता और मनुष्योंसे नफरत ये लक्षण होते हैं, तो "फितरब" कहते हैं। मालीखोलियाके इलाजमें जल्दी करना आवश्यक है।

कुतरुबका वर्णन।

कुतरुब शब्दका अर्थ।

इस रोगका नाम "कुतरुब" क्यों रखा गया, इस विषयमें हकीमोंके भिन्न-भिन्न मत हैं। शेख बू अली सेना कहते हैं कि, "कुतरुब" एक कीड़ेका नाम है, जो पानीपर जल्दी-जल्दी, आगे-पीछे, दायें-बायें, व्यर्थ फिरा करता है। कभी पानीमें गोता मार जाता है और फिर झट ही निकल आता है। ठीक इस कीड़ेकी-सी हालत कुतरुब-रोगीकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती है। वह भी इस कीड़ेकी तरह व्यर्थ फिरा करता है, इसीसे इस रोगका नाम "कुतरुब" रक्खा गया है।

"कुतरुब" का दूसरा अर्थ भेड़ियेके पुराने गिरे हुए बाल है। भेड़िया जंगलमें घूमा करता है, आदमियोंको देखकर उनपर झपटता और हू हू शब्द किया करता है। कुतरुब-रोगी भी ठीक भेड़ियेकी तरह वनमें भटकता रहता है, मनुष्योंपर हमले करता और उसीकी तरह हू हू करता है, इसीसे इस रोगका नाम "कुतरुब" रखा गया है।

कुतरुबके लक्षण।

इस रोगका रोगी अत्यन्त क्रोधित रहता है। एक जगह नहीं ठहरता, सदा कुतरुब कीड़े या भेड़ियेकी तरह बेकाम घूमा करता है। उसे लोगों द्वारा मारे जानेका शक रहता है। वह समझता है कि, लोग मुझे पाते ही मार डालेंगे, अतः अपनी प्राणरक्षाके लिए, दिनके समय, क़ब्रस्तानों या खँडहरोंमें छिपा रहता और रातके समय बाहर निकलता है।

कोई-कोई रोगी भयभीत तो नहीं रहते, पर क्रोधित और चिन्तित रहते हैं। उनके शरीरका रंग पीला, जीभ सूखी हुई और प्रकृति विशेष गरम होती है। वे लोग, जंगलमें, चारों हाथ-पैरोंके बल पशुओंकी तरह चलते हैं। बहुत फिरनेकी वजहसे, कभी-कभी उनकी पिंडलियोंमें घाव हो जाते हैं और रात-भर फिरनेके कारण, उनके पाँव काँटों और पत्थरोंसे छिल जाते हैं।

मानियाके लक्षण।

इस रोगका रोगी पशुओंकी तरह फिरता रहता है। जिस चीज़को पाता है, उसे ही तोड़-फोड़कर नष्ट कर देता है। आदमियोंको देखते ही, उनपर झपटना चाहता है। उनकी नज़र आदमियोंकी-सी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं रहती, बल्कि मांसाहारी पशुओं—सिंह, व्याघ्रादि—की-सी हो जाती है।

यूनानी ज़बानमें "मानिया" शब्दका अर्थ—"पशुओंकी तरह उन्मत्तताके काम" है। हकीम राज़ी लिखता है कि, किसी-किसी प्राचीन हकीमने इस शब्दका अर्थ—"भड़का हुआ जिन्न" किया है।

दाउलकल्बके लक्षण।

इस रोगका नाम "दाउलकल्ब" इसलिए रखा गया है कि, इस रोगके रोगीका काटा हुआ आदमी, पागल कुत्तेके काटे हुए आदमीकी तरह, मर जाता है। यह रोग असलमें "मानिया"का एक भेद मात्र है।

मानिया-रोग जले हुए पित्त या जले हुए वायुके भाफके कणोंके दिमाग़में जाकर इकट्ठा हो जानेसे होता है।

जले हुए पित्तसे होनेवाले मानियाके लक्षण।

अगर मानिया-रोग पित्तके जलनेसे या पित्तकी प्रकृतिमें गरमी आ जानेसे होता है, तो रोगी बहुत ही बेचैन रहता है। जल्दी-जल्दी बदमाशी या मुहब्बत करने लगता है। इधर-उधर घूमा करता है और रंज या फिक्रमें डूबा रहता है।

जले हुए वायुसे उत्पन्न मानियाके लक्षण।

अगर यह रोग वायुके जलने या उसकी प्रकृतिमें गरमी आ जानेसे होता है, तो रोगी चिन्ताग्रस्त और चुपचाप रहता है; लेकिन जब कभी बोलता और बातें करता है, तो इतना बोलता है कि उसकी बातोंका अन्त नहीं आता और सुननेवालेको अपना पीछा छुड़ाना मुश्किल हो जाता है। अगर इसे क्रोध आता है, तो बड़ी देरमें शान्त होता है। इस रोगीका शरीर दुबला और रंग स्याही लिये हुए होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—मानिया-रोग और दिमाग़की सूजनमें यह फ़र्क़ है कि, दिमाग़की सूजनमें ज्वर अवश्य होता है, पर मानियामें ज्वर नहीं होता। वास्तवमें, "सरसाम" शब्दका अर्थ ही "दिमाग़की सूजन" है, क्योंकि सर = सिरके और साम = सूजनके हैं। सरसाम-रोग चार तरहका होता है:—(१) खूनी, (२) पित्तज, (३) वातज, और (४) कफज। इन चारों ही सरसामोंमें कमोबेश बुख़ार रहता है और रोगी एहकी-बहकी बातें करता है।

सुबारा या विशेष जिनूँके लक्षण।

इस रोगमें ऐसा जान पड़ता है, मानो "मानिया" और "करानीतुस"* दोनों मिल गये हैं। मानियाके लक्षण ऊपर लिखे ही गये हैं और "करानीतुस" का अर्थ यूनानी भाषामें "व्यर्थ बकवाद करना"

---

* "करानीतुस" शब्द यूनानी भाषाका है। इसका अर्थ "व्यर्थ बकना या प्रलाप करना" है। लिख आये हैं कि, सरसामका अर्थ "दिमाग़की सूजन" है। 'करानीतुस सरसाम' खूनके सरसामको कहते हैं और 'करानीतुस ख़ालिस' पित्तके सरसामको कहते हैं। करानीतुस सरसाम या खूनके सरसाममें ज्वर हर समय चढ़ा रहता है, सिरमें बोझा और घबराहट मालूम होती है। चेहरा लाल और आँखें सुर्ख़ रहती हैं। रोगी हँस-हँसकर बहकी-बहकी बातें करता है, जीभ खरदरी हो जाती है और आँखोंसे आँसू गिरते हैं। आँसुओंका आना बुरा चिह्न है। जिसमें भी, एक आँखसे आँसू गिरना तो बहुत ही बुरा है।

'करानीतुस ख़ालिस' केवल पित्तसे होता है। इसके ज्वरमें बहुत गरमी रहती है, सिर हल्का रहता है, रोगीको नींद नहीं आती, नेत्रों और नथुनोंमें सुर्ख़ी रहती है, मुँह और जीभपर पीलापन रहता है। नाड़ीकी चाल चञ्चल होती है। रोगी बहकी-बहकी बातें बहुत करता है। गुस्सा और गाली-गलौजसे पेश आता है। उसकी अक्ल बिगड़ जाती है और वह घबराया रहता है।

वातज सरसाममें रोगी बहकता, गिड़-गिड़ाता, डरता, रोता और जागता रहता है। उसके दिमाग़, जीभ और तालू सूखे रहते हैं, अक्ल बिगड़ जाती है, गला घुटता-सा जान पड़ता है, नेत्र खुले रहते हैं, पलक लगने नहीं पाते, सिरमें कुछ दर्द और ज्वरकी हरारत रहती है। (शेषके लिए पृष्ठ १०७ देखिये)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। सारांश यह है कि, इस रोगमें मानिया और करानीतुस दोनों ही के लक्षण पाये जाते हैं।

सुवारा या विशेष जिनूँनवाला शुरूमें बहुत जागा करता है, हर समय बेचैन और घबराया हुआ रहता है और नींदमें सोता-सोता डर-कर जाग उठता है। उसका साँस चढ़ता है। उससे जो कुछ पूछा जाता है, उसका जवाब नहीं देता—फालतू बातें बकता है। उसकी आँखोंमें लाली और भारीपन रहते हैं। उसे ऐसा भ्रम होता है, मानो कोई चीज़ उसकी आँखमें गिर पड़ी है। अपने-आप आँसू निकल पड़ते हैं। पेशाब सफेद और पतला होता है। कभी-कभी पेशाब उतरता ही नहीं। जब पेशाब नहीं उतरता, उसे तकलीफ होती है। तकलीफके मारे वह पेड़ूपर हाथ मारता और उसे मलता है, पर मूर्खता या अज्ञानके कारण कह नहीं सकता कि, मुझे फलाँ तकलीफ है। कभी-कभी उसका शरीर भी काँपता है।

मालीखोलियाके और भेद।

मालीखोलियाके नीचे लिखे हुए तीन भेद और होते हैं। हमारे यहाँ उनका अलग-अलग जिक्र नहीं है और है तो बराय नाम,

---

कफज सरसाममें रोगी कही हुई बातको भूल जाता है, हल्का ज्वर बना रहता है, ज्ञानेन्द्रियोंपर भारीपन और जीभपर सफेदी रहती है। जँभाइयाँ बहुत आती हैं। बुद्धिमें फ़र्क़ आ जाता है। रोगी कष्टसे बोलता और उसे पलकोंके खोलने, मूँदने और बातें करनेमें थकान जान पड़ती है, अतः पूछी हुई बातका जवाब कठिनतासे देता है। क्षणमें सोता और क्षणमें जागता है; तन्द्रा बहुत रहती है।

यद्यपि यहाँ सरसामके चारों भेदोंके लिखनेकी दरकार न थी, पर हमने वैद्यों-की जानकारीके लिये पूरे लक्षण लिख दिये हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसलिये हम उनको यहाँ लिखना अनुचित नहीं समझते। वे तीन भेद ये हैं:—

(१) बहकना या वृथा बकवाद करना।

(२) अहंकार और मूर्खता।

(३) इश्क़ या प्रेम।

बहकनेका वर्णन।

यह रोग भी मालीखोलियाका एक भेद है। यह चिन्ताके कामोंसे पैदा होता और इसमें ज्वरांश ज़रूर होता है। इस रोगके पैदा होनेके मुख्य तीन स्थान हैं, अतः स्थानोंके अनुसार इसके तीन भेद माने गये हैं:—

(१) केवल दिमाग़से होनेवाला।

(२) आमाशय या झिल्ली आदि किसी एक अङ्गसे होनेवाला।

(३) सारे शरीरसे होनेवाला।

बहकनेका पहला भेद।

इसमें रोगका आरम्भ दिमाग़से होता है। यह छै तरहका होता है:—

(१) जब दिमाग़का बीचका पर्दा, जो विचारका स्थान है, प्रबल वायुसे भर जाता है, तब यह रोग होता है। उस हालतमें रोगी माली-खोलियावालेकी तरह उदास और दुःखी रहता है।

(२) जब दिमाग़में पित्त और वात बहुत ही ज़ियादा बढ़ जाते हैं, तब यह रोग होता है। उस समय बीमारकी प्रकृति और हिम्मत पशुओंकी जैसी हो जाती है।

(३) जब दिमाग़में रक्त और वात भर जाते हैं, तब यह रोग होता है। उस हालतमें रोगी हँसता और खुश रहता है तथा रगें फूल जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) जब दिमाग़में पित्त बहुत हो जाता है, तब यह रोग होता है। उस समय गरमीका भड़कना, बेचैनी, सिर और गलेमें दर्द, ज्वरांश और देहका पीला पड़ जाना—ये लक्षण होते हैं।

(५) जब दिमाग़में बदबूदार और तेज़ कफ भर जाता है, तब यह रोग होता है। उस हालतमें रोगी बहकता है, हाथसे भौंहोंको ऊपर चढ़ाता है और उसका सिर भारी हो जाता है।

(६) जब दिमाग़में गरमी और मामूली खुश्की आ जाती है, तब यह रोग होता है। उस समय दिमाग़में खुश्कीका होना, जागना और मलके चिह्नोंका न होना—ये लक्षण होते हैं।

बहकनेका दूसरा भेद।

इसमें रोगके पैदा होनेका स्थान दिमाग़ नहीं होता, किन्तु यह रोग आमाशय, पेट, झिल्ली, गर्भाशय या वीर्यस्थान अथवा और किसी मुख्य अङ्गसे पैदा होता है। इन अङ्गोंमेंसे किसी एक अङ्गसे दिमाग़को हानि पहुँचती है, तब बहकनेका रोग पैदा होता है। जिस अङ्गसे यह रोग होता है, उस अङ्गमें तकलीफ होती है। उस तकलीफवाले अङ्गके कारण यह रोग होता है या उससे गरम भाफके परमाणु दिमाग़में चढ़कर यह रोग करते हैं। उस अङ्गमें कष्ट होना और बहकना,—इस भेदके लक्षण हैं।

बहकनेका तीसरा भेद।

इस भेदमें, भाफके तेज़ अबखरे या तीक्ष्ण परमाणु सारे शरीरसे उठकर दिमाग़में पहुँचते और बुद्धिको नष्ट कर देते हैं, जैसा कि ज्वरमें होता है। इसमें पहले ज्वर आता और पहले ज्वर ही का इलाज किया जाता है, क्योंकि ज्वरके जाते रहनेसे, बहकना आप ही जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अहंकार और मूर्खताका वर्णन।

यह भी मालीखोलियाका एक भेद है। इसमें विचारशक्तिकी क्रिया प्रायः बिगड़ जाती है। गृहस्थीके काम या मनुष्योंसे व्यवहार-विषयक बातचीत करनेमें विचारशक्ति ठीक नहीं रहती, अथवा उसमें कमी आ जाती है, इसलिये इस रोगका रोगी लड़कोंके जैसे बेमतलबके काम करता है। उसका ध्यान सहज कामोंमें ठीक लगता है, परन्तु वह कामोंके फल या नतीजेको सोच-समझ नहीं सकता। इस रोगके दो कारण हैं:—

(१) अकेली सर्दी या खुश्कीके साथ सर्दीका दिमाग़के बीचके पर्देमें, जो विचारका स्थान है, आ जाना।

(२) दिमाग़के बीचके पर्देके पोलदार स्थानमें कफका भर जाना॥

अगर सर्दी और खुश्की या अकेली सर्दीके कारणसे रोग होता है, तो नाकमें खुश्की पायी जाती है, नींद नहीं आती है, नहाने और सिरपर गरम पानी डालनेसे फायदा होता है और सर्दी तथा खुश्कीका हेतु भी पाया जाता है।

इश्क़ या प्रेमका वर्णन।

जिस तरह इश्क़पेचा जब किसी वृक्षपर चढ़ता है, तो उसे सुखा देता है; उसी तरह यह इश्क़-रोग भी बीमारको सुखा देता है॥ यह ऐसा रोग है कि, लोग इसे अपने-आप लगा लेते हैं। जब यह रोग हो जाता है, तब मनुष्य सदैव शोकसन्तप्त रहता है। उसे अकेले बैठे रहना, चुप रहना और काम न करना अच्छा लगता है; यानी जो-जो लक्षण मालीखोलिया या उन्मादमें होते हैं, वे सब इसमें पाये जाते हैं। किसी रूपवान पदार्थको देखकर मनुष्य उसकी चिन्ता किया करता है, उसके देखनेके लिये सदैव उत्कण्ठित रहता है। वह पदार्थ वास्तवमें खूबसूरत हो चाहे न हो, पर दिल जब उसपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लग जाता है, तब ऐसा ही होता है। जब कोई किसीपर आशिक़ हो जाता है, तब वह रात-दिन उससे मिलने या उसे देखनेकी चिन्तामें ग़र्क़ रहता है। सदा चिन्ता-ग्रस्त रहनेसे खून जल जाता है और खूनके जलनेसे मनुष्य पागल हो जाता है।

इश्क़के लक्षण।

जिसे इश्क़-रोग हो जाता है, वह सिर झुकाये हुए चुपचाप बैठा या खड़ा रहता है। जो बात सुनता या देखता है, उसे भूल जाता है, उसकी आँखें भीतरको गड़ जाती हैं। उसके नेत्र बारम्बार चलायमान होते और सूख भी जाते हैं; परन्तु रोनेके समय तर हो जाते हैं। ऐसा मालूम होता है, मानो वह किसी खूबसूरत चीज़की ओर टकटकी लगाये देख रहा हो। उसे आदमियोंमें बैठना बुरा लगता और अकेलेमें रहना अच्छा लगता है। उसकी नाड़ीकी चालमें भी फ़र्क़ पड़ जाता है। इस रोगकी एक साफ़ और मुख्य पहचान यह भी है कि, वह अपने प्रेमपात्रको देखकर या उसका नाम सुनकर लम्बे-लम्बे साँस लेने लगता है। इन चिह्नोंकी कमी और कारणकी अधिकता—मनुष्यके पराक्रम या निर्बलतापर निर्भर है।

नोट—इस रोगीके इलाजमें, दवा-दारूके अलावः, इस बातका ध्यान रखना परमावश्यक है कि, उसके शोक और चिन्ता जिस तरह हो सके दूर कर दिये जायँ। शोक और चिन्ता दूर करनेके लिये, उसे अनेक तरहके राग-रागनी और वंशी तथा सारङ्गी आदि बाजे सुनाये जावें तथा मनोरञ्जक कहानियाँ, धर्मकी बातें, महापुरुषोंके वाक्य और फ़कीरोंके चुटकुले सुनाये जावें। इन्हींमें उसका दिल फँसाये रखा जाय, धीरे-धीरे उसके प्रेमपात्र या माशूक़के दोष और औगुण उसके सामने इस तरह कहे जायँ, कि उसका दिल उससे हट जाय, पर उसे यह न मालूम हो कि, ये सारे काम उसके माशूक़से उनका मन फेरनेके लिये किये जाते हैं। अगर उसे यह भेद मालूम हो जायगा, तो फल उल्टा होगा। अगर उसकी शादी न हुई हो, तो शादी करा देनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालीखोलियाका इलाज ।

पहले भेदके अन्तर्गत—

खूनी मालीखोलियाका इलाज ।

(१) खूनी मालीखोलिया हो, तो "हफ्त अन्दाम और बासलीक" की फ़स्द खोलो। अगर रजोधर्म बन्द होनेसे खूनी मालीखोलिया हुआ हो, तो "रग साफिन" की फ़स्द खोलो।

नोट—वह रग जो तर्जनी उँगलीसे कोहनीके पास तक गई है, उसे "हफ्त अन्दाम" कहते हैं और वह रग जो मध्यमा उँगलीसे कोहनी तक गई है, उसे "बासलीक" कहते हैं। पाँवकी रगको "रग साफिन" कहते हैं।

(२) बनफशा १० माशे, नीलोफर १०॥ माशे, गावजुबाँ १०॥ माशे, उन्नाव ७ दाने, ल्हिसौड़ेके २० दाने और मिश्री ३५ माशे—इनको मिट्टीकी हाँड़ीमें डालकर और ऊपरसे आध सेर पानी मिलाकर, शर्बतके माफ़िक़ पका लो और छानकर रोगीको पिला दो। इस तरह, सवेरे-शाम, इस शर्बतके पीनेसे जब मल पक जाय और नम हो जाय, तब उसे नीचे लिखे हुए "अफतीमून या आकाशबेलके काढ़े" से निकाल दो।

(३) हरड़ काबुलीके छिलके ३५ माशे, उस्तखद्दस ३५ माशे, बीज-हीन मुनक्के ३५ माशे, शातिरा १७॥ माशे, विसफायज १७॥ माशे और सनाय १७॥ माशे—इनमेंसे कूटनेकी दवाओंको कूटकर और बाक़ीको योंही रखकर, सबको मिट्टीकी हाँड़ीमें, डेढ़ सेर पानी डालकर औटाओ। जब औटते-औटते आध सेर पानी रह जाय, उसे नीचे उतार लो और उसमें ३५ माशे "अफतीमून" डाल दो। जब काढ़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीतल हो जाये, उसे कपड़ेमें छान लो। फिर उसमें ३॥ माशे गारीकून और ७ माशे एलुआ महीन पीसकर मिला दो और थोड़ी-सी चीनी डालकर रोगीको पिला दो। इस दवासे मल निकल जायगा। यह "अफ्तीमून या आकाशबेल" का काढ़ा है।

(४) जब ऊपर लिखे हुए अफ्तीमूनके काढ़ेसे मल अच्छी तरह निकल जाय; तब शर्बत, तर मेवे या अन्य पदार्थ बेखटके सेवन कराओ। सदा शीतल पानीसे स्नान कराओ। बकरीका दूध रोगीके सिरपर दुहो।

(५) बनफ़शा, नीलोफर, काहूके पत्ते, अधकुचले जौ, खशखाशकी छाल, गुलाबके फूल और बाबूना औटाकर किसी बड़े टबमें इतना भर दो कि, रोगीकी गर्दन तक आ जाय। फिर उसमें रोगीको बिठा दो। इस तरहके स्नानसे बड़ा लाभ होता है।

अथवा।

बनफ़शाका तेल और नीलोफरका तेल वग़ैरः नाममें टपकाना और शरीरपर मलना भी लाभदायक है।

पथ्यापथ्य।

मुर्ग़ी और बकरीके बच्चोंका मांस, पालक, बादामका तेल, बादामकी मींगी, गायके दूधका दही, तरबूज़, ककड़ी, मीठे अंगूर, मीठे सेब, ख़रबूज़ा और मैदाकी रोटी; चिकने, मीठे, फीके और स्वादिष्ट भोजन—ये सब पदार्थ पथ्य या हित हैं। आराम करना भी अच्छा है। मिहनत करना और स्त्री-प्रसङ्ग करना अपथ्य है।

"इलाजुलगुर्बा"में लिखा है:—पहले-पहल फ़स्द खोलनेकी कोशिश करनी चाहिये, क्योंकि पहले यह काम आसानीसे होता है; स्थिर होनेके बाद बड़ी मुश्किल होती है। इस रोगके इलाजमें नीचे लिखे काम अवश्य करो:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) फ़स्द खोलो।

(२) हर हालतमें रोगीको खुश रखो।

(३) रोगीको अच्छी जगह बिठाओ।

(४) घी-मिले भोजन कराओ।

(५) खूब सुलाओ। सुलाना सर्वोत्तम उपाय है।

(६) जुलाब देकर कई बार मल निकालो।

(७) मनको पुष्ट रखो।

(८) मालीखोलिया-रोगीका मन जिधर लगे, उधर ही उसको लगाये रहो।

(९) मालीखोलियावालेको एकान्तमें रखना और डराना हानिकारक है।

(१०) अगर रोगी काम करना चाहे तो करने दो, पर ज़ियादा नहीं।

(११) फ़स्द खोलनेके बाद "माउज़ुज़ुब्न" पिलानी चाहिये। माउज़ुज़ुब्नके दिनोंमें बलाबल देखकर जुलाब देते रहना चाहिये।

(१२) मालीखोलियामें बहुधा सिरपर मारना अच्छा है। इससे अक्ल आती है। पीड़ाके कारण इन्द्रियाँ चैतन्य हो जाती हैं।

पहले भेदके अन्तर्गत—

पित्तज मालीखोलियाका इलाज।

(१) पित्तज रोगमें, तरी पहुँचानेके लिए, पहले तरी पहुँचानेवाले लुआब और शर्बत पिलाने चाहिये। तरी पहुँचानेके बाद, दोषको "माउज़ुज़ुब्न" और नीचे लिखे हरड़ आदिके काढ़ेसे निकाल देना चाहिये। दोष निकाल देनेके बाद फिर शीतल और तर चीज़ोंसे रोगीकी प्रकृतिको सँभालना चाहिये। उसे मिहनतसे बचाना चाहिये, आराम देना चाहिये और राग-रागनी सुनानी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हरड़ आदिका काढ़ा।

पीली हरड़के छिलके ३५ माशे, इमली ३५ माशे, पित्तपापड़ा ३५ माशे, आलू २० दाने, लिहसौड़े ५० दाने, गुलाबके फूल १७॥ माशे और कासनीके बीज १७॥ माशे—इनमेंसे कूटनेकी चीज़ोंको कूटकर और शेषको योंही देखकर, डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय; नीचे उतार लो और तुरन्त ही ३५ माशे "अफ्तीमून" मिलाकर छोड़ दो। शीतल होनेपर छान लो। फिर उसमें सकमूनिया ४ जौ भर, धोया हुआ एलुआ ३॥ माशे, निशोथ ३॥ माशे और तुरंजबीन, शीरए ख़िश्त तथा मिश्री तीनों ७० माशे मिलाकर रोगीको पिला दो।

नोट—धोया हुआ एलुआ बिना धोये हुए से अच्छा होता है। बिना धोया हुआ दस्त ज़ियादा लाता है।

पहले भेदके अन्तर्गत—

वातज मालीखोलियाका इलाज।

हर दिन 'माउल उसूल' या 'जड़ोंका काढ़ा' पिलाओ। इस रोगमें यह काढ़ा बहुत काम देता है।

सौंफकी जड़, कासनीकी जड़, मुलहटी, विसफायज, गावजुबाँ, बादरंजबोया और काबुली हरड़का बक्कल—प्रत्येक आवश्यकतानुसार लेकर, डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, नीचे उतारकर तुरन्त ही उसमें "अफ्तीमून" मिला दो और शीतल होनेपर छान लो। फिर उसे "तुरंजबीन" से मीठा करके रोगीको पिला दो।

अथवा।

गावजुबाँ १० माशे, नीलोफर १० माशे, बनफ़शा १० माशे, बालंगो ३५ माशे और गुलक़न्द ४५ माशे—इनका जुलाब बनाकर, उस समय तक पिलाओ, जब तक कि मल न पक जाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मल पकनेके बाद।

अफ्तीमूनका काढ़ा, जो पृष्ठ ११२ में लिखा है, पिलाकर मलको निकाल दो। अथवा वातज मल निकालनेवाली और दवाएँ देकर मलको निकाल दो, क्योंकि वातज मल सहजमें नहीं निकलता। पहले ही जुलाबकी तेज़ दवा न देनी चाहिये। पहले 'यारज फैकरा' दो, फिर 'यारज जालीनूस', फिर 'यारज रुफिस' और फिर 'यारज लोगाजिया' दो।

(२) मल निकल जानेके बाद तरी पहुँचानेकी कोशिश करो। तर भोजन दो, शीतल जलसे स्नान कराओ, तरड़े दो, प्रकृतिके अनुसार शर्बत और माउज़जुब्न अति लाभप्रद हैं।

नोट—मल निकलनेके बाद, दिल और दिमाग़को ताक़त और आराम देनेवाली चीज़ें दो। दिमाग़में ताक़तकी ज़रूरत इसलिये है कि, वह काले-काले भाफके परमाणुओंको, जो ऊपर चढ़ें, ग्रहण न करे। दिलकी ताक़त बढ़ानेकी ज़रूरत इसलिये है कि, मालीखोलियाका रोग बिना दिलके संयोगके नहीं होता। शेख़ बू अली सेना कहते हैं कि, इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है कि, मालीखोलिया-रोग दिलसे आरम्भ होता है। यह हो सकता है कि, पहले दिल ख़राब हो जाय और पीछे दिमाग़ ख़राब हो और यह भी हो सकता है कि, पहले दिमाग़ ख़राब हो जाय और पीछे दिल ख़राब हो। यह भी हो सकता है कि, दिलकी रूहकी प्रकृति बिगड़ जाय और उस रूहमेंसे वह रूह बिगड़ जाय, जो दिमाग़की तरफ चढ़कर जाती है। वह रूह दिमाग़को भी ख़राब कर सकती है, क्योंकि दिमाग़ी रूह दिलकी रूहसे मिली हुई है और दिलकी रूहके जौहरसे उसकी पुष्टि होती है। अतः सब तरहके मालीखोलियाओंमें और विशेषकर इस प्रकारके मालीखोलियामें, दिल और दिमाग़ दोनों ही की पुष्टिकी कोशिश करनी चाहिये। जब तक रोगीका भय, डर या ख़ौफ और सन्देह दूर न हो जाय, तब तक तो इस बातको हरगिज़ न भूलना चाहिये। अगर रोगीका मिज़ाज गरम हो, तो गरमीके उन्मादमें जो चीज़ें दी जाती हैं वही देनी चाहिये। अगर मिज़ाज सर्द हो या शीतल प्रकृति हो, तो "नोशदारु और दीवालमुश्क" देना हित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोशदारुकी विधि।

गुलाबके फूल १६॥ माशे, नागरमोथा कूफी १७॥ माशे, लौंग १०॥ माशे, मस्तगी १०॥ माशे, बालछड़ १०॥ माशे, उसारुन १०॥ माशे, सिरफा ७ माशे, इलायचीके दाने ३॥ माशे, विस्वासा ३॥ माशे, जायफल ३॥ माशे और आमले गुठली निकाले हुए आध सेर—तैयार करो।

पहले आमलोंको साढ़े तीन सेर पानी डालकर मिट्टीकी हाँड़ीमें औटाओ। जब डेढ़ सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो। उस छने हुए रसमें पाव-भर "शहद" मिलाकर फिर औटाओ। जब रस गाढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो और बाक़ी दवाएँ तथा थोड़ी-सी हींग पीसकर उसमें मिला दो और बैतकी लकड़ीके चमचेसे चलाते रहो। जब एकदिल हो जायँ, मुँह बाँधकर रख दो। दो महीने तक न छेड़ो। बाद दो महीनेके खानेसे यह दवा बड़ा आराम देती है। इसके सेवन करनेसे शरीरका रंग साफ़ होता है, पाचन-शक्ति बढ़ती है। यह बुढ़ापेको भी रोकती है यानी उसे देरमें आने देती है।

गरम दीवालमुश्क।

नरकचूर, दरुनज अकरबी, अबीध मोती, कहरवा, मूँगाकी जड़ पैंतीस-पैंतीस माशे; रेशम खाम, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, बालछड़, छोटी इलायचीके बीज साढ़े सत्रह-सत्रह माशे; छरीला, पीपर, सोंठ चौदह-चौदह माशे और कस्तूरी ७ माशे—इनको पीस-छानकर, शहदमें मिला, माजून बना लो।

माउलजुब्न।

बकरीका दूध आध सेर औटाओ, जब एक उफान आ जाय, नीचे उतार लो। फिर उसमें सादा सिकंजबीन या अफ्तीमूनकी सिकंजबीन ३१॥ माशे मिला दो और छानकर पीलो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहले भेदके अन्तर्गत—

कफज मालीखोलियाका इलाज।

(१) कफके मालीखोलियामें मलको पकानेवाली मुस्त्रिज पहले सेवन कराओ। जब मल पक जाय, नीचे लिखा हुआ काढ़ा पिलाकर मलको निकाल दो।

मल निकालनेका काढ़ा।

काबुली हरड़का बक्कल ३५ माशे, शातरा ३५ माशे, सनाय २४॥ माशे, विस्फायज १०॥ माशे और बालंगो १०॥ माशे,—इन सबको डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, उतारकर फौरन ही उसमें ३५ माशे "अफ्तीमून" मिला दो। जब शीतल हो जाय, छान लो। फिर उसमें निशोथ ३॥ माशे और गारीकून ३॥ माशे पीसकर मिला दो और जितनी जरूरत हो "चीनी" भी मिला लो। पहले इस्तमखीकूनकी गोली खिला दो और ऊपरसे यह काढ़ा पिला दो।

इस समय बालछड़ रूमीका तेल और चमेलीका तेल शरीरपर मलो और नित्य स्नान कराओ। मुर्गीके बच्चे, बटेर या एक सालके भेड़के बच्चेका मांस चनेके पानी और करड़की मींगीके शीरेके साथ खिलाओ। उपरोक्त काढ़े और गोलियोंके खानेसे जब सारा मल निकल जाय, नीचे लिखी माजून रोगीको खिलाओः—

माजूनकी विधि।

बालंगो, तुरंजके छिलके, लौंग, मस्तंगी, किरफा—तज, दालचीनी, जायफल, इलायचीके दाने, नागमुश्क—नागकेशर, बहमन सुर्ख, नरकचूर, दरुनज, केशर, तुख्म-फरंजमुश्क, रामतुलसीके बीज और बादरुजके बीज प्रत्येक ६।६ माशे तथा असली कस्तूरी चार जौ-भर—इन सबको पीस-छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

४० हरड़के छिलकों और ३० आमलोंको अधकचरा करके डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। फिर इस काढ़ेमें आध सेर या अधिक "शहद" मिलाकर चाशनी कर लो और नीचे उतार लो। उतारते ही, इस चाशनीमें ऊपर लिखी हुई पिसी-छनी दवाओंको मिला दो। इसकी मात्रा ४॥ माशेकी है।

नोट—कोई-कोई इसमें हरड़के छिलके १७५ माशे, आमलोंके छिलके ४ छटाँक १ तोले और १०॥ माशे लेते हैं और शहदके बदले तुरञ्जबीन डालते हैं।

पहले भेदके या जले हुए दोषोंके मालीखोलियाकी सामान्य चिकित्सा।

(१) "इज़ाजुलगुर्बा"में लिखा है, अफीम २ रत्तीसे आरंभ करके और धीरे बढ़ा-बढ़ाकर २ माशे तक पहुँचा देनेसे इस प्रकारके उन्माद-में अवश्य लाभ होता है। परन्तु यह दवा उसीको फायदा करती है, जो जवान होता है।

(२) "तिब्बयूसफी" में सर्वदा शराब पिलाना और नाच दिखाना—ऐसे उन्मादमें अच्छा लिखा है।

(३) आदमीके बाल जलाकर और उस राखको "गुल रोग़न"में महीन खरल करके नाकमें टपकानेसे उन्माद या पागलपन नाश हो जाता है।

मालीखोलियाके दूसरे भेदका इलाज।

यह मालीखोलिया एकान्तवास करनेवालों और किताबी कीड़ों एवं तत्वज्ञानियोंको ज़ियादा होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—अगर खून ज़ियादा हो, तो पहले "रग सरेरू"की फ़स्द खोलो। इस बातको ध्यान देकर देखो कि, निकला हुआ खून बिल्कुल काला है या लाली लिये काला है या बिल्कुल लाल है।

अगर खून काला आवे, तो फ़स्दको उस समय तक बन्द मत करो, जब तक कि, उसका रङ्ग पलट न जाय अथवा कमज़ोरीका ख़ौफ न हो। इस खूनसे यह मालूम हो सकता है कि, जला हुआ मवाद दिमाग़में ठहरनेके सिवाय सारे शरीरमें भी फैल गया है।

जहाँका खून लाल हो, वहाँसे कम खून निकालो—ज़ियादा मत निकालो। अगर खून साफ लाल ही निकले तो समझ लो कि, दोष दिमाग़की नसोंमें रुक रहा है—देहमें नहीं फैला है। अगर ऐसा हो, तो "रग सरेरू"को बन्द कर दो और उसके बजाय माथेकी फ़स्द खोलो। इस फ़स्दके खोलनेसे उस अङ्ग यानी माथेसे दोष सहजमें निकल जायगा।

सरेरूकी फ़स्दसे "साफिन" यानी पाँवकी फ़स्द खोलना अच्छा है। विशेषकर उस हालतमें, जब मलको एक जगहसे निकालकर दूसरी जगह करना हो। ऐसा मौक़ा विशेषकर तब पड़ता है, जब रजोधर्मके बन्द होनेके कारण स्त्रियोंको मालीखोलिया या उन्माद हो जाता है।

फ़स्द खोलनेके बाद, विशेष दोषको उन काढ़ों और गोलियोंसे निकालो, जो उस दोषके योग्य हों। जैसे—पित्तका दोष हो, तो पित्तनाशक जुलाब या काढ़े वग़ैरः दो। अगर कफका दोष हो, तो कफनाशक काढ़े वग़ैरः दो। परन्तु जब तक दिमाग़ और दोषोंमें तरी न पहुँच जाय, दस्तावर दवा मत दो; क्योंकि दोष आसानीसे न निकलेगा।

तरी पहुँचानेके लिये, नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

(१) मोटी मुर्ग़ी, बकरी या हिरनके बच्चोंके मांससे या मीठे और कँकरीले पानीकी मछलीसे बने हुए शोरबे पिलाओ।

(२) निशास्ता, चीनी, खशखाश और बादामके तेलसे बनाया हुआ फालूदा दो।

(३) तरी पहुँचानेवाले तेल गुनगुने करके सिरपर लगाओ।

(४) छिले हुए जौ, बनफ़शा, नीलोफर और काहूके पत्तोंका काढ़ा सिरपर डालो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) कद्दूके बीजोंकी मींगी, काहूके बीज, तरबूजके बीजोंकी मींगी, नीलोफ़रके फूल और बनफ़शाके फूल—इनको पीसकर स्त्रियोंके दूधमें मिला लो और सिरपर लेप कर दो।

(६) तरी पहुँचानेवाले शर्बत पिलाओ।

(७) गुनगुने मीठे पानीसे स्नान कराओ।

(८) शीतल मकानमें बैठाकर, गुलाब वग़ैरःके शीतल सुगन्धित फूल सुँघाओ।

(९) किसी शुभ हेतुसे अधिक सोना भी लाभदायक है।

(१०) मैथुन, चिन्ता और परिश्रमसे रोगीको बचाओ।

(११) मलके निकालनेके बाद, फिर तरी पहुँचानेकी चेष्टा करो। मल निकालनेसे जो खुश्की दिमाग़में आ गई होगी, वह इस उपायसे निकल जायगी।

नोट—नाकके छेदोंको देखा करो। जब उनमें तरी मालूम हो, तब समझ लो कि तरी पहुँच गई। याद रखो दस्तावर दवा देनेके पहले भी तरी पहुँचानी होती है और मल निकलनेके बाद भी तरी पहुँचानी होती है।

"इलाजुलगुर्बा" में लिखा है:—एक व्यक्तिको अकेले बैठनेका और उन्मादका रोग हुआ। आदमी ग़रीब था, इसलिये अच्छा इलाज करा न सकता था। हकीमने पहले "हफ्त अन्दाम" यानी तर्जनी उँगलीसे कोहनी तक जानेवाली नसकी फ़स्द खोली। इसके बाद उसे बकरीका दूध ख़ाकशीरके साथ पिलाया। इस इलाजसे उसको आराम हो गया।

मालीखोलियाके तीसरे भेद

मालीखोलिया मिराकीका इलाज।

इस रोगमें खट्टी डकारें बहुत आती हैं। गुदाकी हवा बहुत निकलती है, अफारा होता और पेटमें जलन होती है इत्यादि। इस रोगका इलाज नीचे लिखी रीतिसे करो:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) प्रकृतिके अनुसार हर चालीसवें दिन या आगे-पीछे बासलीककी रग यानी उस रगकी फ़स्द खोलो, जो मध्यमा उँगलीसे कोहनी तक गई है। अगर खून ज़ियादा हो और कोई बलवान उपद्रव न हो, तो ज़रूरतके माफ़िक और समयके अनुसार खून निकालो। इस रोगमें नस्तर चौड़ा लगाओ, ताकि गाढ़ा खून निकल जाय। बादीके सभी रोगोंमें ऐसा ही करना चाहिये, बशर्ते कि फ़स्द खोलनी हो।

(२) अगर इस रोगके साथ ज्वरका अंश भी हो, तो नीलोफ़र, कासनीके बीज, तुरंजबीन, मकोय और मिश्रीका जुलाब पिलाओ। शर्बत बनफ़शा और शर्बत खशखाश पिलाना भी लाभदायक है। पथ्यमें—जौका दलिया या धुली मूँगकी दाल बादामकी मींगियोंके साथ दो।

(३) अगर इस रोगके साथ ज्वरांश न हो, तो केवल गुलक़न्द खिलाओ। जुलाबमें बालंगो, गावजुबाँ और सौंफ ये भी मिला दी जायँ, तो और भी उत्तम हो, मुर्ग़ीकी ज़र्दी और ऐसी ही शीघ्र पचनेवाली चीज़ें दो।

(४) अगर दोष आमाशय, मासारीका या मिराकमें हो, तो पेटके भीतरके अङ्गोंको लाभ पहुँचानेवाली चीज़ें दो। जैसे, बादरंजबोया, गावजुबाँ, अफ्तीमून और अफसन्तीनके काढ़ेमें "अमलताशका गूदा" मिलाकर पिलाओ। इससे कोठा नर्म होकर दस्त होंगे।

नोट—कहते हैं, मालीखोलिया मिराकीमें अफसन्तीन अधिक लाभदायक है। उसकी शराब और शर्बत भी गुणकारी हैं।

(५) अगर दोष केवल तिल्लीमें हो, तो दस्त करानेके लिये तेज़ दवा दो। तेज़ दस्तावर दवा न देनेसे, मल तिल्लीसे निकलकर आमाशय या और अङ्गोंमें ठहर जाता है और बाहर नहीं निकलता; इसीसे तिल्लीमें तेज़ जुलाब देना चाहिये; ताकि मल दूसरे अङ्गमें ठहरकर कोई उपद्रव न करे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) अगर दोष आमाशय, मिराक और मासारीकामें हो, तो उसे केवल फ़स्द द्वारा निकालो—दस्तावर दवा मत दो। परन्तु अगर दोषके ठहरे रहनेसे सड़ जाने या सारी देहमें फैल जानेका भय हो, तो दोषको दस्त कराकर निकाल सकते हो।

(७) इस रोगमें "वमन कराना" सर्वथा हानिकारक है; क्योंकि 'वमन' दोष और भाफके परमाणुओंको उभार देती और उन्हें नीचेसे ऊपरकी तरफ ले जाती है। दूसरी बात यह है कि, वातज दोष शरीरके अवयवोंमें दबा रहता है—वमनसे वह निकल नहीं सकता। हाँ, जिसे सहजमें वमन हो जाय और दोष भी आमाशयकी खोलमें हो, तो वमन करा सकते हो।

(८) अगर दोष, बिना सूजनके, पेटके ऊपरकी झिल्लीमें हो; तो गुल रोग़न, बालछड़ और मस्तगीको गुनगुनी करके आमाशयपर, विशेषकर आमाशयके मुँहपर मलो और गरम भूसीसे सेक करो।

(९) बाबूना, अकलीलुमलिक और नीबूके पत्ते—इनका काढ़ा बनाकर तरड़ा देनेसे रिआह नाश हो जाती है।

(१०) तर सिकताब खुश्क सिकताबसे अच्छा है; क्योंकि तरसे तरी भी पहुँचती है और रिआह भी नष्ट होती है।

विशेष दृष्टव्य।

१—जिस अङ्गमें दोष हो, उस अङ्गका दोष निकालने और शक्ति पहुँचानेके लिये, उस अङ्गके कहे हुए रोगोंके इलाजपर ध्यान दो।

२—मालीखोलियाकी दशा भी, दोषके भिन्न-भिन्न स्थानों और दूसरे दोषके उसमें मिल जानेके अनुसार भिन्न-भिन्न होती है। जैसेः—

(क) अगर दोष दिमाग़के बीचके स्थानमें, जो ज्ञानकी जगह है, आ जाता है, तो रोगीमें बुद्धि और विवेक नहीं रहते। उसके सारे काम बिगड़ जाते हैं।

(ख) अगर दोष दिमाग़के अगले भागमें, जो विचारका स्थान है, आ जाता है, तो विचार-शक्ति जाती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(ग) अगर दोष दिमाग़के सब भागोंमें आ जाता है, तो सोच-विचार और काम सबमें गड़बड़ हो जाती है।

(घ) अगर वायु पित्तके साथ मिल जाता है, तो बीमारकी प्रकृतिमें क्रोध और तेज़ी आ जाती है।

(ङ) अगर कफ और वायु मिल जाते हैं, तो बीमार सुस्त रहता है। उसे सोना या लेटना अच्छा लगता है।

(च) बादी जिस दोषके जलनेसे पैदा होती है, उस दोषकी दशा भी उसमें अवश्य होती है। यह बात उसके चिह्नोंसे जानी जाती है।

कुतरुबका इलाज।

इस रोगवाला अधिक क्रोधित रहता है और एक जगह नहीं ठहरता। अपनी जान बचानेके लिये फूटे मकानों या क़ब्रस्तानोंमें छिपा रहता और रातके समय निकलता है। इसका इलाज इस तरह करोः—

(१) ज़रूरत समझो तो फ़स्द खोल दो।

(२) दोषके पक जानेपर, अफ्तीमूनके काढ़े या ऐसी ही और किसी दवासे दोषोंको निकालकर, प्रकृतिको तरड़ों और सर्द-तर तेलोंसे सम्हालो।

(३) सर्दी और तरी बढ़ानेवाले उपाय काममें लाओ। तरी पहुँचानेकी ज़ियादा चेष्टा करो।

(४) उत्तमोत्तम भोजन खिलाओ।

(५) सन्देह नाश करनेके लिये, जिस तरह बने रोगीको सुलाओ। चिन्ता दूर करनेके लिए बहानोंसे काम लो। जिस तरह भी चिन्ता दूर हो, वही उपाय करो।

(६) हकीम शेख़ रहमतुल्ला साहब कहते हैं, जिस समय किसी उपायसे काम न हो, रोगीके सिर और मुँहपर थप्पड़ मारो, तालुए-पर दाग़ दो, क्योंकि दाग़नेसे दिमाग़ी शक्ति चौंकती और रोगी होशमें आ जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मानिया और दाउलकल्बका इलाज।

(१) पहले दोषको पकाने और तरी पहुँचानेके उपाय करो। जब दोष अच्छी तरहसे पक जाय और तरी आ जाय—नाकके छेदोंमें तरी दीखने लगे—तब हेतुके अनुसार जुलाब देकर दोषको निकाल दो।

(२) दोषके निकल जानेपर, फिर तरी पहुँचानेवाली दवाएँ और पथ्य दो। ऐसी चीज़ें दो, जिनसे रोगीको होश हो और उसका दिल मज़बूत और ताक़तवर हो। ऐसे उपाय हम पीछे लिख आये हैं।

सुवारा या विशेष जिनूँनका इलाज।

इस रोगमें नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

(१) पित्तज सरसामके जैसा इलाज करो। इमली, आलू, विलायती बेर, पीले आलू, लिहसौड़े, तुरञ्जबीन और शीरेख़िश्त—इन सबको पानीमें भिगो दो। पीछे, बिना औटाये ही, मल-छानकर रोगीको पिला दो। इस दवासे कोठा नरम हो जायगा और मल फूलकर निकलने लायक़ हो जायगा। इसपर नर्म जुलाब देना लाभदायक है।

(२) तरी पहुँचानेके लिये खट्टे और मीठे अनारका रस पिलाओ। अर्क़ गुलाब, कद्दूका रस और तरबूज़का पानी पिलाओ। बनफ़शाका तेल, कद्दू और नीलोफ़रको बर्फमें शीतल करके सिरपर मलते रहो। अथवा बनफ़शा, कद्दू, नीलोफ़र और ख़तमी—इनको औटाकर छान लो और इसी काढ़ेको सिरपर डालो।

(३) अगर रोगीको नींद न आती हो, तो काहूके बीज, खशखाशके छिलके और थोड़ा-सा बाबूना तरड़ेकी दवामें मिला दो। अथवा शर्बत खशखाश पीनेकी दवामें मिला दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट (१)—पित्तज सरसाममें सर्दी और तरीका भय न करना चाहिये, परन्तु यह बात खूनी सरसामके विपरीत है। उसमें अधिक सर्दी और तरी हानिकर हैं।

नोट (२)—तरड़ेकी दवामें "बाबूना" किसी लाभके लिये नहीं मिलाते; केवल खशखाशके दुरुस्त करनेको डालते हैं। इसीसे उसे कम डालते हैं कि, हानि न करे; किन्तु खशखाशको ठीक कर देवे। बाबूना गरम है, पर तरड़ेमें मिलाया जाता है। मतलब यह कि, बाबूना अवश्य मिलाओ, पर कम मिलाओ।

नोट (३)—अनारके दाने मलकर, कपड़ेमें रस निचोड़ लो। ककड़ीको कूटकर रस निचोड़ लो। तरबूज़को चाकूसे काटकर, उसकी नोकसे कूँचा देकर पानी निचोड़ लो। मीठे नरम कद्दूको जौके आटेमें लपेटकर चूल्हेमें रख दो। जब आटा पक जाय, उसे निकाल लो और आटा छुड़ाकर रस निचोड़ लो।

(४) रोगीके हाथ-पाँव बाँध दो; क्योंकि रोगीके हाथ-पाँव चलानेसे बीमारी बढ़ती है। दूसरे, हाथ-पाँव चलानेसे दिमाग़से मादा खिंच आता है। तीसरे, रोगी स्वयं आपको या किसी दूसरेको मार डालता है। हाथ-पाँव बाँध देनेसे ये उपद्रव नहीं हो सकते। हकीम 'तिवरी' कहते हैं, मैंने देखा कि, दो आदमियोंने अपने तईं मार डाला। बहुत-से स्त्री-पुरुष-रोगी ऐसे देखे, जो अपने तईं दरख़्तोंमें लटका रहे थे।

अहङ्कार या मूर्खताका इलाज।

इस रोगमें नीचे लिखे हुए उपाय करो:—

(१) तरी और गरमी पहुँचानेके लिये, मोटी मुर्ग़ियोंका मांस या शोरबा,—दालचीनी और कुलींजनसे सुगन्धित करके रोगीको खिलाओ। मातदिल मीठी चीज़ें खिलाओ। मीठे फालूदेमें बादामका तेल मिलाकर दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) खैराका तेल और बाबूनेका तेल सिरके बीचमें मलो।

(२) तर और गरम सूखी घासोंको औटाकर, उनका पानी सिरपर डालो।

इश्क़-उन्मादका इलाज।

इस रोगमें नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

(१) आशिक़की प्रकृति और देहमें उन दवाओं और पथ्योंसे तरी पहुँचाओ, जो मालीखोलियामें लिख आये हैं।

(२) आशिक़की चिन्ता और शोक दूर करनेकी भरसक चेष्टा करो।

(३) रोगीको अनेक तरहके राग-रागनी तथा वंशी और सारंगी आदि बाजे सुनाओ।

(४) अनेक तरहकी मन बहलानेवाली कहानियाँ, धर्मकी बातें, महात्माओंके वचन और फ़क़ीरी चुटकुले सुनाओ।

(५) रोगीको ऐसे कामोंमें लगा दो, जिनसे उसे अपनी माशूक़ाका ध्यान ही न रहे।

(६) रोगीके पास ऐसे आदमी रख दो, जो उसके सामने उसकी माशूक़ाकी निन्दा किया करें; परन्तु रोगी इस भेदको न समझने पावे, अन्यथा उल्टा काम होगा।

(७) उसकी माशूक़ाके सिवाय, किसी दूसरीसे भोग करा दो।

(८) अगर रोगी कँवारा हो, तो उसकी शादी करा दो।

(९) आगमें लोहेको लाल करो और जब उसे पानीमें बुझाने लगो, तब तीन दफा यह कहो—"जिस तरह यह गरम लोहा पानीमें शीतल होता है, उसी तरह अमुक आदमीके लड़केकी मुहब्बत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमुक आदमीकी लड़कीसे शीतल हो जाय", इस तरह तीन दफा कहकर लोहेको पानीमें बुझा दो। फिर उस पानीसे रोगीका मुँह धोओ और उसे उसकी छातीपर छिड़को। तीन दिन यह उपाय करनेसे रोगी अपनी माशूक़ाको भूल जायगा। यह उपाय "तिब्ब फ़रीदी" में लिखा है।

(१०) "तिब्ब फ़रीदी" वग़ैरः ग्रन्थोंमें लिखा है कि, संगमरमरका वह टुकड़ा, जिसपर किसी मरनेवालेकी तारीख़-मिती लिखी हो ले आओ। उसे थोड़ा-सा घिस लो। फिर आशिक़-माशूक़की जुदाईके संकल्पसे, उसमेंसे थोड़ा-थोड़ा, बिना कहे, दोनोंको खिला दो। इस उपायसे मुहब्बत टूट जायगी।

(११) बिच्छूका डङ्क, कुत्तेका नाखून और कछवेका नाखून लाकर, ऊँटके चमड़ेमें मढ़कर यन्त्र-सा बना लो। इस यंत्रको प्रेम-पागलके गलेमें लटकानेसे यह रोग नाश हो जाता है।

(१२) कोरे कुल्हड़ेमें औरतके बाल जलाओ। फिर उसी कुल्हड़ेमें आशिक़ रोगीको पानी भरकर पिलाओ। इससे प्रीति कम हो जाती है, पर अरुचि हो जाती है।

(१३) उल्लूका भेजा अढ़ाई रत्ती पिघलाकर उसमें कौड़ी-भर कपूर मिला दो और पीसो। जब खूब मिल जावें, उसमें अढ़ाई रत्ती कव्वेका खून भी मिला दो। इसमेंसे दो जौ-भर लेकर, इसमें कई बूँदें तुलसीके रसकी मिला दो और ३।४ बूँद यह चीज़ रोगीकी नाकमें टपकाओ। इससे पागलपन जाता रहता है। "इलाजुलग़ुर्बा" में लिखा है, यह एक फिरंगी डाक्टरका आज़मूदा नुसख़ा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़फ़क़ान या हौलदिल।

ख़फ़क़ान या हौलदिल अथवा दिलकी घबराहट मानसिक रोग है और उन्माद भी मानसिक रोग है। इलाजुल-ग़ुर्बामें लिखा है कि, ख़फ़क़ानको ही संस्कृतमें "उन्माद" कहते हैं। इस रोगमें दिल फड़कता है और उससे घबराहट होती है।

असल बात यह है कि, हकीम लोग दिमाग़से होनेवाले उन्मादको "जिनूँन" और दिलकी धड़कनसे होनेवालेको "ख़फ़क़ान" कहते हैं। डाक्टर लोग दिमाग़से होनेवाले उन्मादको "इन्सैनिटी" और दिलकी धड़कनसे होनेवालेको "पैलपीटेशन" कहते हैं।

दिलमें किसी तरहसे कष्ट पहुँचनेसे धड़कन पैदा होती है। दिलमें कष्ट पहुँचनेके या इस रोगके पैदा होनेके मुख्य आठ कारण हैं :—

(१) दिलमें गरमी, सर्दी, खुश्की या तरी पहुँचना।
(२) दिलमें खूनका ज़ियादा भर जाना।
(३) दिलकी रगोंमें पित्तका आ जाना।
(४) दिलमें कफका आ जाना।
(५) दिलकी रगोंमें वायु भर जाना।
(६) खून या वीर्यका बहुत निकलना या निकालना।
(७) दिलकी शक्तिका तेज और बलवान हो जाना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) दिमाग़, जिगर, आमाशय, आँत, गर्भाशय, पर्दे और फेंफड़ोंके संयोगसे अथवा सब शरीरके संयोगसे अथवा विषैले जानवरोंके काटनेसे इस रोगका पैदा होना।

ख़फ़क़ान-रोगके—

पहले कारणके लक्षण और चिकित्सा।

पहले कारणमें दिलकी प्रकृतिका दुष्ट हो जाना है। इसके चार भेद हैं:—

(१) दिलमें गरमी होना।
(२) दिलमें सर्दी होना।
(३) दिलमें खुश्की होना।
(४) दिलमें तरी होना।

दिलमें गरमी पहुँचनेके लक्षण।

अगर दिलमें गरमी पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) नाड़ी बड़ी जल्दी, गहरी और बारम्बार चलती है।
(२) रोगीकी छाती गरम रहती है।
(३) प्यास बहुत लगती है।
(४) चिन्ता और घबराहट रहती है।
(५) हर समय जलन मालूम होती है।
(६) रोगीको शीतल हवासे चैन मिलता है।
(७) शरीर दुबला हो जाता है, क्योंकि दिलकी दूषित गरमी सारे शरीरमें घुस जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चिकित्सा।

इस हालतमें नीचे लिखे हुए उपाय हित हैं:—

(१) कपूरकी टिकिया* मीठे अनारके शर्बतके साथ दो।

(२) सफ़ेद चन्दन और कपूर अर्क़-गुलाबमें घिसकर छातीपर लगाओ।

(३) शर्बत चन्दन या शर्बत अनार पिलाओ।

(४) मकानमें शीतल हवा आनेका प्रबन्ध करो।

(५) रोगीको शीतल और सुगन्धित चीज़ें सुँघाओ।

(६) रोगीको शीतल पथ्य पदार्थ खिलाओ।

(७) अगर मवाद भरनेसे रोग हुआ हो, तो आगा-पीछा देखकर फ़स्द खोलो।

नोट—दिलकी दुष्ट प्रकृतिके भेदोंमें नीचे लिखी बातोंको याद रखना चाहिये:—

(१) अगर रोगका कारण मवाद भर जाना हो, और अगर मवाद निकालने या दस्त करानेसे हानि न हो, तो पहले मवादको निकाल दो।

(२) अगर फ़स्द खोलनेकी ज़रूरत हो, पर किसी वजहसे फ़स्द खोलना उचित न हो, तो दोनों कंधोंके बीचमें पछने लगाओ।

(३) दस्त कराने और फ़स्द खोलनेमें ज्वरका ख़याल रखो। विचार करो कि, ज्वरकी दशामें इन कामोंके करनेसे हानि तो न होगी और ज्वर न होनेपर ज्वर तो न हो जायगा। अगर ज्वर है तो बिगड़ेगा तो नहीं—हक़ीमको इस मौक़ेपर अक़्लमन्दीसे काम करना चाहिये।

(४) शीतल चीज़ें सेवन कराओ; पर जैसी ज़रूरत हो, वैसी ही शीतल चीज़ें दो। जैसे,—गरमी ज़ियादा हो, तो कपूरकी टिकिया दो, नहीं तो मत दो। गरमी कम हो, तो दूसरी शीतल चीज़ोंसे गरमीको शान्त करो।

* कपूरकी टिकियाकी विधि—गुलाबके फूल ७ माशे, वंशलोचन ३॥ माशे, सफेद चन्दन ३॥ माशे, ककड़ी-खीरेके बीजोंकी मींगी १७॥ माशे, घीयाके बीजोंकी मींगी १७॥ माशे, काले खुरफेके बीज १७॥ माशे, केशर १७॥ माशे और कपूर ६ रत्ती—सबको महीन पीसकर "ईसबगोलके लुआबमें" खरल करो और चार-चार रत्तीकी टिकियाँ बनालो। यही कपूरकी टिकिया है। अगर "शर्बत अनार" बनाना हो, तो मीठे अनारका रस १ सेर और मिश्री १ सेर शामिल पकाकर शर्बत बनालो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) ठण्डी चीज़ें काममें लाओ, तो अजीर्ण और नर्मीका ख़याल रखो। अगर तबियतमें अजीर्ण हो, तो इमली और आलूका निर्मल पानी वग़ैरः वैसी ही चीज़ें दो। अगर तबियत नर्म हो, तो खुरफेका शीरा, नीबूका शर्बत या नारंगीका शर्बत आदि पिलाओ।

(६) पथ्य-अपथ्यका खूब ख़याल रक्खो, लाभदायक चीज़ें खिलाओ-पिलाओ और हानिकारक चीज़ोंसे रोगीको बचाओ।

(७) अगर आमाशयमें कमज़ोरी हो, तो उसको न भूलो। इस अवस्थामें गुलाब और अर्क़ वेदमुश्क बहुत मुफीद हैं।

(८) इस बातपर सबसे ज़ियादा ध्यान दो कि, गरमीकी अधिकतासे 'दिल' में फुंसी और सूजन न पैदा हो। अगर यह डर न हो, तो गरमीकी शान्तिकी अधिक चेष्टा करो। सुन्न करनेवाली चीज़ें लगाओ और दिलपर पुष्टिकारक चीज़ोंका लेप करो।

(९) ज़रूरतके समय जैसी मात्रा देनी चाहिये, वैसी ही दो। कभी-कभी मात्राकी कमीसे लाभ नहीं होता, तब मूर्ख वैद्य घबरा उठता है; पर इतना विचार नहीं करता कि, जलती आगमें थोड़े-से पानीसे क्या होगा। इसी तरह उचितसे अधिक मात्रा देकर भी उल्टी हानि न करनी चाहिये। मतलब यह है कि, उपयुक्त मात्रासे ही रोग क़ाबूमें आता है।

दिलमें सर्दी पहुँचनेके लक्षण।

अगर दिलकी दुष्ट प्रकृति ठण्डी होती है या दिलपर सर्दी पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए चिह्न देखे जाते हैं:—

(१) नाड़ी छोटी, सुस्त और विरुद्ध होती है।

(२) साँस निर्मल आता है।

(३) शरीरका बल घट जाता है।

(४) चेहरेका रंग उड़ जाता और चेष्टा जाती रहती है।

(५) भय, डर, कमज़ोरी और आलस्य पैदा होते हैं।

(६) गरम चीजें छूने, सूँघने और चखनेसे लाभ होता है।

चिकित्सा।

इस अवस्थामें नीचे लिखे हुए उपाय हितकारक हैं:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) दीवालमुश्क गरम और मुफर्रा नामक नोशदारू, जिनकी विधि मालीखोलियाके इलाजमें, पृष्ठ ११७ में लिखी हैं, सेवन कराओ।

(२) दिलके पुष्ट करनेके लिये शर्बत बादरंजबोया—शर्बत बिल्ली-लोटन और शर्बत ऊद पिलाओ। इनमें केशर, कस्तूरी, अम्बर, बाल-छड़ और गुलाबके फूल—विचारपूर्वक मिला दो।

(३) बालछड़, नागरमोथा, दालचीनी, लौंग और गुलाबके फूल—इनको समान-समान लेकर पीस लो और फिर "दौनामरुआके स्वरसमें" खरल करके छातीपर लेप कर दो। अथवा तुलसीको "बाद-रंजबोया" के पानीमें पीसकर छातीपर लेप कर दो।

(४) चकोर, मुर्गी, कबूतर आदि पखेरुओंका मांस—दालचीनी, केशर और ऊदसे सुगन्धित करके खिलाओ।

(५) रोगीको शीतल भोजन और शीतल जल न दो। शहदका पानी पिलाना उत्तमहै।

दिलमें खुश्की पहुँचनेके लक्षण।

अगर दिलमें खुश्क दुष्ट प्रकृति पैदा होने या दिलपर खुश्की पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए चिह्न दीखते हैं:—

(१) नाड़ी छोटी रहती और लगातार चलती है।

(२) देह घुलकर दुबली हो जाती है। ऐसा दुबलापन पहलेसे बहुत कम होता है।

(३) इस रोगमें रोगी भय, खुशी, क्रोध और चिन्ताके गुणको जल्दी नहीं मानता। जब इनके असरको मानता है, तब वह गुण बहुत देर तक रहता है।

(४) रोगीको नींद नहीं आती।

(५) सूखी खाँसी चलती है।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस हालतमें लाभदायक हैं:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) जौके पानीमें बादामका तेल और बूरा मिलाकर पिलाओ।

(२) तर और ठण्डे भोजन खिलाओ।

(३) अगर बुख़ार न हो, तो ताज़ा दूध पीना सब चीज़ोंसे अच्छा है।

(४) अगर रोगीको ज्वर हो, तो जौका बाट और बादामका तेल सबसे अच्छा है।

(५) सफ़ेद मोमको, कद्दूके तेल और बनफ़शाके तेलमें पिघलाओ। फिर उसे हरे धनियाँ और काहूके पानीमें मिलाकर हाथसे खूब मलो। इसे "कीरुती अख़ज़र" कहते हैं। इसके छातीपर मलनेसे दिलकी खुश्की दूर हो जाती है।

(६) तपेदिकके इलाजमें लिखी हुई चीज़ें भी इस रोगमें लाभदायक हैं।

दिलमें तरी पहुँचनेके लक्षण।

अगर दिलमें तर दुष्ट प्रकृति पैदा होने या दिलपर ज़ियादा तरी पहुँचनेसे रोग होता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण दीखते हैं:—

(१) नाड़ी नर्म, सुस्त और विरुद्ध चलती है।

(२) भय, खुशी, क्रोध और चिन्ताका असर जल्दी होता है, पर वे देर तक ठहरते नहीं। तरी जिस तरह प्रवेशका असर जल्दी ग्रहण कर लेती है; उसी तरह उससे वह असर दूर भी जल्दी हो जाता है। खुश्कीका काम इसके विपरीत है।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस दशामें हित हैं:—

(१) खानेके पदार्थ नर्म, मुलायम, हल्के और कम दो।

(२) लौंग, केशर और बादरंजबोया खिलाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) शहदकी बनी सिकंजवीन और "पोदीना मिला हुआ अनारका शर्बत"* पिलाओ।

(४) मामूली शारीरिक परिश्रम कराओ।

(५) गरम हम्माममें स्नान कराओ।

(६) चनेका पानी और भुना हुआ मांस खिलाओ।

(७) अगर किसी रोगीके मुँहमें पानी भर-भर आवे, तो उसे 'एलुएकी गोली' और 'यारजकी गोली' खिलाकर मवादको निकाल दो।

ख़फ़क़ान-रोगके—

दूसरे कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(खूनके बढ़नेसे दिलमें घबराहट)

लक्षण।

अगर शरीरमें इतना खून बढ़ गया हो कि, उसकी वजहसे शरीरके अवयव बढ़ गये हों—चाहे उसमें सड़ाँद न पैदा हुई हो—परन्तु खूनके भर जानेसे घबराहट पैदा हो गई हो, तो रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण पाये जाते हैं:—

(१) रगें खिंचतीं और फूल जाती हैं।

(२) नाड़ी बड़ी हो जाती है।

(३) पेशाब गाढ़ा हो जाता है।

---

* मीठे अनारका रस ६ माशे, पोदीनेका अर्क़ ४५ माशे और सफेद कन्द २७ माशे—इनको मिलाकर शर्बत पका लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) शरीरमें थकान आदि होती है।

ये सब खूनके ज़ियादा होनेके लक्षण हैं।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस हालतमें लाभप्रद हैं:—

(१) बाँयें हाथमें बासलीककी फ़स्द खोलो। इससे बहुत जल्दी लाभ होता है।*

(२) दही और कपूरकी टिकिया खिलाओ।

(३) भोजनके लिए बिना मांसका शोरबा दो।

(४) अगर किसी वजहसे फ़स्द खोलना उचित न जँचे, तो पिंडलियोंपर पछने लगाकर, दोनों कन्धोंके बीचमें पछने लगाओ।

(५) वीर्यका निकलना अधिक लाभदायक है, बशर्ते कि वीर्य निकलनेके बाद थकान न हो।

(६) प्रकृतिकी समानताके लिये वही उपाय लाभदायक है, जो गरम दुष्ट प्रकृतिमें या गरमीके लक्षणकी चिकित्सामें लिखे गये हैं। देखो पृष्ठ १३१—१३२।

(७) अगर प्रकृतिमें गरमी बहुत हो, तो उन शीतल और ठण्डे उपायोंसे काम लो, जो पित्तकी घबराहटमें, अगले सफ़ोंमें, लिखे जायँगे। पर इस बातको न भूलो कि, अगर रोगी कमज़ोर होता है, तो शीतल शर्बत और शीतल भोजन असली गरमीको नुक़सान पहुँचाते हैं। इस हालतमें थोड़ा-सा कबाबा† लौंग और इलायची महीन पीसकर, शर्बत और भोजनमें मिलाकर देना मुफ़ीद है।

---

* एक आदमी हर साल दिलकी धड़कनके रोगमें फँस जाता था। हकीम जालीनूस उसकी फ़स्द खोल देता था। चौथे वर्ष, धड़कन होनेसे पहले ही फ़स्द खोली गई और फिर यह रोग न हुआ।

† कबाबाका दूसरा नाम कबाबचीनी या शीतल-मिर्च है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़फ़क़ान-रोगके—

तीसरे कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(पित्तसे दिलमें धड़कन होना)

लक्षण।

अगर पित्त रगोंमें घुसकर धड़कन पैदा करता है, तो रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण पाये जाते हैं:—

(१) चिन्ता बहुत रहती है।

(२) नींद नहीं आती।

(३) प्यास बहुत लगती है।

(४) दिलमें घबराहट रहती है।

(५) पित्तके और-और लक्षण भी होते हैं।

चिकित्सा।

अगर पित्तके रगोंमें आनेसे दिल धड़कता हो और ऊपर लिखे पित्त-कोपसे होनेवाले लक्षण पाये जाते हों, तो नीचे लिखे हुए उपाय करो:—

(१) पित्त निकालनेके लिए हरड़का काढ़ा, बनफ़शाका शर्बत और इमलीका नितरा हुआ पानी पिलाओ। जैसे भी हो, गरमीको शान्त करो।

(२) अगर उचित समझो, तो बासलीककी फ़स्द खोलकर थोड़ा-सा खून निकालो।

रोगीको "चन्दनकी पोशाक" पहनाओ। चन्दनकी पोशाक पहना-कर, उसपर थोड़ा-थोड़ा "गुलाब-जल" छिड़को। ख़ासकर, दिल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और छातीके ऊपरके कपड़ेपर तो बारम्बार छिड़कते रहो। "चन्दनकी पोशाक" बनानेकी तरकीब फ़ुटनोटमें देखियेॐ।

(४) अगर गरमीकी अधिकतासे दिलमें फुन्सी और सूजन होनेका डर हो, तो अफ़ीम ३ रत्ती, सेबके बीज ६ रत्ती, कपूर २ रत्ती, केशर १ रत्ती और कस्तूरी १ रत्ती—सबको मिलाकर रोगीको दो।

(५) दूसरे कारणके लक्षण और चिकित्सामें यानी खूनके बढ़नेसे होनेवाली दिलकी घबराहटमें (देखो पृष्ठ १३५-३६) जो उपाय लिखे गये हैं, वे भी यहाँ काम आ सकते हैं, क्योंकि खूनी और पित्तकी घबराहट, दोनोंका एक ही इलाज है। सिर्फ इतना ही फ़र्क़ है कि, खून बढ़नेसे होनेवाले रोगमें खून ज़ियादा निकाला जाता है और पित्तसे होनेवाले रोगमें ठण्डक ज़ियादा पहुँचानी होती है।

(६) जिस तरह खून बढ़नेसे होनेवाली दिलकी घबराहटमें "कपूरकी टिकिया" खिलाते हैं, उसी तरह इस पित्तकी दिली घबराहटमें भी कपूरकी टिकिया देते हैं। एक प्रकारकी कपूर-टिकिया बनानेकी विधि हम पृष्ठ १३१ के फ़ुटनोटमें लिख आये हैं। अब एक दूसरी तरकीब लिखते हैं:—गुलाबके फूल १४ माशे, बंसलोचन १४ माशे, नीलोफर १४ माशे, खुरफेके बीज ७ माशे, ककड़ीखीरेके बीजोंकी मींगी ७ माशे, घीयाके बीजोंकी मींगी ७ माशे, नहरके कीकड़े जले हुए ३॥ माशे, मुलहटी ३॥ माशे, केशर २ रत्ती, कपूर २ रत्ती, सम्मगअरबी यानी बबूलका गोंद ५। माशे, कतीरा ५। माशे और तुरंजबीन—ओस खुरासानी ३५ माशे लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस छनी हुई दवाको "बिहीदानेके लुआबमें" गूँदकर टिकिया बना लो।

ॐ चन्दनकी पोशाक—सफेद चन्दनको गुलाब-जलमें घिसो और थोड़ा-सा कपूर भी घिसते समय उसमें मिला दो। फिर उसे पानीमें घोलकर, उसमें साफ सफेद कपड़ेको रङ्ग लो और उसे हवामें सुखा लो। यही "चन्दनकी पोशाक" है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) अगर दिलमें गरमी बहुत हो, तो यह सफूफ या चूर्ण देना चाहियेः—गुलाबके फूल ३॥ माशे, बंसलोचन ३॥ माशे, सूखा धनियाँ ७ माशे और कपूर ३ रत्ती—सबको कूट-पीसकर छान लो। इसकी मात्रा ४॥ माशेकी है। अनुपान—सेबका पानी है; यानी दवा खिलाकर ऊपरसे सेबका स्वरस पिलाना चाहिये।

(८) अगर रोगीको प्यास और गरमीकी शिकायत बहुत हो, तो यह शर्बत पिलाओ। इससे प्यास और गरमी फौरन शान्त होती हैंः—खट्टे अनारका रस, खट्टे आलुओंका नितरा हुआ पानी, इमलीका नितरा हुआ पानी, नीबूका रस और खट्टे अँगूरोंका पानी—इन सबको बराबर-बराबर ले लो और वज़नमें जितने ये सब रस या पानी हों, उतना ही बूरा ले लो। फिर सबको पकाकर शर्बत बना लो।

(९) इस रोगमें ताज़ा मछली सिरकेमें पकी हुई बहुत लाभदायक है; और सबसे ज़ियादा लाभदायक उपाय शीतल हवामें रोगीको रखना है।

नोट—हकीम मुहम्मद ज़करिया कहते हैं कि, अगर गरमीकी धड़कनवाला आदमी गरम शहरमें रहता है, तो उसकी उम्र कम हो जाती है। मैंने गरम धड़कनवालोंको पचास या साठ साल तक जीते नहीं देखा।

ख़फ़क़ान-रोगके—

चौथे कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(कफसे दिलमें धड़कन होना)

लक्षण।

अगर दिलकी धड़कन कफके कारणसे होती है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैंः—

(१) श्वासमें तंगी आ जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) नाड़ी नर्म हो जाती है।

(३) रोगी नामर्द-सा हो जाता है।

(४) बेहोशी-सी हो जाती है।

(५) रोगी ऐसा समझता है; मानो उसका दिल पानीमें डूबा जाता है।

चिकित्सा।

इस रोगमें नीचे लिखे हुये उपाय हितकारक हैं:—

(१) पहले मवाद निकालनेके लिये इस्तमखाकूनकी वह गोली दो, जिसमें "यारज" मिला हो। अथवा हुब्बकोकाया दो। अथवा ३॥ माशे यारज फयकरा और अफ्तीमून महीन पीसकर शहदकी बनी सिकञ्जबीनमें मिलाकर खिलाओ। अगर दिलमें रतूबत जम गई हो, तो यारज लौगाजिया और स्यादरीतूस दो।

(२) जिस रोगीको वमन कराओ, उसे मवाद निकलनेके बाद, दीवालमुश्क कड़वी और मीठी* अथवा माजून गरम दो।

(३) कूट, बालछड़ और दालचीनी—इनको महीन पीसकर, मौलसरीके स्वरस और तुलसीकी शराबमें मिलाकर दिलपर लगाओ।

---

*दीवालमुश्क कड़वीकी विधि—अफसन्तीन रूमी २१ माशे, एलुआ २१ माशे, ज़राबन्द मुदहरिज २१ माशे, अजवायन १४ माशे, केशर १४ माशे, अजमोद १४ माशे, बालछड़ ७ माशे, तेजपात ७ माशे, जुन्देवेदस्तर ३॥ माशे और कस्तूरी ३॥ माशे—सबको पीस-छानकर साफ "शहदमें" मिला लो। मात्रा ४॥ माशेकी। अनुपान—अर्क़ गावजुवाँ।

मीठी दीवालमुश्ककी विधि—कचूर ७ माशे, दरूनज ७ माशे, मोती ५।माशे, कहरबा ५। माशे, मूंगेकी जड़ ५। माशे, रेशम कच्चा कतरा हुआ ५। माशे, बहमन सुर्ख़ २ माशे, बहमन सफेद २ माशे, तेजपात २ माशे, छोटी इलायची २ माशे, लौंग २ माशे, जुन्देवेदस्तर २ माशे, छरीला २ माशे, सोंठ १ माशे, पीपर १ माशे और कस्तूरी ६ रत्ती—सब दवाओंको पीस-छानकर "कच्चे शहदमें" मिला लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) कफकी या ठण्डी धड़कनवालेको नीचेका चूर्ण भी अच्छा है:—

कहरबा ३॥ माशे, जुन्देवेदस्तर ३॥ माशे, नीबूका छिलका १॥ माशे और रामतुलसीके बीज ८॥। माशे—इनको महीन पीस-छान-कर रख लो और "शहदमें" मिलाकर चटाओ।

अथवा।

पोदीना, कहरबा, विरिया, भुनी फिटकरी, नागरमोथा हरेक १०॥ माशे, जराबन्द मुदहर्रिज १॥। माशे, दरुनज अकरबी १॥। माशे; कस्तूरी ६ रत्ती, बालछड़ ३॥ माशे, मोती ३॥ माशे और बूरा ७० माशे—इन सबको कूट-पीसकर छान लो। मात्रा १०॥ माशे। अनुपान—तुर-बुदका काढ़ा।

(५) मालीखोलियाके इलाज (पृष्ठ ११७) में लिखी हुई "नोश-दारु" इस रोगपर परीक्षा की हुई है।

ख़फ़क़ान-रोगके—

पाँचवें कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(बादीसे दिलमें धड़कन होना)

लक्षण।

अगर वायु या बादी दिलकी रगोंमें आकर इकट्ठी हो जाती है, तो दिल तक हवा पहुँचनेमें और भाफके परमाणुओंके निकलनेमें गड़बड़ या ख़राबी हो जाती है। उस समय दिलमें घबराहट होती है। इस दशामें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) हर समय दिल घबराया करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) नाड़ी कड़ी हो जाती है।

(३) मालीखोलिया-रोगकी तरह चिन्ता, भयङ्कर घबराहट और बुरे-बुरे विचार प्रकट होते हैं।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस रोगमें हित हैं:—

(१) मालीखोलिया खूनीमें जो फ़स्द आदि उपाय लिखे गये हैं, वह सब इस रोगमें करने चाहिये। देखो पृष्ठ १०५—११४।

(२) अगर बादी कफसे पैदा हुई हो, तो पहले नीचे लिखा हुआ जुलाब दो—तुर्बुद सफेद १ तोले, अफ्तीमून १ तोले, गारीकून १ तोले, उस्तखद्दूस १ तोले, क़ाबुली हरड़ १ तोले, अयारज फयकरा १॥ तोले और अगर ६ माशे—इन सातोंको महीन पीस-छानकर गोलियाँ बना लो। मात्रा ७ से १०॥ माशे तक है।

अगर बादी पित्तसे पैदा हुई हो, तो नीचे लिखा हुआ जुलाब देकर मवाद निकालो:—तुर्बुद १ तोले, अफ्तीमून १ तोले, सनाय मकी १ तोले, पित्तपापड़ा १ तोले, एलुआ २ तोले, लाजवर्द मग़मूल ८ माशे, मस्तगी १ तोले और गुलाबके फूल ४ माशे—इन आठों दवाओंको महीन पीस-छानकर "मीठे सेबके रसमें" घोटकर गोलियाँ बना लो। मात्रा १४ माशेकी है।

अगर मवाद बादीका ही हो, तो नीचे लिखा हुआ जुलाब दो—छोटी हरड़ ३॥ माशे, बड़ी हरड़ ३॥ माशे, अफ्तीमून १॥। माशे, लौंग १॥। माशे और दीवालमुश्क कड़वी १०॥ माशे—इन पाँचोंको मिलाकर ३ दिन तक रखी रहने दो, ताकि मिल जायँ। फिर "शराब रिहानीमें" मिलाकर खिलाओ।

(३) इस रोगमें गुनगुने पानीसे नहाना लाभदायक है।

नोट—शेष उपाय मालीखोलियामें देखिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़फ़क़ान-रोगके—

छठे कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(खून या वीर्यके निकल जानेसे धड़कन होना)

लक्षण।

जब शरीरसे बहुत-सा खून या वीर्य निकल जाता है या निकालनेका काम पड़ता है अथवा कोई विशेष दोष निकल जाता है या खाने-पीनेसे कोई निकम्मा माद्दा पैदा होता है, या खून बहुत कम और पतला बनता है या खून बिगड़ जाता है, तब दिलमें धड़कन होती है। जब शरीरसे कोई विशेष तरी निकल जाती है, तब दिलमें निर्बलता हो जाती है और जब दिल निर्बल हो जाता है, तब उसपर छोटी-छोटी चीज़ोंका भी असर होता है। यहाँ तक कि, वह भोजनकी भाफके परमाणुओंसे कष्ट पाता और घबरा जाता है।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय हितकारक हैं:—

(१) जैसा कारण हो, वैसा इलाज करो। हानिकारक पदार्थोंसे रोगीको रोको। रोगके कारणको नष्ट करो। खून पैदा करनेको अच्छे-अच्छे भोजन दो। दिलको आराम पहुँचानेवाली दवाएँ सेवन कराओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़फ़क़ान-रोगके—

सातवें कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(दिलकी ज्ञानशक्तिके तेज़ और बलवान होनेसे धड़कन)

लक्षण।

जब दिलकी ज्ञानशक्ति तेज़ और बलवान हो जाती है, तब उसमें थोड़ी-सी तकलीफ़ होनेसे भी उसका असर हो जाता है और वह उसे दूर करनेके लिये घबराता है। कभी-कभी उसकी ज्ञानशक्तिकी तेज़ी यहाँ तक बढ़ जाती है कि, दोषों और भाफके परमाणुओं तकसे उसे कष्ट होता है और इसलिए धड़कन पैदा होती है। ज्ञानशक्तिका बढ़ना अच्छा है, पर चूँकि उससे चिन्ता होती है और कभी-कभी रोगी शीतल जल पीनेसे भी घबरा उठता है, अतः इस रोगका इलाज होना ज़रूरी है।

चिकित्सा।

नीचे लिखे हुए उपाय इस दशामें लाभदायक हैं:—

(१) चूँकि रूहके सूक्ष्म होनेसे ज्ञानशक्ति तेज़ हो जाती है, अतः उसके गाढ़ा करनेके लिए कल्ला और हरीसा खिलाओ। बलवर्द्धक दवाओं और भोजनोंसे दिलको ताक़तवर बनाओ। गरमी और सर्दीसे रोगीकी रक्षा करो।

नोट—रोग दिलकी ज्ञानशक्तिके बढ़नेसे है या दिलकी कमज़ोरीसे, इसकी पहचान यह है कि, ज्ञानशक्तिके तेज़ होनेसे शरीर आरोग्य रहता है, नाड़ी बड़ी और बलवान रहती है; पर निर्बलता होनेसे विपरीत लक्षण पाये जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ख़फ़क़ान रोगके—

आठवें कारणके लक्षण और चिकित्सा।

(दूसरे अङ्गोंके संयोगसे धड़कन होना)

लक्षण।

इसके कई भेद हैं; यानी नीचे लिखे हुए कारणोंसे भी दिलमें धड़कन पैदा हो सकती है:—

(१) दिमाग़के संयोगसे।

(२) जिगरके संयोगसे।

(३) आमाशय, आँतों, गर्भस्थान, पर्दों और फैंफड़ेके सम्बन्धसे।

(४) सारे शरीरके संयोगसे।

(५) विषैले जानवरोंके काटनेसे।

चिकित्सा।

इस तरहके रोगमें जिस अङ्गसे तकलीफ हो, उस अङ्गको अपनी असली दशा पर लाओ; साथ ही दिलको पुष्ट करो। जैसे,—दिमाग़के संयोगसे रोग हो, तो दिमाग़को दुरुस्त करो—उसकी ख़राबीको दूर करो और दिलको मज़बूत करो। आमाशयके संयोगसे रोग हो, तो आमाशयको दुरुस्त करो और दिलको पुष्ट करो। इसी तरह औरोंके सम्बन्धमें समझ लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्माद नाशक नुसख़े।

ख़मीरा सन्दल।

सफेद चन्दनका बुरादा ६ तोले ३ माशे लेकर अर्क़ गुलाब या पानीमें भिगो दो। सवेरे ही औटाकर पानीको छान लो। उस पानीमें आध सेर "मिश्री" डालकर चाशनी करो। अगर शर्बत बनाना हो, तो चाशनी पतली रखो और अगर ख़मीरा बनाना हो, तो गाढ़ी रखो। इसके सेवन करनेसे पित्तका उन्माद, ख़फ़क़ान या हौल-दिल रोग आराम हो जाता है।

शर्बत गावजुबाँ।

पाव भर गावजुबाँको रातके वक़्त पानीमें भिगो दो। सवेरे ही औटाकर पानी छान लो। फिर उस पानीमें एक सेर "मिश्री" मिलाकर चाशनी कर लो। इस शर्बतके पीनेसे उन्माद नाश होता और मन बलवान होता है।

शर्बत रेशम।

कच्चा रेशम १३ तोले ४ माशे, तीन दिन तक पानीमें भिगोकर औटाओ। जब तीसरा भाग पानी रह जाय, उस समय खौलते हुए पानीमें साजिज ७ माशे ४ रत्ती और बालछड़ ७ माशे ४ रत्ती, चन्दनका बुरादा १५ माशे और इलायचीके बीज १५ माशे—इन सबको एक थैलीमें भरकर और मुख बन्द करके डाल दो। फिर जल्दी ही नीचे उतारकर पानीको मल-छान लो और आध सेर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"मिश्रीमें" शर्बत पकालो। यह "शर्बत रेशम" दिलको बलवान करनेमें बहुत अच्छा है। इससे हौल-दिल और उन्माद अवश्य आराम हो जाते हैं।

रूईके फूलोंका शर्बत।

रूईके फूल गुलाबजल या पानीमें औटा लो। जब आधा पानी रह जाय, छानकर दूने गुड़में चाशनी कर लो। मात्रा ६ तोले ८ माशे। इससे मनमें बल आता है, दिल खुश होता है, उन्माद, दाह और पागलपन नाश होते हैं।

रंगतरेका शर्बत।

रंगतरेका गूदा फाँकोंसे निकालकर कुचल लो और कपड़ेमें निचोड़कर रस निकाल लो। जितना रस हो, उतनी ही मिश्री मिलाकर चाशनी कर लो और शेषमें थोड़ा-सा गुलाबजल मिलाकर उतार लो और छान लो। इस शर्बतके पीनेसे पित्तका उन्माद नाश होता और मन बलवान होता है। "इलाजुलगुर्बा" के लेखकका आज़मूदा नुसख़ा है।

शर्बत अनन्नास।

अनन्नासका रस १ भाग और मिश्री २ भाग मिलाकर चाशनी पका लो और छानकर रख लो। अगर चाशनीमें थोड़ा गुलाबजल मिला दो तो और भी अच्छा। इससे दिलमें ताक़त आती है।

चाँदनीके फूलोंका गुलक़न्द।

चाँदनीके फूल १०० और सफेद मिश्री ३३ तोले ४ माशे—इनको खूब मसलकर, थोड़ा-सा गुलाब मिला दो और चालीस रात चन्द्रमाकी चाँदनीमें रखो। पीछे एक तोलेकी मात्रासे खाओ। इससे पित्तका उन्माद नष्ट हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुड़हलका गुलक़न्द।

गुड़हलके फूलोंको, उनकी सब्ज़ी निकालकर, दूनी मिश्रीमें मसलो और रख लो। यह गुलक़न्द मन, बुद्धि और इन्द्रियोंको बलवान करता, खुशी करता और विशेषकर उन्मादको नाश करता है।

गुलक़न्द हारसिंहार।

हारसिंहारके फूलोंकी डंडी दूर करके उनकी सफेदी लेलो और दूने क़न्दमें मिला मसलकर, चालीस रात चाँदनीमें रखो। सवेरे ही १ तोला नित्य खानेसे यह गुलक़न्द पित्तके उन्मादको नाश करता और दिलको ताक़त देता है। पित्तके उन्माद के लिये अद्वितीय दवा है।

अर्क़ खस।

खसका अर्क़ भभकेसे खींच लो। केवल इसके पीनेसे पित्तका उन्माद चला जाता है। अगर इस अर्क़में मिश्री मिला ली जाय या मिश्री और अर्क़ पकाकर खमीरा बना लिया जाय और थोड़ा-सा "खसका इत्र" मिलाकर सेवन किया जाय, तो उन्माद और ज्वरकी गरमी नाश हो जाय। पुस्तक-लेखकने कई बार अर्क़ निकालकर लाभ उठाया है।

फुटकर नुसखे।

(१) नाजबोंके बीज १ तोले लेकर रातको पानीमें भिगो दो और हवामें रख दो। सवेरे ही ४० माशे मिश्री मिलाकर, चमचेसे निगल जाओ। इससे पित्तकी हौलदिली नाश हो जाती है।

(२) पान खानेसे सर्दीकी हौलदिली आराम हो जाती है।

(३) अफ़ीम खानेसे पित्तका उन्माद नाश हो जाता है।

(४) रेवन्दचीनी पानीमें पीसकर, दोनों क़न्धोंके बीचमें लगानेसे उन्माद जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) चनेकी दाल १६ माशे रातको आध पाव पानीमें भिगो दो। सवेरे ही खूब मलकर और मिश्री मिलाकर खाओ। खट्टी और बादी चीज़ोंसे परहेज़ करो। इससे उन्माद नाश हो जाता है।

(६) ईसबगोल १ तोला लेकर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उसका लुआब निकालकर, उसमें थोड़ी-सी मिश्री मिला लो और पीलो। इससे उन्माद जाता रहेगा।

(७) इमली पानीमें भिगोकर मल-छान लो और चीनी मिलाकर नित्य पीओ। इससे पित्तका उन्माद जाता रहता है।

(८) पानी या अर्क़ गुलाबमें कहरुवेका चूर्ण डालकर पीनेसे पित्तजन्य हृदयकी धड़कन बन्द हो जाती है। हृदयमें बल उत्पन्न करनेकी इसमें अजीब ताक़त है। कहरुवेकी माला गलेमें पहननेसे हृदयमें बलकी वृद्धि होती और हृदयकी धक-धकाहट बन्द हो जाती है।

नोट—कहरुवा मगज़के लिये नुक़सानमन्द है। सिरमें दर्द करता है। बनफ़शा इसके हानिकारक असरको नाश करता है। कहरुवेकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। इसके बदलेमें चन्दरस, प्रवाल और मोती बरते जाते हैं। गर्भवतीके गलेमें कहरुवेकी माला पहना देनेसे गर्भकी रक्षा होती है। वह गिरता नहीं। कहरुवेको महीन पीसकर घावोंपर छिड़कनेसे घाव भरते और सूख जाते हैं।

(९) हृदयकी धड़कन, खाँसी, जुकाम, आमाशय रोग (अतिसार, रक्तातिसार और प्रवाहिका), प्रमेह और मूत्रनलीके रोगोंमें "तुख़्म-बालंगा" पानीमें भिगोकर, ठण्डाईकी तरह, चीनी मिलाकर पीनेसे अवश्य लाभ होता है। मात्रा ६ से ९ माशे तक है।

नोट—दूध और पानीमें तुख़्मबालंगाकी खीर बनाकर खानेसे वीर्य, स्तम्भनशक्ति और रतिशक्ति—ये खूब बढ़ते हैं। गरमीके मौसममें इसको भिगोकर, इसमें चीनी या शन्तरेका रस मिलाकर पीना अच्छा है। इसको भिगोकर, कपड़ेपर मलहमकी तरह लगाकर, फोड़ेपर रख देनेसे यह चिपक जाता है। इससे कच्चा फोड़ा बैठ जाता और पक्का फूट जाता है। जलन, सूजन और लाली नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

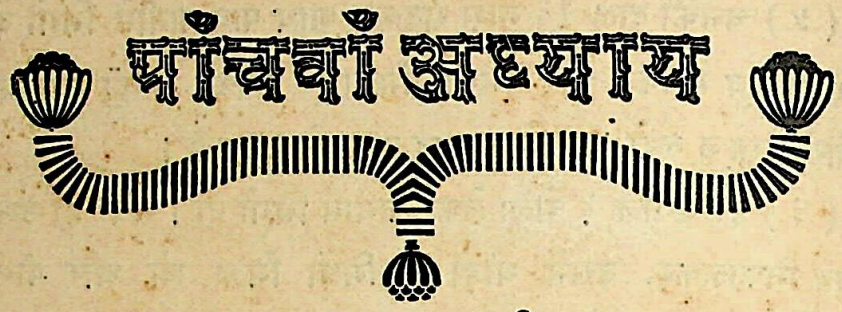

अपस्मार-वर्णन ।

अपस्मार शब्दकी निरुक्ति ।

पस्मार = अप + स्मार । अपस्मार शब्द 'अप' और 'स्मार'से बना है । अपका अर्थ नाश करनेवाला है और स्मारका अर्थ स्मृति या याद्दाश्त है । जो स्मृति या याद्दाश्तको नाश करता है, उसे "अपस्मार" कहते हैं ।

"सुश्रुत"में लिखा है:—

स्मृति भूतार्थ विज्ञानमपस्तत्परिवर्जने ।
अपस्मारइति प्रोक्तस्ततोऽयं व्याधिरंतकृत् ॥

"स्मृति शब्दका अर्थ प्राणियोंका अर्थज्ञान या भूतार्थ-विज्ञान है और "अप" शब्दका अर्थ नाशक है । अप और स्मृति इन दो शब्दोंसे "अपस्मार" शब्द सिद्ध हुआ है । जिसे अपस्मार रोग होता है, उसे किसी बातकी याद नहीं रहती, क्योंकि उसकी स्मरण-शक्ति या याद रखनेकी ताक़त नष्ट हो जाती है । इसीसे अपस्मार या मृगीवालेको जलमें घुसने, पहाड़ या वृक्षादिपर चढ़नेकी मनाही है; क्योंकि उसे यह ज्ञान नहीं रहता कि, जलमें घुसे चले जाने या पहाड़परसे कूदने प्रभृतिसे हमारी क्या हानि होगी ।

"चरक"में लिखा है:—

अपस्मारं पुनः स्मृतिबुद्धिसत्त्वसंप्लवाद्वीभत्स ।
चेष्टमावस्थिकंतमः प्रवेशमाचक्षते ॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपस्मार या मृगी रोगी ।

ऊपरके चित्रमें अपस्मार या मृगी रोगी बेहोश होकर गिर पड़ा है, मुँहसे झाग निकल रहे हैं, दो आदमी उसे सम्हाले बैठे हुए हैं। उधर लिखे लक्षणोंसे मिलान करके लक्षणोंको हृदयङ्गम कीजिये। (पृष्ठ १५१)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्मरण, बुद्धि और सतोगुणके लोप होनेसे—वीभत्स चेष्टाओंके साथ, बहुत देर तक अँधेरेमें घुसे रहने और अज्ञानसे व्याप्त होनेको "अपस्मार" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, मृगी रोगवालेकी स्मरण-शक्ति, बुद्धि और सतोगुणका नाश हो जाता है। वह बहुत देर तक रहनेवाले अन्धकारमें प्रवेश करता और अज्ञान घेर लेता है—यानी उसका ज्ञान नष्ट हो जाता है।

अपस्मारके सामान्य लक्षण।

अपस्मार या मृगी रोगी अपने तईं अँधेरेमें घुसता हुआ देखता है, उसकी स्मृति या याद नाश हो जाती है, आँखोंमें विकार हो जाते हैं और वह हाथ-पैरोंको इधर-उधर फैंकता है।

"चरक"में लिखा है, जब अपस्मार या मृगीका दौरा होता है, तब रोगी मिथ्या रूप देखता है, जमीनपर गिर पड़ता है और फड़कनेकी-सी चेष्टा करता है। उसकी आँखें और भौंहें टेढ़ी हो जाती हैं, मुँहसे लार बहती है और वह हाथ-पाँवोंको इधर-उधर पटकता है। इसके बाद जब वातादिक दोषोंका वेग या जोर घट जाता या नष्ट हो जाता है, तब वह स्वस्थ और तन्दुरुस्त आदमीकी तरह होशमें आकर उठ बैठता है। ये अपस्मार या मृगीके साधारण लक्षण हैं।

डाक्टरी मतसे मृगीके सामान्य लक्षण।

डाक्टर लोग मृगीको "एपिलेप्सी" कहते हैं। उनका कहना है कि, मृगीवाला एक साथ चीख मारकर गिर पड़ता है और उसके मुँहसे झाग आने लगते हैं। और किसी भी मूर्च्छामें रोगी चीख मार-कर नहीं गिरता और मुँहमें झाग भी नहीं आते। मृगीकी मूर्च्छा और अन्य प्रकारकी मूर्च्छाओंमें यही बड़ा भेद है।

डाक्टरीमें लिखा है,—मृगी रोगमें स्पर्शशक्ति या छूनेकी ताक़त नहीं रहती, आत्मज्ञान-शून्यता हो जाती है; शरीर ऐंठता है, नेत्र,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मस्तक, हाथ और शरीरको कोई मरोड़े डालता हो ऐसा मालूम होता है, भीतरसे रोनेकी-सी आवाज आती है, साँस लेनेमें तकलीफ होती है, साँस रुकने लगता है और कभी-कभी तो बन्द ही हो जाता है।

रोगी दाँतोंको घिसता या चबाता है, अपनी जीभको काटता है, बिना इच्छाके पाखाना-पेशाब फिर देता और वीर्य भी निकल जाता है। आँखें घूमने लगती हैं, साँस जल्दी-जल्दी लेता है, मुँहसे झाग निकलते हैं, चेहरे और शरीरका रंग मलीन हो जाता है, नाड़ीकी चाल स्वाभाविक रहती है और पसीने आते हैं। ऐसे लक्षण कुछ सेकण्डोंसे लगाकर १० मिनट तक रहते हैं।

जब मृगी दूर हो जाती है, रोगी कमज़ोर होकर उठता और सोना चाहता है। इस नींदसे रोगी जल्दी नहीं उठता।

यह रोग माँ-बापके किसी रोगमें ग्रस्त रहनेसे, बहुत ज़ियादा शराब पीनेसे, अत्यन्त स्त्री-प्रसङ्ग करनेसे, हस्तमैथुन करनेसे और किसी तरहका विष या ज़हर खानेसे—दिमाग़में खून जमा होकर—होता है। फिर इस रोगके दौरे होने लगते हैं।

होमियोपैथीवाले कहते हैं,—बेहोशी और मुँहसे झाग निकलना, इस रोगके मुख्य लक्षण हैं। यह रोग प्रायः रातके समय अपना हमला या दौरा करता है।

एलोपैथीवाले लिखते हैं कि, मृगीवालेका ज्ञान नष्ट हो जाता है, उसे कुछ भी सुध-बुध नहीं रहती, अतः घरवालोंको चाहिये कि उसे अकेला न छोड़ें। जब मृगी आवे इस बातकी होशियारी रखें कि, रोगी अज्ञानवश अपने किसी अङ्गमें चोट न लगा ले। ऐसा रोगी प्रायः अपनी जीभ काटा करता है, अतः मुँहमें दाँतोंके नीचे कपड़ेकी गैंद या काठका टुकड़ा अथवा रबड़ दे दें और उसे साफ हवादार मकानमें रखें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हकीमी मतसे मृगीके सामान्य लक्षण।

हकीमी ग्रन्थोंमें लिखा है कि, मृगी रोगमें ज्ञान और चलने-फिरनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, प्रकृति बदल जाती है और रोगी ज़मीनपर गिर पड़ता है। अरबीमें इस रोगको "सरा" कहते हैं।

मृगी रोगमें सामान्यतया दस लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) मृगीवालेकी जीभ पीली होती है, पर उसकी नीचेकी रग हरी होती हैं।

(२) दिल उदास रहने या थोड़ा भी क्रोध आनेसे सिर भारी हो जाता है।

(३) मृगी आनेसे पहले जीभ भारी हो जाती है।

(४) बुरे-बुरे स्वप्न दीखते हैं।

(५) भूलनेकी आदत हो जाती है।

(६) रोगीको हरेक चीज़से भय लगता है।

(७) मुँहसे झाग आते हैं।

(८) मालीखोलिया (एक तरहका उन्माद) रोगीकी तरह बुरे-बुरे विचार दिलमें उठने लगते हैं।

(९) दिलकी तंगीसे असन्तोष पैदा होता है।

(१०) थोड़े-से काममें रोगी निःस्वार्थ क्रोध करता है।

नोट—ये सब दिमाग़ी मृगीके लक्षण हैं। यों तो हिकमतके मतसे मृगी रोग दिमाग़में गड़बड़ होनेसे ही होता है; पर हकीमोंने इसे दिमाग़के सिवा, शरीरके और अङ्ग—आमाशय, तिल्ली और जिगर प्रभृतिकी ख़राबी और विषैले जन्तुओंके काटनेसे भी माना है। इन हालतोंमें भी मृगीकी पैदायश दिमाग़से ही होती है। जैसे,—आमाशय जब दूषित वात, कफ और पित्तसे भर जाता है, तब उनकी भाफके परमाणु ऊँचे उठकर दिमाग़की तरफ जाते हैं। दिमाग़को इनसे तकलीफ होती है, अतः वह इनसे बचनेके लिए सुकड़ जाता है। दिमाग़के सुकड़नेसे रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं; इसलिये दोषोंकी गाँठ पड़ जाती है और फिर मृगी रोग पैदा हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निदान और सम्प्राप्ति।

"सुश्रुत"में लिखा है:—

चिन्ताशोकादिभिर्दोषाः क्रुद्धाहृत्स्रोतसिस्थिताः।
कृत्वास्मृतेरपध्वंसमपस्मारं प्रकुर्वते॥

चिन्ता, शोक, क्रोध, मोह, लोभ आदिसे वात, पित्त और कफ कुपित हो जाते हैं। फिर वे हृदय* में रहनेवाली और मनको बहानेवाली नाड़ीमें जाकर स्मृतिका नाश करके, अपस्मार या मृगी रोग पैदा कर देते हैं।

"चरक"में लिखा है, जिसका चित्त रजोगुण और तमोगुणसे घिरा रहता है; जिसके दोष उद्भ्रान्त, विषम और अधिक होते हैं; जो भोजनके नियमोंके विपरीत मैला, ख़राब और अपवित्र खाना खाता है; जो शास्त्रमें लिखे हुए नियमोंके विरुद्ध काम करता है और जिसका

---

* आयुर्वेदाचार्योंमेंसे अधिकांश तो संज्ञा और बुद्धिका मूलस्थान "हृदय" को मानते हैं; पर कितने ही मूर्द्धा या दिमाग़को भी मानते हैं। जो हृदयको संज्ञा और बुद्धिका मूलस्थान मानते हैं, उनके मतसे मृगीरोगकी उत्पत्ति "हृदय"से होती है; पर जो मूर्द्धा या दिमाग़को संज्ञा और बुद्धिका मूलस्थान मानते हैं, उनके मतसे यह रोग दिमाग़से होता है। अगर काशिराज धन्वन्तरि मृगी-रोगीके दिमाग़में फ़ितूर न समझते, तो शिरोविरेचनकी आज्ञा न देते। उन्होंने कहा है:—

तीक्ष्णैरुभयतो भागैः शिरश्चापि विशोधयेत्।
पूजां रुद्रस्य कुर्वीत तद्गणानां च नित्यशः॥

तेज़ वमन और विरेचन देकर वैद्य नीचे-ऊपरसे रोगीकी सफ़ाई करे और नस्य देकर सिरकी भी शुद्धि करे तथा नित्य शिवजी और उनके गणोंकी पूजा किया करे।

सुश्रुतके "शिरश्चापि विशोधयेत्"से साफ़ मालूम होता है कि, हमारे आयुर्वेदज्ञ महर्षि भी मृगीको दिमाग़से मानते थे। हाँ, उन्होंने इसका खुलासा कहीं नहीं किया। ज़ियादा ज़ोर हृदयपर दिया है। हकीम और डाक्टर इसे दिमाग़ी रोग कहते ही हैं। वास्तवमें, मृगी रोग दिल और दिमाग़की बीमारी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीर अत्यन्त क्षीण हो जाता है, उसके वातादि दोष कुपित होकर और रजोगुण-तमोगुणके अत्यन्त वशीभूत होकर, अन्तरात्माके निवास-स्थान—हृदयमें डेरा डाल देते हैं। वही आदमी जब काम, क्रोध, मोह, लोभ आदिके वशीभूत होता यानी चिन्ता, शोक या क्रोध आदि करता है, तब हृदयमें ठहरे हुए वे ही दोष उत्तेजित होकर स्मरणशक्तिको नाश कर देते हैं। इस अवस्थाका नाम ही "अपस्मार" या "मृगी" है।

खुलासा यह है कि, जब रजोगुण और तमोगुणके अत्यन्त वशीभूत हुए वात आदि दोष संज्ञावाही स्रोतों—धमनियों या रगोंमें भर जाते हैं, तब मनुष्यको संज्ञा नहीं रहती। चित्त-विभ्रान्त मूढ़ या बेहोश आदमी हाथ-पैर पटकता हुआ ज़मीनपर गिर पड़ता है। उसके जीभ, भौं और नेत्र विकृत हो जाते हैं। वह दाँत कटकटाता और झाग निकालता है। उसकी आँखें फटी हुई-सी हो जाती हैं। थोड़ी देर बाद वह मनुष्य फिर होशमें आ जाता है। इस तरह बारम्बार इस रोगका दौरा होने लगता है।

पूर्वरूप।

अपस्मार रोग होनेसे पहले नीचे लिखे हुए लक्षण नज़र आते हैं:—

(१) हृदय काँपना, (२) सूनापन,
(३) पसीने आना, (४) विस्मय या अति चिन्ता,
(५) बेहोशी, (६) बुद्धि बिगड़ना,
(७) नींद न आना।

नोट—चरकने अपस्मारके पूर्वरूपोंमें बिना आवाज़के आवाज़ सुनाई देना, अथवा सुननेकी शक्तिका नष्ट हो जाना, मुँहसे लार गिरना, नाकसे मवाद आना, अन्नका न पचना, हृदयमें पीड़ा होना, कूखमें गुड़-गुड़ाहट होना, आँखोंके सामने अँधेरी आना तथा मोह, मूर्च्छा और भ्रम आदिका होना लिखा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपस्मारकी संख्या।

अपस्मार या मृगी चार तरहकी मानी गई है:—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) त्रिदोषज।

नोट—यूनानी चिकित्सावालोंने भी मृगी चार तरहकी मानी है:—

(१) कफकी, (२) वातकी,
(३) खूनकी, (४) पित्तकी।

इन चार भेदोंके सिवा हिकमतवालोंने दिमागके सिवा, शरीरके अन्यान्य अङ्ग—आमाशय, तिल्ली, जिगर और गर्भाशयसे पैदा होनेवाली सात तरहकी और विषैले जन्तुओंसे होनेवाली अलग लिखी है।

वातज मृगीके लक्षण।

"भावप्रकाश" में लिखा है, अगर रोगीका शरीर काँपे, रोगी दाँत चबावे, मुँहसे झाग निकाले, ऊँचे साँस ले और उसे आगके समान लाल-लाल रूप अपने चारों तरफ दीखें तो "वातज मृगी" समझो।

"सुश्रुत"में लिखा है, अगर रोगी काँपता हुआ दाँतोंको भींचे, जल्दी-जल्दी साँस ले, मुँहसे झाग गेरे और कहे कि कोई काला-काला रूप मेरे पीछे दौड़ता है या सामने दीखता है, तब मुझे बेहोशी होती है—तो "वातज मृगी" समझो।

"चरक"में लिखा है, जिस प्राणीकी स्मरणशक्तिका सदैव नाश हो और क्षण-क्षणमें संज्ञा लाभ हो; जिसके दोनों नेत्रोंकी पुतलियाँ सुकड़ जायँ; जो सदैव बकवाद करे; मुँहसे झाग डाले; जिसकी गर्दन फूली-सी हो; जिसके सिरमें दर्द रहा करे; जिसके हाथ-पैर स्थिर न रहें; जिसके नेत्र, मुख, चमड़ा और नाखून लाल रंगके हों; जिसका चित्त स्थिर न हो; जो चपल, कठोर और रूखे पदार्थ देखे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तथा बादी करनेवाले पदार्थ सेवन करनेसे जिसका रोग बढ़े और वात-नाशक पदार्थोंसे रोग शान्त हो, उसे "वातज मृगी" समझो।

खुलासा यह है कि वातज मृगीवाला काँपता और मुँहसे झाग गिराता है तथा उसे काली या लाल नाना प्रकारकी मिथ्या मूर्त्तियाँ दीखती हैं।

नोट—हिकमतमें लिखा है, अगर बादीसे मृगी रोग होता है तो ख़फ़क़ान-पन होता है, दिल फड़कता है और मुँहके झागोंका ज़ायका खट्टा होता है। अगर झाग ज़मीनपर गिर पड़ते हैं, तो उनकी तेज़ी या खटाईसे ज़मीन, सिरके-की तरह, उबलने लगती है। वातज मृगी कफजसे बुरी है। क्योंकि कफ दिमाग़की प्रकृतिके अनुकूल होता है और अनुकूल चीज़ कम हानि करती है।

पित्तज मृगीके लक्षण।

जिसके शरीर और नेत्रोंमें पीलापन हो, प्यास लगे, जिसे संसारके सभी पदार्थ आगसे घिरे हुए दीखें, उसे "पित्तज मृगी" समझो।

"सुश्रुत" में लिखा है, जो ताप—गरम शरीर, प्यास, पसीने और मूर्च्छासे दुखी हो, जो अंगोंको धुनता हुआ बेहोश हो जाय और कहे कि, कोई पीला भयंकर रूप मेरे आगे या पीछेसे दौड़ा आता है, उसके बाद मैं बेहोश हो जाता हूँ,—उसे "पित्तकी मृगी" समझो।

"चरक" में लिखा है, जो प्राणी भ्रष्टस्मृति हो; क्षण-क्षणमें होशमें आवे, कंठसे न समझमें आनेवाली आवाज़ निकाले; ज़मीनपर हाथ-पैर पटके; जिसके नाखून, नेत्र, मुँह और चमड़ा हल्दीके रङ्गके-से, हरे या लाल हों और जो खूनसे तर, उग्र, भयानक, प्रकाशित और क्रोधित रूप देखे तथा पित्तकारक पदार्थोंके सेवन करनेसे जिसका रोग बढ़े और पित्तनाशक चीज़ोंसे शान्त हो, उसे "पित्तज मृगी" समझो।

खुलासा—पित्तकी मृगीमें पीले झाग निकलते हैं तथा मुँह, आँख और शरीरका रंग पीला हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—हिकमतमें लिखा है, पित्तज मृगी होनेसे रोगी बहकता है, बेचैनी रहती है, घबराहट होती है, मृगी आनेके समय गरमी बहुत लगती है, क़य होती है, मुँह और नेत्र पीले हो जाते हैं। मृगी जल्दी चली जाती है। पित्तकी वजहसे मृगी बहुत कम होती है, क्योंकि पित्तका मल बहुत हल्का और पतला होता है।

कफज मृगीके लक्षण।

जिस मनुष्यके शरीरका, मुँहके झागोंका और नेत्रोंका रंग सफेद हो; अङ्गोंमें भारीपन हो, सर्दी लगे, रोएँ खड़े हों, संसारके सभी पदार्थ सफ़ेद-ही-सफ़ेद दीखें और बहुत देरके बाद चित्त शान्त हो या होश हो, उसे "कफज मृगी" रोग है।

"सुश्रुत"में लिखा है,—जिसे सर्दी लगे, मुँहमें पानी भर-भर आवे और जो नींदसे पीड़ित हो, ज़मीनपर गिरता हुआ मुँहसे झाग डाले और कहे कि सफेद रंगका भयंकर रूप मेरे आगे या पीछेसे दौड़ता आता है, उसके बाद मैं बेहोश होता हूँ,—उसे "कफज मृगी" है।

"चरक"में लिखा है, जो देरमें नष्टस्मृति हो और देरमें ही होशमें आवे, जो ज़मीनपर गिरकर हाथ-पाँव आदिको इधर-उधर न पटके, मुँहसे लार गिरावे, जिसके नाखून, नेत्र, चमड़ा और मुँह सफेद रंगके हों, जो सफेद और भारी रूपोंको देखे तथा कफकारी चीज़ोंसे जिसका रोग बढ़े और कफनाशक पदार्थोंसे नाश हो, उसे "कफज मृगी" है।

खुलासा—कफज मृगीमें मुँहसे सफेद झाग निकलते हैं और शरीर शीतल हो जाता है। वातज और पित्तज मृगीकी अपेक्षा इस मृगीवालेको देरमें होश होता है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, कफकी मृगी होनेसे बुद्धि बिगड़ जाती है, इन्द्रियाँ सुस्त हो जाती हैं, सिरमें बोझ-सा मालूम होता है, मृगी आनेके समय मुँहमें झाग बहुत आते हैं, मुँहसे थूक और नाकसे मवाद बहुत निकलता है, शरीर ढीला रहता है और हिलने-चलनेमें कठिनाई होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्निपातज मृगीके लक्षण।

अगर तीनों दोषोंके अपस्मारके लक्षण हों, तो सन्निपातज मृगी समझो। सन्निपातज मृगी असाध्य होती है। क्षीण प्राणीकी एक-दोषज मृगी भी असाध्य होती है। बहुत पुरानी मृगी भी असाध्य होती है।

"सुश्रुत"में लिखा है, सन्निपातकी मृगीमें हृदयमें वेदना, प्यास और उत्क्लेश—ये तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं तथा बकवाद, कूजन और क्लेश, ये भी होते हैं। सब दोषोंके मिले हुए काले, लाल, पीले और सफेद भयंकर रूप दीखते हैं अथवा कभी कैसे और कभी कैसे रूप रोगीको बेहोश होनेसे दीखते हैं।

योषापस्मारका वर्णन।

(हिस्टीरिया)

निदान—कारण।

गर्भाशयमें ख़राबी होने, रजःस्राव न होने या कम होने, स्वामी या पतिसे मुहब्बत न होने, पतिके निष्ठुर आचरण करने या कम भोग करने, वैधव्य अवस्थामें रंज या शोक करने, दस्तकब्ज़ रहने और अजीर्ण वग़ैरः होनेसे युवती स्त्रीको एक प्रकारका अपस्मार या मृगी रोग होता है, उसे संस्कृतमें "योषापस्मार" और "अँगरेज़ी" में "हिस्टीरिया" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वरूप।

हिस्टीरिया रोग होनेसे पहले छातीमें दर्द होता है, जँभाई आती हैं; शारीरिक और मानसिक ग्लानि होती है तथा संज्ञा नाश हो जाती है।

लक्षण।

कोई बिना वजहके हँसती है, रोती है, चीख़ती-चिल्लाती है, अपने रिश्तेदारोंपर वृथा दोषारोप करती है, अपने तईं वृथा अपराधी समझकर माफ़ी माँगती है—ऐसे-ऐसे लक्षण होते हैं। मूर्ख लोग इन लक्षणोंको देखकर भूतावेश या भूतबाधा समझते हैं। किसी-किसी रोगिणीके पेटके नीचेसे एक गोला-सा उठकर ऊपर आता दीखता है तथा शरीरके किसी भागमें दर्द होता है। वह सफेद चीज़ या उजेला देखने और ऊँची आवाज़ सुननेसे चमक उठती है। इस रोगवाली पुरुषसंगकी विशेष चाह रखती है।

नोट—इस रोगका इलाज मूर्च्छा रोगकी तरह करना चाहिये। मूर्च्छा और अपस्मारकी दवाएँ,—घी, तैल आदि इस रोगमें हितकारी हैं। अगर रजोधर्म बन्द हो गया हो या ठीक न होता हो, तो पाँचवें भागमें लिखी विधिसे उसे ठीक करना चाहिये।

हिकमतमें भी दिमाग़के अलावा शरीरके और अङ्गोंसे होनेवाली मृगीमें लिखा है कि, एक तरहकी मृगी वीर्याशय या गर्भाशयके दोषोंसे होती है। रजोधर्मके बन्द हो जाने या मैथुन न करनेके कारण वीर्यके रुकनेसे जब रज और वीर्यकी तलछट वीर्याशय और गर्भाशयमें जमा होकर बिगड़ जाती है, तब उनके परमाणु दिमाग़की तरफ़ चढ़कर मृगी रोग पैदा करते हैं। अगर ऐसी मृगी होती है तो रजोधर्म बन्द रहता है। पेड़ू, चूतड़े, गुर्दे और पेटमें दर्द और बोझ जान पड़ता है। यह रोग गर्भाशयमें विकार होनेसे बहुधा गर्भवती स्त्रियोंको होता है और बालक पैदा होनेपर जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिस्टीरिया सम्बन्धी नयी-नयी बातें।

इस रोगका पुराना नाम भूतोन्माद है। अङ्गरेज़ीमें इसे आम तौरसे हिस्टीरिया (Hysteria or Hysterics) कहते हैं। जबतक इस रोगके सच्चे कारणोंका पता न लगा था, तबतक लोग इसको देवता, पितर और भूत-पिशाच आदिकी पीड़ा मानते थे। इसीसे इसका नाम हिस्टीरिया या भूतोन्माद पड़ा। लेकिन चूँकि अब इसके कारणोंका पता लग गया है, इसलिये अब इसे भूतोन्माद न कहकर "गर्भाशयोन्माद" या "योषापस्मार" कहते हैं।

डाक्टर गनकी "फैमिली फ़ीज़ीशियन" नामक पुस्तकमें लिखा है:—Hysteria is an affection peculiar to females and is characterised by a sense of suffocation, stupor, rumbling noise in the bowels, followed by the sensation of a ball rising from the stomach to the throat, sometimes convulsions, laughing or crying without any apparent cause, interrupted sleep, sighing, and more or less flatulence. अर्थात् हिस्टीरिया-रोग ख़ासकर औरतोंको होता है। जब यह रोग होता है, गला घुटता जान पड़ता है, शरीरमें सख्त सुस्ती या मजहूली बेहोशी-सी होती है, आँतोंमें गड़गड़ाहटकी-सी आवाज़ होती है। इसके बाद ऐसा मालूम होता है, मानो एक गोला आमाशयसे उठकर गलेमें जा रहा है। कभी-कभी तशन्नुज या बाइँटे आते हैं। रोगिणी बिना किसी ज़ाहिरा वजहके हँसती और रोती है। एक प्रकारकी नींद, आहें भरना और कमोबेश अफ़ारा—ये लक्षण भी देखे जाते हैं।

हिस्टीरिया-रोगका हमला होनेसे पहले बदमिज़ाजी, चिन्ता-फिक्र, आँसुओंकी धारा, साँसकी तंगी या साँस लेनेमें कठिनाई और दिलकी धड़कन ये लक्षण देखे जाते हैं। पेटकी बाँई तरफ दर्द

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालूम होता है, जो पेटसे ऊपरकी ओर गलेमें चला जाता और गोलेके कारणसे पैदा हुआ मालूम होता है। इसके बाद रोगीका दम घुटता है, उसे ग़श आता है, होश-हवास जाते रहते हैं और कदाचित उसे बेहोशी या संज्ञाशून्यता हो जाती है। रोगी कमोबेश हाथ-पैरोंको हिलाता-चलाता है। कभी हँसता है, कभी रोता है और कभी चीख़ता-चिल्लाता है तथा वाहियात और बेसिर-पैरकी ऊलजलूल बातें बकता है। इसके बाद, थोड़ी देरके लिए, सौदाई-सा हो जाता है। अन्तमें तशन्नुज आना बन्द हो जाता है और डकारें आने लगती हैं। रोगिणी आहें भरती और सिसकती या ठुनुकती है। इसके बाद वह भली-चङ्गी हो जाती है और दौरेके वक़्तकी कोई बात कदाचित ही उसे याद रहती है। हाँ, उसे सिरमें थोड़े-बहुत दर्द और बदनमें वेदनाका अनुभव अवश्य होता है। हिस्टीरियाके दौरोंमें ख़तरेकी सम्भावना कभी ही होती है। जबतक यह रोग मृगी—अपस्मार, उन्माद या मानियाका रूप धारण नहीं करता मृत्युकी संभावना नहीं होती।

यह रोग नाज़ुक-बदनों या दुर्बल शरीरवालोंपर चिन्ता-फिक्र, शोक-ग़म प्रभृतिका असर पड़नेसे होता है। ख़ासकर जवान औरतें इसकी शिकार होती हैं। डाक्टर गन साहब लिखते हैं:—Females, from puberty to the age of thirty five, are most subject to it. अर्थात् विशेष करके उठती जवानीकी युवतियोंसे लेकर पैंतीस सालकी अवस्था तककी स्त्रियोंको यह रोग होता है। यद्यपि यह रोग नाज़ुक-मिज़ाजों, नाज़ुक-बदनों और कमज़ोर-तबियतवालोंको ज़ियादा होता है; तथापि उन्हें और भी ज़ियादा होता है, जिनका रजोधर्म या माहवारी ख़ून—हैज़ यकायक बन्द हो जाता है या अक्सर रुक जाया करता है।

पण्डित मयारामजी आर्य वैद्य 'वैद्य-कल्पतरु' में लिखते हैं:—आजकलकी खोजसे मालूम हुआ है कि, यह रोग मग़ज़ और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मज्जातन्तुओंकी विकृतिसे होता है। इसके लक्षण अपस्मार या मृगी-रोगसे मिलते-जुलते हैं। इस रोगवाला एक अजीब चमत्कारक ढँगसे ज़मीन या बिस्तरों पर गिर पड़ता है और कभी-कभी बैठ जाता है। उसकी छाती उछलने लगती है। उस समय वह एकदमसे बेहोश नहीं हो जाता। वह ठहर-ठहरकर रोता या लोटता है। ऐसा होते-होते वह निश्चेष्ट—स्तब्ध या बेसुध हो जाता है। फिर वह कुछ मिनटों या घण्टों तक उसी हालतमें रहा आता है। कोई-कोई १२, २४, ३६, ४८ या ७२ घण्टों तक उसी हालतमें देखे गये हैं। इस रोगके होनेसे पहले मज्जातन्तुओं या ज्ञानतन्तुओंमें ख़राबी देखी जाती है। प्रधानतया गलेमें गुल्म होनेका भ्रम होता है। इसके साथ-साथ किसी-किसीके पेटमें दर्द भी होता है। इसको "गर्भाशयोन्माद गुल्म" कहते हैं।

आर्त्तवकी प्रवृत्तिके समय इसका बल अधिक होता है। इस रोगसे शरीरके किसी भागमें असह्य वेदना होती है। वहाँ कोई घुस बैठा हो, ऐसा जान पड़ता है; किन्तु उस समय, उस दुःखको सुनाते समय, रोगीकी वाणी स्तम्भित हो जाती है, ज़बान बन्द हो जाती है। कच्चे मनवालेको तो ये सब भूतके ही काम मालूम होते हैं। उसके मनमें जिसका शक होता है, उसीका नाम ले-लेकर पुकारता है।

यह रोग किसी दूसरे रोगका रूप धारण नहीं करता, सो बात नहीं है। यह किसी भी रोगका रूप ले लेता है। इसमें प्रधानतया अन्नमार्गका संकोच, पेटका दर्द, सन्धिवात, खूनकी कमी, सन्धियोंके अन्य रोग, आधासीसी और मूत्राशयकी शक्तिका ह्रास इत्यादि लक्षण होते हैं।

इस रोगमें पेट फूलकर डकार आना एक दुःखद लक्षण है। कितनों ही को खाँसी आती है, कितनों ही की आवाज़ बैठ जाती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, किसीका साँस चढ़ता है, किसीको पेशाब बहुत होता है और वह निस्तेज दीखता है एवं कितनों ही का पेशाब रुक-सा जाता है। कितने ही रोगी प्यासके मारे बहुत-सा पानी पीकर और कितने ही बहुत-सा पेशाब करके होशमें आ जाते हैं।

इस रोगका मुख्य कारण मनकी कमज़ोरीके सिवाय दूसरा समझमें नहीं आता। मग़ज़के और शरीरके ज्ञानतन्तुओंके अव्यवस्थित रूपसे उत्तेजित होनेसे यह रोग पैदा होता है। जिनका मनोधर्म, अपूर्ण शिक्षाके कारण, यथार्थ रूपसे नहीं बनता अथवा जिनमें धैर्यादि सद्गुण नहीं होते उन्हींको यह रोग होता है।

गर्भाशयोन्माद और अपस्मारमें भेद।

इन दोनों रोगोंमें बहुत कुछ समानता है। गर्भाशयोन्माद या हिस्टीरियामें सर्वथा बुद्धिका ह्रास नहीं होता, पर अपस्मार या मृगीमें एकदमसे बुद्धिका ह्रास हो जाता है। अपस्मार-रोगी मृगीका दौरा होनेसे पहले चिल्लाता है, पर हिस्टीरियावाला ऐसा नहीं करता। हिस्टीरियाकी बेहोशीमें गाढ़ी नींद नहीं आती और जीभ नहीं दबती, पर मृगीमें ये दोनों बातें होती हैं। हिस्टीरियावालेको पेटसे ऊपरकी ओर गोला-सा चढ़ता मालूम होता है, पर अपस्मारवालेको यह नहीं मालूम होता।

हिस्टीरियावालेका मन अगर कच्चा होता है, तो वह ऐसे-ऐसे तूफ़ान करता है कि, उसकी बात ही न पूछिये। उसको भूत-पत्नीतके आवेशका बड़ा शक रहता है। इसीसे वह देवी-देवताओं और भूत-प्रेतोंकी मिन्नत मानता है और उनकी मानतासे आराम होनेकी उम्मीद रखता है। कभी-कभी ऐसे विचारवाले आराम भी हो जाते हैं, क्योंकि मनका प्रभाव शरीरपर अवश्य ही होता है। एक स्त्रीको हिस्टीरियामें खूनकी क़य होती थी। उसने देशी-विदेशी बहुत इलाज किये,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर किसीसे लाभ न हुआ। अन्तमें उसने देवताकी मानता मानी और वह आराम हो गई।

अपस्मारके अरिष्ट चिह्न।

जिस मृगी-रोगीके अङ्ग अधिक फड़कते हों या बारम्बार कँप-कँपी आती हों, शरीर क्षीण हो गया हो, नेत्र विकृत हो गये हों, दोनों भौंहें चलायमान होती हों, या फड़कती हों, वह रोगी किसी तरह भी मौतके पंजेसे बच नहीं सकता।

सन्निपातकी मृगी, क्षीण पुरुषकी मृगी और पुरानी मृगी असाध्य होती हैं।

अपस्मारके प्रकोपका समय।

वातज मृगीका दौरा १२ दिनमें होता है और इस बीचमें भी ज़रा ज़ोर दिखाता है।

पित्तज मृगीका दौरा १५ दिनोंमें होता है और पखवारेके बीचमें भी ज़रा ज़ोर करता है।

कफज मृगीका दौरा १ महीनेमें होता है और महीनेके बीचमें भी ज़रा ज़ोर होता है।

मृगीका दौरा कभी-कभी महीने-भरसे ज़ियादा दिनोंमें भी होता है। इस रोगका दौरा नित्य नहीं होता।

नोट—किसी तरहकी मृगीका बारह दिनोंमें, किसीका पन्द्रह दिनोंमें और किसीका ३० दिनोंमें दौरा होता है—ऐसा क्यों होता है? अपस्मारके कारणरूप दोष सदा मौजूद रहते हैं, फिर अपस्मार सदा क्यों नहीं होता?

जिस तरह उत्पत्तिके कारणरूप वर्षाके पूरी तरहसे होनेपर भी, बथुए वग़ैरःके बीज, स्वभावके कारण, शरद्-ऋतुमें ही पैदा होते हैं; उसी तरह कारणरूप दोषोंके होनेपर भी, अपस्मार स्वभावसे ही १२, १५ और ३० दिनोंमें कोप करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिकमतके मतसे मृगीका वर्णन ।

मृगी-रोगमें ज्ञान और चलने-फिरनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, प्रकृति बदल जाती है और रोगी गिर पड़ता है, इस-लिये इस रोगको अरबी ज़बानमें "सरा", संस्कृतमें "अपस्मार" और बोलचालकी भाषामें "मृगी" कहते हैं।

इस रोगका पूरा कारण मवादकी गाँठ है, जो दिमाग़के पर्दों और पट्ठोंके छेदोंमें पैदा होती है और जिसके कारणसे दिमाग़ी रूह अपने मार्गमें होकर पट्ठोंमें जा नहीं सकती। इस कारणसे पट्ठे खिंच जाते हैं।

अगर मृगीका कारण मवादकी गाँठ न होती, तो ज्ञानादि शक्तियों-की क्रियाओंमें उपद्रव न होता और पट्ठोंमें ऐंठन भी न होती। अगर मवादकी गाँठ पूरी होती है, तो ज्ञानादि शक्तियाँ सर्वथा जाती रहती हैं, जैसा कि सकतेमें देखा जाता है।

यद्यपि मृगी-रोग दिमाग़के अगले हिस्सेसे सम्बन्ध रखता है, परन्तु नज़दीक होनेसे दूसरे भागोंमें भी कष्ट पहुँचाता है। अगर दूसरे भागोंमें कष्ट न पहुँचाता, तो ज्ञानशक्ति और स्मरणशक्ति नष्ट न होतीं।

मृगी-रोगकी ज़ियादती और कमी—इस रोगके हेतु या कारणकी ज़ियादती और कमीके अनुसार होती है, इसीलिये 'ज़ख़ीरे ख़ाज़म-शाही' नामक ग्रन्थका लेखक लिखता है कि, बहुधा ऐसा भी होता है कि, किसी-किसीको मृगी पैदा होकर जाती भी रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृगी-रोगमें ऐंठन होती है। ऐंठनीके तीन कारण हैं:—

(१) रगोंका भर जाना, (२) पट्ठोंमें खुश्की होना, और (३) पट्ठों और भेजेका खिंचना-सिमटना। परन्तु मृगीकी ऐंठन खुश्कीसे नहीं होती। उसकी ऐंठन रगोंके भर जाने या दिमाग़के सिमटनेसे होती है। दिमाग़के सिमटनेके कारण हैं:—दिमाग़की ज्ञान-शक्तिकी तेज़ी, भाफके परमाणुओंका ऊपर चढ़ना और विषैली दशा या नफ़रत करके भागना।

जब दिमाग़में बहुत-सा मल जगह पकड़ लेता है और किसी वजहसे उस मलमेंसे थोड़ा-सा हिलता या फैलता है अथवा उस मलकी भाफके परमाणु फैलते हैं और छेदोंमें भर जाते हैं, तब सम्पूर्ण या पूरी गाँठके पैदा होनेसे भी मृगी-रोग हो जाता है।

जब कभी मल दिमाग़के सिवा किसी दूसरे अंगमें ठहर जाता है और उसकी भाफके परमाणु दिमाग़में चढ़ते हैं, तब निकम्मी दशासे या दिमाग़के सिमटने अथवा भाफके परमाणुओंकी अधिकतासे राहें भर जाती हैं, तब भी गाँठ पैदा हो जाती है और उस गाँठके कारण मृगी आने लगती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि मज़ बिल्कुल न हो, पर कोई ज़हरीला जानवर—बिच्छू या बर्र वग़ैरः—किसी अंगमें इस तरह डंक मारे कि, उसका ज़हर उस अङ्गके पट्ठेमें फैलकर, दूसरे अङ्गोंके संयोगसे, दिमाग़में जा पहुँचे। दिमाग़को उस ज़हरका वहाँ पहुँचना बुरा मालूम हो और वह अपने तईं उससे बचानेके लिये सुकड़ जाय। दिमाग़के इस तरह सुकड़नेसे भी मृगी और ऐंठन पैदा हो जाती है।

यहाँ तक जो लिखा है, उसमें मृगी पैदा होनेके तीन तरीक़े बताये हैं:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) दिमाग़के पर्दों और पट्ठोंके छेदोंमें मवादकी गाँठ पड़ना और उसके कारणसे पट्ठोंका खिंचना और मृगी होना। यह बिल्कुल दिमाग़ी मृगी है। इसके कारण दिमाग़में ही पैदा होते हैं।

(२) दिमाग़को छोड़कर, शरीरके दूसरे अङ्गों—आमाशय, तिल्ली, गर्भाशय, आँतें और हाथ-पैर वग़ैरःमें मवादका ठहरना, वहाँसे उस मलकी भाफका उड़-उड़कर दिमाग़में जाना, दिमाग़का उस भाफसे बचनेके लिए सिमटना और मृगी पैदा होना।

(३) मवाद न होनेपर भी, किसी विषैले ज़ानवरका किसी अङ्गमें डंक मारना। ज़हरका उस अङ्गके पट्ठेमें फैलकर, और अङ्गोंके संयोगसे, दिमाग़में जा पहुँचना। दिमाग़का उस ज़हरसे बचनेके लिये सुकड़ना-सिमटना। दिमाग़के सुकड़नेसे मृगी-रोग पैदा होना।

अब साफ़ मालूम हो गया कि, मृगी-रोग असलमें तीन तरहका होता है:—

(१) दिमाग़से होनेवाला।

(२) शरीरके आमाशय वग़ैरः अङ्गोंसे होनेवाला।

(३) विषैले जानवरोंके काटनेसे होनेवाला।

नोट—असलमें तीनों तरहके मृगी-रोग दिमाग़ या मस्तिष्कके पट्ठोंके खिंचने या सुकड़ने-सिमटनेसे होते हैं; पर मृगी-रोगके हेतुओंके पैदा होनेके स्थानोंके अनुसार उसकी तीन क़िस्में मान ली गई हैं। पहले प्रकारकी मृगीका मवाद दिमाग़में ही होता है। दूसरे प्रकारकीका मवाद आमाशयादि अङ्गोंमें पैदा होता है, पर भाफके रूपमें दिमाग़में जा पहुँचता है और तीसरे प्रकारकीका मवाद सर्प-बिच्छू वग़ैरःके काटे हुए स्थानसे दिमाग़में जा पहुँचता है। मतलब यह है कि, मृगीका कारणरूप मल कहीं भी क्यों न पैदा हो, पर उसके दिमाग़में जाये बिना मृगी-रोग नहीं होता। इससे यह मालूम हुआ कि, मृगी-रोग तो दिमाग़से ही पैदा होता है। उसके कारण या हेतु कहीं क्यों न पैदा हों।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृगीकी पहली क़िस्म

दिमाग़ी मृगीके लक्षणादि।

दिमाग़से होनेवाली मृगी चार तरहकी होती है:—

(१) कफकी। (२) बादीकी।

(३) खूनकी। (४) पित्तकी।

कफकी मृगीके लक्षण।

बुद्धिका बिगड़ जाना, इन्द्रियोंका सुस्त हो जाना, सिरमें बोझा-सा मालूम होना, मृगीके समय मुँहमें झागोंका बहुतायतसे आना, थूक और रहँटका ज़ियादा निकलना, शरीरका ढीला रहना, प्रकृतिका शीतल हो जाना और कठिनतासे हिलना-चलना—ये कफकी मृगीके लक्षण हैं।

बादीकी मृगीके लक्षण।

अगर वायुके प्रकोपसे मृगी-रोग होता है, तो ख़फ़क़ानपन होता है, दिल फड़कता है, मुँहके झागोंका स्वाद खट्टा होता है और झाग यदि ज़मीनपर गिर जाते हैं, तो उनकी तेज़ी और खटाईसे ज़मीन उबलने लगती है।

मृगी आनेसे पहले झूठे विचार, चिन्ता, सन्देह और शोच-फ़िक्रकी ज़ियादती होती है। अगर यह रोग दिमाग़से और अंगोंमें भी फैल जाता है, तो भूख बहुत लगती है।

बादीकी मृगी कफकी मृगीसे बुरी होती है, क्योंकि कफ दिमाग़के अनुकूल होता है और जो चीज़ अनुकूल होती है, वह कम नुक़सान पहुँचाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खूनकी मृगीके लक्षण।

अकेले खूनसे मृगी-रोग बहुत कम होता है, परन्तु वातरक्त (बादी और खून) और कफरक्त (कफ और खून) से—बादी और कफकी मृगीके समान—मृगी-रोग अक्सर होता है।

अगर दिमाग़में खून ज़ियादा होता है, तो वहाँकी रगें खूनसे भरी रहती हैं, चेहरा लाल सुर्ख़ हो जाता है, मृगीके समय चेहरा भरभरा उठता है और कभी-कभी मृगी आनेके समय नाकसे खून भी गिरने लगता है।

इस प्रकारका मृगी-रोग होनेसे पहले, रोगी तरह-तरहके मस्तक-शूल या सिर-दर्दोंमें फँसा रहता है। सदा सिर घूमा करता है। भौंर या चक्कर आया करते हैं। नेत्रोंके सामने अँधेरी-सी आती रहती है।

अगर खूनकी मृगी जाती भी रहती है, तो भी सिरमें दर्द हमेशा हुआ करता है और बुद्धि बिगड़ जाती है। यह बात वातरक्त और वातकफके मलके अनुसार होती है।

पित्तकी मृगीके लक्षण।

पित्तकी वजहसे भी मृगी-रोग बहुत कम होता है, क्योंकि पित्तका मल बहुत हल्का और पतला होता है, अतः इससे मृगी-रोग कम होता और नहीं भी होता है।

बहकना, आनतान बकना, बेचैनी, घबराहट, मृगीके समय ज़ियादा गरमी, वमन होना, मुख और आँखों का पीला होना और मृगीका जल्दी ही जाता रहना,—पित्तकी मृगीके लक्षण हैं।

सूचना—हकीम रूफस साहब कहते हैं, जिस समय दिमाग़ी मृगीवालेके सिर और माथेपर सफ़ेद-सफ़ेद दाग़-से पड़ जायँ, तब समझो कि मृगी-रोगका माद्दा नष्ट हो गया।

नोट—वैद्यकमें भी चार तरहकी मृगी लिखी हैं। उसमें खूनकी मृगीका ज़िक्र नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(मृगीकी दूसरी क़िस्म)

कंठके नीचेके अंगोंसे होनेवाली मृगी।

सात भेद।

दिमाग़से पैदा होनेवाली मृगी चार तरहकी होती है, उसका वर्णन हम ऊपर कर आये हैं। अब हम कंठसे नीचेके अङ्ग—आमाशय, तिल्ली, जिगर, गर्भाशय और आँतों वग़ैरःसे पैदा होनेवाली मृगीके लक्षण लिखते हैं। यह मृगी सात तरहकी होती है:—

(१) आमाशयसे होनेवाली।
(२) तिल्लीसे होनेवाली।
(३) पेटके ऊपरकी झिल्लीकी जलनसे होनेवाली।
(४) जिगर, यकृत या लिवरके संयोगसे होनेवाली।
(५) वीर्याशय या गर्भाशयके दोषोंसे होनेवाली।
(६) आँतोंमें कीड़े वग़ैरः पड़नेसे होनेवाली।
(७) हाथ-पैरोंमें दोष जमा होनेसे होनेवाली।

आमाशयकी मृगीके लक्षण।

जब आमाशय दूषित कफ, वात या पित्तसे भर जाता है, तब भाफके परमाणु वहाँसे उठ-उठकर दिमाग़की तरफ जाते हैं। उनसे दिमाग़को तकलीफ़ होती है और वह उनसे बचनेके लिए सुकड़ जाता है, तब रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं और दोषोंकी गाँठ पड़नेसे मृगी पैदा हो जाती है। आमाशयसे पैदा होनेवाली मृगीमें नीचे लिखे छः लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) उन्मत्तकी तरह आमाशय हिलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) आमाशयमें, विशेषकर भूखके समय, जलन, चुभन और कँप-कँपी होती है।

(३) मृगीके दौरेके समय रगें खिंचती हैं, नाकके नथने फूल जाते हैं, गला घुटा-सा हो जाता है, कभी-कभी रोगी चिल्ला उठता है और कभी-कभी दस्त, पेशाब या वीर्य निकल जाते हैं।

(४) वमन या क़य होनेके बाद मृगीका ज़ोर घट जाता है।

(५) अजीर्ण होनेसे या मलके भरे रहनेसे मृगी अधिक ज़ोर दिखाती है या अपने समयसे पहले ही आ जाती है और देर तक ठहरती है। ये लक्षण आमाशयके दोषोंकी दुष्टतासे होते हैं; किन्तु दोषोंके बढ़नेसे प्रगट होते हैं। यह रोग जब दोषोंकी ख़राबीसे होता है, तब प्रायः सोते समय होता है।

(६) आमाशयवाली मृगी ख़ाली पेट होने या भूखके समय ज़ियादा होती है, क्योंकि जब आमाशय ख़ाली रहता है, दोष आमाशयसे उठकर दिमाग़में आसानीसे चले जाते हैं। उनको बीचमें रोकनेवाला कोई नहीं होता। इसीसे आमाशयके भरे होनेपर भी, बारम्बार खानेसे बहुत कम हानि होती है; क्योंकि आमाशयके भरे रहनेसे बुरा माद्दा दिमाग़ तक मुश्किलसे पहुँचता है।

आमाशयकी मृगी बहुधा उचित भोजनसे जाती रहती है, दवा खानेकी दरकार नहीं होती।

दूसरी—तिल्लीकी मृगीके लक्षण।

जिस तरह आमाशयके कारणसे मृगी-रोग होता है; उसी तरह "तिल्ली"से भी होता है। ऐसी मृगीमें तिल्लीका फूलना, उसका पत्थरकी तरह कड़ा होना और दर्द होना—ये लक्षण होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीसरी—झिल्लीकी मृगीके लक्षण।

पेटके ऊपरकी झिल्लीमें जलन होनेसे भी मृगी-रोग होता है। ऐसी मृगी होनेसे खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, पेट फूलता है, पेटके ऊपरकी झिल्लीमें जलन होती है, बेचैनी रहती है, क़य होती हैं और उनमें कच्चा अन्न निकलता है।

चौथी—जिगरसे होनेवाली मृगीके लक्षण।

यह मृगी जिगरसे होती है। इसके लक्षण वही हैं, जो जिगरके रोगोंके हैं।

पाँचवीं—गर्भाशय या वीर्याशयकी मृगीके लक्षण।

यह मृगी-रोग गर्भाशय या वीर्याशयके दोषोंसे होता है। जब रजोधर्म बन्द हो जाता है या कम होता है तथा मैथुन न करनेसे वीर्य रुका रहता है, तब रज और वीर्यकी तलछट जमा होकर बिगड़ जाती है। उस तलछटके परमाणु दिमाग़में चढ़कर मृगी पैदा करते हैं।

ऐसी मृगी होनेसे रजोधर्म बन्द रहता है, पेड़ू, चड्डे, गुर्दे और पेटमें दर्द होता है एवं बोझा-सा मालूम होता है।

नोट—ऐसी मृगीमें रजोधर्म जारी करनेवाली दवाएँ देना या मैथुन करना हित है।

छठी—आँतोंकी मृगीके लक्षण।

आँतोंमें कीड़े पड़नेसे, दूषित भाफके परमाणु वहाँसे उठकर दिमाग़में जाते हैं। उनसे रगोंमें गाँठ पैदा होकर मृगी-रोग हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सातवीं—हाथ-पाँवोंकी मृगीके लक्षण।

यह मृगी हाथ या पैरोंमें दोषोंके जमा हो जानेसे होती है। जब बादीके कण वहाँसे उठकर दिमाग़की तरफ जाते हैं और दिमाग़को सुकेड़ते या खींचते हैं, तब मृगी-रोग हो जाता है।

जब हाथ-पाँव आदि अङ्गोंमें साफ और चेपदार मल चिपट जाता है और रूह हैवानी आ-जा नहीं सकती, तब उस दोष और उस जगहके खूनमें सर्दी आ जाती है। उस सर्दीसे ठण्डी वायु पैदा हो जाती है। कभी-कभी मलकी सर्दी यहाँ तक बढ़ जाती है कि, छूनेसे वह जगह मुर्देकी देह-जैसी शीतल मालूम होती है। फिर वही सर्दी वहाँसे निकलकर, पट्ठोंके द्वारा, दिमाग़में पहुँचती है और दिमाग़के पट्ठोंकी रुतूबतको गाढ़ी कर देती है, इससे दिमाग़ी रूहकी राहें तंग हो जाती हैं। फिर रगोंमें गाँठ पैदा होकर मृगी हो जाती है।

बीमारको ऐसा मालूम होता है, मानो शीतल हवा उस जगहसे निकलकर और दूसरे अङ्गोंमें होकर दिमाग़की तरफ जाती है। मृगी आनेके समय आँखें खुली रहती हैं, आँसू भर-भर आते हैं, मुँहका रंग काला पड़ जाता है और हाथ-पैरोंकी उँगलियाँ इठने लगती हैं। दूसरे अङ्गोंमें भी खिंचाव होता है। मृगी आनेसे पहले जँभाई और अँगड़ाई बहुत आती हैं और पेशाब जल्दी-जल्दी होता है।

हकीम जालीनूस कहते हैं कि, एक लड़केको यह रोग उसकी पिंडलीके दर्दसे होता था। उसे मालूम होता था, कि ठण्डे तीर-से दिमाग़की ओर चढ़ते हैं। और एक रोगीको उसके पाँवके अँगूठेसे शीतल चीज़ ऊपरकी ओर चढ़ती हुई मालूम होती थी।

हकीम रूफस कहते हैं कि, एक मर्दको यह रोग हाथकी पीठसे उठता था। वह कहता था कि, मेरा हाथ ऐसा शीतल हो जाता था, मानो बर्फ़से दबा हुआ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(मृगीकी तीसरी क़िस्म)

विषैले जानवर वग़ैरःसे होनेवाली।

विषैले जानवरोंके काटनेसे होनेवाली मृगीके लक्षण।

विषैले जानवरोंके काटनेसे जो मृगी-रोग होता है, वह जानवरोंके काटनेके बाद होता है, यही उसकी पहचान है।

नोट—इस हालतमें विषनाशक अगद या तिर्य्याक देने चाहिये।

इबीलमिश्रो मृगी।

इस मृगीमें हाथ-पैरोंकी ऐंठनके सिवा और चेष्टा नहीं होती। यह मृगी सबसे बुरी और प्राणनाशक है। इसमें मृगी आनेसे पहले ही शरीर ऐंठने लगता है, परन्तु और मृगियोंमें मृगी आनेके बाद ऐंठन आरम्भ होती है। यह मृगी कफ या वातसे होती है। अतः इसमें कफ-वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये और ऐंठनका उपाय ऐंठन-रोगमें लिखी विधिसे करना चाहिये।

बालकोंकी मृगीके लक्षण।

इसे बहुत लोग "मसानका रोग" कहते हैं। यह मृगी गरमीके ज्वरके साथ पैदा होती है। इसके ज्वरमें खुश्की बहुत होती है, रोम-कूप बन्द हो जाते हैं, पसीना क़तई नहीं आता और पेशाब सफेद होता है।

छोटे बालकोंको मृगीके अधिकतासे होनेका यह कारण है कि, उनके दिमाग़के भीतर जन्मसे ही रुतूबतें हुआ करती हैं। वे कभी गर्भमें ही निकल जाती हैं और कभी सिरमें घाव और सूजन होकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उस राहसे निकल जाती हैं। अगर वे रुतूबतें गर्भाशयमें नहीं निकल जातीं और जन्म लेनेके बाद भी नहीं निकलतीं, तो मृगी-रोग अवश्य होता है। इस तरहकी मृगी बहुधा बड़े होनेपर, बिना किसी तरहके इलाजके, चली जाती है, बशर्ते कि कोई उपद्रव न हो।

दूध पीनेवाले बच्चेकी मृगीका भी इलाज करना चाहिये। अगर उचित समझा जाय, तो मुनासिब दवाओंसे उस रुतूबत या मलको वैद्य निकाल दे। बड़े होने तक बालकका इलाज न करना और उसे बीमार रखना भूल है। हाँ, कुछ देर करना उचित है। अगर यह रुतूबत गर्भमें या जन्म लेने बाद सिरमें घाव या सूजन होनेसे निकल न जाय या थोड़ी-सी बाक़ी रह जाय, तो मृगी पैदा करती है। ऐसी मृगी, थोड़े समयमें, मलकी कमी-ज़ियादतीके अनुसार, खुद नाश हो जाती है।

"असबाब" और "अलामत" नामक ग्रन्थोंके लेखक कहते हैं, "उम्मुस्सिविया" नामक बालकोंकी मृगी ज्वर और प्रकृतिकी गरमीके बिना नहीं होती और शीतल दवाओंसे जाती रहती है। ऐसी मृगीको पित्तज कहकर, शीतल इलाज करना लिखा है; पर यह बात ठीक नहीं है। यह समझना कि, पित्तज मृगीके सिवा और दोषोंकी मृगी बच्चोंको नहीं होती—बड़ी ग़लती है। जो लोग बालकोंकी मृगीको हर हालतमें पित्तज समझकर शीतल दवा देते हैं, वे बालकोंको मार डालते हैं। बुद्धिसे निदान करके, दोषानुसार इलाज करना ही अक़्लमन्दी है। अगर पित्तके लक्षण मिलें तो शीतल दवा देनी चाहिये। इस हालतमें शीतल चीज़ नाकमें डालना और बालकके सिरपर उसकी माँका दूध लगाना अच्छा है। अगर कफके लक्षण हों, तो कफनाशक दवा देनी चाहिये। साथ ही दूध पिलानेवाली धायके दूधका भी इलाज करना चाहिये और उसे मैथुनसे रोकना चाहिये। बालकको भी बादलकी गरज और बन्दूक़ या तोपकी आवाज़ सुननेसे बचाना ज़रूरी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपस्मार-चिकित्सामें—

याद रखने योग्य बातें।

(१) "चरक" में लिखा है,—हृदय, मनवाही स्रोत और मन—ये सब अपस्मार करनेवाले दोषोंसे ढक जाते हैं, अतः उनके जगानेके लिए पहले तीक्ष्ण वमनादि शोधन कर्मोंसे चिकित्सा करनी चाहिये। वातज अपस्मारमें "वस्ती" प्रधान है। पित्तजमें "विरेचन" प्रधान है और कफजमें "वमन" प्रधान है। जब रोगी सब तरहसे शुद्ध हो जाय, तब उसे धीरज देकर, शमन औषधियाँ देनी चाहिये। अपस्मार-रोग-नाशार्थ कल्याण चूर्ण, ब्राह्मी घृत, पंचगव्य घृत, महापंचगव्य घृत, महाचैतस घृत, वातकुलान्तक रस या चण्डभैरव रस आदि उत्तमोत्तम योगोंसे काम लेना चाहिये।

(२) अपस्मार-रोगोंमें अञ्जन, नस्य और धूनी देनेसे बहुत उपकार होता है, अतः इन्हें अवश्य प्रयोग करना चाहिये।

(३) हिकमतके मतसे मृगी-रोगमें नीचे लिखे हुए आहार-विहार या काम हानिकारक हैं, अतः उनसे मृगी-रोगियोंको बचाना चाहियेः—

(१) जल्दी-जल्दी चलनेवाली चीजें देखना।
(२) चमकनेवाली चीजें देखना।
(३) चक्कर खानेवाली चीजें देखना।
(४) पहाड़, वृक्ष या ऊँची बुर्जपर चढ़ना।
(५) नहानेके स्थानमें ठहरना।
(६) हवादार मकानमें ठहरना।
(७) गन्धक और जले हुए बालोंकी गन्ध लेना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) बहुत ज़ियादा मैथुन करना।

(९) बहुत ज़ियादा लिखना-पढ़ना।

(१०) पैदल दौड़ना या घोड़ा दौड़ाना।

(११) अत्यन्त मीठे या चिकने पदार्थ खाना।

(१२) पुरानी और नई शराब पीना।

(१३) पैदल चलना।

(१४) बिजलीकी आवाज़ सुनना।

(१५) गरिष्ठ और भारी भोजन करना।

(१६) बुरे जानवरोंका मांस खाना।

(१७) शलग़म, गन्दना, मूली, प्याज़, लहसन, बाकला, मसूर और पोदीनेके सिवा और साग-दाल खाना; क्योंकि ये मलको हिलाते हैं।

(१८) समस्त तर मेवे, सब जानवरोंका दूध और दूधसे बने पदार्थ खाना।

(१९) पीपर और राई खाना, क्योंकि ये भाफके परमाणुओंको उठातीं और दोषोंको दिमाग़में फुला देती हैं।

(२०) जाड़ेमें ज़ियादा सर्दी और गरमीमें ज़ियादा गरमी खाना।

(२१) दिनमें बहुत सोना।

(२२) पेट भरेपर सोना और बहुत जागना।

(२३) बिरौंजेकी धूनी लेना, क्योंकि इससे मृगी आ जाती है।

(३४) बकरीका मांस अधिक खाना।

(२५) बकरीकी खाल ओढ़कर पानीमें जाना।

(२६) अकस्मात क्रोध और शोक पैदा होना।

नोट—दालचीनी, अनीसूँ और सफेद ज़ीरा लाभदायक हैं, क्योंकि ये दोषोंको दिमाग़से उतारते हैं। किसी-किसीने धनियाँ और काहू सेवन करनेकी आज्ञा दी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, पर हकीम शेख़ बूअली धनियाँ और काहूका सेवन करना बुरा कहते हैं। "तिब्बे अकबरी"में एक जगह सेब, शलग़म और मूली मृगीवालेको हानिकारक लिखी हैं। चन्द्रमाकी चाँदनी और बहते पानीका देखना भी बुरा लिखा है। कदाचित ये कफज मृगीमें अहित हों।

आयुर्वेदके मतसे मृगीवालेको नीचे लिखी हुई चीज़ें अपथ्य या हानिकर हैं:—

(१) चिन्ता-फिक्र करना।
(२) शोक या रंज करना।
(३) डरना और क्रोध करना।
(४) अपवित्र भोजन करना।
(५) शराब पीना।
(६) मछली खाना।
(७) विरुद्ध भोजन करना। जैसे; दूध और मछली एक साथ खाना।
(८) तीखे, गरम और भारी भोजन करना।
(९) बहुत मैथुन करना।
(१०) बहुत ज़ियादा मिहनत करना।
(११) पूजनीय गुरु-देवताओंको न पूजना।
(१२) भूत-प्रेतादिकी पूजा करना।
(१३) सब तरहके पत्तोंके साग खाना।
(१४) कुंदरू या आषाढ़ी फल खाना।
(१५) प्यास, भूख और नींदको रोकना।

(४) अपस्मार-रोगमें नीचे लिखे हुए आहार-विहार पथ्य या हितकारी हैं:—

(१) वातज मृगीमें वस्ति मर्क-करना।
(२) पित्तज मृगीमें जुलाब देना।
(३) कफज मृगीमें क़य कराना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) धूनी देना और अंजन लगाना।

(५) नाकमें नस्य देना।

(६) फ़स्द खोलना।

(७) बाँधना, ताड़ना, डराना और खुश करना।

(८) धूमपान कराना।

(९) विस्मयकारक बात कहना।

(१०) बुद्धिको स्थिर रखना।

(११) धीरज रखना।

(१२) आत्माका ज्ञान।

(१३) स्नान करना और उबटन लगाना।

(१४) लाल चावल, मूँग, गेहूँ, पुराना घी, कछुएका मांस, जंगली जीवोंका मांस, दूध, ब्राह्मीके पत्ते, परवल, पुराना पेठा, बथुआ, मीठा अनार, सहँजना, नारियलका पानी, दाख, आमले, फालसे, तेल, घोड़े और गधेका पेशाब, आकाशका जल और हरड़ ये पथ्य हैं।

नोट—उधर हमने हिकमत और वैद्यक-मतसे पथ्य-अपथ्य आहार-विहार लिखे हैं, पर आज-कलके योग्य पथ्य पदार्थ हम आगे जहाँ सब रोगोंके पथ्या-पथ्य लिखेंगे वहाँ लिखेंगे।

(५) मृगीवाला बहुधा अपनी जीभ चबाया करता है, अतः उसकी जीभके कट जानेका भय रहता है; इसलिए नरम कपड़ेमें रूई भरकर गैंद-सी बना लेनी चाहिये और मृगी आनेके समय उसके मुँह-में रख देनी चाहिये; जिससे जीभ न कटे और मुँह भी खुला रहे। आजकल रबड़ या लकड़ीका टुकड़ा भी दाँतोंके तले दबा देते हैं।

(६) मृगीके दौरेके समय रोगीको नस्य देकर, अंजन लगाकर या धूनी देकर होशमें लाना चाहिये। जब होशमें आ जाय, तब असल रोग-नाशक दवा देनी चाहिये। इस रोगमें दौरेके समय और दवाएँ दी जाती हैं और मृगी चले जानेपर और दी जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) मृगीवालेकी नाकमें अकरकरा महीन पीसकर फूँकना चाहिये, और उसके फूँकनेसे छींक आ जायें तो आराम होनेकी आशा समझनी चाहिये। यह उत्तम परीक्षा है।

(८) मृगी-रोगका इलाज हाथमें लेनेसे पहले साध्य-असाध्य रोगका विचार अवश्य कर लेना चाहिये। जैसेः—

(१) जिस मृगी-रोगीके दिमाग़की प्रकृति तर होती है और जिसकी उम्र २५ सालसे ऊपर होती है, उसकी मृगी कठिनतासे जाती है। यह हकीमी मत है।

(२) अगर मृगीका मल बहुत होता है और कारण बलवान होते हैं, तो मृगी बहुत देर तक रहती है। कभी-कभी मृगी बहुत जल्दी चली जाती है और घड़ी-आध-घड़ीका भी अवकाश नहीं मिलता, ऐसी मृगी असाध्य समझी जाती है। यह भी हकीमी मत है।

(३) अगर मृगीवालेका शरीर क्षीण हो गया हो अथवा मृगी-रोग पुराना हो, तो आराम होनेकी आशा नहीं है।

(६) बहुत करके खूनकी मृगीमें फ़स्द खोलते हैं। बसन्त-ऋतुमें मृगीवालेकी फ़स्द खोलना अच्छा है। रोगीकी शक्ति देखकर खून निकालना चाहिये। फ़स्द खोलनेके बाद, सात दिन तक रोगीको आराम देना चाहिये। फ़स्द खोलनेका काम वही करे, जिसे इस कामका अनुभव हो।

(१०) त्रिपाठी विक्रमने निश्चय किया है कि, अपस्मार दुश्चिकित्स्य, बहुत दिनों तक रहनेवाला और महारोग है, इसलिये इस रोगमें विशेषकरके "रसायन"का सेवन करना चाहिये।

(११) "तिब्बे अकबरी"में लिखा है, अगर दिमाग़ी मृगी-रोगीके सिर और मस्तकपर सफेद-सफेद दाग़ हो जायें, तो समझ लो कि मृगीका कारणरूप द्रव्य या मृगी पैदा करनेवाला दोष नष्ट हो गया। वैद्यको ऐसी-ऐसी बातें अवश्य याद रखनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपस्मार-नाशक नुसख़े ।

नास और धूनी देनेकी दवाएँ ।

(१) सहँजना, कूट, सुगन्धवाला, ज़ीरा, लहसन, त्रिकुटा और हींग—इनको बराबर-बराबर पाँच-पाँच माशे लेकर, पानीके साथ, सिलपर महीन पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना बकरेका पेशाब लेकर एक बर्तनमें डालकर पका लो। जब मूत्र जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर कपड़ेमें छान लो। इस तेलकी नास लेनेसे अपस्मार या मृगी चली जाती है।

(२) सोंठ, कालीमिर्च और पीपरोंको बराबर-बराबर लेकर, सेंहुड़के दूधमें, २० दिनतक भिगो रखो। फिर निकालकर, पानीके साथ सिलपर पीस लो। इसकी नस्य लेनेसे मृगी चली जाती है। परीक्षित है।

(३) निर्गुण्डीके बन्देके रसकी नास लेनेसे महा बलवान मृगी भी चली जाती है।

(४) आककी जड़की छाल बकरीके दूधमें पीसकर एक कपड़ेमें रख लो और मृगी आनेपर ३।४ बूँद उसकी नाकमें टपका दो। इससे मृगी नाश हो जायगी। परीक्षित है।

(५) कड़वी तोरई पानीमें पीसकर, एक महीन कपड़ेमें रख लो और बेहोश मृगीवालेकी नाकमें दो-चार बूँद टपका दो। इसके टपकाते ही मृगीवाला होशमें आ जायगा। इस कामके लिए यह दवा जादू है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) अरीठेको पीस-छानकर रख लो। इसकी नास नित्य लेनेसे मृगी-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७) आगबोट नामका कीड़ा जो उटकता रहता है, उड़ नहीं सकता और अक्सर आकके पेड़पर बैठा करता है, पकड़ लाओ और सुखाकर पीस-छान लो। उसमें थोड़ी-सी काली मिर्च पीसकर मिला दो और चने-बराबर नाकमें चढ़ाओ। इससे मृगी नाश हो जाती है।

नोट—"ख़ैरुल तिजारब"में मिर्चके बजाय "घी" लिखा है। घी मिलाकर नाममें चढ़ानेसे अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(८) छः माशे नौसादर और १॥ माशे एलुआ लेकर महीन पीस लो और माशे-भर तिलके तेलमें मिलाकर घोट लो। इसकी ३।४ बूँद नाकमें टपकानेसे मृगी आराम हो जाती है।

(९) कटेरीकी जड़ ३ माशे और भाँगके बीज ३ माशे लेकर बालकके मूत्रमें पीस लो। इसकी कई बूँदें नाकमें टपकानेसे मृगी जाती रहती है।

(१०) मृगीके दौरेके समय "राई" पीसकर सूँघनेसे मृगीवालेको होश हो जाता है।

(११) कुन्दशको पीसकर थैलीमें बाँध लो और सूँघो। इससे भी मृगी चली जाती है।

(१२) घूँसके पित्तेमें कालीमिर्च भरकर छायामें सुखा लो और पीसकर रख लो। इसमेंसे २ चावल भर सूँघनेसे मृगी चली जाती है।

(१३) शरीफेके बीजोंकी मींगी पीसकर एक कपड़ेकी बत्तीमें रख लो। इस बत्तीका धूआँ नाकमें पहुँचानेसे मृगी आराम हो जाती है।

(१४) मृगीके समय, कपड़ेकी तनीको खटमलके खूनमें तर कर लो और फिर उसकी धूनी नाकमें दो। इससे भी मृगी चली जाती है।

(१५) मृगीके समय, ढाककी जड़ पानीमें घिसकर नाकमें टपकाओ। इससे मृगी चली जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) गीदड़के पित्तेमें कई कालीमिर्च डालकर सुखा लो। मृगीके समय उसमेंसे दो कालीमिर्च लेकर पानीके साथ पीस लो और उसकी २।३ बूँद नाकमें टपकाओ। इससे मृगी चली जाती है।

(१७) महुएकी आधी गुठली और अढ़ाई कालीमिर्च, पानीमें पीसकर, नाकमें टपकाओ। इससे मृगी चली जाती है। यह दवा मृगीके समय खूब काम देती है। परीक्षित है।

(१८) छोटी कटेरीका दूध थोड़ा-सा, मृगीके दौरेके समय, नाकमें टपकाओ। इससे मृगी चली जाती है।

(१९) मृगीके समय, मस्त हाथीकी मस्ती या मदमें रुई तर करके नाकमें २।३ बूँद टपकाओ। इससे मृगी फौरन चली जाती है।

(२०) चूहेका भेजा सुखाकर रख लो। इसमेंसे आधे माशेके अन्दाज़ लेकर महीन पीस लो और रोगीकी नाकमें फूँको। इस दवाके लगातार तीन दिन फूँकनेसे या नाकमें चढ़ानेसे मृगी-रोग आराम हो जाता है।

(२१) नकछिंकनी, कुटकी, इन्द्रायणका गूदा, करेलेका स्वरस, कालीमिर्च, कलौंजी, सोंठ और जुन्देवेदस्तर—इनमेंसे समयपर जो मिले उसे पीसकर नाकमें मलो या नाकमें फूँको, मृगीवाला फौरन होशमें आ जावेगा।

(२२) हरी या सूखी तुतलीका नाकसे सूँघना—होश और बेहोशी दोनों हालतोंमें अच्छा है।

(२३) अकरकराको पीस-छानकर नाकमें फूँको। अगर इसके नाकमें जानेसे छींक आ जाय, तो मृगी-रोगी आराम हो जायगा।

(२४) मुलेठी, हींग, बच, तगरपादुका, सिरसके बीज, लहसन और कूट—इनको गोमूत्रमें पीसकर आँखोंमें आँजने या नाकमें नस्य देनेसे मृगी और उन्माद दोनोंमें लाभ होता है।

(२५) जटामासी महीन पीसकर, नाकमें उसकी नास या धूनी देनेसे पुरानी मृगी भी चली जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२६) केवड़ेकी बालका चूरा तमाखूकी तरह सूँघनेसे मृगी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) सफेद प्याज़का स्वरस नाकमें डालनेसे मृगी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२८) बाँझ-ककोड़ेकी जड़को घीमें पीसकर, उसमें ज़रा-सी चीनी मिला दो और नास लो। इससे मृगी चली जाती है। परीक्षित है।

(२९) "चरक"में लिखा है, कपिला गायके मूत्रकी नस्य मृगी-रोगमें परम हितकारी है।

(३०) स्यार, बिलाव या सिंहके पेशाबकी नस्य भी मृगी-रोगमें हितकारी है।

(३१) पीपर, बिछवा-रुखड़ी, कूट, पाँचों नमक और भारङ्गी—सबको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको काग़ज़की नलीमें भरकर नाकमें फूँकनेसे मृगी-रोगमें परम उपकार होता है। चरक ऋषि कहते हैं, यह नस्य मृगीपर परम उत्कृष्ट है।

(३२) गोय, नौला, साँप, बैल, रीछ और गाय इन सबके पित्तेको लेकर तेलमें पकाओ। इस तेलकी नास लेनेसे मृगी आराम हो जाती है।

(३३) कुत्ता, गीदड़, बिलाव, बन्दर और गाय इनके पित्तेकी नास लेनेसे मृगी-रोग आराम हो जाता है।

(३४) कुत्तेके पित्तेको घीमें मिलाकर धूनी देनेसे अपस्मार या मृगी-रोग जाता रहता है।

(३५) नौला, उल्लू, बिलाव, गीध, कीड़ा, साँप और कव्वा—इनकी चोंच, पंख और बीटकी धूनी देनेसे मृगी आराम हो जाती है।

(३६) कालीमिर्चोंको कैंकड़े या मछलीके पेटमें भरकर, गरमीकी ऋतुमें, ज़मीनमें गाड़ दो। फिर उसे खोदकर, मिर्चोंको निकालकर, धूपमें सुखा लो और पीस लो। इस चूर्णकी धूनी देनेसे मृगी जाती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३७) नाकमें ऊदेसलीबकी धूनी देनेसे मृगीवाला जल्दी होशमें आ जाता है।

(३८) मृगीके दौरेके समय, बकरेके सींगका धूआँ नाकमें पहुँचानेसे मृगी चली जाती है।

(३९) काज़ीमिर्च आदि तीक्ष्ण पदार्थोंकी धूनी देनेसे मृगीमें लाभ होता है—बेहोश होशमें आ जाता है।

(४०) कौआठोड़ीकी जड़को पीसकर धूनी देनेसे अपस्मार-रोग चला जाता है।

आँजने और लेप करनेकी दवाएँ।

(४१) पुष्य नक्षत्रमें, कुत्तेका पित्ता निकालकर आँखोंमें आँजनेसे मृगी चली जाती है।

(४२) मुलेठी, हींग, बच, तगर, सिरसके बीज, लहसन और कूट—इनको बराबर-बराबर लेकर, बकरीके मूत्रमें महीन पीस लो। इसको आँखोंमें आँजनेसे मृगी-रोग जाता रहता है।

(४३) शुद्ध मैनसिल, रसौत, गोबर और कबूतरकी बीट—इनको काजलके समान महीन पीसकर अञ्जन बना लो। इसके आँजनेसे मृगी और उन्माद दोनों नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४४) शुद्ध मैनसिल, रसौत और कबूतरकी बीट—इनको महीन पीसकर आँजनेसे मृगी और उन्माद नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—बेहोशके मुँहपर पहले पानीके छींटे मारो। अगर छींटोंसे होश न हो, तो ऊपरका अञ्जन आँखोंमें लगा दो; अवश्य होश आ जायगा।

(४५) सफेद प्याज़का रस नाकमें टपकाने और आँखोंमें आँजनेसे मृगी और उन्माद दोनोंमें लाभ होता है। परीक्षित है।

(४६) "सुश्रुत"में लिखा है, पुराना घी पिलाने और मालिश करनेसे मृगीमें विशेष उपकार होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४७) चमगीदड़की विष्ठाका शरीरपर लेप करनेसे मृगी जाती रहती है।

(४८) बकरीके जले हुए बालोंको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे; अथवा गायकी पूँछके जले हुए बालोंको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे; अथवा जले हुए हाथीके नाखूनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे; अथवा गधेकी जली हुई हड्डीको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे मृगी आराम हो जाती है। ये चारों योग "चरक" के हैं।

(४९) कैथ, शरद् ऋतुकी मूँग, नागरमोथा, खस, जौ और त्रिकुटा—इनको बराबर-बराबर लेकर, बकरीके मूत्रमें पीसकर, बत्ती बना लो। बेहोशीकी हालतमें, इस बत्तीको घिसकर आँखोंमें आँजनेसे होश हो जाता है। यह बत्ती अपस्मार, उन्माद, साँपके काटे आदमी, अर्दित-रोगी, विष खानेवाले और जलमें डूबकर मुर्देके जैसे हो जाने-वालेको अमृत-समान है।

नोट—जिसका मूलद्वार रुक जाय; नेत्र विकृत हो जायँ; पाँव-हाथ और पेट शीतल हो जायँ तथा पाँव, नाभि और लिङ्गपर सूजन हो, उसे "जलमृत" समझना चाहिये।

(५०) नागरमोथा, बहेड़ा, त्रिफला, छोटी इलायची, हींग, नई दूब, त्रिकुटा, उड़द और जौ—इनको समान-समान लेकर, बकरी, भेड़ और बैलके मूत्रमें पीसकर बत्ती बना लो। इस बत्तीके नेत्रोंमें आँजनेसे अपस्मार, उन्माद और विषम-ज्वर नाश होते हैं तथा लेप करनेसे किलास कोढ़ आराम होता है।

खाने-पीनेकी दवाएँ।

(५१) लहसन १ तोले और काले तिल ३ तोले,—इन दोनोंको मिला-कर, सवेरे ही, २१ दिन तक, खानेसे मृगी चली जाती है। परीक्षित है।

(५२) एक तोले लहसन और २ तोले काली तिलीका तेल मिला-कर खानेसे भी मृगी चली जाती है। कहा है:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तैलेन लशुनं सेव्यम् पयसा च शतावरी ।
ब्राह्मीरसश्च मधुना सर्वापस्मार भेषजम् ॥

लहसनको तेलके साथ, शतावरको दूधके साथ और ब्राह्मीके रसको शहदके साथ सेवन करनेसे सब तरहका अपस्मार नाश हो जाता है ।

ये तीनों नुसख़े परमोत्तम हैं; कई बार परीक्षा की है; अवश्य लाभ करते हैं; पर बहमी और जल्दबाज़ोंको नहीं । धीरजके साथ लगातार सेवन करनेसे मृगी चली जाती है । परीक्षित हैं ।

(५३) गोमूत्रमें सरसों पीसकर मृगीवालेके शरीरपर लेप करने और ६ माशे सरसों पीसकर खानेसे भी लाभ होते देखा है । कहा है:—

गोमूत्रयुक्त सिद्धार्थं प्रलेपयोद्वर्तने हिते ।
धूम्रतीक्ष्णानि नस्यानि दाहः सूच्या कपोलयोः ॥

गोमूत्रमें सरसों पीसकर शरीरपर लगाना, मिर्च आदि तीक्ष्ण चीज़ोंकी नस्य या धूनी देना और सुईको आगमें तपाकर गालोंपर दागना—मृगीवालेको ये सब हित हैं ।

(५४) ब्राह्मीके पत्तोंका रस १ तोले लेकर १ तोले शहदमें मिला लो । इसके नित्य सेवन करनेसे मृगी निश्चय ही आराम हो जाती है । खूब आज़मूदा है ।

(५५) दूधमें शतावर औटाकर पीनेसे मृगी चली जाती है ।

(५६) सरसों, सहँजना, सोनापाठा, अरलू और चिरचिरा—समान-समान लेकर पीस-छान लो । इस चूर्णकी मात्रा १ से ३ माशे तक है । इसके सेवन करनेसे मृगी चली जाती है ।

नोट—इसी चूर्णको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे भी मृगी चली जाती है । इसी चूर्णमें चूर्णसे चौगुना गोमूत्र और उतना ही तेल मिलाकर पका लेनेसे उत्तम मृगी-नाशक तेल तैयार हो जाता है । इस तेलकी मालिशसे भी मृगी आराम हो जाती है ।

(५७) ब्राह्मीके पत्तोंका रस १ तोले, कुलींजन या अकरकराका चूर्ण ३ माशे और शहद ३ माशे—इनको मिलाकर नित्य सवेरे-शाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेवन करनेसे मृगी चली जाती है। मृगी, उन्माद और चित्तभ्रम-रोगोंपर रामबाण नुसख़ा है। ख़ूब आज़मूदा है।

(५८) छः माशे मुलेठीका पिसा-छना चूर्ण पेठेके १ तोले रसमें मिलाकर, तीन दिन, पीनेसे मृगी आराम हो जाती है। उत्तम नुसख़ा है।

(५९) शहदके साथ घोड़ाबचका चूर्ण चाटने और दूध-भात खानेसे पुरानी मृगी भी निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है। कहा है:—

यः खादेन्क्षीरभक्षाशी माक्षिकेण वचारजम्।
अपस्मारं महाघोरं सुचिरोत्थं जयेद्ध्रुवम्॥
उग्रमक्षमितं चूर्णं कृतञ्च मधुसर्पिषा।
भक्षयेत् क्षीरभक्षाशी त्रिदिनेऽपस्मृतिक्षयः॥

एक तोले बचका पिसा-छना चूर्ण शहद और घीमें मिलाकर खानेसे तीन दिनमें मृगी आराम हो जाती है।

(६०) फाँसी लगाकर मरनेवालेकी रस्सीकी राख शीतल जलके साथ पीनेसे मृगी-रोग अवश्य आराम हो जाता है।

(६१) पोहकरमूल, पीपरामूल, ब्राह्मी, सोंठ, हरड़, कचूर, चिरायता, कुटकी, सिरसकी छाल, लाल रोहेड़ा, बच, दारुहल्दी, नागरमोथा, देवदारु और कूट—इनको कुल मिलाकर २॥ तोले लेलो और आध सेर पानीमें औटा लो। जब आध पाव पानी रह जाय, रोगीको पिला दो। इस काढ़ेसे अपस्मार, उन्माद, ज्वर, विशूचिका और कफका नाश होता है।

(६२) जिस मृगी-रोगीकी छाती काँपती हो, हाथ-पैर आदि अङ्ग शीतल हों, नेत्रोंमें पीड़ा हो और शरीरमें पसीने आते हों, उसे "दशमूल" का काढ़ा पिलाओ। परीक्षित है।

(६३) उत्तर दिशामें पैदा हुए नागरमोथेकी जड़ उखाड़कर सुखा लो और पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको एक रंगके बछड़ेवाली गायके दूधके साथ सेवन करनेसे मृगी चली जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृगीपर हकीमी नुसखे।

(६४) अगर बालकको मृगी आती हो; तो उसकी दोनों भौंहोंके बीचमें मूँगा आगमें तपाकर दाग दो; अथवा बकरीकी जलती हुई मेंगनीसे दाग दो। इन उपायोंसे लड़कोंकी मृगी आराम हो जाती है। "इज़ाजुलगुर्बा" के लेखक महाशय इन्हें अपने आज़मूदा नुसखे लिखते हैं।

(६५) सूअरके पेशाबकी मिट्टी मृगीवालेके पास रखनेसे मृगी चली जाती है।

(६६) भेड़ियेके दाँत लड़केके गले या बाँहपर बाँधनेसे मृगी चली जाती है।

(६७) चूहेके होठ, जन्तरमें मढ़वाकर, बालककी गर्दनमें लटका देनेसे मृगी चली जाती है।

(६८) "हरी ऊदेसलीब" को भुजापर बाँधनेसे मृगी-रोग चला जाता है।

नोट—हरी ऊदेसलीब परमोत्तम है, पर यदि हरी न मिले तो सूखी ही बाँधो।

(६९) "तिब्ब फरीदी" नामक ग्रन्थमें लिखा है, २१ जायफल लेकर उनमें छेद करो और फिर उन्हें डोरेमें पिरोकर माला बना लो। इस मालाके पहननेवालेके पास मृगी नहीं आती।

(७०) एक तोले असली हींग कपड़ेमें बाँधकर गलेमें डाले रहनेसे मृगी चली जाती है।

(७१) सूअरके सुमकी अँगूठी बनवाकर, मंगलवारके दिन, दाहने हाथकी छोटी उँगलीमें पहन लो; मृगी पास न आयेगी।

(७२) गायके बाँयें सींगकी अँगूठी बनवाकर, बाँयें हाथकी छोटी उँगलीमें पहन लो; मृगी चली जायगी।

(७३) भेड़ियाकी विष्ठा और उसकी हड्डी पास रखनेसे मृगी नहीं आती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७४) नदी-किनारे, बालूके भीतर रहनेवाले दो 'मृगचना' नामके कीड़े, रविवारके दिन लाकर, मृगीवालेकी भुजा और कंठमें बाँध दो। इस उपायसे महा भयंकर अपस्मार भी चला जाता है।

(७५) कछुएका खून १ तोले, जौका आटा १ तोले और शहद १ तोले—इन तीनोंको मिलाकर उड़द-समान गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। इनमेंसे एक-एक गोली सवेरे-शाम खानेसे पन्द्रह दिनमें मृगी चली जाती है।

(७६) अकरकरा ५ तोले, गन्नेके रसका सिरका ५ तोले और शहद ३० तोले—इनको कढ़ाहीमें डालकर आगपर चढ़ाओ और मन्दाग्निसे पकाओ। जब गाढ़ा होनेपर आवे, उतारकर शीशीमें रख दो। इसमेंसे ६ माशे दवा, हर दिन सवेरे ही, गरम पानीके साथ खानेसे मृगी चली जाती है। यह नुसख़ा हकीम जालीनूसका परीक्षित है।

(७७) 'जदबार नरीना' लड़केवाली स्त्रीके दूधमें घिस-घिसकर पिलानेसे मृगी आराम हो जाती है।

(७८) हींग और जुन्देबेदस्तर महीन पीसकर और शहदकी सिकंजबीनमें मिलाकर, गलेमें टपकानेसे मृगीके दौरेके समय लाभ होता है।

(७९) भैंसका सुम लाकर जला लो। उसकी ४ माशे राख सवेरे ही मृगीवालेको खिलानेसे मृगी जाती रहती है।

(८०) लालेके फूल ८० माशे लेकर पानीमें औटाओ। पीछे पानीको छान लो और उसमें १६० माशे मिश्री मिलाकर शर्बत पका लो। बालकको २ माशे और धायको आठ-आठ माशे शर्बत चटाओ। यह शर्बत बालकको मृगीके समय और मृगीके बाद, दोनों वक्त, दिया जाता है। इसका नाम "शर्बत गुललाला" है। बालकोंकी मृगीपर उत्तम चीज़ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपस्मार-नाशक उत्तमोत्तम योग ।

पंचगव्य घृत ।

पुराना गायका घी १ सेर, गोबरका रस १ सेर, गायका खट्टा दही १ सेर, गायका दूध १ सेर, गोमूत्र १ सेर और पानी ४ सेर—इन सबको क़लईदार कड़ाहीमें डालकर औटाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो । इस घीकी मात्रा ६ माशेकी है। इस घीके पीनेसे मृगी, ज्वर और कामला-रोग नाश हो जाते हैं। चरकादि सभी प्राचीन ग्रन्थोंमें इसकी तारीफ़ लिखी है ।

महा पंचगव्य घृत ।

दशमूल, त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, कुड़ेकी छाल, सतवनकी छाल, चिरचिरेकी जड़, नील वृक्ष, कुटकी, अमलताशका गूदा, पोहकरमूल और जवासा—प्रत्येक आठ-आठ तोले लेकर, चौंसठ सेर पानीमें पकाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छान लो ।

फिर भारंगी, पाढ़, त्रिकुटा, निशोथ, हिंजलके बीज, गजपीपर, अरहर, मूर्वाकी जड़, दन्तीकी जड़, चिरायता, चीतेकी जड़, अनन्तमूल, सारिवा, रोहिष-घास, गन्ध तृण और मोतियाके फूल—इन सबको दो-दो तोले लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो ।

अब गोबरका रस ४ सेर, गोमूत्र ४ सेर, गायका दूध ४ सेर, गायका दही ४ सेर, उत्तम गायका घी ४ सेर, ऊपरकी लुगदी और छने हुए काढ़ेको एकमें मिलाकर, क़लईदार बर्तनमें, मन्दाग्निसे औटाओ। जब घी-मात्र रह जाय, छानकर धर लो । इसकी भी मात्रा ६ माशेकी है ।

यह घी पीनेसे अपस्मार-मृगी, उन्माद, सूजन, उदर-रोग, गुल्म, बवासीर, कामला और भगन्दर आदिमें अमृतके समान गुण करता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बंगसेनने इसे पाण्डु-रोग, हलीमक और चौथैया ज्वर आदिमें श्रेष्ठ कहा है।

महा चैतस घृत।

सनके बीज, निशोथ, अरण्डकी जड़, दशमूल, शतावर, रास्ना, पीपर और सहँजनेकी जड़ प्रत्येक आठ-आठ तोले लेकर, ६४ सेर पानीमें पकाओ; जब १६ सेर पानी बाक़ी रहे, मलकर छान लो।

फिर विदारीकन्द, मुलेठी, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मिश्री, खजूर, शतावर, दाख, छुहारे और गोखरू तथा "चैतस घृतके सब कल्क-द्रव्य" कुल मिलाकर एक सेर लो।

फिर चार सेर गायका घी, ऊपरके कल्क या लुगदी और काढ़ेको मिलाकर घी पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीके पीनेसे ज्वर; अपस्मार, उन्माद, प्रतिश्याय, तिजारी और चौथैया ज्वर आदि रोग आराम हो जाते हैं।

पलंकषा तैल।

लाख या गूगल, बच, मुलेठी, बड़ी हरड़, बिछौटीकी जड़, आककी जड़, सरसों, जटामासी, भूतकेशी, ईशलांगला, चोरपुष्पी, लहसन, अतीस, दन्ती, कूट और गिद्धादि मांसखानेवाले पखेरुओंकी बीट—ये सब एक-एक छटाँक लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर ४ सेर तिलीका तेल, १६ सेर बकरेका मूत्र और ऊपरकी १ सेर लुगदी सबको कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर बोतलोंमें भर दो। इस तेलकी मालिश करनेसे अपस्मार या मृगी-रोग नाश हो जाता है।

ब्राह्मी घृत।

बच, कूट और शंखपुष्पी—तीनों मिलाकर एक सेर ले लो और सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदीबना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्राह्मीके पत्तोंका रस १६ सेर ले लो। गायका उत्तम घी ४ सेर ले लो और ऊपरकी लुगदी ले लो। सबको मिलाकर क़लईदार बर्तनमें डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

"भावप्रकाश" आदि ग्रन्थोंमें लिखा है, इस घीके खानेसे वेगवान अपस्मार भी नाश हो जाता है। बंगसेन कहते हैं, इस घीसे पुराना, पका हुआ भयंकर अपस्मार भी नाश हो जाता है। हमारा भी परीक्षित है। मृगीपर यह सर्वोत्तम घृत है।

कल्याण चूर्ण।

पंचकोल (पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ), काली-मिर्च, बायबिड़ङ्ग, छोटी पीपर, त्रिफला, ज़ीरा, धनियाँ, करंजुआ, सैंधानोन, बिड़नोन या कालानोन और अजमोद—इनको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो।

इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान गरम पानी है। इसके खानेसे मृगी, कफ, वात, श्वास, उन्माद, विष और मन्दाग्नि रोग नाश होते हैं। सुपरीक्षित है।

नोट—हमने कल्याणचूर्ण या ब्राह्मी घृत खिलाकर और गोमूत्रमें पिसी हुई सरसोंका उबटन लगवाकर कई मृगी-रोगी आराम किये हैं।

सिद्धार्थक घृत।

देवदारु, बच, कूट, सफ़ेद सरसों, त्रिकुटा, हींग, मँजीठ, हल्दी, दारुहल्दी, लजालू, त्रिफला, नागरमोथा, करंजके बीज, सिरसके बीज, गिरिकर्ण (श्वेतस्यन्द) और चीतेकी छाल—यह सब मिलाकर बराबर-बराबर कुल १ सेर लो और सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। गोमूत्र सोलह सेर, घी चार सेर और ऊपरकी लुगदीको लेकर कढ़ाहीमें डालो और मन्दाग्निसे घी पका लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस घीके पीनेसे कृमि, कोढ़, विष, कफ, विषम-ज्वर, भूत, ग्रह, उन्माद और मृगी-रोग आराम हो जाते हैं। यह घी "सुश्रुत" में लिखा है।

कूष्माण्ड घृत।

मुलेठीके आध सेर चूर्णको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर दो सेर घी और ३६ सेर पेठेका रस तथा मुलेठीकी लुगदीको कढ़ाहीमें रखकर आगपर पकाओ। जब रस जलकर घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीके पीनेसे अपस्मार-रोग शीघ्र ही नाश होता है। परीक्षित है।

त्रिफला तैल।

त्रिफला, त्रिकुटा, कूट, नागरमोथा, जवाखार और मरुआ—इन सबको तीन-तीन तोले लेकर सिलपर पीसो और लुगदी बना लो। फिर एक सेर काली तिलीका तेल और चार सेर हाथीका पेशाब मिलाकर पकाओ। तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तेलको नस्य वग़ैरःके काममें लेनेसे अपस्मार-रोग नाश हो जाता है।

शिग्रु तैल।

सहँजना, कूट, मैनसिल, ज़ीरा, त्रिकुटा और हींग—इनको तीन तीन तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर १ सेर तिलीका तेल और चार सेर गोमूत्र तथा ऊपरकी पिसी लुगदीको कढ़ाहीमें रख मन्दाग्निसे पका लो। तेल-मात्र रहनेपर उतार लो। इस तेलको नस्यादिके काममें लानेसे मृगी-रोग जाता रहता है।

भूत-भैरव रस।

रससिन्दूर, अभ्रक-भस्म, लोहा-भस्म, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध गंधक, शुद्ध हरताल और रसौत—इनको बराबर-बराबर लेकर मनुष्यके मूत्रमें खरल करो और गोला बना लो। फिर गोलेसे दूनी गन्धक लेकर उसमें मिला दो और लोहेके बासनमें उसे क्षण-मात्र पकाओ। बस यही "भूत-भैरव रस" है। इसमेंसे ५ रत्ती रस खानेसे अपस्मार नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रिकुटा, कालानोन और भुनी हींग महीन पीसकर चूर्ण कर लो। भूतभैरव रसकी १ मात्रा खाकर, ऊपरसे इस चूर्णको मनुष्यके पेशाब और घीके साथ पी लो। यह नुसख़ा "भावप्रकाश" का है। कभी आज़माया नहीं; फिर भी मात्रा २ रत्तीकी ठीक होगी।

चण्ड-भैरव रस।

रससिन्दूर, ताम्बा-भस्म, लोहा-भस्म, हरताल-भस्म, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मैनसिल और रसौत—सबको बराबर-बराबर लेकर गोमूत्रमें खरल करो और इस कुल मसालेसे दूनी "शुद्ध गंधक" इसमें और मिला दो। फिर इस लुगदीको लोहेके बर्तनमें थोड़ी देर तक पकाओ। इसका नाम "चण्ड-भैरव रस" है। मात्रा २ रत्तीकी है।

इसपर हींग, काज़ानोन और कूटका चूर्ण खाकर, गोमूत्र और घी पीओ।

वात-कुलान्तक रस।

कस्तूरी, शुद्ध मैनसिल, नागकेशर, बहेड़ा, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, जायफल, छोटी इलायची और लौंग—सबको समान-समान ले लो।

पहले पारे और गन्धककी कज्जली कर लो। फिर उसमें बाक़ी दवाओंका पिसा-छना चूर्ण मिला दो। फिर सबको मिलाकर पानीके साथ खरलमें घोट लो और रख दो। इसकी मात्रा दो रत्तीकी है। इसको वातनाशक अनुपान "रास्नादि काथ" वग़ैरःके साथ देनेसे अपस्मार-रोग नाश हो जाता है।

जीवनीय यमक।

जीवनीयगणकी सारी दवाओंके कल्क चार-चार तोले, गायका दूध १६ सेर, घी १ सेर और तेल १ सेर—सबको मिलाकर पका लो। घी और तेल-मात्र रहनेपर या दूध जल जानेपर उतारकर छान लो। यही यमक है। इसके सेवन करनेसे अपस्मार-रोग नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आयुर्वेद-विधिसे—

मृगीकी विशेष चिकित्सा ।

पित्तज अपस्मारपर

मधूक घृत ।

मुलेठीको पानीके साथ सिलपर पीसकर आठ तोले कल्क तैयार कर लो। फिर गायका उत्तम घी १ सेर और आमलोंका रस १६ सेर—तीनोंको मिलाकर पकाओ। घी-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस घीके पीनेसे पित्तज अपस्मार नाश हो जाता है।

वातपित्तजनित अपस्मारपर

काश्मरी घृत ।

काँसका काढ़ा चार सेर, दूध और ईखका रस चार सेर और कुम्भेरका रस आठ सेर, जीवनीयगणकी दवाओंके कल्क एक-एक तोले और एक सेर गायका घी—इन सबको मिलाकर घी पका लो। इस घीसे वातपित्तसे पैदा हुई मृगी नाश हो जाती है।

नोट—काँसकी जड़ और कुँभेर या कंभारीकी जड़का काढ़ा बना लेना।

वातकफजन्य अपस्मारपर

वचाद्य घृत ।

बच, अमलताशका गूदा, कैरण्ड (एक तरहका करंज), आमले, हींग, चोरक द्रव्य और शुद्ध गूगल—इनको एक-एक तोले लेकर सिल-पर पानीके साथ पीस लो। फिर २८ तोले घी और ११२ तोले दूध लेकर सबको कढ़ाहीमें डालकर घी पका लो। इस घीसे वात-कफकी मृगी आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—किसी-किसीने कैरण्डकी जगह कायफल और आमलेकी जगह बहेड़ा लिखा है। चोरक गठोनेका भेद है; पर कोई-कोई राजपलांडू कहते हैं।

वातपित्तज अपस्मार-नाशक घृत।

"चरक"में लिखा है, काँसकी जड़, बिदारीकन्द, ईखकी जड़ और कुशकी जड़—इनका चार सेर काढ़ा तैयार करो और घी एक सेर मिलाकर पका लो। इस घीसे वात-पित्तकी मृगी आराम होती है।

नोट—किसीका मत है कि, इस घीमें काढ़ा घीसे चौगुना होना चाहिये और कल्ककी दरकार नहीं। किसीका मत है कि, जीवनीयगणकी सारी दवाओंका कल्क भी मिलाना ज़रूरी है।

योषापस्मार

हिस्टीरियाकी चिकित्सा।

दौरेके समयके उपाय।

(१) जब रोगका हमला हो, तब रोगीको बिछौनेपर सुलाकर उसके कपड़ोंके बन्ध ढीले कर दो और मुँहपर शीतल जलके छींटे मारो।

(२) अगर रोगीको होश न हो, तो सफेद प्याज़ कूटकर सुँघाओ। अथवा कारबोनेट आफ़ एमोनिया सुँघाओ। अथवा नौसादर और चूना समान-समान लेकर, एक बड़े मुँहकी बोतलमें भरकर, उसमें थोड़ा जल मिला दो और बन्द कर दो। पीछे काग खोलकर रोगीको सुँघाओ। अथवा सोंठ, मिर्च और पीपरको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीसकर मसूड़ोंपर रगड़ो। अगर इन उपायोंसे होश न हो, तो एक काग़ज़की भोंगलीमें सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण भरकर रोगीकी नाक में फूँको। सबसे अच्छा उपाय—एमोनिया सुँघाना या प्याज़ कूटकर सुँघाना है। यदि इनमेंसे किसी दवाके सुँघानेसे रोगीको होश हो जाये, तो नीचे नं० ३ में लिखी हुई उत्तेजक दवाओंमेंसे जो समयपर मिले रोगीको फौरन दो, जिससे सच्चा होश होकर रोगी सावधान हो जाय। अगर किसी भी उपायसे रोगीको होश न हो, दाँती न खुले, तो उसे मत छेड़ो—सोने दो। जब रोगी जागे, तब उसे उत्तेजक दवाएँ दो। अनेक बार बेहोशीका समय बीतनेपर, रोगी बिना दवा-दारूके अपने-आप होशमें आ जाता है।

दौरा रोकनेके उपाय।

(३) अगर रोगी होशमें हो, तो उसे उत्तेजक दवा दो। जैसे, चार ड्राम "द्राक्षासव" एक औंस पानीमें मिलाकर दो। अथवा १ ड्राम "ब्राण्डी" एक औंस पानीमें मिला कर दो। अथवा "स्पिरिट एमोनिया एरोमेटिक" १ ड्राम एक औंस पानीमें मिलाकर दो। अथवा एक बाल "हींग" पीसकर और घीमें मिलाकर दो। अथवा असली "कस्तूरी" एकसे दो रत्ती तक शहदमें मिलाकर दो। अथवा "पिपरमिण्ट आयल" तीनसे चार बूँद तक बताशेमें डालकर या शहदमें मिलाकर अथवा जलमें मिलाकर दो। दाँती बन्द हो, तो इसे ही मसूड़ोंपर मलो। अथवा एक प्याज़का रस निचोड़कर और शहदमें मिलाकर पिला दो। अथवा १ बाल "बरास-कपूर" खिला दो और पेटके ऊपर राईका पलस्तर मार दो। इनमेंसे जो उपाय हो सके, समयपर करना चाहिये।

(४) रोगका वेग शान्त होनेपर बारम्बार होनेवाले हमले रोकनेको —अगर शरीर कमज़ोर हो तो,—पौष्टिक दवा और पौष्टिक पथ्य दो। मनको क्षोभ न हो, ऐसा उपाय कर दो। रोगीको नाराज़ न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होने दो। रोगीके मनको अति हर्ष, उद्वेग, शोक वा दुःख आदिसे बचाओ। मनमें आवेश उत्पन्न करनेवाले नाटक आदि मत दिखाओ। रोना-पीटना भी ठीक नहीं है।

(५) शुद्ध हींग दो बालभर जमे हुए घीमें मिलाकर कुछ समय तक खिलाना हित है।

(६) अगर दस्तक़ब्ज़ हो, तो हींग और एलुआ समान-समान भाग लेकर मिला लो और बाल-बाल-भरकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली रोगीको दो।

(७) अगर रजोदर्शन न होता हो, तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पाँचवें भागसे कोई दवा चुनकर दो, जिससे रजोदर्शन हो जावे।

(८) कुछ समय तक, दिनमें तीन बार, गेहूँकी जितनी उत्तम "कस्तूरी" सेवन कराओ; अथवा सवेरे-शाम जुन्देबेदस्तर, जिसे अँगरेज़ीमें क्यास्टोरियम कहते हैं, एक-एक बाल-भर दो। अथवा उसका अर्क़—टिंकचर क्यास्टोरियम एक-एक बाल-भर दो।

डाक्टर गनकी चिकित्सा-विधि।

दौरेके समय बहुत-से उपचारोंकी दरकार नहीं। रोगीकी पोशाक ढीली कर देनी चाहिये; जिससे खूनके चक्कर लगाने और साँसके आने-जानेमें रुकावट न हो। उसके चेहरेपर शीतल जलके छींटे मारने चाहिये और उसे तकियेके सहारे आरामसे लिटा देना चाहिये। सिर ऊँचा रखना चाहिये और हवा आने देनी चाहिये। कनपटी, पेट और इर्द-गिर्दके अंगोंको मलना चाहिये। रोगीको खाटपर ही क़ैद न रखना चाहिये। जितना सम्भव हो उतना, हिलने-डोलने देना चाहिये। एक ग्रेन एपोमोरफाइन (Apomorphine) का बीसवाँ भाग हाइपोडर्मिक नीडिल (Hypodermic needle) से देना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अच्छा है। इससे वमन होगी और जी बहुत मितलावेगा; परन्तु हिस्टीरियाके हमलोंका अन्त हो जायगा।

ज्योंही रोगी अच्छी तरहसे होशमें आ जावे, उसके पैर और टाँगों-को गरम जलसे धोओ और उसे लोबेलिया और इपीकाक (Lobelia & Ipecac) देकर वमन कराओ। इससे पेट और गलेमें जमा हुआ कफ और बलग़म निकल जायगा और मस्तिष्क तथा स्नायुओंमें विशेष लाभ होगा।

दौरा ख़तम होनेके बाद, रोगीको, आँतें साफ करनेके लिये, नर्म जुलाब देना चाहिये। अगर स्थायी लाभ चाहो, तो आँतोंको सदा साफ़ रखो। एलोइन (Aloin), बेलेडोना और स्ट्रिकेनियाकी गोली हर रातको या हर दूसरी रातको देनेसे बड़ा लाभ होता है—आँतें बलवान, साफ़ और निरोग रहती हैं।

"हींग" इस रोगकी मशहूर दवा है; इसीसे औरतें अक्सर इससे नफ़रत किया करती हैं। मटर-समान हींगकी गोली, दिनमें एक या दो बार, सेवन कराना हितकर है। टिंकचर आफ वेलरियन (Tincture of Valerion) भी इस अजीब हालतमें बहुत मुफीद है।

अगर रोगी कमज़ोर हो, तो उसे कोई तबियत बहाल करनेवाली मुक़व्वी दवा या पौष्टिक औषधि देनी चाहिए। रोगीसे मिहरबानीका वर्ताव करना चाहिये। उससे कोई कड़ी या दिल बिगाड़नेवाली बात न कहनी चाहिये, जिससे कि उसका दिल बिगड़े। रोगिणीको बहुधा खुली हवामें टहलना या वरजिश वग़ैरः करना चाहिये। नाक तक ठूँस कर बहुत खाना न खाना चाहिये। हल्का और जल्दी हज़म होनेवाला पुष्ट भोजन करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिकमतकी विधिसे—

मृगीकी विशेष चिकित्सा।

कफकी मृगीकी चिकित्सा।

(१) एलुआ, तुबुर्द, गारीकून, कालादाना, इन्द्रायणका गूदा और सकमूनिया—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर "शहद" में खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे कफकी मृगी नाश हो जाती है।

(२) जुलाब और हुकनेके बाद, कालीमिर्च और जुन्देबेदस्तर महीन पीस कर रोगी को सुँघाओ। इस उपायसे बाक़ी रहा हुआ मल भी जड़से नष्ट हो जायगा।

(३) सवेरे ही थोड़ी मिहनत भी करनी चाहिये। देहको इस तरह मलना चाहिये कि, हाथ ऊपरसे नीचे आवे। हाथ-पाँवसे मलाई शुरू करनी चाहिये और सिरको भी इसी तरह मलना चाहिये।

(४) अकरकरा, उस्तखुद्दूस, सियालयुस हरेक ३५।३५ माशे; गारीकून १७॥ माशे, किर्दमाना ताज़ा और तर ८॥ माशे, खुशबूदार हींग ८॥ माशे, जराबन्द ८॥ माशे, मुदहरिज ८॥ माशे, ऊदबिलसाँ ८॥ माशे और बिलसाँ ८॥ माशे—इन सबको कूट-पीसकर जंगली प्याज़की सिकंजबीनमें मिला लो। इसकी मात्रा ४॥ माशेकी है।

(५) पुरानी कफकी मृगीपर यारज हिरमिसी और छोटा भिलावा लाभदायक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बादीकी मृगीकी चिकित्सा।

(६) मलको पकाकर, अफ्तीमूनके काढ़े और बादी नाश करने-वाली गोलियोंसे मलको साफ़ करो। जब सिर साफ़ हो जाय, "अम्बर और गुलाब" घिसकर सुँघाओ। इससे सिरमें ताक़त आवेगी। बकरीके मांस या मुर्ग़ीके बच्चे और मोटी मुर्ग़ियोंके शोरबे पिलाओ।

खूनकी मृगीकी चिकित्सा।

(७) "साफन" की फ़स्द खोलो, पिंडलियोंपर पछने लगाओ और खाना कम खिलाओ।

(८) अगर मल दिमाग़के सिवा, सारे शरीरमें फैल जाय, तो पहले दोनों हाथोंकी "सरेरूकी फ़स्द" एक ही बार खोलो या एक हाथकी खोलो। रोगीकी शक्ति और दशाको समझकर खून निकालो। मृगी-रोगीकी फ़स्द बसन्तमें खोलना अच्छा है।

(९) दिमाग़में कमज़ोरी न हो और शीत आनेका भी ख़ौफ़ न हो; तो कई दिन बाद, ज़रूरतके समय, जीभके नीचेकी फ़स्द खोलो और गुद्दीपर पछने लगाओ। फ़स्द खोलनेके बाद, सात दिन तक, रोगीको आराम दो। मलकी सफ़ाई करो। अगर फिर ज़रूरत हो, तो "साफनकी फ़स्द" फिर खोलो या दोनों पिंडलियोंपर पछने लगाओ। अगर इतना करनेपर भी खून भर आनेके लक्षण दीखें, तो मल निकालनेके पीछे, सात दिनतक आराम देकर, फिर सफ़ाई करो और दिल-दिमाग़की ताक़तको क़ायम रखते हुए फिर मलको निकालो, जिससे भाफके परमाणु पैदा करनेवाला मल जड़से ही नष्ट हो जाय।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तकी मृगीकी चिकित्सा।

(१०) पित्तका मल निकालनेके लिए "शर्बत आलू और शर्बत इमली" शीतल पानीमें मिलाकर पिलाओ। प्रकृतिको दुरुस्त करनेके लिए नाकमें दवाएँ टपकाओ और सुँघाओ। शीतल और तर तेल लगाओ। अगर कोई अङ्ग ऐंठ जाय, तो तेल और गुनगुना पानी मिलाकर उस जगह मलो। इस उपायसे ऐंठन दूर हो जाती है। यह तेल-पानी मृगीके समय और मृगी जानेके बाद, दोनों समय ही मला जा सकता है।

आमाशयकी मृगीकी चिकित्सा।

(११) अगर मुनासिब समझो, तो "सरेरू या वासलीक" को फ़स्द खोलो; क्योंकि फ़स्दसे चारों दोष निकल जाते हैं। हर प्रकारके मलको निकालनेके लिए वमन और विरेचन कराओ। आमाशयकी मृगीमें क़य कराना ज़ियादा अच्छा है। उन दस्तावर गोलियों और काढ़ोंको काममें लाओ, जो इस जगह मुनासिब हों।

(१२) अगर कफके दोषका प्रकोप हो, तो मूली और सोयेके पानीमें शहदकी बनी हुई सिकंजबीन मिलाकर पिलाओ और क़य करा दो। इस तरह आमाशयके मलको निकालकर, आमाशयको पुष्ट भी करो, जिससे वह मलको फिर ग्रहण न कर सके। इसके लिए गुलाबके फूल, मस्तगी, कुन्दरुके छोटे-छोटे टुकड़े, अगर और बालछड़—इन पाँच दवाओंको बराबर-बराबर लेकर महीन कर लो और गुलाब-जलमें मिलाकर आमाशयपर लेप कर दो। इस कामके सिवा, रोगीको तिर्याके अरवा, गरम जवारिश और गुलक़न्द तथा भुना हुआ मांस और पक्षियोंका मांस दालचीनीसे सुगन्धित करके खिलाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१३) अगर बादीके दोषका कोप हो, तो मूलीको चीरकर उसमें काली कुटकी भर दो और फिर मुँह बन्द करके सिकञ्जबीनमें भिगो दो। इसके बाद उसे रोगीको खिला दो। ऊपरसे शहदकी सिकंजबीनमें लोबियेका पानी मिलाकर पिला दो। फिर वमन करानेकी कोशिश करो।

मल निकल जानेके बाद आमाशयके पुष्ट करनेके लिए, आमाशयपर चन्दनको गुलाब-जलमें घिसकर लेप करो। कफके दोषकी दवाएँ भी, जो ऊपर नं० १२ में लिखी हैं, इस मौक़ेपर काममें ले सकते हो।

दूध पीनेवाली बकरीका मांस या मुर्गीके बच्चोंका मांस—मूँग, बादामकी गरी और पालकके साथ पकाकर खिलाओ।

(१४) अगर पित्तका दोष हो, तो सोये, ख़रबूज़े और ख़ब्बाज़ीके बीजोंका काढ़ा करके, उसमें थोड़ा-सा नमक और सिकंजबीन मिलाकर रोगीको पिला दो और क़य कराओ। अगर इस नुसख़ेमें थोड़ा-सा गरम जल भी मिला दिया जाय, तो और भी अच्छा हो।

पहलेकी तरह, मल निकल जानेके बाद, आमाशयके पुष्ट करनेके लिए, खुरफ़ा, काहूके पत्ते और बेदकी शाखोंको पीसकर और सिरकेमें पकाकर आमाशयपर लेप करो। विहीका रुब्ब—बंसलोचन और सूखा धनियाँ मिलाकर पिलाओ। बकरीका मांस इमली मिलाकर और धनियाँसे सुगन्धित करके खिलाओ।

(१५) आमाशयकी मृगी जो बुरे दोषोंके कारणसे पैदा होती है और जो पेटके ख़ाली रहनेसे बढ़ जाती है, उसका इलाज खुश्कीके सिरदर्दकी तरह करना चाहिये। जैसे,—

रोगीको उत्तम और तर खाने खिलाओ। जौका दलिया, मोटी मुर्गियोंका शोरबा, बादामके तेल और निशास्तेका हरीरा खिलाना अच्छा है। बादामका तेल या तिलीका तेल सिर और बदनपर मलो;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बनफ़शेका तेल, कद्दूका तेल और नीलोफ़रका तेल नाकमें टपकाओ॥ मुर्ग़ियोंकी चर्बी और तीतरोंकी चर्बी खाने और लगानेके काममें लाओ।

तिल्ली वग़ैरःकी मृगियोंकी चिकित्सा।

(१६) तिल्लीवाली मृगीमें तिल्लीका इलाज करो, जिगरवालीमें जिगरका, रजोधर्मकी ख़राबीसे होनेवालीमें रजोधर्मका और आँतोंके कीड़ोंसे होनेवालीमें कीड़ोंका इलाज करो।

(१७) अगर पेटके ऊपरकी झिल्लीमें जलन होनेकी वजहसे मृगी-रोग हो, तो नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

(क) हर चालीसवें दिन या आगे-पीछे वासलीक रगकी फ़स्द खोलो। अगर खून ज़ियादा हो और कोई बलवान उपद्रव न हो, तो आवश्यकता और समय-अनुसार खून निकालो। इस रोगमें नश्तर चौड़ा लगाओ, ताकि गाढ़ा खून निकल जाय। यह क़ायदा सब बादीके रोगोंके लिये है, जिनमें कि फ़स्द खोलना उचित है।

(ख) शर्बत बनफ़शा और शर्बत खशखाश लाभदायक हैं।

(ग) जौका दलिया या धुली मूँगकी दाल—बादामकी मींगियोंके साथ दो।

(घ) पेटके भीतरके अङ्गोंमें ताक़त लानेके लिये "गुलक़न्द" खिलाओ।

(ङ) अगर ज्वरांश हो और जुलाब देनाहो, तो नीलोफ़र, कासनीके बीज, मकोय, तुरंजबीन और मिश्रीका जुलाब बनाकर दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाँव या हाथमें दोष जमा होकर होनेवाली मृगीकी चिकित्सा।

(१८) मृगी आनेके समयसे पहले, उस जगहसे कुछ ऊपरकी ओर खूब कसकर पट्टी बाँध दो, ताकि शीतल हवा या ख़राब माद्दा ऊपरकी ओर चढ़ न सके।

उस अङ्गकी मौजूदा सर्दीको वहाँ-की-वहीं नष्ट करनेके लिए, आगसे या उन दवाओंसे गरमी पहुँचाओ, जो गरम प्रभाव रखती हैं, पर छूनेमें गरम नहीं लगतीं। जैसे,—अकरकरा, चीता, हींग, फरफ़यून और बिलसाँका तेल। इनका लेप बनाकर उस जगह लगाओ। अगर इस लेपको गरम करके लगाओ तो और भी अच्छा।

गरम पानीमें बाबूनेका तेल मिलाकर, उस अङ्गको उसमें डुबो रखो; पर उस पानीको शीतल न होने दो। उसे गरम रखनेके लिये, उस पानी और तेलसे भरे बासनके नीचे आग रखो या उसमें गरम जल मिलाते रहो।

मृगीके समयसे पहले कई बार कफको निकालो और दिमाग़में ताक़त और गरमी पहुँचानेके लिये जंगली प्याज़की सिकंजबीन और शर्बत उस्तखद्दूस पिलाओ। तुतली, कस्तूरी और अम्बर सुँघाओ। पोदीनेका तेल सिरपर मलो।

जब देह मल-रहित और दिमाग़ बलवान हो जाय, तब उस अङ्गमें गरमी पहुँचानेके लिये राई, जुन्देवेदस्तर और कालीमिर्चको, शहदमें मिलाकर उस जगह लेप करो। अथवा जैतूनका तेल, वेद अञ्जीरका तेल, तुतलीका तेल और कूटका तेल वहाँपर मलो।

अगर उपरोक्त उपायोंसे लाभ न हो, तो उस अङ्गको इस तरह दाग दो कि, मिलावेका शहद, कबूतरकी बीट, अञ्जीरका दूध और कोकनजका लेप करनेसे घाव हो जाय और उस घावको बहुत दिनों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तक अच्छा न होने दो, जिससे खराब मल पीप बन-बनकर थोड़ा-थोड़ा निकल जाय।

घाव करनेवाली दवाकी अपेक्षा, पछनों समेत या बिना पछनोंके सींगी लगाना उत्तम है।

अगर चाहो कि घाव न भरे, तो उसपर एक शीशेका टुकड़ा बाँध दो। (शीशेसे मतलब शीशा धातुसे है। जैसे,—राँगा, शीशा और लोहा इत्यादि)।

मनुष्यमात्रके पास रहने योग्य।

कभी भी फेल न होनेवाली! अकसीरका काम करनेवाली!!

तीस सालकी परीक्षित औषधियाँ।

नारायण तैल—यह तैल अस्सी प्रकारके वातरोगोंपर रामवाण है। लकवा, फालिज, शीत-पित्त, सर्वाङ्ग वात और पसलीका दर्द आदि अनेक रोगोंपर रामवाण है। हर गृहस्थको कम-से-कम पाव भर तेल घरमें रखना चाहिये। मूल्य १ पावका ३)

कृष्णविजय तैल—यह तैल चर्म-रोगोंका दुश्मन है। इसकी मालिश करने और लगानेसे खाज, खुजली, फोड़े-फुन्सी, दाफड़, चकत्ते, अपरस, सेंहुआ, गरमीके घाव और चोट लगनेसे हुए घाव आदि अनेकों चमड़ेपर होनेवाले रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। हर गृहस्थके घरमें १ पाव तेल रहना चाहिये। मूल्य १ पावका २)

शिरशूलान्तक चूर्ण।

इसकी १ मात्रा खाकर ज़रा-सा जल पी लेनेसे, ठीक पन्द्रह मिनिट-में, सब तरहके सिरदर्द आराम हो जाते हैं। बहुत क्या लिखें, यह चूर्ण सिरदर्द आराम करनेमें जादू है। मूल्य ८ मात्राका ।॥)

पता— हरिदास एण्ड कम्पनी,
गङ्गा-भवन, मथुरा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डाक्टरी-मतसे
मृगी-रोगका वर्णन।

मृगी-रोगको अँगरेज़ीमें "एपिलेप्सी" या "फौलिङ्ग सिकनेस" (Epilepsy or Falling Sickness) कहते हैं। इस रोगका सम्बन्ध नरवस सिस्टम (Nervous System) अर्थात् स्नायुमण्डलसे है। आक्षेप, कम्पन और मूर्च्छाका यकायक आक्रमण, स्पन्दहीनता, चैतन्यहीनता और निद्राका आवेश प्रभृति इस रोगके चिह्न हैं। मानव-जाति जिन भयंकर-से-भयंकर रोगोंके अधीन है, उनमेंसे मृगी-रोग भी एक रोग है।

इस रोगके दौरे यकायक होते हैं। दौरेका असर चन्द मिनिट या आध घण्टे तक रहता है, इसके बाद मनुष्य पहलेकी तरह चङ्गा या अच्छा-भला हो जाता है। हाँ, कोई कम और कोई ज़ियादा कमज़ोर या बलहीन हो जाता है तथा तन्द्रा आया करती है। यह रोग बच्चों और जवानोंको ज़ियादा होता है। उनमें भी लड़कियोंकी अपेक्षा लड़कोंको बहुत होता है। इस रोगके हमले या दौरे अक्सर निरूपित समय या वक्त मुक़र्ररपर, महीने-के-महीने अथवा हर नये या पूरे चाँदके दिन होते हैं। बहुधा यह रोग पैतृक (Hereditary) भी होता है। अगर बापको मृगी-रोग होता है, तो उसके पुत्र को भी होता है। एक कुटुम्बके बहुतसे लोग अपस्मार-रोगसे ग्रसित होते हैं। यहाँ तक कि यह रोग एक कुटुम्बमें पीढ़ियों तक होता रहता है। बुद्धिमानोंको मृगी-रोगियों की शादी न होने देनी चाहिये। उनको किसी स्थिर व्यवसायमें लगा देना चाहिये, जिससे कि वे मृगीके हमलेके समय महफूज़ या सुरक्षित रह सकें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लक्षण ।

यह रोग हमेशा यकायक हमले करता है; यानी इसका आक्रमण सहसा होता है और आक्रमण होते ही रोगी पृथ्वीपर गिर पड़ता है। चूँकि इस रोगमें रोगी गिर पड़ता है, इसीलिए इस रोगको फॉलिङ्ग सिकनेस—गिरनेका रोग—भी कहते हैं। जब यह रोग मुस्तक़िल तौरसे शरीरमें ठहर जाता है और दौरा करनेका आदी हो जाता है, तब बाज़-बाज़ वक़्त रोगीको चन्द अलामतों या पूर्वचिह्नोंसे इसके दौरेकी सूचना मिल जाती है; यानी वह जान जाता है कि, अब मृगीका हमला होने ही वाला है। दौरा आनेसे पहले रोगीका सिर घूमने लगता है, आँखोंके सामने अँधेरी आती है, दिल घबराता है, कानोंमें ज़ोरसे आवाज़ सुनाई पड़ती है, आँखोंके सामने आगकी चिनगारियाँ और शौले-से उड़ते हैं, अङ्ग-प्रत्यंग काँपते हैं, चिन्ता हो जाती है, तन्द्रा या ऊँघ-सी आती है और रोगी नींदमें सोता-सोता चौंक पड़ता है। उसका मिज़ाज चिड़चिड़ा हो जाता है। मृगीके ये पेशख़ीमें या पूर्व्वसम्वादकारी चिह्न बहुधा बहुत ही थोड़ी देर ठहरते हैं। कभी-कभी ये दो-चार सेकण्डसे ज़ियादा नहीं रहते। कुछ बीमार डरपोक और कायर हो जाते हैं और कुछ द्वेषी, अपकारी, हिंसक, झगड़ालू और हानिकारी हो जाते हैं।

किसी-किसीको मृगीके हमलेसे पहले भूत-प्रेत नज़र आते हैं; यानी पहले भूत-प्रेतोंकी-सी शकलें दीखती हैं और फिर मृगी आ ज़ाती है। उन सूरतोंको देखते ही रोगी समझ लेता है कि, अब मृगी आनेवाली है। कुछ लोगोंको मृगीके हमलेसे पहले विशेष प्रकारकी लहर-सी मालूम होती है, जिसे 'औरा एपिलेपटिका' (Aura Epileptica) कहते हैं। वह एक प्रकारकी कँपकँपी-सी होती है, जो पैरों या टाँगोंसे शुरू होकर, जबतक कि सिरतक पहुँच नहीं जाती, धीरे-धीरे फैलती रहती है। बस, इसके बाद ही रोगी बेहोश-सा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होकर गिर पड़ता और मूर्च्छित हो जाता है। बहुत-से लोगोंको मृगी सदा रातके समय नींदमें आया करती है।

ज्यों ही रोगका हमला होता है, रोगी बेसुध या हतज्ञान हो जाता है और उसके अङ्ग बड़े ज़ोरोंसे खिंचने लगते हैं। आँखें इधर-उधर घूमती हैं। होठ, पलक और चेहरेके पट्ठे अत्यन्त मुड़ने और खिंचने या ऐंठने लगते हैं। रोगी दाँतोंसे दाँत घिसता या दाँत पीसता है और उसके मुखसे झाग निकलने लगते हैं। बाज़-बाज़ औक़ात दाँती भिंच जाती है और जाबड़े जुड़ जाते हैं। किसी-किसी वक्त रोगीका चेहरा पीला हो जाता है, लेकिन बहुत बार चेहरेका रंग अरग़वानी या बैंजनी-सा देखनेमें आता है। सिर और गर्दनकी रगें खूनसे मचा-मच भरी हुई-सी जान पड़ती हैं। जल्दी या देरसे ये तशन्नुजी अलामतें आहिस्ते-आहिस्ते, घटने लगती हैं। होश आनेपर रोगी निस्तेज, तेजहीन और थका हुआ-सा मालूम देता है और बेहोशीकी हालतमें या दौरेके समय क्या-क्या हुआ, उसे उसकी ज़रा भी याद नहीं रहती।

रोगके कारण।

बहुत-से लोगोंको तो यह रोग माता-पितासे विरासतमें मिलता है; यानी उनमें इसका बीज मौजूद ही रहता है। यह रोग अक्सर उठती जवानीमें होता है, क्योंकि उस समय उनकी आदतें बदल जाती हैं, उनके रोज़ाना कामोंमें बहुत-सी तब्दीलियाँ हो जाती हैं। उनके नियम और व्यवस्थाओंमें उलट-फेर हो जाते हैं। इसी उम्रमें लोग अति मैथुन और हस्तमैथुन आदि कर्म करने लगते हैं।

बहुत लोगोंको यह रोग खोपड़ीकी गठन या बनावट ठीक न होनेसे, खोपड़ीकी हड्डियोंके दबी हुई होनेसे, खोपड़ीकी अन्दरूनी सितह-पर स्पञ्ज जैसी नर्म या सूराखदार चीज़ पैदा होनेसे और मस्तिष्कमें अत्यन्त खून भर जानेसे होता है। ऐसे पैदा हुए रोगको "आदि कारणिक" (Idiopathic) कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत लोगोंको कृमि प्रभृति द्वारा आँतोंके दूषित होनेसे, दाँत निकलनेसे, खून-हैज़ या मासिकधर्म बन्द हो जाने या रुकनेसे और शरीरके स्नायु-मण्डलमें विषका प्रवेश हो जानेसे यह रोग हो जाता है। हस्तमैथुन (Masturbation) तो इस रोगके पैदा करनेमें सभी कारणोंका अगुआ है, यानी हस्तमैथुन करनेवालोंको तो यह रोग अवश्य ही होता है। बचपनमें तशन्नुज या बाँइटे आया करते हैं। अगर उनका इलाज ठीक तरहसे नहीं किया जाता, तो वे मृगीमें बदल जाते हैं; यानी बाँइटे आते-आते मृगी आने लगती है। जहाँ रोगका बीज मौजूद होता है, वहाँ मनकी प्रबल उत्तेजना या दिली जोशसे अथवा स्नायविक उत्तेजनासे, यह रोग हो जाता है; यानी यकायक भय, उत्कट इच्छा, प्रेम, अनुराग और स्नेह प्रभृतिसे यह रोग हो जाता है। घूँसा, घाव, हड्डीका टूटना और सिरमें चोट लगना भी इसके कारण हैं। अगर हड्डी टूट जाती है और उसका ठीक इलाज नहीं होता; यानी हड्डीका दबा हुआ भाग जितना ऊँचा होना चाहिये उतना ऊँचा नहीं किया जाता, तो वह मस्तिष्क या ब्रेन (Brain) पर दबाव डालती और मृगी-रोग उत्पन्न करनेका यथेष्ट कारण हो जाती है।

चिकित्सा।

मृगीके दौरेके समय बहुत ही कम इलाज किया जा सकता है और कम ही करना भी चाहिये। हाँ, जहाँ तक मुमकिन हो, ऐसा उपाय अवश्य कर देना चाहिये, जिससे रोगी अपने ही चोट न लगा ले। उसकी गर्दनके आस-पासकी सभी चीज़ें दूर कर देनी चाहिये।

आज तक इस रोगकी अनेकों दवाएँ निकलीं और निकल रही हैं; पर सच तो यह है कि, उनमेंसे कोई-सी ही समयपर काम देती है; यानी कभी-कभी वे सब-की-सब ही फेल हो जाती हैं—काम नहीं देतीं।

अगर खोपड़ीकी गठन या बनावट ठीक न होनेकी वजहसे अथवा मस्तिष्ककी ऐन्द्रिक गड़बड़ी (Organic derangement of the

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

brain) के कारणसे मृगी-रोग होता है, तो वह कदाचित ही आराम होता है; खासकर उस हालतमें, जब कि रोगी जवानीकी उम्र पार कर जाता है; यानी जवानी पार कर जानेपर ऐसे मृगीवालेके आराम होनेकी आशा नहीं।

अगर रोग उपसर्गज हो, सिस्टममें और कहीं खराबी हो, उस खराबीका सम्बन्ध सीधा सिरसे न हो, तो वह कारणके नाश करनेसे आराम हो सकता है। पर इस दशामें जनरल सिस्टमपर ठीक तौरसे ध्यान रखना होगा।

इस रोगकी किसी भी हालतमें, गाहे-ब-गाहे, दस्तावर दवा देना हित है। पोडोफ़िलन या मेएपिल (Podophyllin or Mayapple) कीड़ोंकी उत्तम दवा है। खून और उस रुतूबतके, जो पर्दा-ए-दिल और पर्दा-ए-शिकमसे खारिज होती है, अत्यन्त भर उठने या फूटकर बह निकलनेमें भी बहुत उत्तम है। पेट या आँतोंको ठीक रखनेके लिए मेएपिल (Mayapple) की जड़ पीसकर देनी चाहिये। इसकी गोलियाँ भी बन सकती हैं। दिनमें दो या तीन गोलियाँ देनी चाहिये। अथवा एक्सट्रेक्ट हायोसियामस और पोडोफिलन (Hyosciamus & Podophyllin) की गोलियाँ बनाकर देनी चाहिये। एक गोलीमें दो ग्रेन पहली और एक ग्रेन पिछली दवा मिलानी चाहिये और नित्य एक या दो गोली रोगीको देनी चाहिए।

हमें यह बात माननी पड़ेगी कि, मृगी-रोगमें दवा-दारूसे यथेष्ट या सन्तोषप्रद लाभ नहीं होता। सिर्फ 'ब्रोमाईड' ऐसी चीज़ है, जो काम देती है। जवान रोगीको, हर रोज़, दूध या सोडावाटरमें, भोजनके बाद, एक ड्राम सोडियम ब्रोमाईड (Sodium Bromide) देनेसे अवश्य लाभ होता है। अगर मृगीके हमलेकी उम्मीद हो, तो इसकी एक मात्रा पहलेसे ही दे देनी चाहिये।

इस रोगमें टॉनिक (Tonic) या पौष्टिक पदार्थोंसे बहुत-कुछ लाभ होता है, क्योंकि इस रोगमें रोगीका शरीर और सारा सिस्टम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कमज़ोर हो जाता है; यानी शरीर और स्नायु-मण्डल बलहीन हो जाते हैं और कभी-कभी यह रोग छिपा हुआ शीतज्वर या नक़ाबपोश बुख़ार (Masked Ague) हो जाता है। ऐसे केसोंमें टॉनिक या पुष्टिकर दवा देना अत्यन्त प्रयोजनीय है। इस रोगमें कुनैन भी दी जा सकती है। एक्सट्रैक्ट हायोसियामस और कुनैनकी गोलियाँ बहुत उत्तम होती हैं। एक गोलीमें कुनैन एक से दो ग्रेन तक होनी चाहिये और हर रोज़ ३ से ६ तक गोली देनी चाहिये।

एक अनुभूत उपाय।

डाक्टर प्यारेलाल साहब एल० एम० एस० एण्ड एम० महाशयने एक छोटे-से मृगीवाले बच्चेको जिस उपायसे आराम किया, उसे हम पाठकोंके उपकारार्थ नीचे लिखते हैं। आपने अपना नुसख़ा "वैद्य" मुरादाबादमें छपाया थाः—

क्लोरल हाइड्रेट (Cloral Hydrate) दो ग्रेन, एमोनियम ब्रोमाइड (Ammoni Bromide) पाँच ग्रेन और एक्वा (Aquae) छै ड्राम—इन सबको मिलाकर ६ खुराक कर लो और ४।६ महीनेके मृगीवाले बालकको चार-चार घण्टे पर सेवन कराओ। इस नुसख़ेके चार-छै दिन देनेसे मृगीके दौरे बन्द हो जाते हैं।

इस दवाके पिलानेसे पहले, डाक्टर साहबने रोगी बालकको सवेरे-शाम सुहाते-सुहाते गरम पानीमें, पाँच मिनट तक, बैठा रखने और फिर निकालकर कम्बलमें लपेटनेको कहा। साथ ही ऊपरका नुसख़ा चार-चार घण्टेमें देनेकी हिदायत की। दवा आरम्भ करनेके समय उस बालकंको १ घण्टेमें ३० दौरे दोते थे—मुँहमें बार-बार झाग आते थे। इस दवासे २४ घण्टेमें ८ दौरे हुए; यानी एक ही दिनमें २२ दौरे कम हो गये। दूसरे दिन सिर्फ़ एक दौरा हुआ और चार दिन दवा देते रहनेसे बालक बिल्कुल आरोग्य हो गया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

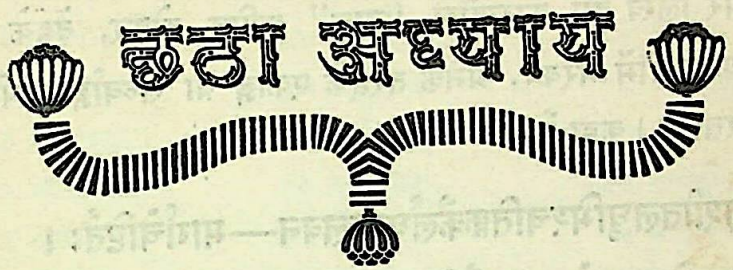

वातव्याधि-वर्णन ।

निदान कारण ।

रूखे और शीतल पदार्थ खानेसे—कम खातेसे—हल्के अन्न खानेसे—कड़वे, कषैले और चरपरे पदार्थ खानेसे—अत्यन्त स्त्री-प्रसङ्ग करनेसे—पूरवकी हवा लगनेसे—बहुत जागनेसे—पानीमें तैरनेसे—चोट वग़ैरः लगनेसे—बहुत मिहनत करनेसे—अत्यन्त सर्दी लगनेसे—व्रत-उपवास करनेसे—मल-मूत्र आदि वेग रोकनेसे—कामदेवकी पीड़ासे—शोक या रञ्ज करनेसे—चिन्ता-फ़िक्र करनेसे—डरनेसे—बहुत खून निकलवाने से—रोगके कारण मांस क्षीण होनेसे—अत्यन्त वमन-विरेचन करनेसे—विषम उपचार करनेसे—अखाड़े वग़ैरःमें कलाबाज़ी आदि खेल करनेसे—बहुत राह चलनेसे—अत्यन्त कसरत-कुश्ती करनेसे—अत्यन्त विरुद्ध चेष्टा करनेसे—रस और रुधिर आदि धातुओंका क्षय होनेसे—मर्मस्थानोंमें लगनेसे एवं हाथी, घोड़ा और ऊँट आदि जल्दी चलनेवाली सवारियोंपर बैठनेसे—बलवान "वायु" कुपित हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वात-रोगोंकी सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे "वायु" कुपित होकर, देहके ख़ाली स्रोतों या नसोंमें भरकर, अनेक तरहके एकाङ्ग या सर्व्वाङ्गव्यापी रोग पैदा करता है। कहा है:—

रुक्षशीतलघुभिश्चतिक्तकैर्लंघनप्लवन—मार्गचेष्टितैः।
क्रोधशोकभयवेगधारणैश्चिन्तया च कुपितोऽनिलोबली॥
स्रोतांसि रिक्तानि च पूरयित्वा करोति देहे विविधान्विकारान्।
एकांगजान्सर्वशरीरजांश्च तत्पूर्वरूपं कथितं च तेषाम्॥

रूखे, ठण्डे, हल्के और कड़वे पदार्थ सेवन करनेसे, लङ्घन करनेसे, नीचे-ऊँचे मार्गमें चलनेसे; क्रोध, शोक और भय करनेसे; मल-मूत्रादि-के वेग रोकनेसे और चिन्ता-फ़िक्र करनेसे, बलवान वायु कुपित होकर, देहके ख़ाली स्रोतों या छेदोंमें भरकर, एकाङ्ग या सर्व्वाङ्गव्यापी अनेक विकार उत्पन्न करता है। इस रोगके स्पष्ट लक्षण होनेसे पहले जो अस्पष्ट लक्षण होते हैं, उनको "पूर्वरूप" कहते हैं।

वात-कोपके समय।

वर्षा ऋतुमें, दिन और रातके तीसरे भागमें, अन्न पचनेपर और शिशिर ऋतुमें वायु कुपित होता है।

कुपित वातसे होनेवाले रोग।

कुपित हुई वात—वर्षा आदि कारणोंसे—नीचे लिखे हुए ८० अस्सी रोग पैदा करती है:—

१ शिरोग्रह	२ अल्पकृशता	३ जँभाई
४ हनुग्रह	५ जिह्वास्तंभ	६ गद्गदता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

७ मिनमिनापन ८ गूँगापन ९ बकवाद
१० वाचालता ११ रसाज्ञान १२ बहरापन
१३ कर्णनाद १४ त्वक्शून्यता १५ अर्दित
१६ मन्यास्तम्भ १७ बाहुशोष १८ अपबाहुक
१९ विश्वाची २० ऊर्ध्वबाहु २१ आध्मान
२२ प्रत्याध्मान २३ वातष्ठीला २४ प्रत्यष्ठीला
२५ तूनी २६ प्रतितूनी २७ वह्नि-वैषम्य
२८ आटोप २९ पसलीका दर्द ३० त्रिकशूल
३१ बारम्बार मूतना ३२ मूत्र रुकना ३३ मल-गाढ़ता
३४ मलाप्रवृत्ति ३५ गृध्रसी ३६ कलायखंजता
३७ खंजता-लंगड़ापन ३८ पंगुता ३९ क्रोष्टुक शीर्ष
४० खल्ली ४१ वातकंटक ४२ पाद-हर्ष
४३ पाददाह ४४ दण्डकाक्षेप ४५ वातपित्तकृताक्षेप
४६ दण्डापतानक ४७ अभिघाताक्षेप ४८ अन्तरायाम
४९ बाह्यायाम ५० धनुर्वात ५१ कुब्जक
५२ अपतन्त्र ५३ अपतानवात ५४ पक्षाघात
५५ सर्वाङ्गवात ५६ कम्प ५७ स्तम्भ
५८ व्यथा ५९ तोद ६० भेद
६१ स्फुरण ६२ रौक्ष्य ६३ कार्श्य
६४ काष्ण्यं ६५ शैत्य ६६ अङ्गमर्द
६७ लोमहर्ष ६८ अङ्गविभ्रंश ६९ शिरासंकोच
७० अङ्गशोष ७१ भीरुता ७२ मोह
७३ चलचित्तता ७४ निद्रानाश ७५ स्वेदनाश
७६ बलहानि ७७ शुक्रनाश ७८ रजनाश
७९ गर्भनाश और ८० परिश्रम

नोट—"वातव्याधि" नाम योगिक भी है और रूढि भी; क्योंकि शिरोग्रह आदि वातसे उत्पन्न होते हैं, इसलिये वातव्याधि कहलाते हैं। ऊपर लिखे हुए ८० वातरोग ही वातव्याधि कहलाते हैं, पर वातज्वर वातव्याधियोंमें नहीं गिना जाता। अगर वातव्याधि शब्द अकेला योगिक ही होता, तो वातज्वर आदि व्याधियोंमें भी इस शब्दकी प्रवृत्ति हो जाती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वात कुपित होनेके लक्षण।

याद रक्खो, वायुके कुपित होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

सन्धि-संकोच, स्तंभ, हड़फूटन, पर्व-भेद, लोम-हर्ष, अज्ञान, प्रलाप, पाणिग्रह, पृष्ठग्रह, शिरोग्रह, खंजता, पंगुता, कुबड़ापन, अंगशोष, निद्रानाश, गर्भनाश, शुक्रनाश, रजोनाश, काँपका; सिर, नाक, मुँह, आँख, हँसिया और गर्दनका भीतरकी तरफ़ चला जाना; शरीर सो जाना या सूना हो जाना; भेद, तोद, शूल, आक्षेप, मोह और श्रम या थकान तथा इसी तरहके और-और लक्षण वायुके कोपसे होते हैं।

नोट—पीछे जो ८० प्रकारके वातरोग लिख आये हैं, वे सब वायुके कोप करनेसे ही होते हैं। ऊपर जो वायु-कोपके लक्षण लिखे हैं, वे सभी उन ८० वातरोगोंमें मौजूद हैं। उनके यहाँ फिर लिखनेकी ज़रूरत न थी, पर विद्यार्थीके समझनेके लिये इस तरह भी लिख दिये हैं।

वातव्याधियोंके—

पूर्वरूप, रूप और अपाय।

वात-व्याधियोंके 'पूर्वरूप' ज्वर प्रभृति रोगोंकी तरह साफ़ नहीं होते। वात-रोगोंके अव्यक्त या अप्रकट लक्षणोंको उनके 'पूर्वरूप' और व्यक्त या प्रकट लक्षणोंको 'रूप' कहते हैं। प्रकुपित वायुकी लघुता-न्यूनता या कमीको ही उसका अपाय या नाश मान लेते हैं। मतलब यह कि, वायुका नाश कभी भी नहीं होता। उसका कम हो जाना ही—रोगका नाश होना समझा जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हेतु-भेद और स्थान-भेदसे रोगोंकी भिन्नता।

कुपित हुई वायु शिरोग्रह आदि ८० रोग पैदा करती है। हेतुओंके भेदसे और स्थानोंके भेदसे रोगोंकी भिन्नता होती है; यानी कारण और स्थानोंके भेदसे वायु विशिष्ट रोग करती है। "चरक"में कहा है—हेतुस्थान विशेषश्च भवेद्रोग विशेषकृत। जैसे,—कफावृत्त होनेसे "वायु" मन्यास्तंभ-रोग उत्पन्न करती है और पक्वाशयमें स्थित होनेसे आँतोंका गूँजना प्रभृति रोग करती है।

हेतुओंके भेदसे वात-व्याधि।

"हारीत-संहिता"में लिखा है:—

प्राणोपानः समानश्च उदानो व्यान एव च।
एषां दोषाद्भवन्त्येते वातदोषाः पृथक पृथक॥

प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान,—इन पाँचों वातोंके दोषसे जुदे-जुदे वात-दोष होते हैं।

हृदयमें रहनेवाली "प्राण वायु" अगर पित्तसे मिली होती है, तो वमन और दाह-रोग करती है। यदि वह कफसे मिली होती है, तो दुर्बलता, ग्लानि, तन्द्रा और विरसता करती है।

गुदामें रहनेवाली "अपान वायु" अगर पित्तसे मिली होती है, तो दाह, गरमी और लाल पेशाब करती है। अगर वह कफसे मिली होती है, तो शरीरके नीचेके भागमें भारीपन और शीतलता करती है।

जठराग्निके नीचे रहनेवाली "समान वायु" अगर पित्त-संयुक्त होती है; तो पसीना, दाह, प्यास और मूर्च्छा करती है। अगर कफसे मिली होती है, तो मल-मूत्रकी रुकावट और रोएँ खड़े करती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कंठमें रहनेवाली "उदान वायु" यदि पित्तसे मिली होती है; तो दाह, मूर्च्छा, भ्रम और ग्लानि करती है। अगर कफसे मिली होती है, तो पसीनोंका अभाव, रोमाञ्च, अग्निमांद्य और शरीरकी शीतलता करती है।

सारे शरीरमें रहनेवाली "व्यान वायु" अगर पित्तसे मिली होती है; तो दाह, अंग फैंकना और ग्लानि करती है। अगर वह कफसे मिली होती है; तो जड़ता, दण्डकाक्षेप, शूल और सूजन करती है।

नोट—अगर "वायु" पित्त-संयुक्त हो यानी वायुके साथ पित्त मिला हो, तो वात और पित्त दोनोंको हरनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये। अगर वायु कफसे मिली हो, तो वायु और कफ दोनों ही को हरनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये।

स्थान-भेदसे वात-व्याधि।

सप्तधातुगत वायुके लक्षण।

रसगत वायुके लक्षण।

जब वायु 'रस' में स्थित हो जाती है; तब शरीरका चमड़ा रूखा, फटा हुआ, जड़, पतला, काला, सूई चुभोने-सरीखा, पीड़ायुक्त, खिंचा-सा और ललाई लिये हुए होता है। सातों चमड़ियोंमें पीड़ा होती है।

नोट—"चरक" में लिखा है, जब वायु चमड़ेमें घर कर लेती है, तब वह चमड़ीको रूखी, फटी, सोई हुई, कृश, काली, पीड़ायुक्त, तनी हुई-सी और लाल रंगकी कर देती है।

रक्तगत वायुके लक्षण।

जब वायु 'रुधिर' या खूनमें ठहर जाती है; तब तेज़ दर्द और सन्ताप होता है, शरीरका रंग बिगड़ जाता है, कमज़ोरी हो जाती है, अरुचि होती है, शरीरमें फोड़े होते हैं और भोजनके बाद शरीरमें स्तब्धता होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—"चरक" में लिखा है कि, 'अरुंषि' नामक फोड़े होते हैं।

मांसगत वायुके लक्षण।

जब वायु "मांसमें" होती है; तब शरीरके अङ्ग भारी हो जाते हैं, लकड़ी या मुट्ठी मारनेके जैसी पीड़ा होती है तथा स्तब्धता, व्यथा और अत्यन्त निश्चलता होती है।

नोट—"चरक" में लिखा है, मांस-मेदोगत वायुके कुपित होनेसे अङ्गोंमें भारीपन एवं दन्ताघात और मुट्ठीसे मारनेके समान पीड़ा होती है। अत्यन्त शूल और श्रम या थकान मालूम होती है।

मेदोगत वायुके लक्षण।

जब वायु 'मेदगत' होती है; तब सारे लक्षण मांसगत वायुके समान होते हैं। थोड़ी पीड़ावाली गाँठें और फोड़े होते हैं, यही विशेषता होती है।

हड्डीगत वायुके लक्षण।

जब दुष्ट वायु 'हड्डियोंमें' ठहर जाती है; तब हड्डियोंकी सन्धियों या जोड़ोंमें तोड़नेकी-सी पीड़ा होती है, सन्धियोंमें शूल चलते हैं तथा मांस और बलका क्षय या नाश होता है एवं नींद नहीं आती और प्रबल पीड़ा होती है।

मज्जागत वायुके लक्षण।

जब दूषित वायु 'मज्जामें' स्थित हो जाती है; तब सारे लक्षण हड्डियोंमें ठहरी हुई वायुके समान होते हैं। इतनी ही विशेषता होती है कि, मज्जागत वातसे पैदा हुई पीड़ा कभी भी शान्त नहीं होती—निरन्तर बनी रहती है।

शुक्रगत वातके लक्षण।

जब कुपित हुई वायु वीर्यमें प्रवेश कर जाती है; तब वह वीर्यको स्खलित नहीं होने देती, कच्चे गर्भको ही गिरा देती है अथवा उसे मूढ़ कर देती है, वीर्यके रंगको बदल देती और उसे खराब कर देती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। वात-दूषित वीर्यसे उत्पन्न होनेके कारण, गर्भ कच्चा ही गिर जाता है। गर्भका मूढ़ हो जाना भी मुमकिन है।

नोट (१)—"चरक" में लिखा है, शुक्रस्थ वायु कुपित हो जानेसे वीर्य और गर्भ जल्दी-जल्दी निकलते हैं या रुक जाते हैं। यह 'वायु' शुक्र-वीर्य और गर्भ दोनोंके ही विकार करती है।

नोट (२)—रसगत वायु होनेसे स्नेहाभ्यंग और स्वेदन क्रिया करनी चाहिये। रुधिरगत वात होनेसे शीतल लेप करना चाहिये, जुलाब देना चाहिये और फ़स्दादि खुलवाकर खून निकलवा देना चाहिये। मांस-मेदगत वायु होनेसे जुलाब देना चाहिये और निरूहवस्ति करनी चाहिये; यानी काढ़ेकी पिचकारी गुदामें मारनी चाहिये। हड्डियों और मज्जामें वायु होनेसे, बाहर और भीतर स्नेह यानी घी तेल प्रभृतिकी योजना करनी चाहिये। इसमें "केतक्यादि तेल" का इस्तैमाल करना हित है। वीर्यगत वायु होनेसे, वीर्य बढ़ानेवाले अन्न पान देने चाहिये।

स्थान-विशेषसे वात-व्याधि।

कोष्ठगत वायुके लक्षण।

नोट—कच्चा भोजन रहनेका स्थान, अग्निके रहनेका स्थान, पका हुआ भोजन रहनेका स्थान, मूत्र-स्थान, रुधिरका स्थान एवं हृदय, पीठ और फैंफड़ा—इन सबको मिलाकर "कोठा" कहते हैं। यद्यपि "कोठा" शब्द सब आशयोंके लिए इस्तैमाल होता है; तथापि विशेष जाननेके लिये, आमाशय आदिमें रहनेवाली वायुके लक्षण अलग-अलग ही लिखे हैं।

"कोष्ठाश्रित वायु" के कुपित होनेसे मूत्र और विष्ठाका अवरोध होता है; यानी ये सब रुकते हैं और वायुगोला, हृदय-रोग, बद, बवासीर और पसलियोंमें दर्द ये सब लक्षण होते हैं।

नोट—इस हालतमें पाचक रसोंकी योजना करनी चाहिये अथवा अन्यान्य उपायोंसे मलको पकाना और विशेषकरके दूध पिलाना चाहिये।

आमाशयगत वायुके लक्षण।

नोट—मनुष्य-शरीर में नाभि और स्तनके बीचका जो भाग है, उसे आमाशय कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब दुष्ट वायु "आमाशय"में रहती है; तब हृदय, पसली, पेट और नाभिमें पीड़ा होती है; प्यास लगती है, डकारें आती हैं तथा हैज़ा, खाँसी, कंठशोष और श्वास-रोग होते हैं।

नोट—इस दशामें पहले लंघन कराना, दीपन-पाचन औषधि देना, वमन कराना और तेज़ जुलाब देना हित है। चिकित्सा आगे लिखी है।

पक्वाशयगत वायुके लक्षण।

"पक्वाशयकी वायु"के कुपित होनेसे पेटकी आँतें गड़-गड़ किया करती हैं, शूल चलते हैं, वायु कुपित होती है, मूत्र और मल थोड़े उतरते हैं, पेट फूल जाता है और पीठके बाँसे या त्रिकस्थानमें दर्द होता है।

नोट—इस दशामें, "उदावर्त्त-रोग"की चिकित्सा करनी चाहिये। जठराग्नि बढ़ानेवाले उपाय करना और स्नेहयुक्त—तैलादि-मिली दस्तावर दवा देना हित है। पेटकी वायु कुपित हो, तो क्षार और चूर्ण आदि दीपन औषधियाँ देनी चाहिये। कोखकी वायु कुपित होनेसे सोंठ, इन्द्रजौ और चीतेका चूर्ण गरम जलके साथ देना चाहिये। इन सबकी चिकित्सा आगे लिखी है।

गुदागत वायुके लक्षण।

"गुदाकी वायु"के कुपित होनेसे मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं; शूल चलता और पेट अफर जाता है; पथरी और शर्करा-रोग हो जाते हैं। पिंडली, साथल, कमर, पसली, कन्धे और पीठमें दर्द हो जाता है।

नोट—इस दशामें भी "उदावर्त्त" रोगकी तरह इलाज करना चाहिये। आगे चिकित्सा लिखी है।

कान आदि इन्द्रियोंकी वायुके लक्षण।

इन्द्रियगत वायुके लक्षण।

कुपित हुई वात जब नाक, कान आदि इन्द्रियोंमें रहती है, तब उनकी शक्तिका नाश कर देती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिरागत वायुके लक्षण।

"शिराओंकी वायु"के कुपित होनेसे शिराओंमें शूलकी पीड़ा होती है, शिराएँ सुकड़ जातीं और मोटी हो जाती हैं तथा अन्तरायाम, बाह्यायाम, खल्ली और कुबड़ापन ये वातरोग होते हैं*।

नोट (१)—"चरक"में लिखा है, शिरागत वायु कुपित होनेसे शरीरमें थोड़ी वेदनाके साथ सूजन होती है, शरीर सूखता और फड़कता है तथा सारी शिराएँ सोई हुई, पतली या मोटी हो जाती हैं।

नोट (२)—इस दशामें स्नेहाभ्यंग करो। स्नेह सहित बफारा दो। स्नेहकी मालिश करो। स्नेहका लेप करो और खून निकलवाओ। चिकित्सा आगे लिखी है।

स्नायुगत वायुके लक्षण।

"स्नायुगत वात"के कुपित होनेसे शूल, आक्षेपक और स्तंभ होता है**।

नोट—इस हालतमें पसीने निकालो, दाग दो, सख्त बंधन बाँधो और तेल वगैरः चिकने पदार्थ चुपड़ो।

सन्धिगत वायुके लक्षण।

"सन्धियों या जोड़ोंमें रहनेवाली वायु" सन्धियोंको तोड़ देती है और शूल तथा सूजन पैदा करती है।

नोट—"चरक"में लिखा है, सन्धिगत वायुके कुपित होनेसे, सन्धियोंमें हवासे फूली हुई मशकके समान सूजन—छूनेसे—मालूम होती है। सन्धियाँ न तो फैल सकती हैं और न सुकड़ सकती हैं। उनमें पीड़ा होती है।

---

* शिराका अर्थ नस या रग है। अँगरेज़ीमें शिराको "Vein" कहते हैं। शिराओंसे सन्धियाँ बँधी हुई हैं। वे वातादि दोष और रसरक्त आदि धातुओंको बहाती हैं। शिराएँ स्नायु नामकी नसोंसे छोटी होती हैं।

** स्नायु भी एक प्रकारकी नसें हैं। ये शिराओंसे बड़ी होती हैं। शरीरका मांस, हड्डी और सन्धियाँ इन्हींसे बँधी हैं। अङ्गरेज़ीमें स्नायुको "Nerve" कहते हैं और स्नायु-मण्डलको "Nervous System" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

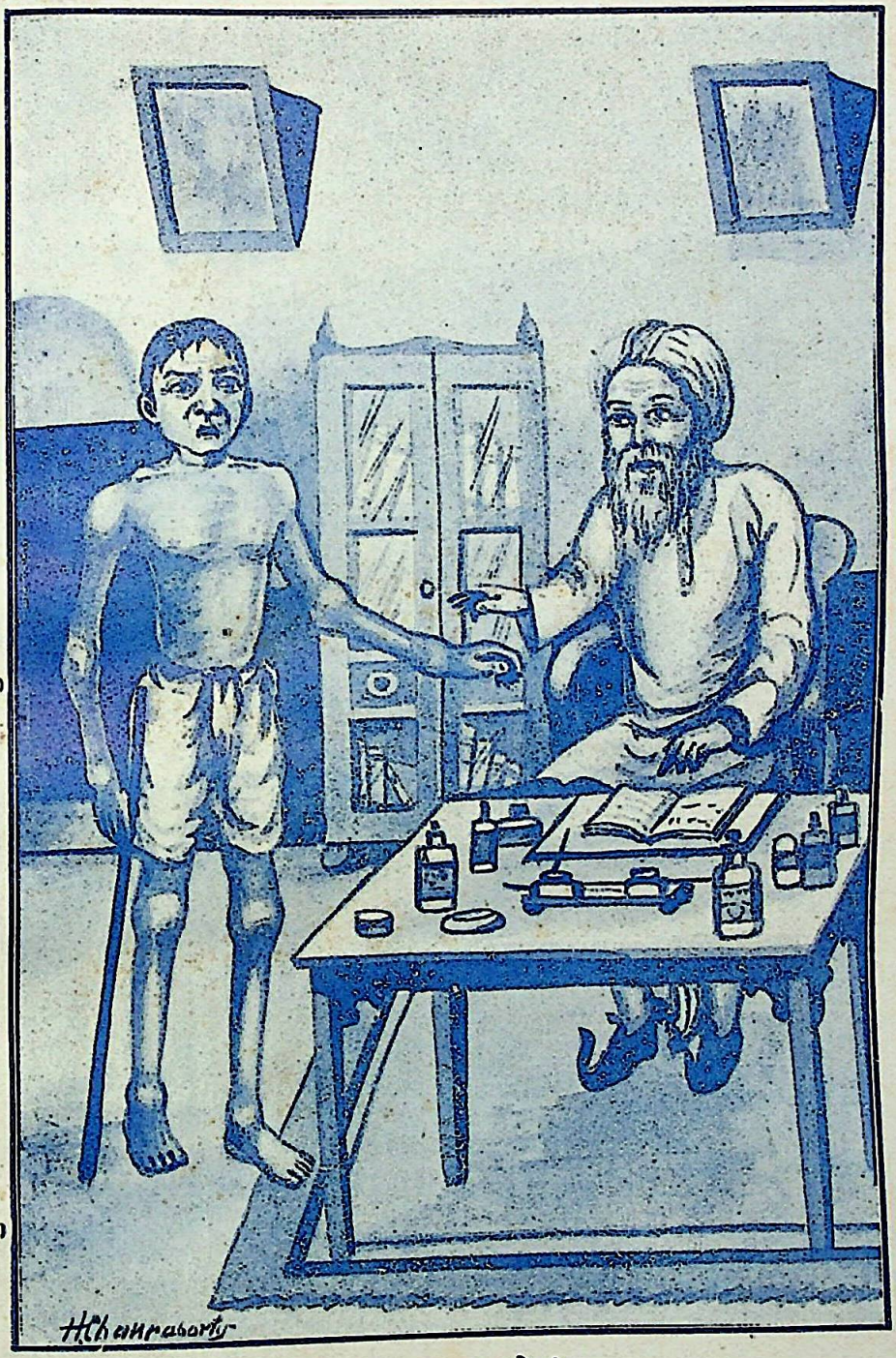

सन्धिगत वात रोगी।

इस रोगीकी सन्धियाँ न तो फैल सकती हैं न सुकड़ सकती हैं। सन्धियोंमें सूजन और दर्द होता है, अतः इस रोगीको चलने-फिरने और खड़े होनेमें बड़ी तकलीफ़ होती है।

(पृष्ठ २२४)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

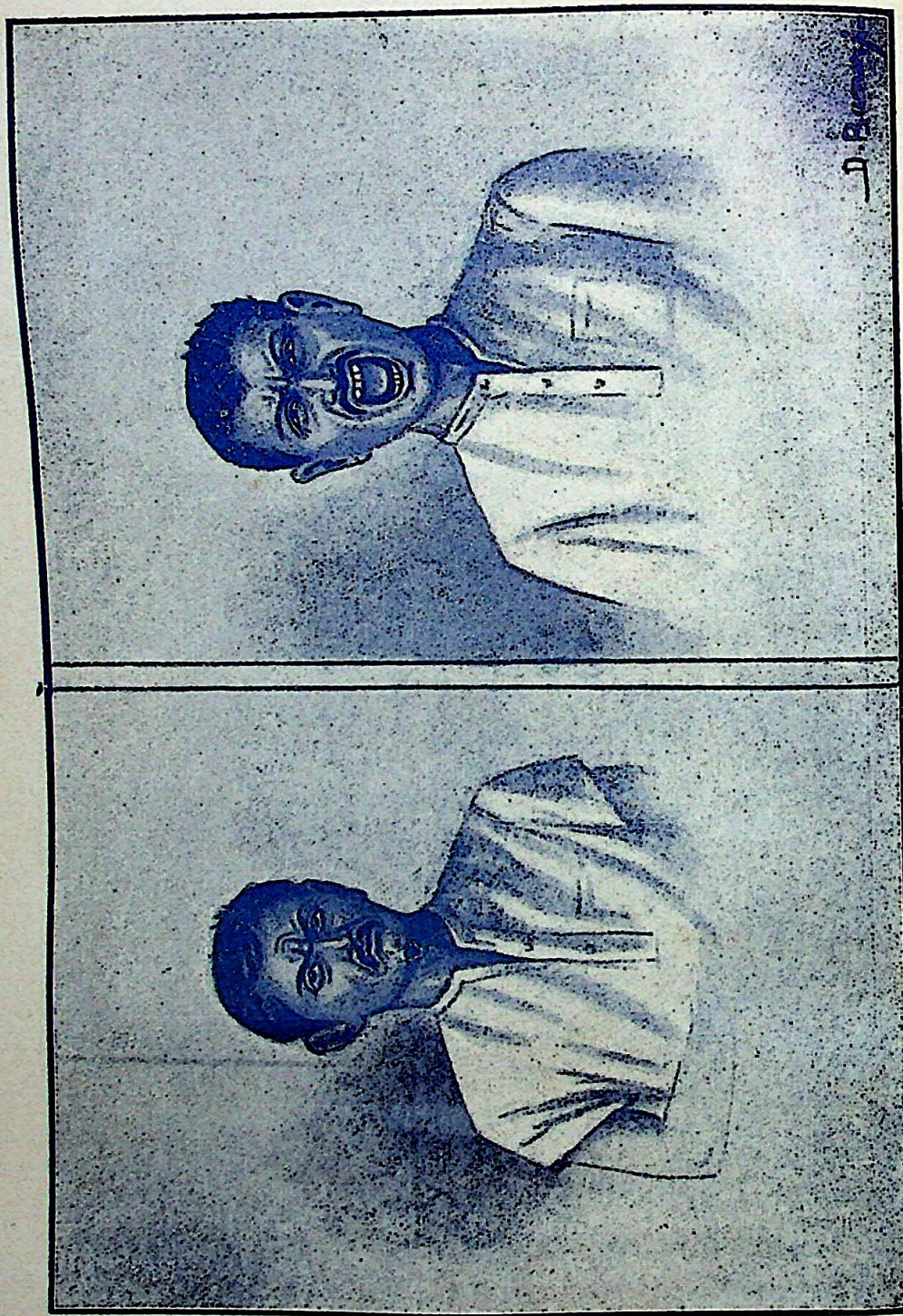

ये दोनों चित्र इलग्रह रोगियोंके हैं। एकका मुँह खुला रह गया है और दूसरेका बन्द हो गया है। पृष्ठ–२२५

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"चरक"में आमवातका उल्लेख स्वतन्त्ररूपसे नहीं है । ऊपर लिखे हुए "सन्धिवात"* के लक्षण प्रायः आमवातके लक्षणोंसे मिल जाते हैं ।

शिराग्रहके लक्षण ।

जिस रोगमें, कुपित "वायु" खूनमें घुसकर गर्दनकी शिराओंको रूखी, वेदनायुक्त और काली कर देती है, उसे "शिराग्रह" कहते हैं । यह शिराग्रह रोग असाध्य है ।

नोट—इस रोगमें, शिराओंमें रहनेवाली वायुका इलाज करना चाहिये । दशमूलके काढ़े और बिजौरेके रससे पकाये हुए तेलकी मालिश और शिरोवस्ति करनी चाहिये ।

जँभाईके लक्षण ।

वेगवाला पवन एक श्वासको पीकर, फिर उस श्वासको बाहर निकालता है और उसके साथ आलस्य तथा नींद-सी मालूम होती है, उसे "जृम्भा या †जँभाई" कहते हैं ।

हनुग्रहके लक्षण ।

जीभको घिसनेसे, चने वग़ैरः सूखे पदार्थ चबानेसे और चोट लगनेसे—ठोड़ीकी जड़में रहनेवाली "वायु" कुपित हो जाती है । वह कुपित वायु ठोड़ीको नीची करके, मुँहको बन्द कर देती है अथवा खोल देती है । इस दशामें चबाने और बोलनेमें कठिनाई होती है ।

---

*सन्धियाँ शरीरके जोड़ोंको कहते हैं । सन्धिको ग्रन्थि भी कहते हैं । अङ्गरेज़ी में Joint या Union of bones अर्थात् हड्डियोंके मिलनेका स्थान कहते हैं ।

†जँभाईको अङ्गरेज़ीमें "Yawn" या "Gape" कहते हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस रोगमें अगर मुँह बन्द रहता है, तो दाँतोंके जाबड़े आपसमें मिल जाते हैं। अगर मुँह खुला रहता है, तो दाँतोंके जाबड़े आपसमें नहीं मिल सकते।*

खुलासा—हनुग्रह रोगमें, वायु ठोड़ीकी जड़को नीचे करके मुँहको खुला रख देती है या बन्द कर देती है। हनुग्रह-रोगीको खाने और बोलनेमें बड़ी तकलीफ़ होती है।

जिह्वास्तम्भके लक्षण।

कुपित वायु, वाणीको बहानेवाली शिराओं या नसोंमें घुसकर, जीभको स्तब्ध कर देती है। ऐसा रोगी खा, पी और बोल नहीं सकता।

नोट—जिह्वा = जीभ। स्तम्भ = शरीरके किसी अङ्गका अपने कर्त्तव्य-कर्मसे हीन हो जाना। जिस रोगमें जीभ अपना कर्त्तव्य-कर्म नहीं कर सकती, उसे "जिह्वास्तम्भ" कहते हैं। जिह्वास्तम्भ रोगमें "वायु" जीभके कर्त्तव्य-कर्मकी शक्तिको नष्ट कर देती है। इस रोगके होनेसे रोगी खा, पी और बोल नहीं सकता।

गद्गदत्व, मिन्मिनत्व और मूकताके लक्षण।

कफ-मिली वायु, शब्दको चलानेवाली धमनी नाड़ियोंको ढककर, मनुष्योंके वचनको क्रिया-रहित कर देती है।

यही वायु अगर ज़ोरावर होती है, तो आदमीको "मूक या गूँगा" कर देती है; और, जिसमें पदों और व्यञ्जनोंका लोप हो जाय, ऐसा "गद्गदत्व या गिनगिनापन" कर देती है।

---

*कोई-कोई हनुका अर्थ "जाबड़ा" लिखते हैं। हनुग्रहको अङ्गरेज़ीमें Lock-jaw कहते हैं। हनुग्रह होनेसे, हनु यानी ठोड़ी या जाबड़े अपने कर्त्तव्य-कर्मको नहीं कर सकते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बोलते समय पदों और व्यञ्जनों के लोप हो जानेको "गद्गदत्व" या "गिनगिनाना" कहते हैं।

गूँगेकी तरह नाकमें बोलनेको "मिनमिनाना" कहते हैं और गूँगेपनको "मूकता" कहते हैं।

यद्यपि इन तीनों रोगोंके पैदा होनेकी एक ही जगह है; तो भी वातादिक दोषों की कमी-बेशी से अथवा प्रारब्धसे, एक रोगके तीन भेद हो जाते हैं।

नोट—याद रखो, इन तीनों रोगोंको पैदा करनेवाली "कफ-मिली वायु" है। इन रोगोंमें "सारस्वत घृत" और "कल्याणकावलेह" अच्छे हैं।

प्रलापके लक्षण।

अपने कारणोंसे कुपित हुई वायुसे, जो मनुष्य असम्बद्ध और व्यर्थकी बातें करता है, उसे "प्रलाप" कहते हैं।

नोट—प्रलापके माइने बे-सिर-पैरकी बातें करना, बच्चोंकी-सी बातें करना वाहियात बकवाद करना या व्यर्थ वाक्य व्यय करना है। प्रलाप रोग पित्तसे भी होता है और वातसे भी। पित्तके कारणसे जो प्रलाप होता है, उसमें रोगीको सब ज्ञान रहता है। वह समझता है कि, मैं वृथा बक रहा हूँ। किन्तु वात-कफके प्रलापमें रोगीको ज्ञान नहीं रहता। वह बेहोशीमें बकता है। पित्तके प्रलापको भी मूर्ख वैद्य "वात-कफ"का समझकर गरम दवाएँ देता और रोगीको मार डालता है।

रसाज्ञानके लक्षण।

भोजन करते समय, जिस मनुष्यकी जीभ खट्टे, मीठे, चरपरे आदि रसोंको नहीं जान सकती, उसे "रसाज्ञान" रोग है।

खुलासा—खट्टे, मीठे, कड़वे, कसैले, चरपरे और खारी रसोंका ज्ञान जीभसे होता है। जब हम जीभसे इन रसोंको न जान सकें, तब "रसाज्ञान" रोग समझना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्वक्शून्यताके लक्षण।

चमड़ेको छूनेसे शीतल, गरम, नर्म और सख्तका ज्ञान होता है। जिसको छूनेसे गरम-सर्द आदिका पता न लगे, उसे "त्वक्शून्य" रोग है।

नोट—चमड़ेके सूने हो जानेको "त्वक्शून्यता" या "सुन्नबहरी" कहते हैं।

मन्यास्तम्भके लक्षण।

दिनमें सोनेसे अथवा विपरीत आसनपर बैठनेसे अथवा विपरीत रीतिसे ऊपरको गर्दन करके देखनेसे "वायु" कुपित हो जाती है।

कुपित हुई वायु कफसे मिलकर, गर्दनके पिछले हिस्सेमें रहने-वाली "मन्या" नामकी शिराको स्तब्ध कर देती है। इसको "मन्या-स्तम्भ" कहते हैं। मन्यास्तम्भ-रोगी गर्दनको फिरा नहीं सकता।

बाहुशोषके लक्षण।

कन्धोंमें रहनेवाली "वायु" कुपित होकर, कन्धोंके बन्धनोंको सुखा देती है। कन्धोंके बन्धन सूख जानेसे अत्यन्त वेदनावाला "बाहुशोष" रोग होता है।

अपबाहुकके लक्षण।

बाहुमें रहनेवाली "वायु", बाहुकी शिराओंको सुकेड़कर, अपबाहुक रोग पैदा करती है।

नोट—कन्धेसे हाथ तकके अङ्गको "बाहु" कहते हैं। अंगरेज़ीमें "Arm" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

JNANA SIMHASAN JNANAMAN...
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 1633

बाहु शोष रोगी।

इस रोगीके कन्धेमें रहनेवाली वायुने कुपित होकर कन्धोंके बन्धन सुखा दिये हैं। देखिये, इसकी बाँह सूख गई है। (पृष्ठ २२८)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

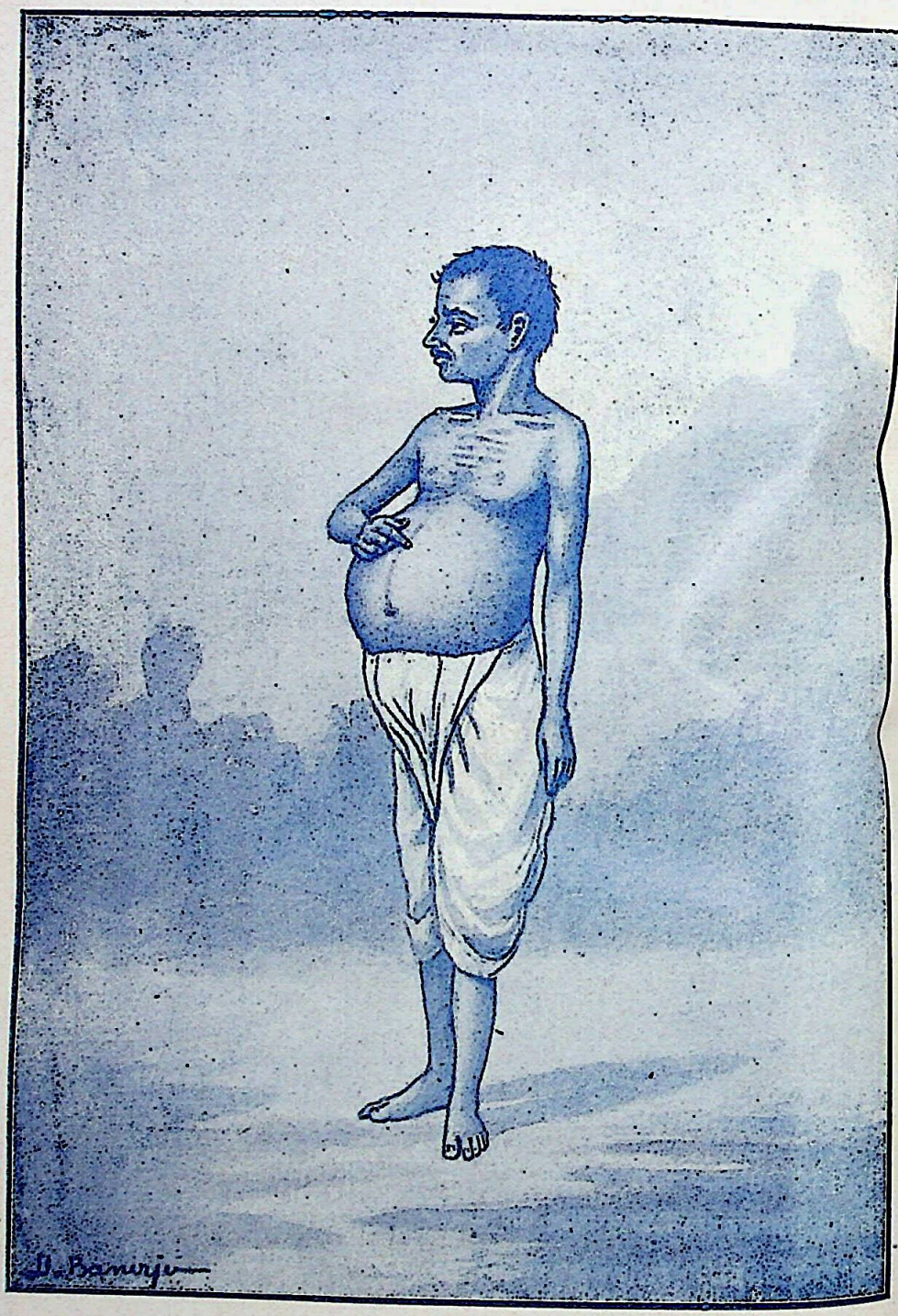

आध्मान रोगी।

इस रोगीका पेट और पेड़ू फूले हुए हैं। पेट मशकके समान हो रहा है।

(पृष्ठ—२२६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अष्ठीला रोगी। (पृष्ठ—२२६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विश्वाचीके लक्षण।

बाहुकी पीठसे लेकर हाथके ऊपरी भाग और उँगलियों तक 'कंडरा' नामकी मोटी नसें हैं। "कुपित वायु" जब उन कंडरा नामकी नसोंको दूषित कर देती है; तब मनुष्य न तो बाँहोंको फैला सकता है, न सुकेड़ सकता है और न और ही कोई काम कर सकता है। यह रोग दोनों बाँहोंमें होता है और कभी-कभी एक बाँहमें भी होता है। इसे "विश्वाची" कहते हैं।

उर्द्ध्ववातके लक्षण।

अपने कारणोंसे कुपित हुई "समान वायु" और कफ-वात, नीचेसे रुककर, बारम्बार डकार आनेका रोग उत्पन्न करते हैं, इस रोगको "उर्द्ध्ववात" कहते हैं।

आध्मानके लक्षण।

जब, नीचेकी वायुके रुकनेसे, पेटमें जोरका दर्द और गड़गड़-गड़गड़ शब्द होता है तथा पेट मशककी तरह फूल जाता है, तब "आध्मान" रोग कहते हैं।

प्रत्याध्मानके लक्षण।

प्रत्याध्मान रोग, पसली और हृदयको छोड़कर, आमाशयमें पैदा होता है। उसमें कफके कोपसे वायु रुक जाती है।

वात-अष्ठीलाके लक्षण।

नाभिके नीचे जो गोल, पथरीके समान सख्त और भारी, ऊँची, ऊपरी भागमें लंम्बी और ठहरी हुई अथवा चंचल गाँठ होती है, उसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"वात-अष्ठीला" कहते हैं। यह गाँठ लिंग, योनि और गुदाको रोक देती है; इसलिये मल, मूत्र और वायु रुक जाते हैं।

नोट—वात + अष्ठीला = वाताष्ठीला। "वाताष्ठीला" वायु या हवाकी गाँठ होती है। यह नाभिके नीचे होती है। यह लिङ्ग, योनि और गुदा-द्वारको रोक लेती है, इसीसे न पाखाना होता है न पेशाब और न अधोवायु ही खुलती है। "वाताष्ठीला" लिखा देखकर, पित्तकी और कफकी अष्ठीला मत समझ लेना। पित्त और कफकी अष्ठीला होती ही नहीं।

प्रत्यष्ठीलाके लक्षण।

पेटमें वायु, विष्ठा और पेशाबको रोकनेवाली एक गाँठ होती है। उसके होनेसे दर्द होता है। उसको "प्रत्यष्ठीला" कहते हैं।

नोट—वाताष्ठीला नाभिके नीचे होती है; पर प्रत्यष्ठीला नाभिके ऊपर होती है।

तूनीके लक्षण।

मूत्राशय और मूत्राशयसे पैदा होकर, गुदा, लिङ्ग और योनिमें भेदनेकी-सी पीड़ा करती हुई जो वेदना नीचेकी तरफ जाती है, उसे "तूनी" कहते हैं।

प्रतितूनीके लक्षण।

जो वेदना गुदा और लिङ्ग या योनिसे उठकर, उल्टी दौड़कर, और बारम्बार शान्त होकर, बड़े ज़ोरसे पक्वाशयमें जाती है, उसे "प्रतितूनी" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

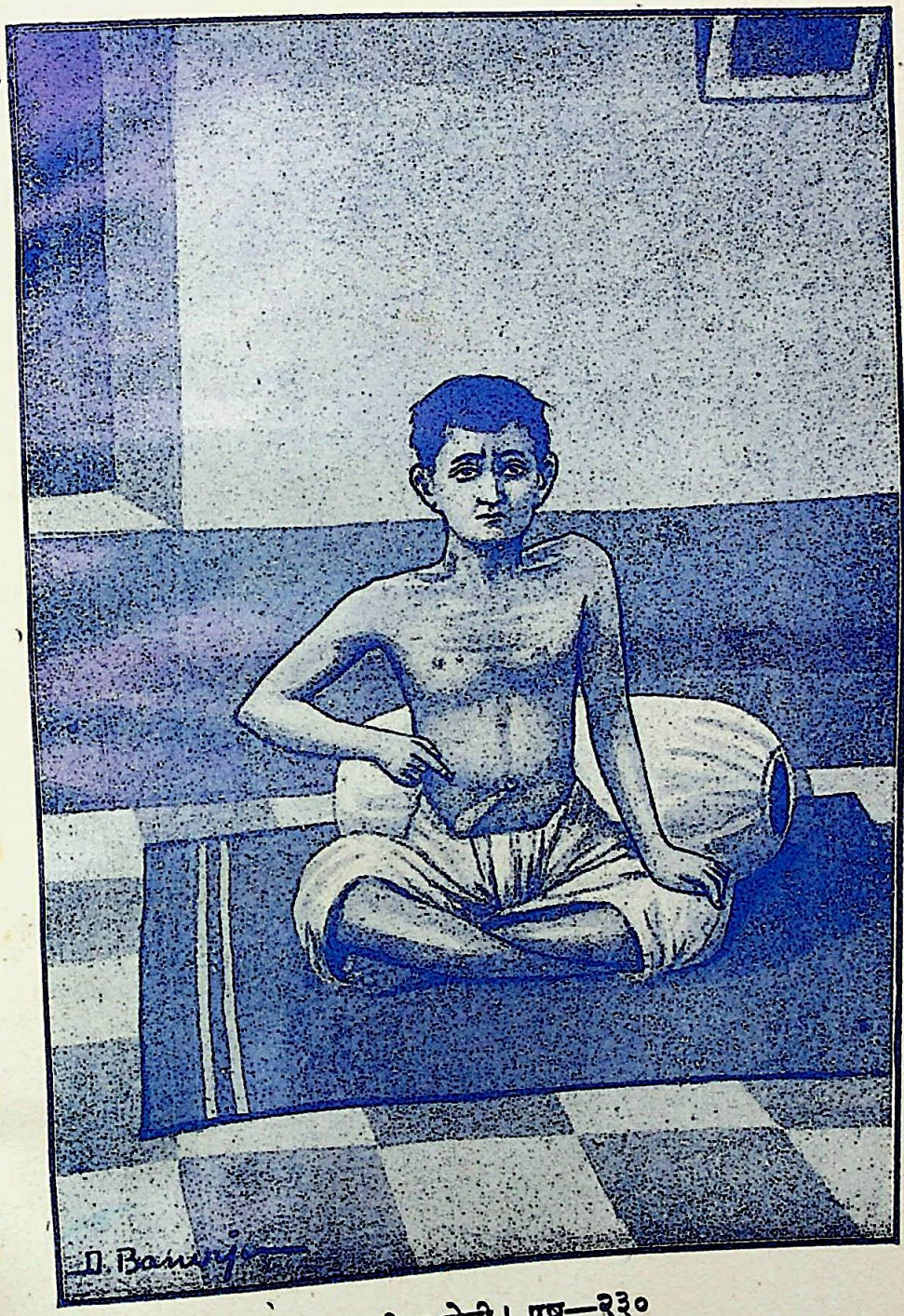

प्रत्यष्ठीला रोगी। पृष्ठ—२३०

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खञ्जो या लँगड़ा। पृष्ठ—२३१

पंगु या लूला। पृष्ठ २३१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुहुर्मूत्र और मूत्रनिग्रहके लक्षण।

(बारम्बार पेशाब होना और पेशाब रुकना)

जब वायु कुपित नहीं होती है, तब तो वह पेशाबको अच्छी तरहसे बाहर निकालती है; किन्तु जब वह कुपित हो जाती है, तब वह मुहुर्मूत्र—बारम्बार पेशाब होने और मूत्रनिग्रह—पेशाब रुकने वगैरःके अनेक विकार पैदा कर देती है।

खंजता और पंगुताके लक्षण।

(लँगड़ापन और लूलापन)

कमरमें रहनेवाली वायु, कुपित होकर, कमरसे लेकर पाँवके गुल्फों तककी मोटी नसोंको खींचती या चलते समय कँपाती है, तब मनुष्य "खञ्ज" या "लँगड़ा" हो जाता है।

जब कमरसे पाँवकी गाँठों तक, दोनों साथलोंकी चलनेकी क्रिया नष्ट हो जाती है, तब मनुष्य "पंगु या लूला" हो जाता है।

नोट—खंज रोगीका एक पाँव जकड़ जाता है और पंगुके दोनों पाँव जकड़ जाते हैं। लँगड़ेका एक पाँव और लूलेके दोनों पाँव बेकाम हो जाते हैं।

कलायखंजके लक्षण।

जो मनुष्य लँगड़ेकी तरह चलता और चलते समय काँपता है तथा जिसके सब सन्धि-बन्धन ढीले हो जाते हैं, उसे "कलायखञ्ज" हुआ जानो।

नोट—(१) कलायखञ्जवाला ज्योंही चलनेको तैयार होता है या चलना चाहता है, थरथर काँपता और विकल होकर चलता है; पर खञ्ज या लँगड़ेमें ये लक्षण नहीं होते। इन दोनोंमें यही भेद है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—(२) खञ्जता, पंगुता और कलायखञ्जका इलाज एक ही है। कलायखञ्जमें स्नेह-क्रिया यानी तैलादिकी मालिश वग़ैरः विशेष की जाती है, इतना ही भेद है।

क्रोष्टुकशीर्षके लक्षण।

वात और खूनसे, घुटनोंके बीचमें, गीदड़के माथेके जैसी, बहुत बड़ी, मोटी और अत्यन्त पीड़ावाली सूजन होती है, उसको "क्रोष्टुकशीर्ष" कहते हैं।

नोट—क्रोष्टु स्यार या गीदड़को कहते हैं। घुटनोंके बीचमें स्यारके मस्तकके समान बहुत मोटी सूजन होती है, इसीलिए इस रोगको "क्रोष्टुकशीर्ष" कहते हैं।

खल्लीके लक्षण।

जिस वायुसे पाँव, जाँघ, साथल और हाथकी जड़—ये सब ठिठरा जाते या काँपते हैं, उसे "खल्ली वात" कहते हैं।

वातकण्टकके लक्षण।

पाँवके ऊँचा-नीचा पड़ने अथवा मिहनतसे—वातके कारण—जो पीड़ा टखनोंमें होती है, उसे "वातकण्टक" कहते हैं।

नोट—ऊँचा-नीचा पाँव पड़ने अथवा राह चलनेकी थकानसे वायु कुपित होती है और टखनोंमें पीड़ा करती है।

पाद-दाहके लक्षण।

पित्त और खूनसे मिलकर "वायु" पैरोंमें दाह या जलन करती है। चलते समय विशेष जलन होती है। इस रोगको "पाद-दाह" या "पैरोंकी जलन" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

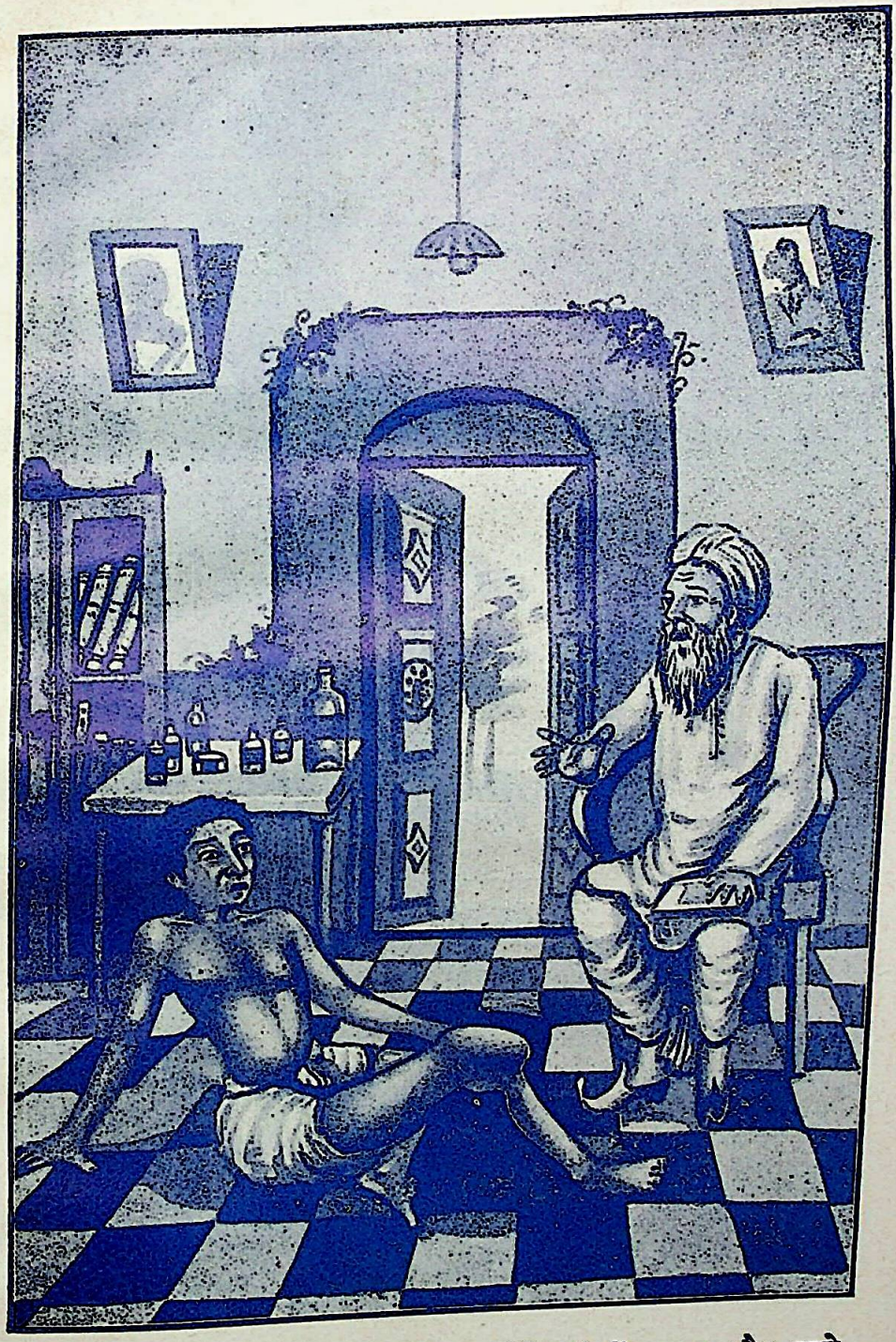

क्रोष्टुकशीर्ष रोगी—इस रोगीके घुटनोंके बीचमें, वात और रक्तसे, गीदड़के मस्तकके समान बड़ी और मोटी सूजन पैदा हो गई है। रोगी अपना घुटना वैद्य महाशयको दिखा रहा है। (पृष्ठ २३२)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

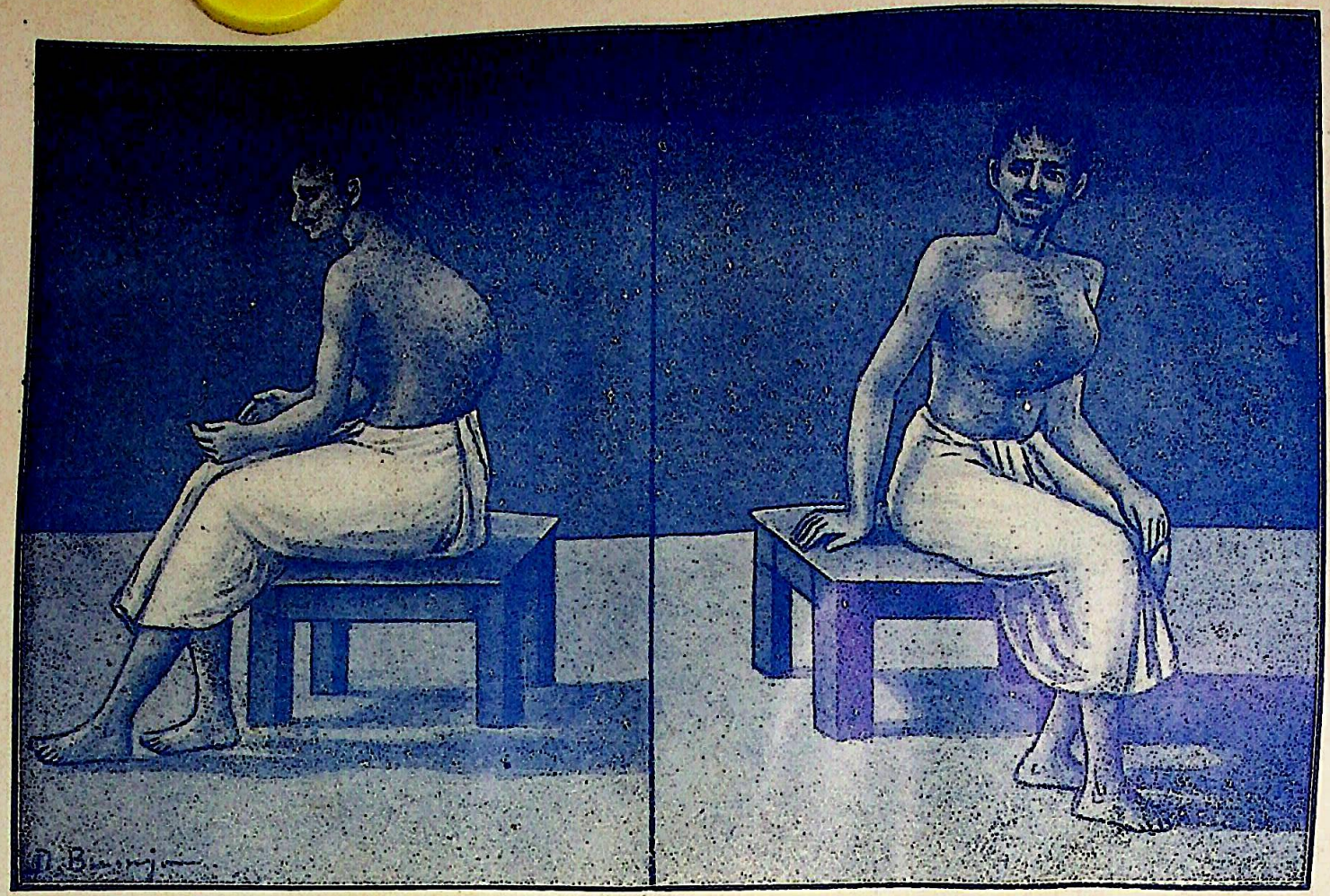

पीठसे कुबड़ा । छातीसे कुबड़ा । पृष्ठ—२३३

कुब्जक रोगमें छाती या पीठ अनुक्रमसे ऊँची हो जाती हैं । वायु जब हृदय या पीठको ऊँचा करती है, तब रोगीको कुब्जक या "कुबड़ा" कहते हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पादहर्षके लक्षण ।

कफ और वायुके कुपित होनेसे—दोनों पाँव रोमाञ्चयुक्त होकर झनझन करने लगते हैं, इसीको "पादहर्ष" या "पैर-सोना" कहते हैं।

नोट—अङ्गरेज़ीमें पादहर्षको "Tingling of the feet" यानी पैरोंका झनझन करना कहते हैं।

कुब्जकके लक्षण ।

कुपित हुई "वायु" जब हृदय या पीठको ऊँचा करती है, तब रोगीको "कुब्जक" या कुबड़ा कहते हैं।

नोट—कुब्जक रोगमें छाती या पीठ अनुक्रमसे ऊँची हो जाती हैं। अन्तरायाममें, मनुष्य छातीसे झुक जाता है और वाह्यायाममें पीठसे झुक जाता है। फिर इनमें भेद क्या है ? इसका जवाब यह है कि, अन्तरायाम और वाह्यायाममें शरीर तो जैसा-का तैसा रहता है; आदमी छाती या पीठसे झुक जाता है; पर कुब्जकमें तो छाती या पीठ शरीरके बाहर निकल जाती हैं। अन्तरायाम और वाह्यायाममें, कुब्जककी तरह, छाती और पीठ शरीरके दायरेसे बाहर नहीं निकल जातीं, जहाँ-की-तहाँ ही रहती हैं, केवल आदमी झुक जाता है। अङ्गरेज़ीमें कुब्जकको "Hump-backed" कहते हैं।

तन्द्राके लक्षण ।

वातसे और वात-कफसे "तन्द्रा" पैदा होती है। उसमें भारीपन और अरुचि होती है।

नोट—तन्द्राको अङ्गरेज़ीमें Light Sleep, Slumber और Drowsiness कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कम्पवायुके लक्षण।

जो सब अङ्गों और सिरको कँपावे, उसे "कम्पवायु" कहते हैं।

आक्षेपक वातके सामान्य लक्षण।

जब वायु कुपित होकर, सब धमनी-नाड़ियोंमें घुस जाती है, तब वह वहाँ बारम्बार संचार करके, देहको बारम्बार आक्षिप्त करती है—हाथीपर बैठे हुए आदमीकी तरह सारी देहको चलायमान करती है। देहके बारम्बार चलायमान होनेको ही "आक्षेपक रोग" कहते हैं। कहा है:—

आक्षेपयत्याशु मुहुः शरीरमागत्य नाड़ीः पवनः प्रदुष्टः।
ज्ञेयस्तदाक्षेपक संज्ञकोऽस्यवेगे गते स्वास्थ्यमुपैतिमर्त्यः॥

जब दूषित वायु, सब नाड़ियोंमें घुसकर, शरीरको बारम्बार आक्षिप्त करती है और उसका वेग या ज़ोर कम होनेपर रोगी स्वस्थ या तन्दुरुस्त मालूम होता है, तब "आक्षेपक वात" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, हाथीपर बैठनेवालेको जैसे झकोले लगते हैं, "आक्षेपक वात रोगी" को भी वैसे ही झकोले लगते हैं। जिस तरह हाथीपर बैठा हुआ फीलवान बारम्बार हिलता है; उसी तरह "आक्षेपक वात रोगी" भी बारम्बार हिलता है।

अपतन्त्रक और अपतानक—आक्षेपक वातके दो भेद या अवस्था-विशेष हैं। आगे हम उनके लक्षण लिखते हैं:—

अपतन्त्रकके लक्षण।

जब रूखे भोजन आदि कारणोंसे कुपित हुई वायु, अपनी जगहको छोड़कर, ऊपरकी तरफ जाती है; तब वह हृदय, मस्तक और कन-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पटियोंमें पीड़ा करती है तथा शरीरको धनुषकी तरह झुका या नवा देती है। अगर रोगी चलता है, तो बेहोश कर देती है। रोगी बड़े कष्ट से साँस लेता है। उसके नेत्र स्थिर हो जाते, मिंच जाते या ठहर जाते हैं और वह बेहोश होकर कबूतरकी तरह कूँजता है। इस रोगको "अपतन्त्रक" रोग कहते हैं।

नोट—अपतन्त्रकका अर्थ अंगरेज़ीमें Spasmodic contraction of the body लिखा है।

अपतानकके लक्षण।

इस रोगमें दृष्टिका स्तम्भन हो जाता है; संज्ञा जाती रहती है—सुध-बुध नहीं रहती; वायुके कारणसे कूँजनेकी-सी आवाज़ आती है। जब वायु हृदयको छोड़ देती है, तब रोगी सुखी हो जाता है; लेकिन जब वह हृदयको फिर पकड़ लेती है, तब रोगी फिर बेहोश हो जाता है। इस दारुण रोगको "अपतानक" कहते हैं।

दण्डापतानक, अन्तरायाम, बाह्यायाम और अभिघात-आक्षेप—इन भेदोंसे "आक्षेपक" रोग चार तरहका होता है।

दण्डापतानकके लक्षण।

जिस रोगमें "कफसे मिली हुई वायु", धमनी-नाड़ियोंमें घुसकर, शरीरको दण्डेकी तरह जकड़ देती है अथवा दण्डे या लकड़ीके समान कर देती है, उसे "दण्डापतानक" कहते हैं।

धनुस्तम्भके लक्षण।

दूषित वायु, नसोंको संकुचित करके या सुकेड़कर, शरीरको धनुष या कमानकी तरह नवा देती है, इसलिये इस रोगको "धनुस्तम्भ" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धनुस्तम्भ रोगमें शरीरका रंग बदल जाता है, दाँत जकड़ जाते हैं, अङ्ग ढीले हो जाते हैं, बेहोशी होती और पसीने आते हैं। धनुस्तम्भवाला दस दिन तक नहीं जीता।

नोट (१)—धनुस्तम्भके लक्षण "अन्तरायाम" और "बहिरायाम" के साधारण रूप हैं। शरीर आगेको झुक जाय तो "अन्तरायाम" और पीछेको झुक जाय तो "बाह्यायाम" कहते हैं।

नोट—(२)—"भावप्रकाश" में लिखा है, अन्तरायाम और धनुस्तम्भ रोग एक नहीं हैं। दोनोंमें भेद है। अन्तरायाममें तो उँगली आदिमें आक्षेप होता है और आँखें पथरा जाती हैं; पर धनुर्वातमें तो मनुष्य केवल कमानके समान नब जाता है। अँगरेज़ीमें इस रोगको टेटेनस (Tetanus) कहते हैं।

अन्तरायामके लक्षण।

पाँवकी उँगली, पाँवकी गाँठ, पेट, हृदय, वक्षस्थल,—छाती और गलेमें रहनेवाली वायु, वेगवान होकर, वहाँके नस-जालको सुखाकर बाहर निकाल देती है; तब मनुष्यके नेत्र स्थिर हो जाते यानी पथरा जाते हैं, ठोड़ी जकड़ जाती है, पसलियोंमें दर्द होता है, मुँहसे कफ गिरता है और जब मनुष्य आगेकी तरफ झुक जाता है, तब कहते हैं कि "अन्तरायाम" वात रोग हुआ है।

बाह्यायामके लक्षण।

जिस तरह अन्तरायाममें, वायु आगेकी नसोंमें रहकर, अन्तरायाम करती है—मनुष्यको आगेकी तरफ झुका देती है; उसी तरह शरीरके पिछले भागकी नसोंमें रहनेवाली वायु, पीछेके भागको नबाकर "बाह्यायाम" करती है; अर्थात् वक्षस्थल—छाती, कमर और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाँघोंको पीछेकी तरफ झुका या मोड़ देती है। यह रोग असाध्य होता है।

नोट—अन्तरायाम और बहिरायाम दोनोंमें ही मनुष्य झुकता है। अन्तरायाम धनुस्तम्भमें आगेकी ओर; और बहिरायाम धनुस्तम्भमें पीछेकी ओर झुकता है। डाक्टर लोग इस रोगको "टेटेनस" कहते हैं। शुरूमें हाथ-पाँवोंकी नसें खिंचती हैं, जाबड़े सुकड़ जाते हैं, गुद्दी और पीठमें दर्द होता है तथा कोई चीज़ निगली नहीं जाती। रोगके बढ़ावमें, कमर कमानकी तरह आगेकी तरफ या पीछेकी तरफ मुड़ जाती है। यह रोग क्षीणता, सर्दी, सर्द हवा और कुचला वग़ैरः विष खानेसे होता है। साधारण लोग इस रोगको "धनुषवाय" कहते हैं। क्योंकि इस रोगमें शरीर 'धनुषाकार' हो जाता है। वैद्य लोग "धनुर्वात" कहते हैं।

अभिघाताक्षेपक वात।

अभिघातकृताक्षेपको आगन्तुजाक्षेप भी कहते हैं। यह दण्डे वग़ैरःकी चोट लगनेसे होता है। इसके लक्षण आक्षेपक वातके सामान्य लक्षणोंके समान समझने चाहिये। (देखो सफा २३४)

नोट—आक्षेपक वातके साथ कफ-पित्तका अनुबन्ध भी हो जाता है; इसलिये आक्षेपकके चार भेद माने गये हैं—(१) कफान्वित वायुसे, (२) पित्तान्वित वायुसे, (३) केवल वायुसे, और (४) अभिघातज—दण्डे वग़ैरःकी चोटसे। वायुके कुपित होनेसे, गर्भपात होनेसे और बहुत-सा खून निकलनेसे जो आक्षेपक रोग होता है, उसे "केवल वातजन्य" समझना चाहिये।

जिस रोगमें वायुसे हाथ-पाँव, माथा, पीठ और श्रोणी ये जकड़ जाते हैं; सारा शरीर लकड़ीके समान हो जाता है, उसे "दण्डापतानक" कहते हैं। जो केवल वायुसे पैदा होता है और जिसमें शरीर हाथीपर बैठे हुए फीलवानकी तरह हिला करता है, उसे "दण्डकाक्षेप" कहते हैं। यह स्वभावसे ही असाध्य होता है।

जिस रोगमें कफसे व्याप्त वायु धमनियोंमें रहती है, धमनियाँ लकड़ीके समान स्तब्ध हो जाती हैं और शरीर हाथीपर बैठे हुए महावतकी तरह हिला करता है, उसे "दण्डापतानकाक्षेप" कहते हैं। यह कष्टसाध्य है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सर्वाङ्ग वातके लक्षण।

सब अङ्गोंमें वायुका कोप होनेसे शरीरकी शिराएँ काँपने लगती हैं, अङ्ग टूटने लगते हैं, और वेदनाके मारे सन्धियाँ फटने लगती हैं—जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "सर्वाङ्ग वात" कहते हैं।

गृध्रसीके लक्षण।

कूलेकी सन्धि, कमर, पीठ, उरु, जाँघ और पाँवोंमें स्तब्धता, वेदना और सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है तथा कूलेकी सन्धि आदि शिराएँ बारम्बार काँपती हैं—जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "गृध्रसी" कहते हैं।

नोट—यह रोग कमरसे पैरके टखनेतक होता और शरीरका इतना हिस्सा बेकाम हो जाता है। अँगरेज़ीमें इसे Rheumatism of the Loins कहते हैं। शायद डाक्टर लोग इसे सिआटिका (Sciatica) कहते हैं। सिआटिकाका अर्थ—कूलेका दर्द है। डाक्टर गन साहब कहते हैं, सिआटिका न्यूरेलजियाकी एक क़िस्म है। यह रोग कूले और जाँघोंके स्नायुओंमें या उनकी अगल-बगलमें हमला करता है।

गृध्रसीके भेद।

वातज और कफज—इस तरह गृध्रसी दो तरहकी होती है। वातज गृध्रसीमें सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है, देह अत्यन्त बाँकी हो जाती है; घुटने, जाँघ और साथलकी सन्धियोंकी शिराएँ काँपती हैं और बहुत स्तम्भ होता है। अगर गृध्रसी रोग वात और कफ दोनोंसे होता है; तो शरीर भारी रहता है, अग्नि मन्द होती है, तन्द्रा आती है, मुँहसे पानी गिरता है और अन्नपर रुचि नहीं रहती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आयुर्वेदीय मतसे—

आर्दित वात या लकवेका वर्णन।

सामान्य लक्षण।

जिसे संस्कृतमें अर्दित रोग कहते हैं, उसे हिकमतमें लकवा और अङ्गरेज़ीमें फेशियल पैरेलिसिस (Facial Paralysis) कहते हैं। इस रोगके होनेसे मनुष्यका आधा चेहरा टेढ़ा हो जाता है।

निदान-कारण।

अर्दित या लकवेके कारण ये हैं:—

(१) ऊँची आवाज़से बोलना।

(२) सुपारी वग़ैरः सख्त चीज़ें खाना।

(३) अत्यन्त हँसना।

(४) अत्यन्त जँभाई लेना।

(५) ज़ियादा बोझ उठाना।

(६) गर्दनको टेढ़ी-बाँकी करके विषम रीतिसे सोना।

(७) विषम रीतिसे बैठना।

नोट—"वाग्भट्ट" ने अर्दितके कारणोंमें "धनुष चढ़ाना या खींचना" अधिक लिखा है।

सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे, सिर, नाक, होठ, ठोड़ी, ललाट और नेत्रोंकी सन्धियोंमें रहनेवाला "वायु" कुपित हो जाता है। कुपित वायु मुँहमें पीड़ा करता है; यानी "अर्दित" या "लकवा" पैदा करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्दित वात या लकवेके रूप।

जब अर्दित या लकवा पैदा होता है, तब मनुष्यका आधा मुँह टेढ़ा पड़ जाता है, गर्दन टेढ़ी हो जाती है, सिर काँपने लगता है, रोगी बोल नहीं सकता; आँख, नाक, भौंह और गालमें वेदना होती है। ये टेढ़े हो जाते और फड़कते हैं। अर्दित रोग चेहरे या मुखकी जिस ओर होता है, उस ओरकी गर्दन, ठोड़ी और दाँतोंमें पीड़ा होती है। वैद्य इस रोगको "अर्दित" या "लकवा" कहते हैं।

"चरक" में लिखा है, जिस समय शरीरके बाँये या दाहिने अंगका वायु कुपित होता है, उस समय वह उसी तरफ़के खून, भुजा, पैर और स्नायु नामकी नसोंको सुखाकर सुकेड़ देता है और उसी तरफ़के आधे मुँह—चेहरेको टेढ़ा कर देता है। जिस तरफ़का चेहरा टेढ़ा होता है, उस तरफ़की नाक, भौंह, ललाट, नेत्र और ठोड़ी ये अंग टेढ़े हो जाते हैं। भोजनके समय रोगी टेढ़ा होकर मुँहमें कौर देता है और उस समय ही नाकका टेढ़ापन खूब साफ़ तौरसे दिखाई देता है। बोलते समय रोगीके नेत्र स्तब्ध हो जाते हैं। छींक आनेको होती है, पर बाहर नहीं आती। जीभ दुर्बल और बाहर निकली हुई होती है। बोल बन्द हो जाता है, कान बन्द हो जाता है और दाँत सारे-के-सारे चलायमान रहते हैं। हाथ, पैर, आँख, जाँघ, उरु—साथल, कनपटी और गुह्यमें वेदना होती है। यह रोग आधे शरीरमें अथवा आधे मुख या आधे चेहरेमें होता है। इसे "अर्दित" या "लकवा" रोग कहते हैं।

"वाग्भट्ट"ने लिखा है, अर्दित रोगमें रोगीका आधा मुँह एवं हँसना, बोलना और देखना ये टेढ़े हो जाते हैं। रोगीका सिर काँपता या हिलता है, बोली बन्द हो जाती है, नेत्र स्तब्ध हो जाते हैं। दाँत चलते हैं, आवाज़ बिगड़ जाती है, कानसे सुनाई नहीं पड़ता, छींक नहीं आती, यादमें भ्रम हो जाता है, सोते समय तकलीफ होती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

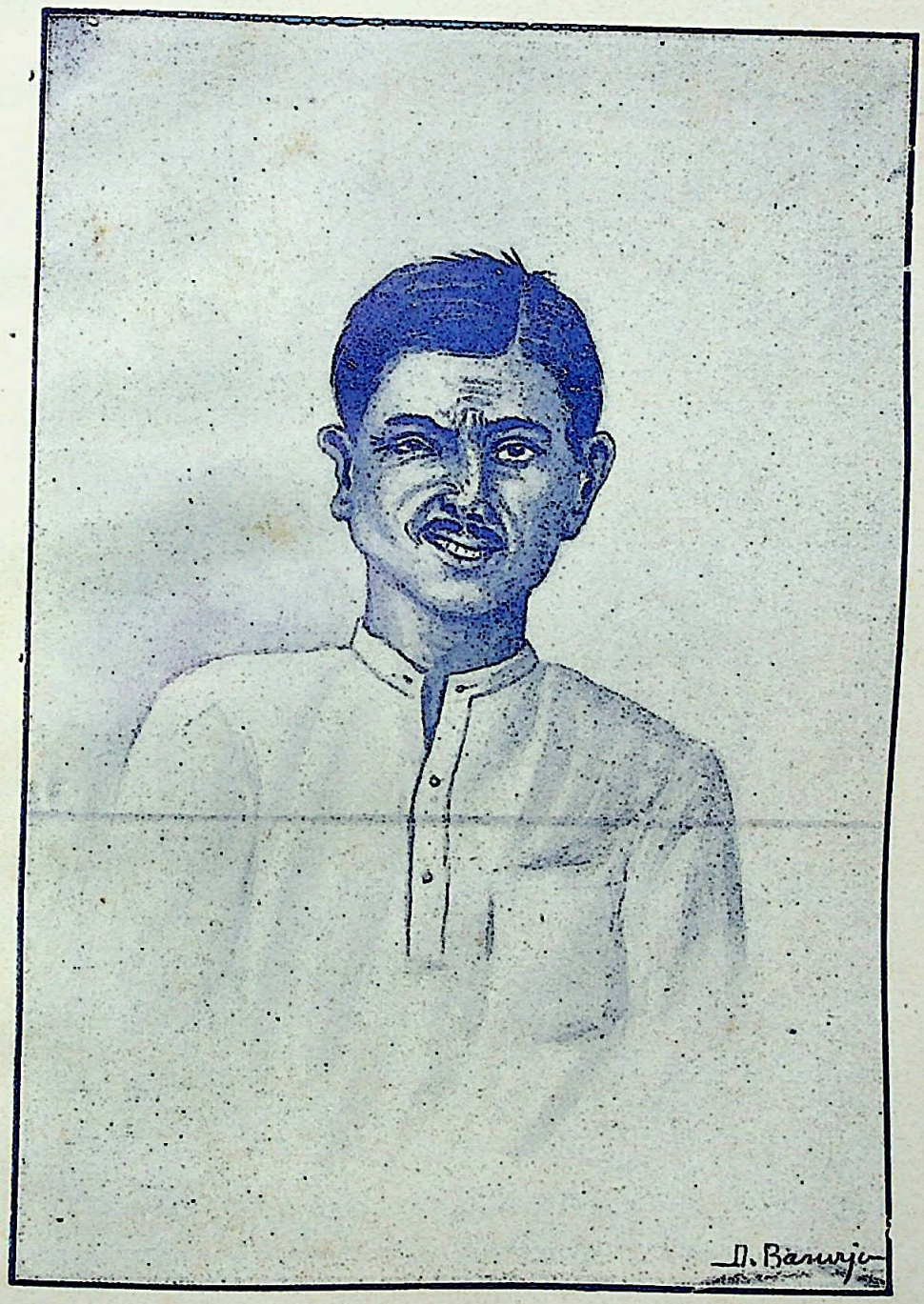

अर्दित वात या लकवेका रोगी। पृष्ठ—२३८-२४५

देखिये, इस रोगीका बाँयी तरफ़का चेहरा टेढ़ा हो गया है, उसके साथ ही उसके नाक, भौं, ललाट, नेत्र और ठोड़ी आदि भी विकृत या टेढ़े हो गये हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, जोतोंके ऊपर आधे शरीरमें और नीचले होठमें तीव्र पीड़ा होती है इत्यादि।

नोट—किसीने दो लक्षण ज़ियादा और किसीने दो कम लिखे हैं; पर अर्दित-रोगमें आधा मुख या चेहरा टेढ़ा हो जाता है, यह बात सभीने एक मतसे लिखी है। कहा है—

पक्षाभिघातेन भवेत्प्रसुप्तो देहार्द्धभागः शिशिरप्रबन्धः।
वक्रीभवत्यर्द्धमुखंच यस्मिन्तमदितं व्याधिमुदाहरंति॥

जिस रोगमें, वातकोपसे, शरीरका आधा भाग अत्यन्त शीतल होकर, स्पर्श-ज्ञान और चलनादि क्रिया-रहित हो जाता है, उसे "पक्षाघात" कहते हैं; और जिस रोगमें आधा मुँह—चेहरा—टेढ़ा हो जाता है, उसे "अर्दित" या "लकवा" कहते हैं।

इस रोगमें किसीका बाँयीं तरफका और किसीका दाहिनी तरफका चेहरा टेढ़ा होता है। जिस तरफका चेहरा टेढ़ा होता है, उस तरफके नाक, भौं, ललाट, नेत्र और ठोड़ी—ये अङ्ग भी टेढ़े हो जाते हैं।

अर्दितके तीन भेद।

वातज, पित्तज और कफज,—इस तरह, संक्षेपमें, अर्दित तीन तरहका होता है।

वातज अर्दित रोगीके मुँहसे लार गिरा करती है, पीड़ा होती है, शिराएँ फड़कती हैं, कँपकँपी आती है, ठोड़ी जकड़ जाती है, कम बोला जाता है तथा होठ सूज जाते और शूल चलते हैं।

पित्तज अर्दितवालेका मुँह पीला हो जाता है, ज्वर चढ़ आता है, प्यास बहुत लगती है तथा मोह-बेहोशी और गरमी होती है।

कफज अर्दितवालेके गले, माथे और मन्यानाड़ीमें सूजन और स्तम्भ होता है।

नोट—गर्दनके पीछेकी नसोंको मन्यानाड़ी कहते हैं।

मिले हुए अर्दित-रोगमें उन्हीं उन दोषोंके लक्षण होते हैं। सूजन और नेत्रोंमें गदलापन भी होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्दितके असाध्य लक्षण।

जो रोगी अत्यन्त क्षीण हो गया हो, जो पलक न मार सकता हो, जो अत्यन्त शुद्ध न बोल सकता हो, जिसके अर्दितको पैदा हुए तीन साल हो गये हों अथवा जिसके नेत्र, नाक और मुखसे स्राव होता हो—पानी गिरता हो, और जिसका शरीर काँपता हो, वह अर्दित-रोगी आराम हो नहीं सकता; उसका अर्दित असाध्य है।

नोट—एक यूनानी ग्रन्थ "हाविये कबीर" में लिखा है, अगर लकवा ६ महीने तक ठहर जाय, तो उसके आराम होनेकी आशा नहीं। हकीम मुहम्मद ज़करिया कहते हैं कि, मैंने देखा, एक आदमीको पहले लकवा हुआ; फिर उसे 'सकते' ने धर दबाया। बहुधा लकवेवाले चार दिनमें भी मर जाते हैं। अगर चौथा दिन निकल जाता है, तो फिर 'सकते' का डर नहीं रहता। अगर लकवा दो महीने रहेगा, तो रोग बढ़ जायगा। अगर लकवा छै महीने रहेगा, तो रोगी मुश्किलसे जियेगा।

हिकमतके मतसे—

अर्दित-वात या लकवेका वर्णन।

पूर्वरूप।

हकीम लोग कहते हैं कि, जिसे अर्दित या लकवा होनेवाला होता है, उसके मुखकी हड्डियोंमें दर्द मालूम होता है, मुखके चमड़ेकी छूनेकी ताक़त कम हो जाती है, और मुँहका आधा हिस्सा बहुत फड़कता है। ये लकवेके "पूर्वरूप" हैं। इन लक्षणोंके नज़र आते ही जान लेना चाहिये कि, "लकवा-रोग" होगा।

लकवेके लक्षण।

लकवा-रोग मुँहके अदलोंमें पैदा होता है। उस समय आँख, भौं, सिरका चमड़ा और होठ टेढ़े हो जाते हैं। चेहरेकी असली

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

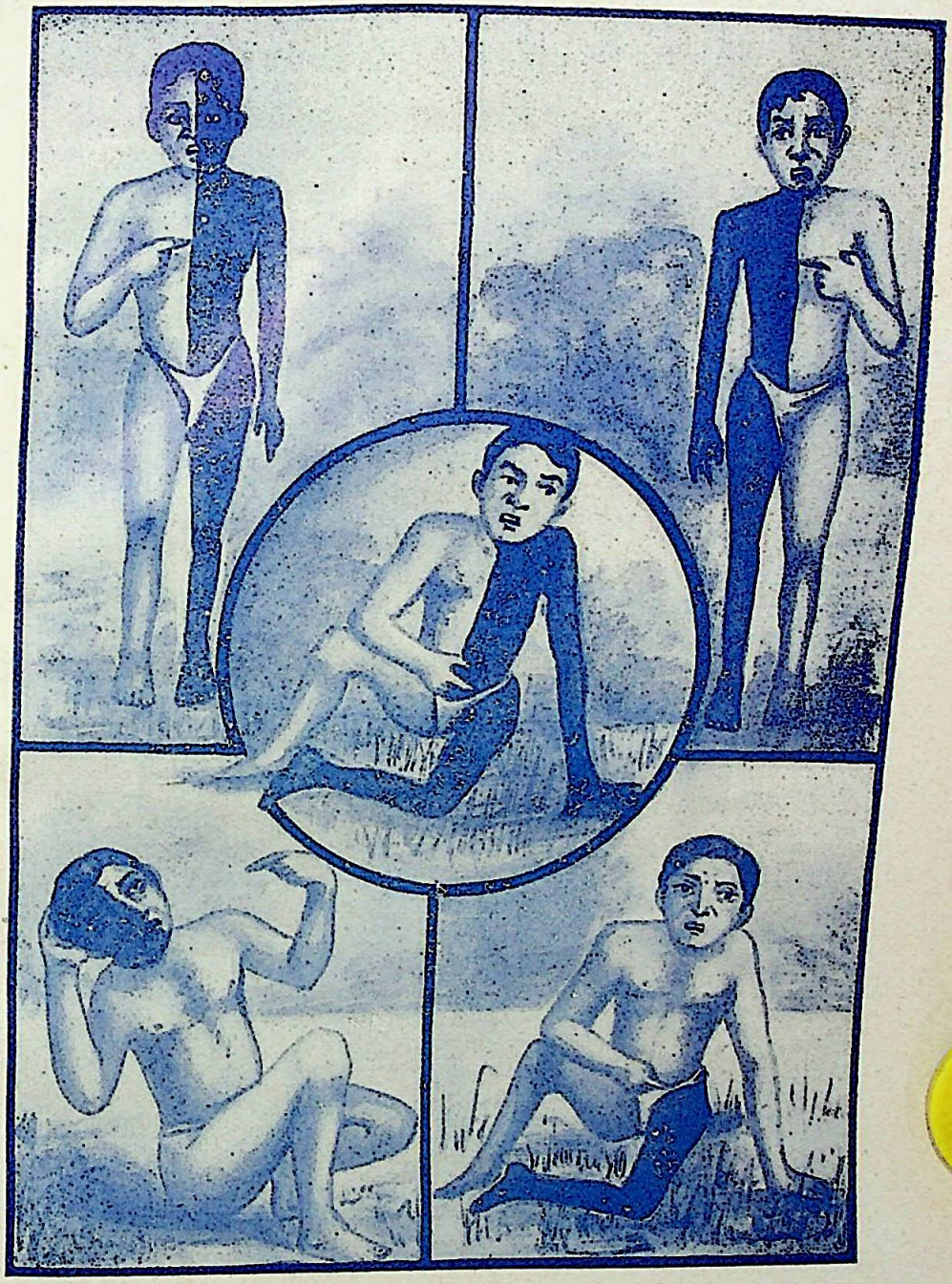

पक्षाघात और अर्दित रोगी—किसी रोगीका दाहिना आधा अङ्ग, किसीका बाँया आधा अङ्ग, किसीका नीचेका आधा अङ्ग, किसीका सिरसे पाँव तकका आधा अङ्ग और किसीका आधा चेहरा मारा गया है। जिसका एक तरफका चेहरा मारा गया है, वह अर्दित रोगी या लकवे वाला है; बाकी पक्षाघात या फालिजके रोगी हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(देखिये पृष्ठ २३९–२५३)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूरत बदल जाती है। होठ आपसमें अच्छी तरह नहीं मिल सकते। रोगी न तो किसी चीज़को चूस ही सकता है और न मुँह दबाकर खींच ही सकता है। मुँहकी फूँक सीधी नहीं निकलती, इसलिये वह चिराग़को बुझा नहीं सकता। आँखके पलक भी अच्छी तरह बन्द नहीं होते। ये सब लक्षण उस समय होते हैं, जब बीमारी चेहरेके एक तरफ होती है और बहुधा एक ही तरफ होती है। कभी-कभी यह रोग चेहरेके दोनों तरफ होते भी देखा गया है। इस हालतमें, रोग चेहरेके दोनों तरफके सारे घेरेको घेर लेता है। दोनों तरफ लकवा होनेसे, चेहरेमें टेढ़ापन तो नहीं मालूम होता, परन्तु पलकोंके आपसमें मिलनेके समय कष्ट होता है। इस दशामें, एक तरफके लकवेसे अधिक चिह्न नज़र आते हैं। हकीम 'राज़ी' महाशय कहते हैं कि, एक आदमी-को लकवा हुआ। उसका मुँह तो टेढ़ा न हुआ, पर एक आँख बड़ी मुश्किलसे बन्द होती थी और दूसरी तो क़तई बन्द न होती थी; यानी एक आँख तकलीफके साथ बन्द हो जाती थी और दूसरी खुली ही रहती थी।

लकवेके दो भेद।

हकीमोंने लकवेके दो भेद माने हैं:—(१) तशन्नुजी, (२) इस्तरख़ाई। तशन्नुजीका मतलब है, ऐंठना, खिंचना या सिमटना और इस्तरख़ाईका अर्थ है, ढीला या सुस्त होना। बहुधा तशन्नुजी लकवा ही होता है, इस्तरख़ाई बहुत कम होता है।

तशन्नुजी लकवेके लक्षण।

तशन्नुजी लकवा होनेसे, जिस ओर रोग होता है उस ओरके ललाटका चमड़ा सख्त हो जाता है, चमड़ा ऊपरकी तरफ इस तरह खिंच जाता है कि, उस तरफकी पेशानीमें सलवटें बिल्कुल नहीं रहतीं; किन्तु सिरकी खाल या गर्दनकी तरफ सलवटें पड़ जाती हैं। मुँहसे थूक बहुत कम निकलता है। जिस तरफ़ रोग होता है, उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तरफकी आँख बन्द करना कठिन हो जाता है। सिरमें दर्द बहुत होता है। ज्ञानशक्तियाँ ज्यों-की-त्यों रहती हैं और इन्द्रियाँ नहीं बिगड़तीं।

इस्तरख़ाई लकवेके लक्षण।

इस्तरख़ाई लकवेमें, दिमाग़से पतली रुतूबत उतरकर एक ओरके अद्ज़ों और पट्ठोंको तर कर देती है। उस समय पट्ठे और झिल्लियोंके सुस्त हो जानेसे, रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं; इसलिये वे अङ्ग सुस्त होकर ढीले हो जाते हैं। इस लकवेमें मुँहका अगला हिस्सा ढीला हो जाता है और गमन-शक्ति निर्बल हो जाती है। माथा, मुखकी खाल और अदले उस ओर बहुत नहीं खिंचते, किन्तु नर्म होते हैं। उस तरफकी आँखका नीचेवाला पलक इतना नीचे झुक जाता है कि, ऊपरका पलक उस तक नहीं पहुँचता। उस आँखसे आँसू बहते रहते हैं और जीभकी चखनेकी ताक़त जाती रहती है।

तशन्नुजी और इस्तरख़ाई लकवेमें फ़र्क़।

हकीम जालीनूस कहता है कि, तालूके बीचों-बीच एक दरार है। सारे मुखकी हड्डियाँ उसकी वजहसे अलग-अलग हैं। मुँहके भीतर एक महीन-सी झिल्ली, तालूमें, उस दरारसे मिली हुई लगी है। यह दरार उस झिल्लीसे छिपी हुई है। इस्तरख़ाई लकवेमें, जिस तरफ़ इस्तरख़ा—ढीलापन—होता है, उस तरफकी झिल्ली ढीली होकर लटक पड़ती है। उसका रंग बदल जाता है और वह तर या गीली मालूम होती है; परन्तु दूसरी तरफकी झिल्ली आरोग्य होती है।

जब यह देखना हो कि, लकवा इस्तरख़ाई है या तशन्नुजी, तब रोगीकी जीभपर उँगली रखकर दबाओ, जिससे जीभ नीची हो जाय। फिर रोगीके तालूको देखो। अगर झिल्लीमें इस्तरख़ा या ढीलापन हो, वह लटक रही हो, रंग बदल गया हो तथा वह तर या गीली हो, तो समझ लो कि लकवा इस्तरख़ाई है। अगर झिल्ली

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपनी स्वाभाविक हालतमें हो, सिरकी खाल खिंच गई हो अथवा तशन्नुजी लकवेके और चिह्न हों; तो समझ लो कि लकवा तशन्नुजी है। एक ख़ास पहचान और है। वह यह कि, इस्तरख़ाई लकवेमें पलक कभी नहीं चलते, किन्तु तशन्नुजीमें चलते रहते हैं; परन्तु एक पलक दूसरेसे मिलकर बन्द नहीं हो सकता।

डाक्टरी मतसे लकवेका वर्णन।

डाक्टरीमें लकवेको फेशियल पैरेलिसिस (Facial Paralysis) कहते हैं। डाक्टरोंका भी कहना है कि, लकवेमें चेहरेका एक रुख़ या दोनों रुख़ मारे जाते हैं। ठोड़ी या जाबड़ा, आँख और कनपटी टेढ़े हो जाते हैं। इस रोगके कारण—सर्दी, कमज़ोरी, एक तरहकी हवा और कानका ज़ख्म हैं।

पक्षाघात-वर्णन।

लक्षण।

जब कुपित वायु शरीरके आधे हिस्सेमें फैल जाती है, तब उस हिस्सेके शिरा और स्नायु सुकड़ या सूख जाते हैं और सन्धि-बन्धन ढीले हो जाते हैं। इस दशामें मनुष्यका आधा शरीर बेकाम हो जाता है। इस हिस्सेसे मनुष्य कुछ भी काम कर नहीं सकता। स्पर्शज्ञान नहीं रहता। रोगीके सारे या आधे अङ्गोंका हिलना-चलना भी बन्द हो जाता है।

यह रोग किसीके शरीरके दाहिने भागमें और किसीके बाँये भागमें होता है। किसीको कमरके ऊपर और किसीको कमरके नीचे होता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। जिस तरह अर्द्ध नारीश्वरका आधा शरीर स्त्रीका-सा और आधा मर्दका-सा होता है; उसी तरह इस रोगवालेका आधा शरीर मारा जाता है और आधा कामका रहता है। इस रोगको संस्कृतमें "पक्षाघात, सक्थबध, एकांग वात" और हिकमतमें "फालिज" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, कुपित वायु शरीरके दाहिने या बाँये किसी हिस्सेको पकड़कर नसोंको सुखा देती है, तब मनुष्य अर्द्ध नारीश्वरकी तरह आधे शरीरसे बेकाम हो जाता है। जिस तरफ रोग होता है, उस तरफका शरीर कुछ काम नहीं देता और छूने आदिका ज्ञान नहीं रहता। सन्धि-बन्धनोंके ढीले हो जानेसे, आधा शरीर ढीला हो जाता है। इस रोगको "पक्षाघात" कहते हैं, क्योंकि इसमें शरीरका एक पक्ष बेकाम हो जाता है।

नोट—वैद्यकमें, मनुष्यका दाहिना या बाँयाँ आधा शरीर निकम्मा हो जाना लिखा है, पर यह स्पष्ट नहीं लिखा कि आधा शरीर कहाँसे कहाँतक मारा जाता है, अतः हम इस रोगपर यूनानी हकीमोंकी राय लिखते हैं। "इलाजुलगुर्बा"में लिखा है:—फालिज या अर्द्धाङ्ग होनेसे लम्बाईमें आधा शरीर ढीला हो जाता है और चमड़ेमें ज्ञान-शक्ति नहीं रहती। 'तिब्बे अकबरी"में लिखा है, फालिजका अर्थ 'आधा" है। जिस रोगमें सिरसे पाँव तक आधा शरीर ढीला हो जाता है, उसे फालिज या अर्द्धाङ्ग-रोग कहते हैं। किसी-किसी हकीमने लिखा है, फालिज होनेसे लम्बाईमें आधा शरीर ढीला हो जाता है, पर मुँहके अवयव आरोग्य रहते हैं। कभी-कभी मुँहका चमड़ा भी सूना हो जाता है। आगे चलकर हम यूनानी मतसे फालिजके कारण और लक्षण विस्तारसे लिखेंगे।

साध्यासाध्यत्व जाननेके तरीके।

लिख चुके हैं कि पक्षाघात-रोग "वातकोप"से होता है; पर और-और रोगोंकी तरह, इस रोगमें भी कहीं-कहीं वायुके साथ पित्त और कफ मिले रहते हैं। अगर वायुके साथ पित्त मिला रहता है, तो शरीरके भीतर दाह, बाहर सन्ताप और मूर्च्छा—ये लक्षण होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर वायुके साथ कफ मिला रहता है; तो शीतलता, सूजन और भारीपन ये लक्षण भी होते हैं। मतलब यह है कि, अर्द्धाङ्ग-पीड़ित अङ्गोंमें सूजन, शीतलता और भारीपन ये उपद्रव होते हैं।

अगर पक्षाघात या अर्द्धाङ्ग-रोग "केवल वायु" से होता है, तो वह अत्यन्त कष्टसाध्य होता है। अगर पित्त या कफसे मिली हुई वायुसे होता है, तो साध्य होता है। अगर रसरक्तादि धातुओंके क्षय होनेके कारण, वायुके कुपित होनेसे होता है, तो असाध्य होता है।

खुलासा—पक्षाघात-रोग चार तरहका होता है:—

(१) वातज	...	कष्टसाध्य।
(२) वातपित्तज	...	साध्य।
(३) वातकफज	...	साध्य।
(४) धातुक्षयजन्य—वातज	...	असाध्य।

चारों ही प्रकारके पक्षाघातोंमें "वायु" प्रधान होता है। वातज पक्षाघात होनेसे सिरसे पाँवतक एक तरफका आधा शरीर बेकाम हो जाता है। उस तरफके अंग अपना-अपना काम नहीं कर सकते। पैर चलनेका काम नहीं कर सकता और हाथ कोई चीज़ पकड़ने या उठानेका और कान सुननेका। इसी तरह औरोंके सम्बन्धमें समझ लो। ये मुख्य लक्षण हैं और चारों ही तरहके पक्षाघातोंमें होते हैं। अगर वायुके साथ पित्त मिल जाता है, तो शरीरके भीतर जलन, बाहर सन्ताप और मूर्च्छा ये लक्षण विशेष होते हैं। इसी तरह अगर वायुके साथ कफ मिल जाता है, तो पक्षाघात-पीड़ित या फालिज मारे हुए अंगोंमें सूजन आ जाती है, वे छूनेमें शीतल मालूम होते हैं और उनमें भारीपन होता है।

असाध्य लक्षण।

गर्भवती, प्रसूता, बालक, बूढ़े और क्षीण तथा जिसके रुधिरका क्षय हुआ हो, इन मनुष्योंका पक्षाघात असाध्य होता है; यानी आराम नहीं होता; अतः ऐसे पक्षाघात-रोगियोंकी चिकित्सा न करनी चाहिये। जिस पक्षाघातमें वेदना नहीं होती, वह भी असाध्य होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—हिकमतमें लिखा है, अगर पक्षाघात-पीड़ित अंग ढीले हो जायँ, पर उनका असली रंग ज्यों का-त्यों हो तथा पहलेकी अपेक्षा दुबले और छोटे न जान पड़ें, तो आराम हो सकता है। अगर अर्द्धाङ्ग-पीड़ित अङ्गोंका रंग बदल गया हो और वे मामूलसे बहुत दुबले और छोटे हो गये हों, तो आराम न होगा। हाँ, अगर वे अङ्ग मोटे और शरीरकी रंगतके हों, तो आराम हो सकता है। जो इस्तरख़ा या फालिज पट्ठेके टूट जानेसे होता है, उसका भी इलाज हो नहीं सकता।

लकवे और फालिजमें फ़र्क़।

लकवेमें, जिसे वैद्यकमें अर्दित-रोग कहते हैं, एक तरफका चेहरा टेढ़ा हो जाता है; पर फालिज या पक्षाघातमें एक तरफका आधा शरीर लम्बाईमें निकम्मा, ढीला या सुस्त अथवा सूना हो जाता है।

हकीमी मतसे—

फालिजका वर्णन।

लक्षण।

इस्तरख़ा शब्दका अर्थ "ढीला होना" और "फालिजका" अर्थ "आधा" है। हकीमोंने इन दोनोंके एक ही लक्षण लिखे हैं। इस्तरख़ामें शरीरके अजले और बतर सुस्त और ढीले हो जाते हैं। इसलिये शरीरके वे अवयव जो इन अजलोंके कारणसे चलते-फिरते हैं, अपने अजलोंके ढीले और सुस्त होनेसे निकम्मे और सूने हो जाते हैं। अगर हेतु यानी रोगका कारण बलवान होता है, तो सूनापन या चेष्टाहीनता ज़ियादा होती है और हेतु कमज़ोर होता है, तो सूनापन और चेष्टाहीनता कम होती है। अगर दोष चमड़ेमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होता है, तो सूनापन होता है और यदि दोष चमड़ेमें नहीं होता—केवल सन्धियों या जोड़ोंमें होता है, तो सूनापन नहीं होता।

कभी-कभी कष्ट एक पट्ठेसे दूसरेमें आता है। जो अङ्ग उस पट्ठेसे सम्बन्ध रखता है, वही ढीला हो जाता है और बाक़ी शरीर आरोग्य रहता है। जैसे, हलक़ या नरखरा; जीभ या फुँकना, सीधी आँत या कोई उँगली अथवा कोई और अवयव ढीला हो जाता है, लेकिन शेष शरीर आरोग्य रहता है।

कभी-कभी शरीरके एक तरफके हराममग़ज़वाले पट्ठों और दिमाग़के पट्ठोंमें दोष हुआ करता है। उस दशामें आधा शरीर—सिरसे पाँवतक—ढीला हो जाता है। इस तरहके इस्तरख़ा या ढीले होनेको अगले हकीम—"फालिज" कहते हैं। "फालिज" अरबी शब्द है। उसका अर्थ "आधा" है।

कभी-कभी देहकी एक ओरके उन पट्ठोंमें जो हराममग़ज़से निकले हैं, दोष हो जाता है। इस हालतमें, लम्बाईमें आधा शरीर ढीला हो जाता है; परन्तु सिरके पट्ठे आरोग्य रहते हैं। लेकिन कभी-कभी सिरका चमड़ा सुन्न हो जाता है।

कोई-कोई फालिज उसे कहते हैं, जिसमें आधा शरीर लम्बाईमें सुस्त हो जाता है और मुँहके अवयव आरोग्य रहते हैं, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। कभी-कभी आधा सिर भी मिला रहता है। ऐसे रोगको "लकवा सहित फालिज" कहते हैं।

निदान-कारण।

इस रोगके दो कारण हैं:—

(१) जब पट्ठों और अजलोंमें गाँठ पड़ जाती है या पट्ठे कट जाते हैं, तब ज्ञान-शक्ति और गमन-शक्तिकी रूह उनमें जा नहीं सकती, अतः फालिज-रोग हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) ज्ञान-शक्तिकी और गमन-शक्तिकी रूह तो पट्ठों और अजलोंमें जाती है; परन्तु किसी अङ्गमें सर्दी-गरमी तरी या खुश्कीका ऐसा दोष हो जाता है कि, उसकी वजहसे पट्ठे और अजले उन दोनों शक्तियोंके प्रभावको ग्रहण नहीं करते, तब फालिज मार जाता है।

मतलब यह है कि, पट्ठों और अजलोंमें गाँठ पड़ जाने या पट्ठोंके टूट जाने, कट जाने अथवा किसी अङ्गमें दोष हो जानेसे देहके एक ओरके हिस्सेमें इल्तरखा या फालिज होता है; क्योंकि उनमें ज्ञान करानेवाली ताक़तकी रूह नहीं पहुँचती।

और भी खुलासा।

(१) अगर कोई अङ्ग इस तरह बाँध दिया जाता है कि, ज्ञान-शक्ति और गमन-शक्तिकी रूहका नीचे आना बन्द हो जाता है, तब गाँठ पड़ जाती है। ऐसा होनेसे, उस अङ्गको फालिज मार जाता है।

(२) गाढ़ी ल्हसदार रुतूबतके पट्ठोंमें भर जानेसे, उन शक्तियोंके यानी ज्ञान-शक्ति और गमन-शक्तिकी रूहके रास्ते बन्द हो जाते हैं। इसलिए उन पट्ठोंसे सम्बन्ध रखनेवाले अङ्ग या अङ्गोंमें फालिज मार जाता है।

(३) किसी अङ्गमें गरमी या सर्दीसे सूजन आ जानेसे, उन दोनों शक्तियोंकी रूहकी राह बन्द हो जाती है। रूहके न पहुँचनेसे फालिज मार जाता है।

(४) किसी पट्ठेकी जड़पर धमक या चोट लगनेसे, पट्ठा दबकर भिंच जाता है और उन दोनों शक्तियोंकी रूहके घूमनेकी राह बन्द हो जाती है। रूहके न पहुँचनेसे, उस पट्ठेसे सम्बन्ध रखनेवाले अङ्गमें फालिज मार जाता है।

(५) अगर गर्दनका या पट्ठेका कोई जोड़ अपनी जगहसे फिसल जाता है, तो उन दोनों शक्तियोंकी राह बन्द हो जाती है; इसलिए जिस अङ्गमें रूह नहीं पहुँचती, उसमें फालिज मार जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) सर्दी ज़ियादा होने या पट्ठेके गाढ़े होनेसे पट्ठा सिमट जाता है। पट्ठेके सिमटनेसे, रूहको राह नहीं मिलती और फालिज हो जाता है।

(७) किसी अङ्गके जोड़मेंसे निकल जानेसे भी फालिज मार जाता है।

मतलब यह है कि, जब किसी तरहसे रूहकी राहें बन्द हो जाती हैं या जहाँ रूह नहीं पहुँच सकती वहाँ, उसके न पहुँचनेसे, फालिज-रोग हो जाता है।

जानने योग्य बात।

कभी-कभी देहका आधा निरोग भाग ऐसा गरम हो जाता है, मानो उसमें आग लग गई हो; लेकिन अर्द्धाङ्ग-पीड़ित दूसरा आधा भाग बर्फ़की तरह शीतल रहता है। इसके दो कारण हैं:—(१) दिमागी रूह फालिज मारे हुए हिस्सेमें घुसना चाहती है, पर वहाँकी राहें बन्द रहनेसे वह उसमें घुस नहीं सकती, तब वह निरोग भागमें घुस जाती है और उसे अत्यन्त गरम कर देती है। (२) फालिज और लकवेके इलाजमें गरम दवाएँ दी जाती हैं। वे गरम दवाएँ रोगीले अङ्गोंकी अपेक्षा निरोग अङ्गोंमें अपना प्रभाव ज़ियादा दिखाती हैं; इसीसे निरोग भागमें गरमी बढ़ जाती है। इसके सिवा, खून भी निरोग अङ्गकी तरफ ही जाता है और उसके साथ रूह भी जाती है, क्योंकि रोग-पीड़ित अङ्ग खूनको ग्रहण नहीं कर सकता। इन्हीं कारणोंसे, शरीरका आधा निर्दोष या निरोग भाग कभी-कभी आगकी तरह जल उठता है।

याद रखने योग्य हकीमी हिदायतें।

(१) कफज अर्द्धाङ्गके आरम्भमें, निर्बलताके कारणको देखकर, जब तक चौथा, सातवाँ, या चौदहवाँ दिन न बीत जाय, किसी तरहका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इलाज मत करो। हकीम "साहिर"का कहना है कि, अर्द्धाङ्ग-रोगीको चौथे, सातवें या चौदहवें दिन तक कोई बलवान औषधि न देनी चाहिये। आरम्भमें, दस्तावर दवाओंके देनेसे बहुधा रोग बढ़ जाता है, परन्तु नर्म हुकने करना उचित है। इस मौक़ेपर, मलको मुलायम करनेवाली दवाएँ, मुञ्जिस आदि देना अच्छा है। जब चौथा, सातवाँ या चौदहवाँ दिन बीत जाय, मल नर्म हो जाय, तब दस्तावर दवा देनी चाहिये। वमन या क़य कराना भी लाभदायक है।

(२) मल नाश होनेपर, गुड़ियों और पट्ठोंपर गरम, शक्तिवर्द्धक और मलनाशक तेल मलना चाहिये। जैसे, वेद-अंजीरका तेल, सोयेका तेल या नारदैनका तेल। पट्ठोंमें गरमी पहुँचानेको "कूटका तेल" मलना भी अच्छा है। ये उपाय उस हालतमें करने चाहिये, जब कि प्रकृतिमें गरमी न हो।

(३) अगर ऋतु, आयु और बल प्रभृति अनुकूल हों, रोगीके शरीरमें गरमी और रङ्गमें लाली तथा जवानी हो; तो "फ़स्द" से इलाज शुरू करना चाहिये, क्योंकि खून ही से सब दोष होते हैं।

(४) अगर प्रकृतिमें गरमी हो, तो—फ़स्द खोलो चाहे न खोलो—पहले गरमीको कम करो। जब गरमी नाश हो जाय, अर्द्धाङ्गका इलाज करो।

(५) हकीम शेख़ बू अली कहते हैं—अगर फालिज और बुख़ार दोनों साथ-साथ हों, तो फालिजके इलाजकी जल्दी मत करो, पहले ज्वरको शान्त करो। ऐसे मौक़ेपर गुलक़न्दके साथ सिकंजबीन दो।

(६) अर्द्धाङ्ग-रोगीको शराब कभी मत दो, क्योंकि वह मलको पट्ठोंमें उतार लाती है।

(७) लकवेके या अर्द्धाङ्गवालेके शरीरपर नदी और गन्धककी खानके पानीके सिवा और पानी मत डालो; क्योंकि गरम किया हुआ मीठा पानी डालनेसे दोष फैलते और पट्ठे नर्म होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) जब तक सच्ची भूख न लगे खाना मत दो और जब तक तेज़ प्यास न लगे पानी मत पिलाओ। इस रोगमें "शहदका पानी" पीना अच्छा है।

(९) हकीम मासोयाका बेटा कहता है, मैंने देखा है कि, दस्त होनेसे फालिज जाता रहा।

(१०) अगर सूजन गरमीसे होती है, तो दर्द बहुत होता है और ज्वर तेज़ रहता है। अगर गरम सूजनसे फालिज हो, तो फ़स्द खोलो; बशर्ते कि कोई उपद्रव न हो।

(११) अगर खूनकी ज़ियादतीसे देह ढीली हो, तो फ़स्द खोलो।

(१२) अगर चोट लगनेसे रोग हुआ हो, तो ख़ास चोटकी जगह दवा लगाओ। हकीम जालीनूस कहता है, एक आदमी सवारीसे गिर पड़ा। उसके दोनों पाँव ढीले हो गये। और हकीम पैरोंपर दवा लगवाने लगे; पर मैंने चोटकी जगह दवा लगवाई। उससे सूजन मिट गई और रोगी आराम हो गया।

(१३) अगर फालिज गुड़ियाके सरकने या उतरनेसे हुआ हो, तो गुड़ियाको अपनी जगह बिठाओ। अगर जोड़ उखड़नेसे फालिज हुआ हो, तो जोड़को ठीक करो और यदि दोषोंके कोपसे रोग हुआ हो, तो उन्हें शान्त करो।

डाक्टरी-मतसे—
लकवे और फालिजका वर्णन।

हमारे यहाँ "लकवा या अर्दित-वात" उसे कहते हैं, जिसमें मनुष्यका किसी तरफका आधा चेहरा टेढ़ा और बेकाम हो जाता है। "फालिज या पक्षाघात" उसे कहते हैं, जिसमें मनुष्यका किसी तरफका आधा शरीर बेकाम हो जाता है। अँगरेज़ीमें इन दोनों रोगोंके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लिये पैरेलिसिस (Paralysis) शब्द लिखा है। चेम्बर डिक्शनेरीमें Paralysis का अर्थ A loss of the power of motion, sensation, or function in any part of the body. लिखा है।

मतलब यह कि, शरीरके किसी भागकी चलने-फिरने, हिलने-डुलने और स्पर्श-ज्ञानकी शक्तिके नाशको पैरेलिसिस (Paralysis) कहते हैं। "त्वक्शून्यता" रोग होनेसे चमड़ेकी स्पर्शज्ञान-शक्ति मारी जाती है, हिलने-चलनेकी शक्ति नहीं रहती, शरीर यों-का-यों रह जाता है। हिकमतवालोंके "सुन्नबहरी" रोगके भी यही लक्षण हैं। अतः पैरेलिसिस शब्दका अर्थ वही ठीक है, जो चेम्बर डिक्शनेरीमें लिखा है। इसीसे डाक्टरोंने ऐसे रोगोंके लिये, जिनमें मनुष्यका सारा शरीर, आधा शरीर या शरीरका कोई भाग सूना हो जाता है, चमड़ेकी ज्ञान-शक्ति और हिलने-डुलने या जुम्बिश करनेकी ताक़त मारी जाती है, एक मात्र "पैरेलिसिस" शब्द इस्तैमाल करके ठीक ही काम किया है। हाँ, रोगके भेदोंके अनुसार, उसके साथ कहीं विशेषण लगा दिये हैं और कहीं दूसरे नाम दे दिये हैं; पर ऐसे रोगोंका शीर्षक या हेडिंग पैरेलिसिस (Paralysis) ही लिखा है।

डाक्टर गन साहब कहते हैं पैरेलिसिस रोग नर्वस सिस्टम (Nervous System) यानी स्नायु-मण्डलका रोग है और उसीमें उसका स्थान है। शरीरके जिस भागमें यह रोग होता है, उस भागकी हिलने-चलने या स्पर्श-ज्ञानकी शक्ति जाती रहती है। यह रोग शरीरके एक भागमें होता है और कभी-कभी दोनोंमें ही होता है। अगर एक भागमें रोग होता है, तो एक भागकी वह दशा होती है और अगर दोनों भागोंमें होता है, तो दोनों ही भागोंकी वह हालत होती है।

बहुधा यह रोग शरीरकी बाँईं तरफ या दाहिनी तरफ होता है। इसका शरीरके एक बाजूमें होना—इसका अति सामान्य रूप है। बाज़-बाज़ वक्त यह मनुष्यके पाँवों और पाँवोंकी उँगलियोंको अथवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कूल्हेके नीचेके समस्त अङ्गोंको पकड़ता है। अगर यह शरीरकी एक तरफ—दाहिनी या बाँईं तरफ—होता है, तो इसे "हेमीप्लेजिया" (Hemiplegia) कहते हैं और अगर कूल्होंसे नीचेके अङ्गोंमें होता है, तो "पैरेप्लेजिया" (Paraplegia) कहते हैं। मतलब यह कि, जिसे हम लोग "अर्द्धाङ्ग, पक्षाघात या फालिज" कहते हैं, उसे अँगरेज़ लोग "हेमीप्लेजिया" कहते हैं और जिसे हम लोग 'उरुस्तम्भ" कहते हैं, उसे वे लोग "पैरेप्लेजिया" कहते हैं। हाँ, एक बात और याद रखनी चाहिये। वह यह कि, जब यह रोग हाथ-पैर आदि ख़ास-ख़ास अङ्गों या कुछ पट्ठों अथवा मांस-पेशियोंसे सम्बन्ध रखता है, तब इसे "पार्शियल पैरेलिसिस" (Partial Paralysis) अर्थात् "आंशिक त्वक्शून्यता" कहते हैं। जो चेहरेके एक रुख़ या दोनों रुख़ोंमें होता है, उसे "फेशियल पैरेलिसिस" (Facial Paralysis) कहते हैं। इसीको हम लोग "अर्दित या लकवा" कहते हैं।

लक्षण।

पैरेलिसिसके लक्षण अच्छी तरहसे अनुभवमें आते हैं। उन्हें मनुष्य आसानीसे भूल नहीं सकता। यह रोग यकायक होता है। जिस भागमें यह रोग होता है, उस भागकी स्पर्शज्ञान-शक्ति और इच्छानुसार हिलने-चलने या स्थान-परिवर्त्तनकी शक्ति इसके होते ही नाश हो जाती है; यानी रोग होनेकी जगहका चमड़ा सूना हो जाता है। उस जगह चाहे बर्फ़ रखो, चाहे आग और चाहे सूई चुभाओ, कुछ मालूम नहीं देता और वह अङ्ग हिल-चल भी नहीं सकता। कभी-कभी इस रोगके होनेसे पहले, शून्यता-सुन्नता या सर्दी अथवा स्पर्श-ज्ञानहीनता और अचलता एवं हिला देनेवाले इसके झटके तथा सकते (Apoplexy) में होनेवाले अन्यान्य लक्षण दृष्टिगोचर होते हैं।

बाज़-बाज़ वक्त यह रोग, अतिसार या ज्वरके साथ, अपने-आप चला जाता है। अगर गई हुई गरमी लौटे, रोग-पीड़ित स्थानमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चुभोनेका-सा दर्द हो, साथ ही स्पर्शज्ञान और हिलने-चलनेकी ताक़त वापस आने लगे—तो भलाई समझो, क्योंकि ये शुभ चिह्न हैं।

कारण।

मनुष्यके मस्तिष्कमें एक ऐसी शै है, जो शरीरके समस्त अङ्गोंमें पहुँचकर उनको उत्तेजित करती और चलने-फिरनेकी ताक़त बख़शती है। वह चीज़ दिमाग़से हरकत पैदा करनेवाली इन्द्रियों या यन्त्रोंमें आया करती है। उसीसे स्नायुओंका पोषण होता और उनका बल बढ़ता है। अगर किसी भी वजहसे उस स्नायु-सम्बन्धी खून या अङ्गोंकी हरकतको तेज़ करनेवाली शै का बहना बन्द हो जाता है, तो लकवा या फालिज हो जाता है। जैसे, मेरुदण्ड या स्नायुपर फोड़ेका दबाव पड़नेसे; हड्डीके टूट जाने या जोड़से हट जानेके कारण दबाव पड़नेसे और स्नायुओंमें घाव या रोग हो जानेसे, उस शै या रूहका दिमाग़से आना बन्द हो जाता है और उसके न आनेसे यह रोग हो जाता है। सफेद सीसा हाथोंसे चलाने और सोना-चाँदी प्रभृति धातुओंके धूएँके सामने रहनेसे भी यह रोग हो जाता है। जिन लोगोंको कृमिरोग (Worms), कण्ठमाला (Scrofula), आतशक—उपदंश (Syphilis) और सकता या मृगी (Apoplexy) रोग होते हैं, उन्हें भी उन रोगोंके पीछे, उनके परिणाम-स्वरूप यह रोग हो जाता है। बहुतोंको हेमीप्लेजिया या एक तरफका पैरेलिसिस—अर्द्धाङ्ग-रोग सकते या मृगीसे पैदा होता है। दिमाग़को खून पहुँचानेवाली नलीका फट जाना ही "सकता" है। उस नलीकी दीवारें जब टूट जाती हैं या उनमें दरार हो जाती है, तब खून बहता फिरता है। वही खून पैरेलिसिस या लकवा-फालिज पैदा कर देता है।

इलाज।

हम अनेक बार हेमीप्लेजिया और पैराप्लेजिया—अर्द्धाङ्ग और उरुस्तम्भका अच्छा इलाज कर नहीं सकते। ख़ासकर उस समय

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब कि ये रोग पुराने या बहुत दिनोंके हों और चेतना या हरकत करनेकी ताक़त मारी गई हो। फिर भी; रोगकी पहली अवस्थामें या रोग होते ही, उचित चिकित्सा करनेसे बहुधा सफलता होती है—अनेक रोगी आरोग्य-लाभ करते हैं।

पहली अवस्थामें, अगर हमला यकायक और ज़ोरसे हुआ हो तो वही उपचार करने चाहिए, जो कि "एपोप्लेक्सी" या "सकते" में लिखे गये हैं।

प्रसंगवश एपोप्लेक्सी या सकतेका इलाज।

एपोप्लेक्सी* या सकतेमें पहला काम खूनकी चाल यकसाँ या समान करना है। भेजेपरसे खूनका दबाव दूर करो और ऐसे उपाय करो, जिनसे भेजेमें अधिक खून फिर न आवे। इस मौक़ेपर जल्दी और ज़ोरसे काम करना चाहिये।

---

*एपोप्लेक्सी या सकता-रोगका आक्रमण होनेसे रोगी यकायक गिर पड़ता है। उस समय उसमें देखने, सुनने, दुःख-सुखादि अनुभव करने और हिलने-चलनेकी शक्ति नहीं रहती; किन्तु दिल और फेंफड़े, इस दशामें भी, अपना काम करते रहते हैं। चेहरे और गर्दनकी शिराएँ खूनसे फूल उठती हैं। दिलसे खूनको बहानेवाली नाड़ियाँ—रगे शिरियान—मामूलसे ज़ियादा तेज़ीसे चलने या फड़कने लगती हैं। नाड़ी भरी हुई, मज़बूत और मन्दी होती है। साँस-कार्य भी मन्दा रहता है। रोगीकी कोई भी चीज़ निगलनेकी शक्ति बहुत ही कम हो जाती है या क़तई नहीं रहती। यह हालत चन्द मिनटों तक ही रहती है। कभी-कभी कई घण्टों तक भी रह जाती है। अगर रोग घातक नहीं होता, तो दवाओंके प्रभावसे या नैचरकी शक्तिसे रोग दब जाता है। रोगी आराम हो जाते हैं। पर अनेक बार आंशिक या यकतरफा पैरेलिसिस होकर रोग स्थायी हो जाता है। बुद्धि, मन या अन्तःकरणको भी इस रोगसे हानि पहुँचती है। मस्तिष्कमें जलन और सूजन भी इस रोगके फल-स्वरूप पैदा हो जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोगीको हर तरह सुखी रखो। उसे आरामसे लिटा दो। उसका सिर ऊँचा रखो। गर्दनसे हरेक चीज़ दूर कर दो, जिससे रक्त स्वच्छन्दता-पूर्वक उतर सके। गलेके बटन बन्द रहने या गलेमें और चीज़ें पड़ी रहनेसे, खूनके आज़ादीसे आनेमें बाधा पड़ती है। सिर, चेहरा और गर्दनपर शीतल जल लगाओ और जितनी जल्दी हो सके, पैरों और टाँगोंको गरम जलमें डुबा दो। रोगीके कपड़े उतार डालो। गरम जलमें थोड़ा-सा मामूली नमक मिलाकर पैरों और टाँगोंपर मलो और धीरे-धीरे मालिश करते हुए शरीर और बाँहों तक पहुँच जाओ। इस उपायसे हाथ-पाँव प्रभृति अङ्गोंमें गरमी आ जायगी और बारीक नलियाँ (Capillery Vessels) अपना काम आज़ादीसे करेंगी; खूनको उन भागोंमें खींच लाकर भेजेसे हटा देंगी।

अगर 'सकता' ज़ोरसे हुआ हो और आपको सुभीता हो, तो रोगीको गरम हम्राममें रखनेका उपाय करो। हम्राम काफी बड़ा होना चाहिये। इतना बड़ा हो, जिसमें सारा शरीर आ जाय; यानी कन्धों तक ऊँचा होना चाहिये। इस उपायसे आध घण्टेमें होश न हो, तो उसे फिर दूसरे आध घण्टे तक हम्राममें रखो अथवा जब तक आराम न हो तब तक रखो; देर-अबेरका ख़याल मत करो। लेकिन सिरको हर समय शीतल रखो, भूलकर भी सिरमें गरमी न पहुँचाना। ज्योंही रोगीको होश हो जाय, उसे खाटपर सुला दो। उसके सिर और कन्धे ऊँचे रखो। उसकी टाँगों और बदनके इधर-उधर कुछ गरम ईंटें या पत्थर रख दो; पर वे हदसे ज़ियादा गरम न हों, क्योंकि ऐसा होनेसे फफोले हो जायँगे। रोगी ज्योंही निगल सकने योग्य हो जाय, उसे एक जल्दी काम करनेवाला जुलाब दो। ऐसे मौक़ेपर, एक औंस इप्सम साल्ट्स (Epsom Salts) थोड़ा-सा टिंचर कारडेमम (Tincture of Cardamom) और एक या दो बूँद सौंफका तेल (Oil of Anise)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थोड़े-से गरम पानीमें मिलाकर रोगीको पिला दो। अगर इससे एक घण्टेमें दस्त न हो, तो फौरन ही दूसरी मात्रा दे दो।

इस रोगमें बहुधा क़ब्ज़ रहता है—आँतें बन्द रहती हैं। इसलिये इस मौक़ेपर, अगर इञ्जैक्शन (Injection) से भी काम लिया जाय यानी गुदामें दवाओंकी पिचकारी भी मारी जाय, तो पहलेके उपायको बड़ी मदद मिल जाय। अगर पिचकारी देनी हो, तो एक चम्मच-भर उसी जुलाबकी तैयार दवाको एक पाइण्ट या डेढ़ पाव गरम जलमें मिला दो और ऊपरसे एक या दो बड़े चम्मच ग्लैसरिन (Glycerine) के भी मिला दो। यही गुदामें पिचकारी मारनेकी दवा है।

एक बड़ा-सा राईका पलस्तर पेटपर रख दो। इस उपायसे भेजेकी जलन और सूजन रुक जायगी।

अगर नाड़ी (Pulse) भरी हुई, मज़बूत और उछलती हो, तो फौरन ही फ़स्द खोल दो। इस उपायसे चेतना शीघ्र ही लौट आवेगी; पर अगर नाड़ी नर्म और कमज़ोर हो, तो फ़स्द न खोलो। अफीमसे हालत सुधरनेके बजाय उल्टी ख़राब ही होगी। सेहतयाबीके दिनों या आरोग्य-लाभ करनेकी दशामें, हर दूसरे-तीसरे दिन—दो सप्ताह तक—जुलाब देते रहो।

रोगमुक्त होनेपर भी, पथ्य पालन करो और शराब आदि अपथ्य पदार्थोंसे क़तई बचो। मांस वग़ैरः न खाओ, हल्के और थोड़े भोजन-पर सन्तोष रखो। रगड़-रगड़कर नित्य स्नान करो और खुली हवामें थोड़ा व्यायाम भी करो। शरीर और मनमें थकान आवे, ऐसे कामोंसे सदा बचो।

नोट—यहाँ तक हमने प्रसंगवश एपोप्लैक्सी या सकतेका इलाज लिख दिया है। क्योंकि हमने इसे भूलसे पहले नहीं लिखा। पैरेलिसिस-रोगकी पहली अवस्थामें—इसकी पहली अवस्थाके उपायोंसे काम लेना चाहिये। अब नीचे हम ख़ास तौरपर, पैरेलिसिस या लकवा-फालिजका इलाज लिखते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पैरेलिसिसका इलाज।

अगर तशन्नुज या बाइँटे आते हों—पट्ठोंमें ज़ोरकी एँठन हो—कदाचित चेहरेके पट्ठोंमें; तो आप पीड़ा नाश करनेके लिये, हाइपोडरमिक सुईसे एक ग्रेनका सौवाँ भाग हायोसीन हाइड्रोब्रोमेट (Hyoscine Hydrobromate) का प्रयोग कीजिये।

प्रथम—पहले आँतोंको ख़ाली करो यानी दस्त कराओ। इस मौक़ेपर भी इञ्जैक्शनसे काम लेना ज़रूरी है; यानी गुदामें दवाकी पिचकारी लगानी चाहिये। क्योंकि आँतोंमें क़ब्ज़ बहुत ज़ियादा होता है। बाज़-बाज़ औक़ात, शरीरके नीचेके हिस्से ऐसे मारे जाते या बेकाम हो जाते हैं कि, जुलाब देनेसे कुछ भी लाभ नहीं होता। जुलाबके भरोसे बैठा रहना अच्छा नहीं, क्योंकि सम्भव है आँतोंके बन्द रहने या क़ब्ज़ियतसे ही यह रोग पैदा हुआ हो। हाँ, शीघ्र फलदायी जुलाबकी एक मात्रा देनेमें हानि नहीं। (Calomal), सनाय (Senna) और साल्ट्स (Salts), जुलाबके लिये उत्तम हैं। एक पाइण्ट या डेढ़ पाव पानीमें एक आउन्स ग्लैसरिन (Glycerine) मिलाकर गुदामें पिचकारी लगाओ। ज़रूरत समझो, तो एक औन्स साल्ट्स (Salts) भी मिला दो। इन उपायोंसे दस्त हो जायगा और आँतें अपना काम करने लगेंगी। अगर ज़रूरत हो, तो फिर पिचकारी लगा सकते हो।

द्वितीय—जुलाब दूसरे तीसरे दिन देना चाहिये। केलोमल (Calomal) या पोडोफिलिन (Podophyllin) और लैप्टनड्रिन (Laptandrin) जुलाबके लिए उत्तम चीज़ हैं। पिछली दोनों दवाएँ तीन-तीन ग्रेन लेकर मिला लो और रोगीको दे दो। यह जवानके लिये एक मात्रा है।

तृतीय—नीचे लिखी नरवस पिल्स भी दी जानी चाहियेः—

Extract Hyosciamus	40 gr.

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

Extract Aconite	20 gr.
Macrotin	20 gr.

इन तीनोंको मिलाकर तीस गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली दो।

चतुर्थ—कुछ टॉनिक विटर्ज़ (पौष्टिक तिक्तसुरा) भी दी जानी चाहियेः—

Compound Tincture of Gentian	1 oz.
Elixir Calisays	1 oz.
Tincture of Valerian	1 oz.
Tincture of Nuxvomica	3 drachms.

इसमें इतना पानी मिला दो कि, सब चार औंस हो जाय। हर भोजनके पहले, इसमेंसे एक चायका चम्मच-भर दवा पिलाओ।

शरीरके जिन भागोंमें रोग हुआ हो उनको और हाथ-पाँव आदि शाखाओंको, दिनमें एक या दो बार, स्पंज और शीतल जलसे साफ़ करो। हर डेढ़ पाव पानीमें एक ड्राम नमक मिलाकर मालिश करो।

अगर रोगी बहुत बूढ़ा और कमज़ोर न होगा, तो साधारण रोग हमारी ऊपर लिखी चिकित्सा-विधिसे अवश्य नाश हो जायगा।

वात-व्याधियोंकी सामान्य चिकित्सा।

योगराज गुग्गुल।

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, कालीमिर्च, चीतेकी छाल, भुनी हींग, अजमोद, सरसों, सफेद ज़ीरा, स्याह ज़ीरा, सँभालूके बीज,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रजौ, पाढ़, बायबिडङ्ग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगीकी जड़, बच और मरोड़फली—इन बीस दवाओंको एक-एक तोले लो। त्रिफला इन सबके वजनसे दूना—चालीस तोले—लो। शुद्ध गूगल सबके वजनके बराबर—साठ तोले लो।

पहलेकी बीसों दवाओं और त्रिफलेको कूट-पीसकर छान लो। फिर इस चूर्ण और गूगलको लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर, लोहेके डण्डेसे, खूब घोटो। जब घुटते-घुटते काजल-जैसा मसाला हो जाय, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनाकर साफ़ काँचके बर्तनमें रख दो। इसीका नाम "योगराज गूगल" है।

इसके सेवन करनेसे समस्त वातरोग, कोढ़, बवासीर, प्रमेह, संग्रहणी, वातरक्त, भगन्दर, नाभिका दर्द, वायुगोला, यक्ष्मा, उन्माद, मृगी, उरग्रह, मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, वीर्य-दोष, प्रदर, पाण्डु, मेद-रोग—मुटापा, शूल, चूहेका विष, उग्र नेत्र-रोग, सब तरहके उदर-रोग—पेटके रोग, कृमि और हृद्रोग नाश हो जाते हैं।

मात्रा—१ से ६ माशे तक है। पर यह ३ माशेसे आरम्भ करके, हर हफ्ते तीन-तीन माशे बढ़ाकर, एक तोले तक ली जा सकती है। इसे सवेरे ही सेवन करना चाहिये।

नोट—योगराज गूगल अनुपान बदल-बदलकर सेवन करनेसे अनेक रोगोंको नाश करती है। अतः हम नीचे चन्द रोगोंके अनुपान लिखते हैं:—

अनुपान।

(१) वातरोगोंमें—			रास्नाके काढ़े* या गरम जल अथवा गरम दूधके साथ।
(२) प्रमेह-रोगमें	...	...	दारुहल्दीके काढ़ेके साथ।
(३) वातरक्तमें	...	...	गिलोयके काढ़ेके साथ।

* रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय और अरण्डकी जड़—इनके काढ़ेको "रास्नादि क्वाथ" कहते हैं। सप्तधातुगत वायु आमसंयुक्त वायु और सर्व शरीरस्थ वात-विकारोंमें यह काढ़ा उपयोगी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) पाण्डुरोगमें	...	...	गोमूत्रके साथ।
(५) मेदवृद्धिमें	..	...	शहदके साथ।
(६) समस्त कोढ़ोंमें	...	...	नीमके काढ़ेके साथ।
(७) आमवातमें	...	...	गिलोयके काढ़ेके साथ।
(८) चूहेके विषमें	...	...	सोनापाठाके काढ़ेके साथ।
(९) उग्र नेत्र-रोगोंमें	...	...	त्रिफलाके काढ़ेके साथ।
(१०) आठों उदर-रोगोंमें	...	...	पुनर्नवाके काढ़ेके साथ।
(११) शूल रोगमें	...	...	मूलीके काढ़ेके साथ।
(१२) पित्तके रोगमें	...	...	काकोलीके काढ़ेके साथ।
(१३) कफके रोगोंमें	...	...	अमलताशके काढ़ेके साथ।

पथ्यापथ्य—यह गूगल जरा व्याधि नाशक रसायन है। इसमें मैथुन और खाने-पीनेकी कोई क़ैद या परहेज़ नहीं। रोगी इच्छानुसार आहार-विहार कर सकता है।

महायोगराज गुग्गुल।

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, चीता, कालीमिर्च, भुनी हींग, सिरस, अजमोद, सफेद ज़ीरा, स्याह ज़ीरा, रेणुकाके बीज, इन्द्रजौ, पाढ़, बायबिडङ्ग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारङ्गीकी जड़, बच, मरोड़-फली, तेजपात, देवदारु, छोटी पीपर, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सैंधा-नोन, छोटी इलायची, गोखरू, हरड़, धनियाँ, बहेड़ा, आमला, दालचीनी, खस, जवाखार और तिल—इन ३७ दवाओंको बराबर-बराबर एक-एक तोले लो। इन सबके बराबर ३७ सैंतीस तोले शुद्ध गूगल लो। पहली ३७ दवाओंको कूट-पीसकर गूगलमें मिला दो और घी दे-देकर सबको खूब कूटो और घोटो। फिर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो।

सेवन-विधि और अनुपान वग़ैरः सभी पहले लिखी हुई योगराज गुग्गुलके समान। इसको पहले ३ माशेकी मात्रासे खाओ। फिर कुछ दिन बाद ४ माशे, फिर ६ माशे; इस तरह एक तोले तक बढ़ा लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीसरी योगराज गुग्गुल।

बायबिडङ्ग, धनियाँ, भुनी हींग, गजपीपर, सफेद जीरा, अतीस, पीपर, पीपरामूल, चीता, सोंठ, अजमोद, पाढ़, चव्य, मरोड़फली, बच, रेणुका, कपीला, भारङ्गीकी जड़, इन्द्रजौ, सफेद सिरस और कूट—इन २१ चीजोंको एक-एक तोले लो। त्रिफला इन सबसे दूना—४२ तोले लो और शुद्ध गूगल सबसे तिगुनी—६३ तोले लो। इन सबको कूट-पीसकर झड़बेरीके बेर-समान गोलियाँ बना लो। यह नुसख़ा "बोपदेव शतक" का है।

इस गूगलको "शहद"के साथ खानेसे ग्रहणी, वातरोग, बुढ़ापा, शुक्रदोष, आर्त्तवदोष, पाण्डुरोग, मन्दाग्नि, हृद्रोग, चमड़ेके रोग, शूल, प्रमेह, व्रण, बवासीर, अरुचि, वातरक्त, खाँसी, मृगी और राजयक्ष्मा नाश हो जाते हैं। विशेषकरके यह "रास्नाके काढ़े" में दी जाती है और "आमवात"में .खूब फायदा करती है।

त्रयोदशांग गूगल।

बबूलकी छाल, असगन्ध, हाऊबेर, शतावर, गिलोय, गोखरू, विधारा, रास्ना, सौंफ, कचूर, अजवायन और सोंठ,—इन बारह दवाओंको एक-एक तोले लो। सबके बराबर—१२ तोले—शुद्ध गूगल लो। सबका आधा—६ तोले—गायका घी लो। सबको कूट-पीस और मिलाकर लोहेके हिमामदस्तेमें, लोहेकी मूसलीसे घोटो। जब काजलके समान हो जाय, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। फिर इसे अमृतवान या घीके चिकने बासनमें रख दो।

इसके लगातार कुछ दिन खानेसे ८४ वातरोग, लँगड़ापन, कुबड़ापन रोग आराम होते और टूटी हड्डी जुड़ जाती है। कई बार परीक्षा की है। यह गूगल सर्वश्रेष्ठ गूगल है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मात्रा—१ माशेसे ६ माशे तक है। बलाबल-अनुसार, मात्रा कम-ज़ियादा देनी चाहिये।

अनुपान—गरम दूध, गरम जल, अजवायनका अर्क़, शराब अथवा चोपचीनीका अर्क़।

चौथी योगराज गूगल।

सोंठ, पीपर, चव्य, पीपरामूल, चीता, भुनी हींग, अजमोद, सरसों, ज़ीरा, कालाज़ीरा, रेणुका, इन्द्रजौ, पाढ़, बायबिडङ्ग, गज-पीपर, कुटकी, अतीस, भारंगी, बच और मूर्वा—मरोड़फली,—इन बीसों दवाओंको एक-एक शाण यानी चार-चार माशे लो। "त्रिफला" इन सबके वज़नसे दूना—१४ तोले—लो और शुद्ध गूगल, सबके वज़नके बराबर—२१ तोले—लो।

पहले त्रिफले तककी २१ दवाओंको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर साफ गूगलको, ज़रा-सा घी डालकर, लोहेके हिमामदस्तेमें खूब कूटो। जब खूब कुट जाय, उसमें दवाओंका चूर्ण डालकर खूब मिलाओ। इस समय इसमें वंगभस्म, चाँदीकी भस्म, नागेश्वर, कान्तिसार, निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म, मण्डूर-भस्म और रससिन्दूर, दो-दो तोले मिला दो और फिर खूब कूटो। जब सब चीज़ें एकदिल हो जायँ, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनाकर, चिकने या काँचके बर्तनमें रख दो। यही "शार्ङ्गधरकी योगराज गूगल" है।

इसपर भी मैथुन या खाने-पीनेकी क़ैद नहीं। बिना पथ्यके भी यह लाभ ही करती है। यह त्रिदोषनाशक रसायन है। अनुपान वग़ैरः वही जो "पहली योगराज गूगल"में लिख आये हैं। यह सबसे उत्तम गूगल है। हम समस्त वातरोगोंमें इसको व्यवहार करके लाभ उठा चुके हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—"शार्ङ्गधर"में वंग आदि भस्म चार-चार तोले मिलानेकी बात लिखी है; पर हमने दो-दो तोले मिलाकर ही लाभ और सुभीता देखा है. इसीसे दो-दो तोले लिखी हैं। श्यामसुन्दर आचार्य रससिन्दूरकी जगह "चन्द्रोदय" डालते थे और "स्वर्णभस्म" अपनी ओरसे अधिक मिलाते थे। उनका कहना है, कि एक छटाँक अरण्डीके तेलमें ६ माशे योगराज गूगल डालकर गरम करो। फिर उसमें आध सेर गरम दूध और छटाँक भर मिश्री मिलाकर पीलो। इस योगसे हड्डीमें घुसी हुई वात-व्याधि भी नष्ट हो जायगी। रैंडीके तेलसे ४।५ दस्त होंगे, पर बल नहीं घटेगा। भोजनके समय हलवा, चूरमा और घी डालकर खिचड़ी गरम-गरम खाओ। नमक, मिर्च, ज़ीरा, भुनी हींग, सोंठ, पीपर, अजवायन, पोदीना और घीमें भुना लहसन इनको नीबूके रसमें घोटकर चटनी बना लो। यह चटनी ज़ायकेदार और गुणकारी है।

अश्वगन्धा घृत।

घी एक भाग और दूध चार भाग लेकर घी पका लो। इस घीमें "असगन्धका पिसा-छना चूर्ण" मिलाकर खानेसे असाध्य वातरोग भी नाश हो जाता है। साथ ही शुक्र धातुकी दारुण क्षीणता भी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

स्वच्छन्द भैरव रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोह-भस्म, शुद्ध सुहागा, शुद्ध मीठा विष, शुद्ध हरताल, सोनामाखीकी भस्म, त्रिकुटा, अरनी, जंगी हरड़ और मुण्डी—एक-एक तोले ले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करके, विना चमककी कज्जली कर लो। फिर उसमें लोहा आदिकी भस्म मिला दो। शेषमें त्रिकुटा, अरनी, हरड़ और मुण्डीको पीस-छानकर मिला दो। इस चूर्णको एक दिन-भर "निर्गुण्डीके रस" के साथ घोटो और एक दिन "गोरखमुण्डीके रस" के साथ घोटो। जब घोटते-घोटते सूखा चूर्ण हो जाय, रख दो। यही "स्वच्छन्द भैरव रस" है। इस रसकी मात्रा १ रत्तीकी है। इस रसके सेवन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करनेसे पक्षाघात और सब तरहकी वातव्याधियाँ आराम हो जाती हैं।

नोट—यह नुसख़ा "वैद्य-विनोद"का है। "शार्ङ्गधर"में मुण्डीकी जगह "निर्गुण्डी" लिखी है। इसकी १ मात्रा खाकर, ऊपरसे रास्ना, गिलोय, देवदारु, सोंठ और अरण्डीकी जड़—इनके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल" मिलाकर, यही काढ़ा पिया जाता है; तो बहुत ज़ियादा फायदा करता है। "स्वच्छन्द भैरव रस" वात-रोगोंपर अक्सीरका काम करता है।

विष्णु तैल।

सरिवन, पिठवन, खिरेंटी, गंगेरन, गोखरू, अरण्डीकी जड़, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, करंज, शतावरी और पियाबाँसा—ये सब दवाएँ चार-चार तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

काली तिलीका तेल २ सेर, गायका दूध ४ सेर और ऊपरकी लुगदी—इन सबको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तैलको विष्णु भगवान्‌ने बनाया था, इसलिये इसका नाम "विष्णु तैल" है।

इस तैलकी कुछ दिन मालिश करनेसे आदमी तो आदमी जान-वरोंकी वातव्याधि भी नष्ट हो जाती है। इसके लगानेसे वायु फौरन नष्ट होता, शरीर वज्रवत् मज़बूत होता और टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है। अनेक बारका परीक्षित है। हर वैद्य और गृहस्थको घरमें रखना चाहिये।

महाविष्णु तैल।

नागरमोथा, असगन्ध, जीवक, ऋषभक, कचूर, काकोली, क्षीर-काकोली, जीवन्ती, मुलहटी, देवदारु, पद्माख, सैंधानोन, जटामासी, छोटी इलायची, दालचीनी, पत्थरफूल, कूट, बच, लाल चन्दन, मँजीठ,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कस्तूरी, सफेद चन्दन, केशर, सरिवन, पिठवन, मसवन, मुगवन, कौड़िया लोबान, गठौना, नखी और सौंफ—इन ३२ दवाओंको चार-चार तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर सिलपर रखकर, पानीके साथ लुगदी बना लो।

फिर काले तिलोंका तेल १६ सेर, शतावरका रस १६ सेर, गायका दूध १६ सेर और पानी ३२ सेर तथा ऊपरकी लुगदी सबको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे तेल पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर बोतलमें भर दो।

इस तैलकी मालिशसे समस्त वातरोग आनन-फानन आराम होते हैं। ऊपर लिखा "विष्णु तैल" ही रामवाण है, फिर यह तो उससे १०० गुनी अधिक ताक़त रखता है। जो वात-व्याधियोंकी चिकित्सामें निराश हो गये हों, वे इसे अवश्य लगावें; तत्काल फल मिलेगा। अनेक बारका परीक्षित है।

नारायण तैल।

बेलगिरी, अरणी, सोनापाठा, पाढ़, महानीम, प्रसारिणी, असगन्ध, दोनों कटाई, बरियारा, गुलसकरी—ककई, गोखरू और पुनर्नवा—इन तेरह दवाओंको आध-आध पाव लेकर कूट लो। फिर इस कूटे हुए चूर्णको सोलह गुने यानी २६ सेर पानीमें औटाओ। जब चौथाई यानी ६॥ सेर पानी रह जाय उतार लो और छानकर अलग रख दो।

फिर सौंफ, देवदारु, बालछड़, छरीला, बच, लाल चन्दन, तगर, कूट, इलायची, सरिवन, पिठवन, मुगवन, मसवन, रास्ना, असगन्ध, सैंधानोन और पुनर्नवा—इन सत्रह दवाओंको दो-दो तोले लेकर कूट लो। फिर सिलपर रखकर, पानीके साथ, महीन पीस लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब एक सेर शतावरको १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, खूब मलकर काढ़ा निकाल लो।

फिर काली तिलीका तेल २ सेर, गाय या बकरीका दूध ८ सेर, शतावरका काढ़ा ४ सेर, दवाओंका काढ़ा ६॥ सेर और लुगदी—इन पाँचोंको मिलाकर पकाओ। जब दूध और काढ़े जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "नारायण तैल" है।

इस तैलको मन्दाग्निसे पकाओ; जोरकी आगसे तैल खराब हो जाता है। अगर औटानेका वर्तन छोटा हो, तो पहले तेल, लुगदी और काढ़ेको चढ़ा देना। जब काढ़ा जलनेसे बासन कुछ खाली हो, उसमें शतावरका रस पाव-पाव भर डालना। जब शतावरका रस न रहे, इसी तरह थोड़ा-थोड़ा दूध देना। जब कढ़ाहीमें तेल और आधा सेर तीन पाव पानी रह जाय, उतार लेना।

यह तैल हमारा हजारों बारका आजमाया हुआ है। इसके बदनपर मलने, कानमें डालने, पीने और गुदामें पिचकारी देनेसे उर्ध्ववात, अधोगत वात, मन्यास्तम्भ, शिराग्रह, हनुस्तम्भ, बहरापन, लूलापन, लँगड़ापन, भुजाशोष, पादशोष, लकवा, फालिज, अर्दितवात, पक्षाघात, एकांगवात और अर्द्धाङ्ग आदि ८० प्रकारके वातरोग नाश हो जाते हैं। यह तैल टूटे हाड़को भी जोड़ सकता है, तब वात नाश करनेमें क्या शक? इससे हाथी और घोड़ोंके वात-विकार भी नष्ट हो जाते हैं। इसे बिना हवाके स्थानमें लगाना चाहिये। परीक्षित है।

मध्यम नारायण तैल।

बेल, असगन्ध, वृहती, गोखरू, श्योनाक, बरियारा, नीम, कटेरी, पुनर्नवा, गुलसकरी, गनियारी, गंधाली और पाटला—इनकी जड़ें पाँच-पाँच तोले लो। फिर इनको जौकुट करके १ मन, २४ सेर पानीमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डालकर काढ़ा पकाओ। जब १६ सेर पानी रह जाय, उतारकर काढ़ा छान लो और अलग रख दो।

शतावर १ सेर लेकर कूट लो और १६ सेर पानीमें डालकर पकाओ। जब २४ सेर पानी रह जाय, खूब मलकर रस निकाल लो।

गायका दूध ४ सेर और काली तिलीका तेल ४ सेर—इनको भी अलग रख दो।

रास्ना, असगन्ध, सौंफ, देवदारु, कूट, सरिवन, पिठवन, मुगवन, अगर, नागकेशर, सैंधानोन, जटामासी, हल्दी, दारुहल्दी, शैलज, लाल चन्दन, कूट, इलायची, मँजीठ, मुलेठी, तगर, मोथा, तेजपात, भाँगरा, जीवक, ऋषभक, काकोली, क्षीर-काकोली, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, सुगन्धवाला, बच, ढाककी जड़, गठौना, सफेद पुनर्नवा और चोर काँचकी—इनमेंसे हरेकको एक-एक तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो।

अब कढ़ाहीमें तेल २ सेर, काढ़ा १६ सेर, शतावरका रस ४ सेर, गायका दूध ४ सेर और लुगदी—इन सबको मिलाकर तैलको पका लो। शेषमें, तैलमें सुगन्धि करनेको कपूर, केशर और कस्तूरी ६।६ माशे घोट-पीसकर मिला दो।

तैलके शीतल होनेपर, उसे नितार-छानकर बोतलोंमें भर दो।

महानारायण तैल।

शतावर, सरिवन, पिठवन, कचूर, बरियारा, अरण्डकी जड़, कंटकारी, कंटकरेजाकी जड़, गुलसकरी और भाँटीकी जड़—हरेक पाँच-पाँच तोले लेकर कूट लो और आठ सेर पानीमें डालकर काढ़ा बनाओ। जब दो सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर १ सेर शतावर लेकर कुचल लो और बारह सेर पानीमें औटाओ; जब ३ सेर पानी रह जाय, मलकर रस निकाल लो और गाय या बकरीका दूध एक सेर लाकर रख लो।

फिर पुनर्नवा, बच, देवदारु, सौंफ, लाल चन्दन, अगर, शैलज, तगरपादुका, कूट, इलायची, सरिवन, बरियारा, असगन्ध, सैंधानोन और रास्ना—इनको छै-छै माशे लेकर, सिलपर पानीके साथ, महीन पीस लो। यही कल्क या लुगदी है।

अब २ सेर दवाओंका काढ़ा, ३ सेर शतावरका रस, १ सेर दूध, आध सेर तिलीका तेल और लुगदी—इन सबको कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "महानारायण तैल" कलकतिये कविराज बनाते हैं। इसके लगाने, मलने, पीने, पिचकारी लगाने और नास लेनेसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं।

महामाषादि तैल।

उड़द १२८ तोले, दशमूल २०० तोले और बकरेका मांस १२० तोले—इन तीनोंको कुचलकर १०२४ तोले पानीमें पकाओ; जब चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय, उतार लो।

१२८ तोले काली तिलीका तेल और तेलसे चौगुना ५१२ तोले गायका दूध भी तैयार रख लो।

काकोली, क्षीर-काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, जीवन्ती, मँजीठ, चव्य, चीता, कायफल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, पीपरामूल, रास्ना, आमले, गोखरू, कौंचके बीज, अरण्डकी जड़, सौंफ, सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, देवदारु, गिलोय, कूट, असगन्ध, बच और कचूर—इनमेंसे हरेक दवाको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब चूल्हेमें आग जलाकर उसपर कढ़ाही रखो। कढ़ाहीमें २५६ तोले उड़दादिका काढ़ा, १२८ तोले तेल, ५१२ तोले दूध और ऊपरकी लुगदी—सबको डालकर मन्दाग्नि से पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और बोतलोंमें रख दो। यही "महा-माषादि तैल" है।

इस तैलके पीने, नास लेने, गुदामें पिचकारी देने और कान आदिमें भरनेसे समस्त वातरोग नष्ट हो जाते हैं। यह तैल पक्षाघात, एकांगवात, अर्द्धाङ्गवात, हनुग्रह, कानका दर्द, मस्तकका दर्द, त्रिदोष-जन्यतिमिर, हाथकी जड़ता, पाँवकी जड़ता; शिर, गर्दन और कानोंकी मन्दता; लँगड़ापन, गृध्रसी और अपबाहुक-रोगको निश्चय ही नाश करता है। परीक्षित है।

दूसरा महामाषादि तैल।

(१) उड़द, जौ, अलसी, कटेरी, कौंचके बीज, कटसरैया, गोखरू और अरलू—इन आठों दवाओंको अट्ठाईस-अट्ठाईस तोले लेकर जौकुट कर लो और चौगुने यानी ८१६ तोले पानीमें पकाओ। जब चौथाई यानी २०४ तोले पानी रह जाय, उतारकर छान लो और धर दो।

(२) बिनौले, बेरकी गुठली, सनके बीज और कुलथी—इन चारोंको छप्पन-छप्पन तोले लेकर, चौगुने यानी ८९६ तोले पानीमें पकाओ; जब चौथाई यानी २२४ तोले पानी रह जाय, उतारकर छान लो और धर दो।

(३) ६४ तोले बकरेका मांस लेकर २५६ तोले पानीमें पकाओ; जब चौथाई यानी ६४ तोले पानी रह जाय, उतारकर छान लो और धर दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) गिलोय, कूट, सैंधानोन, रास्ना, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़, पीपर, सौंफ, खिरेंटी, प्रसारिणी, वालछड़ और कुटकी—इनमेंसे हरेकको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो।

(५) अब ६४ तोले काली तिलीका तेल कढ़ाहीमें डालकर चूल्हे-पर चढ़ाओ। उस तेलमें पहले उड़द वग़ैरःका २०४ तोले काढ़ा मिला दो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब यह काढ़ा पक जाय, उसमें बिनौले वग़ैरःका २२४ तोले काढ़ा डालकर पचाओ। जब यह भी पच जाय, तब उसमें बकरेके मांसका ६४ तोले काढ़ा भी डाल दो और पचाओ। जब यह काढ़ा भी पच जाय, उसमें दवाओंकी लुगदी थोड़ी-थोड़ी डालकर पचा दो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर तेलको छान लो। यही दूसरा "महामाषादि तैल" है।

इस तैलसे आक्षेपक, पक्षाघात, उरुस्तम्भ, अपबाहुक, हाथ काँपना, सिर काँपना, विश्वाची, अर्दित या लकवा तथा समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इसी तैलको शार्ङ्गधर आचार्यने "माषादि तैल" लिखा है। उनका भी कहना है कि, इससे ग्रीवास्तम्भ आदि वातरोग नाश हो जाते हैं। इस तैलकी हमके अनेक बार परीक्षा की है।

प्रसारिणी तैल।

मूल, पत्ते और शाखाओं समेत प्रसारिणीका पंचाङ्ग ४०० तोले लेकर, १०२४ तोले पानीमें पकाओ। जब चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय, मल-छानकर काढ़ेको रख लो।

फिर २५६ तोले काली तिलीका तेल, २५६ तोले दही, २५६ तोले काँजी और १०२४ तोले गायका दूध तैयार रखो।

मुलहटी, पीपरामूल, चीतेकी छाल, सैंधानमक, बच, प्रसारिणी, देवदारु, रास्ना, गजपीपर, भिलावेकी जड़, सौंफ और जटामासी—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन बारह दवाओंको समान-समान दो-दो तोले आठ-आठ माशे ले लो; यानी कुल वज़न ३२ तोले लो। फिर इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर कल्क या लुगदी बना लो।

अब कढ़ाहीमें तेल, लुगदी और प्रसारिणीका काढ़ा डालकर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब प्रसारिणीका काढ़ा जलनेपर आवे, उसमें दही थोड़ा-थोड़ा डालकर पचा दो और फिर काँजी पचा दो। जब काढ़ा, दही, काँजी और दूध जल जायँ, तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "शार्ङ्गधर" का प्रसारिणी तैल है।

इस तैलकी मालिशसे वात-कफके रोग, कुबड़ा करनेवाली वात, पांगला करनेवाली वायु, गृध्रसी वात, अर्दित वात, लकवा, हनुग्रह—ठोड़ी जकड़ना; पीठ, कमर, सिर और गर्दनकी जकड़न; कमरकी जकड़न—तथा विषम वात ये सब निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

नोट—हमने एक और प्रसारिणी तैल आगे हनुग्रह-चिकित्सामें "भाव-प्रकाश" के मतसे भी लिखा है। उसके और इसके बनानेमें थोड़ा फ़र्क़ है। यह "शार्ङ्गधर" का योग है।

बला तैल।

(१) खिरेंटीकी जड़ ८ सेर लेकर ३२ सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई यानी ८ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर काढ़ेको रख दो।

(२) दशमूलकी दसों दवाएँ कुल मिलाकर ८ सेर ले लो और ३२ सेर जलमें डालकर काढ़ा कर लो। जब चौथाई यानी ८ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर काढ़ा रख दो।

(३) कुलथी आठ सेर लेकर, ३२ सेर पानीमें औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर रख दो।

(४) जौ आठ सेर लेकर, ३२ सेर पानीमें औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर रख दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) बेरकी गरी ८ सेर लेकर, ३२ सेर जलमें औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर रख दो।

(६) काले तिलोंका तेल एक सेर और गायका दूध आठ सेर तैयार करके रख लो।

(७) काकोली, क्षीर काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, शतावर, देवदारु, मँजीठ, कूट, पत्थरका फूल, तगर, अगर, सैंधानोन, वच, पुनर्नवा, जटामासी, सफेद सारिवा, काला सारिवा, पत्रज, सौंफ, असगन्ध और छोटी इलायची—इन २४ दवाओंको दस-दस माशे लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर, लुगदी या कल्क बना लो।

(८) कढ़ाहीमें तेल, लुगदी और खिरेंटीका काढ़ा डालकर मन्दाग्निसे तेल पकाओ। इसके बाद एक-एक करके सब काढ़े और दूध पचा दो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "बला तैल" है। यह नुसख़ा भी "शार्ङ्गधर" का है।

यह तैल गर्भ चाहनेवाली स्त्रियों, धातुक्षीणवाले पुरुषों, राह चलनेसे थके हुए मनुष्यों और प्रसूता स्त्रियोंके लिए अमृत है। पर शास्त्रमें लिखा है—बलातैलमिति ख्यातं सर्ववातामयापहम् अर्थात् "बला तैल" समस्त वातरोगोंको नाश करता है और वास्तवमें नाश करता भी है, इसीसे हमने यहाँ लिखा है। यह तैल राजा-महाराजाओं और अमीरोंके घरोंमें रहने योग्य है।

लशुनादि तैल।

लहसन एक पाव, लालमिर्च १ पाव और अफीम ६ तोले—इन तीनोंको जौकुट-सा करके २ सेर काली तिलीके तेलमें मिला दो। फिर इन सबको किसी लोहेके लोटे या और बर्तनमें भरकर, ऊपरसे ढकना बन्द कर दो और सन्धियोंपर कपड़-मिट्टी कर दो। इसके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाद चूल्हेके नीचे गढ़ा खोदकर, उसमें इस बर्तनको रखकर, मिट्टीसे दबा दो। उस चूल्हेपर रोटियाँ होती रहें। पन्द्रह दिन बाद बर्तनको चूल्हेसे निकाल लो और तेलको छानकर बोतलोंमें भर दो। इस तैलकी लगातार मालिश करनेसे समस्त वातरोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। कई बारका परीक्षित है।

रसोनकल्क।

लहसनको पानीके साथ सिलपर पीसकर, उसमें सैंधानोन और तिलीका तेल मिलाकर खानेसे समस्त वातरोग और विषमज्वर नाश हो जाते हैं। "भावप्रकाश"में लिखा है:—

युक्तः कल्को रसोनस्य तिल तैलेन सिन्धुना।
वातरोगान्हरेत्सर्वा ज्वरांश्च विषमानपि॥

अर्थ वही है जो ऊपर लिखा है। "वैद्यजीवन"में भी लिखा है:—

नान्यानि मान्यानि किमौषधानि,
परन्तु कान्ते! न रसोनकल्कात्।
तैलेन युक्तादपरः प्रयोगो,
महासमीरे विषमज्वरेऽपि॥

हे कान्ते! और दवाएँ क्या मानने योग्य नहीं हैं? लेकिन महान् वात-व्याधि और विषमज्वरमें तेल मिले हुए लहसनके कल्कसे बढ़कर और नुसख़ा नहीं है।

दूसरा रसोनकल्क।

दूध, तेल, घी, मांस, भात अथवा साँठी चावलोंका भात—इनके साथ, सात दिन तक, क्रमशः, हर दिन, दो-दो तोले लहसनका कल्क यानी सिलपर पिसा हुआ लहसन बढ़ा-बढ़ाकर खानेसे वात सम्बन्धी रोग, विषमज्वर, शूल, गोला, मन्दाग्नि, तिल्लीका रोग,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हाथका दर्द, पसलियोंकी पीड़ा, सिरकी पीड़ा और वीर्यके समस्त दोष दूर हो जाते हैं।

नोट—दूध, तेल, घी या मांस प्रभृतिमेंसे किसी एकके साथ लहसनका कल्क खाना चाहिये।

रसोनाष्टक।

लहसनकी पकी हुई गाँठको छीलकर साफ कर लो। फिर उस गाँठको चीरकर उसके बीचके अंकुर निकाल दो। फिर उसकी बदबू नाश करनेके लिये, उन कलियोंको रातके समय "दही" में गाड़ दो। सवेरे ही उन्हें पानीसे धोकर सुखा लो। इस लहसनमें बदबू न रहेगी।

कालानोन, अजवायन, भुनी हींग, सैंधानोन, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और सफेद जीरा—इन आठोंको समान-समान लेकर कूट-पीस और छान लो।

साफ किये हुए लहसनको सिलपर पानीके साथ पीस लो। जितना पिसा हुआ लहसन हो, उसका पाँचवाँ भाग ऊपरका चूर्ण उसमें मिला दो और लहसनका चौथा भाग तिलीका तेल मिला दो। यह खाने योग्य "रसोनाष्टक" या लहसन तैयार हुआ।

इस तैयार किये हुए लहसनमेंसे एक तोला लेकर, रोगी सवेरे ही खावे और नित्य "अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पीवे। इसकी मात्रा दोषोंके विचारसे कमोबेश भी ली जा सकती है।

इस रसोनाष्टकके सेवन करनेसे सर्वाङ्गवात, एकाङ्गवात, अर्दित—लकवा, अपतन्त्रक, अपस्मार—मृगी, उन्माद, उरुस्तम्भ, गृध्रसी; छाती, पीठ और कमरका दर्द; पसलियोंका शूल, कूखका दर्द और कृमि या कीड़े नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पथ्य—रसोनाष्टक खानेवालेको शराब, मांस और खट्टे रस खाने-पीने चाहिए।

अपथ्य—मिहनत, धूप, क्रोध, बहुत पानी और मैथुनको त्याग देना चाहिये।

निषेध—अतिसार, प्रमेह, पाण्डुरोग, अरुचि, मूर्च्छा, बवासीर, रक्तपित्त, शोष, भयङ्कर क्षयरोग और वमनवाले रोगी और गर्भवती स्त्रियाँ लहसनको न खावें। उनको लहसन खानेसे हानि होगी।

सावधानी—रसोनाष्टक सेवन कर चुकनें बाद, "विरेचन या जुलाब" लेना चाहिये। अगर कोई जुलाब न लेगा; तो उसके कोढ़ और पाण्डु आदि रोग पैदा हो जायँगे।

बालक—बालक इसे पसन्द नहीं करते; पर उन्हें भी रसोनाष्टक उनकी माँके दूधमें मिलाकर, देनेसे उनके सारे वातरोग नाश हो जाते हैं।

लशुन योग।

लहसनको सिलपर महीन पीसकर और "घी" मिलाकर खानेसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं।

लशुनादि चूर्ण।

चार तोले लहसनको महीन पीसकर उसमें सैंधानोन, संचरनोन, सफेद जीरा, त्रिकुटा और भुनी हींग चार-चार माशे मिलाकर खाने और ऊपरसे "अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पीनेसे सर्व्वाङ्गवात, अर्दित-वात—लकवा, कमर और पीठका दर्द—ये सब वातरोग अवश्य नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा १ माशेकी है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्द्रबीजादि चूर्ण।

इन्द्रजौ, चीता और सोंठ—इनको समान-समान लेकर और पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णके खानेसे वात-विकार नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

रास्नादि चूर्ण।

रास्ना, पोहकरमूल, सहँजना, बेलगिरी, चीता, सैंधानोन, गोखरू और छोटी पीपर—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। इसको "घी" में मिलाकर खानेसे वातरोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

रास्नादि क्वाथ।

रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय और अरण्डकी जड़—इनको छै-छै माशे लेकर और काढ़ा बनाकर पीनेसे सप्तधातुगत वात, आम-मिली वात और सारे शरीरकी वात आराम हो जाती है। परीक्षित है।

महारास्नादि क्वाथ।

रास्ना २ तोले, धमासा, खिरेंटीकी जड़, अरण्डकी जड़, देवदारु, कचूर, बच, अड़ूसेका पञ्चांग, सोंठ, हरड़की छाल, चव्य, नागरमोथा, साँठकी जड़, गिलोय, विधारा, सौंफ, गोखरू, असगन्ध, अतीस, अमलताशका गूदा, शतावर, छोटी पीपर, पियाबाँसा, पुराना धनियाँ, छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी, इन पचीसोंको एक-एक तोले लेकर जौकुट करके रख लो। इसकी बारह खूराक बना लो। हरेक खूराकको अठगुने जलमें औटाओ, जब आठवाँ भाग पानी रह जाय, मलकर छान लो। यही "महारास्नादि काढ़ा" है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस काढ़ेमें सोंठका चूर्ण अथवा पीपरका चूर्ण अथवा योगराज गूगल अथवा अरण्डीका तेल मिलाकर पीनेसे सब शरीरका काँपना, कुबड़ापन, पक्षाघात, अपबाहुक, गृध्रसी, आमवात, श्लीपद या हाथी-पाँव—फीलपाँव, अपतानक वायु, अण्डवृद्धि—फोते बढ़ना, अफारा, जाँघकी पीड़ा, घोंटूकी पीड़ा, शुक्र-दोष—वीर्य-दोष, लिङ्ग-रोग, बन्ध्यायोनि और गर्भाशयके रोग आदि वातरोग आराम होते हैं। यह "महारास्नादि क्वाथ" ब्रह्माजीने गर्भ ठहरनेके लिये बनाया था। सुपरीक्षित है।

वात-गज-केशरी अर्क।

रास्ना २ सेर, अजवायन १ सेर, धनियाँ १ पाव, नागरमोथा १ छटाँक, अड़ूसा १ छटाँक, देवदारु १ छटाँक, पियाबाँसा १ छटाँक, सौंफ १ छटाँक, शतावर १ छटाँक, कचूर १ छटाँक, बड़ा गोखरू १ छटाँक, बादाम १ छटाँक, काला जीरा १ छटाँक, बहेड़ा १ छटाँक, असगन्ध १ छटाँक, अमलताशका गूदा १ छटाँक, छोटा गोखरू १ छटाँक, बड़ी हरड़ १ छटाँक, सोंठ १ छटाँक, बिधारा १ छटाँक, धनियाँ १ छटाँक, वच १ छटाँक, कटेली १ छटाँक, अतीस १ छटाँक, जवासा १ छटाँक, अरण्डकी जड़ १ छटाँक, चव्य १ छटाँक, पीपर १ छटाँक, साँठी १ छटाँक और खिरेंटी १ छटाँक, इन सबको अधकचरा करके, दस सेर पानीमें, मिट्टीकी बड़ी हाँडी या नादमें भिगो दो। २४ घण्टे भीगनेके बाद, भभकेसे अर्क खींच लो।

इसकी मात्रा १ से २॥ तोले तक है। बलवान ज़ियादा भी पी सकता है। इसके दिनमें तीन बार पीनेसे बदनका दर्द, सूजन और समस्त वातरोग आनन-फानन आराम हो जाते हैं। आमवात,—गठिया, लकवा—अर्दित, पक्षाघात—फालिज, श्लीपद—हाथीपाँव,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीर्य-दोष, रजोदोष आदिपर रामवाण है। गठिया वगैरः रोग तो ३।४ दिनमें ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

विषगर्भ तैल।

काली तिलीका तेल ४ सेर, भूसीका जल ४ सेर, कनेरका स्वरस ४ सेर, धतूरेका रस ४ सेर, सँभालूका रस ४ सेर, आकका रस ४ सेर और जटामासीका रस ४ सेर—इन सबको मिलाकर मन्दी-मन्दी आगसे औटाओ। जब रस जलकर तेल-मात्र रह जाय, उसमें धतूरा, कूट, फूल प्रियंगू, बच्छनाभ-विष, स्वर्णक्षीरी—पीले दूधकी कटेरी, रास्ना, सफेद कनेरकी जड़, मालकाँगनी, कालीमिर्च, गूगल, मँजीठ, जटामासी, बच, चीता, सरसों, देवदारु, दारुहल्दी, अरण्डकी जड़ और त्रिफला—इन उन्नीस दवाओंको बराबर-बराबर चार-चार तोले लेकर महीन पीस लो और डाल दो। यही "विषगर्भ तैल" है। "वैद्यरत्न"में लिखा है—विषगर्भमेतत् तैलं समस्त पवनामय नाशनं स्यात्; अर्थात् यह विषगर्भ तैल सारे वातरोगोंको नाश कर देता है।

वातारि तैल।

बकायन, आक, सँभालू, धतूरा, अरण्ड, सेंहुड़, भाँगरा और कनेर—इन आठोंके पत्तोंका आध-आध पाव रस निकाल लो। फिर पाव भर तिलीके तेल और इन पत्तोंके रसको मिलाकर, आग-पर चढ़ा दो और औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसकी मालिशसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैंधवादि तैल।

सैंधानोन ८ तोले, सोंठ २० तोले, चीतेकी छाल ८ तोले, पीपरा-मूल ८ तोले, भिलावोंकी मींगी ८० तोले और अरनाल काँजी ११५ तोले तथा अरण्डीका तेल ३२० तोले—कूटनेकी दवाओंको कूटकर और सबको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब काँजी जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "सैंधवादि तैल" है। "भाव-प्रकाश"में लिखा है, इस तैलकी मालिश करनेसे गृध्रसी, उरुस्तम्भ, मुँहकी पीड़ा और समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। यद्यपि "भाव-प्रकाश"में यह तैल "उरुस्तम्भ" रोगमें लिखा है, पर यह आराम करता है समस्त वात-रोगोंको, इसीसे हमने इसे यहाँ लिखा है। परीक्षित है।

नोट—"रसराज महार्णव"के लेखक महाशय लिखते हैं, जो रोग नारायण तैलसे आराम नहीं होते, वे इस तैलसे आराम होते हैं; पर उनके नुसख़ेकी तोलमें फ़र्क़ है। वे लिखते हैं, सैंधानोन ८ तोले, सोंठ ५ तोले, पीपरामूल २ तोले, चीता २ तोले, भिलावेकी मींगी ४०० तोले, काँजी २५६ तोले और तेल ६४ तोले। भगवान् जाने लिखनेकी भूल है या उन्होंने इसी तरह पराक्षा की है।

हिमसागर तैल।

(१) काले तिलोंका तेल ४ सेर, शतावरका रस ४ सेर, विदारीकन्द या पाताल कुम्हड़ेका रस ४ सेर, आमलोंका रस ४ सेर, सेमरकी जड़का रस ४ सेर, बड़े गोखरूका रस ४ सेर, नारियलका पानी ४ सेर, केलेके पेड़का रस ४ सेर और गायका दूध १६ सेर,—इन नौ चीज़ोंको पहले तैयार कर लो।

(२) कल्कके लिये लाल चन्दन, सफेद चन्दन, तगर, कूट, मँजीठ, अगर, जटामासी, छरीला, मुलेठी, देवदारु, नख, बड़ी हरड़,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बरियारा, लोध, मोथा, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, जावित्री, कचूर, पोईका फल और हल्दी—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पानीके साथ, सिलपर महीन पीस लो। यही कल्क या लुगदी है।

(३) कढ़ाहीमें तेल और कल्क या लुगदीको डालकर आगपर चढ़ा दो। आग मन्दी रखो। ऊपरसे थोड़ा-थोड़ा शतावरका रस डालते रहो। जब शतावरका रस बीत जाय, विदारीकन्दका रस डालो। इसी तरह आमले आदिके रस और दूधको पचा दो। जब सब रस और दूध जल जायँ और तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "हिमसागर तैल" है।

इस तैलकी मालिशसे उष्णवात या गरम बादीके समस्त रोग, हाथ-पैरके तलवे जलना, शरीरसे चिनगियाँ-सी उठना, शरीरका सूखना, लकवा और गठिया आदि वातरोग नाश होते हैं। अनेक बारका परीक्षित है। इससे वातरोग तो नाश होते ही हैं, पर उष्णवातपर तो यह खूब ही काम देता है। हमने जिस तरह आजमाया है, उसी तरह लिख दिया है। परीक्षित है।

नोट—और वैद्योंकी और हमारी कल्ककी दवाओंमें कुछ फ़र्क़ है। अन्य वैद्य लाल चन्दन, तगर, कूट, मँजीठ, सरल-काष्ट, अगर, जटामासी; मुरामासी, छारछरीला, मुलेठी, देवदारु, नखी, बड़ी हरड़, खटासी, पिंडिशाक, कुन्दुरखोटी, तालुका, शतावर, लोध, मोथा, दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, लौंग, जावित्री, सैंफ, कचूर, सफेद चन्दन, गँठेला और कचूर—इनको कल्कके लिये लेते हैं।

पुष्पराज प्रसारिणी तैल।

(१) ४०० तोले गन्ध प्रसारिणीको ६४ सेर जलमें औटाओ; जब १६ सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) तिलका तेल ४ सेर, गायका दूध १६ सेर, पद्मका रस ४ सेर और शतावरका रस ४ सेर तैयार रखो।

(३) सौंफ, देवदारु, रास्ना, गजपीपर, गन्ध प्रसारिणीकी जड़, जटामासी और भिलावेकी जड़,—इन सातोंको आठ-आठ तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो।

(४) काढ़े, तेल, दूध, रस और लुगदीको एकमें मिलाकर, मन्दाग्निसे औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलसे वातरोग नाश हो जाते हैं।

वृहत् छागलाद्य घृत।

(१) खुर और सींग आदिसे रहित बिना ब्याई बकरीका मांस १०० तोले लेकर, १६ सेर पानीमें पकाओ। चौथाई पानी रहनेपर, उतारकर, एक बर्त्तनमें छान लो।

(२) दशमूलकी दसों दवाएँ १०० तोले लेकर, १६ सेर पानीमें औटाओ। चौथाई पानी रहनेपर, मल-छानकर, उसी पहले बर्त्तनमें डाल दो।

(३) बरियाराकी जड़ १०० तोले लेकर, १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई पानी—४ सेर—रह जाय, उतारकर छान लो और उसी पहले बर्त्तनमें डाल दो।

(४) असगन्ध १०० तोले लेकर, १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छानकर, उसी पहले बर्त्तनमें डाल दो।

(५) शतावर १ सेर लेकर, १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, मल-छानकर उसी पहले बर्त्तनमें डाल दो।

(६) गायका दूध चार सेर लेकर उसी पहले बासनमें डाल दो।

(७) कल्क—जीवन्ती, मुलेठी, मुनक्का, काकोली, क्षीर काकोली, नीलकमल, मोथा, लाल चन्दन, रास्ना, मुगवन, मसवन, श्यामलता,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनन्तमूल, मेदा, महामेदा, ऋषभक, जीवक, कूट, कचूर, दारुहल्दी, प्रियंगू, त्रिफला, तगर, तालीसपत्र, पद्माख, छोटी इलायची, तेजपात, शतावर, नागकेशर, जातीपुष्प, धनियाँ, मँजीठ, अनार, देवदारु, सँभालूके बीज, एलुआ, वायविडङ्ग और सफेद ज़ीरा इन सबको एक-एक तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर, सिलपर रखकर पानीके साथ पीस लो और कल्क या लुगदी बना लो।

(८) अब एक बर्त्तनमें पड़े हुए काढ़ों, दूध, लुगदी और चार सेर घीको ताम्बेकी क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर औटाओ; जब रसादिक जलकर घी-मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और शीतल होनेपर उसमें आध सेर "मिश्री" पीसकर मिला दो।

नोट—अगर कहीं जीवक, ऋषभक आदि न मिलें, तो कल्ककी दवाएँ इस तरह लेना:—जीवन्ती, महुआ, दाख, दूधी, कमल, नागरमोथा, लाल चन्दन, रास्ना, सरिवन, पिठवन, बरियारी, अनन्तमूल, शतावर, असगन्ध, विदारीकन्द, कचूर, हल्दी, दारुहल्दी, प्रियंगू, त्रिफला, तगर, तालीसपत्र, पद्माख, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर, चमेलीके फूल, धनियाँ, मँजीठ, अनार, देवदारु, एलुआ, रेणुका, वायविडङ्ग, सफेद ज़ीरा और केशर। इस कल्कसे हमने छागलाद्य घृत अधिक बार बनाया है और खूब चमत्कार देखा है। परीक्षित है।

सेवन-विधि—इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २॥ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे समस्त वातरोग, अर्दित वात—लकवा, कानका दर्द, बहरापन, गूँगापन, मिनमिनापन, जड़ता, गद्गद्वात, पागलपन खंजवात, कुबड़ापन, गृध्रसी वात, अपतानक और अपतन्त्र-रोग आराम होते हैं। बहुत क्या—इस घीसे वे रोगी भी आराम हो गये, जिन्हें वैद्योंने असाध्य कहकर त्याग दिया था। इससे सब तरहके कोढ़, समस्त प्रमेह, सब उदर-रोग, औरतोंके सारे रोग, वातरक्त, गर्भस्राव, बाँझपन और यक्ष्मा आराम हो गये। अनुपान विशेषके साथ, यह पित्तके समस्त रोग और कफके समस्त रोगोंको भी नाश करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा छागलाद्य घृत।

(१) बकरीका मांस २ सेर लेकर, ३२ सेर जलमें पकाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय छान लो।

(२) दशमूल २ सेर लेकर, ३२ सेर जलमें औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय छान लो।

(३) शतावर १ सेर लेकर, १६ सेर जलमें पकाओ; जब ४ सेर पानी रह जाब छान लो।

(४) दूध ४ सेर और घी ४ सेर रख लो।

(५) जीवनीय दशक और मुलेठी ६ सेर लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। यही कल्क है।

(६) अब घी, कल्क और काढ़ोंको मिलाकर घी पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, छान लो।

यह नुसखा बंगसेनका है। इसके सेवन करनेसे भी समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं।

अश्वगन्धाद्य घृत।

आध सेर असगन्धको सिलपर पानीके साथ पीस लो। यह कल्क है।

दो सेर असगन्धको ३२ सेर पानी में पकाओ, जब आठ सेर काढ़ा रह जाय छान लो।

अब दो सेर घृत, आठ सेर दूध, आठ सेर काढ़े और कल्कको मिलाकर घी पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस "अश्वगन्धादि घृत" के सेवन करनेसे वातरोग नाश होते, वीर्य बढ़ता और मांस भी बढ़ता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महानारायण तैल।

(१) बेलगिरी, असगन्ध, कटाई, गोखरू, सोनापाठा, खिरेंटी, फरहद, कटेरी, पुनर्नवा, कंघी, अरणी, प्रसारिणी और पाढलकी जड़—इन तेरहों दवाओंको एक-एक सेर लेकर जौकुट कर लो और २ मन २२॥ सेर पानीमें डालकर औटाओ। जब पकते-पकते चौथाई यानी ९५॥ सेर पानी रह जाय, मल-छानकर रख दो।

(२) काले तिलोंका तेल ३ सेर १६ तोले, गाय या बकरीका दूध ३ सेर १६ तोले और शतावरका रस ३ सेर १६ तोले,—तैयार रखो।

(३) रास्ना, असगन्ध, देवदारु, कूट, शालपर्णी, पृश्नपर्णी, मुद्गपर्णी, मासपर्णी, अगर, मागकेशर, सैंधानोन, बालछड़, हल्दी, दारुहल्दी, भूरिछरीला, चन्दन, पोहकरमूल, इलायची, मुलेठी, तगर, नागरमोथा, तेजपात, भाँगरा, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीर काकोली, सुगन्धवाला, बच, कचूर, सफेद पुनर्नवा, थुनेर और चोरक—इन ३७ दवाओंको आठ-आठ तोले लेकर पीस-कूटकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

(४) अब बेलगिरी आदिके काढ़े, तेल, दूध, शतावरका रस और लुगदीको कढ़ाहीमें डाल मन्दाग्निसे तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "महानारायण तैल" है।

कितने ही वैद्य सुगन्धिके लिए और कितने ही पसीना और दुर्गन्ध दूर करनेको इस तैलमें, तैयार होनेपर, कपूर, केशर और कस्तूरी मिला देते हैं।

इस तैलसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। इस तैलकी बंगसेनमें बहुत तारीफ लिखी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कल्याण लेह।

हल्दी, बच, कूट, पीपर, सोंठ, सफेद जीरा, अजमोद और मुलेठी,—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो। इस चूर्णको घी मिलाकर चाटनेसे वातरोग नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा ६ माशेकी है।

रसराज रस।

रससिन्दूर ४ तोले, अभ्रकभस्म १ तोले और सोनाभस्म ६ माशे—इन तीनोंको मिलाकर "ग्वारपाठे"के रसमें ३ घण्टे तक खरल करो।

फिर इसीमें लोहाभस्म ३ माशे, बंगभस्म ३ माशे, चाँदीकी भस्म ३ माशे, असगन्धका पिसा-छना चूर्ण ३ माशे, लौंगका चूर्ण ३ माशे, जावित्रीका चूर्ण ३ माशे और खीर-काकोली ३ माशे मिला दो। फिर "काकमाचीका रस" दे-देकर ६ घण्टे घोटो। घुट जानेपर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "दूध या चीनीके शर्बतके साथ" खानेसे वातरोग नाश हो जाते हैं।

चिन्तामणि रस।

रससिन्दूर १ तोले, अभ्रकभस्म १ तोले, लोहाभस्म ६ माशे और सोनाभस्म ६ माशे—इनको "घीग्वारके रस"में ६ घण्टे तक खरल करके, रत्ती-रत्ती-भर की गोलियाँ बना लो। इस रसके सेवन करनेसे वातरोग तो नाश होते ही हैं; उनके सिवाय प्रमेह, प्रदर और सूतिका आदि रोग भी नाश हो जाते हैं। अनुपान, अवस्था विचारकर, वात-नाशक देना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चतुर्मुख रस।

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक, दोनों ६।६ माशे लेकर, खरलमें डालकर, ३ घण्टे तक घोटो। जब चमक न रहे, उसीमें अभ्रकभस्म ६ माशे, सोनेकी भस्म १ माशे और लोहाभस्म ६ माशे—मिलाकर, "घीग्वारके रस"के साथ खूब घोटो। फिर गोला-सा बनाकर, उसपर अरण्डीके पत्ते लपेटकर, डोरोंसे कस दो और धानके ढेरमें दबा दो। ३ दिन बाद निकाल लो और काममें लाओ। इसकी मात्रा २ रत्तीकी है। अनुपान शहद और त्रिफलेका भिगोया पानी। इससे वातरोग नष्ट हो जाते हैं।

योगेन्द्र रस।

रससिन्दूर ६ माशे, सोनाभस्म ३ माशे, लोहाभस्म ३ माशे, वंगभस्म ३ माशे, अभ्रकभस्म ३ माशे और अबीध मोती ३ माशे—इनको मिलाकर, "घीग्वारके रस" में खरल करो। फिर एक गोला-सा बनाकर, ऊपरसे अरण्डीके पत्ते लपेट दो और डोरे लपेट दो। इसे ३ दिन तक धानके ढेरमें दबा रखो; चौथे दिन निकाल लो। मात्रा २ रत्ती। अनुपान त्रिफलाका पानी और मिश्री। इससे वातरोग नाश हो जाते हैं।

वातगजांकुश बटी।

शुद्ध गन्धक, शुद्ध कुचला, भुना सुहागा, भुनी हींग, हरड़के छिलके, बहेड़ेके छिलके, गुठली निकाले आमले, कालानोन, सैंधानोन, सोंठ, पीपरामूल, चीतेकी छाल और पुराना गुड़—इन तेरह चीज़ोंको एक-एक तोले लेकर खूब महीन पीसो। फिर खरलमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डालकर, ऊपरसे "नीबूका रस" दे-देकर घोटो। घुट जानेपर, डेढ़-डेढ़ माशेकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। यही "वात-गजांकुश बटी" हैं। इन गोलियोंके सेवन करनेसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। इनके सेवन करनेसे दस्त खुलासा होता, भूख बढ़ती और नसोंमें बल आता है। सवेरे ही नित्य एक गोली खानी चाहिये। परीक्षित है।

अश्वगन्धादि मोदक।

असगन्ध, पीपल, सोंठ, बायबिडङ्ग, अकरकरा, अजवायन, काला-जीरा, पीपलामूल, चव्य और चीता,—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णसे दूना "पुराना गुड़" लेकर, इसमें मिला दो और डेढ़-डेढ़ तोलेके लड्डू बना लो। इसमेंसे एक-एक लड्डू सवेरे ही खानेसे वातरोग नाश हो जाते हैं।

वत्सनाभादि गुटिका।

शुद्ध सींगिया विष १ तोले, भुना सुहागा ३ तोले, कालीमिर्च ४ तोले और सोंठ ४ तोले—इन सबको महीन पीस-छानकर, खरलमें डालो और अदरखका रस डाल-डालकर घोटो। घुट जानेपर, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। शाम-सवेरे एक-एक गोली खानेसे अनेक तरहके वात-कफके रोग मिटते और भूख तेज़ होती है। परीक्षित है।

धत्तूर तैल।

काले धतूरेके पत्तोंका रस १ सेर तैयार करो। सफेद चिरमिटी, बच्छनाभ विष और काले धतूरेके बीज—तीनोंको मिलाकर कुल १

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छटाँक लो या प्रत्येकको बीस-बीस माशे लो। फिर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

लुगदी, धतूरेका रस और पाव भर तिलीका तेल--तीनोंको कढ़ाहीमें रख, मन्दाग्निसे तेल पकाओ। तेल-मात्र रहनेपर, उतारकर छान लो। इस तैलके चुपड़ने या लगाने मात्रसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

निर्गुण्डी चूर्ण।

सँभालू, भाँगरा, धुली भाँग और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और चूर्णके बराबर "मिश्री" पीसकर मिला दो। इसकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। इस चूर्णको पानीके साथ फाँकनेसे वातरोग नाश हो जाते हैं।

लघुमृगाङ्क।

तुलसीके स्वरसमें घी और कालीमिर्च मिलानेसे "लघुमृगाङ्क" बनता है। यह अनेक बलवान वातोंको इस तरह नाश करता है, जिस तरह विष्णु भगवान् अपने भक्तोंके दुश्मनोंको नाश करते हैं।

वातगजकेसरी बटी।

एक मिट्टीकी बड़ी हाँडी लाओ। उसकी पेंदीमें आध सेर "धतूरेके फल" रखो। धतूरेके फलोंके ऊपर आध सेर "सोंठ" धरो। सोंठके ऊपर आध सेर "अजवायन" रखो। अजवायनपर, फिर आध सेर "धतूरेके फल" रखो और हाँडीमें जितनी जगह खाली हो, उतनीमें गले तक पानी भर दो। हाँडीका मुँह ढकनीसे बन्द कर दो। फिर हाँडीको चूल्हेपर चढ़ाकर, मन्दी-मन्दी आगसे, ६ घण्टों तक, पकाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

६ घण्टे आग लग चुकनेपर, हाँडीमेंसे केवल "सोंठ"को निकाल लो; बाक़ी चीज़ोंको फैंक दो। सोंठको छायामें सुखाकर पीस-छान लो। फिर उस चूर्णको खरलमें डालकर, ऊपरसे "सहँजनेका रस" दे-देकर घोटो और रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको छायामें सुखा लो।

इनमेंसे एक गोली रोज़ सवेरे ही खानेसे समस्त वातरोग इस तरह भागते हैं, जिस तरह सूरजके उदय होनेसे अन्धकार भागता है। अनमोल दवा है। इसके चमत्कारपर हमें अनेक बार मुग्ध होना पड़ा। हर गृहस्थ और वैद्यको यह अपने पास रखनी चाहिये। समय-पर यह अँगरेज़ी तेज़-से-तेज़ दवाओंसे बढ़ जाती है। खूब परीक्षित है।

वातरोगान्तक चूर्ण।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, कालानोन और सफेद ज़ीरा एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर, गरम जल पीनेसे सब तरहके वातरोग आराम हो जाते हैं और खूबी यह है कि दस्त साफ़ होता है। परीक्षित है।

षडधरण योग।

चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, अतीस और हरड़—इनको तीन-तीन माशे लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण नित्य सवेरे ही, गरम पानीके साथ, छै दिन, खानेसे, समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—आमाशयगत वायु-चिकित्सामें यह और इसकी दूसरी विधि लिखी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातारि रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, त्रिफला ३ तोले, चीतेकी जड़ ४ तोले और रेंडीके तेलमें खरल किया हुआ शुद्ध गूगल ५ तोले—इन सबको मिलाकर "रेंडीके तेल"में खरल करो। फिर इसकी तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। बलाबल अनुसार एक या दो अथवा चार गोली खिलाकर, ऊपरसे "सोंठ और अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पिलाओ। साथ ही, "अरण्डीका तैल" पीठपर मालिश करके सेक दो। कदाचित दस्त हों, तो चिकना और गरम अन्न खाओ। इसके नियम-पूर्वक खाने और मैथुन त्याग देनेसे एक महीनेमें सारे वातरोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

हरताल रस।

शुद्ध हरताल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, शुद्ध ईँगुर, शुद्ध सुहागा, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर, इन सबको बराबर-बराबर ले लो। पहले पारे और गन्धकको खरल करो, जब निश्चन्द्र कजली हो जाय, उसमें बाक़ी दवाएँ मिला दो और "अदरखका रस" दे-देकर लगातार सात दिन तक घोटो। इसके बाद मूँग-समान गोलियाँ बना-बनाकर छायामें सुखा लो। सवेरे ही एक-एक गोली नित्य खानेसे सब तरहके वातरोग, प्रसूत-रोग, मन्दाग्नि, संग्रहणी और शीत-ज्वर नाश हो जाते हैं।

वातनाशक तैल।

मदारकी जड़, सफेद कनेरकी जड़, बच्छनागकी जड़, अड़ूसेकी जड़, केशुकी जड़, भटकटैयाकी जड़, करिहारीकी जड़, लहसनकी जड़ और जमालगोटेकी जड़—इन सबको एक-एक छटाँक लेकर कुचल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लो और सवा सेर सरसोंके तेलमें पकाओ; जब दवाएँ जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और शीशियोंमें भर दो। इस तैलके मलनेसे वातसे होनेवाले सभी दर्द मिट जाते हैं। जहाँ दर्द हो वहाँ मला करो और रोज़ अधौटा दूध पीया करो। पथ्य पदार्थ सेवन करो। परीक्षित है।

नोट—इस तैलके लगाने और इसपर कोई रसायन या उत्तम भस्म खानेसे नामर्द भी मर्द हो जाता है। यह तैल ख़राब नसोंको ठीक करके नामर्दको भी मर्द बना सकता है; पर लिङ्गकी सुपारी या अग्र भागपर इसे न लगाना चाहिये।

विषमुष्टि गुटिका।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध बच्छनाग विष, अजवायन, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, सैंधानोन, चीतेकी जड़, सफेद ज़ीरा, कालानोन, वायविडंग और त्रिकुटा—ये सब एक-एक तोले लो और "शुद्ध कुचलेका चूर्ण" इन सबके बराबर—१३ तोले—लो। इन सबको पीस-कूटकर खरलमें डालो और "नीबूका रस" दे-देकर खूब घोटो। घुट जानेपर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको, यथोचित अनुपानके साथ, सेवन करनेसे नाना प्रकारके वातरोग, आमविकार, जीर्णज्वर, मन्दाग्नि और अजीर्ण आदि रोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

वातनाशक रस।

रससिन्दूर, सोनाभस्म, हीराभस्म, ताम्बाभस्म, लोहाभस्म, सोनामाखीकी भस्म, हरतालकी भस्म, शुद्ध सुरमा, शुद्ध नीलाथोथा और शुद्ध अफीम—इन दशोंको बराबर-बराबर—छै-छै माशे—ले लो और सैंधानोन, संचर नोन, विड़नोन, खारी नोन तथा समन्दर नोन—पाँचों नोन मिलाकर कुल ६ माशे ले लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर पन्द्रहों चीज़ोंको मिलाकर खरलमें डालो और "थूहरका दूध" डाल-डालकर, १२ घण्टे तक, खरल करो। फिर इसका गोला-सा बनाकर एक सराईमें रख दो और ऊपरसे दूसरी सराई ढककर, कपड़-मिट्टी कर दो। जब सूख जाय, तब "भूधर यन्त्र"में रखकर आग लगाओ। जब आग ठण्डी हो जाय, दवाको निकाल लो। इसकी मात्रा "शार्ङ्गधर" में १ माशेकी लिखी है, पर आजकलके कमज़ोर आदमियोंको २ रत्तीकी मात्रा ठीक होगी। बलवानके लिये ३।४ "रत्ती" काफी होगी।

"अदरखके स्वरस" में, एक मात्रा मिलाकर रोगीको चटा दो और ऊपरसे तत्काल—दवा चाटते ही—"पोहकरमूलके काढ़ेमें पीपरका चूर्ण" मिलाकर पिला दो। इस "वातनाशक रस" से समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। इस रसके उत्तम होनेमें शक नहीं।

वातान्तक बटी।

शुद्ध सिंगरफ मकसूदाबादी, भुना सुहागा, सोंठ, सैंधानोन, बाय-बिडङ्ग, हल्दी, कालीमिर्च, भुनी हींग, चीतेकी छाल और शुद्ध जमाल-गोटा—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर खरलमें डालकर, पानीके साथ घोटो और एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। सवेरे-शाम, एक-एक या दो-दो गोली शीतल पानीके साथ खानेसे समस्त वातरोग और कफ-खाँसी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

वातारि तैल।

कुचला २ तोले, अफीम ६ माशे, काले धतूरेके पत्तोंका रस ४ तोले, लहसनका रस ४ तोले, चिरायतेका रस ४ तोले, नीबूका रस ४ तोले, तमाखूके पत्तोंका रस ४ तोले, दालचीनी ४ तोले, अजवायन ४ तोले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और मेथी ४ तोले—इन सबको एक कढ़ाहीमें डाल दो। ऊपरसे कड़वा तेल १ सेर, मीठा तेल १ सेर और अरण्डीका तेल आध सेर डाल दो। फिर मन्दाग्निसे पकाओ। जब दवाएँ जल जायँ, तेलको उतारकर छान लो। इस तैलके मलनेसे सब तरहके वातरोग और सब तरहके दर्द निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

रसोनपाक।

लहसन लाकर उसके छिलके दूर कर लो। जब कलियाँ रह जायँ, उनको चौंसठ तोले तोल लो और रातके समय छाछ या माठेमें भिगो दो। सवेरे ही छाछमेंसे लहसनको निकालकर, सिलपर पीस लो। इस पिसे हुए लहसनको गायके पाँच सेर दूधमें मिलाकर पका लो। जब खोया हो जाय, उसमें १६ तोले "घी" मिला दो और खूब भूँजकर नीचे उतार लो।

शतावर, रास्ना, अड़ूसा, गिलोय, कचूर, सोंठ, देवदारु, अजमोद, चीता, सौंफ, साँठी, हरड़, बहेड़ा, आमला, पीपर और बायबिडङ्ग—इन १६ दवाओंको एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो और "घी" में भूँज लो।

अब १६ तोले शहद, घीमें भुने हुए लहसन-मिले खोयेको तथा घीमें भुनी हुई शतावर वग़ैरः दवाओंको एकमें मिला दो और साफ़ बर्तनमें रख दो। यही "रसोनपाक" है।

इसको बलाबल अनुसार खानेसे अर्द्धाङ्ग, हनुग्रह, आक्षेपक वात, भग्नवात, कमरकी वात, उरुस्तम्भ, हृद्रोग, सर्वाङ्ग वात, सन्धिवात और गठिया आदि ८० तरहके वातरोग नाश हो जाते हैं। हमने इसे गठिया और कमरके दर्दपर आज़माया है। इसमें यह खूबी है कि, इससे वातव्याधियाँ नष्ट होकर शरीर पुष्ट और बलवान हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऐरण्डपाक।

अरण्डीके बीज लाकर छिलके दूर कर दो और ६४ तोले तोल लो। फिर उनको अठगुने यानी ६ सेर साढ़े छै छटाँक भैंसके दूधमें डालकर पकाओ। जब खोया हो जाय, उतारकर बीजोंको पीस लो और खोयेमें मिला दो। इस खोयेको साढ़े छै छटाँक "घी" में भूँज लो; जब लाल हो जाय, उतार लो।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, नागकेशर, पीपरामूल, चीता, चव्य, सौंफ, कचूर, बेलगिरी, अजमोद, सफेद जीरा, स्याह जीरा, दारुहल्दी, हल्दी, असगन्ध, खिरेंटी, पाढ़, अरणी, बायबिडंग, पोहकरमूल, बड़ा गोखरू, कूट, त्रिफला, देवदारु, विधारा, ककरोलीके बीज, अरलू और शतावरी—इन सबको एक-एक तोले लेकर पीस लो और कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्णको थोड़े-से "घी" में भूँज लो।

अब एक सेर साढ़े दस छटाँक सफेद चीनीकी चाशनी बनाओ। उसीमें उस खोये और घीमें भुनी दवाओंको डालकर मिला दो और चलाकर उतार लो। इसके दो-दो तोलेके लड्डू बना लो। इन लड्डुओंको बलाबल अनुसार खानेसे समस्त वातरोग, पेट फूलना उरुस्तम्भ, आमवात, गोला, वस्तिवात और पेटके रोग आदि नाश हो जाते हैं। इस पाकसे उपरोक्त रोग इस तरह भागते हैं; जिस तरह सिंहसे वनके पशु भागते हैं। इतना ही नहीं, इससे शरीर भी पुष्ट होता है।

लहसन पाक।

लहसन लाकर, उसके छिलके दूर कर दो और तीन पाव तोल लो। फिर अढ़ाई सेर दूधमें उसे पकाओ। जब खोया हो जाय, उतारकर तीन छटाँक घीमें भून लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, पीपरामूल, चव्य, चीता, बायबिडङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, उत्तम विधायरा, पोहकरमूल, अजमोद, लौंग, देवदारु, साँठी, शतावर, कचूर, बड़ा गोखरू, नीमकी छाल, रास्ना, सौंफ, असगन्ध और कौंचके बीज—इन २७ दवाओं को एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर कपड़-छन कर लो। फिर इस चूर्णको थोड़े घीमें ज़रा देर भून लो।

अब डेढ़ सेर बूरेकी चाशनी बनाओ। उसमें "घीमें भुना हुआ लहसन" और ऊपरकी "घी"में भुनी दवाएँ मिला दो और चलाओ। जब लड्डू-लायक़ चाशनी हो जाय, उतारकर आधी-आधी छटाँकके लड्डू बना लो।

इन लड्डुओंके सवेरे-शाम खानेसे सब तरहके वातरोग, मृगी, शूल, गोला, छाती फटना, कृमिरोग, तिल्ली बढ़ना, दस्तक़ब्ज रहना, पेट फूलना, हिचकी, श्वास, खाँसी, फोते बढ़ना, अपतन्त्र, धनुर्वात, अन्तरायाम, अपतानक, पक्षाघात, आक्षेपकवात, शिराग्रह, विश्वाची, गृध्रसी, खल्ली वात, पंगुवात, सन्धिवात और बहरापन आदि रोग नाश हो जाते हैं।

मेथीपाक।

मेथीदाने ३२ तोले और सोंठ ३२ तोले—इन दोनोंको कूट-पीसकर छान लो। फिर इस चूर्णको सवा तीन सेर दूधमें पकाओ। जब खोया हो जाय, उतार लो।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, पीपरामूल, चीता, अजवायन, धनियाँ, सफेद ज़ीरा, कलौंजी, सौंफ, जायफल, कचूर, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर और नागरमोथा—इन १६ दवाओंको चार-चार तोले लेकर, पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो और "सात छटाँक घी" में ज़रा भूँज लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब दो सेर दूधकी चाशनी करो। जब चाशनी होने लगे, उसमें मेथी आदिका खोया और घीमें भुना हुआ दवाओंका चूर्ण डालकर मिलाओ। जब जमने लायक़ चाशनी हो जाय, उतारकर आधी-आधी छटाँकके लड्डू बना लो।

इस पाकके खानेसे सब तरहके वातरोग, आमवात, विषमज्वर, पाण्डु रोग, मृगी, उन्माद, प्रमेह, रक्तपित्त, अम्लपित्त, सिरदर्द, नाकके रोग और आँखोंके रोग और सूतिका रोग फौरन ही आराम होते हैं। साथ ही शरीरमें वज्र-वीर्य बढ़ता और पुष्टि होती है। परीक्षित है।

असगन्ध पाक।

३२ तोले नागौरी असगन्ध लेकर गायके छै सेर दूधमें पकाओ; जब खोया हो जाय, उसे एक सेर घीमें भून लो।

दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात, नागकेशर एक-एक तोले लो। जायफल, केशर, वंशलोचन, मोचरस, जटामासी, लाल चन्दन, सफेद चन्दन, जावित्री, पीपर, पीपरामूल, लौंग, कंकोल, मेढ़ासिंगी, अखरोट, भिलावेके बीज, सिंहाड़ा और बड़ा गोखरू—इनको तीन-तीन माशे लो। इन इक्कीसों दवाओंको पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो। फिर इस छने हुए चूर्णमें रससिन्दूर, अभ्रकभस्म, शीशाभस्म, वंगभस्म और लोहाभस्म तीन-तीन माशे मिला दो। इन सबको थोड़े-से "घी"में ज़रा झलकार लो यानी ज़रा भून लो।

अब पाँच सेर मिश्रीकी चाशनी बनाओ। जब चाशनी होने लगे, उसमें भुना हुआ असगन्ध-खोया और ऊपरकी घीमें झलकारी हुई दवाएँ मिला दो और उतारकर दो-दो तोलेके लड्डू बना लो।

इन लड्डुओंके बलाबल अनुसार खानेसे सब तरहके वातरोग, पित्तरोग, प्रमेह, जीर्णज्वर, शोष और गोला आदि रोग नाश हो जाते एवं बल-वीर्य बढ़ता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—हमने पक्षाघात और लकवा आदि रोग ख़ास-ख़ास दवाओंसे आराम करके रोगियोंको ये पाक खिलाये। इनसे उनका बाक़ी रहा हुआ रोग नष्ट हो गया और बल-वीर्य एवं पुरुषार्थ बढ़ गया। पहले वातनाशक सामान्य क्रियाओं और ख़ास दवाओंसे रोगको नाश करके, ये पाक खिलाने चाहिये। नस्य और तेल आदिको छोड़कर केवल इन्हीं पाकोंपर निर्भर रहना ठीक नहीं।

समस्त वातरोगान्तक तैल।

सोंठ १० तोले, उत्तम सुरंती १० तोले, छोटी पीपर ५ तोले, भाँग ५ तोले, हींग १ तोले, अफीम १ तोले, भिलावे १ तोले, कुचला १ तोले और कालीमिर्च १ तोले—इन सबको पीसकर, एक सेर तिलीके तेल और एक सेर सरसोंके तेलमें मिला दो। फिर आगपर रखकर मंदाग्निसे पकाओ। जब दवाएँ जल जायँ, तेलको उतारकर छान लो।

इस तैलके मलनेसे वातज दर्द, कमरका दर्द, पीठका दर्द, छातीका दर्द, पसलीका दर्द, हाथोंका दर्द, पैरोंका दर्द, जाँघोंका दर्द, घुटनेका दर्द, कुबड़ापन, लँगड़ापन, सूजन और शीतांग सन्निपात आदि रोग नाश हो जाते हैं। शीत-सन्निपातमें इसकी मालिश करनेसे सन्निपात ज्वर नष्ट हो जाता है। यह तैल वात और कफके रोगोंपर रामबाण है।

यह तैल बहुत तेज़ है, अतः रोगानुसार कम या ज़ियादा मलना चाहिये। हल्के रोगोंमें थोड़ा ही और भारी रोगोंमें ज़ियादा मलना चाहिये। इसके लगानेसे पहले, रोगीके बलाबल और सर्द-गरम मौसमका विचार अवश्य कर लेना चाहिये। जैसे,—मौसम गरमीका हो, रोगी कमज़ोर हो, मिज़ाज गरम हो, तो इसे बहुत थोड़ा-सा चुपड़ दो; आराम हो जायगा। अगर मौसम जाड़ेका हो, रोगी बलवान हो, रोग भी तेज़ हो और रोगीकी प्रकृति वात या कफकी हो, तो समझ-बूझकर खूब मालिश करो। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुंठ्यादि चूर्ण।

सोंठ, सौंफ, असगन्ध, शतावर, विधारा, सफेद ज़ीरा, हाऊबेर, बावची, अजमोद, रास्ना, अजवायन और अरण्डीकी जड़—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट-छान लो। इसमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण, गरम दूध या गरम पानी अथवा घी, माठा या गोमूत्रके साथ, सवेरे ही, खानेसे समस्त वातरोग नाश हो जाते हैं। यह चूर्ण देर करता है, पर आराम अवश्य करता है। परीक्षित है।

वातव्याधियोंकी विशेष चिकित्सा।

अर्दित-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अर्दित रोगकी चिकित्सा करनेवालेको पहले नीचे लिखे कर्म करने चाहियेः—

(१) स्नेह पान। (३) वातनाशक भोजन।
(२) नस्य। (४) उपनाह स्वेद।
(५) वस्तिकर्म।

(२) वस्तिकर्म और अभ्यंग करने, नस्य और स्वेद देने तथा ऊपरसे घीके साथ भोजन करनेसे अर्दित रोग नाश हो जाता है।

(३) अर्दित-चिकित्सामें वैद्यको समस्त वातनाशक औषधियाँ काममें लानी चाहिये। कहा हैः—वातव्याधि-विधानमिह कुर्याद्विचक्षणः।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) अगर अर्दित रोग वातज हो, तो दशमूलके काढ़ेके साथ पकाया हुआ अथवा पञ्चमूलके काढ़ेके साथ पकाया हुआ अथवा खिरेंटीके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "दूध" पिलाना चाहिये।

(५) पित्तज अर्दित रोगमें शीतल स्नेह यानी घी वग़ैरः काममें लाने चाहिये। घीकी पिचकारी लगानी चाहिये और दूधका सिंचन और सेवन कराना चाहिये। पित्तनाशक दवाओंकी शिरोविरेचन नस्य देनी चाहिये। नाकसे पुराना घी पिलाना चाहिये और तीक्ष्ण नस्य देनी चाहिये।

(६) अर्दित रोगीका मुँह टेढ़ा हो गया हो, वह गूँगा हो गया हो और दाह या जलन होती हो, तो वातपित्त-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(७) अर्दित रोगमें कफके क्षीण होनेपर, पुष्टिकारक उपचार करना चाहिये।

(८) अर्दित रोगमें सूजन होनेसे वमन करानी चाहिये।

(९) अर्दित रोगमें दाह या जलन होती हो, तो सिरका खून निकलवाना चाहिये।

(१०) अर्दित रोगमें मुँह खुला रह गया हो, तो दोनों अँगूठोंसे ठोड़ी और दोनों तर्जनी उँगलियोंसे दाढ़ीको दबाकर, मुँहको बन्द कर दो। अगर ठोड़ी शिथिल या ढीली हो गई हो, तो कुछ मत करो, उसे ज्यों-की-त्यों रहने दो। दूसरे उपाय करो।

(११) अर्दित रोगमें नास देना और सिरपर तेल सींचना लाभदायक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्दित या लकवा-नाशक नुसख़े।

नोट—जिस रोगमें मनुष्यका दाहिना या बाँयाँ एक तरफका चेहरा टेढ़ा हो जाता है, उसे अर्दित रोग या लकवा कहते हैं। (देखो पृष्ठ २३८-२४५)।

(१) उड़दकी धोयी हुई दालकी पिट्ठी नौनी घीके साथ खानेसे सब तरहके अर्दित रोग नाश हो जाते हैं।

(२) मांस-रसके साथ दूध पीनेसे सब तरहके अर्दित—लकवा नाश हो जाते हैं।

(३) दशमूलका काढ़ा पीनेसे सब तरहके अर्दित रोग नाश हो जाते हैं।

(४) एक तोले लहसन पानीके साथ सिलपर महीन पीसकर और दो तोले तिलीके तेलमें पकाकर खानेसे अर्दित या लकवा आराम हो जाता है। परीक्षित है। कहा है:—

रसोनकल्कं तिलतैलमिश्रं
खादेन्नरो यो अर्दितरोगयुक्तः।
तस्यादितं नाशमुपैतिशीघ्रं
वृन्दघनानामिव वायुवेगात॥

जो अर्दितवाला तिलके तेलमें लहसनका कल्क मिलाकर खाता है, उसका अर्दित-रोग या लकवा तत्काल आराम हो जाता है; यानी उसी तरह भाग जाता है, जिस तरह हवाके ज़ोरसे बादल भाग जाते हैं।

(५) एक तोले लहसनको महीन पीसकर और घीमें मिलाकर खानेसे सब तरहके वातरोग नाश हो जाते हैं। ख़ासकर, अर्दित रोगमें यह नुसख़ा अधिक लाभदायक है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) लहसनको गायके दूधमें पकाकर खानेसे वातव्याधि नाश हो जाती है। यह अत्यन्त उत्तम नुसख़ा है। कहा है:—

रसोनो गोपयः सिद्धो वातव्याधि हरः परः।

(७) चार तोले सूखा हुआ लहसन महीन पीसकर, उसमें सैंधानोन, संचरनोन, त्रिकुटा और हींग चार-चार माशे पीस-छानकर मिला लो। इसकी मात्रा एक माशेकी है। एक महीने तक, सवेरे ही, इस चूर्णके खाते रहनेसे अर्दित रोग—लकवा, सर्व्वाङ्ग-वात, कमर और पीठकी वात वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) बरियारा, उड़द, कौंचकी जड़, गंधतृण और अरण्डकी जड़—इनको कुल मिलाकर दो तोले ले लो। फिर काढ़ा बनाकर पीओ। इसीकी नास भी लो। इस काढ़ेके पीने और नास लेनेसे अर्दित, पक्षाघात और विश्वाची रोग नाश हो जाते हैं।

(९) सवेरे ही, अग्निबलानुसार, सज्जीख़ारका काढ़ा पीनेसे छाती, कन्धा, कटिप्रान्तमें आया हुआ वायु, अर्दित रोग, अपतन्त्रक रोग, एकाङ्गवात, सर्वाङ्गवात, उरुस्तम्भ, गृध्रसी और कृमिदोष आदि रोग नाश हो जाते हैं। कितने ही वैद्य कहते हैं कि, इसे भोजनके बाद पीना चाहिये।

(१०) राई ६ माशे, अकरकरा ६ माशे और शहद ६ माशे—इन सबको मिलाकर, दिनमें चार बार, जीभपर मलनेसे अर्दित रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(११) जीवनीयगणकी औषधियोंको सिलपर पीसकर लुगदी या कल्क बना लो। अगर यह कल्क १ सेर हो, तो काले तिलोंका तेल ४ सेर और दशमूलका काढ़ा १६ सेर तैयार कर लो। फिर सबको एकत्र कर मन्दाग्निसे पका लो। तेल-मात्र रहनेपर, उतारकर छान लो। इसका नाम "दशमूलाद्य तैल" है। इस तैलकी नस्य देने,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मालिश करने, पिचकारी लगाने (अनुवासन वस्ति करने) और पीनेसे अर्दित या लकवा नष्ट हो जाता है।

नोट—काकोली, क्षीर-काकोली, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि और वृद्धि—इन आठोंको अष्टवर्ग कहते हैं। इनमें "जीवन्ती" और मिला देनेसे "जीवनीयगण" होता है।

(१२) तृण महापञ्चमूल १० तोले लेकर, २० तोले दूध और २० तोले पानीमें पकाओ। जब दूध-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। फिर इस दूधमें ५ तोले तिलका तेल डालकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलके पीने और नास वग़ैरः लेनेसे अर्दित-रोग नाश हो जाता है। इसका नाम "क्षीर तैल" है।

(१३) मन्यास्तम्भ रोगमें लिखी हुई "माषादि नस्य" नाक द्वारा पीनेसे, कठिनसे आराम होनेवाला अर्दित-रोग भी नाश हो जाता है।

(१४) प्रसारिणी तैलकी मालिश करने, पीने और नस्य वग़ैरः देनेसे अर्दित-रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। बनानेकी विधि "हनुग्रह-चिकित्सा" में देखिये।

(१५) कौंचके बीज, खिरेंटी, अरण्डकी जड़, सोंठ और उड़द—इनको कुल २ तोले लेकर ३२ तोले पानीमें पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छान लो और २ माशे "सैंधानोन" मिलाकर नाकके छेदसे पीओ। इस कषायके नाक द्वारा पीनेसे पक्षाघात, शिरोरोग, हनुग्रह, अर्दित, सन्धिवात और दारुण मन्यास्तम्भ-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है। इसका नाम "कपिकच्छ्वादि क्वाथ" है।

(१६) त्रिफला, नीमकी छाल, अड़ूसा और परवल—इनको कुल मिलाकर २ तोले ले लो और काढ़ा बना लो। फिर उसमें "शुद्ध गूगल" मिलाकर सवेरे ही पीओ। इस काढ़ेसे अर्दित-वात या लकवा आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१७) डाक्टरोंकी रायमें, चेहरेका जौनसा रुख मारा गया हो उस तरफ़के कानमें गरम भाफ पहुँचाना अर्दित या लकवेको अच्छा है।

(१८) सनके बीज सवा तीन तोले पीसकर और "शहद" में मिलाकर खानेसे, २१ दिनमें, लकवा या अर्दित-रोग नाश हो जाता है।

(१९) बच आध पाव, सोंठ ४ तोले और स्याह जीरा ४ तोले—लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३॥ माशेकी है। एक-एक मात्रा "शहदमें" मिलाकर चाटनेसे अर्दित या लकवा-रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) बच ३ तोले, स्याह जीरा १० माशे, कलौंजी १० माशे, पोदीना १० माशे और कालीमिर्च १० माशे—पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्णको २० तोले "शहद" में मिला दो। इसमेंसे ६ से ८ माशे तक दवा चाटनेसे लकवा और पक्षाघात—अर्द्धाङ्ग-रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) काले धतूरेके पत्ते २८ माशे, सफेद कनेरकी जड़की छाल २८ माशे और सफेद चिरमिटी २८ माशे—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदीको पाव भर तिलीके तेलमें, ३ घण्टे तक, खरल करो। फिर इसे कढ़ाहीमें डालकर, आगपर चढ़ा दो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब दवा जल जाय, उतारकर छान लो। इस तैलको मलनेसे लकवा, पक्षाघात, एकांगवात और अर्द्धाङ्ग-वात रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पक्षाघात-चिकित्सा।

पक्षाघात रोगमें वायु शरीरके आधे भागको यानी शरीरके एक ओरके भागको या कमरके नीचेके भागको बेकाम कर देता है। आधा शरीर बेकाम हो जाता है और स्पर्श-ज्ञान भी कम हो जाता है। इस रोगको पक्षाघात, पक्षबध, अर्द्धाङ्ग या एकांगवात कहते हैं।

हिकमतवाले इस रोगको "फालिज" कहते हैं। उन लोगोंकी रायमें यह रोग "कफके कोप"से होता है, पर वैद्योंकी रायमें "वायु" से होता है।

गर्भवती स्त्री, प्रसूता स्त्री, बालक, बूढ़े, क्षीण मनुष्य और जिसका खून निकल गया हो,—ऐसे लोगोंका और वेदना रहित पक्षाघात आराम नहीं होता।

पक्षाघात-नाशक नुसखे।

(१) उड़द, कौंचकी जड़, अरण्डकी जड़ और खिरेंटीकी जड़—इन सबको कुल २ तोले लेकर, आध सेर या डेढ़ पाव पानीमें काढ़ा बनाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छान लो। पीछे ५ रत्ती हींग और ५ रत्ती सैंधानोन डालकर रोगीको पिलाओ। इसका नाम "माषादि क्वाथ" है। इसके पीनेसे पक्षाघात-रोग नाश हो जाता है।

(२) पीपरामूल, चीता, पीपर, सोंठ, रास्ना और सैंधानोन—इनको बराबर-बराबर कुल आध सेर ले लो और पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर कल्क—लुगदीसे चौगुना काली तिलीका तेल लो और तेलसे चौगुना "उड़दोंका काढ़ा" बना लो। तेल, काढ़े और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छान लो। इस "ग्रन्थिकादि तैल" की मालिश करनेसे पक्षाघात-रोग नाश हो जाता है।

नोट—दो सेर उड़दोंको ३२ सेर पानीमें औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। इस नुसख़ेमें कल्क आध सेर, तेल २ सेर और उड़दका काढ़ा ८ सेर होना चाहिये।

माषादि तैल।

(३) उड़द, कौंचकी जड़, अतीस, अरण्डकी जड़, रास्ना, सोया और सैंधानोन—इनको बराबर-बराबर कुल आध सेर लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर उड़द दो सेर लेकर, ३२ सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई यानी आठ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। यही उड़दका काढ़ा है।

फिर दो सेर खिरेंटी लेकर ३२ सेर पानीमें औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। यह खिरेंटीका काढ़ा है।

अब दो सेर काली तिलीका तेल, ऊपरकी लुगदी, उड़द और खिरेंटीके काढ़े—सबको मिलाकर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस तैलकी मालिश करनेसे पक्षाघात-रोग नाश हो जाता है। इसका नाम "माषादि तैल" है।

(४) शुद्ध कुचला और कालीमिर्च—दोनों बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर खरलमें डालकर, पानीके साथ खरल करो। खूब घुट जानेपर, आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। सवेरे ही एक-एक गोली बँगला पानमें रखकर कुछ दिन तक खानेसे पक्षाघात-रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(५) शुद्ध कुचला २ तोले लेकर, जलते हुए कोयलोंपर रख दो। जब धूआँ उठना बन्द हो जाय, जले हुए कुचलेको निकाल लो और तोलो। जितना जला हुआ कुचला हो, उतनी ही कालीमिर्च

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसमें मिला दो। फिर उन्हें खरलमें डालकर पानीके साथ घोटो। घुट जानेपर उड़दके दानेके बराबर गोलियाँ बनाकर, छायामें सुखा लो। एक-एक गोली नित्य "पान" में रखकर खानेसे पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग, फालिज, अर्दित या लकवा, कमरका दर्द और दिमाग़की कमज़ोरी ये सब रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) बीरबहुट्टीका सिर और पैर काटकर, जो अङ्ग बाक़ी बचे, उसे पानमें धरकर लगातार कुछ दिन खानेसे पक्षाघात-रोग निश्चय ही चला जाता है।

(७) भाँग और कालीमिर्च—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको बलाबल अनुसार खानेसे पक्षाघात-रोग नाश हो जाता है। इस चूर्णकी मात्रा १ माशेसे २ माशे तक काफ़ी होगी। इस दवाके खानेवालेको यही "भाँग और मिर्च" कड़वे तेलमें पीसकर शरीरमें घण्टे भर तक मालिश भी करानी चाहिये।

(८) सनके बीज १॥ तोले और शहद १ तोले मिलाकर, नित्य, २१ दिन तक, खानेसे पक्षाघात नष्ट हो जाता है। हकीम जालीनूसने इस नुसख़ेकी बेहद तारीफ की है। उनका कहना है कि, इस नुसख़ेमें हमने अजीब चमत्कार देखा है।

(९) सोंठ और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा चूर्ण नाकमें चढ़ानेसे पक्षाघात और अर्दित-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) सफेद कनेरकी जड़की छाल, सफेद चिरमिटी और काले धतूरेके पत्ते—इन तीनोंको दो-दो तोले लेकर महीन पीस लो। फिर आधा पाव कड़वे तेलमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब दवाएँ जल जायँ, उतारकर उसी तेलमें उन्हें खूब घोटो और किसी चीज़में रख दो। इस दवाको शरीरके सभी जोड़ोंपर मलो। कुछ दिनोंमें पक्षाघात नाश होकर कामदेव तेज हो जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—नं० ४ से १० तकके नुसख़े यूनानी हैं। इनके सेवन करनेवालोंको चनेकी रोटी—कबूतर या तीतरके मांसके साथ खानी चाहिये। "गरम जल" कभी न पीना चाहिये और रोगीको सदा अँधेरी जगहमें रहना चाहिये।

(११) एक रत्ती "स्वच्छन्द भैरव रस" सेवन करनेसे कुछ दिनोंमें समस्त वायुरोग, "ख़ासकर पक्षाघात" रोग अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इस रसके बनानेकी तरकीब इसी भागकी "सामान्य चिकित्सा" में लिखी है।

(१२) अर्दित चिकित्साके नं० १५ में लिखा कपिकच्छ्वादि कषाय पक्षाघातको आराम कर देता है। (देखो पृष्ठ ३०५)।

(१३) कड़वी तूम्बीके बीज और नीमके फल—इनका तेल तथा गोमायु कबूतर और मुर्ग़ेका पित्ता—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे वात शान्त होती और पक्षाघात-रोग आराम हो जाता है। इस लेपसे कमर, उरु, जाँघ और भुजाका दर्द एवं गृध्रसी-रोग आराम हो जाते हैं।

(१४) पीपर, पीपरामूल, सोंठ, चव्य, चीता, पाठा, बायबिडंग, इन्द्रजौ, हींग, बच, विजया, मुलहटी, रेणुकाके बीज, गजपीपर, अतीस, राई, सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा और अजमोद—इन सबको एक-एक तोले लो और "त्रिफला" सबका दूना—अड़तीस तोले—लो। फिर सबको कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल और घी" लेकर इसीमें मिला दो और कूटकर एक-दिल कर लो। इस "द्वात्रिंशतिक गूगल" के खानेसे पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग या फालिज आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) पक्षाघात-रोगमें—पारे और गन्धककी कज्जली सेवन कराना अत्युत्तम इलाज है। कहा है:—

पक्षाघाते चोत्तमा स्यात् कज्जलीरसगन्धजा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) उड़द, खिरेंटीकी जड़, शुकशिम्बी, पिठवन, रास्ना, असगन्ध और अरण्डकी जड़,—इनके काढ़ेमें ५।५ रत्ती हींग और सैंधानोन डालकर, गरमागर्म, पीनेसे पक्षाघात, मन्यास्तम्भ, कर्णनाद और अर्दित-वात—लकवा आदि रोग, सात दिनमें, आराम हो जाते हैं।

(१७) कुचला आध पाव, आककी जड़ एक पाव, सफेद संखिया १ तोले, पीली सरसों आध पाव और धतूरेके पके हुए सूखे फल चार नग—इन सबको कुचलकर बोतलमें भर दो। फिर 'पाताल यन्त्र' की विधिसे तेल निकाल लो। जहाँ रोग हो, वहाँ इस तेलको लगाओ। इससे पक्षाघात आदि वातरोग नाश हो जाते हैं। अगर रोग तेज न हो, तो इस तेलमें तिगुना तिलीका तेल मिलाकर लगाना। तेज रोग में तेल मिलानेकी दरकार नहीं। परीक्षित है।

(१८) कुचलेके पत्ते, सोंठ और साँभरका सींग, इनको समान-समान लेकर पानीके साथ पीस लो और लेप करो। इस लेपसे आमवात—गठिया, पक्षाघात—फालिज—अर्द्धाङ्ग और चूहेका विष ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१९) दशमूलका काढ़ा, हींग और सैंधानोन मिलाकर पीनेसे पक्षाघात-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) कालीमिर्च १ छटाँक लेकर पीस-छान लो। फिर पाव भर तेलमें मिलाकर कुछ देर पकाओ। इस तेलका पतला-पतला लेप करनेसे पक्षाघात, एकांगवात या अर्द्धाङ्गवात-रोग नाश हो जाते हैं। यह लेप उसी समय बनाकर और गरम करके लगाया जाता है। पक्षाघातकी रामबाण दवा है। परीक्षित है।

(२१) लौंगड़ीके पत्ते २० माशे और कालीमिर्च १ माशे—इन दोनोंको सिलपर पीसकर और पाव भर पानीमें छानकर पीनेसे अर्द्धाङ्ग-वात, गठिया और पेटका दर्द,—ये रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२२) लौंग, कालीमिर्च, छोटी पीपर और अफीम—प्रत्येक ६४ माशे लो। गायका घी ८ तोले, अकरकरा ३२ माशे, कुलींजन ३२ माशे और तिलसी पत्थर ३२ माशे—इन सबमेंसे घीको अलग रख दो। बाक़ी दवाओंको कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्णके तीन भाग करो; और तीसरा भाग घी लेकर गरम करो। फिर उसमें १ भाग दवा मिला दो। इस घीमें मिली हुई दवाको सिरके तालूके ऊपर मालिश करके, अरण्डके ४ या ५ पत्ते बाँध दो। साथ ही रजाई उढ़ाकर नीचे लिखी धूनी दो।

गन्धक ३२ माशे, नौसादर ३२ माशे और मेथी ६४ माशे—इनको पीसकर, इनके भी तीन भाग कर लो। एक-एक भागकी धूनी दो। साथ ही "हरताल-भस्म" सेवन कराओ। मतलब यह कि, ऊपरकी दवाके तालूपर मलने, गन्धकादिकी धूनी देने और हरताल-भस्म खिलानेसे पक्षाघात या फालिज-रोग आराम हो जाता है।

नोट—हरताल-भस्मकी विधि चिकित्सा-चन्द्रोदय चौथे भागमें लिखी है।

(२३) फालिज—पक्षाघात और गठिया-रोगमें, जहाँ दर्द हो वहाँ, "विषगर्भ तैल" मलकर अरण्डीके पत्ते बाँधनेसे अवश्य लाभ होता है। बनानेकी विधिः—

लघु विषगर्भ तैल।

धतूरेके बीज और पत्तोंका अर्क़, बकायनके पत्तोंका अर्क़, आकके पत्तोंका अर्क़, नीमके पत्तोंका अर्क़, असगन्धके पत्तोंका अर्क़, सहँजनेके पत्तोंका अर्क़, अरण्डके पत्तोंका अर्क़, मकोयके पत्तोंका अर्क़, सेंहुँड़के पत्तोंका अर्क़ और सींगिया विष प्रत्येक चीज़ २१ तोले ४ माशे तैयार करो। सोंठ, पीपर, कालीमिर्च, असगन्ध, रास्ना, कूट, नागरमोथा, देवदारु, बच, इन्द्रजौ, भारङ्गी, कायफल, पोहकरमूल, पाढर, रेणुका, तज, तेजपात, छोटी इलायची, लौंग और नागकेशर—प्रत्येक आठ-आठ माशे ले लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तिलोंका तेल दो सेर लेकर कढ़ाहीमें चढ़ाओ और सींगिया विष तककी सारी चीज़ोंको उसमें मिला दो। जब अर्क़ और विष जल जायँ, तेलको उतारकर छान लो।

फिर सोंठ वग़ैरः दवाओंको पीसकर दो सेर पानीमें घोल दो और उस पानीको तेलमें मिलाकर, तेलको फिर आगपर चढ़ा दो। जब पानी जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "लघु विषगर्भ तैल" है। यह तैल गरम बहुत है। वात-कफके रोगोंपर या सर्दी-वादीके रोगोंपर यह खूब फायदा करता है।

लकवा और फालिजपर यूनानी नुसख़े।

फालिज होनेसे एक ओरका आधा शरीर लम्बाईमें ढीला हो जाता है। फालिज शब्दका अर्थ ही ढीला हो जाना है। लकवा होनेसे एक ओरका मुँह टेढ़ा हो जाता है। हिकमतके मतसे ये दोनों रोग "कफसे" होते हैं और इन दोनोंका इलाज भी क़रीब-क़रीब एक ही-सा है।

चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें।

इन रोगोंके शुरूमें २।३ लंघन कराकर, जलकी जगह "माउल-असल" पिलाओ। अगर रोग बहुत ही बलवान हो, तो सात दिन तक उपवास या लंघन कराओ।

शहद १ भाग और पानी २ भाग मिलाकर औटाओ; जब तीसरा भाग रह जाय, उतारकर छान लो। यही "माउल असल" है।

नोट—अगर कहीं शहद न मिले, तो शहदकी जगह "गुड़" ले लो और इसी तरकीबसे औटा लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खानेके लिये, चिड़िया या कबूतरके मांसका शोरबा और चनेके पदार्थ दो। ये पथ्य हैं।

चौथे दिनसे, दोषोंके पकानेको, मुंजिज दो और नवें या चौदहवें दिन मुसिल या जुलाब दो। इस रोगमें दूसरी बार भी मल निकालना आवश्यक है। जुलाबके बाद, प्रकृतिको समान करनेवाली दवा दो।

रोगनाशक नुसखे ।

(१) अकरकरा, कालीमिर्च और छोटी पीपर हरेक तीन-तीन माशे; पीपरामूल ६ माशे, सोंठ १ तोले और शुद्ध मीठा विष १ तोले—इनको कूट-छानकर "गुड़ और घी"में मिलाकर, मूँग-समान गोलियाँ बना लो। मात्रा १ से २ गोली तक। इन गोलियोंको फालिज या लकवेमें, जुलाब देनेके बाद, प्रकृतिके समान करनेको देना चाहिये।

(२) मालकांगनी १ तोले, रतनजोत १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, मूसली स्याह ५ तोले, सोंठ ५ तोले ४ माशे और शुद्ध जमालगोटेकी गरी—सब्जी दूर की हुई—१ तोले ४ माशे—इन सबको पानीके साथ खरल करके, कालीमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। मात्रा २ गोलीकी। इनसे लकवे और फालिजमें अवश्य लाभ होता है।

(३) सोंठ और बच बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो और शहदमें मिलाकर, सवेरे-शाम, अखरोटके बराबर खाओ। इस दवाके समयमें, पानीके बजाय "माउल असल" पीना जरूरी है। इससे लकवा या अर्दित-रोग चला जाता है।

(४) सोंठ जौकुट की हुई ४ माशे, लहसन ४ माशे, बकायनके पत्ते १ पाव और सम्हालूके पत्ते १ पाव—इन सबको दो सेर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, उतार लो और रोगीको लिहाफ़ या रजाई उढ़ाकर, उसके भीतर इस दवाके पानीका बफारा दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह बफारा लकवा और फालिज दोनोंके लिये अच्छा है। बफारा लेकर हवासे खूब बचो।

(५) पन्द्रह दाने कुचलेके लेकर, पन्द्रह दिन तक, पानीमें भिगो रखो। हर तीसरे दिन, ताज़ा पानी बदल दिया करो। जब पन्द्रह दिनमें वे नर्म हो जायँ, उनके छिलके उतारकर, उन्हें सुखा लो। सूखनेपर, उन्हें आगमें तब तक जलाओ, जब तक कि धूआँ न बन्द हो जाय। कुचलेके कोयलोंको आगसे निकालकर, उनके बराबर काली-मिर्च मिला दो और पानीके साथ पीसकर कालीमिर्चके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही नित्य एक गोली खानेसे लकवा, फालिज, भेंजेके रोग और कमरकी पीड़ा,—ये सब नाश हो जाते हैं। यह सबसे उत्तम दवा है।

(६) क़लई यानी राँगा १० माशे, जस्ता १० माशे, शुद्ध पारा १० माशे, वेशसियाह १० माशे और कालीमिर्च २० माशे—ये सब लाकर रख लो।

पहले क़लई और जस्तेको गलाओ। गल जानेपर, पारेमें मिला दो। जब गोला-सा हो जाय, लगातार १८ घण्टे खरल करो। फिर उसमें थोड़ा-थोड़ा "वेशसियाह" डाल-डालकर १८ घण्टे तक खरल करो। इसके बाद थोड़ी-थोड़ी कालीमिर्च डाल-डालकर १८ घण्टे तक घोटो। जब ५४ घण्टे तक घुटाई होले, दवाको रख दो। सवेरे ही नित्य १ चावल भर दवा खाने और पत्तियोंका मांस भोजन करनेसे फालिज या अर्द्धाङ्ग—पक्षाघात आराम हो जाता है। हम नहीं, किन्तु ग्रन्थकार महाशय इसे अपना आज़माया हुआ नुसख़ा लिखते हैं।

(७) बच ६ तोले ८ माशे, सोंठ २ तोले ४ माशे और काला जीरा २ तोले ४ माशे, इनको पीसकर ३३ तोले ४ माशे "शहद" में मिला लो। इसकी मात्रा ४ माशेकी है। इसके हर दिन सवेरे ही खानेसे लकवा या अर्दित-रोग शान्त हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इस दवाके सेवन-कालमें "माउल असल" ज़रूर पीना चाहिये। ग्रन्थकार इस नुसख़ेको भी आज़मूदा लिखता है।

(८) बच ३ तोले ४ माशे, कालीमिर्च १ तोले, पोदीना १ तोले, काला ज़ीरा १ तोले और कलौंजी १ तोले—सबको पीस-कूटकर पाव भर "शहद"में मिला लो। मात्रा ८ माशे। फालिज और समस्त कफ़के रोगोंपर उत्तम दवा है।

(९) जुलाब लेनेके बाद, भिलावेकी मींगी शक्करके साथ खानेसे फालिज, लकवा और मृगी-रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) राई और अकरकरा समान-समान लेकर पीस-छान लो और "शहद"में मिला लो। इस दवाको जीभपर मलनेसे फालिज या अर्द्धाङ्गवात-रोग नाश हो जाता है।

(११) एक बीरबहुटीके सिर और पाँव अलग करके, बाक़ी हिस्सा पानमें रखकर खानेसे फालिजके रोगीकी प्रकृति ठीक हो जाती है।

(१२) कालीमिर्च महीन पीसकर छान लो और तेलमें मिलाकर शरीरपर मलो। हकीम जालीनूस कहता है कि, फालिजकी इसके समान और दवा नहीं है।

(१३) सफेद कनेरकी जड़की छाल, सफेद चिरमिटीकी दाल और काले धतूरेके पत्ते—हरेक तीन-तीन तोले चार-चार माशे लेकर कूट-पीस लो और टिकिया बनाकर, पाव भर मीठे तेलमें तलो। जब टिकिया जल जाय, उसे उसी तेलमें खूब घोटो; फिर छोड़ दो। जब तेल नितर जाय, उसमेंसे कुछ तेल फालिजके रोगीके जोड़ोंपर मलो। इस तेलके लगानेसे लकवा और फालिज तो आराम होते ही हैं, पर यह तेल वीर्यमें भी ज़ोर करता है।

(१४) अरण्डके पत्ते, धतूरेके पत्ते, आकके पत्ते, सहदेईके पत्ते, सहँजनेके पत्ते, असगन्धके पत्ते और सँभालूके पत्तोंका आध-आध पाव 'स्वरस' निकाल लो। इस रसमें बराबरका—चौदह छटाँक—मीठा तेल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिला लो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो और उसमें २।२ तोले "सोंठ और कड़वा कूट" पीसकर मिला दो। इस तेलसे लकवे और फालिजमें अच्छा उपकार होता है।

(१५) तितलीका तेल मलनेसे बदनके झोलों और पट्ठोंमें लाभ होता है।

(१६) बाबूनेके हरे फूल २ तोले, मेथी १ तोले, तिलीका तेल ६ तोले और पानी १० तोले इनको औटाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "बाबूनेका तेल" है। यह भी दिमाग़ी सर्दीके रोगोंमें गुणकारी है।

नोट—बाबूनेके फूल, मेथी और तेल तीनोंको बोतलमें भरकर ४० दिन धूपमें रखनेसे भी तेल तैयार हो जाता है। उसी तरह तितलीके हरे पत्ते और तिलीका तेल ४० दिन धूपमें रखकर तितलीका तेल बनाते हैं। उस तरह, एक ही दिनमें तेल बन जाता है।

(१७) बावची आध सेर और लाल अजवायन ४ तोले २ माशे—इनको पानीके साथ पीसकर टिकिया बना लो। धतूरेके पत्तों-फलों आदिके अढ़ाई सेर स्वरस और आध सेर मीठे तेलमें टिकिया रखकर पकाओ। जब टिकिया जल जाय, तेलको छान लो। यह तेल फालिज, पक्षाघात, अर्द्धाङ्ग या एकाङ्गवातपर बहुत ही अच्छा है।

(१८) सोंठ और लाहौरी नमक पीस-छानकर रख लो। इसकी नास लेनेसे फालिज और लकवेमें अवश्य लाभ होता है। उत्तम सुंघनी है।

(१९) चुकन्दरकी जड़ और इन्द्रायणकी जड़ एक-एक तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसो। पीसते समय उसमें थोड़ी-सी "कलौंजी और इस्पन्द" भी मिला लो। जब दवाएँ पिस जायँ, पानीमें घोलकर कपड़ेमें छान लो। इसकी २।३ बूँदें नाकमें टपकानेसे लकवे और मृगीमें अवश्य उपकार होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गृध्रसी-चिकित्सा ।

जब कूलेकी सन्धि, कमर, पीठ, उरु, जाँघ और पाँव ये रह जाते हैं तथा इनमें वेदना और सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है एवं कूलेकी सन्धि आदि शिराएँ बारम्बार काँपती हैं, तब कहते हैं कि, "गृध्रसी" रोग हुआ है।

खुलासा यह है कि, जब कमर, चूतड़, गुदा, जाँघ, पिंडली और पैरमें ऐसी पीड़ा हो जाती है कि, दर्दके मारे चला भी नहीं जाता और पसीने आते हैं, तब "गृध्रसी" रोग होना कहते हैं। इसे यूनानीमें "इरकुन्निसा" कहते हैं। कोई-कोई इसे रींगन वायु, टंकन वायु या कुलिंग वात भी कहते हैं।

गृध्रसी-नाशक नुसख़े ।

(१) गृध्रसी रोगीको अच्छी तरह विरेचन और वमन देकर यानी दस्त और क़य कराकर, जब देखो कि वह आम-रहित हो गया है और उसकी अग्नि भी दीप्त है, तब स्नेहकी पिचकारी लगाओ। जब तक वमनसे ऊपरकी सफाई न हो ले, तब तक स्नेह यानी घी-तेलकी पिचकारी लगाना राखमें हवन करनेके समान व्यर्थ है।

(२) एक महीने तक, नित्य, सवेरे ही, एक या दो तोले अरण्डीका साफ तेल आध पाव गोमूत्रमें मिलाकर १ मास तक पीनेसे गृध्रसी और उरुग्रह-रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) त्रिफलेके काढ़ेमें अरण्डीका एक, दो या तीन तोले तेल मिलाकर पीनेसे गृध्रसी और उरुग्रह नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) तेल, घी, अदरखका रस और बिजौरेका रस—इनको बराबर-बराबर एकत्र मिलाकर, इनमें "चूकेका रस" या "गुड़"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डालकर पीनेसे कमरका दर्द, उरुका दर्द, पीठका दर्द, त्रिकशूल, गोला, गृध्रसी और उदावर्त्त-रोग नाश हो जाते हैं।

(५) अरण्डीके बीजोंको छीलकर छिलके दूर कर दो। फिर गरीको दूधमें पीसकर पीओ। इससे कमरका दर्द और गृध्रसी-रोग शान्त हो जाता है। यह गृध्रसीकी परमौषधि है। परीक्षित है।

नोट—अरण्डीकी ३ तोले मींगियोंको आध सेर गायके दूधमें पकाओ। जब खीर-सी हो जाय, खाओ। इस खीरके खानेसे गृध्रसी-रोग २१ दिनमें निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) दशमूल, खिरेंटी, रास्ना, गिलोय और सोंठ—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा पका लो। जब पक जाय, छानकर उसमें एक या दो तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीओ। इसके पीनेसे गृध्रसीका लँगड़ापन, खञ्ज और पंगु-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) अगर चूतड़से पैर तक बेकाम हो जाय, यह अङ्ग काम न दे, 'गृध्रसी वात' रोग हो जाय; तो आप आध सेर "कायफल" लाकर महीन पीस-छान लो। फिर "सरसोंका तेल १ सेर" लेकर एक लोहेकी कढ़ाहीमें चढ़ा दो और नीचे खूब ही मन्दी आग लगाओ। जब आग लगने लगे, उसमें थोड़ा-थोड़ा पिसा हुआ "कायफल" डालते रहो और चलाते रहो; इस तरह चार घण्टेमें सारा "कायफल" डाल दो। इसके बाद तेलको उतारकर कपड़ेमें छान लो। छानस या फोकको फैंको मत, अलग रख दो।

जब तेल लगवाना हो, एक अँगीठीमें कोयले जलाकर पास रख लो। तेल लगानेवाला हाथोंको गरम कर-करके, पीड़ित-स्थान-पर, दो घण्टे तक तेल मले। तेलकी मालिश खूब हो। दो घण्टे बाद, उस छानस या कीटको तवेपर रखकर गरम कर लो और एक कपड़ेमें रखकर, पोटली-सी बना लो। उसी पोटलीसे पीड़ित-स्थानको सेको। इसके बाद, सुहाते-सुहाते गरम कीटको उस जगह फैलाकर कपड़ेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बाँध दो। इस तरह नित्य तेल लगाने और इसी कीटसे सेक करने और बाँधनेसे रोग शान्त हो जायगा। यह उपाय स्वर्गवासी श्यामसुन्दर वैद्याचार्यका परीक्षा किया हुआ है। उन्हें सैकड़ों दवाओंसे लाभ न हुआ। अन्तमें इससे लाभ हुआ।

नोट—अगर तेल पकते समय, उसमें ६ माशे "अफीम" और मिला दी जाय, तो तेल और भी अच्छा बनेगा।

(८) अरण्डीकी जड़, बेलगिरी, बड़ी कटेरी और छोटी कटेरी—इनको कुल दो तोले लेकर, ३२ तोले जलमें औटाओ। जब ४ तोले पानी रह जाय, उसे छान लो और उसमें 'कालानोन' मिलाकर पीलो। इसके पीनेसे वंक्षण-शूल, वस्तिशूल और बहुत पुराना गृध्रसी-रोग भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(९) आध पाव गोमूत्र और २ तोले अरण्डीका तेल एकत्र मिला लो। छोटी पीपरोंका चूर्ण १ माशे खाकर, ऊपरसे गोमूत्र और तेलको पीलो। इस नुसखेसे बहुत पुरानी और वात-कफसे पैदा हुई गृध्रसी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) अड़ूसा १ तोले, जमालगोटेकी जड़ १ तोले और अमलताशका गूदा १ तोले—इन तीनोंको आध सेर जलमें औटाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, उसे नीचे उतारकर छान लो। फिर उसमें एक तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीओ। इस नुसखेके १५ दिन पीनेसे गृध्रसी-रोग शान्त होकर खूब जल्दी-जल्दी चलनेकी सामर्थ्य हो जाती है। परीक्षित है।

(११) बकायनकी भीतरी छाल पानीके साथ सिलपर पीसकर और पानीमें छानकर पीनेसे असाध्य गृध्रसी-रोग भी आराम हो जाता है।

(१२) महानीमका १ माशे गोंद पानीके साथ पीनेसे घोर गृध्रसी-रोग भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—गोंद न मिले तो महानीमकी जड़का ही काढ़ा पीना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) निर्गुण्डी या सँभालूके २ तोले पत्तोंको लेकर डेढ़ पाव जलमें खूब मन्दी आगपर औटाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छानकर पीलो। इस काढ़ेके ११ दिन पीनेसे असाध्य गृध्रसी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—निर्गुण्डीके काढ़ेमें "पीपरोंका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे और भी जल्दी लाभ होता है।

"शार्ङ्गधर"में "भुनी हींग और पोहकरमूलका चूर्ण" मिलानेको लिखा है। इनके मिलानेसे बेशक और भी जल्दी फायदा होता है।

रास्ना गुग्गुल।

(१३) चार तोले रास्ना और पाँच तोले शुद्ध गूगल—इन दोनोंको मिलाकर, "घी" दे-देकर कूटो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सेवन करनेसे गृध्रसी रोग जाता रहता है। इस दवाका नाम "रास्ना गुग्गुल" है।

(१४) लहसन १ तोले और शुद्ध गूगल ५ तोले,—दोनोंको घी दे-देकर खूब पीसो और जङ्गली बेरके समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंमेंसे एक गोली नित्य खानेसे गृध्रसी रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

रास्ना सप्तक काढ़ा।

(१५) रास्ना, गिलोय, अमलताशका गूदा, देवदारु, गोखरू, अरण्डकी जड़ और पुनर्नवा—इन सातोंको दो तोले लेकर, आध सेर जलमें औटाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, मलकर छान लो। फिर इस काढ़ेमें "सोंठका चूर्ण" डालकर पीनेसे जंघागत वायु, उरुगत वायु, पीठकी वायु, त्रिकशूल और पसलीका दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं। इसका नाम "रास्ना सप्तक क्वाथ" है।

(१६) केशर १ माशे, सकमूनिया ३॥ माशे, बड़ी हरड़के छिलके १०॥ माशे, बादामकी गरी १। माशे, मीठा सुरंजान ३ तोले, सनाय-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मकी २ तोले और मिश्री ८॥। तोले—इनको पीस-कूट और छानकर रख लो। इसमेंसे २२॥ माशे चूर्ण खाकर, ऊपरसे शीतल जल पीनेसे गृध्रसी या इरक्रुन्निसा रोग नाश हो जाता है। यह यूनानी नुसख़ा है।

पथ्यादि गूगल।

(१७) बड़ी हरड़ १००, बहेड़े २००, आमले ४०० और शुद्ध गूगल ६४ तोले—इन चारोंको १०२४ तोले या १२ सेर १३ छटाँक पानीमें एक रात भर भिगो रखो। सवेरे ही इसको पकाओ; जब आधा पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर फिर पकाओ। जब खूब गाढ़ा हो जाय, इसमें बायबिडङ्ग, शुद्ध जमालगोटा, हरड़, बहेड़ा, आमला, गिलोय, निशोथ, पीपर, सोंठ और कालीमिर्च—इनका दो-दो तोले चूर्ण डाल दो और मिलाकर एक-एक तोलेकी गोलियाँ बना लो। यही "पथ्यादि गूगल" है।

इस गूगलको सेवन करनेवाला अपनी इच्छानुसार विहार कर सकता है। इसके सेवन करनेवालेको शीतल जल पीना और शीतल पदार्थ खाने चाहिये।

इसके सेवन करनेसे गृध्रसी, नयी खंजता, अत्यन्त उग्र तिल्ली, गोला, पाण्डु-रोग, मन्दाग्नि, खुजली, वमन, वातरक्त और विशेष करके गृध्रसी वात नष्ट होती है। इसके सेवन करनेवाला बलमें हाथीके समान और वेगमें घोड़ेके समान हो जाता है। उसकी उम्र बढ़ती, नेत्र-ज्योति तेज होती और शरीर पुष्ट होता है। यह गूगल विषको नष्ट करता, घावको भरता और सम्पूर्ण रोगोंको आराम करता है। मात्रा १ तोलेकी है।

(१८) "प्रसारिणी" तैलके लगाने और नस्य वग़ैरः लेनेसे गृध्रसी रोग नाश हो जाता है। बनानेकी विधि "सामान्य चिकित्सा और हनुग्रह चिकित्सा"में देखिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१९) "त्रयोदशांग गूगल"के सेवन करनेसे भी गृध्रसी वात नष्ट हो जाती है।

(२०) मेढ़ासिंगी, गोखरू, अरण्डकी जड़, बेलकी जड़, बायबिडङ्ग, ऊँटकटारा और कटेरीकी जड़—इनके काढ़ेमें "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीनेसे भयंकर वात-गृध्रसी रोग शान्त हो जाता है।

नोट—वातजन्य गृध्रसीमें शरीर भारी और टेढ़ा हो जाता है; जाँघ, उरु, जानु और सन्धियोंमें फड़कन होती है।

(२१) काले तिलोंका तेल १ सेर, गोखरूका काढ़ा एक सेर, गायका दूध चार सेर, सोंठका चूर्ण १ पाव और पुराना गुड़ एक सेर,—इन सबको कढ़ाहीमें चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके पीने, नस्य लेने और इसीकी गुदामें पिचकारी देनेसे गृध्रसी, कम्पवाय, कमरकी जकड़न, पीठके रोग और सूजन—ये सब नाश हो जाते हैं। इस तेलके पीनेसे बाँझके भी पुत्र होता है। परीक्षित है।

(२२) नीमकी जड़का काढ़ा पीने और उसीका लेप करनेसे "गृध्रसी रोग" चला जाता है।

(२३) दशमूलके काढ़ेमें भुनी हींग और पोहकरमूलका चूर्ण मिलाकर पीनेसे "गृध्रसी" आराम हो जाती है।

(२४) अजमोद, बायबिडङ्ग, सैंधानोन, देवदारु, चीता, पीपरामूल, सौंफ, पीपर और कालीमिर्च—इनको एक-एक तोले लो। हरड़ ५ तोले, विधायरा १० तोले और सोंठ एक तोले लो। इन सबको कूट-पीस-छानकर चूर्ण कर लो। फिर इसमें "गुड़" मिला दो। इसको गरम जलके साथ लेनेसे गृध्रसी, आमवात, गठिया, कमरका दर्द, पीठका दर्द, तूनी, प्रतितूनी, विश्वाची, गुदा और जाँघकी पीड़ा आदि नाश हो जाते हैं।

"नारायण तैल" और "प्रसारिणी तैल" हमारे यहाँ तैयार मिलते हैं। जिनको दरकार हो, हमसे मँगा लें। मूल्य १२) रुपया सेर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डाक्टरी मतसे

गृध्रसीकी चिकित्सा ।

लक्षण ।

गृध्रसी रोगके लक्षण हम लिख आये हैं। यह रोग कूले (hip) से पैरके टखने तक होता है। इस रोगको अँगरेज़ीमें 'सियाटीका' (Sciatica) कहते हैं। इस शब्दका अर्थ है—Rheumatism in the hip कूलेकी वात अथवा Neuralgia of the Sciatic nerve अर्थात् कूले या सुरीनकी नसका दर्द। यह रोग भी स्नायु सम्बन्धी है; क्योंकि यह कूले या जाँघकी स्नायुओंके भीतर या उनके आस-पास होता है। इसीसे डाक्टरोंने इसे न्यूरेलजिया या स्नायुगत वात रोग माना है।

इलाज ।

लगानेकी दवा—इस रोगमें शरीरके ऊपर—बाहरकी तरफ, बाईकी कोई माकूल मरहम या मुनासिब तिला इस्तैमाल करना चाहिये। सियाटीकामें नीचे लिखा लेप अच्छा काम देता है:—

अल्काहल (Alcohal)	... ...	२ औन्स।
स्पिरिट ऑव टरपैन्टाइन (Spirit of Turpentine)		२ ,,
क्लोरोफॉर्म (Chloroform)	... ...	१ ,,
गम कैम्फर (Gum Camphor)	... ...	आधा ,,

इस दवाको मिलाकर, पीड़ित स्थानपर दिनमें दो या तीन दफा लगाना चाहिये। कमरके दर्द (Lumbago) में भी यह लेप अच्छा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काम देता है। इस लेपसे अवश्य लाभ होता है। अगर लाभ न हो, तो स्नायुगत वात, गठिया वात या न्यूरेलजियामें काम आनेवाला कोई दूसरा लेप लगाना चाहिये।

खानेकी दवा—सबसे पहले रोगीको कोई जड़ी-बूटीका कारगर जुलाब लेना चाहिये। जैसे—पोडोफिलन (Podophyllin) या कोई और दस्तावर गोलियाँ। जब दस्तावर दवा अपना काम कर चुके—दस्त हो जायँ, तब कोई प्रकृति बदलनेवाली वातनाशक दवा देनी चाहिये। जैसे—Tincture of Guaiac.

बफारा—पीड़ित स्थान या सारे शरीरमें बफारा देना सर्वोत्तम उपाय है। इस वातरोगमें ही नहीं—समस्त वातरोगोंमें बफारा देना परम शान्तिदायक है। बफारेसे वातरोगोंमें अवश्य आराम होता है।

इस बातका निश्चय करनेके लिए कि, स्नायुओंपर किसी फोड़े या गूमड़ेका दबाव तो नहीं पड़ता, बड़ी आँतके नीचेके हिस्सेसे (By the Rectum) पेड़ूकी जाँच कर लेनी चाहिये। अगर रोगीको वातरोग या गठिया हो, तो ५ से १० बूँद तक "सालिसिलेट ऑव सोडा" चन्द रोज़ तक देना चाहिये। सिफलिस या आतशक रोगसे भी सियाटिका रोग हो जाता है। अगर ऐसा हो तो आतशकका मुनासिब इलाज करना चाहिये।

जाँघकी पीठके बराबर अथवा सुरीनकी नस या कूलेकी स्नायुके बराबर-बराबर पलस्तर लगाकर आबले या फफोले उठानेसे भी लाभ होता है।

सावधान! अगर "स्वास्थ्यरक्षा" ख़रीदनी हो, तो हमारा नाम और हमारा चित्र देखकर ख़रीदना; नहीं तो धोखा होगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुब्जक-चिकित्सा।

(कुबड़ेका इलाज)

नोट—कुब्जक रोगमें कुपित हुई वायु छाती या पीठको अनुक्रमसे ऊँचा कर देती है और साथ ही वेदना भी होती है। अन्तरायाम और बाह्यायाममें मनुष्यका शरीर तो जैसे-का-तैसा रहता है, पर वह छातीसे या पीठसे कमानकी तरह नत जाता है; किन्तु कुब्जक रोगमें छाती या पीठ शरीरके दायरेसे बाहर निकल जाती हैं।

कुब्जक-नाशक नुसखे।

(१) कुब्जक रोग या कुबड़ेपनकी चिकित्सामें "वातव्याधिकी सामान्य चिकित्सा"—जो धनुर्वात रोगकी चिकित्सामें लिखी है—करनी चाहिए। "प्रसारिणी तैल"का व्यवहार, हनुग्रह और धनुर्वातकी तरह, इस रोगमें भी हितकारी है।

(२) लहसनको सिलपर महीन पीसकर लेप-जैसा कर लो। फिर उसे कूब निकली जगहपर लगा दो। एक घण्टे बाद, उस लेपको पानीसे धो डालो। उस जगहपर एक फफोला निकलेगा। उस फफोलेको सूईसे छेद दो। छेदनेसे पानी-सा निकल जायगा। इसी तरह फिर लेप करो और धो दो। फफोला उठे तो फोड़ दो। ऐसा कई बार करनेसे अवश्य आराम हो जायगा।

(३) कबूतरके मांसके साथ या शोरबेके साथ "लहसन" खाना भी इस रोगमें उत्तम है। अगर ऊपरी दवा-दारूके साथ, यही पथ्य भी दिया जाय, तो बड़ा लाभ हो। इसे भी एक दवा ही समझिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हनुग्रह-चिकित्सा।

जिस रोगमें मुँह खुला रहे या दाँत ही बन्द हो जायँ, उसे "हनुग्रह" कहते हैं। हनुग्रहका अर्थ ठोड़ी जकड़ जाना है।

हनुग्रह नाशक नुसखे।

(१) "प्रसारिणी तैलकी" मालिश करने, मन्दी-मन्दी आगसे सेकने और तेलसे भरी हुई वस्ति सिरपर धारण करनेसे हनुग्रह रोग नाश होता है।

प्रसारिणी तैल।

मूल, पत्ते और शाखाओं समेत प्रसारिणीका पञ्चाङ्ग चार सौ तोले लेकर अच्छी तरहसे कूट लो। फिर उसे एक देगमें डालकर ऊपरसे १०२४ तोले पानी छोड़ो और मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर, उसमें तिलीका तेल ५ सेर, दहीका तोड़ ५ सेर, काँजी ५ सेर और गायका धारोष्ण दूध २० सेर मिला दो और चूल्हेपर चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ। इस समय,—

चीता, पीपरामूल, मुलेठी, सैंधानोन, बच, सोया, देवदारु, रास्ना, गजपीपर, प्रसारिणीकी जड़, बालछड़—जटामासी, लाल चन्दन, अरण्डकी जड़, खिरेंटीकी जड़ और सोंठ—इन पन्द्रह दवाओंको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तीन-तीन तोले चार-चार माशे लेकर—कुल ५० तोले वज़न कर लो। फिर इनको हिमामदस्तेमें कूटकर महीन कर लो। महीन होनेपर, सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी या कल्क बना लो। इस लुगदीको भी उसी औटते हुए तेलमें डाल दो। जब पकते-पकते तेल-मात्र रह जाय—दूध, तोड़ और काँजी जल जायँ—उतारकर छान लो और बोतलोंमें भर दो। यही "प्रसारिणी तैल" है।

इस तैलके पीनेसे, नस्य देनेसे, शिरोवस्ति करनेसे, मालिश करनेसे और स्वेदन करनेसे समस्त वातव्याधि-रोग आराम हो जाते हैं। विशेषकरके हनुग्रह, जिह्वास्तम्भ, अर्दित रोग, गद्गदता, विश्वाची, मन्यास्तम्भ, अपवाहुक, त्रिकशूल, गृध्रसी, खंजता, पंगुता, कलाय-खंजता, खञ्ज, स्तम्भ, संकोच, अन्तरायाम, वाह्यायाम, दण्डापतानक, धनुर्वात और कुबड़ेपनका नाश हो जाता है। जिन मनुष्योंके अङ्ग वायुकी वजहसे सुकड़ जाते हैं, क्षीण हो जाते हैं अथवा बूढ़ोंके अङ्ग संकुचित हो जाते हैं, उनके अङ्गोंको यह "प्रसारिणी तैल" फैला देता है। यह तैल संकोच नष्ट करनेवाला और सुकड़े हुए अङ्गोंका प्रसार या फैलाव करनेवाला है। इसीसे इसका नाम "प्रसारिणी तैल" है।

(२) गरम जलके कुल्ले करो अथवा छोटी पीपर और अदरख—इन दोनोंको चबाओ और बारम्बार थूको। इस उपायसे हनुग्रह रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) छः माशे लहसन लेकर २ तोले तिलीके तेलमें भूनो और "सैंधा नमक" डालकर खाओ। परीक्षित है।

(४) उड़दकी दाल भिगोकर छिलके उतार लो और सिलपर पीठी पीस लो। फिर उसमें "लहसन" मिलाकर फिर पीसो और अन्दाज़का अदरख, हींग और सैंधानोन भी मिला लो। इस पीठीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बड़े बनाकर, तिलीके तेलमें पका लो; इन बड़ोंको बल और जठराग्निके अनुसार खानेसे हनुग्रह रोग नाश हो जाता है।

(५) हनुग्रह रोग होनेसे मुँह बन्द हो गया हो, तो स्नेहन और स्वेदन कर्म करके, चिकनाई लगा और पसीने निकालकर, मुँहको खोलो। अगर मुख खुल गया हो, तो ठोड़ीको नवाकर उचित उपाय करो। खुलासा यह कि, बन्द हुए मुँहको घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंसे मलकर और बफ़ारा देकर खोल दो। अगर मुँह खुला रह गया हो, तो घी आदिसे चिकना करके और बफ़ारा देकर बन्द कर दो। घी या तेल लगानेसे नसें नर्म हो जाती हैं और बफ़ारा देनेसे पसीने निकलते हैं। पसीनोंसे भी दोष निकलकर नर्मी आती है।

(६) गुड़के साथ पकाई हुई कन्दूरी रोगीके मुँहमें रखकर, ठोड़ीपर घी वग़ैरः चिकनाई लगाओ और बफ़ारा दो। इसके बाद दोनों अँगूठों और दोनों उँगलियोंसे दबाकर ठोड़ीको बन्द कर दो।

(७) अर्दित चिकित्साके नं० १५ में लिखा "कपिकच्छ्वादि क्वाथ" नाक द्वारा पीनेसे हनुग्रह रोगको नाश कर देता है।

(८) दशमूलका काढ़ा पीनेसे हनुग्रह रोग नाश हो जाता है।

(९) कालीमिर्च और पीपरका स्वरस पीनेसे मन्यास्तम्भ और हनुग्रह रोग नाश हो जाते हैं।

क्रोष्टुकशीर्ष-चिकित्सा।

वायु और खूनसे, घुटनोंके बीचमें, गीदड़के मस्तकके समान, बहुत बड़ी, मोटी और अत्यन्त पीड़ावाली सूजन होती है, उसीको "क्रोष्टुकशीर्ष" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्रोष्टुकशीर्ष नाशक नुसखे।

(१) गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आमला—प्रत्येक दवा चार-चार तोले लेकर, ६४ तोले जलमें काढ़ा बनाओ। जब आठ तोले जल रह जाय, उतारकर छान लो। फिर एक तोले "शुद्ध गूगल" खाकर, ऊपरसे यही गरमागर्म काढ़ा पीनेसे "क्रोष्टुकशीर्ष रोग" नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) गूगल ३ माशे, गिलोय ३ माशे, हरड़के बकले ३ माशे, बहेड़ेके छिलके ३ माशे और गुठली-हीन आमले ३ माशे—इन सबको पीस-कूटकर छान लो। इस दवाको एक तोले "रेंडीके तेल"में मिलाकर खानेसे क्रोष्टुकशीर्ष रोग अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) तीन माशे शुद्ध गूगल खाकर ऊपरसे "तीतरका मांस-रस" पीनेसे अथवा दोनों मिलाकर पीनेसे "क्रोष्टुकशीर्ष" रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) चार तोले गायके दूधके साथ "अरण्डीका तेल" १ तोला पीनेसे "क्रोष्टुकशीर्ष" रोग नाश हो जाता है।

(५) क्रोष्टुकशीर्ष रोगकी चिकित्सा "वात-रक्त" रोगकी तरह करनी चाहिये।

(६) विधायरेका चूर्ण दूधके साथ पीनेसे क्रोष्टुकशीर्ष रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७) जानुगत क्रोष्टुकशीर्षमें खून निकालना—फस्द खोलना और वातनाशक दवा देना—सबसे अच्छा इलाज है।

हाजी बाबा—यह एक परले सिरेका दिलचस्प, मनोरञ्जक और चालाकी सिखानेवाला सचित्र उपन्यास है। लेखक—भूतपूर्व वायसराय लार्ड कर्ज़न महोदय हैं। देखने योग्य है। २४ चित्र हैं। दाम ३)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मन्यास्तम्भ-चिकित्सा ।

जब गर्दनकी सारी या पिछली नसें जकड़ जाती हैं, तब मनुष्य अपनी गर्दनको हिला-फिरा नहीं सकता । इसी रोगको "मन्यास्तम्भ रोग" कहते हैं ।

मन्यास्तम्भ-नाशक नुसखे ।

(१) गर्दनपर घी या तेल मलकर, "आक या अरण्डके पत्ते" गरम करके बाँध दो और बारम्बार सेक करो । इस उपायसे मन्यास्तम्भ—गर्दनका ठहर जाना आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(२) मुर्ग़ीके अण्डेके रसमें घी और सैंधानोन पीसकर मिला दो और गरम करके, गरमागर्म ही गर्दनपर बाँध दो । मन्यास्तम्भ या गर्दनका जकड़ जाना आराम हो जायगा । परीक्षित है ।

(३) दशमूल या पंचमूलके काढ़ेकी नस्य देनेसे मन्यास्तम्भ रोग नष्ट हो जाता है ।

(४) असगन्धकी जड़का लेप करनेसे और सरसोंका तेल मलनेसे मन्यास्तम्भ-रोग नाश हो जाता है ।

(५) उड़द, खिरेंटी, कौंचकी जड़, गन्धतृण, रास्ना, अरण्डीकी जड़ और असगन्ध—इनको कुल दो तोले लेकर, ३२ तोले पानीमें काढ़ा बना लो । जब ४ तोले जल रह जाय, मलकर छान लो । इसमें दो माशे हींग, दो माशे ज़ीरा और दो माशे सैंधानोन मिला दो । इस काढ़ेको नाक द्वारा, सात दिन तक, पीनेसे मन्यास्तम्भ, पक्षाघात, कर्णनाद, दुर्जय अर्दित-रोग एवं अन्य वातरोग नाश हो जाते हैं । इसका नाम "माषादि नस्य" है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) "प्रसारिणी तैल" की मालिश करने और नस्यादि देनेसे मन्यास्तम्भ-रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। इस तैलकी विधि "हनुग्रह-चिकित्सा" में देखिये।

(७) खिरेंटीकी जड़के काढ़ेमें "सैंधानोन" मिलाकर पीनेसे बाहुशोष और मन्यास्तम्भ-रोग नाश हो जाते हैं।

(८) अर्दित चिकित्सामें लिखा हुआ "कपिकच्छ्वादि क्वाथ" दारुण मन्यास्तम्भको नाश कर देता है। परीक्षित है।

(९) दशमूलका काढ़ा पीनेसे मन्यास्तम्भ नाश हो जाता है।

चारों आक्षेपकोंकी चिकित्सा।

वायु नसोंके भीतर घुसकर आक्षेप करता है, इसीसे "आक्षेपक-रोग" कहते हैं। जब कुपित वायु धमनियों या नाड़ियोंमें घुसता है, तब मनुष्य उसी तरह हिला करता है, जिस तरह हाथीपर बैठा हुआ आदमी हिला करता है।

आक्षेपक-रोग नाशक नुसखे।

(१) महाबला तैलके इस्तैमाल करनेसे अनेक वातरोग, विशेषकर आक्षेपक-रोग, नाश हो जाते हैं।

महाबला तैल।

महाबला तैलके लिए नीचे लिखी चीजें तैयार करोः—

(१) काले तिलोंका तेल ... ८ सेर।
(२) खिरेंटीका काढ़ा ... ८ सेर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) दशमूलका काढ़ा ... ८ सेर।

(४) जौ, बेर और कुलथीका काढ़ा ८ सेर।

(५) गायका दूध ... ८ सेर।

(६) जीवनीयगणकी दवाएँ, सैंधानोन, अगर, राल, सरल-धूप, देवदारु, मँजीठ, लालचन्दन, कूट, इलायची, बालछड़, तगर, भूरिछरीला, तेजपात, काली सारिवा, गौरी सारिवा, बच, शतावर, असगन्ध, सौंफ और पुनर्नवा—इन सब दवाओंको बराबर-बराबर और कुल मिलाकर दो सेर ले लो और सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर छहों नम्बरोंकी चीजोंको क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और सोने, चाँदी या मिट्टीके बर्तनोंमें रख दो।

इस तैलके काममें लेनेसे सब तरहकी वातव्याधि, ख़ासकर आक्षेपक-रोग नष्ट हो जाते हैं। इनके सिवाय हिचकी, श्वास, अधि-मन्थ, गोला और भयङ्कर खाँसी भी आराम हो जाती है। छः महीने तक प्रयोग करनेसे अन्त्रवृद्धिका भी नाश हो जाता है। प्रसूत-रोगमें इसकी बलाबल अनुसार मात्रा देनी चाहिये। जो स्त्रियाँ गर्भ चाहती हैं और जो पुरुष क्षीण-वीर्य हैं, उनके लिये यह तैल परम हित है। क्षीण वातपर, मर्महत और अभिघातपर, टूटे हुए पर और मिहनतकी थकानमें इसे इस्तैमाल करनेसे लाभ होता है। राजा, राजमान्य, सुखी और धनियोंको यह तैल अवश्य पास रखना चाहिये।

(२) शुद्ध कुचला दो रत्ती पानमें रखकर खानेसे आक्षेप और दण्डाक्षेप-रोग नाश हो जाते हैं।

(३) शुद्ध अफीम, शुद्ध कुचला और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर बँगला पानोंके रसके साथ खूब खरल करो और रत्ती-रत्ती-भरकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "समीर-गज-केसरी बटी" कहते हैं। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे पानका बीड़ा खानेसे सब तरहकी वातव्याधियाँ नाश होती हैं। ख़ासकर, दण्डापतानक, मृगी, सूजन और हैज़ेमें तो रामवाण हैं। परीक्षित हैं।

अपतानक-चिकित्सा।

जब वायु कुपित होकर, मनुष्यके देखनेकी शक्ति और संज्ञाको नष्ट कर देता है और रोगी कूँजता है; तब कहते हैं कि 'अपतानक" रोग हुआ है। जब वायु मोहसे घिरे हुए हृदयको छोड़ देता है, तब रोगीको संज्ञा हो जाती है—होश आ जाता है। खुलासा यह है कि, इस रोगमें देखनेकी शक्ति जाती रहती है, रोगी आँखोंसे देखता है, पर किसीको पहचान नहीं सकता। मुँहसे बोलता है; पर बोलते ही बेहोश हो जाता है।

अपतानक-रोग नाशक नुसख़े।

(१) अपतानक-रोगीकी आँखोंसे पानी बहता हो, कँप-कँपी न आती हो और वह खाटपर न पड़ा हो—इससे पहले ही चिकित्सा करनी चाहिये—चिकित्सामें देर न करनी चाहिये।

(२) अपतानक-रोगीको दशमूलके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" डालकर पिलाओ। जब यह काढ़ा पच जाय, उसे मांसरस-मिला भात खिलाओ; तेल की मालिश करो। तेज़ दस्तावर दवा देकर दस्त कराओ; इसके बाद घी पिलाओ। घी पिलानेसे स्रोत साफ़ हो जायँगे।

(३) कालीमिर्च १ तोले लेकर महीन पीस लो और छान लो। इस चूर्णको खट्टे दही या एक नीबूके रसके साथ खिला दो; पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस दवाको भोजनसे पहले ही खिलाओ। इस उपायसे "अपतानक" नष्ट हो जाता है।

(४) गुदामें, घी या तैल प्रभृति चिकने पदार्थोंकी पिचकारी देनेसे भी अपतानक रोग नष्ट हो जाता है।

(५) गायके पाव भर दूधमें चार या पाँच तोले "साफ अरण्डीका तेल" मिलाकर पिलानेसे दस्त लगते हैं और अपनातक रोग चला जाता है।

नोट—अपतानक-रोगमें तेज़ दस्तावर दवा देकर दस्त करानेकी शास्त्राज्ञा है। ऊपरका जुलाब सब तरहके रोगियोंको मुफीद है। अगर रोगीका कोठा बहुत ही कड़ा हो, इस तैलसे दस्त न होते हों, तो इसमें दस बूँद "तारपीनका तैल" भी मिला दो; फिर तो दस्त होंगे ही होंगे।

(६) छोटी पीपरोंका नौ माशे चूर्ण कबूतरके मांसरसमें मिलाकर खिलानेसे अपतानक रोग नाश हो जाता है।

नोट—बच्चा जननेवाली जच्चाका बहुत-सा खून निकल जानेसे पैदा हुआ और अभिघात या चोट लगनेसे उत्पन्न हुआ अपतानक रोग आराम नहीं होता।

अपतन्त्रक-चिकित्सा।

जब कुपित हुई वायु पक्वाशयसे ऊपर चढ़कर हृदयमें वेदना पैदा करती है; फिर और ऊपर चढ़कर मस्तक और कनपटियोंमें पीड़ा करती है, शरीरको कमान-की तरह झुकाकर कँपाती है और चित्तमें मोह पैदा कर देती है; तब वह आदमी बड़ी मुश्किलसे ऊँचे श्वास लेता है, आँखें खोल देता या बन्द कर लेता है, कबूतरकी तरह कूँजता या बोलता है और उसे शरीरका होश नहीं रहता। इसी रोगको "अपतन्त्रक" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपतन्त्रक नाशक नुसखे।

(१) अपतन्त्रक रोगीकी तृप्तिके विरुद्ध क्रिया मत करो। किसी हालतमें भी, निरूह वस्ति और वमनका सेवन न कराना चाहिये। परन्तु कफ और वातसे घिरी हुई श्वासवाहिनी नाड़ियोंको, तीक्ष्ण प्रधमन नस्य (फूँकनी द्वारा तेज़ पिसे हुए चूर्णकी नस्य) देकर, खोल देना चाहिये, क्योंकि नाड़ियोंके खुल जानेसे रोगीको होश हो जाता है। मतलब यह है कि, निरूह वस्ति और वमनकी तो मनाही है, पर तेज़ प्रधमन नस्य देनेकी ज़ोरसे राय दी गई है, क्योंकि नस्यसे रोगी होशमें आजाता है। आगे लिखी हुई "मरिचादि नस्य" इस मौक़ेपर अच्छा काम देती है।

(२) कालीमिर्च, सहँजनेके बीज, बायबिडङ्ग और मरुआ—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो और कपड़ेमें छानकर रख लो। यही "मरिचादि नस्य" है। समयपर इसे काग़ज़ आदिकी नलीमें रखकर नाकमें फूँकनेसे सिरकी मलामत निकल जाती और रोगी होशमें आजाता है। परीक्षित है।

नोट—मरुवेके पौधे बाग़ोंमें बहुत होते हैं। पत्ते लम्बे-लम्बे उँगलीके समान होते हैं। उनमें खुशबू बहुत होती है। मरुवेमें तुलसीके जैसी बहुत-सी बालें निकलती हैं। मरुवे काले और सफेद दो तरहके होते हैं। दवाके काममें सफेद मरुवा आता है। मात्रा १ माशेकी। मरुवा न होनेसे, कोई-कोई वैद्य तुलसीके छोटे-छोटे पत्ते भी ले लेते हैं।

(३) हरड़, बच, रास्ना, सैंधानमक और अम्लवेत—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूटकर छान लो। फिर इस चूर्णको "घी और अदरखके रस"में मिलाकर चाटो। इसके चाटनेसे अपतन्त्रक रोग नाश हो जाता है। इसका नाम "हरीतक्यादि अवलेह" है।

(४) शुद्ध कुचला २ रत्ती और काले धतूरेके शुद्ध बीज २ रत्ती—पानमें धरकर खानेसे अपतन्त्रक रोग नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धनुस्तम्भ-चिकित्सा।

धनुस्तम्भ रोगमें आदमी कमानकी तरह झुक जाता है, सारे अङ्ग ढीले हो जाते हैं, पसीने बहुत आते हैं और बुद्धि बिल्कुल भ्रष्ट हो जाती है। ऐसा रोगी दस दिनसे अधिक जी नहीं सकता।

धनुर्वात नाशक नुसखे।

(१) धनुस्तम्भ, कुब्जक, अन्तरायाम और बाह्यायाम रोगोंके होनेपर, नीचे लिखे वात नाशक उपाय अवश्य करने चाहिएः—

(१) मीठे, खट्टे, खारी, चिकने, गरम और भारी पदार्थोंका खाना।

(२) नस्य लेना।

(३) बस्तिकर्म या पिचकारी वग़ैरः लगाना।

(४) स्वेदन कर्म यानी बफ़ारे आदिसे पसीने निकालना।

(५) तर्पण करना।

(६) दागना।

(७) पानी छिड़कना।

(८) क्रोध करना।

(९) घी-तैलादि चिकनी चीज़ोंकी मालिश करना।

(१०) बदनकी मलाई करना।

ये सब "वातव्याधिकी सामान्य चिकित्सा" हैं, अर्थात् सभी तरहके वातरोगोंमें इनसे लाभ होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) "प्रसारिणी तैल"का व्यवहार धनुर्वात, कुब्जक और अन्तरायाम-बाह्यायाम रोगोंमें अत्यन्त उपकारी है। इसे कभी न भूलना चाहिये। इस तैलकी विधि पृष्ठ ३०८ में लिखी है। परीक्षित है।

(३) पानके भीतर दो रत्ती "अफीम" रखकर खानेसे धनुस्तम्भ रोगमें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(४) सज्जीका तेल मलने और दशमूलका काढ़ा पिलाने और इसी काढ़ेकी नस्य देनेसे धनुस्तम्भ रोग अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) दशमूलका क़ाढ़ा पिलाने और सरसोंका तेल मलनेसे धनुस्तम्भ रोग चला जाता है।

अन्तरायाम और बाह्यायाम चिकित्सा।

अन्तरायाम रोग होनेसे रोगीकी आँखें पथरा जाती हैं, ठोड़ी जकड़ जाती है, पसली टूटी हुईके समान हो जाती है, कफकी वमन होती हैं और रोगी पेट या छातीकी तरफसे कमानकी तरह झुक जाता है।

जब रोगी पीठकी तरफ कमानकी तरह झुक जाता है, तब "बाह्यायाम" कहते हैं। यह रोग असाध्य है। अगर इस रोगमें छाती, कमर और साथलोंमें मर्दनकी जैसी पीड़ा होती हो, तो अत्यन्त असाध्य है।

चिकित्सा।

(१) अन्तरायाम और बाह्यायामकी चिकित्सा "अर्दित रोगकी तरह" करनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) एक तोले लहसनको दो तोले कड़वे तेलमें भूँजकर खानेसे दोनों रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) कबूतरके मांसमें लहसन मिलाकर खानेसे दोनों रोग नष्ट हो जाते हैं।

(४) "प्रसारिणी तैल" की मालिश करने एवं अर्दित—लकवेमें लिखी हुई चिकित्सा करनेसे अन्तरायाम और बाह्यायाम नाश हो जाते हैं।

(५) डाक्टरीमें तार-बिजली लगाना, तर-गरम मेवे खिलाना अथवा लहसन और अदरख सेवन करना,—इस रोगमें हितकारी कहा है।

उर्द्ध वात-चिकित्सा।

(बहुत डकारें आना)

नीचेकी तरफ वायुके रुकनेसे जो बारम्बार डकारें आती हैं, उसे ही "उर्द्ध वात" कहते हैं।

उर्द्ध वात नाशक नुसखे।

(१) सोंठ १० तोले, विधारा १० तोले, हरड़ ३ तोले, भुनी हींग ४ तोले, सैंधानमक १ तोले और चीतेकी छाल १ तोले—इन सबको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णसे उर्द्ध वात रोग नष्ट हो जाता है।

(२) निशोथकी जड़ दूधमें पीसकर, उसमें "अड़ूसेका रस" मिलाकर पीओ। इससे उर्द्ध वात शान्त हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाताष्ठीला-चिकित्सा ।

(नाभिके नीचेकी गाँठ)

नाभिके नीचे गोल, पथरीके समान कठोर, भारी, ऊँची, ऊपरकी तरफ लम्बी, स्थिर या चञ्चल जो गाँठ होती है, उसे "वाताष्ठीला" कहते हैं । यह गाँठ लिङ्ग, योनि और गुदाकी राहोंको रोक देती है, इसलिये मल, मूत्र और हवाका अवरोध या रुकाव हो जाता है। यह गाँठ पित्त और कफसे नहीं होती।

वाताष्ठीला नाशक नुसखे ।

(१) वाताष्ठीलाका इलाज "गुल्म रोग"की तरह करना चाहिये।

(२) हींग, कूट, धनियाँ, हरड़, निशोथ, कालानोन, सैंधानोन, जवाखार और सोंठ—इन सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर घीमें भूँजकर रख लो । इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। अनुपान—जौका काढ़ा । इससे गुल्म रोग, वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला रोग नाश हो जाते हैं।

(३) सज्जीखार ३ माशे और पुराना गुड़ ३ माशे मिलाकर सवेरे-शाम खानेसे वाताष्ठीला और गुल्म रोग नाश हो जाते हैं।

हिंग्वादि चूर्ण ।

(४) भुनी हींग, पीपरामूल, धनियाँ, सफेद जीरा, बच, चव्य, चीता, पाढ़, कचूर, विषांबिल, सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, जवाखार, सज्जीखार, अनारदाने, हरड़, पोहकरमूल, अम्लवेत और हाऊबेर—इन २३ दवाओंको समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो । फिर इस चूर्णको एक-एक दिन "अदरखके रस" और "बिजौरे नीबूके रस"में खरल करके सुखा लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यही "हिंग्वादि चूर्ण" है। इस चूर्णके सेवन करनेसे वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीला रोग नाश हो जाते हैं।

(५) दशमूलके काढ़ेमें "शिलाजीत और मिश्री" मिलाकर पीनेसे वाताष्ठीला, वातकुण्डलिका और वातवस्ति आदि रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

प्रत्यष्ठीला नाशक नुसखे।

नोट—वेदना सहित, मल, मूत्र और हवाको रोकनेवाली जो गाँठ पेटमें होती है, उसे "प्रत्यष्ठीला" कहते हैं।

(१) वाताष्ठीला और प्रत्यष्ठीलाका एक ही इलाज है। अतः वाताष्ठीला या गुल्म रोगमें लिखी हुई दवाएँ इस रोगमें देनी चाहिये।

(२) वाताष्ठीला-चिकित्सामें लिखा हुआ "हिंग्वादि चूर्ण" इस रोगमें भी उपकारी है।

आध्मान-चिकित्सा।

(पेट फूलना)

जिस रोगमें पीड़ाके साथ गुड़गुड़ाहट होती है और पेट मशककी तरह फूल जाता है, उसे "आध्मान" कहते हैं।

आध्मान नाशक नुसखे।

(१) आध्मान या पेट फूलनेके रोगमें पहले लंघन कराओ। फिर अग्नि दीपक और पाचक औषधि गुदामें दो, पिचकारी लगाओ और संशोधन (क़य और दस्त) भी कराओ।

नारायण चूर्ण।

(२) छोटी पीपर ६ तोले, निशोथ ४ तोले और चीनी ४ तोले—इनको पीस-कूट और छानकर रख लो। इस चूर्णमेंसे आधा तोला

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे आध्मान रोग तत्काल नाश हो जाता है। इस चूर्णका नाम "नारायण चूर्ण" है। परीक्षित है।

दारुषटक लेप ।

(३) देवदारु, बच, कूट, सोया—सौंफ, हींग और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर "माठा या नीबूके रस"में पीसकर और गरम करके पेटपर लेप करनेसे, पेटका दर्द और आध्मान रोग नष्ट हो जाता है। इसका नाम "दारुषटक लेप" है।

महानाराच रस ।

(४) अमलताशका गूदा, आमले, शुद्ध जमालगोटा, कुटकी, थूहर, निशोथ और नागरमोथा—हरेकको चार-चार तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर कुटी दवाओंको सवा छै सेर पानीमें डालकर पकाओ। जब पकते-पकते आठवाँ भाग यानी १२॥ छटाँक पानी रह जाय, तब नये जमालगोटेके छिलके-रहित शुद्ध बीज कुछ लेकर एक पोटलीमें बाँध लो और उस पोटलीको उसी बर्त्तनमें डाल दो। आगको मन्दी रखो। जब यह काढ़ा गाढ़ा हो जाय, उतारकर खरलमें डाल दो और पोटलीको निकालकर अलग फेंक दो।

फिर आठ भाग शुद्ध जमालगोटेके बीज, तीन भाग सोंठ, दो भाग कालीमिर्च, दो भाग शुद्ध पारा और दो भाग शुद्ध गन्धक उसी खरलमें डालकर, एक पहर या ३ घण्टे तक घोटो। बस "महानाराच रस" तैयार हो जायगा।

इस रसको शीतल जलके साथ सेवन करनेसे आध्मान, शूल, आनाह, प्रत्याध्मान, उदावर्त्त, गोला और पेटके सारे रोग नाश हो जाते हैं। रोगका जोर मिटनेपर, रोगीको दही और मिश्री तथा सैंधेनमकके साथ कुछ दही-भात खिलाना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परीक्षित नाराच रस।

(५) शुद्ध पारा १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, सोंठ २ तोले और शुद्ध जमालगोटा ६ तोले—इन सबको पीसकर चूर्ण कर लो। इसीका नाम "नाराच रस" है।

इसकी मात्रा २ रत्तीकी है। अनुपान—आध्मान और शूलादि रोगोंमें गरम जल या तुलसीका रस अथवा शहद और अदरखका रस। दस्त बन्द करनेके लिये इसके ऊपर "शीतल जल" दिया जाता है।

इसकी एक मात्रा गरम जलके साथ लेनेसे दस्त होते हैं और शीतल जल पीते ही दस्त बन्द हो जाते हैं। यह रस आध्मान—पेट फूलना, शूल रोग और मलावरोध या दस्तक़ब्जमें खूब काम देता है। परीक्षित है।

नोट—पहले गन्धक और पारेकी निश्चन्द्र कज्जली कर लेनी चाहिये। फिर शेष दवाओंको कूटकर उसमें मिला देना और ३।४ घण्टे तक घोटना चाहिये। मात्रा बलाबल देखकर देनी चाहिये। बाज़-बाज़ रोगियोंको एक या आधी रत्ती रस ही काफी होता है।

(६) दशमूलके काढ़ेमें अरण्डीका तेल, हींग और कालानोन मिलाकर पीनेसे पेटका फूलना और पेटका दर्द आराम हो जाता है।

(७) हींग, अम्लवेत, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, बच, पीपर, पीपरामूल, चव्य, सोंठ, चीता, कालीमिर्च, कचूर, आमले, अजवायन, सफेद आक, पाढ़, काला जीरा, सफेद जीरा, असगन्ध, जवाखार, वज्रखार, पीपरामूल, हाऊबेर और सज्जीखार—इन पच्चीस चीज़ोंको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूटकर छान लो। इस चूर्णकी मात्रा दोसे चार माशे तक है। इसके सेवन करनेसे हिचकी, आध्मान—पेट फूलना, दस्त रुक जाना, शूल, गोला, गलेका रोग, हृदयका रोग, पथरी और पाण्डु रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इस नुसख़ेमें कालीमिर्च और पीपरामूल आदि दो-दो बार लिखे गये हैं। इसको गलती न समझकर, जितनी बार लिखे हैं उतनी ही बार लो।

प्रत्याध्मान-चिकित्सा।

नोट—पक्वाशयमें हवा रुकनेसे, पेट फूलने, दर्द होने और गुड़गुड़ आवाज़ होनेको "आध्मान" कहते हैं। वही दर्द पक्वाशयमें न होकर, आमाशयसे उठे और पेट या पसवाड़ोंको छोड़ दे, तो उसे "प्रत्याध्मान" कहते हैं।

प्रत्याध्मान नाशक नुसख़े।

प्रत्याध्मान रोगके उठते ही पहले वमन और लंघन कराओ, फिर दीपन और पाचन दवाएँ सेवन कराओ और पिचकारी लगाओ।

विश्वाची-चिकित्सा।

विश्वाची रोग होनेसे मनुष्य एक या दोनों बाहोंको न तो फैला सकता है और न सुकेड़ सकता है।

विश्वाची नाशक नुसख़े।

(१) सन्ध्याके भोजनके बाद—दशमूल, खिरेंटी और उड़द—इनके काढ़ेमें तेल और घी मिलाकर नास लेनेसे विश्वाची और अपबाहुक रोग नाश हो जाते हैं।

(२) उड़द, सैंधानोन, खिरेंटी, रास्ना, दशमूल, हींग, बच, बाल-छड़, शतावर और सोंठ—इन दवाओंको दो-दो तोले लेकर, पानीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर इन्हीं दवाओंको दो-दो तोले लेकर, ३२ गुने पानीमें औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छान लो। फिर आध सेर काली तिलीका तेल, दो सेर काढ़ा और आध पाव कल्क—इन सबको मिलाकर तेल पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतार लो। इस तैलके, भोजनके बाद, सेवन करनेसे अपबाहुक, पक्षाघात, अर्दित या लकवा तथा भयङ्कर विश्वाची रोग नाश हो जाते हैं।

जिह्वास्तम्भ-चिकित्सा।

(जीभका बेकाम हो जाना)

नोट—इस रोगमें जीभ स्तब्ध हो जाती है। इस रोगवाला खा, पी और बोल नहीं सकता।

(१) इस रोगमें, अवस्थादिका विचार करके, वातव्याधिकी दवाएँ सेवन कराओ। अर्दित रोगमें जो "सामान्य चिकित्सा" लिखी है, वह भी इस रोगमें हितकारी है।

(२) "प्रसारिणी तैल"के इस्तैमाल करनेसे जिह्वास्तम्भ रोग नाश हो जाता है। (पृष्ठ ३२७-२८)

जँभाई रोगकी चिकित्सा।

(जँभाइयों-पर-जँभाइयाँ आना)

(१) सरसोंका तेल मलनेसे, मधुर भोजन खानेसे और पान चबानेसे जँभाई रोग नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) जँभाई आते ही, मनुष्यको सुन्दर पलँगपर सुला देनेसे जँभाई आना बन्द हो जाता है।

(३) सोंठ, छोटी पीपर, कालीमिर्च, अजवायन और सैंधानोन—इन पाँचोंको अलग-अलग या बराबर-बराबर मिलाकर खानेसे जँभाई आना तत्काल आराम हो जाता है।

गद्गदत्व, मिन्मिनत्व और मूकताकी चिकित्सा।

(तोतले, गिनगिने और गूँगेका इलाज)

बोलते समय, पदों और व्यञ्जनोंके लोप हो जानेको "गद्गदत्व" कहते हैं; अक्षरोंके नाकमें बोलनेको "मिनमिनाना" कहते हैं और गूँगेपनको "मूकता" कहते हैं।

सारस्वत घृत।

(१) सहँजना, बच, सैंधानमक, धायके फूल, लोध और पाढ़—इनको चार-चार तोले लेकर, सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदीको, ६४ तोले घीको और २५६ तोले बकरीके दूधको, क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर, मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "सारस्वत घृत" है। इस घीके सेवन करनेसे जड़ता, गूँगापन और मिनमिनापन आदि क्षण-भरमें नष्ट होकर, बोली साफ़ हो जाती है और स्मृति, मति, मेधा-शक्ति और तर्कशक्तिकी प्राप्ति होती है।

(२) हल्दी, बच, कूट, छोटी पीपर, सोंठ, सफेद ज़ीरा, अजमोद, मुलेठी और सैंधानमक—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो। इस चूर्णको, घीमें मिलाकर, चाटनेसे २१ दिनमें मनुष्यकी याद रखनेकी ताक़त खूब बढ़ जाती है और उसकी आवाज़ कोयलके जैसी हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रलाप-चिकित्सा।

(बड़बड़ानेका इलाज)

नोट—अहकी-बहकी और व्यर्थकी बातोंको "प्रलाप" कहते हैं। सन्निपात-ज्वरमें मनुष्य आनतान बका करता है। लोग कहते हैं—बादीसे बकता है। वैद्यकमें उसे ही "प्रलाप करना" कहते हैं।

(१) तगर, पित्तपापड़ा, अमलताश, नागरमोथा, कुटकी, सुगन्ध-वाला, असगन्ध, ब्राह्मी, दाख, चन्दन, दशमूल और शंखाहूली—इनको दो-दो माशे लेकर, ३२ तोले जलमें काढ़ा बनाओ। जब ४ तोले पानी रह जाय, मल-छानकर पीलो। इस काढ़ेसे प्रलाप या आनतान बकना बन्द हो जाता है।

रसाज्ञान-चिकित्सा।

भोजन करते समय, जिस मनुष्यकी जीभको मीठे, खट्टे और खारी आदि रसोंका ज्ञान न हो, उसे "रसाज्ञान" रोग है।

(१) सैंधानमक, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और अम्लवेत—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको जीभपर घिसनेसे "रसाज्ञान" रोग नाश हो जाता है।

नोट—अगर "अम्लवेत" न मिले, तो "चूका" ले सकते हो।

किरातादि कल्क।

(२) चिरायता, कुटकी, इन्द्रजौ, बच, ब्राह्मी, ढाकके बीज, सज्जीखार, काला जीरा, छोटी पीपर, पीपरामूल, चीता, सोंठ और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कालीमिर्च—इन तेरह दवाओंको "अदरखके रस"में पीसकर, जीभ-पर बारम्बार घिसनेसे "रसाज्ञान" रोग नाश होकर, जीभको रसोंका ज्ञान होने लगता है। इसका नाम "किरातादि कल्क" है।

वातकण्टक-चिकित्सा।

(पाँवमें मोच आना)

ऊँचा-नीचा पाँव पड़ने अथवा मिहनतके कारणसे टख़ने या पिंडलियोंमें पीड़ा होनेको "वातकण्टक" कहते हैं।

(१) दिनमें तीन-चार बार, एक-एक तोले अरण्डीका तेल पीनेसे "वातकण्टक" रोग नाश हो जाता है।

(२) "वातकण्टक" रोगमें बारम्बार खून निकलवाना या सूइयोंसे दागना हितकारी है।

खल्ली-चिकित्सा।

(बाइँटे या तशन्नुज)

जिस रोगमें रोगी पैर, जाँघ, पिंडली और हाथकी जड़को घुमाया या मोड़ा करता है अथवा जिस वातसे पैर, जाँघ. पिंडली और हाथकी जड़ें ठिठरा जाती हैं,—बाइँटे आते हैं, उसे "खल्ली वात" कहते हैं।

(१) कूट ६ माशे, सैंधानोन ६ माशे, तेल ५ तोले और चूका ६ माशे—इन सबको पीसकर और ज़रा गरम करके मालिश करनेसे खल्ली वात नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—कूट ६ माशे, सैंधानोन ६ माशे और चूका ६ माशे—इनको एक छटाँक पानीमें पीसकर और ३ माशे घी मिलाकर खानेसे २१ दिनमें खल्ली रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कलायखंज-चिकित्सा।

(कँपकँपी सहित लँगड़ापन)

जो लँगड़ाकर चलता है या काँपता है और जिसके सब सन्धि-बन्धन ढीले हो जाते हैं, उसे "कलायखंज" रोगी कहते हैं। कलायखंज रोगी चलनेके आरम्भमें काँपता और लँगड़ाकर चलता है। लँगड़ा चलते समय नहीं काँपता, यही भेद है।

(१) इस रोगका इलाज "खंजता और पंगुताकी तरह" ही किया जाता है। इतनी बात अधिक है कि, इस रोगमें स्नेह-क्रिया विशेष की जाती है।

(२) इस रोगमें भी "प्रसारिणी तैल" और "त्रयोदशाङ्ग गूगल" तथा "पथ्यादि गूगल" हितकारी हैं।

खंजता और पंगुताकी चिकित्सा।

(लँगड़े और लूलेपनका इलाज)

(१) अगर खञ्जता और पंगुता यानी लँगड़ापन और लूलापन थोड़े दिनोंके हों, तो नीचे लिखे हुए उपायोंसे चिकित्सा करोः—

(१) विरेचन या जुलाब दो।

(२) निरूह वस्ति करो।

(३) स्वेदन करो; बफारे आदिसे पसीने निकालो।

(४) गूगल सेवन कराओ।

(५) स्नेहवस्ति करो।

(२) "पथ्यादि गूगल" सेवन करनेसे नवीन खंजता यानी थोड़े दिनोंका लँगड़ापन दूर हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) "त्रयोदशांग गूगल" सेवन करनेसे भी खंजता या लँगड़ापन आराम हो जाता है।

(४) "प्रसारिणी तैल"के सेवन करनेसे भी खञ्जता और पंगुता आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

बाहुशोष-चिकित्सा।

(बाँह सूखना)

कन्धों या खबोंके बन्धनोंके सूख जानेसे अत्यन्त वेदनावाला बाहुशोष रोग होता है। यह रोगी अपने उस हाथसे खा-पी सकता है।

(१) भोजनके बाद, "महा कल्याण घृत" पीनेसे बाहुशोष रोग नाश हो जाता है।

(२) खिरेंटीकी जड़के काढ़ेमें "सैंधानोन" मिलाकर पीनेसे बाहुशोष और मन्यास्तम्भ रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—खिरेंटीकी जड़ २ तोले लेकर पाव भर पानीमें औटाओ; जब १ छटाँक पानी रह जाय, उतारकर छान लो और २ माशे "सैंधानोन" डालकर पीलो।

(३) सरिवनके साथ दूध औटाकर पीनेसे बाहुशोष नाश हो जाता है।

(४) उड़दोंका रस पिलानेसे बाहुशोष रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

पाददाह-चिकित्सा।

(पैरोंमें जलन होना)

जब पित्त और खून सहित कुपित वायु पैरोंमें दाह या जलन करती है अथवा चलते समय पैरोंमें जलन होती है, तब कहते हैं "पाददाह रोग" है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) मसूरकी दाल और थोड़ा-सा कपूर पानीके साथ सिलपर पीसकर पैरोंमें लेप करनेसे "पाददाह" या पैरोंकी जलन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) दोनों पैरोंमें मक्खनकी मालिश करके, आगपर पैर सेकनेसे पाददाह रोग नाश हो जाता है। कहते हैं, इस उपायसे पुरानी और अत्युग्र पैरोंकी जलन भी शान्त हो जाती है।

(३) औटाये हुए जलको शीतल करके, उस पानीमें मसूरकी दाल पीसकर पाँवोंपर लेप करनेसे, पाददाह-पैरोंकी जलन नाश हो जाती है॥

(४) पाददाहमें विशेषकरके "वात-रक्तकी चिकित्सा" करनी चाहिये॥

(५) पाददाहमें केवल लूनी घीकी मालिश करनेसे फायदा हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—याद रखो, पित्त और खूनसे मिला हुआ 'वायु' पाददाह करता है॥

तूनी-प्रतितूनी-चिकित्सा।

(गुदा, लिङ्ग और योनिकी पीड़ा)

विष्ठाके स्थान और मूत्राशयसे एक तरहकी पीड़ा उठती है, वह गुदा, लिङ्ग और योनिमें भेदने या तोड़नेकी-सी पीड़ा करती है। जो वेदना नीचेकी तरफ जाती है, उसे "तूनी" कहते हैं।

जो वेदना गुदा और लिङ्ग अथवा योनिसे उठकर उल्टी दौड़ती और वेग-पूर्वक शान्त होकर पक्वाशयमें जाती है, उसे "प्रतितूनी" कहते हैं।

(१) स्नेह यानी घी-तेलकी पिचकारी लगाओ। तेलमें सैंधानोन डालकर पीओ। अथवा हींग और जवाखारको गरम जलके साथ पीओ। अथवा अच्छी तरहसे घी पीओ।

(२) घीके साथ "हिंगाष्टक चूर्ण" को गुदापर रखनेसे तूनी और प्रतितूनी रोग चले जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

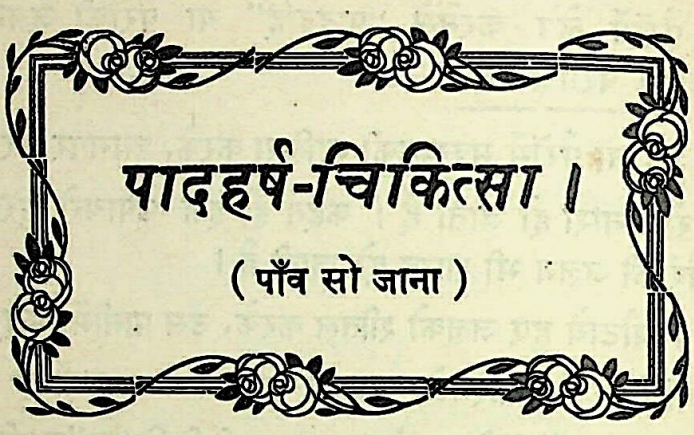

जब वात और कफकी अधिकतासे पैर झन्नाने लगते हैं, तब "पादहर्ष" होना कहते हैं। साधारण लोग इसे "पैर सो जाना" कहते हैं।

(१) पाद-हर्ष रोगमें वात-कफनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

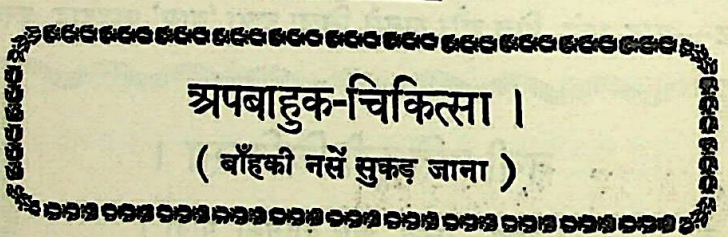

अपबाहुक रोगमें, बाँहमें रहनेवाली शिराएँ सुकड़ जाती हैं।

अपबाहुक नाशक नुसख़े ।

(१) अपबाहुक रोगमें, मन्यास्तम्भ रोगमें और गलेसे ऊपरके रोगोंमें शीतल जलकी नस्य देना और नस्यके बाद जिङ्गिनी और गूगलका उपयोग करना सर्वोत्तम इलाज है।

(२) खिरेंटीकी जड़ और फरहदकी जड़ पीसकर पीनेसे बाँह वस्त्रके समान हो जाती है।

(३) कौंचका स्वरस पीनेसे अपबाहुक रोग नाश हो जाता है।

(४) उड़दके रसकी नास लेनेसे अपबाहुक रोग चला जाता है।

(५) "माष तैल" से अपबाहुक रोग नष्ट हो जाता है:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माष तैल।

उड़द, अलसी, जौ, कटसरैया, कटेरी, गोखरू, अरलूकी जड़, जटामासी, कौंच, सुगन्धवाला, कपास, सनके बीज, कुल्थी और बेर—इन सबको दो-दो तोले लेकर पीस-कूट लो। फिर १२ सेर पानीमें डालकर काढ़ा पका लो। जब चौथाई या ३ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

सोंठ, पीपर, सौंफ, अरण्डकी जड़, पुनर्नवा, प्रसारिणी, रास्ना, खिरेंटी, गिलोय और कुटकी—इनको डेढ़-डेढ़ तोले लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर ऊपरका ३ सेर काढ़ा, ३ सेर बकरेका मांसरस, तीन पाव काञ्जी तिलीका तेल और दवाओंकी लुगदीको क़लईदार कढ़ाहीमें रखकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "माष तैल" है। इसके लगानेसे अपबाहुक रोग नष्ट हो जाता है।

(६) सन्ध्या समय, भोजनके बाद—दशमूल, खिरेंटी और उड़दके काढ़ेमें "तेल और घी" मिलाकर नास लेनेसे अपबाहुक और विश्वाची रोग नष्ट हो जाते हैं।

(७) उड़द, बला, सैंधानोन, हींग, रास्ना, बच, शतावर, दशमूल और सोंठ—इनको बराबर-बराबर कुल मिलाकर १ पाव ले लो और सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर १ सेर काली तिलीका तेल और चार सेर गायका दूध तथा इस लुगदीको कढ़ाहीमें डालकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलकी नस्य देनेसे अपबाहुक रोग फ़ौरन आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८) खिरेंटीकी जड़ और कौंचके बीज—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "नीमके रसमें" मिलाकर पीनेसे अपबाहुक रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) धतूरेके बीजोंका तेल मलनेसे अपबाहुक रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) रातके समय अरण्डीका तेल और सज्जीका तेल मलनेसे अपबाहुक रोग नाश होता है। परीक्षित है।

(११) अरण्डीके तेलकी नास देने और उसी तेलकी मालिश करनेसे अपबाहुक रोग चला जाता है। परीक्षित है।

मुहुर्मूत्र और मूत्रनिग्रह-चिकित्सा।

(बारम्बार पेशाब होना और रुक जाना)

जब तक वायु दूषित नहीं होता, तब तक मूत्राशयमें मूत्र अच्छी तरह आता रहता है; किन्तु जब वायु दुष्ट हो जाता है, तब मुहुर्मूत्रण—बारम्बार मूतना और मूत्र-निग्रह—पेशाब रुकना आदि रोग खड़े हो जाते हैं। इन दोनोंको "वस्तिवात" भी कहते हैं।

मुहुर्मूत्र और मूत्र-निग्रह नाशक नुसखे।

(१) खिरेंटी, चुरनहार और दालचीनी—इनको समान-समान लेकर पीस लो और "मिश्री" मिलाकर रख दो। इसमेंसे १ तोले चूर्ण, १६ तोले दूधके साथ खानेसे, मुहुर्मूत्रण या बारम्बार पेशाब होना आराम होता है।

(२) त्रिफलेका चूर्ण और लोहभस्म "शहद"में मिलाकर चाटनेसे बारम्बार पेशाब होना आराम हो जाता है।

(३) जवाखारका चूर्ण ६ माशे और चीनी ६ माशे मिलाकर खनेसे पेशाबका रुकना नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) पेठेके बीज और खीरेके बीज दोनों, सिलपर पानीके साथ पीसकर, पेड़ूपर रखनेसे पेशाबका रुकना नाश होकर, पेशाब साफ होने लगता है।

(५) आमलोंको पानीके साथ सिलपर पीसकर पेड़ूपर रखनेसे, पेशाब रुकना तत्काल नाश होता है; यानी पेशाब साफ होने लगता है।

(६) लिङ्ग या योनिके मुँहमें धीरे-धीरे "कपूरकी बत्ती" चढ़ानेसे मूत्रकी रुकावट नाश होकर फौरन पेशाब होता है।

(७) चूहेकी मैंगनी १ तोले और कलमीशोरा ६ माशे—पानीके साथ पीसकर पेड़ूपर रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(८) टेसूके फूल और कलमीशोरा पानीके साथ सिलपर पीसकर, पेड़ूपर रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(९) राई १ माशे, कलमीशोरा १ माशे और शक्कर २ माशे मिलाकर, दो बारमें, खानेसे पेशाब हो जाता है।

(१०) केवल चूहेकी मैंगनी, पानीके साथ पीसकर, नाभिके नीचे रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(११) कलमीशोरा पानीमें पीस और घोलकर, उसमें कपड़ा भिगोकर, नाभिके नीचे रखनेसे पेशाब खुल जाता है।

(१२) काले तिल और शक्कर मिलाकर खानेसे बहुत पेशाब आना आराम हो जाता है।

(१३) सूखी बबूलकी फली कूट-पीस-छानकर "घी" में भून लो और चीनी मिलाकर रख लो। इसमेंसे ६ माशे नित्य खानेसे बहुत पेशाब होना आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रिकशूल-चिकित्सा।

(कूले और पीठके बाँसेकी सन्धिका दर्द)

कूलेकी दो हड्डियाँ और पीठके बाँसेकी दो हड्डियाँ जहाँ मिली हैं, उस जगहको "त्रिकस्थान" कहते हैं। त्रिकस्थानमें वायुसे जो दर्द होता है, उसे "त्रिकशूल" कहते हैं।

त्रिकशूल नाशक नुसखे।

(१) त्रिकशूलवालेको "बालुका स्वेद" दो अथवा उसकी चारपाईके नीचे, बनके कण्डोंकी आग रखकर सेक लगने दो।

नोट—पाव भर बालू कपड़ेमें बाँधकर आगपर तपाओ और उसीसे त्रिक-स्थानको बारम्बार सेको। यही "बालुका स्वेद" है।

त्रयोदशांग गूगल।

(२) बबूर, असगन्ध, हाऊबेर, गिलोय, शतावर, गोखरू, रास्ना, निशोथ, सौंफ, कचूर, अजवायन और सोंठ—इनको समान-समान लेकर चूर्ण कर लो। फिर इस चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लो और गूगलसे आधा "घी" लो। फिर सबको मिलाकर खूब कूटो। बस यही "त्रयोदशांग गूगल" है। इसमें गूगल समेत तेरह चीजें पड़ती हैं।

खुलासा—बबूर आदि १२ दवाएँ एक-एक तोले, गूगल १२ तोले और घी ६ तोले लेकर खूब कूटो। जितनी कुटाई होगी, दवा उतनी ही अच्छी बनेगी।

इसकी मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम दूध या गरम पानी है। इस गूगलके सवेरे ही सेवन करनेसे, त्रिकशूल, जानुस्तम्भ, हनुग्रह, भुजागत वायु, पादगत वायु, सन्धिगत वायु, अस्थिगत वायु, मज्जागत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वायु, स्नायुगत वायु, कोष्ठगत वायु, वात-कफके समस्त रोग, वायुके रोग, छातीका स्तम्भ, भग्नास्थि या टूटी हड्डीसे हुए रोग, योनि-दोष, खंजता, गृध्रसी और पक्षाघात रोग आराम हो जाते हैं। प्राचीन वैद्य इस "त्रयोदशांग गूगल" को वातरोगोंपर अत्युत्तम कहते हैं।

(३) असगन्धका चूर्ण "मिश्री और घी" मिलाकर खानेसे कमरका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) छाती, कन्धे और त्रिकस्थानकी वात "वमन और नस्य" से शान्त होती है।

(५) सर्व्वाङ्ग वात और अर्दित वात चिकित्सामें लिखा हुआ "लशुनादि चूर्ण" खानेसे कमर और पीठकी वात नाश हो जाती है।

(६) दशमूलका काढ़ा बनाकर, सवेरे ही पीनेसे पीठका दर्द, कमरका दर्द और हृदयका दर्द आराम हो जाता है। काढ़ा छाननेसे जो फोक बचे, उसीको फिर औटाकर शामको पीना चाहिये। परीक्षित है।

(७) लघु पंचमूल दो तोले लाकर कुचल लो। फिर १६ तोले दूध और ६४ तोले पानी उसमें मिलाकर औटाओ। जब दूध-मात्र रह जाय, छानकर रोगीको पिलाओ। इस "पंचमूली क्षीर" से जीर्ण-ज्वर, पीठका दर्द, सिर-दर्द, जुकाम, खाँसी और श्वास आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

कमरके दर्दपर यूनानी नुसखे।

(१) सोंठ १० तोले, रेंडीकी गरी १० तोले, घी २० तोले, मिश्री २० तोले और गायका दूध आध सेर—इतनी चीजें तैयार कर लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहले रेंडीकी गरी सिलपर महीन पीस लो। फिर उस पीठीको दूधमें मिलाकर पकाओ; जब गाढ़ा-सा होनेपर आवे, उसमें "सोंठ, घी और मिश्री" डालकर हलवा बना लो। इस हलवेके बलाबल और स्वभावानुसार खानेसे कमरका दर्द आराम हो जाता है।

(२) करीलकी लकड़ी लाकर आगमें जला लो, जब राख हो जाय, छानकर रख लो। इसमेंसे २ माशे राख, ६ माशे घीमें मिलाकर नित्य खानेसे कमरका दर्द आराम हो जाता है।

(३) अक्षीरकी जड़की छाल, सोंठ और धनियाँ बराबर-बराबर लेकर, जौकुट करके रख लो। इसमेंसे पाँच तोले दवा लेकर आध सेर पानीमें औटाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, मल-छानकर रोगीको पिला दो। इसके पीनेसे कमरका दर्द चला जाता है।

नोट—"इलाजुलगुर्बा" में दश दाम यानी १६ तोले ८ माशे दवा—४८ तोले ४॥ माशे पानीमें भिगोने और औटानेकी बात लिखी है।

(४) धनियाँ ४ माशे और मिश्री १ तोले मिलाकर सवेरे ही फाँकनेसे गरमीसे पैदा हुई कमर और जोड़ोंकी पीड़ा नाश हो जाती है।

(५) मालकाँगनी, पँवारके बीज, बावची और हालों—इनको बराबर-बराबर लेकर रख लो। इसमेंसे ३ माशे दवा, सवेरे ही, पानीके साथ निगल जानेसे सर्दीसे पैदा हुआ कमर और जोड़ोंका दर्द आराम हो जाता है। इस दवासे सफेद दाग भी जाते रहते हैं।

(६) शक्कर और खोपरा खानेसे कमरकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(७) रेंडी एक तोला, लाहौरी नोन १ तोला, मैदालकड़ी १ तोला, हींग ६ माशे और गेहूँका आटा आध पाव—इन सबको एक साथ पीसकर रोटी-सी बना लो और पकाओ। जब रोटी पक जावे, उसे कमरमें, दर्दकी जगह, बाँध दो। इससे कमरकी पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) इस्पन्द १३ तोले ४ माशे और सोंठ ३ तोले ४ माशे लेकर कुचल लो और रातके समय एक सेर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उस पानीमें आध सेर मीठा तेल मिला दो और मन्दाग्निसे औटाओ। जब पानी और दवा जल जायँ, तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके लगानेसे कमर, पहलू और पिंडलीकी पीड़ा तथा चूतड़से पाँवकी उँगलियों तककी पीड़ा, रींगनवायु या इरकुन्निसा रोग आराम हो जाते हैं।

(९) हुलहुलकी छाल लाकर, उसके ऊपरकी स्याही दूर करो और भीतरी छालको छायामें सुखाकर कूट लो। इसमें बराबरकी "शक्कर" मिलाकर खानेसे कमरका दर्द नाश हो जाता है।

सर्व्वाङ्गवात-चिकित्सा।

सारे अङ्गोंमें, वायुका कोप होनेसे शरीरकी शिराएँ—नसें काँपने लगती हैं, अंग टूटने लगते हैं और दर्दके मारे सन्धि या जोड़ फटने लगते हैं। इसी रोगको "सर्व्वाङ्गवात" कहते हैं।

खुलासा यह कि, वातके कोपसे आँख, कान, नाक, भौंह, सिर, होठ, छाती, बाँह और कन्धे आदि अंग फड़कने लगते हैं। इसीको "सर्व्वाङ्गवात" कहते हैं।

सर्व्वाङ्गवात नाशक नुसखे।

(१) एक पाव गेहूँकी चोकरमें दो तोले सैंधानोन पीसकर मिला दो और पानी मिलाकर आगपर पका लो। इस लूपड़ीसे उन स्थानोंको सेको जो फड़कते हैं; अवश्य आराम होगा।

(२) अजवायन, कालीमिर्च और अफीम—तीनोंको तीन-तीन माशे लेकर, आधा पाव काली तिलीके तेलमें खरल करो। जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक दिल हो जायँ, सारे बदनमें इस तेलकी मालिश करो। इस तेलसे सर्वाङ्गवात नष्ट हो जाती है।

(३) तेलका अवगाहन एकांगवात और सर्वाङ्गवातको निश्चय ही नाश कर देता है। कहा है:—

सर्व्वाङ्गगतमेकाङ्गगतञ्चापि समीरणम्।
तैलावगाहनं हन्ति तोयवेगमिवाचलः॥

तेलके अवगाहन—यानी तेलमें गोता लगानेसे सर्व्वाङ्गवात और एकांगवात—अर्द्धाङ्ग या पक्षाघात इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह जलके ज़ोरसे पहाड़ नाश हो जाते हैं।

(४) सर्व्वाङ्गवात शिरामोक्षण करने यानी फ़स्द खोलनेसे आराम होती है, किन्तु एकांगवात सींगी लगानेसे आराम होती है। कहा है—सर्व्वाङ्गजं शिरामोक्षैः शृङ्गैरेकाङ्गजं जयेत्।

(५) चार तोले लहसनको महीन पीसकर, उसमें सैंधानोन, ज़ीरा, त्रिकुटा, संचरनोन और हींग—प्रत्येक चार-चार माशे पीसकर मिला दो। इसमेंसे एक माशे चूर्ण, सवेरे ही "अरण्डीकी जड़के काढ़ेके साथ", एक महीना तक, पीनेसे सर्व्वाङ्गवात, अर्दित वात, कमर और पीठकी वात नाश हो जाती है। इसका नाम "लशुनादि चूर्ण" है। परीक्षित है।

त्वचाशून्य-चिकित्सा।

(सुन्नबहरीका इलाज)

चमड़ेका सूनापन नाश करनेवाले नुसखे।

(१) बारम्बार खून निकलवाओ, फ़स्द खुलवाओ एवं आगपर तेल और सैंधानोन डाल-डालकर सूनी चमड़ीमें धूनी दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) नाखूना और कड़वा सुरंजान—दोनोंको समान-समान लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर, आगपर गरम करो और सूने स्थानपर सुहाता-सुहाता लेप कर दो। परीक्षित है।

(३) जवासेका स्वरस २० तोले और सरसोंका तेल १० तोले—दोनोंको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलकी मालिश करनेसे चमड़ेका सूनापन जाता रहता है। परीक्षित है।

(४) हरी भटकटैया—कटेरीका रस १ तोले, अदरखका रस १ तोले और शहद १ तोले—इनको मिलाकर गरम करो। इसमेंसे चार-चार माशे दवा, दिनके समय, हर तीन-तीन घण्टेमें, चटानेसे त्वकशून्यता—सुन्नबहरी और फालिज-रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—गन्धकका चोआ ४ माशे और तारपीनका तेल अढ़ाई तोले—दोनोंको एकमें मिला लो और थोड़ा-थोड़ा रोगकी जगह लगाओ। इससे भी सुन्नबहरी आराम हो जाती है।

कोष्ठगत वायुकी चिकित्सा।

(कोठेकी दूषित वायुका इलाज)

नोट—आमाशय, अग्न्याशय, पक्वाशय, मूत्राशय, रुधिराशय, पीठ और फेंफड़ा—इन सबको मिलाकर "कोठा" कहते हैं। यद्यपि कोष्ठ या कोठा शब्द सब आशयोंके लिए इस्तैमाल किया जाता है; तथापि विशेष जानकारीके लिए, आमाशयादिमें रहनेवाली वायुके लक्षण और चिकित्सा अलग-अलग लिखी जाती है।

जब दुष्ट वायु कोठेमें ठहर जाती है, तब पेशाब और पाखाना रुक जाता है तथा वायु-गोला, हृदय-रोग, बद, बवासीर और पसलियोंमें दर्द—ये रोग होते हैं।

(१) अगर कोठेमें वायु हो, तो पाचन करनेवाले रस दो। दूध पिलाओ या और-और उपायोंसे मलको पकाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) मूँगफलीका तेल ६ माशे और शहद १ तोले—दोनोंको मिलाकर, दिनमें दो बार, पीनेसे कोष्ठगत वायु यानी पेटकी ख़राब हवा दूर होकर दस्त साफ़ होता है।

आमाशयगत वायुकी चिकित्सा।

(मेदेकी दूषित वायुका इलाज)

नोट—"चरक"के मतानुसार नाभि और स्तनोंके बीचका जो भाग है, उसे "आमाशय" कहते हैं।

जब आमाशयमें वायु रहती है; तब हृदय, पसली, पेट और नाभिमें दर्द होता है; प्यास लगती है, डकारें आती हैं; हैज़ा, खाँसी, गला सूखना और श्वास-रोग होते हैं।

(१) पहले लङ्घन कराओ; दीपन-पाचन औषधि दो; अथवा क़य कराओ और तेज़ जुल्लाब दो। जौ, पुराने चावल और पुराने मूँगका पथ्य दो।

नोट—दो तोले सैंधानोन आध सेर पानीमें औटाकर पिला दो और क़य कराओ। एक या दो तोले सनाय पाव भर दूधमें औटाकर पिला दो। इससे दस्त हो जायँगे। इसके बाद ६ माशे हरड़ और ३ माशे सैंधानोन, रोज़, गरम पानीके साथ खिलाओ। इससे आराम हो जायगा।

(२) रोहिष नामक सुगन्धित घास, हरड़, कचूर और पोहकर-मूल—इनको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले पानीमें काढ़ा बनाओ; चार तोले पानी रहनेपर उतारकर छान लो और रोगीको पिला दो। इस काढ़ेसे आमाशयगत वात शान्त हो जाती है।

(३) आकके फूल ३ माशे और साँभरनोन १ माशे—दोनोंको मिलाकर गरम पानीके साथ, खानेसे आमाशयगत वायु ५।७ दिनमें आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) बेलगिरी, गिलोय, देवदारु और सोंठ—इनको कुल २ तोले लेकर और ३२ तोले पानीमें काढ़ा बना-छानकर पीनेसे, आमाशयगत वात नाश हो जाती है।

(५) बच, अतीस, छोटी पीपर और विरिया-संचरनोन—इन सबको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले पानीमें काढ़ा बना-छानकर पीनेसे, आमाशयगत वायु शान्त हो जाती है।

(६) चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, अतीस और हरड़—इनको तीन-तीन माशे लेकर पीस-कूटकर कपड़-छन कर लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण, नित्य, गरम पानीके साथ खानेसे, ६ दिनमें आमाशय-गत वात शान्त हो जाती है। इस दवासे छै दिनमें आराम होता है, इसीसे इस योगको "षड्धरण योग" कहते हैं।

(७) पहले दिन नमकके औटाये हुए पानीसे क़य कराओ। दूसरे दिन चीतेका ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। तीसरे दिन इन्द्रजौका ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। चौथे दिन पाढ़का ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। पाँचवें दिन कुटकीका ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। छठे दिन अतीसका ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। सातवें दिन हरड़का ३ माशे चूर्ण गरम जलसे खिलाओ। इस तरह करनेसे भी आमाशयगत वायु नष्ट हो जाती है।

पक्वाशयगत वायुकी चिकित्सा।

(भोजन पचनेकी शैलीकी वायुका इलाज)

जब दुष्ट वायु पक्वाशयमें रुक जाती है, तब पेटकी आँतें गुड़गुड़ाहट करती हैं; शूल चलते हैं, वायु कुपित होती है, मल और मूत्र थोड़े-थोड़े उतरते हैं, पेटपर अफारा आ जाता है और 'त्रिकस्थान' (जहाँ पीठमें तीन हड्डियाँ मिलती हैं) में दर्द होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) पक्वाशयगत वायु हो, तो तैलादि चिकनी चीज़ मिला हुआ जुलाब दो और जठराग्नि बढ़ानेवाली दवाएँ दो। इस रोगमें "उदावर्त्त"की-सी चिकित्सा करनी चाहिये।

नोट—गायके पाव भर दूधमें चार तोले कास्टर आयल—रेंडीका तेल मिलाकर पिलाओ। इस जुलाबके दो दिन तक देनेसे पक्वाशयकी वात निकल जाती है। इसके बाद बड़ी हरड़के छिलकोंका पिसा-छना चूर्ण ६ माशेसे १ तोले तक, शहदमें मिलाकर, लगातार, आराम न होने तक चटाओ।

उदरवात-चिकित्सा।

(पेटकी दूषित वायुका इलाज)

जब दुष्ट वायु उदर या पेटमें घुस जाती है, तब पेटमें यकायक तेज़ दर्द उठता है।

(१) पेटमें वायु होनेसे क्षार और चूर्ण आदि दीपन औषधियाँ देनी चाहिये।

(२) साँभरनोन दो तोले महीन पीसकर फाँक लो और ऊपरसे जल न पीओ। इससे अवश्य पेटका दर्द मिट जायगा।

(३) सोंठ, छोटी हरड़ और काला नमक तीनों छै-छै माशे लेकर, पानीके साथ सिलपर काजलकी तरह महीन कर लो। फिर उसे दो-तीन तोले पानीमें घोलकर, आगपर ज़रा गरम कर लो और सुहाता-सुहाता पी लो। इस दवासे १ घण्टेके भीतर पेटका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) अगर कूखमें वायु हो, तो सोंठ, इन्द्रजौ और चीता—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण, कुछ गरम पानीके साथ, फाँकनेसे कूखका दर्द आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुदागत वायुकी चिकित्सा।

(गुदामें रुकी हुई हवाका इलाज)

जब गुदामें वायु रुक जाती है; तब मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं, दर्द होता है, पेटपर अफारा आ जाता है, पथरी और शर्करा रोग हो जाते हैं। पिंडली, साथल, कमर, पसली, कन्धे और पीठमें पीड़ा होती है।

(१) इस रोगमें भी "उदावर्त्त रोगमें लिखी चिकित्सा" करनी चाहिये।

(२) एक तोले रेंडीके तेलमें ६ माशे साबुनको पीस या घिस लो। फिर उसे उँगलीसे गुदामें भीतर तक पहुँचा दो। इस कामके करते ही अधोवायु खुलेगी और चन्द मिनटोंमें एक दस्त हो जायगा। रोगीकी सारी पीड़ाएँ दूर हो जायँगी।

(३) एक तोले निशोथ महीन पीसकर एक तोले "शहद" में मिला लो और खा लो। इससे भी फौरन ही उपकार होगा।

(४) वस्ति—पेड़ू, कूख और गुदाकी वायु "अरण्डी" का तेल पीनेसे आराम हो जाती है। परीक्षित है।

हृदयगत वायुकी चिकित्सा।

जब हृदयमें दर्द हो और श्वास उठे तब समझना चाहिये कि, हृदयमें वायु रुका हुआ है।

(१) सवेरे ही कालीमिर्च ३ माशे और गिलोय ३ माशे—इन दोनोंको पीसकर गरम जलके साथ पीनेसे हृदयकी पीड़ा आदि उपद्रव शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) असगन्ध ६ माशे और बहेड़ेके बक्कल ६ माशे लेकर महीन पीस लो। फिर एक तोले गुड़में मिलाकर खा लो और ऊपरसे एक कटोरी गरम पानी पीओ। इससे हृदयकी वायु शान्त हो जायगी।

(३) देवदारु ६ माशे और सोंठ ६ माशे,—इन दोनोंको एकत्र पीस-छानकर, गरम जलके साथ, फाँकनेसे हृदयगत वायुकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

कानादि इन्द्रियोंमें घुसी हुई वायुकी चिकित्सा।

कान वग़ैरः इन्द्रियोंमें जब वायु घुस जाती है, तब उनकी शक्तिका नाश कर देती है। अगर कानमें वायु घुस जाती है, तो कानमें अनेक तरहकी आवाज़ें होती हैं, कानोंमें दर्द होता है और वह बहने लगते हैं। इसी तरह और इन्द्रियोंके सम्बन्धमें समझ लो।

(१) वातनाशक चिकित्सा करो। तेल वग़ैरः चिकनी चीज़ोंकी मालिश करो। तेल आदि चिकने पदार्थोंकी कोठी या हौज़में रोगीको ग़ोते लगवाओ। शरीरपर स्नेह यानी तैल आदि चिकने पदार्थोंका लेप करो या लगाओ।

(२) एक तोले सरसोंके तेलमें ६ माशे लहसन डालकर जला लो। फिर शीतल होनेपर, उसी तेलको कानमें छोड़ो।

(३) दो रत्ती अफीम, ६ माशे सरसोंके तेलमें घोलकर कानमें डालो। इससे कानका दर्द, कान बहना या तरह-तरहकी आवाज़ें सुनाई देना आराम हो जाता है।

(४) वृहत्पञ्चमूल आठ अंगुल लम्बी लेकर ऊपरसे रूई लपेट दो और उसे तिलके तेलमें तर कर लो। फिर उसे दियासलाईसे जलाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नीचेकी तरफ कर दो। ऊपरसे हाथमें पकड़े रहो। नीचे एक प्याला रख दो। उस बर्त्तीसे तेल टपकेगा। उस तेलको गुनगुना करके कानमें डालनेसे कानका दर्द तत्काल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

सप्तधातुगत वात-चिकित्सा।

अगर रसमें वायु घुस जाता है, तो चमड़ा काला और फटा-सा तथा रूखा, पतला और जड़ हो जाता है। उसमें सुई चुभनेका-सा दर्द होता है।

अगर वायु खूनमें प्रवेश कर जाता है, तो बड़ा दर्द होता है, सन्ताप होता है, शरीर दुबला हो जाता है, उसका रंग बिगड़ जाता है, भोजनपर अरुचि हो जाती है और वह पचता भी नहीं।

अगर वायु मांसमें घुस जाता है, तो शरीर भारी हो जाता है, लकड़ी या घूँसा मारनेके जैसा दर्द होता है। शरीर स्तब्ध और अत्यन्त निश्चल हो जाता है।

अगर वायु मेदमें घुस जाता है, तो सब लक्षण मांसगत वायुके समान होते हैं। इतना ही ज़ियादा होता है कि, शरीरमें कम दर्द करनेवाले फोड़े और गाँठें-सी हो जाती हैं।

अगर वायु हड्डियोंमें घुस जाता है, तो जोड़ोंमें दर्द होता है, मांस और बल कम हो जाते हैं, नींद नहीं आती और पीड़ा ज़ोरसे होती है।

अगर वायु मज्जामें घुस जाता है, तो हड्डियोंमें घुसी हुई वायुके जैसे सब लक्षण होते हैं। इतनी ही विशेषता होती है कि, मज्जागत वायुकी पीड़ा कभी भी शान्त नहीं होती।

अगर वायु वीर्यमें घुस जाता है, तो वीर्य ख़राब हो जाता है, वीर्य जल्दी ही स्खलित हो जाता है और ऐसे वीर्यसे रहा हुआ गर्भ कच्चा ही गिर जाता है।

(१) रसगत वायु हो, तो तेल आदिकी मालिश करो और स्वेदन क्रिया करो; यानी बफारे आदिसे पसीने निकालो।

(२) चमड़ेमें वायु हो, तो सरसोंके तेलमें अफीम मिलाकर मालिश करो और रूईसे सेक करो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) खूनमें वायु हो, तो शीतल लेप करो, जुलाब दो और फ़स्द वग़ैरःसे खून निकलवाओ। ख़सको पानीमें पीसकर लेप करनेसे भी लाभ होता है।

(४) मांसमें वायु हो, तो जुलाब दो और निरूह वस्ति करो; यानी गुदामें काथकी पिचकारी दो।

नोट—१ तोले सनाय पाव भर दूधमें औटाकर पीनेसे दस्त हो जाते हैं। यह जुलाब अच्छा है।

(५) मेदमें वायु हो, तो मांसगत वायुके समान उपाय करो; यानी जुलाब दो और निरूह वस्ति करो।

(६) अगर वायु हड्डी और मज्जामें हो, तो बाहर और भीतर स्नेहकी योजना करो; यानी शरीरके ऊपर तेल वग़ैरः चिकनी चीज़ें लगाओ और उन्हें ही खाओ भी। नीचेका नोट देखियेः—

नोट—लहसन ३ तोले लेकर आध पाव तेलमें जला लो। फिर उस तेलको शरीरपर मलो और उसे ही १ तोलेके प्रमाणसे पी भी लो। अथवा "केतक्यादि तेल"को लगाओ और पीओ। यह तेल केवड़ा, गंगेरन और कंघीके बहुत-से स्वरस और बहुत-से तुषोदकके साथ पकाया जाता है। खुलासा—केतकी या केवड़ेकी जड़ ५ तोले, गंगेरन यानी गुलसकरी ५ तोले और कंघीकी जड़ ५ तोले लेकर, ३ सेर पानीमें औटाओ। जब तीन पाव पानी रह जाय, इसमें पाव भर चावलोंका धोवन और आधा पाव काली तिलीका तेल भी डाल दो और फिर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसमेंसे एक-एक तोले तेल सवेरे-शाम पीओ और इसी तेलको बदनपर खूब लगवाओ।

(७) अगर वीर्यमें वायु हो, तो स्त्री आदिसे हर्ष उपजाओ। वीर्य बढ़ानेवाले भोजन और खाने-पीनेके पदार्थ खिलाओ। दवाके तौरपर घीमें मिलाकर लहसन खिलाओ। १ छटाँक काले तिल नित्य खिलाओ और नित्य काले तिलोंके तेलकी ही मालिश कराओ।

(८) घी १ भाग और दूध ४ भाग लेकर पकाओ, जब घी-मात्र रह जाय, उतार लो। इस घीमें असगन्धका चूर्ण मिलाकर पीनेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

असाध्य वात और शुक्र या वीर्य-धातु की क्षीणता नाश हो जाती है। परीक्षित है।

स्नायुगत वात-चिकित्सा।

नोट—स्नायुगत वातसे शूल, आक्षेपक और स्तम्भ होता है। खुलासा यह है कि, स्नायुओंमें दूषित वायुके रुक जानेसे शूल-से चलते हैं, दर्द होता है, शरीरमें झटके-से लगते हैं, बाँइटे आते हैं और जिस अंगके स्नायुओंमें वायु रुक जाता है, वह अंग अपने कर्त्तव्य-कर्मसे हीन हो जाता है; यानी अपना काम करने लायक़ नहीं रहता।

(१) कुपित वायु जब स्नायुओंमें प्रवेश कर जाय, तब पसीने निकालने चाहियें, दागना चाहिये, सख्त बन्धन बाँधना चाहिये और तेल आदि चिकनी चीज़ें चुपड़नी और मलनी चाहिये।

शिरागत वायु-चिकित्सा।

नोट—शिरागत वायु, शिराओंमें शूलकी पीड़ा, शिराओंका संकोच, शिराओंकी स्थूलता, अन्तरायामा, बाह्यायाम, खल्ली और कुब्ज या कुबड़ापन करती है।

(१) शिरागत वायु हो, तो स्नेहका अभ्यंग करो। स्नेह सहित बफारा लो। स्नेहकी मालिश करो। स्नेहका लेप करो और खून निकलवाओ।

नोट—तेल, घी आदि चिकनी चीज़ोंको "स्नेह" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्धिगत वात-चिकित्सा ।

(जोड़ोंके दर्दका इलाज)

नोट—सन्धियों या जोड़ोंमें रहनेवाली वायु सन्धियोंको तोड़ देती और शूल तथा सूजन पैदा करती है।

सन्धि-वात और क्रोष्टुकशीर्ष वातमें जो भेद है, उसे न भूलना चाहिये। सन्धिवात होनेसे घुटने, टखने, कोहनी और कन्धे प्रभृति जोड़ोंमें दर्द होता है और सूजन भी आती है; क्रोष्टुकशीर्ष रोग होनेसे केवल जानु या घुटनेमें ही सूजन आती और पीड़ा होती है और किसी जगह दर्द वग़ैरः नहीं होता। एक बात और है, क्रोष्टुकशीर्षकी सूजन स्यारके माथेके जैसी मोटी और चिकनी होती है; वैसी सूजन सन्धिवातमें नहीं होती।

(१) सन्धियोंमें वायुके प्रवेश करनेपर दाग देना चाहिये; पसीने निकालने चाहिए, तथा इन्द्रायणकी जड़ और पीपरोंको पीसकर और गुड़में मिलाकर १ तोले रोज़ खाना चाहिये।

नोट—इन्द्रायणकी जड़ ६ माशे, पीपर ६ माशे और गुड़ १ तोले मिलाकर खाना चाहिये। इससे सन्धिवात नष्ट हो जाती है। इस दवासे नित्य ३।४ दस्त होते हैं और दस्तोंकी राहसे ही वात नाश हो जाती है।

(२) सोंठ ६ माशे, शुद्ध गूगल ६ माशे और घी १ तोले—इन तीनोंको मिलाकर और खूब कूट-पीसकर खानेसे सन्धियों या जोड़ोंकी वायु नाश हो जाती है।

(३) पहले दिन अरण्डीके बीजकी गरी नग १ सवेरे ही खानी चाहिये; दूसरे दिन २ गरी, तीसरे दिन तीन, चौथे दिन चार, पाँचवें दिन पाँच, छठे दिन छै और सातवें दिन सात गरी खानी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर आठवें दिनसे ७ गरी (छिला हुआ बीज) रोज़, २१ दिन तक, खानेसे सन्धिवात या जोड़ोंका दर्द नाश हो जाता है।

(४) कालीमिर्च, शुद्ध अफीम और शुद्ध कुचला—बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर, पानोंके रसमें दिन भर खरल करो। घुट जानेपर आध-आध रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली पानमें रखकर खाने या ताज़ा पानीके साथ खानेसे अकड़वात, डण्डेकी तरह शरीर रह जाना, पेट फूलना, आमके दस्त होना, पेटमें मरोड़ी होना, जुकाम, सर्दीके विकार, वात-विकार और पुराने वातरोग नाश हो जाते हैं। एक बार एक गठियासे जकड़े हुए रोगीको हमने ये गोलियाँ दीं। आनन-फानन आराम हो गया। रोगीको दो आदमी उठा-उठाकर कहीं ले जाते थे। बुरा हाल था। इन गोलियोंका नाम "समीर-गज-केसरी बटी" है। पुराने वातरोगोंपर रामवाण हैं। नये वातरोगोंमें भी अनेक बार अपूर्व्व फल देखा है। परीक्षित हैं।

(५) अर्दित चिकित्सामें लिखा हुआ "कपिकच्छ्वादि कषाय" सन्धिगत वातको नष्ट कर देता है।

(६) अरण्डीके बीज १ माशे और कालीमिर्च २ माशे—सिलपर पानीके साथ पीसकर और पाव भर पानीमें छानकर पीनेसे गठिया और सूजन नाश हो जाती हैं।

(७) अरण्डीके बीजोंकी गरी १० तोले, बादामकी गरी ५ तोले, लौंग ६ माशे, केशर ६ माशे, छोटी पीपर ६ माशे और छोटी इलायची ६ माशे—इन सबको महीन पीसकर एक सेर दूधमें औटाओ। जब दूध जलकर खोया हो जाय, तीन पाव मिश्रीकी चाशनी बनाओ। उसी चाशनीमें इस खोयेको डाल दो और उतार लो। फिर एक साफ चिकने मिट्टीके बासनमें उस दवाको भरकर मुँह बन्द कर दो और जौओंके ढेरमें, चालीस दिन तक, दाब रखो। इसके बाद निकाल लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसकी मात्रा आरम्भमें ३ माशेकी है। जाड़ेके मौसममें, इसके खानेसे गठिया रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। कई बार परीक्षा की है।

नोट—इसकी मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिये; बशर्ते कि रोगी सहता चला जाय। अगर एक तोलेकी मात्रा खा ली जाय, तब तो कहना ही क्या? इसे खाकर ४० दिन तक परहेज़ करना चाहिये। फिर कोई ताक़तवर पाक या बादामका हलवा आदि खाना चाहिये। फिर कहते हैं, यह गठियापर रामबाण दवा है।

(८) मूँगफलीके तेलमें कपूर डालकर और गरम करके शरीरपर मलनेसे सब तरहकी वायु और विशेषकर सन्धिगत वायुकी पीड़ा दूर होती।

(९) कुचला १ तोले, कालीमिर्च ६ माशे, केशर ३ माशे और कस्तूरी १ माशे—इनको "नागर पानों" के रसमें घोटकर आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम या ज़रूरतके समय, एक-एक गोली खाने और ऊपरसे जल या दूध पीनेसे वात-विकार, जोड़ोंका दर्द, पेटका दर्द, प्रसूति-विकार और आँतोंके विकार नाश हो जाते हैं।

(१०) शुद्ध कुचलेके तीन-चार चावल नित्य खानेसे और रेंडीकी जड़ और सोंठको पानीमें पीसकर दर्द-स्थानपर लेप करनेसे सन्धिवात, गठिया और जोड़ोंका दर्द जाता रहता है।

(११) "योगराज गूगल" अथवा "अरण्ड पाक" खानेसे सन्धि-वात—जोड़ोंका दर्द या गठिया-रोग नाश हो जाता है।

(१२) एक रत्ती कुचलेका सत—स्ट्रिकेनिया ४० दिनमें खाने (यानी एक रत्तीके ४० भाग करके, एक भाग नित्य खावे। इस तरह १ मात्रा १ चावलके पाँचवें भागके बराबर होगी) और कार्बो-नेट आव् पुटासमें कपड़ा भिगोकर, जोड़ोंपर रखनेसे गठिया-रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जोड़ोंकी पीड़ापर यूनानी नुसखे।

(१) शुद्ध गूगल १ तोले और पुराना गुड़ २ तोले—खूब कूट-पीसकर मिला लो और जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक गोली नित्य, थोड़े घीके साथ, निगल जानेसे जोड़ोंका दर्द, घुटने और पीठकी पीड़ा आराम हो जाती है। पर इस दवाको जुलाबके बाद सेवन करना चाहिये।

(२) काली मूसली २० माशे, सफेद मूसली २० माशे, छोटी पीपर २० माशे, अजवायन २० माशे, पीपरामूल २० माशे, शतावर ८ माशे, बिधारा ८ माशे, सोंठ ८ माशे और असगन्ध ८ माशे—इनको कूट-पीसकर छान लो और पुराने गुड़में मिलाकर जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। अपने बलाबल अनुसार गोली खानेसे जोड़ोंका दर्द तथा कमर और पीठकी वेदना नष्ट हो जाती है। यह दवा भी जुलाब लेनेके बाद खायी जाती है।

(३) शुद्ध शिंगरफ, हल्दी, अजमोद, अकरकरा, नीमके पत्ते, अजवायन, सँभालूके पत्ते, इन्द्रायणकी जड़, सरफोंका, असगन्ध, पाढ़ी, कालीमिर्च, बकायनकी जड़, मदारकी जड़ और शुद्ध भिलावे—इन सबको समान-समान लेकर कूट-छान लो और सबके बराबर पुराना गुड़ मिलाकर, दो-दो माशेकी गोलियाँ बना लो। बलाबल अनुसार एक या दो गोली नित्य खानेसे, जोड़ोंकी पीड़ा, गठिया और आतशक या उपदंश-रोग नाश हो जाते हैं। इनको "शिंगरफकी गोलियाँ" कहते हैं।

नोट—शिङ्गरफ या पारेकी गोली खानेवालेको खटाई, बादी पदार्थ, मांस और नमकसे परहेज़ रखना चाहिये। चावल और दूध, अथवा गेहूँकी अलौनी रोटी बहुत-सा "घी" डालकर खानी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) हालों, अजवायन, कलौंजी और मेथी-दाने—ये चारों दाने बराबर-बराबर लेकर रख लो। सवेरे ही एक चुटकी-भर लेकर फाँकने और दो घूँट ताज़ा पानी पीनेसे जोड़ोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(५) मालकाँगनी लाकर साफ कर लो। पहले दिन १ दाना निगलो, दूसरे दिन २ दाने और तीसरे दिन ३ दाने—इस तरह हर दिन एक-एक दाना बढ़ाते हुए १०० दानों तक पहुँचो। जब १०० दानोंपर पहुँच जाओ, एक-एक दाना रोज़ घटाया करो। इस घटा-बढ़ीके समयमें, जोड़ोंका दर्द, वात-पीड़ा और कफके विकार नाश हो जायँगे। शरीर सब तरहसे निरोग हो जायगा और भूख बढ़ेगी।

नोट—अगर दाने बढ़ानेके दिनोंमें गरमी मालूम हो, दवा गरमी करे; तो जिस दिन गरमीका अनुभव हो, उसी दिनसे दाने घटाने शुरू कर दो—बढ़ाओ मत; चाहे १० दानोंपर पहुँचो और चाहे २० या ५० पर।

(६) पोस्तके डोड़े रोज़ भिगो दो और मल-छानकर इतना रस पीओ कि, नशा न हो। इस तरह कुछ दिनोंमें जोड़ोंका दर्द आराम हो जायगा।

(७) महुएके बीजोंका तेल कोल्हूमें निकलवा लो। यह तेल घीकी तरह पीला होता है। इस तेलके जोड़ोंपर मलनेसे जोड़ोंका दर्द और वात-पीड़ा आदि शीतके रोग नाश हो जाते हैं।

(८) सँभालूके पत्ते कूटकर रस निचोड़ लो। जितना रस हो, उतना ही मीठा तेल मिला लो। फिर आगपर मन्दाग्निसे औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलको गुनगुना लेकर दर्दकी जगह मलो और सँभालूके पत्ते सेक-सेककर उस जगह बाँध दो। इस उपायसे जोड़ोंकी पीड़ा नाश हो जायगी।

(९) रेंडीकी जड़ दो सेर लेकर आठ सेर पानीमें मिला दो और औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छान लो और आध सेर रेंडीके तेलमें मिलाकर, मन्दाग्निसे औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तेलके मलनेसे जोड़ोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) काले धतूरेके पत्ते, फल और जड़को कूटकर स्वरस निचोड़ लो। यह स्वरस डेढ़ सेर हो। इसमें आध पाव तिलीका तेल, आध पाव अलसीका तेल और आधपाव सरसोंका तेल मिला दो। फिर इस तेल-मिले स्वरसको मन्दाग्निसे पकाओ; जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलको जोड़ोंपर मलनेसे और ऊपरसे अरण्ड या मदारके पत्ते बाँधनेसे जोड़ोंका दर्द मिट जायगा।

(११) मदारकी जड़ आध पावको कुचलकर, पाव भर कड़वे तेलमें मिला दो और आगपर पकाओ। जब जड़ जलकर नीचे बैठ जाय, तेलको छान लो। इस तेलके जोड़ों या घुटनोंपर मलने और मदारके पत्ते सेककर बाँधनेसे, जोड़ोंका दर्द मिट जाता और वात शान्त हो जाती है।

(१२) आध पाव छिला हुआ लहसन और चार दाने भिलावे लेकर, पाव भर मीठे तेलमें डाल दो और आगपर रखकर पकाओ। जब दवाओंकी राख-सी हो जाय, तेलको छान लो। इस तेलकी मालिशसे जोड़ोंकी पीड़ा और फालिज या पक्षाघात-रोग नाश हो जाते हैं। यह तेल वात नाश करनेमें परमोत्तम है। हवासे बचना परमावश्यक है।

(१३) रातके समय, आध सेर तम्बाखू दो सेर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मलकर पानी छान लो। इस तम्बाखूके पानीमें पाव भर तिलीका तेल मिलाकर आगपर औटाओ। जब पानी जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस "तम्बाखूके तैल" के मलनेसे जोड़ोंका दर्द आराम हो जाता है।

(१४) नाजबोंकी पत्तियोंका स्वरस आध सेर और मीठा तेल पाव भर मिलाकर औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके मलनेसे भी जोड़ोंका दर्द शान्त हो जाता है।

(१५) एक बड़ा और मोटा चमगीदड़ लेकर अन्दाजके मीठे तेलमें डुबोकर औटनेको रख दो। जब चमगीदड़ जल जाय, तेलको उतारकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छान लो। इस तेलके लगानेसे जोड़ोंका दर्द, बदनकी ऐंठनी, फालिज और काँपनी—ये सब नष्ट हो जाते हैं। इस तेलको लिङ्गके छेदमें टपकानेसे बन्द हुआ पेशाब जारी हो जाता है।

(१६) महँदीके पत्ते, सँभालूके पत्ते, नाजबोंके पत्ते, धतूरेके पत्ते, मदारके पत्ते, अरण्डके पत्ते और मकोयके पत्तोंका आध-आध पाव रस तैयार कर लो और सबको मिला लो। इस मिले हुए रसमें आध सेर मीठा तेल मिलाकर पकाओ। जब तेल पकने लगे, उसमें सोयेके बीज १ तोले और अजवायन ६ माशे मिला दो। जब दवा और रस जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। फिर; पहले अफीम २ माशे मिला दो और फिर कड़वी सोरंजान १ तोले मिला दो और तेलको काममें लाओ। इस तैलसे जोड़ोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है। यह हमारा नहीं—"इलाजुलगुर्बा" के लेखकका परीक्षित नुसखा है।

(१७) अदरखका स्वरस १ सेर और मीठा तेल आध पाव मिलाकर औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलको गुनगुना-गुनगुना लगानेसे जोड़ोंका दर्द नाश हो जाता है और वायु पच जाती है।

(१८) कुछ केवड़ेके फूल मीठे तेलमें डुबोकर, ४० दिन तक, धूपमें रखो। इसके बाद काममें लाओ। इस तेलके मलनेसे जोड़ोंकी और पीठकी पीड़ा शान्त हो जाती और ढीले जोड़ कड़े हो जाते हैं।

(१९) तितलीके हरे पत्ते १ तोले लेकर ४ तोले मीठे तेलमें डालकर औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर रख लो। फिर आध पाव सूखी तितली एक सेर पानीमें पकाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, छान लो। इस पानीमें वही ऊपरका पका हुआ मीठा तेल २ तोले ३ माशे ४ रत्ती मिलाकर औटा लो। जब पानी जलकर तेल-मात्र रह जाय, छानकर रख लो। यही मशहूर "तितलीका तैल" है। यह तैल बदनके झोले और पट्ठोंके लिये अत्युत्तम है। इसके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मलनेसे पीठ और जोड़ोंका दर्द निश्चय ही आराम हो जाता है। लकवे और फालिज—अर्दित और पक्षाघातमें भी यह तैल गुणकारी है।

(२०) करंजुआ पानीमें औटाकर रोगीको बफारा दो। इस बफारेसे कन्धोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२१) सिरसके पत्ते, सँभालूके पत्ते और सहँजनेके पत्ते—आध-आध पाव लेकर, दो सेर पानीमें औटाओ और बफारा दो। फिर पत्तोंको पानीमेंसे निकालकर रोगीके जोड़ोंपर बाँध दो और उसे हवासे बिल्कुल बचाये रहो। जिसको सर्दी पकड़ लेती है, उसे यह बफारा अच्छा है।

(२२) सँभालूकी पत्ती, सोयेके बीज और इस्पन्द—इनको पानीमें औटाकर बफारा देनेसे जोड़ोंकी गाँठें खुल जातीं और उनका दर्द मिट जाता है। पर हवासे बचना जरूरी है।

(२३) धतूरेके पत्ते गरम करके जोड़ोंपर बाँधनेसे जोड़ोंका दर्द मिट जाता है।

(२४) मैदालकड़ी चन्दनकी तरह पीसकर और गुनगुनी करके बाँधनेसे पीठ और घुटनोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२५) नीमकी कोंपल और नीमकी भीतरी छाल पानीमें पीसकर थोड़े-से पानीमें घोल लो जिससे पतली न हो जाय। फिर उसे निवायी करके घुटनेपर लेप कर दो। इससे घुटनेकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२६) नरमेकी पत्तियाँ मीठे तेलमें पीसकर लगानेसे जोड़ोंका दर्द तथा घुटने और पैरोंकी उँगलियोंकी पीड़ा मिट जाती है।

(२७) बिनौले कूटकर थोड़े-से पानीमें औटाओ। जब बिनौले गल जायँ, उन्हें पीसकर टिकिया-सी बना लो और निवायी करके दिनमें दो बार जोड़ या पीठपर बाँधो। इससे कमर, घुटने और जोड़ोंका दर्द जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२८) गायका ताज़ा गोबर सिरकेमें मिलाकर पकाओ और दर्द-स्थान तथा सूजनपर बाँध दो। इससे जोड़ोंका दर्द शान्त हो जाता है।

(२९) कनेरकी पत्तियाँ पानीमें औटाकर कूट लो और मीठे तेलमें मिलाकर लगाओ। इससे जोड़ों या घुटनोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३०) बकरीकी मैंगनी आध पाव और जौका आटा १ छटाँक—इनको सिरके और अरण्डीके तेलमें मिलाकर जोड़ोंपर लेप कर दो। इससे घुटनों या जोड़ोंका दर्द शान्त हो जायगा।

(३१) सहँजनेके बीज पानीके साथ पीसकर गरम कर लो। इसका निवाया-निवाया लेप करनेसे घुटनोंकी पुरानी पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

(३२) काँटेदार थूहरको चीरकर, जोड़ों या घुटनोंपर तीन-चार घण्टे बाँधे रहो और नित्य-की-नित्य ताज़ा बदल दिया करो। इससे भी घुटनोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३३) छिले हुए तिल १ तोले, बाबूना १ तोले और रेंडीकी गरी ६ माशे—इन तीनोंको पानीमें पीसकर लगानेसे जोड़ोंकी पीड़ा मिट जाती है।

(३४) सरकण्डे या नरकुलकी जड़ और सोंठ—इनको मीठे तेलमें पीसकर गुनगुनी कर लो और निवायी-निवायी दर्द-स्थानपर मलो। इससे भी जोड़ोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३५) साबुन और महँदीकी पत्ती पानीमें पीसकर लेप करनेसे घुटनोंकी पीड़ा और चूतड़से पैरकी उँगली तकका दर्द आराम हो जाता है।

नोट—कोई-कोई इनमें इन्द्रायणकी जड़ भी मिलाते हैं।

(३६) महँदीकी पत्ती और अरण्डीकी पत्ती पीसकर और गुन-गुनी करके बाँधनेसे घुटनेकी पीड़ा मिट जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३७) सोंठ, कायफल और असगन्ध समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके मलनेसे जोड़ोंकी पीड़ा, अगर सर्दीसे होती है, आराम हो जाती है।

(३८) सहँजनेकी पत्तियाँ पानीमें पीसकर और गरम करके निवायी-निवायी लेप करनेसे वात-पीड़ा मिट जाती है।

(३९) अजवायन कूट-छानकर और शहदमें मिलाकर लेप करनेसे वात-पीड़ा और सूजन नाश हो जाती है।

(४०) मसूरको सिरकेमें पीसकर, उसका गुनगुना-गुनगुना लेप करनेसे एड़ी और तलवेकी पीड़ा मिट जाती है।

नेपोलियन और सुहागिनी।

इसी ग्रन्थमें कई बार कह चुके हैं और फिर कहते हैं कि, आप हमारे यहाँके "नेपोलियन" और "सुहागिनी"को अवश्य देखें। देखनेयोग्य रत्न हैं और दोनों ही चित्रोंसे लबालब भरे हैं।

मूल्य अजिल्दका क्रमसे २॥) और ३।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्नायु मण्डलका वर्णन ।

पेशियोंसे शरीर अथवा शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्ग अपना-अपना काम करते हैं और पेशियाँ अपना काम स्नायुओंकी सहायतासे करती हैं। मतलब यह कि पेशियाँ शरीरको चलाती हैं और पेशियोंको यह शक्ति स्नायुओं (Nerves) से मिलती है। हमारा चलना, फिरना, उठना, बैठना, काम करना एवं भूख, प्यास, काम, क्रोध आदि वृत्ति और प्रवृत्ति आदि सब स्नायु-समूहके काम हैं। आँख, नाक, कान, जीभ और त्वचा—ये पाँचों इन्द्रियाँ भी अपने-अपने काम स्नायु-शक्तिसे करती हैं। रूप-दर्शन, शब्द-श्रवण, गन्ध-ग्रहण, रसास्वादन और स्पर्श-ज्ञान आदि सभी कार्य स्नायुओंसे होते हैं। आप देखते हैं कि, एक मतवाले हाथीके जैसा बलवान पुरुष अभी-अभी कूद-फाँद रहा है, लेकिन उसके सिरमें चोट लगते ही वह मिट्टीके ढेलेकी तरह ज़मीनपर गिर पड़ता है। उसकी ऐसी हालत क्यों होती है ? सिर्फ स्नायु-मण्डलमें चोट लगनेसे। अगर चोट हल्की होती है, तो कुछ देरमें उसे होश आ जाता है; पर यदि चोट भारी होती है, तो वह बेहोश होकर मर जाता है। इससे साफ मालूम होता है कि, स्नायु-मण्डल ही जीवकी चेष्टा और चैतन्यताका मूल आधार है।

स्नायु, सूत्रोंकी तरह सूक्ष्म और सफेद रङ्गके पदार्थ हैं। ये सारे शरीरमें जालकी तरह फैले हुए हैं। एक तिल भर जगह इनसे ख़ाली नहीं है। आप छोटी उँगलीके पोरवेमें सूई चुभोइये, फौरन दर्द होगा और मस्तिष्कमें इसकी खबर पहुँचेगी, क्योंकि उस उँगलीसे मस्तिष्क

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तक स्नायु-सूत्रोंका सम्बन्ध चला गया है। इसमें सन्देह नहीं कि, सचेतन प्राणियोंके चैतन्य सम्पादनके कारण-स्वरूप ये स्नायु ही हैं। सुख-दुःख, ज्ञान, कार्यमें प्रवृत्ति और निवृत्तिके हेतुभूत ये ही हैं।

ये स्नायु मस्तिष्क और पृष्ठवंशीय मज्जा या कशेरुक मज्जासे पैदा होकर समस्त शरीरमें फैले हुए हैं। मस्तिष्कसे पैदा हुए स्नायु शिरो-मण्डलमें फैले हुए हैं और पृष्ठवंशीय मज्जासे पैदा हुए स्नायु हाथ, पाँव और पेट प्रभृति अङ्गोंमें फैले हुए हैं। दर्शन, श्रवण आदि नाना प्रकारके भावोंके देहमें प्राप्त होनेसे, उन-उन स्थानोंके स्नायु कम्पित होकर, उसी समय तत्काल मस्तिष्कको विकम्पित करते हैं। मस्तिष्कके विकम्पन-भेदसे दर्शन और श्रवण आदि भिन्न-भिन्न प्रकारके ज्ञानका उदय होता है, अतएव मस्तिष्क ही ज्ञानका एकमात्र हेतु है।

आँखोंमें रूपविशिष्ट पदार्थका प्रतिबिम्ब या अक्स पड़नेपर, आँखके स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्कको कँपाते हैं, तब दर्शन होता है। यों समझिये कि, जब हम किसी पदार्थको देखते हैं, तब उसका असर एक नाड़ी द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचता है, तभी हमें रूपका ज्ञान होता है। उसी तरह गन्धविशिष्ट पदार्थके गन्धाणु जब हमारी नाकसे मिलते हैं, तब वहाँका स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्कको कम्पित करता है, यानी नाकके स्नायु द्वारा उस गन्धकी ख़बर मस्तिष्कको पहुँचती है; तब हमें गन्धका ज्ञान होता है। इसी तरह रसविशिष्ट द्रव्यके अणु जब रसना या जीभसे मिलते हैं; तब वहाँका स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्कको कँपाता है, तब हमें स्वादका हाल मालूम होता है। इसी तरह सर्दी और गरमी प्रभृति गुणयुक्त पदार्थोंके चमड़ेसे छू जानेपर स्नायु कम्पित होकर मस्तिष्कको विकम्पित करते हैं, तब स्पर्शज्ञान होता है; यानी मालूम होता है कि यह पदार्थ गरम है या ठण्डा। इसी तरह चीज़ोंके आपसमें टक्कर खानेसे वायुकी लहरें उठती हैं। उन लहरोंकी चोट

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कानके चमड़ेपर पड़नेसे, उस स्थानके स्नायु विकंपित होकर मस्तिष्कको कँपाते हैं, तब हमें शब्द-ज्ञान होता है; अतएव इन्द्रियजन्य ज्ञानके हेतु स्नायु ही हैं। इतना ही नहीं, कर्मेन्द्रियोंके सञ्चालनकर्त्ता भी स्नायु ही हैं; यानी चलने-फिरने आदि कामोंके प्रधान कारण भी स्नायु ही हैं। बहुत कहना व्यर्थ है, जीवोंका जीवन ही स्नायुओंसे है। जिस अङ्गके स्नायुका नाश हो जाता है वह मृतकल्प हो जाता है। इसी तरह पक्षाघात आदि असाध्य रोग भी कारण विशेषसे हो जाते हैं।

जिस स्नायु-मण्डल (Nervous system) पर प्राणीका जीवन-मरण निर्भर है, जिस स्नायु-मण्डलकी सहायतासे मनुष्य देखते, सुनते, चखते और सूँघते हैं, जिस स्नायु-मण्डलमें विकार हो जाने या किसी नाड़ीके कट जानेसे स्तम्भ (Paralysis), पक्षाघात (Hemiplegia), अर्द्धाङ्ग (Paraplegia), उरुस्तंभ (Lacomotor Ataxy), धनुष्टंकार (Tetanus), अपस्मार-मृगी (Epilepsy), योषापस्मार (Hysteria),उन्माद (Delireum), बुद्धिभ्रंश (Insanity), कम्पवात (Chorea), गृध्रसी (Sciatica), मज्जारज्जुदाह (Infantile Paralysis), तन्द्रा (Lethargy or Coma), अर्दित या लकवा (Facial Paralysis), स्नायुशूल (Neuralgia), मस्तिष्कावरण प्रदाह (Cereberal Meningitis) और शिरःपीड़ा या सिरदर्द (Headache) वग़ैरः भयानक और दुस्साध्य या असाध्य रोग हो जाते हैं, उस स्नायु-मण्डलके सम्बन्धमें चिकित्सकको अवश्य ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। इस एक विषयपर अँगरेज़ीमें हज़ार-हज़ार पेजके पोथे लिखे हुए हैं। उतने बिना इसका अच्छा ज्ञान हो नहीं सकता और बहुत थोड़ा-सा लिखकर यह अमूल्य विषय समझाना कम-से-कम हमारे लिये अतीव कठिन काम है। स्थानाभावसे इस ग्रन्थमें इस विषयको पूर्णरूपसे लिख नहीं सकते। अतः कुछ इधर-उधरकी जानने योग्य बातें लिख कर ही सन्तोष करेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डाक्टर गन साहब लिखते हैं—"The nervous system consists of the brain, the spinal cord and the nerves." अर्थात् स्नायुमण्डल, वातसंस्थान या नाड़ीमण्डलमें मस्तिष्क, सुषुम्ना और स्नायु शामिल हैं; अतः हम इन्हीं तीनोंके सम्बन्धमें संक्षेपसे लिखेंगे।

मस्तिष्क-वर्णन।

कोई लिखते हैं, करोटि गह्वरकी हड्डीकी कठिन दीवारके भीतर "मस्तिष्क" रहता है। कोई लिखते हैं, आठ हड्डियोंसे बना हुआ कपाल नामक कोठा है, उस कोठेके भीतर "मस्तिष्क" रहता है। यह किसी क़दर अण्डेकी शकलका होता है। इसका भीतरका हिस्सा ठीक अख़रोटके गूदेके जैसा दीखता है। इसका पीछेका भाग अगले भागकी अपेक्षा ज़ियादा चौड़ा और मोटा होता है। सामनेसे पीछे तक, इसकी लम्बाई साढ़े छै इञ्च, एक कानसे दूसरे कान तककी चौड़ाई साढ़े पाँच इञ्च और मुटाई ऊपरसे नीचे तक पाँच इञ्च होती है। इसका वज़न जवान आदमियोंमें—पन्द्रहसे लेकर उनञ्चास वर्षकी उम्र तक—प्रायः डेढ़ सेर होता है। औरतोंका मस्तिष्क मर्दोंकी अपेक्षा प्रायः अढ़ाई छटाँक कम होता है।

कोई समझनेके सुभीतेके लिये मस्तिष्कके चार प्रधान भाग मानते हैं:—

(१) वृहत् मस्तिष्क।

(२) लघु मस्तिष्क।

(३) सीता।

(४) मातृका मूलाधार।

कोई कहते हैं, वृहत् मस्तिष्क, क्षुद्र मस्तिष्क और चतुष्कोण मज्जा—इन तीन विभागोंसे ही समझनेमें सुभीता होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वृहत् मस्तिष्क।

मस्तिष्कके सब भागोंमें वृहत् मस्तिष्क ही सबसे बड़ा है। इसका वज़न ४६ से ५३ औन्स यानी तेईस छटाँक या २६ छटाँकके क़रीब माना जाता है। यह स्नायुमय पिण्ड-पदार्थ अण्डेके जैसा होता है। वृहत् मस्तिष्कका रङ्ग धूसर होता है। इसकी पीठपर घाइयाँ पड़ी रहती हैं, जिनकी वजहसे इसमें कहीं गहराई और कहीं उभार होता है। जिस तरह खेतमें हल चलानेसे नालियाँ-सी बन जाती हैं और नालियोंके बीचमें मिट्टीकी मेंड़ें होती हैं; उसी तरह वृहत् मस्तिष्कमें बहुत-सी गहराइयाँ या नालियाँ होती हैं और इन नालियोंके बीचमें मस्तिष्कके हिस्से उभरे हुए-से रहते हैं। मस्तिष्ककी घाइयोंको "सीता" कहते हैं और दो सीताओंके बीचके उभरे हुए भागोंको "चक्राङ्ग" कहते हैं। मस्तिष्कके भारका तो बुद्धिसे सम्बन्ध नहीं है, पर इन सीताओंकी गहराईका बुद्धिसे सम्बन्ध है। बुद्धिमानोंके मस्तिष्कोंमें सीताएँ मूर्खोंके मस्तिष्कोंकी अपेक्षा अधिक गहरी होती हैं।

वृहत् मस्तिष्कके दो टुकड़े होते हैं। इन दोनों टुकड़ोंके बीचमें एक दरार या फाँक होती है। इस दरारके इधर-उधरके भागोंको गोलार्द्ध (Hemispheres) कहते हैं। एकको दाहिना और दूसरेको बायाँ गोलार्द्ध कहते हैं। हर एक गोलार्द्ध भीतरसे खोखला होता है। मतलब यह कि, वृहत् मस्तिष्कमें दो कोठे होते हैं—एक दाहिना और दूसरा बायाँ। ये कोठे टेढ़े-तिरछे होते हैं। दोनों कोठोंमें ज़रा-सा तरल रहता है। कुछ रोगोंमें यह तरल अधिक बनता है। अधिक तरलके दबावसे कोठे फैलकर बड़े हो जाते हैं। इस तरलसे मस्तिष्क भी बड़ा हो जाता है; परन्तु उसको भारी हानि पहुँचती है। ऐसे रोगी महा मूढ़ होते या हो जाते हैं।

वृहत् मस्तिष्कको सम्मुख मस्तिष्क भी कहते हैं। यह मस्तिष्क ही मनुष्यके ज्ञान, बुद्धि और धर्माधर्मका प्रधान पथ है। केवल जीवन-रक्षाके लिये ही इसकी दरकार नहीं है, क्योंकि अनेकों छोटे जीव ऐसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देखनेमें आते हैं, जिनके मस्तिष्क नहीं है, पर वे जीते रहते हैं। जिन प्राणियोंके मस्तिष्क है वे सभी बुद्धिमान हैं और जिनका जैसा मस्तिष्क है, वैसी ही उनकी बुद्धि भी है। मस्तिष्कसे बुद्धिकी कमी-बेशी देखी जाती है। मत्स्य और साँप-बिच्छू प्रभृति प्राणियोंमें बहुत थोड़ी स्वाभाविक बुद्धि होती है; पर वे अपनी उतनी ही सहज बुद्धिसे अपनी रक्षा करते, अपने रहनेके स्थान बनाते और अपनी जीविका उपार्जन कर लेते हैं। सहज बुद्धिका प्रधान लक्षण यह है कि, जन्म लेनेके समय जिस जातिके जीवोंमें जितनी बुद्धि होती है, उसीके अनुसार उस जातिके जीव सब एक ही तरहका काम करते हैं। मधुमक्खियोंके छत्तों और पखेरुओंके घोंसलोंकी रचना-शैली प्राचीन कालसे या सदासे एक ही तरहकी देखी जाती है; किन्तु ऊँचे दर्जेके पक्षियोंकी बुद्धि इनकी अपेक्षा मार्जित होती है। वे विशेष खोजसे अच्छे-अच्छे स्थानोंमें उत्तम पदार्थों-के द्वारा अपने रहनेके स्थान या घोंसले बनाते हैं। इनसे भी ऊँचे दर्जेके पक्षियोंकी स्मरण-शक्तिका यथेष्ट परिचय मिलता है। तोता, मैंना और काकातुआ प्रभृति मनुष्योंके मुँहसे निकले हुए वाक्यों और शब्दोंको सुनकर याद रखते और उनको वैसे-का-वैसा उच्चारण करते हैं। स्तन पीनेवाले जीव और भी अधिक बुद्धिमान होते हैं। घरमें पाली हुई गाय-भैंस आदिकी स्मरण-शक्ति और अपने पालनेवालेके प्रति स्नेहके बहुत-से प्रमाण मिलते हैं। हाथी, घोड़ा और कुत्ता ये तीन प्राणी अतिशय बुद्धिमान होते हैं। इन तीनों जीवोंकी प्रभु-भक्ति, उपस्थित बुद्धि, स्मरण-शक्ति, स्नेह, दया, ममता और तर्क-शक्ति आदि गुणोंकी प्रशंसामें संसारमें अनेक किम्बदन्तियाँ सुनी जाती हैं। बन्दर और बनमानुष ये दोनों प्राणी मनुष्यको छोड़कर और सभी प्राणियोंसे अधिक बुद्धिशाली हैं। इसीसे हर्बर्ट स्पैन्सर महाशय मनुष्यको बन्दरकी औलाद कह गये हैं। इनमेंसे अन्तके कई प्राणियोंका मस्तिष्क बड़ा और सुगठित होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सभी प्राणियोंमें मनुष्यका मस्तिष्क जैसा उन्नत देखा जाता है वैसा और किसी भी प्राणीका नहीं। मनुष्य मस्तिष्कके द्वारा स्पर्शका ज्ञान अनुभव करते हैं। देखने, सुनने और सूँघने आदिके द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है, उसे याद रखते हैं और आगे चलकर, समय आने-पर, उसे प्रकाशित भी करते हैं। मस्तिष्कके द्वारा ही मनुष्य तर्क या विचार करते हैं और अपने काम सिद्ध करनेके लिये नये-नये उपाय करते हैं। मस्तिष्कके द्वारा ही वे दया, स्नेह, भक्ति और आत्मज्ञान प्रभृतिकी प्राप्ति कर सकते हैं।

मस्तिष्ककी उन्नतिके साथ ही बुद्धिकी वृद्धि होती है; यानी ज्यों-ज्यों मस्तिष्क बढ़ता है त्यों-त्यों बुद्धि बढ़ती है। बचपनमें मनुष्यका मस्तिष्क छोटा होता है, अतः उसकी बुद्धि भी अल्प होती है। फिर ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है त्यों-त्यों मस्तिष्क बढ़ता है। उसके साथ ही ज्ञान और बुद्धि प्रभृति भी बढ़ने लगते हैं। अधिक उम्रमें भी जिनका मस्तिष्क छोटा होता है, वे नितान्त मूर्ख होते हैं; किन्तु छोटी उम्रमें ही जिनका मस्तिष्क बड़ा होता है, वे उस समय ही बुद्धिमान होते हैं। संसारमें जितने मनुष्य अधिक बुद्धिमान और विद्वान हुए हैं उन सबका मस्तिष्क बड़ा और वज़नी था।

मस्तिष्क हमारे सभी कार्य्योंका आधार है, इसमें तो सन्देह नहीं; पर मस्तिष्क द्वारा ये सब काम किस तरह सम्पन्न होते हैं, इसका अभी तक ठीक-ठीक निश्चय नहीं हो सका। मस्तिष्कके साथ मनका क्या सम्बन्ध है, यह बात भी अच्छी तरहसे अभी तक जानी नहीं गई। पर इतना मालूम होता है कि, मस्तिष्क ही मनका आधार है।

पहले लिख आये हैं कि, मतवाले हाथीके समान बलवान मनुष्यके सिरमें अगर मामूली-सी चोट लग जाती है, तो वह निर्जीव जड़ मांस-पिण्डकी तरह ज़मीनपर गिर पड़ता है। इस हालतमें वह प्राणशून्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुर्देके समान मालूम होता है, पर सेवा-शुश्रूषा करनेसे वह फ़िर होशमें आ जाता है। उत्कट मनोवेग या दुर्गन्धसे भी कोई-कोई स्नायविक प्रकृतिवाले मनुष्य बेहोश होकर गिर पड़ते हैं। मनके साथ शरीरका कितना सम्बन्ध है, इससे यह बात जानी जा सकती है। इससे यह भी जान पड़ता है कि, शरीर अर्थात् पेशियाँ सब मनके अधीन हैं, पर थोड़ा ही विचार करनेसे यह बात ग़लत मालूम होगी।

मान लो किसीकी पीठ या पीठके बाँसेमें किसीने छुरी मारी। इससे उसके मेरुदण्डके दो टुकड़े हो गये, पर शरीरके बाक़ी यंत्र ज्यों-के-त्यों हैं; उसका मन भी जैसे-का-तैसा है। मेरुदण्ड कट जानेसे वह केवल सीधा खड़ा नहीं हो सकता। उसकी दोनों पैरोंकी अनुभव करनेकी शक्ति भी जाती रही, इसलिये वह अपनी इच्छाके अनुसार अपने नीचेके अंगोंको चला नहीं सकता; अथवा वहाँकी पेशियोंको सुकेड़ और फैला नहीं सकता। इससे जान पड़ता है कि, इस अवस्थामें नीचेके अंगोंपर उसके मनकी क्षमता नहीं रही। विचारकर देखोगे, तो मालूम होगा कि, मस्तिष्क ही सब तरहकी अनुभूति शक्ति और मानसिक कार्योंका आधार है और इच्छानुसार काम करनेवाली पेशियाँ सब तरहसे मस्तिष्कके अधीन हैं, सुतरां मस्तिष्क ही मनका आधार है।

मस्तिष्कके भिन्न-भिन्न अंशोंके द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकारके कार्य सिद्ध होते हैं। स्मरण-शक्ति, विचार-शक्ति, धर्मप्रवृत्ति आदि प्रत्येक मानसिक वृत्तिका मस्तिष्कमें निर्दिष्ट स्थान है। सभी मनुष्योंकी जन्मसे भिन्न-भिन्न प्रकारकी प्रवृत्तियाँ होती हैं। प्रायः देखा जाता है कि, स्कूलमें कोई बालक अङ्कगणितमें मन लगाता है, कोई कवितामें, कोई संगीतमें और कोई बचपनसे ही बुरे कर्मोंमें लग जाता है। कोई छोटी उम्रसे ही सुकर्मकी ओर प्रवृत्त हो जाता है। मतलब यह है कि, मनुष्यमें साधुता, दुर्जनता, नम्रता, उद्धतता, दयालुता, निर्दयता, मूर्खता और प्राज्ञता आदि गुण-अवगुण जो इस जीवनमें आते हैं, वे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सब मस्तिष्कके स्थान विशेषपर निर्भर हैं। जिसके मस्तिष्कका जौनसा अंश बड़ा होता है, उसी स्थानके गुणसे वह विशेष गुणी होता है और जिसके मस्तिष्कका जौनसा अंश क्षीण या छोटा होता है, उसी स्थानके गुणसे वह रहित या हीन हो जाता है। कौनसी वृत्तिका कौनसा स्थान है, यह अभी तक ठीक तरहसे निश्चय नहीं हो सका। अब तक इतना ही निश्चय हो सका है कि, मनोवृत्तियाँ मस्तिष्कके भिन्न-भिन्न स्थानोंसे उत्पन्न होती हैं।

लघु मस्तिष्क।

लघु मस्तिष्क वृहत् मस्तिष्कसे बहुत छोटा होता है। यह मस्तिष्कके पीछेका भाग है, इसीलिये इसे "पश्चात् मस्तिष्क" भी कहते हैं। असलमें यह वृहत् मस्तिष्कके नीचे रहता है। यह एक साधारण मीठे नीबूके समान होता है। इसकी पीठपर भी घाइयाँ होती हैं, पर इसकी घाइयाँ वृहत् मस्तिष्ककी घाइयोंसे भिन्न प्रकारकी होती हैं। ये वृहत्मस्तिष्ककी घाइयों—सीताओंसे अधिक गहरी, पास-पास और अधिक समांतर होती हैं। इसमें भी वृहत्मस्तिष्क-की तरह बाहरका भाग धूसर वर्ण और भीतरका सफेद होता है। धूसर भाग सेलोंसे और सफेद भाग सूत्रोंसे बनता है। इस मस्तिष्कके द्वारा समस्त वेगोत्पादक स्नायुओंका कार्य आरम्भ होता है। यहाँसे केन्द्र-विमुख आज्ञाएँ बाहर होकर, वेगोत्पादक स्नायुओंके भीतर जाकर, हाथ-पाँव चलानेका काम करती हैं। इसके सिवा किस पदार्थके उठानेमें कितनी ताक़त लगेगी, यह भी इसी भागके द्वारा स्थिर होता है। कोई-कोई पाश्चात्य विद्वान् कहते हैं कि, इस लघु मस्तिष्कसे ही काम-प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। जिन प्राणियोंका लघु मस्तिष्क बड़ा होता है, वे अतिशय कामी होते हैं। कह नहीं सकते, यह बात कहाँ तक ठीक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

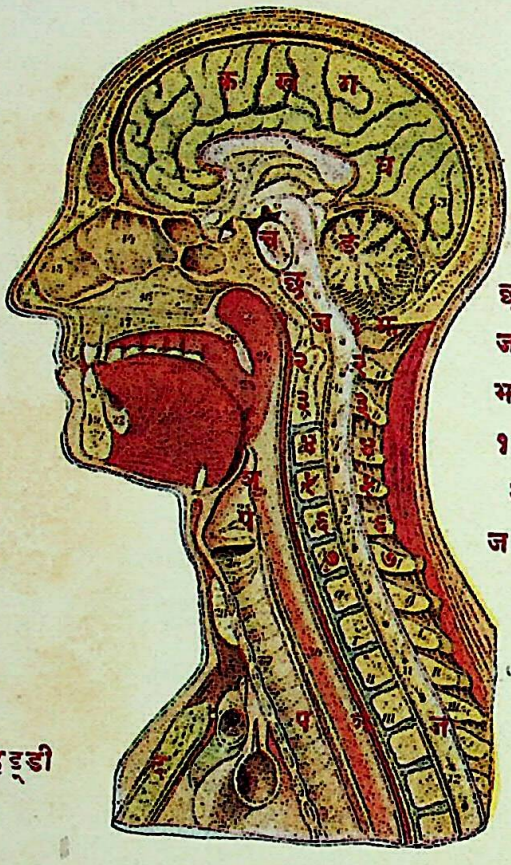

क ख ग घ बृहत्मस्तिष्क ।
ङ लघु मस्तिष्क ।
च सेतु ।
छ सुषुम्नाशीर्षक ।
ज कशेरुक नली । भीतर सुषुम्ना ।
झ जिन स्थानोंपर दोनों तरफ़ १ से २ प्रभृति अङ्क लिखे हैं, उन्हें कशेरु कण्टक कहते हैं ।
ज कशेरुक नली है ।
ञ भोजनकी नली, इसमें होकर खाना जाता है ।
द छातीकी हड्डी
प साँस नली ।

सुषुम्ना और मस्तिष्क ।

इस चित्रमें मस्तिष्क, मेरुदण्ड, कशेरुक नली, नाक, दाँत, खाने और साँस लेनेकी नली वग़ैरः दिखाई गई हैं । ये सब अंग सिर और गर्दनको लम्बाईकी ओरसे, यानी लम्बी-लम्बी, चीरकर दिखाये गये हैं ।

क ख ग घ जिस स्थानपर लिखे हैं, उसे "बृहत्मस्तिष्क" कहते हैं । जहाँ ङ लिखा है, उसे 'लघु मस्तिष्क' कहते हैं । जहाँ च लिखा है, उस जगहको 'सेतु या पुल' कहते हैं, यहीं दाहिनी ओर के स्नायु (Nerves) बाईं तरफ़ और बाईं तरफ़ के दाहिनी तरफ़ जाते हैं । जहाँ छ लिखा है, उस जगहको "सुषुम्ना शीर्षक" (Medulla Oblongata) कहते हैं । इस जगहसे ही सुषुम्ना (Spinal Cord) का आरम्भ होता है । खोपड़ीकी तलीके पिछले भागमें एक महा छिद्र होता है, कशेरुक नली इसी जगह खोपड़ीके कोठेसे मिली रहती है । जिस जगह ज लिखा है, वहीं से कशेरुक नली (Spinal canal) आरम्भ होती है । इसी नलीके भीतर 'सुषुम्ना' रहती है । यह भी याद रखो, सुषुम्ना शीर्षक मस्तिष्क और सुषुम्नाको जोड़ता है । इसी जगह साँस और हृतपिण्ड चलानेकी कल है । इसमें ज़रा-सी भी चोट लगनेसे हार्ट फेल (Heart fail) हो जाता और नाड़ी तथा साँस बन्द हो जाते हैं ।

(पृष्ठ—३८६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चतुष्कोण मज्जा।

मस्तिष्कसे मिला हुआ, नीचेकी तरफ, एक चतुष्कोण अंश है, यह मेरुदण्डीय मज्जाके ठीक ऊपर अवस्थित है। इसीका नाम "चतुष्कोण मज्जा" है। मेरुदण्डीय मज्जाकी तरह, इसके भीतर होकर स्पर्शबोधक भाव बाहरसे भीतर और भीतरसे बाहर जाते हैं। इस विषयमें मेरुदण्डीय मज्जा सीढ़ी स्वरूप है। मस्तिष्क ऊपरके घरकी तरह है और चतुष्कोण-मज्जा सीढ़ी लगाकर उस घरमें चढ़नेका सबसे ऊँचा स्थान है। जिस क्रियाके द्वारा हम सदैव साँस लेते हैं, उसका प्रधान स्थान चतुष्कोण मज्जा ही है। चतुष्कोण मज्जामेंसे एक स्नायु बाहर निकलकर फुप्फुसमें गया है। जब प्रश्वासको छोड़कर फिरसे निःश्वास लेना आरम्भ किया जाता है, तब वायुके अभावसे जो उत्तेजना होती है, वह चतुष्कोण मज्जामें प्रतिफलित होकर, उक्त स्नायुके भीतर जाकर फुप्फुसमें गमन करती है और तब निःश्वास खींचनेकी इच्छा होती है। इसलिये चतुष्कोण मज्जाके जिस अंशमें यह स्नायु प्रकट हुआ है, वहाँ एक सूईसे छिद जानेपर भी तत्काल प्राणोंका संहार हो सकता है। इसी कारण प्रकृतिने इस स्थानको ऐसा सुरक्षित बनाया है कि, जिससे सहसा इसमें कष्ट न हो।

सुषुम्ना।

यह वात-संस्थान या नाड़ी-मण्डलका वह भाग है, जो कपालके महा-छिद्रसे शुरू होता और कशेरुक नलीमें, पहले कटी-कशेरुकाके गात्रके नीचेके किनारे तक या दूसरे कटी-कशेरुकाके गात्रके ऊपरके किनारे तक रहता है।

सुषुम्नाकी लम्बाई मर्दोंमें १८ इञ्चके क़रीब और औरतोंमें कोई १७॥ इञ्च होती है। सुषुम्ना कुछ-कुछ बेलनके-से आकारकी और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रस्सीके जैसी होती है। दो स्थानोंमें शेष स्थानोंकी अपेक्षा यह अधिक मोटी होती है:—

(१) गर्दनमें। गर्दनके तीसरे कशेरुकसे वक्ष या छातीके पहले कशेरु तक। यहाँ उसकी परिधि डेढ़ इञ्च और व्यास आधे इञ्चके क़रीब होता है; इस भागसे उर्ध्वशाखा सम्बन्धी नाड़ियाँ निकलती हैं।

(२) छातीके नौवें कशेरुकसे बारहवें कशेरुकके सामने। यहाँ उसकी परिधि सवा इञ्च और व्यास आध इञ्चसे कम होता है। यहाँसे अधोशाखाकी नाड़ियाँ निकलती हैं। वक्षके १२ वें कशेरुकाके नीचे सुषुम्ना पतली और शंक्वाकार हो जाती है। शंकुकी चोटी कटिके पहले या दूसरे कशेरुके सामने रहती है। यह सुषुम्नाका अन्तिम भाग है।

सुषुम्नाका रंग बाहरसे सफेद होता है, जब कि मस्तिष्कका बाहरसे धूसर और भीतरसे सफेद होता है। मतलब यह है कि, सुषुम्नामें मस्तिष्कका उलटा होता है; यानी सफेद पदार्थ बाहर और धूसर उसके भीतर रहता है। धूसर भागमें सेलें और सफेदमें सूत्र होते हैं।

इस सुषुम्नासे नाड़ियोंके ३१ जोड़े निकलते हैं और मस्तिष्कसे १२ जोड़े निकलते हैं। मस्तिष्कसे जो २४ नाड़ियाँ निकलती हैं, वे शिरोमण्डलमें जातीं और अपने काम करती हैं। इसी तरह सुषुम्नासे जो ६२ नाड़ियाँ निकलती हैं, वे सारे शरीरमें फैलकर अपना काम करती हैं।

मस्तिष्कसे जो बारह जोड़े नाड़ियोंके लगे रहते हैं, उनमेंसे पहले जोड़ेकी नाड़ियोंका घ्राणसे सम्बन्ध है, दूसरे जोड़ेकी नाड़ियोंका दृष्टिसे, तीसरे जोड़ेकी नाड़ियोंका नेत्रोंको चलानेवाली शक्तिसे, चौथे जोड़ेकी नाड़ियोंका नेत्र-गतिसे सम्बन्ध है और पाँचवें जोड़ेकी नाड़ियाँ मस्तिष्क-नाड़ियोंमें सबसे बड़ी होती हैं। छठे जोड़ेकी नाड़ियोंका नेत्र-गतिसे सम्बन्ध है। सातवें जोड़ेकी नाड़ियोंका चेहरेकी पेशियोंकी गतिसे सम्बन्ध है। आठवें जोड़ेकी नाड़ियोंका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुननेसे सम्बन्ध है। नवें जोड़ेकी नाड़ियोंका जीभ और कण्ठसे सम्बन्ध है। दसवें जोड़ेकी नाड़ियोंका स्वरयन्त्र, फुफ्फुस, हृदय, आमाशय, आँतों और यकृत आदिसे सम्बन्ध है। ग्यारहवें जोड़ेकी नाड़ियाँ जीभकी पेशियोंमें जाती हैं। बारहवें जोड़ेकी नाड़ियाँ जीभके नीचे रहती हैं। कदाचित् ये साँसको सम्हालती हैं।

दो तरहकी नाड़ियाँ।

जिन नाड़ियोंका पेशियोंकी गतिसे सम्बन्ध है, वे गति सम्बन्धी या चालक नाड़ी हैं। जैसे—जिन नाड़ियों द्वारा आँखोंकी पेशियोंको गति करनेकी आज्ञा मिलती है वे चालक नाड़ियाँ हैं। जब हम आँखको इधर-उधर घुमाते हैं, इनका काम पड़ता है।

जिनका चेतना या संवेदनासे सम्बन्ध है, वे सांवेदनिक नाड़ी हैं। जब हम कोई चीज़ देखते हैं, तब जिस नाड़ी द्वारा प्रकाशका असर मस्तिष्कको पहुँचता है, उसे सांवेदनिक नाड़ी कहते हैं।

इन दोनों तरहकी नाड़ियोंमेंसे कुछ तो केवल सांवेदनिक (Sympathetic) हैं। उनका गतिसे कोई सम्बन्ध नहीं है। जैसे—घ्राण नाड़ी, दृष्टि नाड़ी और सुननेकी नाड़ी। कुछ केवल गतिसे सम्बन्ध रखती हैं यानी चलाती हैं। जैसे—तीसरी, चौथी, छठी, ग्यारहवीं और बारहवीं नाड़ी। बाक़ी चार मिश्रित हैं; यानी सांवेदनिक भी हैं और चालनी भी।

खुलासा यह है कि, मस्तिष्कमें जो नाड़ियोंके बारह जोड़े हैं, उनमेंसे कुछ नाड़ियाँ सांवेदनिक और कुछ चालनी कहलाती हैं। जिन नाड़ियोंसे पेशियोंको गति करने या चलनेकी आज्ञा होती है, वे चालनी या मोटर (Motor) नाड़ियाँ हैं और जिनसे रूप और गन्ध प्रभृतिका ज्ञान होता है, वे सांवेदनिक या सिम्पैथैटिक (Sympathetic) हैं।

जिस तरह मस्तिष्कसे बारह जोड़े नाड़ियोंके लगे हुए हैं; उसी तरह सुषुम्नासे इकत्तीस जोड़े लगे हुए हैं। इन सभीका सम्बन्ध

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आपसमें लगा हुआ है। आप इन नाड़ियोंको बिजलीके तार समझें और मस्तिष्कको मुख्य तार-स्टेशन समझें; अथवा मस्तिष्कको शरीरका राजा समझें और इन नाड़ी रूपी तारोंको मस्तिष्कराजके दूत समझें। मस्तिष्कराज अगर शरीरके भिन्न-भिन्न अङ्गोंको कोई आज्ञा भेजते हैं, तब इन्हीं नाड़ी-तारों द्वारा भेजते हैं और अगर शरीरके अङ्ग मस्तिष्क-राज तक कोई ख़बर भेजते हैं या कोई बात पूछना चाहते हैं, तो वे भी इन्हीं नाड़ी-तारोंसे काम लेते हैं। मतलब यह है कि, अँगरेज़ महाराजका काम जिस तरह बिजलीके तारोंसे चलता है; उसी तरह शरीरके राजा मस्तिष्कका काम भी इन्हीं नाड़ी-तारोंसे चलता है। जिस तरह देहलीवाले बड़े लाट साहबको कोई नया ज़रूरी हुक्म अपने नीचेके प्रान्तीय लाटोंको देना होता है, तो वे बिजलीके तारोंसे भेजते हैं और छोटे लाटोंको कोई आज्ञा या सलाह लेनी होती है, तो वे भी इन्हीं बिजलीके तारोंसे बात करते और पूछ लेते हैं।

भारतवर्षके राज्यका सैन्टर या केन्द्र इस समय देहली है। वहाँसे जो तार भिन्न-भिन्न स्थानोंको चलते हैं, उन्हें केन्द्रत्यागी (Centri-fugal) कहते हैं और जो तार भिन्न-भिन्न स्थानोंसे दिल्ली केन्द्रको बड़े लाटके पास जाते हैं, उन्हें केन्द्रगामी (Centripetal) कहते हैं। मतलब यह है कि, दो तरहके तार होते हैं:—(१) बड़े लाटके पाससे चलनेवाले, और (२) बड़े लाटके पास पहुँचनेवाले। बड़े लाटका स्थान सैन्टर या केन्द्र है, इसलिये वहाँसे नीचेके अफसरोंके पास जानेवाले तार केन्द्रत्यागी कहलाते हैं और अफसरोंके पाससे बड़े लाटके पास पहुँचनेवाले केन्द्रगामी कहलाते हैं। ठीक यही बात इस मानव शरीरमें है। इसमें भी दो तरहके तार हैं—(१) एक वह जिनके द्वारा मस्तिष्ककी आज्ञाएँ शरीरके दूसरे अङ्गोंमें पहुँचती हैं, और (२) दूसरे वह जिनके द्वारा शरीरके अङ्गोंकी ख़बरें मस्तिष्क तक पहुँचती हैं। सब जगहको तार मस्तिष्कसे चलते और सब जगहोंके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तार मस्तिष्कको आते हैं, इसलिये मस्तिष्क शरीरका केन्द्र या सैन्टर है। मस्तिष्कसे चलनेवाले तार "केन्द्रत्यागी" और यहाँ आनेवाले तार "केन्द्रगामी" कहलाते हैं।

जो तार मस्तिष्क और सुषुम्नासे आरम्भ होकर शरीरके दूसरे अङ्गोंको जाते हैं, वे "केन्द्रत्यागी" होते हैं। ये ही मस्तिष्ककी आज्ञाओं को शरीरके अन्यान्य अङ्गोंमें पहुँचाते हैं। ये तार गति उत्पादक होते हैं; यानी इनसे इष्टगति उत्पन्न होती है। हम पहले लिख आये हैं कि, दो तरहकी नाड़ियाँ होती हैं:—(१) सांवेदनिक (Sympathetic), और (२) चालनी या गति उत्पादक (Motor)। उनमेंसे इन केन्द्रत्यागी (मस्तिष्कसे चलनेवाले) तारोंको ही मोटर नर्व (Motor nerve) या गति उत्पादक नाड़ी-तार समझना चाहिये।

ये केन्द्रत्यागी तार मांस और ग्रन्थियोंमें जाते हैं। जब नाड़ी-तार मांसमें पहुँचता है, तब उसके तार अलग-अलग हो जाते हैं। प्रत्येक मांस-सेलको एक सूक्ष्म तार जाता है। जब हम हाथ उठाना चाहते हैं, तब हमारा मस्तिष्क नाड़ियों द्वारा हाथकी विशेष पेशियोंको—जिनका उस गतिसे सम्बन्ध होता है—सुकड़ने और फैलनेकी आज्ञा देता है। तारोंकी सूक्ष्म शाखाओं द्वारा यह आज्ञा प्रत्येक सेलको मिलती है। सब सेलें उस आज्ञाके अनुसार सिकुड़ती और फैलती हैं और इस तरह चाही हुई गति पैदा होती है।

शरीरमें गति भी दो तरहकी होती हैं। एक हमारी इच्छासे सम्बन्ध रखती है और दूसरीसे हमारी इच्छाका कोई सम्बन्ध नहीं। एकका सम्बन्ध ऐच्छुक मांस-पेशियोंसे है और दूसरीका अनैच्छुक—हृदय-धमनी वग़ैरःसे है। अनैच्छुक मांसकी गति अपने-आप होती रहती है। ज़रूरतके माफ़िक़ मस्तिष्कसे आज्ञाएँ आती रहती हैं और वह अपना काम सुचारु रूपसे करता रहता है। सर्दीसे रोएँ खड़े होना, दिलका धड़कना और धमनीका फड़कना वग़ैरः अनैच्छुक गतियाँ हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ तक हमने केन्द्रत्यागी यानी मस्तिष्कसे शरीरके भिन्न-भिन्न अङ्गोंमें जानेवाले तारोंके सम्बन्धमें कहा; अब केन्द्रगामी या मस्तिष्कमें आनेवाले तारोंकी बात भी सुनिये। इन तारों द्वारा शरीरके विविध भागोंसे सूचनाएँ मस्तिष्क तक पहुँचती हैं। जब आपके हाथमें काँटा चुभता है या आपको बिच्छू काटता है, तब इन बातोंकी ख़बर मस्तिष्क तक इन्हीं केन्द्रगामी तारों द्वारा पहुँचती है। इसी तरह जब प्रकाशकी किरणें आँखके भीतरी पर्देपर पड़ती हैं, तब इन किरणोंसे इस पर्देपर प्रभाव पड़ता या भावान्तर होता है। उसकी सूचना मस्तिष्कको इन्हीं तारों द्वारा पहुँचती है। जिस तरह बिजलीके तारके ख़राब हो जाने या कट जानेसे एक जगहकी ख़बरें दूसरी जगह नहीं पहुँचतीं, उसी तरह जब किसी अङ्गके केन्द्रगामी तारोंमें कोई विकार हो जाता है या वे कट जाते हैं, तब उस अङ्गसे मस्तिष्क तक सूचना नहीं पहुँचती। ऐसा बहुधा उपदंश या कोढ़में होता है।

डाक्टर गन महाशय कहते हैं कि, समस्त स्नायविक शक्तियाँ मस्तिष्कसे पैदा होतीं और उसीमें रहती हैं। मस्तिष्क स्नायुमय पिण्ड पदार्थ है। यह स्नायु-समूहसे बना हुआ है। मस्तिष्क मानसिक या दिमाग़ी कार्य्योंका स्थान और मनका आश्रयस्थल है। स्नायु मस्तिष्कसे निकलते और उसकी आज्ञाओंको शरीरके हर भागमें पहुँचाते हैं। टेलिग्राफके तारोंकी तरह, मस्तिष्कसे स्नायुओंकी शाखा-प्रशाखाएँ निकलकर शरीरके हर भागको स्नायविक शक्ति पहुँचाती हैं। ज़िन्दगी क़ायम रखनेके लिये, इस स्नायविक शक्तिका शरीरके अङ्गोंसे लाज़िम मलज़ूम या शीरोशकरका-सा रिश्ता या सम्बन्ध है। मस्तिष्कके समस्त अङ्ग जीवन सम्बन्धी बड़े-बड़े काम करते हैं।

मस्तिष्क और पृष्ठवंशीय मज्जा या सुषुम्नासे स्नायुओंके जोड़े-के-जोड़े निकल-निकलकर शरीरके प्रत्येक भागमें जाते हैं। स्नायुओंका एक-एक जोड़ा कशेरुक मज्जाके एक-एक अंशमें शामिल है; इस जोड़ेमें-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

से एक दर्शन-श्रवण प्रभृति इन्द्रिय सम्बन्धी ज्ञानमें सहायता देता और दूसरा हरकत करनेमें मदद देता है; अर्थात् एकसे हमें इन्द्रियोंके विषयोंका ज्ञान होता और दूसरेसे हम चल-फिर सकते और अपने अंगों-को हिला-डुला सकते हैं। एक इल्म-ए-हिस्स या इन्द्रियजन्य ज्ञानका जरिया है और दूसरा हरकत या गतिका। एक मस्तिष्कके विचारोंको शरीरके अन्यान्य भागोंमें ले जाता और उन भागोंके समाचार मस्तिष्क तक पहुँचाता है। दूसरा मांस-पेशियों या पट्ठोंको हरकत करनेकी आज्ञा और शक्ति प्रदान करता है। बदनके हर हिस्सेके दर्म्यान ये स्नायु ही मिडियम या कारिन्दे हैं; यानी इनके ज़रियेसे ही बदनका हर हिस्सा हर दूसरे हिस्सेसे राहोरस्म या मुबादला-ए-ख़यालात रखता है। इनके द्वारा ही मस्तिष्क शरीरके दूसरे भागोंकी ख़बरें पाता, उनपर शासन करता और उन्हें अपने अधीन रखता है। टेलिग्राफी और नरवस सिस्टम (स्नायु-मण्डल) का मुक़ाबला करनेसे ऐसा जान पड़ता है, मानो शरीरमें फैले हुए स्नायु 'तार' हैं और मस्तिष्क 'तार-घर' है। जीवन-कार्य चलनेके समयमें, इस तार-घरसे सिस्टमके समस्त भागोंको संवेदना और गति या हरकत सम्बन्धी आज्ञाएँ लगातार जाती रहती हैं। जब कि चोट लग जाती है या और कोई कारण उपस्थित हो जाता है, तब स्नायु बहुधा अपना जिस्मको सहारा देनेवाला बरक़ी या वैद्युतिक अर्क़—जो उन्हें मस्तिष्क रूपी बिजलीकी बैटरीसे मिलता है—पहुँचाना बन्द कर देते हैं। उस समय मस्तिष्क, या इच्छा, मस्तिष्ककी मार्फ़त शासन कर नहीं सकता। ऐसे मौक़ेपर चेतनाशक्ति और गति नष्ट हो जाती है। खुलासा यह है कि, स्नायु-मण्डलको शरीरके सञ्चालन करनेकी ताक़त मस्तिष्कसे मिलती है। मस्तिष्क उस ताक़तका भाण्डार है। अगर किसी नसके कट जाने या चोट खा जानेसे उस नसका सम्बन्ध मस्तिष्कसे नहीं रहता, तो इस दशामें उस नसको और नसों—स्नायुओं—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा मस्तिष्ककी वह ताकत नहीं मिलती। उस ताक़तके बिना वह स्थान चेतना-विहीन सूना हो जाता है। वह न तो हिलता-डोलता है और न वहाँ छूने या चुटकी भरने प्रभृतिसे कुछ मालूम होता है। आपकी भुजा या टाँग जब कभी सो जाती है, तब यह अवस्था होती है। यह अवस्था इसलिये होती है कि, शरीरके उस भागकी स्नायु (Nerve) पर दबाव पड़ता है। दबावके कारण राह रुक जाती है। राह रुक जानेसे उसमें स्नायविक शक्तिका आना बन्द हो जाता है। पर ज्योंही आप उस अङ्गसे दबावको हटा देते हैं, त्योंही स्नायविक शक्ति फिर नसोंमें बहने लगती है। उस शक्तिके उस स्थानकी स्नायुमें आनेसे चेतना और गति-शक्ति आहिस्ता-आहिस्ता वापस आ जाती हैं; यानी वह अंग फिर गति या हरकत करने लगता है तथा उसे सुख-दुःख और गरमी-सर्दी आदिका अनुभव होने लगता है।

मस्तिष्ककी इस बरक़ी या बिजलीकी ताक़तके शरीरमें चक्कर खाने या चारों तरफ सञ्चार करनेसे संवेदना—चेतना और इच्छानुसार गति ये ही काम नहीं होते, बल्कि वे सब काम भी होते हैं, जिनसे हमारी इच्छाका कोई सम्बन्ध नहीं है। पेटका हाज़मा और दिलकी धड़कन—ये दोनों काम भी स्नायविक शक्तिसे होते हैं। आप पेटसे तअल्लुक रखनेवाली स्नायुको काट दीजिये, हाज़मा या पाचन-क्रिया बन्द हो जायगी; बिजलीकी बैटरी लगा दीजिये, फिर पाचनकार्य या हाज़मा होने लगेगा।

दिल और रक्तवाहक नाड़ियोंमें होकर खून सारे शरीरमें चक्कर लगाया करता है। खूनका यह दौरा भी स्नायविक शक्तिके प्रवाहोंकी खींचने और दूर करनेवाली शक्तियोंके बलसे होता रहता है। निश्चय ही खूनका दौरा जारी रखनेवाली यही शक्ति है। नेचरने रक्त-संचालन या खूनके दौरे करनेके लिये जो कल-पुरज़े बनाये हैं, वे सभी स्नायविक शक्तिसे चलते हैं। मसलन्; लक़वा या फालिज मारे हुए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अङ्गोंमें पैदा हुए ज़ख़्म या घाव शरीरके और भागोंकी अपेक्षा बहुत देरमें और बड़ी मुश्किलसे आराम होते हैं। स्नायविक शक्तिके बिना ठीक रहे, ज़िन्दगीका कोई भी काम अच्छी तरहसे नहीं चल सकता।

इस विषयका ज्ञान होनेपर, प्रत्येक विचारवानका धर्म और कर्त्तव्य है कि, वह अपने स्नायुमण्डल (Nervous System) को सदा निरोग और दुरुस्त रखे। इस सिस्टमके निरोग रखनेके लिये उन तमाम आदतोंसे किनारा कर लेना चाहिये, जो शारीरिक और मानसिक शक्तियोंके बलको क्षीण करती हैं। केवल शारीरिक शक्तियोंकी रक्षासे ही काम नहीं चल सकता, मानसिक शक्तियोंकी रक्षाकी उससे कम ज़रूरत नहीं है; क्योंकि शरीर और मनका बड़ा गहरा सम्बन्ध है। शरीर और मनके दर्म्यान हमदर्दी या संवेदनाका सम्बन्ध स्नायु-मण्डलने स्थापित कर रखा है। अतः मादक और उत्तेजक पदार्थोंका हानिकारक असर स्नायुओंपर अवश्य होता है।

काफी, चाय, अफीम और शराबकी आदतसे स्नायुमण्डल या नर-वस सिस्टमको बड़ी हानि पहुँचती है। तमाखूको लोग मामूली चीज़ समझते हैं, पर वह भी इनसे कम हानिकारक नहीं है। उससे भी अनेक दुस्साध्य और चिरस्थायी रोग पैदा होते हैं। इन चीज़ोंके चाहनेवाले इनके बुरे नतीजोंको नहीं समझते। इन पदार्थोंके सेवनसे एक प्रकारकी प्रसन्नता और ज़िन्दादिली पैदा होती है, वही इनके चाहनेवालोंको अन्धा कर देती है। उसीकी वजहसे वे इन बुरे नतीजोंका ख़याल तक नहीं करते। इन चीज़ोंने करोड़ों स्त्री-पुरुषोंको निकम्मा बना दिया। लाखों पुरुष पुंसत्व खोकर क्लीव हो गये। लाखोंकी बुद्धि और स्मरण-शक्ति नाश हो गई। होते-होते अन्तमें वे उन्माद-रोगके शिकार हो गये।

शराब, अफीम, चाय और तमाखू प्रभृति हानिकारक होनेपर भी शीघ्र ही अपना बुरा असर नहीं दिखाते, इसलिये जो लोग इन्हें बुरा मानते हैं, वे भी इन्हें नहीं छोड़ते। पापी जिस तरह जल्दी ही सज़ा न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पानेसे पाप किये जाता है; उसी तरह इनके सेवक भी इनके सेवन करनेसे पाप किये जाते हैं। पापी जिस तरह एक-न-एक दिन सज़ा पाता ही है; उसी तरह उन्हें भी क़ानून कुदरत तोड़नेकी सज़ा मिलती ही है। एक-न-एक दिन उन्हें भयङ्कर रोगके पंजेमें फँसकर, असमयमें मौतके गालमें समाना ही पड़ता है।

अनेक निर्बुद्धि और विचारहीन मनुष्य समझते हैं कि, दवा खानेसे सारे रोग नाश हो जायँगे। जब ज़रूरत समझेंगे, वैद्यजी या हकीमजीका दरवाज़ा जा खटखटावेंगे। पर जो ऐसा समझते हैं, वे भयानक भूल करते हैं। जब इन विषोंका असर स्नायु-मण्डलपर हो जाता है, तब शरीर टूट जाता है और अकाल मृत्युसे मरना पड़ता है। उस समय स्वयं धन्वन्तरि और लुकमान हकीम भी कुछ नहीं कर सकते। अतः बीमारीका इलाज करनेसे उसे रोकना कई दर्जे अच्छा है। उन्हें अङ्गरेज़ीकी पुरानी कहावत याद रखनी चाहियेः—An ounce of prevention is worth more than a pound of cure.

मान लो, दवा करनेसे इनसे पैदा हुए रोग आराम भी हो जायँ, पर बिना कारणको त्याग किये किसी हालतमें भी आराम हो नहीं सकते। असल कारणके नाश होनेसे नव्वे फी सदी केसोंमें सफलता होती है। उस दशामें नेचर या प्रकृति बिना दवाके ही रोगको दूर कर देती है। रोगका कारण दूर किये बिना, दवाका नुसख़ा लिखना भद्दी-से-भद्दी नीम हकीमी या ऊँटवैद्यपना है। साराँश यह है कि, जो रोगी अपना इलाज कराना चाहें, पहले अपनी ख़राब आदतोंको सुधारें यानी शराब, अफीम, चाय, काफी और तमाखूसे मोह छोड़ें।

दिल और रक्तवाहिनी धमनी नाड़ियोंमें ख़ूनका जल्दी और देरसे दौड़ना—अवस्था, परिश्रम और उत्तेजनाके ऊपर निर्भर है। गर्भगत बालककी नाड़ी एक मिनटमें १३५ से १७५ बार तक फड़कती है। बालकके जन्म लेनेके बाद वह १०० से १२० बार तक फड़कती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जवानकी नाड़ी ७० से ७५ बार तक फड़कती है। ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, नाड़ीका स्पन्दन मन्दा होता जाता है। ६० से ७० सालकी उम्रमें नाड़ी १ मिनटमें ६० बार फड़कती है। चलने-फिरने और सख्त मिहनत या ज़ोर आज़माई करनेसे नाड़ीकी चाल तेज़ हो जाती है। लेटनेकी अपेक्षा खड़े होनेसे नाड़ीका स्पन्दन बढ़ जाता है। मानसिक जोशसे नाड़ीकी गति बहुत ही तेज़ हो जाती है। चाय, काफी प्रभृति उत्तेजक पदार्थोंसे स्नायु-मण्डलमें बुरा जोश पैदा हो जाता है और उससे दिल और रक्तवाहिनी नाड़ियोंका काम बढ़ जाता है। एक प्याला चाय, एक घूँट शराब, एक सुलफा तमाखू ये सब नाड़ीकी गतिको तेज़ कर देते और इस तरह रोग-पर-रोग पैदा करते हैं। हिसाब लगा-कर देखा गया है कि, मामूली आदमीका खून ३५ पौण्ड या साढ़े सत्रह सेरके क़रीब होता है। सारा खून अढ़ाई मिनटमें सारे शरीरका चक्कर लगा लेता है।

दूसरी बुरी आदत, जो इन सबकी भी नानी है—"हस्तमैथुन" है। इसको अँगरेज़ीमें सैल्फ-इण्डलजैन्स या मास्टरबेशन (Self-indul-gence or Masturbation) कहते हैं। इस पोशीदा गुनाह या गुप्त पातकने मानव-जातिकी भयंकर हानि की है। यह बला बचपनमें ही पीछे लगती है और उस समय तक पीछा नहीं छोड़ती, जब तक मनुष्य बिल्कुल नपुन्सक और निर्वीर्य नहीं हो जाता। इससे तो स्नायु-मण्डल या नरवस सिस्टमकी रेढ़ ही हो जाती है। अति स्त्री-प्रसंगसे भी स्नायु दूषित और रोगी हो जाते हैं। अत्यन्त दिमाग़ी परिश्रम भी अत्यन्त हानिकारक है।

भाइयो! यदि आप स्नायु-मण्डलको निरोग रखकर संसार भरके रोगोंसे बचना चाहते हो, तो क़ानून कुदरतको मानो, प्रकृतिकी आज्ञाओं-का पालन करो। पालन ही न करो, क़ानून कुदरतके खिलाफ कोई काम मत करो। उसकी आज्ञाओंको मानना अपना प्रधान कर्त्तव्य-धर्म

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समझो। लेकिन यह तभी हो सकता है, जब कि लोग क़ानून कुदरत या स्वास्थ्यरक्षा-विषयक बातोंको जानें। इन बातोंका ज्ञान लोगोंको आयुर्वेदीय ग्रन्थ पढ़नेसे ही हो सकता है। मनुष्य जन्म लेकर मनुष्यको पहले सदा आरोग्य-लाभ करने और इस जगत्में अधिक-से-अधिक दिनों तक रह सकनेकी विद्या उपार्जन करनी चाहिये। निरोग और दीर्घ-जीवी हुए बिना मनुष्य इस जगत्में कौनसा अच्छा काम कर सकता है? अतः इस विद्याका अध्ययन न करना पाप है।

न्यूरेलजिया या स्नायुगत वात।

न्यूरेलजियाको हिन्दीमें "स्नायु-वेदना" और उर्दूमें "दर्द शक़ीक़ा" कहते हैं। संस्कृतमें इसका अर्थ "स्नायुगत वात" हो सकता है। इस रोगका सम्बन्ध स्नायु-समूहसे है, इसीलिये इसकी गणना नरवस डिज़ीज़ैज़ अर्थात् स्नायु-मण्डलके रोगोंमें की जाती है।

अनेक केसोंमें एकमात्र दर्द या वेदना ही इस रोगका लक्षण है। क्योंकि इस रोगमें न तो शरीरके किसी भागपर सूजन ही आ जाती है और न सोज़िश या जलन ही होती है। जब वह रोग होता है, तब एक प्रकारकी पीड़ा होती है। उसमें झटके-से लगते और खिंचावट होती है। पर यह दर्द हर समय नहीं रहता, बीच-बीचमें कुछ समयके लिए बन्द हो जाता या कम हो जाता है।

बहुत करके न्यूरेलजिया (Neuralgia) चेहरे और सिरमें होता है। कभी-कभी यह छाती, टाँग और पैरमें भी होता है। अनेक बार यह शरीरके और-और भागोंमें भी होता है, पर यह बात स्नायु-मण्डल या स्नायु-समूहकी अवस्थापर विशेष निर्भर है। जब यह रोग चेहरेमें होता है, तब इसे ट्राइफेशियल न्यूरेलजिया कहते हैं। उस समय मुँहसे आँखों तक, बहुधा कान तक एवं गाल, तालू, दाँत और जाबड़ोंमें दर्द-के तीर-से छूटते हैं। रोग होनेकी जगहकी मांस-पेशियों या पट्ठोंमें चिलक-सी मारती हैं और वे खिंचते या ऐंठते हैं। यह दर्द किसी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खास स्नायुसे सम्बन्ध रखता है। 'एक सेकण्डमें ही हमल-ए-शदीद या ज़ोरका दौरा होता है और मृत्युकालकी-सी यन्त्रणा या वेदना बढ़ जाती है। अनेक बार यह दर्द यकायक उठता है। उस समय असह्य वेदना होती है। अनेक बार इसके साथ-साथ कोई और स्थानीय रोग भी प्रकट हो जाता है। न्यूरेलजियाके लक्षण और कारण प्रभृति ठीक तौरसे समझमें नहीं आते, पर इतना निश्चय है कि इसके बहुत-से कष्ट-साध्य या असाध्य केस मौरूसी कारणोंसे होते हैं; यानी अत्यन्त कष्ट-साध्य या असाध्य न्यूरेलजिया माता-पिताके दोषोंसे होता है।

सर्द मौसम, सील और मलेरिया अथवा अकेली सील और मलेरिया न्यूरेलजियाके पैदा करनेवालोंमेंसे हैं। जो लोग गरमीसे घबराये हुए या थके हुए होनेपर सर्द हवाके झोंकोंके सामने बैठ जाते हैं या किसी तरह शीतल हवा सेवन करते हैं, उन्हें न्यूरेलजिया ज़रूर होता है। रेलकी यात्राने तो इसकी पैदायश बहुत ही बढ़ा दी है। अगर मनुष्यका शरीर कमज़ोर होता है, तब तो इस रोगकी और भी बन आती है। मतलब यह है कि निर्बलोंपर न्यूरेलजियाका कोप बहुत जल्दी होता है। न्यूरेलजिया ही क्यों, निर्बलोंको सभी रोग जल्दी घेरते हैं।

उपरोक्त कारणोंके अलावः, अत्यधिक मानसिक परिश्रम और घोर चिन्ता भी इस रोगके पैदा करनेवालोंमें मुख्य हैं। मानसिक परिश्रम और चिन्ता—ये दोनों ही मनसे सम्बन्ध रखते हैं। मनकी इन्द्रिय मस्तिष्क है। जिस तरह हम आँखोंसे देखते हैं, कानोंसे सुनते हैं, नाकसे सूँघते हैं, जीभसे चखते हैं और चमड़ेसे छूते हैं; उसी तरह हमारी सारी मानसिक क्रियाएँ मनसे होती हैं। मस्तिष्क बिना मनका अस्तित्व ही असम्भव है। मस्तिष्ककी प्रत्येक अवस्थाके साथ मनका घनिष्ट सम्बन्ध है। मस्तिष्कमें खूनकी कमी होनेसे या और किसी तरह मस्तिष्ककी पुष्टिमें विघ्न-बाधा होनेसे मानसिक शक्ति कमज़ोर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो जाती है। जिस तरह शरीरकी पुष्टिमें किसी तरहकी बाधा होनेसे नेत्र, कान, आँख वग़ैरः इन्द्रियोंकी क्रियाओंमें व्यतिक्रम होता है; उसी तरह मस्तिष्ककी क्रियामें भी व्यतिक्रम होता है। अतः मनको स्वस्थ रखनेके लिए, शरीरको स्वस्थ रखना परमावश्यक है। जिस तरह मनको निरोग रखनेके लिए शरीरको स्वस्थ रखनेकी ज़रूरत है; उसी तरह शरीरको स्वस्थ रखनेके लिए मनको स्वस्थ रखनेकी ज़रूरत है। देखते हैं, अत्यन्त भय या मनमें किसी तरहकी विशेष उत्कण्ठा होनेसे भूख मारी जाती है और संक्रामक रोगोंके आक्रमण करनेके लिए राह खुल जाती है। जो लोग रात-दिन चिन्तामें चूर रहा करते हैं; उन्हें अजीर्ण या बदहज़मीकी शिकायत बनी ही रहती है। मनके दुःखसे तन्दुरुस्ती फौरन बिगड़ती है। मनके खुश रहनेसे रोग आसानीसे हमला नहीं कर सकता। तत्वदर्शी विद्वानोंका निश्चय है कि, मनके साथ स्वास्थ्यका अति निकट सम्बन्ध है।

मनके साथ जब स्वास्थ्यका इतना निकट सम्बन्ध है, तब शरीरके आरोग्य रखनेके लिए मनको हर हालतमें स्वस्थ रखना चाहिये। जो लोग अत्यधिक मानसिक परिश्रम और चिन्ता करते हैं, उनका मन रोगी हो जाता है। मनके रोगी होनेसे शरीर भी रोगी हो जाता है। आजकलके पढ़े-लिखे लोग आयुर्वेदके न जाननेसे अतीव मानसिक परिश्रम करते हैं। जो लोग परिमित रूपसे मानसिक परिश्रम करते हैं, उन्हें कोई हानि नहीं होती। विश्रामके समय मानसिक खिन्नता दूर हो जाती और मनमें नई शक्ति और स्फूर्त्तिका सञ्चार होता है; किन्तु जो बहुत ही ज़ियादा मानसिक परिश्रम या दिमाग़ी मिहनत करते हैं, उन्हें विश्रामसे भी चैन नहीं मिलता। नींदसे भी उनकी मानसिक खिन्नता दूर नहीं होती। इससे स्नायु कमज़ोर होते और तरह-तरहकी बीमारियाँ घेरती हैं। अत्यन्त परिश्रमसे आदमीका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और उसकी स्मरण-शक्ति कम हो जाती है। ऐसे लोगोंको कोई

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बात याद नहीं रहती, नींद नहीं आती, सिरमें दर्द होता, शरीरमें जगह-जगह पीड़ा होती,सिर घूमता,चक्कर आते और खाना हज़म नहीं होता। आजकल जिन-जिन कारणोंसे बदहज़मी-रोग फैल रहा है,उनमें स्नायुओंकी अवसन्नता एक प्रधान कारण है। जिस तरह अत्यन्त मानसिक परिश्रमसे स्नायविक शक्ति दुर्बल होती है; उसी तरह दुःख, शोक, चिन्ता और क्रोधादि मानसिक कष्टोंसे भी स्नायुओंमें दुर्बलता होती है। आजकल पैदा होनेके कुछ समय बाद ही, जब कि शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्ग पूरे भी नहीं होते, चिन्ता-राक्षसी पीछे लग जाती है। यहाँ तक कि अधिकांश लोगोंकी चिन्ता रातको सोते समय भी दूर नहीं होती। उस समय भी घाटे-नफे या गृहस्थीके पालन-पोषणकी चिन्ता सिरपर सवार रहती है। घोर या रात-दिनकी चिन्ताका तो कहना ही क्या? मामूली चिन्तासे भी कुछ-न-कुछ मानसिक हानि होती ही है। क्योंकि चिन्ताका असर स्नायु-समूहपर बहुत जल्दी होता है। आजकल लोगोंमें अत्यधिक मानसिक परिश्रम और चिन्ताकी बहुतायत है, इसीसे स्नायु सम्बन्धी रोग न्यूरेलजिया प्रभृति बहुतायतसे होते हैं। जिन्हें इन स्नायविक रोगोंसे बचना हो, उन्हें परिमित मानसिक श्रम करना चाहिये और यथाशक्ति चिन्तासे भी बचना चाहिये। यद्यपि मन एकदमसे चिन्ताशून्य किया जा सकता है या नहीं—इसमें सन्देह ही है।

मानसिक शक्तिका अभाव होनेसे मनुष्य अफीम, शराब और गाँजा आदि नाना प्रकारकी कुत्सित नशीली चीज़ोंका दास बन जाता है। स्नायुओंकी ख़राबीकी हालतमें तेज़ शराब और अफीम वग़ैरः ज़हरीली और उत्तेजना पैदा करनेवाली चीज़ोंसे चन्दरोज़ा आराम मिलता है। सेवन करते-करते रोगियोंका विश्वास इन चीज़ोंमें अत्यधिक या हदसे ज़ियादा बढ़ जाता है। फिर तो वे इनके आदी या ग़ुलाम हो जाते हैं। इनके बिना उन्हें संसारमें कुछ भी आनन्द नहीं मिलता, ज़िन्दगी भार बोध होती है। परन्तु इस नशेबाज़ीका नतीजा बहुत ही बुरा होता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। अनेक प्राणी बिना मौत मरते हैं। इन ज़हरीले पदार्थोंने लाखोंको तबाह कर दिया। लाखों गृहस्थियाँ मिट्टीमें मिल गईं।

पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियोंको स्नायु-मण्डलके रोग यानी नरवस डिज़ीज़ अधिक होते हैं। ये रोग बाहरी कारण—सर्द मौसम, सील और मलेरिया—विषैली हवा आदिसे तो होते ही हैं, पर मानसिक कारणोंसे भी होते हैं। मनोवृत्तिकी उत्तेजनाएँ, जैसे खुशी और रञ्ज वग़ैरः चाहे कल्पित हों चाहे वास्तविक, शरीरके अङ्ग-प्रत्यङ्गों और उनके कर्त्तव्य-कर्मोंपर अपना असर बहुत ज़ियादा डालती हैं। इनके असरसे दिल धड़कने लगता है, हाथ काँपता है और ज़रा-सी उत्तेजनासे चेहरा तमतमा आता है। जो लोग निर्बल हैं, जिनके शरीरकी गठन या बनावट ठीक नहीं है, जिन लोगोंने बदपरहेज़ी या शराबख़ोरीकी आदतों-से अपनी तन्दुरुस्ती बिगाड़ ली है, वे ही इस रोगके शिकार होते हैं।

इस लाभदायक विषयको शेष करनेसे पहले हमें एक बात अवश्य कहनी है, उसके कहे बिना हम रह नहीं सकते। वह यह कि मानव जीवनके शत्रुओं—बदपरहेज़ी, ज़ियादा शराबख़ोरी और ऐयाशी—का आजकल बड़ा दौरदौरा है। उनकी तूती बोल रही है। वे बेतरह बढ़ गये हैं। शाइस्तगीकी क़दर, ऐशो-इशरत, ख़ुश-ख़ुराकी, नफ़ासनियत, लताफ़त या बनाव-शृङ्गार और कुदरतसे मुनहरिफ़ हो जाना एवं कुदरतके क़ानूनोंको न मानना मानव जीवनके लिये सत्यानाशकी निशानी और नरवस डिज़ीज़ैज़ या स्नायु-मण्डलके रोगोंकी जननी है। जाँच करनेसे पता चला है कि, बहुत-से माँ-बाप अपनी औलादको विरासतमें अनेक प्रकारकी मानसिक और शारीरिक व्याधियाँ छोड़ जाते हैं, जो तीन-तीन और चार-चार पीढ़ियों तक पीछा नहीं छोड़तीं। जो संसारमें सुखसे जीवन बिताना चाहें, वे स्नायु-मण्डलमें कोई ख़राबी न होने दें। ऐसा तभी हो सकता है, जब कि लोग ऊपर लिखे हुए मानव जीवनके शत्रुओंसे दूर रहें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनेक तरहके स्नायु सम्बन्धी रोगोंका पेशख़ीमा या उनकी पहलेसे ख़बर देनेवाला "क़ब्ज़" है; यानी अनेक स्नायविक-रोग होनेसे पहले दस्तक़ब्ज़ होता है। जैसे—न्यूरेलजिया—स्नायुगत वात, सिरका दर्द, मृगी, हिस्टीरियाके दौरे, दमा, दिल धड़कना, बदहज़मी—अजीर्ण और हाथ-पाँव आदि शाखा अङ्गोंकी शीतलता। इसलिए चिकित्सकको आँतोंकी हालतपर ध्यान देनेकी बड़ी ज़रूरत है।

जिनका स्वभाव चिन्ताशील हो, जो चिन्ताके फेरमें ज़ियादा पड़े रहते हों, जिन्हें न्यूरेलजिया या कोई स्नायु सम्बन्धी रोग हो, उन्हें आकाशीय तब्दीलियों, खासकर तेज़ हवा वग़ैरःसे बचना चाहिये; क्योंकि हवाकी तब्दीली, सर्दी-गरमी और हवाका घनत्व कुछ स्नायु-रोगोंमें अपना असर फौरन ही दिखाता है। हमने दमेके ऐसे बहुत-से रोगी देखे हैं, जो हवाकी हालत, सर्दी-गरमी और हवाके घनत्वमें कुछ भी फेरफार न होने और उनके इसी हालतमें बहुत दिनोंसे चले आनेपर भी, पहलेसे ही कह देते हैं कि, मौसम बदलनेवाला है और उनकी भविष्यवाणी अक्षर-अक्षर ठीक मिलती है। एक भले आदमीको श्वासका रोग था। जब बादल या वर्षा होती थी, उनका दमा ज़ोर कर आता था। एक दिन आकाश साफ़ और निर्मल था, बादलोंका नाम भी कहीं नहीं था, धूप निकल रही थी; उन्होंने कहा कि वर्षा होगी और ज़ियादा-से-ज़ियादा तीन दिनके भीतर होगी। तीसरे दिन बादल आये और पानी बरसा। उन्होंने कहा कि जब हमें दमा ज़ियादा सताने लगता है, तब बादल नज़र न आनेपर भी हम जान जाते हैं कि, मौसम बदलनेवाला है। पाठक! आप इस उदाहरणसे समझ सकते हैं कि, बाहरी पञ्चतत्वोंका शरीरके पञ्चतत्वोंसे कैसा सम्बन्ध है। उनका असर शरीरपर कैसा पड़ता है। इसी तरह जिनका कोई अङ्ग भङ्ग हो जाता है, वे अपने पट्टोंके खिंचावको देखकर पहले ही कह देते हैं कि, मौसम तब्दील होनेवाला है। क्योंकि मौसमकी मुख़ालिफ़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तब्दीलीका असर उनके उस अङ्गपर पड़ता है और इस कारणसे अपनी जगहसे अलग हुए या ज़ख्मी हुए पट्ठे खिंचने और हरकत करने लगते हैं; और उनका खिंचना और हरकत करना नेत्रोंसे साफ दीखता है। पट्ठोंके अनिच्छापूर्व्वक खिंचने या हिलने-जुलनेसे साबित होता है कि, मौसमकी तब्दीलियाँ स्नायुओंके काममें खलल डालकर स्नायुमण्डल और मांस-पेशी-समूहके कामको रोक देती हैं। न्यूरेलजिया या स्नायुगत-वात-रोगियों और कच्चे दिलके आदमियोंपर मानसिक उथल-पुथलका जैसा असर होता है, उसपर टीका-टिप्पणीकी दरकार नहीं। इसलिये स्नायु-मण्डलके रोगियोंका कर्त्तव्य है कि, वे अपनी शारीरिक गठनके सम्बन्धमें मुख्य-मुख्य बातें जान लें और अपने शरीरको सुखी रखनेके उपयुक्त उपाय चुन लें, क्योंकि बाज़-बाज़ आदमियोंको इन रोगोंसे निजात पानेमें औरोंकी अपेक्षा अधिक कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है।

स्नायविक रोगोंको रोकने, उनकी पीड़ा घटाने और स्नायुओंकी पुष्टि करनेके लिए नीचे लिखे हुए उपाय करोः—

स्नायविक रोगोंके रोकनेके उपाय।

(१) अगर आप स्नायविक रोगोंसे बचना चाहते हैं, तो वातकारक आहार-विहारोंसे परहेज़ रखो; देरमें हज़म होनेवाले सख्त पदार्थ कभी मत खाओ। कोई भी पीनेका पदार्थ गर्मागरम भाफ निकलता हुआ मत पीओ। काफी—कहवा, चाय या हरी चाय और तमाखूसे बचो। इन पदार्थोंको लगातार व्यवहार करना—विष सेवन करना है। यद्यपि ये पदार्थ अपना हानिकारक असर धीरे-धीरे दिखाते हैं, पर अन्तमें एक-न-एक दिन अपना ज़हरी काम किये बिना नहीं रहते। ये आमाशयके स्नायुओं तथा दिल और जनरल सिस्टमको ढीला करते और निर्बल अङ्गोंमें नाना प्रकारके रोग पैदा करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) नींद आनेपर नींदको मत रोको। जो लोग रात-दिन घोर परिश्रम करते, यथेष्ट नींद नहीं लेते, विश्राम या आराम नहीं करते, वे अपने जीवनको ख़तरेमें डालते, उम्र कम करते और रोगोंको बुलाते हैं।

(३) ऋतुके परिवर्तन या मौसमके बदलनेके समय पूरी तरहसे सावधान रहो। पैर गीले मत रखो। क्योंकि गीले पैर रखने और ऋतु बदलनेके समय आहार-विहारमें गड़बड़ी करनेसे ज्वर और खाँसी प्रभृति अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। इनके सिवा, स्नायविक या नरवस रोगोंकी तो इफ़रात ही हो जाती है।

(४) दिमाग़ी परिश्रम बहुत ही ज़ियादा करने और दिलको एक ही ओर ज़ियादा लगाये रहनेसे स्नायु-मण्डल या नरवस सिस्टमका दिवाला निकल जाता और दिमाग़की कमज़ोरीकी नींव पड़ जाती है। शेषमें दिमाग़ बेकाम होकर, स्मरण-शक्ति घट जाती और अपस्मार या उन्माद-रोगकी जड़ जमती है।

(५) सादा भोजन सदा अच्छा है। इसमें ज़रा भी शक नहीं कि, दो तिहाई स्नायविक या नरवस रोग मज़ेदार, लज़ीज़ और शौक़ीनी चीज़ें खाने और शराब प्रभृति उत्तेजक पदार्थ सेवन करनेसे होते हैं।

(६) शीतल जलका स्नान नरवस-रोग नाश करनेमें बहुत ही उत्तम है। डाक्टर गन कहते हैं,—मेरा तजुर्बा है कि, शीतल जलका स्नान टानिक या बलवर्द्धक है। बहुत-से कष्टसाध्य रोगी मैंने केवल शीतल जलके स्नानसे आराम होते देखे हैं।

(७) जिनकी नर्व (Nerve) या स्नायु दुर्बल हैं, उन्हें बड़े सवेरे उठना चाहिये और कलेवेसे पहले कुछ कसरत करनी चाहिये। बहुत देर तक सवेरे सोते रहनेसे कमज़ोरी आती और शरीर ढीला होता है। स्नायविक रोगोंमें कसरत या वर्जिश यदि दवासे बढ़कर नहीं है, तो कम भी नहीं है। इस प्रकारके रोगोंमें चित्तको बहलाना, दिलको खुश करना, उसे और तरफ फेरना या लगाना, नयी-नयी जगह और नवीन-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नवीन चीज़ें देखना—बहुत ही मुफ़ीद है। डाक्टर गन कहते हैं कि, देश-देशान्तरकी यात्रा या सफ़र करना; अजीब-अजीब देश और नगर देखना, चित्ताकर्षक दृश्य या सीनेरीके अवलोकनसे नेत्र और मनको प्रसन्न करना; घोड़ेपर, खुली गाड़ीमें और कभी-कभी पैदल ही सैर करना बहुत लाभदायक है।

(८) याद रखो, नरवस सिस्टम और उसकी शक्तियोंका आमाशय या हाज़मेके यंत्रोंसे बड़ा निकट सम्बन्ध है। आमाशय सिस्टमकी माँ है। न्यूमोगैस्ट्रिक नर्व या स्नायुका आमाशयसे सम्बन्ध है। उसपर अस्वाभाविक ज़ोर डालनेसे हम मन्दाग्नि, पेटमें हवा भर जानेके रोग और स्नायविक रोगोंको बुलाते हैं। पेट भरकर भोजन करनेके बाद, शारीरिक और मानसिक कोई भी काम करना—बड़ा बुरा मालूम होता है। डाक्टर ई० बी० कुक महाशय अपनी "फिलासोफी आव् हैल्थ" (Philosophy of Health) नाम्नी पुस्तकमें लिखते हैं:—घोड़ा या बैल जब पेट भर चराई कर लेते हैं, तब उनकी इच्छा किसी भी कामको करनेकी नहीं रहती। उनके मालिकोंको भी चाहिये कि, खाना खाये घण्टा भर न हो जाय तब तक, उनसे कोई बड़ा काम न लें। शेर और चीते वग़ैरः खूँख़्वार दरिन्दे जब पेट भर भोजन कर लेते हैं, तब कुछ समयके लिये अपनी खूँख़्वारी छोड़ देते हैं और अपेक्षाकृत हानि न करनेवाले या ग़ैर मुज़िर अथवा ग़रीब हो जाते हैं। यही हाल आदमियोंका है। अगर किसी बदमिज़ाज भयंकर आदमीसे अपनी भलाईका काम लेना हो, तो उससे उस समय मिलो, जब कि वह भोजन करके उठा हो। अगर किसी कंजूस-मक्खीचूससे कुछ दान या ख़ैरात लेनी हो, तो उसके पास उस वक़्त जाओ जब कि वह भोजन करके उठा हो। ऐसे मौक़ेपर इन लोगोंसे बुराई नहीं होती और ये अपने याचकको कोरे हाथों टरका भी नहीं सकते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

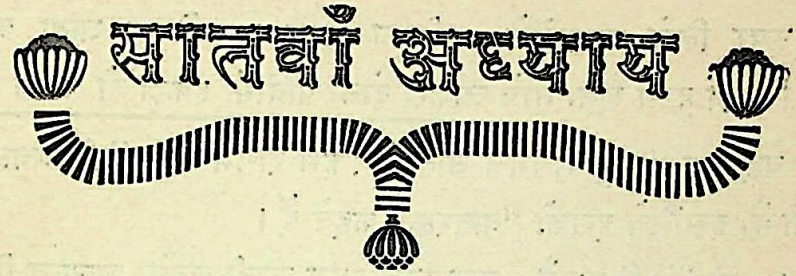

वातरक्त-वर्णन।

वातरक्तके निदान-कारण।

वातरक्त-रोगके कारण या उसके पैदा करनेवाले निम्नलिखित आहार-विहार हैं:—

(१) नमकीन पदार्थ। (२) खट्टे पदार्थ। (३) चरपरे पदार्थ।
(४) गरम पदार्थ। (५) चिकने पदार्थ। (६) खारी पदार्थ।
(७) सड़ा हुआ मांस। (८) सूखा हुआ मांस। (९) तिलोंकी खल।
(१०) कुल्थीकी दाल। (११) उड़दकी दाल। (१२) लोबिया।
(१३) पत्तोंके साग। (१४) बैंगन आदि साग। (१५) ईख।
(१६) दही। (१७) माठा। (१८) काँजी।
(१९) मछली। (२०) शराब। (२१) दिनमें सोना।
(२२) रातमें जागना। (२३) हाथी-घोड़ेकी सवारी। (२४) बहुत राह चलना।
(२५) अजीर्णमें खाना। (२६) विदग्धपाकपर खाना।

इन आहार-विहारोंके अत्यधिक सेवन करनेसे,—नाजुक-बदन, कोमल, दुबले-पतले, गद्दियोंमें तकियोंके सहारे पड़े रहनेवाले, हाथी-घोड़ोंकी सवारी करनेवाले और बहुत रास्ता चलनेवाले मनुष्योंके "वात और रक्त" कुपित हो जाते हैं। इन कारणोंमेंसे किसीसे "वायु" कुपित होता है, किसीसे "खून" कुपित होता है और किसीसे "वात और रक्त" दोनों ही कुपित होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातरक्तकी सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे कारणोंसे, शरीरका सारा खून बिगड़ जाता और यह बिगड़ा हुआ खून, नीचे जाकर, दोनों पाँवोंमें इकट्ठा हो जाता है। वहाँ यह खून "वायु"से मिल जाता है। इस रोगमें "वायु"की प्रबलता रहती है, इसलिये इसको "वातरक्त" कहते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है—बलवानके साथ कुश्ती लड़ने, अत्यन्त मिहनत करने, भारी और गरम भोजन करने और बारम्बार भोजन-पर-भोजन आदि कारणोंसे खून बिगड़कर, राहमें—धमनियोंके मार्गमें—ठहरकर, वायुसे मिल जाता है अथवा वायुकी राहको रोक देता है; तब राह रुक जानेसे, वायु वेदना पैदा कर देता है। इस रोगको "वातरक्त" कहते हैं। यह रोग पहले हाथ-पाँवोंमें होकर, फिर शरीरमें फैलता है।

नोट—"सुश्रुत"के वचनसे पहले खून बिगड़ता है, फिर इसे "रक्तवात" न कहकर "वातरक्त" क्यों कहते हैं, यह सवाल मनमें उठता है। इसका जवाब, यह है कि, दोषोंके कारण, इस रोगमें "वायु"की प्रधानता या प्रबलता रहती है, इसीसे इसे "वातरक्त" कहते हैं। किसीने कहा है:—

दुष्टेवाते रक्तमाशु प्रदुष्येत्तत् प्राबल्यादुच्यते वातरक्तम्।

घोड़े-हाथी आदिकी सवारी बहुत करनेसे, वायु दूषित होकर, रक्तको दूषित कर देता है। इसमें वायुका ज़ोर ज़ियादा रहता है, इसलिये इसे "वातरक्त" कहते हैं। कोई कहते हैं, हाथी-घोड़े आदिकी सवारी वग़ैरः कारणोंसे, खून गरम होकर वातमें मिल जाता है और "वातरक्त" रोग पैदा करता है।

वातरक्तके पूर्वरूप।

जब "वातरक्त" होनेवाला होता है, तब पसीने बहुत आते हैं अथवा ज़रा भी नहीं आते; शरीर दुबला हो जाता है, चमड़ेकी छूनेकी ज्ञान-शक्ति नष्ट हो जाती है; व्रण होते हैं, तो उनमें अत्यन्त

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वेदना होती है; सन्धियों या जोड़ोंमें ढीलापन होता है, आलस्य आता है, अङ्ग जड़ हो जाते हैं, फोड़े-फुन्सी निकलते हैं; घोंटू, जाँघ—उरु, कमर, हाथ, पाँव और शरीरके जोड़ोंमें हथियारसे छेदनेकी-सी पीड़ा होती है, अङ्ग फड़कते हैं, मेद बढ़ जाती है; भारीपन, ग्लानि, खुजली, सन्धियों या जोड़ोंमें दर्द, अङ्ग फड़कना, बारम्बार दाह या जलन होकर शान्त हो जाना, चमड़ेकी कान्तिका नष्ट हो जाना और चकत्ते पड़ जाना—ये लक्षण होते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है, "वातरक्त" होनेवालेके अङ्गोंमें दर्द, दाह, खाज, सूजन, जकड़ाव, खरदरापन, शिरा,स्नायु और धमनियोंमें फड़कन; जाँघोंमें कमज़ोरी तथा हाथोंकी हथेली, पैरोंके तलवे, उँगलियों और टख़ने वग़ैरःमें अकस्मात् काले-काले चकत्ते हो जाते हैं। अगर इस हालतमें कोई इलाज नहीं कराता और कुपथ्य करता है, तो यह रोग प्रकाश्य रूपसे शरीरपर हो जाता है। अगर "वातरक्त"के प्रकट हो जानेपर भी, जो कोई इलाज वग़ैरः नहीं करता, उसके शरीरमें विकलता हो जाती है।

"सुश्रुत"के निदान-स्थानमें लिखा है,—अगर दोनों पैर शिथिल और शीतल हों तथा पसीने बहुत आते हों अथवा इसके विपरीत दोनों पैर गरम हों, पसीने न आवें, विवर्णता हो जाय, दर्द रहे, पैर सो जावें, पैरोंमें बहुत ही भारीपन और दाह हो, तो समझो कि "वातरक्त" होनेवाला है।

खुलासा यह है कि, वातरक्त होनेसे पहले खाज होती, वेदना होती, शरीरका रङ्ग बिगड़ जाता, चकत्ते होने लगते, चमड़ेका स्पर्श-ज्ञान चला जाता, फोड़े-फुन्सी होते, कहीं भी घाव हो जानेसे जल्दी आराम नहीं होता और शरीरपर चींटियाँ-सी चलती हुई जान पड़ती हैं। चतुर मनुष्यको, इस हालतमें, ख़बरदार होकर उचित उपाय करने चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—पूर्वरूपमें पसीने बहुत आना या बिलकुल न आना—यह रोगका प्रभाव है।

वातरक्तके भेद।

वातरक्त छै तरहका होता है:—

(१) वाताधिक्य वातरक्त। (२) पित्ताधिक्य वातरक्त।
(३) रक्ताधिक्य वातरक्त। (४) कफाधिक्य वातरक्त।
(५) द्विदोषाधिक्य वातरक्त। (६) त्रिदोषाधिक्य वातरक्त।

वाताधिक्य वातरक्तके लक्षण।

अगर वातरक्तमें "वायु" ज़ियादा होती है, तो शूल बहुत चलते हैं, अङ्ग फड़कते हैं, पीड़ा होती है; सूजनमें रूखापन और कालापन होता है, सूजन बढ़ती-घटती है, नाड़ियों और उँगलियोंके जोड़ सुकड़ जाते हैं, अङ्ग रह जाते हैं, अत्यन्त व्यथा होती है, शीतल चीज़ें छूनेमें बुरी लगती हैं, शरीर अकड़ जाता है, कम्प होता है और चमड़ेका स्पर्श-ज्ञान नष्ट हो जाता है।

ध्यान रखो, शूल और फड़कन आदि उपद्रव पैरोंमें होते हैं, क्योंकि "सुश्रुत"ने कहा है, वातरक्तमें दोनों पाँव उद्वेगको प्राप्त होते हैं और दोनों पाँवोंमें पीड़ा, फूटनी, सूजन और जड़ता होती है।

वाताधिक्य वातरक्तकी सूजन रूखी और काली होती है तथा वह घटती-बढ़ती है, दर्द बहुत होता है, ठण्डी चीज़ें छूने या शरीरके लगनेसे बुरा मालूम होता है, पाँव सूने हो जाते हैं, उनमें पीड़ा और फूटनी होती है—ये मुख्य लक्षण हैं।

रक्ताधिक्य वातरक्तके लक्षण।

अगर वातरक्तमें "खून"की अधिकता होती है, तो लाल रङ्गकी या ताम्बेके-से रङ्गकी सूजन होती है। उस सूजनमें खुजली चलती और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्लेद या मवाद बहता है तथा उसमें तोड़नेकी-सी पीड़ा होती है। यह सूजन चिकने और रूखे पदार्थोंसे शान्त नहीं होती। यह सूजन भी पैरोंमें ही होती है।

नोट—इस रोगमें जिस रुधिरकी अधिकता होती है, उसे वातरक्त पैदा करनेवाले रुधिरसे अलग समझना चाहिये। क्योंकि रुधिर भी दूसरे रुधिरको दूषित करता है।

पित्ताधिक्य वातरक्तके लक्षण।

पित्ताधिक्य वातरक्तमें दाह, मोह, पसीने, मूर्च्छा, मद और प्यास ये लक्षण होते हैं। सूजनकी जगह छूनेसे दर्द होता है; सूजन लाल रंगकी होती है, उसमें दाह या जलन होती है, वह पक जाती है और उसमें बड़ी गरमी होती है। सूजन वग़ैरः उपद्रव दोनों पैरोंमें होते हैं, क्योंकि "सुश्रुत" ने कहा है,—पित्त और खूनसे दोनों पैरोंमें अत्यन्त जलन होती है। वे अत्यन्त गरम, लाल और सूजे हुए तथा नर्म होते हैं।

खुलासा यह है कि, पित्ताधिक्य वातरक्तमें "मोह और दाह" ये लक्षण ख़ासकर होते हैं।

कफाधिक्य वातरक्तके लक्षण।

कफकी अधिकतावाले वातरक्तमें शरीर गीले कपड़ेसे ढका हुआ-सा जान पड़ता है; भारीपन, स्पर्श-शक्तिकी कमी, चिकनापन, स्पर्शमें शीतलता, खुजली और हलकी पीड़ा—ये लक्षण होते हैं। भारीपन और जड़ता या स्पर्श-शक्तिकी कमी आदि लक्षण पैरोंमें होते हैं, क्योंकि "सुश्रुत"ने कहा है, जब खून कफसे दूषित होता है, तब पाँवोंमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुजली होती है, वे सफेद सूजनयुक्त, सख्त, शीतल और स्तब्ध हो जाते हैं।

खुलासा यह है कि, कफाधिक्य वातरक्तमें शरीरमें "खुजली और सूजन" होती है।

द्विदोषाधिक्य और त्रिदोषाधिक्य वातरक्तके लक्षण।

दो दोषोंकी अधिकता होनेसे दोनों दोषोंके और तीनों दोषोंकी अधिकता होनेसे तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं।

त्रिदोषाधिक्यवाला वातरक्त अक्सर दोनों पैरोंके तलवोंमें होता है। वहाँ सफेद मटरोंके समान हज़ारों छाले पड़ जाते हैं, पर कभी-कभी यह त्रिदोषवाला वातरक्त हाथोंमें भी हो जाता है। उस समय, दोनों हाथोंकी हथेलियोंमें सफेद मटर-जैसे सैकड़ों फफोले हो जाते हैं। उनमें जलन और खुजली भी होती है।

पैरोंके सिवा वातरक्तके और स्थान।

वातरक्त पैरोंकी जड़से पैदा होकर और कभी-कभी हाथोंकी जड़से उठकर, सारे शरीरमें उसी तरह फैल जाता है; जिस तरह चूहेका विष धीरे-धीरे सारे शरीरमें फैल जाता है।

वातरक्तके उपद्रव।

नींद न आना, अरुचि, श्वास, मांस गल-गलकर गिरना, सिरमें पीड़ा, मूर्च्छा, कम दीखना, प्यास, ज्वर, मोह, कम्प, हिचकी, पंगुता, विसर्प—चकत्ते होना, पकना, सूई चुभानेकी-सी पीड़ा, भ्रम, क्लम,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्लानि, उँगलियोंका टेढ़ा हो जाना, फूटना, जलन होना, मर्म-स्थानोंमें दर्द होना और अर्बुद या गाँठ होना—ये सब वातरक्तके उपद्रव हैं।

साध्यासाध्यता।

अगर वातरक्तमें ऊपर लिखे सब उपद्रव हों, तो उसे असाध्य समझो। अगर केवल एक "मोह" हो, तो भी असाध्य समझो। अगर इन उपद्रवोंमेंसे कुछ उपद्रव हों, तो याप्य समझो। अगर उपद्रव न हों, तो साध्य समझो।

अगर वातरक्त एक दोषवाला और एक सालका हो, तो उसे साध्य समझो। दो दोषोंवालेको याप्य समझो। तीनों दोषवाले और सब उपद्रववालेको असाध्य समझो।

जो वातरक्त पाँवोंसे लेकर घुटनों तक फैला हो, उसे असाध्य समझो।

जिस वातरक्तमें चमड़ी फट जाय, उसे असाध्य समझो।

जिस वातरक्तमें बलक्षय और मांसक्षयके लक्षण हों, उसे असाध्य समझो।

कोई-कोई कहते हैं,—जिस वातरक्तको पैदा हुए एक साल हुआ हो, उसे याप्य समझो।

"सुश्रुत"में लिखा है, जो वातरक्त घोंटुओं तक फूट निकला हो, फट गया हो, झिरने लगा हो यानी मवाद देने लगा हो, बल-मांसक्षय आदि उपद्रवों सहित हो और एक वर्षका हो, उसे असाध्य समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातरक्त-चिकित्सामें—
याद रखने योग्य बातें ।

(१) वातरक्त पादमूल या हस्तमूल अर्थात् पैरों और हाथोंसे आरम्भ होता और जल्दी ही चिकित्सा न करनेसे सारे शरीरमें फैल जाता है, अतः इसके पूर्व्वरूप नज़र आते ही, चिकित्सा करनी चाहिये। वातरक्त साधारण रोग नहीं है, इसीसे "सुश्रुत"ने इसकी गणना महा वात-व्याधियोंमें की है।

चरकादि कई आचार्योंने वातरक्तके दो भेद माने हैं:—

(१) उत्तान, और (२) गम्भीर। चमड़े और मांसमें रहनेवाला वायु उत्तान और भीतर रहनेवाला गम्भीर कहलाता है। पर अधिकांश आचार्य्योंने, "सुश्रुत"का मत मानकर, ये भेद नहीं माने हैं और कितनों ही ने माने हैं। भावप्रकाश और "बंगसेन" आदिने "सुश्रुत"का मत माना है, जब कि वृन्द आदिने चरकका मत माना है। "सुश्रुत"ने लिखा है:—

द्विविधं वातशोणितमुत्तानमवगादं-
चेत्यके भाषन्तेतत्तुन सम्यक्।
कुष्ठवदुत्तानं भूत्वा कालान्तरेण-
वगाढ़ी भवति तस्मान्नद्विविधम्॥

कितने ही आचार्य्य कहते हैं, वातरक्त दो तरहका होता है:—

(१) एक तो शरीरके ऊपर उभरा हुआ, और (२) दूसरा शरीरके भीतर घुसा हुआ। परन्तु यह मत ठीक नहीं है। यह रोग, कोढ़की तरह, शरीरके ऊपर होकर, कालान्तरमें, शरीरके भीतर घुस जाता है; इसलिये यह दो तरहका नहीं हो सकता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हमारी तुच्छ रायमें, उत्तान और गम्भीर इन दो भेदोंके माननेसे हानि कुछ भी नहीं। चिकित्सा दोनों तरह हो सकती है, इनको मानकर भी और न मानकर भी।

उत्तान या ऊपरके वातरक्तमें लेप लगाना, मालिश करना, तरड़े देना और स्नान करना हित है। गम्भीर या भीतरी वातरक्तमें आस्थापन वस्ति करना—गुदामें पिचकारी देना और स्नेहपान करना —तेल-घी आदि चिकनी चीजें पीना हित है।

"पिंड तैल" आदि तेलोंकी मालिश कराना, लेप लगाना, तरड़े देना; नश्तर, जौंक या सींगी आदिसे खून निकालना, जुलाब आदिसे शरीर शुद्ध करना और पेटमें "तिक्तकादि घृत" पिलाना—ये उपाय दोनों ही वातरक्तोंमें हितकारी हैं।

गम्भीर या भीतरके वातरक्तमें विशेषकर शास्त्रमें लिखे हुए "घी" पिलाना, जुलाब देना, फ़स्द खोलना और पथ्य तथा हल्का भोजन कराना अच्छा है।

वाताधिक्य उत्तान या ऊपरके वातरक्तमें, किसी क़दर "गरम किये हुये लेप" आदि लगाना हित है। क्योंकि शीतल लेपोंसे दाह, जलन, सूजन, खुजली और शूल-रोग पैदा होते हैं; किन्तु पित्तरक्तकी अधिकतावाले वातरक्तमें "शीतल लेप" हितकारी हैं; गरम लेप करनेसे दाह, पीड़ा, पसीना और विदारण प्रभृति उपद्रव होते हैं। अतः अगर विशेष चिकित्सा करनी हो, तो वातरक्त "वाताधिक्य" है या "पित्ताधिक्य"—इसका पूरा पता लगाकर ही ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि वाताधिक्यमें शीतल लेप हानि करेगा और पित्ताधिक्यमें गरम लेप हानि करेगा। इसी तरह औरोंमें भी समझिये।

(३) वातरक्त-रोगमें, घृतादि पिलाने, चमड़ेपर तेल या लेप लगाने, दवाओंके पानी या काढ़ेके तरड़े देनेकी सभीने राय दी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर खून निकालने और गुदामें पिचकारी देनेपर, आचार्य्योंने बहुत ज़ोर दिया है। किन्तु खून निकालनेमें ज़रा-सी भूलसे बहुत भयङ्कर परिणाम हो सकता है, अतः यह काम खूब सोच-समझकर करना चाहिये, ताकि उल्टे लेने-के-देने न पड़ें।

"भावप्रकाशमें" लिखा है,—पहले वातरक्त रोगीको स्नेहपान आदिसे स्निग्ध या चिकना करना चाहिये; यानी घी वग़ैरः पिलाकर कोठेको चिकना करना चाहिये। इसके पीछे दोषों और बलाबलका विचार करके, थोड़ा-थोड़ा खून निकलवाना चाहिये। परन्तु खून निकलवानेमें "वायुका बचाव" अवश्य करना चाहिये; अर्थात् खून निकलवानेसे वायु न बढ़े, इस रीतिसे खून निकलवाना चाहिये। क्योंकि खूनके निकलनेसे अगर वायु बढ़ता है, तो गम्भीर सूजन, अकड़न, नसोंमें दर्द, ग्लानि तथा वात सम्बन्धी और रोग हो जाते हैं। अगर जितना चाहिये उतना खून बाक़ी नहीं रहता, तो खञ्जता आदि वातरोग हो जाते हैं और बहुधा रोगी मर भी जाता है। अतः आगा-पीछा देखकर, शरीरसे प्रमाण अनुसार, खून निकलवाना चाहिये। अंधाधुन्ध खून निकलवाना रोगीकी हत्या करना है।

अगर कोई कहे कि, खून निकलवानेमें जोखिम है, अतः हम खून निकलवाएँगे ही नहीं—तो यह भारी भूल है। जिस रोगका जो इलाज है वह करना ही चाहिये, क्योंकि बिना उसके रोग आराम न होगा और इस तरह भी रोगी मरेगा। रक्ताधिक्य वातरक्तमें या रक्तकी प्रधानतावाले वातरक्तमें खून निकलवाये बिना सफलता होना कठिन है। सुश्रुतने कहा है—

शोणितमोक्षं चाभीक्ष्णं कुर्वीत। उच्छ्रित दोषे।
च वमन विरेचनास्थापनानुवासनकर्म कर्त्तव्यम्॥

वातरक्तमें अच्छी तरह फ़स्द आदि खोलकर खून निकालना चाहिये। दोषोंकी अधिक उल्बणतामें वमन, विरेचन और आस्था-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पन-अनुवासन वस्तिकर्म—गुदामें पिचकारी ये सब करने चाहिये। खुलासा यह है कि, खूनकी ज़ियादतीकी हालतमें फ़स्द, नश्तर, सींगी या जौंकसे खून निकालना चाहिये। कफकी प्रबलतामें वमन, पित्तकी प्रबलतामें विरेचन-जुलाब और वातकी प्रबलतामें वस्ति-कर्म या गुदामें पिचकारी लगाना हित है।

जिस रोगीके घोर दाह होता हो—जलन होती हो अथवा सूई चुभानेका-सा दर्द होता हो, उसके जौंक लगवाकर खून निकालना चाहिये।

अगर चमचमाटी, खुजली, पीड़ा और कँप-कँपी—ये उपद्रव हों, तो सींगी लगवाकर खून निकालना चाहिये।

अगर वातरक्त शरीरके एक हिस्सेसे दूसरेमें जाता हो, तो पछने लगाकर या फ़स्द खोलकर खून निकालना चाहिये।

वातरक्तमें स्पर्श-शक्ति या चमड़ेकी ज्ञान-शक्ति भी नाश हो जाती है, अतः जिस जगहकी ज्ञान-शक्ति नष्ट हो गई हो, वहाँका खून जौंक लगवाकर या नश्तर देकर निकालना चाहिये; लेकिन अगर अङ्ग सूख गया हो या वायुका कोप अधिक हो, तो खून न निकालना चाहिये।

अगर शरीरमें ग्लानि हो, तो खून न निकालना चाहिये। अगर निकालना ही हो, तो इस तरह निकालना चाहिये, जिससे वायु न बढ़े। वाग्भट्टने कहा है:—

वातशोणित नो रक्तं स्निग्धस्य बहुशो हरेत्।
अल्पाल्पं पालयन्वायुं यथादोषंयथाबलम्॥

चिकने तैल-घी आदि पीये हुए वातरक्त-रोगीके दोष और बलका विचार करके, और वायुकी रक्षाका ख़याल रखकर, बारम्बार थोड़ा-थोड़ा खून निकालना चाहिये। मतलब यह है कि, रोगमें कौनसे दोषका कोप है, दोषका बल कितना है, रोगीमें कितना बल है, इन बातोंको समझकर, बारम्बार थोड़ा-थोड़ा खून निकालना चाहिये; क्योंकि अन्धाधुन्ध एक ही बारमें आफ़त काटनेके लिए, बहुत-सा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खून निकाल देनेसे, वायुके कोपसे, अनेक वातरोग होने और मरीज़के मरनेका ख़तरा रहता है।

अब हम वस्तिकर्म या पिचकारी लगानेके सम्बन्धमें लिखते हैं, क्योंकि अनेक आचार्योंने, वातरक्त रोगमें, गुदामें पिचकारी लगाना सर्वोत्तम उपाय कहा है। वाग्भट्टने लिखा है:—

निहरेद्वा मलं तस्य सघृतैः क्षीरवस्तिभिः।
नहि वस्तिसमं किंचिद्वातरक्तचिकित्सतम्।
विशेषात्पायुपार्श्वोरु पर्वास्थि जठरार्त्तिषु॥

घी और दूधकी पिचकारियोंसे उस रोगीका मल निकालना चाहिये, क्योंकि वस्ति-कर्म—गुदामें पिचकारी लगाकर मल निकालनेके समान, वातरक्तकी और चिकित्सा नहीं है। गुदा, पसली, जाँघ, सन्धि, हड्डी और पेट—इन अङ्गोंके दर्दमें "वस्ति-कर्म" या पिचकारी लगाना ख़ास तौरसे मुफीद है।

किसीने कहा है, स्नेहयुक्त—तेल वग़ैरः चिकनी चीज़ मिली हुई—विरेचक या दस्तावर दवा खिलाना और स्नेह द्रव्य—तैल आदिकी पिचकारी लगाना वातरोगमें हित है। "भावप्रकाश"में लिखा है,—वातरक्तवालेको पहले घी-तैल आदि पिलाकर, उसका कोठा चिकना कर लेनेके बाद, तैलादि चिकनी चीज़ मिला हुआ जुलाब या नर्म दस्तावर दवा देकर मल निकालना चाहिये और गुदामें बारम्बार पिचकारी लगानी चाहिये।

किसीने लिखा है, घी, तेल, चरबी और मज्जा पिलाकर, घी या तेलकी मालिश करके, गुदामें पिचकारी लगाकर और सुखोष्ण उपनाह या सुहाता-सुहाता सेक करके वातरक्तको आराम करना चाहिये। सुश्रुतने भी कहा है:—

उपनाह परीषेक प्रदेहाभ्यं जनानि च।
शरणान्य प्रवातानि मनोज्ञानि महांतिचा॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मृदुगंडोपधानानि शयनानि सुखानि च।
वातरक्ते प्रशस्यन्ते मृदु संवाहनानि च॥

वातरक्तमें, उपनाह, परिषेक, लेप, तैलादि चिकनी चीज़ोंकी मालिश, वायु-वर्जित विशाल और सजा हुआ घर, नर्म-नर्म तकिये और ओढ़ने-बिछानेके कपड़े एवं धीरे-धीरे हाथ-पाँव दाबना—ये सब हित हैं।

खुलासा यह है कि, वातरक्तमें वैद्यको नीचे लिखे हुए काम करने चाहियेः—

(१) स्नेहपान कराना—घी-तेल आदि पिलाना।
(२) तेल वग़ैरः चिकनी चीज़ मिला हुआ जुलाब देना॥
(३) विचारके साथ शरीरका खून निकालना।
(४) दवाओंके काढ़ेके तरड़े देना।
(५) सुखोष्ण उपनाह या सुहाता-सुहाता सेक करना।
(६) गुदामें घी-दूध या तैलादिकी पिचकारी लगाना।
(७) उत्तम औषधि खिलाना।
(८) पथ्य सेवन कराना और अपथ्य छुड़ाना॥
(९) लेप लगाना और मालिश कराना।
(१०) ज़रूरत हो तो दवाएँ रखकर बाँधना।

(४) लेप किस हालतमें गरम करके लगाना चाहिये और किस हालतमें शीतल लगाना चाहिये, इसका विचार किये बिना अंधा-धुन्ध काम करना ठीक नहीं है। जैसे—शाली चावल, साँठी चावल, नल या नरकल, बेंत, तालीस, सिंघाड़ा, गलोडा नामका पहाड़ी फल, हल्दी, गेरू, सिवाल, पद्माख और कमलके पत्ते—इन सबको "धान्याम्ल नामकी काँजी" में पीसकर और "घी" मिलाकर पित्त-प्रबल वातरक्तमें लेप करना चाहिये। अगर यही लेप वात-प्रबल वातरक्तमें करना हो, तो कुछ गरम करके लगाना चाहिये और रक्त-प्रधान वातरक्तमें यही लेप, पित्त-प्रधान वातरक्तकी तरह, शीतल ही लगाना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) यों तो वातरक्तकी अनेक दवा हैं, पर "गिलोय" के समान और दवा नहीं है। सच पूछो तो वातरक्तमें "गिलोय" अमृत है। वातरक्तमें गिलोयका काढ़ा, गिलोयका स्वरस, गिलोयका चूर्ण अथवा कल्क सभी मुफीद हैं। अकेली गिलोयके सेवनसे वातरक्त नाश हो जाता है। वैद्य लोग इस रोगमें और दवा खिलाकर भी, अनुपान रूपसे, गिलोयका काढ़ा पिलाते हैं। "योगराज गूगल" खाकर, ऊपरसे गिलोयका काढ़ा पीनेसे वातरक्त शर्त्तिया चला जाता है। वाताधिक्य वातरक्त में "पुराना घी" पिलाना अमृत है। गायके धारोष्ण दूधमें "गोमूत्र" मिलाकर पिलानेसे दोषोंका अनुलोमन होता है। पित्ताधिक्य वातरक्तमें, "दूध और रेंडीके तेलका जुलाब" अत्यन्त हित है। पित्ताधिक्य वातरक्तमें "सौ बार या हज़ार बारका धोया घी" लगाना अक्सीर है। रक्ताधिक्य वातरक्तमें, विचारपूर्व्वक, फ़स्द, सींगी या जौंकसे "खून निकालना" सर्व्वोत्तम उपाय है। वातरक्त रोगीको, जलपानके समय भिगोये हुए चने खाना ख़ास तौरसे मुफीद है। सब तरहके वातरक्तोंमें मल-मूत्र रोकना, गुस्सा करना, आग या धूपके सामने रहना, मैथुन करना, दिनमें सोना और कसरत करना महा अनर्थकारक हैं। ऐसी-ऐसी बातें वातरक्त-चिकित्सकको हर समय याद रखनी चाहिये।

(६) याद रखो, वातरक्त-रोगमें निम्बादि चूर्ण, वृहत् मञ्जिष्ठादि क्वाथ, अमृतादि चूर्ण, योगसारामृत, अमृतादि गुग्गुल, सिंहनाद गुग्गुल, किशोर गूगल, गुड़ची घृत और पिंड तैल आदि परीक्षित हैं। ये सब तरहके वातरक्तोंको निश्चय ही नाश करते हैं।

(७) बिना पथ्य सेवन किये और अपथ्य त्यागे रोगी आराम हो नहीं सकता, अतः वैद्यको चाहिये कि, रोगीका पथ्य और अपथ्य-पर खूब ध्यान दिला दे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातरक्त-रोगमें—नये चावल, मांस, मछली, सेम, मटर, गुड़, दही, तिल, उड़द, मूली, अधिक दूध, लाल कुम्हड़ा या काशीफल, आलू, प्याज, लहसन, लालमिर्च, खटाई, नमकीन पदार्थ, अभिष्यन्दी पदार्थ, भारी पदार्थ, मल-मूत्रका वेग रोकना, आगके पास बैठना, धूपमें फिरना, क्रोध करना, मैथुन करना, दिनमें सोना और मिहनत या कसरत करना ये सब हानिकारक हैं।

पुराने चावल, पुराने जौ-गेहूँ, मूँग-चनेकी दाल, परवल, करेला, सफेद कुम्हड़ा, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते, गेहूँकी रोटी, बथुआ, मकोयका साग; लवा, तीतर, बटेर और बतखका मांस—ये सब पथ्य हैं।

सामान्य चिकित्सा।

वातरक्त-नाशक योग।

गुर्चादि क्वाथ।

गिलोय, बावची, पँवारके बीज, नीमकी छाल, हरड़, हल्दी, आमले, अड़ूसा, शतावर, सुगन्धवाला, बरियारेकी जड़, मुलेठी, महुआ, गोखरू, परवलके पत्ते, खसकी जड़, मँजीठ और लालचन्दन—इन १८ दवाओंको एक-एक माशे या डेढ़-डेढ़ माशे लेकर जौकुट कर लो और डेढ़ पाव पानीमें मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छान लो और शीतल होनेपर पीलो।

इस काढ़ेके सवेरे-शाम, दोनों समय, एक महीने तक पीनेसे वातरक्त, खूनके विकार, सब तरहके वात-रोग, सब तरहके कोढ़, खाज, खुजली और चकत्ते वगैरः निश्चय ही नाश हो जाते हैं। यद्यपि

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह काढ़ा शास्त्रोक्त है, पर हमारा अनेक बारका परीक्षित है। हमने इसे कभी फेल होते नहीं देखा। जब आप वातरक्त और खूनके रोगोंपर दर्जनों शीशियाँ पीनेपर भी आरोग्य न हों, इसे एक महीने भर लगातार पीवें। हम प्रत्येक वैद्यसे इसे अपने रोगियोंको देनेकी ज़ोरसे सिफारिश करते हैं। खूब परीक्षित है।

निम्बादि चूर्ण।

नीमकी छाल, गिलोय, बड़ी हरड़, आमले और बावची—प्रत्येक चार-चार तोले लो; सोंठ, बायबिडङ्ग, पँवारके बीज, छोटी पीपर, अजवायन, बच, सफेद ज़ीरा, कुटकी, सफेद कत्था, सैंधानोन, जवाखार, हल्दी, दारुहल्दी, नागरमोथा, देवदारु और कूट—ये सब एक-एक तोले लो। फिर सबको एक जगह मिलाकर पीस-कूटकर छान लो। यही "निम्बादि चूर्ण" है।

इस चूर्णकी मात्रा ३ या ४ माशेकी है। अनुपान—"गिलोयका काढ़ा" है। एक महीने तक, सवेरे-शाम, एक-एक मात्रा चूर्ण खाकर, ऊपरसे गुर्चका काढ़ा पीनेसे असाध्य वातरक्त, सफेद कोढ़, आमवातकी सूजन, तिल्ली, गोला, चर्मदल-कोढ़, सेंहुआ, दाद, विचर्चिका, मण्डल, चकत्ते, जलोदर आदि उदर-रोग, पाण्डु, कामला और सब तरहके फोड़े-फुन्सी आदि निश्चय ही नाश हो जाते हैं। खूनके रोग नाश करनेमें रामवाण है। खूब परीक्षित है।

नोट—कोई सफेद खैर और कोई खैरकी लकड़ी लेते हैं।

अमृतादि चूर्ण।

गिलोयका सत्त आध पाव और शुद्ध गूगल आध पाव—दोनोंको मिलाकर पीस लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण, सवेरे ही, पानीके साथ खानेसे घोर वातरक्त-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—तेल, खटाई, हींग और नमकसे क़तई बचना ज़रूरी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिंहनाद गुग्गुल।

आमले, हरड़, बहेड़ा, बायबिडङ्ग, शुद्ध शिलाजीत, रास्ना, चीतेकी छाल, सोंठ, शतावर, जमालगोटेकी जड़, पीपरामूल, देवदारु, गिलोय, दारुहल्दी, पुनर्नवाकी जड़, छोटी इलायची और गजपीपर—इन सत्रह चीजोंको एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लेकर चूर्णमें मिला दो और "गायके घी"के साथ खूब घोटो। जब घुट जाय, चिकनी हाँडीमें रख दो।

इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान गरम जल या दूध है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खानेसे वातरक्त निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कैशोर गुग्गुल।

शुद्ध भैंसा गूगल १ सेर लेकर एक कपड़ेकी पोटलीमें ढीली बाँध लो। एक सेर त्रिफले और दो सेर गिलोयको कुचल लो। इन तीनोंको १ मन ८ सेर पानीमें औटाओ, बीच-बीचमें गूगलकी पोटलीको हिलाते रहो। जब आधा या २४ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर फिर आगपर रख दो। पोटलीकी गूगलमें "घी" मिलाकर, उसे भी उसी काढ़ेमें डाल दो। जब गाढ़ा होनेपर आवे, उसमें—त्रिफलेका चूर्ण ६ तोले, त्रिकुटेका चूर्ण ६ तोले, बायबिडङ्ग २ तोले, निशोथ १ तोले, दन्तीकी जड़ १ तोले और गिलोय ४ तोले भी मिला दो और आध सेर "घी" भी मिला दो और खूब कूटो। फिर इसे चिकनी हाँडीमें रख दो।

इसकी मात्रा १ तोलेकी है। अनुपान—दूध अथवा गिलोयका काढ़ा अथवा चनोंका भिगोया पानी है। इसके लगातार सेवन करनेसे वातरक्त आदि अनेक रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा अमृतादि चूर्ण।

गिलोय, अरण्डकी जड़, साँठीकी जड़, शतावर, छोटी पीपर, देवदारु, असगन्ध, चिरायता, कुलींजन, पीपरामूल और सोंठ—इनको समान-समान लेकर, पीस-छानकर चूर्ण कर लो। इसमेंसे चार या ६ माशे चूर्ण, तोले भर गायके घीमें मिलाकर, सवेरे ही, नित्य, एक महीने तक, खानेसे वातरक्त अवश्य आराम हो जाता है।

अमृतादि काढ़ा।

गिलोय ८ माशे, सोंठ ८ माशे और धनियाँ ८ माशे—इन तीनोंको कुचलकर डेढ़ पाव पानीमें औटाओ; जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छानकर पीलो। इस काढ़ेके १ महीने तक पीनेसे वातरक्त नाश हो जाता है।

वासादि काढ़ा।

अड़ूसा, गिलोय और अमलताशका गूदा—इनको कुल दो तोले लेकर डेढ़ पाव पानीमें औटाओ। जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छानकर उसमें ६ माशे "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीलो। इसके लगातार कुछ दिन पीनेसे वातरक्त अवश्य आराम हो जाता है।

पटोलादि क्वाथ।

परवलके पत्ते, कुटकी, शतावर, त्रिफला और गिलोय—इनको कुल दो तोले लेकर डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बना लो। चौथाई पानी रहने-पर छानकर पीलो। इस काढ़ेसे वातरक्त और उसकी जलन अवश्य नाश हो जाती है।

रसाभ्र गुग्गुल।

गिलोय २ सेर लेकर १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, काढ़ेको छानकर रख लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रिफला २ सेर लेकर १६ सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी शेष रहे, काढ़ेको उतारकर छान लो।

चार तोले शुद्ध पारे और चार तोले शुद्ध गन्धकको ८ घण्टे तक खरल करके कज्जली कर लो।

लोह-भस्म ४ तोले, अभ्रक-भस्म ८ तोले और शुद्ध गूगल १ सेर अलग तैयार रखो।

त्रिकुटा, त्रिफला, दन्तीकी जड़, गिलोय, इन्द्रायणकी जड़, बाय-बिडङ्ग, नागकेशर और तेवड़ीकी जड़ यानी निशोथ—दो-दो तोले लेकर पीस-छान लो और रख दो।

अब दोनों काढ़े, पारे-गन्धककी कज्जली, लोहभस्म, अभ्रकभस्म और गूगलको एकमें मिलाकर, आगपर औटाओ। जब गाढ़ा हो जाय, उसमें त्रिकुटा प्रभृति दवाओंका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और खूब चलाओ। एकदिल हो जानेपर उतारकर रख दो।

इस "रसाभ्र गूगल" से वातरक्त और कोढ़ अवश्य आराम हो जाते हैं। सच पूछो, तो यह गूगल इन दोनों रोगोंकी परम औषधि है। मात्रा १ तोलेकी है। अनुपान—गिलोयका काढ़ा है; यानी सवेरे ही १ मात्रा खाकर, ऊपरसे गिलोयका काढ़ा पीनेसे वातरक्त और कोढ़ आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

योगसारामृत।

उत्तम भैंसा गूगल २ सेर, त्रिफला १ सेर और गिलोय १२८ तोले—इनको ३२ सेर पानीमें मिलाकर औटाओ और कलछीसे बारम्बार चलाते रहो। जब आधा पानी रह जाय, उसे उतारकर छान लो। इस काढ़ेको फिर बर्तनमें डालकर आगपर औटाओ। जब पकते-पकते, ओलेके समान सफेद और गाढ़ा हो जाय, उतार लो।

शतावर, गंगेरन, विधारा, कौंच, पुत्तर्नचा, गिलोय, छोटी पीपर, असगन्ध और गोखरू—इनको आध-आध सेर लेकर पीस-कूटकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छान लो। फिर इसमें चूर्णसे आधी—अन्दाज़न २। सेर—चीनी मिला दो और खूब मसलो। अब इस चूर्णको ऊपरके पकाये हुए मसालेमें मिला दो।

फिर इस मसालेको एक साफ बासनमें डालकर, ऊपरसे ६४ तोले शहद, ३२ तोले घी भी मिला दो। शेषमें दालचीनी, इलायची और तेजपातका पिसा-छना चूर्ण ४ तोले मिला दो।

इस योगसारामृतके बलाबल अनुसार सेवन करनेसे और पथ्य पालन करनेसे वात, पित्त और कफसे पैदा हुए अनेक रोग तथा वातरक्त नाश हो जाते हैं। धीरे-धीरे इसके सेवन करनेसे सफेद बाल काले हो जाते और बल-पुरुषार्थ बेतहाशा बढ़ता है।

नोट—इस योगसारामृत और अगले योगसारामृतमें इतना ही भेद है कि, इसमें "गूगल" डाली जाती है और उसमें "गूगल" नहीं डाली जाती। यह वृन्दका योग है और वह बङ्गसेन इत्यादिका।

दूसरा योगसारामृत।

शतावर, गंगेरन, विधायरा, उटंगनके बीज, साँठी, गिलोय, छोटी पीपर, असगन्ध और गोखरू—इनको आध-आध पाव लेकर पीस-छान लो।

मिश्री ४५ तोले; दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात तीनों कुल ४ तोले—इनको भी पीस-छानकर रख लो।

अब दोनों चूर्णोंको एकमें मिला दो। ऊपरसे शहद १६ तोले और घी ८ तोले मिला दो और एकदिल करके काँचके भाँड़में रख दो।

इसमेंसे एक या दो तोले दवा रोज सवेरे ही खानेसे वातरक्त, कोढ़, राजरोग, खून-ख़राबीके रोग, वातपित्त, पित्तरक्त और कफके रोग नाश होकर बल-पुरुषार्थ बढ़ता और शरीर कुन्दनकी तरह चमकने लगता है। खूब परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—एक वैद्यराज इसमें ३२ तोले चीनी, १७ तोले शहद और ८५ तोले घी तथा चार-चार तोले इलायची, तेजपात और दालचीनी डालनेकी बात कहते हैं। पर शास्त्रमें चीनी, शहद और घी वग़ैरःकी तोल वही लिखी है, जो हमने लिखी है।

अमृतादि गुग्गुल।

हरड़, बहेड़े, आमले, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, बायबिडङ्ग, तज, गिलोय, निशोथ और जमालगोटेकी जड़ एक-एक तोले, गिलोय १५ तोले, शुद्ध गूगल ३२ तोले और त्रिफला ५१ तोले—इन सबको महीन पीसकर, लोहेकी कढ़ाहीमें, लोहेके डण्डेसे, घी डाल-डालकर, ६ घण्टे तक घोटो और चिकने बर्त्तनमें रख दो।

इस "अमृतादि गूगलकी" मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम जल या दूध है। इसके सेवन करनेसे भयंकर वातरक्त, फोड़े-फुन्सी, घाव, भगन्दर, आमवात और सूजन आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह गूगल भी परीक्षित है।

वातरक्त गजांकुश लेप।

फिटकरी, आमलासार गन्धक और राल ये तीनों चार-चार तोले और रसकपूर ६ माशे—इन सबको महीन पीस लो।

गायका लूनी घी काँसीकी थालीमें रखकर, पानीसे १०१ बार धोलो। इस घीमें ऊपरकी पिसी-छनी दवाओंको मिला दो और मथकर एकदिल कर लो।

यह लेप वातरक्तके चेप बहने और खुजली चलने आदिपर राम-बाण है। आप इसे कमरसे पैरों तक फैले हुए वातरक्तपर लगा दीजिये। ३ या ४ दिनमें ही यह पीले-पीले पानी बहने, चेप लगाने और पीड़ा होने आदिको नष्ट कर देता है। फुन्सियाँ सूख-सूखकर झड़ जाती हैं। यह लेप हमारा कम-से-कम १०० बारका आज़माया हुआ है। कभी फेल नहीं होता। वातरक्तपर तो यह अक्सीर है ही, इससे विसर्प और उपदंशके ज़ख्म भी आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमृतादि घृत।

गिलोय, मुलेठी, मुनक्के, त्रिफला, सोंठ, बरियारा, अड़ूसा, अमलताशका गूदा, सफेद पुनर्नवा, देवदारु, गोखरू, कुटकी, शतावर, छोटी पीपर, गंभारीफल, रास्ना, तालमखाना, अरण्डीकी जड़, विधारा, नागरमोथा और नील कमलका पञ्चांग—इन सबको साढ़े तीन-तीन माशे लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर एक सेर लुगदी तैयार करो।

फिर आमलोंका रस चार सेर, पानी १२ सेर और गायका घी ४ सेर तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "अमृतादि घृत" है।

इसकी मात्रा ६ माशेसे ४ तोले तक है। इस घीको खानेके पदार्थोंके साथ खाने या पीनेसे वातरक्त नाश हो जाता है।

गुड़ूची घृत।

पहले एक सेर गिलोयको लाकर, सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर चार सेर गिलोयको कुचलकर, ६४ सेर जलमें औटाओ; जब १६ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

अब गायका घी ४ सेर, गायका दूध ४ सेर, ऊपरकी लुगदी और १६ सेर काढ़ेको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे ३ तोले तक है। इसके पीनेसे खून साफ होता और कोढ़ तथा दुर्निवार वायु नष्ट होता है। वातरक्तपर यह घी परमोत्तम और परीक्षित है।

शतावरी घृत।

एक सेर शतावरको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चार सेर शतावरको ६४ सेर जलमें औटाकर काढ़ा पका लो; जब १६ सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

फिर गायका घी चार सेर, गायका दूध १६ सेर, ऊपरका काढ़ा १६ सेर और लुगदी मिलाकर घी पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर रख दो। यह घी भी वातरक्त नाश करनेमें उत्तम है। बलाबल अनुसार पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—इस घीकी विधिमें मतभेद है। पर हमने अपनी परीक्षित विधि लिख दी है।

बला घृत।

खिरेंटी, कंघी, मेदा, कौंच, शतावर, काकोली, क्षीरकाकोली, रास्ना और दाख—इनको आठ-आठ तोले लेकर सिलपर पीसकर एक सेर लुगदी तैयार कर लो।

फिर गायका घी चार सेर, दूध १६ सेर और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे घी पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस घीके पीनेसे वातरक्त, हृदय-रोग, पाण्डु-रोग, विसर्प, कामला और दाह ये नष्ट हो जाते हैं।

पिण्ड तैल।

शारिवा, राल, मुलेठी, मँजीठ और मोम—ये सब एक-एक छटाँक लेकर, सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर सवा सेर तेल, पाँच सेर दूध और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस तैलकी मालिश करने या लगानेसे वातरक्तकी पीड़ा आदि नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—लुगदी बनाते समय मोमको अलग रखो, किन्तु तेल पकाते समय मोमको तेलमें मिला दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा पिण्ड तैल।

मँजीठ, शारिवा, राल और मुलहटी—इनको चार-चार तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

फिर ६४ तोले अरण्डीका तेल, २५६ तोले पानी और ऊपरकी लुगदी—इनको कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। पकते समय चार तोले मोम भी डाल दो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस तैल या मरहमके वातरक्तपर लगानेसे अवश्य आराम होता है। परीक्षित है।

दशपाक बला तैल।

खिरेंटी १ सेर लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

खिरेंटी चार सेरको कुचलकर ६४ सेर जलमें पकाओ; जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

फिर चार सेर तेल, सोलह सेर दूध, सोलह सेर काढ़े और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। पक जानेपर छानकर रख लो।

दूसरी बार इस पके हुए तेलको फिर, उतनी ही लुगदी, उतने ही दूध और उतने ही काढ़ेके साथ पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इसी तरह इस तेलको ऊपरकी तरकीबसे दस बार पकाओ। एक बार पके हुए तेलको बारम्बार नौ बार और पकानेसे "दशपाक बला तैल" तैयार हो जायगा।

यह तैल वातरक्त और वातपित्तपर रामबाण है। यह वीर्य-दोष और योनि-रोगोंको भी नाश करता और वीर्य बढ़ाता है।

शतपाक या सहस्रपाक बला तैल।

ठीक ऊपरकी तरकीबसे सौ बार पकानेसे "शतपाक बला तैल" और हजार बार पकानेसे "सहस्रपाक बला तैल" तैयार होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोई कहते हैं,—खिरेंटीकी लुगदी, खिरेंटीका काढ़ा, तेल और दूध—बराबर-बराबर लेकर सौ या हज़ार बार पकानेसे "शतपाक और सहस्रपाक बला तैल" तैयार हो जाता है। विधि दोनों ही अच्छी हैं, पर हमारी लिखी ऊपरकी विधि उत्तम है। उस विधिसे तैयार हुआ तैल ज़ियादा बलवान होता है। पाठक समझ सकते हैं, जब दस बार पके तैलमें इतने गुण हैं, तब हज़ार बार या सौ बारके पके तैलमें कितने गुण होंगे।

यह तैल इन्द्रियोंको चैतन्य करनेवाला, प्राण-रक्षा करनेवाला, पुष्टि करनेवाला एवं वीर्य और रुधिरके विकार नाश करनेवाला है। यह सच्चा अमृत है, अगर कोई ख़र्च और मिहनत बर्दाश्त करे। हमने अपने जीवनमें सिर्फ़ दो बार यह बनाया और जो आनन्द उठाया उसे क़लमसे लिखकर बता नहीं सकते। अफ़सोस है कि, हम इसे सदा न रख सके। दशपाकी सहज है। हज़ारपाकी बड़ी तकलीफ़से तैयार होता है।

महातिक्तक घृत।

सतोना, अतीस, अमलताशका गूदा, कुटकी, पाढ़, नागरमोथा, खस, हरड़, बहेड़ा, आमला, पित्तपापड़ा, परवलके पत्ते, नीमकी छाल, मँजीठ, पीपर, पद्माख, कचूर, सफेद चन्दन, धमासा, इन्द्रायणकी जड़, हल्दी, दारुहल्दी, गिलोय, काला सारिवा, सफेद सारिवा, मूर्वा, अड़ूसा, शताघर, त्रायमाण, इन्द्रजौ, मुलेठी और चिरायता—इन बत्तीस दवाओंको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, लुगदी बना लो।

अगर लुगदी तोलमें ३२ तोले हो, तो घी चौगुना यानी १२८ तोले लो। घीसे दूना—२५६ तोले—आमलोंका रस या काढ़ा और अठगुना—१०२४ तोले (१२ सेर १३ छटाँक)—पानी लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लुगदी, घी, आमलोंका रस और पानी सबको मिलाकर पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और बर्तनमें भरकर रख दो।

इस घीके सेवन करनेसे वातरक्त-रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। इसके सिवा कोढ़, रक्त-पित्त, खूनी बवासीर, पाण्डु-रोग, हृदय-रोग, गोला, विसर्प, प्रदर-रोग, गंडमाला, क्षुद्र-रोग और ज्वर—ये सब भी नाश हो जाते हैं। वातरक्तपर यह घी भी परीक्षित है।

किशोर गुग्गुल नं० १।

गिलोय २ सेर, शुद्ध गूगल १ सेर और त्रिफला १ सेर—इन तीनोंको १६ सेर पानीमें डालकर औटाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

इस छने हुए काढ़ेको फिर लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर और आग-पर रखकर औटाओ और कलछीसे चलाते रहो। जब पकते-पकते गाढ़ा होनेपर आवे, इसमें—

सोंठ २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, बाय-बिड़ङ्ग २ तोले, हरड़ २ तोले, बहेड़ा २ तोले, आमले २ तोले, निशोथ १ तोले, दन्तीकी जड़ १ तोले और गिलोय ४ तोले—इनका चूर्ण मिला दो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। यही "किशोर गूगल" है।

इससे सूजन, व्रण, गोला, कोढ़, उदर-रोग, वातरक्त, खाँसी, मन्दाग्नि, पाण्डु-रोग और प्रमेह-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित विधि है।

इसकी एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे "गरम जल, दूध" या "मंजिष्ठादि काढ़ा" पीनेसे वातरक्त या खून-खराबीके रोग आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किशोर गुग्गुल नं० २।

हरड़, बहेड़े, आमले और गिलोय—एक-एक सेर लेकर जौकुट कर लो और १६ सेर पानीमें डालकर औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

एक सेर शुद्ध गूगल लेकर कूट लो और ऊपरके काढ़ेमें मिला दो। फिर सबको लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर पकाओ और लोहेकी कलछी-से चलाते रहो। जब पाक गुड़के पाक-जैसा गाढ़ा हो जाय, उसमें—

हरड़ २ तोले, बहेड़े २ तोले, आमले २ तोले, गिलोय २ तोले, सोंठ २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, बायबिडंग २ तोले, दन्तीकी जड़ १ तोले और निशोथ १ तोले—इनका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और नीचे उतारकर खूब ही कूटो। जब सब एकदिल हो जायँ, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो और घीकी चिकनी हाँडीमें रख दो।

इसकी एक-एक गोली "गरम जल, दूध या मंजिष्ठादि काढ़े"के साथ सेवन करो। इसको रोगीकी ताकत और रोगका तारतम्य देखकर उचित अनुपानके साथ देनेसे सब तरहके कोढ़, त्रिदोषज वातरक्त, सब तरहके व्रण, गोला, प्रमेह, उदर-रोग, मन्दाग्नि, खाँसी, श्वास और पाण्डु-रोग नाश हो जाते हैं। इसके सेवन करनेसे शरीर सोनेकी तरह दमकने लगता है।

नोट—"मञ्जिष्ठादि काढ़े" के साथ सेवन करनेसे वातरक्तादि खून-ख़राबीके रोग नाश होते हैं। "खदिरादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे व्रण और कोढ़ नष्ट होते हैं। "वासकादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे नेत्र-रोग और "वरुणादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे गुल्मादिक रोग नाश हो जाते हैं।

जो गूगल सेवनसे लाभ उठाना चाहे, उसे खटाई, लालमिर्च, अजीर्ण, मैथुन, मिहनत, धूप, शराब और क्रोध—इनसे क़तई परहेज करना परमावश्यक है। जो अपथ्य त्यागकर गूगल सेवन करता है, उसे ही लाभ होता है अन्यथा उल्टी हानि होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—हमने किशोर गूगलकी तीन विधि लिखी हैं, जिनमें नाममात्रका फ़र्क है। तीनों विधियोंसे हमने यह गूगल बनाई है। यह विधि "शार्ङ्गधर"की है और सर्वोत्तम है।

योगराज गुटी।

सोंठ, पीपरामूल, चव्य, चीता, कालीमिर्च, भुनी हींग, अजमोद, सिरस, सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, रेणुकाके बीज, इन्द्रजौ, पाढ़, बायबिडङ्ग, गजपीपर, कुटकी, अतीस, भारंगीकी जड़, बच, मरोड़-फली, तेजपात, देवदारु, छोटी पीपर, कूट, रास्ना, नागरमोथा, सैंधा-नोन, इलायची, गोखरू, हरड़, धनियाँ, बहेड़ा, आमले, दालचीनी, खसकी जड़, जवाखार और तिल—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर छान लो।

इस चूर्णके बराबर शुद्ध गूगल लेकर इसमें मिला दो और घी डाल-डालकर खूब कूटो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनाकर चिकने बर्त्तनमें रख दो।

इस गूगलमें मैथुन और खाने-पीनेकी कोई रोक-टोक नहीं। यह गूगल बुढ़ापे और रोगोंको नाश करनेवाली है। इससे वात-रोग, आमवात, अपस्मार, मृगी, वातरक्त, कोढ़, दुष्ट व्रण, बवासीर, तिल्ली, गोला, उदर-रोग, पेट फूलना, मन्दाग्नि, श्वास, खाँसी, अरुचि, प्रमेह, नाभि-शूल, कृमि-रोग, क्षय, हृदय-रोग, वीर्य-दोष, उदावर्त्त और भगन्दर नाश होते हैं।

यह गुटी तीन माशेसे शुरू करके, एक हफ्तेमें एक तोले तक बढ़ा देनी चाहिये। भिन्न-भिन्न रोगोंमें इसके अनुपान इस तरह हैं:—

वातरोगोंमें	... ...	रास्नाके काढ़ेके साथ।
मेह-रोग में	... ...	दारुहल्दीके काढ़ेके साथ।
वातरक्तमें	... ...	गिलोयके काढ़ेके साथ।
पाण्डु-रोगमें	... ...	गोमूत्रके साथ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेदवृद्धिमें	...	...	शहदके साथ।
सफेद या काले कोढ़में		...	नीमके काढ़ेके साथ।
शूल-रोगोंमें	...	...	मूलीके काढ़ेके साथ।
चूहेके विषमें	...	...	पाढलकी जड़के काढ़ेके साथ।
उग्र नेत्र-रोगोंमें	...	...	त्रिफलेके काढ़ेके साथ।
समस्त पेटके रोगोंमें		...	पुनर्नवादि काढ़ेके साथ।

गोक्षुरादि गुग्गुल।

११२ तोले गोखरू लेकर जौकुट कर लो और छै गुने यानी ६७२ तोले (८ सेर ३२ तोले) पानीमें डालकर औटाओ। जब आधा यानी सवा चार सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

फिर इस काढ़ेमें २८ तोले गूगल पीसकर मिला दो और पाक आगपर चढ़ाकर गुड़का-सा शीरा बना लो। जब शीरेके समान गाढ़ा हो जाय, इसमें—

सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला और नागरमोथा—ये सात दवाएँ चार-चार तोले लेकर और पीस-छानकर मिला दो और गोला बना लो। फिर उस गोलेसे छोटी-छोटी गोलियाँ बना लो।

इस गूगलसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर-रोग, मूत्राघात, वातरक्त, वात-रोग, धातुरोग और पथरी ये सब नाश हो जाते हैं। शार्ङ्गधरने इसे प्रमेह आदि रोगोंपर प्रधान कहा है, पर यह "वातरक्त"को भी नाश करती है, इसीसे हमने यहाँ लिखी है।

बिडंगाद्य गुग्गुल।

बायबिड़ङ्ग, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, मिर्च और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" मिलाकर, घी डाल-डालकर खूब कूटो और गोलियाँ बना लो।

पथ्य सहित रहनेसे, इस गूगलसे वातरक्त, गोला, उदर-रोग, पाण्डु और सूजन—ये सब नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लघु मंजिष्ठादि क्वाथ।

मँजीठ, हरड़, बहेड़ा, आमला, कुटकी, बच, दारुहल्दी, गिलोय और नीमकी छाल—इन नौ दवाओंको तीन-तीन माशे लेकर और डेढ़ पाव पानीमें औटाकर काढ़ा बना लो और चौथाई रहनेपर छानकर पीलो।

इस काढ़ेसे वातरक्त, खाज, खुजली, खूनके विकार और कापालिक कोढ़ आदि रोग नाश हो जाते हैं। ग़रीबोंके लिए अच्छी चीज़ है; धीरे-धीरे फायदा करता है, पर फायदा ज़रूर करता है। परीक्षित है।

वृहत् मंजिष्ठादि क्वाथ।

मँजीठ, नागरमोथा, कुड़ेकी छाल या जड़, गिलोय, कूट, सोंठ, भारंगी, कटेरीका पञ्चाङ्ग, बच, नीमकी छाल, हल्दी, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा, आमला, परवलके पत्ते, कुटकी, मूर्वा, बायबिड़ङ्ग, बिजैसार, चीतेकी छाल, शतावर, त्रायमाण, छोटी पीपर, इन्द्रजौ, अड़ूसेके पत्ते, भाँगरा, देवदारु, पाढ़, खैरसार, लाल चन्दन, निशोथ, बरनाकी छाल, चिरायता, बावची, अमलताशका गूदा, सहोंड़ाकी छाल, बकायन, कंजा, अतीस, नेत्रवाला, इन्द्रायणकी जड़, धमासा, सारिवा और पित्तपापड़ा—इन ४५ दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूटकर रख लो। इसमेंसे दो तोले दवा लेकर डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बनाओ और चौथाई पानी रहनेपर छान लो।

इस काढ़ेमें दो माशे "पीपरका चूर्ण और २ माशे शुद्ध गूगल" मिलाकर पीलो। इस तरह लगातार एक महीने तक पीनेसे वातरक्त, १८ प्रकारके कोढ़, उपदंश-रोग—आतशक, श्लीपद—हाथीपाँव, अङ्गशून्यता, पक्षाघात, एकांगवात—फालिज, मेदरोग और नेत्ररोग नाश हो जाते हैं।

यदि इन दवाओंमें कचनारकी छाल, बबूलकी छाल, सालसेकी लकड़ी और सरफोंका—ये चार दवाएँ भी मिला ली जायँ, तब तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कहना ही क्या ? अगर इसमें "शहद" या "शर्बत उन्नाव" छै-छै माशे मिला लिये जायँ, तो यह और भी जल्दी आराम करता है।

हमने इसका अर्क़ खींचकर, इससे बहुत काम लिया है। २ तोले अर्क़में ६ माशे "शहद" या "शर्बत उन्नाव" मिलाकर पिलानेसे अनेक कष्टसाध्य और वैद्योंके त्यागे हुए रोगी हमने आराम किये हैं। कोई रोगी १५ दिनमें, कोई १ महीनेमें और कोई तीन महीनेमें इससे आराम हो गये। जिनके शरीर देखनेसे घृणा होती थी, जिन्हें कोई पास न बैठने देता था, वे सब सुवर्णकी-सी कान्तिवाले हो गये। जिन्होंने रोगके बलका विचार किये बिना, जल्दी ही इसे छोड़ दिया, उन्हींको लाभ न हुआ।

नोट—अगर अर्क़ खिंचवाना या खींचना हो, तो सारी दवाएँ—उनञ्चास दवाएँ छै-छै तोले लेकर जौकुट कर लो और रातके समय, मिट्टीके या क़लईदार बर्तनमें दस-बारह सेर पानीमें भिगो दो और २४ घण्टे बाद अर्क़ खींच लो। अगर ५ बोतल अर्क़ निकालोगे, तो अर्क़ बढ़िया होगा। उसकी मात्रा १ तोलेकी ही काफ़ी होगी। अगर १० या १५ बोतल निकालोगे, तो मात्रा २ से ३ तोले तक होगी। १० बोतल अर्क़ अव्वल दर्जेका होगा। काढ़ा बदज़ायके होता है और बड़ी दिक़्क़तोंसे तैयार होता है, पर अर्क़ स्वादमें बुरा नहीं होता और रोगीको कष्ट नहीं होता। बोतलसे निकाल कर वह चट पी लेता है। पहले ज़मानेके रोगी काढ़ा वग़ैरः बना लेते थे। आजकल तो डाक्टरोंकी तरह तैयार माल चाहिये। अतः वैद्योंको "सुदर्शन चूर्ण" और "बृहत् मंजिष्ठादि क्वाथ" का अर्क़ तैयार रखना चाहिये। अगर वैद्य जल्दी लाभ चाहें, तो लालच त्याग कर दस बोतल अर्क़से ज़ियादा न निकालें अथवा दो दर्जे कर दें। दस बोतलके बादका अर्क़ दूसरे दर्जेका समझा जाय।

ब्राह्मी घृत।

ब्राह्मीके पत्तोंका रस ४ सेर, घी ४ सेर और बच, कूट, शंखाहूली—इन तीनोंका चूर्ण मिलाकर आध सेर तैयार करो। फिर इनको मिलाकर घी पका लो। इस घीके खानेसे वातरक्त, उन्माद और अपस्मार आदि नाश हो जाते हैं। यह घी शरीरपर लगाया भी जाता है और लगानेसे कोढ़ आदिको दूर करता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पंचनिम्ब चूर्ण।

कड़वे नीमकी जड़, छाल, फल, पत्ते और फूल—इन पाँचोंको बारह-बारह तोले लेकर पीस-कूटकर ६० तोले चूर्ण बना लो।

फिर इसमें लोहभस्म, छोटी हरड़, पँवाडके बीज, त्रिफला, बायबिडङ्ग, शक्कर, हल्दी, छोटी पीपर, कालीमिर्च, सोंठ, गोखरू, शुद्ध भिलावे, आमले, बावची और अमलताशका गूदा—इन पन्द्रह दवाओंको चार-चार तोले लेकर पीस-छानकर मिला दो।

शेषमें इस चूर्णमें भाँगरेके रसकी एक पुट दो; यानी चूर्णको भाँगरेका रस डाल-डालकर खरल करो और सुखा लो।

फिर १ पाव खैरकी छालको चार सेर पानीमें औटाओ। जब आठवाँ भाग—आध सेर पानी रहे, उतारकर छान लो। अन्तमें ऊपरके चूर्णको इस काढ़ेके साथ खरल करो और सुखाकर छान लो और धर दो।

इसमेंसे १ तोले चूर्ण खैरकी छालके काढ़ेके साथ अथवा घीके साथ अथवा गायके दूधके साथ खानेसे एक महीनेमें वातरक्त और कोढ़-रोग आराम हो जाते हैं। कई कोढ़ी आराम हुए हैं। परीक्षित है।

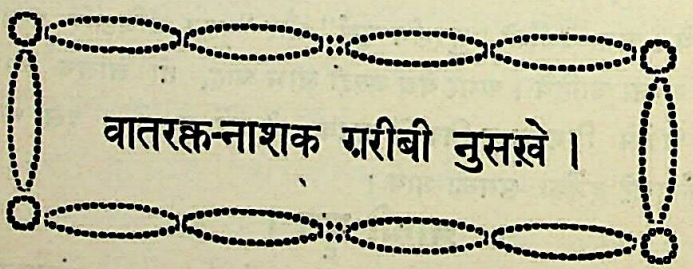

लगानेकी दवाएँ।

(१) बकरीके घी या दूधमें गेहूँका आटा उबालकर, उसका लेप करनेसे वातरक्त शमन होता है।

(२) अरण्डीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे वातरक्त आराम होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) अलसीको दूधमें पीसकर, उसका लेप करनेसे वातरक्त आराम होता है।

(४) तिलोंको भूनकर पीस लो। फिर उन्हें दूधमें पकाकर लेप करो। वातरक्त आराम होगा।

(५) सौंफ, कासनी, मुलेठी, खिरेंटी, चिरौंजी, कसेरू, विदारी-कन्द और चीनी—इनको बराबर-बराबर लेकर और घीमें पीसकर लेप करनेसे वातरक्त शान्त होता है।

(६) रास्ना, गिलोय, दोनों तरहकी खिरेंटी, जीवक, ऋषभक, दूध और घी,—इनको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर एकत्र पकाओ और पकते समय एक तोले "मोम" मिला दो। जब गाढ़ा लेप करने योग्य हो जाय, उतार लो। इस लेपसे वातरक्तकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(७) हज़ार बारका धोया हुआ घी लगानेसे खूनकी अधिकता-वाला वातरक्त आराम हो जाता है।

(८) घी और राल मिलाकर लेप करनेसे खूनकी अधिकतावाला वातरक्त शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(९) खूनकी अधिकतावाले वातरक्तमें "सौ बारका धोया घी" लगानेसे लाभ होता है।

(१०) घी, दूध, मुलेठीका पानी, ख़सका पानी अथवा भेड़का दूध मिनट-मिनटमें सींचनेसे खूनकी अधिकतावाला वातरक्त आराम हो जाता है।

नोट—विरेचन या जुलाब लेने, घी-दूध पीने; इन्हींको पीड़ित स्थानपर सींचने और इन्हींकी गुदामें पिचकारी लगानेसे वातरक्त आराम हो जाता है।

(११) वातरक्तका रङ्ग लाल हो, उसमें जलन और पीड़ा हो, तो पहले खून निकलवा दो। इसके बाद तिल, चिरौंजी, मुलेठी, कमलकी जड़ और बेंतको दूधमें पीसकर और "घी" मिलाकर उस जगह लेप कर दो। इससे जलनकी पीड़ा शान्त हो जायगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) तेल, मूत्र और मदिरा सींचनेसे वातरक्तमें लाभ होता है।

(१३) सफेद सरसों पानीमें पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे वातरक्तकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१४) पीली सरसोंको पानीमें पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे वातरक्त आराम हो जाता है।

(१५) सहँजना और वरनाकी छाल—इनको "धान्याम्ल नामक काँजी"में पीसकर लेप करनेसे वातरक्तकी पीड़ा शान्त हो जाती है। यह सिद्ध योग है। इसमें ज़रा भी शक करना फिजूल है। परीक्षित है।

(१६) असगन्ध और तिल पानीके साथ सिलपर पीसकर, लेप करनेसे कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(१७) घरका धूआँसा, बच, कूट, सोया, हल्दी और दारुहल्दी—एकत्र दूधमें पीसकर, दर्दकी जगह लेप करनेसे वातरक्तका दर्द मिट जाता है। परीक्षित है।

(१८) आमलासार गन्धक, भैंसका ताज़ा घी, गोमूत्र, दूध और सैंधानोन—इनको मिलाकर और मन्दी-मन्दी आगपर गरम करके शरीरपर लगानेसे वातरक्तके कारणसे हुई शरीरकी हड़फूटन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

खानेकी दवाएँ।

(१९) मँजीठ, नीमकी छाल, अड़ूसा, त्रिफला, चीता, हल्दी, दारुहल्दी, गिलोय, चिरायता, लाल चन्दन, खैरसार, कुटकी, बावची, अमलताशका गूदा, मूर्वा, जवासा, इन्द्रायण, बायविडङ्ग, त्रायमाण और पाठा—इन बीस दवाओंको एक-एक माशे लेकर, डेढ़ पाव पानीमें काढ़ा बनाकर और चौथाई पानी रहनेपर छानकर पीनेसे, सारे शरीरमें फैला हुआ वातरक्त नाश हो जाता है। अनमोल नुसख़ा है। परीक्षित है।

(२०) अड़ूसा, अमलताशका गूदा और गिलोय—इनको कुल २ तोले लेकर, डेढ़ पाव पानीमें काढ़ा बना लो। चौथाई पानी रहनेपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मल-छानकर उसमें दो या तीन तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेके पीनेसे दस्त होकर, सारे शरीरमें फैला हुआ सूजन और दाह सहित वातरक्त आराम हो जाता है। बड़ा उत्तम नुसख़ा है। परीक्षित है।

(२१) निशोथ, विदारीकन्द और तालमखानेका काढ़ा पीनेसे वातरक्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई तालमखानेकी जगह "गोखरू" लेते हैं।

(२२) गिलोयका स्वरस पीनेसे वातरक्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२३) तीन या पाँच छोटी हरड़ पीसकर और "गुड़" मिलाकर खाने एवं ऊपरसे "गिलोयका काढ़ा" पीनेसे घुटनों तक फैला हुआ और बहता हुआ वातरक्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) कड़वे परवल, कुटकी, शतावर, त्रिफला और गिलोय—इनको पाँच-पाँच माशे लेकर और काढ़ा बनाकर पीनेसे दाह समेत वातरक्त शान्त हो जाता है।

(२५) गिलोय १ तोले, सोंठ १ तोले और धनियाँ १ तोले—इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे वातरक्त, आमवात और सब तरहके कोढ़ नाश हो जाते हैं।

(२६) केवल दो तोले गिलोयका काढ़ा बनाकर और उसमें "गूगल" डालकर पीनेसे वातरक्त नाश हो जाता है।

नोट—वातरक्त नाश करनेमें गिलोय सर्वोपरि है। गिलोय वात और कफ नाश करनेवाली और कफ तथा मेदको सुखानेवाली है। यह वातरक्तको शान्त करनेवाली और खुजली-विसर्पको हरनेवाली है। इसलिये गिलोयका कल्क, स्वरस, चूर्ण अथवा काढ़ा पीनेसे रोगी वातरक्तसे छुटकारा पा जाता है। गिलोय "वातरक्तारि" है।

(२७) गिलोय घीके साथ सेवन करनेसे वायुको नष्ट करती है; गुड़के साथ सेवन की जाय, तो मलबन्ध या दस्तक़ब्ज़को दूर करती है;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाँडके साथ सेवन की जाय, तो पित्तको शान्त करती है; शहदके साथ सेवन की जाय, तो कफको नष्ट करती है। अरण्डीके तेलके साथ सेवन की जाय, तो वातरक्तको नष्ट करती है और सोंठके साथ सेवन की जाय, तो आमवातको नष्ट करती है।

(२८) गूगल और गिलोयको दाख और बिजौरे नीबूके रसमें अथवा त्रिफलेके काढ़ेमें घोटकर और जंगली बेर समान गोलियाँ बनाकर, शहदके साथ चाटनेसे महाघोर और समस्त अङ्गोंको तोड़ने-वाला पादस्फोट-रोग और वातरक्त-रोग फौरन आराम हो जाते हैं। इन गोलियोंको "गुग्गुल बटिका" कहते हैं। परीक्षित है।

नोट—आमलासार गन्धकको भैंसके मक्खन, गोमूत्र, दूध और सैंधेनोनमें मिलाकर, मन्दी-मन्दी आगपर गरम करके, शरीरमें लगानेसे अंगोंका फटना मिट जाता है।

(२९) अड़ूसेके पत्ते, पञ्चमूल, गिलोय, अरण्डीकी जड़ और गोखरू—इनको पाँच-पाँच माशे लेकर और डेढ़ पाव पानीमें काढ़ा बनाकर और छानकर, उसमें "अरण्डीका तेल" एक तोले और "हींग तथा सैंधानोन" दो-दो माशे डालकर पीनेसे वातरक्त, आमवात, कमरका दर्द, मल-मूत्रका रुकना और दुःसाध्य ब्रध्न-रोग अवश्य आराम हो जाते हैं।

(३०) अरण्डकी जड़, अड़ूसा, गोखरू, गिलोय, खिरेंटी और गोखरू—इनको कुल दो तोले लेकर और डेढ़ पाव पानीमें काढ़ा बना-कर पीनेसे, बहुत पुराना घुटनों तक पहुँचा हुआ, फटा हुआ और ऊपरको चलता हुआ वातरक्त तत्काल नाश हो जाता है।

(३१) गुड़को घीमें मिलाकर खानेसे कफ, खुजली और विसर्प-रोग नाश होते तथा पित्त शान्त होता है। यह नुसखा वातरक्तको भी नाश करता और हृदयको भी हित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३२) "वर्द्धमान पीपल" सेवन करनेसे वातरक्त नाश हो जाता है। खुलासा यों समझिये कि, पहले दिन पाँच पीपर दूध या पानीमें पीसकर खाओ। दूसरे दिन दस, तीसरे दिन पन्द्रह, चौथे दिन बीस, इस तरह दस दिन तक बढ़ा-बढ़ाकर खाओ और ग्यारहवें दिनसे पाँच-पाँच पीपल नित्य घटाकर खाओ। यहाँ तक कि फिर पाँचपर आ जाओ। इसीको "वर्द्धमान पिप्पली" कहते हैं। इस नुसख़ेपर "दूध-भात" खाना चाहिये। यह बीस दिनका नुसख़ा है। इसके सेवनसे वातरक्त, विषमज्वर, अरुचि, पाण्डु, तिल्ली, उदररोग, बवासीर, खाँसी, सूजन, क्षय, मन्दाग्नि, हृदयरोग और वातोदर-रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—दस-दस पीपर भी ली जाती हैं। पर यह बात मौसम और रोगीकी ताक़तपर मुनहसिर है।

(३३) तालमखाने और गिलोयका काढ़ा बनाकर और "पीपर" मिलाकर २१ दिन पीनेसे वातरक्त नाश हो जाता है। परन्तु अग्निके अनुसार, पथ्य भोजन करना ज़रूरी है।

(३४) मुलेठी १ भाग, तेल २ भाग और बकरीका दूध ४ भाग—इन सबको मिलाकर, अग्नि-बलानुसार पीनेसे वातरक्त नष्ट हो जाता है।

(३५) अधिक दोषवाले रोगीको दस्त होनेके लिए, दूधमें "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीना चाहिये और जीर्ण होनेपर दूध-भात खाना चाहिये।

(३६) नागरमोथा, आमले और हल्दी—इनका काढ़ा बनाकर और "शहद" डालकर नित्य पीनेका अभ्यास करनेसे केवल वातरक्त या कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(३७) पुराने गुड़में सोंठ और हरड़ मिलाकर खाना और ऊपरसे "गिलोयका काढ़ा" पीना—भयङ्कर वातरक्तमें भी हितकारी है।

(३८) मुण्डी और गिलोय बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर चूर्ण बना लो; इसमेंसे चार माशे चूर्ण "शहद"में मिलाकर सवेरे-शाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाने और ऊपरसे शीतल पानी पीनेसे कुछ दिनोंमें वातरक्त, कोढ़ और पारदजन्य विकारोंमें बहुत लाभ होता है।

(३६) मुण्डीके चूर्णको "गायके घी और शहद"में मिलाकर खाने और ऊपरसे "गिलोयका काढ़ा" पीनेसे वातरक्त और पीनस-रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—मुण्डी दो तरहकी होती है—(१) छोटी, और (२) बड़ी। मुण्डीके पत्ते कुछ लम्बे, रोमयुक्त कँटीले और धारवाले होते हैं। फूल घुण्डीके समान गोल, मज़बूत और बैंगनी रंगके होते हैं। एक-एक डण्डीके अगले भागमें एक-एक फूल लगता है। धानके खेतोंमें, आमके बागोंमें और गाँवके पासके स्थानोंमें मुण्डीके पेड़ होते हैं। जब धानके खेतोंमें वर्षाका जल सूखने लगता है, तब मुण्डीके वृक्षोंके अंकुर निकलते हैं और जब धान पककर काटने योग्य होता है, तब मुण्डीके छत्ते बढ़कर ज़मीनमें फैल जाते हैं। पौषके महीनेमें, इसमें फूल आते हैं। गरमीमें तेज़ धूपके मारे वृक्ष सूखने लगते हैं।

मुण्डी रसायन, बलकारक, मेधाजनक और कुछ दस्तावर होती है। यह स्वरको शुद्ध करनेवाली, नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी और अनेक तरहके खून विकारोंको नाश करनेवाली है। वातरक्त, कोढ़, गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, व्रण, खाँसी, बवासीर, प्रमेह, उपदंश, फिरंग, मेदोरोग, शिरोरोग, पाण्डु, कामला, कृमि, श्वास, अरुचि, वमन, आमदोष, अतिसार, सूजन, हाथीपाँव, मृगी, रक्तपित्त, उन्माद, विषविकार और योनिशूलको नाश करती है।

(१) मुण्डीके पत्तोंका रस पीने और चमड़ेपर लगानेसे गलगण्ड, गण्डमाला और अपची आदि रोगोंमें बहुत लाभ होता है।

(२) मुण्डीके पत्तोंका रस निकालकर शरीरपर मलनेसे पारे और उपदंशके विकार नाश हो जाते हैं। उपदंशके घावोंपर मुण्डीके पत्तोंका स्वरस परम हितकर है। मुण्डीके पत्तोंको जलके साथ पीसकर लेप करनेसे उपदंशके व्रण, पुराने घाव और चर्मविकार नाश होते हैं।

(३) मुण्डी और उशवा—दोनोंका काढ़ा बनाकर या अर्क खींचकर और शहद मिलाकर पीनेसे उपदंश, पारेके विकार और फिरंग-रोग नाश हो जाते हैं।

(४) मुण्डीका स्वरस २०तोले, गायका घी १०तोले, सिंदूर १ तोले, गंधक १ तोले, कत्था १ तोले, राल १ तोले, नीमके फल १ तोले और घरका धूआँसा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१ तोले—इन सबको मिलाकर पकाओ। जब जलते-जलते घी-मात्र रह जाय, उतारकर कपड़ेमें छान लो। इस घीको मल्हमकी तरह लगानेसे कोढ़, उपदंश, नासूर और सब तरहके दुष्ट घाव आराम हो जाते हैं।

(४०) करेलेके रसमें "शहद" मिलाकर नियमित रूपसे पीनेसे वातरक्तमें खूब लाभ होता है।

(४१) हरड़का चूर्ण, "गुड़" मिलाकर खानेसे वातरक्तको शमन करता है।

वातरक्तकी विशेष चिकित्सा।

वातप्रबल वातरक्त-नाशक नुसखे।

(१) गेहूँ, तिल, मूँग, उड़द, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, खिरेंटी, कंघी, कमलकी जड़, नाली, पृश्निपर्णी, मेढ़ासिंगी, चिरौंजी, शक्कर, कसेरू, रास्ना और बच—इन सबको समान-समान लेकर, सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर इस लुगदीके साथ घी, तेल, चर्बी, मज्जा और दूध पका लो। इसको "पंच पायस" कहते हैं। निवाये-निवाये पंच पायससे उपनाह स्वेद करनेसे वाताधिक्य वातरक्तमें लाभ होता है।

(२) रेंडीके बीज आदि तेलवाले फलोंकी गरीकी लूपरी या पुल्टिस पकाकर बाँधनेसे वाताधिक्य वातरक्तमें लाभ होता है।

(३) बेलगिरी, तगर, देवदारु, निशोथ, रास्ना, हरेणु, कूट, सौंफ, शराब, दही और दहीका तोड़—इनको मिलाकर इनका उपनाह स्वेद करनेसे वाताधिक्य वातरक्तमें लाभ होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्ताधिक्य वातरक्त-नाशक नुसखे।

(१) दाख, किरमाला, कायफल, अर्क पुष्पी, मुलेठी, चन्दन और खँभारी—इनके काढ़ेमें मिश्री और शहद मिलाकर पीनेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(२) शतावर, मुलेठी, परवलके पत्ते, त्रिफला और कुटकीके काढ़ेमें "मिश्री और शहद" मिलाकर पिलानेसे पित्ताधिक्य वातरक्त आराम हो जाता है।

(३) गिलोयके काढ़ेमें "मिश्री और मधु" मिलाकर पिलानेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(४) पित्तज्वर-नाशक चन्दनादि क्वाथ "मिश्री और शहद" मिलाकर पिलानेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(५) कड़वे परवल, शतावर, गिलोय और कुटकीके काढ़ेमें "शहद और चीनी" मिलाकर पीनेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(६) धारोष्ण दूधमें "गोमूत्र और निशोथका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है। यह नुसखा दोषोंको अनुलोमन करनेवाला है।

(७) कमलकी जड़, नाली, सफेद चन्दन और पद्माखके काढ़ेमें आधा दूध मिलाकर तरड़े देनेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

(८) दूध, ईखका रस, शहद, चीनी और चावलोंका धोवन—इन सबको मिलाकर वातरक्त-पीड़ित स्थानपर तरड़े देनेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नाश होता है।

(९) जीवनीयगणके साथ पकाये हुए घीकी मालिश करनेसे पित्ताधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) सौ बार धोये हुए घीकी मालिश करनेसे पित्ताधिक्य वातरक्तमें शान्ति आती है।

कफाधिक्य वातरक्त-नाशक नुसख़े।

नोट—कफाधिक्य वातरक्तमें कड़वी दवाओंसे पकाया हुआ घी पिलाना, बारम्बार जुलाब देना, हल्की-हल्की क़य कराना, लंघन कराना और वातरक्तके स्थानपर सुहाते-सुहाते गरम काढ़ोंके तरड़े देना लाभदायक है।

(१) आमले और हल्दीका काढ़ा "शहद" मिलाकर पिलाने अथवा त्रिफलेका काढ़ा पिलाने अथवा मुलेठी, सोंठ, हरड़ और कुटकीका कल्क (लुगदी) खिलाने अथवा गोमूत्रमें "शहद" मिलाकर पिलाने अथवा पानीके साथ पुराना गुड़ और हरड़ खिलानेसे कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है। इन पाँचों नुसख़ोंमेंसे किसी एक नुसख़ेके कुछ दिन बराबर सेवन करनेसे कफाधिक्य वातरक्त अवश्य आराम हो जाता है।

(२) माठेके साथ अथवा पानीके साथ "हरड़का चूर्ण" खानेसे कफाधिक्य वातरक्त चला जाता है।

(३) गिलोय, कुटकी, मुलेठी और सोंठको सिलपर पानीके साथ पीसकर, उसमें "शहद और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे कफाधिक्य वातरक्त अवश्य चला जाता है। परीक्षित है।

(४) आमले, हल्दी और नागरमोथेका काढ़ा पीनेसे कफाधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

(५) सत्तू, घी, जवाखार और कैथकी छाल,—इनको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे कफाधिक्य वातरक्त शमन होता है।

(६) सरसों, नीमकी छाल, आककी छाल, बालछड़, जवाखार और तिल—इनको पानीके साथ सिलपर पीसकर लेप करनेसे कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) मसूरकी दाल और सहँजनेके बीज "धान्याम्ल काँजी" में पीसकर लेप करने और एक घण्टा तक लेप रखने तथा ऊपरसे खट्टे रसोंके तरड़े देनेसे वात और कफाधिक्य वातरक्त नाश हो जाता है।

(८) शालपर्णी, पृश्निपर्णी और दोनों कटेलियोंको दूधमें पीसकर और जौका सत्तू मिलाकर लेप करनेसे कफाधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

(९) सफेद सरसोंको पानीके साथ पीसकर रख लो; तिल और असगन्धको पानीके साथ पीसकर रख लो; चिरौंजी, ल्हिसौड़ेकी छाल और कैथकी छाल—इनको पानीके साथ पीसकर अलग रख लो; मीठा सहँजना और साँठींको पानीके साथ पीसकर अलग रख लो तथा त्रिकुटा, कुटकी, पृश्निपर्णी और बड़ी कटेरी—इनको पानीके साथ पीसकर अलग रख लो। शेषमें, इन पाँचों लुगदियोंको क्षारके जलमें पीसकर, थोड़ा गरम करो और लेप कर दो। इससे कफाधिक्य वातरक्त नष्ट हो जाता है।

मनुष्यमात्रके घरमें हर समय रहने योग्य।

कभी भी फेल न होनेवाले। अक्सीरका काम करनेवाले।

तीस बरसके सुपरीक्षित।

तीन वातान्तक तैल।

(१) नारायण तैल—अस्सी वात-रोगोंका दुश्मन है। मूल्य १२) रुपये सेर।

(२) महानारायण तैल—नारायण तैलका भी बाबा है। नारायण तैल ही कभी फेल नहीं होता, पर अगर दैवात् उससे कभी आराम न हो, तो इससे तो होता ही है। मूल्य २४) रुपये सेर।

महा विष्णुतैल—जो गुण महानारायण तैलमें हैं, वही इसमें हैं। बहुत बार हमने इसका अपूर्व्व फल देखा है। जहाँ "महानारायण तैल" काम नहीं करता, वहाँ यह काम कर जाता है। हिस्टीरियापर भी रामवाण है। मूल्य ३०) रु० सेर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आठवाँ अध्याय

उरुस्तम्भ-वर्णन ।

शब्दार्थ ।

उरु शब्द संस्कृत है । हिन्दीमें उरुका अर्थ "जाँघ" है। स्तम्भ भी संस्कृत शब्द है। स्तम्भका अर्थ है, रुकना, ठहरना, अचल होना, बेहरकत होना, ज्ञानहीन होना, सूना होना इत्यादि । इन दोनों शब्दोंके अर्थसे साफ जान पड़ता है कि, जिस रोगमें मनुष्यकी जाँघ अचल, निर्जीव, सुन्न और ज्ञानहीन हो जाती है, उसे ही "उरुस्तम्भ" कहते हैं।

सामान्य लक्षण ।

उरुस्तम्भ-रोग होनेसे आदमीकी जाँघें सूनी, निर्जीव और अत्यन्त भारी हो जाती हैं। रोगीको अपनी जाँघें दूसरेकी-सी मालूम होती हैं। उसे हिलने, चलने और बैठनेमें बड़ी तकलीफ होती है। मतलब यह है कि, जिस रोगमें दोनों जाँघें रह जाती हैं या बेकाम हो जाती हैं, उसे "उरुस्तम्भ" कहते हैं।

निदान—कारण ।

शीतल, गरम, सूखे, भारी, पतले और चिकने पदार्थ खानेसे, दिनमें सोनेसे, रातमें जागनेसे, बहुत मिहनत करनेसे, चित्तके क्षोभ से,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भयसे और अजीर्णसे "उरुस्तम्भ" रोग होता है; यानी जो नासमझ लोग ऊपर लिखे काम करते हैं, उन्हें "उरुस्तम्भ" या जाँघोंके रह जानेका रोग होता है।

सम्प्राप्ति।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे कफ, मेद और वायु दूषित हो जाते हैं। फिर वे आमसे मिलकर, पित्तको अपने अधीन करते और जाँघोंमें घुस जाते हैं। जाँघोंमें घुसकर, वे जाँघोंकी हड्डियोंको गीले कफसे भर देते हैं; तब दोनों जाँघें ठण्डी, निर्जीव और स्तब्ध या अचल हो जाती हैं। इस तरह "उरुस्तम्भ" रोगकी उत्पत्ति होती है।

पूर्वरूप।

उरुस्तम्भ-रोग होनेसे पहले—अत्यन्त नींद, अत्यन्त ध्यान, क्रिया-हीनता, ज्वर, रोएँ खड़े होना, अरुचि, वमन और पिंडलियों तथा जाँघोंमें दर्द—ये उपद्रव होते हैं। इन लक्षणोंके बाद "उरुस्तम्भ" साहब मय अपने लवाज़मेके तशरीफ ले आते हैं।

लक्षण।

उरुस्तम्भ-रोगमें दोनों जाँघें अकड़ जाती हैं, सूनी और अत्यन्त भारी हो जाती हैं। उस समय, वे रोगीको दूसरेकी-सी मालूम होती हैं। इस रोगमें मूढ़ता, अङ्गोंका टूटना, तन्द्रा, वमन, अरुचि, ज्वर, पाँवोंकी ग्लानि, पाँवोंकी मन्दता और जड़ता ये लक्षण भी देखनेमें आते हैं। इस रोगको "उरुस्तम्भ" कहते हैं। कोई-कोई इसे "आढ्य-वात"भी कहते हैं। सुश्रुतने इस रोगको महा वातव्याधियोंमें लिखा है।

उरुस्तम्भके स्पष्ट रूप।

"भावप्रकाश"में लिखा है, पाँवोंके सोने और उनके अचेतन एवं क्रियारहित होनेसे मनुष्य प्रायः समझता है कि, मुझे "वात-रोग" हुआ है। "वात-रोग" समझकर, वह वात-रोगोंकी तरह वातनाशक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेल वग़ैरःकी मालिश करता या कराता है, लेकिन इन उपायोंसे लाभके बदले हानि होती है; यानी वातनाशक तेल वग़ैरः लगानेसे पीड़ा डबल हो जाती है।

इस रोगमें पैरोंमें दर्द होता है। वे पत्थर और लकड़ीकी तरह जड़ या निर्जीव हो जाते हैं। पैरोंको उठाने और धरनेमें घोर वेदना होती है। पैरोंकी पिंडलियों और जाँघोंमें ग्लानि होती है। चलने-फिरनेकी सामर्थ नहीं रहती। किसी क़दर जलनके साथ ज़ोरसे पीड़ा होती है। पैरोंको उठाने और फैलानेके समय विशेष पीड़ा होती है। शीतल पदार्थोंका स्पर्श मालूम नहीं होता; यानी जाँघोंपर बर्फ़ आदि रखनेसे उनका ठण्डापन मालूम नहीं होता। रोगी बैठने और उन्हें दबाने या हिलाने-चलानेमें असमर्थ हो जाता है। रोगी को पैर और जाँघ टूटे हुए-से मालूम होते हैं। उसके पाँव दूसरोंके उठानेसे उठते हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है,—कफ और मेदसे मिला हुआ वायु जब जाँघोंमें पहुँचता है, तब अङ्ग टूटते हैं—अङ्गड़ाइयाँ आती हैं, शरीर शिथिल हो जाता है, रोएँ खड़े हो जाते हैं, दर्द होता और ज्वर चढ़ता है। इन उपद्रवोंके सिवा दोनों जाँघें नींदमें सोई हुई-सी, अकड़ी हुई, चैतन्यता-रहित—निर्जीव, भारी और नर्म हो जाती हैं। उनकी स्पर्श-ज्ञानशक्ति नाश हो जाती है—वे सूनी हो जाती हैं, इसलिए रोगीको यह नहीं मालूम होता कि ये मेरी अपनी जाँघें हैं अर्थात् वह अपनी जाँघोंको पराई-सी समझने लगता है।

खुलासा यह है कि, उरुस्तम्भ-रोग होनेसे, मनुष्यकी जाँघें स्तब्ध, शीतल, अचेतन, निर्जीव, भारसे दबी हुई-सी हो जाती हैं। उनमें बड़ा दर्द होता है। रोगीको जाँघोंका उठाना या चलना-फिरना कठिन हो जाता है। पैर अवसन्न हो जाते हैं और स्पर्श-शक्ति नहीं रहती। "उरुस्तम्भ"के ये ही मुख्य लक्षण हैं। अत्यन्त चिन्ता, तन्द्रा और वमन आदि तो लवाज़मे हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अरिष्ट लक्षण।

जिस उरुस्तम्भ-रोगमें दाह, पीड़ा, सूई चुभानेका-सा दर्द हो और रोगी काँपता हो वह उरुस्तम्भ रोगीको मार देता है। अगर दाह आदि उपद्रव न हों और रोग तत्कालका पैदा हुआ हो, तो आराम हो सकता है। ज्यों-ज्यों रोग पुराना होता है, त्यों-त्यों वह कष्टसाध्य होता है।

चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें।

(१) उरुस्तम्भ-रोगमें तेल वग़ैरः लगाना, खून निकालना—फ़स्द खोलना, वमन कराना, वस्तिकर्म करना—गुदामें पिचकारी लगाना और जुलाब देना—ये सब काम हानिकारक हैं, क्योंकि इन सबसे "उरुस्तम्भ-रोग" बढ़ता है।

(२) उरुस्तम्भमें वही क्रिया करनी चाहिये, जिससे कफ शान्त हो और वायु कुपित न हो। इसमें सारी रूखी क्रियाएँ करनी चाहिये; तथापि पहले कफ-नाशक और फिर वात-नाशक उपाय करने चाहिये। अगर रूखी क्रिया करनेसे नींदका नाश हो जाय और पीड़ा सहित वायुका कोप हो, तो स्नेहन और स्वेदन क्रिया करनी चाहिये। शरीरके बल और अग्निकी रक्षा करके, जिस उपायसे कफ सूखकर "उरुस्तम्भ" नाश हो, वही चिकित्सा करनी चाहिये। क्षार और मूत्र मिले हुए पदार्थोंसे स्वेदन करना चाहिये और रूखे पदार्थ जाँघोंपर मलने चाहिए।

खुलासा यों समझिये कि, उरुस्तम्भ-रोग कफ, आमवात और मेदकी अधिकतासे होता है; अतः उसमें कफ, आमवात और मेद-नाशक उपाय करने चाहिये; अथवा रूखे पदार्थ इस्तैमाल करने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिये। अगर रूखे उपायोंसे नींद आना बन्द हो जाय, तो समझना चाहिये कि वायुका कोप हुआ। उस दशामें, स्नेह और स्वेद यानी तेल वग़ैरःकी मालिश कराके और पसीने दिलाकर वायुको अनुकूल करना चाहिये। इस रोगमें विद्वान् वैद्यको आँखें बन्द करके एकमात्र रूखी क्रिया ही न करनी चाहिये। समयपर वात-नाशक क्रियाएँ भी करनी चाहिए। समय-समयपर, सहने योग्य मिहनत भी करानी चाहिये। रोगीको शीतल जलकी नदीमें तैराना चाहिये; निर्मल जलके थाहवाले सरोवरमें डुबकी लगवानी चाहिये; पुष्ट और उन्नत स्तनों-वाली प्रौढ़ा स्त्रियोंका शक्तिपूर्वक संशीलन कराना चाहिये एवं सुन्दर-सुन्दर स्थानोंमें उसे घुमाना चाहिये। इस तरह मिहनत और उपचार करनेसे, कफ और मेदके नष्ट होनेपर स्नेह आदिका उपचार करना चाहिये यानी वात-नाशक तेल वग़ैरः लगवाने चाहिये।

(३) उरुस्तम्भ-रोगमें रूखे पदार्थ, पसीने निकालना, लंघन, पुराने चावल, सामक, कोदों, लिहसौड़े, मूँग, जंगली जीवोंका मांस, मूली, बैंगन, बथुआ, मूलीके पत्ते, बिना घीका जंगली जीवोंका मांस और बिना नमकका हितकारी साग—ये सब पथ्य हैं।

(४) उरुस्तम्भ-रोगमें भल्लातक आदि काढ़ा, अष्टकट्वर तैल, कुष्ठाद्य तैल और महासैंधवादि तैल प्रभृति श्रेष्ठ हैं। नदीके शीतल जल या तालाबके जलमें तैरना और सूरजकी धूपसे तपी हुई गरम बालूमें दौड़ना भी हितकारी है।

उरुस्तम्भ-नाशक नुसख़े।

(१) करंजुवेके फल और सरसोंको "गोमूत्रमें" पीसकर लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) असगन्ध, आककी जड़ और नीमकी जड़को "गोमूत्र" में पीसकर जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) दन्ती, मूसाकानी, रास्ना और सरसोंको "गोमूत्र"में पीसकर जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग जाता रहता है।

(४) जयन्ती, रास्ना, सहँजनेकी छाल, बच, कुड़ा और नीमकी छाल—इनको "गोमूत्र"में पीसकर जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है।

(५) सरसोंको शहदमें पीसकर और गरम करके जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है।

(६) सरसोंके चूर्णको धतूरेके पत्तोंके रसमें पीसकर और गरम करके जाँघोंपर लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है।

(७) काले धतूरेकी जड़, पोस्तके डोड़े, लहसन, कालीमिर्च, कालाजीरा, जयन्तीके पत्ते, सहँजनेकी छाल और सरसों—ये सब चीजें "गोमूत्र"में पीसकर और गरम करके लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है।

(८) पीपरामूल, भिलावा और पीपरोंका काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(९) त्रिफला, पीपर, मोथा, चव्य और कुटकी—इनका चूर्ण ६ माशे "शहद" मिलाकर चाटनेसे उरुस्तम्भ आराम हो जाता है।

(१०) हरड़, बहेड़ा, आमला और कुटकी—इनका चूर्ण ६ माशे "शहद" मिलाकर चाटनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है।

(११) विद्वानोंका कहना है कि, भिलावे, गिलोय, सोंठ, देवदारु, हरड़, पुनर्नवा और दशमूल—इनके सेवन करनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है।

(१२) पीपर, पीपरामूल और भिलावे—इनको पानीके साथ सिलपर पीसकर और "शहद" मिलाकर चाटनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१३) चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, अतीस, कुटकी और हरड़—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इसका नाम "षड्धरण योग" है। इसमेंसे चार या छै माशे चूर्ण, सुहाते-सुहाते गरम जलके साथ, खानेसे उरुस्तम्भ और वातके समस्त रोग नाश हो जाते हैं। इसके खानेसे भूख बहुत बढ़ती और २।३ दस्त रोज़ होते हैं। परीक्षित है।

(१४) जिस तरफसे नदीकी धारा आती हो, उस तरफको, नदीके जलमें एक या दो मील चलनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है।

(१५) करञ्ज, त्रिफला और सरसों—इनको गोमूत्रमें पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है।

(१६) सर्पकी बाम्बीकी मिट्टी और सरसों,—इन दोनोंको महीन पीसकर और "शहद"में मिलाकर, आगपर निवाया करके, गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) सुश्रुतने गूगलकी बड़ी तारीफ की है। आपका कहना है, सवेरे ही शुद्ध गूगल—"त्रिफला, दारुहल्दी, परवल और कुशाके पानीमें" घोलकर पीने अथवा "गोमूत्र या गरम जल"के साथ, लगातार एक महीना तक, पीनेसे गोला, प्रमेह, उदावर्त्त, उदर-रोग, भगन्दर, कृमि, खाज, अरुचि, सफेद कोढ़, अर्बुद या रसौली, गाँठें, नाड़ी-रोग, आढ्यवात या उरुस्तम्भ, सूजन, कोढ़, बिगड़े हुए घाव, कोठेकी वायु, सन्धियोंकी वायु और हड्डियोंकी वायु—इन सबको "गूगल" इस तरह नष्ट करता है, जिस तरह इन्द्रका वज्र वृत्तको नष्ट करता है। इसकी मात्रा १ से ३ माशे तक है।

नोट—गूगल शोधकर सेवन करनी चाहिये। शोधनेकी विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय चौथे भाग"के पृष्ठ ७५ में लिखी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१८) वातरोग चिकित्साके पृष्ठ २६१ में लिखी हुई "योगराज गूगल" सेवन करनेसे भी उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है। जब अकेली शुद्ध गूगलसे उरुस्तम्भ नाश होनेकी बात "सुश्रुत"में लिखी है, तब उस "योगराज गूगल"से नाश होनेमें क्या सन्देह?

नोट—नया गूगल बृंहण अर्थात् शरीरकी धातु वग़ैरःको बढ़ानेवाला और पुराना अति कर्षण यानी धातुओंको सुखानेवाला और मनुष्यको दुबला करनेवाला होता है। यह तीक्ष्ण और गरम होनेके कारण, कफ और वायुको शान्त करता है। सर होनेसे, मल और पित्तको नाश करता है। सुगन्धित होनेसे, कोठेकी बदबूको नाश करता है। सूक्ष्म होनेसे, जठराग्निको दीपन करता है। हमारी रायमें, उरुस्तम्भ-रोगीको पहले "पुराना गूगल"ही सेवन कराना चाहिये; क्योंकि पहले कफ और मेद घटानेकी ज़रूरत रहती है। सुश्रुतने कहा है, जब बिना घीके मांस-रस और अलौने सागोंके साथ पुराने शालि चावल एवं पुराना सामक अनाज आदि खिलानेसे कफ और मेद क्षीण हो जायँ, तब स्नेह आदि कर्म करावें; यानी घी, तेल आदि पिलावें और उनकी मालिश करावें।

(१९) "चिकित्सा-चन्द्रोदय" इसी भागके पृष्ठ ४६१ और २८० में लिखे हुए "सैंधवादि तैल"के मलने और "वातगज-केशरी अर्क़"के पीनेसे उरुस्तम्भ-रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। जो वातरोग और उरुस्तम्भ रोग किसी भी दवाके लगाने और खानेसे आराम नहीं होते, वे इन दोनोंसे आराम हो जाते हैं। दोनो दवाएँ अनेक बारकी परीक्षित हैं।

(२०) उरुस्तम्भ-रोगीको, नदी-किनारेकी सूरजकी धूपसे तपती हुई बालूमें, बड़े ज़ोरसे दौड़ानेसे उरुस्तम्भ-रोग अवश्य आराम हो जाता है।

(२१) रास्ना, सारिवा, हरड़, कालीमिर्च, सोया—सौंफ, हल्दी, बायबिडङ्ग, कचूर, असगन्ध, जवासा, गिलोय, अजमोद, बनतुलसी, अतीस, विधारा, कटेरी, कटाई, सोंठ, कुटकी, अजवायन, कटसरैया, चव्य, अरण्डकी जड़, दारुहल्दी और साल—इन २५ दवाओंको कुल दो या तीन तोले लेकर, डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बना लो। जब छटाँक या डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छानकर पिला दो। इसका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाम "रास्नादि काथ" है। इसके सेवन करनेसे उरुस्तम्भ, आमवात, कफके रोग, वातके रोग और दण्डकाक्षेप-रोग तत्काल नाश हो जाते हैं।

(२२) शहद या गुड़के साथ "वर्द्धमान पीपर" सेवन करनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है।

(२३) गोमूत्रके साथ अथवा दशमूलके रसके साथ "शिलाजीत, गूगल, पीपर और सोंठ" पीनेसे उरुस्तम्भ-रोगकी पीड़ा नाश हो जाती है।

(२४) अगर उरुस्तम्भ-रोगमें कफकी अधिकता हो, तो सौरेश्वर घृत अथवा वैश्वानर चूर्ण अथवा शुंठी घृत और सैंधवाद्य तैल अथवा अमृता गुग्गुल देना हितकारी है।

(२५) अकेली आककी जड़ "गोमूत्र" में पीसकर लेप करनेसे उरुस्तम्भ नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) असगन्ध और देवदारुको "गोमूत्र" में पीसकर लेप करनेसे उरुस्तम्भ जाता रहता है। परीक्षित है।

(२७) क्षार मिले हुए गोमूत्रका तरड़ा उरुस्तम्भपर देनेसे लाभ होता है। परीक्षित है।

(२८) बाम्बीकी मिट्टी, सरसों, शहद और नीमके पत्ते—इनको पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२९) निर्गुण्डीके पत्तोंका काढ़ा "पीपरोंका चूर्ण" डालकर पीनेसे उरुस्तम्भ-रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—याद रखो, कफनाशक दवाएँ उरुस्तम्भको नाश करती हैं।

(३०) शुद्ध गूगल खाकर, ऊपरसे "गोमूत्र" पीनेसे "उरुस्तम्भ" आराम हो जाता है। परीक्षित है। "वैद्यजीवन" में लिखा है:—

पुनर्नवानागरदारु पथ्याभल्लातकच्छिन्नरुहाकषायः।
दशाङ्घ्रिमिश्रः परिपेय उरुस्तम्भेऽथवा मूत्रपुरप्रयोगः॥

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुनर्नवा—साँठी, सोंठ, देवदारु, हरड़, भिलावे, गिलोय और दशमूलका काढ़ा पीनेसे अथवा शुद्ध गूगल खाकर गोमूत्र पीनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है। इस "पुनर्नवादि योग"की "भावप्रकाश" और "चक्रदत्त" आदि अनेक ग्रन्थोंमें प्रशंसा लिखी है। "गूगल" सेवन करनेकी राय सुश्रुतने भी ज़ोरसे दी है।

(३१) शुद्ध गूगल और हरड़ "गोमूत्र"के साथ खानेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है।

(३२) त्रिकुटा, चीतेकी छाल, नागरमोथा, त्रिफला और बाय-बिडङ्ग एक-एक तोले और इन सबके बराबर ५ तोले "शुद्ध गूगल" ले लो। सबको कूट-पीस और मिलाकर रख लो। इसमेंसे १ से ६ माशे तक चूर्ण नित्य खानेसे कफ, मेद और आमवातसे पैदा हुए उरुस्तम्भ आदि सभी रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—उरुस्तम्भ-रोगमें कफ, आमवात और मेद—ये तीनों ज़ियादा रहते हैं, अतः इनको नाश करनेवाले उपचारोंसे ही यह रोग आराम होता है।

(३३) शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध गूगल, छोटी पीपर और सोंठ—इनको "गोमूत्र" या "दशमूलके काढ़े"के साथ सेवन करनेसे उरुस्तम्भ नाश हो जाता है।

उत्तमोत्तम नुसख़े।

कुष्ठाद्य तैल।

कूट, लोबान, सुगन्धवाला, सरल धूप, देवदारु, नागकेशर, बनतुलसी और असगन्ध—इनके कल्कसे पकाया हुआ सरसोंका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेल, शहदके साथ, यथा मात्रानुसार, पीनेसे उरुस्तम्भ-रोग नष्ट हो जाता है।

बनानेकी विधि—ऊपर लिखी हुई हरेक दवा आध-आध पाव लेकर, पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर चार सेर सरसोंका तेल और सोलह सेर पानी तथा ऊपरकी लुगदी मिलाकर कढ़ाहीमें औटाओ। जब पानी जलकर, तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और बोतलोंमें रख दो। इस तेलकी एक-एक मात्रा "शहद" में मिलाकर पीनेसे उरुस्तम्भ-रोग नाश हो जाता है।

अष्टकट्वर तैल।

पीपरामूल ८ तोले और सोंठ ८ तोले लेकर, सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर मलाईदार खट्टे दहीकी छाछ ६४ तोले, दही ६४ तोले और सरसोंका तेल ६४ तोले—इन सबको कढ़ाहीमें डालकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलकी मालिश करनेसे उरुस्तम्भ और गृध्रसी-रोग आराम हो जाते हैं।

महा सैन्धवाद्य तैल।

सैंधानोन, कूट, छोटी शतावर, बच, भारङ्गी, मुलेठी, पृश्नपर्णी, जायफल, देवदारु, सोंठ, कचूर, धनियाँ, पीपर, कायफल, पोहकरमूल, अजवायन, अतीस, अरण्डकी जड़, नीलका वृक्ष और नीलकमल—इन २० दवाओंको कुल मिलाकर एक सेर ले लो। फिर सबको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। इसके बाद चार सेर काली तिलीका तेल और सोलह सेर काँजी तथा लुगदीको एकत्र मिलाकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलके पीने, नस्य लेने और मालिश करनेसे उरुस्तम्भ, आमवात, पक्षाघात, सन्धिवात, फोतोंका रोग, वातस्तम्भ, गोला, कृमि, सिरका दर्द, तिल्ली, उदर-रोग और मन्दाग्नि आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैन्धवाद्य तैल।

सैंधानोन ८ तोले, सोंठ २० तोले, पीपरामूल ८ तोले, चीतेकी जड़ ८ तोले और भिलावे नग २०—इनको सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर काली तिलीका तेल चार सेर और काँजी ३२ सेर तथा ऊपरकी लुगदी—इन तीनोंको कढ़ाहीमें डालकर आगपर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यह तैल गृध्रसी वात, उरुस्तम्भ और समस्त वात-रोगोंपर रामवाण है। परीक्षित है।

नोट—अगर तिलीके तेलके बजाय "अरण्डीका तेल" लिया जाय तो और भी अच्छा हो।

भल्लातकादि क्वाथ।

शुद्ध भिलावे, गिलोय, सोंठ, देवदारु, हरड़, पुनर्नवा और दशमूल—इनको चार-चार माशे लेकर डेढ़ पाव जलमें औटाकर काढ़ा कर लो। जब छटाँक-डेढ़-छटाँक पानी रह जाय, मल-छानकर रोगीको पिला दो। उरुस्तम्भ नाश करनेमें यह काढ़ा बहुत ही उत्तम है।

आढ्यवातान्तक रस।

पहले ६ माशे शुद्ध पारे और ३ तोले शुद्ध गन्धकको खरलमें डालकर ५।६ घण्टे तक घोटो; जब चमकहीन कज्जली हो जाय, उसमें १॥ तोले सफेद चिरमिटी और ३ माशे शुद्ध जमालगोटेके बीज भी मिला दो और २ घण्टे तक घोटो। फिर एक दिन भर इसमें "जयन्तीके पत्तोंका रस" डाल-डालकर खरल करो। दूसरे दिन इसमें "जम्भीरी नीबूका रस" दे-देकर खरल करो। तीसरे दिन "धतूरेके पत्तोंका रस" दे-देकर खरल करो और चौथे दिन "काकमाचीके रस"के साथ खरल करो। जब सूख जाय, इसमें "घी" डालकर खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। मात्रा १ से २ गोली तक। अनुपान—हींग,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैंधानोन और शहद। इस रससे उरुस्तम्भ-रोग निश्चय ही नाश हो जाता है।

अमृता गुग्गुल।

३२ तोले गिलोय, १६ तोले शुद्ध गूगल, १६ तोले हरड़के छिलके, १६ तोले आमलेके छिलके और १६ तोले बहेड़ेके बक्कल—इनको ३२ सेर पानीमें पकाओ; जब ८ सेर पानी रह जाय, उतारकर रस निकाल लो। इस रसको उस समय तक फिर पकाओ, जब तक कि गाढ़ा न हो जाय। गाढ़ा हो जानेपर, इसमें ३ तोले "त्रिफलेका चूर्ण" मिला दो। यही "अमृता गुग्गुल" है। इसमेंसे बलाबल अनुसार खानेसे वातरक्त, कोढ़, बवासीर, मन्दाग्नि, प्रमेह, आमवात, भगन्दर और उरुस्तम्भ आदि रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—रसके गाढ़े होनेपर, कोई-कोई इसमें "त्रिफलेका चूर्ण" मिलाते हैं और कोई "दन्ती, त्रिकुटा, बायबिड़ङ्ग, गिलोय, त्रिफला और दालचीनी"—इन सबका चूर्ण मिलाते हैं।

दूसरी अमृता गुग्गुल।

६४ तोले हरड़, १६ तोले आमले और १६ तोले पुनर्नवा—इनको कूटकर ३२ सेर पानीमें पकाओ। जब ८ सेर पानी रह जाय, मलकर रस निकाल लो। फिर उस रसको तब तक पकाओ, जब तक कि गाढ़ा न हो जाय। गाढ़ा होनेपर, उसमें दन्ती, चीतेकी जड़, पीपर, सोंठ, त्रिफला, गिलोय, दालचीनी और बायबिड़ङ्ग—ये दो-दो तोले और निशोथ १ तोले पीसकर मिला दो। यह भी "अमृता गूगल" है। इसको प्राचीन कालमें, अश्विनीकुमारोंने निकाला था। इसके सेवन करनेसे वातरक्त, कोढ़, बवासीर, मन्दाग्नि, दुष्ट व्रण, प्रमेह, आमवात, भगन्दर, नाड़ीवात, आढ्यवात—उरुस्तम्भ, सूजन और अन्यान्य वातरोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

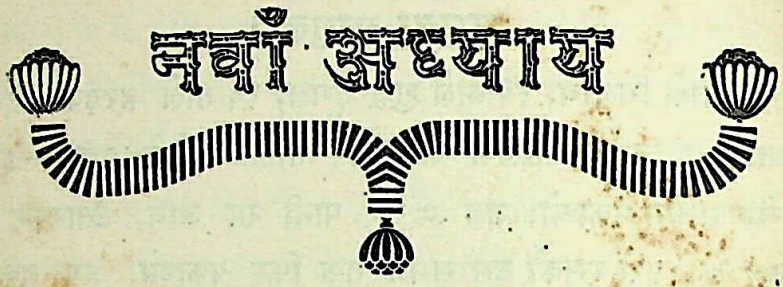

नवाँ अध्याय

आमवात-वर्णन।

आमका स्वरूप।

भोजन किये हुए अन्नके न पकनेसे जो अपक्व या कच्चा रस बनता है, वह क्रम-क्रमसे इकट्ठा हो जाता है। उसे ही "आम" कहते हैं। वह "आम" सिर और शरीरमें वेदना करता है।

खुलासा यह है कि, आम और वात—इन दोनों पदोंके मिलानेसे "आम-वात" शब्द बनता है। जठराग्निकी कमज़ोरीसे, भोजनका सार—रस—जब खूनमें परिणत नहीं होता; यानी रसका खून नहीं बनता, तब वह "रस" आमाशय आदि स्थानोंमें जमा हो जाता है। उस संचित हुए पदार्थको ही 'आम' कहते हैं। जो शरीरके भीतर विचरण करता है, जिसकी ताक़तसे शरीरकी सारी शक्तियाँ अपना-अपना काम करती हैं और जो इन्द्रियों और अतीन्द्रीके द्वारा जाना जाता है, उसे ही "वायु" कहते हैं।

आमवातके सामान्य लक्षण।

कुपित हुए आम और वात दोनों ही, त्रिकस्थानकी सन्धियोंमें प्रवेश करके, पीड़ा करते हुए शरीरको जकड़ देते हैं; तब कहते हैं कि "आमवात" रोग हुआ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शरीर टूटना, अरुचि, प्यास, आलस्य, भारीपन, ज्वर, अन्नका न पकना और अङ्गोंका सूनापन या सूजन—ये आमवातके सामान्य लक्षण हैं।

नोट—दुष्ट वायुके द्वारा आमाशय प्रभृतिमें जमा हुआ आम रस चलायमान होकर—कफ-पित्तके साथ मिलकर—विदग्ध या खट्टा हो जाता है। फिर वही खट्टा रस शरीरकी सन्धियों या जोड़ों प्रभृतिमें अवस्थित होकर, ज्वर और तोड़नेकी-सी पीड़ा आदि लक्षणोंवाले जिस रोगको पैदा करता है, उसीको "आमवात" कहते हैं। उसे हिन्दीमें "गठिया या ग्रन्थिवात" कहते हैं।

निदान-पूर्वक सम्प्राप्ति।

दूध-मछली आदि संयोग-विरुद्ध भोजन करने, विरुद्ध चेष्टा करने, कसरत न करने, अग्नि मन्द रहने, भोजनमें लम्पटता करने और चिकना भोजन करके कसरत करनेसे "आम" या खाये हुए पदार्थोंका कच्चा रस, वायु द्वारा, आमाशय और सन्धिस्थल प्रभृति कफके स्थानोंमें एकत्र और दूषित होकर "आमवात" रोग पैदा करता है।

"वैद्य-विनोद"में लिखा है, विरुद्ध आहार-विहार करनेवाले और मन्दाग्निवाले मनुष्यके अत्यन्त चिकने पदार्थ खानेसे "आम" दूषित होकर, वायुकी प्रेरणासे, धमनियोंमें घुसकर, सन्धियोंमें दौड़ता है।

खुलासा निदान-लक्षणादि।

प्रकृति-विरुद्ध, समय-विरुद्ध और संयोग-विरुद्ध आहार; विरुद्ध चेष्टा, असुखकारक कर्म, मिहनत न करना, चिकने अन्न-पान सेवन करनेके बाद तत्काल ही घोर परिश्रम करना, गीले-भीगे या सीलके घरमें रहना, गरमी या धूपसे तपे हुए शरीरमें शीतल जलसे नहाना अथवा शीतल जल पीना, शीतल हवामें रातके समय बिना कपड़े ओढ़े खुले अङ्ग सोना, एक साथ आते हुए पसीनोंको रोकना, अग्निका मन्दापन और आम एवं वायुको कुपित करनेवाले देश तथा आम-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातकी अनुकूलतावाली प्रकृति आदि आमवातके सन्निकृष्ट कारण हैं। इन समस्त कारणोंसे आम रसका सञ्चार होता और वायुका कोप होता है। इनके साथ ही कफ और पित्त भी कुपित हो जाते हैं।

कुपित हुआ वायु—कफ और पित्तको अपने मददगारोंकी तरह साथ लेकर, और आम रसको उसके स्थानसे रस बहानेवाले स्रोतों या छेदोंमें ले जाकर, उससे उनको बन्द कर देता है। जब वे छेद बन्द हो जाते हैं, तब शरीरमें कमज़ोरी, हृदयमें भारीपन, काममें दिल न लगना, शरीरके अनेक स्थानोंमें अनवस्थित—अस्थिर वेदना और भोजनपर अनिच्छा आदि लक्षण आमवातके पहले होते हैं। इसके बाद, आम रस खट्टा होकर, शरीरकी सन्धियों या जोड़ों वग़ैरःमें ठहर कर, स्पष्ट लक्षणवाली पीड़ा करता है। हाथ, पाँव, सिर, गुल्फ, त्रिक, जानु और घुटनोंकी सन्धियोंमें पीड़ायुक्त सूजन और ज्वर पैदा होते हैं। यही आमवातके विशेष लक्षण हैं।

कुपित आमवातके उपद्रव।

"कुपित हुआ आम" मन्या, कमर, पीठ, हाथ, कन्धे और गुल्फ एवं उनकी सन्धियोंको संकुचित करके सूजन पैदा करता है, जिसमें बिच्छूके काटनेके जैसा दर्द होता है। इसीको वैद्य "आमवात" कहते हैं।

नोट—"भावप्रकाश"में लिखा है, आमवात सब रोगोंसे अधिक दुःखदायी है। जब यह अत्यन्त कुपित होता है, तब हाथ, पाँव, मस्तक, गुल्फ, त्रिक, घुटने, जाँघ और घुटनोंके जोड़ोंमें पीड़ा सहित सूजन पैदा करता है। दूषित आम शरीरके जिस हिस्सेमें जाता है, शरीरके उसी भागमें बिच्छूके काटनेकी जैसी घोर वेदना होती है। आमवातसे जठराग्नि मन्दी हो जाती है, मुँहमें थूक आता है अथवा मुँह और नाकसे पानी गिरता है, अरुचि होती है, शरीरमें भारीपन होता है, उत्साह नाश होता है, मुँहका स्वाद बिगड़ जाता है, दाह या जलन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती है, पेशाब ज़ियादा आता है, पेट कड़ा हो जाता है, शूल चलता है, नींद नहीं आती, प्यास लगती है, वमन होती हैं, बेहोशी आती है, हृदयमें जड़ता होती है, मल रुक जाता है, शरीर जड़ हो जाता है, आँतें कूजती हैं, पेटपर अफारा आ जाता है तथा कलायखंज आदि दूसरे दुःखदायी रोग हो जाते हैं; यानी बहुत बढ़ जानेपर सन्धियोंमें संकोच, लूलापन, टेढ़ापन, स्वरभंग और पैरोंमें सूजन आदि उपद्रव हो जाते हैं।

दोष-भेदसे आमवातके विशेष लक्षण।

अधिक शूल चलनेसे वायुका आमवात समझना चाहिये। शरीरमें दाह और लाली होनेसे पित्तका आमवात समझना चाहिये। शरीर गीले कपड़ेसे लिपटा हुआ-सा हो तथा खुजली चलती हो, तो कफका आमवात समझना चाहिये। दो या तीन दोषोंके लक्षण मिले हुये पाये जानेसे उन-उन दोषोंका आमवात समझना चाहिये।

नोट—पित्तकी अधिकता होनेसे, सूजनसे फूला हुआ शरीर एकदमसे लाल हो जाता है और उसमें बड़ी जलन होती है। वातकी अधिकतामें, सूजन बहुत नहीं बढ़ती, पर तोड़ने-फोड़नेकी-सी घोर पीड़ा होती है। कफ प्रधान आमवातमें, सूजन गीली, भारी और खुजली युक्त होती है।

साध्यासाध्य।

एक दोषका आमवात साध्य, दो दोषोंका याप्य और तीन दोषोंका असाध्य जानना चाहिये। तीन दोषोंके आमवातमें सारे शरीरमें सूजन होती है। ऐसा आमवात आराम नहीं होता।

चिकित्सामें देर होनेसे कठिनाई।

आमवात-रोग होते ही फौरन इलाज करना चाहिये, क्योंकि देर होनेसे रोग कष्टसाध्य हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आमवात-चिकित्सामें—

याद रखने योग्य बातें।

(१) लंघन, स्वेदन और विरेचन—आमवातकी प्रधान चिकित्सा है; यानी लंघन कराने, पसीने निकालने और दस्त करानेसे आमवात-रोग आसानीसे आराम हो जाता है।

"भावप्रकाश"में लिखा है, आमवात-रोगमें पहले लंघन कराओ, सेक करो; तिक्त, अग्निदीपक और तीक्ष्ण पदार्थ सेवन कराओ, जुलाब दो, स्नेहन कर्म करो और पिचकारी लगाओ, क्योंकि ये उपचार इस रोगमें हितकारी हैं।

(२) अगर आमवातमें दर्द हो, तो दर्दकी शान्तिके लिये एक कपड़ेकी पोटलीमें बालू भरकर, उसे आगपर तपाओ और दर्दकी जगह सेक करो। इसे "बालूकी पोटलीका रूखा स्वेद" कहते हैं।

अथवा।

कपासके बिनौले, कुलथी, तिल, जौ, लाल अरण्डकी जड़, मसीना, पुनर्नवा और सनके बीज—ये सब चीज़ें या इनमेंसे जो-जो मिलें उन्हें कूटकर काँजीमें तर कर लो और एक कपड़ेमें बाँधकर पोटली बना लो। फिर एक हाँडीमें काँजी भरकर, उसपर अनेकों छेदवाला शकोरा रखकर ढक दो। हाँडी और ढकनेकी सन्धियोंको मिट्टीसे बन्द कर दो, ताकि सन्धियोंमें होकर भाफ न निकले। फिर उस हाँडीको आगपर रख दो। उस पोटलीको ढकनेपर रखो, जब वह गरम हो जाय, तब उससे आमवातको सेको। बारम्बार सेक करनेसे दर्द अवश्य दूर हो जायगा। इसे "शङ्कर स्वेद" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) उरुस्तम्भ-रोग और आमवातके पथ्यापथ्य एक समान हैं। आमवातमें स्नान करना मना है। यहाँ तक कि गरम पानीसे नहाना निषेध है। अगर आमवातमें ज्वर हो, तो रोटी, दाल-भात आदि न देकर, साबूदाना आदि हलके भोजन देने चाहिए। दर्दकी जगहोंको रूईसे बाँधना चाहिये। दही आदि अभिष्यन्दी, भारी और पिच्छिल पदार्थ आमवात रोगीको भूलकर भी न खाने चाहिए। दही अपथ्य है।

आमवात-नाशक नुसख़े।

योगराज गुग्गुल।

चीता, त्रिकुटा, बायविड़ङ्ग, सैंधानोन, नागरमोथा, तज, तालीसपत्र, चव्य, इलायची, देवदारु, कूट, लहसन, ख़स, अजवायन, खुरासानी अजवायन, रास्ना, गोखरू, धनियाँ, सफेद ज़ीरा, जवाखार, अजमोद, शतावरकी जड़, सौंफ और काश—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, सबके बराबर "शुद्ध गूगल" लो। फिर सबको मिलाकर, घीके साथ खरल करके, चिकने बर्तनमें रख दो। इसमेंसे १ तोले रोज़ सेवन करने और यथेष्ट आहार-विहार करनेसे आमवात-रोग ज़ोरसे आराम हो जाता है। यह "योगराज गुग्गुल" दुनियाँमें मशहूर है। इससे बवासीर, गोला, उदररोग, आमवात, तिल्ली, मन्दाग्नि और व्रण भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—"काश" संस्कृत नाम है। हिन्दीमें इसे "कास" और बँगलामें "केशेघास" कहते हैं। यह नदी किनारेकी कीचड़में पैदा होती है।

पुनर्नवादि चूर्ण।

सोंठ, गिलोय, शतावर, गोरखमुण्डी, कचूर, सोंठ और देवदारु—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "काँजी"के

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साथ खानेसे आमवात और पुराना गृध्रसी-रोग ये दोनों नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस नुसख़ेमें कोई देवदारु और कोई विधारा लेते हैं।

रसोदनशक।

लहसन, हींग, त्रिकुटा, सैंधानोन, सफेद ज़ीरा, संचरनोन, बिड़-नोन और कचियानोन—इन दसोंको चार-चार तोले लेकर बारीक पीस लो। फिर तेलमें मिलाकर, एक-एक तोले नित्य सवेरे ही खाओ। इससे आमवात-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

हरीतकी योग।

हरड़का चूर्ण "अरण्डीके तेल"में मिलाकर, खानेसे आमवात-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

हिंगवाद्य चूर्ण।

हींग १ तोले, चव्य २ तोले, विरियासंचर नोन ४ तोले, सोंठ ८ तोले, कलौंजी १६ तोले और अरण्डकी जड़ ३२ तोले—इन सबको कूट-पीसकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णसे आमवातकी शान्ति हो जाती है।

पिप्पल्यादि चूर्ण।

पीपर, पीपरामूल, सैंधानोन, काला ज़ीरा, चव्य, चीतेकी छाल, तालीसपत्र और नागकेशर—इनमेंसे हरेक दवा आठ-आठ तोले लो। कालानोन ५ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, सफेद ज़ीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, दाडिमीसार १६ तोले और अम्लवेत ८ तोले लो। इन सबको कूट-पीसकर छान लो। इसका नाम "पिप्पल्यादि चूर्ण" है। इसकी एक-एक मात्रा "शहद" अथवा "गरम पानी"के साथ पीनेसे नष्ट हुई जठराग्नि दीप्त होती है। यह ग्रहणी, गोला, बवासीर, भगन्दर, उदररोग, कृमिरोग, खुजली और अरुचिको नाश करता है। आमवातकी तो इससे उत्तम दवा ही और नहीं है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पथ्याद्य चूर्ण।

हरड़, सोंठ और अजवायन—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "माठा, गरम जल अथवा काँजी"के साथ पीनेसे आमवात, सूजन, मन्दाग्नि, पीनस, खाँसी, हृदयका दर्द, स्वर-भेद और अरुचि-रोग नाश हो जाते हैं।

रसोनादि कषाय।

लहसन, सोंठ और निर्गुण्डी—इनको कुल मिलाकर २ तोले ले लो और काढ़ा बनाकर पीओ। यह काढ़ा आमवातपर रामवाण है। सच पूछो तो इससे बढ़कर आमवातकी और दवा ही नहीं है।

रास्ना-पञ्चक क्वाथ।

रास्ना, गिलोय, अरण्डकी जड़, देवदारु और सोंठ—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बनाओ। इस काढ़ेसे आमवात, सर्व्वाङ्गवात, सन्धिगत वात, अस्थिगत वात और मज्जागत वात नाश हो जाती हैं।

रास्ना-सप्तक।

रास्ना, देवदारु, अमलताशका गूदा, गोखरू, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़ और गिलोय—इन सातोंके काढ़ेमें "सोंठका चूर्ण या कल्क" मिलाकर पीनेसे आमवात शीघ्र ही नाश हो जाता है। इसके सिवा कमरका दर्द, पीठका दर्द, पिंडलियोंका दर्द, पसलियोंका दर्द और जाँघोंका दर्द भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

पिप्पल्यादि क्वाथ।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे आमवात-रोग नष्ट हो जाता है।

शुंठ्यादि कल्क।

कचूर और सोंठ—इन दोनोंको समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर, "पुनर्नवेके साथ" सात दिन पीनेसे आमवात नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चित्रकादि चूर्ण।

चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, अतीस और हरड़—इनको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको निवाये जलके साथ खानेसे आमाशयकी वायु दूर हो जाती है; यानी आमवात नष्ट हो जाती है।

नागर चूर्ण।

सोंठका चूर्ण १ तोले भर लेकर "काँजीके साथ" नित्य पीनेसे आमवात नष्ट हो जाती है। यह दवा कफ और वात नाशक है।

पञ्चकोल चूर्ण।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचोंको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको गरम पानीके साथ पीनेसे मन्दाग्नि, शूल, गोला, आम, कफ, अरुचि अथवा आमवात ये सब नाश हो जाते हैं।

एरण्ड तैल योग।

शरीर रूपी बनमें मतवाले हाथीके समान घूमनेवाले आमवात रूपी हाथीको अकेला "अरण्डीका तेल" रूपी सिंह मार भगाता है; यानी केवल "अरण्डीका तेल" पीनेसे आमवात-रोग नाश हो जाता है।

नोट—अगर अरण्डीके तेलमें "हरड़का चूर्ण" भी मिला लिया जाय, तब तो कहना ही क्या? "भावप्रकाश"में लिखा है, आमवात, गृध्रसी और अर्दित वात—लकवावाले रोगियोंको, अरण्डीके तेलके साथ हरड़का चूर्ण अवश्य सेवन करना चाहिये। परीक्षित है।

आरग्वध पत्र।

सन्ध्या समय, सरसोंके तेलमें अमलताशके पत्ते भूनकर खाने और पीछे भोजन करनेसे आमकी पीड़ा नष्ट हो जाती है।

अमृताद्य चूर्ण।

गिलोय, सोंठ, गोखरू, गोरखमुण्डी और वरना—इनको समान-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको दहीके तोड़ या काँजीके साथ पीनेसे आमवात नाश हो जाती है।

नोट—गिलोयका दूसरा नाम अमृता है। जिसने यह नाम रखा है, बहुत ठीक रखा है। गिलोय छाछकी तरह इस भूलोकका दूसरा अमृत है। यह वात-रक्तकी दुश्मन है, इसलिये इसे "वातरक्तारि" भी कहते हैं। आमवातमें भी यह खूब काम करती है। ज्वर नाश करनेमें तो यह प्रसिद्ध ही है। प्रमेह नाश करनेमें भी इसकी बड़ी सुख्याति है। और चीज़ोंके साथ मिलकर, यह कई रोगोंमें किसी भी तेज़-से-तेज़ अंगरेज़ी दवासे अच्छा काम करती है। हम चन्द परीक्षित प्रयोग नीचे लिखते हैं:—

(१) दो तोले गिलोयका स्वरस, ६ माशे शहद और १ माशे हल्दीका चूर्ण मिलाकर खानेसे सब तरहके प्रमेह आराम हो जाते हैं।

(२) गिलोय, उशबा और जलनीमके पत्ते—चार-चार माशे लेकर सिलपर पीसकर, छटाँक भर शीतल जलमें छानकर पीनेसे कुछ दिनोंमें भयंकर-से-भयंकर खून-विकारके रोग नाश हो जाते हैं। फिर "जलनीम"के साथ मिलकर तो गिलोयकी ताक़त सैकड़ों गुनी बढ़ जाती है; क्योंकि "जलनीम" स्वयं खून साफ़ करनेमें अद्वितीय दवा है। केवल जलनीमके ३ माशे पत्ते और ११ कालीमिर्च पीस-छानकर पीनेसे अनेक चर्मरोग नाश हो जाते हैं।

(३) गिलोय और दाखोंको रातके समय भिगोकर और सवेरे हो मल-छानकर पीनेसे प्रमेह नाश हो जाते हैं।

(४) गिलोयका सत्त, दाख और चाँदीके वर्क़ "शहद"में मिलाकर खानेसे भयानक क्षयरोग नाश हो जाता है।

गिलोय—शरीरकी रक्त आदि धातुओंको शोधनेवाली, आमको पचानेवाली, शीतल, पेशाब लानेवाली, वातादि दोषोंको शमन करनेवाली और पुष्टिकारक है। इसलिए इसके स्वरस और काढ़े आदिकी विधि याद रखनी चाहिये।

स्वरस—गिलोयकी बेलको छीलकर सिलपर खूब कूटो और बहुत थोड़ा-थोड़ा पानी मिलाते जाओ। शेषमें उसे कपड़ेमें निचोड़ो। जो रस टपके वही "स्वरस" है। इसकी मात्रा १ तोलेसे २ तोले तक है।

हिम—गिलोयको कुचलकर छै गुने पानीमें, मिट्टीकी हाँडीमें, भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर रस निकाल लो। यही गिलोयका "हिम" है। इसकी मात्रा दो तोलेकी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काढ़ा—चार तोले गिलोयको कुचलकर ६४ तोले जलमें पकाओ। जब ८ तोले पानी रह जाय, मल-छान लो। यही "काढ़ा" है। मात्रा—दोसे चार तोले तक।

अलम्बुषादि चूर्ण।

गोरखमुण्डी १ तोले, गोखरू २ तोले, त्रिफला ३ तोले, सोंठ ४ तोले, गिलोय ५ तोले और निशोथ १५ तोले—इन सबको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको दहीके तोड़के साथ अथवा शराबके साथ अथवा काँजी या गरम पानीके साथ खानेसे आमवात, सूजन सहित वातरक्त; त्रिकस्थान, घुटने, जाँघ और सन्धि-स्थानसे हुआ ज्वर और अरुचि ये सब नाश हो जाते हैं। यह चूर्ण अनेक रोगोंको नाश करनेवाला है।

दूसरा अलम्बुषादि चूर्ण।

गोरखमुण्डी, गोखरू, वरनाकी जड़, गिलोय और सोंठ—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे एक तोले चूर्ण नित्य काँजीके साथ खानेसे बढ़ा हुआ आमवात नष्ट हो जाता है। यह चूर्ण आमवातपर अमृत है।

तीसरा अलम्बुषादि चूर्ण।

गोरखमुण्डी, गोखरू, गिलोय, विधाराके बीज, पीपर, निशोथ, नागरमोथा, वरनाकी जड़, पुनर्नवा, त्रिफला और सोंठ—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी ३ माशेकी मात्रा "दहीके पानी, माठा, दूध अथवा मांस-रस"के साथ पीनेसे आमवात तत्काल नष्ट हो जाती है तथा सन्धियों या जोड़ोंमें आई हुई सूजन दूर हो जाती है।

वैश्वानर चूर्ण।

सैंधानोन २ तोले, अजवायन २ तोले, अजमोद ३ तोले, सोंठ ४ तोले और हरड़ १२ तोले—इन सबको पीस-छानकर रख लो। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूर्णको दहीके तोड़के साथ, काँजीके साथ, माठेके साथ, गरम जलके साथ या घीके साथ पीनेसे आमवात, गोला, हृदयकी पीड़ा, मूत्राशयकी पीड़ा, तिल्ली, गाँठ, शूल, अफारा, बवासीर, दस्तक़ब्ज़, उदर-रोग, कमरके रोग और मूत्राशयके रोग नाश हो जाते हैं। यह "वैश्वानर चूर्ण" वायुको उचित राहमें चलानेवाला है। परीक्षित है।

असीतक चूर्ण।

विष्णुक्रान्ता, पीपर, गिलोय, निशोथ, बाराहीकन्द, अरण्डीकी जड़ और सोंठ,—सबको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ, माँड़के साथ, यूषके साथ, माठेके साथ, मांस-रसके साथ, शराबके साथ अथवा दही*के साथ सेवन करने और इच्छानुसार आहार-विहार करनेसे आमवात, गृध्रसी, खंज, विश्वाची, तूनी, प्रतितूनी, अर्दित वात—लकवा, वातरक्त, कटिग्रह—कमरकी जकड़न, गोला, बवासीर, क्रोष्टुकशीर्ष, पाण्डुरोग, विष, उग्र सूजन और प्रबल वेगवाला ज़बर्दस्त उरुस्तम्भ-रोग—ये नष्ट हो जाते हैं।

शुण्ठीधान्यक घृत।

सोंठ २४ तोले और धनियाँ ८ तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। फिर ६४ तोले घी और २५६ तोले पानी तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही घी अग्निको दीपन करता, बल बढ़ाता, वर्ण या रंगको सुन्दर करता तथा वायु सम्बन्धी रोग, कफ सम्बन्धी रोग, बवासीर, श्वास और खाँसी इन सबको दूर करता है।

---

* आमवात, शीतवात और कफवातमें "दही" नुक़सानमन्द है; पर जिस तरह अकेला दही रक्तपित्तको बढ़ाता है, किन्तु "घी"के साथ मिलकर उल्टा रक्तपित्तको आराम करता है, वही बात यहाँ भी समझनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुण्ठी घृत।

सोंठकी सिलपर पानीके साथ पिसी हुई लुगदी १६ तोले, घी ६४ तोले और सोंठका काढ़ा २५६ तोले—इनको मिलाकर घी पकाओ; जब काढ़ा जलकर घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यह घी वायु और कफको शान्त करता, अग्निको दीपन करता और आमको नष्ट करता है।

कांजिकाद्य घृत।

हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, चव्य और सैंधानोन—इन सबको एक-एक तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर ६४ तोले घी, २५६ तोले काँजी और ऊपरकी लुगदीको कढ़ाहीमें डालकर आगपर पकाओ। जब काँजी जलकर घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यह घी मन्दाग्निको दीपन करनेमें परमोत्तम है। इसके सेवन करनेसे आमवात, कटिग्रह—कमरकी जकड़न, ग्रहणी-दोष, अफारा, शूल, उदर-रोग और मलबन्ध या दस्तक़ब्ज़-रोग नाश हो जाते हैं।

शृङ्गवेराद्य घृत।

अदरख, जवाखार, पीपरामूल और पीपर—चार-चार तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर ६४ तोले घी और २५६ तोले आरनाल काँजी और ऊपरकी लुगदीको कढ़ाहीमें डालकर घी पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीको "शृङ्गवेराद्य घृत" कहते हैं। यह घी अग्निको अच्छी तरहसे दीपन करता और आमवात, अफारा, कटिग्रह—कमरकी जकड़न, ग्रहणी-दोष और शूल-रोग नाश करता है।

प्रसारिणी लेह।

प्रसारिणीका रस २५६ तोले और गुड़का रस ६४ तोले—इन दोनोंको मिलाकर पकाओ; जब अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय, उतार

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लो। इसमें पीपर, पीपरामूल, सोंठ, चीता और चव्य—इन चारोंका चूर्ण डालकर चाटनेसे आमवात-रोग नाश हो जाता है।

रसोनपिण्ड।

लहसन ४०० तोले, सफ़ेद तिल १६ तोले, हींग ४ तोले, सोंठ ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, पीपर ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सज्जी ४ तोले, पंचलवण ४ तोले, सौंफ ४ तोले, हल्दी ४ तोले, कूट ४ तोले, पीपरामूल ४ तोले, चीता ४ तोले, अजमोद ४ तोले, अजवायन ४ तोले और धनियाँ ४ तोले—इन सबको कूट-पीसकर छान लो और घीकी चिकनी हाँडीमें भर दो। ऊपरसे ३२ तोले तिलीका तेल और ३२ तोले काँजी भी डाल दो और सोलह दिन तक "धानके ढेरमें" रखा रहने दो। इसके बाद इसमेंसे नित्य आधा तोले दवा खाकर, ऊपरसे गरम जल पीनेसे आमवात, वातरक्त, सर्वाङ्गवात, एकांगवात, अपस्मार—मिरगी, मन्दाग्नि, खाँसी, श्वास, विष, उन्माद, शूल और कृमि—ये सब नाश हो जाते हैं।

प्रसारिणी तैल।

एक सेर अरण्डीका तेल और चार सेर प्रसारिणीका रस मिलाकर पकाओ। जब रस जलकर तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके पीनेसे आमवात और ख़ासकर कफके रोग नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ६ माशेकी। दूधमें मिलाकर पीना चाहिये।

द्विपंचमूलाद्य तैल।

दशमूल, गोंद और जायफल—ये तीनों पाँच-पाँच तोले लेकर सिलपर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर एक सेर तेल, एक सेर दही और चार सेर खट्टी काँजी, इन सबको और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लो। गुदामें इस तेलकी पिचकारी लगानेसे कमरका दर्द, पसलियोंका शूल, कफके रोग और वात-रोग—इन सबका नाश होता और अग्नि-बल बढ़ता है।

वृहत्सैंधवाद्य तैल।

सैंधानोन, हरड़, रास्ना, सोया, अजवायन, सज्जी, कालीमिर्च, कूट, सोंठ, कालानोन, विरियासंचर नोन, बच, अजमोद, सफेद जीरा, अरण्डकी जड़, मुलेठी और पीपर—इन सत्रह चीज़ोंको दो-दो तोले लेकर सिलपर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर ६४ तोले रैंडीका तेल, ६४ तोले सोयेका काढ़ा, १२८ तोले काँजी और १२८ तोले दहीका तोड़—और ऊपरकी लुगदी सबको कढ़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "वृहत्सैंधवाद्य तैल" है। यह तैल पीने, मालिश करने और गुदामें पिचकारी लगानेके काम आता है। इससे आमवात-रोग नष्ट हो जाता है। यह तैल अग्नि-बलको खूब बढ़ाता है। यह प्रायः समस्त वात-व्याधियोंपर परीक्षित है।

अजमोदादि वटक।

अजमोद, कालीमिर्च, पीपर, बायबिड़ङ्ग, देवदारु, चीता, सोया, सैंधानोन और पीपरामूल—ये सब चार-चार तोले, सोंठ ४० तोले, विधारा ४० तोले और हरड़ २० तोले—इन सबको पीस-कूटकर छान लो। फिर सबके बराबर १३६ तोले गुड़ लेकर, उसमें पानी डालो और आगपर चाशनी कर लो। जब चाशनी हो जाय, उसमें ऊपरका पिसा-छना चूर्ण मिलाकर, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। गरम जलके साथ सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे वात सम्बन्धी रोग इस तरह नाश होते हैं, जिस तरह सूर्यके प्रकाशसे अन्धकारका नाश होता है। यह नुसख़ा आमवातको तो आराम करता ही है, पर ८० तरहके वातरोग और कोढ़ोंको भी नाश करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इन गोलियोंको "महारास्नादि क्वाथ"के साथ खानेसे आमवात रोग और भी जल्दी आराम होता है। "महारास्नादि क्वाथ" नीचे लिखा है। अजमोदादि बटक परीक्षित हैं।

मध्यम रास्नादि क्वाथ।

रास्ना, अरण्डकी जड़, शतावर, कटसरैया, जवासा, अड़ूसा, गिलोय, देवदारु, अतीस, हरड़, नागरमोथा, कचूर और सोंठ—इन तेरह दवाओंको दो-दो माशे लेकर काढ़ा बना लो। जब काढ़ा पक जाय, छानकर उसमें "अरण्डीका तेल" मिला लो और पी जाओ। इस काढ़ेसे आम और शूल समेत वायु, कटिग्रह—कमरकी जकड़न, पीठकी पीड़ा, पीठका रह जाना, कोठेकी पीड़ा, उदरकी पीड़ा, जो कि आमसे होती हैं, आराम हो जाती हैं।

महारास्नादि क्वाथ।

रास्ना, अरण्डकी जड़, अड़ूसा, जवासा, कचूर, खिरेंटी, नागरमोथा, अतीस, हरड़, गोखरू, अमलतास, सौंफ, धनियाँ, पुनर्नवा, असगन्ध, गिलोय, पीपर, विधारा, शतावर, बच, कटसरैया, चव्य, कटेरी और कटाई—इन २४ दवाओंमेंसे रास्ना २ भाग और बाक़ी २३ एक-एक भाग लो यानी रास्ना २ माशे और सब एक-एक माशे लेकर अष्टावशेष-काढ़ा पकाओ; अर्थात् सब दवाओंको जौकुट करके आध सेर पानीमें, मिट्टीकी हाँडीमें पकाओ; जब आठवाँ भाग या छटाँक भर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। फिर दोष और व्याधिके अनुसार शुंठी चूर्ण, अलम्बुषादि चूर्ण अथवा अजमोदादि चूर्ण डालकर पीलो।

इस काढ़ेके पीनेसे समस्त वात-रोग, सन्धिवात, मज्जागत वात, सब तरहका आनाह, सब अङ्गोंका काँपना, कुब्जक वात, वामन वात, पक्षाघात, अर्दित वात, जानुगत वायु, जंघागत वायु, अस्थिगत वात, गृध्रसी वात, वातरक्त, उरुस्तम्भ, बवासीर, विश्वाची, गुल्म, हृदय-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोग, विशूचिका, क्रोष्टुकशीर्ष, अन्त्रवृद्धि, श्लीपद-रोग, योनिरोग, शुक्ररोग, लिङ्गगत रोग और स्त्रियोंके बन्ध्या-रोग नष्ट होते हैं। स्त्रियोंको गर्भ देनेवाली इससे अच्छी दवा और नहीं है। सब तरहके काढ़ोंमें यह उत्तम पाचन है। "महारास्नादि काथ" स्वयं प्रजापतिने कहा है। परीक्षित है।

नोट—अलम्बुषादि चूर्ण और अजमोदादि बटक खिलाकर, ऊपरसे इस काढ़ेको पिलानेसे बहुत लाभ होता है।

रास्ना दशमूल क्वाथ।

रास्ना, सोंठ, बायबिड़ङ्ग, अरण्डकी जड़, त्रिफला, दशमूल और निशोथ—इनका काढ़ा पीनेसे वात सम्बन्धी रोग, आधाशीशी, उरुस्तम्भ, अर्दित, खंज, नेत्रोंके सारे रोग, मस्तक-शूल, ज्वर, अपस्मार-मिरगी और अनेक मन सम्बन्धी रोग नाश हो जाते हैं।

आमवात गजकेशरी रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, लौह-भस्म १ तोले, ताम्बा-भस्म १ तोले, सीसा-भस्म १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, शुद्ध मीठा विष १ तोले, अदरख १ तोले, सैंधानोन १ तोले, लौंग १ तोले, भुनी हींग १ तोले, जायफल १ तोले, दालचीनी ६ माशे, तेजपात ६ माशे, बड़ी इलायचीके बीज ६ माशे, त्रिफला ६ माशे और सफेद जीरा ६ माशे लेकर रख लो।

पहले गन्धक और पारेकी खूब घुटाई करो; जब बिना चमककी कजली हो जाय, उसमें लोहा, ताम्बा, सीसा, सुहागा और विष मिला दो और खरल करो। बाक़ीकी दवाओंको अलग कूट-पीसकर इसी खरलमें डाल दो और फिर "धीग्वारका रस" डाल-डालकर खरल करो। जब खरल हो जाय, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस रसकी मात्रा एकसे १॥ गोली तक है। उचित अनुपानके साथ देनेसे आमवात और अन्यान्य वातरोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है। हम इसे खिलाकर, ऊपरसे "रास्नादि क्वाथ" पिलाया करते हैं।

आमवातारि गुटिका।

सौंफ १ तोला, सुहागा १ तोला, लौंग १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, निशोथ १ तोला, त्रिफला १ तोला, जवाखार १ तोला, छोटी पीपर १ तोला, धनियाँ २ तोला, सफेद ज़ीरा २ तोला, अजवायन ८ तोला और सोंठ १६ तोला,—इन सबको कूट-पीसकर छान लो।

कचूर ६ माशे, छोटी इलायचीके बीज ६ माशे, तेजपात ६ माशे और दालचीनी ६ माशे—इनको भी पीस-छानकर रख लो। १४४ तोला (१ सेर १२ छटाँक ४ तोले) मिश्री और ५ तोला शहद भी तैयार रखो।

पहले मिश्रीमें पानी मिलाकर आगपर चाशनी करो; जब वह लड्डुओंके लायक़ हो जाय, उसे नीचे उतारकर उसमें दोनों तरहके पिसे-छने चूर्ण और "शहद" मिलाकर तोले-तोले भर करके लड्डू बना लो।

हर दिन, सवेरे ही, एक-एक लड्डू खानेसे असाध्य आमवात भी नाश हो जाता है। यह नुसख़ा अम्लपित्त और रक्तपित्त पर भी अच्छा है। आमवातपर यह कभी फेल नहीं होता। इसका जैसा नाम है, वैसा ही है। परीक्षित है।

विजय भैरव तैल।

पारा २ तोले, गन्धक २ तोले, नीमकी छाल २ तोले और हरताल १ तोले—इनको सिलपर "काँजीके साथ" महीन पीसकर, एक कपड़ेकी बत्तीपर लेप दो और ख़ूब सुखा लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब सूख जाय, उस बत्तीको तिलीके तेलमें भिगो लो। फिर ज़मीनपर एक चौड़ा-सा चीनीका प्याला रख लो। बत्तीका पिछला सिरा चिमटेसे पकड़कर, बत्तीके अगले भागमें दियासलाई दिखा दो। बत्तीसे तेल टपक-टपककर प्यालेमें गिरना चाहिये। हाँ, बत्तीके जलते रहने तक, उसपर थोड़ा-थोड़ा तेल ऊपरसे डालते रहना। जब मसाला जल जाय, तब यह काम बन्द कर देना। प्यालेमें जो तेल इकट्ठा हो, उसे शीशीमें रख देना। यही "विजय भैरव तैल" है। इस तैलकी मालिशसे सब तरहके वातरोग और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—अगर "महा विजय भैरव तैल" बनाना हो, तो पारे, गन्धक, नीमकी छाल और हरतालके साथ बराबरकी यानी २ तोले अफीम भी मिला लेना। फिर उसी तरह तेल टपका लेना। वात रोगोंपर यह तेल रामवाण है। परीक्षित है।

वातगजकेसरी गूगल।

शुद्ध आमलासार गन्धक ५ तोले, शुद्ध गूगल ५ तोले और त्रिफला ५ तोले—इनको महीन पीस-छानकर ५ तोले "अरण्डीके तेल"में मिलाओ। इसमेंसे १ तोला दवा नित्य सवेरे ही खाकर, ऊपरसे गरम पानी पीनेसे, २१ या ४० दिनमें, अत्यन्त कष्टसाध्य और असाध्य आमवात भी आराम हो जाता है। जब आमवात रोगी किसी दवासे आराम न हो, तब एक बार इसे सेवन कीजिये। जिनका आज़माया हुआ है, उन्होंने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

आमवातारि बटिका।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध तूतिया १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, सैंधानोन १ तोले, लोहभस्म १ तोले और ताम्बा-भस्म १ तोले, सबका दूना १४ तोले "शुद्ध गूगल" और चौथाई यानी पौने दो तोले "निशोथका चूर्ण" और "चीतेकी जड़का चूर्ण"—इन सबको मिलाकर "घी"में खरल करो। तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे "त्रिफलेका भिगोया हुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पानी।" पीना चाहिए। यह दवा पाचक और दस्तावर है। इससे आमवात नष्ट हो जाती है।

मृत्युञ्जय रस।

शुद्ध शिंगरफ २ तोले, शुद्ध वत्सनाभ विष १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, पीपर १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले और शुद्ध सुहागा १ तोले—इन छहोंको तैयार कर लो।

शुद्ध वत्सनाभ विषको पहले जितने पानीमें वह डूब जाय, बारह घण्टों तक भिगो रखो। शुद्ध गन्धक और शुद्ध शिंगरफको खरलमें अलग-अलग पीस लो।

अब पानीमें १२ घण्टे भीगे हुए विषको अच्छी तरह खरल करो। फिर इसमें गन्धक, शिंगरफ, सुहागा, मिर्च और पीपर मिलाकर खरल करो। सूखनेपर पानीके छींटे भी देते रहो। खरल करते-करते जब मसाला मक्खनके जैसा नर्म हो जाय, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। यही "मृत्युञ्जय रस" है।

यह "मृत्युञ्जय रस" नवीन ज्वरकी मशहूर दवा है, पर यह आमवात रोगमें अत्यन्त दाह देनेपर खूब काम देता है, इसीसे हमने इसे यहाँ लिखा है। इस रससे कितने ही रोग नाश होते हैं। हम उनके नाश करनेकी विधि नीचे लिखते हैं:—

(१) आमवात रोगमें अत्यन्त दाह हो, तो "मृत्युञ्जय रस"को बेलपत्रके स्वरस और शहदके साथ सेवन कराओ।

(२) निमोनिया यानी फुफ्फुस प्रदाह या फुफ्फुसके शोथवाले ज्वरमें बंसलोचन और शहदके साथ सेवन कराओ। खूब फायदा होता है। अगर खाँसी बहुत ज़ोरसे हो, तो कटेरीके रस और शहदके साथ दो।

(३) यकायक पैदा हुए पक्षाघात-एकांग वात या अर्द्धाङ्गवात अथवा फालिजकी आरम्भिक अवस्थामें, बेलपत्रके स्वरस और मधुके साथ देनेसे अपूर्व्व चमत्कार नज़र आता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) अजीर्ण ज्वरमें अगर आँतोंमें दाह और उत्तेजना हो, तो काग़ज़ी नीबूके रसके साथ या ईसबगोल भीजे पानीके साथ सेवन करानेसे खूब लाभ होता है।

(५) पुराना ज्वर बढ़कर भयंकर रूपमें परिणत हो जाय, तो पानोंके रस और शहदके साथ दो।

(६) साधारण ज्वरमें शहदके साथ; वातज्वरमें दहीके तोड़के साथ अथवा त्रिफलेके पानीके साथ अथवा शोरा भिगोये पानीके साथ; पित्तज्वरमें पटोलपत्रके रस या काढ़ेके साथ अथवा मधुके साथ; दाह, प्यास और क़यके उपद्रव हों, तो पटोलपत्रके रस और मिश्रीके साथ मिलाकर; कफ ज्वरमें अदरख या तुलसीके पत्तोंके रस और शहदके साथ; और वातश्लेष्म ज्वरमें अदरखके रस और सैंधे-नोनके साथ सेवन कराओ।

नोट—जिस ज्वरमें मुँह और नेत्र लाल-लाल हों, हृदयकी धड़कन बहुत हो, अत्यन्त ताप हो, दाह, प्यास और बेचैनी आदि उपद्रव हों—उस ज्वरमें "मृत्युञ्जय रस" दे सकते हैं। अगर ज्वरमें दस्तक़ब्ज़ हो, तो "चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भाग"के पृष्ठ १४१में लिखा "आरग्वधादि पाचन" या और कोई नर्म दस्तावर दवा देकर मृत्युञ्जय रस देनेसे ही जल्दी लाभ होगा, अन्यथा नहीं।

सूचना—बहुत वैद्य शिङ्गरफकी जगह पारे और गन्धककी कजली ही डालते हैं। यह मृत्युञ्जय रस काला होता है। काला मृत्युञ्जय रस पुराने ज्वरमें और लाल नवीन ज्वरमें हित है।

आमवात नाशक ग़रीबी नुसख़े।

(१) कचूर और सोंठको सिलपर पानीके साथ पीस लो। उधर "पुनर्नवेकी जड़"का काढ़ा पका लो। ऊपरकी लुगदी खाकर यही काढ़ा पीनेसे आमवात—गठिया आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) सोंठ, कालीमिर्च, बायबिड़ङ्ग और सैंधानोन—इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे अग्निको बढ़ाता है; अतः आमवातको आराम करता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—यही चूर्ण "दहीके तोड़"के साथ लेनेसे खूब अग्नि बढ़ती है।

(३) एक तोले सोंठका चूर्ण काँजीके साथ पीनेसे आमवात—गठियाको नाश करता है। परीक्षित है।

(४) सोंठ और गोखरूका काढ़ा सवेरे ही पीनेसे कमरका दर्द, आमवात—गठिया आराम हो जाती है। यह काढ़ा पाचक और रोगनाशक है। परीक्षित है।

(५) रास्ना, गिलोय, अरण्डीकी जड़, देवदारु और सोंठ—इनका काढ़ा सर्वाङ्गगत वायु, गठिया वात, सन्धिवात और मज्जागत वातको नाश करता है। आमवातपर परीक्षित है।

(६) अगर आमवात-रोगीको प्यास बहुत हो; तो पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इनसे पकाया हुआ पानी देना चाहिये।

(७) सोया, बच, सोंठ, गोखरू, बरनाकी छाल, पुनर्नवा, देवदारु, कचूर और गोरखमुण्डी—इन सबको समान-समान लेकर सेवन करनेसे आमवात रोग नाश हो जाता है।

(८) प्रसारिणी, अरणी और मैनफल—इनको सिरकेकी काँजीमें पीसकर सुहाता-सुहाता लेप करनेसे आमवात नाश हो जाती है।

(९) चीता, कुटकी, पाढ़, इन्द्रजौ, अतीस, गिलोय, देवदारु, बच, नागरमोथा, सोंठ, अतीस और हरड़—इनको एकत्र पीसकर नित्य पीनेसे आमवात रोग नाश हो जाता है।

(१०) कचूर, सोंठ, हरड़, बच, देवदारु, अतीस और गिलोय—इनका काढ़ा पीने और रूखा भोजन करनेसे आमवात नाश हो जाती है।

(११) पुनर्नवा, कटाई, अरण्डकी जड़, मरुआ, मूर्वा और सहँजनेका पंचाङ्ग—इनका काढ़ा आमवात रोगीको पिलानेसे आमवात नष्ट हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) पीपरका चूर्ण डालकर "दशमूलका काढ़ा" पीनेसे आमवात नष्ट हो जाती है । परीक्षित है ।

(१३) सोंठ और हरड़का चूर्ण खानेसे आमवात चली जाती है ।

(१४) गिलोय और सोंठका चूर्ण खानेसे आमवात चली जाती है।

(१५) अरण्डीके तेलमें "जवाखार" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाता है । अरण्डीके अढ़ाई तोले या कम तेलमें "दशमूलका काढ़ा" मिलाकर पीनेसे कमरका दर्द नाश हो जाता है । अरण्डीके २॥ तोले या कम तेलमें "सोंठका काढ़ा" मिलाकर पीनेसे कमरका दर्द जाता रहता है । ये नुसखे दस्तावर हैं ।

(१६) सोंठ और गिलोयके काढ़ेमें "पीपरका चूर्ण" डालकर पीनेसे आम, कोठेकी पीड़ा और कमरकी जकड़न तथा सूजन ये सब आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(१७) सोंठ और गोखरूका काढ़ा नित्य सवेरे ही पीनेसे आम सहित वात रोगीकी कमरका दर्द आराम हो जाता और आम पचता है ।

नोट—कमरमें रहनेवाली शुद्ध या आम सहित वायु व्यथा उत्पन्न करती है, उसे "कटिग्रह" कहते हैं । अगर दोनों साथलों या जाँघोंमें विकार होता है, तो "पंगुरोग" कहते हैं ।

(१८) अरण्डीके बीजोंके छिलके उतारकर और पीसकर दूधमें पकाकर दूध पीनेसे कटिग्रह—कमर जकड़ना और गृध्रसी वात ये रोग आराम हो जाते हैं । कटिग्रह और गृध्रसीपर यह बहुत ही अच्छा नुसखा है ।

(१९) घी, तेल, गुड़, शुक्त नामक काँजी और सोंठ—इनको एकत्र मिलाकर पीनेसे तत्काल तृप्ति होती और कटिग्रह नाश हो जाती है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२०) तीन काँटोंवाले सेंहुड़का दूध "नमक" मिलाकर दर्दकी जगह लगानेसे आमवातकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२१) जिस तरह रेंडीके तेलमें "सोंठका काढ़ा" पीनेसे दस्त होते हैं, उसी तरह गरम दूधमें "रेंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे दस्त होकर आमवात रोग नाश हो जाता है।

(२२) त्रिवृत्तकी जड़ या निशोथका चूर्ण १ तोले, सैंधानोन १ तोले और सोंठ २ माशे मिलाकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से ६ माशे तक चूर्ण "काँजीके साथ" सेवन करनेसे दस्त होकर आमवात नाश हो जाती है।

(२३) त्रिफला, अमलताशका गूदा, गठिवन, कुटकी, रास्ना और गिलोय—इनका काढ़ा पीनेसे आमवात और शिरःकम्पन वात दोनों नाश हो जाती हैं।

(२४) रातको पाव भर खजूर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मलकर रस निचोड़ लो और पीलो। इससे आमवात रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(२५) ३ माशे चिरायता २ तोले पानीमें रातको भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर इसमें ६ माशे शहद, २ रत्ती कपूर और २ रत्ती शुद्ध शिलाजीत मिलाकर पीओ। इस नुसखेसे आमवात, जीर्णज्वर और सब तरहके गरमीके रोग नाश हो जाते हैं। एक-दो बार आमवातपर और अनेक बार जीर्णज्वरपर इसको रामवाण पाया है। परीक्षित है।

(२६) मुण्डी और सोंठको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको गरम जलके साथ खानेसे आमवात रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरा अध्याय

शूल-रोग वर्णन ।

शूल किसे कहते हैं ?

जब पेटमें शूल गड़ानेकी तरह दर्द होता है, तब कहते हैं कि "शूल" रोग हुआ है। "सुश्रुत उत्तरतंत्र"में लिखा है, जब शरीरमें काँटा या काँटेकी नोक चुभकर टूट जानेकी-सी वेदना होती है अथवा शरीरमें त्रिशूलकी चोट लगनेकी-सी भयानक पीड़ा होती है, तब कहते हैं कि, "शूल रोग" हुआ है।

शूल-रोगकी उत्पत्ति ।

हारीत मुनि कहते हैं, जब कामदेव शिवजीको अपने क़ाबूमें करनेके लिए उनके पास गया, तब उन्होंने उसपर अपना त्रिशूल चलाया। सामनेसे त्रिशूलको आते देखकर, वह अपनी जीवन-रक्षाके लिए, विष्णु भगवान्‌के शरीरमें घुस गया। जब त्रिशूल उसके पीछे-पीछे वहाँ भी पहुँचा, तब विष्णुने "हूँ" ऐसा कहा। उनकी हुङ्कारसे बेहोश होकर वह पृथ्वीपर गिर पड़ा और यहाँ शूल नामसे प्रसिद्ध होकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देहधारियोंको पीड़ा देने लगा। यह ज्वरकी तरह शूलकी पौराणिक उत्पत्ति है।

शूलके सन्निकृष्ट निदान।

शूलके सन्निकृष्ट निदान या कारण ये हैं:—

(१) वात,	(२) पित्त,
(३) कफ,	(४) त्रिदोष,
(५) आम,	(६) वातपित्त,
(७) वातकफ,	(८) पित्तकफ।

इस तरह आठ तरहके शूल होते हैं। इन सबमें "वायु"की प्रबलता रहती है।

शूल-रोगोंकी संख्या।

शास्त्रमें शूल-रोग आठ तरहके लिखे हैं:—

(१) वातज,	(२) पित्तज,
(३) कफज,	(४) त्रिदोषज,
(५) वातपित्तज,	(६) वातकफज,
(७) पित्तकफज,	(८) आमज।

नोट—इन आठ शूलोंके अलावः "परिणाम शूल" और "अन्नद्रव" शूल, ये दो शूल और भी होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आठों शूलोंके निदान-लक्षण।

वातजशूलके निदान।

वातजशूलके विप्रकृष्ट निदान या कारण ये हैं:—

(१) कसरत करना, (२) रथ या घोड़े-हाथी आदिकी सवारी करना, (३) अत्यन्त मैथुन करना, (४) रातमें बहुत जागना, (५) शीतल जल अधिक पीना, (६) मटर, मूँग, अरहर और कोदों ज़ियादा खाना, (७) रूखे पदार्थ ज़ियादा खाना, (८) भोजन-पर-भोजन करना, (९) ईंट-पत्थर या लाठी वग़ैरःकी चोट लगना, (१०) कसैले और कड़वे रस ज़ियादा सेवन करना, (११) अंकुर निकले हुए अन्न खाना, (१२) दूध-मछली आदि विरुद्ध पदार्थ खाना, (१३) सूखा हुआ मांस खाना, (१४) भिंडी, ग्वार आदि सूखे साग खाना, (१५) मल, मूत्र, अधोवायु और वीर्य रोकना, (१६) अत्यन्त शोक या रञ्ज करना, (१७) बहुत ही ज़ियादा उपवास करना, (१८) बहुत हँसना, और (१९) बहुत ज़ियादा बोलना—इन कारणोंसे "वायु" कुपित होकर "वातज शूल" उत्पन्न करता है।

नोट—हारीतने लिखा है, मल रोकनेवाले सूखे भोजनों; जौ, उड़द, कोदों, मटर, मूँग, चौला, मसूर और गेहूँ आदि कफकारक पदार्थों; जलपान और मल-मूत्र रोकनेसे वायु नीचेके मूलमार्गको रोककर "वातशूल" पैदा करता है।

"सुश्रुत"में लिखा है, अधोवायु और मल-मूत्र रोकने, भूखके समय भोजन न करके पानी पीने और पिट्ठीके पदार्थ अधिक खाने आदि कारणोंसे "वायु" कुपित होकर दारुण शूल पैदा करता है। शूल-रोग ऐसा भयानक है कि, इसकी पीड़ासे व्याकुल होकर मनुष्य श्वास भी नहीं ले सकता अथवा शूल-रोगके मारे मनुष्य अच्छी तरह साँस भी नहीं लेने पाता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातजशूलके लक्षण।

"भावप्रकाश" में लिखा है:—वातशूल होनेसे हृदय, पसलियों, पीठ, कमर, पेड़ू या वस्ति अथवा मूत्राशयमें सूई चुभनेका-सा दर्द होता है।

यह शूल बारम्बार उठता और बारम्बार शान्त होता है। मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं—पाखाना-पेशाब नहीं होता, गुदाकी हवा नहीं निकलती और अंगोंमें भेदनेकी-सी पीड़ा होती है।

यह दर्द भोजन पच जानेपर, सन्ध्या कालमें, बरसात और सर्दीके समय ज़ियादा बढ़ता है।

यह दर्द सेकादि स्वेदन कर्म करने यानी गरम बालू या गरम जलकी बोतल आदिका सेक करने, वातनाशक तेलोंकी मालिश करने तथा चिकने और गरमागर्म पदार्थ खानेसे शान्त हो जाता है।

"सुश्रुत" में लिखा है:—

निराहारस्य यस्यैव तीव्रं शूलमुदीर्यते।
प्रस्तब्ध गात्रो भवति कृच्छ्रेणोच्छ्वसितीवच॥
वातमूत्रपुरीषाणि कृच्छ्रेण कुरुते नरः।
एतैर्लिंगैर्विजानीयाच्छूलं वातसमुद्भवम्॥

भोजन किये पहले—निराहार रहनेकी हालतमें—दर्द तेज़ हो, शरीर कड़ा हो गया हो, साँस लेनेमें तकलीफ होती हो, गुदाकी हवा और पाखाना-पेशाब तकलीफ़से होते हों या बहुत कम होते हों, तो समझो कि "वायुका शूल" है। "वैद्य-विनोद" में लिखा है:—

हृत्पार्श्वपृष्ठोदरबस्तिकुक्षौ मुहुर्मुहुः शान्तिमुपैति कोपम्॥

हृदय, पसवाड़े, पीठ, पेट, पेड़ू और कूखोंमें बारम्बार दर्द चल-चलकर शान्त हो जाय, उसे "वातशूल" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हारीत कहते हैं, "वात-शूल" में वायु पेटके भीतर आगके समान जलन करता है, कोठेमें प्रबल होकर शूल चलाता है और गुदाकी राहको बन्द कर देता है। शरीरमें चभके चलना, ग्लानि, मलीनता और दीनता—ये वातशूलके उपद्रव हैं।

हृदय-शूलादिके लक्षण।

हृदयमें रहनेवाले "वायु" के रससे बढ़ने और कफ-पित्तसे रुकनेके कारण, साँस रुकता और शूल पैदा होता है। रस और वायुके कोपसे, हृदयमें पैदा हुए इस शूलको "हृदय-शूल" कहते हैं।

"कफ" वायुको साथ लेकर, पसलियोंमें सुई चुभानेकी-सी पीड़ा और साथ ही पेटपर अफारा करता है। इस दशामें, मनुष्य मुँहसे ऊँचे-ऊँचे साँस लेता है, अन्न खाना नहीं चाहता और उसे नींद नहीं आती। ऐसे शूलको "पसलियोंका शूल" कहते हैं।

मल, मूत्र और अधोवायुके रोकनेसे "वायु" कुपित होकर, बस्ति—पेड़ू या मूत्राशय और वंक्षणमें भर जाती है और उनकी राहकी नसोंमें शूल या दर्द चलाती है। इस दशामें मल, मूत्र और वायु—ये रुक जाते हैं; अर्थात् पाखाना-पेशाब नहीं होता और गुदाकी हवा भीतर रुकी रहती है। इसको "वस्तिशूल" कहते हैं।

नोट—हृदयशूल, पार्श्वशूल और वस्तिशूल—वातज शूलके अन्तर्गत हैं, इसीसे हमने छोटे टाइपमें, उनके कारण-लक्षण अलग-अलग भी लिख दिये हैं।

उपयोगी प्रश्नोत्तर।

प्रश्न—वातशूल किन स्थानोंमें होता है?

उत्तर—हृदय, पीठ, पसली, त्रिकस्थान, पेड़ू, पेट और कूखमें।

प्रश्न—वातशूलकी ख़ास पहचान क्या है?

उत्तर—मल, मूत्र और गुदाकी हवा रुकना और उपरोक्त स्थानोंमें शूल चलना।

प्रश्न—वातशूलकी और पहचान क्या हैं?

उत्तर—अगर सेकने, तेल मलने और चिकने-गर्म भोजनसे शूल दबे, तो वायुका शूल समझो।

नोट—भावमिश्रने वात-शूलके स्थानोंमें "पेट और कूखों" का ज़िक्र नहीं किया है, पर औरोंने किया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तजशूलके निदान।

पित्तजशूलके विप्रकृष्ट निदान या कारण ये हैं:—

(१) क्षार या खारी पदार्थ खाना, (२) बहुत गरम, तीक्ष्ण और दाहकारक पदार्थ लालमिर्च आदि ज़ियादा खाना, (३) तेल, चौला, खज़ और कुल्थी या उड़दका यूष खाना, (४) शराब पीना, (५) क्रोध करना, (६) आगकी तपत लगना, (७) सूरजकी धूपमें रहना, (८) मिहनत करना, और (९) ज़ियादा मैथुन करना, इन कारणोंसे "पित्त" कुपित होकर "पित्तजशूल" पैदा करता है।

हारीत कहते हैं—क्रोध करने, धूप और आगके सामने रहने, शोक करने, डरने, चलने-दौड़ने, पसीने लेने, खारे, खट्टे, चरपरे, विदाही और कुछ गर्म पदार्थ खाने; रूखे-सूखे पदार्थ खाने; काँजी, मांस, राई और लेखन पदार्थ सेवन करनेसे "वायु" कुपित होकर "पित्त" को कुपित करता है। फिर वह "कुपित पित्त" मनुष्यके पेटमें दारुण "पित्तजशूल" पैदा करता है।

पित्तजशूलके लक्षण।

ऊपर लिखे कारणोंसे, पित्त कुपित होकर "नाभिमें" शूल उत्पन्न करता है। उस समय प्यास, मोह, जलन, बेहोशी, भ्रम और शोष ये उपद्रव भी होते हैं।

यह शूल मध्याह्नकाल, आधी रात, गरमीके मौसम और शरद् ऋतु—कार-कातिकमें ज़ियादा ज़ोर करता है।

शीतकाल या जाड़ेमें, शीतल हवा आदि लगने तथा शीतल और अत्यन्त मीठे भोजनोंसे यह दर्द शान्त हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हारीत कहते हैं:—पित्तं शूलं करोति जठरे मनुजस्य तीव्रं। अर्थात् पित्त आदमीके पेटमें तेज़ दर्द करता है। उससे अङ्गोंमें दाह—जलन, ग्लानि, पसीने, प्यास और बेहोशी ये उपद्रव होते हैं। नाभिके पास दाह और शोष होता तथा चेहरा पीला हो जाता है।

सुश्रुत कहते हैं, प्यास बहुत लगती है, जलन होती है, मद या नशा-सा बना रहता है, बेहोशी रहती है, दर्द तेज़ीसे चलता है, रोगी शीतल आहार-विहार चाहता और शीतकाल तथा शीतल पदार्थोंसे दर्द शान्त होता है। ये पित्तजशूलके लक्षण हैं।

नोट—अँगरेज़ीमें पित्तज शूलको "ग्यास ट्राइटस" कहते हैं। इसमें मेदेके मुँहपर बहुत दर्द होता है, साँस लेते समय दर्द बहुत होता है, बार-बार क़य होती हैं और उनमें लेहेसदार पानी-सा आता है, कभी-कभी खून की धारियाँ भी दिखाई देती हैं और दारुण प्यास लगती है। कभी दस्त बन्द रहता है और कभी दस्त लगते हैं। इसमें बेहोशी, भ्रम और हिचकी—ये उपद्रव बुरे हैं। यह रोग तीक्ष्ण गरमी, शराब पीने, गरम जल पीने, बहुत लंघन करने और विष वग़ैरः खानेसे होता है। इसमें शीतल और पाचन चीज़ें मुफ़ीद होती हैं।

प्रश्नोत्तर।

प्रश्न—पित्तका शूल कहाँ होता है?

उत्तर—नाभिमें।

प्रश्न—पित्त-शूल किस समय बढ़ता है?

उत्तर—दिनको दोपहरके समय, आधी रातके समय, ग्रीष्म और शरद् ऋतुमें।

प्रश्न—पित्त-शूल किस ऋतुमें शान्त होता है?

उत्तर—शीतकाल या जाड़ेमें।

प्रश्न—पित्त-शूल किन चीज़ोंसे शान्त होता है?

उत्तर—शीतल हवा, शीतल जल और अत्यन्त शीतल और मीठे पदार्थोंसे।

प्रश्न—पित्तशूलके उपद्रव क्या हैं?

उत्तर—दाह, मोह, मूर्च्छा, भ्रम, प्यास और पसीने आना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफजशूलके निदान।

कफजशूलके विप्रकृष्ट निदान या कारण ये हैं:—

(१) जल-जीव मछली आदिका मांस खाना, (२) जलके पास पैदा हुए पक्षियोंका मांस खाना, (३) फटा हुआ दूध या फटे हुए दूधके क्षीर-मोहन आदि पदार्थ खाना, (४) ईखका रस खाना, (५) उड़द आदिका पिसा अन्न खाना, (६) खिचड़ी, (७) तिल, (८) पूरी-कचौड़ी, (९) दही-बड़े आदि कफकारक पदार्थोंसे कुपित हुआ "कफ" आमाशयमें शूल पैदा करता है।

हारीत कहते हैं:—कसरत या मिहनत न करने, ज़ियादा सोने, ईखका रस, चीनी, गुड़, तेल, दूध, दही, उड़द, मछली और शीतल पदार्थोंके सेवन करनेसे "कफ" कुपित होकर जठराग्निको शान्त करता और शूल चलाता है।

कफजशूलके लक्षण।

ऊपर लिखे हुए कारणसे कफ कुपित होकर "आमाशय"में शूल पैदा करता है। इस शूलमें सूखी ओकारी आती हैं, खाँसी चलती है, ग्लानि होती है, अन्नपर रुचि नहीं चलती, मुँहसे लार गिरती है, पेट और सिर भारी रहते हैं।

यह शूल सदा भोजन करनेके बाद ज़ोरसे चलता है। दिनके पहले भागमें—सवेरे ६ से ९ बजे तक, शिशिर ऋतु—जाड़ा, वसन्त ऋतु—फागुन और चैतमें भी यह शूल बहुत तकलीफ देता है, क्योंकि ये कफके संचय और वृद्धिके समय हैं।

सुश्रुतने कहा है—इस शूलमें ओकारी बहुत आती हैं, पेट भरा-सा रहता है, शरीर और पेट भारी जान पड़ते हैं और वेदना मन्दी-मन्दी रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हारीत कहते हैं:—कोठेमें अत्युग्र विकार होता है। ओकारी, खाँसी, वमन, जड़ता, सिरका भारीपन, गीलापन, शरीरका शीतल होना, अरुचि, भोजन करनेके बाद थूक आना, मुँहका मीठा रहना, आलस्य और चेहरेका चिकनापन—ये सब उपद्रव कफके शूलमें होते हैं।

नोट—"वायु-शूल" भोजन पचनेके बाद बढ़ता है, पर "कफ-शूल" भोजन कर चुकते ही बढ़ता है।

दो दोषों और तीन दोषोंके शूलके लक्षण।

अपने-अपने कारणोंसे वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके एक साथ कुपित होनेसे "त्रिदोष शूल" होता है और किन्हीं दो दोषोंके एक साथ कुपित होनेसे "द्वन्द्वज शूल" होता है। दो दोषोंवाले शूलमें दो दोषोंके और तीन दोषवाले शूलमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं।

आमशूलके लक्षण।

जिस शूलमें अफारा, उबकाई, वमन, शरीरमें भारीपन, मन्दता और मुँहसे कफ गिरना, ये उपद्रव हों तथा कफज शूलके समान लक्षण हों, उसे "आमशूल" कहते हैं।

इस आमशूलके पैदा होनेपर, उससे दोषोंका सम्बन्ध हो जाता है, इसलिये "आमशूल" को आठवाँ शूल कहते हैं। यह शूल पहले "आमाशयमें" होता है, पीछे इससे जिस दोषका सम्बन्ध होता है, उस दोषके अनुसार यह वस्ति, नाभि, कूख, हृदय, पसलियों और पेटमें होता है।

नोट—आमशूल पहले आमाशयमें होता है। पीछे अगर उसका सम्बन्ध "वायु" से होता है, तो वह "वस्ति, कूख, हृदय या पसलियों" में हो जाता है। अगर पित्तसे सम्बन्ध होता है तो "नाभि" में होता है।

वैद्य-विनोदमें लिखा है:—दस्तका न होना, पेटमें गुड़गुड़ होना, ओकी आना, शरीर गीला-सा रहना, वमन होना, शरीर भारी रहना और कफजशूलके लक्षण ये सब आमशूलमें होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दोषोंके भेदसे आमशूलके स्थान।

अगर आमशूल "वायु" के सम्बन्धसे होता है, तो वस्ति या मूत्राशयमें होता है।

अगर आमशूल "पित्त" के सम्बन्धसे होता है, तो नाभिमें होता है।

अगर आमशूल "कफ" के सम्बन्धसे होता है, तो हृदयमें, पसलियोंमें और पेटमें होता है।

अगर आमशूल "तीनों दोषों" के सम्बन्धसे होता है, तो सब स्थानोंमें होता है।

अगर आमशूल "कफ" और "वायु" के सम्बन्धसे होता है, तो मूत्राशय, हृदय, कमर और पसलियोंमें होता है।

अगर आमशूल "कफ और पित्त" के सम्बन्धसे होता है, तो पेट, हृदय और नाभिके बीचमें होता है।

अगर आमशूल "वात और पित्त" के सम्बन्धसे होता है, तो ज्वर और दाह पैदा करता है। यह अत्यन्त भयदायक होता है। इसे वात-पित्तका शूल कहते हैं।

शूलका भेद—परिणाम शूल।

अपने कारणोंसे कुपित हुआ वायु, जब कफ और पित्तको दूषित करता है, तब शूल पैदा होता है। यह शूल भोजन पचनेके समय होता है। इसे "परिणाम शूल" कहते हैं।

अगर पेट फूल जाय, गुड़गुड़ शब्द हो, मल-मूत्र रुक जायँ, मन न लगे और कँपकँपी आवें, तो "वाताधिक्य परिणाम शूल" समझो। यह शूल चिकने और गरम पदार्थोंसे शान्त होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर प्यास, जलन, मन न लगना और पसीने आना—ये लक्षण हों, तीक्ष्ण खट्टे और खारी पदार्थ खानेसे शूल पैदा हुआ हो और शीतल पदार्थोंसे शान्त होता हो, तो उसे "पित्ताधिक्य परिणाम शूल" समझो।

अगर वमन, ओकी, मोह और मन्दी पीड़ा हो, शूल बहुत दिनों तक रहे और तीक्ष्ण तथा कड़वे पदार्थोंसे शान्त होता हो, तो उसे "कफाधिक्य परिणाम शूल" समझो।

जिसमें ऊपर लिखे हुए दो दोषोंके लक्षण मिलते हों, वह द्वन्द्वज और जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हों, उसे त्रिदोषज समझो।

जिस त्रिदोषज परिणाम शूल रोगीके मांस, बल और अग्नि क्षीण हो गये हों, उसको असाध्य समझो।

नोट—"परिणाम शूल"की ख़ास पहचान, उस शूल या दर्दका भोजन पचनेके समय होना है। अँगरेज़ीमें इसे "अलसर आव् दी स्टमक" कहते हैं। ज्यों-ज्यों भोजन पचता जाता है, त्यों-त्यों दर्द कम होता जाता है। यह दर्द मेदेकी कमज़ोरीसे होता है।

अन्नद्रव शूलके लक्षण।

खाया हुआ भोजन पचनेपर या पचनेके समय अथवा अपक्व अवस्थामें जो अनिर्दिष्ट शूल उत्पन्न होता है, उसे "अन्नद्रव शूल" कहते हैं। यह पथ्य-अपथ्य, भोजन-अभोजन किसीसे शान्त नहीं होता है। हाँ, क़य करानेसे कुछ आराम मिलता है। इसको असाध्य नहीं समझना चाहिये, क्योंकि शास्त्रोंमें इसकी चिकित्सा लिखी है।

दर्द कुलञ्ज।

यह दर्द सुद्दोंके बढ़ जानेसे आँतों और कूलोंमें होता है। इसमें मल और अधोवायु बड़ी कठिनतासे तकलीफके साथ निकलते हैं। इसमें ऐंठनी बहुत होती है और कभी-कभी अफारा भी हो जाता है।

यह बिना पका खाना खाने, पेटमें कीड़े पड़ जाने, आँतोंमें सुद्दे या अयोग्य मल जमा हो जाने, संखिया आदि विष खाने अथवा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सर्दीसे आँतोंके सुकड़ जानेसे होता है। यह पाचक और दस्तावर दवासे जाता है।

नोट—इस दर्द कुलंजके लक्षण हमारे वातजशूल (कुक्षिशूल) से मिलते हैं। इसे अँगरेज़ीमें कॉलिक पेन (Colic pain) कहते हैं।

शूलके उपद्रव।

वेदना—पीड़ा, अत्यन्त प्यास, मूर्च्छा, मलबंध—मल रुकना, भारीपन, अरुचि, खाँसी, श्वास, वमन और हिचकी—ये शूलके दश उपद्रव हैं।

साध्यासाध्य लक्षण।

एक दोषवाला शूल साध्य होता है, दो दोषवाला कष्टसाध्य और तीन दोषवाला तथा उपद्रव सहित असाध्य और भयङ्कर होता है।

शूलके अरिष्ट लक्षण।

वेदना, अत्यन्त प्यास, बेहोशी, अफारा, भारीपन, ज्वर, भ्रम, अरुचि, कमज़ोरी और बलकी हानि—इन दश उपद्रवों सहित शूल हो, तो रोगी हरगिज़ नहीं बच सकता।

शूल-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) शूल-रोगकी चिकित्सामें देर करना ख़तरनाक है। शूल-रोगके उठते ही इलाज करनेसे आराम होनेकी उम्मीद की जा सकती है, पर देर करने या पुराना होनेसे आरामकी आशा नहीं रहती।

(२) सब शूलोंमें "वायु"ही शीघ्र शूल चलाता है, अतः उसे बहुत जल्दी शान्त करना चाहिये। शूल-रोग नीचे लिखे उपायोंसे शान्त होता है। वैद्योंको इन उपायोंको भूलना न चाहियेः—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) वमन कराना।

(२) लंघन या उपवास कराना।

(३) पाचन औषधि देना।

(४) स्वेदन करना यानी सेकादिसे पसीने दिलाना।

(५) गुदामें दवाओंकी बनी बत्ती चढ़ाना।

(६) क्षार, चूर्ण या गोली सेवन कराना।

नोट—मृत्तिका स्वेद अथवा कार्पास-अस्थिस्वेद या बिनौले प्रभृतिकी पोटलियों द्वारा शूल-स्थानको सेकनेसे दर्द शान्त हो जाता है। तिलोंकी गोली पेटपर फेरनेसे, गरम पानीकी भरी बोतल पेटपर फेरनेसे अथवा मैनफलको काँजीमें पीसकर नाभिके ऊपर लेप करनेसे शूल फौरन जाता रहता है। सोंठ और रैंडीकी जड़के काढ़ेमें "भुनी हींग और कालानोन" मिलाकर पिलानेसे शूल तुरन्त ही भाग जाता है।

जिस शूलमें पाखाना न होता हो और पाखाना हुए बिना आराम हो न सकता हो, वहाँ दवाओंकी बनी बत्तीको घी या तेलसे चुपड़कर गुदामें घुसानेसे ५ मिनटमें पाखाना हो जाता है। ये सभी उपाय वैद्यको याद रखने चाहिए। फिर भी, जहाँ सेक आदिकी ज़रूरत हो वहाँ सेक और जहाँ वमन, विरेचन और लंघनकी ज़रूरत हो वहाँ ये कराने चाहिये। ये शूलकी सामान्य चिकित्सा हैं।

वायु-शूलपर हिदायतें।

(३) अगर वायु-शूल हो, तो थोड़ी-सी मिट्टीको एक हाँड़ीमें डालकर, ऊपरसे पानी भर दो और आगपर औटाओ। जब मिट्टी गाढ़ी हो जाय, उसे एक कपड़ेमें रखकर पोटली बना लो और उस पोटलीसे शूल-स्थानको बारम्बार सेको। इसीका नाम "मृत्तिका स्वेद" है। इससे "वायुका शूल" शान्त हो जाता है।

अगर इससे लाभ न हो, तो बिनौले, कुल्थी, तिल, जौ, अरण्डीकी जड़, अलसी, सोंठ और सनके बीजोंको पीसकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको सिलपर डालकर, ऊपरसे "काँजी" दे-देकर महीन पीसो। फिर उस लुगदीको आगपर गरम करो और कपड़ेमें रखकर पोटली बना लो। इस पोटलीसे दर्द-स्थानको सेको। इसीको "कार्पा-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सास्थ्यादि स्वेद" कहते हैं। बिनौलेको संस्कृतमें कार्पास-अस्थि या कपासकी हड्डी कहते हैं। इसीसे यह नाम पड़ा है। इस पोटलीके सेकसे पहुँचे—कलाई, पेट, पैर, घुटने, कूले, कमर, एड़ी, कन्धे, सिर और उँगलियोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है। इतना ही नहीं, इससे वात सम्बन्धी और पीड़ायें भी शान्त हो जाती हैं।

सुश्रुतने दूधके मावे, तिल, चावलकी खिचड़ीके गोले और तेल या घी मिले हुए मैंढक आदिके मांससे सेकना भी, वायु-शूलमें, हितकर कहा है और इन सेकोंसे वातशूल निश्चय ही शान्त हो जाता है।

बालूको आगपर गरम करके और कपड़ेमें बाँधकर, पोटली-सी बनाकर, शूल-स्थानको सेकनेसे सभी दर्द मिट जाते हैं।

एक बड़ी बोतलमें गरम पानी भरकर, उसका मुँह मज़बूत कागसे बन्द करके, पेटपर फेरनेसे भी शूल शान्त हो जाता है; पर बोतलसे सेकते समय, पेटपर एक कपड़ा फैलाकर सेक करनेसे पेटके चमड़ेके जलनेका डर नहीं रहता। यह डाक्टरी क्रिया है। इसे "फोमेन्टेशन" (Fomentation) कहते हैं।

बेलकी जड़, अरण्डकी जड़ और तिलोंको बराबर-बराबर लेकर "काँजी"के साथ सिलपर महीन पीसकर और फिर आगपर गरम करके और गोला-सा बनाकर पेटपर फेरनेसे "वायु-शूल" तत्काल मिट जाता है।

तिलोंको काँजीके साथ महीन पीसकर और बड़ा-सा गोला बनाकर पेटपर फेरनेसे भयंकर शूल भी आराम हो जाता है।

मैनफलको काँजीके साथ सिलपर, चन्दनकी तरह, महीन घिसकर और ज़रा गरम करके, नाभि या सूँडीपर लेप करनेसे सब तरहके शूल शान्त हो जाते हैं।

सुश्रुतने लिखा है, भूखे रहनेसे हुए शूल-रोगमें, रोगीको हल्का तृप्तिकारक भोजन गरम दूधके साथ देना अथवा चिकने मांस-रसके

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc No. 3084

साथ यवागू देना हितकर है। अगर वात-शूल रोगी रूखा हो, तो उसे चिकने पदार्थ देने चाहिये। वातशूलमें दही, उदश्वित—आधा पानी मिला माठा अथवा दहीका तोड़,—इनमेंसे कोई एक "काला नमक" मिलाकर पिलाना भी लाभदायक है।

ये चन्द बाहर और भीतरके उपाय हमने बतौर मिसालोंके बता दिये हैं। ये सभी परीक्षित हैं। ऊपरके उपाय भी करने चाहिये, और पेटमें खानेकी दवा भी देनी चाहिये, तभी जल्दी लाभ होगा।

पित्तजशूलपर हिदायतें।

(४) पित्तजशूलवालेके लिए गुड़, शालि चावलोंका भात, जवाखार, घी पीना, पित्तनाशक जुलाब, जंगली या जांगल देशके पशु-पक्षियोंका मांस, खरगोश और लवेका मांस-रस—शोरबा, चाँदी या ताम्बेके बर्तनोंमें पानी भरकर शूल-स्थानपर रखना—ये सब हितकारी हैं।

हारीतने लिखा है—जीवन्ती आदि औषधियोंके साथ पकाया हुआ घी या दूध और मिश्री पीना और जुलाब लेना ये पित्तजशूलमें परम हित हैं। सरोवरके शीतल जलसे स्नान करना, चन्दन लगाना, काँसी, चाँदी और सोनेके शीतल जलसे भरे हुए बर्तनोंसे अथवा कमलोंसे शीतलता पहुँचाना—ये सब भी पित्तजशूल नाशक हैं। सफेद साँठी चावलोंकी खील, मिश्री और शहद मिला हुआ दूध पीनेसे पित्तजशूल, दाह और पित्तज्वर नाश होते हैं। घी, दूध और शहद पित्तशूल रोगीको परम हितकर हैं।

"सुश्रुत"में लिखा है:—

ससुखं छर्दि यित्वा तु पीत्वा शीतोदकं नरः।
शीतलानि च सेवेत सर्वाण्युष्णानि वर्जयेत॥

पित्तशूल-रोगीको शीतल जल पिलाकर वमन करानी चाहिये। शीतल पदार्थ खाने-पीनेको देने चाहिये और सब तरहके गरम आहार-विहारोंसे परहेज रखाना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मणि, चाँदी और ताम्बेके बासनोंको शीतल जलसे भरकर शूल-स्थान या दर्दकी जगहपर रखना चाहिये। गुड़, चावल और जौ खाने चाहिये। घी पीना और जुलाब लेना चाहिये। पित्तकारक आहार-विहार छोड़ देने चाहिये।

वृन्दने कहा है—दूधमें अथवा जलमें अथवा ईखके रसमें "कड़वे परवलके पत्तों या नीमके पत्तोंका सिलपर पिसा हुआ कल्क" मिलाकर पित्त-शूल-रोगीको पिलाना चाहिये, ताकि क़य हो जावें; क्योंकि क़य होनेसे पित्तशूलमें लाभ होता है।

अगर पेटमें मल रुका हो, तो मुलेठीके काढ़ेमें "रैंडीका तेल" मिलाकर पिलाना चाहिये, ताकि दस्त होकर पित्त निकल जावे। अथवा त्रिफला और अमलताशके गूदेका काढ़ा, घी और चीनी मिलाकर, पिलाना चाहिये। इससे भी दस्त होकर शूल, दाह और रक्तपित्त आराम हो जाते हैं।

खुलासा यह है कि, पित्तशूलमें वमन, विरेचन और शीतल आहार-विहारोंका सेवन हितकर है। इसीसे हमने वमन-विरेचनके परीक्षित और पित्तमें हितकर नुसखे यहाँ लिख दिये हैं। इनके सिवा, पित्तशूल-रोगीको, उसके दाह और शूलकी शान्तिके लिए, कोई पित्तनाशक औषधि भी पिलानी चाहिये। जैसे, सवेरे ही शतावरके रसमें "शहद" मिलाकर पिलाना अथवा आमलोंके स्वरसमें "मिश्री" मिलाकर पिलाना अथवा आमलोंका चूर्ण "शहद" मिलाकर चटाना। ये तीनों नुसखे पित्तशूलकी शान्तिके लिए परमोत्तम हैं।

कफजशूलपर हिदायतें।

(५) कफके शूलमें लंघन और वमन हितकारी हैं। इनके बाद कफनाशक, कड़वे और गरम पदार्थ देने चाहिये। "सुश्रुत"में रूखा स्वेद भी हितकारी लिखा है। "सुश्रुत"में लिखा है:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अशने भुक्तमात्रेतु प्रकोपः श्लैष्मिकस्य च।
वमनं कारयेत्तत्र पिप्पलीवारिणा भिषक्॥
रुक्षः स्वेदः प्रयोज्यः स्यादन्याश्चोष्णा क्रिया हितः।

कफका शूल भोजन करते ही उठता है, इसलिए, इसके उठते ही, वैद्यको पीपलोंका काढ़ा पिलाकर क़य करा देनी चाहिये, रूखा सेक और गरम चिकित्सा करनी चाहिये। पीपर और अदरख मिलाकर खिलानेसे "कफ-शूल" शान्त हो जाता है।

अगर आमदोष हो, तो बच, कुटकी, नागरमोथा, हरड़ और मूर्वाकी जड़—इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूट-छानकर, तीन-तीन माशे चूर्ण "गोमूत्र"के साथ पिलाना चाहिये।

हारीतने कहा है, कफ-शूल रोगीको लंघन कराना, क़य कराना और पाचन औषधि देना हितकर है। इस रोगवालेको कड़े और मीठे पदार्थ न देने चाहिये और सोने न देना चाहिये।

कफ-शूलमें, रोग होते ही, पहले, तत्काल "पीपलका काढ़ा" पिलाकर वमन करा देनी चाहिये। वमनके बाद उपवास या लंघन कराना चाहिये। कहा है:—

कफे प्रवाम्य शूलार्त्तमवश्यमुपवासयेत्।
लवणं त्रितयं हिंगु पंचकोलयुतं पिबेत्॥

कफजशूल रोगीको वमन कराकर, उपवास अवश्य कराना चाहिये और सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन और हींगका चूर्ण मिलाकर "पंचकोल"का काढ़ा पिलाना चाहिये।

नोट—पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचोंको "पञ्चकोल" कहते हैं।

आमशूल।

(६) आमशूलकी चिकित्सा "कफशूलकी तरह" करनी चाहिये। कहा है:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आमशूले च कर्त्तव्यं कफशूल विनाशनं।

आमशूलमें वही दवा देनी चाहिये, जिससे मन्दाग्नि और अजीर्ण-में आमदोष पकता और अग्नि बढ़ती है।

परिणाम शूलपर हिदायतें।

(७) परिणाम शूलकी शान्तिके लिए पहले लङ्घन, फिर वमन और विरेचन कराने चाहिये। परिणाम शूल पित्तसे हुआ हो, तो तुरन्त ही वमन करा देनी चाहिये। अगर कफसे हुआ हो,तो जुलाव दे देना चाहिये।

परिणाम शूलवालेको वमन करानी हो, तो मैनफलके काढ़ेमें "दूध" मिलाकर उसे कंठ तक पिला देना चाहिये। अथवा काले गन्नेका रस, साधारण ईखका रस, "नीमका काढ़ा या कड़वी तूम्बीका काढ़ा" मिला-कर गले तक पिलाना चाहिये और विधिपूर्वक क़य करानी चाहिये।

अगर जुलाब देना हो, तो रैंडीका तेल दूधमें मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा अरण्डीकी जड़, बेलकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, बड़े नीवूकी जड़, गोखरूकी जड़ और पत्थरचूरका काढ़ा बना कर, उसमें "जवाखार, हींग, सैंधानोन और रैंडीका तेल" मिलाकर पिलाना चाहिये। इन जुलाबोंसे परिणाम शूल खड़ा नहीं रहता।

"वैद्यविनोद"में लिखा है:—

भुक्ते जीर्यति यच्छूलं तदेव परिणामजं।
आकंठं पाययेन्मद्यं क्षीरमिक्षुरसं रसं॥
यदनारिष्टजं क्वाथं सम्पक्वयश्वाच्च वामयेत्।
ऐरंडजेन तैलेन रेचनं पक्तिशूलनुत्॥

जो शूल या दर्द खाना खानेके बाद—खाना पचनेके वक्त होता है, उसे "परिणाम शूल" कहते हैं। इस दर्दमें—शराब, दूध, ऊखका रस और मांसरस,—इनमेंसे कोई एक, कंठ तक पेट भरकर, पिलाना चाहिये। फिर मैनफल और नीमका काढ़ा पिलाकर वमन करा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देनी चाहिये। क़य कराकर, रैंडीका तेल पिलाना चाहिये। इन उपायोंसे "परिणाम शूल" तत्काल नष्ट हो जाता है। ये उपाय परीक्षित हैं। इन उपायोंके बाद नारिकेल क्षार, पथ्यादि लोह अथवा बिडंगादि मोदक आदि औषधियाँ सेवन करानी चाहिये। गरम जलके साथ "शंख-भस्म" खिलाना भी अच्छा है।

परिणाम शूलमें, अनुवासन और निरुहण वस्ति करने यानी गुदामें पिचकारी लगानेकी भी सलाह दी गई है। कहा है:—

लंघनं वमनं शस्तं विरेकश्चाऽनुवासनम्।
निरुह कर्म चैतानि शस्तानि परिणामजे॥

लंघन, वमन, विरेचन, अनुवासन और निरुह वस्ति—ये सब परिणाम शूलमें हित हैं।

अन्नद्रव शूलपर हिदायतें।

अन्नद्रव शूलकी वही चिकित्सा है, जो "अम्लपित्त" रोगकी है। कहा है:—

अन्नद्रवेतुतत्कार्य्यं जरत्पित्ते यदीरितम्।
आमपक्वाशये शुद्धे गच्छेदन्नभवं शमम्॥

जरत्पित्तमें जो क्रिया कही है, वही अन्नद्रव शूलमें भी करनी चाहिये। विशेषकरके, जब आमाशय और पक्वाशय शुद्ध हो जाते हैं, तब अन्नद्रव रोग शान्त हो जाता है; यानी आमाशय और पक्वाशयके साफ होनेसे अन्नद्रव शूल नहीं रहता।

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

अन्नद्रवो दुश्चिकित्स्यो दुर्विज्ञेयो महागदः।
तस्मात्तस्य प्रशमने परं यत्नं समाचरेत॥
अन्नद्रवे जरत्पित्ते वह्निर्मन्दो भवेद्यतः।
तस्मादत्रान्नपानानि मात्राहीनानि कारयेत॥

अन्नद्रव रोग महा भयङ्कर और कठिनसे आराम होनेवाला है, इसलिए इसकी शान्तिके लिए खूब चेष्टा करनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्नद्रव शूल और जरत्पित्त रोगमें जठराग्नि मन्दी हो जाती है, इसलिए इन रोगोंमें अन्न और जलकी मात्रा कम कर देनी चाहिये।

जब तक तीक्ष्ण, गरम और पित्त मिले खट्टे अन्नको रोगी क़यसे निकाल नहीं देता, तब तक अन्नद्रव शूल शान्त नहीं होता। अतः वैद्यको चाहिये कि, रोगीको वमनकारक दवा पिलाकर, रोगकारक पदार्थोंको पेटसे निकाल दे।

इस रोगमें सामाँ, कोदों या काँगनीकी दूधमें बनी हुई और चीनी मिली हुई खीर, गुड़के बने पदार्थ, सूरनकन्द, पेठा, मटर, जौका सत्तू, खीलोंका सत्तू—दहीके साथ; गेहूँकी माँडक, घी, गुड़, चीनी और दूधमें मिली हुई—ये सब पदार्थ पथ्य हैं। मटर, जौ, गेहूँ, सामाँ, कोदों, उड़द, कुल्थी, काँगनी, शालि चावल, दही मिला दूध, गाय या भैंसका घी, बथुआ, करेले, ककोड़े; मोर, हिरन और तीतरका मांस और रोहू आदि मछली ये सब भी अन्नद्रव शूलमें पथ्य हैं।

पसलीके दर्दपर हिदायतें।

(९) जब कोख और पसवाड़ोंमें ठहरा हुआ "कफ" वायुको रोक देता है, तब पसलीका दर्द होता है। चूँकि यह रोग "कफ और वायु"से पैदा होता है, इसलिए इसमें कफ-वात नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। "सुश्रुत"में लिखा है, इस रोगमें "अरण्डीका तेल"—शराब, मस्तु, दूध या मांस-रसमें मिलाकर पिलाना चाहिये। दवाके पच जानेपर, दूध या जंगली जानवरोंके मांस-रसके साथ भोजन कराना चाहिये। पानी गरम करके शीतल किया हुआ पिलाना चाहिये। पसलीके दर्दमें शीतल जल हानिकारक है।

कुक्षिशूलपर हिदायतें।

(१०) कुक्षिशूल या कोखका दर्द वायु और आम यानी बिना पचे भोजनसे होता है। इस रोगवालेका भोजन पचता नहीं—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज्यों-का-त्यों रखा रहता है, श्वास भर जाता है, कच्चे अन्नके दस्त आते हैं, बारम्बार शूल चलते हैं तथा लेटे, बैठे और खड़े—किसी तरह कल नहीं पड़ती।

इस रोगमें वमन करानी चाहिये और बलके अनुसार लङ्घन कराने चाहिये तथा खट्टा रस और अग्निदीपक चीज़ें मिलाकर देनी चाहिये, जिससे आम पच जावे। रोगीका बलाबल और दोष देखकर जुलाब भी देना चाहिये। स्नेह, वस्ति और निरुह वस्ति भी देनी चाहिये, क्योंकि ये दोषोंको नष्ट करती हैं। गरम-गरम लेप करना, भुरता आदि बाँधना, चिकनी चीज़ोंसे सेकना और धान्याम्ल काँजी सींचना हितकारी हैं।

(११) रूखा आहार करनेसे मनुष्यके कोठेमें "वायु" कुपित होता है। यह कुपित "वायु" कोठेके मलको रोक देता है, अग्निको मन्दी कर देता है, स्रोतोंको रोककर तीव्र शूल पैदा करता और दाहनी या बाईं कूखमें ठहर जाता है अथवा सारे पेटमें फैलकर शूल चलाता है। यह आवाज़ करता हुआ बढ़ता है। इस दर्दमें तेज़ प्यास, भ्रम और मूर्च्छा ये उपद्रव भी होते हैं। दस्त होने और पेशाब आनेसे भी यह दर्द शान्त नहीं होता। इसे दारुण "विट्शूल" कहते हैं। असलमें, यह दर्द कोठेमें मलके बढ़ जाने और कोठेके रूखेपनसे होता है।

यह शूल, दाहनी या बाईं कूखसे उठकर, सारे पेटमें फिरता है और साधारण उपायोंसे शान्त नहीं होता। यही इसकी सीधी पहचान है।

"सुश्रुत"में लिखा है, इसमें शीघ्र ही दोष हरनेवाली क्रिया करनी चाहिये। स्वेदन करना—सेककर पसीने निकालना एवं निरुहण वस्ति और स्नेहन वस्ति करना इसमें हितकारी है। कोठा शुद्ध करनेवाली दवाएँ पिलाना भी अच्छा है। "उदावर्त्त रोगकी चिकित्सा" इस रोगमें सुखदायी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिश्रित।

(१२) याद रखो, वातजशूलमें निरुह वस्ति, पित्तजशूलमें जुलाब और दूध, तथा कफजशूलमें वमन और कटु तिक्त पदार्थ हित हैं। रक्तज शूलमें फ़स्द खुलवाना और कृमिजनित या कीड़ोंसे पैदा हुए शूलमें कृमिरोग नाशक दवा खाना हित है। अगर इन उपायोंसे शूल-रोग न मिटे, तो सींगी लगवाना और गुदामें "नारायण तैल" की पिचकारी देना हितकारी है। ये आख़िरी उपाय हैं।

पथ्यापथ्य।

(१३) पथ्यापथ्यपर भी खूब ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि उत्तम-से-उत्तम दवा सेवन करने और साथ ही अपथ्य पदार्थ सेवन करनेसे रोग आराम हो नहीं सकता। शूल-रोगीको भारी और देरमें पचनेवाले भोजन, अधिक खाना, सब तरहकी दाल, साग-तरकारी, दही, रूखी-कसैली और शीतल चीज़ें, खट्टी चीज़ें, लालमिर्च, तेज़ शराब, धूप, मिहनत, मैथुन, शोक, क्रोध, मल-मूत्रादिके वेग रोकना और रातमें जागना ये सब हानिकारक हैं। वैद्यको चाहिये, रोगीको ये बातें बारम्बार बताता रहे।

जिस समय रोगका ज़ोर हो, रोगीको रोटी और भात आदि न देने चाहिये। दिनमें दूध-बारली या दूध-साबूदाना और रातको दूध और धानकी खीलें—ये पथ्य पदार्थ देने चाहिये। अगर पित्तका शूल हो और उसमें जी मिचलाता हो, प्यास बहुत लगती हो, अत्यन्त जलन—दाह और बुख़ार हो, तो शहदमें मिलाकर जौकी लपसी देनी चाहिये।

रोग मिटनेपर, दिनमें, पुराने चावलोंका भात, परवल, बैंगन, गूलर, पुराना सफेद कुम्हड़ा, करेला, केलेका फूल, आमले, कसेरू, पका पपीता, दाख, नारियल, बेलका फल, गरम दूध, कच्चे नारियलका पानी, हींग और सैंधानोन आदि हितकर हैं। रातके समय दूध-साबू-दाना, दूध-बारली, दूध-धानकी खील और जौकी लपसी—ये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हित हैं। इस रोगमें, खानेको खाकर उसी समय जल न पीना चाहिये। भोजनके दो घण्टे बाद जल पीनेसे उपकार होता है और भोजनके साथ या अन्तमें पानी पीनेसे हानि होती है। अगर स्नान करना हो, तो शीतल या गरम जैसा पानी माफ़िक हो वैसे ही स्नान करना चाहिये।

अगर सवेरे-शामके भोजनके बीचमें या सवेरे ही खानेके टाइमसे पहले भूख लगे, तो पेठेका मुरब्बा, आमलोंका मुरब्बा और गरीकी बरफी खानी चाहिये। किसीने कहा है:—

शूले हिंग्वशनं शस्तं वमनं रेचनं तथा।
अद्विदलं हितं चान्नं रक्तजेरक्तमोक्षणम्॥
कृमिशूले कृमिघ्नानि भेषजजानि समाहरेत।
यदि शूलं न गच्छेत धरणीं चालयेत्ततः॥

शूल-रोगमें हींग खिलानी चाहिये। वमन और विरेचन कराना चाहिये। दो दलवाले मूँग, उड़द आदि अन्न न खिलाने चाहिये। रक्तजशूलमें फ़स्द खुलवानी चाहिये। कृमिजनित शूलमें कृमिनाशक दवा देनी चाहिये। अगर इन उपायोंसे शूलरोग न आराम हो, तो "धरणी नस"को दबाना चाहिये।

शूलकी सामान्य-चिकित्सा।

(१) काले तिलोंको, काँजीके साथ, खूब महीन पीसकर एक बड़ा गोला बना लो। इस गोलेको शूलस्थानपर फेरनेसे सब तरहके शूल—खासकर वातजशूल—आराम हो जाते हैं।

(२) मैनफलको काँजीके साथ, सिलपर चन्दनकी तरह, घिसकर और गरम करके नाभिपर लेप करनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) देवदारु, कूट, शतावर, हींग, सैंधानोन और चोक—सत्यानाशी कटेरीकी जड़—इन सबको समान-समान लेकर, काँजी या गन्नेके सिरकेमें पीसकर और आगपर ज़रा गरम करके, पेटपर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे सब तरहके दर्द मिट जाते हैं।

नोट—चोकको संस्कृतमें "हेमक्षीरी" और बोलचालकी ज़बानमें "सत्यानाशी कटेरीकी जड़" कहते हैं।

(४) अरण्डकी जड़, बेलकी जड़, चीतेकी जड़, सोंठ और हींग—इनको समान-समान लेकर, पानीके साथ महीन पीसकर और आगपर गरम करके, निवाया-निवाया लेप करनेसे सब तरहके शूल मिट जाते हैं।

(५) धतूरेके फल और कुड़ेकी छाल,—इनको समान-समान लेकर, काँजी या सिरकेमें पीसकर और गरम करके, नाभिपर और नाभिके ओर-पास लेप करनेसे घोर शूल आराम हो जाते हैं।

(६) पीपर, कुटकी, चिरायता, हरड़ और एलुआ—इन सबको समान-समान लेकर पानीके साथ महीन पीसकर और आगपर गरम करके, सारे पेटपर, गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। इस लेपमें यह खूबी है कि मलको पतला करता और दो-तीन दस्त भी लगाता है।

(७) एक तोले हींग और एक तोले सैंधेनोनको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर ८ तोले तेल और ३२ तोले गोमूत्र तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तेलको नाभिपर लगानेसे दुर्जय शूल आराम हो जाता है। ख़ासकर वातकफजशूल।

(८) धानकी भूसीके पानीके साथ तिलोंको पीसकर गरम कर लो और पोटली बनाकर गरम-गरम रहते सेक करो। इस सेकसे पेटका शूल आराम हो जाता है। ख़ासकर वातकफका शूल।

(९) तुम्बुरु, हींग, सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, जवाखार, अजमोद, हरड़, बायबिडङ्ग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और पोहकर—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूल—ये सब बराबर-बराबर लो और इन सबके वज़नका तीसरा भाग "निशोथ" लो। फिर इन सबको कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्णको फाँककर, ऊपरसे गरम जल पीनेसे सब तरहके शूल, गुल्मोदर, अफारा, अजीर्ण, विबन्ध, आमवात और आनाह रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) हरड़, बहेड़ा, आमला और राई—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट-छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेकी है। एक-एक मात्रा "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर खानेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११) पिसी हुई हरड़ ६ माशे, घी ६ माशे और गुड़ एक तोले मिलाकर खानेसे शूल नाश हो जाता है।

(१२) सोंठ, हरड़ और काला नमक—तीनोंको तीन-तीन माशे लेकर और पत्थरपर पानीके साथ, चन्दनकी तरह, घिसकर एक कटोरीमें पोंछ लो; फिर उसमें आधी छटाँक पानी मिलाकर आगपर गरम करो। इसके पीनेसे सब तरहके शूल, दो दस्त होकर, नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१३) धनियाँ, हरड़, हींग, पोहकरमूल, कालानोन, सैंधानोन और कचियानोन—इन सबको पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इसमेंसे ६।६ माशे चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। शूलके सिवा, वायुगोला और अपतन्त्रक वातको भी यह चूर्ण नाश करता है।

(१४) अम्लवेत २ तोले, सफेद ज़ीरा ४ तोले, कालानोन १ तोले और कालीमिर्च ८ तोले—इनको पीस-छानकर "बिजौरे नीबूके रस"में घोटकर चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे शूल-रोग नाश हो जाता है।

(१५) अजमोद, सैंधानोन, हरड़ और सोंठ—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, गरम जलके साथ, खानेसे शूल नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) शंख, कालानोन, भुनी हींग, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, गरम पानीके साथ, खानेसे घोर शूल नाश हो जाता है।

(१७) तिल, सोंठ, हरड़ और शंखकी भस्म बराबर-बराबर लेकर, सबके वज़नसे दूना "गुड़" ले लो। फिर कूट-पीस और मिलाकर एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। सवेरे ही नित्य, एक गोली खाकर, ऊपरसे शीतल जल पीने और दूधका भोजन करनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं।

(१८) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, जवाखार, कूट और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण, बिजौरे नीबूके रसके साथ, खानेसे तिल्ली और शूल नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१९) छोटी हरड़, सोंठ, मिर्च, पीपर, शुद्ध कुचला, शुद्ध गन्धक, हींग और सैंधानमक—इन आठोंको समान-समान लेकर कूट-पीसकर खरलमें डालो और पानीके साथ घोटकर छोटे बेरके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही एक-एक गोली सेवन करनेसे वायुगोला और शूल नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२०) त्रिफलेके चूर्णमें "मिश्रीका चूर्ण" मिलाकर खानेसे सब तरहके शूल आराम हो जाते हैं।

(२१) रोगीसे; कम्बल उढ़ाकर, प्राणायाम-क्रिया कराओ और सत्तूको कड़वे तेलमें मिलाकर धूनी दो। इस उपायसे तत्काल शूल आराम हो जाता है।

(२२) हरड़ोंको "गोमूत्र"में पकाकर सुखा लो और पीस-छान लो। फिर इसमें बराबरकी "शुद्ध मण्डूर-भस्म" मिला दो। इस चूर्णको "गुड़"के साथ खानेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शूल-रोगपर उत्तमोत्तम नुसख़े।

एरण्डाद्य घृत।

अरण्डीकी जड़, कटाई, गोखरू, पुनर्नवा, गोखरूकी जड़, शतावर, हंसपदी, खिरेंटी, माषपर्णी, विदारीकन्द, बेलकी जड़, कमलकी नाल, चीता, कटेरी, जीवन्ती, ऋषभक, सरपता, कुशा, सहदेवी और देवदारु—इन सबको एक-एक तोले लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

फिर इन्हीं दवाओंको चार-चार तोले लेकर जौकुट कर लो और सोलह सेर पानीमें काढ़ा बना लो। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार-कर छान लो।

फिर बिजौरे नीबूका रस चार सेर तैयार करके अलग रख दो और गायका घी एक सेर ले आओ।

अब एक कढ़ाहीमें लुगदी, काढ़े, नीबूके रस और घीको मिलाकर आगपर चढ़ा दो और मन्दाग्निसे घी पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

यह घी परिणाम शूल और अन्नद्रव शूलको छोड़कर और सब तरहके शूलोंको नाश करता है। जब शूल-रोग किसी दवासे आराम न हो, इस घीको रोगीको पिलाओ। इससे अवश्य आराम होगा। परीक्षित है।

शूल घृत।

वायविड़ङ्ग, सैंधानोन, जवाखार, पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, अजवायन और पाढ़की जड़—हरेक दवा दो-दो तोले लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घी १ सेर, बिजौरे नीबूका रस ४ सेर,सूखी मूली और खट्टे बेरोंका काढ़ा ४ सेर, अनारका रस ४ सेर और लुगदी—इनको आगपर चढ़ाकर, मन्दाग्निसे घी पका लो। घी-मात्र रहनेपर, उतारकर छान लो।

इस घीके सेवन करनेसे हृदय शूल, पसलीका शूल, श्वास, खाँसी, गुल्म, तिल्ली, सब तरहके शूल और वात-विकार नाश हो जाते हैं।

शूल गजकेशरी बटिका।

पहले शुद्ध पारा चार तोले और शुद्ध गन्धक चार तोले—इनको खरल करो; जब कजली हो जाय, इसमें "लोहभस्म" चार तोले मिला दो।

भुना सुहागा, भुनी हींग, सोंठ, त्रिकुटा, त्रिफला, कचूर, दालचीनी, इलायची, तेजपात, तालीसपत्र, जायफल, लौंग, अजवायन, ज़ीरा और धनियाँ—हरेक एक-एक तोले लेकर कूट-पीस-छान लो।

इस चूर्णको और ऊपरके चूर्णको खरलमें डालकर "बकरीका दूध" दे-देकर खरल करो। जब घुट जाय, चार-चार रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

मात्रा—एकसे दो गोली तक। अनुपान—बकरीका दूध या ताज़ा पानी। गोली खाकर, ऊपरसे दूध या पानी पीनेसे सब तरहके शूल नाश हो जाते हैं। गोली खाते समय गोलीके दाँत न लगना चाहियें। ये गोलियाँ खूब आज़मूदा या सुपरीक्षित हैं।

निम्बुक द्राव।

कागज़ी नीबुओंका रस पाव भर, आगपर फुलाया हुआ सुहागा २ तोले और आठ पीली कौड़ियोंकी भस्म—इन सबको एक मज़बूत काँच या चीनीके बासनमें भरकर, मज़बूतीसे उसका मुँह बन्द कर दो, ताकि हवाके जानेको साँस न रहे। फिर उस बर्त्तनको भूसेके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ढेर या अनाजके ढेरमें, आठ दिनों तक, दबाकर रखा रहने दो। आठ दिनों बाद निकालकर काममें लाओ।

इस द्रावकी मात्रा ३ माशेसे १ तोले तक है। सवेरे-शाम या भोजनके बाद, १ मात्रा द्राव एक या दो औन्स पानीमें मिलाकर, काँच, पत्थर या मिट्टीके बर्तनमें पीनेसे शूल-रोग, बदहज़मी और तिल्ली रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अगर यह द्राव जाड़ेमें बनाओ, तो दवाके बर्तनको २१ दिन तक भूसे वग़ैरःमें गड़ा रहने दो, क्योंकि शीतकालमें गरमी देरमें पहुँचती है और इसीसे पाक होनेमें देर लगती है।

शूलान्तक तैल।

अजवायन, धनियाँ, पीपर, बच, सैंधानोन और बेरके पत्ते—हरेक आठ-आठ तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

अरण्डकी जड़ पाव भर और दशमूलकी दसों चीज़ें पाव-पाव भर—इनको कुचलकर, एक मन पन्द्रह सेर पानीमें औटाओ; जब पौने चौदह सेर पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो।

आठ सेर जौ कुचलकर, चौंसठ सेर पानीमें औटाओ; जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

अब तिलीका तेल आठ सेर, गायका दूध १६ सेर, अरण्डी और दशमूलका काढ़ा, जौका काढ़ा और लुगदी—इन सबको मिलाकर पकाओ। जब पकते-पकते तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलकी मालिशसे सब तरहके शूल शान्त हो जाते हैं। बड़ा उत्तम तैल है। परीक्षित है।

बृहत् शतावरी मण्डूर।

त्रिफलेके काढ़ेमें शोधा हुआ मंडूर ३२ तोले, दूध ३२ तोले, आमलोंका रस ३२ तोले और घी १६ तोले—इन सबको मिलाकर, मन्दाग्निसे पकाओ। जब पककर गोली-सी बँधने लगे, उसमें ज़ीरा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धनियाँ, नागरमोथा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, पीपर और बड़ी हरड़—इन सबका तीन-तीन माशे चूर्ण मिला दो और साफ बर्तनमें रख दो।

इसको भोजनके पहले, भोजनके बीच और अन्तमें—छै-छै रत्ती खानेसे सब तरहके शूल और अम्लपित्त आराम हो जाते हैं।

सामुद्राद्य चूर्ण।

यह चूर्ण सब तरहके शूलोंको निस्सन्देह आराम करता है। हर गृहस्थ और वैद्यको तैयार रखना चाहिये। बनानेकी विधि परिणाम शूल-चिकित्साके पृष्ठ ५३४ में लिखी है।

शंखद्राव।

आक, थूहर, चीता, इमली, अपामार्ग और अमलताश—इन सातोंके खार आध-आध पाव; फूला हुआ सुहागा, जवाखार, सज्जीखार, कलमीशोरा, समन्दरफेन और कशीश—ये छहों साढ़े छै-छै छटाँक तथा सैंधानमक, संचरनोन, बिड़नोन, समन्दरनोन और कचियानोन—ये पाँचों नमक छै-छै छटाँक और दो-दो तोले—इन सबको कूट-पीसकर कागजी नीबुओंके दो सेर रसमें मिला दो और आठ दिन तक भीगने दो। नवें दिन, मिट्टीके वारुणी यंत्रसे अर्क चुआ लो। फिर उसे मजबूत काँचकी बोतलोंमें भरकर रख दो। यह बड़ा तेज तेजाब है। इसमेंसे ५ से २५ बूँद तक अर्क, छटाँक भर पानीमें मिलाकर, काँच या पत्थरके बर्तनमें—सवेरे-शाम या जरूरतके समय पीनेसे पेटका शूल, वायु-गोला, तिल्ली और बदहजमी रोग नाश हो जाते हैं। अनेक बारका परीक्षित है।

सूचना—यह अर्क बहुत तेज़ है। हाथ-पाँव या कपड़ेपर गिरनेसे, गन्धकके तेज़ाबकी तरह, उन्हें जला देता है; अतः सावधानीसे निकालकर पीना चाहियें।

नोट—खार बनानेकी तरकीब इसी भागमें देखिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ज़रूरी सूचना।

अगर इन उपायोंसे शूल-रोग नाश न हो, तो गुदामें "नारायण तैल" या "प्रसारिणी तैल"की पिचकारी मारनी चाहिये। बस्ति-विधि या गुदामें पिचकारी लगाना ही आख़िरी उपाय है और इन उपायोंसे लाभ भी होता है। नारायण तैल और प्रसारिणी तैल बनानेकी विधि इसी भागके पृष्ठ २६८ और २७३ में लिखी है।

शूलकी विशेष चिकित्सा।

वातजशूल नाशक नुसख़े।

नोट—स्नेह-विधि, स्वेद-विधि और दूधके पदार्थोंसे वातजशूलकी चिकित्सा करनी चाहिये। वातजशूलवालेको स्वेदन करना; यानी सेककर पसीने निकालना अत्यन्त हित है। कहा है:—शूलाभिपन्नस्य स्वेद एव सुखावहः। शूल-रोगीको पसीने देना ही सुखदायी है।

(१) तिल-चावलकी खिचड़ीके गोले अथवा मैंढक आदिके चिकने मांस द्वारा सेक करनेसे वातशूल नाश हो जाता है।

(२) तिलोंको पीसकर और बड़ा-सा गोला बनाकर, पेटपर फेरनेसे शूल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) मैनफलको काँजीमें चन्दनकी तरह पीसकर, नाभिपर लेप करनेसे शूल-रोग आराम हो जाता है।

(४) जीवन्तीकी जड़को पीसकर और तेलमें मिलाकर लेप करनेसे पसलीका शूल आराम हो जाता है।

(५) बेलपत्र, अरण्डके पत्ते और तिल—इनको काँजीके साथ पीसकर, गरम करके और पोटली बनाकर सेकनेसे शूल नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) धानकी भूसीके पानीके साथ "काले तिल" पीसकर और गरम करके पोटली बनाने और उससे सेक करनेसे पेटका शूल नाश हो जाता है।

(७) इसी भागके पृष्ठ ५००।५०१ में लिखे हुए मृत्तिका स्वेद या कार्पासास्थि-स्वेदसे भी वात-शूल नाश हो जाता है।

(८) देवदारु, सफेद बच, कुड़ेकी छाल, सोया, हींग और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर, काँजीमें पीसकर और गरम करके, पेटपर लेप करनेसे वायु-शूल नाश हो जाता है।

(९) बेलकी जड़, अरण्डकी जड़, चीतेकी जड़, सोंठ, हींग और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर, पानीके साथ एकत्र पीसकर, पेटपर शीतल ही लेप करनेसे वातशूल नाश हो जाता है।

(१०) लवा पक्षीका मांस और कुल्थीका काढ़ा बनाओ। उस काढ़ेमें थोड़ा-सा सैंधानोन, सोंठ, मिर्च, पीपर, संचरनोन और अनार-दानेका रस मिलाकर वायुशूलवालेको पिलाओ। शीघ्र ही आराम होगा।

(११) खिरेंटी, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़, छोटी कटेरी और बड़ी कटेरी—इनके काढ़ेमें "हींग और सैंधानोन" डालकर पीनेसे वातज-शूल नष्ट हो जाता है

(१२) तुम्बरु, हरड़, हींग, पोहकरमूल, संचरनोन, सैंधानोन और बिड़नोन—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ६ माशे चूर्ण, गरम पानीके साथ खानेसे वायुशूल, वायु-गोला और अपतंत्रक वात नाश हो जाते हैं।

(१३) अजवायन, हींग, सैंधानोन, सज्जीखार, जवाखार, संचर-नोन और हरड़—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ६ माशे चूर्ण शराब या माँडके साथ पीनेसे वातशूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) संचरनमक २ तोले, इमली ४ तोले, काला जीरा ८ तोले और कालीमिर्च १६ तोले—इन सबको "बिजौरे नीबूके रसमें" खरल करके सुपारी-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे वायुशूल नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) बिजौरेकी जड़ दो तोलेको पीस-कूटकर छान लो और घीमें मिलाकर पीओ। इससे भी वातशूल नष्ट हो जाता है।

(१६) "सुश्रुत" में लिखा है, वारुणी मदिरा पीनेसे वायु-शूल रोगी सुखी होता है।

(१७) बायबिड़ङ्ग, सहँजना, कमेला, हरड़, निशोथ, अम्लवेत, अश्वकर्ण—शालका भेद और कालानोन,—इनको समान-समान लेकर, पीस-छानकर, मदिराके साथ खानेसे वायुशूल नाश हो जाता है।

(१८) बरियारा, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी और गोखरू—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ और "हींग तथा सैंधानोन" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेसे वातशूल नाश हो जाता है।

(१९) सोंठ और अरण्डकी जड़—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ। पीछे "हींग और संचरनमक" मिलाकर पीओ। इससे वायुशूल नाश हो जाता है।

(२०) हींग, थैकल, सोंठ, पीपर, संचरनोन, अजवायन, जवाखार, हरड़ और सैंधानोन—सबको समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण "ताड़ीके साथ" पीनेसे वातज शूल आराम हो जाता है।

(२१) हींग, थैकल, सोंठ, पीपर, कालीमिर्च, अजवायन, सैंधानोन, संचरनोन और कालानोन—समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर बिजौरे नीबूके रसमें खरल करके रख लो। इसमेंसे दो या तीन माशे चूर्ण खानेसे वायु-शूल शान्त हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२२) लवेके मांस-रसमें हींग, सोंठ, मिर्च, पीपर, सैंधानोन, संचरनोन और अनारका रस मिलाकर पीनेसे वायु-शूल तत्काल नाश हो जाता है।

नोट—लवेके मांसका शोरबा तैयार करके, उसमें हींग आदिका चूर्ण और अनारका रस मिलाकर पीना चाहिये।

(२३) सोंठ, अरण्डकी जड़ और जौ,—इनको कुल दो तोलें लेकर काढ़ा बनाओ। काढ़ेमें "हींग और संचरनोन" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेसे वायु-शूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) हींग और पोहकरमूलका चूर्ण पीनेसे वात-शूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) सोंठ, अरण्डकी जड़ और इन्द्रजौके काढ़ेमें "हींग और कालानोन" मिलाकर पीनेसे वायु-शूल नाश हो जाता है।

(२६) हिंगुपत्री, अतीस, त्रिकुटा, बच, कालानोन, हरड़, खिरेंटी, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, हींग और सैंधा नमक,—इनको समान-समान लेकर पीस-कूटकर छान लो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे वात-शूल तत्काल नष्ट हो जाता है।

"हिंगुपत्री"को हिन्दीमें भी "हिंगुपत्री" ही कहते हैं। इसके पत्तोंके गुण और नाम हींगके पत्तोंसे मिलते हैं। इसके गुण हींगके समान हैं। यह गरम, पाचक, वातनाशक और गोला, बवासीर, बस्तिरोग और विबन्ध आदि नाशक है।

(२७) करंजुआ, कालानोन, सोंठ और हींग—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण गरम जलके साथ लेनेसे वायु-शूल नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तज शूल नाशक नुसखे।

नोट—पित्तज शूलमें, पहले लिखी हुई रीतिसे परवलके पत्ते और ईखादिका रस मिलाकर वमन कराना तथा निशोथ और मिश्रीका जुलाब देना अथवा पीछे लिखे हुए नुसख़ोंसे दस्त कराकर पित्त निकाल देना हित है। देखो पृष्ठ ५०२-५०३

(१) काँसी या चाँदीके बर्तनमें शीतल पानी भरकर शूल-स्थान-पर रखने और पानीमें स्नान करानेसे पित्त-शूल शान्त हो जाता है।

(२) त्रिफला और अमलताशका गूदा दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ। फिर उसमें घी और चीनी मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस नुसख़ेसे पित्त-शूल, दाह और रक्तपित्त,—ये रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) सवेरे ही शतावरके स्वरसमें "शहद" मिलाकर पिलानेसे पित्त-शूल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) आमलोंका स्वरस "चीनी" मिलाकर चाटनेसे पित्त-शूल आराम हो जाता है।

(५) आमलोंके चूर्णमें "शहद" मिलाकर चाटनेसे पित्तज-शूल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) शतावर, मुलेठी, बरियारा, कुशाकी जड़ और गोखरू—कुल दो तोले लेकर काढ़ा बना लो। इस काढ़ेको शीतल करके, "गुड़, चीनी और शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तशूल,—दाह और पीड़ा समेत आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(७) बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, गोखरू, अरण्डकी जड़, कुश, कास और तालमखाना—इनको कुल दो तोले लेकर, काढ़ा बनाने और पीनेसे भयानक पित्तशूल भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) आमले, विदारीकन्द, त्रायमाण या दाख—इनमेंसे किसी एकके रसमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्त-शूल तत्काल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(९) हरड़का पिसा-छना ३ माशे चूर्ण "गुड़ और घी" मिलाकर चाटनेसे पित्तशूल शान्त हो जाता है।

कफशूल नाशक नुसख़े।

नोट—कफशूल रोगीको वमन या क़य कराकर लंघन कराने चाहिये। देखो पृष्ठ ५०३-५०४।

(१) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—कुल दो तोले लेकर काढ़ा बना लो। फिर उसमें सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन और हींग मिलाकर रोगीको पिलाओ। इस काढ़ेसे कफशूल अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, सैंधानोन, संचरनोन, कालानोन और हींग—इनको पीस-कूटकर चूर्ण बना लो। इसमेंसे दो या तीन माशे चूर्ण गरम पानीके साथ फाँकनेसे कफशूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—ये दोनों नुसख़े एक ही हैं। इच्छा हो काढ़ा बनाकर पीओ, इच्छा हो चूर्ण बनाकर सेवन करो।

(३) बच, नागरमोथा, चीतेकी जड़की छाल, हरड़ और कुटकी—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण "गोमूत्रके साथ" खानेसे कफशूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) बेलकी जड़, अरण्डकी जड़, चीता, सोंठ, सैंधानोन और हींग—इनका चूर्ण खानेसे कफशूल शान्त हो जाता है।

त्रिदोषशूलकी चिकित्सा।

(१) शंखभस्म १ माशे, सैंधानोन, सोंठ, कालीमिर्च और पीपरका चूर्ण चार-चार रत्ती और हींग २ रत्ती—इन सबको मिलाकर, गरम पानीके साथ, खानेसे त्रिदोषशूल नाश हो जाता है। कहा है:—

शङ्खचूर्णं सलवणं सहिंगुव्योषसंयुतम्।
उष्णोदकेन तत्पीतं शूलं हन्तित्रिदोषजम्॥

नोट—यह नुसख़ा शूल नाश करनेमें परमोत्तम और परीक्षित है।

(२) विदारीकन्दका रस दो तोले, पके अनारका रस दो तोले, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सैंधेनोनका चूर्ण तीन-तीन रत्ती और शहद १॥ माशे,—इन सबको मिलाकर पीनेसे तीनों दोषोंसे हुआ शूल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई इस तरह भी सेवन कराते हैं—विदारीकन्दका रस १ तोले, पके अनारका रस १ तोले, सोंठ ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे, पीपर ३ माशे और शहद ४ माशे—इनको मिलाकर चटाते हैं। इस तरह भी हमने परीक्षा की है।

(३) सोंठ, मिर्च, पीपर, अनारदाना और सैंधानोन—इनका चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे त्रिदोषज शूल नाश हो जाता है।

अथवा एक अनारके रसमें, त्रिकुटा और सैंधेनोनका चूर्ण मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज शूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) त्रिफलेके चूर्ण और शुद्ध मंडूरको मिलाकर रख लो। इस चूर्णको "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे त्रिदोषशूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) त्रिकुटा १ तोले, निशोथ १ तोले, नागरमोथा १ तोले, त्रिफला १ तोले, चीता १ तोले, शुद्ध पारा ६ माशे, शुद्ध गन्धक ६ माशे, अभ्रक भस्म २ तोले, गोमूत्र द्वारा शुद्ध किया मंडूर २ तोले और बायबिडङ्ग २ तोले तैयार रखो।

पहले पारे और गन्धकको ५।६ घण्टे खरल करो। फिर उसी खरलमें त्रिकुटा आदि दवाओंको कूट-पीस-छानकर मिला दो। अन्तमें त्रिफलेका काढ़ा डाल-डालकर खूब घोटो। घुट जानेपर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंके सवेरे ही उठकर खानेसे त्रिदोष शूल, अम्लपित्त, चमन, हृदय-शूल, पसलीका दर्द, कोखका शूल, पेड़ूका दर्द और गुदाका शूल नष्ट हो जाता है।

नोट—यह नुसख़ा हमारा परीक्षित नहीं, पर उत्तम होनेमें शक भी नहीं, क्योंकि वृन्दका है। पर उसमें १ कर्ष या १ तोलेकी मात्रा लिखी है। हमारी समझमें वह मात्रा आज-कलके कमज़ोरोंके लिए उचित नहीं है; इसीसे हमने एक-एक तोलेकी जगह एक-एक माशेकी गोलियाँ लिखी हैं। रोगी और रोगका बल देखकर, एक बारमें २।३ गोली तक दी जा सकती हैं।

आमशूल नाशक नुसख़े।

नोट—आमशूलकी चिकित्सा "कफशूलकी चिकित्साकी तरह" करनी चाहिये। इस रोगमें आमको पचानेवाली और अग्निको बढ़ानेवाली दवाएँ देनी चाहिये।

(१) अजवायन, सैंधानोन, हरड़ और सोंठ,—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण ताज़ा पानीके साथ लेनेसे आम पचकर आमशूल नाश होता है। परीक्षित है।

(२) हरड़, बहेड़ा, आमला और राई—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मात्रा चूर्ण "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर खानेसे आमशूल और सब तरहके शूल नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) देवदारु, सफेद बच, कूट, सोया, हींग और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर "नीबूके रस"में पीस लो और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप करो। इससे पेटका दर्द जड़से नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) बेलकी जड़, चीता, अरण्डीकी जड़ और सोंठ—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "हींग और सैंधेनोन"के साथ खानेसे शूल तत्काल नाश हो जाता है।

(५) चीता, पीपरामूल, अरण्डकी जड़, सोंठ और धनियाँ—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बना लो। इस काढ़ेसे आमशूल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(६) अरण्डकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, बिजौरेकी जड़, पाषाणभेद, गोखरूकी जड़ और बेलकी जड़—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा पकाओ। फिर इस काढ़ेमें "रैंडीका तेल, हींग, सैंधानोन और जवाखार" मिलाके रोगीको पिला दो। इससे आमशूल और परिणाम शूल दोनों ही फौरन नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) पेठेके छोटे-छोटे टुकड़े करके धूपमें सुखा लो। सूखे हुए टुकड़ोंको हाँडीमें भरकर, हाँडीका मुँह बन्द कर दो और हाँडीको आगपर रखकर पकाओ; परन्तु आग ऐसी लगाओ, जिससे टुकड़े जल न जायँ, किन्तु सख्त अङ्गारोंके जैसे हो जायँ। आग शीतल होने-पर उनको निकालकर पीस लो। इसका नाम "कुष्माण्ड क्षार" है।

बारह रत्ती इस क्षारमें, बारह ही रत्ती सोंठका चूर्ण मिलाकर, रोगीको पानीके साथ फँका दो। इस क्षारसे असाध्य शूल भी शान्त हो जाता है। शूलसे निहायत घबराये हुए रोगियोंके लिए यह उपाय अवश्य करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) अरण्डकी जड़, सोंठ, कंटकारी, कटेरी, बिजौरा नीबूकी जड़, पाषाणभेद और त्रिकुटेकी जड़ें—इनको कुल दो तोलें लेकर काढ़ा बना लो। फिर उसमें "जवाखार, हींग, सैंधानोन और रेंडीका तेल" मिलाकर पिला दो। इस काढ़ेसे आमशूल, कमरका शूल, लिंगशूल, हृदय-शूल और स्तनशूल आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(९) हींग, धनियाँ, त्रिकुटा, अजवायन, चीता और हरड़—इनके चूर्णमें "जवाखार और सैंधानोन" मिलाकर निवाये पानीके साथ खानेसे विष्ठा-शूल, मूत्र-शूल और वायु-शूल नष्ट हो जाते हैं। यह चूर्ण पाचक और अग्निवर्द्धक है।

(१०) चीता, गठिवन, अरण्डकी जड़, सोंठ और धनियाँ—इनके काढ़ेमें "हींग, बिड़नोन और सैंधानोन" मिलाकर पीनेसे शूल, आनाह और विबन्धरोग नाश हो जाते हैं।

परिणाम शूल नाशक नुसखे।

नोट—परिणाम शूल भोजन पचनेके समय होता है। इसमें पहले लंघन, फिर वमन और विरेचन कराना चाहिये। इन सबकी विधि पृष्ठ ५०५—५०६ में देखिये।

(१) पीपर, हरड़ और शुद्ध मंडूर—इनको समान-समान लेकर और महीन पीसकर, "शहद और चीनी" में मिलाकर चाटनेसे दारुण परिणाम शूल शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई इसे "घी और शहद" में मिलाकर भी चटाते हैं।

(२) सोंठ, पीपर और गुड़को समान-समान लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो और दूधमें पकाकर सात या इक्कीस दिन तक खाओ। इससे कष्टसाध्य परिणाम शूल भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अरण्डकी जड़, चीता, शंखभस्म, पुनर्नवां और गोखरू—इनको समान-समान लेकर आगमें भस्म कर लो। इस भस्मको गरम पानीके साथ खानेसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता है।

(४) शंखकी भस्म गरम जलके साथ खानेसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता है। परीक्षित है। कहा है:—

शम्बूकभस्म पीतं वा जलेनोष्णेन तत्क्षणात्।
पक्किजं विनिहन्येतच्छूलं विष्णुरिवाऽसुरान्॥

अकेली जलसीपी या शंखकी भस्म गरम जलके साथ पीनेसे परिणाम शूल इस तरह नाश हो जाता है; जिस तरह विष्णुसे राक्षसोंका नाश हुआ था।

(५) अरण्डीकी जड़, बेलकी जड़, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, बिजौरेकी जड़, पाषाणभेद और गोखरूकी जड़—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा पकाओ। काढ़ेमें "हींग, जवाखार, सैंधानोन और अरण्डीका तेल" मिलाकर पिला दो। इससे परिणाम शूल और अन्य स्थानोंका दर्द भी शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(६) जो मनुष्य केवल सत्तूको मटरके यूषके साथ सात रात तक पीता है, वह बहुत पुराने परिणाम शूलको भी जीत लेता है—नया तो कोई चीज़ ही नहीं है।

(७) खिरेंटी और मण्डूर-भस्मको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे भयानक परिणाम शूल भी आराम हो जाता है।

(८) सोंठ, हरड़ और शुद्ध मंण्डूरको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "ना-बराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे त्रिदोषसे पैदा हुआ परिणाम शूल भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

विडङ्गादि मोदक।

बायबिडङ्ग, चावल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, निशोथ, दन्ती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और चीतेकी छाल—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "गुड़"में मिलाकर लड्डू बना लो। इन लड्डुओंको गरम पानीके साथ खानेसे तीनों दोषोंसे पैदा हुआ परिणाम शूल भी नष्ट हो जाता है।

शुंठ्यादि कल्क।

सोंठ, तिल और गुड़—इन तीनोंको महीन पीसकर, दूधके साथ सिलपर पीसो। इसके चाटनेसे उग्र परिणाम शूल, तीन दिनमें, नष्ट हो जाता है।

पथ्यादि लौह।

लोह-भस्म, हरड़, पीपर और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसको "ना-बराबर घी और शहद"के साथ चाटनेसे परिणाम शूल अवश्य नाश हो जाता है।

नारिकेल क्षार।

पानी भरे हुए हरे नारियलके पेटमें छेद करके, उसमें अच्छी तरहसे "सैंधानमक" भर दो। पीछे छेद बन्द करके कपड़-मिट्टी करो और धूपमें सुखा लो। सूखनेपर, उसे आरने उपलोंकी आगमें रखकर पकाओ और नमककी राख कर लो।

कपड़-मिट्टी उखाड़कर, नारियलके भीतरसे नमक या गूदेको निकाल लो। फिर उसमें बराबरका "पीपलोंका चूर्ण" मिलाकर महीन कर लो और रख दो। इस क्षारकी मात्रा ६ रत्तीसे एक माशे तक है। एक मात्रा खाकर, ऊपरसे ताज़ा जल पीनेसे वातज, पित्तज, कफज और त्रिदोषज परिणाम शूल आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

शम्बुकादि बटिका।

घोंघेकी भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपर, कालानोन, सैंधानोन, साँभर-नोन, खारीनोन और जवाखार—इन सबको बराबर-बराबर लेकर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कदम्ब अथवा सिरसके रस" में घोटकर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। सवेरे ही या भोजनके समय, एक-एक गोली खाने और गरम जल पीनेसे परिणाम शूल फौरन ही नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—घोंघेकी भस्म शंखकी भस्मको कहते हैं। घोंघे छोटे-छोटे लेने चाहिये।

शूल-गजकेसरी रस।

जवाखार, कौड़ीकी भस्म, शुद्ध बच्छनाभ विष, सैंधानोन, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लो। फिर इस चूर्णको पानोंके रसके साथ ६ घण्टे तक खरल करके, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली खानेसे परिणाम शूल, वात-विकार और आमशूल नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

शूल-गजकेसरी बटी।

बच, सोंठ, जीरा, कालीमिर्च, चोता, हींग, शुद्ध विष और दालचीनी—इनको समान-समान लेकर पीस लो। फिर खरलमें डालकर, ऊपरसे भाँगरेका रस दे-देकर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे सब तरहके शूल और वातरोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नारिकेलामृत।

पके हुए नारियलकी गरीको सिलपर पीस-पीसकर मोटे कपड़ेमें होकर गूदा निकालो। यह गूदा १ सेर होना चाहिये।

गायका घी १ सेर, कच्चे नारियलका पानी ८ सेर, गायका दूध ८ सेर, आमलोंका रस १ सेर, चीनी तीन सेर आध पाव और सोंठका पिसा-छना चूर्ण आध सेर—ये सब तैयार रखो।

सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची और नागकेशर एक-एक तोले; आमले, सफेद जीरा, काला जीरा, धनियाँ, बंसलोचन और नागरमोथा डेढ़-डेढ़ तोले लेकर पीस-कूट-छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बनानेकी तरकीब—नारियलके गूदेको घीमें भून लो। फिर इसमें नारियलका पानी, दूध, आमलोंका रस, चीनी और सोंठका चूर्ण मिलाकर सबको एक साथ पकाओ। जब पककर गाढ़ा हो जाय, उसमें सोंठ, कालीमिर्च आदिका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और फौरन उतार लो। शीतल होनेपर, इसमें आध पाव "शहद" मिला दो और किसी साफ बर्तनमें रख दो। यह परिणाम शूलकी सबसे अच्छी दवा है। मात्रा बलाबल अनुसार।

शूलान्तक बटी।

सोंठका चूर्ण ५ तोले, कालानोन २॥ तोले, सुहागेकी खील १। तोले और भुनी हुई मुल्तानी हींग ८ माशे,—इन सबको तैयार कर लो।

पहले मुल्तानी हींगको गायके घीमें भूँज लो। फिर उस हींगको सहँजनेकी जड़के रसके साथ खरल करो। इसके बाद, उसमें आगपर फुलाया हुआ सुहागा डालकर खरल करो। इसके बाद सोंठका पिसा-छना चूर्ण डालकर खरल करो और शेषमें कालानोन डालकर खरल करो। जब मसाला घुटते-घुटते गोली बनाने योग्य हो जाय, कुल मसालेकी चौवन गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो।

सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम जलके साथ नित्य २७ दिन तक खानेसे शूल-रोग शान्त हो जाता है। यह गोलियाँ शूल-रोगको फौरन आराम करती हैं। नये पुराने दोनों तरहके शूल-रोगोंपर ये चलती हैं। हर गृहस्थको ऐसी रामवाण और सहजमें बननेवाली दवा पास रखनी चाहिये। स्वनामधन्य स्वर्गीय ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महाशयने इन गोलियोंसे अनेक शूल-रोगी आराम किये थे। श्रीयुत सतीशचन्द्र-सेन कविरञ्जन राजवैद्य महाशय—लखनौने भी अनेक बार परीक्षा करके इन्हें "वैद्य" मुरादाबादमें लिखा है।

धात्री-लौह।

आमलोंका पिसा-छना चूर्ण ३२ तोले, लोहभस्म १६ तोले और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुलेठीका पिसा-छना चूर्ण ८ तोले—इन तीनों चूर्णोंको मिलाकर, "आमलोंके स्वरस"की सात भावनायें दो; यानी सात दिन तक लगातार आमलोंका रस दे-देकर खरल करो और फिर तेज़ घाममें सुखा लो। सूख जानेपर, फिर पीस लो और बोतलमें भरकर रख दो।

इसकी मात्रा ३ माशेकी है। प्रत्येक मात्रा "ना-बराबर घी और शहद"में चाटी जाती है। चाटनेका समय—भोजनका आदि, मध्य और अन्त है। इस लौहसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता और उसके क्लेश उठाने नहीं पड़ते। भोजनके आदिमें चाटनेसे वात-पित्त नष्ट होते, बीचमें चाटनेसे विष्टब्धता और जलन नहीं होती। परीक्षित है।

नोट—वृन्दमें लिखा है—"अमृताक्काथेनैतदद्रव्यं भाव्यन्तु सप्ताहम्।" अनुवादकने "अमृता"का अर्थ "गिलोय" किया है। अमृता "गिलोय"को भी कहते हैं और "आमले"को भी। चूँकि इस नुसख़ेका नाम ही "धात्री लौह" है। इसलिए अमृताका अर्थ "आमला" ही करना चाहिये। क्योंकि "धात्री"का अर्थ भी "आमला" ही है।

शतावरी मण्डूर।

शुद्ध मंडूर ३२ तोले, शतावरका स्वरस या रस ३२ तोले, दही ३२ तोले, दूध ३२ तोले और घी १६ तोले—इन सबको मिलाकर, एक बासनमें औटाओ। जब तक गाढ़ा या गोलेके माफ़िक न हो जाय औटाते रहो। जब गोला-सा बँधने लगे उतार लो और किसी बासनमें रख दो।

भोजनके पहले, भोजनके बीचमें और भोजनके अन्तमें—इसमेंसे छै-छै रत्ती खानेसे वातज और पित्तज परिणाम शूल नष्ट हो जाता है। कोई-कोई इस मंडूरसे सभी तरहके शूलोंका नष्ट हो जाना लिखते हैं। इसमें शक नहीं कि, यह मंडूर शूल-रोगपर प्रसिद्ध है। परीक्षित है।

तारा मंडूर गुड़।

वायविडङ्ग १ तोले, चीता १ तोले, चव्य १ तोले, त्रिफला ३ तोले, त्रिकुटा ३ तोले, शुद्ध मंडूर ६ तोले, गोमूत्र ३६ तोले और गुड़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१८ तोले—इन सबको पीस-कूट और मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब गोली बँधने लगे, उतारकर चिकने बासनमें रख दो।

इस मंडूरकी मात्रा १ तोलेकी है। भोजनके पहले, भोजनके बीचमें और अन्तमें खानेसे दारुण परिणाम शूल, कामला, पाण्डुरोग, सूजन, मन्दाग्नि, बवासीर, ग्रहणी-रोग, कृमिरोग और गुल्म-रोग नाश हो जाते हैं। इनके सिवा स्थूलता—मोटापन और अम्लपित्त भी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अपथ्य—इस मंडूरको सेवन करते समय रोगीको सूखे साग, विदाही—दाह करनेवाले, खट्टे और चरपरे पदार्थ त्याग देने चाहिये।

नोट—इसके बनानेकी क्रियामें मत-भेद है। किसीने लिखा है—गोमूत्र द्विगुणं दत्वा मूत्रादद्विगुणितं गुड़म्। यानी बायविड़ङ्ग आदि नौ दवाएँ नौ तोले, अकेला मंडूर नौ तोले, गोमूत्र सबसे दूना—१८ तोले, और गोमूत्रसे दूना—३६ तोले गुड़ लो। किसीने लिखा है—गोमूत्र द्विगुण दत्वा मूत्रार्द्धिक गुड़ तथा। सबका दूना—३६ तोले गोमूत्र और मूत्रसे आधा—१८ तोले गुड़ लो। एक महाशयने नौ तोले मंडूर, मंडूरका दूना १८ तोले मूत्र और मूत्रका आधा ९ तोले गुड़ लिखा है।

त्रिफला मण्डूर।

त्रिफलेके काढ़े या स्वरसमें पकाया हुआ मंडूर गुड़के साथ खानेसे परिणाम शूल और त्रिदोषज शूल नष्ट हो जाते हैं।

भीमवटक मण्डूर।

जवाखार, पीपल, सोंठ, चव्य, पीपरामूल और चीता—प्रत्येक दवा चार-चार तोले लेकर पीस-कूट लो। फिर शुद्ध मंडूर ६४ तोले, ऊपरका चूर्ण २४ तोले और गोमूत्र ७०४ तोले—सबको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब गोली-सी बँधने लगे, उतारकर एक-एक तोलेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके बलाबल अनुसार भोजनके पहले, भोजनके बीच और अन्तमें खानेसे अम्लपित्त, परिणाम शूल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और सब तरहके शूल सात दिनमें ही नष्ट हो जाते हैं। यह "भीमवटक" सब योगों—नुसखोंका राजा है। इसपर घी, दूध और घी-दूध मिला जंगली जीवोंका मांसरस या शोरबा खाना चाहिये।

सामुद्राद्य चूर्ण।

समन्दर नोन, सैंधानोन, जवाखार, कालानोन, सांभरनोन, विरिया-संचर नोन, दन्ती—जमालगोटेकी जड़, शुद्ध मंडूर-भस्म, निशोथ और जमीकन्द,—इन सबको समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो। फिर इस चूर्णको चूर्णसे चौगुने दही, चौगुने गोमूत्र और चौगुने गायके दूधके साथ मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते सूख जाय, उतारकर फिर पीस-छान लो और किसी बासनमें रख दो।

इस चूर्णकी मात्रा डेढ़से तीन माशे तककी है। इसे खाकर ऊपरसे गरम जल पीना चाहिये। मात्रा—बलाबल अनुसार कम-ज़ियादा भी हो सकती है। इस चूर्णके पच जानेपर, मांसके पदार्थ घीमें पकाकर खाने चाहिये। इसके सेवन करनेसे नाभिशूल, यकृत या कलेजेका दर्द, गुल्मशूल, प्लीहाशूल, विद्रधि, अष्ठीला, कफवातका शूल, अन्नद्रव शूल, अजीर्ण, ग्रहणी और ख़ासकर परिणाम शूल नाश हो जाते हैं। कहा है—शूलानामपि सर्वेषामौषधं नास्त्यतः परम्। अर्थात् शूल-रोगकी इससे उत्तम दवा और नहीं है। जो मांसाहारी नहीं हैं, उनको मांस खानेकी क़ैद नहीं है। परीक्षित है।

पिप्पली घृत।

आध पाव छोटी पीपरोंको पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

आध सेर पीपरोंको कुचलकर आठ सेर पानीमें डालकर औटाओ; जब दो सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब गायका घी आध सेर, ऊपरकी लुगदी और काढ़ेको मिलाकर पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर घीको छान लो।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है। इस घीमें घीसे आधा "शहद" मिलाकर खाओ और ऊपरसे दूध पीओ। इस घीसे अत्यन्त बढ़ा हुआ घोर परिणाम शूल भी आराम हो जाता है।

अपराजिता कल्क।

अपराजिताकी जड़को पानीके साथ सिलपर पीस लो। इसको घी और चीनीमें मिलाकर खाओ और ऊपरसे दूध पीओ। इस कल्कसे परिणाम शूल नष्ट हो जाता है।

भक्तवारि गुटिका।

निशोथ २ तोले, चीता २ तोले, नागरमोथा २ तोले, हरड़ २ तोले, बहेड़ा २ तोले, आमले २ तोले, सोंठ २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, पारेकी भस्म—रससिन्दूर १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध लोह-भस्म ६ तोले और बंगभस्म ४ तोले—तैयार करो। पहले निशोथसे पीपर तककी नौ दवाओंको कूट-पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्ण और पारेकी भस्म आदिको मिलाकर खरलमें डालो और "त्रिफलेका काढ़ा" डाल-डालकर खरल करो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो।

हर दिन बलाबल अनुसार, गोली खाकर ऊपरसे "भातका माँड़" पीओ। इन भक्तवारि बटिकाओंसे त्रिदोष-जनित परिणाम शूल, अम्लपित्त, वमन, ज्वर, हृदयशूल, पसलीका दर्द, पेड़ूका दर्द, कोखका दर्द, गुदाका दर्द, खाँसी, श्वास, कोढ़, संग्रहणी, यकृत, प्लीहा, उदररोग और राजयक्ष्मा आदि नाश होते हैं।

नोट—अगर "रससिन्दूर" न हो, तो शुद्ध पारे और शुद्ध गन्धककी निश्चन्द्र कज्जली डालनेसे भी काम चल सकता है। पारेकी भस्म जहाँ लिखी हो, वहाँ "रससिन्दूर" लेना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नारिकेल लवण।

नारियलका पानी और सैंधानोन मिलाकर आगपर पकाओ। जब पानी जलकर नमक रह जाय, रख लो। इस नमकसे वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज परिणाम शूल नाश हो जाता है।

नोट—नारिकेल क्षार और नारिकेल लवणकी क्रियामें थोड़ा ही फ़र्क़ है। यह सहज है, वह कुछ कठिन है; लेकिन वह ज़ियादा मशहूर है। जिनसे वह न बने, इसे ही बना लें। यह भी काम देगा।

आमलक खण्ड।

पेठेको छीलकर, उसके भीतरके बीजोंके घर और बीज निकाल दो। फिर उसे पानीमें पका लो। पक जानेपर, पेठेको निकालकर मोटे कपड़ेमें निचोड़ लो। यह निचोड़ा हुआ पेठा अढ़ाई सेर अलग रख दो। इस पेठेको ६४ तोले घीमें डालकर कढ़ाहीमें भून लो।

अब आमलोंका रस या स्वरस ३२ तोले, पेठेका रस या स्वरस ६४ तोले और सफेद बूरा ३२तोले भी तैयार कर लो और एकमें मिलाकर छान लो।

पीपर, ज़ीरा, सोंठ और कालीमिर्च हरेक ८ तोले, तालीसपत्र ४ तोले, धनियाँ ४ तोले, दालचीनी १ तोले, नागकेशर १ तोले, इलायची १ तोले, तेजपात १ तोले और नागरमोथा १ तोले—इन सबको कूट-पीसकर छान लो।

बनानेकी विधि—आमले आदिके छने हुए रसमें घीमें भूँजा पेठा मिलाकर पकाओ। जब पकते-पकते इतना गाढ़ा हो जाय कि, कलछीके लगने लगे, उसमें पीपल आदिका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और फौरन उतार लो। जब यह शीतल हो जाय, इसमें ३२ तोले "शहद" मिला दो और साफ चिकने बर्तनमें रख दो।

यह "आमलक खण्ड" त्रिदोषज परिणाम शूल, वमन, मूर्च्छा, खाँसी, श्वास, अरुचि, हृदयशूल, रक्तपित्त और पीठके दर्दको नष्ट करता है। यह उत्तम रसायन है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अन्नद्रव शूल नाशक नुसखे।

नोट—भोजनके पचनेपर अथवा भोजन पचते समय अथवा भोजनकी अजीर्ण-अवस्थामें जो शूल उठता है, उसे "अन्नद्रव शूल" कहते हैं। जब तक रोगी चरपरे, खट्टे और कड़वे पित्तोंको क़यके द्वारा नहीं गिराता, तब तक यह दर्द शान्त नहीं होता। केवल वमन या क़य करानेसे ही यह शूल शान्त हो जाता है। जब तक पित्त गिरता रहे, तब तक वमन करानी चाहिये और जब तक कफ गिरता रहे, दस्त कराने चाहिये। आमाशय और पक्वाशयके साफ हो जाने-पर, अन्नद्रव-शूल अपने-आप शान्त हो जाता है।

(१) उड़दकी दालकी पिट्ठीकी बड़ी बनाकर तेलमें पकाओ। फिर उनको "शहद"में डालकर "घी"के साथ खाओ। इस उपायसे अन्न-द्रव शूल आराम हो जाता है।

(२) आमलोंके चूर्णमें शुद्ध मण्डूर मिलाकर "शहद"के साथ चाटनेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

(३) मुलेठीके चूर्णमें शुद्ध लोह-चूर्ण या मण्डूर मिलाकर "शहद" के साथ चाटनेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

(४) दूधमें सामाँ, कोदों और काँगनीकी खीर बनाकर और बूरा डालकर खानेसे अन्नद्रव शूल मिट जाता है।

(५) भुने हुए चनोंके बड़े बनाकर खानेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

(६) चनोंका सत्तू परवलके यूषके साथ खानेसे अन्नद्रव शूल नाश हो जाता है।

(७) निराहार रहनेकी दशामें, केवल मटर खाने और प्यास लगनेपर दूध पीनेसे अन्नद्रव शूल नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुड़ मण्डूर।

पुराना गुड़ ४ तोले, आमलोंका चूर्ण ४ तोले और शुद्ध मण्डूर-भस्म १२ तोले—इनको "शहद और घी"में मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक तोले भर दवा भोजनके पहले, भोजनके बीच और अन्तमें खानेसे महा दारुण अन्नद्रव शूल, एक सालका परिणाम-शूल और जरत्पित्त—ये आराम हो जाते हैं।

कलाय चूर्ण गुटिका।

मटरका चूर्ण २ तोले और शुद्ध मण्डूर-भस्म १ तोले—इनको खरलमें डालकर "ढाकके रस"के साथ खरल करो और तोले-तोले भरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको खाकर, ऊपरसे "माँड़" पीनेसे अन्नद्रव शूल आराम हो जाता है।

हृदय-शूल नाशक नुसख़े।

(१) हिरनके सींगको लोहेकी रेतीसे रितवाकर चूरा कर लो। फिर उसे एक मिट्टीके कुल्हड़ेमें भरकर, उसपर ढक्कन रख दो और सारे कुल्हड़ेपर चार-पाँच तह कपड़-मिट्टी करके धूपमें सुखा लो। फिर उसे दस सेर जंगली कण्डोंमें रखकर फूँक दो अथवा हलवाईकी भट्टीमें ३ घण्टे तक डाल रखो। आगसे निकालकर, कुल्हड़ेमेंसे भस्मको निकाल लो और शीशीमें रख दो। यह बड़ी उत्तम दवा है। इसमेंसे एक माशे भस्म "गायके ३ माशे गरम घी" में मिलाकर खानेसे हृदयका शूल फौरन आराम होता है। अनेक बार इससे सब तरहके शूल भी आराम होते देखे हैं, पर हृदय और चूतड़के दर्दकी तो यह ख़ास दवा है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) पोहकरमूलका चूर्ण "शहद" में मिलाकर खानेसे हृदयका शूल, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा और हिचकी आदि रोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) दशमूलके काढ़ेमें जवाखार और सैंधानोन मिलाकर सेवन करनेसे हृदय-रोग, वायुगोला, शूल, श्वास और खाँसी आदि रोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

(४) अर्जुन वृक्षकी छालका स्वरस चार सेर और गायका घी एक सेर मिलाकर पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीके पीनेसे हृदय-शूल और हृदयके सब रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—ये चारों नुसख़े अच्छे हैं। इनमें भी हिरनके सींगवाला पहला नुसख़ा सर्वोत्तम है। वह कभी फेल नहीं होता। और नुसख़े "हृदय रोग" में लिखेंगे।

वस्तिशूल, कुक्षिशूल, विटशूलादि नाशक नुसख़े।

(१) हींग, कालानोन, हरड़, विरियासंचरनोन, सैंधानोन, तुम्बरु और पोहकरमूल समान-समान लेकर पीस-कूट-छान लो। इस चूर्णको "दशमूलके काढ़े या जौके काढ़े" के साथ खानेसे पसलीका दर्द, हृदयका दर्द, कमरका दर्द, पीठका दर्द, तन्द्रा, अपतानक वायु-रोग और गलेका रोग आराम हो जाता है।

(२) कालानोन, हींग और सोंठ—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "जौके काढ़े" के साथ खानेसे हृदयशूल, पसलीका शूल, पीठका शूल, पेटका रोग, हैज़ा और मल रुकनेका रोग ये सब आराम होते हैं।

(३) बिजौरे नीबूका रस, घी, हींग और सैंधानोन—इनको एकत्र मिलाकर और गरम करके, सुहाता-सुहाता पीनेसे रुका हुआ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मल नीचे जाता और कोखका दर्द, पसलीका दर्द और हृदयका दर्द आराम हो जाता है।

(४) हींग, कालानोन, पाढ़, जवाखार, सज्जीखार, सैंधानोन, कालानोन और विरियासंचरनोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "लहसनके रस"में सानकर बड़े बना लो। इन बड़ोंके सेवन करनेसे हृदयशूल, पसलीका शूल, कूखका शूल और दारुण मन्यास्तम्भ—गर्दनका रह जाना—ये रोग आराम हो जाते हैं।

(५) पाँचों नमक, समन्दर-फेन, सुहागा, सज्जी, शंख, सीप और कौड़ी—इनको एकत्र पीसकर, १ दिन भर "आकके दूध"में खरल करो। फिर लुगदी बनाकर, ऊपरसे आकके पत्ते लपेटकर डोरा बाँध दो और ऊपरसे कपड़-मिट्टी करके सुखा लो। फिर; उसे आरने उपलोंमें रखकर फूँक दो। लाल होनेपर आगसे निकाल लो। फिर मिट्टी वग़ैरः हटाकर दवाको निकाल लो और पीस लो। इसमेंसे एक-एक रत्ती दवा दिनमें २।३ बार खानेसे पसलीका दर्द, सर्दी, कफ, खाँसी और श्वास-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—आकका दूध न मिले, तो आकके पत्तोंका स्वरस काममें लाओ। यह नुसख़ा पुरानी खाँसी और श्वासपर भी रामबाण है॥

स्त्रियोंके पढ़ने योग्य शिक्षाप्रद पुस्तकें।

स्त्रियोंके हाथोंमें ऐसी पुस्तकें देनी चाहिये, जिनके पढ़नेसे उन्हें पातिव्रत-धर्म, गार्हस्थ-कर्त्तव्य-कर्म और सांसारिक कार्य-व्यवहारकी शिक्षा मिले, जिनके पढ़नेसे वे अपनी गृहस्थीको स्वर्ग-सुखमयी का सकें; दुःख-दारिद्र और कलहको मारकर भगा सकें। हम नीचे जिन पुस्तकोंके नाम लिखते हैं, वे ऐसी ही हैं। आप लालच त्यागकर उनको मँगाइये और अपनी बहिन, बेटी, पुत्रबधू और सहधर्म्मिणीके करकमलोंमें दीजियेः—सुहागिनी (सचित्र) ३।), द्रौपदी (सचित्र) २॥), सुनीति (सचित्र) ॥।), देवी चौधरानी २), विरागिनी १।), अभागिनी १), सावित्री (उपन्यास) १॥), शैलबाला (सचित्र) १), बिछुड़ी हुई दुलहन (सचित्र) १॥), नवीना १॥।), अदृष्ट (सचित्र) ३), रमासुन्दरी २।), कोहनूर २), रजनी १≈)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्यारहवाँ अध्याय

उदावर्त्त-रोग वर्णन।

उदावर्त्त के सामान्य लक्षण।

जिस रोगमें "वायु" का आवर्त्त या चक्कर ऊपरकी ओर जाता है, उसे वैद्य "उदावर्त्त" कहते हैं।

नोट—यहाँ वायु शब्दसे अधोवायु—गुदाकी हवा समझनी चाहिये। तन्दुरुस्तीकी हालतमें, अधोवायु सदा नीचेकी तरफ जाती है। उसकी चालके नीचेकी तरफ रहनेसे ही मल-मूत्रादि ठीक निकलते हैं; क्योंकि इन सबको निकालनेवाली अधोवायु ही है। जब यह अधोवायु—नीचेकी हवा नीचेकी तरफ न जाकर ऊपरकी ओर चढ़ती है, मल-मूत्रादिको भी अपने साथ ऊपरकी ओर ही ले जाती है; उस समय मनुष्यको बड़ी तकलीफ होती है। जिस रोगमें हवा ऊपरकी तरफ चढ़ती है, उसे "उदावर्त्त" कहते हैं। डल्हनाचार्यने अपनी "सुश्रुत"की टीकामें कहा है:—"उर्द्ध वातविण्मूत्रादीनां आवर्त्तो भ्रमणं यस्मिन स उदावर्त्तः। वातोत्र अधः प्राणी अपानवायुः।"

उदावर्त्त के निदान-कारण।

अधोवायु—गुदाकी हवा, पाखाना, पेशाब, जँभाई, आँसू, छींक, डकार, वमन—क़य, वीर्य, भूख, प्यास, श्वास और नींद—इन तेरह वेगोंके रोकनेसे "उदावर्त्त" रोग होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा—जो अज्ञानी, शर्म या लाजके मारे, गुदासे निकलती हुई अधोवायुको रोक लेता है; किसी काममें फँसे रहनेके कारण, पाखानेकी हाजत होनेपर पाखाने नहीं जाता, पेशाबकी हाजत होनेपर पेशाब नहीं करता, इन्हें रोककर बैठा रहता या काममें लगा रहता है; जो आती हुई जँभाइयोंको रोक लेता है; आँखोंसे निकलनेवाले आँसुओंको रोक लेता है; छींक आनेपर छींकता नहीं—उसे नाकमें ही रोक लेता है; डकार आनेपर डकारको रोक लेता है; जी मिचलाने या क़य आनेपर क़यको भीतर ही रोक लेता है—बाहर नहीं आने देता, स्त्री-प्रसंगके समय अधिक आनन्दके लिए, वीर्यको रोक लेता है, उसे अपने बलसे निकलने नहीं देता; भूखके समय भूखको और प्यास लगनेपर प्यासको रोक लेता है; थक जानेपर लम्बे-लम्बे श्वासोंको आने नहीं देता और नींद आनेपर नींदको रोकता है यानी सोता नहीं—उसे इन वेगोंके रोकनेसे "उदावर्त्त" रोग हो जाता है। इन तेरह वेगोंके रोकनेसे तेरह तरहके "उदावर्त्त" रोग होते हैं।

यह भी याद रखो कि, वेग दो तरहके होते हैं:—(१) शारीरिक, और (२) मानसिक। ऊपर लिखे हुए तेरह वेग शारीरिक वेग हैं अर्थात् इनका सम्बन्ध शरीरसे है। काम, क्रोध, मद, मोह, लोभ, ईर्षा-द्वेषादि मानसिक वेग हैं। इनका सम्बन्ध मनसे है। मल-मूत्रादि शारीरिक वेगोंके रोकनेसे रोग होते हैं, पर काम-क्रोधादि मानसिक वेगोंके रोकनेसे शरीर स्वस्थ या तन्दुरुस्त रहता है। इसलिये चतुर व्यक्तियोंको मानसिक वेग रोकनेकी सदा कोशिश करनी चाहिये, परन्तु शारीरिक वेगोंको भूलकर भी न रोकना चाहिये। धन्वन्तरि भगवान् कहते हैं:—

अधश्चोर्द्धं च भावानां प्रवृत्तानां स्वभावतः।
न वेगान्धारयेत्प्राज्ञो वातादीनां जिजीविषुः॥

जीवनकी इच्छा रखनेवाले बुद्धिमानोंको चाहिये कि, वे स्वभावसे ही नीचेकी ओर और ऊपरकी ओर प्रवृत्त होनेवाले वातादिके वेगोंको न रोकें। क्योंकि अधोवायु और मल-मूत्रादि नीचेकी तरफ जानेवाले और छींक, डकार आदि ऊपरके वेगोंको रोकनेसे "उदावर्त्त-रोग" हो जाता है; जो बहुधा आप ही अथवा दूसरा रोग पैदा करके मनुष्यकी ज़िन्दगीका ख़ातमा कर देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदावर्त्त की संख्या।

अधोवायु आदि तेरह वेगोंके रोकनेसे तेरह प्रकारके उदावर्त्त-रोग होते हैं। इन तेरहके अलावः एक और चौदहवाँ उदावर्त्त "अपथ्य भोजन"से भी होता है।

अपानवायुके उदावर्त्तके लक्षण।

"अधोवायु"के रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) गुदाकी हवा रुक जाती है।
(२) पाखाना नहीं होता—टट्टी बन्द हो जाती है।
(३) पेशाब नहीं होता यानी बन्द हो जाता है।
(४) पेट फूल जाता है।
(५) अनायास ही थकान-सी होती है।
(६) सारे शरीरमें दर्द तथा वायुकी और-और पीड़ाएँ होती हैं।

नोट—"सुश्रुत"में—पेटका अफरना, शूल चलना, हृदयका रुकना, सिरमें दर्द, श्वास, हिचकी, खाँसी, जुकाम, गला रुकना, कफ और पित्तका घोर उद्रेक, अपानवायु द्वारा मलका रुकना अथवा मुँहकी राहसे पाखाना निकलना—ये लक्षण अपान-वायुके उदावर्त्तके लिखे हैं।

मल रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"मल या पाखानेकी हाजत रोकने"से नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) पेटमें गुड़-गुड़ शब्द होता है।
(२) पक्वाशयमें शूल या दर्द होता है।
(३) गुदामें कतरनेके जैसा दर्द होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) मल नहीं उतरता यानी टट्टी नहीं होती।

(५) खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं।

(६) कभी-कभी मुँहकी राहसे मल निकलता है।

मूत्र रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"मूत्रका वेग या पेशाबकी हाजत" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) मूत्राशय-पेशाबकी थैली और लिङ्गमें दर्द होता है।

(२) पेशाब तकलीफके साथ होता है।

(३) सिरमें दर्द होता है।

(४) पीड़ाके मारे शरीर सीधा नहीं होता—शरीर बेक़ाबू हो जाता है।

(५) पेड़ूमें अफारा होता है अथवा दोनों वंक्षणों या पट्ठोंमें खिंचावका-सा दर्द होता है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है—तकलीफके साथ थोड़ा-थोड़ा पेशाब आता है; लिङ्ग, गुदा, नलों, फोतों और नाभिमें तेज़ दर्द होता है; सिरमें तीव्र वेदना होती है और पेड़ू फूल जाता है। इन अङ्गोंमें शूलोंसे छेदनेकी-सी पीड़ा होती है।

जँभाई रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"आती हुई जँभाई" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) मन्यास्तम्भ, गलस्तम्भ और शिरोरोग होते हैं।

(२) आँख, नाक, कान और मुँहमें तीव्र पीड़ा होती है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, जँभाई रोकनेसे मन्यास्तम्भ और गलस्तम्भ होता है; यानी गर्दनके पीछेकी 'मन्या' नामकी नस रह जाती है, उससे गर्दन नहीं घूमती, गला रह जाता है, बादीसे सिरमें घोर दर्द होता है तथा आँख, नाक, कान और मुखमें रोग हो जाते हैं। मतलब यह है कि, "वात-रोग" हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आँसू रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"आनन्द या शोकसे आते हुए आँसू" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) सिर भारी हो जाता है।

(२) नेत्रोंमें पीड़ा होती है।

(३) प्रबल पीनस-रोग हो जाता है।

छींक रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"आती हुई छींक" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें हो जाती हैं:—

(१) गर्दनके पीछेकी "मन्या" नामकी नस रह जाती है।

(२) शिरमें शूल चलते हैं। आधासीसी हो जाती है।

(३) अर्दित-वात या लकवा हो जाता है, यानी आधा चेहरा टेढ़ा हो जाता है।

(४) सारी इन्द्रियाँ कमज़ोर हो जाती हैं।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, छींक रोकनेसे सिर, आँख, नाक और कानोंमें भारी रोग हो जाते हैं; कंठ और मुँह भरे हुए-से मालूम होते हैं; पीड़ा भी होती है और वायुकी आवाज़ या प्रवृत्ति होती है।

डकार रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"आती हुई डकारों" के रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) कंठ कौरसे रुका हुआ मालूम होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) हृदय और आमाशयमें सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है।

(३) पेटमें हवा गूँजती है।

(४) मुँहसे अस्पष्ट वाक्य निकलते हैं, यानी साफ समझमें आनेवाली बात नहीं निकलती।

वमन रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"आती हुई वमन या क़य" को रोक लेनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) शरीरमें खुजली, चकत्ते और झाँई ये उपद्रव होते हैं।

(२) शरीरमें दाह या जलन होती है।

(३) भोजनपर अरुचि या अनिच्छा होती है।

(४) सूजन, कोढ़, पाण्डु, ज्वर, हुल्लास और विसर्प-रोग होते हैं।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, वमनके रोकनेसे कोढ़ हो जाता है तथा अन्नविदग्ध हो जाता है। हुल्लासका अर्थ जी मिचलाना या सूखी उबाकियाँ आना है।

वीर्य रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

स्त्री-प्रसङ्गके समय गिरते हुए "वीर्य" को रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें हो जाती हैं:—

(१) पेड़ू, गुदा और फोतोंमें सूजन और पीड़ा होती है।

(२) पेशाब रुक जाता है।

(३) वीर्यकी पथरी हो जाती है।

(४) वीर्य जाता है और नाना प्रकारके कष्टसाध्य मूत्राघात-रोग हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—आजकलके सोज़ाकोंमेंसे एक प्रकारका सोज़ाक इस उदावर्त्तसे—वीर्य-के उदावर्त्तसे मिलता है। निकलता हुआ वीर्य रोकनेसे, मूत्रमार्गमें घाव कर देता है। इसलिये पेशाबमें बड़ी जलन होती है और घावसे मवाद आने लगता है। सब तरहके सोज़ाक-रोगोंके कारण, लक्षण और चिकित्सा "चिकित्सा-चन्द्रोदय तीसरे भाग" में देखिये।

भूख रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"भूख" रोकने यानी भूख लगनेपर भोजन न करनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) तन्द्रा आती है।
(२) अङ्ग टूटते हैं।
(३) अरुचि होती है।
(४) थकान मालूम होती है।
(५) नज़र कम हो जाती है।

प्यास रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

प्यास रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) गला और मुँह सूखते हैं।
(२) कानोंसे कम सुनाई देता है।
(३) हृदय या छातीमें दर्द होता है।

श्वास रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

मिहनत करके थके हुए आदमीके "साँस" रोकनेसे नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) हृदयमें पीड़ा होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) मोह—मूर्च्छा या बेहोशी होती है।
(३) पेटमें गुल्म या गोला पैदा हो जाता है।

नींद रोकनेके उदावर्त्तके लक्षण।

"नींद आनेपर न सोनेसे" नीचे लिखी हुई शिकायतें होती हैं:—

(१) जम्हुआई आती हैं।
(२) अंग टूटते हैं।
(३) सिर, शरीर और आँखें भारी हो जाती हैं।
(४) तन्द्रा या ऊँघ आती है।

अपथ्य भोजनके उदावर्त्तके लक्षण।

रूखा, कसैला, कड़वा और चरपरा भोजन करनेसे "कोठेकी वायु" कुपित हो जाती है। वह कुपित हुई "वायु"—मल, मूत्र, आँसू, कफ और मेद बहानेवाली नाड़ियोंकी राह रोककर—मलको सुखा देती है, तब नीचे लिखी हुई पीड़ायें होती हैं:—

(१) हृदय और पेटमें बेकली करनेवाला दर्द होता है।
(२) जी मिचलाता है।
(३) अधोवायु और मल-मूत्र बड़ी तकलीफसे और थोड़े-थोड़े उतरते हैं।
(४) श्वास, खाँसी, जुकाम, दाह, मोह, प्यास, ज्वर, वमन, हिचकी और सिरमें दर्द आदि वात-विकार होते हैं।
(५) मनमें भ्रम होता है और सुननेमें भी भ्रम होता है; अर्थात् मनमें बहम उठते हैं और कुछ-का-कुछ सुनाई देता है।

नोट—कभी तो यह रोग बहुत-से दस्त आ-आकर बढ़ता है और कभी दस्त, पेशाब और अधोवायु रुककर बढ़ता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदावर्त्त के संक्षिप्त निदान और लक्षण।

रूखे, कसैले, कड़वे, चरपरे और शीतल पदार्थोंके खाने और वातादि तेरह वेगोंके रोकनेसे कोठेमें रहनेवाला "वायु" अत्यन्त बढ़कर या कुपित होकर, मूत्र, खून, मेद, कफ और विष्ठा बहानेवाली नाड़ियोंकी राह रोककर "मलको" उर्ध्ववाही कर देता है यानी उसका रुख ऊपरकी ओर फेर देता है, बस इसीलिये इस रोगको "उदावर्त्त" कहते हैं। इस रोगमें, रोगीके हृदय और पेड़ूमें घोर वेदना होती है तथा मल, मूत्र और अधोवायु बड़े कष्टसे निकलते हैं।

सब तरहके उदावर्त्तोंमें मुख्य दोष कौनसा है?

सब तरहके उदावर्त्तोंमें "वायु" मुख्य है; अर्थात् उदावर्त्त-रोगके कारणोंमें "वायु" प्रधान कारण है।

उदावर्त्त के असाध्य लक्षण।

अगर उदावर्त्त-रोगमें नीचे लिखे हुए उपद्रव हों, तो रोगीको असाध्य समझकर इलाज मत करोः—

(१) अत्यन्त प्यास लगती हो।
(२) क़य-पर-क़य होती हों।
(३) रोगीका शरीर क्षीण हो गया हो।
(४) शूल चलते हों।
(५) विष्ठाकी वमन होती हों।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदावर्त्त-रोगकी चिकित्सामें—

याद रखने योग्य बातें।

(१) सब तरहके उदावर्त्तोंमें वायु मुख्य है। इसलिये अगर सभी तरहके उदावर्त्तोंकी एक ही चिकित्सा करनी हो, तो ऐसी चिकित्सा करनी चाहिये, जिससे "वायुका अनुलोमन हो"—वायुका रुख़ नीचेकी तरफ़ हो जाय। जिस क्रियासे वायुका अपनी-अपनी राहोंमें ठीक संचार हो अथवा वायुका अनुलोमन हो, वही उदावर्त्तकी "सामान्य चिकित्सा" है।

नोट—सभी तरहके उदावर्त्तोंकी एक ही चिकित्सा—"उदावर्त्तोंकी सामान्य चिकित्सा" है। इसी तरह भिन्न-भिन्न प्रकारके उदावर्त्तोंकी जुदी-जुदी चिकित्सा—"उदावर्त्तोंकी विशेष चिकित्सा" है।

(२) अधोवायु रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ हितकारी हैं:—

(१) स्नेहपान कराना—घी-तैलादि पिलाना।

(२) स्वेदकर्म करना—बफ़ारे वग़ैरःसे पसीने निकालना।

(३) गुदामें पिचकारी लगाना।

(४) गुदामें फलवर्त्ति या बत्ती चढ़ाना।

नोट—"सुश्रुत"में स्नेहपान कराकर—घी-तैलादि चिकनी चीज़ें पिलाकर पसीने दिलाना और आस्थापन करना हितकारी लिखा है।

(३) मल रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ हितकारी हैं:—

(१) दस्तावर अन्न देना।

(२) दस्तावर दवा देना।

(३) गुदामें बत्ती चढ़ाना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) तेल आदिकी मालिश कराना।

(५) अवगाहन कराना यानी जल व तेलमें बैठाना।

(६) सेक वग़ैरः करके पसीने दिलाना।

(७) वस्तिकर्म करना यानी गुदामें पिचकारी लगाना।

(४) मूत्र-वेग रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखा उपाय हितकारी है:—

(१) इस रोगमें मूत्रकृच्छ्र और पथरीकी चिकित्सा करनी चाहिये।

(५) जँभाई रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) स्नेहन अथवा स्वेदन क्रिया करनी चाहिये।

(२) वातनाशक उपाय करने चाहिये।

(६) आँसुओंके रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) अच्छी तरह रोकर आँसू निकाल देने चाहिये।

(२) इसके बाद रोगीको सुखसे सुलाना चाहिये।

(३) मनोरञ्जक बातें कहनी चाहिए।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है—स्निग्ध या चिकना स्वेदन करके आँसू निकाल देने चाहिए। किसी-किसीने लिखा है, रोगीकी आँखोंमें तेज़ अञ्जन लगाकर आँसू निकाल देने चाहिये और उसे खुश रखना चाहिये।

(७) छींक रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) मिर्च और राई वग़ैरः तेज़ चीज़ें सूँघनी चाहिये।

(२) सूरजकी तरफ देखकर छींक लेनी चाहिये।

(३) नाकमें कपड़े वग़ैरःकी बत्ती डालकर छींक लेनी चाहिये।

(४) स्नेहन और स्वेदन कर्म भी करने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—"सुश्रुत"में तीक्ष्ण अंजन आँजने तथा अवपीड़ नस्य और प्रधमन नस्यसे काम लेनेकी राय दी गई है।

(८) डकार रोकनेके उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहिये—

(१) चिकनाई मिले हुए पदार्थोंका धूआँ पीना चाहिये। (देखो पृ० ५५६)

(२) शराबमें कालानोन और बिजौरेका रस मिलाकर पीना चाहिये।

(९) वमनका वेग रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) वमन करानी चाहिये।

(२) लंघन कराने चाहिये।

(३) दस्त कराने चाहिये।

(४) तेलकी मालिश करानी चाहिये।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, इस रोगमें दोषानुसार स्नेहन-कर्म करना चाहिये तथा जवाखार और नमक मिले तेल वग़ैरःकी मालिश करनी चाहिये।

(१०) वीर्य रोकनेके वेगसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) प्यारी नारीके साथ संभोग करना चाहिये।

(२) तेलकी मालिश करानी चाहिये।

(३) जलमें अवगाहन करना चाहियेः यानी ग़ोता मारना चाहिये।

(४) शराब पीनी चाहियें।

(५) मुर्ग़ेका मांस, शालि चावल और दूध खाना चाहिये।

(६) निरुह वस्ति करनी चाहिये।

(७) मूत्राशयको शुद्ध करनेवाले द्रव्य, गोखरू वग़ैरः और चौगुना पानी डालकर "दूध" औटाना चाहिये। जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पानी जलकर दूध-मात्र रह जाय, उसमें "मिश्री" मिलाकर रोगीको पेट भरकर पिलाना चाहिये और प्यारी स्त्रियोंसे रमण कराना चाहिये।

(११) भूख रोकनेके उदावर्त्त-रोगमें नीचे लिखी हुई क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) चिकने, गरम, रुचिकारी और मन-चाहे पदार्थ थोड़े-थोड़े खाने चाहिये; यानी कम खाने चाहिये।

(२) इत्र और फूल वग़ैरः खुशबूदार चीज़ें सूँघनी चाहिये।

(१२) प्यास रोकनेके उदावर्त्तमें नीचे लिखी हुई क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) इस रोगमें सभी शीतल क्रियाएँ करनी चाहिये।

(२) कंपूर-मिला या कमलसे सुवासित किया हुआ पानी बारम्बार और थोड़ा-थोड़ा पीना चाहिये।

(३) "सुश्रुत" में मन्थ और शीतल यवागू पिलाना भी हितकर लिखा है।

(१३) थकानमे साँस रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी हुई क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) मांसरसके साथ भोजन करना चाहिये।

(२) आराम करना चाहिये।

(१४) नींदका वेग रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें नीचे लिखी हुई क्रियाएँ करनी चाहियेः—

(१) मिश्री-मिला गरम दूध पीना चाहिये।

(२) हाथ-पैरोंको दबवाते हुए सुखदायी पलँगपर सोना चाहिये।

(३) मनोरंजक क़िस्से-कहानी सुनते हुए इच्छानुसार सोना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदावर्त्तकी विशेष चिकित्सा।

अधोवायुजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१) मैनफल, पीपर, कूट, बच और सफेद सरसों बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर महीन पीस-छान लो। फिर पाँच तोले "गुड़"को पानीमें घोलकर आगपर चढ़ा दो। जब खूब औट जाय, उसमें थोड़ा-सा दूध और ऊपरका चूर्ण मिला दो और चलाते रहो। जब चाशनीकी गोली बँधने लगे, चूल्हेसे उतार लो और छोटी उँगलीके समान बत्तियाँ बना लो। बत्तियोंके सिरे, बालकोंके गिल्ली-डंडा खेलनेकी गिल्लीकी तरह, पतले रखो और बीचमें कुछ मोटा रखो। इस बत्तीको ज़रा-सा घी या तेल लगाकर गुदामें घुसानेसे अधोवायु और मल रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्त आराम हो जाते हैं। शास्त्रमें इस फलवर्त्तिसे अपथ्यजनित एवं और भी सब तरहके उदावर्त्त आराम होनेकी बात लिखी है। पर जिन उदावर्त्तोंमें मल, मूत्र और अधोवायु रुक जाते हैं, उनमें यह बत्ती ख़ास तौरसे ज़ियादा काम देती है। इसका नाम "मदनफलादि वर्त्ति" है।

नोट—विचारपूर्वक स्नेह, स्वेद और गुदाकी पिचकारीकी क्रिया भी करनी चाहिये। देखो पृष्ठ ५४१ नोट नं० २।

मलजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(२) हींग, शहद और सैंधानोन—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर और एकत्र पीसकर "मदनफलादि वर्त्तिकी तरह" बत्ती बना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लो। इस बत्तीको घीमें तर करके गुदामें घुसानेसे मल रुकनेका उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(३) निशोथ २ तोले, पीपर ४ तोले, हरीतकी ५ तोले और गुड़ ११ तोले लेकर रख लो। दवाओंको पीस-छानकर एकमें मिला लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इस चूर्णके खानेसे मल रोकनेका उदावर्त्त और आनाह-रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस उदावर्त्तमें दस्तावर दवा, फलवर्ति, तेलकी मालिश, स्वेद-कर्म और गुदामें पिचकारी लगाना आदि क्रियाएँ हित हैं। देखो पृष्ठ ५४१ नोट नं० ३।

मूत्रजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(४) शराबमें कालानोन मिलाकर पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नाश हो जाता है।

(५) इलायचीको शरावके साथ अथवा दूधके साथ अथवा पानीके साथ सेवन करानेसे यह उदावर्त्त आराम हो जाता है।

(६) ककड़ीके बीज पानीके साथ सिलपर पीसकर, पानीमें घोलकर और थोड़ा नमक मिलाकर पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त जाता रहता है।

(७) बचका चूर्ण खाकर, ऊपरसे जल-मिला दूध पीनेसे मूत्र-जनित उदावर्त्त नाश हो जाता है।

(८) जवासेका काढ़ा बनाकर पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(९) अर्जुन वृक्षकी छालका काढ़ा पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(१०) कटेरीका स्वरस पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

(११) मिश्री, ईखका रस, दूध, दाख और मुलेठीका रस पीनेसे मूत्रजनित उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—अगर इन उपायोंसे लाभ न हो, तो मूत्रकृच्छ्र या पथरी-रोग नाशक कोई दवा देनी चाहिये।

डकारजन्य उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१२) गिलोय, विदारीकन्द, असगन्ध, अनन्तमूल, शतावर दो-दो माशे और माषपर्णी, जीवन्ती तथा मुलेठी एक-एक माशे लेकर महीन पीस लो। इस चूर्णको घी या मोममें मिलाकर बत्ती-सी बना लो और सिगरेटकी तरह सिलगाकर धूआँ पीओ। इससे डकार रोकनेसे हुआ उदावर्त्त नाश हो जाता है।

नोट—यही चिकनाई मिला हुआ धूआँ पीना है, जिसके सम्बन्धमें हम पृष्ठ ५५२ नोट नं० ८ में लिख आये हैं।

(१३) शराबमें कालानोन और बिजौरे नीबूका रस मिलाकर पीना चाहिये।

छींकजन्य उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१४) नकछिकनीके पत्तोंको सुखा-पीसकर और नाकसे सूँघकर छींकें लेनी चाहिये।

नोट—इस रोगमें गर्दनपर मालिश कराना, पसीने निकालना और धूआँ पीना—ये भी हित हैं। (देखो पृष्ठ ५५१ नोट नं० ७)।

वमनजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१५) जवाखार और सैंधानोन बराबर-बराबर लेकर महीन पीसो और तेलमें मिलाकर मालिश करो। इस उपायसे अवश्य लाभ होता है।

(१६) एक भाग दूध और चार भाग जल मिलाकर औटाओ। जब पानी जलकर दूध-मात्र रह जाय, प्रसन्नता-पूर्वक पीलो।

नोट—इस रोगमें वमन, लङ्घन, विरेचन और तेलकी मालिश भी हितकारी हैं। देखो पृष्ठ ५५२ नोट नं० १।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीर्यजनित उदावर्त्तकी चिकित्सा।

(१७) पंच तृणमूलको सिलपर पानीके साथ पीसकर एक भाग दूध और चार भाग पानीमें मिलाकर औटाओ। जब दूध-मात्र रह जाय, छानकर और मिश्री मिलाकर पीलो। इससे वीर्यजनित उदावर्त्त नाश हो जाता है।

नोट—इस रोगमें तेलकी मालिश, ग़ोता मारकर नहाना, शराब पीना, मुर्ग़ेका मांस खाना, निरूह वस्ति और मैथुन—ये भी हित हैं। देखो पृष्ठ ५५२ नोट नं० १०।

रूक्षादि अपथ्य पदार्थजनित उदावर्त्त।

(१८) हींग, शहद और सैंधानोन—एकत्र पीसकर बत्ती बना लो और फिर बत्तीको घीमें तर करके गुदामें घुसा लो। इससे दस्त होकर उदावर्त्त नष्ट हो जाता है।

नोट—पृष्ठ ५५४ के नं० १ में लिखी हुई "मदनफलादि बत्ती" भी इस रोगमें काम देती है।

उदावर्त्त-रोग नाशक नुसख़े।

नाराच चूर्ण।

निशोथ १ तोले, पीपर २ तोले और मिश्री चार तोले—इनको पीस-छानकर रख लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण "शहद" में मिलाकर, भोजनके पहले, खानेसे मल निकलकर उदावर्त्त नाश होता और दिल ख़ुश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—यह चूर्ण उस उदावर्त्तमें अच्छा काम देता है, जिसमें मल सूखकर कड़ा हो जाता है। यह चूर्ण धनिकों और राजाओंके योग्य है। कोई-कोई निशोथ और पीपर एक-एक तोले और चीनी ४ तोले लेते हैं। हम ऊपरकी विधिसे बनाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुड़ाष्टक।

सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, पीपरामूल, निशोथ, दन्ती—जमाल-गोटेकी जड़ और चीतेकी जड़की छाल—ये सब बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पीस-कूटकर छान लो। फिर सब चूर्णके वज़नके बराबर—सात तोले—गुड़ चूर्ण में मिलाकर रख दो। इस चूर्णकी मात्रा ६ माशेकी है। सवेरे ही एक मात्रा खाकर, ऊपरसे पानी पीनेसे बल और अग्निकी वृद्धि होती है और उदावर्त्त, गोला, तिल्ली, सूजन और पाण्डु-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—अगर चूर्णको गुड़में न मिलावें, तो एक मात्रा चूर्ण बराबरके गुड़में समयपर मिलाकर खा सकते हैं। अगर रोगका ज़ोर हो और रोगी बलवान हो, तो ६ माशे चूर्ण ६ माशे गुड़में मिलाकर खाया जा सकता है। गुड़ मिलाकर इसकी मात्रा ६ माशेसे एक तोले तक है। साधारण लोग ६ माशे ही सेवन करें।

शुष्क मूलाद्य घृत।

सूखी मूली, अदरख, पुनर्नवा, लघु या वृहत् पंचमूल और अमलताशका गूदा—इनको तीन-तीन छटाँक लेकर जौकुट कर लो और आठ सेर पानीमें डालकर काढ़ा पकाओ। जब दो सेर पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो।

फिर इस काढ़ेमें आध सेर घी मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब काढ़ा जलकर घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और रख दो॥

इसमेंसे एक तोला घी रोज़ खाकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गरम दूध पीनेसे उदावर्त्त-रोग फौरन नाश हो जाता है। परीक्षित है।

स्थिराद्य घृत।

लघु पंचमूल, पुनर्नवा, अमलताशका गूदा, दुर्गन्ध करंज और करंज आठ-आठ तोले लेकर जौकुट कर लो। फिर इनको ३२ सेर पानीमें डालकर काढ़ा पका लो। जब ८ सेर पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस काढ़ेमें दो सेर गायका घी मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसमेंसे एक तोले घी पीकर, ऊपरसे मिश्री-मिला गरम दूध पीनेसे उदावर्त्त-रोग आराम हो जाता है। यह घी वायुकी वृद्धि दूर करनेमें एक ही है। परीक्षित है।

बृहत् इच्छाभेदी रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध सुहागा १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, निशोथ १ तोले, अतीस २ तोले और शुद्ध जमाल-गोटेके बीज ६ तोले—सबको तैयार रक्खो।

पहले पारे और गन्धकको ६ घण्टे तक खरल करो। जब चमक न रहे, उसमें सुहागा प्रभृति सब दवाओंको पीस-छानकर मिला दो और "मदारके पत्तोंका स्वरस" डाल-डालकर खरल करो। अन्तमें हल्की आगपर गरम करके रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो।

इसमेंसे एक गोली निगलाकर शीतल जल पिला दो। इससे दस्त होंगे। जब दस्त बन्द करने हों, गरम जल पिला दो। गरम जल पीते ही दस्त बन्द हो जायँगे। इसपर दही और भात खाना पथ्य है।

त्रिवृत्त बटिका।

निशोथ १ तोले और हरड़ १ तोले लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको खरलमें डालकर ऊपरसे "सेंहुड़का दूध" डालकर खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इसमेंसे एक गोली सवेरे ही खाकर, ऊपरसे गरम दूध या गरम जल पीनेसे आनाह-रोग—दस्त न होना और उदावर्त्त-रोग नष्ट हो जाते हैं।

तैल विरेचन।

डेढ़ पाव गरम दूधमें तीन या चार तोले "रैंडीका साफ तेल" मिलाकर, सवेरे ही, पीनेसे दस्त होकर आनाह—पेटका अफारा और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदावर्त्त-रोग नष्ट हो जाते हैं। दस्तकी रुकावटमें इस जुलाबसे बड़ा लाभ होता है। यह जुलाब औरत-मर्द सबके लिए मुफ़ीद है।

नोट—अगर किसीका कोठा बहुत ही क्रूर या कड़ा हो, किसी दवासे दस्त न होते हों, तो रैंडीके तेलमें दस बूँद तारपीनका तेल भी मिला दो और दूधमें मिलाकर पिला दो। दस्त होंगे ही होंगे। बालकोंको एक या दो बूँद दे सकते हो।

चन्द परीक्षित फुटकर नुसख़े।

(१) जवाखार, हींग, चीता और अम्लवेत समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसकी एक मात्रा खाकर गरम जल पीनेसे मज़का भेदन होता है; यानी सूखा हुआ मल फूट-फूटकर निकल जाता है। लाख रुपयेका नुसख़ा है। परीक्षित है।

(२) करंजकी छाल, करंजका फल, करंजकी जड़, बाँबीकी मिट्टी और राई—इनको गोमूत्रमें पीसकर और ज़रा गरम करके पेटपर लेप करनेसे उदावर्त्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) हरड़, मरोड़फली, जवाखार और निशोथ—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। एक-एक मात्रा चूर्ण "घी" में मिलाकर चाटने या पीनेसे वायु-गोला और आनाह सहित उदावर्त्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) हरड़, निशोथ, जवाखार और पीलू—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ या ६ माशे चूर्ण "घी" में मिलाकर चटानेसे उदावर्त्त-रोग फौरन आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) शंख-भस्म "गुड़" में मिलाकर खानेसे उदावर्त्त-रोग नष्ट हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) माठा, हींग, सोंठ, गुड़ और भुना हुआ सुहागा—इनके सेवन करनेसे उदावर्त्त नाश हो जाता है। वास्तवमें ये सब चीजें उदावर्त्तमें रामवाणका काम करती हैं। हींग आदिका चूर्ण खाकर माठा पीना चाहिये अथवा इनको माठेमें मिलाकर पीना चाहिये। कहा है—

उन्मीलिनी उदावर्त्ते सतक्रं हिंगुनागरम्।
सगुडं टंकणं भ्रष्टं सगुडं शंखभस्मकम्॥

उदावर्त्त-रोगमें उन्मीलिनी चिकित्सा करनी चाहिये। माठा, हींग, सोंठ, गुड़ और आगपर फुलाया हुआ सुहागा सेवन करना चाहिये अथवा गुड़में मिलाकर शंखकी भस्म खानी चाहिये।

देखिये! अवश्य देखिये!! देखने ही योग्य है!!!

काव्यवाटिका।

यथा नाम तथा गुण है। सचमुच ही यह कविताओंकी बग़ीची है। इसमें तरह-तरहके फूलोंकी क्यारियाँ खिली हुई हैं। प्रत्येक काव्य-प्रेमीके विचरण करने योग्य वाटिका है। इस पुस्तकके छै खण्ड किये गये हैं और उनमें इस तरह कविताएँ हैं:—

(१) प्रथम खण्ड—ईश स्तुति और मातृभूमि वन्दना विषयक कविताएँ।
(२) द्वितीय खण्ड—इतिहास विषयक कविताएँ।
(३) तृतीय खण्ड—प्राकृतिक शोभा एवं दृश्य विषयक कविताएँ।
(४) चतुर्थ खण्ड—शिक्षा एवं उपदेश विषयक कविताएँ।
(५) पंचम खण्ड—अन्योक्तियाँ एवं समस्या पूर्त्तियाँ।
(६) षष्ठ खण्ड—भारतीयोंका आर्त्तनाद एवं उनकी शोचनीय दशा विषयक।

इस तरह छै खण्डोंमें प्राचीन और आधुनिक कवियोंकी कविताएँ लिखी गई हैं और सबसे बड़ी बात यह की गई है कि, जा-बजा रंगीन और सादे चित्र देकर शोभा दुगुनी कर दी गई है। हर विद्या-प्रेमीके देखने योग्य चीज़ है। दाम ३), सजिल्दका ३॥)

७१

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बारहवाँ अध्याय

आनाह-रोग वर्णन।

सामान्य लक्षण।

जिस रोगमें आम या मल क्रमसे जमा होकर, दूषित वायुसे सूख जाते और अपनी राहसे नहीं निकलते, उसे "आनाह" कहते हैं।

नोट—इस रोगमें आम या मल सूख जाता है और गुदासे नहीं निकलता, इसलिये पेट फूल जाता है। अगर यह रोग आम यानी भोजनके कच्चे रससे होता है, तो आमाशयमें दर्द होता, हृदय जकड़ जाता और शरीर भारी हो जाता है। अगर यह रोग पक्वाशयसे अथवा मलके जमा हो जानेसे होता है, तो श्वास, बेहोशी और विष्ठाकी क़य होती हैं।

आमके आनाहके लक्षण।

अगर आम या आहारके कच्चे रससे "आनाह" होता है; तो प्यास, जुकाम, सिरमें जलन, आमाशयमें शूल, शरीरमें भारीपन, हृदयका जकड़ना और डकारें न आना ये लक्षण होते हैं।

मलके आनाहके लक्षण।

अगर मल या पाखाना जमा हो जानेसे "आनाह" होता है, तो कमर और पीठ रह जाती हैं, दस्त और पेशाब रुक जाते हैं, दर्द

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चलता है, बेहोशी होती है, विष्ठा-मिली हुई वमन होती है तथा अलसक, अफारा और वायुका विघात आदि लक्षण होते हैं।

आनाह-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) उदावर्त्त और आनाह-रोगी अगर विष्ठाकी क़य करते हों, तो आप उनका इलाज हाथमें न लो, क्योंकि ऐसे रोगी आराम नहीं होते।

(२) आनाह-रोगमें दोपन-पाचन औषधियाँ और वस्तिकर्म यानी गुदामें पिचकारी देना हित है। इस रोगमें भी, उदावर्त्तकी तरह, वायुको अनुलोमन करनेवाली दवाएँ, गुदामें बत्ती चढ़ाना और वात शान्तिकारक आहार देना पथ्य है।

उदावर्त्त-चिकित्सामें लिखे हुए नाराच चूर्ण, गुड़ाष्टक, शुष्क मूलाद्य घृत और स्थिराद्य घृत प्रभृति "आनाह-रोग" में भी देने चाहिये।

आनाह-नाशक नुसख़े।

त्रिवृतादि चूर्ण।

निशोथ २ तोले, पीपर ४ तोले और हरड़ ५ तोले—इनको पीस-कूटकर छान लो। फिर सबकी बराबर—११ तोले—गुड़ मिलाकर और खूब मसलकर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इसमेंसे एक-दो गोली खानेसे आनाह-रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंग्वादि चूर्ण।

हींग, बच, बिड़नोन, सोंठ, जीरा, हरड़, पोहकरमूल और कूट—इनको क्रमसे एक-एक भाग बढ़ाकर ले लो और महीन पीस-छानकर रख लो। इसकी मात्रा डेढ़ माशेसे ४ माशे तक है। इस चूर्णसे आनाह, गोला, पेटके रोग और विशूचिका-रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—हींग १ तोले, बच २ तोले, बिड़नोन ३ तोले, सोंठ ४ तोले, ज़ीरा ५ तोले, हरड़ ६ तोले, पोहकरमूल ७ तोले और कूट ८ तोले—इस तरह दवाएँ लेनी चाहिये।

बचाद्य चूर्ण।

बच, हरीतकी, चीतेकी जड़की छाल, जवाखार, पीपर, अतीस और कूट—इन सातोंको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। इस चूर्णसे आनाह-रोग और मूढ़वात निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह चूर्ण खाकर "निवाया जल" पीना चाहिये। चूर्ण पचनेपर मांसरसके साथ भात खाना चाहिये।

त्रिवृत्ताद्य बटिका।

निशोथ १ तोले, हरड़ १ तोले और पीपर १ तोले—इनको पीस-छानकर "थूहरके दूध"में पीस लो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको सवेरे ही "गोमूत्र" के साथ खानेसे आनाह और उदावर्त्त नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

फल वर्त्ति।

मैनफल, पीपर, कूट, बच और सफेद सरसों—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो। फिर इस चूर्णको "गुड़ और दूध" के साथ सिलपर पीसकर छोटी उँगलीके समान बत्तियाँ बना लो अथवा इस मसालेको कपड़ेके टुकड़ेपर लपेटकर बत्ती बना लो। बत्ती ऐसी कड़ी बनानी चाहिये, जो बिना मुड़े गुदामें घुस सके। इस बत्तीको गुदामें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घुसानेसे आनाह-रोग—दस्त न होनेसे पेट फूलना, कूखका दर्द, गुदाका दर्द और उदावर्त्त-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

रामठाद्य वर्त्ति।

हींग, घरका धुआँसा, विरियासंचरनोन, सोंठ, गोलमिर्च, पीपर और गुड़—सबको समान-समान लेकर पीस लो और "गोमूत्र"में मिलाकर आगपर पकाओ; जब पकते-पकते मसाला गाढ़ा हो जाय, उतारकर अँगूठेके समान बत्ती बना लो। इन बत्तियोंको गुदामें चढ़ानेसे आनाह और शूल-रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर बत्ती गुदामें न घुसे तो उसे घीसे तर कर लो। फिर वह शीघ्र ही गुदामें घुस जायगी।

त्रिकुटाद्य वर्त्ति।

सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, सैंधानोन, सफेद सरसों, घरका धुआँसा, मैनफल और कूट—इन सबको कूट-पीसकर छान लो। फिर इस चूर्णको "शहद या गुड़"में मिलाकर आगपर पका लो। जब मसाला बत्ती बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय, अँगूठे-समान बत्तियाँ बना लो। इनको घीमें तर करके, गुदामें चढ़ानेसे आनाह, उदावर्त्त, गुल्म-रोग और उदर-रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—गुड़में "पानी" मिलाकर आगपर पकाओ और जब वह गाढ़ा होनेपर आवे, उसमें दवाओंका चूर्ण डाल दो और चलाते रहो। जब मसाला गोली बनाने लायक़ हो जाय, उतारकर बत्तियाँ बना लो। पानी मिलानेकी बात इसलिये लिखी है कि, गुड़ पतला हो जाय और उसमें दवाओंका चूर्ण मिल जाय।

द्विरुत्तरा हिंग्वाद्य चूर्ण।

हींग १ तोले, बच ३ तोले, कूट ५ तोले, सज्जीखार ७ तोले और बायविड़ङ्ग ९ तोला, इनको पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। अनुपान—निवाया जल है। इससे आनाह, हृदय-रोग, उर्ध्ववात, वायु-गोला और विशूचिका-रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

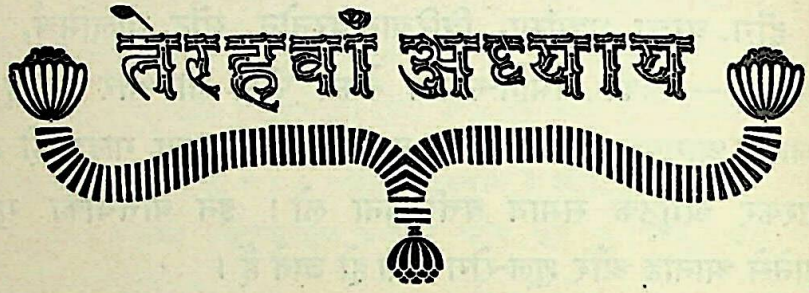

गुल्म-रोग वर्णन।

गुल्म किसे कहते हैं ?

"गुल्म" शब्द संस्कृत है। हिन्दीमें गुल्मका अर्थ गोला या गोली है। हृदय और नाभिके दर्म्यान, वातादि दोषोंसे, एक गोल गाँठ-सी हो जाती है, उसे ही "गुल्म" कहते हैं।

गुल्मके निदान-कारण।

संक्षेपमें, गुल्म-रोगके सन्निकृष्ट कारण "मिथ्या आहार और मिथ्या विहार" हैं। विप्रकृष्ट कारण "दूषित वात, पित्त, कफ और रुधिर" हैं।

अब यों समझिये कि, भोजन-पर-भोजन करने, संयोग-विरुद्ध भोजन करने, समय-बे-समय खाने प्रभृति मिथ्या आहारों और जबर्दस्तके साथ लड़ने प्रभृति मिथ्या विहारोंसे वात, पित्त, कफ और खून ये अत्यन्त दूषित या कुपित हो जाते हैं। कुपित हुए वात आदि दोष कोठेमें—हृदयसे मूत्राशय तकके भागमें—गाँठके समान या गोलीके समान "गुल्म" पैदा करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुल्मके पाँच भेद।

गुल्म पाँच तरहका होता है:—

(१) वातसे, (२) पित्तसे,
(३) कफसे, (४) त्रिदोषसे,
(५) रुधिर से।

"भावप्रकाश"में लिखा है:—

स व्यस्तैर्जायते दोषैः समस्तैरपि चोच्छ्रितैः।
पुरुषाणां तथा स्त्रीणां रक्तजं चोपजायते॥

गुल्म-रोग पुरुषोंके और स्त्रियोंके कुपित हुए वात, पित्त, कफ और त्रिदोषसे तथा रक्तसे भी होता है।

"सुश्रुत उत्तरतन्त्र"में लिखा है:—

यथोक्तैः कोपनैर्दोषाः कुपिताः कोष्ठमागताः।
जनयन्ति नृणां गुल्मं स पंचविधि उच्यते॥

जब सूत्रस्थानमें लिखे हुए कारणोंसे, कुपित हुए वातादि दोष कोठे यानी पेटमें स्थित हो जाते हैं, तब वे मनुष्योंके पेटमें गुल्म—गोला पैदा करते हैं॥ वह गुल्म पाँच तरहका होता है।

इस तरह गुल्म-रोगकी संख्या कोई पाँच लिखता है और कोई लिखता है कि, चार तरहके गुल्म पुरुषोंके होते हैं और पाँचवाँ रक्त या रजके दोषसे औरतोंके होता है। कहा है:—

स व्यस्तैर्जायते दोषैः समस्तैरपि चोच्छ्रितैः।
पुरुषाणां तथा स्त्रीणां ज्ञेयो रक्तेन चापरः॥

वातसे एक, पित्तसे एक, कफसे एक और त्रिदोषसे एक—इस तरह चार तरहके गुल्म मर्दोंके होते हैं, परन्तु रक्त (रज) के दोषसे स्त्रियोंके एक प्रकारका गुल्म और होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यहाँ जो "रक्तेन चापरः" लिखा है, इसके चकारसे डल्लन आचार्य यह अर्थ निकालते हैं कि, रक्तधातुसे भी गोला होता है और वह पुरुष तथा स्त्री दोनोंके होता है।

और भी कहा है:—

दुष्टैर्दोषैरेकशः सर्वशश्च गुल्मः।
स्त्रीणां पंचमो रक्तजः स्यात्॥

दूषित वातादि तीनों दोषोंसे ३ और त्रिदोषसे १, इस तरह गुल्म चार तरहका होता है, और स्त्रियोंके दूषित आर्त्तव-रुधिरसे पैदा हुआ पाँचवाँ—रक्तज गुल्म और होता है।

एक और आचार्य कहते हैं:—

आर्त्तवादपि गुल्मः स्यात्स तु स्त्रीणां प्रजायते।
अन्यस्त्वसृग्भवः पुंसां तथा स्त्रीणां प्रजायते॥

आर्त्तव या रजसे भी गुल्म होता है, परन्तु वह गुल्म औरतोंको ही होता है। खूनसे होनेवाले और गुल्म—पुरुषोंके भी होते हैं और स्त्रियोंके भी।

वृद्ध वाग्भट्टजी लिखते हैं:—

गुल्मोऽष्टधा पृथग्दोषैः संसृष्टैर्निचयं गतैः।
आर्त्तवस्य च दोषेण नारीणां जायतेऽष्टमः॥

वातसे, पित्तसे, कफसे, वात-पित्तसे, वात-कफसे, कफ-पित्तसे, त्रिदोषसे—इस तरह सात गुल्म होते हैं और आर्त्तव-दोषसे आठवाँ गुल्म औरतोंको होता है।

मतलब यह कि, गुल्म-रोगकी पाँच क़िस्मोंका निश्चित फैसला अभी तक नहीं हुआ है। बहुतोंका कहना है कि, गुल्म चार ही तरहके सबके होते हैं। पाँचवाँ गुल्म तो केवल स्त्रियोंके होता है; अतः गुल्म चार ही तरहके मानने चाहिये। इस तरह पाँच प्रकारके गुल्मोंपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहलेसे मतभेद चला आता है। शास्त्रार्थ भी हो चुके हैं। जिन्हें यह शास्त्रार्थ और मतभेद देखना हो, वे "मधुकोशी" और "आतङ्क दर्पण" टीकाएँ देखें। हम अपने नौ-सिखिये पाठकोंका दिमाग़ इस परेशानीसे ख़राब करना उचित नहीं समझते। इसीसे हमने दोनों मतोंके दो-चार श्लोक देकर, इस विषयको यहीं शेष कर दिया—आगे नहीं बढ़ाया।

अब निश्चित मत यह समझिये कि, गुल्म-रोग चार तरहका होता है। "रक्तगुल्म" केवल औरतोंके होता है। हाँ, कभी-कभी शारीरिक रक्तधातुसे यानी खूनसे पुरुषोंके भी रक्तगुल्म या खूनका गोला हो जाता है।

नोट—स्त्रियोंका मासिक-धर्म खुलकर न होने—मासिक-धर्मका खून बच रहने अथवा बच्चा जननेके समयका खून रह जानेसे स्त्रियोंको "रक्तगुल्म" होता है।

"रक्तपित्त-रोग" में गिरते हुए उल्बण रुधिरको, आरम्भमें ही, रोक देनेसे पाण्डु-रोग आदि रोग हो जाते हैं। अगर वह खून कहीं पेटमें इकट्ठा हो जाता है, तो पुरुषोंके भी रक्तगुल्म पैदा हो जाता है। पुरुषोंके रक्तगुल्म होनेके जितने कारण हैं, उनमेंसे एक कारण यह भी है। हमने मिसालके तौरपर इसे पेश कर दिया है।

गुल्मके स्थान।

गुल्म नीचे लिखे हुए पाँच स्थानोंमें होता या रहता है:—

(१) दाहना पसवाड़ा। (२) बायाँ पसवाड़ा।
(३) हृदय (कौड़ीके पास)। (४) नाभि (नाभिके पास)।
(५) मूत्राशय या पेड़ू।

नोट (१)—कितने ही वैद्य कहते हैं कि, मूत्राशय या पेड़ूमें तो "विद्रधि" होती है—गुल्म नहीं होता। जो ऐसा कहते हैं, वे ग़लतीपर हैं, क्योंकि चरकने साफ कह दिया है:—

पञ्चस्थानानि गुल्मस्य पार्श्वहृन्नाभिवस्तयः।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्थात् "गुल्म दोनों ओरकी पसलियों, हृदय, नाभि और वस्ति यानी पेड़ू में रहता है।" यद्यपि गुल्म एक जगह भी रहता है और विचरने भी लगता है—अपने स्थानसे आगे टहलनेको भी चला जाता है, पर उसके ख़ास स्थान ये ही हैं।

नोट (२)—कितने ही सवाल करते हैं कि, गुल्म अन्तर्विद्रधिकी तरह पकता क्यों नहीं? इसका जवाब "सुश्रुत"में यह लिखा है:—

स यस्मादात्मनिचयं गच्छत्यप्स्विव बुदबुदः।
अन्तः सरति यस्माच्च न पाकमुपयात्यतः॥

जिस तरह जलका बुलबुला अपने समान जलसे ही बनता है और जब यह फूटता है, तब उसीमें मिल जाता है; उसी तरह गुल्म भी अपने समान व्यक्रियोंसे संचित होता है और पकता नहीं। खुलासा यों समझिये कि, गुल्ममें विशेष भाग वात और कफका होता है, जो उसके स्थानके व्यक्रिके प्रायः समान ही व्यक्रि हैं, इसीसे वह नहीं पकता। किन्तु अन्तर्विद्रधि अपने असमान दोषों—पित्त-रक्तादि—से होती है; इसीसे वह शीघ्र ही पक जाती है। इसी तरह, अगर इसमें भी दूषित पित्त और रक्त आदिका माद्दा ज़ियादा होता है, तो यह भी पक जाता है। कहा है:—

अन्तः अन्तरे सरति भ्रमति एवं भूतः
प्रायेण वातिको भवति स च न पच्यते।
इतरेच वदन्ति गुल्मो यदा रक्तादिस्थानम-
धिष्ठायावतिष्ठते तदा कदाचित पचेत॥

भीतर घूमनेवाला प्रायः वातज गुल्म होता है, वह नहीं पकता। किन्तु गुल्म अगर रक्त वग़ैरःके स्थानको पकड़कर बैठ जाता है, तो पक जाता है।

गुल्मके सामान्य लक्षण।

हृदय और नाभिके बीचमें रहनेवाला अथवा घूमनेवाला, कभी बढ़नेवाला और कभी कम हो जानेवाला जो गोला होता है, उसे "गुल्म" कहते हैं।

अथवा यों समझिये कि, हृदय और पेड़ू के बीचकी जगहमें चलनेवाली या अचल रूपसे रहनेवाली तथा घटने और बढ़नेवाली जो गाँठ होती है, उसे "गुल्म" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट (१)—मल-मूत्र और अधोवायुका कठिनतासे होना, अफारा, अन्नमें अरुचि, उर्ध्ववात, अन्नका न पचना, प्यास और आँतोंमें गुड़-गुड़ शब्द होना—ये भी गुल्मके सामान्य लक्षणोंमें हैं; अर्थात् ये लक्षण सब गुल्मोंमें होते हैं।

नोट (२)—यहाँ "नाभि" शब्दसे "वस्ति या पेड़ू" समझना चाहिये।

गुल्मके पूर्वरूप।

जिनको गुल्म-रोग होनेवाला होता है, उन्हें गुल्मके प्रकट होनेसे पहले ये शिकायतें होती हैं:—

(१) डकारोंका बहुतायतसे आना।

(२) मलबन्ध अर्थात् दस्त साफ न होना।

(३) तृप्तिका होना (भोजन करनेपर पेटका फटना)।

(४) सामर्थ्यका नाश होना।

(५) आँतोंका गुड़-गुड़ शब्द करना।

(६) अफारा होना या पेटका फूलना।

(७) अन्न न पचनेके कारण पेटमें दर्द होना।

नोट—दिशा-पेशाबका तकलीफसे होना, गुदाकी हवाका कष्टसे निकलना, भोजनसे अरुचि, आँतोंमें आवाज़ होना, अफारा होना और वायुका उर्ध्वगत होना—डकारोंका बहुतायतसे आना—ये लक्षण सभी तरहके गुल्मोंमें होते हैं।

वातज गुल्मके निदान-कारण।

रूखे पदार्थ खाने, कम-ज़ियादा खाने, बहुत ही ज़ियादा खाने, मल-मूत्रादि वेगोंके रोकने, बलवानके साथ लड़ने आदि विरुद्ध चेष्टा करने, हृदयमें शोक होने और चोट लगने, जुलाब आदिसे ज़ियादा मल निकल जाने और उपवास करनेसे वातज गुल्म पैदा होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातज गुल्मके लक्षण।

वातज गुल्ममें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) जगह-जगह दर्द होता है।

(२) दस्त और अधोवायु रुकते हैं।

(३) गला और मुँह सूखते हैं।

(४) शरीरका रंग नीला और लाल हो जाता है।

(५) शीतज्वर होता है।

(६) हृदय, कोख, पसली, कन्धे और सिरमें पीड़ा होती है।

(७) भोजन पचनेके समय गोलेका जोर बढ़ जाता है।

(८) भोजन करनेपर गोला नर्म हो जाता है; यानी शान्ति रहती है—पीड़ा बन्द हो जाती है।

नोट (१)—इस वातज गुल्म-रोगमें रूखे, कड़वे, कसैले और चरपरे पदार्थ हानि करते हैं।

नोट (२)—भोजन पचनेपर रोगका कोप बढ़ना और भोजन करनेपर कुछ देर तक शान्ति रहना—गोलेकी पीड़ा न होना—वातज गुल्मकी ख़ास पहचान है।

पित्तज गुल्मके निदान-कारण।

चरपरे, खट्टे, तीक्ष्ण, गरम, विदाही और रूखे पदार्थ खाने-पीने, क्रोध करने, शराब पीने, धूपमें बहुत रहने, आगके सामने अधिक बैठने, विदग्ध अजीर्ण होने, लकड़ी प्रभृतिकी चोट लगने और खून बिगड़नेसे पित्त-गुल्म पैदा होता है।

पित्तज गुल्मके लक्षण।

पित्तसे पैदा हुए गुल्ममें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) ज्वर चढ़ता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) प्यास ज़ोरसे लगती है।

(३) ग्लानि होती है।

(४) शरीरका और चेहरेका रंग लाल हो जाता है।

(५) भोजन पचनेके समय घोर शूल चलते हैं।

(६) पसीने आते हैं।

(७) भोजनके पीछे दाह या जलन होती है। जली-जली-सी डकारें आती हैं।

(८) गुल्म व्रणकी तरह स्पर्शको सह नहीं सकता; अर्थात् गोलेको छूनेसे ऐसी वेदना होती है कि सही नहीं जाती।

कफज गुल्मके निदान।

शीतल, भारी और चिकने पदार्थ खाने-पीने, कसरत या मिहनत न करने और दिनमें सोनेसे कफका गुल्म पैदा होता है।

कफज गुल्मके लक्षण।

कफज गुल्ममें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) शरीर गीला-सा रहता है।

(२) शीतज्वर होता है।

(३) ग्लानि रहती है।

(४) जी मिचलाता या उबकाइयाँ आती हैं।

(५) खाँसी चलती है।

(६) भोजनसे अरुचि रहती है।

(७) शरीर भारी रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) हल्का-हल्का दर्द होता है।

(९) अग्नि मन्दी हो जाती है।

दो दोषोंके गुल्मकी कल्पना।

अगर दो दोषोंके मिले हुए लक्षण दीखते हों, तो औषधिकी कल्पनाके लिये, वातसे और पित्तसे हुए, वात और कफसे हुए तथा पित्त और कफसे हुए—तीन तरहके गुल्मोंकी कल्पना कर लो।

नोट—जिस रोगीमें वात और पित्तके लक्षण मिलते हों, उसे वातपित्तज गुल्म समझो। इसी तरह बाक़ी दोको भी समझ लो।

त्रिदोषज गुल्मके लक्षण।

अगर तीनों दोषोंसे गुल्म पैदा होता है, तो बड़े ज़ोरकी पीड़ा होती है, जलन होती है, गोला पत्थरके समान घन और ऊपरको उठा हुआ होता है, तत्काल विदग्धाजीर्ण पैदा करता है, मनको भ्रमित करता, शरीरको कमज़ोर करता, जठराग्निके बलको नाश करता और प्राणोंका संहार करता है। त्रिदोषज गुल्म असाध्य होता है।

रक्तगुल्मके निदान।

नवप्रसूता स्त्री अथवा गर्भ गिरानेवाली स्त्री अथवा रजस्वला स्त्री अगर अहितकारी आहार-विहार करती है, तो उस स्त्रीका "वायु" रक्तको ग्रहण करके, गर्भाशयमें, गोलेसे समान गुल्म पैदा करता है। खुलासा यह है कि, इन स्त्रियोंके अहितकारी या नुक़सान पहुँचानेवाले आहार-विहारोंसे "वायु" कुपित हो जाता है। वह कुपित वायु इनके गिरनेवाले खूनको रोककर, गर्भाशयमें, खूनका गोला बना देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—बच्चा जननेवाली स्त्रीकी योनिकी राहसे, बच्चा होनेके बाद भी, ख़राब रहा हुआ खून निकलता रहता है। उस खूनका निकल जाना ही जच्चाके हक़में भला है। अगर वह खून किसी तरह रुक जाता है, तो स्त्रीके गर्भाशयमें खूनका गोला हो जाता है। उस गोलेके होनेसे, पीड़ा और दाह वग़ैरः शिकायतें होती हैं। यह गोला क्यों होता है? वायुके कुपित होनेसे। वायु क्यों कुपित होता है? स्त्रीके अहितकारी पदार्थ खाने-पीने और पुरुष-संग आदि मिथ्या विहार करनेसे वायु कुपित होता है।

जिस तरह बच्चा जननेवाली प्रसूता या जच्चाका खून योनिकी राहसे निकल जाना ज़रूरी है; उसी तरह गर्भ गिरानेवाली और रजस्वला स्त्रीका भी ख़राब खून निकल जाना ज़रूरी है। अगर ये भी अहितकारी आहार-विहार करती हैं, तो इनके भी गर्भाशयोंमें "रक्तगुल्म" खूनका गोला हो जाता है। "चरक"में कहा है:—

ऋताववाहारतया भयेन विरुद्धरूक्षैर्वेगविनिग्रहैश्च।
संस्तम्भनोल्लेखनयोनिदोषैर्गुल्मः स्त्रियारक्तभवोऽभ्युपैति॥

रजोधर्मके समय उपवास करने, डरने, रूखे पदार्थ सेवन करने, मूत्रादि वेगोंके रोकने, स्तम्भन क्रिया करने, उल्लेखन (वमन) और योनि सम्बन्धी दोषोंसे स्त्रीके रुधिरजन्य गुल्म यानी रक्तगुल्म होता है।

रक्त-धातुसे पैदा हुए गुल्मके निदान।

धातु रूपी रुधिरसे पैदा हुए गुल्मके विप्रकृष्ट निदान और लक्षण, पित्तगुल्मके समान ही होते हैं, परन्तु अभिघातादि निदान विशेष-करके होते हैं।

खुलासा यह है कि, चरपरे, खट्टे, गरम, विदाही और रूखे पदार्थ सेवन करने, क्रोध करने, शराब पीने, धूपमें रहने, आगके पास ज़ियादा बैठने और अभिघात या चोट वग़ैरः लगने आदि कारणोंसे पित्तका गुल्म होता है। बस, इन्हीं कारणोंसे स्त्री-पुरुषोंके रक्त-धातुका गुल्म होता है। रक्त-धातुके गुल्मके निदानोंमें अभिघात यानी चोट लगने आदिकी विशेषता रहती है। बस, निदानोंमें तो इतना ही फ़र्क़ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्त-धातुसे हुए गुल्मके लक्षण।

रक्त-धातुसे हुए गुल्मके लक्षण वही हैं, जो पित्तसे हुए गुल्मके हैं; यानी ज्वर, प्यास, ग्लानि, शरीर और चेहरेका लाल होना, भोजन पचनेके समयमें दर्द ज़ियादा होना, पसीने आना, जलन होना और गुल्मका स्पर्श न सह सकना आदि जो लक्षण पित्तज गुल्ममें देखे जाते हैं, वही सब इसमें भी देखे जाते हैं।

आर्त्तव या रजके गुल्मके लक्षण।

लिख आये हैं कि, हालकी जच्चा—नवप्रसूता, गर्भ गिरानेवाली और रजस्वला स्त्रियोंके अहितकारी आहार-विहारोंसे—उनके गर्भाशयमें, गोला पैदा हो जाता है। उस गुल्मके होनेसे शूल, दर्द, दाह—जलन और पित्तज गुल्मके ज्वर, प्यास, ग्लानि, भोजन पचनेके समय दर्दका बढ़ जाना आदि लक्षण होते हैं। ये इस गुल्मके साधारण लक्षण हैं। इस रजोगुल्ममें कुछ विशेष लक्षण भी होते हैं और उन्हींसे इस गुल्मकी ठीक पहचान होती है। उन्हें भी सुनियेः—

रजोधर्मके समयमें यानी रजोधर्मकी तिथि आनेपर, जिस तरह गर्भवतियोंका रज नहीं दिखाई देता; उसी तरह इस गुल्मवालीका रज नहीं दीखता। जिस तरह गर्भवतीकी चूचियोंके अगले भाग यानी बींठनियाँ काली हो जाती हैं, जिस तरह गर्भवतीका चेहरा पीला पड़ जाता है; उसी तरह इस गुल्मवालीकी चूचियोंकी बींठनी काली पड़ जाती हैं और चेहरा पीला पड़ जाता है। जिस तरह गर्भवतीको खाना नहीं भाता और वमन होती हैं; उसी तरह इस गुल्मवालीको भी भोजन नहीं भाता और क़य होती हैं। इनके सिवा स्तनोंसे दूध निकलता है, तरह-तरहके भोजनोंपर मन चलता है, मुखसे पानी गिरता है और आलस्य रहता है। मतलब यह है कि, गर्भके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सारे चिह्न इस गुल्ममें नज़र आते हैं। जिस तरह, व्याधि या रोगके प्रभावसे, क्षय-रोगीका मन स्त्री-प्रसंगपर चलता है; उसी तरह व्याधिके प्रभावसे, रजोगुल्म होनेपर, स्त्रीमें गर्भके सारे चिह्न दीखते हैं। गर्भवतीके पेटमें गर्भ हाथ-पाँव आदि अङ्गोंको चलाता हुआ घूमा करता है, पर रक्तगुल्मवालीके पेटमें हाथ-पाँव आदि अङ्ग नहीं फड़कते, केवल पिंडके आकारकी कोई चीज फड़कती मालूम होती है और शूल चलते हैं। स्त्रियोंके ही होनेवाले गुल्मके विशेष लक्षण यही हैं।

अब यह सवाल पैदा होता है कि, जब रक्तगुल्मवाली स्त्रीमें गर्भके समस्त चिह्न नज़र आते हैं, तब इस बातका निश्चय कैसे हो सकता है कि, स्त्रीके गर्भाशयमें रक्तगुल्म—खूनका गोला है या गर्भ है। क्योंकि अगर गर्भ हो और रक्तगुल्म समझ लिया जाय, तो चिकित्सा करनेसे गर्भाशय और गर्भको नुक़सान पहुँच सकता है। इसी तरह अगर गुल्म हो और गर्भके चिह्न देखकर गर्भ समझ लिया जाय, तो चिकित्सा न करनेसे रोगिणीको हानि पहुँचना सम्भव है।

इसका समाधान या उत्तर यह है:—अगर पेटमें गर्भ होता है, तो हाथ-पाँव आदि शाखा अङ्ग फड़कते हुए मालूम होते हैं और शूल या दर्द नहीं होता; परन्तु गुल्म होनेसे हाथ-पाँव आदि अङ्ग नहीं चलते, गर्भका-सा फड़कना मालूम नहीं देता; केवल कोई गोल पिंडाकार चीज फड़कती मालूम होती है और साथ ही शूल चलते हैं—दर्द होता है।

खुलासा यह है कि, गर्भके फड़कनेसे किसी भी तरहकी पीड़ा नहीं होती, पर रक्तगुल्मके समस्त पिण्डमें दर्द होता है। गर्भजात बालकके सारे अङ्ग एक ही समय नहीं फड़कते; यानी हाथ-पैर आदि कोई एक अङ्ग फड़कता है; पर रक्तगुल्मका सारा पिण्ड फड़कता है और देर तक फड़कता रहता है।

शास्त्रमें, इस रक्तगुल्मकी चिकित्सा दस महीने बाद करनेकी आज्ञा है। इसपर कोई-कोई कहते हैं कि. नवें और दसवें महीनेमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बच्चा पैदा हो जाता है, इसीलिये आचार्योंने दस महीने व्यतीत होनेपर इलाज करनेकी राय दी है, ताकि गर्भ होनेका सन्देह दूर हो जाय। अगर दसवें महीनेके शेषमें भी बच्चा न हो, तो रक्तगुल्म समझा जाय।

जो ऐसी बात कहते हैं, वे ग़लती करते हैं; क्योंकि गर्भ तो हाथ-पाँव आदि अङ्गोंसे निरन्तर और बिना शूलके ही फड़कता है और गुल्म बिना हाथ-पाँव चलाये पिंडाकार फड़कता है और शूल चलते हैं,—इस कथनसे शास्त्रकारोंने गर्भके संशयको दूर कर दिया है। फिर नवें-दसवें महीनेमें ही बच्चा होनेका कोई पक्का नियम नहीं है। दस महीनेके ऊपर, बहुत-सा समय जानेपर भी, बच्चे होते हैं। "चरक"में लिखा है:—

तं स्त्री प्रसूते सुचिरेण गर्भं पुष्टं यदा वर्षगणैरपि स्यात्।

स्त्री गर्भ रहनेके बहुत समय बाद यानी कई वर्ष बाद भी बच्चा जनती है और ऐसा पैदा हुआ बालक खूब हृष्ट-पुष्ट होता है।

गुल्म और गर्भके फिरने-फड़कनेमें जो भेद है वह तो है ही, इसके सिवाय एक और भेद है, उसे हम लिखना भूल गये। वह यह है कि, गर्भ रहनेसे जिस तरह पेट बढ़ता है; गुल्म होनेसे उस तरह नहीं बढ़ता। यद्यपि गुल्म होनेसे भी वमन आदि लक्षण गर्भिणीकी तरह ही होते हैं। "सुश्रुत" में लिखा है:—

न स्पन्दते नोदरमेति वृद्धिं भवन्ति लिंगानिच गर्भिणीनाम्।
तं गर्भकालातिगमे चिकित्स्यमसृग्भवं गुल्ममुशन्ति तज्ज्ञाः॥

रक्तगुल्म गर्भकी तरह नहीं फड़कता और पेट भी गर्भकी तरह नहीं बढ़ता, परन्तु और लक्षण गर्भिणीके जैसे ही होते हैं। इसे वैद्य "रक्तगुल्म" कहते हैं। इसकी चिकित्सा गर्भकाल बीतनेपर यानी दस महीने बाद करनी चाहिये

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"सुश्रुत" ने गर्भकाल बीतनेपर रक्तगुल्मकी चिकित्साकी स्पष्ट राय दी है। चरकके मतमें गर्भकालका कोई ठिकाना ही नहीं है। यहाँ बड़ा मतभेद है। परन्तु भावमिश्रजी कहते हैं, गर्भकाल या दस महीने बीतनेपर जो चिकित्सा करनेकी बात कही है, वह गर्भका संशय दूर करनेके लिए नहीं कही है, वरन् इसलिये कही है कि, दसवें महीनेमें या इसके बाद रक्तगुल्मकी चिकित्सा आसानीसे हो सकती है। क्योंकि पुराना रक्तगुल्म सुखसाध्य समझा जाता है। जैसे,—

रक्तगुल्म पुराणत्वं सुखसाध्यस्य लक्षणम्।

रक्तगुल्मका पुरानापन—सुखसाध्य होनेका लक्षण है और दस महीने बाद ही रक्तगुल्म पुराना समझा भी जाता है। जैज्जट आचार्य भी कहते हैं:—

दशमाशोपरि पिण्डिते गुल्मे स्नेहादिना उपस्कृत देहाय न गर्भाशयवृत्ति-मादधातिरक्तभेदनमिति॥

दसवाँ महीना बीतनेके बाद गुल्मकी स्थिति होती है, तब तेल आदिसे स्त्रीके शरीरको संस्कार देकर, रुधिर-भेदन करनेसे गर्भाशयको नुक़सान नहीं पहुँचता।

खुलासा यह है कि, रक्तगुल्मके पुराना होनेपर चिकित्सा करनी चाहिये; नयेकी चिकित्सा न करनी चाहिये। रक्तगुल्म दश महीने बाद पुराना माना जाता है, अतः ग्यारह महीने बाद उसकी चिकित्सा करनी चाहिये, ताकि वह सुखसे आराम हो जाय और स्त्रीके गर्भाशयको किसी तरहकी हानि न हो।

गुल्मके असाध्य लक्षण।

जो गुल्म अत्यन्त पीड़ा और दाह करता है, जो पत्थरकी तरह घन और ऊपरको उठा हुआ रहता है, जो तत्काल विदग्धाजीर्ण पैदा करता, मनको भ्रमाता, शरीरको दुर्बल और जठराग्निको बलहीन करता है, वह त्रिदोषज गुल्म असाध्य होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो गुल्म क्रम-क्रम करके बहुत ही ज़ियादा बढ़ गया हो, जिसने सारा पेट घेर लिया हो और रस-रक्त आदि धातुओंका आश्रय ले लिया हो, जो दर्द चलाता हो, जो शिराओंसे बँधकर कछुएकी तरह ऊँचा हो गया हो; जिसके साथ कमज़ोरी, अरुचि, जी मिचलाना, खाँसी, वमन, अत्यन्त ज्वर, प्यास, तन्द्रा और ज़ुकाम ये उपद्रव हों—वह असाध्य है।

जिस गुल्म-रोगीको ज्वर, श्वास, अतिसार और वमन हों तथा जिसके हृदय, नाभि, हाथ और पैरोंमें सूजन हो, वह गुल्म-रोगी मर जायगा।

जिस गुल्म-रोगीको श्वास, शूल, प्यास और अरुचि हो, जिसका गुल्म यकायक ग़ायब हो जाय तथा कमज़ोरी हो, वह रोगी मर जायगा।

गुल्म-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) गुल्म-रोगमें पहले "वायु"की शान्तिके उपाय करने चाहिये; क्योंकि गुल्म-रोगकी जड़ "वायु" है।

(२) जहाँ दोष विशेषके लक्षण साफ प्रकट न होनेके कारण, निश्चय रूपसे यह न मालूम होता हो कि, अमुक दोषज गुल्म है, वहाँ भी वात शान्तिकारक औषधि आदि देनी चाहिये, क्योंकि वायुको शान्त करनेसे और दोष सहजमें शान्त हो जाते हैं।

(३) वातज गुल्म-रोगीको स्निग्ध—चिकने पदार्थोंसे स्वेदन करके—पसीने दिलाकर, विरेचन या जुलाब देना चाहिये। समयानुसार निरूहण और अनुवासन वस्ति भी करनी चाहिये। इस गुल्म-वालेको "दूध, हरड़ और रेंडीका तेल" मिलाकर पिलाना हित है। यह उत्तम जुलाब है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) पित्तज गुल्ममें विरेचन या जुलाब अत्यन्त हितकारी है। पुराने गुड़के साथ हरड़का चूर्ण देनेसे अथवा त्रिफलेके काढ़ेके साथ निशोथका चूर्ण देनेसे दस्त होते और रोग शान्त हो जाता है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है, पित्तज गुल्मवालेको काकोल्यादि घृतसे स्नेहन करना चाहिये, मधुर द्रव्योंका जुलाब देना चाहिये और इसी तरह निरूहण वस्ति करनी चाहिये।

(५) अगर पित्तज गुल्म-रोगमें दाह, शूलका-सा दर्द, नींद न आना, अस्थिरता और ज्वर—ये लक्षण हों; तो समझो कि गुल्म पकनेवाला है। इस दशामें व्रण पकानेके लिये कोई मुनासिब दवा देनी चाहिये और जब वह पक जाय, तब "अन्तर्विद्रधि"की तरह इलाज करना चाहिये।

(६) कफज गुल्ममें वमन, उपवास—लंघन और स्वेद-कर्म कराना—पसीने दिलाना हितकारी है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है, कफज गुल्म-रोगीको पिप्पल्यादि घृतसे स्नेहन करना चाहिये, तेज जुलाब देना चाहिये और निरूहण वस्ति करनी चाहिये।

(७) भावमिश्रजी कहते हैं, कफज गुल्म-रोगीको वातज गुल्म और कफज गुल्म—दोनों ही की दवा दी जा सकती हैं।

(८) कफज गुल्ममें—तिल, रेंडीके बीज और सरसों इन तीनोंको पीसकर और गरम करके, गुल्मपर गरम लेप करना चाहिये और लोहेके बर्तनसे उसे सेकना चाहिये। इससे बड़ा उपकार होता है।

(९) रक्त गुल्मवाली स्त्रीका इलाज ११ महीने बाद करना चाहिये। पहले स्नेह पान, स्वेदन और विरेचन करना चाहिये। भावमिश्र लिखते हैं,—शरीरका स्वेदन और स्नेहन संस्कार करके, स्नेह युक्त—चिकनाई मिला हुआ जुलाब देना चाहिये। इसके बाद और दवा देनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) "सुश्रुत"में लिखा है:—रक्तगुल्मके भेदनके लिये, ढाकके क्षार या खारके साथ पकाया हुआ घी स्त्रीको पिलाना चाहिये। यह घी रक्तगुल्मको फौरन नाश करता है। उन्होंने और भी लिखा है कि, गरम पदार्थोंसे रक्तगुल्मको भेदन करके यानी फोड़कर, "प्रदर-रोग"की तरह इलाज करना चाहिये।

(११) गुल्म-रोगमें पेट साफ़ रखनेसे बहुत उपकार होता है, अतः वैद्यको इस बातपर ध्यान रखना चाहिये। वैद्यको चाहिये, गुल्म-रोगीको वायु कुपित करनेवाले—अधिक मिहनत, राह चलना, धूपमें घूमना और मैथुनादि कर्मों और वैसे ही आहारोंसे बचावे। रोगी और रोगीके घरवालोंको ये बातें बताता रहे। वायुकी शान्ति करनेवाले आहार-विहारादि गुल्म-रोगके साधारण पथ्य हैं, अतः ये भी बता देने चाहिये। यहाँ तक कि, पित्त और कफके गुल्मवालेको भी वही चीजें दिलानी चाहिये, जो पित्त और कफको कुपित न करती हों तथा वायुको शान्त करती हों।

(१२) "सुश्रुत"में लिखा है, जिस गुल्ममें दर्द हो, जो ऊपरकी ओर यानी बाहरकी तरफ उठा हुआ हो, चलायमान न हो—स्थिर हो, जिसमें जलन होती हो—अगर वह गुल्म पकावपर आ गया हो या पक गया हो और उसमें दर्द भी हो—तो ऐसे गुल्ममें जौंकें लगाकर खून निकाल देना चाहिये अथवा फ़स्द खोल देनी चाहिये।

(१३) जिन गुल्मवालोंको दस्त न होता हो और अधोवायु भी न खुलती हो, अथवा ज़रा-ज़रा दस्त होता हो और गुदाकी हवा थोड़ी-थोड़ी या रुक-रुककर खुलती हो, उन्हें दूधके साथ अदरख पिलानी चाहिये। साथ ही घड़ा, बोतल या ईंटसे सेक करना चाहिये।

(१४) प्रायः सभी गुल्म-रोगी दुर्विरेच्य होते हैं; यानी उन्हें दस्तावर दवाओंसे भी दस्त नहीं आते या बड़ी मुश्किलसे आते हैं, इसलिए ऐसे रोगियोंको पसीने दिलाकर किरमाला आदि औषधियोंसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दस्त कराने चाहिये। लेप लगाना, मालिश करना, आगसे दाग देना और उपनाह स्वेद करना तथा गुदामें बत्ती चढ़ाना ये सब उपाय करने चाहिये। बत्ती चढ़ानेका काम उस समय करना चाहिये, जब कि दस्त और अधोवायु रुक जावें। समन्दरनोन, अदरख, सरसों और काली-मिर्चको महीन पीसकर और कपड़ेपर लगाकर बत्ती बना लेनी चाहिए। इस बत्तीको घीमें तर करके गुदामें घुसानेसे दस्त होता और हवा खुलती है। उदावर्त्त-रोगमें लिखी हुई "फलवर्त्ति" भी काम दे सकती है। ताम्बेकी कटोरीमें "गुड़" रखकर आगपर चढ़ा दो। जब वह कुछ पतला हो जाय, उसमें "सैंधानोन" मिलाकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको गुदामें चलानेसे भी दस्त हो जाता है। उदावर्त्त और गुल्म दोनोंमें ही यह काम देती है।

गुल्मकी विशेष चिकित्सा।

वातज गुल्मकी चिकित्सा।

नोट (१)—वातज गुल्मवालेको पहले घी वग़ैरःसे स्निग्ध करके पसीने निकालने चाहिये। इसके बाद स्निग्ध विरेचन, निरूह वस्ति और अनुवासन वस्ति देकर, समय और मात्राका विचार करके औषधि देनी चाहिये।

नोट (२)—रूखे पदार्थ सेवन करने और परिश्रम करनेसे पैदा हुए तेज़ पीड़ावाले वातज गुल्ममें दस्त न होता हो और हवा न खुलती हो, तो रोगीको पहले स्नेह पान कराओ तथा स्निग्ध भोजन, अभ्यंग, स्निग्ध पान, निरूह और अनुवासन योगसे स्निग्ध करके गुल्म शान्तिके लिए स्वेदन प्रयोग करो। गुल्म रोगीके स्निग्ध होनेके बाद स्वेद ग्रहण करनेसे छेद या स्रोत नर्म हो जाते हैं और उल्बण वायुका दमन हो जाता है। वायुके शान्त होनेसे गुल्म नाश हो जाता है।

नोट (३)—गुल्ममें, विशेषकर नाभिसे ऊपरके गुल्ममें, स्नेह पान हित है। पक्वाशयगत गुल्ममें वस्ति कर्म हित है। पेटमें फैले हुए गुल्ममें स्नेह पान और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वस्ति-कर्म दोनों ही हित हैं। वातज गुल्ममें दस्त और अधोवायुकी रुकावट होनेसे, बृंहण और गरम-चिकना अन्नपान तथा बारम्बार स्नेह पान करना हितकारी है।

(१) बड़ी हरड़का चूर्ण और रैंडीका तेल "गरम दूध"में मिलाकर पिलानेसे दस्त होते और वातज गुल्म नाश हो जाता है।

नोट—अगर कोठा रूखा हो और दस्त न होता हो, तो बिनौलेकी गरीको फाँककर दूध पीनेसे मल फूल जाता है और कोठेका रूखापन मिट जाता है। फिर दस्त खुलासा हो जाता है।

(२) सज्जीखार दो माशे, कूट दो माशे और केतकीकी जटाओंका खार चार माशे पीस-कूटकर "अरण्डीके तेल"में मिलाकर पिलाओ। इस नुसख़ेसे वातज गुल्ममें अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३) सोंठ चार तोले, सफेद तिल सोलह तोले और पुराना गुड़ आठ तोले—इन तीनोंको मिलाकर पीस लो और रख लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे एक तोले तक है। एक मात्रा खाकर ऊपरसे गरम दूध पीनेसे वातज गुल्म, उदावर्त्त और योनि-शूल—ये आराम हो जाते हैं।

(४) सोंठ २ तोले, चीतेकी छाल ८ तोले, तिल ४ तोले और पुराना गुड़ ४ तोले—इनको महीन पीसकर, निवाये-निवाये दूधके साथ पीनेसे गुल्म, उदावर्त्त और योनि-शूल नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ३ से ६ माशे तक। परीक्षित है।

नोट—नं० ३ और ४ नुसख़ोंमें सिर्फ चीतेकी छालका फ़र्क़ है।

(५) अरण्डीके तेलमें "दूध" मिलाकर पीनेसे वातज गुल्म आराम हो जाता है।

(६) पंचमूलके काढ़ेमें जवाखार और शिलाजीत डालकर पीनेसे वातज गुल्म आराम हो जाता है।

नोट—अगर इस तरह चिकित्सा करनेसे "कफ" कुपित हो जाय, तो लेखन और कफनाशक चूर्ण देने चाहिये। अगर "पित्त" कुपित हो जाय, तो जुलाब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

देना चाहिये। अगर दवा देनेसे दोष शान्त न हों—रोग बढ़ता ही जावे या न घटे, तो रुधिर मोक्षण करना चाहिये यानी फ़स्द खोलनी चाहिये।

(७) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, त्रिफला, आमले, बायविड़ङ्ग और चीता—इन सातोंको दो-दो तोले लेकर सिलपर पीस लो और लुगदी बना लो। फिर तीन पाव उत्तम घी और तीन सेर गायका दूध तथा ऊपरकी लुगदीको कढ़ाहीमें डालकर पकाओ। घी-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इसका नाम "त्र्यूषणाद्य घृत" है। इस घीके पीनेसे वातज गुल्म नाश हो जाता है।

(८) हाऊबेर, त्रिकुटा, इलायची, चव्य, चीता, सैंधानोन, जीरा, पीपरामूल और अजमोद—हरेक दवाको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

बेरका काढ़ा ४ सेर, मूलीका रस ४ सेर, दूध ४ सेर, दही ४ सेर, अनारका रस ४ सेर, गायका घी ४ सेर और लुगदी—इनको एकत्र मिलाकर घी पका लो। घी-मात्र रहनेपर उतार लो। इस घीसे वात-गुल्म, शूल, आनाह, बवासीर, श्वास, खाँसी, अरुचि, ज्वर, पसलीका दर्द, हृदयका दर्द और पेड़ूका दर्द ये आराम हो जाते हैं। इसका नाम "हृपुषाद्य घृत" है।

(९) चीता, त्रिकुटा, सैंधानोन, इलायची, चव्य, अनार, अजमोद, पीपरामूल, जीरा, हाऊबेर और धनियाँ—इन सबको दो-दो तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

दही २ सेर, काँजी २ सेर, बेरीका काढ़ा २ सेर, मूलीका स्वरस २ सेर, गायका घी १ सेर और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "चित्रकाद्य घृत" है। इसके सेवन करनेसे वातगुल्म, मन्दाग्नि, आटोप और शूल नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तगुल्म नाशक नुसखे।

नोट—पित्तगुल्म रोगीको काकोल्यादि घृत या महातिक्त घृत पिलाकर स्निग्ध करो। इसके बाद जुलाब दो और जुलाबके बाद वस्तिकर्म करो। अगर कुछ भी न करो, तो जुलाब ज़रूर दो। पित्तके गुल्म-रोगमें जुलाब विशेष उपकारी है।

नोट—लिख आये हैं कि गुल्म-रोगमें दाह, शूलकी तरह दर्द, स्तब्धता, निद्रा न आना, अस्थिरता और ज्वर—ये लक्षण हों, तो समझना चाहिये कि गुल्म पकनेपर है। अगर पका न हो, पकनेपर हो तो पकानेकी दवा देनी चाहिये और पक जानेपर "अन्तर्विद्रधिकी तरह" इलाज करना चाहिये। "बंगसेन" में लिखा है, ऐसा गुल्म हो तो उपनाह स्वेद आदि करना चाहिये।

अगर गुल्म भारी, सख्त, अच्छी तरहसे स्थित, गूढ़, मांसमें घुसा हुआ, बुरे रंगका और स्थिर हो, तो उसे पका हुआ समझो।

पके हुए गुल्मको व्रणकी तरह चीरना, शोधन करना और भरना—रोपन करना चाहिये।

अगर दोष अपने आप ही ऊपर और नीचे प्राप्त हों, तो और उपद्रवोंकी रक्षा करते हुए बारह दिन तक उपेक्षा करनी चाहिये। इसके बाद शोधन करनेवाले घी देने चाहिये और इसके भी बाद तिक्त औषधियोंके साथ शहद देना चाहिए।

(१) त्रिफलेके काढ़ेके साथ निशोथका चूर्ण खिलानेसे दस्त होकर पित्त-गुल्म आराम हो जाता है।

(२) हरड़का चूर्ण गुड़में मिलाकर देनेसे भी दस्त होकर पित्त-गुल्म शान्त हो जाता है।

(३) दाख और हरड़के काढ़ेमें "गुड़" मिलाकर सेवन करनेसे दस्त होकर पित्तगुल्म शान्त हो जाता है।

(४) कबीलेका चूर्ण "शहद या मिश्री" मिलाकर खानेसे दस्त होकर पित्तगुल्म शान्त हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—ये चारों नुसख़े दस्तावर हैं; पहले यही देने चाहिए; क्योंकि जुलाब देना ज़रूरी है। इसके बाद और दवा दे सकते हो।

(५) मुलेठी, चन्दन और दाख—इनका चूर्ण "दूध" के साथ सेवन करनेसे पित्तगुल्म आराम हो जाता है।

(६) मुलेठीका चूर्ण "शहद"में मिलाकर खाने और ऊपरसे चावलोंका धोवन पीनेसे पित्तज गुल्म आराम हो जाता है।

(७) सोलह तोले त्रायमाणको १६० तोले या दो सेर पानीमें पकाओ; जब ३२ तोले जल रह जाय, उतारकर छान लो।

फिर आमलोंका स्वरस ३२ तोले, गायका दूध ३२ तोले और गायका घी ३२ तोले तैयार रखो।

रोहिणी, कुटकी, नागरमोथा, त्रायमाण, धमासा, दाख, भुई-आमला, जीवन्ती, लाल चन्दन और नील कमल—इन सबको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ महीन पीसकर लुगदी बना लो।

अब लुगदी, घी, दूध और आमलोंके रस तथा त्रायमाणके काढ़ेको मिलाकर कढ़ाहीमें डाल दो और मन्दाग्निसे घी पका लो। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे १॥ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे पित्तगुल्म, रक्तगुल्म, विसर्प, पित्तज्वर, हृदयरोग, कामला और कोढ़ नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—शालि चावलोंका भात, गाय और बकरीका दूध, परवल, घी, दाख, फालसे, आमले, खजूर, अनार, मिश्री और खिरेंटीका तेल—ये सब पदार्थ पित्त-गुल्ममें पथ्य हैं।

दिल खुश रखने और हँसनेसे शरीर पुष्ट और निरोग रहता है; इसलिये आप "हाजीबाबा" पढ़िये। इसमें २४ मनोहर चित्र और ३०५ सफ़े हैं। मूल्य ३), सजिल्दका ३॥) है। इसके सम्पादक भूतपूर्व बड़े लाट कर्ज़न हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफज गुल्म नाशक नुसख़े ।

नोट—कफज गुल्ममें स्नेह कर्म, उपनाह स्वेद, तेज़ जुलाब, वस्ति-कर्म, वमन और उपवास—हित हैं। अगर अग्नि मन्द हो, थोड़ा-थोड़ा दर्द हो, कोठा भारी मालूम होता हो, शरीर गीले कपड़ेसे ढका हुआ-सा मालूम होता हो, जी मिचलाता हो तथा अरुचि आदि उपद्रव हों, तो "वमन" करानी चाहिए।

(१) तिल, रैंडीके बीज, अलसी और सफेद सरसों समान-समान लेकर, पानीके साथ,सिलपर पीस लो। फिर इसको एक लोहेके बासन-पर लीप दो। फिर उस बासनको आगपर तपा-तपाकर उसीसे "कफ-गुल्म"को सेको। इसीको स्वेदन करना या पसीना दिलाना कहते हैं। परीक्षित है।

(२) पुरानी वारुणी मदिरा या पुरानी शराबमें "वृहत्पंचमूलका काढ़ा" मिलाकर पीनेसे कफज गुल्म शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बेलकी जड़, स्योनाककी जड़, गम्भारीकी जड़, पाटलाकी जड़ और गनियारीकी जड़—इनका काढ़ा पीनेसे कफज गुल्म आराम हो जाता है। यही "वृहत्पंचमूल" है। जो काढ़ेको शराबमें मिलाकर न पी सकें, वे केवल काढ़ेको ही पीवें।

(३) माठेमें अजवायनका चूर्ण और थोड़ा-सा विरियासंचरनोन मिलाकर पीनेसे अग्नि दीपन होती तथा वायु, मूत्र और मलका अनु-लोमन होता है। कफज गुल्मवालेको—मल, मूत्र और अधोवायु रुकने-पर—यही छाछ देनी चाहिये। इससे हवा खुलती और मल-मूत्र उतरते हैं। परीक्षित है।

अगर बिगड़ी हुई गृहस्थीका सुधार करना है, इसी लोकमें स्वर्गसुख भोगना है, तो आप सचित्र "सुहागिनी" मँगाकर पढ़िये और अपने घरकी मस्तूरातोंको पढ़ाइये। फिर देखिये, कैसा आनन्द मिलता है। मूल्य ३।), सजिल्दका ३॥।) है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वन्द्वज गुल्म नाशक नुसखे।

(१) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, पाढ़, हाऊबेर, हरड़, कचूर, अजमोद, बनतुलसी, विषांबिल (तित्तिड़ी), अम्लवेत, अनार, पोहकर-मूल, धनियाँ, ज़ीरा, चीता, बच, जवाखार, सज्जीखार, पाँचों नोन और चव्य—इन सब दवाओंको समान-समान लेकर कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्णका नाम "हिंग्वादि चूर्ण" है। इसकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। इसको सवेरे ही गरम जल या शराबके साथ खाना चाहिये। अथवा भोजनके साथ नित्य खाना चाहिये। इससे "वातकफ-जनित" गुल्म, पसलीका दर्द, हृदयका दर्द, आनाह, मूत्रकृच्छ्र, गुदाका शूल, योनि-शूल, बवासीर, संग्रहणी, तिल्ली, पाण्डुरोग, अरुचि, हिचकी, खाँसी, श्वास और गलग्रह-रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—गोलियाँ अधिक दिन ठहरती हैं, इसलिये गोली बनानी हों, तो बिजौरे नीबूके रसमें चूर्णको खरल करके तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो।

(२) हींग, पीपरामूल, धनियाँ, ज़ीरा, बच, चव्य, चीता, पाढ़, कचूर, विषांबिल, कालानमक, सैंधानोन, विरियासंचरनोन, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, जवाखार, सज्जीखार, अनारदाना, हरड़, पोहकरमूल, अम्लवेत, हाऊबेर और काला ज़ीरा—इन सब दवाओंको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको एक दिन बिजौरे नीबूके रसमें खरल करके सुखा लो। इसके बाद, इसे अदरखके रसमें खरल कर लो और सुखाकर बोतलमें भरकर रख दो। इसमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण गरम जलके साथ खानेसे गुल्म, अफारा, बवासीर, ग्रहणी, उदावर्त्त, प्रत्याध्मान, विष, उदर-रोग, पथरी, दोनों तरहकी तूनी, अरुचि, उरुस्तम्भ, मनका अत्यन्त भ्रम, बहरापन, अष्ठीलिका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और प्रत्यष्ठीलिका रोग फौरन आराम होते हैं। अश्विनी कुमारोंकी संहितामें लिखा हुआ यह चूर्ण हृदय, कोख, वंक्षण, कमर, पेट, पेड़ू, स्तन और पसलियोंमें "वायु और कफ"से हुए शूलोंको नाश करता है॥

त्रिदोषज गुल्म नाशक नुसख़े।

(रक्तगुल्मके सिवा, सब तरहके गुल्मोंका इलाज)

(१) सन्निपात गुल्मको असाध्य जानकर इलाज करना चाहिये और उसमें त्रिदोष नाशक औषधि देनी चाहिये।

(२) लंघन, अग्निदीपक, गरम, चिकने, वातानुलोमक और सब तरहके पुष्टिकारक अन्नपान गुल्म-रोगमें हितकारी हैं।

(३) सब तरहके गुल्मोंमें, पहले अनेक उपायोंसे वातको शमन करना चाहिये; क्योंकि वातके शान्त होनेपर और दोष आप-से-आप शान्त हो जाते हैं।

(४) गुल्म-रोगमें स्वेदकर्मकी बड़ी ज़रूरत रहती है। कुम्भी स्वेद, पिण्ड स्वेद, इष्टका स्वेद तथा सुखोष्ण लेप और उपनाह स्वेद आदि द्वारा गुल्मरोगको शमन करना चाहिए। घड़ेमें वातनाशक क्वाथोंको अथवा काँजी आदिको भरकर स्वेद देते हैं। इसको "कुम्भी स्वेद" कहते हैं। पकाये हुए मांसादिके पिण्डसे जो स्वेद दिया जाता है, उसे "पिण्ड स्वेद" कहते हैं। ईंटके चूर्णको गरम काँजीमें भिगोकर जो स्वेद दिया जाता है, उसे "इष्टका स्वेद" कहते हैं।

(५) गुल्मके स्थानमें तथा जिस तरफ गुल्म हो उस तरफकी बाहुकी सन्धिकी नीचेवाली शिरामेंसे रक्त मोक्षण कराना चाहिये और स्वेद तथा वातानुलोमक क्रियाएँ करनी चाहिये। इन उपायोंसे गुल्म-रोग चला जाता है।

(६) गुल्म-रोगमें स्वेद देनेसे स्रोत शुद्ध होते हैं, बलवान वायु शमन होती है और मल-मूत्रादिकी रुकावट दूर होकर गुल्मका विबन्ध नष्ट हो जाता है।

सूखा मांस, मछली, मूली, आलू, रतालू, सब तरहकी दाल और मीठे फलोंसे गुल्म-रोगीको परहेज कराना चाहिये। दालोंमें उड़द और कुलथीकी मनाही नहीं है।

गुल्म-रोगमें अगर उर्ध्ववात हो, तो निरूहण करना चाहिये।

अगर गुल्म-रोगमें मल और अधोवात रुके हों, तो समन्दरनोन, अदरख,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आक, सरसों और कालीमिर्च इनको एकत्र पानीके साथ पीसकर, कपड़ेपर लगा-कर, बत्ती बनानी और घी चुपड़कर गुदामें रखनी चाहिये।

(१) हींग, कूट, धनियाँ, हरीतकी—हरड़, निशोथकी जड़, काला-नोन, सैंधानोन, जवाखार और सोंठ—इन सबको समान-समान लेकर पीस-कूट लो। फिर "घी"में भूँजकर महीन कर लो और छानकर रख दो। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। अनुपान—जौका काढ़ा है; यानी चूर्ण खाकर ऊपरसे जौका काढ़ा पीनेसे गुल्म और उसके उपद्रव दूर हो जाते हैं।

(२) तीन माशे सज्जीखार और तीन माशे पुराना गुड़ मिलाकर सेवन करनेसे गुल्म-रोग शान्त हो जाता है।

(३) बच, हरड़, हींग, सैंधानोन, अम्लवेत, जवाखार और अज-वायन—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान—गरम जल है। इससे सात दिनमें शूल सहित गुल्म जड़से नष्ट हो जाता है।

(४) चार माशे शोरा और चार माशे अदरख इनको मिलाकर खानेसे गुल्म नाश हो जाता है।

(५) छै माशे घीग्वारके गूदेमें "घी" मिलाकर, उसपर सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हरड़ और सैंधानोनका बारीक चूर्ण बुरक-बुरककर खानेसे गुल्म नष्ट हो जाता है।

(६) हींग, अम्लवेत, बच, छोटी हरड़, अजवायन, जवाखार, सैंधानोन और बिड़नोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। इसको गरम पानीके साथ खानेसे सब तरहके गुल्म, शूल, मन्दाग्नि और अरुचि-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) सज्जीखार ४ तोले, गुड़ ८ तोले और अजगन्ध—हुलहुल ४ तोले—इनको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको पानीके साथ खानेसे सब तरहके गुल्म और शूल नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) बच २ तोले, हरड़ ३ तोले, बायबिडङ्ग ६ तोले, सोंठ ४ तोले, हींग १ तोले, पीपर ८ तोले, चीता ५ तोले और अजवायन ७ तोले—इनको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णकी मात्रा २ माशेसे ४ माशे तक है। अनुपान—गरम जल या शराब। इससे गुल्म-रोग नाश हो जाता है।

रक्तगुल्म नाशक नुसख़े।

नोट—रक्तगुल्मवाले रोगीको, स्वेदन* और स्नेहन* संस्कार करके, स्नेहयुक्त विरेचन*देना चाहिये। इसके बाद और दवा करनी चाहिये। रक्तगुल्मको गरम दवाओंसे भेदन करना चाहिये। जब भेदन हो जाय, प्रदर नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। अगर गुल्मके फूटनेसे बहुत खून गिरने लगे, तो तत्काल "रक्तपित्त नाशक दवा" देनी चाहिये। अगर वायुकी पीड़ा हो, तो "वात-नाशक" उपाय करना चाहिये। इस रोगमें भारी और अभिष्यन्दी अन्न-पानोंसे अग्नि और बलकी रक्षा करनी चाहिये।

(क) इस गुल्ममें प्रायः दस्तक़ब्ज़की शिकायत रहती ही है, अतः दो या तीन तोले साफ रेंडीका तेल पाव भर गरम दूधमें मिलाकर पिलानेसे विरेचन—जुलाब हो जाता है। यही स्नेहयुक्त विरेचन है और हर किसीको अच्छा है। इससे दो-चार दस्त हो जाते हैं।

(ख) सनाय, हरड़के छिलके, दाख और मिश्री इन चारोंका काढ़ा पिलानेसे भी दस्त हो जाते हैं।

(ग) गुल्म-स्थानपर "नारायण तैल"की मालिश करके कुछ-कुछ गरम काँजीका स्वेद देना चाहिये अथवा अरण्डीके पत्तोंको उबालकर उनका बफारा गुल्मको देना

---

*स्वेदन = बफारा देकर या सेककर पसीने कराना। *स्नेहन = घी-तेल आदि चिकनी चीज़ पिलाकर सूखे कोठेको चिकना करना। *स्नेहयुक्त विरेचन = घी-तेल आदि चिकनी चीज़ मिला हुआ जुलाब। जैसे; किसी दस्तावर काढ़े या दूधमें "रेंडीका तेल" मिलाना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिये। अथवा उड़दके आटेकी रोटी बनाकर और उसे "नारायण तैल"से चुपड़कर गुल्मपर रखकर बाँधनी चाहिये। इन क्रियाओंके बाद नीचेकी दवाएँ सेवन करानी चाहिये।

(१) शतावर, कंजाकी छाल, देवदारु, भारंगी और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। इस चूर्णको दो तोले "काले तिलोंके काढ़ेके साथ" खानेसे रक्तगुल्म नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई शतावरकी जगह सौंफ भी लेते हैं।

(२) भारंगी, सोंठ, मिर्च और पीपर,—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको २ तोले "काले तिलोंके काढ़े"में मिलाकर पीनेसे जवानीके बाद बन्द हुआ आर्त्तव भी जारी हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पुराना गुड़, भारंगी और पीपर—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "काले तिलोंके काढ़ेके साथ" लेनेसे रक्तगुल्म नाश हो जाता है।

(४) गुड़, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, घी और भारंगी—इनके चूर्णको "तिलके काढ़े"में मिलाकर पीनेसे, रज नष्ट होनेसे—मासिक-धर्म बन्द होनेसे या योनिके खूनसे होनेवाला रक्तगुल्म नष्ट हो जाता है।

(५) हर सवेरे, दो तोले आमलोंके रसमें ३ माशे कालीमिर्च मिलाकर पीनेसे रक्तगुल्म नष्ट हो जाता है।

(६) गोरखमुण्डी और बंसलोचन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "मिश्री और शहद"में मिलाकर खानेसे रुधिर सम्बन्धी गुल्मवाली स्त्रीके दोष स्वच्छ हो जाते हैं।

(७) निर्मली, गन्धक, पीपर, हरड़ और अमलताशके फलका गूदा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर इस चूर्णको "थूहरके दूध"के साथ खरल करो और रख लो। इसमेंसे एक माशे चूर्ण "शहद"के साथ चाटनेसे स्त्रीका जलोदर-रोग नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"दही-भात" इसपर पथ्य है। इसपर इमलीके फलका शीतल रस पीना चाहिये। परीक्षित है।

(८) ढाकके खारके पानीके साथ पकाया हुआ "घी" पीनेसे स्त्रियोंका रक्तगुल्म फौरन नाश हो जाता है। इसकी विधि पृष्ठ ५६६-६०० में देखिये। परीक्षित है।

(९) जवाखार, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण ज़रा-से "घी" में मिलाकर पीनेसे रुधिर-स्राव होकर स्त्रियोंका रक्तगुल्म नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) घीग्वारका अर्क़ या घीग्वारका आसव—"कुमार्य्यासव" भी इस रोगमें विशेष हितकर है।

(११) घीग्वारके रसमें ज़रा-सा "नमक, सोंठ, पीपर और काली-मिर्चका चूर्ण" मिलाकर हर दिन नियमके साथ खानेसे रक्तगुल्ममें बहुत लाभ होता है।

(१२) अकेली मुण्डीका काढ़ा या चूर्ण अथवा आसव बनाकर सेवन करनेसे रक्तगुल्म आराम हो जाता है।

समस्त गुल्म नाशक नुसख़े।

हिंग्वादि चूर्ण।

हींग, पीपरामूल, धनियाँ, ज़ीरा, बच, चव्य, चीता, पाढ़, कचूर, तिंतडीक, सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, जवाखार, सज्जीखार, दाड़िम, हरड़, पोहकरमूल, अम्लवेत, हाऊबेर और ज़ीरा—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो। फिर इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूर्णको एक दिन "अदरखके रस"में खरल करके सुखा लो। सूखनेपर फिर "बिजौरे नीबूके रस"में खरल करके सुखा लो। इसीका नाम "हिंग्वादि चूर्ण" है।

यह चूर्ण "अश्विनीकुमार-संहिता"में लिखा है। इसकी मात्रा ३ माशेकी है और अनुपान "गरम जल"है। इसके सेवन करनेसे गुल्म, अफारा, बवासीर, ग्रहणी, उदावर्त्त, प्रत्याध्मान, विष, उदर-रोग, पथरी, दोनों तूनी, अरुचि, उरुस्तम्भ, मनका अत्यन्त भ्रम, बहरापन, अष्ठीलिका, प्रत्यष्ठीलिका तथा हृदय, कोख, वंक्षण, कमर, पेट, पेड़ू, स्तन और पसलियोंके वायु और कफसे हुए दर्द नाश हो जाते हैं।

दूसरा हिंग्वादि चूर्ण।

हींग १ तोले, बच २ तोले, कालानोन ३ तोले, सोंठ ४ तोले, ज़ीरा ५ तोले, हरड़ ६ तोले और कूट १५ तोले—इनको पीस-कूटकर छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण "गरम जल"के साथ खानेसे गुल्म नाश हो जाते हैं।

वज्रक्षार चूर्ण।

समन्दर नोन, सैंधानोन, कचिया नोन, जवाखार, शोरा, सुहागेकी खील और सज्जीखार—इनको समान-समान लेकर पहले तीन दिन तक "थूहरके दूध"में खरल करो और धूपमें सुखा लो। फिर तीन दिन तक "आकके दूध"में खरल करो और धूपमें सुखा लो। इसके बाद इसका गोला-सा बनाकर उसे "आकके पत्तों"में लपेटो और एक हाँडीमें रखकर, हाँडीपर ढक्कन लगाकर मुँह बन्द कर दो। फिर हाँडीको चूल्हेपर रखकर पकाओ और पकनेपर उतार लो।

इसके बाद सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजवायन, ज़ीरा और चीतेकी छाल—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब ऊपरका समन्दरनोन आदिका क्षार जितना लो, उतना ही सोंठ, मिर्च आदिका चूर्ण लो और दोनोंको मिलाकर शीशीमें रख लो। मतलब यह है, अगर पाँच तोले क्षार लो, तो पाँच ही तोले सोंठ आदिका पिसा-छना चूर्ण लो।

इसकी मात्रा १॥ माशेसे ४ माशे तक है। वातज गुल्म-रोगमें इसे गरम जलके साथ लो; पित्तजमें घीके साथ; कफजमें गोमूत्रके साथ; त्रिदोषजमें काँजीके साथ तथा उदावर्त्त, तिल्ली, मन्दाग्नि और सूजन वग़ैरःमें शीतल जलके साथ लो। इसे ब्रह्माने कहा था। इसके सेवन करनेसे अजीर्ण और अजीर्ण सम्बन्धी सब रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

कांकायन गुटिका।

कचूर, पोहकरमूल, दन्तीकी जड़, चीतेकी जड़, अड़हर, अदरख, बच और निशोथ प्रत्येक दवा चार-चार तोले; हींग तीन तोले, सैंधानोन ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सोंठ ८ तोले, अम्लवेत ८ तोले, अजवायन २ तोले, सफेद ज़ीरा २ तोले, कालीमिर्च २ तोले, धनियाँ २ तोले, कोइल २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, अजमोद २ तोले, हरड़ ८ तोले, बायबिडङ्ग ८ तोले और सूखा अनारदाना ८ तोले—इन सबको एकत्र मिलाकर कूट-पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "बिजौरे नीबुओंके रस"में खरल करके छै-छै माशेकी गोलियाँ बना लो।

ये गोलियाँ कांकायन ऋषिकी ईजाद की हुई हैं। इनमेंसे एक-एक गोली सवेरे-शाम और दोपहरको गरम जलके साथ खानेसे गुल्म फूटकर आराम हो जाता है तथा बवासीर, हृदय-रोग, संग्रहणी और कृमि-रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

साधारण अनुपान "गरम पानी" है। वातज गुल्ममें काँजीके साथ; पित्तज गुल्ममें दूधके साथ; कफज गुल्ममें गोमूत्रके साथ; रक्तगुल्ममें गरम दूधके साथ; पुराने गुल्ममें गोमूत्रके साथ; कफ-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातज गुल्ममें शराबके साथ; सन्निपातज गुल्ममें त्रिफलेके काढ़े और गोमूत्रके साथ और स्त्रियोंके रक्तगुल्ममें ऊँटनीके दूध या साधारण गरम दूधके साथ सेवन करना चाहिये।

भारङ्गी षट्पल घृत।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, सोंठ, चीता और जवाखार—इनको चार-चार तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। यही कल्क है। दशमूलका काढ़ा २५६ तोले, अरण्डकी जड़का काढ़ा २५६ तोले, भारङ्गीका काढ़ा २५६ तोले, गायका दूध २५६ तोले और दही २५६ तोले तैयार कर लो।

अब एक क़लईदार कढ़ाहीमें ६४ तोले गायका घी, कल्क या लुगदी और ऊपरके तीनों काढ़े और दूध-दहीको मिलाकर पकाओ। जब पकते-पकते घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस घीके सेवन करनेसे गुल्म, उदर-रोग, अरुचि, भगन्दर, मन्दाग्नि, खाँसी, ज्वर, क्षय, सिरके रोग, संग्रहणी, कफ-वातसे पैदा हुए समस्त रोग और घोर मन्दाग्नि नाश हो जाती है। मात्रा—बलाबल अनुसार ६ माशेसे २ तोले तक।

दन्ती हरीतकी।

एक ढीली पोटलीमें २५ हरड़ बाँध लो। दन्तीकी जड़ १०० तोले और चीतेकी जड़ १०० तोले तथा ऊपरकी पोटली—इन तीनोंको चौंसठ सेर जलमें औटाओ। जब आठ सेर काढ़ा रह जाय, उतारकर "हरड़" अलग निकालकर रख लो और काढ़ा कपड़ेमें छान लो।

अब इस काढ़ेमें निकाली हुई २५ हरड़ और १०० तोले पुराना गुड़ डालकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते कलछीके लगने लगे, इसमें निशोथका पिसा-छना चूर्ण १६ तोले, तिलका तेल १६ तोले, पीपरका चूर्ण १६ तोले और सोंठका चूर्ण १६ तोले मिला दो और नीचे उतार लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब यह शीतल हो जाय, इसमें पुराना शहद १६ तोले, दालचीनीका चूर्ण ५ तोले, तेजपातका चूर्ण २ तोले, इलायचीका चूर्ण २ तोले और नागकेशरका चूर्ण २ तोले मिला दो। यही "दन्ती हरीतकी" है।

इसमेंसे एक हरड़ और ६ माशे गुड़ नित्य खानेसे दस्त होकर गुल्म, तिल्ली, सूजन, बवासीर और हृदय-रोग आदि अनेक रोग आराम हो जाते हैं।

नाराच घृत।

चीतेकी छाल, त्रिफला, दन्तीकी जड़, निशोथकी जड़, कण्टकारी, सेहुँड़का दूध और बायबिड़ङ्ग—प्रत्येक दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर एक सेर घी, लुगदी और चार सेर पानी मिलाकर कढ़ाहीमें डालकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे डेढ़ तोले तक है। इसको गरम पानी या जङ्गली जानवरोंके मांस-रसके साथ सेवन करनेसे वातगुल्म और उदावर्त्त-रोग नाश हो जाते हैं।

बृहत् कालानल रस।

अभ्रकभस्म, लोहभस्म, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध सुहागा, कुटकी, बच, जवाखार, सज्जीखार, सैंधानोन, कूट, त्रिकुटा, देवदारु, तेजपात, इलायची, दालचीनी और खैर—इन सत्रह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर रखो। पहले पारे और गन्धककी घुटाई करके कज्जली बना लो। फिर उसमें अभ्रकभस्म, लोहभस्म और सुहागा मिलाकर खरल करो। पीछे कुटकी आदिको अलग पीस-छानकर इसीमें मिला दो। पीछे इस चूर्णको एक दिन "जयन्तीके रस"में खरल करके सुखा लो। फिर एक दिन "चीतेके काढ़े"में खरल करके सुखा लो और अन्तमें "धतूरेके पत्तोंके रस"में खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। इसकी मात्रा १ से २ गोली तक है। अनुपान—दूध या जल है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सवेरे-शाम, बलाबल अनुसार, एक-एक या दो-दो गोली दूध या जलके साथ निगलनेसे पाँचों तरहके गुल्म, तिल्ली, यकृत, ग्रहणी, पीलिया, सूजन, हलीमक, कामला, रक्तपित्त, जीर्ण ज्वर और विराम ज्वर नाश हो जाते हैं।

पंचानन रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध तूतिया, शुद्ध जमालगोटेके बीज, छोटी पीपर और अमलताशका गूदा—इनको एक-एक तोले ले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करके कजली कर लो। फिर बाक़ी चीज़ें पीस-छानकर उस कजलीमें मिला दो। शेषमें, इस चूर्णको सेहुँड़के दूधमें खरल करके मटर-समान गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। एक-एक गोली आमलोंके रसके साथ निगलनेसे रक्तगुल्म आराम हो जाता है।

पलाशक्षार घृत।

पलाश या ढाकका वृक्ष लाकर सुखा लो। फिर उसे जलाकर राख कर लो। उस राखको एक बासनमें दूना पानी डालकर घोल दो। ६ घण्टे बाद, इस बर्तनका नितरा हुआ पानी दूसरे बर्तनमें धीरेसे छान लो और राखको फैंक दो। फिर एक घण्टे बाद, इस पानीको नितारकर कढ़ाहीमें धीरेसे छान लो। फिर कढ़ाहीको आगपर चढ़ाकर धीरेसे पकाओ। जब सब पानी जल जाय, एक बूँद भी न रहे, तब कढ़ाहीको उतार लो। उसकी पैंदीमें जो पदार्थ लगा हो उसे चाकूसे छुड़ा लो। बस यही "पलाश या ढाकका खार" है।

ढाकका क्षार १ छटाँक, गायका घी १ छटाँक और पानी पाव भर लेकर आगपर पकाओ; जब पकते-पकते फटे हुएके समान झाग आ जायँ अथवा पानी जल जाय, तब घीको पका हुआ समझो। इस घीके पीनेसे रक्तगुल्म निश्चय ही स्रव-स्रवकर नष्ट हो जाता है; यानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस घीके सेवन करनेसे खूनका स्राव होकर—खून गिरकर अत्यन्त पीड़ावाला रक्तगुल्म भी आराम हो जाता है। इस घीमें १ तोला घी सवेरे और १ तोला शामको "मिश्री" मिलाकर खाना चाहिये।

नोट (१)—अगर इस घीसे या अन्य दवाओंसे अधिक खून गिरने लगे और खून गिरनेकी वजहसे कमज़ोरी मालूम हो, तो तत्काल, बिना विलम्ब किये, नीचे लिखी हुई तरकीबोंसे काम लो। इस मौक़ेपर रक्तपित्त या रक्तातिसारकी चिकित्सा काम देती है; क्योंकि ऐसी चिकित्सासे खून बन्द हो जाता है:—

१—कमलकी जड़, कसेरू या सिंघाड़े इनमेंसे किसी एकका चूर्ण बनाकर और उसमें थोड़ी-सी "मिश्री" मिलाकर, शीतल पानी या कच्चे दूधके साथ खानेसे खूनका गिरना फौरन बन्द हो जाता है।

२—ज़रा-सी रसौत "दहीमें मिलाकर" खानेसे खून गिरना तत्काल बन्द हो जाता है।

३—कमल-केशर और नागकेशर दोनों समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "मिश्री और मक्खन" मिलाकर खानेसे रुधिरका गिरना तत्काल बन्द हो जाता है।

नोट (२)—अगर वायुकी वृद्धि मालूम दे, तो वातनाशक "दशमूलादि" दवाओंके साथ "दूध" पकाकर रोगिणीको पिलाना चाहिये। "द्राक्षासव" और "पिप्पल्यासव" भी लाभदायक हैं।

सूचना—यह रोग बड़ी-बड़ी मुश्किलोंसे आराम होता है। अगर इसमें ज़रा-सी भी भूल हो जाती है, तो यह बढ़ जाता और असाध्य हो जाता है; अतः खूब सोच-समझकर इलाज करना चाहिये।

अकबरी चूर्ण—यह चूर्ण बादशाह अकबरके लिये शाही हकीमोंने मिलकर बनाया था। पेटके सारे रोगोंपर यह चूर्ण तीरे हदफकी तरह काम करता है। पुराने-से-पुराने उदर-रोगमें यह अपना काम किये बिना नहीं रहता। इस चूर्णके लगातार सेवन करनेसे गुल्म-रोग, तिल्ली और यकृतकी वृद्धि, मल-मूत्र और अधोवायुका रुकना, खाना हज़म न होना वग़ैरः समस्त रोग निस्सन्देह आराम हो जाते हैं। दाम छोटी शीशीका ॥), बड़ीका १) रुपया।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौदहवाँ अध्याय

प्लीहा-वर्णन ।

संस्कृतमें प्लीहा, अँगरेज़ीमें स्प्लीन और बोलचालकी ज़बानमें तिल्ली कहते हैं।

तिल्ली या प्लीहा एक बड़ा शारीरिक यन्त्र है। यह यन्त्र पेटमें, बाईं तरफ, ऊपरकी ओर रहता है। मामूली हालतमें प्लीहा हाथसे मालूम नहीं होती, किन्तु बढ़नेपर, हाथ लगाते ही, कूखके बाईं तरफ मालूम होती है। इसका आकार सदा एकसा नहीं रहता; खूनकी कमी-बेशीसे इसका आकार घटता-बढ़ता रहता है। साधारणतया इसकी लम्बाई ५ इञ्च, चौड़ाई १ या २ इञ्च, मुटाई ११॥ इञ्च और वज़न तीन या साढ़े तीन छटाँकके क़रीब होता है। बुढ़ापेमें इसकी लम्बाई-चौड़ाई-मुटाई और तोल घट जाती है।

सविराम या कम्पज्वरमें यह बहुत बढ़ जाती है। कभी-कभी यह कई पौण्ड तक हो जाती है। ज्वरके बहुत दिन बने रहनेसे, मलेरिया ज्वर आनेसे अथवा मलेरियाके स्थानमें रहनेसे यह बढ़कर बड़ा कष्ट देती है। प्लीहाके बहुत ही ज़ियादा बढ़ जानेसे रोग कष्टसाध्य और असाध्य हो जाता है।

सभी मनुष्योंके एक तिल्ली रहती है, परन्तु कितनी ही बार एकसे अधिक प्लीहा भी हो जाती हैं। ये प्लीहा छोटी होती हैं और असल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्लीहाके नीचे लगी रहती हैं। इनका आकार मटरसे लेकर अखरोटके बराबर तक होता है।

खाया हुआ अन्न जैसे-जैसे पचता है, वैसे-वैसे प्लीहा बढ़ती रहती है और थोड़ी देरके बाद यह फिर घटने लगती है। जब भोजनका अण्डलाल नामका पदार्थ तिल्लीमें जमा होता है, तब वह बढ़ती है; किन्तु जब वह खूनमें जा मिलता है, तब वह घट जाती है। खूनके सफेद और लाल कण इसी प्लीहासे पैदा होते हैं। आयुर्वेदमें लिखा है—

शोणिताज्जायते प्लीहा वामतो हृदयादधः।
रक्तवाहि शिराणां स मूलं ख्यातो महर्षिभिः॥

बाईं तरफ, हृदयसे नीचे, प्लीहा पैदा होती है। महर्षियोंने कहा है कि, यह खून बहानेवाली नसोंकी मूल है।

प्लीहा वृद्धिके साधारण लक्षण।

यह प्लीहा बाईं पसलीमें बढ़ती है। इसकी वजहसे रोगी अत्यन्त दुःखी रहता है, मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहता है, अग्नि मन्द हो जाती है, पीड़ामें कफ और पित्तके चिह्न नज़र आते हैं, बल घट जाता और शरीर पीला पड़ जाता है।

मतलब यह है कि, तिल्ली बढ़नेसे हल्का-हल्का ज्वर सदा बना रहता है। हर दिन किसी-न-किसी समय ज्वर चढ़ता है अथवा एक दिन बीचमें छोड़कर जाड़ेका ज्वर आता है। तिल्लीकी जगहपर दर्द होता है, जलन होती है, दस्तक़ब्ज़* रहता है, पेशाब लाल या थोड़ा-थोड़ा उतरता है। श्वास, खाँसी, मन्दाग्नि, प्यास, वमन, कमज़ोरी आदि उपद्रव होते हैं, मुँहका स्वाद ख़राब रहता है, आँखें

*तिल्लीके बढ़नेसे आँतोंपर उसका दबाव पड़ता है, इससे दस्तक़ब्ज़ या कोष्ठबद्धता रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और हाथोंकी उँगलियाँ पीली पड़ जाती हैं। आँखोंके सामने अँधेरा आता है और बेहोशी प्रभृति उपद्रव भी होते हैं।

जब प्लीहा बहुत बढ़ जाती है, तब नाक और दाँतोंसे खून गिरता है, खूनकी क़य होती हैं, दाँतोंकी जड़ोंमें घाव हो जाते हैं; पैर, आँख और सारे शरीरमें सूजन आ जाती है, खूनके दस्त लगते हैं तथा पाण्डु, कामला और उदरामय प्रभृतिके लक्षण होते हैं।

(१) प्लीहा और यकृत-रोगीको दो तरहका ज्वर होता है:—(१) वह जो छोड़-छोड़कर आता है। उसमें किसी रोगीको कम्प होता है और किसीको नहीं होता। (२) दूसरा वह जो दिन-रात चढ़ा रहता है। कभी उसका वेग कम हो जाता और कभी बढ़ जाता है। प्रायः सवेरेके समय ज्वर कुछ कम हो जाता है। किसी-किसीको दिन-रात एक-सा ज्वर चढ़ा रहता है। इस तरह ज्वरको भोगते-भोगते, रोगी क्रमशः रक्तहीन होता जाता है। रोग अधिक पुराना होनेपर और अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। किसी-किसीको खाँसी हो जाती है। यद्यपि इस खाँसीसे फेंफड़ेमें किसी तरहकी ख़राबी नहीं होती, तथापि यकृतपर प्लीहाका दबाव पड़नेसे फेंफड़ेमें खूनकी अधिकता होती है। किसी-किसी मनुष्यका अन्तमें, सारा शरीर सूज जाता है। किसी-किसीको रक्तातिसार और प्रवाहिकादि रक्तामाशय सम्बन्धी रोग हो जाते हैं। किन्तु इस रोगका सबसे भयंकर उपसर्ग मुँहमें घाव होना है। मुँहमें घाव होनेसे रोगी प्रायः दुश्चिकित्स्य हो जाता है।

(२) प्लीहा-रोग आराम होनेके बाद भी, अनेक लोगोंके मुँहमें घाव देखे जाते हैं। किसी-किसीके तिल्ली आराम होनेके बाद, एक साल तक, मुखमें घाव रहते हैं। बहुत लोगोंके तिल्ली और यकृत बारहों महीने बढ़े रहते हैं; किन्तु उनको ज्वरादि उपद्रव कुछ भी नहीं होते; पर ऐसे रोगियोंका पेट बहुत बढ़ जाता है। ऐसा तिल्ली रोग तराई, जलाशयोंके पासके स्थानों और मलेरियाके स्थानमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होता है। बहुतसे लोग तिल्ली और यकृतके बढ़नेपर भी हर तरहसे तन्दुरुस्त रहते हैं। उनको पाचन सम्बन्धी भी कोई शिकायत नहीं रहती। हमारे देशके छोटे-छोटे बालकोंकी तिल्ली बहुत बढ़ जाती है—तूम्बा-सा पेट निकल आता है। इसका कारण—उनको ठूँस-ठूँसकर दूध और मीठा खिलाना है।

निदान और सम्प्राप्ति।

कुल्थी, उड़द और सरसोंका साग आदि विदाही पदार्थ और भैंसका दही आदि अभिष्यन्दी पदार्थोंके सेवनसे मनुष्यके "रुधिर और कफ" दूषित हो जाते हैं। रुधिर और कफ अत्यन्त दूषित होकर स्वयं बढ़ते और तिल्लीको बढ़ाते हैं।

डाक्टरीमें लिखा है, ज्वरके अधिक दिनों तक शरीरमें बने रहनेसे, मलेरिया ज्वर आनेसे, मलेरियासे दूषित स्थानमें रहनेसे अथवा मीठे और चिकने भोजनोंसे "खून" बढ़कर तिल्ली बढ़ती है। इसके सिवा, बहुत खाकर तेज़ सवारीपर चढ़ने और कसरत आदि मिहनतके काम करनेसे भी तिल्ली अपनी जगहसे हटकर बढ़ती है।

मलेरिया आदि ज्वरोंमें शरीरमें, कम्प होनेसे, लीहाकी वृद्धि होती है। कहते हैं, शरीरमें बारम्बार कम्प होनेसे, बाहरका खून शरीरके भीतर जाकर, शरीरके सारे यन्त्रमें जमा हो जाता है। उसी खूनसे यकृत और तिल्लीकी वृद्धि होती है। कम्पज्वरमें, शरीरका चमड़ा और बाहरी शिराएँ संकुचित हो जाती हैं। इसलिये उनके ऊपरकी तरफका खून भीतरकी तरफ दौड़ता है और लीहा और यकृतमें इकट्ठा होकर उनको बढ़ाता है। किन्तु और जिन-जिन यन्त्रोंमें खून जाकर इकट्ठा होता है, उनसे अपने-आप जल्दी ही निकल जाता है, इसलिये उनकी वृद्धि नहीं होती। यकृत और तिल्लीकी शिराओंमें रुधिर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बारम्बार संचालित होकर उनके बढ़नेमें मदद करता है, इसलिये वे दोनों यन्त्र स्थायीरूपसे बढ़ते हैं।

कम्प-ज्वरमें ही तिल्ली बढ़ती है, यह बात नहीं है। मलेरियामें, कम्पन होनेपर भी तिल्ली बढ़ती है। मलेरियाके स्थानोंमें रहनेसे भी तिल्ली बढ़ जाती है। ज्वरके कुछ समय तक शरीरमें ठहर जानेसे और नवीन ज्वरमें, चिकित्सा और पथ्यके दोषसे भी, तिल्ली और यकृत बढ़ जाते हैं। अधिक कुनैनके सेवनसे भी यकृत और प्लीहा खराब हो जाते हैं और उनके साथ ज्वर पुराना पड़ जाता है। तरुण ज्वरमें पथ्य देना महा हानिकारक है। इसीसे वैद्य लोग पहले दो-चार लङ्घन कराते हैं; परन्तु डाक्टर लोग ज्वरके आरम्भमें ही पथ्य-पर-पथ्य देते हैं। नये ज्वरमें पथ्य देना, प्लीहा और यकृतकी वृद्धिका प्रधान कारण है। अत्यन्त कुनैनके सेवन करनेसे जो तिल्लीकी वृद्धि होती है, उसके साथ एक प्रकारका विच्छेदी ज्वर होता है, जिसे लोग "कुनैनका ज्वर" कहते हैं।

रुधिरसे हुई प्लीहाके लक्षण।

ग्लानि, भ्रम, दाह, शरीरके रंगका बदल जाना, शरीरमें भारीपन, मोह और रक्तोदर होना ये रुधिरकी प्लीहाके लक्षण हैं।

नोट—रक्ताधिक्य प्लीहामें पित्ताधिक्य प्लीहाके ही लक्षण होते हैं। फ़र्क़ इतना ही है कि, इसमें प्यास उसकी अपेक्षा अधिक लगती है।

पित्तसे हुई प्लीहाके लक्षण।

ज्वर, प्यास, दाह, मोह और विशेषकरके शरीरका पीला हो जाना—ये लक्षण पित्तकी प्लीहामें होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफसे हुई प्लीहाके लक्षण।

अगर प्लीहामें पीड़ा कम हो; वह मोटी, कड़ी और भारी हो तथा अरुचि समेत हो, तो कफकी प्लीहा समझो।

वायुसे हुई प्लीहाके लक्षण।

अगर प्लीहा वायुसे होती है, तो कोठा जकड़ा रहता है; नित्य "उदावर्त्त-रोग"की-सी पीड़ा रहती है और चारों तरफ वेदना होती है।

नोट—वाताधिक्य प्लीहा होनेसे दस्तकी क़ब्ज़ियत ज़ियादा रहती है, वायु ऊपरको चढ़ती है और दर्द अधिक रहता है।

असाध्य लक्षण।

जिस प्लीहा-रोगमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हों, उसे असाध्य समझो।

नोट—आधुनिक ग्रन्थोंमें लिखा है, नाक और दाँतोंसे खून गिरे, खूनकी क़यः हों, गुदासे खून गिरे, खून-मिले दस्त हों, दाँतोंकी जड़ोंमें घाव हों, पैर-आँख और सारे शरीरमें सूजन हो, पाण्डु और कामलाके लक्षण हों—तो आराम होनेकी आशा नहीं करनी चाहिये।

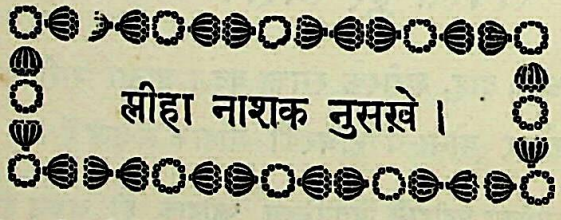

नोट (१)—प्लीहा-चिकित्सामें रोगीका पेट साफ़ रखना चिकित्सकका मुख्य कर्त्तव्य है, अतः पहले यही उपाय करना चाहिये। नई तिल्लीवालेको दस्तावर दवा दे सकते हो, पर पुरानी तिल्लीमें दस्तावर दवा या जुलाब देना बुरा है। इस भूलसे बहुधा "उदरामय-रोग" हो जाता है; जिसका आराम करना कठिन है। अगर भूलसे उदरामय हो ही जाय, तो कोई विषम-ज्वर नाशक ग्राही औषधि देनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट (२)—अगर तिल्ली-रोगके साथ रक्तातिसार, सूजन या पाण्डु-कामला आदि रोग हों, तो उनकी भी दवा तिल्लीकी दवाके साथ देनी चाहिये। अगर तिल्ली-रोगके साथ संग्रहणी-रोग हो, तो रोगीके आराम होनेकी आशा नहीं के समान है।

नोट (३)—अगर तिल्लीवालेको ज्वरका ज़ोर हो, तो ऐसी दवा दो जो तिल्ली और ज्वर दोनोंमें उपकारी हो। अगर ज्वरका बहुत ही ज़ोर हो, तो तिल्लीकी दवा बन्द करके पहले ज्वरकी दवा देनी चाहिये। जब ज्वरका ज़ोर घट जाय, तब फिर तिल्लीकी दवा जारी कर देनी चाहिये।

नोट (४)—अगर तिल्लीमें दर्द बहुत हो, तो दर्द नाश करनेका उपाय ऊपरसे करते रहो। जैसे—गरम जलसे सेक करो अथवा पेटपर कसकर फलालैन बाँध दो।

नोट (५)—अगर मुँहमें छाले हों, तो "कत्था" पीसकर लगाओ; अथवा कोई काढ़ा बनाकर उसके कुल्ले कराओ। चमेलीके पत्ते, गिलोय, जवासा, दारुहल्दी, हरड़, बहेड़ा और आमला इन दवाओंको कुल १ छटाँक भर लेकर १ सेर पानीमें औटाओ; जब आधा सेर पानी रह जाय, छानकर शीतल कर लो और एक छटाँक "शहद" मिलाकर कुल्ले या गरगरे कराओ।

(१) पुराना गुड़ और बड़ी हरड़का चूर्ण समान-समान मिलाकर, बलाबल अनुसार, गरम जलके साथ, फाँकनेसे लीहा और यकृत दोनों आराम हो जाते हैं।

(२) पीपरोंका चूर्ण दूधके साथ खानेसे अथवा गुड़ और पीपरोंका चूर्ण मिलाकर खानेसे अथवा ३।४ पीपर पानीमें पीसकर पीनेसे लीहा-रोग नाश हो जाता है। "पीपर" लीहा-रोगकी अक्सीर दवा है।

(३) बड़ी हरड़ और कालानोन समान-समान मिलाकर खाने और गरम पानी पीनेसे लीहा नाश हो जाती है।

(४) समन्दरकी सीपीकी भस्म दूधके साथ खानेसे तिल्ली-रोग नाश हो जाता है।

(५) सैंधानोन पानीके साथ महीन पीसकर "आकके पीले-पीले पत्तोंपर" लेप दो और उन्हें छायामें सुखा लो। फिर सूखे हुए पत्तोंको एक हाँडीमें भरकर, हाँडीका मुँह ढक्कनसे बन्द कर दो और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्धों तथा सारी हाँडीपर मज़बूत कपरौटी कर दो। कपरौटी चार-पाँच से कम न करना। जब हाँडी सूख जाय, उसे गज़ भर गहरे और उतने ही चौड़े-लम्बे खड्डे में रखकर, आरने कण्डोंसे फूँक दो। जब आग शीतल हो जाय, हाँडीको निकाल लो और कपरौटी खोलकर भीतरसे दवा निकालकर किसी शीशीमें भर दो। इसमेंसे एक या दो माशे दवा "शहद"में मिलाकर चाटनेसे अथवा दहीके पानी या तोड़में घोलकर पीनेसे सब तरहका प्लीहा-रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) आध पाव "पीपर" किसी काँचके बासनमें रख दो। ऊपरसे ढाकके खारका पानी इतना भर दो कि, पीपर डूब जावें। फिर उस बर्तनको छायामें रक्खा रहने दो। जब वह पानी सूख जाय, उसमें फिर ढाकके* खारका पानी भर दो और सूखने दो। इस तरह सात बार करो; जब सातवीं बारका भी पानी सूख जाय, पीपरोंको पीस-छानकर रख दो। इसमेंसे एक या दो माशे पीपरोंका यही चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे प्लीहा, मन्दाग्नि और गुल्म-रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) शंखकी नाभिकी भस्म ४ या ६ माशे—दो तोले बिजौरे नीबूके रसके साथ, नित्य, खानेसे कछुएके आकारकी भयंकर तिल्ली भी कट जाती है। परीक्षित है।

शरफोंकेकी जड़ ४ माशेसे ६ माशे तक, खूब महीन पीसकर और गायकी छाछमें मिलाकर, ३१ दिन तक, पीनेसे बड़ी-से-बड़ी, पुरानी और वैद्योंसे त्यागी हुई प्लीहा भी नाश हो जाती है। आत्रेयजी कहते हैं, जिस तरह पानीपर पत्थर तैरना असम्भव है, उसी तरह इस दवासे तिल्लीका आराम न होना असम्भव है। परीक्षित है।

* ढाकके खारकी विधिके लिए इसी भागके पृष्ठ ५९९—६०० देखो। खारको पानीमें घोल देनेसे खारका पानी बन जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) ख़ूब पके हुए आमोंका रस "शहद"में मिलाकर पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है, इसमें ज़रा भी शक नहीं।

(९) सेमलके पेड़के फूल रातमें उबालकर रख देने और सवेरे ही उन्हें "राईके चूर्ण"के साथ खानेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(१०) अजवायन, चीतेकी जड़, जवाखार, पीपरामूल, दन्ती और पीपर—बराबर बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ या ६ माशे चूर्ण, गरम जल या शराबके साथ, खानेसे तिल्ली-रोग नष्ट हो जाता है।

(११) हींग, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, कूट, जवाखार और सैंधा-नोन—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ या ६ माशे चूर्ण, बिजौरे नीबूके रसके साथ, खानेसे तिल्ली-रोग नष्ट हो जाता है।

(१२) सत्यानाशी कटेरी लाकर सिलपर पीसो और कपड़ेमें निचोड़कर स्वरस निकाल लो। यह स्वरस १ तोले और शहद १ तोले, दोनोंको मिलाकर मथो और नित्य पीओ। इससे घोर प्लीहा-रोग भी नष्ट हो जाता है। यह नुसख़ा फेल नहीं होता। कम-से-कम १४ रोज़ तक तो पी देखो। परीक्षित है।

(१३) चीतेकी जड़को पानीमें पीसकर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंमेंसे २।३ गोली "पके हुए केलेकी गहर"में भर-कर खानेसे तिल्ली-रोग चला जाता है।

(१४) समन्दरफेन और मिश्री—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे एक तोले चूर्ण सवेरे ही कोरे कलेजे खाकर ऊपरसे "पानी" पीनेसे तिल्ली-रोग निश्चय ही नाश हो जाता है।

(१५) आकके पत्तोंका चूर्ण "पुराने गुड़"में मिलाकर खानेसे तिल्ली-रोग नष्ट हो जाता है।

(१६) बथुएके ५ तोले स्वरसमें "साँभर नमक" १ माशे पीसकर मिला दो। पहले ग्यारह भुने हुए चने मुँहमें रखकर और होठ बन्द

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करके खूब चबाओ—खाओ मत। इन चनोंकी सौंधी-सौंधी गन्धसे लरक अपना मुँह खोल देती है। आप चनोंको थूककर, बिना एक पलकी भी देर किये, वही तैयार रखा हुआ बथुएका स्वरस पीलो। अगर चने थूककर देरसे रस पीओगे, तो लरक मुँह बन्द कर लेगी और आपका बथुएका रस पीना बेकार हो जायगा। इस उपायसे तिल्ली अवश्य आराम हो जाती है, पर फुर्तीकी जरूरत है।

(१७) लहसन, पीपरामूल और हरड़ खाकर "गोमूत्र" पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(१८) सेमरके फूलोंको रातमें भिगोकर, सवेरे ही "कुटकीका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे तिल्ली-रोग नाश हो जाता है।

(१९) चव्यके काढ़ेमें "चित्रकका चूर्ण" मिलाकर सवेरे ही पीनेसे, सम्पूर्ण उदर-रोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं।

(२०) पाँचों नमक लेकर पीस लो। फिर नमकोंके चूर्णको "थूहरके दूध"में सात दिन तक और "आकके दूध"में सात दिन तक खरल करो और हर दिन सुखाओ। इसके बाद उस सूखे हुए चूर्णको थूहरके पोले डण्डेमें भरकर, पुटपाककी विधिसे, ६ घण्टे तक पकाओ। आग शीतल होनेपर, निकालकर रख लो। इसमेंसे १ तोले चूर्ण हर दिन सवेरे ही खानेसे आठ तरहके उदर-रोग, पाँच तरहके गुल्म, शूल, हैजा, सूजन और प्रतितूनी नामक वात-रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—खरल करते समय, हर दिन थूहर और आकका दूध ताज़ा देना और चूर्णको छायामें सुखाना। थूहरके डंडेमें चूर्ण भरकर, ऊपरसे बड़ या जामुनके पत्ते लपेटो और ऊपरसे एक अंगुल मोटा मिट्टीका लेप करो। फिर उसे धूपमें सुखाकर, जंगली कण्डोंकी आगमें पकाओ, जब वह अंगारके समान लाल हो जाय, ६ घण्टे तक पक ले, निकाल लो। यही पुटपाक विधि है।

(२१) बाँझककोड़ेकी सूखी जड़ ६ माशे, शहद १ तोला और कालीमिर्च पाँच नग—इनको पीसकर मिला लो। यह १ मात्रा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इसको दिनमें एक बार नित्य पानीके साथ खानेसे तिल्ली और खून-विकार १ हफ्तेमें आराम हो जाते हैं।

(२२) नौसादर ३ रत्तीसे ५ रत्ती तक "पके हुए पपीते"में मिला-कर खानेसे तिल्ली गल जाती है।

(२३) शंखकी भस्म ४ रत्ती और मण्डूर-भस्म १ रत्ती—दोनोंको मिलाकर "नीबूके रस" के साथ सेवन करनेसे प्लीहा और यकृत-पीड़ा शान्त हो जाती है।

नोट—कौड़ीकी भस्म या मोतीकी सीपकी भस्म चार रत्ती और मंडूर-भस्म एक रत्ती मिलाकर नीबूके रसके साथ खानेसे भी तिल्ली गल जाती है।

(२४) एक छटाँक छोटी पीपर आध सेर गायके दूधमें सात दिन तक भिगोओ और फिर छायामें सुखा लो। हर दिन पहलेका दूध निकाल फैंको और ताज़ा दूध भर दो। जब सातवें दिन दूध डाल चुको; आठवें दिन पीपरोंको सुखा दो। पीछे इनको पीस-छानकर रख लो। इसमेंसे एक-एक माशे चूर्ण सवेरे ही और दोपहरके भोजनके बाद, छै-छै माशे "शहद"में मिलाकर चाटनेसे तिल्लीकी सख्ती और उसका बढ़ना आराम हो जाता है। साधारण तिल्लीमें यह नुसखा अच्छा काम देता है। परीक्षित है।

(२५) शङ्खभस्म २ रत्ती, कौड़ीकी भस्म १ रत्ती और मोतीकी सीप-की भस्म १ रत्ती—इन तीनोंको मिलाकर,सवेरे-शाम,गायके थोड़े-से"गरम दूध" के साथ खानेसे बढ़ी हुई तिल्ली घटने लगती है। परीक्षित है।

(२६) मूलीका खार, बैंगनका खार, जवाखार और सज्जीखार—इन सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ रत्ती सवेरे और ६ रत्ती शामको, एक-एक तोले "मूलीके रस"में मिलाकर, खानेसे प्लीहाका बढ़ना रुक जाता है। परीक्षित है।

(२७) आकके पत्तोंको हाँडीमें रखकर, उनपर थोड़ा सैंधानोन बिछा दो और ऊपरसे फिर आकके पत्ते बिछा दो। हाँडीका मुख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बन्द करके, हाँड़ीको आगमें पकाओ। पीछे पत्तोंको निकालकर पीस लो। इसमेंसे ४ रत्ती सवेरे और ४ रत्ती शामको "दहीके तोड़" के साथ खानेसे तिल्ली-रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(२८) दो तोले सहँजनेकी जड़की छालको डेढ़ पाव पानीमें पकाओ। जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, उतारकर छान लो। इस काढ़ेमें २ रत्ती पीपलका चूर्ण, २ रत्ती चीतेकी जड़का चूर्ण और १ माशे सैंधानोन मिला दो। इसमेंसे आधा सवेरे और आधा शामको पी लो। इससे तिल्लीकी सख्ती और बढ़ना आराम होता है। तिल्लीके नरम होते ही दवाको छोड़ दो—फिर मत खाओ। अत्युत्तम नुसख़ा है।

(२९) दारुहल्दी १ तोला, कुटकी ४ माशे, गिलोय ४ माशे और सफेद पुनर्नवा ४ माशे लेकर, डेढ़ पाव पानीमें औटाओ। जब डेढ़ छटाँक जल रह जाय, उतारकर छान लो और शीतल हो जानेपर ६ माशे "शहद" डालकर पीलो। इस तरह सवेरे-शाम, दोनों समय, इस काढ़ेके पीनेसे ऐसे रोगी आराम हो गये हैं, जिनकी तिल्ली बहुत ही बढ़ गई थी, पेट ढोल हो गया था, हाथ-पैरों वग़ैरः अङ्गोंमें सूजन आ गई थी अथवा सारा शरीर सूज गया था, शरीर पीला हो गया था, भूख एकदम मारी गई थी, दस्त साफ न होता था—हरदम क़ब्ज़ बना रहता था, शरीरमें ज्वर सूक्ष्म रूपसे आठ पहर बना रहता था अथवा समयपर उतर जाता था और फिर बड़े ज़ोरसे चढ़ता था और जिन्होंने कुनैन-मिश्रित ज्वर नाशक उग्र औषधियाँ सेवन कर ली थीं। हमने इस नुसख़ेको धीरज दिला-दिलाकर जिन्हें भी पिलाया, उन्हें ही पूरा लाभ हुआ। लेकिन उन्हें लाभ न हुआ, जो चट रोटी पट दाल चाहते थे और जिनको दवाएँ शीघ्र-शीघ्र बदलनेकी आदत-सी हो गई थी। इसमें शक नहीं कि, जो इस काढ़ेको धीरज और विश्वासके साथ खाते हैं उनकी जान बच जाती है। सुपरीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इस नुसख़ेकी जान "दारुहल्दी" है। वह शीतज्वर और तिल्ली बढ़नेमें अपूर्व काम करती है। वह तिल्ली और आँतोंको संकुचित करती है यानी तिल्लीको बढ़ने नहीं देती है। कुनैनमें दोष हैं। उससे आदमी बहरा हो जाता है, कम सुनता है, कानोंमें सनसनाहट होती और सिर घूमता है। इसी तरह और भी उपद्रव होते हैं। उसके बहुत दिनों तक सेवन करनेसे पुरुष नपुंसक हो जाता है। वह चढ़े ज्वरमें दी नहीं जा सकती। उसका आमाशय, पक्वाशय और दिमाग़पर बुरा असर होता है; पर दारुहल्दी चढ़े ज्वरमें बेखटके दी जा सकती है। इसके सेवन करनेसे ज्वरका ज़ोर घट जाता है। ज्वरके उतर जानेपर, अगले दिन, हल्की मात्रामें, दिनमें ४।५ बार दारुहल्दी देनेसे ज्वर क़तई रुक जाता है। इससे कुनैनकी तरह कोई ख़राबी नहीं होती, अतः वैद्यों और गृहस्थोंको, कम-से-कम ग़रीबोंके उपकारार्थ, शीतज्वर और तिल्लीके मार भगानेके लिये, दारुहल्दी या दारुहल्दीके मेलसे बने हुए नुसख़े काममें लाने चाहिये। दारुहल्दीसे पुराना प्रमेह, व्रण, कामला, नेत्र-पीड़ा, मासिकधर्मके समयकी पीड़ा, गर्भाशय सम्बन्धी विकार आराम हो जाते हैं और बिगड़ा हुआ ख़ून साफ होता है। दारुहल्दी और त्रिफला तोले-तोले भर लेकर, काढ़ा बनाने और ४ माशे "शहद" डालकर पीनेसे प्रमेह—ख़ासकर पुराना प्रमेह आराम हो जाता है।

(३०) सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और सहँजनेकी छाल—इनको दो-दो माशे लेकर आठ तोले जलमें पकाओ। जब दो तोले पानी रह जाय, इसमें आधा माशे "सैंधानोन" डालकर पीलो। इस काढ़ेके कुछ दिन पीनेसे तिल्ली गलने लगती है।

(३१) अजवायन, चीतेकी जड़की छाल, बायविड़ङ्ग और बच—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार माशे चूर्ण सवेरे और ४ माशे शामको "माठे"के साथ पीनेसे तिल्लीकी सख़्ती दूर हो जाती है।

(३२) शरफोंके और मुण्डीके रसमें या काढ़ेमें ज़रा-सा "शहद" मिलाकर पिलानेसे बालकोंकी तिल्ली घट जाती है।

(३३) हल्दी २० तोले, सैंधानोन २० तोले और घीग्वारका रस अस्सी तोले—इन सबको मिलाकर एक मिट्टीकी हाँडीमें रख दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसमेंसे ६ माशे दोपहरके भोजनके बाद और ६ माशे रातके भोजनके बाद खानेसे अत्यन्त बढ़ी हुई तिल्ली भी ठीक हो जाती है।

(३४) शंखका चूर्ण ४ तोला, सीपका चूर्ण ४ तोला, शुद्ध आमलासार गन्धकका चूर्ण ४ तोला, शुद्ध मण्डूर ४ तोला, सुहागा भुना ४ तोला, नौसादर ४ तोला, साँभरनोन ४ तोला, सोंठका चूर्ण ४ तोला, पीपरोंका चूर्ण ४ तोला, चीतेका चूर्ण ४ तोला और अजवायनका चूर्ण ४ तोला—इन सबको एकत्र पीसकर, एक सेर "जम्भीरी नीबूके रस"में मिलाकर मज़बूत बोतलोंमें भर दो और उन बोतलोंको ज़मीनमें गाड़ दो। १४ दिन बाद निकालकर रख लो। इसमेंसे चार-चार माशे दवा भोजनके बाद, दिनमें २ या ३ दफा, खानेसे तिल्ली, गोला, शूल और अजीर्ण आदि रोग नाश हो जाते हैं। बड़ी अच्छी चीज़ है। वैद्योंके सिवा हर गृहस्थको भी बनाकर रखनी चाहिये। परीक्षित है।

(३५) छोटी पीपर गुलाबके अर्क़ या सौंफके अर्क़में अथवा शीतल जलमें घिसकर पिलानेसे बच्चोंकी तिल्ली गल जाती है।

(३६) पीपरको दूधमें पकाकर, वही दूध बालकको पिलानेसे तिल्ली-रोग जाता रहता है।

(३७) रविवारके दिन बाँझककोड़ेकी गाँठ लाकर, रोगीके पास, चूल्हेपर बाँध दो। ज्यों-ज्यों गाँठ सूखती जायगी, त्यों-त्यों तिल्ली घटती जायगी। यह नुसख़ा परमोत्तम है।

(३८) छै रत्ती चीतेका क्षार ६ माशे "शहद"में मिलाकर चाटनेसे यकृत और प्लीहोदर आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्लीहा-नाशक उत्तमोत्तम योग ।

वज्रक्षार चूर्ण ।

संचरनोन, जवाखार, समुद्रनोन, कचलोन, सैंधानोन, सुहागा और सज्जी—इन सबको बराबर-बराबर दो-दो तोले लेकर पीस-कूट लो।

इस चूर्णको मन्दारके दूधमें तीन दिन तक खरल करो। हर दिन खरल करके धूपमें सुखाते रहो। जब तीन दिन तक मदारके दूधमें खरल हो ले, फिर तीन दिन तक सेहुँड़के दूधमें खरल करो और नित्य धूपमें सुखाओ। अब इस चूर्णको तोलो। जितना यह चूर्ण हो, उतने ही आक या मदारके पत्ते ले लो। एक हाँडीमें नीचे कुछ आकके पत्ते रखो। पत्तोंपर ऊपरका चूर्ण रखो। चूर्णपर फिर पत्ते रखो, पत्तोंपर फिर चूर्ण। इस तरह तह जमाकर, हाँडीपर ढक्कन देकर, तीन कपरौटी करो और हाँडीको सुखा लो। जब हाँडी सूख जाय, उसे गज़ भर गहरे-लम्बे-चौड़े गढ़ेमें, जंगली कण्डोंके बीचमें रखकर फूँक दो। जब आग शीतल हो जाय, हाँडीको निकाल लो। इसके बाद कपरौटी खोलकर, भीतरसे दवाको निकाल लो।

अब जितनी दवा हाँडीसे निकले, उतनी ही नीचेकी दवाएँ बराबर-बराबर लेकर पीसो-छानो और उसमें मिला दो। वे दवाएँ ये हैं—सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, बायबिड़ङ्ग, राई, हरड़, आमले, बहेड़े, चव्य और भुनी हींग। मतलब यह कि हाँडीका क्षार १५ तोले हो तो ये दसों दवाएँ डेढ़-डेढ़ तोले लेकर १५ तोले कर लो और सबको मिला लो। यही "वज्रक्षार चूर्ण" है।

इस चूर्णको माठेके साथ पीनेसे सब तरहके उदर-रोग, गुल्म, अष्ठीला, मन्दाग्नि, अरुचि, तिल्ली और यकृत आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हिंग्वादि चूर्ण।

भुनी हींग, सोंठ, मिर्च, पीपर, कूट, जवाखार और सैंधानोन—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण "बिजौरे नीबूके रस"के साथ खानेसे पुरानी तिल्ली और शूल-रोग नाश हो जाते हैं; पर यह चूर्ण कुछ दिन लगातार खाना चाहिये। परीक्षित है।

अभया लवण।

नीमकी छाल, ढाककी छाल, कुड़ाकी छाल, आक, थूहर, चिरचिरा, चीता, वरना, अरणी, बथुआ, गोखरू, कटेरी, कटाई, दुर्गन्ध करंज, कोइली—हाफरमाली, कड़वी तोरई और पुनर्नवा—इन सब वृक्षोंका पञ्चाङ्ग लेकर ओखलीमें कूट लो और एक हाँडीमें रखकर ढकना बन्द कर दो। फिर हाँडीको चूल्हेपर रखकर, नीचे तिलकी लकड़ियाँ जलाओ। जब राख हो जाय, उतार लो और भीतरसे राखको निकाल लो।

इसमेंसे एक सेर राख लेकर बत्तीस सेर पानीमें औटाओ; जब आठ सेर पानी रह जाय, उतारकर, क्रमशः २१ बार छान लो।

इस क्षार-जलको फिर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। इसे पकनेको रखते ही इसमें सैंधानोन १ सेर, बड़ी हरड़का चूर्ण आध सेर और गोमूत्र ८ सेर मिला दो और पकने दो। जब यह गाढ़ा होनेपर आवे, इसमें काला जीरा २ तोले, त्रिकुटा २ तोले, हींग २ तोले, अजवायन २ तोले, कूट २ तोले और कचूर २ तोले—पीस-छानकर मिला दो।

इसमेंसे ६ माशे लवण गरम जलके साथ खिलानेसे तिल्ली, गुल्म, आनाह, अष्ठीला और मन्दाग्नि, प्रतितूनी और शर्करा समेत पथरी रोग नाश हो जाते हैं।

गुड़ पिप्पली।

बायबिड़ङ्ग, त्रिकुटा, कूट, हींग, पाँचों नमक, जवाखार, सज्जीखार, भुना सुहागा, समन्दरफेन, चीतेकी जड़की छाल, गजपीपर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काला जीरा, ताड़की जटाकी भस्म, कुम्हड़ेकी डालीकी भस्म, चिरचिरेकी भस्म और इमलीकी छालकी भस्म—ये सब बराबर-बराबर एक-एक तोले लो और सबके वज़नकी बराबर—१६ तोले—पीपरोंका चूर्ण लो। इनको कूट-पीसकर छान लो। इस सारे चूर्णकी तोलकी बराबर—३२ तोले—पुराना गुड़ लो। फिर सबको एकत्र मिला लो। यही "गुड़ पिप्पली" है। इसकी मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम पानी है। इसके सेवन करनेसे तिल्ली रोगमें अवश्य लाभ होता है। बड़ी अच्छी औषधि है।

दूसरा वज्रक्षार।

समन्दर नोन, सैंधानोन, साँभरनोन, सौवर्च्चलनोन, सुहागा, जवाखार और सज्जीखार बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर इस चूर्णको ३ दिन तक "आकके दूध"में खरल करो। हर दिन खरल करो और सुखा लो, सूखनेपर फिर खरल करो। इसी तरह तीन दिन तक "थूहरके दूध"में खरल करो और सुखाओ।

शेषमें, खरल किये हुए चूर्णको ताम्बेके बर्तनमें रखकर और मुँह बन्द करके फूँक लो। फिर जितना यह फुका हुआ चूर्ण हो, उससे दूना त्रिकुटा, जीरा, हल्दी और चीतेकी छालका पिसा-छना चूर्ण इसमें मिला दो। यही "वज्रक्षार" है। इसकी मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक है। अनुपान—गरम जल या गो-मूत्र है। इसके सेवन करनेसे यकृत और तिल्ली-रोग नाश हो जाते हैं।

वृहत् लोकनाथ रस।

शुद्ध पारा २ तोले और शुद्ध गन्धक ४ तोलेको मिलाकर ६ घण्टे तक खरल करो। जब कज्जली काजल-सी हो जाय और चमक न रहे, उसमें दो तोले "निश्चन्द्र अभ्रक-भस्म" मिला दो और "धीग्वार-का रस" डालकर खरल करो। इसके बाद, उसमें ताम्बा-भस्म ४ तोले,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लोहा-भस्म ४ तोले और कौड़ीकी भस्म १८ तोले भी मिला दो और "काकमाचीका रस" डाल-डालकर खरल करो। फिर एक गोला-सा बनाकर सुखा लो। फिर उसे एक सरावेमें रखकर ऊपरसे दूसरा सरावा ढक दो। फिर कपरौटी करके सुखा लो। इसके बाद, सरावोंको गज भर गहरे-लम्बे-चौड़े गढ़ेमें, आरने कण्डोंके बीचमें, रखकर फूँक दो। आग शीतल होनेपर, रसको निकालकर शीशीमें रख दो। इस रसके सेवन करनेसे तिल्ली और यकृत-रोग आराम हो जाते हैं। मात्रा २ रत्तीकी है। अनुपान—शहद है। मतलब यह है कि, २ रत्ती रस ६ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे तिल्ली वग़ैरः रोग आराम हो जाते हैं।

पथ्यादि काढ़ा।

जंगी हरड़ और रक्त-रोहिड़ाकी छाल—इन दोनोंको एक-एक तोले लेकर, डेढ़ पाव जलमें औटाओ; जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, उतारकर छान लो। फिर उसमें १ माशे पीपरका चूर्ण और १ माशे जवाखार मिलाकर सवेरे ही पीनेसे यकृत और प्लीहा तथा गुल्मोदर रोग आराम हो जाते हैं। "शार्ङ्गधर"का यह काढ़ा बहुत ही उत्तम है, इसीसे लिखा है। परीक्षित है।

लवणत्रितयादि चूर्ण।

सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, सज्जीखार, जवाखार, सौंफ, कलौंजी, बच, अजमोद, बनतुलसी, हाऊबेर, सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, कालीमिर्च, पीपरामूल, पीपर, गजपीपर, भुनी हींग, हिंगु-पत्री, कचूर, पाढ़, छोटी इलायची, सोंठ, चव्य, चीतेकी छाल, बायबिड़ङ्ग, अम्लवेत, अनारदाना, तंतडीक, निशोथ, दन्ती, शतावर, इन्द्रायणका गूदा, भारङ्गी, देवदारु, अजवायन, धनियाँ, चिरफल, पोहकरमूल, बेर और छोटी हरड़—इन ४१ दवाओंको एक-एक तोले बराबर-बराबर लेकर पीस-कूटकर छान लो। फिर इस चूर्णको एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दिन तक "अदरखके रस" में खरल करो और सुखा लो। इसके बाद एक दिन तक "बिजौरे नीवूके रस"में खरल करो और सुखा लो।

इस चूर्णको पुरानी शराब, गरम जल, बेरके काढ़े, गायके माठे, ऊँटनीके दूध या दहीके पानीके साथ खानेसे तापतिल्ली, कलेजेका रोग, कमरका दर्द, गुदाके रोग, कूखका दर्द, हृदय-रोग, बवासीर, मलकी रुकावट, मन्दाग्नि, गोला, अष्ठीला, उदर-रोग, हिचकी, अफारा, श्वास और खाँसी-रोग नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ६ माशेकी है।

नोट—इस चूर्णकी दवाओंका काढ़ा बनाकर, काढ़ेके साथ घी पका लेनेसे जो घी तैयार होता है, उसके खानेसे भी ऊपरके सब रोग नाश हो जाते हैं। एक-एक तोले दवा लेकर जौकुट कर लो। फिर आठ सेर पानीमें डालकर औटाओ; जब दो सेर पानी रह जाय, काढ़ा छान लो। फिर आध सेर गायका घी और दो सेर काढ़ा मिलाकर क़लईदार कढ़ाहीमें पकाओ। घी-मात्र रह जानेपर उतारकर छान लो। अगर यह घी और चूर्ण दोनों ही साथ-साथ सेवन किये जायें, तो बहुत जल्दी तिल्ली वग़ैरः नष्ट हो जायँ। हमने दोनों ही देकर परीक्षा की है। हम चूर्ण सवेरे-शाम और घी भोजनके साथ खिलाते थे।

चित्रकाद्य घृत।

अढ़ाई सेर चीतेकी छालको जौकुट करके २० सेर पानीमें औटाओ। जब पाँच सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, तालीसपत्र, जवाखार, सज्जीखार, सैंधानोन, अजवायन, ज़ीरा, काला ज़ीरा और कालीमिर्च—इनको एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

गायका घी १ सेर, चीतेका काढ़ा ५ सेर, काँजी २॥ सेर, दहीका तोड़ ५ सेर और ऊपरकी लुगदी सबको मिलाकर, घीको मन्दाग्निसे पका लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १॥ तोले तक है। इस घीसे प्लीहा, यकृत, पाण्डु-रोग, अरुचि और शूल-रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस घीके बनानेकी विधिमें मतभेद है। हम जिस तरह बनाते हैं, उस तरह लिख दिया है। यह तरकीब आज़मूदा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यवान्यादि चूर्ण।

अजवायन, चीता, जवाखार, बच, दन्ती और पीपर—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसको गरम जल, दहीके तोड़, पुरानी मदिरा या आसवके साथ खानेसे तिल्ली गल जाती है।

बिडंगादि चूर्ण।

बायबिडङ्ग १ तोले, चीता १ तोले और देवदारु २ तोले—इन सबको पीस-छानकर रख लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसे "गोमूत्र"के साथ खानेसे अत्यन्त बढ़ी हुई तिल्ली भी नाश हो जाती है।

अभया वटक।

बड़ी हरड़ और त्रिफला १२ तोले, त्रिकुटा ४ तोले, अजवायन २ तोले, चव्य २ तोले, चीता २ तोले, बायबिडङ्ग २ तोले, विषांबिल २ तोले, सैंधानोन २ तोले, बच २ तोले, दालचीनी १ तोले, छोटी इलायची १ तोले और तेजपात १ तोले—इन सबको पीसकर छान लो। फिर इस चूर्णमें १२० तोले उत्तम "पुराना गुड़" मिलाकर एक-एक तोलेके बड़े या गोले बना लो। यही "अभया वटक" हैं। इनके सेवन करनेसे तिल्ली, बवासीर, गुल्म, उदररोग, पाण्डुरोग, कामला और मन्दाग्नि—ये रोग नाश हो जाते हैं।

अग्निमुख लवण।

चीता २ तोले, निशोथ २ तोले, दन्ती २ तोले, त्रिफला २ तोले, पोहकरमूल २ तोले और सैंधानोन सबकी बराबर १० तोले लेकर पीस लो। इस चूर्णको एक दिन "थूहरके दूध"में खरल करके सुखा लो।

फिर एक थूहरका मोटा डण्डा लेकर उसे पोला कर लो। उस पोलमें चूर्णको भरकर उसका मुख बन्द कर दो और ऊपरसे बड़के पत्ते लपेटकर मिट्टीसे लेहेस दो। मिट्टीका लेप दो-दो अंगुलसे कम मोटा न

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रहे। इसके बाद इसे सुखा लो और जंगली कण्डोंके बीचमें रखकर फूँक दो। जब डण्डा अंगारके समान लाल हो जाय, आगसे निकाल लो। फिर शीतल होनेपर, डंडेके भीतरसे चूर्णको निकाल लो।

इस "अग्नि मुख लवण"से अग्नि दीपन होती है तथा यकृत, प्लीहा, तिल्ली, उदररोग, अफारा, गुल्म, पाण्डुरोग और बवासीर-रोग नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। बलाबलका विचार करके कम-ज़ियादा भी दे सकते हो। इन रोगोंपर यह लवण रामबाण है।

माणादि बटिका।

मानकन्द, चिरचिरेकी जड़की राख, गिलोय, अड़ूसेकी जड़, शालपर्णी, चीता, सैंधानोन, सोंठ और ताड़की जटाका क्षार ये सब तीन-तीन तोले लो; विरियासंचरनोन, कालानोन, जवाखार, सज्जीखार और पीपर—ये सब एक-एक तोले लो। फिर सबको मिलाकर पीस-छान लो। इस चूर्णको १६ सेर गोमूत्रमें मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब काढ़ा गाढ़ा होनेपर आवे और गोली बनाने लायक़ हो जाय, उतारकर शीतल कर लो। शीतल होनेपर, इसमें १२ तोले "शहद" डालकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे तिल्ली, यकृत, उदर-रोग, गुल्म, बवासीर और संग्रहणी-रोग नाश हो जाते हैं। इसकी मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम पानी है।

नोट—मानकन्द एक सालका पुराना लेना चाहिये।

वृहत् माणादि गुटिका।

एक सालका पुराना मानकन्द, चिरचिरेका क्षार, शालपर्णी, चीता, थूहरकी जड़, सोंठ, सैंधानोन, ताड़की जटाका क्षार, बायबिड़ङ्ग, हाऊबेर, चव्य, बच, कालानोन, सौवर्चलनोन, जवाखार, पीपर, शरफोंका, ज़ीरा और पालिधामदारकी जड़—ये सब चार-चार तोले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेकर जौकुट कर लो और १६ सेर गोमूत्रमें मिलाकर पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय, इसमें त्रिकुटा, हींग, अजवायन, कूट, कचूर, निशोथ, दन्तीकी जड़ और इन्द्रायणकी जड़मेंसे हरेकका दो-दो तोले पिसा-छना चूर्ण मिला दो और उतार लो। जब शीतल हो जाय, इसमें चौबीस तोले "शहद" मिला दो और छै-छै माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको सवेरे-शाम गरम पानीके साथ खानेसे तिल्ली, यकृत, गुल्म और पेटके रोग नाश हो जाते हैं।

तिल्ली-रोग पर हकीमी नुसख़े।

(१) दाहने हाथकी रग असलीम पर, कपड़ेकी बत्ती जलाकर दाग देने और कुछ समय तक वहाँसे मवाद बहने देनेसे तिल्ली-रोगमें लाभ होता है।

(२) एलुआ, हींग, सुहागा, नौसादर, सफेद सज्जी,—बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीसकर, "घीग्वारके लुआब" में खरल करके, जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। एक गोली नित्य सवेरे ही खाते रहनेसे तिल्ली नाश हो जाती है।

(३) कालीमिर्च, छोटी पीपर, भुनी फिटकरी, नौसादर, भुना सुहागा, अजवायन, कटाई, खारीनोन, लाहौरीनोन, आँवाहल्दी और जवाखार—बराबर-बराबर लेकर, कूट-छानकर, पानीके साथ खरल करो और जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो।

(४) पीली हरड़की छाल, एलुआ, भुना सुहागा और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर, घीग्वारके रसमें १२ घण्टे तक खरल करो और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जंगली बेर-समान गोलियाँ बनाकर रख लो। इसमेंसे चार-चार माशेकी गोली सवेरे-शाम खानेसे तिल्ली-रोग आराम हो जाता है।

(५) कलमी शोरा, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी, संचरनोन, सैंधानोन, पीली हरड़की छाल, आँवाहल्दी और सादा अजवायन—इनको समान-समान लेकर कूट-पीस लो। फिर तीन दिन तक "अदरखके रस"में खरल करो। इसके बाद तीन दिन तक "नीबूके रस"में खरल करो और जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। इसमेंसे सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे तिल्ली-रोग नष्ट हो जाता है। एक हकीम साहब इसे अपना आजमूदा नुसखा कहते हैं। वे कहते हैं, इससे देर भले ही लगे, पर तिल्ली ठीक हो जाती है।

(६) सोंठ, भुना सुहागा, सैंधानोन और भुनी हींग—बराबर-बराबर लेकर, "सहँजनेकी जड़के रस"में घोटकर जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानेसे कुछ दिनोंमें तिल्ली कट जाती है और चौथैया तथा वायु-गोला भी आराम हो जाते हैं।

(७) तिल्लीवालेको लोहेका बुझाया हुआ पानी बहुत मुफीद है। एक हाँडीमें पानी भरकर, उसमें आगमें तपाकर लाल किया हुआ लोहा बुझा दो। यही "लोहा बुझाया पानी" कहलाता है। यह पानी सचमुच ही बहुत गुणकारी है।

(८) झाऊकी लकड़ीके प्याले बनवाकर, उन्हीं प्यालोंमें लोहा बुझाया हुआ या सादा पानी पीनेसे तिल्ली-रोग नष्ट हो जाता है।

(९) आमका अचार खानेसे तिल्ली-रोगमें अवश्य लाभ होता है, पर अगर तिल्लीके साथ ही खाँसी भी हो, तो आमका अचार न खाना चाहिये।

(१०) हालों ३ माशे और कलौंजी १॥ माशेको ६ माशे शहदमें मिलाकर, सिकंजबीनके साथ नित्य सवेरे ही खानेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) सरसोंका तेल निवाया करके तिल्लीपर मलनेसे उसकी सख्ती जाती रहती है और जोर घट जाता है।

(१२) पुरानी तापतिल्ली होनेसे, अरण्डकी जड़का काढ़ा पिलाना चाहिये। इस काढ़ेसे दस्त होकर तिल्ली आराम हो जाती है। दो तोले अरण्डीकी जड़ डेढ़ पाव पानीमें औटाकर, चौथाई पानी रहनेपर, मल-छानकर पिलानी चाहिये।

(१३) अगर तिल्ली और जिगर या दोनोंमेंसे एक इतने बढ़ गये हों कि सारे पेटको घेर लिया हो, सारा पेट पत्थरकी तरह सख्त हो गया हो और तिल्ली या जिगरका आकार न मालूम होता हो, तो आप अरण्डीके पत्तोंपर "रैंडीका तेल" चुपड़कर उन्हें गरम करो और पेटपर बाँध दो। इन पत्तोंके इस तरह कई दिन बाँधनेसे पेट नर्म हो जायगा और तिल्ली साफ मालूम होगी, क्योंकि तिल्ली या जिगरका स्थान ही सख्त रहेगा।

(१४) जितनी अजवायन मनुष्य खा सके, उतनी रोज सवेरे-शाम खावे, तो तिल्ली नष्ट हो जावे।

(१५) नीबूका रस २० माशे और प्याजका रस २० माशे—दोनोंको मिलाकर नित्य १४ दिन तक, सवेरे ही, पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है, मगर इसके साथ खिचड़ी या दाल-चावल आदि नर्म पदार्थोंके सिवा और चीजें न खानी चाहिये।

(१६) सवा दो माशे नौसादर मूलीके स्वरसमें मिलाकर नित्य सवेरे ही पीने और मूली तथा तिल बराबर-बराबर पीसकर तिल्लीपर बाँधनेसे तिल्ली अवश्य कट जाती है।

(१७) कलीका चूना और शहद मिलाकर तिल्लीपर २० मिनट तक धीरे-धीरे मलो और ऊपरसे "अञ्जीरके पत्ते" बाँध दो। इस तरह करनेसे तिल्ली-रोग आराम हो जाता है। कोई-कोई "अरण्डका पत्ता" भी बाँधते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१८) शैतरज सिरकेमें पीसकर तिल्लीपर लगानेसे तिल्लीकी सूजन उतर जाती है।

(१९) मूलीके बीज पीसकर सिरके या सिकंजबीनमें मिलाकर खानेसे तिल्ली गल जाती है।

(२०) करीलकी सूखी कोंपल ३॥ माशे और कालीमिर्च १॥॥ माशे—दोनोंको पानीमें पीस-छानकर हर दिन सवेरे ही पीनेसे तिल्लीकी सख्ती दूर हो जाती है।

(२१) गेहूँकी भूसी और छिले हुए लहसनको जलाकर राख कर लो। इस राखको सिरकेमें मिलाकर और गुन-गुना करके तिल्ली-पर लगानेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(२२) तिल्लीवालेके गलेमें प्याज लटकानेसे तिल्ली जल्दी गल जाती है।

(२३) अपना या लड़केका तीन चुल्लू पेशाब सवेरे ही नित्य कुछ दिन तक पीनेसे तिल्ली-रोग जाता रहता है।

(२४) अगर तिल्लीके साथ ज्वर न हो तो जवान आदमी ६ माशे सज्जी उतने ही गुड़में मिलाकर २१ दिन खावे, तो तिल्ली गल जावे। बालकको दो माशे सज्जी और उतना ही गुड़ मिलाकर खाना चाहिये।

(२५) झाऊकी पत्तियाँ लाकर सुखा लो और पीस-छान लो। फिर बराबरकी "शक्कर" मिलाकर रख दो। इसमेंसे ४ माशे दवा नित्य खानेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(२६) झाऊकी पत्तियाँ कूटकर कपड़ेमें रस निचोड़ लो। इसमेंसे २८ माशे रस लेकर ४० माशे सिकंजबीनमें मिलाकर पीलो। इस नुसखेसे कुछ दिनोंमें तिल्ली कट जाती है।

(२७) ऊँटनीका दूध और पेशाब पीनेसे तिल्ली आराम हो जाती है।

(२८) नमदेका टुकड़ा "सिरकेमें भिगोकर" तिल्लीपर बाँधनेसे तिल्ली-रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२९) झाऊके पत्तोंका अर्क पीनेसे तिल्ली अवश्य आराम हो जाती है।

(३०) सोंठ, पीपर, कालीमिर्च, आँवाहल्दी, जवाखार-चीना और, कमीला—सबको बराबर-बराबर पीसकर "ग्वारपाठेके रस"में खरल करके, जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही, कोरे कलेजे, एक गोली नित्य खानेसे तापतिल्ली कट जाती है।

(३१) भुना हुआ सुहागा १ भाग और राई ३ भाग मिलाकर और पीसकर थोड़ा-थोड़ा खानेसे तिल्ली कट जाती है।

(३२) अञ्जीर चार अदद सिरकेमें तर किए हुए, हर सवेरे खानेसे तिल्ली कट जाती है। लेकिन अञ्जीर खाते समय, अँगूठेसे तिल्लीको इस तरह मलते जाना चाहिये कि जिससे थोड़ा-थोड़ा दर्द होवे।

(३३) नौ माशे ज़मीकन्दके तीन-चार टुकड़े करो और हर टुकड़ेको घीमें तर करके निगल जाओ। १४ दिन तक यह दवा खाने और बादी तथा खट्टे पदार्थोंसे परहेज़ करनेसे पुरानी तापतिल्ली गल जाती है।

(३४) लहसनको कूटकर कपड़ेमें होकर स्वरस निकाल लो। यह स्वरस ६ तोले हो। फिर ६ तोले घी, ४॥ तोले गुड़ और अन्दाज़का गेहूँका आटा—इन तीनोंको मिलाकर हरीरा बना लो। पहले लहसनका रस पीलो और ऊपरसे हरीरा खालो। इस दवासे एक दिनमें ही तिल्ली आराम हो जाती है।

(३५) भुना हुआ सुहागा और एलुआ बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और "गुड़में" मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके २० या ३० दिन तक खानेसे तिल्ली गल जाती है। हर रोज़ ३ या ४ दस्त आते हैं। इससे पेटके सारे रोग आराम हो जाते हैं। यह गोली खाना खानेके आध घण्टे बाद खानी चाहिये और उसके पीछे कोई चीज़ न खानी चाहिये। गोली खाकर थोड़ा-सा "अर्क गुलाब" पीना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खटाई और बादी चीज़ोंसे परहेज़ करना चाहिये। जिनसे रोज़ यह दवा न खाई जाय, वे एक या दो दिन बीचमें छोड़कर खा सकते हैं।

(३६) नौसादर, सुहागा, कलमीशोरा और कालीमिर्च—सबको बराबर-बराबर लेकर, "घीग्वारके रस"में मिलाकर तिल्लीवालेको खिलाओ। दूसरे दिन घीग्वारका गूदा ज़ियादा लो और तीसरे दिन उससे भी ज़ियादा लो। इस तरह सात दिन तक घीग्वारका गूदा बढ़ा-बढ़ाकर लो। इस दवासे तिल्ली आराम हो जायगी।

मनुष्य-मात्रके सीखने योग्य

ब्रह्म-योग विद्या।

योग-विद्या और मेस्मरेज़िमपर आज तक ऐसी पुस्तक नहीं निकली। जितनी पुस्तकें इस विषयपर छपी हैं, सबमें बिना आज़माई ऊटपटाँग बातें भरी हैं। योगविद्याके शौक़ीन उन पुस्तकोंको मँगाकर निराश होते हैं, क्योंकि उनमें लिखी हुई बातें ठीक नहीं उतरतीं या साधक उनकी साधना नहीं कर सकता, इसीसे लोगोंका विश्वास इस विद्यासे उठ गया।

योग-विद्याका लोप होते देखकर योगिराज श्री गोसाईं स्वामी दयालजी महाराजने अपने जीवनकी सिद्ध की हुई क्रियाएँ खूब अच्छी तरह समझा-समझाकर लिखी हैं। उनकी लिखी पुस्तकका सम्पादन बाबू ब्रजमोहनलालजी वर्म्मा बी० ए०, एल-एल० बी०, महोदयने किया है। पहले तीन बारकी छपी पुस्तकें हाथों-हाथ निकल गईं। अब यह चौथा संस्करण हुआ है। इसीसे समझ सकते हैं, कि पुस्तक कितनी उपयोगी है। अगर उपयोगी न होती, तो हज़ारों कापियाँ हाथों-हाथ न बिकतीं।

इस पुस्तकमें समाधि-साधन, विराट पुरुष दर्शन, मेस्मरेज़म, स्वरोदय, राजयोग, हठ-योग आदि चित्र दे-देकर समझाये हैं। हरेक आदमी कोई सी भी क्रिया सिद्ध करके अनेक चमत्कार दिखा सकता है, इच्छानुसार धन पैदा कर सकता है और पहलेसे ही मृत्यु-तिथि जान सकता है। कहाँ तक तारीफ करें अनमोल चीज़ है। दाम लागत मात्र १।)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

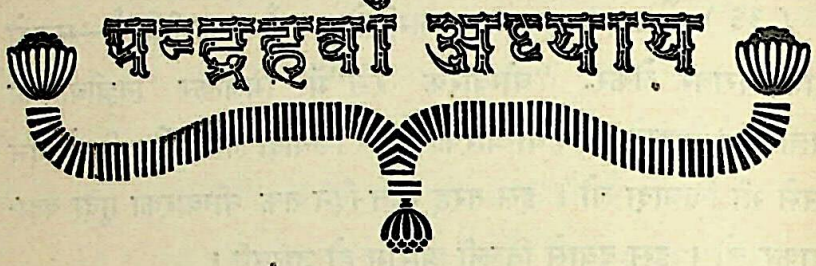

यकृत-रोग वर्णन।

यकृतपर आयुर्वेद।

"भाव-प्रकाश"में लिखा है, प्लीहा-रोगके जो निदान-सम्प्राप्ति और लक्षण हैं, वे ही सब यकृतरोगके भी हैं। भेद इतना ही है कि, प्लीहाकी स्थिति बाँई पसलीमें है और यकृतकी दाहिनी पसलीमें है। चिकित्साके सम्बन्धमें भी लिखा है कि, जो चिकित्सा प्लीहाकी है, वही यकृतकी है। दाहिनी बाँहकी नस खुलवाकर, खून निकलवानेकी राय विशेष दी है।

वङ्गसेनमें कुछ अधिक लिखा है। उसमें लिखा है, यकृतके दूषित होनेसे "यकृदाल्युदर" होता है। इसमें उदावर्त्त, शूल, अफारा, इनसे वायुका कोप; मोह, प्यास और ज्वर इनसे पित्तका कोप तथा शरीरका भारीपन, अरुचि और सस्ती इनसे कफका कोप प्रकट होता है। चिकित्साके सम्बन्धमें वङ्गसेनने भी वही लिखा है जो भावमिश्रने लिखा है। हम आधुनिक ग्रन्थोंसे यकृत-रोगके निदान-लक्षणादि लिखते हैं, क्योंकि इतनेसे चिकित्सकको काफी ज्ञान नहीं हो सकता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यकृतका स्थान और आकारादि।

यकृत एक गाँठदार यन्त्र है। यह यन्त्र पेटके यन्त्रोंमें सबसे बड़ा है। इसने दाहिनी तरफके पेटका बहुत-सा भाग घेर रखा है। यकृत दो ना-बराबर खण्डोंमें बँटा हुआ है। एकको बाँया खण्ड और दूसरेको दाहिना खण्ड कहते हैं। ये दोनों खूब सटे हुए हैं। इसका आकार १०।१२ इञ्च होता है। सबसे बड़े अंशका वज़न १।। सेरसे २ सेर तक होता है। इसका असल काम पित्तको निकालना है।

यकृतके काम।

यकृत या लिवरमें किसी तरहकी ख़राबी होनेसे कोष्ठबद्ध या दस्तक़ब्ज़ होना स्वाभाविक है। यकृतमेंसे जो पित्त निकलता है, वही मुख्यतया रेचन और पाचनका काम करता है। यकृतमें विकार होनेसे पित्त कम निकलता है और उसके कम निकलनेसे कोष्ठबद्ध या क़ब्ज़ हो जाता है।

जिस तरह किसी-किसी पेड़से गोंद निकलता रहता है; उसी तरह यकृतमेंसे थोड़ा-थोड़ा पित्त बराबर गिरता रहता है। पित्त यकृतके सब स्थानोंसे निकलकर, यकृतनलीमें होकर, छोटी आँतकी नलीमें गिरता है। वहाँ खाद्य पदार्थोंसे मिलकर, उनके पचनेमें सहायता करता है। मनुष्य दिन-रात खाना नहीं खाते, इसलिये पाचन-क्रिया भी सर्वदा नहीं होती; लेकिन पित्त तो दिन-रात निकला ही करता है। यहाँ तक कि १५ से २० छटाँक तक पित्त निकलता है। जब इसे खाना नहीं मिलता, तब यह एक थैलीमें जमा होता रहता है; पर जब थैली भर जाती है, तब यह बाहर निकलकर आँतोंमें जलन और वमन आदि करता है। जो लोग कई-कई दिन तक नहीं खाते, उनका यह हाल होता है। पित्तके द्वारा ही हमारा भोजन पचता है और पित्तके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वारा ही हमें मल त्यागनेमें विशेष सहायता मिलती है। अगर पित्त न निकले, तो हमें मल त्यागनेमें बड़ा कष्ट हो। जिनके यकृतसे ठीक पित्त नहीं निकलता, उन्हींको दस्तक़ब्ज़की शिकायत होती है।

शरीरका खून साफ करनेको जिस तरह फुफ्फुस यन्त्र हर समय तैयार रहता है; उसी तरह यकृत भी तैयार रहता है। श्वास छोड़ते समय, जिस तरह खूनका मैल फेंफड़ेमें होकर वायुके साथ बाहर निकल जाता है; उसी तरह कई तरहके मैल यकृतमेंसे पित्तका रूप धरकर निकलते हैं। जिस तरह श्वास न लेनेसे मनुष्य मर जा सकता है; उसी तरह यकृतमेंसे पित्तके न निकलनेसे, यानी खूनमें ही मिले रहनेसे मृत्यु हो सकती है। प्लीहा बिना काम चल सकता है, पर यकृत बिना शरीरका काम नहीं चल सकता। यकृत प्लीहासे आकारमें बहुत बड़ा है; उसी तरह उसका काम भी बहुत बड़ा है। जो पित्त शरीरमें स्वाभाविक गरमी पैदा करके शरीरकी रक्षा करता है, जो पित्त रस धातुको रंगकर रुधिर बनाता है, उसका घर यकृतके एक कोनेमें है। इसलिये यकृत बड़े कामका यन्त्र है। प्लीहा इसके मुक़ाबलेमें कुछ भी नहीं है।

यकृतकी विकृतिके कारण।

प्लीहा-रोगके जो कारण लिखे हैं, उनके सिवाय शराब पीने और बवासीर आदि रोगोंका खून बहना बन्द हो जाने वग़ैरः कारणोंसे भी यकृत बढ़ता या सुकड़ता है। यही यकृतकी विकृति है। बढ़नेपर यकृत हाथ लगानेसे मालूम होता है, किन्तु अपनी असली हालतमें हाथ लगानेसे मालूम नहीं होता।

यकृतकी विकृतिके लक्षण।

जब यकृत बढ़ जाता है या सुकड़ जाता है, तब उसमें दर्द होता है, मल रुक जाता है या कीच-जैसा थोड़ा-सा मल निकलता है

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और सारा शरीर विशेषकर दोनों आँखें पीली हो जाती हैं। खाँसी आती है। दाहिनी तरफके पसवाड़ेके नीचेका भाग सख्त मालूम होता है, सूई चुभानेका-सा दर्द होता है, दाहिनी ओरके सभी अङ्गोंमें दर्द मालूम होता है, मुँहका स्वाद तीता रहता है, जी मिचलाता या क़य होती हैं, नाड़ी कठिन चलती है, हर समय ज्वर बना रहता है तथा तिल्लीके भी सब लक्षण मिलते हैं। यकृतकी ख़राबीवाला दाहिनी करवट सो नहीं सकता। दाहिनी करवट सोनेसे अगर रोगीको खाँसी चैन न लेने दे, तो यकृत में निश्चय ही ख़राबी समझनी चाहिये। तपेदिक या राजयक्ष्मामें बहुधा यकृत बढ़ जाता अथवा विकृत हो जाता है। बहुत दिनों तक यकृतका इलाज न करनेसे पाण्डु, कामला और सूजन आदि भयानक रोग पैदा हो जाते हैं। जब यह बहुत ही बढ़कर पेटको घेर लेता है तब "यकृदुदर" रोग कहते हैं।

प्लीहाका बढ़ना और सख्त होना—ये ही दो विकार प्लीहाके देखे जाते हैं। कभी-कभी प्लीहाका फूल जाना, लाल होना और उसमें पीड़ाका होना भी देखा जाता है। कभी-कभी प्लीहा अपने मामूली आकारसे सूखकर छोटी भी हो जाती है। प्लीहाके तो इतने ही विकार हैं, पर यकृतके तो सैकड़ों विकार हैं। पहले इस देशमें यकृतके इतने विकार न होते थे; परन्तु अब तो यकृत सम्बन्धी अनेक रोग होते हैं। जैसे यकृतका बढ़ना, सख्त होना, सूख जाना, स्वाभाविक अवस्थासे छोटा हो जाना, पित्त सम्बन्धी नाना प्रकारके रोगोंका होना, आँतोंका दाह, खूनका गरम होना, पित्तकी पथरी और यकृत-शूल वग़ैरः वग़ैरः।

जब पित्तकी अधिकतासे यकृतकी सूजन लाल रंगकी और पीड़ा-युक्त होती है; तब उस रोगको "यकृत-विद्रधि" या जिगरका "पकना" या "जिगरका फोड़ा" कहते हैं। यकृत-विद्रधिकी उपेक्षा करनेसे वह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पक जाती है और उसमें पीप पड़ जाता है। तीहा में कभी-कभी विद्रधि हो जाया करती है।

बालकोंके शरीरमें यकृत-रोग भयङ्कर रूपसे प्रकट होता है। बालकके आहार-विहारमें ज़रा-सा गोलमाल हो जानेसे यकृत ख़राब हो जाता है और फिर उसका आराम होना मुश्किल हो जाता है।

इस रोगमें भी तिल्लीकी तरह पेट साफ कर लेना चाहिये। इतना ही नहीं, सदा पेट साफ रखना ज़रूरी है। जो दवाएँ तीहा-रोगमें लिख आये हैं, वे ही सब इस रोगमें भी काममें लानी चाहिए। फिर भी हम चन्द नुसख़े लिखते हैं:—

यकृत-चिकित्सा।

(१) अगर यकृतमें दर्द हो, तो तारपीनके तेलकी मालिश करके "गरम जल"से सेकना चाहिये अथवा आगपर गरम किया हुआ गोमूत्र बोतलमें भरकर उस बोतलसे सेक करना चाहिये अथवा फ़लालैन का टुकड़ा गरम गोमूत्रमें या गरम पानीमें भिगो-भिगोकर सेक करना चाहिये।

(२) राईका लेप करनेसे भी यकृतमें उपकार होता है।

(३) दो रत्ती नौसादर और १ रत्ती लोहभस्म ६ माशे पीपरोंके काढ़ेमें मिलाकर, दिनमें दो बार, सेवन करानेसे यकृतका शोथ या सूजन आराम हो जाती है।

(४) चार रत्ती समन्दरफेनका चूर्ण और चार रत्ती बिरिया-संचरनोनका चूर्ण, दो तोले रोहिड़ेकी जड़के काढ़ेमें मिलाकर, सवेरे-शाम पीनेसे यकृतका बढ़ना बन्द हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) चार रत्ती घीग्वारके रसमें दो रत्ती हल्दीका चूर्ण और दो रत्ती सैंधेनोनका चूर्ण मिलाकर सवेरे-शाम खानेसे यकृतका बढ़ना बन्द हो जाता है।

(६) सोंठ १ माशे, पीपर १ माशे, चव्य १ माशे और केशर १ रत्ती—इन सबको एकत्र पीसकर ६ माशे "शहद" में मिलाकर चाटनेसे यकृतका शोथ नाश हो जाता है।

(७) कौड़ीकी भस्म दो रत्ती, मण्डूरकी भस्म १ रत्ती और पीपलका चूर्ण ४ रत्ती—इन सबको मिलाकर शहदके साथ सेवन करनेसे यकृतकी सूजन नाश हो जाती है।

(८) पीपरका काढ़ा आध सेर, जलमें पिसी हुई पीपरोंकी लुगदी २ तोले, गायका दूध आध सेर और गायका घी आध पाव—इन सबको मिलाकर, कढ़ाहीमें आगपर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसमेंसे एक-एक तोले घी सवेरे-शाम पीनेसे यकृतकी सूजन और पीड़ा शान्त हो जाती है।

नोट—जब यकृतमें पित्तकी अधिकताके कारण जलन वग़ैरः उपद्रव होने लगें, तब तीक्ष्ण और पित्तकारक क्षारादि पदार्थ न देने चाहिये। क्योंकि इस हालतमें ऐसी दवाओंसे यकृतमें और भी गरमी बढ़ जाती है। अगर ऐसा हो, तो नीचेका नं० ९ या १० नुसख़ा सेवन कराओ।

(९) दो तोले त्रिफला बारह तोले जलमें पकाओ; जब तीन तोले पानी रह जाय, उतारकर छान लो। शीतल होनेपर, इसमें ६ माशे "शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तकी अधिकताके कारणसे पैदा हुई यकृतकी जलन शान्त हो जाती है।

(१०) दो तोले मूलीका रस और दो तोले मकोयका रस मिलाकर दिनमें २।३ बार सेवन करनेसे यकृतकी सूजन, जलन, पित्तकी बाधा और कामला आदि रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) बोल १ तोला, लाख १ तोला, नागकेशर १ तोला और सोंठ १ तोला—इनको पीस-छानकर रख लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण "शहद"में मिलाकर दिनमें दो-तीन बार, चाटनेसे यकृतकी पीड़ा और पेट फूलना आराम हो जाता है।

(१२) बायबिडङ्ग और पीपरकी भस्म कर लो। इसमेंसे ६ रत्ती भस्म "करंजकी जड़के रस या काढ़े"के साथ; नित्य सवेरे ही, खानेसे यकृत और लीहा-रोग शान्त हो जाते हैं। बलाबल अनुसार मात्रा बढ़ा भी सकते हो।

(१३) पीपर, बायबिड़ङ्ग और जवाखार बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ४ से ६ माशे तक है। एक मात्रा चूर्ण "करंजके पत्तोंके स्वरस"में मिलाकर पीनेसे यकृत और लीहा दोनों आराम हो जाते हैं।

(१४) अगर यकृतकी ख़राबीसे पित्त बहुत ही बढ़ गया हो; नेत्र, मुख, मल और मूत्र पीले पड़ गये हों; तो आमले, गिलोय और हरड़के २ तोले काढ़ेमें २ रत्ती "मण्डूर-भस्म" डालकर पीओ। अथवा कासनी और मकोयके दो तोले स्वरसमें ज़रा-सा "शहद" मिला-कर पीओ।

(१५) अगर यकृतकी सूजन बढ़कर आमाशयकी तरफ जाने लगे, तो दो तोला गुल बनफ़शाको आध सेर दूध और आध सेर पानीमें पकाओ। जब दूध-मात्र रह जाय, नीचे उतार लो। फिर शीतल होनेपर उसमें थोड़ा-थोड़ा "शहद" डालकर दिनमें चार बार पीओ। इससे यकृतकी अत्यन्त बढ़ी हुई सूजन भी नाश हो जाती है। यह नुसख़ा विद्रधिमें भी अति उपयोगी है। परीक्षित है।

(१६) यदि यकृतके अत्यन्त बढ़ जानेसे उसमें पीड़ा मालूम हो, तो उसपर बारम्बार "अलसीकी पुल्टिस" बाँधो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यकृत और प्लीहाकी एक दवा।

(१७) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इनको चार-चार माशे लेकर आठ तोले जलमें पकाओ; जब दो तोले पानी रह जाय, छान लो। फिर इसमें ज़रा-सा "जवाखार" डालकर पीओ। इससे यकृत और प्लीहा समेत ज्वर चला जाता है।

(१८) गूमाकी जड़का चूर्ण १ तोले और पीपरोंका चूर्ण ३ माशे—दोनोंको मिलाकर पीस लो। इसमेंसे दो-दो रत्ती चूर्ण दिनमें २।३ बार खानेसे शीतज्वर तथा यकृत और प्लीहाका विकार नाश हो जाता है।

(१९) नागरमोथा १ भाग, आमले १ भाग, अदरख १ भाग, हरड़ ३ भाग और सोंठ ४ भाग—इन सबको मिलाकर पीस-छान लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे प्लीहा और यकृत सहित ज्वर, अजीर्ण और अतिसार आराम हो जाते हैं।

(२०) यदि यकृत और प्लीहाके विकारके साथ शरीरमें सूजन सहित ज्वर हो; तो पुनर्नवा, नीमकी छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय, दारुहल्दी और हरड़—समान-समान लेकर काढ़ा बना लो और चौथाई पानी रहनेपर छान लो। इसमेंसे सवेरे-शाम दो-दो तोले काढ़ा सेवन करो। अवश्य लाभ होगा।

(२१) यकृत और प्लीहाकी सूजनपर मकोय और पुनर्नवेका स्वरस गरम करके लेप करो। अथवा तारपीनके तेलमें कपड़ा भिगोकर सूजनपर रखो। इनमेंसे किसी एक उपायसे यकृत और तिल्लीकी सूजन नाश हो जायगी।

(२२) करेलेके फल या पत्तोंके रसमें ज़रा-सा "शहद" मिलाकर पीनेसे यकृत और प्लीहाकी विकृति नष्ट हो जाती है।

(२३) चिरायतेका काढ़ा २ औन्स, करेलेका रस २ औन्स, पपीते या अरण्ड खरबूजेका रस १ ड्राम, कुनैन २० ग्रेन, एसिड नाइट्रो-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिडरिक डिल १॥ ड्राम और पानी दो औन्स—सबको मिलाकर शीशीमें भर लो और उसपर आठ दाग़ लगा दो। सवेरे-शाम एक-एक दाग़ दवा पीनेसे यकृत और प्लीहा संयुक्त ज्वर फौरन ही नाश हो जाता है। यह यकृत और प्लीहा ज्वरकी उत्तम दवा है। "वैद्य"।

नोट—हम करेलेके चन्द उत्तमोत्तम प्रयोग, पाठकोंके लाभार्थ, नीचे लिखते हैं:—

(१) करेलेके पत्तोंके रसमें हल्दीका चूर्ण मिलाकर खानेसे सब तरहकी चेचक और ज्वर नाश हो जाते हैं। इस नुसख़ेसे भीतर घुसी हुई चेचक भी निकल आती है। करेले और हल्दीको एक साथ पीसकर और पोटली बनाकर शरीरपर फेरनेसे भी भीतर छिपी हुई चेचक निकल आती है।

(२) करेलेके रसमें प्याजका रस मिलाकर पीनेसे भयंकर अजीर्ण और हैज़ा नाश हो जाते हैं।

(३) करेलेके रसमें शहद मिलाकर खानेसे वातरक्त नाश हो जाता है।

(४) करेलेके पत्तोंको तत्काल पीसकर और उसमें थोड़ा-सा ताज़ा चूना मिलाकर लगानेसे शरीरके किसी स्थानसे भी खूनका गिरना बन्द हो जाता है। हथियारके द्वारा घाव होनेपर खून गिरता हो, तो करेलेका रस लगा दो; फौरन खून बन्द हो जायगा।

(५) करेलेके पत्तोंके रसमें ज़रा-सा दही मिलाकर लेप करनेसे शीतपित्त या पित्ती आराम हो जाती है।

(६) करेलेके पत्तोंका रस आध पाव, नारियलका तेल १ छटाँक, नीमके पत्ते १ छटाँक और कुनैन २० ग्रेन मिलाकर खुजलीपर लगानेसे जादूका-सा चमत्कार नज़र आता है।

नोट (१)—यकृतके दाह, आँतोंके रूखेपन, सूजन, पाण्डु और कामला आदिमें दही खाना रोग बढ़ाना है। अतः दही न खाना चाहिये।

नोट (२)—जो दवाइयाँ प्लीहा-रोगमें लिखी हैं, वे सब यकृत-रोगको भी नाश करती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

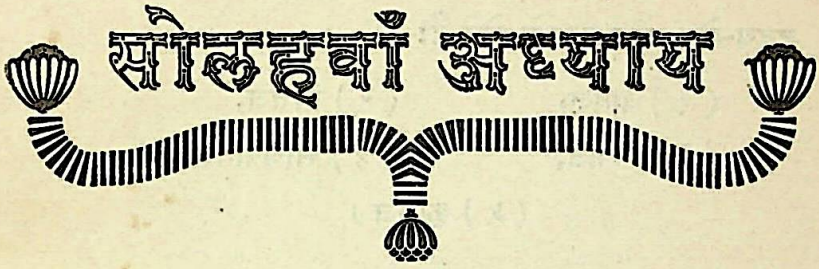

हृदय-रोग वर्णन।

हृदय-रोगके निदान।

अत्यन्त गर्म, भारी, खट्टे, कड़वे और कसैले पदार्थ लगातार सेवन करनेसे, बहुत मिहनत करनेसे, चोट लगनेसे, भोजन-पर-भोजन करनेकी आदतसे, हर समय राज-भयका ख़याल या फिक्र रहनेसे और मल-मूत्र आदि वेगोंको रोकनेसे पाँच तरहका "हृदय-रोग" होता है।

सम्प्राप्ति पूर्वक लक्षण।

दूषित वातादि दोष, हृदयमें रहकर, रसको दूषित करते हुए अनेक तरहकी पीड़ाएँ पैदा करते हैं। हृदयकी पीड़ाको ही "हृदय-रोग" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, चिन्ता करने, बहुत परिश्रम करने, मल-मूत्रादिके वेग रोकने, डरने और चोट लगनेसे वात, पित्त और कफ दूषित हो जाते हैं। वे दूषित वातादि दोष हृदयमें तरह-तरहकी पीड़ाएँ करते हैं। उस हृदयमें होनेवाली पीड़ाको ही हृदय-रोग कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय-रोगोंकी क़िस्में।

हृदय-रोग पाँच तरहके होते हैं:—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) सन्निपातज,
(५) कृमिज।

सामान्य लक्षण।

जिस रोगमें हृदय या छातीमें दर्द होता है और हृदय धकधक करता है, उसे "हृदय-रोग" कहते हैं। मतलब यह है कि, छातीका धकधक करना और उसमें पीड़ा होना हृदय-रोगके साधारण लक्षण हैं।

वातज हृदय-रोगके लक्षण।

इस हृदय-रोगके होनेसे सारे हृदयमें पीड़ा फैल जाती है, सूई चुभानेके समान, मथनेके जैसी, चीरनेके समान, शस्त्र या कुल्हाड़ीसे काटने-चीरनेके समान अनेक तरहकी पीड़ाएँ होती हैं।

पित्तज हृदय-रोगके लक्षण।

इस हृदय-रोगके होनेसे—हृदयमें ग्लानि, प्यास, कुछ-कुछ दाह या जलन, शरीरमें चूसनेकी तरह दर्द, सन्ताप, कण्ठसे धूआँ-सा निकलता जान पड़ना, मूर्च्छा-बेहोशी, पसीने आना और मुँह सूखना ये लक्षण होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफज हृदय-रोगके लक्षण।

इस हृदय-रोगमें भारीपन, कफ निकलना, अरुचि, हृदयकी जकड़न, मन्दाग्नि और मुँहका मीठापन—ये लक्षण होते हैं।

त्रिदोषज हृदय-रोगके लक्षण।

त्रिदोषज हृदय-रोगके होनेसे वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके लक्षण मिले हुए रहते हैं।

कृमिज हृदय-रोगके लक्षण।

त्रिदोषज हृदय-रोग पैदा होनेपर, अगर रोगी तिल, दूध, गुड़ प्रभृति कृमि-जनक यानी कीड़े पैदा करनेवाले पदार्थ खाता-पीता है, तो हृदयके किसी भागमें एक गाँठ पैदा हो जाती है, उस गाँठमेंसे क्लेद और रस निकलता है। उस क्लेद और रससे कीड़े पैदा हो जाते हैं और फिर "कृमिज हृदय-रोग" हो जाता है।

इस रोगमें—नोंचनेकी-सी पीड़ा और खुजली होती है; छातीमें तेज दर्द, सूई चुभानेकी-सी पीड़ा, अँधेरी आना, अरुचि, दोनों आँखोंका काला हो जाना और उनपर सूजन चढ़ आना—ये सब लक्षण होते हैं।

उपद्रव—इस "कृमिज हृदय-रोग"के उपद्रव "कफज कृमिरोग"के समान होते हैं; यानी क्लान्ति मालूम होना, देहका अवसन्न रहना, भ्रम और शोष आदि उपद्रव होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय-रोगके उपद्रव ।

क्लोम या प्यास लगनेकी जगहमें ग्लानि, भ्रम और शोष—हृदय-रोगके उपद्रव हैं ।

हृदय-रोगमें याद रखने योग्य बातें ।

(१) हृदय-रोगमें अग्नि वृद्धि करनेवाली और खून पैदा करनेवाली दवाएँ देनी चाहिये ।

(२) वातज हृदय-रोगमें—बलकारक पदार्थ, मांस, मांसरस, दूध, घी, शालि चावल और वातनाशक दवाओं द्वारा पकाये हुए तैल और वस्ति-कर्म—ये सब उपचार हित हैं । इस रोगमें दशमूलके काढ़ेमें तेल और सैंधानोन डालकर पिलाना और वमन कराना भी हितकर है ।

(३) पित्तज हृदय-रोगमें—कुम्भेरके फल और मुलेठीके काढ़ेमें शहद, चीनी और गुड़ डालकर वमन करानी चाहिये । वमन-विरेचन आदिसे शरीरको शुद्ध करके दाख, चीनी, मधु और फालसे एवं पित्त-नाशक अन्नपान देना चाहिये । मधुर पदार्थोंके साथ सिद्ध किया हुआ घी और काढ़ा सेवन कराना चाहिये और "पित्त-ज्वरकी चिकित्सा" करनी चाहिये । चन्दनादिका शीतल लेप, शीतल जलका सींचना और दस्त कराना इस हृदय-रोगमें हित हैं ।

(४) कफज हृदय-रोगमें—पहले पसीने निकालने चाहिये, वमन और लंघन कराने चाहिये और दोषोंका बलाबल विचारकर कफ-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये । इस रोगमें बच और नीमके काढ़ेसे वमन कराना अच्छा है । फल, तेल वस्तिकर्म, कुल्थी, धनियेका यूष, जौ, तीक्ष्ण अन्नपान और मिश्री—ये सब पथ्य हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) त्रिदोषज हृदय रोगमें—पहले लंघन कराने चाहिये। त्रिदोष नाशक अन्नपान देना चाहिये और दोषोंकी प्रबलता, हीनता और समताका विचार करके चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) कृमिज हृदय रोगमें—पहले लंघन और पाचन कराने चाहिये, फिर कृमि रोगमें लिखी हुई "कृमि नाशक चिकित्सा" करनी चाहिये। इस रोगमें खानेके लिए "बायबिड़ङ्गके साथ जौके पदार्थ" देने चाहिये।

हृदय रोगकी विशेष चिकित्सा।

हृदय रोग नाशक नुसखे।

(१) कूट, बड़े नीमकी जड़, सोंठ, कचूर और हरीतकी—सबको समान-समान लेकर, एकत्र पीस लो। फिर इसमें "दूध, काँजी, घी और नमक" मिलाकर सेवन करो। इस नुसखेसे वायुजन्य हृदय रोग शान्त हो जाता है।

(२) पोहकरमूल, बिजौरे नीवूकी जड़, सोंठ, कचूर और हरड़—इन सबको एकत्र पीसकर, सिलपर पानीके साथ फिर पीसकर कल्क या लुगदी-सी बना लो। इसका नाम "पुष्करकल्क" है। इसको खार, काँजी, घी या सैंधेनोनके साथ मिलाकर खानेसे वातज हृदय रोग आराम हो जाता है।

(३) पोहकरमूल, बिजौरा नीवू, ढाकके बीज, दुर्गन्ध करंज, कचूर और देवदारु—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा बनाओ। फिर इस काढ़ेमें "सोंठ, जीरा, बच, अजवायन, जवाखार और सैंधेनोनका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूर्ण" मिलाकर पीओ। इससे वातज हृदय रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) हरीतकी, बच, रास्ना, पीपर, सोंठ, कचूर और कूट समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे १॥ से ३ माशे तक चूर्ण पानीके साथ खानेसे वातज हृदय रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) पुनर्नवा, देवदारु, पंचमूल, रास्ना, जौ, बेर, कैथ और बेलगिरी—इनको दो-दो तोले लेकर जौकुट कर लो और २५६ तोले पानीमें मिलाकर काढ़ा बना लो। जब ६४ तोले पानी रह जाय, छान लो। फिर उस काढ़ेमें १६ तोले "काले तिलोंका तेल" मिलाकर औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "पुनर्नवाद्य तैल" है। इसकी मालिश करने और पीनेसे वातज हृदय रोग नाश हो जाता है।

(६) पोहकरमूल, सोंठ, बच, अजवायन, ढाकके बीज, करंज, कचूर और देवदारु—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा पकाओ। पकनेपर उसे छान लो और उसमें "ज़ीरा और नमक" डालकर पीओ। इस काढ़ेसे वातज हृदय रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

पित्तज हृदय रोग नाशक नुसख़े।

(१) शहद और मिश्री मिलाकर मुनक्के खानेसे पित्तज हृदय रोग जाता रहता है।

(२) हरड़का चूर्ण और मिश्री मिलाकर खाने और ऊपरसे पानी पीनेसे पित्तज हृदय रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) कुटकी और मुलेठीका चूर्ण खाकर पानी पीनेसे पित्तज हृदय रोग आराम हो जाता है।

(४) मुलेठी और कुटकी जलमें पीसकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे भी पित्तज हृदय रोग जाता रहता है।

(५) मुलेठीको दूधमें पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज हृदय रोग जाता रहता है।

(६) अर्जुन वृक्षकी छालको दूधमें पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज हृदय रोग जाता रहता है।

(७) पंचमूल या खिरेंटीको दूधमें पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज हृदय रोग, जीर्ण ज्वर और रक्तपित्त जाते रहते हैं।

नोट—ये सातों नुसख़े परीक्षित हैं।

(८) गुड़के शर्बतके साथ अर्जुन वृक्षकी छालका चूर्ण खानेसे पित्तज हृदय रोग आराम हो जाता है।

कफज हृदय रोग नाशक नुसख़े।

(१) पीपरामूल और छोटी इलायचीका चूर्ण "घी"के साथ चाटनेसे कफज हृदय रोग और गुल्म रोग नाश हो जाते हैं। इस चूर्णकी मात्रा १॥ माशेसे ३ माशे तक है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई पीपर और छोटी इलायचीका चूर्ण १॥ से ३ माशे तक ६ माशे "घी"में मिलाकर चटाते हैं।

(२) निशोथ, कचूर, खिरेंटी, रास्ना, हरीतकी और कूट—सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे दो या तीन माशे चूर्ण "गोमूत्र"के साथ पीनेसे कफज हृदय रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—कोई-कोई निशोथकी जगह पाढ़ल लेते हैं।

पीपर, बच, छोटी इलायची, हींग, जवाखार, सैंधानोन, कालानोन, सोंठ और अजमोद,—इनको समान-समान ले लो और पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण त्रिफलाके काढ़े, कुल्थीके यूष, दही या शराबके साथ पीनेसे वातज हृदय रोग और कफज हृदय रोगमें वमन-विरेचन—क़य और दस्त होकर लाभ होता है।

त्रिदोषज हृदय रोग नाशक नुसख़े।

(१) हींग, बच, कालानोन, सोंठ, पीपर, हरड़, चीता, जवाखार, संचरनोन और कूट—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ रत्ती या १ माशे चूर्ण जौके काढ़ेके साथ खानेसे त्रिदोषज हृदय रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—हींग, बच, बिड़नोन, सोंठ, ज़ीरा, कूट, हरड़, चीता, जवाखार, संचरनोन और पोहकरमूल—इन सबका चूर्ण भी त्रिदोषज हृदय रोग और शूल नाशक है। यह भी परीक्षित है। इसमें पीपरकी जगह ज़ीरा है और पोहकरमूल अधिक है। बस और फ़र्क़ नहीं है।

कृमिज हृदय रोग नाशक नुसख़े।

(१) बायबिडंग और कूटको समान-समान लाकर पीस-छान लो। इसमेंसे १॥ माशे चूर्ण "गोमूत्र"के साथ खानेसे कृमिज हृदय रोग नाश हो जाता है। "वङ्गसेन"में लिखा है, इस नुसख़ेसे पेटके असाध्य कीड़े भी निकल जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इस कृमिज हृदय रोगमें, विचारकर कृमि रोगकी और दवाएँ देनेसे भी लाभ होता है। कृमि रोगकी चिकित्सा हमने तीसरे भागमें लिखी है।

समस्त हृदय रोग नाशक नुसख़े।

शृङ्ग रस।

(१) हिरनके सींगको रेतीसे रितवाकर, एक कुल्हड़ेमें भर दो और मुँह बन्द करके कपरौटी कर दो। फिर कुल्हड़ेको सुखाकर दस सेर जंगली कण्डोंमें फूँक दो। शीतल होनेपर भस्मको निकालकर शीशीमें रख दो। इसमेंसे १ माशे भस्म ३ माशे गायके गरम घीमें मिलाकर खानेसे घोर हृदयशूल या हृदय रोग, पीठका शूल और चूतड़का दर्द ये सब आराम हो जाते हैं। आराम तो इससे सभी शूल होते हैं, पर हृदय-शूलोंपर तो यह रामवाण दवा है। इस एक दवाके होते और दवाओंकी दरकार नहीं। अनेक बारकी परीक्षित है।

हृदय-रोगान्तक चूर्ण।

(२) अर्जुन वृक्ष या कोहकी छालका चूर्ण गुड़के शर्बत, पानी या घी अथवा दूधके साथ खानेसे सब तरहके हृदय रोग, जीर्णज्वर और रक्तपित्त आराम हो जाते हैं तथा उम्र बढ़ती है। मात्रा ६ माशेकी है। परीक्षित है।

नोट—घी या दूधके साथ बहुत फायदा करता है।

हृदय-रोग नाशक चूर्ण।

(३) हरड़, बच, रास्ना, पीपर, सोंठ, कचूर और पोहकरमूल समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे २ या ३ माशे चूर्ण पानीके साथ खानेसे हृदय रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हृदय-रोगारि योग।

(४) गेहूँ और अर्जुन वृक्षकी छालका चूर्ण बकरीके दूध और गायके घीमें पकाकर तथा "मिश्री और शहद" मिलाकर पीनेसे घोर हृदय रोग भी शान्त हो जाते हैं। परीक्षित है।

अर्जुन घृत।

(५) अर्जुन वृक्षकी चार तोले छालको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर अर्जुन वृक्षकी पाव भर छालको कूटकर चार सेर पानीमें औटाओ। जब एक सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। अब पाव भर गायका घी, ऊपरकी लुगदी और काढ़ेको मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीके पीनेसे सब तरहके हृदय-रोग नाश हो जाते हैं।

क्षीरबल्लभ घृत।

(६) हरड़ ५० और कालानोन ८ तोलेको सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर ६४ तोले घी, २५६ तोले गायका दूध और ऊपरकी लुगदी मिलाकर पकाओ। घी-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इसका नाम "क्षीरबल्लभ घृत" है। इसमेंसे बलाबल अनुसार ६ माशेसे २ तोले तक घी पीनेसे सब तरहके हृदय रोग और अपतंत्रक रोग नाश हो जाते हैं।

बलाद्य घृत।

(७) खिरेंटी, गंगेरन—गुलसकरी और कोहकी छाल—तीनों मिलाकर तीन छटाँक ले लो। फिर जौकुट करके इसमें तीन सेर पानी डालकर औटाओ। जब तीन पाव काढ़ा रह जाय, उतारकर छान लो। आध पाव मुलेठी सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। अब तीन छटाँक घी, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर पका लो। जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इसमेंसे ६ माशेसे २ तोले तक घी पीनेसे हृदय-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शूल, शूल, घाव, रक्तपित्त, खाँसी और दारुण वातरक्त ये सब नाश हो जाते हैं।

पिप्पल्यादि चूर्ण।

(८) पीपर, सोंठ, अनारदाना, कालानोन और भुनी हींग—बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर नीबूके रसमें खरल करके जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम पानीके साथ खानेसे असाध्य हृदय रोग दूर हो जाता है। परीक्षित है।

कुकुभादि चूर्ण।

(९) अर्जुनकी छाल, बच, रास्ना, खिरेंटी, गुलसकरी, हरड़, कचूर, कूट, पीपर और सोंठ—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण १ तोले गायके घीमें मिलाकर खानेसे हृदय रोग नाश हो जाते हैं। इसको "कुकुभादि चूर्ण" कहते हैं। परीक्षित है।

हृदय रोगकी अपूर्व दवा।

(१०) दाख ४ भाग, शहद ३ भाग और घी २ भाग मिलाकर कुछ दिन सेवन करनेसे हृदयकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

पुष्कर चूर्ण।

(११) पोहकरमूलका चूर्ण "शहद"के साथ चाटनेसे जी मिचलाना, खाँसी, श्वास और हृदय-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

कल्याण सुन्दर रस।

(१२) रससिन्दूर, अभ्रक-भस्म, चाँदी-भस्म, ताम्बा-भस्म, सुवर्ण-भस्म और शुद्ध हिंगुल बराबर-बराबर लेकर खरलमें डालो। ऊपरसे "चीतेका रस" दे-देकर दिन भर खरल करो और सुखा दो। फिर सात दिन तक "हाथी शुंडा"के रसमें खरल करो और रात भर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूखने दो। आठवें दिन रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम या जरूरतके समय, एक-एक गोली खिलाकर, ऊपरसे गरम दूध पिलाओ। इस रससे हृदयके सभी रोग नाश हो जाते हैं।

हृदयेश्वर रस।

शुद्ध पारा १ तोले और शुद्ध गन्धक १ तोले मिलाकर ४।५ घण्टे तक खरल करो। फिर इसमें १ तोले "ताम्बा भस्म" मिला दो और त्रिफलेका काढ़ा दे-देकर दिन भर खरल करो और रात भर सूखने दो। दूसरे दिन "काकमाचीके रस"के साथ खरल करो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली "अर्जुनकी छालके रस या काढ़े"के साथ लेनेसे हृदय-रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

अपूर्व योग।

कलौंजीको पीसकर रख लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण सवेरे-शाम १ छटाँक "गधीके दूध"के साथ खानेसे हृदयकी कमजोरी, हृदयकी धड़कन आदि शीघ्र ही कम होकर, हृदय बलवान होता और हृदयकी चाल ठीक हो जाती है। एक परमहंस बाबा वैद्य लिखते हैं कि, इसको हमने सभी योगोंसे उत्तम पाया। इससे सब तरहके हृदय रोग नाश हो जाते हैं। पराया परीक्षित है हमारा नहीं।

अर्क नारंगी।

नारंगीके फूलोंका भभकेके द्वारा अर्क खींच लो। इस अर्कके पीनेसे हृदय-रोग और रक्तपित्त आराम हो जाते तथा शरीरमें फुर्ती आती है।

नोट—जो अर्क न खींच सकें वे नारङ्गीके फूलोंका काढ़ा बना लें। नारंगी बड़ा उत्तम फल है। इसके सब अंग दवाके काममें आते हैं:—

(१) नारंगीके ऊपर जो लाल छिलका होता है, उसे सुखाकर पीस लो और "गुलाब जल" में मिलाकर शरीरपर लगाओ। इससे दाद, खाज, चकत्ते और अनेक तरहके खून-विकारके रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) नारंगीका शर्बत, नारङ्गीका पाक या मुरब्बा खानेसे हृदय-रोगमें बड़ा फायदा होता है।

उरोग्रह-वर्णन।

निदान और लक्षण।

अत्यन्त अभिष्यन्दी पदार्थ, भारी अन्न, सूखा और बदबूदार मांस खानेसे—मांस और खूनके संयोगसे—यकृत और तीहा जिस समय बढ़ते हैं, उस समय कफ और वात, कोखमें जाकर—"उरोग्रह-रोग" करते हैं।

स्तम्भ, ज्वर, रूखापन, स्पर्शका न सह सकना, भारीपन, पेट फूलना, अरुचि, हृदयमें सूजन, अधोवायुका रुकना, मल-मूत्र रुकना, तन्द्रा और शूल ये लक्षण उरोग्रहमें होते हैं।

चिकित्सा।

नोट—पहले युक्तिपूर्वक पसीने निकालो, लोह आदिकी शलाकासे दाग दो, फ़स्द खुलवाओ और तेज़ दवाओंसे निरूह वस्ति करो; यानी गुदामें पिचकारी दो, बलाबल अनुसार वमन-विरेचन देकर शुद्ध करो और रोग रोकनेवाला पथ्य दो।

(१) जीयापोता, सहँजना, हुलहुल या खिरेंटी—इनमेंसे किसी एकका रस गरम करो। फिर उसमें हींग और पाँचों नमक डालकर पीलो। इससे उरोग्रह रोग शान्त हो जाता है।

(२) निशोथ और गुड़ मिलाकर और गोमूत्रके साथ पीसकर खानेसे उरोग्रह नाश हो जाता है।

(३) दही, अम्लवेत, जवाखार, हींग और चीता बराबर-बराबर लेकर तेल और काँजीके साथ पीनेसे उरोग्रह नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सत्रहवाँ अध्याय

मूत्रकृच्छ्र रोग वर्णन ।

मूत्रकृच्छ्र किसे कहते हैं ?

जिस रोगमें पेशाब बड़ी तकलीफके साथ होता है, उसे "मूत्रकृच्छ्र" कहते हैं।

मूत्रकृच्छ्रके सामान्य लक्षण ।

मूत्रकृच्छ्र रोग होनेसे पेशाब बड़ी तकलीफके साथ बूँद-बूँद अथवा कच्चे खूनके साथ थोड़ा-थोड़ा उतरता है। नाभि या सूंडीके नीचे, जाँघोंमें और मूत्रनलीमें बड़ी वेदना होती है। मूत्रकृच्छ्रके यही सामान्य लक्षण हैं।

मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातमें भेद ।

मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात दोनों ही पेशाबके रोग हैं, दोनों ही में पेशाब करते समय तकलीफ होती है, फिर दोनोंमें फ़र्क क्या है ? मूत्रकृच्छ्रमें पेशाबकी रुकावट थोड़ी देर तक रहती है और मूत्राघातमें पेशाबकी रुकावट बहुत ही जियादा देर तक रहती है। मूत्रकृच्छ्रमें पेशाब करते समय बहुत ही जियादा तकलीफ होती है,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परन्तु मूत्राघातमें पेशाब करते समय बहुत ही कम तकलीफ होती है। मतलब यह है कि, मूत्रकृच्छ्रकी अपेक्षा मूत्राघातमें पेशाब करते समय दर्द कम होता है। मूत्राघातमें पेशाब रुक-रुककर थोड़ा-थोड़ा होता है या बन्द ही हो जाता है;किन्तु मूत्रकृच्छ्रमें पेशाब इतनी देर नहीं रुकता।

मूत्रकृच्छ्रके निदान।

बहुत ही जियादा कसरत करने, राई आदि तीक्ष्ण पदार्थ या तीक्ष्ण दवा खाने, रूखा अन्न खाने, रूखी शराब पीने, बहुत नाचने, घोड़ा आदिकी सवारी करने और उन्हें बहुत दौड़ाने, बरसातके पानीमें डूबे हुए स्थानोंके जानवरोंका मांस खाने अथवा अनूप देशकी मछलियोंका मांस खाने, भोजन-पर-भोजन करने, अजीर्ण होने और मल-मूत्रादिके वेग रोकनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग पैदा होता है। यह रोग आठ तरहका होता है।

मूत्रकृच्छ्रकी क़िस्में।

मूत्रकृच्छ्र रोग आठ तरहका होता है:—

(१) वातज,	(२) पित्तज,
(३) कफज,	(४) सन्निपातज,
(५) आगन्तुक,	(६) पुरीषज,
(७) अश्मरीज,	(८) शुक्रज।

वातज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

वातज मूत्रकृच्छ्र होनेसे दोनों वंक्षण या पट्ठों, पेड़ू या मूत्राशय और लिंगमें अत्यन्त वेदना होती और बारम्बार थोड़ा-थोड़ा पेशाब होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

पित्तज मूत्रकृच्छ्रमें—दर्द और जलनके साथ बारम्बार पीला या लाल पेशाब आता है।

नोट—"भावप्रकाश"में लिखा है, बारम्बार पीला, खून-मिला हुआ, वेदना और जलनके साथ पेशाब होता है।

कफज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

कफज मूत्रकृच्छ्रमें—लिंग और पेड़ूमें भार या बोझा-सा मालूम होता है, सूजन होती है और पेशाब चिकना-सा या लिबलिबा-सा होता है।

सन्निपातज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्रमें—ऊपर लिखे हुए तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं।

आगन्तुक मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

पेशाब बहानेवाली नलीमें काँटे वग़ैरः लगनेसे घाव हो जाने और मुट्ठी वग़ैरःकी चोट लगनेसे जो रोग होता है, उसे आगन्तुक या शल्यज मूत्रकृच्छ्र कहते हैं। इसमें मृत्युके समान घोर वेदना होती है। इस मूत्रकृच्छ्रके लक्षण वातज मूत्रकृच्छ्रके जैसे होते हैं।

पुरीषज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

मलका वेग रोकनेसे दूषित हुआ वायु पेटमें अफारा करता है और पेशाब करते समय शूल चलते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अश्मरीज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

पथरी होनेसे जो मूत्रकृच्छ्र होता है, उसे अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र या पथरीका मूत्रकृच्छ्र कहते हैं। छातीमें दर्द, कम्प, कोख-शूल, मन्दाग्नि, मूर्च्छा और दारुण मूत्रकृच्छ्र, ये पथरी या शर्कराके उपद्रव हैं।

नोट—सुश्रुतमें शर्कराजन्य मूत्रकृच्छ्र नवाँ लिखा है; लेकिन और आचार्योंने आठकी गिनती रखनेके लिये शर्कराके मूत्रकृच्छ्रको अलग नहीं लिखा। फिर पथरी और शर्करामें विशेष भेद भी नहीं है। पित्तसे पककर, वायुसे सूखकर और कफके संयोगसे पथरी बनती है। मूत्र, वीर्य और कफके समुदायको पथरी कहते हैं। जब वही पथरी कफके संयोगसे छूटकर, मूत्र-मार्गसे कंकरीके रूपमें झरने लगती है, तब उसे शर्करा या कंकरी कहते हैं।

शुक्रज मूत्रकृच्छ्रके लक्षण।

दूषित वीर्यके मूत्र-मार्गमें रहनेसे शुक्रज मूत्रकृच्छ्र होता है। इस रोगमें पेड़ू और लिंगमें शूलके समान दर्द होता और बड़े कष्टसे पेशाब होता है।

"भावप्रकाश"में लिखा है, वीर्यके दोषसे दूषित होकर मूत्र-मार्ग सुकड़ जाता है, तब पेशाब थोड़ा-थोड़ा होता है, मूत्रके साथ वीर्य निकलता है और मूत्राशय तथा लिङ्गमें दर्द होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्रकृच्छ्रकी
विशेष चिकित्सा ।

वातज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े ।

नोट—वायुका मूत्रकृच्छ्र हो, तो वैद्यको चाहिये रोगीके शरीरमें तैलादिकी मालिश करावे, स्नेह कर्म करे, निरूह और उत्तर बस्ति दे, अंगोंमें उचित दवा बँधवावे; घी वग़ैरःसे सेक करावे तथा शालपर्णी आदि वातनाशक पदार्थोंसे पकाये हुए रस पिलावे ।

(१) गिलोय, सोंठ, आमले, असगन्ध और गोखरूका काढ़ा "शहद" मिलाकर पिलानेसे वातज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है ।

पित्तज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े ।

नोट—पित्तज मूत्रकृच्छ्र होनेसे—वैद्यको चाहिये कि, रोगीके अंगोंपर जल और चन्दन वग़ैरः शीतल पदार्थ छिड़के; शीतल जलमें घुसकर स्नान करावे; शीतल खस और चन्दनादिका लेप करावे; ग्रीष्म ऋतुके अनुसार उपचार करे; दाखका रस, विदारीकन्दका रस, ईखका रस तथा घी—इनकी पिचकारी लगावे तथा इन्हीं पदार्थोंको डालकर दूधके विकार खिलावे ।

(१) शतावरके रसमें चीनी मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है ।

(२) कुश, काँस, रामसर, दाभ और ईखकी जड़को "तृणपंच-मूल" कहते हैं । इस पञ्चमूलके सेवन करनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाता है तथा बस्त्याशय या पेड़ू साफ हो जाता है । तृणपंचमूलको दूधमें औटाकर पीनेसे लिंगसे खूनका गिरना बन्द हो जाता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) शतावर, काँस, कुश, गोखरू, विदारीकन्द, शालि चावल, ईख और कसेरू—इनका काढ़ा पकाकर और शीतल करके, उसमें "शहद और घी" अथवा शहद और मिश्री मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है। इसका नाम "शतावर्य्यादि क्वाथ" है॥ परीक्षित है।

(४) खीरेके बीज, मुलेठी और दारुहल्दी—इनको चावलोंके जलमें पीसकर चावलोंके धोवनके साथ पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है। इसे "एर्वारु बीजादि पान" कहते हैं। परीक्षित है।

(५) दारुहल्दीको पीसकर, उसमें "आमलोंका रस और शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है।

(६) हरड़, गोखरू, अमलताशका गूदा, पाषाणभेद और धमासा—इनका काढ़ा बनाकर और "शहद" मिलाकर पीनेसे पित्तज मूत्रकृच्छ्र, दाह, विबन्ध और पीड़ा शान्त हो जाती है। इसका नाम "हरीतक्यादि क्वाथ" है।

नोट—पित्तज मूत्रकृच्छ्रमें नं० ३ शतावर्य्यादि क्वाथ और यह नं० ६ हरीतक्यादि क्वाथ बहुत अच्छे हैं।

कफज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

नोट—क्षार, गरम और तीक्ष्ण दवा, अन्नपान, स्वेदन, जौका भोजन, वमन, निरूहण बस्ति, तक्र और कड़वे पदार्थोंसे तथा गरम पदार्थोंसे पकाये हुए तेलकी मालिश करने और उसी तेलके पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्रमें लाभ होता है।

(१) संभालूके बीज माठेके साथ पीने अथवा मूँगेकी भस्म चावलोंके धोवनके साथ पीने अथवा गोखरूका चूर्ण सोंठके काढ़ेके साथ पीनेसे कफज मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) छोटी इलायचीका चूर्ण गोमूत्रके साथ या केलेके स्वरसके साथ खानेसे अथवा केलेके स्वरसमें पीसकर और गोलियाँ बनाकर खानेसे कफज मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है। परीक्षित है।

त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

नोट—त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्रमें कफाधिक्य हो, तो पहले वमन कराओ; पित्त अधिक हो, तो विरेचन कराओ और वाताधिक्य हो, तो बस्ति प्रयोग करो।

(१) बड़ी कटेरी, पृष्ठपर्णी, पाढ़, मुलेठी और इन्द्रजौका काढ़ा पीनेसे त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नाश होता है।

(२) गुड़को दूधमें मिलाकर और ज़रा गरम करके पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र, शर्करा और वात रोग नष्ट हो जाते हैं।

(३) छै माशे जवाखार और ६ माशे गुड़ मिलाकर खानेसे त्रिदोषज मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। परीक्षित है।

आगन्तुक मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

नोट—चोट आदि लगनेसे जो मूत्रकृच्छ्र हो, उसमें वातज मूत्रकृच्छ्रके समान चिकित्सा करो।

(१) पंचवीरी वृक्षोंकी छालको सिलपर पानीके साथ पीसकर, ज़रा गरम करो और मूत्राशयपर लेप कर दो। इससे चोट लगनेसे हुआ मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) मूत्रकृच्छ्रमें पेशाबके साथ खून आता हो, तो आमलोंके रस और ईखके रसमें शहद मिलाकर पीओ। अथवा औटाया हुआ दूध शहद और आधा बूरा मिलाकर पीओ। अथवा शराबमें घी, मिश्री और शहद मिलाकर पीओ। ये तीनों नुसख़े उत्तम हैं।

पुरीषज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

गोखरूके बीजोंके काढ़ेमें जवाखार मिलाकर पीनेसे पुरीषज या मल रोकनेसे हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

अश्मरीज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

(१) गोखरूके बीज, अमलताशका गूदा, कुश, काँस, जवासा, पाथरचूर और हरड़—इन सबका काढ़ा या चूर्ण शहदके साथ सेवन करनेसे पथरीका मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) अकेले पाथरचूरका रस या काढ़ा पीनेसे पथरीका मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

नोट—पाथरचूरको "पाषाणभेद" भी कहते हैं।

(३) एक तोले ककड़ीके बीज पीसकर और काँजी तथा सैंधानोन मिलाकर खानेसे पथरीका मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

(४) सतौना, अमलताशका गूदा, केतकी, इलायची, नीमकी छाल, करंज, कुड़ेकी छाल और गिलोय—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे पथरीसे हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुक्रज मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

(१) शुद्ध शिलाजीत "शहद"में मिलाकर चाटनेसे शुक्रके दोषसे हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) इलायची, हींग और घी—इनको दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्र और हृदय शुद्ध हो जाते तथा वीर्यका दोष नष्ट हो जाता है।

सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाशक नुसख़े।

(१) छै माशे जवाखारको ६ माशे मिश्री मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं।

(२) दो तोले आमलोंके काढ़ेमें १ तोले "गुड़" मिलाकर पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। इस दवासे थकान, खून-विकार, दाह, पित्त और शूल रोग नाश हो जाते हैं। यह वृष्य और तृप्तिकर है। परीक्षित है।

(३) हुलहुलके ६ माशे बीज "बासी पानीमें" पीस-छानकर पीनेसे सब तरहके असाध्य मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है। (सूरजमुखीको ही हुलहुल कहते हैं।)

(४) तीन माशे जवाखार और एक तोले चीनी मिला हुआ सफेद कुम्हड़ेका रस पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५) माठेके साथ ४ माशे शुद्ध गन्धक खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) छै माशे जवाखार और १ तोले शहद मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) खिरेंटीकी जड़का काढ़ा पीनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

(८) खीरेके बीज और तिल—एकत्र पीसकर घी और दूधके साथ पीनेसे समस्त मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

(९) इलायची, पाषाणभेद, शुद्ध शिलाजीत, पीपर, खीरेके बीज, सैंधानोन और केसर,—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ४ या ६ माशे चूर्ण "चावलोंके धोवन"के साथ खानेसे मरता हुआ मूत्रकृच्छ्र-रोगी भी आराम हो जाता है।

नोट—इलायची, पाषाणभेद, शुद्ध शिलाजीत और पीपर इन सबका चूर्ण चावलोंके धोवनके साथ लेनेसे भी मरता हुआ मूत्रकृच्छ्र-रोगी आराम हो जाता है।

(१०) लोहेकी भस्म महीन पीसकर और "शहद" में मिलाकर ३ दिन खानेसे मूत्रकृच्छ्र रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। इसमें ज़रा भी शक नहीं।

(११) कटेरीका सोलह तोले स्वरस "शहद" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश होकर सुख होता है। परीक्षित है।

(१२) हरड़, बहेड़े और आमलेको पानीके साथ सिलपर पीसो। फिर इसमें बेरोंकी मींगी और सैंधानोन मिलाकर पीलो। इससे भी मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है।

(१३) जौ, अरण्ड, तृण-पञ्चमूल, पाषाणभेद, शतावर, गूगल और हरड़—इनके काढ़ेमें "गुड़" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

(१४) कुश, काँस, ईख, रामसर और नरसलकी जड़ पीसकर पीनेसे मूत्राघात और पथरीसे हुआ मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। यह नुसख़ा रुधिर-विकारोंको भी दूर करता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१५) दाख और मिश्री पीसकर "दहीके तोड़" के साथ खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं।

(१६) विदारीकन्द, सारिवा, मेढ़ासिंगी, गिलोय, हल्दी, बायबिड़ङ्ग और तृण-पंचमूल—इनको पीसकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र फौरन आराम होता।

(१७) आमलोंके ६ माशे चूर्णमें १ तोले "गुड़" मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते।

(१८) शुद्ध शिलाजीत, गोखरू, पाषाणभेद, इलायची, केशर, ककड़ीके बीज और सैंधानोन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार या माशे चूर्ण चावलोंके धोवनके साथ खानेसे घोर असाध्य मूत्रकृच्छ्र भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—नं० १ नुसख़े और इस नुसख़ेमें बहुत थोड़ा भेद है।

(१९) शुद्ध आमलासार गन्धक चार माशे, जवाखार चार माशे और मिश्री १ तोले मिलाकर पाव भर माठेके साथ खानेसे असाध्य मूत्रकृच्छ्र भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) गायके आध सेर दूधमें तीन तोला "गुड़" मिलाकर औटाने और पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) दो तोले गोखरूको पाव भर पानीमें औटाओ। जब एक छटाँक पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो। फिर उसमें चार माशे "जवाखार" मिला दो और पीलो। इससे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२२) आमले, मुनक्के, विदारीकन्द, मुलेठी और गोखरू—कुल दो तोले लेकर, जौकुट करके डेढ़ पाव जलमें औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, छानकर शीतल करो और दो तोले "मिश्री" मिलाकर पीलो। इससे घोर मूत्रकृच्छ्र भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२३) अगर पेशाबके साथ खून आता हो, तो दो तोले सफेद चन्दनका बुरादा मिट्टीकी हाँड़ीमें, रातके समय, आध पाव पानीमें डालकर भिगो दो और सवेरे ही उसे मलकर छान लो। पहले चाकसूके २१ बीज चबाकर, ऊपरसे रक्खा हुआ चन्दनका पानी पीलो। इस नुसखेसे पेशाबकी नलीसे खून आना अवश्य बन्द हो जाता है।

(२४) बबूलकी नर्म पत्ती १ तोले और गोखरू १ तोले—इन दोनोंको सिलपर पीसकर आध पाव पानीमें मिलाकर कपड़ेसे छान लो और २ तोला "मिश्री" मिलाकर पीलो। इससे सोज़ाक और मूत्रकृच्छ्र अवश्य आराम हो जाते हैं।

(२५) गन्दे बिरौज़ेका सत्त १ माशे और गुड़ १ माशे—दोनोंको मिलाकर खाओ और ऊपरसे आध पाव दहीमें छटाँक भर पानी मिला कर पीलो। इस नुसखेसे सोज़ाक नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) भुनी फिटकरी २ माशे, गेरू २ माशे और मिश्री ६ माशे—इन तीनोंको पीस-छान लो। यह एक मात्रा है। इसे खाकर ऊपरसे गायका कच्चा धारोष्ण दूध पीनेसे १५।२० दिनमें सोज़ाक निश्चय ही जाता रहता है। परीक्षित है।

(२७) छै माशे राल और ६ माशे मिश्री मिलाकर पानीके साथ नित्य खानेसे पेशाबके साथ कच्चा खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२८) छै माशे कल्मी शोरा और ६ माशे बड़ी इलायचीके बीज पीसकर खाने और ऊपरसे लाल साँठी चावलोंका धोवन पीनेसे सोज़ाक अवश्य ही दूर हो जाता है।

(२९) छै माशे जवाखार और ६ माशे मिश्री मिलाकर खानेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३०) दो तोले गोखरूके काढ़ेमें २ माशे "जवाखारका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाता है।

(३१) छोटी इलायची, हींग और घी मिलाकर दूध पीनेसे पेशाबका कष्टसे होना और वीर्य मिला हुआ पेशाब आना आराम हो जाता है।

(३२) लघु पंचमूलका काढ़ा पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राश्मरी—मूत्रकी पथरी ये आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३३) छोटी इलायची, गोखरू, भुइँ आमला, मिश्री और गायके दूधके साथ १ या २ रत्ती "अभ्रक भस्म" खिलानेसे प्रमेह और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इलायची आदि चारों चीज़ोंका चूर्ण ४ माशे और अभ्रक भस्म २ रत्ती—इनको मिलाकर ऊपरसे गायका थन-दुहा धारोष्ण दूध पीना चाहिये। परीक्षित है।

(३४) सफेद कमलकी गाँठका चूर्ण ६ माशे, ज़ीरेका चूर्ण ३ रत्ती, शक्कर ६ माशे और घी एक तोले मिलाकर सवेरे-शाम पीनेसे प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र और सोज़ाक रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३५) बाँझ ककोड़ेकी गाँठ १ तोले "शहद"में मिलाकर चाटनेसे श्वेत प्रदर और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३६) तरबूज़के अन्दरका पानी पाव भर, ज़ीरा १ माशे और मिश्री ६ माशे मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३७) शीतलचीनी, छोटी इलायची, गिले अरमनी—लाल गेरू, हजरल यहूद और बिरौंजेका सत्त—इन सबको दो-दो तोले लेकर पीस-छान लो। फिर चूर्णके बराबर "मिश्री" पीसकर मिला दो। इसमेंसे चार-चार माशे चूर्ण सवेरे-शाम पानी-मिले कच्चे दूधके साथ खानेसे पेशाबकी जलन, पेशाबमें पीप आना वग़ैरः समेत

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोज़ाक रोग नाश हो जाता है। सोज़ाकके लिए उत्तम नुसख़ा है। परीक्षित है।

(३८) चन्दनका तेल, बिरौंजेका तेल और शीतलचीनीका तेल एक-एक तोले लेकर मिला लो और एक शीशीमें रख दो। इसमेंसे १०।१० या २०।२० बूँद तेल ६ माशे मिश्रीमें मिलाकर, दिनमें तीन या चार बार खानेसे पेशाबकी जलन, पीप आना, खड़ियाके जैसा पेशाब आना वग़ैरः सोज़ाककी शिकायतें मिट जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—सोज़ाकवालेको अगर नीचेका "शाही जुलाब" देकर दो-चार दस्त करा दिये जायँ और फिर दवा दी जाय, तो बहुत जल्दी लाभ हो। रातके समय एक छटाँक मौसमी गुलाबके फूल लाकर एक मिट्टीकी कोरी हाँडीमें आध सेर पानी डालकर भिगो दो। सवेरे ही फूलोंको मसलकर पानीको छान लो। उस गुलाबके पानीमें एक छटाँक पुराने हंसराज चावल डालकर पकाओ। जब चावल सीज जायँ, उनमें एक छटाँक भर मिश्री पीसकर डाल दो और पकने दो। जब खूब पक जायँ, उतारकर रोगीको खिलाओ। इससे चार-पाँच दस्त आसानीसे साफ होंगे। अगर दस्त न हों, तो थोड़ा-सा गरम जल या सौंफका अर्क़ पिला दो। दस्त हो जानेपर, तीसरे पहर हल्का भोजन दो। यह बड़ा उत्तम बादशाही जुलाब है। अमीरी चीज़ है।

(३९) दो तोले पके फालसे आध पाव पानीमें एक घण्टे तक भिगो रखो। फिर उस पानीको मल-छानकर उसमें १ तोले मिश्री मिलाकर पीलो। इस उपायसे पेशाबकी जलन और पेशाबका कम होना आदि सारी सोज़ाककी शिकायतें रफा हो जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—जिस मौसममें फालसे न मिलें, उसमें फालसेके पेड़की जड़ लाकर कूट लो और फिर भिगो दो। सवेरे ही मिश्री मिलाकर पीओ।

(४०) एक तोले शहदको ८ तोले पानीमें घोलकर शर्बत बना लो। उसमें आधी रत्ती "केशर" पानीमें पीसकर मिला दो। फिर उसे साफ पत्थर या काँचके बासनमें रात भर रखा रहने दो और सवेरे ही पीलो। इससे पेशाबका रुकना, पेशाबमें कष्ट होना वग़ैरः मूत्रकृच्छ्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और मूत्राघातकी शिकायतें जाती रहती हैं। मूत्राघातपर हमने इसकी परीक्षा की है।

(४१) जिसपर फूल न आये हों ऐसे सेमलके पेड़की नयी मूसली खोदकर, उसका दो तोले स्वरस निकालो और पीओ। इस उपायके लगातार कुछ दिन करनेसे पेशाबकी पीड़ा, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और सोज़ाक रोग आराम हो जाते हैं।

(४२) बिरौजेका सत्त, सफेद कत्था, कल्मी शोरा, भुनी फिटकरी, सफेद चन्दनका बुरादा, केवड़ेके अर्क़में घुटा हुआ मूँगा, रेवन्दचीनी, गिले अरमनी—लाल गेरू, संग जराहत—सेलखड़ी, गेरू और हजरल यहूद—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। पीछे सबके बराबर "मिश्री" मिला दो। इसमेंसे चार-चार माशे चूर्ण सवेरे-शाम गायके दूधकी लस्सीके साथ खानेसे सोज़ाक, पेशाबकी जलन और पीप आना वग़ैरः निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है। लाख दवाओंकी एक दवा है।

(४३) सफेद ज़ीरा १ तोले, कल्मी शोरा ६ माशे, रेवन्दचीनी ८ माशे, शीतलचीनी ६ माशे और खरबूज़ेके बीज १ तोले—इनको पाव भर पानीमें पीसकर छान लो। फिर इसमें तीन तोले मिश्री मिलाकर, दो-तीन बारमें पीलो। इससे ७ दिनमें सोज़ाक और पेशाबकी जलन वग़ैरः आराम हो जाते हैं। जम्बूके पं० रघुनाथ शर्म्माजीका परीक्षित है।

(४४) भुनी फिटकरी ४ माशे, शीतलचीनी ६ माशे, सफेद कत्था ६ माशे, बड़ी इलायचीके बीज ६ माशे, सेलखड़ी ६ माशे और राल ६ माशे—सबको पीस-छान लो। इसमेंसे चार-चार माशे दवा गायके कच्चे दूधके साथ खानेसे पेशाबकी जलन, सोज़ाक और पेशाबके अन्य रोग नाश हो जाते हैं। चौबे ज्वालादत्तजी वैद्य ठाकुरद्वाराका परीक्षित नुसख़ा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—आप कहते हैं,—हरड़ १ माशे, रसौत १ माशे और पपरिया कत्था १ माशे—इनको आध सेर पानीमें रातको भिगो दो; सवेरे ही छानकर पिचकारी लगाओ। इससे पेशाब साफ़ आता है और जलन वग़ैरः उपद्रव फ़ौरन शान्त होते हैं। ऊपरकी दवा खाने और यह पिचकारी लगानेसे शीघ्र ही सोज़ाक भाग जाता है।

(४५) बंसलोचन ४ माशे, छोटी इलायचीके बीज ४ माशे, सफेद चन्दनका बुरादा ४ माशे, शीतलचीनी ३ माशे, रेवन्दचीनी ३ माशे, जवाखार ३ माशे और कल्मी शोरा ३ माशे—सबको कूट-पीसकर छान लो। फिर सारे चूर्णके बराबर "मिश्री" पीसकर मिला दो। इसमेंसे छै-छै माशे चूर्ण, सवेरे-शाम, चावलोंके धोवनके साथ खानेसे नवीन सोज़ाक और पेशाबकी जलन आदि नाश हो जाते हैं। यह नुसख़ा एक जगन्नाथप्रसाद नामक सज्जनका आज़मूदा है।

(४६) चावलोंके माँड़में "सफेद चीनी" मिलाकर पिलानेसे पेशाबकी जलन और रुकावट मिट जाती है।

(४७) सफेद ज़ीरा ६ माशे और मिश्री ६ माशे कूट-पीसकर दोनों समय फाँकने और ऊपरसे "बताशोंका शर्बत" पीनेसे पेशाबकी जलन और कड़क मिट जाती है।

(४८) बुहारीका ज़ीरा रातको भिगो देने और सवेरे ही मल-छानकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पेशाबकी जलन शान्त हो जाती है।

(४९) दूबके स्वरसमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पेशाबमें खून आनेका रोग मिट जाता है।

(५०) अगर पेशाब करते समय भयंकर पीड़ा होती हो और पेशाबका रंग लाल हो; तो मुण्डीका स्वरस पीओ और उसीकी मूत्र-नलीमें पिचकारी लगाओ। इससे पेशाब साफ होगा और दाह, जलन, घावकी पीड़ा वग़ैरः शान्त हो जायँगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इसी उपायसे औरतोंकी मूत्रनलीकी जलन, योनि-शूल, जरायु पीड़ा और योनिकी खुजली आदि आराम हो जाते हैं। मुण्डीका रस पीना चाहिये और उसीकी पिचकारी लगानी चाहिये। स्त्री-पुरुषके जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगोंमें मुण्डी अच्छा काम करती है। सोज़ाक होनेके बाद अक्सर धातु दूषित हो जाती है। इसलिये, ऊपरके नुसख़ेसे सोज़ाक आराम होनेपर मुण्डी, शतावर, असगन्ध, सोंठ और भाँग—समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। फिर घी और चीनी मिलाकर एक-एक तोलेके लड्डू बना लो। सवेरे शाम एक-एक लड्डू गरम दूधके साथ खानेसे बल, वीर्य और रति-शक्तिकी वृद्धि होती है।

मूत्रकृच्छ्र नाशक उत्तमोत्तम योग।

मूत्रकृच्छ्रान्तक रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और जवाखार,—इन तीनोंको बराबर-बराबर ले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करके कज्जली बना लो। फिर "जवाखार" मिलाकर खरल करो और शीशीमें रख दो। इसमेंसे दो या तीन रत्ती रस "चीनी और छाछ"के साथ सेवन करनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

कृच्छ्रान्तक रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, बंगभस्म, अभ्रक-भस्म, जवासा, जवाखार, गोखरूके बीज और हरड़—बराबर-बराबर छै-छै माशे लो। पारे और गन्धकको ३।४ घण्टे खरल करके, उसमें लोहभस्म, वङ्गभस्म और अभ्रक-भस्म मिला दो। इसके बाद जवासा, जवाखार, गोखरू और हरड़को पीस-छानकर मिला दो। अब एक दिन भतुवेका पानी दे-देकर खरल करो और रातको सूखने दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूसरे दिन पंचमूलका काढ़ा दे-देकर खरल करो और रातको सूखने दो। तीसरे दिन गोखरूका काढ़ा दे-देकर खरल करो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "शहद और गूलरके बीजोंके १ माशे चूर्ण"के साथ सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग आराम होते हैं।

कुशावलेह।

कुश, कास, खस, काली ईख और सरकण्डेकी जड़ दस-दस तोले लेकर जौकुट कर लो। फिर इसको १६ सेर पानीमें मिलाकर औटाओ; जब दो सेर पानी रह जाय, छान लो।

फिर इस काढ़ेमें आध सेर "चीनी" मिलाकर औटाओ; जब चाशनी चाटने लायक़ गाढ़ी हो जाय, उतार लो और उसमें मुलेठी, ककड़ीके बीज, कुम्हड़ेके बीज, खीरेके बीज, बंसलोचन, आमले, तेजपात, दाल-चीनी, इलायची, नागकेशर, वरनाकी छाल, गिलोय और प्रियङ्गु-फूल—का छै-छै माशे पिसा-छना चूर्ण मिला दो।

इस अवलेहकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। अनुपान—ताज़ा पानी है। इसके सेवन करनेसे सब तरहके मूत्रकृच्छ्र, पथरी, मूत्राघात और प्रमेह नाश हो जाते हैं।

हमारे यहाँके छपे हुए भर्तृहरि कृत सचित्र शतकत्रय ज़रूर देखिये। इन तीनोंमें कोई १२५० सफे और ८० हाफटोन चित्र हैं। मूल्य वैराग्यशतकका ५), नीतिशतकका ५) और शृङ्गारशतकका ३॥) है। दो हज़ार सालमें ऐसा संस्करण नहीं हुआ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

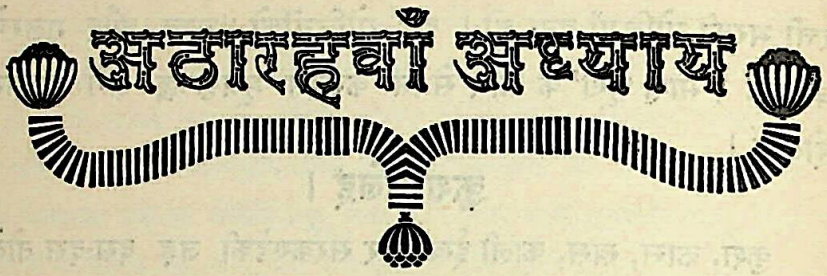

मूत्राघात-वर्णन ।

निदान-कारण ।

विशेषकरके मूत्रादिक वेगोंके रोकनेसे वातादि दोष कुपित होते हैं। कुपित हुए दोष, वातकुण्डलिका आदि, तेरह तरहके "मूत्राघात" रोग पैदा करते हैं।

मूत्राघातके लक्षण ।

जिस रोगमें पेशाब रुक-रुककर थोड़ा-थोड़ा होता है या पेशाब बन्द हो जाता है, उसे "मूत्राघात" कहते हैं। मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातका निदान एक ही है। प्रमेहसे भी यह रोग होता देखा जाता है। मूत्र-कृच्छ्र रोगकी अपेक्षा मूत्राघात रोगमें पेशाबमें कम तकलीफ होती है।

बूँद-बूँद पेशाब होना, पेशाबके साथ खून आना, मूत्राशयका फूलना, आध्मान—पेट फूलना, तेज़ दर्द होना, बस्ति या पेड़ूके मुँहपर पत्थरकी तरह सख्त गाँठ होना, गाढ़ा-गाढ़ा पेशाब होना, मलकी-सी गन्धवाला या मल मिला हुआ पेशाब होना वग़ैरः-वग़ैरः लक्षण मूत्राघात रोगमें होते हैं। सभी तरहके मूत्राघात बहुत ही ज़ियादा तकलीफ करनेवाले और कठिनसे आराम होनेवाले होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्राघातके भेद।

मूत्राघात रोग तेरह तरहके होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) वातकुण्डलिका,	(२) अष्ठीला,
(३) वात-बस्ति,	(४) मूत्रातीत,
(५) मूत्रजठर,	(६) मूत्रोत्संग,
(७) मूत्रक्षय,	(८) मूत्रग्रन्थि,
(९) मूत्रशुक्र,	(१०) उष्णवात,
(११) मूत्रसाद,	(१२) विड्विघात,

(१३) बस्तिकुण्डल।

वातकुण्डलिकाके लक्षण।

शरीरके रूखेपनसे अथवा मूत्रादि वेगोंके रोकनेसे दूषित हुई वायु, कुण्डलाकार—गोलाकार होकर और पेशाबमें मिलकर, पीड़ा करती है। मूत्रमें मिली रहनेके कारण "वायु" मूत्राशयमें ही घूमती रहती है; इस वजहसे थोड़ा-थोड़ा पेशाब तकलीफके साथ होता है। इस तीव्र और महादारुण रोगको "वातकुण्डलिका" कहते हैं।

अष्ठीलाके लक्षण।

"वायु" मूत्र और मलको रोककर, मूत्राशय और गुदामें अफारा करके—चंचल, ऊँची, तेज़ पीड़ावाली, मूत्र और मलकी राह रोकनेवाली पिण्डीके समान गोल गाँठ करती है। इसीको "अष्ठीला" कहते हैं।

वातबस्तिके लक्षण।

जो मूर्ख पेशाबकी हाजत रोकता है, उसके मूत्राशय—पेड़ूमें रहनेवाली "वायु" मूत्राशयके मुँहको बन्द कर देती है। मूत्राशयका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुँह बन्द हो जानेसे पेशाब रुक जाता है और बस्त्याशय तथा कूखमें पीड़ा होती है। इसी रोगको "वातबस्ति" कहते हैं। यह रोग कष्टसाध्य है।

नोट—बस्ति = मूत्राशय = पेड़ू। वायु बस्तिके मुखको बन्द करके पेशाबका रोग पैदा कर देती है, इसीलिये इसे "वातबस्ति" कहते हैं।

मूत्रातीतके लक्षण।

पेशाबको बहुत देर तक रोकनेसे पेशाब जल्दी नहीं उतरता अथवा थोड़ा-थोड़ा उतरता है। इस रोगको "मूत्रातीत" कहते हैं।

मूत्रजठरके लक्षण।

मूत्रका वेग रोकनेसे अपान वायु कुपित हो जाती है। कुपित हुई अपान वायु पेटको खूब भर देती है, तब नाभिके नीचे तेज़ दर्दके साथ अफारा होता है। इससे मूत्राशयके नीचेका भाग रुक जाता है। इस रोगको "मूत्रजठर" कहते हैं।

मूत्रोत्संगके लक्षण।

पेशाब करते समय बस्ति या लिंग या लिंगके अगले भागमें जब पेशाब रुक जाता है, तब मनुष्य हृदयके श्वासादिके ज़ोरसे पेशाब करता है। उस समय वायु मूत्राशयको फाड़कर, पीड़ाके साथ या बिना पीड़ाके, खून मिला हुआ थोड़ा-थोड़ा पेशाब धीरे-धीरे उतारती है। ऐसी दूषित वायुसे पैदा हुए रोगको "मूत्रोत्संग" रोग कहते हैं।

मूत्रक्षयके लक्षण।

रूखे और थके हुए मनुष्यके मूत्राशयमें रहनेवाले "पित्त और वायु" मूत्रका क्षय कर देते हैं; इससे पीड़ा और दाह होता है। इसे "मूत्रक्षय" रोग कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्रग्रन्थिके लक्षण।

मूत्राशयके भीतर अकस्मात गोल आकारवाली, स्थिर, छोटे आमलेके समान गाँठ हो जाती है। उसमें पथरीके जैसी पीड़ा होती है। उसको "मूत्रग्रन्थि" कहते हैं।

नोट—मूत्रग्रन्थि और पथरीमें क्या फ़र्क़ है? पथरी क्रम-क्रमसे मूत्रादिका संचय होकर होती है और यह गाँठ यकायक हो जाती है—यही फ़र्क़ है। दूसरा अन्तर यह है कि, पथरीमें पित्त ज़ियादा होता है; पर इस मूत्रग्रन्थिमें खून ज़ियादा होता है। कई ग्रन्थोंमें लिखा है—वायु और कफसे दूषित हुआ खून मूत्राशय—पेड़ू में अत्यन्त दारुण गाँठ पैदा करता है, जिससे बड़ी तकलीफके साथ पेशाब होता और पेशाबके साथ खून आता है।

मूत्रशुक्रके लक्षण।

जो पुरुष पेशाबकी हाजत होनेपर भी बिना पेशाब किये मैथुन करता है, उसका वीर्य—वायुसे भ्रष्ट होकर—मूतनेसे पहले या मूतनेसे पीछे राख मिले हुए पानीके समान गिरता है। इस रोगको "मूत्रशुक्र" कहते हैं।

उष्णवातके लक्षण।

बहुत मिहनत या कसरत करने, बहुत राह चलने और विशेषकर धूपमें फिरनेसे "पित्त" कुपित होकर, वायुके साथ पेड़ूमें जाकर, पेड़ू, लिंग और गुदामें दाह या जलन करता है। उस समय मनुष्य हल्दीके रंगका या ज़रा लाली लिये हुए अथवा खून मिला हुआ पेशाब कष्टके साथ बारम्बार करता है। इस रोगको "उष्णवात" कहते हैं।

मूत्रसादके लक्षण।

पित्त या कफ अथवा पित्त-कफ दोनों ही जब वायुसे दूषित हो जाते हैं; तब पीला, लाल, सफेद और गाढ़ा पेशाब कष्टके साथ होता हैं एवं पेशाब करते समय जलन होती है। वह पेशाब जब ज़मीनमें सूख जाता है, तब उसका रंग गोरोचन या शंखके चूर्णके समान हो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जाता है अथवा इन सब रंगोंके समान हो जाता है। उसे "मूत्रसाद" कहते हैं।

नोट—इस रोगके होनेसे बारम्बार लाल, पीला, सफेद, शंखकी भस्मके जैसा या इन सब रंगोंवाला गाढ़ा पेशाब जलनके साथ थोड़ा-थोड़ा होता है।

विड्विघातके लक्षण।

रूखे शरीरवाले दुबले आदमीका वायुसे ऊपरको चढ़ा हुआ मल जब पेशाबकी राहमें चला जाता है, तब पाखानेकी-सी बदबूवाला अथवा पाखाना मिला हुआ पेशाब होता है। इसीको "विड्विघात" कहते हैं।

वस्तिकुण्डलके लक्षण।

बहुत जल्दी दौड़ने या चलनेसे, लंघन करनेसे, अधिक मिहनत करनेसे, लकड़ी वग़ैरःकी चोट लगनेसे या दबानेसे बस्ति—मूत्राशय—अपनी जगहसे हटकर, ऊपरकी ओर चला जाता है और स्थूल होकर गर्भके जैसा हो जाता है। उससे शूल चलते, जलन होती, कँपकँपी आती और एक-एक बूँद पेशाब होता है। जब मनुष्य बस्ति या पेड़ूको ज़ोरसे दबाता है, तब बड़े ज़ोरसे पेशाबकी धारा गिरती, बस्तिमें सूजन आ जाती और पेटमें दर्द होता है। इस रोगको "वस्तिकुण्डल" कहते हैं।

इस रोगमें प्रायः "वायु" प्रबल होती है। यह रोग थोड़ी बुद्धिवाले वैद्योंसे आराम नहीं हो सकता। अगर यह रोग पित्ताधिक्यसे होता है, तो इसमें दाह, शूल और पेशाबका रंग बुरा होता है। अगर कफाधिक्यसे होता है, तो भारीपन और सूजन होती है तथा पेशाब चिकना, गाढ़ा और सफेद होता है। जिस बस्तिका मुँह कफसे बन्द हो जाता और पित्तसे व्याप्त होता है, वह असाध्य होती है। जिसका मुँह खुला रहता है, वह साध्य होती है। अगर वस्ति कुण्डलीकृत नहीं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती तो भी साध्य होती है। इस रोगके होनेसे प्यास, मोह और श्वास ये लक्षण होते हैं।

मूत्राघात-चिकित्सा।

नोट—पीड़ावाले मूत्राघात रोगमें स्नेहन तथा स्वेदन क्रिया करके, स्नेहयुक्त पदार्थोंसे विरेचन देना चाहिये और उत्तर बस्ति भी करनी चाहिये।

जिसके अत्यन्त मैथुन करनेसे पेशाबमें खून आता हो, उससे मैथुन-कर्म बन्द कराकर, धातुवर्द्धक उपाय करने चाहिये। इसके बाद मुर्ग़ेकी चरबी और तेलसे उत्तर बस्ति देनी चाहिये।

(१) नरसल, कुशा, काँस और ईखकी जड़का काढ़ा "मिश्री" मिलाकर और शीतल करके सवेरे ही पीना चाहिये। इस काढ़ेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

(२) काली मूसलीकी जड़का काढ़ा "घी, तेल और गायका दूध" मिलाकर पीनेसे बहुत पुराना मूत्राघात भी शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(३) पत्र, फूल, फल और जड़ समेत गोखरूका काढ़ा बनाकर, उसमें "शहद और मिश्री" मिलाकर पीनेसे मूत्राघात और कृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

(४) कपूरको पानीमें पीसकर, कपड़ेपर लपेटकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको लिङ्गके छेदमें रखनेसे बन्द हुआ पेशाव खुल जाता है।

नोट—केवल कपूरका टुकड़ा लिङ्गके मुँहमें रखनेसे पेशाब हो जाता है।

(५) कुम्भेर, पाषाणभेद, शतावर, चीता, कुटकी, तालमखाना, कमलगट्टा और बड़ा गोखरू—इनको समान-समान लेकर एकत्र पीसकर, शराबके साथ पीनेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI.
Acc. No. .....
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) मयूरशिखाकी जड़को चावलोंके धोवनके साथ पीसकर पीने और दूधके साथ भोजन करनेसे मूत्राघात रोग नाश हो जाता है।

(७) कटेरीका स्वरस माठेके साथ पीनेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

(८) केशरको पानीमें पीसकर और उसमें "शहद" मिलाकर रातको रख दो और सवेरे ही उठकर पीलो। इस उपायसे मूत्राघात रोग जाता रहता है।

(९) शराबमें "कालानोन" मिलाकर पीनेसे मूत्राघात रोग आराम हो जाता है।

(१०) गोखरू, अरण्डकी जड़ और शतावरको दूधमें औटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात आराम हो जाते हैं।

(११) तृणपंचमूलको दूधमें औटाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र आदि पेशाबके सभी रोग नाश हो जाते हैं।

(१२) गुड़, घी और दूध—इनको मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्र आदि समस्त मूत्र सम्बन्धी रोग आराम हो जाते हैं।

(१३) सफेद चन्दनको चावलोंके जलमें घिसकर और "मिश्री" मिलाकर पीने और औटाये हुए दूधको शीतल करके उसके साथ भोजन करनेसे खून समेत उष्णवात रोग नाश हो जाता है।

(१४) सफेद कुम्हड़ेके पानीमें "जवाखार और चीनी" मिलाकर पीनेसे मूत्ररोध नाश हो जाता है; यानी रुका हुआ पेशाब जारी हो जाता है।

(१५) चूहेकी मैंगनी "गरम काँजी"में पीसकर सेवन करनेसे मूत्रका अवरोध दूर होता है; यानी रुका हुआ पेशाब खुल जाता है।

नोट—चूहेकी मैंगनी ऊँटनीके मूत्रमें पीसकर खानेसे भी बन्द पेशाब जारी हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) गोधावतीकी जड़ (वटपत्री) का काढ़ा बनाकर, उसमें "घी, दूध और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे बहुत दिनका रुका हुआ पेशाब भी खुल जाता है। परीक्षित है।

(१७) ककड़ीके बीज एक तोले और सैंधानोन एक तोले, दोनोंको पीसकर और काँजीमें मिलाकर पीनेसे मूत्राघात रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१८) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, नागरमोथा और शुद्ध गूगल—सबको बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर "शहद और गोखरूके काढ़े"के साथ चूर्णको खरल करके, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे पेशाबका तकलीफसे होना, मूत्राघात, प्रमेह और प्रदर आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१९) मूत्राघात रोगमें तेल सींचना, रैंडीका तेल आदि स्नेह औषधियोंका विरेचन—जुलाब देना, जौंक लगाना और लिंगके छेदमें कपूर रखना हितकारी है।

नोट—पेड़ू पर चिड़ेकी बीटका लेप करनेसे रुके हुए मल-मूत्र उतरने लगते हैं।

(२०) जवाखार, इलायची और फिटकरीको समान-समान लेकर कूट-पीस लो। फिर इस चूर्णमें "शहद" मिला दो। इसमेंसे तीन माशे सवेरे ही खानेसे पेशाब खुलकर आता है और पेशाबकी राहसे पीप और खून आना भी बन्द हो जाता है।

(२१) एक मुट्ठी भर कीकरके फूल रातको कोरी मिट्टीकी हाँडीमें भिगो दो। सवेरे ही मल-छानकर और "शहद" मिलाकर पीलो। इससे सोज़ाक रोगमें अवश्य लाभ होता है।

नोट—पाँच तोले पानीमें दो चावल भर "सलफेट आव् ज़िंक" मिलाकर पिचकारी देने अथवा पाँच तोले जलमें एक चावल भर "सलफेट आव् कापर" मिलाकर पिचकारी देनेसे पेशाबकी राहसे मवाद आना यानी सोज़ाक रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२२) शुद्ध गन्दा बिरौजा १ माशे, छोटी इलायची ४ रत्ती और चंसलोचन ४ रत्ती मिलाकर दूधकी लस्सीके साथ खानेसे सब तरहका सोज़ाक आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर सोज़ाककी वजहसे लिङ्ग सूज जावे, तो नीमके पत्ते औटाकर लिङ्गको बफारा दो और वही पानी सुहाता-सुहाता लिङ्गपर ढालो। इससे सूजन आराम हो जायगी।

(२३) कलमीशोरा, रेवन्दचीनी, सफेद ज़ीरा और जवाखार बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण गायके दूधकी लस्सीके साथ फाँकनेसे पेशाब खूब खुलकर आता है। परीक्षित है।

(२४) एक मुट्ठी भर केशूके फूल पानीमें उबालकर, सुहाते-सुहाते, नाभिके नीचे, पेड़ू पर बाँधनेसे बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है।

नोट—मूत्र बन्द हो जाने या रुक जानेको फारसीमें "बन्द शुदन बोल" कहते हैं। गुर्दोंमें पथरी होने; सरदी-गर्मीका कोप होने, गुर्दोंके कमज़ोर होने या मूत्राशयमें सरदी बैठनेसे पेशाब बन्द हो जाता है। वातादि दोषका निश्चय करके उपाय करना चाहिये।

(२५) मूलीके पत्तोंके आध सेर स्वरसमें ३ माशे "कलमी शोरा" मिलाकर पिलानेसे शीघ्र ही पेशाव होने लगता है।

(२६) रोगीको नाभि तक गरम जलमें बैठानेसे पेशाब होने लगता है। अथवा पेड़ू पर गरम जलकी धारा डालनेसे पेशाब खुल जाता है।

(२७) सोडा-वाटर पिलानेसे भी बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है।

(२८) अगर पेशाब बूँद-बूँद होता हो, तो "अतरी-फल कबीर" देना चाहिये। इससे मूत्रका बूँद-बूँद आना आराम हो जाता है। जब तक लाभ न हो, दो-तीन बार देना चाहिये।

नोट—बूँद-बूँद पेशाबके आनेको हिकमतमें "तकतीरुल बौल" कहते हैं।

(२९) अगर पेशाब लोहूके समान होता हो, तो पिसा-छना "धनियाँ" चार माशे फँकाकर, ऊपरसे "शर्बत अनार" दो तोले या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"शर्बत खश-खाश" दो तोले पिलाना चाहिये। साथ ही चन्दन, अकाकीया और गेरू चार-चार माशे लेकर, पानीके साथ पीसकर, गुर्देपर २।३ बार लेप करना चाहिये; अवश्य लाभ होगा।

नोट—लोहूके समान पेशाब आनेको "बौल-उल-दम" कहते हैं। यह रोग अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करने या गुर्देपर चोट लगनेसे अथवा लोहूके कोपसे भी होता है।

(२६) अगर पेशाब बारम्बार आता हो और साधारण रोग हो, तो खट्टे-मीठे अँगूरोंका शर्बत पिलाओ; अथवा तुर्श अनारका शर्बत पिलाओ। अगर वायु या कफसे पेशाब बूँद-बूँद होता हो, तो केशर, लौंग और जायफल समान-समान लेकर पीस-छान लो और "शहद"में मिलाकर थोड़ा-थोड़ा दिनमें तीन बार चटाओ; अथवा आधा जायफल भूँजकर और "शहद"में मिलाकर चटाओ।

नोट—पेशाबके बार-बार होनेको हिकमतमें ज्याबीतुश और वैद्यकमें मूत्रकृच्छ्र कहते हैं। यह रोग गुर्देको कमज़ोरीसे, बहुत पानी पीनेसे, गरमी या खुश्कीसे अथवा बहुत ही शराब या भाँग पीने और अत्यन्त मैथुन करनेसे होता है।

मूत्राघात नाशक उत्तमोत्तम योग।

शिलोद्भवादि तैल।

पाषाण-भेद, अरण्डकी जड़, शालपर्णी, पुनर्नवा और शतावर—इन सबके सोलह सेर काढ़ेमें चार सेर "तिलका तेल" पका लो; और तेल-मात्र रहनेपर छान लो। इस तेलकी मात्रा ६ माशेकी है। हरेक मात्रा गरम दूधमें मिलाकर पीनेसे मूत्रकृच्छ्रादि रोग शान्त हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—आयुर्वेद ग्रन्थोंमें यही विधि लिखी है; पर इस विधिसे हमने कभी नहीं बनाया। हम नीचेकी विधिसे बनाया करते हैं और इस विधिसे बनाया हुआ तेल भी पूरा गुण करता है।

अनुभूत विधि।

पाषाणभेद, अरण्डकी जड़ और शालपर्णी—इन तीनोंको अढ़ाई-अढ़ाई छटाँक लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। पुनर्नवा दो सेर और शतावर दो सेर—इन दोनोंको बत्तीस सेर पानीमें औटाओ; जब आठ सेर पानी रह जाय, उतार लो। अब तिलीका तेल दो सेर, ऊपरका काढ़ा और लुगदीको मिलाकर तेल पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान "गरम दूध" है; यानी गरम दूधमें मिलाकर पीनेसे यह तेल मूत्राघात और मूत्रकृच्छ्रको आराम करता है।

धान्यगोक्षुरक घृत।

धनियाँ एक सेर और गोखरू एक सेर लेकर सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, मल-छानकर रख लो। फिर धनियाँ आध पाव और गोखरू आध पावको पानीके साथ सिलपर पीस लो। अब गायका घी एक सेर, ऊपरका काढ़ा और लुगदीको मिलाकर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीकी मात्रा ६ माशेकी है। इसके सेवन करनेसे मूत्राघात आदि रोग नाश हो जाते हैं।

विदारी घृत।

विदारीकन्द, अड़ूसा, जुहीकी जड़, बिजौरा नीबू, गन्धतृण, पाषाणभेद, लता-कस्तूरी, साँभरनोन, समन्दरनोन, चीता, पुनर्नवा, बच, रास्ना, खिरेंटी, गंगेरन, कसेरू, भसींडे, सिंघाड़े, भुइँ आमले, स्थिरादि-गणकी दवाएँ, रामसर, ईखकी जड़, डाभ, कुश और काँस—इन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पचीस दवाओंको आठ-आठ तोले लेकर सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, उतार लो।

मुलेठी, पीपर, दाख, गंभारी, फालसा, इलायची, जवासा, रेणुका, केशर, नागकेशर और जीवनीयगणकी आठों दवाएँ—इनमेंसे हरेक एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

शतावरका स्वरस ६४ तोले और आमलोंका स्वरस ६४ तोले तैयार कर लो। अगर स्वरस योग्य चीजें न मिलें, तो इतना-इतना काढ़ा बना लो। गायका दूध दो सेर और चीनी २४ तोले लाकर पास रख लो।

अब काढ़ेको आगपर चढ़ाओ। उसमें शतावरका रस, आमलोंका रस, चीनी, लुगदी और दूध मिला दो और मन्दाग्निसे पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय. उतारकर छान लो और साफ बर्तनमें रख दो।

यह घी पीने, खाने और नस्यके काममें आता है। यह घी स्मृति बढ़ानेवाला, उत्तम वाजीकरण, पुत्र देनेवाला, बल-वर्ण करनेवाला, उत्तम रसायन और विशेषकर वात विनाशक है। इससे सब तरहके मूत्राघात, विशेष करके पित्तसे हुए मूत्राघात, शर्करा, पथरी, शूल, रुधिर-विकारसे हुए शूल, हृदय-रोग, पित्तज गुल्म, पित्तज वातरक्त, खाँसी, श्वास, क्षत, धनुष चढ़ाने और स्त्री-प्रसंगसे कर्षित हुए, तृषा, वमन, मनकी पीड़ा, कम्प, रुधिरकी वमन, क्षय, अपस्मार, उन्माद, शिराग्रह, योनिदोष, रजके दोष, वीर्यके दोष और स्वरभंगादि रोग आराम होते हैं।

चित्रकाद्य घृत।

चीतेकी छाल, अनन्तमूल, बरियारा, तगर-पादुका, मुनक्का, इन्द्र-वारुणी, पीपर, गुलसकरी, मुलेठी और आमले—प्रत्येक आधा-आधा तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब गायका घी चार सेर, गायका दूध सोलह सेर और ऊपरकी लुगदी मिलाकर औटाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतार लो और शीतल होनेपर छान लो।

शेषमें; इसमें चीनी आध सेर और उत्तम नीली झाईं का बंस-लोचन आध सेर पीसकर मिला दो और किसी साफ़ बर्तनमें रख दो।

इसमेंसे छै-छै माशे घी नित्य खानेसे मूत्र-दोष, योनि-दोष और रक्तदोष दूर होकर वीर्य और आयुकी वृद्धि होती है।

वरुणाद्य लौह।

वरुण-छाल ८ तोले, आमले ८ तोले, धायके फूल ४ तोले, हरड़ २ तोले, पिठवन १ तोले, लोह भस्म १ तोले और अभ्रक भस्म १ तोले—सबको कूट-पीस और छानकर एकत्र मिला लो। इसकी मात्रा ६ रत्तीकी है। इसको उपयुक्त अनुपानके साथ खानेसे मूत्रके सब दोष नष्ट होते, बल बढ़ता और पुष्टि होती है।

हिन्दी बही-खाता।

जिस तरह आयुर्वेद-विद्या मनुष्य-मात्रको पढ़नी चाहिये, उसी तरह साहूकारी रीतिसे बही-खातेका काम भी मनुष्य-मात्रको सीखना चाहिये। इस पुस्तकमें रोकड़ बही, नकल, खाता, हुण्डी और पैंठ आदि सभी बातें बड़ी ही सुगम रीतिसे शुद्ध हिन्दीमें समझाई गई हैं। इस पुस्तकके पढ़ने-सीखनेसे एक बरसमें एक हिन्दी जाननेवाला १०००)—५००) सालाना कमा सकता है। जिन्हें पराई चाकरी नहीं करनी है, उन्हें भी अपने निजके कामके लिए इसे सीखना चाहिये। ४५० सफ़े। दाम ३।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्नीसवाँ अध्याय

अश्मरी-पथरी-वर्णन।

पथरीकी संख्या और निदान।

पथरी चार तरहकी होती हैं:—

(१) वातसे,	(२) पित्तसे,
(३) कफसे,	(४) शुक्रसे।

वीर्यसे हुई पथरीको छोड़कर, शेष तीनों पथरी प्रायः कफके आश्रयसे होती हैं। वीर्यसे हुई पथरीमें वीर्य ही कारण होता है। कोई-कोई वैद्य तो वीर्यकी पथरीमें भी कफको कारण मानते हैं। सब तरहकी पथरी बिना चिकित्साके मृत्युकारक होती हैं।

पथरीकी सम्प्राप्ति।

जब वायु मूत्राशयमें आये हुए शुक्रके साथ मूत्रको और पित्तके साथ कफको सुखाती है, तब "पथरी" पैदा होती है। मतलब यह है कि, जब मूत्र और शुक्र अथवा पित्त और कफ वायुसे सूखकर पत्थरकी तरह कड़े हो जाते हैं, तब पथरी रोग होता है। जिस तरह गायके पित्तेमें गोरोचन बढ़ता है; उसी तरह क्रम-क्रमसे पथरी बढ़ती है। वैद्यकमें इसे अश्मरी और बोलचालकी भाषामें पथरी कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा—बस्ति स्थान या पेड़ू का "वायु" बिगड़ कर वहाँ रहनेवाले वीर्य, मूत्र, पित्त और कफको खुश्क करके पथरी पैदा कर देता है। इस रोगसे नाभि और पेड़ू में दर्द होता और पेशाब भी बन्द हो जाता है।

पथरीके पूर्वरूप।

पथरी रोग होनेसे पहले मूत्राशयमें अफारा आ जाता है—वह फूल जाता है। मूत्राशयके चारों ओर अत्यन्त पीड़ा होती है अथवा बस्तिके पासके स्थानोंमें दर्द हो जाता है। पेशाबमें बकरेके पेशाबकी-सी बदबू आती है, पेशाब कष्टसे होता है, ज्वर चढ़ता और भोजनपर रुचि नहीं होती।

पथरीके साधारण लक्षण।

पथरी होनेसे नाभिमें, फोतेके नीचे सींवनमें तथा नाभिसे नीचेकी जगह—मूत्राशय या बस्तिके मुँहमें दर्द होता है। पथरीसे मूत्र बहानेवाले मार्गोंके बन्द हो जानेसे मूत्रकी धार बीचमें ही फट जाती है; यानी विच्छिन्न धारसे पेशाब आता; पेशाब करते वक्त पेशाबके लिये ज़ोर करनेसे पीड़ा होती है; किसी समय वायुसे पथरीके मूत्र-मार्गसे हटकर और जगह चली जानेसे गोमेदके समान साफ पेशाब आरामसे होता है; पथरीके संचारसे मूत्रमार्ग घिस जानेसे खून-मिला या लाल रङ्गका पेशाब होता है और बड़े ज़ोरसे दर्द होता है। मतलब यह है कि, मूत्रमार्गमें पथरी द्वारा किसी तरहका घाव हो जानेसे पेशाबमें खून दिखाई देता है और पेशाब निकलते समय भयानक वेदना होती है।

किसी वैद्यने पथरीके लक्षण संक्षेपमें इस तरह कहे हैं :—

निरुध्य मूत्रमार्गं या यातनांजनयेद्भृशम्।
कटिवस्ति प्रदेशेषु साश्मरीति निगद्यते॥

जो मूत्रमार्गको रोककर बहुत तकलीफ देती है, कमर और पेड़ू में वेदना करती है, उसे "पथरी" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातोल्बण पथरीके लक्षण।

वाताधिक्य पथरी रोगमें ये लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) रोगी दाँत पीसता और काँपता है।

(२) तक़लीफके मारे चिल्लाता है।

(३) लिङ्ग और नाभिको हाथोंसे दबाये रहता है।

(४) पेशाब करते समय काँखनेसे अधोवायुके साथ मल गिरता और टपक-टपककर पेशाब होता है।

(५) पथरीका रंग नीला या धूसर होता है और उसपर काँटे होते हैं।

पित्तोल्बण पथरीके लक्षण।

पित्ताधिक्य पथरी रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) बस्ति या पेड़ूमें अत्यन्त जलन और आगपर पकानेके जैसी वेदना होती है।

(२) पथरी छूनेसे अत्यन्त गर्म मालूम होती है। उसकी आकृति भिलावेकी गुठलीके जैसी और रंग लाल, पीला या काला होता है।

कफोल्बण पथरीके लक्षण।

कफाधिक्य पथरी रोगीमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) बस्तिमें नोचनेकी-सी अथवा सूई गड़ानेकी-सी पीड़ा होती है।

(२) पथरी छूनेमें शीतल, भारी, चिकनी, शहदकी तरह पिङ्गल या सफेद रङ्गकी होती है।

(३) यह पथरी बहुधा बालकोंके होती है, पर बालकोंके बढ़नेका आश्रय थोड़ा होता है; इसलिए पथरी निकालनेमें आसानी रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीर्यकी पथरीके निदान-लक्षणादि।

निदान-सम्प्राप्ति।

वीर्यकी पथरी ज़ियादा उम्रवालोंके होती है; बच्चोंके नहीं होती। यद्यपि वीर्य बालकोंके भी होता है, पर वे मैथुन नहीं कर सकते, इसलिए उनके वीर्यकी पथरी भी नहीं हो सकती। जो लोग मैथुनके समय अधिक आनन्दके लिए स्थानच्युत वीर्यको या निकलते हुए वीर्यको रोक लेते हैं, उनका वीर्य भीतर ही रह जाता है, बाहर नहीं निकलता। उस रुके हुए वीर्यको "वायु" लिंग और फोतोंके बीचमें—मूत्राशयके मुँहपर लेजाकर सुखा देती है, तब वह वीर्य सूखकर पथरी हो जाती है।

लक्षण।

वीर्यकी पथरी होनेसे बस्ति या पेड़ूमें शूल चुभानेके जैसा दर्द होता है, दोनों फोते सूज जाते और मूत्रकृच्छ्र रोगकी तरह पेशाब होता है।

शुक्राश्मरीके दो भेद।

लिङ्ग और फोतोंके बीचका भाग दबानेसे यह पथरी भीतर लीन हो जाती है, तब उसी समय मूत्र-मार्गसे दो रूपोंमें वीर्य निकलता है:—(१) शर्कराके रूपमें, और (२) सिकताके रूपमें।

जो पथरी अधिक दबानेसे क्षुद्र अंशोंमें विभक्त हो जाती है, उसे "शर्करा" और जो बहुत ही क्षुद्र अंशोंमें विभक्त हो जाती है, उसे "सिकता" कहते हैं। मतलब यह कि, जो पथरी वायुसे अलग-अलग होकर शर्कराके समान हो जाती है, उसे "शर्करा" और जो बालू-रेतके समान हो जाती है, उसे "सिकता" कहते हैं। वीर्यके कण अगर मोटे होते हैं, तो वह शर्कराकी जैसी होती है और अगर छोटे होते हैं, तो वह सिकता—बालूकी जैसी होती है। तात्पर्य यह है कि,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वीर्यकी पथरी ही जब शर्कराका रूप धारण कर लेती है; तब शर्करा और जब सिकताका रूप धारण कर लेती है, तब सिकता कहाती है।

वायुके अनुलोम रहनेसे शर्करा और सिकता पेशाबके साथ निकल जाती हैं; पर वायुके अनुलोम न रहनेसे वे दोनों रुक जाती हैं। अगर वे मूत्र-मार्गमें आ जाती हैं, तो अनेक उपद्रव करती हैं। जैसे—दुर्बलता, अवसाद, कृशता, कुक्षिशूल, अरुचि, पाण्डुता, तृष्णा, हृदयमें पीड़ा और जी मिचलाना वगैरः।

खुलासा—वीर्यकी पथरी जब वायुसे बिखर जाती है, तब "शर्करा" कहलाती है। वायुसे बिखर-बिखरकर इसके टुकड़े, वायुके सीधी चाल-पर चलनेसे, पेशाबके साथ निकल जाते हैं, पर वायुके उल्टे चलनेसे रुक जाते और दुर्बलता आदि अनेक उपद्रव करते हैं।

पथरीके उपद्रव।

शर्करासे दुर्बलता, ग्लानि, कृशता, कूखमें पीड़ा, पाण्डुता, अरुचि, उष्णवात-मूत्राघात, तृषा, हृदयमें वेदना और वमन—ये सब पथरीके उपद्रव हैं।

सांघातिक लक्षण।

पथरी, शर्करा और सिकता रोगीकी नाभि और फोतोंमें सूजन, पेशावका रुकना और शूलके समान वेदना होना ये लक्षण होनेसे रोगीकी मृत्यु होती है।

पथरी-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) पथरी रोग होते ही इलाज करना चाहिये। अगर थोड़े दिन भी पथरीका इलाज नहीं किया जाता, तो पथरी रोग दवाओंसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आराम नहीं होता। उस दशामें, चीर-फाड़ करके पथरी बाहर निकाली जा सकती है।

(२) पथरी रोगके पूर्वरूपोंके प्रकाश होते ही स्नेह प्रयोग करना चाहिये।

पथरी रोगकी विशेष चिकित्सा।

वातोल्बण पथरीकी चिकित्सा।

शुण्ठ्यादि क्वाथ।

सोंठ, अरणी, पाषाणभेद, सहँजना, वरना, गोखरू, हरड़ और अमलताश—इन सबको तीन-तीन माशे लेकर काढ़ा बनाओ। पक जानेपर छानकर, इसमें "हींग, जवाखार और सैंधेनोनका चूर्ण" डालकर पीलो। इस काढ़ेसे पथरी, मूत्रकृच्छ्र, कोठेकी वायु, कटिगत वात, उरुगत वात, गुदागत वात और लिङ्गाश्रित वात—ये सब नाश हो जाते हैं। यह काढ़ा दीपन और पाचक है।

एलादि क्वाथ।

इलायची, पीपर, मुलेठी, पाषाणभेद, रेणुका, गोखरू, अड़ूसा और रैंडीकी जड़—इनको तीन-तीन माशे लेकर काढ़ा पकाओ और एक या दो माशे "शुद्ध शिलाजीत" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेसे पथरी, शर्करा और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

वरुणादि क्वाथ।

वरनाकी छाल, सोंठ और गोखरू—इन तीनोंको आठ-आठ माशे लेकर काढ़ा पका लो। फिर इसमें दो माशे "जवाखार" और दो माशे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"पुराना गुड़" डालकर पीओ। इस काढ़ेसे पुरानी वातोल्वण पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

पाषाणभेदाद्य घृत।

पाषाणभेद, आककी जड़, लाल चिरचिरा, कोविदार, शतावर, गोखरू, भटकटैया, कटेरी, ब्राह्मी, नीले फूलकी कटसरैया, कचनार, खस, गुन्द्रतृण, बन्दा, वरना, सागौनके फल, जौ, कुल्थी, बेर और निर्मलीके फल—इनमेंसे प्रत्येक दवाको पाव-पाव भर लेकर कुचल लो और चालीस सेर पानीमें पकाओ; जब दस सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

ऊषकादिगणकी दवाएँ अढ़ाई पाव लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर अढ़ाई सेर घी, यह लुगदी और ऊपरका काढ़ा मिला-कर पकाओ। घी-मात्र रहनेपर छान लो। इस घीके खानेसे वातोल्वण पथरी फौरन आराम हो जाती है।

वीरतरादिगण।

वीर वृक्ष (कोह या कोट), अरनी, काँस, बाँदा, कुशा, मोरट (ईखकी जड़), नीले कमल, हुलहुल, गोखरू, टेंटू, आककी जड़, लाल चिरचिरा, डाभ, कटसरैया, पाषाणभेद, गुन्द्रतृण, नरसल और कुरंट यह वीरतरादिगण कहलाता है। ये सब दवाएँ पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र और वात रोगोंको नाश करती हैं। अतः इनके साथ पकाये हुए क्षार, यवागू, पेया, काढ़े, दूध और भोजन पथरी आदि रोगोंको नाश करते हैं।

पित्तोल्वण पथरीकी चिकित्सा।

कुशाद्य घृत।

कुश, काँस, रामसर, गुन्द्रतृण, उत्कट (एक तरहकी घास), मोरट (ईखकी जड़), डाभ, पाषाणभेद, विदारीकन्द, वाराहीकन्द,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शालपर्णीकी जड़, गोखरू, भिलावे, पाढुर, पाढ़, पत्तूर, कटसरैया, पुनर्नवा और सिरस—इनको पाव-पाव भर लेकर कूट लो और मन भर पानीमें काढ़ा बनाओ। जब दस सेर पानी रह जाय, इसमें अढ़ाई सेर "घी" डालकर पकाओ। पक जानेपर घीको छान लो। इस घीमें "शिलाजीत, मुलेठी, महुएके बीज और खीरे ककड़ीके बीजोंका चूर्ण" मिलाकर खानेसे पित्तज पथरी फौरन नाश हो जाती है।

पाषाणभेदके काढ़ेमें "शुद्ध शिलाजीत और चीनी" मिलाकर पीनेसे पित्तकी पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

कफोल्बण पथरीकी चिकित्सा।

वरुणादि घृत।

वरुणादिगणकी औषधियोंके काढ़ेमें गूगल, इलायची, रेणुका, कूट, नीम, कालीमिर्च, चीता और देवदारु—इनका कल्क मिलाकर बकरीका घी पका लो। इस घीके खानेसे कफकी पथरी नष्ट हो जाती है।

नोट—वरुणादिगणकी औषधियाँ ये हैं:—वरना, झिंटी, सहँजना, जैती, करंज, ईखकी जड़, अरनी, बेल, कुंदरु, आककी जड़, चीता, कटसरैया, लाल चिरचिरा, शहद, मेढ़ासिङ्गी, शतावर, डाभ, भटकटैया और बड़ी भटकटैया—ये दवाएँ कफ और मेद तथा मस्तक-शूल, गुल्म और भीतरकी विद्रधिको नाश करती हैं। कफको नष्ट करनेवाले इस वर्गमें क्षार, यवागू, पेया, कषाय, दूध और भोजन सिद्ध करके देनेसे कफके रोग नष्ट होते हैं।

शुक्राश्मरीकी चिकित्सा।

(वीर्यकी पथरीका इलाज)

कुशाद्य तैल।

कुशा, अरणी, कटसरैया, नल, दाभ, ईख, गोखरू, ब्राह्मी, आककी जड़, लाल चिरचिरा, कमल, रामसर, धायके फूल, टेंठ, बन्दा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्णिका और पाषाणभेद—इनके काढ़े और कल्कके द्वारा तेल पकाओ। इस तेलको पीने, मालिश करने और बस्ति—उत्तर बस्तिमें प्रयोग करनेसे शर्करा, पथरी, दारुण मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, योनिशूल और शुक्र-दोष नाश हो जाते हैं। इससे बाँझके गर्भ रहता है।

तृणपञ्चमूलाद्य घृत।

तृणपंचमूल और गोखरूको आध-आध सेर लेकर १६ सेर जलमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, उसमें "गुड़ और गोखरूका याव भर कल्क तथा एक सेर घी" डालकर पकाओ। इस घीको स्नेहन और भोजनमें सेवन करनेसे मूत्र सम्बन्धी विकार, पथरी और शर्करा रोग नाश हो जाते हैं।

वरुण तैल।

छाल, पत्ते, फल और मूल समेत वरना और गोखरू आध-आध सेर लेकर सोलह सेर पानीमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, इसमें एक सेर तेल मिलाकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलकी निरूह बस्ति देनेसे पथरी, शर्करा, शूल और मूत्रकृच्छ्र रोग आराम हो जाते हैं।

सब तरहकी पथरियोंकी सामान्य चिकित्सा।

ग़रीबी नुसख़े।

(१) सोंठ, वरना, गोखरू, पाखानभेद और ब्राह्मी—इनके काढ़ेमें दो माशे "जवाखार" और दो माशे "गुड़" मिलाकर पीनेसे सब तरहकी पथरी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) पेठेके रसमें "जवाखार और गुड़" मिलाकर पीनेसे मूत्रकी रुकावट, शर्करा और पथरी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) तिल, चिरचिरा, केला, ढाक, जौ और बेल—इनका काढ़ा "बकरी या भेड़का मूत्र" मिलाकर पीनेसे शर्करा और वीर्यकी पथरी रोग आराम हो जाते हैं।

(४) पाखानभेद, गोखरू, अरण्डकी जड़, कटेरी, बड़ी कटेरी और तालमखाना—इनको दूधमें पीसकर और "दही" मिलाकर खानेसे पथरी और सिकता नाश हो जाती हैं।

(५) पिसी हुई हल्दीको गुड़में मिलाकर, "तुषोदक"के साथ पीनेसे बहुत पुरानी शर्करा-पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

यः पिबेद्रजनीं सम्यक सगुडां तुषवारिणा।
तस्याशुचिरगूढ़ापि यात्यस्तंमेद्रशर्करा॥

जो गुड़ मिले हुए हल्दीके चूर्णकी तुषके पानी यानी काँजीके साथ पीता है, उसकी पुरानी शर्करा पथरी भी चूर्ण होकर निकल जाती है।

(६) कुड़ेकी छाल पीसकर और "दही"में मिलाकर खाने और पथ्य भोजन करनेसे बहुत पुरानी पथरी आराम हो जाती है।

(७) खीरेके बीजोंको "दही"में पीसकर खाने अथवा नारियलके फूलोंको "दही"में पीसकर खानेसे मत्र-मूत्र और पथरीकी बाधासे पीड़ित मनुष्य बहुत जल्दी सुखी हो जाता है।

(८) गोखरू, वरना और सोंठका काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे शर्करा, पथरी, शूल और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

(९) पेठेके रसमें "हींग और जवाखार" मिलाकर पीनेसे वस्ति-शूल, मेढ्रशूल, शर्करा और पथरी रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) सुपारी, अंकोल, निर्मलीके फल, सागौनके फल और कमल-गट्टे—इनके काढ़ेमें "गुड़" मिलाकर पीनेसे शर्करा नष्ट हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) पुनर्नवा, लोहेकी भस्म, हल्दी, गोखरू, कठूमर, मूँगा-भस्म और डाभके फूल—इनको एकत्र पीसकर "दूध, काँजी, शराब और ईखका रस" इनके साथ पीनेसे शर्करा-पथरी नाश हो जाती है।

(१२) वरनाकी छाल, पाषाणभेद, सोंठ और गोखरू—इनके काढ़ेमें ४ माशे "जवाखार" डालकर पीनेसे शर्करा सहित पथरी आराम हो जाती है।

(१३) तीन माशे गोखरूके बीजोंका चूर्ण "शहद"में मिलाकर और "भेड़ीके दूध"में घोलकर सात दिन तक पीनेसे सब तरहकी पथरियाँ नाश हो जाती हैं।

(१४) नारियलका फूल चार माशे और जवाखार ४ माशे पानीमें पीसकर पीनेसे पथरी रोगमें विशेष उपकार होता है।

(१५) वरनाकी जड़के काढ़ेमें "वरनाकी जड़का ही कल्क" मिलाकर पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

(१६) सहँजनेकी जड़का काढ़ा सुहाता-सुहाता गरम पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

(१७) अदरख, जवाखार, हरड़ और दारुहल्दी—इनको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। फिर इसे 'दहीके मंड"के साथ पीओ। इससे भयङ्कर पथरी भी नाश हो जाती है।

(१८) पाषाणभेद, वरना, गोखरू और ब्राह्मी—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा करो। फिर इसमें "शुद्ध शिलाजीत और गुड़" तथा "खीरे और ककड़ीके बीजोंका कल्क" (सिलपर पिसी लुगदी) खूब मिलाओ और पीओ। इससे वह पथरी भी नष्ट हो जाती है, जो सैकड़ों दवाओंसे नष्ट नहीं होती। जिस तरह इन्द्रके बज्रसे पर्वतोंका नाश होता है; उसी तरह इस योगसे पथरियोंका नाश होता है।

(१९) अरणीके फलोंके बीजोंको बिना पानीके माठेमें पीसकर खाने अथवा इन बीजोंका साग खानेसे पथरीकी पीड़ा दूर हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२०) गोखरू, अरण्डके बीज, सोंठ और वरनाकी छाल—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाने और नित्य सवेरे ही पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

(२१) सूखे हुए कमलकी नाल, ताड़का फल, काँस, ईखकी जड़, बाली ईख और डाभ—इनको समान-समान लेकर और पानीके साथ सिलपर पीसकर तथा "शहद और मिश्री" मिलाकर पीनेसे पथरीवालेके पेशाबमें खूनका आना बन्द हो जाता है, पर इसके साथ विदारीकन्द, ईख और खीरा खाना चाहिये।

(२२) वरनाकी छालका ३२ तोले खार, १६ तोले जवाखार और ८ तोले गुड़—इनको मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक तोले दवा खाकर ऊपरसे "गरम जल" पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरी रोग नाश हो जाते हैं।

(२३) आमलेके नर्म-नर्म पत्तोंके स्वरसमें "तिलीका तेल" मिलाकर पीनेसे भयानक पथरी भी नाश हो जाती है।

(२४) हींग, तेल और गायका घी—इनको मिलाकर पीनेसे वीर्यसे हुए मूत्रदोषोंका नाश होता है।

(२५) कटेरीका स्वरस "शहद" मिलाकर पीनेसे पथरी और भयंकर मूत्रकृच्छ्र आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२६) डेढ़ तोले वरनाकी छालके काढ़ेमें दो तोले "गुड़" मिलाकर पीनेसे पथरी और बस्ति-शूल—पेड़ूका दर्द ये नाश हो जाते हैं। बड़ी-से-बड़ी पथरी ११ दिनमें गल जाती है। परीक्षित है।

नोट—पाव भर पानीमें काढ़ा बनाओ और आधा रहनेपर उतारकर छान लो।

(२७) पुराने घीमें केशर पीसकर खानेसे शर्करा-पथरी नष्ट हो जाती है। कहा है:—

पुराण सर्पिषा पीतं कुंकुमं हन्ति शर्करां।

(२८) गुड़ दो भाग और जवाखार एक भाग मिलाकर खानेसे पथरी और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२६) गोखरू, अरण्डके पत्ते, पाषाणभेद, वरनाकी छाल और सोंठ—इनके काढ़ेमें "जवाखार" मिलाकर पीनेसे पथरी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३०) पाषाणभेद, वरनाकी छाल, गोखरू, अरण्डकी जड़, दोनों भटकटैया और तालमखाना—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण "दही"के साथ खानेसे पथरी रोग आराम हो जाता है। यह नुसखा शर्करा-पथरीपर ख़ास तौरसे लाभदायक है। परीक्षित है।

(३१) जवाखार, सुहागा और कलमी शोरा बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे एक-एक माशे दवा पानीके साथ दिनमें तीन-चार बार पीनेसे पथरी गलकर बाहर आ जाती है।

नोट—दवा देनेसे पहले वमन करानी चाहिये।

हकीमी नुसखे।

(३२) संग यहूदको कूट-पीसकर छान लो। इसमेंसे तीन-तीन माशे खिलानेसे पथरी नष्ट हो जाती है।

(३३) दो माशे जवाखार और दो माशे कच्चा सुहागा पीसकर और दो तोले "गोखरूके रस"में मिलाकर पीनेसे पथरी गलकर निकल जाती है। परीक्षित है।

(३४) दारुहल्दी, सोंठ, हरड़ और जवाखारको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे छै-छै माशे दवा "गायके दही"में मिलाकर खानेसे पथरी २४ घण्टेमें गलकर निकल जाती है। परीक्षित है।

(३५) दो माशे मूलीका खार "बासी पानी"के साथ खानेसे पथरी गल जाती है। परीक्षित है।

(३६) हकीम जकरियाने लिखा है:—दो तोले अंगूरके पत्तोंको पाव भर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, छानकर २ तोला "मिश्री" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेसे पथरी और मूत्रकृच्छ्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रभृति पेशाबके सभी रोग नाश हो जाते हैं। गुर्देके सभी रोगोंपर उत्तम योग है। परीक्षित है।

(३७) दो माशे तिलके वृक्षका खार दो तोले गन्नेके सिरकेमें मिलाकर पीनेसे पथरी निश्चय ही गल जाती है।

(३८) नीमकी पत्तियोंका दो माशे खार "बासी पानी"के साथ पीनेसे ११ दिनमें पथरी गल जाती है। परीक्षित है।

(३९) अंगूरके वृक्षका दो माशे खार दो तोले गोखरूके स्वरसमें मिलाकर पीनेसे पथरी गल जाती है।

(४०) करंजके पत्तोंका दो माशे खार एक तोले "शहद"में मिलाकर पीनेसे पथरी गल जाती है। परीक्षित है।

(४१) हकीम जालीनूसका कहना है कि, दाहने हाथकी बीचकी अंगुलीमें लोहेकी अंगूठी या छल्ला पहने रहनेसे पथरीवालेकी पीड़ा कम हो जाती है।

(४२) वरनाकी छाल, हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ और गोखरू इन सबको बराबर-बराबर लेकर काढ़ा करो। फिर उसमें "चार माशे "जवाखार और एक तोले गुड़" मिलाकर पीओ। इस नुसखेसे पथरी-रोग नाश हो जाता है।

(४३) सोंठ, अरणीकी जड़, पाषाणभेद, वरनाकी छाल, गोखरू और अमलताश—इनके काढ़ेमें हींग, जवाखार, हरड़, बहेड़ा और आमलोंका चूर्ण तीन-तीन माशे मिलाकर पीनेसे पथरी और मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाते हैं।

(४४) चौलाईका साग खानेसे पथरी नाश हो जाती है।

(४५) तिलकी पत्तियाँ पानीमें औटाकर उस पानीमें पथरीवालेको बैठानेसे अवश्य लाभ होता है।

(४६) अजमोद तीन माशे फाँककर, ऊपरसे मूलीके पत्तोंका बीस माशे स्वरस पीनेसे पथरी और गुर्देका दर्द जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४७) पूयेकी पत्तियाँ महीन पीसकर पीनेसे पथरी और गुर्देका दर्द नाश हो जाते हैं।

(४८) झाड़ूकी सींकोंके फूल दो तोले लेकर पाव भर पानीमें ६ घण्टे तक भिगो रखो; फिर इस पानीको छान लो। फिर उसमें खीरे-ककड़ीके बीज ६ माशे और भाँग १ माशे सिलपर पीसकर मिला दो और ऊपरसे दो तोले चीनी भी डाल दो और कपड़ेमें छानकर पीलो। इस दवासे पथरी या संगगुर्दा नाश होता और बन्द हुआ पेशाब खुल जाता है।

(४९) पत्थरफोड़ी वृक्षकी २० माशे हरी पत्तियाँ सिलपर पानीके साथ पीसकर और चीनी मिलाकर पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

नोट—सूखी पत्तियाँ हरीकी अपेक्षा कम गुण करती हैं।

(५०) मुलहटी १ तोले, कुल्थी १ तोले और सौंफ ३ तोले ४ माशे—इन तीनोंको आध सेर पानीमें औटाओ; जब आध पाव पानी रह जाय, मल-छानकर उसमें ३ माशे "लाहौरी नोन" और २ माशे "घी" मिलाकर पीओ। इससे पथरी और मसानेके रोग आराम हो जाते हैं।

(५१) जंगली कबूतरकी आठ माशे बीट और आठ माशे ही शक्कर—दोनोंको मिलाकर पानीके साथ फाँकनेसे पथरी-रोग जाता रहता है।

नोट—जिस कबूतरको अलसी खिलाई जाती है, उसकी बीट अच्छी होती है।

(५२) गुले दाऊदीकी पत्तियोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे पथरी गल जाती है। अगर काढ़ा न बनाना हो, तो इन पत्तियोंको कूट-छान-कर और बराबरकी चीनी मिलाकर खा सकते हो। वही लाभ होगा।

(५३) पथरी-रोगमें शुद्ध "शिलाजीत" सेवन करना अत्यन्त लाभदायक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पथरी नाशक उत्तमोत्तम योग।

वृहत् वरुणादि क्वाथ।

वरनाकी छाल, सोंठ, गोखरूके बीज, तालमूली, कुलथी और तृणपञ्चमूल—इन सबको समान-समान चार-चार माशे लेकर काढ़ा बना लो। काढ़ेको छानकर उसमें तीन माशे "चीनी" और तीन माशे "जवाखार" मिलाकर पीनेसे पथरी, मूत्रकृच्छ्र और बस्ति शूल—पेड़ूका दर्द—ये नाश हो जाते हैं।

कुलत्थाद्य घृत।

वरनाकी छाल चार सेर लेकर बत्तीस सेर पानीमें औटाओ; जब आठ सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

कुलथी, सैंधानोन, बायबिडङ्ग, चीनी, तगर-पादुका, जवाखार, कुम्हड़ेके बीज और गोखरूके बीज दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो।

अब गायके दो सेर घी, इस लुगदी और ऊपरके काढ़ेको मिलाकर मन्दाग्निसे औटाओ; जब घी-मात्र रह जाय, छान लो।

इसमेंसे एक-एक तोले घी "गरम दूध" में मिलाकर खानेसे सब तरहकी पथरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघात नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

वरुणादि चूर्ण।

वरनाकी छालका खार ३२ तोले, जवाखार १६ तोले, गुड़ ४ तोले और घी ४ तोले सबको मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तोले रोज खानेसे और ऊपरसे गरम जल पीनेसे मूत्रकृच्छ्र और पथरी रोग जाते रहते हैं।

पुनर्नवाद्य तैल।

पुनर्नवा, गिलोय, शतावर, जवाखार, तीनों नमक, कचूर, कूट, बच, नागरमोथा, रास्ना, कायफल, पोहकरमूल, अजवायन, हाऊबेर, हींग, सौंफ, अजमोद, बायबिडङ्ग, अतीस, मुलेठी और पंचकोल—हरेक एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो।

अब एक सेर तेल, दो सेर गोमूत्र और दो सेर काँजी तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस तेलके पीने और इसीकी पिचकारी लगानेसे शर्करा, पथरी, शूल, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात, आमशूल और अन्त्रवृद्धि रोग नाश हो जाते हैं।

पाषाण भिन्न रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक २ तोले और शुद्ध शिलाजीत १ तोले—सबको मिलाकर एक दिन श्वेत पुनर्नवाके रसमें खरल करो; फिर एक दिन अड़ूसेके रसमें खरल करो और एक दिन सफेद अपराजिताके रसमें खरल करो। जब सूख जाय, एक छोटी हाँडीमें रखकर उसका मुख बन्द कर दो। फिर एक बड़ी हाँडीमें पानी भरकर, उसके बीचमें इस दवाकी हाँडी या कुल्हड़ेको लटका दो और इस बड़ी हाँड़ीको आगपर रख दो। कुछ देर पकनेपर, छोटी हाँड़ीमेंसे दवाको निकाल लो। फिर उसे भुइँ आमलेके फलके रस, इन्द्रवारुणीकी जड़के काढ़े और दूधके साथ तीन-तीन घण्टे तक खरल करके दो-दी रत्तीकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली "दूध या कुल्थीके काढ़े"के साथ खानेसे पथरी गलकर निकल जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाषाण वज्र रस।

शुद्ध पारा ४ तोले और शुद्ध गन्धक ८ तोले दोनोंको मिलाकर एक दिन सफेद पुनर्नवाके रसमें खरल करो और एक हाँडीमें रखकर ऊपरसे दूसरी हाँडी औंधी मार दो। दोनों हाँडियोंकी सन्ध बन्द करके कपड़-मिट्टी कर दो। फिर एक खड्डेमें हाँडीको रखकर, ऊपरसे जङ्गली कण्डोंकी आग लगाओ। आग शीतल होनेपर, हाँडीसे दवाको निकाल लो और "गुड़"के साथ खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

एक-एक मात्रा दवा "कुल्थीके काढ़े या इन्द्रायणकी जड़"के काढ़ेके साथ खानेसे पथरी और बस्तिशूल नाश हो जाते हैं।

अंगूरके पत्तोंका शर्बत।

मुनक्के ५ तोले, गोखरू ४ तोले २ माशे, हंसराज २ तोले ४ माशे, अधकुचले खरबूज़ेके बीज १ तोले ८ माशे, अधकुचली सौंफ १ तोले और अंगूरके नरम पत्ते १३ तोले ४ माशे—इन सबको २४ घण्टों तक ५ सेर जलमें भिगो रखो; सवेरे ही औटाओ। जब सवा सेर पानी रह जाय, इसे मलकर छान लो। फिर इस काढ़ेमें सवा सेर "चीनी" मिलाकर पकाओ। जब शर्बतकी-सी चाशनी हो जाय, आगसे उतारकर छान लो। इस शर्बतके पीनेसे पथरी नाश हो जाती है।

हज़रल यहूदकी फंकी।

हज़रल यहूद १ तोले, खरबूज़ेके बीजोंकी मींगी ८ माशे, खीरे-ककड़ीके बीज ८ माशे, गोखरू ८ माशे, कुल्थी ८ माशे, सौंफ ४ माशे, समग़ अरबी—बबूलका गोंद ४ माशे और अजमोद ४ माशे—कूट-छानकर रख लो। इसमेंसे छै-छै माशे चूर्ण "चनेके काढ़े"के साथ फाँकनेसे पथरी गल जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बीसवाँ अध्याय

मेद-रोग वर्णन।

निदान-कारण।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे मेद बढ़ती है:—

(१) मिहनत या कसरत न करनेसे।

(२) दिनमें सोनेके अभ्याससे।

(३) कफकारी आहार सेवन करनेसे।

(४) मीठे पदार्थ खानेसे।

(५) मधुर रसों और घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंसे।

मेदवृद्धिकी सम्प्राप्ति।

मेदसे रास्ते रुक जानेकी वजहसे—और धातुओंका पोषण नहीं होता, इसलिए मेद बढ़ती जाती है। मेद बढ़नेसे मनुष्य सब कामोंमें अशक्त हो जाता है।

नोट—हिकमतके ग्रन्थोंमें लिखा है—यह रोग मर्दोंको कम होता है, पर औरतोंको ज़ियादा होता है। शरीरमें खूनके ज़ियादा होनेसे हो, तो फ़स्द खुलवानी चाहिये अन्यथा कफ नाशक मुसिल या जुलाब लेना चाहिये तथा शरीरको सुखाने और दुबला करनेवाली दवाएँ सेवन करनी चाहिये।

मेद-रोगके लक्षण।

जिस मनुष्यकी मेद बढ़ जाती है, वह क्षुद्र श्वास, प्यास, मोह, निद्रा, पीड़ा, ग्लानि, भूख, पसीना और बदबूका शिकार हो जाता है; अर्थात् उसमें ये सब शिकायतें रहती हैं। वह मैथुन बहुत ही कम कर सकता है और उसमें ताक़त नहीं रहती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेद सब प्राणियोंके पेटमें रहती है, इसलिये मेदवृद्धिवाले मनुष्यका पेट ज़ियादा बढ़ता है।

मेदसे वायुकी राहें रुकी रहती हैं, इसलिए वायु बहुत करके कोठोंमें ही घूमती रहती है। कोठोंमें ही घूमती रहनेकी वजहसे "वायु" अग्निको प्रदीप्त करती है और खाये हुये अन्नको सुखा भी डालती है, जिससे मेदवृद्धिवालेका आहार तत्काल पच जाता है; अतः वह फिर खाना चाहता है।

कुछ समयके बाद, इस मेदवृद्धिवालेके भयंकर विकार भी उत्पन्न होते हैं। "अग्नि और वायु" विशेष करके उपद्रव करते हैं। जिस तरह दावानल वनको भस्म कर देती है; उसी तरहसे "मेद" मोटे मनुष्यको जला देती है। मेदके अत्यन्त बढ़नेपर वायु आदि दोष, सहसा दारुण विकार उत्पन्न करके, तत्काल जीवनका नाश कर देते हैं।

मेद और मांसके अत्यन्त बढ़नेसे मनुष्यके कूले, पेट और स्तन हिला करते हैं। जिसकी मेद अयोग्य रीतिसे बढ़ती है, वह बहुत मोटा कहलाता है।

मोटे मनुष्यको कोढ़, विसर्प, भगन्दर, ज्वर, अतिसार, प्रमेह, बवासीर, श्लीपद, अपची और कामला—ये दुस्तर रोग हो जाते हैं। मेदसे पसीनोंमें बदबू होनेपर, छोटे-छोटे जीव भी पैदा हो जाते हैं।

मेदवृद्धि या मुटाई नाशक ग़रीबी नुसख़े।

(मुटाई नाशक उपाय)

(१) मेदवृद्धिवालेको पुराने चावल, मूँग, कुल्थी, वन कुल्थी, कोदों और लेखन बस्ति सदा हितकारी हैं। इस रोगीको धूम्रपान—हुक्का वग़ैरः पीना, क्रोध करना और फ़स्द खुलवाना—ये भी लाभदायक हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) उपवास या लंघन करने, सुखदायी न हो ऐसी खाटपर सोने, मनकी उदारता और नींद आदि तमोगुणको जीतनेसे मुटाई नाश हो जाती है।

(३) जिस मनुष्यका शरीर अत्यन्त तृप्तिकर दोषोंसे मोटा हुआ हो, उसे मिहनत, मैथुन, राह चलना, शराब पीना और रातमें जागना—इनसे प्रेम रखना चाहिये; चिन्तामग्न रहना चाहिये; जौ और समाँके पदार्थ खाने चाहिए। इन उपायोंसे अत्यन्त मोटापन भी नाश हो जाता है।

(४) चव्य, जीरा, त्रिकुटा, हींग, कालानोन और चीता—समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "दहीके पानी"में मिलाकर,इसके साथ "सत्तू" पीना चाहिये। इससे मेद नाश और अग्नि दीप्त होती है।

(५) हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, सरसोंका तेल और सैंधानमक—इनको मिलाकर छै महीने तक खानेसे कफ, मेद और वायु नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—त्रिफले और त्रिकुटेका चूर्ण ६ माशे लेकर, नित्य सवेरे ही, सरसोंके तेल और सैंधेनोनमें मिलाकर चाटना चाहिये।

(६) बायबिड़ङ्ग, सोंठ, जवाखार, कान्तिसार, जौ और आमले—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर खानेसे अत्यन्त बढ़ी हुई मुटाई भी नाश हो जाती है।

(७) मूलीका चूर्ण "शहद"में मिलाकर शहद मिले पानीके साथ खानेसे अथवा त्रिफलेका एक तोला चूर्ण "शहद"में मिलाकर शहद मिले जलके साथ खानेसे अथवा वृहत् पंचमूलका चूर्ण "शहद"में मिलाकर खानेसे, चालीस दिनमें, मुटाई अवश्य नाश हो जाती है।

(८) परवलके पत्ते और चीतेके काढ़ेमें "सौंफ और हींगका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे किसी भी कारणसे बढ़ा हुआ पेट हल्का हो जाता है, क्योंकि बढ़ी हुई मेद नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) अरण्डके पत्तोंका खार "हींग" डालकर पीने और ऊपरसे माँड समेत भात खानेसे मेदका बढ़ना रुक जाता है।

(१०) जौके सत्तू और त्रिफलेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे मेदवृद्धि दूर हो जाती है।

(११) गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आमलेके काढ़ेमें "लोहभस्म" मिलाकर पीनेसे मेदवृद्धि नष्ट हो जाती है।

(१२) गिलोय, हरड़, बहेड़ा और आमलेके काढ़ेमें "शुद्ध शिलाजीत या शुद्ध गूगल" पकाकर खानेसे मेदका बढ़ना रुक जाता है।

(१३) चार माशे चीतेकी जड़का चूर्ण एक तोले "शहद"में मिलाकर चाटने और हितकारी भोजन करनेसे पेटका बढ़ना रुक जाता है। परीक्षित है।

(१४) अरण्डकी जड़को रात भर पानीमें भिगो रखो और सवेरे ही उसका रस "शहद" मिलाकर पीओ। इस उपायसे पेटका बढ़ना रुक जाता है।

(१५) सवेरे ही नित्य कोरे कलेजे, पाव भर पानीमें दो तोले "शहद" मिलाकर पीनेसे ३ मासमें मोटापन नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१६) पकाये हुए भातका गरमागरम माँड पीनेसे शरीरकी मुटाई जाती रहती है।

(१७) काँजीके द्वारा पकाई हुई पेयामें "बेरके पत्तोंका कल्क" मिलाकर पीनेसे मेदका बढ़ना नाश हो जाता है।

(१८) अरनीके काढ़ेमें दो माशे "शुद्ध शिलाजीत" मिलाकर पीनेसे मुटापा नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—एक तोले अरणीके स्वरसमें दो माशे शुद्ध शिलाजीत मिलाकर भी खा सकते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) शुद्ध शिलाजीत, कूट, अगर, देवदारु, रेणुका नामक सुगन्धित द्रव्य, मोथा, श्रीवास—सफेद चन्दन, स्पृक्का, पिण्डशाक, ब्राह्मी और लौंग—इन सबको "धतूरेके पत्तोंके रसके साथ" पीसकर शरीर-पर खूब मलनेसे कुछ दिनमें मुटाई नाश हो जाती है।

नोट—कोई लिखते हैं—सफेद चन्दन, शिलाजीत, देवदारु, रेणुका बीज, स्पृक्का, नागरमोथा, कूट, अगर, नागकेशर, दालचीनी, तेजपात, चमेलीके फूल और लौंग—इनको धतूरेके स्वरसमें घोटकर शरीरपर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे मुटाई अवश्य नाश हो जाती है।

(२०) बायविड़ङ्ग, आमले, सोंठ, जवाखार, जौ, लोहभस्म और मुलहटी—इनका चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे मेद बढ़ना और कृमि रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) चावलोंके माँडमें "अरण्डके पत्तोंका खार और हींग" मिलाकर पीनेसे मेद-वृद्धि रोग शीघ्र ही नाश हो जाता है।

नोट—इस नुसख़े और नं० १ नुसख़ेमें नाममात्रका ही फ़र्क़ है।

(२२) धतूरेके पत्तोंका रस शरीरमें मलनेसे मोटा शरीर हलका हो जाता है। कहा है:—

"धत्तूरपत्रस्यरसेन गाढमुद्वर्त्तनं स्थौल्यहरं प्रदिष्टम्।"

(२३) सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला और शुद्ध गूगल—सबको बराबर-बराबर लेकर, पहले गूगलको छोड़कर बाक़ी दवाओंको पीस-छान लो। पीछे चूर्णमें गूगलको मिलाकर खूब कूटो और जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके नित्य खानेसे शरीरकी मुटाई नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२४) आध पाव गोमूत्रमें डेढ़ तोले "शहद" मिलाकर पीनेसे मेद रोग नाश हो जाता है—मोटा शरीर दुरुस्त हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) सोंठ, मिर्च, पीपर, चव्य, सफेद जीरा, हींग, कालानोन और चीता—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चूर्ण नित्य सवेरे ही गरम पानीके साथ खानेसे शरीरका मोटापन नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२६) रांगकी अँगूठी पहननेसे मोटा शरीर दुबला होता है।

(२७) कड़वी और खट्टी चीज़ें खाने, गरम और खुश्क दवाएँ सेवन करने, भूखे रहने, मोटे कपड़े पहनने, ज़मीनपर सोने और सरदीमें नंगे बदन रहनेसे मोटा शरीर दुरुस्त हो जाता है। बबूलकी छायामें बैठने और सिरका, मसूर तथा जौकी रोटी खानेसे भी मुटाई कम हो जाती है।

(२८) एक माशे चन्दरस, दो तोले सिकंजबीन और पानी मिलाकर पीनेसे मोटा शरीर दुबला हो जाता है।

मेद-रोग या मुटाई नाशक उत्तमोत्तम योग।

अमृतादि गूगल।

गिलोय १ तोले, छोटी इलायची २ तोले, बायबिड़ङ्ग ३ तोले, इन्द्रजौ ४ तोले, बहेड़ा ५ तोले, हरड़ ६ तोले, आमला ७ तोले और शुद्ध गूगल ८ तोले लो। पहले गूगलको छोड़कर शेष दवाओंको पीस-छान लो। फिर चूर्णको "गूगल"में मिलाकर कूटो और रख लो। इसमेंसे ६ माशे दवा "शहद" में मिलाकर खानेसे मेद-रोग—मुटापा और भगन्दर नाश हो जाते हैं।

दशांग गुग्गुल।

त्रिकुटा, चीतेकी जड़, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ङ्ग और शुद्ध गूगल ले लो। गूगलके सिवाय और दवाओंको पीस-छानकर गूगलमें मिला लो। इसमेंसे ६ माशे दवा रोज़ शहद या पानीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साथ खानेसे मेद रोग, श्लेष्मा दोष और आमवात रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

त्र्यूषणादि लोह।

त्रिकुटा, भाँग, चव्य, चीता, कालानोन, औद्भिद नोन, सोमराजी, सैंधानोन और सौवर्चलनोन—सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर जितना चूर्ण हो उतनी ही "लोहाभस्म" मिला दो और रख दो। इसमेंसे चार रत्ती दवा "ना-बराबर घी और शहद"के साथ खानेसे मेद रोग और प्रमेह वग़ैरः नाश हो जाते हैं।

त्रिफलाद्य तैल।

त्रिफला, अतीस, मूर्वा, अड़ूसेकी छाल, नीमकी छाल, अमलताशका गूदा, वच, छातिमकी छाल, हल्दी, दारुहल्दी, गिलोय, निर्गुण्डी, पीपर, कूट, सरसों और सोंठ—इन सबको छटाँक-छटाँक भर लेकर, पानीके साथ, सिलपर पीस लो।

तुलसी या वनतुलसीका सोलह सेर स्वरस तैयार कर लो। फिर चार सेर तिलीके तेल, तुलसीके रस और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल पक जाय, उतारकर छान लो।

यह तेल पीने, मालिश करने, नस्य देने और पिचकारी लगानेके काममें आता है। इस तेलकी मालिशसे शरीरकी मुटाई और खुजली वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

महासुगन्धि तैल।

चन्दन, केशर, खस, प्रियंगू, इलायची, गोरोचन, लोबान, अगर, कस्तूरी, कपूर, जावित्री, जायफल, कंकोल, सुपारी, लौंग, नली, जटामासी, कूट, रेणुका, तगर, नागरमोथा, नवीन नख, व्याघ्रस्पृक्का, वोल, दौना, स्थौणेयक, चोरक, शैलेय, एलुआ, सरल, सतवन, लाख, आमला, लामज्जक तृण, पद्माख, धायके फूल, पुण्डरीक और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कचूर—इन अड़तीस दवाओंको तीन-तीन माशे लेकर सिलपर पीस-कूट लो।

अब एक सेर तेल, चार सेर पानी और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो।

इस तैलकी मालिश करनेसे पसीने, मैलसे हुई बदबू और कोढ़ रोग नष्ट हो जाते हैं। इस तैलके लगानेसे सत्तर वर्षका बूढ़ा जवान, खूब वीर्यवान, स्त्रियोंका प्यारा, भाग्यवान, सुन्दर और सौ औरतोंसे भोग करने योग्य हो जाता है। इसके लगानेसे नामर्द मर्द हो जाता और बाँझके गर्भ रहता है। इससे बेढंगा मोटा आदमी सुन्दर, सुडौल और देखने-योग्य हो जाता है तथा सौ बरसकी उम्र होती है।

लोह रसायन।

शुद्ध गूगल, मूसली, हरड़, बहेड़ा, आमले, खैर, अड़ूसेकी छाल, निशोथ, गोरखमुण्डी, सोंठ, निर्गुण्डी और चीता—इनमेंसे प्रत्येक पदार्थ आध-आध सेर लेकर बीस सेर पानीमें काढ़ा करो। जब चौथाई यानी पाँच सेर पानी रह जाय, उसे उतारकर उसमें अड़तालीस तोले खूब चूर्ण किया हुआ "कान्त लोह, चौंसठ तोले पुराना घी और बत्तीस तोले चीनी" मिलाकर, ताम्बेके बासनमें डालकर, फिर पकाओ; और पक जानेपर उतारकर शीतल करो।

फिर उसमें ३२ तोले शहद, आठ तोले शुद्ध शिलाजीत, २ तोले इलायची, २ तोले दालचीनी, १२ तोले बायबिड़ङ्ग, ८ तोले मिर्च, ८ तोले रसोन, ४ तोले पीपर और ८ तोले कशीश पीसकर मिला दो और खूब मथकर चिकने बर्तनमें रख दो। यही "लोह रसायन" है।

वमन-विरेचनादिसे शुद्ध होकर, इसमेंसे १ तोले भर रोज खाना चाहिये और ऊपरसे दूध और जङ्गली जानवरोंके मांसरसका भोजन करना चाहिये। यह रसायन मुटाई नाश करनेमें अव्वल दर्जेकी चीज़ है। बड़ा ढोल-सा पेट भी पतला हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसके सेवन करनेसे वायु, कफ, कोढ़, प्रमेह, उदर रोग, कामला, पाण्डु, सूजन, भगन्दर, मूर्च्छा, मोह, विष, उन्माद और विषम विष नष्ट हो जाते हैं। यह बलदायक, बुद्धिदाता, उत्तम बाज़ीकरण, लक्ष्मी-दायक, पुत्रदाता और वलीपलित नाशक है।

इस रसायनके सेवन करनेवाला केला, कुन्द, काँजी, करौंदे, करील और करेला इन छै ककारोंको त्याग दे।

शरीरकी दुर्गन्ध और पसीने नाशक नुसख़े।

(१) अड़ूसेके पत्तोंके रसमें "शंखका चूना" मिलाकर लेप करनेसे शरीरकी बदबू नाश हो जाती है।

(२) बेलपत्रोंका स्वरस लगानेसे शरीरकी दुर्गन्ध नाश हो जाती है।

(३) गोरखमुण्डीको पीसकर काँजीके साथ पीनेसे मेदकी वजहसे पैदा हुई शरीरकी बदबू नाश हो जाती है।

(४) बेलके पत्ते और हरड़—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बग़लकी बदबू नाश हो जाती है।

(५) हल्दीको दूधमें पीसकर शरीरपर लगानेसे बहुत दिनोंकी दुर्गन्ध भी जाती रहती है।

(६) सिरस, लामज्जक, नागकेशर और लोधको पीसकर शरीर-पर मलनेसे चमड़ेके दोष और पसीने नाश हो जाते हैं।

(७) बेलके पत्ते, सुगन्धवाला, काली अगर, खस और चन्दनको पीसकर शरीरपर लेप करनेसे शरीरकी दुर्गन्ध नाश हो जाती है।

(८) समन्दरफेनको "ब्राह्मीके रस" में पीसकर शरीरपर लेप करनेसे शरीरकी भारी दुर्गन्ध भी तत्काल नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) हरड़ोंको शरीरपर मलकर स्नान करनेसे शरीरसे पसीना आना बन्द हो जाता है।

(१०) हरड़, लोध, नीमके पत्ते, आमकी छाल और अनारकी छाल—इनको जलमें पीसकर शरीरपर मलनेसे स्त्री-पुरुषोंके शरीरकी बदबू नाश हो जाती है।

नोट—इन चीज़ोंको गायके दूधमें पीसकर लेप करनेसे शरीरका रंग गोरा हो जाता है; जलमें पीसकर लेप करनेसे शरीरकी दुर्गन्ध नाश होती है तथा हल्दी और दारुहल्दीके साथ पीसकर लेप करनेसे उत्तम वशीकरण होता है।

(११) जामुनके पत्ते पानीके साथ सिलपर पीसकर शरीरपर लेप करनेसे शरीरकी बदबू नाश हो जाती है।

(१२) पहले बबूलके पत्तोंको पानीमें पीसकर शरीरपर मलो; फिर हरड़को जलमें पीसकर शरीरपर मलो; इसके बाद स्नान करो। इस उपायसे अत्यधिक पसीनोंका आना भी नाश हो जाता है।

(१३) स्नान करनेके बाद, हरड़, छोटी नखी, चन्दन, कूट, राल, अगर और खाँडकी बारम्बार धूप देनेसे शरीरमें सुगन्ध छा जाती है। यह धूप मनुष्यके चित्तको हरनेवाली है। इसका नाम "मलयानिल धूप" है।

(१४) दारुहल्दी, तिल, लोध, सिरसकी छाल, खस और केशर—इनको पीसकर शरीरपर मलनेसे ग्रीष्म ऋतुमें अधिक पसीने आना बन्द हो जाता है।

(१५) हरड़के चूर्णको "मद्य अथवा शहद"के साथ चाटनेसे अधिक पसीने आना दूर होकर अत्यन्त सुगन्ध आती है।

(१६) मोतियाके पत्ते, सुगन्धवाला और नागकेशरको पीसकर शरीरपर लेप करनेसे अधिक पसीने आना, विचर्चिका और दाह ये नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१७) मोतियाके पत्ते, हल्दी, जल-पीपलके पत्ते और दाख—इनको पीसकर शरीरपर लेप करनेसे पसीने और विचर्चिका नाश हो जाते हैं।

(१८) अगर हाथ-पाँव पसीजते हों, तो गूगल और "पंचतिक्त" नामक घीको सेवन करो। इस घीके सेवन करनेसे शरीरमें शक्ति भी आती है।

नोट—हरड़, बहेड़ा, आमला, चीता और नागरमोथा—ये पंचतिक्त हैं। इनको और गूगलको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे भी उपरोक्त रोग नाश हो जाता है। इसको "पंचतिक्त गुग्गुल" कहते हैं।

(१९) चूना पानीमें पीसकर बग़लमें लगानेसे बग़लकी बदबू नाश हो जाती है।

(२०) जामुनकी छाल और पत्तियाँ पानीमें औटाकर उससे बग़ल धोनेसे बग़लकी दुर्गन्ध चली जाती है।

(२१) मुर्दारसंग पीसकर मलनेसे बग़लकी दुर्गन्ध जाती रहती है।

नोट—यहाँ तक हमने मेदकी वजहसे अधिक पसीने आनेके उपाय लिखे हैं; पर आगे हम शीतके कारणसे जो हाथ-पाँवोंमें पसीने आते हैं, उनके बन्द करनेके उपाय भी लिखते हैं:—

शीतके पसीनोंके उपाय।

(१) मूँग जलाकर पीसो और रोगीके हाथ-पाँवोंपर मलो। इससे पसीने आना बन्द हो जायगा।

(२) बैंगन और अधकुचला ख़स-ख़सका पोस्ता औटाकर, उस पानीसे हाथ-पाँव धोनेसे शीतके पसीने बन्द हो जाते हैं।

(३) कुल्थी और पीली कौड़ी अलग-अलग जलाकर पीसो और फिर मिलाकर हाथ-पाँवोंपर मलो, इससे शीतके पसीने बन्द हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) काले धतूरेके बीज जलाकर महीन पीस लो। फिर एक माशे रोज ८ दिन तक खाओ। इससे भी शीतके पसीने बन्द हो जाते हैं।

(५) बेरकी पत्तियाँ पीसकर मलनेसे शीतके पसीने बन्द हो जाते हैं।

(६) बबूलकी सूखी पत्तियाँ पीसकर हाथ-पाँवपर मलनेसे शीतकी वजहसे पसीने आना बन्द होता है।

(७) बालछड़ पीसकर मलनेसे हाथ-पाँवके पसीने बन्द हो जाते हैं।

(८) ऊँटकटारेकी जड़ सुखा-पीसकर एक तोले भरकी मात्रासे थोड़े-से "शहद" में मिलाकर, सात दिन तक, खानेसे शीतकी वजहसे पसीनोंका आना बन्द होता है।

(९) फिटकरी पानीमें हल करके मलनेसे पसीने आने बन्द हो जाते हैं।

(१०) पोहकरमूल पीसकर हथेली और तलवोंपर मलनेसे पसीने बन्द हो जाते हैं।

हिन्दी भगवद्गीता।

हमारे इस गीतामें मूल श्लोक, अर्थ, टीका-टिप्पणी और नोट—फुट नोट आदि सब कुछ हैं। इसकी भाषा इतनी सरल और आसान है कि बालक तक इसे आसानीसे समझ सकता है। जिन्हें गीताका मर्म समझना हो, जिन्हें समझ कर जन्म-मरणके फन्देसे छुटना और अन्तकाल तक सदा सुखी रहना हो, वे हमारे गीता पढ़ें। इससे आसान गीता-अनुवाद और कहीं नहीं छपा। मूल्य ३), सजिल्दका ३॥) ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इक्कीसवाँ अध्याय

कार्श्य-वर्णन ।

कृशता या दुबलेपनके निदान ।

मनुष्यके कृश या दुबले होनेके नीचे लिखे कारण हैं:—

(१) वायु, (२) रूखा अन्नपान, (३) लंघन, (४) कम खाना, (५) वमन-विरेचनका अति योग, (६) शोक करना, (७) मूत्रादि वेग रोकना, (८) नींदको रोकना, (९) सदा रोगी रहना, (१०) नित्य मैथुन करना, (११) नित्य कसरत करना, (१२) थोड़ा भोजन मिलना, (१३) किसी तरहका डर रहना और (१४) धन वग़ैरःकी चिन्ता रहना।

कृश या दुबले आदमीके लक्षण ।

जिसके कूले, गर्दन और पेट सूखे हुए हों, शरीरमें नसोंका जाल दीखता हो, चमड़ी और हड्डियाँ ही शरीरमें शेष हों तथा मुँह मोटा हो, उसे अत्यन्त कृश या दुबला कहते हैं।

अत्यन्त कृशता या दुबलेपनके रोग ।

अत्यन्त दुबले आदमीको तिल्ली, खाँसी, साँस, गोला, बवासीर, उदर रोग और ग्रहणी प्रभृति व्याधियाँ दौड़कर पकड़ती हैं। कोई-कोई कृश या दुबले आदमी अत्यन्त बलवान भी होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कृश होनेपर भी बलवान होनेका कारण।

गर्भाधानके समय अगर पिताके वीर्यका भाग अधिक होता है और मेद कम होती है, तो पैदा होनेवाला बालक दुबला होनेपर भी बलवान होता है।

मोटा होनेपर भी बलहीनताका कारण।

गर्भाधानके समय अगर पिताके वीर्यका भाग कम आता है और मेद ज़ियादा आती है, तो पैदा होनेवाला बालक अच्छी तरह पुष्ट और मोटा होनेपर भी बलहीन होता है।

कार्श्य रोग या दुबलेकी चिकित्सा।

(१) जो मनुष्य रूखे अन्नपानोंसे दुबला हुआ हो, उसे बलदायक, धातुओंको पुष्ट करनेवाली, मैथुनमें रुचि करनेवाली और बाजीकरण औषधियाँ देनी चाहिये। अथवा पन्द्रह दिन तक दूधके साथ, घीके साथ, तेलके साथ अथवा गरम जलके साथ "असगन्धका चूर्ण" पिलाना चाहिये। जिस तरह जलकी वृष्टिसे धान्योंकी पुष्टि होती है; उसी तरह इस नुसख़ेसे शरीरकी पुष्टि होती है।

नोट—असगन्धको महीन पीस-छानकर, दूध, घी, तेल या गरम जल इनमेंसे किसी एकके साथ पीना चाहिये। दूध-घीके साथ असगन्ध खाना सबसे उत्तम है।

अश्वगन्धा तैल।

(२) पाव भर असगन्धको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर दो सेर असगन्धको सोलह सेर पानीमें औटाओ। जब चौथाई पानी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रह जाय, मल-छान लो। अब एक सेर घी, लुगदी, काढ़े और चार सेर गायके दूधको मिलाकर तेल पकाओ। तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इसका नाम "अश्वगन्धा तैल" है। इसकी मालिशसे शरीर पुष्ट होता है।

(३) असगन्ध, काली मूसली और सफेद मूसली समान-समान लेकर गायके दूधमें पकाओ; जब दूध सूख जावे, चूर्ण-सा हो जावे, उसे पीसकर उसमें बराबरकी "मिश्री" या चीनी मिला दो। इसमेंसे एक या दो तोले दवा गायके दूधके साथ खानेसे शरीर पुष्ट होता है। यह दवा औरतोंके लिये जियादा मुफीद है।

(४) दूधके साथ रोटी खानेसे दुबला शरीर मोटा होता है।

(५) मीठे बादामोंकी गरी, निशास्ता, कतीरा और चीनी बराबर-बराबर मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक तोले भर नित्य दूधके साथ खानेसे शरीर मोटा होता है।

(६) कालीमिर्च ३ तोले ४ माशे, सोंठ ३ तोले ४ माशे, पीपर १० तोले, छिले तिल १७ तोले और अखरोटकी मींगी १७ तोले—इनको पीस-छानकर रख लो। दो सेर चीनीकी चाशनी पकाओ। उस चाशनीमें दवाओंको डालकर उतार लो। जब चाशनी शीतल हो जाय, उसमें पाव भर "शहद" मिला दो और रख दो। इसमेंसे ४ माशे दवा नित्य खानेसे शरीर खूब तैयार होता है।

असाध्य कृशता।

जो मनुष्य स्वभावसे ही अत्यन्त दुबला हो, अल्प अग्निवाला और कमजोर हो, उसका इलाज मत करो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बारहवाँ अध्याय

उदर रोग-वर्णन।

उदर रोगोंके निदान-कारण।

प्रायः सब तरहके रोग मन्दाग्निसे होते हैं। जिसमें भी उदर रोग यानी पेटके रोग तो मन्दाग्निसे बहुत ही होते हैं। मन्दाग्निसे, अजीर्णकारक पदार्थोंके खाने-पीनेसे, दोषों और मलोंके बढ़ने या कोष्ठबद्धता—दस्तकी क़ब्जियतसे उदर रोग—पेटके रोग होते हैं।

जिज्ञासा—प्रायः सभी रोगोंका जन्म मन्दाग्निसे होता है; यानी अग्निके मन्दी रहनेसे अनेकानेक रोग होते हैं। इनमें भी पेटके रोग तो मन्दाग्निसे बहुत ही ज़ियादा होते हैं। मन्दाग्निके सिवा, पेटके रोग अजीर्णसे, अत्यन्त हानिकारक खाने-पीनेके पदार्थोंसे और पेटमें मलके जमा हो जानेसे भी होते हैं। अतः आरोग्यता चाहनेवाले मनुष्यको ऐसे उपाय करते रहना चाहिये, जिससे अग्नि कभी मन्द न हो, अजीर्ण न हो और दस्तकी क़ब्जियत न हो।

उदर रोगकी सम्प्राप्ति।

संचित हुए दोष—पसीना और जलके बहानेवाली नाड़ियोंको रोक कर तथा जठराग्नि, प्राणवायु और अपानवायुको बिगाड़कर, उदर रोग—पेटके रोग पैदा करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा—जमा हुए वातादि दोष पसीना और जल बहानेवाले स्रोतोंको रोक देते हैं और जठराग्नि, प्राणवायु तथा अपानवायुको दूषित कर देते हैं। स्रोतोंके रुकने तथा जठराग्नि, प्राणवायु और अपानवायुके दूषित होनेसे पेटमें रोग हो जाते हैं। असल बात यह है कि, पहले अग्नि मन्द होती है। मन्दाग्नि होनेकी वजहसे अजीर्ण हो जाता है। अजीर्णकी वजहसे शरीरमें मल इकट्ठा हो जाता है। मलके संचय होनेसे दोष कुपित होकर, जठराग्निको सर्वथा नष्ट करके, उदर रोग करते हैं।

उदर रोगोंके सामान्य रूप।

नीचे लिखे हुए लक्षण सब तरहके उदर रोगों—पेटके रोगोंमें देखे जाते हैं:—

(१) अफारा,	(२) चलनेमें अशक्तता,
(३) कमजोरी,	(४) अग्निका मन्दापन,
(५) सूजन,	(६) अङ्गोंमें ग्लानि,
(७) अपानवायुका न खुलना,	(८) मलका रुकना,
(९) दाह या जलन होना,	(१०) तन्द्रा।

नोट—अफारा, आलस्य, अशक्ति, अङ्गसाद, मल-रोध, प्यास और दाह—ये सब उदर रोगोंके पूर्वरूप हैं; यानी उदर रोग होनेसे पहले ये होते हैं।

उदर रोगोंकी संख्या।

उदर रोग आठ तरहके होते हैं:—

(१) वातसे	वातोदर।
(२) पित्तसे	पित्तोदर।
(३) कफसे	कफोदर।
(४) सन्निपातसे	सन्निपातोदर।
(५) प्लीहासे	प्लीहोदर।
(६) गुदाके अवरोधसे	बद्धोदर।
(७) क्षतसे	क्षतोदर।
(८) पेटमें पानी भर जानेसे	जलोदर।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातोदरके लक्षण।

वातोदर रोगमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) हाथ, पैर, नाभि और कूखमें सूजन होती है।

(२) कूख, पसली, पेट, कमर, पीठ और सन्धियोंमें दर्द होता है।

(३) सूखी खाँसी चलती है।

(४) शरीर टूटता है।

(५) नाभिसे नीचेके शरीरका आधा भाग भारी जान पड़ता है।

(६) मलरोध होता है; यानी दस्त नहीं होता।

(७) चमड़ा, आँख और पेशाब वग़ैरःका रंग धूसर या लाल होता है।

(८) अकस्मात उदरकी सूजन घट या बढ़ जाती है।

(९) पेटमें सूई गड़ानेकी-सी वेदना होती है।

(१०) काले रंगकी सूक्ष्म नसें पेटपर छा जाती हैं।

(११) पेटपर उँगली मारनेसे फूली हुई मशककी-सी आवाज़ होती है।

(१२) दर्द और आवाज़ करती हुई हवा इधर-उधर घूमती है।

नोट—वातोदर रोग होनेसे संक्षेपमें हाथ, पैर और नाभिपर सूजन, अंग टूटना, अरुचि और जड़ता ये लक्षण होते हैं।

पित्तोदरके लक्षण।

पित्तोदर होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) ज्वर होता है, (२) मूर्च्छा होती है, (३) दाह या जलन होती है, (४) प्यास लगती है, (५) मुँहका स्वाद कड़वा रहता है, (६) भ्रम होता है, (७) अतिसार या दस्तोंका रोग होता है, (८)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चमड़ा और आँख वग़ैरःका रंग पीला हो जाता है, (९) पेटका रंग हरा हो जाता है, (१०) पेटपर पीली या ताम्बेके रंगकी नसें छायी रहती हैं, (११) पेटपर पसीने आते हैं, गरमीसे उसमें दाह होता है; भीतर गरमी और बाहर दाह होता है, (१२) आँतोंसे धूआँ-सा निकलता जान पड़ता है, (१३) छूनेसे पेट नर्म जान पड़ता है, उसमें पीड़ा होती है, (१४) पित्तोदर जल्दी पककर जलोदर हो जाता है।

नोट—संक्षेपमें, पित्तोदर होनेसे दाह, मद, अतिसार, भ्रम, ज्वर, प्यास और मुखमें कड़वापन—ये लक्षण होते हैं।

कफोदरके लक्षण।

कफोदर रोग होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) शरीरमें शिथिलता, (२) शून्यता—स्पर्शज्ञानका अभाव, (३) सूजन, (४) भारीपन, (५) नींद बहुत आना, (६) क़य होनेकी इच्छा, (७) अरुचि, (८) श्वास, (९) खाँसी, (१०) चमड़े और नेत्र वग़ैरःका रंग सफेद होना, (११) पेट भीगा-सा, चिकना, सफेद, नसोंसे व्याप्त, मोटा, कठोर, छूनेमें शीतल, भारी, अचल और बहुत देरमें बढ़नेवाला होता है; यानी कफोदर बहुत देरमें बढ़ता है।

नोट—संक्षेपमें, कफोदर होनेसे भारीपन, अंगसाद, श्वास, अरुचि, खाँसी, पीनस और सूजन—ये लक्षण होते हैं।

सन्निपातोदर या दूष्योदरके लक्षण।

जिन मनुष्योंको दुष्टा स्त्रियाँ वशमें करनेके लिए नाखून, बाल, मूत्र, मल या आर्त्तव (रजोधर्मका खून) मिलाकर खाने-पीनेके पदार्थमें खिला देती हैं, जिनको दुश्मन ज़हर खिला देते हैं, जो दूषित जल पीते हैं अथवा जो दूषी विष सेवन करते हैं, उनके रक्त और वातादि तीनों दोष कुपित होकर अत्यन्त भयानक सन्निपातोदर या दूष्योदर रोग पैदा करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह उदर रोग शीतकालमें, शीतल हवा चलनेके समय, अधिक बादल घिरनेके दिन या वर्षाकी झड़ी लगनेके समय विशेषकरके कुपित होता है। क्योंकि इन समयोंमें दूषित विषका प्रकोप होता है। मतलब यह है कि, ऐसे समयमें यह रोग बढ़ जाता और दाह होने लगता है।

इस उदर रोगीके शरीरमें दाह होता है। वह निरन्तर बेहोश रहता या बारबार बेहोश होता है। उसके शरीरका रंग पीला हो जाता है, देह कृश हो जाती है और प्यासके मारे गला सूखा करता है। इस सन्निपातोदर या त्रिदोषज उदर रोगको "दूष्योदर" भी कहते हैं।

नोट—परस्पर दूषित हुए दोष भी दूष्य कहाते हैं। इसलिये दूष्य द्वारा हुए उदर रोगको "दूष्योदर" कहते हैं। खुलासा यह है कि दुष्ट जल—सिवार, काई, पत्तोंसे ख़राब हुआ पानी पीनेसे, दूषी विष सेवनसे, मल-मूत्र रोकनेसे तथा विष खानेसे दुष्ट हुए वातादि दोष सन्निपातोदर रोग करते हैं।

प्लीहोदरके लक्षण।

दाहकारक और अभिष्यन्दी अथवा कफकारक और अम्लपाकी पदार्थ खाने-पीनेसे रुधिर और कफ अत्यन्त दूषित होकर, पेटके बाँई तरफ, प्लीहाको बढ़ाकर अत्यन्त वेदना उत्पन्न करते हैं। इसीको "प्लीहोदर" कहते हैं।

प्लीहा या यकृतके बढ़ते रहनेसे जब पेट बहुत बढ़ जाता है, तब सारे शरीरमें अवसन्नता, मन्द ज्वर, मन्दाग्नि, बलक्षीणता, देहकी पाण्डुवर्णता और कफपित्त-जनित अन्यान्य उपद्रव भी होते हैं। इस समय इन रोगोंको "प्लीहोदर या यकृदुदर" कहते हैं। प्लीहोदर होनेसे पेटका बाँया भाग बढ़ता है और यकृदुदर होनेसे पेटका दाहिना भाग बढ़ता है। क्योंकि प्लीहा पेटके बाँये भागमें और यकृत दाहिने भागमें है।

कफकी अधिकता होनेसे दर्द नहीं होता। शरीरका रंग सफेद होता है, प्लीहा अत्यन्त कठिन, मोटी, बहुत भारी और शान्त होती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है; अथवा शरीर भारी रहता है, अरुचि होती और पेट बड़ा सख़्त रहता है।

वायुका कोप ज़ियादा रहनेसे सदा दस्तकी क़ब्ज़ियत, उदावर्त, आनाह और पेटमें ज़ोरका दर्द रहता है।

पित्तका कोप अधिक होनेसे ज्वर, प्यास, अधिक पसीने आना, तीव्र वेदना, दाह, मोह और शरीरका रंग पीला—ये लक्षण होते हैं।

रुधिरका कोप अधिक होनेसे ग्लानि, दाह, मोह, शरीरका रंग बदल जाना, शरीरमें भारीपन, उत्क्लेद, भ्रम और मूर्च्छा ये लक्षण होते हैं।

जिसमें तीनों दोषोंके लक्षण होते हैं, उसे त्रिदोषज प्लीहा रोग कहते हैं। यह असाध्य होता है।

नोट—ये लक्षण यकृदुदर और प्लीहोदर दोनोंमें ही पाये जाते हैं। फ़र्क़ इतना ही है कि, अगर दाहिनी तरफ रोग होता है तो यकृदुदर और बाँई तरफ होता है तो प्लीहोदर कहते हैं।

बद्धगुदोदरके लक्षण।

जब मनुष्यकी आँतें अन्न, शाक तथा कमलकन्द आदि चिपटने-वाले पदार्थोंसे अथवा रेत-कंकरी या बाल आदिसे अत्यन्त ढक जाती हैं, उस समय वातादि दोषोंसे नित्य थोड़ा-थोड़ा मल आँतोंमें उसी तरह जमता जाता है, जिस तरह बुहारी देते समय थोड़ा-थोड़ा कूड़ा-कर्कट रह जाता है। ऐसा होनेसे जमा हुआ मल गुदाकी राहको रोक-कर, थोड़ा-थोड़ा मल बड़ी कठिनतासे बाहर निकलने देता है। इससे हृदय और नाभिके बीचमें पेट बढ़ जाता है। इसको "बद्धगुदोदर" कहते हैं।

खुलासा—इस रोगके होनेसे बड़ी तकलीफके साथ थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है और हृदय और नाभिके बीचमें पेट बढ़ जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षतोदरके लक्षण।

अन्नके साथ अथवा और किसी तरहसे पेटमें रेता, तृण, लकड़ी या काँटे वग़ैरःके चले जानेसे आँतें छिद जाती हैं—उनमें घाव हो जाते हैं; फिर उन घावोंसे पानी जैसा पतला स्राव होता है और वह गुदामें होकर बाहर बहता है। नाभिके नीचेका भाग बढ़ जाता है, पेटमें सूई छेदनेका-सा दर्द होता है और ऐसा जान पड़ता है मानो कोई चीरता है। इसी रोगको "क्षतोदर" कहते हैं, क्योंकि इस रोगमें आँतोंमें क्षत या घाव हो जाते हैं। कितने ही ग्रन्थोंमें इसे "परिस्राव्युदर" भी लिखा है, क्योंकि इस रोगमें पानी-सा स्राव होता रहता है।

खुलासा—शल्य, बाण और सूई प्रभृतिके भोजनके साथ पेटमें जानेसे आँतें छिल या कट जाती हैं। फिर उन छिली हुई या कटी हुई आँतोंमेंसे होकर गुदा द्वारा पतला पानी-सा स्राव होता है और नाभिके नीचेसे पेट बढ़ता है। इसे "क्षतोदर" कहते हैं। जँभाई आने या थोड़ा भोजन करनेसे काँटे वग़ैरः पेटमें छिदने लगते हैं,—यह भी क्षतोदरकी एक पहचान है।

जलोदरके लक्षण।

जो मनुष्य स्नेहपान करके—घी-तैलादि पीकर, अनुवासन वस्ति—चिकने पदार्थोंकी पिचकारी लेकर, वमन-विरेचन करके अथवा निरूह वस्ति सेवन करके तत्काल शीतल जल पी लेता है, उसकी जलवाही नाड़ियाँ दूषित हो जाती हैं अथवा उनके चिकनाई लिपट जाती है। फिर उन्हीं दूषित नाड़ियोंसे पानी टपक-टपककर पेटमें इकट्ठा होता है और इस तरह पेट बढ़ता है। इसको "उदकोदर" या "जलोदर" नामक जल-सञ्चयजनित उदर रोग कहते हैं।

इस रोगमें पेट चिकना, बड़ा और चारों तरफसे बहुत ऊँचा होता है। पेट तना हुआ-सा मालूम होता है। पानीकी पोट-सी भरी जान पड़ती है। जिस तरह पानीसे भरी हुई मशक झलर-झलर हिलती है;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी तरह पेट हिलता और आवाज़ होती है। इसकी वजहसे नाभिके चारों तरफ दर्द होता है।

खुलासा—पेट अत्यन्त ऊँचा और चिकना होता है। पानीकी पोट-सी भरी मालूम होती है। वह पानीसे भरी हुई पखालकी तरह हिलता है, गुड़-गुड़ शब्द और कम्प होता है। इसे "जलोदर या जलन्धर" कहते हैं। आत्रेय मुनि कहते हैं कि विषम आसनपर बैठनेसे, बहुत पानी पीनेसे, मिहनत और राह चलनेकी पीड़ासे एवं अत्यन्त कसरत करनेसे पेट पीला हो जाता है और जलोदर रोग हो जाता है। जिसको जलोदर हो जाता है, उसके पेटमें पानी मालूम होता है, पेट अत्यन्त बढ़ जाता है, आवाज़ होती है और पैरोंपर सूजन होती है।

हिकमतसे जलन्धरके लक्षण।

हिकमतमें जलन्धरको "इस्तस्का" कहते हैं। इसके आरम्भको "सूउलकनियाँ" कहते हैं। बेकाम ठण्डे मलके सम्पूर्ण जोड़ोंमें आ जानेसे यह रोग होता है। इसके तीन भेद हैं:—(१) लहमी, (२) ज़की, और (३) तबली।

"लहमी" होनेसे सारे अंगोंमें सूजन होती है। उसका कारण कलेजेकी निर्बलता है।

"ज़की"में पेट बढ़ जाता है और चमड़ी भारी हो जाती है। मलनेसे पेट भरी हुई मशकके समान मालूम होता है।

"तबली"में भी पेट बढ़ जाता है और नाभि निकल आती है। पेट-पर हाथ मारनेसे तबले या ढोलकी-सी आवाज़ आती है।

"लहमी" ज़ियादा होता है और वह इस्तस्काके बुरे प्रकारोंमेंसे है।

उदर रोगोंकी साध्यासाध्यता।

बहुत करके सभी तरहके उदर रोग कष्टसाध्य होते हैं।

रोगी बलवान हो, पेटमें पानी पैदा न हुआहो और रोग हालका पैदा हुआ हो, तो उपाय करनेसे नष्ट हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—पेटमें पानी पैदा हुआ है या नहीं, इस बातका पता अच्छी तरह लगा लेना चाहिये। "चरक"में लिखा है:—अगर पेट बढ़ गया हो, क्षोभ पानेपर पानीसे भरी हुई मशककी तरह आवाज़ करता हो, नर्म हो, बहुत मोटा होनेकी वजहसे अस्फुट शिराएँ—नसें दीखती हों, तो समझो कि पेटमें पानी उत्पन्न हो गया। अगर आलस्य हो, मुँहका ज़ायका ठीक न हो, पेशाब बहुत आता हो, पाखाना पतला हो, अग्नि मन्द हो और शरीरका रंग पीला-सा हो—तो भी समझो कि, पेटमें पानी पैदा हो गया।

बद्धगुदोदर नामक उदर रोग पन्द्रह दिनसे अधिक पुराना होनेसे मनुष्यको मार डालता है।

काँटे आदिसे आँतोंमें छेद हो गये हों, यानी क्षतोदर रोग हो गया हो, तो रोगीके बचनेकी आशा नहीं। बहुधा, क्षतोदर रोगी मर जाते हैं।

जिस उदर-रोगीकी आँख सूज गई हों, लिङ्ग टेढ़ा हो गया हो, चमड़ी पतली और गीली हो गई हो; बल, खून, मांस और अग्नि ये क्षीण हो गये हों—उस रोगीका इलाज नहीं करना चाहिये।

जिस उदर-रोगीकी पसलियाँ टूट-सी गई हों, जिसकी अन्नमें अरुचि हो, सूजन हो, दस्त होते हों और जुलाब देनेपर भी पेट फिर भर जाता हो, उसका इलाज नहीं करना चाहिये। किसीने कहा है:—

पञ्चादूर्ध्वं बद्धगुदं सर्वं जातोदकं तथा।
जन्मनैवोदरं सर्वं प्रायः कृच्छ्रतमं मतम्॥

पन्द्रह दिनके बाद बद्धगुदोदर, सब तरहके जलोदर और जन्मसे हुए उदर रोग,—ये सब असाध्य होते हैं।

सब तरहके उदर रोग कष्टसाध्य हैं, विशेषकर जलोदर और क्षतोदर रोग अतिशय कष्टसाध्य हैं। चीर-फाड़से ही ये आराम हों तो हो सकते हैं; दवा-दारूसे आराम होनेकी आशा बहुत कम है। रोग पुराना होने या रोगीका बल नाश हो जानेसे सभी उदर रोग असाध्य हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदर रोग-चिकित्सामें
याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर रोगी बलवान हो, उसका बल नाश न हुआ हो, पेटमें पानी न आया हो, रोग नया हो, तो इलाज हाथमें लो। अगर रोगीमें बल न हो, पेटमें पानी भर गया हो, दस्त करानेपर भी पेट फिर भर जाता हो, रोग पुराना हो अथवा और असाध्य लक्षण हों तो उदर-रोगीकी चिकित्सा मत करो। यों तो सभी उदर रोग कष्टसाध्य होते हैं, पर जलोदर और क्षतोदर तो अत्यन्त कष्टसाध्य होते हैं, अतः उदर रोगीका इलाज हाथमें लेनेसे पहले खूब सोच-समझ लो।

(२) प्रायः सभी तरहके उदर रोगोंमें तीन दोष कुपित होते हैं, अतः पहले वातादि तीनों दोषोंकी शान्तिका उपाय करना चाहिये।

(३) इन रोगोंमें, अग्निवृद्धिके लिए अग्निवर्द्धक औषधियाँ देनी चाहिये और दस्त करानेके लिए थोड़ा गरम दूध और रैंडीका तेल या गोमूत्र और रैंडीका तेल मिलाकर पिलाना चाहिये।

(४) वातोदरमें पहले स्नेहन, स्वेदन, विरेचन और बस्तिकर्म—इनसे काम लेना चाहिये। इस रोगमें पहले पुराने घी आदि चिकने पदार्थोंकी मालिश करके सेक करना चाहिये; फिर दस्तावर दवासे दस्त कराकर, कपड़ेकी पट्टीसे पेटको बाँधे रखना चाहिये। वातोदर रोगीको पीपर और सैंधानोन मिलाकर "माठा" पिलाना चाहिये। इस माठेसे शरीरका भारीपन और अरुचि दूर होती है। दशमूलके काढ़ेमें "रैंडीका तेल" मिलाकर पिलाना भी अच्छा है। इससे वातोदर, सूजन और शूल नष्ट हो जाते हैं। अँटमीका दूध या बकरीका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूध उदर रोगोंमें सबसे अच्छा है। अग्निदीपक हल्के अन्न—गेहूँ, शालि चावल और सोंठी चावल आदि भोजनको देने चाहिये।

(५) प्लीहोदर और यकृदुदरमें प्लीहा और यकृत रोगमें लिखा हुआ इलाज करना चाहिये।

(६) बद्धगुदोदरमें पहले स्वेद और फिर तेज़ जुलाब देना चाहिये।

(७) पित्तोदरमें पंचमूलके काढ़ेके साथ पकाया हुआ दूध देना चाहिये।

(८) कफोदरमें अरण्डीके तेलमें "जवाखार" मिलाकर देना अच्छा है। सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण डालकर कुल्थीका रस अथवा दूध भोजनके लिए देना चाहिये।

(९) विरेचन, आस्थापन बस्ति और स्नेहन कर्म सभी तरहके उदर रोगोंमें हितकारी हैं।

(१०) उदर रोगोंमें मलका सञ्चय बहुत होता है, इसलिये इनमें संशोधन कराना; यानी दस्त कराना विशेष हितकारी है। रैंडीका तेल—दूध, जल या गोमूत्रमें मिलाकर पीनेसे पेट साफ हो जाता है।

(११) मांस, शाक, तिल, पिट्ठीके पदार्थ, नमक, विदाही या जलन करनेवाले अन्न, भारी पदार्थ, कसरत, राह चलना, दिनमें सोना, नहाना और जल पीना—सभी उदर रोगोंमें अपथ्य हैं, अतः मना हैं।

नोट—हिकमतमें भी नहानेकी मनाही है। अगर नहाना ही हो, तो खारे पानीकी नदीमें नहाना चाहिये अथवा खारी नोन पीसकर और पानीमें मिलाकर वह पानी कई दिनों तक धूपमें रखना चाहिये; फिर गरम करके, उसीसे नहाना चाहिये। हकीमोंने भी जलन्धर रोगमें पानी पीनेकी मनाही की है। पानीके बजाय "सौंफका अर्क" और "मकोयका अर्क" पिलानेकी राय दी है। अगर पानी बिना न सरे, तो गर्म जल शीतल करके थोड़ा-थोड़ा पिलानेकी आज्ञा दी है। हमारे यहाँ भी गरम पानी पीनेकी आज्ञा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) रोगकी प्रबल अवस्थामें रोगीको मानमण्ड देना चाहिये। अगर वह न हो, तो केवल दूध या दूध-साबूदाना देना चाहिये। अगर रोगका ज़ोर कम हो, तो दिनके समय पुराने चावलोंका भात, मूँगकी दालका जूस, परवल, बैंगन, गूलर, सूरण, छोटी मूली और अदरख वग़ैरःकी तरकारी थोड़ा नमक मिलाकर देनी चाहिये। रातके समय दूध-साबूदाना देना चाहिये। अगर ज़ियादा भूख हो, तो दो-एक पतली-पतली रोटियाँ दे सकते हैं।

नोट—हिकमतमें लिखा है कि, इस रोगवालेको गेहूँकी रोटीसे जौकी रोटी खाना ज़ियादा मुफीद है। अगर गेहूँ बिना मन न माने, तो गेहूँके आटेमें जौका आटा मिला लेना चाहिये।

उदर रोगोंकी विशेष चिकित्सा।

वातोदर-चिकित्सा।

नोट—पहले वैद्य रोगीके बलाबल और कालका विचार करके "स्थिरादि घृत" पिलावे, स्नेह और स्वेद कर्म करे तथा विरेचन या जुलाब दे; रोगीकी नाभिपर कपड़ा लपेटकर शाल्वन और उपानाहन स्वेद देवे; स्थिरादि औषधियोंके काढ़ेमें "रैंडीका तेल" मिलाकर निरूह और अनुवासन बस्ति दे; दूध, यूष, मांसरस और अन्न इनका क्रमसे उपयोग करे; यानी पहले दूध दे, फिर यूष, फिर मांसरस और शेषमें अन्न।

(१) पाव भर गोमूत्रमें दो तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीनेसे वातोदर नाश हो जाता है।

(२) माठेमें "पीपरोंका चूर्ण और सैंधानोन" मिलाकर पीनेसे वातोदर नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) दशमूलके काढ़ेमें दो तोले "अरण्डीका तेल" मिलाकर पीनेसे वातोदर, सूजन और शूल ये नाश हो जाते हैं।

(४) त्रिफलेके काढ़ेमें "गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे वातोदर नाश हो जाता है।

(५) वातोदर रोगमें पुराने घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंकी मालिश करके सेक करना चाहिये। फिर दस्त कराकर, कपड़ेकी पट्टीसे पेटको बाँध रखना चाहिये।

(६) दशमूलके काढ़ेमें "गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे भी वातोदर नाश हो जाता है। दशमूलके काढ़ेमें "दूध और शिलाजीत" मिलाकर पीनेसे भी वातोदर नाश हो जाता है।

(७) केवल ऊँटनीका दूध पीनेसे ही वातोदर नाश हो जाता है। बकरीका दूध भी उदर रोगोंमें अच्छा लिखा है।

कुष्ठादि चूर्ण।

(८) कूट, दन्ती, जवाखार, त्रिकुटा, सैंधानोन, कालानोन, साँभर-नोन, बच, जीरा, अजवायन, हींग, सज्जी, चव्य, चीता और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण नित्य गरम पानीके साथ खानेसे वातोदर नाश हो जाता है। इसका नाम "कुष्ठादि चूर्ण" है।

समुद्राद्य चूर्ण।

(९) समन्दर नोन, कालानोन, सैंधानोन, जवाखार, अजमोद, पीपर, चीता, अदरख, हींग, साँभरनोन और खारीनोन—सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार माशे चूर्ण ६ माशे या तोले भर "घी" में मिलाकर, भोजनसे पहले, प्रथम ग्रासमें खानेसे वातोदर, गोला, संग्रहणी, बवासीर, पाण्डु और भगन्दर आदि रोग नाश हो जाते हैं। इसका नाम "समुद्राद्य चूर्ण" है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लशुन तैल।

५ सेर उत्तम लहसनको २५ सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो।

त्रिकुटा, त्रिफला, दन्ती, हींग, सैंधानोन, चीता, देवदारु, बच, कूट, लाल सहँजना, पुनर्नवा, कालानोन, बायबिड़ङ्ग, अजवायन और गजपीपर दो-दो तोले और निशोथ एक तोले लेकर, सिलपर ऊपरके काढ़ेमेंसे थोड़ा-सा लेकर उसीके साथ पीस लो।

अब एक क़लईदार बर्तनमें ऊपरका काढ़ा, लुगदी और रैंडीका तेल डेढ़ सेर मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ।

सवेरे ही उठकर, इसमेंसे ६ माशेसे दो तोले तक तैल, अपनी अग्नि और बलके अनुसार, पीनेसे समस्त रोग नाश हो जाते हैं; ख़ासकर उदर रोग, मूत्रकृच्छ्र, उदावर्त, अन्त्रवृद्धि, गुदाके कीड़े, पसली और कूखका दर्द, आमशूल, अरुचि, यकृत, अष्ठीलिका, आनाह, सीहा और अङ्गकी पीड़ा। एक महीने तक इस तैलके पीनेसे ८० तरहके वात रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—वातोदर रोगपर जितने नुसख़े लिखे हैं, प्रायः सभी परीक्षित हैं।

पित्तोदर चिकित्सा।

नोट—अगर रोगी ताक़तवर हो, तो उसे जुलाब दे दो। अगर कमज़ोर हो, तो अनुवासन बस्ति देकर क्षीर बस्तिसे शुद्ध करो। शरीरमें अग्नि और बल होने-पर स्निग्ध विरेचन दो। निशोथका कल्क या अरण्डीका काढ़ा दूधमें दो अथवा सातला, त्रायमाण या अमलताशके द्वारा पकाया हुआ घी दो। जब अच्छी तरहसे विरेचन हो जावे, उत्तम औषधि दो। आजकल बस्ति वग़ैरः कौन वैद्य करता और कौन रोगी कराता है? अतः बलवान रोगी होनेपर, उपरोक्त उपायोंमेंसे किसीसे दस्त कराकर रोग-नाशक दवा दे देनी चाहिये।

(१) स्थिरादि औषधियोंके साथ तेल या दूध पकाकर पिलानेसे पित्तोदरमें लाभ होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) पंचमूलकी दवाओंके द्वारा दूध पकाकर पिलानेसे पित्तोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पृश्निपर्णी, खिरेंटी, कटेरी, लाख और सोंठ—इनके द्वारा दूध पकाकर पिलानेसे पित्तोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) चीनी और कालीमिर्च डालकर मीठा माठा पीनेसे पित्तोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कफोदर चिकित्सा।

नोट—पहले पीपरोंके कल्कसे पकाया हुआ घी पिलाओ। इसके बाद, थूहरके दूधके साथ पकाये हुए घीसे अनुलोमन कराओ। इसके बाद सोंठ, मिर्च, पीपर, गोमूत्र, रैंडीका तेल और नागरमोथेके काढ़ेसे स्थापन और अनुवासन बस्ति दो। लोहेका मैल, सरसों और आमलोंके बीज—इनको एकत्र पीसकर पेटपर लेप करो। कुलथीके यूषमें त्रिकुटेका चूर्ण मिलाकर भोजनके साथ दो और गरम पानीसे पेटको बारम्बार सेको।

(१) कुल्थीके काढ़ेमें सोंठ, मिर्च और पीपरका चूर्ण मिलाकर पिलाओ। इससे कफोदर शान्त होता है। परीक्षित है।

(२) गरम दूधमें रैंडीका तेल मिलाकर पिलानेसे कफोदर शान्त होता है। परीक्षित है।

(३) अजवायन, सैंधानोन, जीरा, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—इनका चूर्ण "छाछ" में मिलाकर पीनेसे कफोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) रैंडीके तेलमें "जवाखार" मिलाकर पीनेसे कफोदर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) त्रिकुटा, जीरा, अजवायन, चीता और हाऊबेरका चूर्ण मिलाकर "माठा" पीनेसे कफोदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्निपातोदर-चिकित्सा ।

(१) सोंठ, मिर्च, पीपर, जवाखार और सैंधानोन—इनका चूर्ण मिलाकर गाढ़ा-गाढ़ा माठा पीनेसे सन्निपातोदर रोग नाश हो जाता है ।

(२) रोहेड़ा और हरड़,—इनको गोमूत्रमें पीसकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं । इनके सिवा प्लीहा, प्रमेह, बवासीर, कृमि और गुल्म रोग भी आराम हो जाते हैं ।

(३) सातला और शंखपुष्पीके कल्कके साथ "घी" पकाकर पिलानेसे दस्त होते और सन्निपातोदर रोगमें लाभ होता है ।

(४) शुद्ध शिलाजीत गोमूत्रमें मिलाकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं ।

प्लीहोदर-चिकित्सा ।

नोट—प्लीहा रोगीको पहले स्नेहन, स्वेदन और रेचन इत्यादि विधि करो । तिल्ली नाश करनेको, दही खिलाकर, बाँये हाथकी शिरा बींधो और यकृत रोग नाश करनेको दाहिने हाथकी शिरा बींधो । दुष्ट खूनकी शान्तिके लिये प्लीहाको अच्छी तरह मलो अथवा बाँये हाथके पहुँचेके अँगूठेकी शिराको दग्ध करो ।

(१) बायबिड़ङ्ग, सैंधानोन, सत्तू और बच—इनको पानीमें पीसकर, "दूधके साथ" पीनेसे प्लीहा, गुल्म और उदर रोग नाश हो जाते हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) सैंधानोन, पीपर और चीता—इनके चूर्णको "सहँजने, हरड़ और आमलोंके रस या काढ़ेके साथ" पीनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई तिल्ली भी आराम हो जाती है।

(३) तिल, रैंडीका खार, शुद्ध भिलावे और पीपर—बराबर-बराबर लो और सबकी तोलके बराबर "गुड़" लो। फिर सबको एकत्र मिलाकर, अपनी अग्नि और बलके अनुसार खाओ। इससे अत्यन्त उग्र प्लीहा, यकृत और गुल्म नष्ट हो जाते हैं।

(४) सहँजनेके काढ़ेमें "अम्लवेत, सैंधानोन, कालीमिर्च और पीपरोंका चूर्ण" डालकर पीनेसे प्लीहोदर रोग नाश हो जाता है।

(५) कूट, बच, अदरख, चीता, इन्द्रजौ, पाढ़, अजमोद और पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको ६ माशेसे एक तोले तक गरम जलके साथ खानेसे प्लीहोदर और उदावर्त्त नाश हो जाते हैं।

(६) समन्दरकी सीपका खार "दूधके साथ" खानेसे प्लीहोदर नाश हो जाता है।

(७) पीपरोंका चूर्ण "दूधके साथ" खानेसे प्लीहोदर शान्त हो जाता है।

(८) आकके पत्ते और सैंधानोन—दोनोंको हाँडीमें रखकर, हाँड़ीका मुख बन्द कर दो और कण्डोंमें फूँक दो। इसमेंसे १ माशे चूर्ण काँजी, छाछ या दहीके पानीके साथ पीनेसे प्लीहोदर और वायु-गोला आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) सज्जीखार और जवाखार पीसकर रख लो। इस चूर्णके खानेसे भी प्लीहोदर आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) रुहेड़ेका फूल और हरड़के बक्कलको पीस-छान लो। इस चूर्णको "गोमूत्र या जलके साथ" खानेसे सब तरहके पेटके रोग, तिल्ली, प्रमेह, बवासीर, वायुगोला और कृमिरोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) हींग, त्रिकुटा, कूंट, जवाखार और सैंधानोन—इनको पीस-छान लो। इस चूर्णको "बिजौरे नीवूके रसके साथ" खानेसे प्लीहा और शूल नष्ट हो जाते हैं।

(१२) ढाकके खारके जलमें पीपरोंको भावना देकर खानेसे गुल्म और प्लीहा रोग नाश हो जाते हैं।

(१३) जम्बीरी नीबूके रसमें, दो माशे "शंखनाभिका चूर्ण" मिला-कर खानेसे सब तरहकी अत्यन्त बढ़ी हुई प्लीहा भी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१४) सरफोंकेकी जड़के एक तोले कल्कको माठेके साथ पीनेसे बहुत दिनोंकी पुरानी और अत्यन्त जमी हुई प्लीहा भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१५) करञ्जका खार, विरियासंचरनोन और पीपर—इनको मिलाकर, सवेरे ही, बलानुसार, खानेसे यकृत और प्लीहा रोग शान्त हो जाते हैं।

(१६) सेमलके फूल उबालकर रातमें रख दो। सवेरे ही उसमें एक तोले "राईका चूर्ण" मिलाकर खाओ। इससे प्लीहा रोग जाता रहता है।

नोट—कोई-कोई कुटकीका चूर्ण भी मिलाते हैं।

(१७) सैंधेनोनको थूहरके दूधमें पीसकर, आकके पत्तोंपर लेप करो। फिर उन्हें सुखाकर एक हाँडीमें रक्खो और हाँडीका मुख बन्द करके, हाँडीको आगपर रखकर पकाओ; राख हो जायगी। उस राखको निकालकर रख लो। उस राखको "मस्तु नामक माठे"में मिलाकर पीनेसे भयङ्कर प्लीहा भी नाश हो जाती है।

(१८) चव्यके काढ़ेमें "चीतेका चूर्ण" मिलाकर सवेरे ही पीनेसे प्लीहोदर आदि समस्त उदर रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१९) ग्वारपाठेके रसमें "हल्दीका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे सीहा और अपची रोग नाश हो जाते हैं।

(२०) पके हुए आमके रसमें शहद मिलाकर खानेसे सीहा नाश हो जाती है।

(२१) सवेरे-शाम या भोजनके पीछे एक या दो तोले "कुमार्यासव" जलके साथ खानेसे तापतिल्ली, यकृत-विकार और वायुगोला आदि रोग नाश हो जाते हैं। बनानेकी तरकीब पृष्ठ ७४३ में देखिये।

(२२) ६ माशे निम्बुक द्राव छटाँक भर पानीमें मिलाकर, काँचके बासनमें, सवेरे-शाम या भोजनके बाद, पीनेसे सीहा, यकृत और अजीर्ण आदि रोग नाश हो जाते हैं। बनानेकी तरकीब इसी भागके पृष्ठ ५१५ में देखिये।

जलोदर, बद्धोदर और क्षतोदर-चिकित्सा।

नोट—बद्धोदरमें पहले स्वेद, फिर तेज़ जुलाब देना चाहिये। यथादोषानुसार गोमूत्र, तेल और नमककी निरूह और अनुवासन वस्ति देनी चाहिये। बद्धोदर, क्षतोदर और जङ्घोदर रोगोंमें अगर चीरने-फाड़नेकी दरकार हो, तो वैद्य रोगीके नातेदारोंसे, मित्रोंसे, स्त्रीसे, राजासे और गुरुसे आज्ञा लेकर काम शुरू करे। कह देना चाहिये, चीरनेसे या तो रोगी आराम हो जायगा या मर जायगा। अगर इस बातको सुनकर भी रोगी और रोगीके सम्बन्धी आज्ञा दे दें, तो वैद्यको अपना काम करना चाहिये। ये रोग बिना चीर-फाड़के बहुत कम आराम होते हैं। आयुर्वेद ग्रन्थोंमें चीरने वग़ैरःकी तरकीबें लिखी हैं, इससे मालूम होता है कि, पहलेके वैद्य चीर-फाड़का काम अच्छी तरह जानते थे। ये तरकीबें बिना देखे और गुरुके पास रहे नहीं आ सकतीं; इसलिये हम इन्हें नहीं लिखेंगे।

(१) बद्धोदर रोगी "अजवायन, सैंधानोन, ज़ीरा, चीता और हाऊबेरका चूर्ण" मिलाकर माठा पीवे तो लाभ हो सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) क्षतोदर रोगी "शहद और पीपर" मिलाकर माठा पीवे तो आराम हो सकता है।

(३) जलोदर रोगी "जवाखार, त्रिकुटा और सैंधानोन" मिलाकर माठा पीवे तो लाभ हो सकता है।

(४) आरने ऊपलोंके क्षारको कपड़ेमें छान लो। फिर उसमें पीपरामूल, पाँचोंनोन, पीपर, चीता, सोंठ, निशोथ, त्रिफला, बच, जवाखार, सज्जो, सातला, दन्ती, सत्यानाशी कटेरी (चोक) और मेढ़ासिंगी—एक-एक तोले पीस-छानकर मिला दो और खरल करके छै-छै माशेकी गोलियाँ बना लो। हर दिन एक गोली सौवीर नामक काँजीके साथ खानेसे अत्यन्त बढ़ा हुआ जलोदर और मुखशोथ नाश हो जाता है। इन गोलियोंको "क्षार गुटिका" कहते हैं।

(५) दशमूल, देवदारु, सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा और बड़ी हरड़—इनका काढ़ा पीनेसे जलोदर, सूजन, श्लीपद और वात रोग नाश हो जाते हैं।

शोथोदर नाशक नुसख़े।

(१) हरड़, सोंठ, देवदारु, पुनर्नवा और गिलोय—इनके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे शोथोदर रोग नाश हो जाता है।

(२) पुनर्नवा, नीमकी छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय, दारुहल्दी और हरड़—इनका काढ़ा पीनेसे सब तरहके उदर रोग, सर्व्वाङ्गगत सूजन, शोथोदर, खाँसी, शूल, श्वास और पाण्डु रोग दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) पुनर्नवा, दारुहल्दी, हरड़ और गिलोय—इनके काढ़ेमें "गोमूत्र और शुद्ध गूगल" मिलाकर पीनेसे चमड़ेके रोग, शोथोदर, पाण्डु रोग, मोटापन, मुख और नाकसे पानी गिरना आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(४) लूनी घी, अदरखका कल्क और अदरखका स्वरस मिलाकर पकाओ। घी-मात्र रहनेपर छान लो। इस घीके पीनेसे शोथोदर, मन्दाग्नि और सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं। इसका नाम "आर्द्रक घृत" है।

नोट—अदरखका कल्क या सिलपर पिसी लुगदी पाव भर, घी एक सेर और अदरखका स्वरस चार सेर लेकर एकत्र पकाओ। घी-मात्र रहनेपर छान लो। यह "आर्द्रक घृत" है।

(५) पुराने मानकन्दको पीसकर और उसमें दूने चावल मिलाकर, जल और दूधमें खीर बनाओ। इस खीरसे वातोदर, सूजन, संग्रहणी और पाण्डु रोग नाश हो जाते हैं।

(६) बेलगिरी, चीता, चव्य, अदरख और सोंठ—इनको एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर यही पाँचों दवाएँ समान-समान डेढ़-डेढ़ छटाँक लेकर चार सेर पानीमें पकाओ; जब एक सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। अब एक पाव घी, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर घी पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "बिल्वादि घृत" है। इसके पीनेसे सूजन, मन्दाग्नि और अरुचि रोग नाश हो जाते हैं।

(७) ऊँटनी या बकरीका मूत्र पीनेसे शोथोदर नाश हो जाता है।

(८) सात दिन तक अन्न-जल छोड़कर, केवल "भैंसका मूत्र" दूधमें मिलाकर पीनेसे शोथोदर आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदर रोगोंकी
सामान्य चिकित्सा।

समस्त उदर रोग नाशक नुसखे।

(१) पुनर्नवा, देवदारु, गिलोय, अम्बष्ठा-पाढ़, बेलकी जड़, गोखरू, बड़ी कटेरी, छोटी कटेरी, हल्दी, दारुहल्दी, पीपर, चीता और अड़ूसा—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे चार या छै माशे चूर्ण "गोमूत्रके साथ" खानेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(२) रैंडीका तेल "गरम दूध या जल अथवा गोमूत्रमें" मिलाकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग आराम हो जाते हैं।

(३) मालकाँगनीका तेल पीनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(४) कंकुष्ठका चूर्ण गरम जलके साथ सेवन करनेसे आठों तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(५) देवदारु, ढाक, आककी जड़, गज-पीपर, सहँजना और असगन्ध—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) मुर्दाशंखका चूर्ण "नागरमोथेके काढ़ेमें" मिलाकर पीनेसे आठों तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(७) थूहरके दूधमें पीपलोंको भावना देकर, उनमेंसे अपनी शक्ति अनुसार एकसे आरम्भ करके एक हज़ार तक खानेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) शुद्ध शिलाजीतको "गोमूत्र" में मिलाकर पीनेसे अथवा शुद्ध गूगलको "त्रिफलेके काढ़े" में मिलाकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(९) दुर्गन्ध करंजके बीज, मूलीके बीज, गरहेडुबेकी जड़ (गवादनी-मूल) और शंख-भस्मको मिलाकर काँजीके साथ पीनेसे जलोदर तक आराम हो जाता है।

(१०) इन्द्रजौ ४ माशे, सुहागा ४ माशे, हींग ४ माशे, शंख-भस्म ४ माशे और पीपर ६ माशे—इनको "गोमूत्रके साथ" पीसकर पीनेसे सब तरहके उदर रोग, यहाँ तक कि पुराने उदर रोग भी नष्ट हो जाते हैं।

(११) जो मनुष्य सवेरे ही उठकर, चव्य और चीतेके चूर्णको "ऊँटके मूत्रके साथ" पीता है, उसका असाध्य उदर रोग भी अवश्य नष्ट हो जाता है।

(१२) इन्द्रायण, शंखपुष्पी, दन्ती, निशोथ, नीलीवृक्ष, त्रिफला, हल्दी, बायबिड़ङ्ग और कबीला—इनका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१३) चव्य, दन्ती, चीता, बायबिड़ङ्ग और त्रिकुटा—इनका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१४) अदरख, देवदारु और चीतेका काढ़ा पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१५) चव्य और सोंठको "गोमूत्रके साथ" पीसकर पीनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१६) जवाखार, सज्जी, चीता, त्रिकुटा, नीली और पाँचों नोन—इनको पीसकर और घीमें मिलाकर खानेसे सब तरहके उदर रोग और गुल्म रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१७) इन्द्रायण, शंखाहूली, दन्ती और नीली—इनको "गोमूत्रके साथ पीसकर और गोमूत्रमें मिलाकर" खानेसे सब तरहके उदर रोग दूर हो जाते हैं।

(१८) देवदारु, सहँजना और विजौरा नीबू—इनको "गोमूत्रमें पीसकर" पीनेसे अथवा असगन्धको "गोमूत्रमें पीसकर" पीनेसे अत्यन्त बढ़ा हुआ उदर रोग, कृमि रोग तथा शोथ संयुक्त त्रिदोषज उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(१९) वर्द्धमान पीपलको यथा विधि सेवन करनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं। संसारमें उदर रोगकी इसके समान और दवा ही नहीं है। कहा है:—

पिप्पली वर्द्धमानं वा कल्योद्दिष्टं प्रयोजयेत्।
जठराणां विनाशाय नास्ति तेन समं भुवि॥

(२०) आठों तरहके उदर रोगोंमें सब तरहके मूत्रोंका सींचना और पीना अथवा "दूधके साथ वर्द्धमान पीपर सेवन करना" अत्यन्त हितकारक है।

(२१) उत्तम बबूलकी छालको पानीमें पकाओ; जब खूब पक जाय, उतारकर छान लो और दूसरे बर्तनमें डालकर फिर आगपर पकाओ। जब काढ़ा अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय उतार लो और शीतल होनेपर उसमें "माठा" मिलाकर पीओ। इस दवाको सेवन करते समय माठेके साथ ही भोजन करो। इस उत्तम योगसे जलोदर तक नाश हो जाता है।

नोट—बबूलकी छालके काढ़ेको दूसरी बार आगपर रखकर इतना पकाओ कि, वह गोली बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय। फिर उसकी जंगली बेरके समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली खाकर, ऊपरसे माठा पीओ। इस तरह करनेसे रोज़ पकानेकी दिक्कत नहीं रहती। हम इसी तरह गोलियाँ बना लेते हैं। इस तरह बड़ा आराम है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदर रोग नाशक उत्तमोत्तम योग।

नारायण चूर्ण।

अजवायन, हाऊबेर, धनियाँ, त्रिफला, कालाजीरा, सौंफ, पीपरा-मूल, बन तुलसी, कचूर, सोया, बच, जीरा, त्रिकुटा, चोक, चीता, जवाखार, सज्जी, पोहकरमूल, कूट, पाँचों नोन और बायबिड़ङ्ग एक-एक तोले; दन्ती तीन तोले, निशोथ दो तोले, इन्द्रायन दो तोले और सातला चार तोले—इन पचीस दवाओंको पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो। यही "नारायण चूर्ण" है।

यह चूर्ण अनेकों रोगोंको नाश करता है। जिस तरह नारायण असुरोंका नाश करते हैं, उसी तरह यह रोगोंको नाश करता है। उदर रोगोंकी यह परमोत्तम औषधि है। भिन्न-भिन्न अनुपानोंके साथ यह उदर रोग, गुल्म, वात रोग, मलभेद, परिकर्त्तिका, अजीर्ण, भगन्दर, पाण्डुरोग, खाँसी, श्वास, गलग्रह, हृदयरोग, संग्रहणी, कोढ़, मन्दाग्नि, ज्वर, दंष्ट्राविष, मूलविष, खनिजविष, कृत्रिम विष और सब तरहके विषोंको नाश करता है।

इसकी मात्रा ३ माशेसे ४ माशे तक है। नीचे लिखे हुए रोगोंमें इसे नीचे लिखे हुए अनुपानोंके साथ सेवन करनेसे अवश्य लाभ होता है:—

(१) उदर रोगोंमें	...	माठेके साथ।
(२) गुल्म रोगोंमें	...	बेरके काढ़ेके साथ।
(३) मलभेदमें	...	दहीके तोड़के साथ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) वातरोगमें ... प्रसन्ना मदिराके साथ।
(५) बवासीरमें ... अनारके रसके साथ।
(६) अजीर्णमें ... गरम जलके साथ।
(७) आनाहमें ... गरम पानीके साथ।
(८) पेट और गुदामें कतरनी-सी चलनेमें ... विषांबिल नीबूके रसके साथ अथवा तिंतड़ीकके भिगोये पानीके साथ।

नाराच घृत।

थूहरका दूध, दन्ती, हरड़, बहेड़ा, आमला, वायबिड़ङ्ग, कटेरीकी जड़, निशोथ और चीतेकी जड़की छाल एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर कल्क या लुगदी बना लो।

अब १६ तोले गायका घी, ऊपरकी लुगदी और ६४ तोले पानीको मिलाकर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

विरेचन या जुलाबके लिए, एक या दो तोले घी पीकर, ऊपरसे गरम जल पीना चाहिये। दस्त हो जानेपर योग्य पेया या योग्य रस पीना चाहिये। जिस तरह तीर निशानेको तोड़ता है; उसी तरह यह घी, ठीक विधिसे खानेपर, उदरके सब रोगोंको नाश करता है।

नाराच रस।

शुद्ध पारा १ तोले, सुहागा १ तोले, कालीमिर्च १ तोले, शुद्ध गंधक २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, सोंठ २ तोले, शुद्ध जयपालके बीज ६ तोले ले लो। पहले गन्धक और पारेको खूब खरल करो। जब चमक न रहे, उसीमें बाक़ीकी सब दवाएँ पीस-छानकर मिला दो और पानी दे-देकर खरलमें घोटो। घुट जानेपर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली चावलोंके धोवनके साथ निगलनेसे उदर रोग और गुल्म रोग आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इच्छाभेदी रस।

सोंठ १ तोला, कालीमिर्च १ तोला, शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गंधक १ तोला, सुहागा १ तोला और शुद्ध जयपालके बीज ३ तोले लो। पहले पारे और गन्धकको खरल करो। फिर शेष दवाएँ पीस-छानकर मिला दो और पानी दे-देकर खरल करो। खरल हो जानेपर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। अनुपान—चीनीका शर्बत। गोली खानेके बाद जितने चुल्लू चीनीके शर्बतके पीओगे, उतने ही दस्त होंगे। पथ्य—दहीका माठा और पुराने चावलोंका भात।

बिन्दु घृत।

आकका दूध ८ तोले, थूहरका दूध २४ तोले, निशोथ ४ तोले, हरड़ ४ तोले, कबीला ४ तोले, दन्ती ४ तोले, विष्णुक्रान्ता ४ तोले, चीता ४ तोले, पीपर ४ तोले, अमलताशका गूदा ४ तोला, शंखाहूली ४ तोले और नीलिनी ४ तोले—इन सबको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी कर लो। फिर एक सेर घी, लुगदी और चार सेर पानी सबको मिलाकर घी पका लो। घी-मात्र रहनेपर, उतारकर छान लो। इस "बिन्दु घृत" को अत्यन्त दूषित कोठे, सूजनयुक्त पेट, आठों प्रकारके उदर रोग, भगन्दर और दुष्ट गुल्म—इन रोगोंमें प्रयोग करना चाहिये। इस घीकी मात्रा एक बूँद है। इस घीकी जितनी बूँदें पीयी जाती हैं, उतने ही दस्त होते हैं। कहते हैं, इस घीकी पेटपर मालिश करने या पेटपर लगानेसे भी दस्त होने लगते हैं। वैद्यक-शास्त्रमें यह घी अनेक जगह लिखा है, पर हमने इससे कभी काम नहीं लिया। पाठक आज़मा देखें।

चित्रक घृत।

चीता ४ तोले और जवाखार ४ तोलेको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब दो सेर घी, आठ सेर पानी, चार सेर गोमूत्र और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीको भी उचित मात्रामें सेवन करनेसे उदर रोग नाश हो जाते हैं।

पिप्पल्यादि लौह।

पीपरामूल, अभ्रक-भस्म, त्रिकुटा, त्रिफला, त्रिजात और सैंधानोन एक-एक तोले लो और "लोह-भस्म" सबके बराबर ६ तोले लो। कूटने योग्य चीजोंको कूट-पीस और छान लो। फिर सबको मिलाकर पानीके साथ खरल करो। खरल हो जानेपर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको उचित अनुपानके साथ खानेसे सब तरहके उदर रोग आराम हो जाते हैं।

शोथोदरारि लौह।

पुनर्नवा, गिलोय, चीतेकी जड़, गुलसकरी, मानकन्द, सहँजनेकी जड़, हुड़हुड़की जड़ और आककी जड़—हरेक आध-आध सेर लेकर बत्तीस सेर पानीमें औटाओ। जब आठ सेर पानी रह जाय, छानकर रख लो।

अब लोह-भस्म आध सेर, घी आध सेर, आकका दूध आध पाव, थूहरका दूध पाव भर, शुद्ध गूगल आध पाव तथा दो तोले शुद्ध पारा और चार तोले शुद्ध गन्धककी कज्जली, एक तरफ तैयार करके रख दो।

दूसरी तरफ शुद्ध जयपालके बीज, ताम्बेकी भस्म, कंकुष्ठ, चीतेकी जड़, जंगली सूरन, शरपोंखा, ढाकके बीज, चीरुई, तालमूली, त्रिफला, बायबिडङ्ग, तेवड़ी मूल, दन्तीकी जड़, हुड़हुड़की जड़, गुलसकरीकी जड़, पुनर्नवा और हड़जोड़—इन सत्रह दवाओंको अढ़ाई-अढ़ाई तोले कुटी-पिसी-छनी तैयार रखो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बनानेकी तरकीब—उस आठ सेर काढ़ेको क़लईदार बासनमें डालकर फिर आगपर रखो, और उसमें लोहा भस्मसे लेकर कज्जली तककी सब चीज़ें मिला दो। नीचे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब पक चुके, उसमें जयपालके बीज आदि सत्रह दवाओंका चूर्ण मिला दो और किसी बासनमें रख दो। यही "शोथोदरारि लौह" है।

रोगीकी अवस्था और बलाबल आदिका विचार करके, उपयुक्त अनुपानके साथ, उचित मात्रामें, सेवन करानेसे यह लौह उदर रोग, पाण्डु रोग, शोथ, कामला, हलीमक, बवासीर, भगन्दर और गुल्म रोगको नाश करता है। नामी औषधि है।

पुनर्नवादि क्वाथ।

पुनर्नवाकी जड़, गिलोय, देवदारु, जंगी हरड़ और सोंठ—इन पाँच दवाओंके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल और गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे शोथोदर या सूजनवाला रोगी आराम हो जाता है। यह "शार्ङ्गधर"का योग है।

पथ्यादि क्वाथ।

जंगी हरड़ और रक्त रोहिड़ा—इन दोनोंके काढ़ेमें "पीपर और जवाखारका चूर्ण" मिलाकर सवेरे ही पीनेसे प्लीहोदर, यकृदुदर और गुल्मोदर आदि रोग नाश हो जाते हैं। तिल्लीपर परीक्षित है।

पुनर्नवादि क्वाथ।

पुनर्नवा, दारुहल्दी, कुटकी, परवलके पत्ते, हरड़, नीमकी छाल, मोथा, सोंठ और गिलोय—इन नौ दवाओंके काढ़ेमें "गोमूत्र और शुद्ध गूगल" मिलाकर, नित्य, सवेरे ही, पीनेसे सब तरहकी शरीरकी सूजन, उदर रोग, पाण्डुरोग, शूल रोग और श्वास आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

त्रिवृत्ताद्य घृत।

दूध ८ सेर, घी १ सेर, थूहरका दूध ४ तोले और निशोथका कल्क (सिलपर पिसी लुगदी) २४ तोले—सबको मिलाकर पकाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घी-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस घीसे सब तरहके उदर रोग और गुल्म नाश हो जाते हैं। यह घी दस्त लगाता है।

कुमार्यासव।

सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, लौंग, दालदीनी, तेजपात, इलायचीके बीज, नागकेशर, चीतेकी छाल, पीपरामूल, बायबिड़ङ्ग, गजपीपर, चव्य, हाऊबेर, धनियाँ, सुपारी, कुटकी, नागरमोथा, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, मूर्वा, प्रसारिणी, दन्ती, पोहकर-मूल, खिरेंटी, नागबला, कौंचके बीज, गोखरू, सौंफ, हिंगुपत्री, अकर-करा, उटङ्गनके बीज, सफेद पुनर्नवा और सोंठ—इन ३८ दवाओंको अलग-अलग दो-दो तोले पिसी-छनी तैयार रखो।

धायके फूल पिसे-छने ३२ तोले, सोनामक्खीकी भस्म २ तोले, शुद्ध मण्डूर या लोहाचूर १०० तोले, शहद १०० तोले और पुराने घीग्वारके पट्ठेका रस १६ सेर,—इनको और ऊपरकी ३८ दवाओंके चूर्णोंको एक चिकने वासनमें भरकर एक महीने या १५ दिन तक, मुँह बन्द करके रख दो। इसके बाद काममें लो।

इसमेंसे, बलाबल अनुसार, दो तोले या कम-ज़ियादा नित्य पीनेसे बल-वर्ण और अग्नि बढ़ती है, शरीर पुष्ट होता है, सब तरहके उदर रोग, परिणामशूल, क्षय, प्रमेह, उदावर्त, मृगी, मूत्रकृच्छ्र, वीर्यदोष, पथरी, कृमि रोग और रक्तपित्त रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—यह योग "शार्ङ्गधर"का है और बहुत ही अच्छा है। हम गृहस्थोंके लिए एक बहुत ही आसान "कुमार्यासव" उधर और लिखते हैं। इसकी होड़ तो वह कर नहीं सकता, पर तिल्ली आदि पेटके कई रोगोंमें वह भी अच्छा है।

बजू कल्क।

जङ्गली सूरनका एक तोले कल्क कर लो। इसको "दहीमें मिला-कर" नित्य पानीके साथ खाओ। इससे उदर रोग शान्त हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ब्रह्म घृत।

शिलारस, सोंठ, नाड़ीका साग, कौआटोंटीकी जड़, कटेरीकी जड़, पाँचों नमक, हींग और पीपर—सब एक-एक तोला लो। सबको गोमूत्रके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

गायका घी एक सेर, गोमूत्र चार सेर, दूध दो सेर और ऊपरकी लुगदी सबको मिलाकर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घीमेंसे ६ माशे नित्य खानेसे प्लीहोदर और शोथोदर वग़ैरः सब उदर रोग नाश हो जाते हैं।

शङ्खद्राव।

सज्जी, जवाखार, कसीस, सुहागा, शोरा, सैंधानोन, नौसादर और फिटकरी,—ये सब बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और एक हाँडीमें रखकर, नली लगाकर, तेज़ाब खींच लो। इसमेंसे एक बूँद तेज़ाब दाँत बचाकर खानेसे गुल्म, तिल्ली, आनाह, बवासीर, संग्रहणी, भगन्दर और सब तरहके उदर रोग आराम हो जाते।

नोट—एक और तरहके शंखद्रावकी विधि इसी भागके पृष्ठ ५१७में लिखी है।

कुमार्यासव।

ग्वारपाठेका रस चार सेर, पुराना गुड़ आध सेर, शुद्ध मंडूर ४ तोले, सुहागा फुलाया हुआ ४ तोले, जवाखार ४ तोले, सज्जीखार ४ तोले, कालानोन ४ तोले, सैंधानोन ४ तोले, साँभरनोन ४ तोले, समन्दरनोन ४ तोले, बिड़नोन ४ तोले और नौसादर ४ तोले—इन सब चीज़ोंको एक काँचके बर्तनमें भरकर मुँह बन्द कर दो और आठ दिन तक, नित्य धूपमें रखा करो। इसके बाद सेवन करो।

मात्रा एक या दो तोले। अनुपान—पानी। सवेरे-शाम या भोजनके बाद सेवन करनेसे प्लीहा रोग, यकृत रोग, वायुगोला और पेटका दर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पेटके रोगोंपर हकीमी नुसखे ।

(१) सिरसकी छालका काढ़ा पीनेसे सूजन सहित जलन्धर आराम हो जाता है।

नोट—"अकबरनामे"में लिखा है कि, एक क़िलेमें रहनेवालोंने किसी वजहसे पुराना अनाज खाया, इससे उनको पेटके रोग हो गये और सूजन आगई। जिन्होंने "सिरसकी छाल"सेवन की, उन्हें आराम हो गया। इसलिये उस समय सिरसकी छालका दाम सोनेसे बराबर हो गया।

(२) हुक्केका बहुत ही गन्दा पानी पीनेसे इस्तस्का या जलन्धर आराम हो जाता है।

(३) गोबरकी राख १३ माशे हर दिन खानेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(४) गायका गोबर "नोन मिलाकर" पेटपर लगानेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(५) इन्द्रायणकी जड़ औटाकर पीनेसे दस्त होकर मल निकल जाता है।

(६) सवेरे ही साढ़े आठ तोले ऊँटके मूत्रमें ३ माशे "पीली हरड़की छाल" मिलाकर पीनेसे जलन्धरमें बहुत फायदा होता है। भोजन और जल त्याग कर अगर ऊँटका दूध ही पिया जाय, तो क़ाबिल तारीफ फायदा हो। यह अपूर्व उपाय है।

नोट—वैद्यकमें भी ऊँटका दूध अच्छा कहा है।

(७) मूलीके पत्तोंका स्वरस पीनेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(८) लाल बकरीके ६ तोले मूत्रमें २० माशे "बालछड़" मिलाकर पीनेसे जलन्धरमें अत्यन्त लाभ होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) जलन्धरकी शुरूआत या सूउल्कनियाँमें ताजा करेलोंका दो तोले स्वरस जरा-सा "शहद" मिलाकर पीनेसे दो-तीन दस्त होकर मल निकल जाता है।

(१०) कुकरौंधेका रस पहले दिन एक तोले, दूसरे दिन दो तोले, तीसरे दिन तीन तोले, इस तरह दस दिन तक एक-एक तोले रोज बढ़ाकर पीनेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(११) शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारा, हरड़, बहेड़ा, आमले, सज्जी, जवाखार, कालानोन, लाहौरीनोन, सोंठ, कालीमिर्च और भुना हुआ सुहागा—एक-एक तोले तथा शुद्ध जमालगोटा दो तोले ले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल कर लो, फिर बाक़ी दवाओंको पीस-छानकर इसी पारे और गन्धककी कज्जली में मिला दो। फिर मसालेको नीबूके रसकी २१ भावना देकर कालीमिर्च समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली नित्य ऊँटके दूधके साथ खानेसे इस्तस्का या जलन्धर नाश हो जाता है।

(१२) सफेद जीरा अधकुचला ३ भाग और कंघी अधकुचली नौ भाग मिलाकर रख लो। इसमेंसे एक तोले भर नित्य रातको भिगो दो और सवेरे ही औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, छानकर पीलो। इससे जलन्धर रोग जाता रहता है।

(१३) बकरीकी मैंगनी, गायका गोबर और गोखरू—सबको सिरकेमें मिलाकर पेटपर लगानेसे जलन्धरमें लाभ होता है।

(१४) नमक और बालछड़—सिरकेमें मिलाकर पेटपर लगानेसे भी जलन्धरमें लाभ होता है।

(१५) मण्डवीका आटा, कचनालके पानीमें ख़मीर करके रोटी पकाओ और नमकके साथ खाओ। पानीके बदले कचनालकी पत्तियोंका औटाया हुआ पानी पीओ; अथवा अर्क़ निकालकर पीओ। मुँह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धोने और नहानेके काममें भी इसी पानीको लो। एक हफ्तेमें इसका नतीजा मालूम होता है। यह नुसखा "मुजर्ब्बात अकबरी"का है।

(१६) कंघीका चूर्ण पहले दिन १ माशे, दूसरे दिन २ माशे और तीसरे दिन ३ माशे—इस तरह चौथे दिनसे तीन माशे नित्य खाओ और मूँगकी खिचड़ीका भोजन करो। इस नुसखेसे जलन्धर आराम हो जायगा।

(१७) दो तोले शहद छटाँक भर पानीमें मिलाकर नित्य सवेरे ही, कोरे कलेजे पीनेसे बढ़ा हुआ पेट ठीक हो जाता है। यह रोग बच्चोंको बहुत होता है। उन्हें कम करके यही नुसखा देना चाहिये।

(१८) मिर्च, पीपर, पीपरामूल, चव्य, शैतरज, अशना, नागरमोथा, बायविडङ्ग, देवदारु, त्रिफला, किस्त-मुरमकी, सौंफ, गजपीपर और इन्द्रजौ चार-चार माशे तथा तुरबुद १ तोले—इनको कूट-छानकर, सब चूर्णके समान "पुराना गुड़" मिला दो और दो-दो माशेकी गोलियाँ बना लो। १५ दिन तक, सवेरे ही, एक-एक गोली खानेसे बच्चा जननेके पीछे जो स्त्रीका पेट बढ़ जाता है, ठीक हो जाता है।

नोट—यह गोली खानी चाहिये और "इन्द्रायण" पानीमें पीसकर पेटपर लगानी चाहिये। इन दोनों उपायोंसे सन्तान होनेकी वजहसे बढ़ा हुआ पेट दुरुस्त हो जाता है।

(१९) लाख चार तोले, कासनीके बीज ३ तोले, खरबूजेके बीज ३ तोले, खीरे-ककड़ीके बीज ३ तोले, रेवन्द ३ तोले, मँजीठ २ तोले, सौंफ २ तोले, मकोय २ तोले, अजमोद २ तोले, बालछड़ २ तोले, तज २ तोले, अजवायन १ तोले और कत्था १ तोले—इन सबको पीस-छानकर पानीके साथ खरल करके टिकियाँ बना लो। इसमेंसे चार-चार माशे टिकियाँ शर्बत बजूरीके साथ खानेसे इस्तस्का या जलन्धर आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

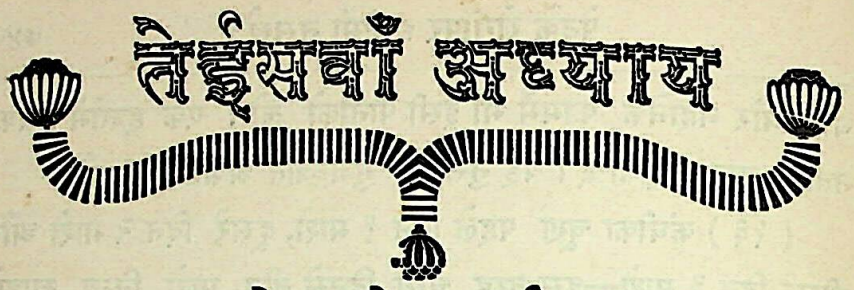

शोथ रोग-वर्णन ।

शोथ रोगके निदान-कारण ।

"सुश्रुत-चिकित्सा स्थान"के तेईसवें अध्यायमें लिखा है कि, बहुत खाकर रास्ता चलनेसे, मिट्टीके पदार्थ, हरे साग और नमक ज़ियादा खानेसे, ज्वर या अतिसार आदि रोगोंसे दुर्बल होनेपर अधिक खटाई खा लेनेसे, मिट्टीका पका हुआ ठीकरा खा लेनेसे, तिनके और धूल-रेत खा जानेसे, जलके किनारेके जल-जीवोंका मांस खानेसे, अजीर्णमें मैथुन करनेसे, दूध-मछली आदि संयोग-विरुद्ध पदार्थ खानेसे; हाथी, घोड़े, ऊँट आदिकी सवारी करने या बहुत पैदल चलनेसे—वातादिक दोष क्षुभित हो जाते हैं। वे क्षुभित हुए दोष शरीरकी धातुओंको दूषित करके सारे शरीरमें (या हाथ-पाँव-मुँह आदिमें) सूजन पैदा करते हैं।

"वङ्गसेन"में लिखा है कि, वमन-विरेचन आदिसे, पाण्डु रोगादि* से अथवा व्रत-उपवाससे दुबले या कमज़ोर हुए मनुष्य अगर खारी,

---

* वाग्भट्टमें लिखा है कि, श्वास, खाँसी, अतिसार, बवासीर, उदर रोग, प्रदर रोग, ज्वर, विशूचिका, अलसक, छर्दि, गर्भ, विसर्प और पाण्डुरोगमें मिथ्या उपचार किये जानेसे दोष कुपित होकर सूजन करते हैं। अगर दोष आमाशयमें होते हैं तो शरीरके ऊर्द्ध भाग में, पक्वाशयमें रहनेसे मध्य भागमें और मूत्राशयमें रहनेसे नाभिसे नीचेके भागमें तथा सब देहमें स्थित रहनेसे सर्व देहमें फैलनेवाला शोथ करते हैं। खुलासा यह कि, अगर दोष छातीमें होते हैं तो नाभिसे ऊपर; और अगर बस्तिस्थान—पेड़ूमें होते हैं तो नीचेके अङ्गोंमें सूजन करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खट्टे, तीक्ष्ण, गरम, भारी पदार्थ, दही, कच्चे पदार्थ, मिट्टी, साग, विरुद्ध पदार्थ या दुष्ट और विष-मिले पदार्थ सेवन करते हैं, तो उनके सूजन आ जाती है। इनके सिवाय बवासीरसे, मिहनत न करनेसे, शोधनके योग्य अशुद्ध शरीरको वमन-विरेचन आदि द्वारा शुद्ध न करनेसे, मर्मस्थानोंमें चोट लगनेसे, असमयमें गर्भ गिरने या कच्चा गर्भ गिरनेसे और वमन-विरेचनादि पञ्च कर्मोंके बेक़ायदे किये जानेसे भी सूजन आ जाती है; यानी इन सब कारणोंसे सूजन आती है।

शोथ रोगकी सम्प्राप्ति।

अपने कारणोंसे कुपित हुई "वायु"—दुष्ट हुए रक्त, पित्त और कफको बाहरकी नसोंमें लाकर—उनकी चालको रोक देती है। उनकी चालके रुकनेसे चमड़े और मांसमें सख्त और ऊँची सूजन पैदा हो जाती है। यह सूजन त्रिदोष-संग्रहसे होती है।

सामान्य लक्षण।

शरीरका भारीपन, चित्तमें व्याकुलता, ऊँची सूजन, दाह, नसोंका पतली होना, रोएँ खड़े होना और शरीरके रंगका बदल जाना—ये सामान्य लक्षण हैं।

संख्या-भेद।

यह शोथ रोग कारण-विशेष और रूप-भेदसे नौ तरहका होता है:—

(१) वातज,	(२) पित्तज,	(३) कफज,
(४) वातपित्तज,	(५) वातकफज,	(६) पित्तकफज,
(७) सन्निपातज,	(८) अभिघातज,	(९) विषज।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पूर्वरूप।

सूजन पैदा होनेसे पहले नेत्रादिकोंमें सन्ताप या गरमी होती है, नसें तनती हैं और जिस अङ्गमें सूजन पैदा होनेवाली होती है वह अङ्ग भारी हो जाता है।

वातज शोथके लक्षण।

वातज सूजन चंचल होती है—एक जगह स्थिर नहीं रहती, सूजनके ऊपरकी चमड़ी पतली और कठोर होती है, उसका रङ्ग लाल या काला होता है तथा उसमें स्पर्श-शक्ति नहीं होती। सूजनमें झिनझिन-झिनझिन तीव्र वेदना होती है। सूजन कभी-कभी बिना कारण अपने आप शान्त हो जाती है; यानी आराम मालूम होता है और कभी बढ़ जाती है एवं रोमाञ्च हो आते हैं। यह सूजन दबानेसे नीचे बैठ जाती है और फिर ऊँची उठ आती है। दिनमें सूजनका ज़ोर रहता है और रातको ज़ोर घट जाता है।

खुलासा—

(१) वातज सूजन एक जगह स्थिर नहीं रहती।
(२) सूजनका चमड़ा पतला और सख्त होता है।
(३) उसमें स्पर्श-शक्ति नहीं होती।
(४) तीव्र वेदना होती है।
(५) सूजन कभी बिना कारण शान्त हो जाती और कभी बढ़ आती है।
(६) सूजन दबानेसे दब जाती है और फिर उठ आती है।
(७) इस सूजनका दिनमें ज़ोर रहता है और रातको ज़ोर घट जाता है।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, वायुकी सूजन लाल या काली होती है एवं नरम और चलायमान होती है। उसमें शूल यानी चमक आदि वेदना विशेष होती है।

पित्तज सूजनके लक्षण।

पित्तकी सूजन छूनेमें नर्म, गन्धयुक्त, लाल या पीले रङ्गकी, उष्णता सहित, अत्यन्त दाहयुक्त, अतिशय पीड़ा करनेवाली एवं

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छूनेसे पीड़ा करनेवाली होती है। जब यह पकने लगती है, तब इसमें घोर जलन होती है। इस सूजनमें भ्रम, ज्वर, पसीना, प्यास, मद और दोनों आँखोंमें लाली—ये लक्षण होते हैं।

खुलासा—

(१) पित्तकी सूजन छूनेसे नर्म मालूम होती है।
(२) पित्तकी सूजनमें गन्ध आती है।
(३) सूजनका रङ्ग पीला या लाल होता है।
(४) सूजनमें गरमी होती है।
(५) सूजन घोर दाह और वेदना करके पक जाती है।
(६) इस सूजनके साथ भ्रम, ज्वर, पसीना, प्यास, मत्तता और दोनों नेत्रोंमें ललाई ये लक्षण होते हैं।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है कि, पित्तकी सूजन पीली या लाल तथा जल्दी फैलनेवाली होती है। इसमें जलन और चूसनेकी-सी वेदना विशेष होती है।

कफज सूजनके लक्षण।

कफज सूजन भारी, एक स्थानमें स्थिर रहनेवाली और पाण्डु रङ्गकी होती है; बहुत दिनोंमें बढ़ती और बहुत दिनोंमें ही आराम होती है; दबानेसे दब जाती है, लेकिन छोड़ देनेसे फिर कुछ देर तक ऊँची नहीं उठती। रातको बढ़ जाती और दिनमें घट जाती है। इसमें अरुचि, मुँहसे जल गिरना, निद्रा, वमन और मन्दाग्नि—ये लक्षण होते हैं।

खुलासा—

(१) कफज सूजन भारी और स्थिर होती है।
(२) उसका रङ्ग पाण्डु होता है।
(३) यह सूजन देरमें चढ़ती और देरमें आराम होती है।
(४) यह सूजन दबानेसे दब जाती और छोड़ देनेपर कुछ देर नहीं उठती।
(५) यह सूजन रातको बढ़ जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) इसके साथ अरुचि, मुँहसे जल-स्राव, नींद, वमन और मन्दाग्नि ये उपद्रव होते हैं।

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, कफज सूजन कुछ पीली, सफेद, चिकनी, कड़ी, शीतल और धीरे-धीरे फैलनेवाली होती है। इसमें खुजली आदिकी वेदना विशेष होती है।

द्वन्द्वज और सन्निपातज सूजनके लक्षण।

जिस सूजनमें दो दोषोंके लक्षण हों, वह द्वन्द्वज सूजन और जिसमें वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके लक्षण हों, वह त्रिदोषज या सन्निपातज सूजन होती है।

अभिघातज सूजनके लक्षण।

लाठी और पत्थर आदिकी चोट लगनेसे, बाण आदिके घाव हो जानेसे, शीतल पवन या समुद्रकी हवा लगनेसे, भिलावेका धूआँ या तेल वग़ैरः लगने या कौंचकी फलीकी रगड़से जो सूजन पैदा होती है, उसे "अभिघातज सूजन" कहते हैं। ऐसी सूजन चारों तरफ फैलती है। इसमें दाह बहुत होता है। इसका रंग लाल होता है और इसमें विशेष करके पित्तके लक्षण मिलते हैं।

विषज सूजनके लक्षण।

शरीरके ऊपर विषैले जीवोंके फिरनेसे अथवा उनके पेशाबसे; जो विषैले नहीं हैं जैसे मनुष्य उनके दाढ़, दाँत या नाखूनोंके लगनेसे; विषैले जीवोंके मल-मूत्र और वीर्यसे सने हुए मलिन कपड़ोंके छूने या शरीरके लगनेसे, विषैले वृक्षकी हवाके लगनेसे या जिसमें संयोजक विषका योग हुआ हो उस चीज़के शरीरके लगनेसे जो सूजन होती है, उसे विषज सूजन कहते हैं। वह सूजन कोमल, चंचल,—एक जगह न रहनेवाली, भीतरको जानेवाली या लटकनेवाली, तत्काल उत्पन्न होनेवाली, जलन और अधिक पीड़ा करनेवाली होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—"सुश्रुत"में लिखा है, यह सूजन कोमल, शीघ्र ही उठनेवाली, जब तक विषका प्रभाव रहे तब तक रहनेवाली और चलायमान होती है। इसमें जलन बहुत होती है और यह पक भी जाती है।

किस स्थानमें रहा हुआ दोष कहाँ सूजन करता है?

आमाशयमें रहनेवाले दोष हृदयसे ऊपरके हिस्सेमें सूजन करते हैं; पित्ताशयमें रहनेवाले दोष हृदय और पक्वाशयके बीचमें सूजन करते हैं; मलाशयमें रहनेवाले दोष पक्वाशयके नीचेके भागमें सूजन करते हैं। सारे शरीरमें फैले हुए दोष सारे शरीरमें सूजन करते हैं।

सूजनके उपद्रव।

वमन, श्वास, अरुचि, प्यास, ज्वर, अतिसार, अत्यन्त पाक और अत्यन्त निर्बलता—ये सूजनके उपद्रव हैं।

सूजनके कृच्छ्रादि भेद।

जो सूजन शरीरके बीचके भाग—हृदय और पक्वाशयके मध्यमें हुई हो अथवा जो सारे शरीरमें उत्पन्न हुई हो (सान्निपातिक हो), वह कष्टसाध्य है। जो सूजन पुरुषके नीचेके भागमें पैदा होकर ऊपरकी तरफ चढ़े, वह अत्यन्त कष्टसाध्य है।

असाध्य लक्षण।

जो सूजन अर्द्धनारीश्वरके आकारकी आधे शरीरमें * पैदा होती है, वह सूजन मनुष्यको मार डालती है।

पुरुषके पैदा हुई सूजन ज्यों-ज्यों ऊपरको चढ़ती है, त्यों-त्यों मृत्युको खोजकर लाती है; यानी पुरुषके पैदा हुई सूजन अगर पाँवोंसे ऊपरकी ओर चढ़ती है, तो अवश्य मृत्यु होती है।

---

*दाहिने-बाँये या नीचे-ऊपरके विभाग अनुसार, जिस किसी आधे अंगमें पैदा हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्त्रीके हुई सूजन अगर मुँहसे नीचेकी तरफ जावे, तो वह स्त्रीको अवश्य मार डालती है।

पुरुषके पाँवोंमें हुई सूजन अगर मुखपर जावे और वह अतिसार, संग्रहणी एवं बवासीर आदि अन्य रोगोंके उपद्रव स्वरूप न हुई हो; यानी अपने ही कारणोंसे पैदा हुई हो, तो पुरुषको मार डालती है।

इसी तरह स्त्रीके मुखपर हुई सूजन अगर पाँवोंपर जावे और वह अतिसार, ग्रहणी एवं बवासीर आदि अन्य रोगोंके उपद्रव रूप न हुई हो; यानी अपने कारणोंसे हुई हो, तो वह स्त्रीको मार डालती है।

नोट—जो सूजन नीचेके अंगोंसे पैदा होकर क्रमशः ऊपरकी तरफ फैलती जाय, वह शीघ्र ही प्राण नाश करती है। इसमें इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि, ऐसी सूजन अगर अतिसार, संग्रहणी, बवासीर या पीलिया आदि रोगोंके उपद्रव रूप न हुई हो—अपने ही कारणोंसे पैदा हुई हो, तो मनुष्यको मारती है; पर अगर अतिसार, पाण्डु या अर्श रोग आदिके उपद्रव रूप पहले पैरोंमें होकर क्रमशः ऊपरकी तरफ जावे, तो वह मारात्मक या प्राणनाशक नहीं।

जो सूजन मूत्राशयमें पैदा होती है, वह स्त्री और पुरुष दोनोंको मार डालती है, इसमें ज़रा भी संशय नहीं।

मूत्राशयमें पैदा हुई सूजन अन्य रोगोंके उपद्रव रूप न हुई हो यानी अपने ही कारणोंसे हुई हो, तो वह स्त्री और पुरुष दोनोंको मार डालती है।

जो सूजन अपने निदानसे यानी अपने ही कारणोंसे गुह्यस्थानमें अथवा बस्ति-स्थानमें पैदा होकर सारे शरीरमें फैल जाती है, वह स्त्री और पुरुष दोनोंको मार डालती है।

मध्य देह यानी शरीरके बीचके भाग, हृदय और गुदा प्रभृतिकी सूजन और सारे शरीरकी सूजन असाध्य होती है।

स्त्री या पुरुष इनमेंसे किसीके भी अगर पहले गुदामें सूजन पैदा होती है, तो वह प्राण नाश करती है।

कूख, पेट, गले और मर्मस्थानमें पैदा हुई सूजन असाध्य होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जो सूजन बहुत ही मोटी और कठोर होती है अथवा जिस सूजनके साथ श्वास, प्यास, वमि, कमज़ोरी, ज्वर, हिचकी, अतिसार, खाँसी और अरुचि आदि उपद्रव होते हैं, वह असाध्य होती है।

बालक, बूढ़े और कमज़ोरकी सूजन असाध्य होती है।

"हारीत-संहिता"में लिखा है—दो तरहकी सूजन होती हैं—(१) शरीरके मध्य भागमें, और (२) सारे शरीरमें। इनमेंसे सारे शरीरकी सूजन, बूढ़े और बालककी सूजन, क्षत और क्षय रोगसे पैदा हुई सूजन तथा छर्दि और अतिसार-युक्त सूजन असाध्य होती हैं। भ्रम और ज्वरसे क्षीण हुए शरीरमें पैदा हुई सूजन भी असाध्य होती है।

नोट—"सूजन-चिकित्सा"में, साध्यासाध्यका बड़ा झगड़ा है। ज़रा-सी भूलसे ग़लती हो जाती है, अतः खूब विचारकर साध्यासाध्यका निर्णय करना चाहिये। सूजनका आरम्भ कहाँसे हुआ है; यानी पहले सूजन कहाँ आई, सूजन किसी रोगके साथ उपद्रव स्वरूप है या अकेली पैदा हुई है, इन बातोंको विचारकर साध्यासाध्यका निश्चय करना चाहिये।

सूजन-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर किसी रोग विशेषके साथ सूजन हो, तो उस रोगकी दवाओंके साथ सूजन नाश करनेवाली दवा भी देनी चाहिये।

(२) इस रोगमें मल-मूत्र साफ रखनेकी विशेष चेष्टा रखनी चाहिये।

(३) पथ्यापथ्य तो हम अन्यत्र लिखेंगे, पर शोथ रोगमें जो आहार-विहार ख़ास तौरसे अपथ्य या हानिकर हैं, उनसे रोगीको सावधान कर देना वैद्यका प्रधान कर्त्तव्य है। "सुश्रुतके चिकित्सा-स्थान"में खटाई, नमक (खारीनोन), दही, गुड़ (नया गुड़), चरबी, दूध, तेल, घी, पिट्ठीके पदार्थ और भारी पदार्थ शोथवालेको मना लिखे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हैं। अन्य ग्रन्थोंमें हवा खाना, बहुत जल पीना, मल-मूत्रादि वेग रोकना, विरुद्ध पदार्थ खाना, मिट्टी खाना, सूखे साग, नया अन्न, खिचड़ी, बिना पानी मिली शराब, सूखा मांस, दिनमें सोना और सात रात तक स्त्री-प्रसंग,—ये सब अपथ्य लिखे हैं।

(४) शोथ रोगमें रोगीके बलाबल, समय और दोषोंका विचारकर, निदान और दोषोंके विपरीत चिकित्सा करनी चाहिये। जैसे आम संयुक्त शोथमें लंघन और पाचन प्रयोग करने चाहिए। अगर दोषोंकी उल्बणता हो, तो संशोधन करना चाहिए। शिरोगत शोथ हो, तो शिरोविरेचन करना चाहिये। रोगी शोधन योग्य हो, तो संशोधक औषधियोंके द्वारा संशोधन करना चाहिये। ऊर्ध्वगत शोथमें ऊर्ध्व-शोधन और अधोगतमें अधोशोधन करना चाहिये। स्नेह-जनित शोथमें "रूखी चिकित्सा"; और रूखे पदार्थ सेवन करनेसे हुई सूजनमें "चिकनी चिकित्सा" करनी चाहिये।

(५) वातज शोथमें मलबद्ध हो—दस्त न होता हो, तो निरूहण बस्ति करनी चाहिये। वात-पित्तज शोथमें तिक्त औषधियोंके साथ घी पकाकर सेवन कराना चाहिये। अगर शोथ रोगमें मूर्च्छा, अत्यन्त दाह और प्यास हो, तो दूध पिलाना चाहिये। अगर शोधन कराना हो, तो "गोमूत्र" पिलाकर शोधन कराना चाहिये। कफज सूजनमें क्षार, कटु और गरम पदार्थोंके साथ गोमूत्र, दूध और आसव आदि सेवन कराने चाहिये।

(६) वातज सूजनमें १ महीने तक निशोथ सेवन करनी चाहिये। अगर मलबन्ध हो तो "रैंडीका तेल" पीना चाहिये। औषधियोंके द्वारा कल्पित करके स्वेद कर्म, मालिश, सेक और लेप करने चाहिये। दूधके साथ भात और मांस-रस सेवन करना चाहिये।

(७) पित्तज सूजनमें अगर प्यास, मोह और पैरोंमें जलन हो; तो पाँवोंपर शीतल पदार्थोंका लेप करना चाहिये। इस शोथमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"न्यग्रोधादिगणकी औषधियों"के द्वारा घी पकाकर सेवन करना चाहिये। दूध पीनेवालेको गिलोय और त्रिफलेका काढ़ा पीना चाहिये।

(८) कफज शोथमें "आरग्वधादि औषधियों" के द्वारा तेल पकाकर पीना चाहिये। अगर मन्दाग्नि, कोष्ठबद्ध—दस्तकब्ज और स्रोतोंका अवरोध हो; तो क्षार, मूत्र, आसव, अरिष्ट, चूर्ण और तक्र—माठा आदि पदार्थ प्रयोग करने चाहिये।

(९) द्वन्द्वज सूजनमें मिली हुई और त्रिदोषजमें त्रिदोष-नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। विष-जनित सूजनमें विष-नाशक इलाज करना चाहिये।

शोथ या सूजन रोगकी विशेष चिकित्सा।

वातज सूजन नाशक नुसखे।

(१) सोंठ, पुनर्नवा, अरण्डकी जड़ और वृहत्पंचमूल—इनका काढ़ा पीने और भोजनमें भी इसी काढ़ेका व्यवहार करनेसे वातज शोथ शान्त हो जाता है।

(२) अगर वातज शोथमें कोष्ठबद्ध हो—दस्त न होता हो, तो गरम दूधमें "रैंडीका तेल" मिलाकर पीना चाहिये।

(३) दशमूलका काढ़ा वातज शोथमें विशेष उपकार करता है। हमारी रायमें इस सूजनकी यह लाजवाब दवा है। परीक्षित है।

(४) वातज सूजनमें १५ दिन तक निशोथका काढ़ा पीना चाहिये।

नोट—वातज सूजनमें मालिश और पसीना लेना हित है।

पित्तज सूजन नाशक नुसखे।

(५) एक तोला त्रिफलेका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" सेवन करनेसे पित्तज शोथ नाश होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) डेढ़ माशे निशोथका चूर्ण "गोमूत्रके साथ" सेवन करनेसे पित्तज सूजन नाश हो जाती है।

(७) निशोथकी जड़, त्रिफला और गिलोयका काढ़ा पीनेसे पित्तज सूजन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८) पित्तज शोथमें, दूध पीनेवालेको गिलोय और त्रिफलेका काढ़ा पीना लाभदायक है।

(९) परवलके पत्ते, त्रिफला, नीमकी छाल और दारुहल्दीके काढ़ेमें "डेढ़ माशे शुद्ध गूगल" मिलाकर पीनेसे प्यास और ज्वर समेत सूजन नाश हो जाती है। इस काढ़ेसे पित्तज और कफज दोनों सूजन नाश हो जाती हैं।

कफज सूजन नाशक नुसखे।

(१०) पीपर, मिश्री, पुरानी खल, सहँजनेकी छाल और अलसी—एकत्र पीसकर लेप करनेसे कफकी सूजन आराम हो जाती है।

(११) कुल्थी और सोंठको "जल या गोमूत्रमें" पीसकर सींचनेसे कफकी सूजन आराम हो जाती है।

(१२) शिवलिंगी और अगरका लेप करनेसे कफकी सूजन उतर जाती है।

(१३) मोरके मांसरसको "सरसोंके तेलमें" मिलाकर पीनेसे कमलपत्रके समान उठी हुई सूजन भी नाश हो जाती है।

(१४) पुनर्नवा, सोंठ, निशोथ, गिलोय, अमलताशका गूदा, हरड़ और देवदारु—इन सबका कुल एक तोले कल्क (सिलपर पिसी लुगदी) "गोमूत्रके साथ" पीनेसे कफकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—इन्हीं दवाओंका काढ़ा बनाकर पीनेसे भी लाभ होता है।

(१५) त्रिकुटा, निशोथ, कूट और शुद्ध लोह-चून—इनको कूट-पीसकर त्रिफलेके काढ़ेके साथ पीनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) हरड़का चूर्ण "गोमूत्रके साथ" पीनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है।

(१७) बायबिड़ङ्ग, अतीस, देवदारु, सोंठ, इन्द्रजौ, बच और चीता—इनको एकत्र पीसकर, इसमेंसे एक तोले चूर्ण गरम पानीके साथ खानेसे कफज सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) थूहरके दूधमें भावना दी हुई पीपर सेवन करनेसे कफकी सूजन नाश हो जाती है।

(१९) पुनर्नवा, सोंठ, निशोथकी जड़, गिलोय, बड़ी हरड़ और देवदारुके काढ़ेमें "गोमूत्र और दो माशे शुद्ध गूगल" मिलाकर पीनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

पुनर्नवादि लेह।

(२०) पुर्ननवा, गिलोय, देवदारु और दशमूल—इनको आध-आध सेर लेकर कुचल लो और सोलह सेर जलमें मिलाकर औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

अब ऊपरका चार सेर काढ़ा, अदरखका स्वरस एक सेर और पुराना गुड़ पाँच सेर—सबको मिलाकर पकाओ; जब पककर अवलेहके समान हो जाय; उसमें त्रिकुटा, चव्य, इलायची, दालचीनी और तेजपातका चूर्ण एक-एक तोले मिला दो और शीतल करो। शीतल होनेपर, उसमें १६ तोले "शहद" मिला दो। यह "पुनर्नवादि लेह" है। इसके सेवन करनेसे कफज शोथ, श्वास, खाँसी और अरुचिका नाश होकर बल, पुष्टि और जठराग्नि बढ़ती है।

त्रिदोषजन्य सूजन नाशक नुसखे।

(२१) पीपर, जीरा, गजपीपर, कटेरी, सोंठ, चीता, हल्दी, पीपरामूल, पाढ़ और नागरमोथा,—इनको समान-समान लेकर पीस-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छान लो। इसमेंसे तीन या चार माशे चूर्ण निवाये जलके साथ खानेसे त्रिदोषज और बहुत पुरानी सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) चिरायता और सोंठको सिलपर पानीके साथ पीसकर, गरम जलके साथ खानेसे त्रिदोषज सूजन आराम हो जाती है।

(२३) अदरख और सोंठका रस पीनेसे और पच जानेपर दूधके साथ भोजन करनेसे त्रिदोषज सूजन आराम हो जाती है।

(२४) शुद्ध शिलाजीत १ माशेको "त्रिफलेके काढ़ेके साथ" सेवन करनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई त्रिदोषज सूजन नाश हो जाती है।

(२५) अगर शरीरमें भारीपन हो और मल पतला आता हो—दस्त होते हों; तो त्रिकुटा, कालानोन और शहद—इनको मिलाकर सेवन करो। अगर मल रुका हो—दस्त न होता हो,तो इन्हीं दवाओंको दूध या गरम रसोंके साथ सेवन करो और पहले "रैंडीका तेल" पीओ।

(२६) बेलके पत्तोंका रस निकालकर और कपड़ेमें छानकर दो तोले नित्य पीनेसे त्रिदोषज सूजन नाश हो जाती है। यह नुसखा विडभंग, कामला और बवासीरमें भी हितकारी है। परीक्षित है।

(२७) बेलके पत्तोंके कपड़ेमें छाने हुए रसमें "सोंठ, कालीमिर्च और पीपरोंका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे सन्निपातज सूजन नष्ट हो जाती है।

(२८) गजपीपर, हल्दी, पाठा, कटेरी, सोंठ, नागरमोथा, त्रिकुटा, जीरा, चीता और कुटकी—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके खानेसे त्रिदोष-जनित सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२९) सहँजनेकी छाल, पीपर, मोम, खली और अलसी—इनको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(३०) हल्दी, दारुहल्दी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, लोध, पुनर्नवा, सुगन्धवाला, रसौत, मरोड़फली, छोटी हरड़, गेरू और पद्माख—इन सबका लेप त्रिदोषज सूजनमें हितकारी है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आगन्तुक सूजन नाशक नुसखे।

(३१) तिल और काली मिट्टीको एकत्र पीसकर लेप करनेसे भिलावेकी सूजन आराम हो जाती है।

नोट—आगन्तुक सूजनमें शीतल सेक और लेप आदि प्रयोग करने चाहिये।

(३२) भैंसका लूनी घी लगानेसे भिलावेकी सूजन नाश हो जाती है।

(३३) तिलोंको "दूधमें पीसकर" लेप करनेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।

(३४) मुलेठी, दूध और तिलोंको एकत्र पीसकर और "नौनी घीमें मिलाकर" लेप करनेसे भिलावेकी सूजन नाश हो जाती है।

(३५) अर्जुनके पत्तोंको "दूधमें पीसकर" लेप करनेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।

(३६) तिलोंको "दूधमें पीसकर और नौनी घीमें मिलाकर" लगानेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।

(३७) कालानोन और तिलके पेड़के नीचेकी मिट्टी—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बहुत पुरानी भिलावेकी सूजन भी जाती रहती है।

(३८) शालके पत्तोंका चूर्ण "पानीके साथ" पीनेसे भिलावेकी सूजन नाश हो जाती है।

(३९) चावलके पत्तोंका लेपभी भिलावेकी सूजनको नाश करता है।

विषज सूजन नाशक नुसखे।

विषसे हुई सूजन विष-नाशक उपाय करनेसे जाती है। स्थावर और जङ्गम सब तरहके विषोंकी चिकित्सा पाँचवें भागमें विस्तारसे लिखी है; अतः यहाँ लिखना व्यर्थ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शोथ या सूजन रोगकी
सामान्य चिकित्सा ।

(१) भैंसका मक्खन और भैंसका दूध—इनमें "तिल" पीसकर लेप करनेसे सूजन दूर हो जाती है।

(२) हरड़, हल्दी, भारंगी, गिलोय, चीता, दारुहल्दी, पुनर्नवा, देवदारु और सोंठ—इनके काढ़ेको "पथ्यादि क्वाथ" कहते हैं। इस काढ़ेके पीनेसे पेटमें, हाथोंमें, पाँवोंमें और मुँहमें हुई सूजन तत्काल जबर्दस्ती आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—बंगसेनमें भी यह काढ़ा लिखा है, पर उसमें "हल्दी" नहीं है। इसमें नौ चीज़ें हैं और उसमें आठ हैं। "हल्दी"का होना ज़रूरी है।

(३) पुनर्नवा, मूली, सोंठ, देवदारु, गिलोय और चीतेकी जड़—इन औषधियोंके द्वारा रस, यवागू, दूध और यूष पकाकर खिलाने-पिलानेसे शोथ या सूजनमें बहुत लाभ होता है।

(४) सफेद पुनर्नवा, देवदारु और सोंठ—इनके काढ़ेके साथ पकाया हुआ दूध सूजनमें हितकारी है।

(५) दन्ती, निशोथ, सोंठ, मिर्च, पीपर और चीता—इनके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "दूध" सूजनमें हितकारी है।

(६) हरड़, बहेड़ा और आमला—इनको "गोमूत्रमें मिलाकर" पीनेसे वात और कफ सम्बन्धी फोतोंकी सूजन नाश हो जाती है।

(७) आकके पत्ते, पुनर्नवा और नीमकी छाल—इनका काढ़ा सूजनपर ढालने या सींचनेसे सूजन उतर जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) गोमूत्रको ज़रा गरम करके सूजनपर सींचनेसे सूजन उतर जाती है। परीक्षित है।

नोट—पुराने जौ और चावलोंका भोजन सूजनवालेको पथ्य है।

(९) पुनर्नवा, देवदारु, सोंठ, सहँजना और सरसों—इनको खट्टे रसमें पीसकर और ज़रा गरम करके सूजनपर लेप करनेसे सब तरहकी सूजन उतर जाती हैं।

(१०) गुड़ और अदरख; गुड़ और सोंठ; गुड़ और हरड़; गुड़ और निशोथ अथवा गुड़ और पीपर—इनमेंसे कोई एक नुसख़ा नित्य एक-एक तोला बढ़ाकर, बारह तोले तक, एक महीना या पन्द्रह दिन सेवन करनेसे सूजन, प्रतिश्याय, गलेके रोग, मुँहके रोग, श्वास, खाँसी, अरुचि, पीनस, जीर्णज्वर, बवासीर, संग्रहणी तथा वात और कफ सम्बन्धी अन्य रोग भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११) सोंठ और गुड़ बराबर-बराबर मिलाकर खाने और ऊपरसे "सफ़ेद पुनर्नवाका स्वरस" पीनेसे सूजन उसी तरह नाश हो जाती है; जिस तरह हवासे बादलोंका समूह नष्ट हो जाता है। एक-दो दिनमें कुछ नहीं हो सकता, लगातार कुछ दिन तक इस नुसख़ेको सेवन करनेसे अवश्य लाभ होता है।

(१२) सोंठ और पीपरका चूर्ण "गुड़में मिलाकर" खानेसे सूजन, आमाजीर्ण और शूल रोग नाश हो जाते और मूत्राशय साफ़ हो जाता है।

(१३) अरण्डकी जड़, करंज, आककी जड़, पुनर्नवा और नीमकी छालका काढ़ा सुहाता-सुहाता सूजनपर सींचनेसे सर्व्वाङ्ग शोथ यानी सारे शरीरकी सूजन नाश हो जाती है।

(१४) पुनर्नवा, देवदारु, सोंठ, सरसों और सहँजनेकी छाल—इनको एकत्र "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे सब तरहकी सूजन दूर हो जाती हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१५) बेलकी जड़, त्रिकुटा, पीपर और चीता—इनको समान-समान लेकर और "दूधमें औटाकर" पीनेसे सब तरहकी सूजन दूर हो जाती हैं।

(१६) मूली और सोंठका यूष, चीता और पुनर्नवेका साग तथा मानकन्दकी यवागू सब तरहकी सूजनको नाश करते हैं।

(१७) बहेड़ेके फलोंकी मींगी पीसकर लेप करनेसे सूजनकी दाह और पीड़ा नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) मुलेठी, नागरमोथा, कैथके पत्ते और चन्दन—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे सूजन और सूजनकी फुन्सियाँ नष्ट हो जाती हैं।

(१९) रास्ना, बाँसा, आककी जड़, त्रिफला, बायबिड़ङ्ग, सहँजनेकी छाल, आक, व्याघ्रनख, मूर्वा, सज्जी, कुटकी, मकोय, कटाई, पीपर, पुनर्नवा, सोंठ और चीता—इनको एकत्र "गोमूत्रमें पीसकर" उबटना करनेसे अथवा गोमूत्रमें पीस-घोलकर सींचनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

(२०) त्रिकुटा, शुद्ध लोहचून, जवाखार और त्रिफला—इनका चूर्ण खानेसे सूजन नाश हो जाती है।

(२१) कुटकी, शुद्ध लोहचूर्ण, त्रिकुटा और निशोथ—इनको पीस-छानकर खानेसे सब तरहकी सूजन आराम हो जाती हैं।

(२२) छै माशे शुद्ध गूगलको "गोमूत्रके साथ" सेवन करनेसे अथवा दूधके साथ पीपर सेवन करनेसे अथवा गुड़के साथ "हरड़ या सोंठ" सेवन करनेसे सब तरहकी सूजन आराम हो जाती हैं।

(२३) देवदारु, शुद्ध गूगल और सोंठको समान-समान लेकर "गोमूत्रमें" सिलपर पीसकर खानेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

(२४) पुनर्नवा और अदरख—इनको समान-समान लेकर और "गोमूत्रके साथ" पीसकर खानेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२५) केवल "गोमूत्र" पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(२६) पुराना मानकन्द लेकर पीस लो। फिर उसमें दूने चावल मिलाकर, उसे दूध और पानीमें डालकर पकाओ। इस खीरके खानेसे वातोदर, शोथ, संग्रहणी, पाण्डु रोग और विशेषकर सब तरहकी सूजन नष्ट हो जाती हैं।

(२७) वज्रकन्दको पीसकर और दूधमें पकाकर खीर बनाओ। इस खीरको "कोशाम्रके तेलमें" मिलाकर मालिश करनेसे बहुत दिनोंकी पुरानी अत्यन्त दुष्ट सूजन भी नाश हो जाती है।

(२८) अदरखको "गुड़"में मिलाकर और नित्य दो तोले बढ़ाकर सेवन करो। इस तरह २० तोले तक बढ़ाओ—आगे नहीं। इसके ऊपर मूँगका यूष, दूध और मांसरस खाओ। इस उपाय्रसे सूजन, गुल्म, उदर रोग, खाँसी, श्वास, अरुचि, पीनस, पाण्डु रोग, बवासीर और हृदय रोग आराम हो जाते हैं।

(२९) अदरखके स्वरसमें "पुराना गुड़"मिलाकर पीने और ऊपरसे बकरीके दूधका भोजन करनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

(३०) चिरायता और सोंठको पानीके साथ सिलपर पीसकर खाने और ऊपरसे "पुनर्नवेका काढ़ा" पीनेसे सर्वाङ्गगत शोथ यानी सारे शरीरमें फैली हुई सूजन नाश हो जाती हैं।

(३१) सेहुँड़के पत्तोंका रस मालिश करनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

(३२) कालीमिर्चके चूर्णके साथ "बेलके पत्तोंका रस, नीमके पत्तोंका रस और सफ़ेद पुनर्नवाका रस" सेवन करनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(३३) सहँजनेकी छाल, करञ्ज, आक, दारुहल्दी और अमलताशकी जड़—इनको बराबर-बराबर लेकर और "गोमूत्र"में पीसकर लेप करनेसे सूजन नष्ट हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३४) मोर या कबूतरके मांसका शोरबा "सरसोंके तेलमें" मिलाकर पीनेसे असाध्य सूजन भी नाश हो जाती है।

(३५) सफ़ेद पुनर्नवेका स्वरस १ तोले रोज़ पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(३६) विष्णुकान्ताका स्वरस १ तोला रोज़ पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(३७) पुराने मानकन्दके चूर्णको "दूधमें पकाकर" खानेसे सब तरहकी सूजन, श्वास, खाँसी, जुकाम, पीड़ा, आम, विबन्ध, मन्दाग्नि, अफारा, गुल्म, आनाह, उदावर्त और उदर रोग नाश हो जाते हैं।

(३८) शोथ रोगमें पहले जुलाब देना चाहिये। इसके बाद "सोंठका चूर्ण" दूधके साथ सेवन करना चाहिये; अथवा "गिलोयका चूर्ण" दूधके साथ खाना चाहिये। साथ ही दही और सेंधानोन मिलाकर लेप करना चाहिये; अथवा आकके दूधका लेप करना चाहिये।

(३९) "चक्रदत्त" महोदय कहते हैं कि, असगन्धको "गोमूत्रके साथ पीसकर" लेप करनेसे सूजन रोग आराम हो जाता है।

(४०) शोथ रोगमें जब तक नमक और जल त्याग दिये जावें तब तक, "मुण्डीके पत्तोंका साग" खाना विशेष उपकारी है।

(४१) गोमूत्रकी भावना दिया हुआ "शुद्ध मण्डूर" शहदमें चाटनेसे सूजन नाश हो जाती है।

(४२) सफ़ेद फूलके पुनर्नवाका पञ्चाङ्ग आध सेर लेकर खूब कूट लो और मिट्टीके बर्तनमें डालकर, ऊपरसे चार सेर पानी मिलाकर पकाओ। जब एक सेर पानी रह जाय, उतारकर मल-छान लो और दूसरे बासनमें रख दो। फिर उसमें १ सेर मिश्री और १ छटाँक शोरा पीसपर मिला दो। जब मिश्री और शोरा गल जायें, तब इसे फिर कपड़ेमें छानकर एक बोतलमें भर दो और काग लगा दो। इसमेंसे सवेरे-शाम दो-दो तोले चाटनेसे ज्वर सहित शोथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और बिना ज्वरका शोथ निश्चय ही आराम हो जाता है। जिस शोथ रोगीको पेशाब कम होता है, उसके लिये यह दवा ख़ास तौरसे उत्तम है। इतना ही नहीं और-और शोथोंमें भी यह दवा तत्काल फल दिखाती है। परीक्षित है।

सूजन रोग नाशक उत्तमोत्तम योग।

गुड़ादि चूर्ण।

१२ तोले गुड़, १२ तोले सोंठ, १२ तोले पीपर, ४ तोले शुद्ध मण्डूर भस्म और ४ तोले तिल—इन सबको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको उपयुक्त मात्रामें सेवन करनेसे सब तरहकी सूजन नाश हो जाती हैं।

नोट—बंगसेनके इसी नुसख़ेमें "तिल" नहीं हैं।

पुनर्नवाद्य चूर्ण।

पुनर्नवा, दारुहल्दी, गिलोय, पाढ़, सोंठ, गोखरू, हल्दी, दारुहल्दी, कटेरी, कटाई, पीपर, चीता और अतीस—इन सबको समान भाग लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "गोमूत्रके साथ" पीनेसे अनेक तरहकी सूजन, सारे शरीरमें फैलनेवाली सूजन, आठों तरहके उदर रोग और अत्यन्त बढ़े हुए व्रण नाश हो जाते हैं।

मानक घृत।

मानकन्दके काढ़ेमें मानकन्दका ही कल्क डालकर एक सेर घी पका लो। इस घीके पीनेसे एक दोषज, दो दोषज और तीन दोषज सूजन नाश हो जाती हैं।

नोट—घीसे चौथाई कल्क और चौगुना काढ़ा तथा घीको मिलाकर पका लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शुष्क मूलक तैल।

सूखी मूली, पुनर्नवा, देवदारु, रास्ना और सोंठ—इन पाँचों दवाओंके कल्क द्वारा तेल पका लो। इस तेलके मलनेसे शूल समेत सूजन नाश हो जाती है।

नोट—इन पाँचोंको एक एक छटाँक लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर इस कल्कसे चौगुना सवा सेर तेल और पाँच सेर पानी लेकर तेल पका लो। इस तेलको उस शोथमें जिसमें ज्वर न हो यानी ख़ाली शोथ हो मालिश करानेसे अवश्य लाभ होता है। इसके साथ खानेकी दवामें ७७० सफ़ेका "चित्रकाद्य घृत" देना चाहिये। ७७१ सफ़ेका पुनर्नवाद्य तैल भी बिना ज्वरकी सूजनमें अच्छा काम देता है।

पुनर्नवाष्टक क्वाथ।

सफ़ेद फूलका ताज़ा-हरा पुनर्नवा, नीमकी हरी छाल, परवलके हरे पत्ते, सोंठ, कुटकी, हरी गिलोय, देवदारु और बड़ी हरड़—इन आठों दवाओंको तीन-तीन माशे लेकर, सोलह तोले जलमें पकाओ; जब चार तोले पानी रह जाय, मलकर छान लो। शीतल होनेपर, इसमें ६ माशे "शहद" मिलाकर हर दिन सवेरे पीओ।

यह काढ़ा हर तरहकी सूजनकी रामबाण दवा है। जब ज्वरमें बारम्बार कुनैन या और-और डाक्टरी या देशी तेज़ और विष-घटित दवाएँ सेवन करनेसे अथवा आहार-विहारमें गड़बड़ होनेसे रोगीके पेट और हाथ-पाँव आदि अंगोंमें सूजन आ जाती है और उसके साथ ज्वर जड़ पकड़ लेता है; तब यह "पुनर्नवाष्टक काथ" धन्वन्तरिके समान काम करता है। अगर उस समय रोगी इसको बाक़ायदे नित्य पीवे, स्नानादि अपथ्य आहार-विहारोंको छोड़ दे और बहुत ही हल्का पथ्य भोजन करे, तो निश्चय ही आराम हो जावे।

यह काढ़ा दो-तीन दिन तक पीनेसे कठिन मलको नर्म करके पेटसे निकाल देता है—दस्त खुलासा लाता है। इससे ज्वर कम होने

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगता और भूख लगने लगती है। यह काढ़ा पुराने शोथ ज्वर या सूजन-समेत ज्वरकी तो लाजवाब दवा है ही—पर इसके सिवा यह विषम ज्वरों और उन ज्वरोंमें भी जिनमें रोगीकी तिल्ली और जिगर अर्थात् स्प्लीन और लिवर एक-दमसे ख़राब होकर सारा शरीर सूजनसे भर जाता है—.खूब चमत्कार दिखाता है।

इनके भी सिवा, जिस शोथ या सूजनका कारण मालूम नहीं होता, जिस शोथमें ज्वर भी नहीं होता और प्लीहा एवं यकृत-सम्बन्धी शिकायतें भी समझमें नहीं आतीं—उनमें भी यह अच्छा काम करता है। यहाँ तक कि, गर्भवती और प्रसूता स्त्रियोंके शोथमें भी यह अच्छा चमत्कार दिखाता है। छोटे-छोटे बालकोंके यकृत-शोथमें भी इसका अच्छा फल हो सकता है। यह काढ़ा ज्वर-सहित और बिना ज्वर सब तरहकी सूजनोंपर तीरे हदफ़का काम करता है। परीक्षित है।

यह काढ़ा सर्व्वांग शोथ, उदर रोग, पसलीका दर्द, श्वास और पाण्डु रोगको नाश करता है।

सूचना—कोई-कोई इस काढ़ेमें "देवदारु"की जगह "दारुहल्दी" लेते हैं।

नोट—जो सूजन दिनमें बढ़ती और रातको कम हो जाती है, जो उँगली गाड़नेसे नीचेको बैठ जाती और उँगलीके हटाते ही झटसे उठ आती है, जिसमें हृदयकी धड़कन बहुत जल्दी-जल्दी होती और शरीर एकदमसे रूखा हो जाता है, वह "वातज सूजन" कहलाती है। उस सूजनमें "दशमूलका काढ़ा" देना चाहिये। "दशमूलका काढ़ा" ही वातज सूजनकी सर्व्वश्रेष्ठ दवा है। परीक्षित है।

पुनर्नवा स्वरस।

सफ़ेद पुनर्नवेका स्वरस २ तोले और शहद ६ माशे—दोनोंको मिलाकर, दिनमें दो-तीन बार पीनेसे शोथ या सूजन नाश हो जाती है। अगर इस स्वरसको किसी ज्वर-नाशक दवाके साथ "अनुपान-रूपमें" देते हैं, तो विशेष लाभ होता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पथ्यादि क्वाथ।

हरड़, हल्दी, भारंगी, गिलोय, चीतेकी जड़, दारुहल्दी, पुनर्नवा, देवदारु और सोंठ—इस काढ़ेके पीनेसे सब तरहकी और सारे शरीरकी सूजन अवश्यमेव नाश हो जाती हैं। वैद्यक-शास्त्रमें लिखा है, कि यह काढ़ा सूजनको ज़ोरसे नाश कर देता है। यह बात वास्तवमें सच्ची है। परीक्षित है।

सिंहास्यादि क्वाथ।

अड़ूसेकी छाल, गिलोय और कटेरी—इन तीनोंके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे सूजन, श्वास, खाँसी, ज्वर और वमन ये सब नाश हो जाते हैं।

शोथारि चूर्ण।

सूखी मूली, चिरचिरा, त्रिकुटा, त्रिफला, दन्तीकी जड़, बायबिड़ङ्ग, चीतेकी जड़ और नागरमोथा—बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। इसमेंसे तीन-तीन माशे चूर्ण नित्य खाकर, ऊपरसे "बेलके पत्तोंका स्वरस" पीनेसे सब तरहकी सूजन और पाण्डु रोग नाश हो जाते हैं।

चित्रकाद्य घृत।

चीतेकी जड़, धनिया, अजवायन, पाढ़, अजमोद, त्रिकुटा, अम्लवेत, सोंठ, कमल, अनारदाना, जवाखार, पीपरामूल और चव्य—इनको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बनालो।

अब घी ४ सेर, पानी १६ सेर और ऊपरकी लुगदी मिलाकर घी पका लो। इसमेंसे छै-छै माशे घी खानेसे सूजन, गोला, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र आदि रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—जिस सूजनमें ज्वर न हो उसमें, इस घीको खिलाने और पृष्ठ ७६८ के "शुष्क मूलक तैल" या ७७१ के "पुनर्नवाद्य तैल"की सूजनपर मालिश करानेसे अच्छा लाभ होता है। इस घीकी क्रिया हमने नियम-विरुद्ध लिखी है, उसका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वहम न करना। इच्छा हो, लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी लेकर घी पका लेना।

पुनर्नवाद्य तैल।

त्रिकुटा, त्रिफला, काकड़ासिंगी, धनिया, कायफल, कचूर, दारुहल्दी, प्रियंगू फूल, पद्मकाष्ट, रेणुका, कूट, पुनर्नवा, अजवायन, कालाजीरा, इलायची, दालचीनी, लोध, तेजपात, नागकेशर, बच, पीपरामूल, चव्य, चीतामूल, सोवा, सुगन्धवाला, मँजीठ, रास्ना और जवासा;—इन २८ दवाओंको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

सफ़ेद पुनर्नवा साढ़े बारह सेर लेकर चौंसठ सेर जलमें पकाओ, जब १६ सेर पानी रह जाय मल-छान लो।

फिर तिलीका तेल चार सेर, ऊपरकी लुगदी और काढ़ेको मिलाकर पकाओ। जब काढ़ा जलकर तेल मात्र रह जाय, छानकर रख दो। इस तेलकी मालिशसे सूजन, पाण्डु, कामला, हलीमक, सीहा और उदर रोग आदि अनेक रोग आराम हो जाते हैं। सूजन नाश करनेमें यह तेल परमोत्तम है। परीक्षित है।

दुग्धवटी।

शुद्ध मीठा विष ३ माशे, शुद्ध अफ़ीम ३ माशे, लोहभस्म १० रत्ती और अभ्रक भस्म १५ माशे—इन सबको खरलमें डालकर दूधके साथ खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "दूधके साथ खाने और दूध भातका ही भोजन करनेसे" सूजन, संग्रहणी, मन्दाग्नि और विषम ज्वर नाश हो जाते हैं।

नोट—जब तक आराम न हो जाय, "नमक" भूलकर भी न खाना चाहिये और इसी तरह "पानी" भी न पीना चाहिये; केवल दूध पीकर रहना चाहिये। संग्रहणीमें सूजन होनेसे ये गोलियाँ रोगीके प्राण बचाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तक्र मण्डूर।

धुली-पिसी भाँग २ तोले, शुद्ध मण्डूरभस्म २ तोले, बाँसकी जड़ १ तोले, काली अगर १ तोले, नीमकी छाल १ तोले, विषतारककी जड़ १ तोले, समुद्रफेन १ तोले, तेजपात ६ माशे, लौंग ६ माशे, इलायची ६ माशे, सोवा ६ माशे, सौंफ ६ माशे, कालीमिर्च ६ माशे, गिलोय ६ माशे, मुलेठी ६ माशे, जायफल ६ माशे, सोंठ ६ माशे और सैंधानोन ६ माशे—सबको पीस-कूटकर "सफ़ेद पुनर्नवाके रसके साथ" दिनभर खरल करो। जब मसाला गोली बनाने योग्य हो जाय, जङ्गली बेर-समान गोलियाँ बना लो। इनमेंसे बलाबल-अनुसार एक या आधी गोली माठेके साथ सेवन करनेसे सूजन—ख़ासकर पाण्डुरोगकी सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—इन गोलियोंके सेवन करनेवालेको भी माठा या माठा और भातपर ही रहना होता है। नमक और जल क़तई बन्द रहते हैं। प्यास लगनेपर भी माठा ही पीना होता है।

पंचामृत रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, आगपर फुलाया हुआ सुहागा ३ तोले और कालीमिर्च ३ तोले—इनको खरलमें पीसकर पानीके साथ घोटो और रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली "अदरखके रस"के साथ खानेसे सूजन, जलोदर, सिरका दर्द, सूजन-समेत ज्वरातिसार और गलग्रह आदि अनेक कफके रोग शान्त हो जाते हैं।

त्रिकट्वादि लौह।

त्रिकुटा, त्रिफला, दन्ती, बायबिड़ङ्ग, कुटकी, चीता, देवदारु, निशोथ और गजपीपर सबको एक-एक तोले लो और सारे चूर्णसे दूनी अठारह तोले "लोह भस्म" लो। कूटने-पीसने योग्य दवाओंको पीस-छानकर चूर्णमें "लोह भस्म" मिला दो और खरलमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डालकर "दूधके साथ" खरल करो। जब मसाला घुट जाय, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खाने और ऊपरसे "दूध" पीनेसे सूजन नाश हो जाती है।

कंस हरीतकी।

दशमूलकी दसों दवाएँ मिलाकर चार सेर, पोटलीमें बँधी हुई हरड़ चार सेर और पानी ६४ सेर—सबको मिलाकर औटाओ, जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। "हरड़ोंको" छाँटकर अलग रख दो।

अब इस काढ़ेमें १२॥ सेर पुराना गुड़ और छाँटी हुई हरड़ मिला दो और मिट्टीके बासन या क़लईदार बर्तनमें पकाओ। जब काढ़ा पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, इसमें "पीपर, सोंठ, कालीमिर्च, दालचीनी, इलायची और तेजपात—इनमेंसे प्रत्येकका दस-दस तोले आठ-आठ माशे चूर्ण" मिला दो और शीतल कर लो। जब शीतल हो जाय, उसमें ६४ तोले "शहद" और एक तोले "जवाखारका चूर्ण" मिला दो।

सवेरे ही एक हरड़ और १ तोले अवलेह गरम पानीके साथ खानेसे सूजन, तिल्ली, गोला, श्वास, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, त्रिदोषज उदर रोग, पाण्डु रोग, कृशता, आमवात, रक्तपित्त, अम्लपित्त, विवर्णता, मूत्ररोग, वातरोग और वीर्यदोष नाश हो जाते हैं।

शोथ या सूजन रोगपर हकीमी नुसख़े।

नोट—अंगके फूलने या मोटे होनेका नाम "सूजन" है। सूजन अङ्गपर मल गिरने और चारों दोषों या वातसे होती है। विकारोंको रोकनेवाली, गलानेवाली, पकानेवाली और बहानेवाली चीज़ोंका सेवन करना ही इसका यत्न है।

(१) जदवार, रसौत, गेरू, ख़तमीके बीज, लाल चन्दन, रेवन्द-चीनी, मकोय, सफ़ेद कत्था और कालीज़ीरी—इनको समान-समान

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेकर पीस-छान लो और खरल करके गोलियाँ बनालो। इन गोलियों-को मकोयके हरे पत्तोंके रसमें, हरे धनियेके रसमें, सिरकेमें, गुलाब-जलमें या पानीमें इनमेंसे किसी एकमें पीसकर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(२) हल्दी, गेरू, सोंठ और बिस्मार—बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीसकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मकोयके हरे पत्तोंके रसमें पीसकर लगानेसे सूजन उतर जाती है।

(३) अजवायन महीन कूट-छानकर और नीबूके रसमें मिला-पकाकर, सूजनपर गुनगुनी-गुनगुनी बाँधनेसे सूजन उतर जाती और पीड़ा शान्त हो जाती है।

नोट—नीबू न मिले तो सिरकेमें मिलाकर पका सकते हो।

(४) आमकी बिजली पानीमें पीसकर और आगपर पकाकर गुनगुना-गुनगुना लेप लगानेसे सूजन उतर जाती है। "ख़ैरुलतिजारब" में लिखा है, कि यह दवा सूजनके लगानेमें जदवारके बराबर है।

(५) अरण्डकी छाल, विषखपरेकी छाल और सोंठ—इनको पानीमें पीसकर और गुनगुना करके सूजनपर लगानेसे सूजन पच जाती है।

(६) धतूरेके पत्ते गुनगुने-गुनगुने सूजनपर बाँधनेसे सूजन उतर जाती है।

(७) बकरीकी मैंगनी पानीमें पीसकर लेप करनेसे पुरानी सूजन भी गल जाती है।

(८) मिस्सीके पेड़की पत्तियाँ और अरण्डके पेड़की कौंपलें बराबर-बराबर लेकर और थोड़ासा "नमक" मिलाकर पीस लो और आगपर गुनगुना करके बग़ल या कानके नीचेकी सूजनपर बाँधो। इससे कानके नीचेकी और बग़लकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—मिस्सीका पेड़ मशहूर है। इसे "चकसौनी" भी कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) कत्था, मुर्दारसंग, तज, लाल चन्दन, कबाबचीनी और सब्ज तूतिया—इनको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे बग़लकी सूजन गल जाती है। इस दवाको "लालदारु" कहते हैं।

(१०) सिरसके पत्ते गरम करके हर दिन, दिनमें कई बार, बाँधनेसे पीड़ा और सूजन नष्ट हो जाती हैं।

(११) मूँग, जौ, मसूर और लोबियेका आटा बराबर-बराबर लेकर, सिरके और पानीमें घोलकर, लपटीसी पकाकर, लेप करनेसे सूजनका मल पक जाता और पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१२) बड़के पत्ते घीमें तर करके गुनगुने-गुनगुने बाँधनेसे सूजन और सख़्ती जाती रहती है।

(१३) गूलरके पत्तोंका रस जौके आटेमें मिलाकर बाँधनेसे सख़्त वरम या सूजन गल जाती है।

(१४) गायका गोबर सूजनपर बाँधनेसे लाभ होता है।

(१५) धनिया आदमीके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(१६) जायफल २० माशे, सोंठ ४० माशे और कंघी ४० माशे इनको सिरकेमें पीसकर और गरम करके लगानेसे सूजन नाश हो जाती है।

(१७) इन्द्रायणकी जड़ सिरकेमें पीसकर और गरम करके लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(१८) ईसबगोलको पीसकर और पानीमें घोलकर लेप करनेसे सूजन उतर जाती है।

(१९) अब्बासीके पत्ते गरम करके बाँधनेसे सूजन आराम हो जाती है।

(२०) तेंदूकी लकड़ी पीसकर लगानेसे मिलावेकें धूएँकी सूजन आराम हो जाती है।

(२१) चिरौंजी खानेसे मिलावेकी सूजन दूर हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२२) गूलरकी छाल पानीमें पीसकर लेप करनेसे भिलावेके धूएँकी सूजन उतर जाती है।

(२३) मुर्दारसंग पीसकर लगानेसे भिलावेकी सूजन जाती रहती है।

(२४) अड़ूसेके पत्ते पीसकर और "थोड़ा नोन" मिलाकर बाँधनेसे भगन्दरकी सूजन उतर जाती है।

(२५) करीलके पत्ते और अरण्डके पत्ते गरम करके बाँधनेसे भगन्दरकी सूजन आराम हो जाती है।

(२६) अकरकरा, कायफल, खुरासानी अजवायन, सोंठ और नरकचूर—समान-समान लेकर, तिल और रैंडीके तेलमें मिलाकर लेप करनेसे वातकी पीड़ा और सूजन नाश हो जाती है।

(२७) महुएके पत्तोंपर रैंडीका या तिलीका तेल लगाकर और गरम करके गुनगुना-गुनगुना बाँधनेसे वातकी पीड़ा और सूजन नष्ट हो जाती है।

(२८) चावल पकाकर और दहीमें मिलाकर, राह चलनेसे हुए पाँवके छालोंपर लेप करनेसे शीघ्र ही लाभ होता है।

(२९) सोंठ और रैंडीको पानीमें महीन पीसकर बग़लके फोड़ोंपर गुनगुना-गुनगुना लेप करनेसे आराम होता है।

बिना उस्तादके अँगरेज़ी सिखानेवाली

हिन्दी अँगरेज़ी शिक्षा (चार भाग)

इस ग्रन्थकी प्रायः पचास हज़ार कापियाँ बिक गई हैं। इसीसे आप समझ सकते हैं, कि यह ग्रन्थ कैसा उपयोगी है। इसमें यह ख़ूबी है कि, इसके सहारेसे केवल हिन्दी जाननेवाला मनुष्य, बिना गुरुकी मददके, अपने काम लायक अँगरेज़ी बहुत ही जल्दी सीख लेता है। व्यापारियोंके बालकोंके लिये भी यह उत्तम चीज़ है। पहले भागका मूल्य १), दूसरे, तीसरे और चौथेका दो दो रुपया। चारोंका ७) सात रुपया। पर जो सज्जन चारों भाग एक साथ मँगायेंगे, उन्हें डाकख़र्च न देना होगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौबीसवाँ अध्याय

अन्त्रवृद्धि या कोषवृद्धि-वर्णन।

(फोते बढ़ना या आँत उतरना)

निदान और संख्या।

वात, पित्त, कफ, रुधिर, मेद, मूत्र और आँत—इन भेदोंसे वृद्धि रोग सात प्रकारका होता है।

सम्प्राप्ति।

अपने कारणोंसे कुपित हुई वायु अण्डकोषों या फोतोंमें जाकर, अण्डकोषोंकी शिराओं—नसोंको रोककर अण्डोंकी और चमड़ेकी वृद्धि करती है।

अथवा

"वायु" अपने दोषसे कुपित होकर पट्ठेसे अण्डकोषमें जाती है और फिर पित्तादि दोष—दूष्यको कुपित करके, अण्डकोषोंको वर्द्धित, स्फीत और वेदनायुक्त करती है। इसी रोगको "वृद्धिरोग" या "फोतोंका बढ़ना" कहते हैं।

अथवा

अपने कारणोंसे कुपित हुई "वायु" फल यानी फोतेकी गोली और उसके कोष यानी उसके रहनेके स्थानसे सम्बन्ध रखनेवाली

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिराओं—नसोंको रोककर तथा स्वयं उन्हीं नसोंमें रुककर फोतोंके धारण करनेवाली नसोंकी वृद्धि करती है।

वातवृद्धिके लक्षण।

अगर वृद्धि छूनेसे वायुसे भरी हुई मशकके समान मालूम हो, रूखी हो और बिना वजहके या सामान्य कारणसे दुखने लगे; तो उसे "वातकी वृद्धि" समझनी चाहिये।

पित्तवृद्धिके लक्षण।

जो वृद्धि पके हुए गूलरके फलके समान लाल हो, जिसमें पित्तके लक्षण—दाह, जलन और पाक हों, उसे "पित्तकी अण्डवृद्धि" समझनी चाहिये। अथवा जो बढ़ा हुआ फोता पके हुए गूलरके फलके समान लाल हो, जिसमें जलन और गरमी हो तथा जो पकनेवाला हो, उसे "पित्तज वृद्धि" जानो। यह बहुत दिन रहनेसे पक जाती है।

कफज वृद्धिके लक्षण।

जो वृद्धि शीतल हो, भारी हो, चिकनी हो, जिसमें खुजली चलती हो, जो कठिन या सख्त हो और जिसमें थोड़ा दर्द होता हो, वह "कफकी वृद्धि" है।

रुधिरकी वृद्धिके लक्षण।

जो वृद्धि काले-काले फोड़ोंसे व्याप्त हो और जिसमें पित्तकी वृद्धिके सब लक्षण मिलते हों, वह "रुधिरकी वृद्धि" है।

मेदकी वृद्धिके लक्षण।

जो वृद्धि छूनेमें नर्म हो, जो ताड़फलके समान नीची और गोल हो अथवा जो आकारमें पके हुए ताड़फलकी जैसी हो और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिसमें कफकी वृद्धिके सब लक्षण मिलते हों, उसे "मेदकी वृद्धि" समझो।

मूत्रकी वृद्धिके लक्षण।

जो मनुष्य आते हुए पेशाबको रोकते हैं, उनको "मूत्रज वृद्धि" होती है। वह "मूत्रज वृद्धि" चलते समय पानीकी भरी हुई मशककी तरह बोलती और छूनेमें नर्म होती है। उसमें दर्द और मूत्र-कृच्छ्रकीसी पीड़ा होती है। फल और कोष अथवा आँड इधर-उधर हिलते हैं।

अन्त्रवृद्धिके लक्षण।

वातकोपकारक आहार-विहार सेवन करनेसे, शीतल जलमें घुसकर नहानेसे, आये हुए मलमूत्र आदिके वेगको रोकनेसे, बिना हाजत हुए ज़बर्दस्ती पाखाना-पेशाब करनेकी कोशिश करनेसे, भारी बोझ ढोनेसे, बहुत ज़ियादा राह चलनेसे, टेढ़े-तिरछे होकर चलनेसे, बलवानके साथ लड़नेसे, कठिन धनुष आदि चढ़ानेसे अथवा ऐसे ही और भी वातकोपकारक आहार-विहार करनेसे "वायु" क्षुभित हो जाती है। क्षुभित वायु छोटी-छोटी आँतोंके प्रदेशको दूषित करके, उनको उनकी जगहसे नीचे ले जाती है; यानी वायु द्वारा छोटी आँतोंका कुछ अंश, नीचेकी तरफ, वंक्षण-सन्धिमें आता है; इसके बाद, संकुचित होकर, उस सन्धि-स्थलमें गाँठके जैसी सूजन उत्पन्न कर देता है। इसीको "अन्त्रवृद्धि" कहते हैं।

इसकी उपेक्षाका फल।

(लापरवाहीका नतीजा)

अगर इसका जल्दी ही इलाज नहीं किया जाता, तो यह अण्ड-कोषोंमें जाकर, पेटमें अफारा, शूल और मल-मूत्रादिके वेगको रोककर "अण्डवृद्धि" करती है; यानी अण्डकोष वर्द्धित, स्फीत, वेदना-युक्त और स्तम्भित हो जाते हैं। कोषको दबानेसे या कभी-कभी अपने-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आप ही वायु आवाज़ करती हुई ऊपरकी तरफ उठती है और फिर कोषोंमें आकर उन्हें फुला देती है; अथवा दबानेसे वृद्धि पेटमें घुस जाती है और छोड़ देनेसे फिर फोतोंको फुलाकर उनमें रह जाती है। अन्त्रवृद्धि या आँत उतर आना असाध्य है।

अन्त्रवृद्धिके असाध्य लक्षण ।

जिसमें छोटी आँतोंके कुछ हिस्से—कफ-वातके सञ्चयसे—फोतोंमें आजायँ और जिसमें वातकी वृद्धिके लक्षण मिलते हों, वह अन्त्रवृद्धि असाध्य है।

एक शिरा और वातशिराके लक्षण ।

अमावस्या या पूर्णमासी अथवा दशमी और एकादशी-तिथियोंमें कँपकँपी लगकर और जोड़ों अथवा सारे शरीरमें दर्द होकर बड़े ज़ोरसे बुख़ार आता है और उसके साथ फोते बढ़ जाते हैं। अगर एक कोष या एक तरफ़का फोता बढ़ता है, तो "एक शिरा" कहते हैं और अगर दोनों कोष या फोते बढ़ते हैं तो "वातशिरा" कहते हैं। यह रोग दो तीन दिनमें आप-से-आप आराम हो जाता है।

अण्डवृद्धि-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) सब तरहके वृद्धि रोग या फोते बढ़नेके रोगोंकी रोग उठते ही चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि देर करनेसे रोग कष्टसाध्य हो जाता है।

(२) अण्डवृद्धिवाले रोगीको मल-मूत्रादि वेग रोकना, हाथी, घोड़े आदिकी सवारी, दण्ड-कसरत-कुश्ती, मिहनत, स्त्री-प्रसंग, राह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चलना, भारी पदार्थ खाना, उपवास करना और ज़ियादा खाना—इनसे परहेज़ करना चाहिये। इनके सिवा नये चावलोंका भात, दही, उड़द, पका केला, अधिक मीठा शीतल जल, दिनमें सोना, स्नान, अजीर्ण रहने पर भोजन और तेलकी मालिश आदि भी अण्डवृद्धि-वालेको हानिकारक हैं, अतः इनसे भी बचना ज़रूरी है।

अण्डवृद्धि रोगीको करेला, ककोड़ा, ज़मीकन्द, आलू, मेथी, लहसन, प्याज़, जौ, गेहूँ, मूँग, अरहर, दूध, घी और तेल आदि पथ्य हैं। इस रोगीको गरम किया हुआ पानी शीतल करके पीना चाहिये और उसी जलसे स्नान करना चाहिये। इस रोगमें लङ्गोट हर समय बाँधे रहना चाहिये। दिनके समय बढ़िया महीन पुराने चावलोंका भात, मूँग, मसूर, चना और अरहरकी दाल, बैंगन, आलू, परवल, गाजर, करेला, अदरख, लहसन और प्याज़ आदिकी तरकारी थोड़ी-थोड़ी खानी चाहिये। इस रोगमें सब तरहके कड़वे और दस्तावर पदार्थ पथ्य होते हैं। रातके समय रोटी या पूरी और ऊपरकी तरकारियोंमेंसे कोई तरकारी खानी चाहिये। थोड़ा दूध भी रोगी पी सकता है।

(३) सभी तरहके अण्डवृद्धि रोगोंमें गरम दूधमें "रैंडीका तेल" मिलाकर पीना लाभदायक है। पावभर गरम दूधमें दो तोला "रैंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे १ महीनेमें अवश्य लाभ होता है। अतः इस रोगमें "रैंडीके तेल"को अवश्य काममें लाना चाहिये।

(४) मूत्रज अण्डवृद्धि रोगमें चीर-फाड़ कराकर पानी निकलवानेसे अच्छा लाभ होता है। इस रोगका उपाय ही जल निकलवाना है।

(५) अन्त्रवृद्धि या आँत उतरनेके रोगमें जब तक आँतें फोतों तक नहीं उतरतीं, तभी तक चिकित्सासे लाभ हो सकता है। इस रोगका ज़ोर होनेपर "ट्रस" नामक यन्त्र लगाना उपकारी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अण्डवृद्धिकी चिकित्सा ।

वातवृद्धि नाशक नुसखे ।

(१) पाव-भर गरम दूधमें दो तोले "रैंडीका तेल" मिलाकर एक महीने तक पीनेसे अवश्य वातवृद्धि आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—पित्तज और कफज अण्डवृद्धि रोगमें दशमूलके काढ़ेमें "रैंडीका तेल" मिलाकर पीना चाहिये।

(२) शुद्ध गूगल ६ माशे, अण्डीका तेल १ तोले और गोमूत्र आधा पाव—इन तीनोंको मिलाकर, लगातार कुछ दिन पीनेसे बहुत पुरानी वातज अण्डवृद्धि भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) अन्त्रवृद्धि रोगमें अगर अग्नि दीप्त हो, तो वस्तिकर्म प्रयोग करना चाहिये तथा "नारायण तैल"को पीने, मालिश करने और गुदामें पिचकारी लगानेके काममें लेना चाहिये।

नोट—वातवृद्धिमें नारायण तैलकी मालिश ही करनेसे खूब फायदा होता है। अनेक बार परीक्षा कर चुके हैं।

पित्तज वृद्धि नाशक नुसखे ।

(४) जौंकें लगवाकर खून निकलवा देनेसे पित्त-सम्बन्धी वृद्धि नष्ट हो जाती है।

(५) लाल चन्दन, मुलेठी, कमल, खस और नीले कमल—इनको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तकी वृद्धिकी सूजन, दाह और पीड़ा—ये सब शिकायतें रफा हो जाती हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) पंचक्षीरी वृक्षोंकी जलमें पिसी हुई लुगदीको घीमें मिलाकर लेप करनेसे और इन्हीं पंचक्षीरी वृक्षोंकी छालोंको पानीमें औटाकर और शीतल करके उस काथको सींचने या ढालनेसे पित्तकी वृद्धि और उसकी जलन, पीड़ा और सूजन शान्त हो जाती है।

नोट—बड़, पीपल, गूलर, वेत और पाखर—यही "पंचक्षीरी वृक्ष" हैं। इनकी छालोंको पीसकर और घीमें मिलाकर लगाने और इन्हीं छालोंका शीत-कषाय यानी "हिम" बनाकर तरड़ा देनेसे "पित्तकी वृद्धि" मय दाह, जलन, सूजन और पीड़ाके आराम हो जाती है। हमारी रायमें, औटाये हुए काढ़ेकी अपेक्षा भिगोकर बिना औटाये हुए बनाया शीतकषाय अच्छा है। कितनी ही बार परीक्षा की है; पर कई मौकोंपर पित्तकी वृद्धिमें औटाकर शीतल किये हुए काढ़ेके तरड़े देना ही हितकर होता है। यह बात रोगकी अवस्था और वैद्यकी समझपर निर्भर है।

विशेष सूचना—कोई-कोई बड़, पीपर, गूलर, वेलिया पीपर और पारिस पीपल—इन पाँचोंको क्षीर वृक्ष मानते हैं और कोई पारिस पीपलके स्थानमें सिरसकी छाल और कोई वेतकी छाल लेते हैं।

कफज वृद्धि नाशक नुसखे।

(७) देवदारुके काढ़ेको "गोमूत्रके साथ" पीनेसे कफकी वृद्धि शान्त होती है।

(८) त्रिफलेके काढ़ेमें "गोमूत्र" मिलाकर, सवेरे ही पीने और पथ्य पालन करनेसे कफवातसे पैदा हुई अण्डकोषोंकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—कफकी वृद्धिमें गोमूत्रमें पिसी हुई गरम औषधियोंका लेप करना चाहिये। कटु, गरम और तीक्ष्ण औषधियोंके लेप, रूखी दवाओंके द्वारा स्वेद, परिषेक और उपनाह कर्म ये सब उष्ण या गरम उपचार कफकी वृद्धिमें करने चाहियें। मतलब यह है, कि कफकी अण्डवृद्धिमें गरम लेप और गरम तरड़े हितकारी होते हैं। अगर कोई दवा बाँधनी होती है, तो वह भी गरम ही बाँधी जाती है। इसके विपरीत पित्तकी वृद्धिमें शीतल लेप आदि किये जाते हैं।

(९) बच और सरसोंको समान-समान लेकर, पानीमें पीसकर और गरम करके लेप करनेसे अण्डकोषोंकी कफकी सूजन शान्त हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) सहँजनेकी छालको घीमें घिसकर और गरम करके लेप करनेसे अण्डकोषोंकी कफ-वातकी सूजन नाश हो जाती है।

(११) धूप, अगर, कूट, देवदारु और सोंठ—ये समान-समान लेकर, गोमूत्र और काँजीमें पीसकर लेप करनेसे कफ-वातकी वृद्धि या फोतोंकी सूजन आराम हो जाती है।

(१२) हरड़को गोमूत्रमें पकाकर और फिर तेलमें भूनकर एवं सैंधानोन मिलाकर, हर सवेरे, खानेसे कफवातकी अण्डवृद्धि या कफ-वातके और रोग नाश हो जाते हैं।

(१३) त्रिकुटा और त्रिफलाके काढ़ेमें दो माशे "जवाखार" और दो माशे "सैंधानोन" मिलाकर पीनेसे कफज और मेदज अथवा कफ-वातज अण्डवृद्धि आराम हो जाती है। यह इस रोगमें श्रेष्ठ विरेचन है। इस काढ़ेसे दस्त होकर रोग आराम हो जाता है।

रुधिरकी वृद्धि नाशक नुसख़े।

(१४) खाँड और शहद मिलाकर विरेचन औषधि पीनेसे रुधिरकी अण्डवृद्धि शान्त हो जाती है; पर बारम्बार जौंकें लगवाकर ख़ून निकलवाना भी ज़रूरी है।

नोट—रुधिरकी अण्डवृद्धि कच्ची हो चाहे पक्की, उसपर शीतल लेप करना चाहिये, जौंकें लगवाकर बारम्बार ख़ून निकलवाना चाहिये और पित्तज अण्ड-वृद्धिका जो इलाज लिख आये हैं वही सब इसमें करना चाहिये। रक्तपित्तज अण्डवृद्धिमें सम्पूर्ण दाह-रहित चिकित्सा करनी चाहिये। इस बातका ख़ूब ध्यान रखना चाहिये कि, पकाव न हो।

मेदज अण्डवृद्धि नाशक नुसख़े।

(१५) मेदज अण्डवृद्धिके अण्डकोषोंको स्वेदित करके यानी सेक वग़ैरः करके "सुरसादि गण"की दवाओंको एकत्र पीसकर उनका लेप करना चाहिये; अथवा "शिरोविरेचन" औषधियोंको गोमूत्रमें पीसकर सुहाता-सुहाता लेप करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—तुलसी, कसौंदी, वनतुलसी, सफेद वनतुलसी, भूतृण, निर्गुण्डी, काली तुलसी, मदुआ, कुलाहल-भुई कदम, रास्ना, खिरेंटी, गूमा, कालमाल, बायबिड़ङ्ग, मकोय, काली मिर्च, मूसाकानी और सुपर्णी—सूर्यफूल—इन सब औषधियोंके समुदायको "सुरसादिगण" कहते हैं।

लता फिटकरी, नकछिकनी, काली मिर्च, पीपर, बायबिड़ङ्ग, सहँजनेके बीज, सरसों, श्वेत अपराजिता, अपामार्गके बीज और नील अपराजिता—ये नस्य-क्रियाकी औषधियाँ हैं।

इन "शिरोविरेचनीय" औषधियोंको गोमूत्रमें मिलाकर और ज़रा गरम करके सेक करनेसे मेदज और मूत्रज अण्डवृद्धिमें लाभ होता है। इन्हींको औटाकर बफारा भी दे सकते हैं।

मूत्रज अण्डवृद्धि नाशक नुसखे।

(१६) मूत्रज अण्डवृद्धिमें, पहले बफारा देकर कपड़ेकी पट्टी खूब बाँध देनी चाहिये। यदि अण्डवृद्धि गोली तक न पहुँची हो, तो इसपर वही उपचार करने चाहिये, जो वातज "अण्डवृद्धि"में लिख आये हैं।

सब तरहकी अण्डवृद्धि नाशक नुसखे।

(१७) खिरेंटीको सिलपर पीसकर उसके साथ "दूध" पकाओ। फिर इस दूधमें "रैंडीका तेल" १ तोले मिलाकर पीओ। इससे आध्मान—पेट फूलना और शूलसमेत अन्त्रवृद्धि आराम हो जाती है।

(१८) रास्ना, मुलेठी, गिलोय, अरण्डकी जड़, खिरेंटी और गोखरू—इनके काढ़ेमें एक तोले "रैंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे अन्त्रवृद्धि रोग नाश हो जाता है। आँत उतरना बन्द करनेको यह नुसखा उत्तम है। परीक्षित है।

(१९) सोंठ, अरण्डीके फल, तिल और जौ—इनको काँजीमें पीसकर, गरम लेप करनेसे अण्डवृद्धि नाश हो जाती है।

(२०) इन्द्रायणकी जड़का चार माशे चूर्ण "आध पाव दूधमें" पीस-छानकर और "एक तोले रैंडीका तेल" मिलाकर, सात दिन तक,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीनेसे अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाता है। यह नुसख़ा निस्सन्देह उत्तम है, पर सबको सात ही दिनमें आराम नहीं हो जाता; हाँ, आराम ज़रूर होता है। परीक्षित है।

(२१) रास्ना, मुलेठी, गिलोय, अरण्डकी जड़, कड़वे पटोलपत्र, रेणुका, खिरेंटी और अड़ूसा—इनके काढ़ेमें १ तोले "रैंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे सब तरहके अण्डवृद्धि रोग शान्त हो जाते हैं। इसका नाम "रास्नादि क्वाथ" है।

(२२) रास्ना, मुलेठी, गिलोय, अरण्डकी जड़, खिरेंटी, अमलताशका गूदा, गोखरू, कड़वे परवलके पत्ते और अड़ूसा—इनका काढ़ा बनाकर और छानकर उसमें एक तोले "रैंडीका तेल" मिलाकर पीनेसे सब तरहके अण्डवृद्धि रोग नाश हो जाते हैं। इसका भी नाम "रास्नादि क्वाथ" है।

नोट—इस काढ़े और ऊपरके काढ़ेमें केवल दो चीज़ोंका फ़र्क़ है। इसमें "अमलताशका गूदा और गोखरू" ये दो अधिक हैं और उसमें "रेणुका" है; बाक़ी सब समान हैं। नं० २१ से २२ अच्छा है और परीक्षित है।

(२३) बच और सरसों पानीमें पीसकर लेप करनेसे अथवा सहँजनेकी छाल और सरसों पानीमें पीसकर लेप करनेसे सब तरहकी अण्डवृद्धिकी सूजन शान्त हो जाती है।

कुरण्ड रोगके लक्षण।

अभिष्यन्दी, भारी और खट्टे पदार्थ खानेसे वातादि दोष कुपित होकर वंक्षण-सन्धियोंमें गाँठके समान सूजन पैदा कर देते हैं, उसको "कुरण्ड रोग" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—कुरण्ड और बद या बाघी एक ही जगह होते हैं। भेद इतना ही है कि, कुरण्डमें दर्द या पीड़ा नहीं होती, पर बदमें पीड़ा होती है।

(१) भारंगीकी जड़ पानीमें पीसकर लेप करनेसे कुरण्ड, गण्डमाला और अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाते हैं।

(२) शम्बुक नामक शंखमें "गायका घी" भरकर सात दिन तक धूपमें रखो। फिर इसमें "सैंधानोन" घीसे चौथाई मिला-मिलाकर कुरण्डपर लगाओ। इससे कुरण्ड तथा फोतेकी सूजन आराम होजाती है।

(३) सैंधानोन और घी ताम्बेके बासनमें रखकर धूपमें मथो। इसके मथनेसे जो मैल निकले, उसे दिन-रातमें कई बार कुरण्डपर लगाओ; इससे कुरण्ड या गिल्टियाँ आराम हो जाती हैं।

(४) लजवन्तीकी जड़ और गीधकी विष्ठा—दोनोंको पीसकर और गरम करके लेप करनेसे कुरण्ड या गिल्टी आराम हो जाती है।

(५) पारेकी भस्मको "तेल और सैंधेनोन"में मिलाकर फोतोंपर लेप करनेसे ताड़फज़के समान भी अण्डवृद्धि आराम हो जाती है।

नोट—पारेकी भस्मके बजाय "रससिन्दूर" लेना चाहिये।

अण्डवृद्धि नाशक उत्तमोत्तम योग।

वृद्धिबाधिका बटिका।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, बङ्गभस्म, ताम्बा-भस्म, काँसी भस्म, शुद्ध हरताल भस्म, शुद्ध तूतिया, शंख-भस्म, कौड़ीकी भस्म, सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, चव्य, बायबिड़ङ्ग, विधाराके बीज, कचूर, पीपरामूल, पाढ़, गन्धपलाशी, बच, इलायचीके बीज, देवदारु और पाँचों नोन,—इनको बराबर-बराबर लेकर, जो पीसने-छानने योग्य हों उन्हें पीस-छान लो। फिर सबको मिलाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और खरलमें डालकर "हरड़के काढ़ेके साथ" खरल करो और एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक गोली नित्य पानीके साथ निगल जानेसे अंत्र सम्बन्धी असाध्य रोग भी तत्काल नाश हो जाते हैं। मतलब यह कि, ये गोलियाँ अण्डवृद्धि रोगपर बहुत ही उत्तम हैं। परीक्षित हैं।

नोट—हरड़ भिगोये पानीके साथ निगलनेसे ये गोलियाँ, केवल पानीकी अपेक्षा जल्दी लाभ दिखाती हैं। सैंधानोन, संचरनोन, बिडनोन, समन्दर नोन और कचिया नोन—ये पाँच नोन हैं।

अण्डवृद्धि नाशक महौषधि।

शुद्ध पारा २ माशे, शुद्ध गन्धक २ माशे, त्रिफला ३ माशे, चीतेकी जड़ ४ माशे और शुद्ध गूगल ५ माशे—इनमेंसे पहले "पारे और गन्धक"को खरल करके कज्जली कर लो। त्रिफले और चीतेको पीसकर छान लो। फिर गूगल समेत सबको खरलमें डालकर रैंडीका तेल दे-देकर खूब घोटो। घुट जानेपर, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंसे अंत्रवृद्धिमें निश्चय ही बहुत लाभ होता है। यह इस रोगकी परमोत्तम दवा है।

अपने बलाबल अनुसार एक या आधी अथवा दो गोली "अदरखके ६ माशे स्वरस" में मिलाकर चाट लो और ऊपरसे "सोंठका चूर्ण मिला हुआ अरण्डीकी जड़का काढ़ा" पीलो। पीठपर "रैंडीका तेल या नारायण तैल" खूब मलवाओ। इस दवासे दस्त होनेपर, घी मिली गरमागर्म मूँग और पुराने चावलोंकी खिचड़ी खाओ। परीक्षित है।

सैंधवाद्य घृत।

घौंघेके भीतर ऐला-मैला निकालकर, उसके भीतर "दो तोले गायका घी और ६ माशे सैंधानोन" पीसकर भर दो और सात दिन तक धूपमें रखा रहने दो; फिर काममें लो। इस घीकी मालिश करनेसे अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाता है। इतना ही नहीं, इस घीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगानेसे कुरण्डरोग यानी वंक्षण-सन्धियोंमें होनेवाली गाँठ या बद भी आराम हो जाती है।

नोट—भारंगीकी जड़को पानीमें पीसकर लेप करनेसे कुरण्ड, बद, गण्डमाला, गिल्टी और अण्डवृद्धि ये सब आराम हो जाते हैं।

शतपुष्पाद्य घृत।

सौंफ, गिलोय, देवदारु, लाल चन्दन, हल्दी, दारुहल्दी, सफेद जीरा, काला जीरा, बच, नागकेशर, त्रिफला, शुद्ध गूगल, दालचीनी, बालछड़, कूट, तेजपात, इलायची, रास्ना, काकड़ासिंगी, चीता, बायबिड़ङ्ग, असगन्ध, भूरिछरीला, कुटकी, सैंधानोन, तगर, कुड़ेकी छाल और अतीस—इन अट्ठाईस दवाओंको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

अब गायका घी चार सेर, अड़ूसेका काढ़ा चार सेर, अरण्डकी जड़का काढ़ा चार सेर, गोरखमुण्डीका काढ़ा चार सेर, नीमकी छालका काढ़ा चार सेर, कटेरीका रस या काढ़ा चार सेर और गायका दूध चार सेर,—सबको एक क़लईदार कढ़ाहीमें डालकर और ऊपरकी लुगदी बीचमें रखकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब पकते-पकते घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

इस घीके ६ माशेसे २ तोले तक खानेसे अंत्रवृद्धि, वातवृद्धि, पित्तवृद्धि, मेदवृद्धि, मूत्रवृद्धि, श्लीपद या फीलपाँव, यकृत और तिल्ली रोग आराम हो जाते हैं। "बंगसेन"।

गन्धर्वहस्त तैल।

रैंडीकी जड़ ५ सेर, सोंठ ४ सेर और जौ ४ सेर—इनको कूटकर ६४ सेर जलमें औटाओ; जब सोलह सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

फिर १६ सेर काढ़ा, १६ सेर दूध, रैंडीका तेल १ सेर, अरण्डकी जड़का कल्क (पिसी हुई लुगदी) १६ तोले और अदरखका कल्क

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१२ तोले—इन सबको मिलाकर पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस तेलकी मात्रा २ तोलेकी है। अनुपान—गरम दूध है। पथ्य—दूध-भात है। इस तेलको "गरम दूधके साथ" पीनेसे अन्त्रवृद्धि रोग अवश्य नाश हो जाता है।

नारायण तैल।

इस तैलको पीने, पीठ और सारे शरीर तथा फोतोंपर मलने और पिचकारी द्वारा गुदामें पहुँचानेसे अंत्रवृद्धि या फोते बढ़नेका रोग आराम हो जाता है। बनानेकी विधि इसी भागके पृष्ठ २६८ में लिखी है।

अण्डवृद्धिपर हकीमी नुसख़े।

(१) जो दाहिने अण्डमें सूजन हो, तो बाँये हाथकी रग असलीमको दागो और यदि बाँये अण्डमें सूजन हो, तो दाहिने हाथकी रग असलीमको दागो। इस उपायसे फोतोंकी सूजन और पीड़ा नाश हो जाती है।

नोट—रग असलीम एक नस है। यह नस छिंगुन्या यानी सबसे छोटी उँगली और उसके पासकी उँगलीके बीचमें है। इस नसको जलते हुए रेशमी कपड़ेसे दागते हैं। जो लोग अक्सर दागनेका काम करते रहते हैं, दागनेकी विधि जानते हैं।

(२) ढाककी जड़की छाल छायामें सुखाकर और महीन पीस-छानकर, सात माशे रोज, ताज़ा पानीके साथ फाँकनेसे फोतोंकी सूजन और नाभिकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(३) कुन्दर, बायबिड़ङ्ग और पुरानी ईंट—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे अपने बलाबल अनुसार, ६ माशेसे १ तोले तक "घी" में मिलाकर खानेसे एक दिनमें ही फोते ठीक अपनी हालतपर आ जाते हैं; बशर्ते कि, पहले दिन ही वमन हो जावे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) बीस माशे हब्बुल्लास दस तोले पानीमें औटाओ; जब चौथाई यानी अढ़ाई तोले पानी रह जाय, उसमें तीन तोले चार माशे "घी" मिलाकर गुनगुना-गुनगुना खड़े होकर पीलो। इससे फोतेके रोगमें लाभ होता है।

(५) भुना हुआ सुहागा ६ रत्ती पीसकर और "पुराने गुड़"में मिलाकर तीन गोलियाँ बना लो। हर सवेरे एक गोली खाकर, ऊपरसे थोड़ा "घी" पीने और बिना नोनका मलीदा खानेसे अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाता है।

(६) ऊँटकी मैंगनी और थोड़ी-सी हल्दी पानीमें मिलाकर औटाओ; जब गाढ़ी हो जावे रख लो। इसको पीस-पीसकर और आगपर गरम करके फोतोंपर लगानेसे अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाता है।

(७) बकरीकी मैंगनी जलाकर राख कर लो। राखके बराबर "खुरासानी अजवायन" ले लो। दोनोंको पानीमें पीस और गुनगुनी करके फोतोंपर लगाओ। इससे फोतोंकी सूजन और खुजली आराम हो जाती है।

(८) अरण्डकी जड़ सिरकेमें पीसकर और गुनगुनी करके लगानेसे फोतोंकी सूजन आराम हो जाती है।

(९) अरहर पानीमें पीसकर गुनगुनी-गुनगुनी लगानेसे बालकोंके फोते बढ़नेके रोग आराम हो जाते हैं।

(१०) अगर फोतेमें गरमीसे सूजन हो, तो "भाँग"को पानीमें भिगो लो और उस पानीमें फोतोंको जितनी देर रख सको, रक्खो। इस तरह दो बार करनेसे लाभ होता है।

(११) अगर फोतोंमें गरमीसे सूजन हो, तो छिले हुए मसूर और अनारकी छाल बराबर-बराबर लेकर पानीमें पकाओ। जब गल जावें, पीसकर फोतोंपर लगा दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) अगर फोतोंमें सर्दीसे सूजन हो, तो रैंडीकी गरी पानीमें पीसकर गरम करो और नित्य २-३ बार फोतोंपर लगाओ। इससे फोतोंका बढ़ना आराम हो जावेगा।

(१३) अगर सर्दीसे सूजन हो, तो "माजूफल और असगन्ध" पानीमें पीसकर गरम करो और सुहाता-सुहाता लेप करो।

(१४) नरकचूर पानीमें पीसकर और गरम करके गुनगुना-गुनगुना लेप करनेसे सर्दीसे हुई फोतोंकी सूजन आराम हो जाती है।

(१५) अगर फोतोंमें चोट लग जावे, तो थोड़ी-सी "हल्दी" पीसकर और "अण्डेकी जर्दी" में मिलाकर आगपर गरम करो और निबाया-निबाया लेप लगाओ।

(१६) अगर फोते सख्त हो जावें, तो "सफेद जीरा और काली-मिर्च" पानीमें पीसकर आगपर पकाओ और लेप करो, सख्ती कम हो जायगी।

(१७) अगर फोतोंमें खुजली हो, तो "सिरसकी छाल" पानीमें पीसकर फोतोंपर लेप करो।

(१८) अगर फोतोंमें सूजन हो, तो "नाजबों" पानीमें पीसकर फोतोंपर लेप करो।

(१९) अगर फोतोंमें घाव हो जायँ, तो "कीकरकी छाल" जौकुट करके पानीमें औटाओ और उसीसे जख्मको धोया करो।

अगर संसारका असली रूप जानकर जगज्जालसे बचना चाहते हो, अगर जन्म-मरणके कष्टोंसे सदाको छुटकारा पाना चाहते हो, अनन्त काल तक अक्षय सुख भोगना चाहते हो, तो होश करो और "हमारा सचित्र वैराग्य शतक" (३८ चित्र १९१४ सफे) एवं हमारा "सचित्र हिन्दी भगवद्गीता" पढ़ो, समझो और मनन करो। मूल्य क्रमशः ५) और ३॥)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

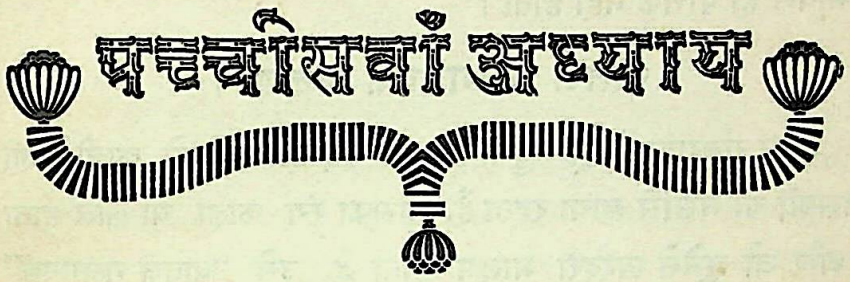

गलगण्ड-वर्णन ।

गलगण्डके लक्षण ।

मनुष्यके गले या ठोड़ीमें, बड़ी या छोटी, कड़ी और अचल, अण्डकोषके समान, जो सूजन लटकती है, उसे "गलगण्ड" कहते हैं। बोलचालकी ज़बानमें उसे "घैंघा या थाती" कहते हैं।

नोट—गलेमें ही नहीं—दाढ़ी, ठोड़ी और गर्दन इन तीनों ही स्थानोंमें "गलगण्ड" पैदा होता है। भोज कहता है—दाढ़ीमें अथवा ठोड़ीमें अथवा गर्दन या गलेमें जो बड़ी या छोटी अण्डकोषके समान सूजन लटकती है, उसे "गलगण्ड" कहते हैं। गलेमें सूजनके लटकनेकी बात कहना तो उपलक्षण मात्र कहना है।

सम्प्राप्ति ।

गलेमें दूषित हुए वात, कफ और मेद—गलेकी मन्या नाड़ियोंका आश्रय लेकर—अपने-अपने लक्षणोंवाले जो गोले पैदा करते हैं, उनको ही "गलगण्ड"—गलेके गोले कहते हैं। यह गलगण्ड रोग वात, कफ और मेदके भेदसे तीन तरहका होता है।

खुलासा—दूषित हुए वात, कफ और मेद—गलेके बीचमें आकर अनुक्रमसे, अपने-अपने लक्षणोंवाली सूजन करते हैं, उस सूजनको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ही "गलगण्ड" कहते हैं। ध्यान रखना चाहिये कि, यह रोग अपने स्वभावसे ही पैत्तिक नहीं होता।

वातज गलगण्डके लक्षण।

जिस गलगण्डमें सूई चुभानेका-सा दर्द होता है, जो काली-काली शिराओं या नसोंसे छाया रहता है, जिसका रंग काला या लाल होता है और जो छूनेसे खरदरा मालूम होता है, उसे "वातज गलगण्ड" कहते हैं। यह गलगण्ड बहुत दिनोंमें बढ़ता है, पकता नहीं है; किसी-किसी समय अपनी इच्छासे पक भी जाता है। इस गलगण्ड रोगीका मुँह नीरस रहता है एवं गला और तालू सूखा रहता है।

कफज गलगण्डके लक्षण।

जो गलगण्ड स्थिर या निश्चल होता है, जिस जगह पैदा होता है उसी जगहके रंगके समान रंगवाला होता है, जो भारी होता है, जिसमें थोड़ी-थोड़ी पीड़ा होती है, जिसमें खुजली बहुत चलती है, जो छूनेमें शीतल और बड़ा होता है, उसे "कफज गलगण्ड" कहते हैं। यह गलगण्ड बहुत दिनोंमें बढ़ता है, बहुत दिनोंमें ही किसी समय पक जाता है और पकनेके समयमें थोड़ी-थोड़ी वेदना करता है। इस गलगण्डवाले रोगीके मुँहका स्वाद चिकना और मीठा होता है, गले और तालूमें कफ भरा रहता है अथवा ये दोनों कफसे लिहसे-से रहते हैं।

मेदज गलगण्डके लक्षण।

जो गलगण्ड छूनेमें नर्म, पाण्डु वर्ण, बदबूदार और खुजलीयुक्त होता है, जिसमें पीड़ा नहीं होती, जो लौकी या तूम्बीकी तरह लटकता है, जो जड़में पतला और ऊपरसे मोटा होता है, जो शरीरके बढ़नेके साथ बढ़ता और शरीरके घटनेके साथ घटता है, उसे "मेद सम्बन्धी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गलगण्ड" कहते हैं। इस गलगण्डवालेका मुँह तेलकी तरह चिकना होता है तथा गलेसे हर समय घुरघुर-घुरघुर आवाज़ होती रहती है।

खुलासा—वातज गलगण्डका रंग काला, लाल या धूसर होता है। कफजका रंग अपने पैदा होनेकी जगहके रंगके जैसा होता है और मेदजका रंग पाण्डु या मटिया-सा होता है। वातज गलगण्डमें सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है, कफजमें कम पीड़ा होती है और मेदजमें पीड़ा होती ही नहीं। वातज गलगण्डमें खुजली नहीं चलती; पर कफज और मेदजमें खुजली चलती है। वातज गलगण्डपर काली-काली नसें छायी रहती हैं और वह रूखा होता है; कफज भारी और शीतल होता है; तथा मेदज बदबूदार, लौकीके समान लटकनेवाला, ऊपरसे मोटा और जड़मेंसे पतला होता है। वातज गलगण्ड पकता नहीं—कभी अपनी इच्छासे पक जाता है और देरमें बढ़ता है; कफज भी देरमें बढ़ता और किसी समय पक जाता है; पर मेदजमें यह खास बात होती है कि, वह शरीरके घटनेके साथ घटता और बढ़नेके साथ बढ़ता है। वातज गलगण्ड-रोगीका मुँह नीरस रहता है, उसका तालू और गला सूखता है। कफज गलगण्डवालेका मुँह मीठा और चिकना रहता है एवं तालू और गलेमें कफ भरा रहता है। मेदजवालेका मुँह तेलकी तरह चिकना रहता और गलेसे आवाज़ होती रहती है।

असाध्य गलगण्ड।

जो गलगण्ड-रोगी बड़ी तकलीफके साथ साँस लेता हो, जिसका सारा शरीर नरम हो गया हो, जिसे अरुचि और क्षीणता हो गई हो, जिसका गला बैठ गया हो तथा जिसके गलगण्डको पैदा हुए एक वर्ष बीत गया हो, ऐसे गलगण्डीका वैद्य इलाज न करे, क्योंकि ये असाध्य गलगण्डके लक्षण हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गलगण्ड-चिकित्सा।

नोट—गलगण्ड रोगमें कफ नाशक चिकित्सा करना ख़ास तौरसे ज़रूरी है। वातज गलगण्डमें वैद्य पहले कमलकी नाल या अन्य वातनाशक औषधियोंके पत्रोंकी पिण्डी बनाकर बाँधे या स्वेद देवे; कफज गलगण्डमें कफनाशक स्वेद दे और उपनाह कर्म करे तथा रोगीको स्वेदित करके विस्रावण करावे। मेदजमें पहले स्निग्ध करके फिर शिरावेध करावे और लेप आदि करे। गलगण्डमें वमन कराना और खून निकलवाना हितकारी है। इस रोगमें जौ, मूँग, कड़वे परवल तथा तीक्ष्ण और रूखे पदार्थ खाने चाहिये।

(१) समन्दरफल, सहँजनेके बीज और दशमूलकी समस्त औषधियोंको पीसकर सुहाता-सुहाता गरम लेप करनेसे वातज गलगण्ड आराम हो जाता है।

(२) देवदारु और इन्द्रायणको एकत्र पीसकर लेप करनेसे कफज गलगण्ड आराम हो जाता है।

नोट—कफज गलगण्डमें वमन, शिरोविरेचन और सब तरहका विरेचन भी हितकारी है।

(३) पीपर और थूहरका लेप करनेसे अथवा चूना, लोहेका मैल, दन्ती और रसौतका लेप करनेसे मेदज गलगण्ड नाश हो जाता है। अथवा सवेरे ही उठकर, सागौनके वृक्षके सारको "गोमूत्र"में पीसकर पीनेसे मेदज गलगण्ड आराम हो जाता है।

(४) सरसों, सहँजनेके बीज, सनके बीज, अलसी, जौ और मूलीके बीज—इनको बराबर-बराबर लेकर, खट्टे माठे या खट्टे दहीमें सिलपर पीसकर, गलगण्डपर लेप करनेसे नया गलगण्ड आराम हो जाता है; इतना हमने परीक्षा करके देखा है। पर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

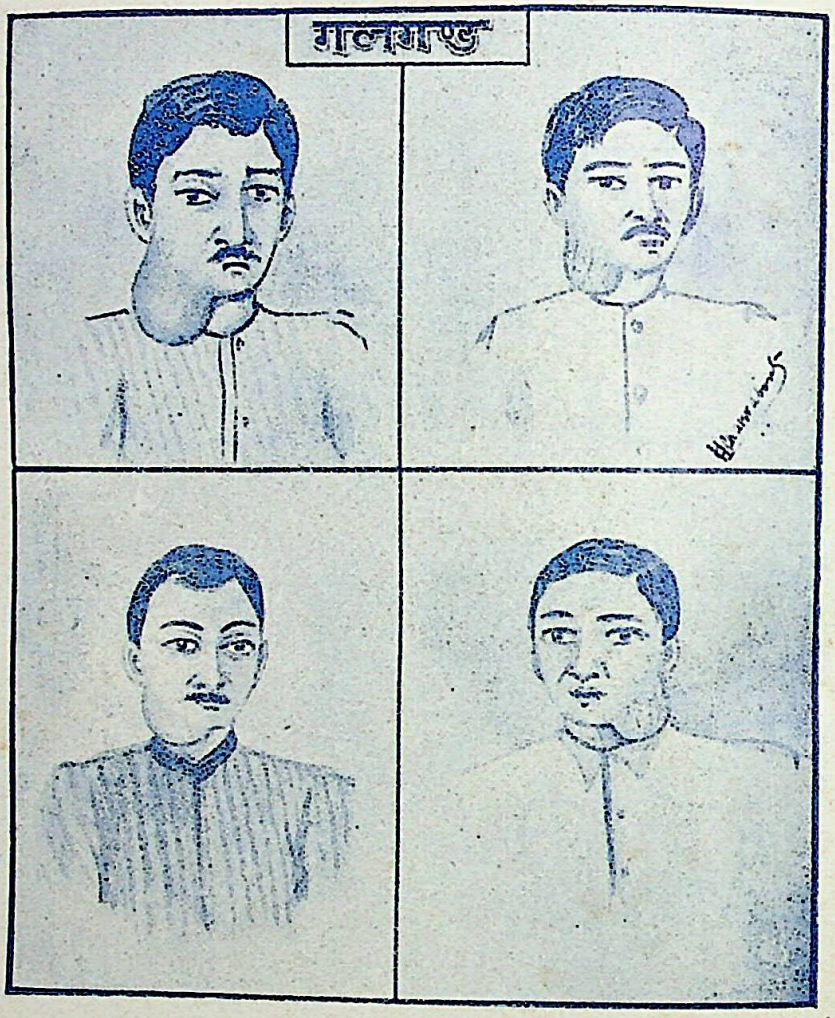

इस चित्रमें गलगण्डके चार रोगियोंके चित्र हैं। बाँए हाथकी ओरसे पहले चित्रमें मेदज गलगण्ड है, जो लौकीकी तरह लटक रहा है। दाहने हाथकी ओर दूसरेमें वातज गलगण्ड है, जिसमें काली-काली नसें दीख रही हैं। नीचेके भागमें, बाँये हाथकी ओरसे तीसरे चित्रमें कफज गलगण्ड है। यह गलगण्ड जड़में फैला हुआ और बड़ा है। दाहने हाथकी ओर चौथे चित्रमें भी वातज गलगण्ड ही दिखाया गया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"बंगसेन" में इस नुसख़ेसे सब तरहके गलगण्ड, ग्रन्थि और दारुण गण्डमालाका आराम होना लिखा है।

(५) पुन्नाग और जलकुम्भीकी भस्मको सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करनेसे पुराना गलगण्ड भी आराम हो जाता है।

(६) सूअरकी पूँछका अगला हिस्सा आगमें जला लो। फिर उसको "कड़वे तेल"में मिलाकर नास दो। इससे गलगण्ड निस्सन्देह आराम हो जाता है।

(७) हस्तिकर्ण पलाशकी जड़, चावलोंके पानीमें पीसकर लेप करनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

(८) छै माशे सफेद फूलवाली विष्णुक्रान्ताकी जड़को एक तोले "घी"में खूब पीसकर, सवेरे ही कुछ दिन पीनेसे गलगण्ड नाश हो जाता है।

नोट—अपराजिताको विष्णुक्रान्ता भी कहते हैं। इसको बोलचालमें नीली कोयल और सफेद कोयल कहते हैं। सफेद कोयलको जलमें पीसकर सवेरे ही पीने और घीके साथ भोजन करनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

(९) कड़वी तूम्बी या लौकीके पके फलमें जल या शराब भर कर सात दिन तक रक्खी रहने दो; इसके बाद इसे पीओ। इस उपायसे गलगण्ड फौरन ही नाश हो जाता है।

(१०) गिलोय, नीम, जटामासी, तुन, पीपर, खिरेंटी, गंगेरन और देवदाली—इनको एक-एक तोले बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर, सबको क़लईदार कढ़ाहीमें पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसमेंसे १ तोले तेल नित्य पीनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

(११) जलकुम्भी, सैंधानोन और पीपर बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे एक तोले चूर्ण पानीके साथ पीनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) एक तोले जलकुम्भीकी छालकी राख एक छटाँक "गोमूत्र" में सानकर पीने और कोदोंके भातका भोजन करनेसे गलगण्ड निश्चय ही आराम हो जाता है।

(१३) लाल अरण्डकी जड़को चावलोंके पानीमें पीसकर लेप करनेसे गलगण्ड शीघ्र ही आराम हो जाता है।

(१४) पुराने ककोड़ेके एक तोले स्वरसमें ३ माशे "कालानोन" और ४ माशे "सैंधानोन" मिलाकर नस्य लेनेसे भारी-से-भारी गलगण्ड भी नाश हो जाता है।

(१५) नीले फूलके घमिराको पानीमें औटाकर बफारा लेनेसे गलगण्ड फौरन नाश हो जाता है।

(१६) कायफलको महीन पीस-छानकर गलगण्डपर मलनेसे गलगण्ड शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(१७) गलगण्ड रोगमें पछने लगाकर, उसपर गण्डगोपाल नामक कीड़ेका लेप करनेसे गलगण्ड नष्ट हो जाता है। "भावप्रकाश"में लिखा है कि, इस नुसखेको अनेक आदमियोंने अनेक बार आज़माया है।

नोट—गण्डगोपाल या गण्डगुयालि एक कीड़ा होता है। यह आमके बग़ीचोंमें बहुत मिलता है।

(१८) वरनाकी जड़का काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे गलगण्ड आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१९) चावलोंके पानीमें "कचनारकी छाल" पीसकर और "सोंठका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे गलगण्ड और गण्डमाला रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२०) अमलताशकी जड़ चावलोंके पानीमें महीन पीसकर गलगण्ड और गण्डमालापर लेप करनेसे अवश्य आराम होता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गलगंड नाशक उत्तमोत्तम योग।

अमृतादि तैल।

गिलोय, नीमकी छाल, हिंस्रक वृक्ष, कुड़ेकी छाल, पीपल, बला, अतिबला और देवदारु—इनको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

फिर तिलका तेल चार सेर, पानी सोलह सेर और ऊपरकी लुगदीको पकाओ; तेल-मात्र रहनेपर छान लो। इसमेंसे छै माशे तेल नित्य पीनेसे गलगण्ड आराम हो जाता है। गलगण्डपर यह "अमृतादि तैल" प्रसिद्ध है।

तुम्बी तैल।

बायबिड़ङ्ग, जवाखार, सैंधानोन, बच, रास्ना, चीता, त्रिकुटा और हींग—इनको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। सरसोंका तेल चार सेर और पकी तितलौकीका रस सोलह सेर तैयार कर लो।

फिर तेल, रस और लुगदीको मिलाकर पकाओ। तेल-मात्र रहनेपर छान लो। इस तैलकी नस्य लेनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

हिंस्राद्य तैल।

जटामासी, बच, गिलोय, त्रिफला, चीता, देवदारु और पीपल—इनको बराबर-बराबर आध-आध पाव लेकर पानीके साथ पीस लो।

फिर चार सेर तिलका तेल, सोलह सेर भाँगरेका रस और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलको "शहद"में मिलाकर लेप करने और नस्य देनेसे गलगण्ड रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शाखोटाद्य तैल।

फूल प्रियंगू, मुलेठी, कूट, पीपल, चन्दन, नागरमोथा और नीमकी छाल—इनको आध-आध पाव लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर शाखोट यानी सिहोड़े या सहोरेके वृक्षकी छालका रस सोलह सेर निकाल लो। इसके बाद चार सेर तेल, रस और लुगदीको मिलाकर पकाओ; तेल-मात्र रहनेपर उतार लो। इस तैलसे अत्यन्त बढ़ा हुआ गलगण्ड भी नाश हो जाता है।

काञ्चनार गुग्गुल गुटिका।

कचनारके पेड़की छाल चालीस तोले, हरड़ ८ तोले, बहेड़ा ८ तोले, आमले ८ तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, कालीमिर्च ४ तोले, वरनाकी छाल ४ तोले, इलायची १ तोले, दालचीनी १ तोले और तेजपात १ तोले—इन सबको पीस-कूटकर छान लो। फिर जितना यह चूर्ण हो उतना ही "शुद्ध गूगल" पीस-कूटकर इसी चूर्णमें मिला दो और फिर कूटो; जब सब एकदिल हो जायँ, चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। यही "कचनार गूगल" है।

इन गोलियोंको सवेरे ही गोरखमुण्डीके काढ़े अथवा खैरसारके काढ़े अथवा हरड़के काढ़े या गरम पानीके साथ खानेसे गलगण्ड, घोर गण्डमाला, अपची, अर्बुद, गाँठ, व्रण, कोढ़ और भगन्दर रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—यह "कचनार गूगल" बहुत करके गण्डमालापर प्रसिद्ध है; पर इससे गलगण्डमें भी फायदा होता है, इसीसे हमने गलगण्डमें ही इसे लिख दिया है। गण्डमालाकी तो यह ख़ास दवा ही है। यह नुसख़ा "शार्ङ्गधर"का है। "भावप्रकाश"के नुसख़ेसे इस नुसख़ेमें वरना, इलायची, तेजपात और दालचीनी कुछ कम लिखे हैं और सब समान हैं। "भावप्रकाश"का नुसख़ा हम गण्डमालामें लिखेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

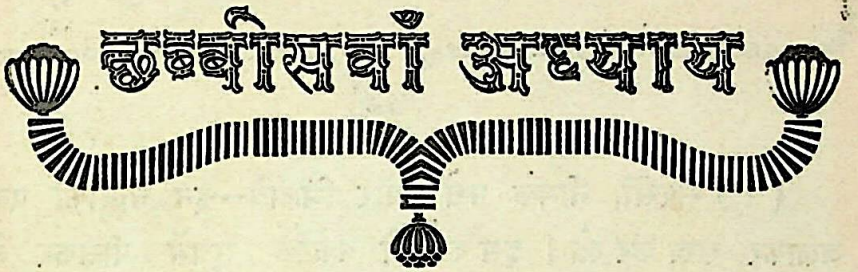

गण्डमाला और अपची-वर्णन।

गण्डमाला और अपचीके लक्षण।

कोखमें, कन्धोंमें, गर्दनमें, नाड़के पीछे मन्या नाड़ीमें, गलेमें, बग़लमें, पेड़ू और जाँघोंकी सन्धियों यानी वंक्षणोंमें—मेद और कफसे—छोटे-बड़े बेर या आमलेकी समान बहुत-सी गण्ड या गाँठें निकल आती हैं, उन्हींको "गण्डमाला" कहते हैं।

इस गण्डमालाका ही एक भेद "अपची" है। उपरोक्त गण्डमालाकी गाँठोंमेंसे कितनी ही पककर स्रवने लगती हैं, कितनी ही बैठ जाती हैं और कितनी ही नयी पैदा हो जाती हैं—इन गण्डोंकी ऐसी स्थिति बहुत दिनों तक बनी रहती है, इसीको "अपची" कहते हैं। मतलब यह है कि, गण्डमाला और अपची एक ही रोग है; स्थितिभेदसे दो नाम पड़ गये हैं।

साध्यासाध्य लक्षण।

बिना उपद्रवकी अपची साध्य है; किन्तु जो पीनस, पसलीका दर्द, खाँसी, ज्वर और वमनयुक्त हो वह असाध्य है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गण्डमाला और अपची नाशक नुसख़े।

(१) सरसों, नीमके पत्ते और भिलावे—इन तीनोंको एकत्र जलाकर राख कर लो। इस राखको बकरेके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे अपची आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) पीपरकी छाल, जलबेंत और गायका दाँत,—इनको एकत्र जलाकर राख कर लो। इस राखको "सूअरकी चरबीमें मिलाकर" लेप करनेसे अपचीके व्रण आराम हो जाते हैं।

(३) अलम्बुषा (लज्जावन्ती) के पत्तोंका रस दो-दो तोले नित्य पीनेसे अपची, गण्डमाला, गलगण्ड और कामला रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) चन्दन, बच, हरड़, पीपलकी लाख और कुटकी—इनके काढ़ेके साथ पकाया हुआ तेल पीनेसे अपची रोग समूल नष्ट हो जाता है।

(५) वरनाकी जड़का काढ़ा "ना-बराबर शहद और घी" मिलाकर पीनेसे बहुत पुरानी गण्डमाला और अपची आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(६) दो तोले कचनारकी छालको चावलोंके जलमें पीसकर, दो तोले या चार तोलेकी मात्रामें पीनेसे गण्डमाला नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(७) आकका दूध, गुड़हरके फूल, तेल और क्षारोदक—इनको समान भाग लेकर और मिलाकर सात दिन तक गण्डमालापर लेप करनेसे गण्डमाला आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

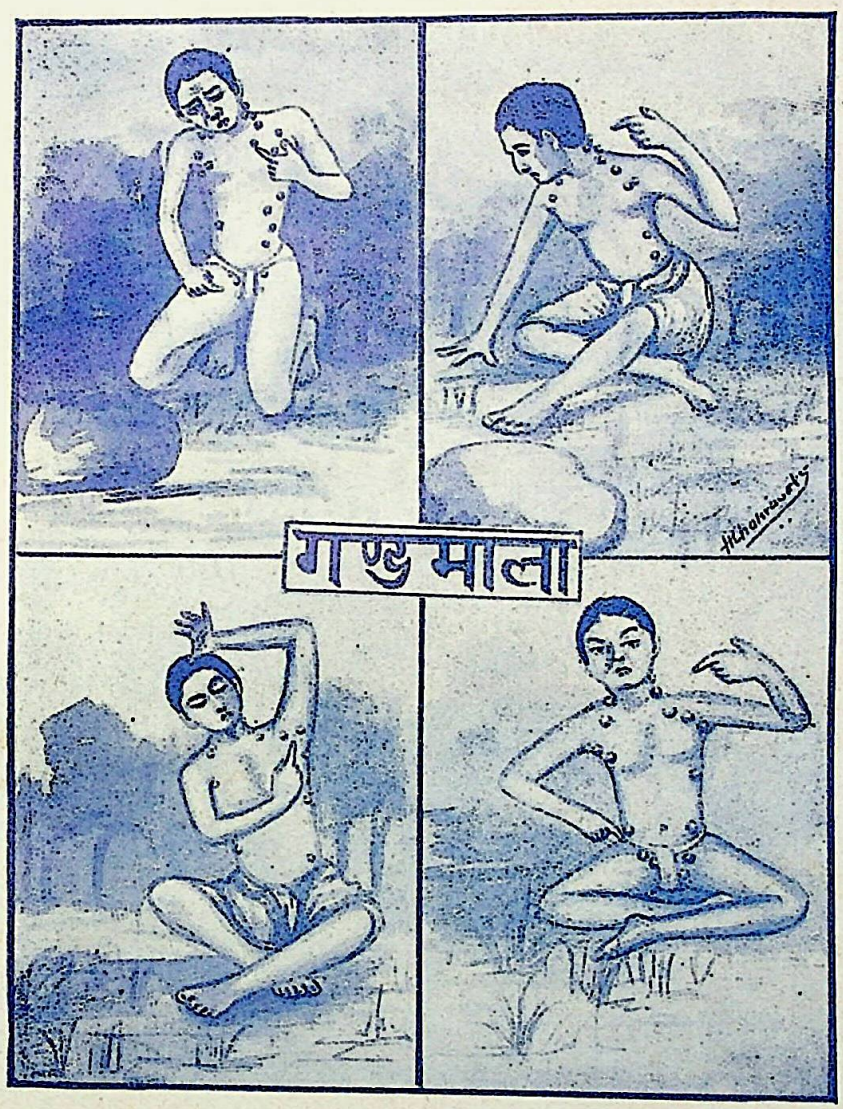

बाँये हाथकी तरफ़से पहले चित्रमें रोगी अपनी छाती, गले, वंक्षणकी ग्रन्थियोंको दिखा रहा है। दूसरेमें रोगी अपनी गर्दनके पीछेकी ग्रन्थियोंको दिखा रहा है। नीचे उतरकर, बाँयी तरफ़के तीसरे चित्रमें रोगी अपनी काँख या बग़लकी ग्रन्थियोंको दिखा रहा है और चौथे चित्रमें रोगी अपने दोनों हाथोंकी उँगलियोंसे अपने गले और वंक्षणकी ग्रन्थियोंको दिखा रहा है। इस चित्रसे विद्यार्थी समझ सकेगा कि, गण्डमाला कहाँ-कहाँ होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) छछूंदरका तेल लगानेसे गण्डमाला नष्ट हो जाती है। तिलका तेल १ सेर, छछूंदरका मांस पाव भर, पानी ४ सेर और छछूंदरके मांसका काढ़ा १ सेर—इन सबको मिलाकर तेल पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलकी मालिशसे गण्डमाला आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—एक सेर छछूंदरका मांस चार सेर पानीमें पकाओ। जब एक सेर पानी रह जाय, छान लो। यही छछूंदरके मांसका काढ़ा है।

(९) कचनारकी छालके काढ़ेमें "सोंठ" मिलाकर पीनेसे गण्डमाला फौरन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—पाव भर पानीमें २ तोले कचनारकी छाल पकाओ; जब आधी छटाँक पानी रह जाय, छानकर उसमें ४ माशे "सोंठका चूर्ण" मिला दो।

(१०) वरनाकी जड़के काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—ठीक ऊपरकी यानी नं० ९ की विधिसे काढ़ा बना-छानकर, शीतल होनेपर उसमें एक तोले "शहद" मिलाकर पीलो।

(११) सफेद अपराजिताकी जड़को "गोमूत्र" में पीसकर लेप करनेसे पुरानी गण्डमाला भी आराम हो जाती है।

(१२) सहँजनेकी छाल और देवदारु एकत्र काँजीमें पीसकर लेप करनेसे अपची नाश हो जाती है।

(१३) सरसों, सहँजनेके बीज, सनके बीज, अलसी, जौ और मूलीके बीज—इनको खट्टे माठेमें पीसकर लेप करनेसे गलगण्ड, ग्रन्थि और गण्डमाला आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(१४) हाथके पहुँचेके ऊपर और उँगलियोंके अन्तरितमें नश्तरसे तीन रेखा खींच देनेसे अपची नष्ट हो जाती है।

(१५) अमलताशकी जड़को चावलोंके पानीमें पीसकर लेप करने और नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) निर्गुण्डीकी जड़को पानीमें पीसकर नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(१७) कड़वी तूम्बीके स्वरसकी नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(१८) नीमके तेलकी नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(१९) कड़वी तूम्बीके स्वरसमें "पीपरका चूर्ण" मिलाकर नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(२०) पीपरका ६ माशे चूर्ण ९ माशे "शहद"में मिलाकर चाटनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है।

(२१) दो तोले लजवन्तीका स्वरस पीनेसे गण्डमाला, गलगण्ड, अण्डवृद्धि और गाँठ—ये सब आराम हो जाते हैं।

(२२) दो तोले जंगली कपासकी जड़ चावलोंके पानीमें पीसकर पूरी बनाओ। इन पूरियोंके खानेसे अपची नाश हो जाती है।

(२३) सहँजनेकी छाल और देवदारु—बराबर-बराबर लेकर काँजीमें पीस और गरम करके लेप करनेसे घोर अपची भी नाश हो जाती है।

(२४) कमलकी जड़ या चिरचिरेकी जड़को विधि-पूर्व्वक न्योतकर और "पुष्य नक्षत्र"में लाकर, रेशमके धागेमें लपेटकर, गलेमें बाँधनेसे अपची नाश हो जाती है।

गण्डमाला नाशक उत्तमोत्तम योग।

चन्दनाद्य तैल।

लाल चन्दन, हरड़, लाख, बच और कुटकी—इनको समान-समान लेकर, सिलपर, पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इसमेंसे ६ माशे तैल नित्य पीनेसे अपची रोग नाश हो जाता है।

नोट—लुगदी एक सेर हो, तो तिलीका तेल चार सेर और पानी सोलह सेर लेकर तेल पकाओ। इसी हिसाबसे कम भी पका सकते हो।

गुञ्जाद्य तैल।

घुंघची या चिरमिटीकी जड़ और फलोंके काढ़ेमें "सरसोंका तेल" पकाकर, गण्डमालापर मालिश करने और नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—सफेद घुंघचीकी जड़ और फल एक सेर लेकर आठ सेर पानीमें औटाओ; जब दो सेर पानी रह जाय, छान लो। इस काढ़े और आध सेर तेलको मिलाकर तेल पका लो; जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। अथवा सफेद घुंघचीकी जड़ और फल पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो।

दूसरा गुञ्जाद्य तैल।

सफेद घुंघचीकी जड़, कनेरकी जड़, विधारेके बीज, आकका दूध और सरसों—इनको छटाँक-छटाँक भर लो। सरसोंका तेल सवा सेर और गोमूत्र पाँच सेर लो। सबको मिलाकर तेल पका लो; जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस पके हुए तेलको, फिर इन्हीं सब चीज़ोंके साथ, क्रमशः, दस दफा पकाओ; तब उत्तम "गुञ्जाद्य तैल" तैयार होगा।

इस तैलकी मालिश करनेसे दारुण गण्डमाला, अपची और नाड़ी व्रण आदि नष्ट हो जाते हैं।

निर्गुण्डी तैल।

निर्गुण्डीका रस ४ सेर, कलिहारीकी जड़का कल्क पाव भर और तिलीका तेल एक सेर सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलकी नस्य लेनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चक्रमर्दादि सिन्दूर तैल।

चकवड़की जड़ आध सेर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। कुकुर भाँगरेका रस १६ सेर तैयार कर लो। ४ सेर सरसोंका तेल भी पास रख लो।

अब तेल, रस और लुगदीको बहुत ही मन्दी आगसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उसमें आध सेर "सिन्दूर" मिलाकर नीचे उतार लो। इस तैलकी मालिश करनेसे गण्डमाला नाश हो जाती है। गण्डमालापर यह तैल उत्तम है। परीक्षित है।

नोट—जब तेल पक जाय, तब उतारते समय, "सिन्दूर" मिलाना और झट उतार लेना चाहिये।

शाखोटक बिल्वाद्य तैल।

सिहोड़ेकी छाल, बेलगिरी, कनेर और निर्गुण्डी—इन चारोंको पाव-पाव भर लेकर सिलपर पीस लो। फिर चार सेर तेल, सोलह सेर पानी और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। तेल-मात्र रहनेपर उतार लो। इस तैलको नस्यादि कर्म्मोंमें प्रयोग करनेसे गण्डमाला आराम हो जाती है।

काकादन्यादि तैल।

काकादनीकी जड़ पाव भरको पानीके साथ सिलपर पीस लो। निर्गुण्डीका स्वरस ४ सेर निकाल लो। काँजी ४ सेर और कड़वा तेल एक सेर पास रख लो। अब इन सबको मिलाकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलकी नस्यसे अपची नाश हो जाती है।

व्योषाद्य तैल।

त्रिकुटा, बायबिड़ङ्ग, मुलेठी, सैंधानोन और देवदारु—इनको छटाँक-छटाँक भर लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। इस लुगदी,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सवा सेर तेल और पाँच सेर पानीको मिलाकर तेल पका लो; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलकी नस्य देनेसे अत्यन्त कष्टसाध्य अपची भी चली जाती है।

काञ्चनार गुग्गुल।

कचनारकी छाल २० तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, मिर्च ४ तोले, हरड़ २ तोले, बहेड़े २ तोले, आमले २ तोले, वरनाकी छाल १ तोले, तेजपात ३ माशे, इलायची ३ माशे और दालचीनी ३ माशे—इन सबको पीस-छान लो। फिर इस चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लेकर इस चूर्णमें मिला दो और खूब कूटो एवं तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली नित्य सवेरे ही खानेसे महा उग्र गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, अर्बुद, ग्रन्थि, व्रण, गुल्म, कोढ़ और भगन्दर—ये रोग नष्ट हो जाते हैं। इन गोलियोंपर जरा जरा गरम गोरखमुण्डीका काढ़ा, खैरसारका काढ़ा या हरड़का काढ़ा अनुपानके रूपमें पीना चाहिये।

नोट—इस काञ्चनार गूगल और गलगण्ड रोगमें लिखी हुई कचनार गूगलमें कितना भेद है, पाठकोंको मिलानेसे मालूम हो जायगा। सिर्फ वरना, दालचीनी, इलायची और तेजपातकी तोलमें ही थोड़ा फर्क है। यह नुसखा "भावप्रकाश" का है और वह "शार्ङ्गधर" का।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

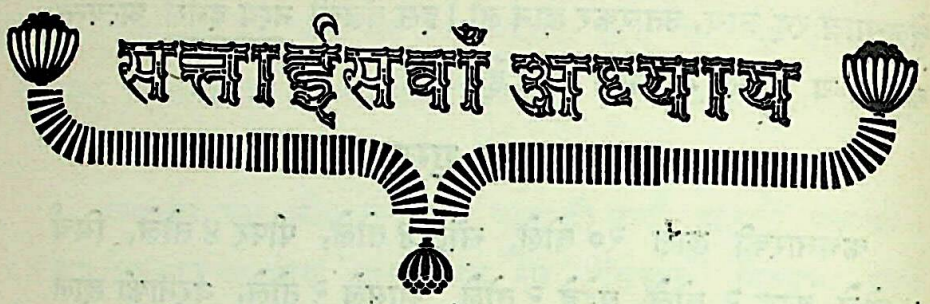

ग्रन्थि और अर्बुद-वर्णन।

ग्रन्थिके लक्षण।

अत्यन्त दूषित हुए वातादि दोष मांस, रुधिर, मेद और नसोंको दूषित करके ऊँची, गोल और गाँठके जैसी सूजन उत्पन्न करते हैं, उसीको "ग्रन्थि रोग" कहते हैं। यह सूजन धीरे-धीरे पकती है।

वातज ग्रन्थिके लक्षण।

जो ग्रन्थि खिंचती और बढ़ती मालूम हो, कटती-सी जान पड़े, छेदने और उठाकर फैंकने जैसी मालूम हो, मथनेके समान मालूम हो, फोड़ने सरीखी पीड़ा हो; ग्रन्थि काली, कोमल और मशककी समान भरी-सी दीखे और तोड़नेसे साफ खून निकले, उसे "वातज ग्रन्थि" समझो।

पित्तज ग्रन्थिके लक्षण।

पित्तज ग्रन्थिमें जलन तथा सोखने, चूसने, पकने और जलनेके समान पीड़ा होती है। उसके फूटनेपर, उसमेंसे पित्त-रक्तके रंगकी समान राध और दुष्ट रुधिर निकलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफज ग्रन्थिके लक्षण।

कफज ग्रन्थि शीतल, शरीरके रंगके समान रंगवाली, ज़रा-ज़रा दर्द करनेवाली, अत्यन्त खुजलीवाली, पत्थरके समान सख्त, बड़ी, बहुत देरमें बढ़ने और पकनेवाली होती है। फूटनेसे उसमेंसे सफेद और गाढ़ी राध निकलती है।

मेदज ग्रन्थिके लक्षण।

मेदज ग्रन्थि शरीरके बढ़नेके साथ बढ़ती और घटनेके साथ घटती है। यह चिकनी, बड़ी, खुजलीयुक्त और थोड़ी पीड़ा करनेवाली होती है। फूटनेपर इसमेंसे खल और घीके जैसी मेद निकलती है।

शिराज ग्रन्थिके लक्षण।

कमज़ोर आदमी अगर अत्यन्त ज़ोर या मिहनतके काम करता है, तो उसकी "वायु" कुपित होकर, नस-जालको सुकेड़कर, इकट्ठा करके और सुखाकर, ऊँची और गोल गाँठ पैदा करती है।

साध्यासाध्य लक्षण।

शिराज ग्रन्थि पीड़ायुक्त और चंचल हो, तो कष्टसाध्य होती है। अगर वह पीड़ा रहित, निश्चल, बड़ी और मर्मस्थलमें उत्पन्न हुई होती है, तो असाध्य होती है। इसलिये इसका इलाज न करना चाहिये।

और ग्रन्थियाँ भी अगर पीड़ा रहित, अचल, बड़ी और मर्मस्थलमें पैदा हुई होती हैं, तो असाध्य होती हैं। भोजने भी कहा है कि, पाँच तरहकी ग्रन्थियोंमें जो गाँठ पीड़ा रहित हो, मर्मस्थानमें पैदा हुई हो और अचल हो, उसका इलाज न करना चाहिये। गाल, गर्दन और सन्धियोंमें पैदा हुई ग्रन्थियोंकी चिकित्सा करना बड़ा कठिन है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्बुदके निदान-कारण।

शरीरके किसी भागमें दूषित हुए वातादि दोष, मांस और रक्तको दूषित करके गोल, कोमल, अल्प पीड़ायुक्त, बड़ी, गहरी जड़वाली, देरमें बढ़ने और पकनेवाली गाँठ उत्पन्न करते हैं, उसीको "अर्बुद" कहते हैं। वात, पित्त, कफ, मांस, रक्त और मेद—इन भेदोंसे अर्बुद छै तरहका होता है। इसके लक्षण ग्रन्थिके समान होते हैं।

नोट—बहुत मांस खानेसे, खून और मांस बिगड़कर, शरीरमें कहीं, बड़ी, गोल और अचल गाँठ पैदा करते हैं। यह न तो पकती है और न इसमें कभी दर्द होता है। बोलचालमें इसे "बड़ी" कहते हैं।

रक्तार्बुदके लक्षण।

अपने कारणोंसे दुष्ट हुए दोष शिरागत रुधिरको संकुचित और पीड़ित करके मांसका गोला पैदा करते हैं। यह ज़रा-ज़रा पकता और इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा मवाद निकलता है। यह मांसांकुरोंसे व्याप्त होता और बहुत जल्दी बढ़ता है। इसमेंसे रुधिर निकलता है। इसे "रक्तार्बुद" कहते हैं। यह असाध्य होता है। रक्तार्बुद रोगीके रुधिर-क्षयके उपद्रवोंकी वजहसे उसका शरीर पीला पड़ जाता है।

मांसार्बुदके लक्षण।

घूँसे वग़ैरःकी चोटसे शरीरमें जो दर्द हो जाता है, उस दर्दसे मांस दूषित होकर सूजन करता है। वह सूजन पीड़ा रहित, चिकनी और शरीरके रंगके समान होती है। वह पत्थरकी तरह स्थिर रहती है और पकती नहीं।

जिस मनुष्यका मांस दूषित हो जाता है अथवा जो मनुष्य सदैव मांस खाते हैं, उनको यह "मांसार्बुद रोग" होता है। यह मांसार्बुद असाध्य है; तथा साध्य अर्बुदोंमें भी नीचे लिखा हुआ अर्बुद त्याज्य है:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिसमेंसे मवाद बहता हो, जो मर्मस्थानोंमें पैदा हुआ हो अथवा नाकके छेदमें पैदा हुआ हो और जो अचल हो—ऐसा अर्बुद असाध्य होता है।

अध्यर्बुदके लक्षण।

पहले जिस जगह अर्बुद पैदा हुआ हो, उसीके ऊपर दूसरा अर्बुद पैदा हो जाय; यानी एक रसौलीपर दूसरी रसौली पैदा हो जाय, उसे "अध्यर्बुद" कहते हैं।

नोट—इसपर पृष्ठ ८१५ का नं० १७ नुसख़ा परमोत्तम है। उससे रसौली बैठ जाती है।

द्विरर्बुदके लक्षण।

एक साथ दो अर्बुद अथवा एकके पीछे दूसरा अर्बुद क्रमसे पैदा हो, उसको "द्विरर्बुद" कहते हैं। यह भी असाध्य है।

अर्बुद न पकनेका कारण।

कफकी अधिकतासे या विशेषकरके मेदकी अधिकतासे एवं दोषोंकी स्थिरतासे अथवा दोषोंके ग्रन्थिरूप होनेसे सब तरहके अर्बुद नहीं पकते; यानी अर्बुदमें कफ और मेद ज़ियादा होते हैं, इसीलिये वे नहीं पकते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रन्थ्यर्बुद-चिकित्सामें—

याद रखने योग्य बातें।

(१) बिना पकी ग्रन्थिमें पहले सूजन नाशक चिकित्सा करनी चाहिये। इस रोगमें रोगीके बलकी नित्य रक्षा करनी चाहिये, क्योंकि बलकी रक्षा करनेसे व्याधिका बल घट जाता है।

(२) ग्रन्थि रोगमें स्वेद और उपनाह कर्म करना और सिद्ध प्रलेप प्रयोग करना उचित है।

(३) पकी हुई गाँठको चीरकर उसकी राध निकाल देनी चाहिये और किसी व्रण-शोधक काढ़ेसे घाव धोना चाहिये। फिर घाव भरने-वाला तेल आदि लगाना चाहिये। यह क्रिया वातज ग्रन्थिमें हितकारी है।

(४) पित्तज ग्रन्थिमें पहले जौंक लगवा देना हितकारी है। फिर उसपर दूध और जल मिलाकर तरड़ा देना चाहिये। काकोल्यादि वर्गकी शीतल दवाओंका काढ़ा "मिश्री" मिलाकर पीना चाहिये अथवा दाखके रस और ईखके रसमें "हरड़का चूर्ण" मिलाकर पीना चाहिये।

(५) जो ग्रन्थि मर्मस्थानमें पैदा न हुई हों या पकी न हों, उनको छेदकर उस स्थानमें अग्निसे दग्ध करना चाहिये या क्षारादि कर्म करना चाहिये। बिना पकी ग्रन्थिको काटकर, आगसे दग्ध करना चाहिये। इसके बाद क्षारसे संशोधन करके, व्रणके समान इलाज करना चाहिये।

(६) एक शिराज ग्रन्थिको छोड़कर, शेष सब ग्रन्थियोंकी यत्न-पूर्वक चिकित्सा करनी चाहिये।

(७) अर्बुद रोगमें पहले विद्रधिके समान पछने आदि लगाने चाहिये; आग और क्षार द्वारा दग्ध करना चाहिये एवं अनेक तरहके लेप आदि लगाने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) अर्बुद रोगमें बाक़ी रहे हुए भी दोष फिरसे अर्बुद पैदा कर देते हैं, इसलिये अर्बुदमें दोषोंको हरगिज़ बाक़ी न रखना चाहिये, क्योंकि वे शेष दोष, विष और अग्निके समान, मनुष्यको मार देते हैं।

(९) जो ग्रन्थि दवासे आराम न हो, उसे जर्राहसे चिरवाकर घावकी तरह उसका इलाज करना चाहिये। शिराज ग्रन्थिको छोड़कर, बाक़ी सब ग्रन्थियोंकी शस्त्र-चिकित्सा कर सकते हैं।

(१०) आचार्य कहते हैं कि, ग्रन्थि और अर्बुदके पैदा होनेके स्थानों, निदानों, आकारों, दोषों और दूष्योंमें कुछ भी अन्तर नहीं है। इसलिये जर्राही कर्म जाननेवालेको अर्बुदकी चिकित्सा भी ग्रन्थिके समान करनी चाहिये।

ग्रन्थि और अर्बुद रोगकी चिकित्सा।

(१) सज्जी, मूलीका खार और शंखका चूर्ण—इनको पीसकर लेप करनेसे ग्रन्थि और अर्बुद नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) हल्दी, लोध, पतङ्ग, घरका धूआँसा और मैनसिलको "शहद" में मिलाकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे अर्बुद—ख़ासकर मेदज अर्बुद नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(३) मूलीकी भस्म, हल्दीकी भस्म और शंखका चूर्ण—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे अर्बुद नष्ट हो जाता है। अर्बुदका यह सिद्ध उपाय है। परीक्षित है।

(४) बड़का दूध, कूट और साँभर नोन—इनको एकत्र मिलाकर अर्बुदपर लेप करने और ऊपरसे बड़के पत्ते बाँधनेसे हड्डीके ऊपर पैदा हुआ भी अर्बुद नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) सहँजनेके बीज, मूलीके बीज, सरसों, तुलसी और इन्द्रजौ—इनको भैंसके माठेमें पीसकर लेप करनेसे अर्बुद नष्ट हो जाता है।

(६) ग्रन्थिरोगमें दाख या ईखके रसके साथ "हरड़का चूर्ण" खाना हितकारी है।

(७) जामुनकी छाल, अर्जुनकी छाल और बेंतकी छाल पीसकर लेप करनेसे ग्रन्थि आराम हो जाती है।

(८) दन्तीकी जड़, चीतेकी जड़, थूहरका दूध, आकका दूध, गुड़, भिलावेके बीज और हीराकसीस—इन सबको पीसकर लेप करनेसे अत्यन्त बढ़ी हुई गाँठ भी पकती और उसमेंसे मवाद निकलकर वह आराम हो जाती है। गाँठको पकाने और फोड़नेमें यह लेप रामबाण है। परीक्षित है।

(९) गूलरके पत्तेसे अर्बुदको रगड़कर, उसके ऊपर राल, प्रियंगू, लाल चन्दन, लोध, रसौत और मुलेठी—इनको एकत्र पीसकर और "शहद" मिलाकर लेप करना चाहिये। इस लेपसे सब तरहके अर्बुद नष्ट हो जाते हैं।

(१०) सहँजनेके बीज, मूलीके बीज, सरसों, तुलसीके बीज, जौ और कनेरकी जड़को माठेमें पीसकर लेप करनेसे अर्बुद रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(११) नमक या सीसेसे सेक करनेसे अर्बुद नष्ट हो जाता है। थूहरके डण्डेके सेकसे भी अर्बुदमें लाभ होता है।

(१२) अगर शरीरके किसी मर्मस्थानपर अर्बुद हुआ हो, तो पोईको काँजी और माठेमें पीसकर और "नमक" मिलाकर दिन-रातमें दोनों समय लेप करके पट्टी बाँधो। भगवान चाहे तो भला होगा। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१३) गन्धक, मैंनसिल, सोंठ, बायबिड़ङ्ग और जौकी भस्म—इनको पीस-छानकर और "केंकड़ेके खून"में मिलाकर लेप करनेसे सब तरहके अर्बुद नष्ट हो जाते हैं।

(१४) पोईका स्वरस अर्बुदपर लेप करो और ऊपरसे पोईके ही पत्ते बाँध दो। इससे तत्काल अर्बुद नष्ट हो जाता है।

(१५) सफेद मिर्च, सहँजना, सरसों, जौ और मूलीके बीज—इनका लेप करनेसे ग्रन्थि, अर्बुद और गण्डमाला रोग नाश हो जाते हैं।

(१६) लोबिया, खल और कुल्थी—इनकी सिलपर पिसी लुगदीको मांस और दहीमें मिलाकर अच्छी तरह मलने और लेप करनेसे कीड़े और मक्खी वगैरः अपनी औलादोंको छोड़कर भाग जाते हैं।

(१७) रसौली-पर-रसौली निकल आवे यानी अध्यर्बुद हो जाय, तो बड़का दूध, कूट और साँभरनोन—तीनोंको एकत्र पीसकर लेप करो और बड़के पत्ते सिलपर पीसकर उनकी लुगदी कर लो। फिर उस लुगदीको लेपपर रखकर बाँध दो। इस उपायसे बहुत लाभ होता है; यहाँ तक कि रसौली बैठ जाती है।

(१८) तुख्म बालंगाका फाया या पुल्टिस अर्बुद या रसौलीमें अच्छा उपकार करते हैं। मुख वगैरः नाजुक स्थानोंपर फोड़े या रसौली हो जानेसे लोग आपरेशन करानेसे डरते हैं, वहाँ "तुख्म बालंगा"को पानीमें भिगोकर और एक कपड़ेपर रखकर रसौली आदि-पर चिपका देनेसे वह चिपक जाता है; बाँधनेकी दरकार नहीं होती। अत्यन्त पीड़ायुक्त घावपर लगा देनेसे वह तत्काल जलन और पीड़ाको नाश कर देता है।

नोट—तुख्म बालंगाका फाया रखनेसे बद या बाघी भी बैठ जाती है। घाव और दाहयुक्त स्थानमें इसकी पुल्टिस बाँधने या फाया रखनेसे घावकी पीड़ा और जलन शान्त हो जाती तथा सूजन, दाह और लाली शीघ्र ही दूर होती है। इससे बिना पका फोड़ा बैठ जाता और पका हुआ बिना तकलीफके सहजमें फूट जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

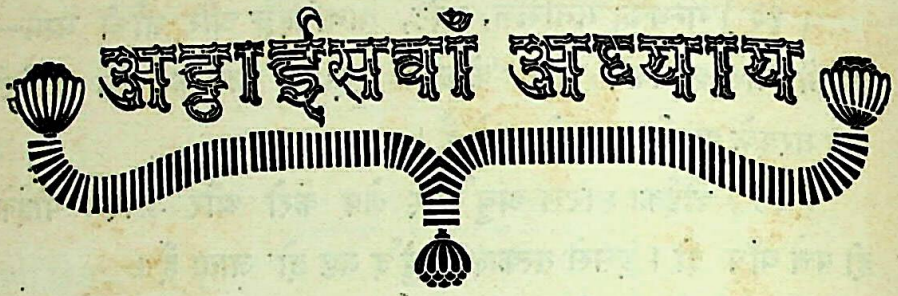

श्लीपद रोग-वर्णन ।

(हाथीपाँव या फ़ीलपाँव)

श्लीपदके निदान-कारण ।

जिस देशमें मेहका पानी बहुत दिनों तक भरा रहता है और सब मौसमोंमें जहाँ शीतलता रहती है, उस देशमें "श्लीपद" या "फीलपाँव" रोग विशेषकर होता है ।

नोट—जहाँ सदा शीतलता रहती है और जहाँ पुराना पानी नहीं सूखता, वहाँ श्लीपद रोग ज़ियादा होता है । वैसे तो यह सभी देशोंमें होता है, पर बंगाल और उड़ीसामें हाथीपाँवके रोगी ज़ियादा मिलते हैं । इन देशोंमें वर्षाका जल सदा भरा ही रहता है ।

सामान्य लक्षण ।

जो सूजन पहले वंक्षण यानी पेड़ू और जाँघोंकी जड़में पैदा होकर पैरोंमें आजावे और उसमें ज्वर भी हो, उसे "श्लीपद" कहते हैं । कितने ही आचार्य कहते हैं कि, यह हाथ, कान, नेत्र, लिंग, होठ और नाकमें भी होता है । यह रोग तीन तरहका होता है ।

वातज श्लीपदके लक्षण ।

यह श्लीपद काला, रूखा, फटा हुआ, तीव्र पीड़ायुक्त और बिना कारण ही दूखनेवाला होता है । इसमें ज्वर ज़ियादा होता है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

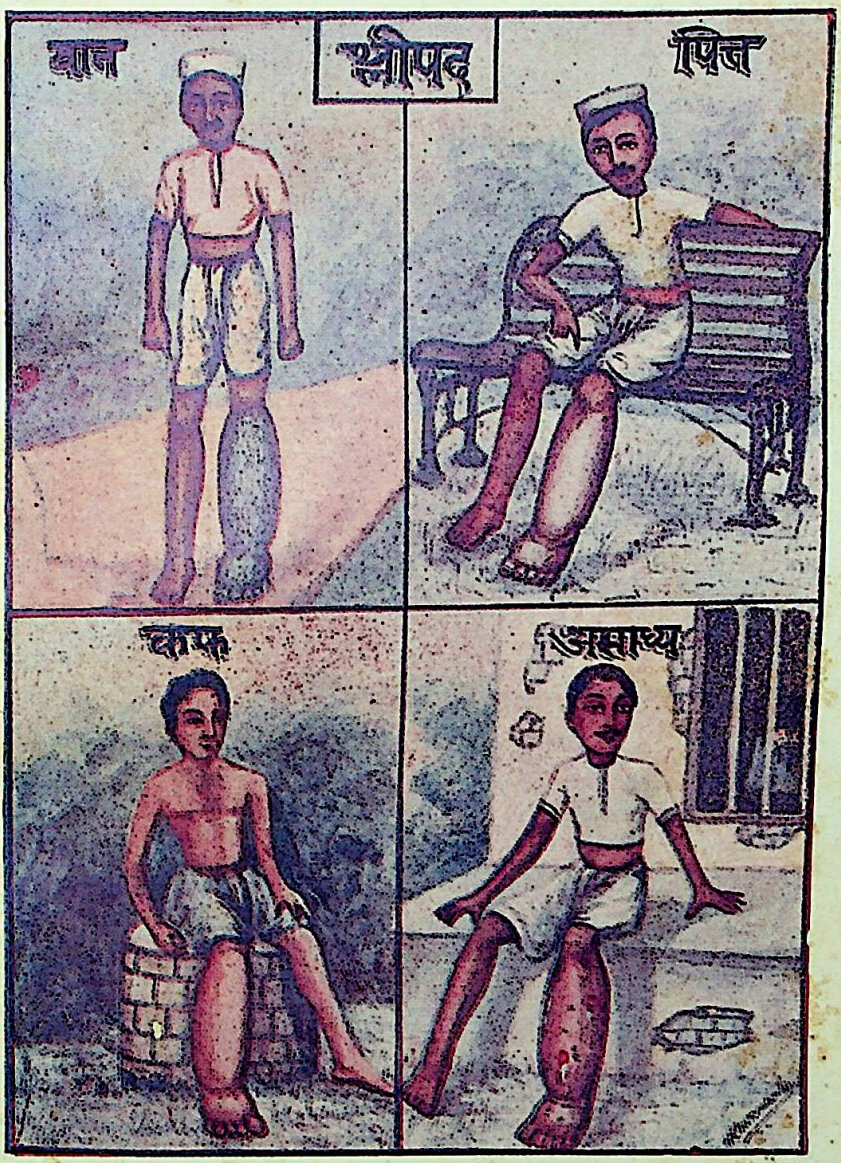

इस चित्रमें वातज, पित्तज, कफज और असाध्य श्लीपद—हाथी पाँव या फील-पाँवके लक्षण आसानीसे पहचाननेके लिए चारों लक्षणोंवाले रोगियोंके चित्र अलग-अलग दिये हैं। पाठक प्रत्येक रोगीको बग़ौर देखें और इस चित्र तथा पुस्तककी सहायतासे लक्षणोंको दिलपर नक़्श करें। (पृष्ठ—८१६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तज श्लीपदके लक्षण।

यह श्लीपद पीला, कोमल और दाह तथा ज्वर संयुक्त होता है।

कफज श्लीपदके लक्षण।

यह श्लीपद चिकना, सफेद, पीला, भारी और स्थिर होता है।

असाध्य लक्षण।

त्रिदोषज श्लीपद साँपकी बाम्बीके समान ऊँचा-नीचा और काँटेदार होता है। त्रिदोषज श्लीपद तथा जिसे पैदा हुए एक साल हो गया हो और जो बहुत बढ़ गया हो, उसे वैद्य त्याग दे—उसका इलाज न करे; क्योंकि ऐसे श्लीपद आराम नहीं होते

तीनों तरहके श्लीपदोंमें कफकी अधिकता होती है; क्योंकि भारीपन और महत्ता कफके बिना नहीं होते।

जो श्लीपद कफकारक आहार-विहारोंसे पैदा हो, और रोगीकी प्रकृति भी कफकी हो; जिस श्लीपदमेंसे पानी बहता हो, जो अत्यन्त ऊँचा और सब दोषोंके लक्षणोंसे युक्त हो और जिसमें खुजली बहुत चलती हो—वह श्लीपद असाध्य है।

श्लीपद या हाथीपाँव नाशक नुसख़े।

नोट—पसीना निकालना, लंघन करना, जुलाब लेना, खून निकालना, कफ नाशक उपाय करना और बफारे लेना—श्लीपद रोगमें हितकारी है। "बंगसेन" में लिखा है कि, लंघन, प्रलेप, स्वेद, रेचन, फ़स्द खुलवाना और कफ नाशक गरम क्रिया—ये सब श्लीपदमें हितकारी हैं।

(१) सोंठ, पुनर्नवा और राई—इनको समान-समान लेकर और "गोमूत्र"में पीसकर लेप करनेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) धतूरा, अरण्डकी जड़, सँभालू, पुनर्नवा, सहँजनेकी छाल और राई—इनको समान-समान लेकर, पानीमें पीसकर और गरम करके लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(३) सहदेवीकी जड़को ताड़फलके रसमें पीसकर लेप करनेसे सब तरहके असाध्य भी श्लीपद आराम हो जाते हैं।

(४) थूहरके पत्तोंको पानीमें पीसकर और "नमक" मिलाकर दो तोले रोज खानेसे श्लीपद रोग आराम हो जाता है।

(५) सहोराकी छालके काढ़ेमें "गोमूत्र" मिलाकर पीनेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

(६) एक तोले हल्दीका चूर्ण दो तोले "गुड़"में मिलाकर, काँजीके साथ, नित्य पीनेसे एक सालका श्लीपद आराम हो जाता है। विशेषकर दाद और कोढ़ नाश हो जाते हैं।

(७) पुनर्नवा, हरड़, बहेड़ा, आमले और पीपर बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे एक तोले चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे श्लीपद रोग आराम हो जाता है।

(८) रैंडीका तेल २ तोले, हरड़का चूर्ण २ तोले और पाव भर गोमूत्र—इनको मिलाकर पीनेसे श्लीपद अवश्य नाश हो जाता है। पर इस नुसख़ेको सात दिनसे ज़ियादा न पीना चाहिये; क्योंकि दस्त होते और कमज़ोरी आती है।

नोट—कोई-कोई एक महीने तक रैंडीका तेल गोमूत्रमें मिलाकर पीनेकी राय देते हैं।

(९) कसौंदीकी जटाको सिलपर पानीके साथ पीसकर और गायके "घी"में मिलाकर पीनेसे श्लीपद रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(१०) छोटी हरड़ अथवा गिलोयको "गोमूत्रके साथ" पीसकर पीनेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—बड़ी हरड़को रैंडीके तेलमें भूनकर गोमूत्रके साथ खानेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(११) सोंठ, सरसों और पुनर्नवा—इनको "गोमूत्र"में पीसकर लगानेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

(१२) सोंठ, सरसों, देवदारु और सहँजनेकी छाल—इनको "गोमूत्र"में पीसकर लगानेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(१३) सात नागरपान सिलपर पीसकर गरम जलके साथ खानेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(१४) सरसोंका तेल पीनेसे श्लीपद नाश हो जाता है।

(१५) जौ, सरसोंका तेल और कछुएका मांस सेवन करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

नोट—अगर इन सभी उपायोंसे श्लीपद आराम न हो, तो आगसे दाग देना चाहिये।

(१६) सफेद आककी जड़ "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(१७) मँजीठ, मुलेठी, रास्ना और पुनर्नवा—इनको "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे पित्तज श्लीपद आराम हो जाता है।

(१८) धतूरा, रैंडीकी जड़, सफेद पुनर्नवा, सहँजना और सफेद सरसों—इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

(१९) चीता, देवदारु, सफेद सरसों या सहँजनेकी जड़की छाल,—इनको "गोमूत्र"में पीसकर और गरम करके लेप करनेसे श्लीपद आराम हो जाता है।

अगर आप अपनी औलादको आदर्श बनाना चाहते हैं, उसे सच्चरित्र, निरालसी, स्वावलम्बी और उद्योगशील बनाना चाहते हैं, तो आप उसे हिन्दी गुलिस्ताँ २॥), पत्रपुष्प ॥), पत्रोपहार ॥) और बालादर्श ।८)—ये पुस्तकें मँगाकर उसके हाथोंमें दीजिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्लीपद नाशक उत्तमोत्तम योग।

पिप्पल्यादि चूर्ण।

पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, सोंठ और पुनर्नवा प्रत्येक दवा ८-८ तोले और विधारेके बीज ५६ तोले—इनको पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण नित्य काँजीके साथ खानेसे श्लीपद, वातरोग, तिल्ली और भस्मक रोग नाश हो जाते हैं तथा अग्नि दीप्त होती है। इसके पचनेपर इच्छानुसार भोजन करना चाहिये।

श्लीपद गजकेशरी।

त्रिकुटा, शुद्ध बच्छनाग विष, अजवायन, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, चीतेकी जड़, शुद्ध मैनसिल, सुहागा और शुद्ध जयपाल—सबको समान-समान लेकर पहले पारे और गन्धकको खरल करो। इसके बाद शेष चीजोंको कूट-पीसकर उसीमें मिला दो। फिर क्रमसे भीमराज, गोखरू, जंभीरी नीबू और अदरखके रसमें खरल करो। जब चारों चीजोंमें मसाला घुट जाय, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। अनुपान—गरम जल यानी एक-एक गोली निगलकर ऊपरसे गरम पानी पीनेसे श्लीपद या हाथीपाँव रोग आराम हो जाता है।

बिड़ङ्गादि तैल।

बायबिड़ङ्ग, कालीमिर्च, आककी जड़, सोंठ, चीतेकी जड़, देवदारु, एलुआ और पाँचों नमक—इन सबको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

फिर तिलीका तेल चार सेर, पानी सोलह सेर और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलके पीने और सूजनकी जगह मालिश करनेसे श्लीपद या हाथीपाँव आराम हो जाता है।

नित्यानन्द रस।

हिंगुलसे निकाला हुआ पारा, शुद्ध गन्धक, ताम्बा भस्म, काँसी-भस्म, बङ्गभस्म, हरताल भस्म, शुद्ध तूतिया, शंख-भस्म, कौड़ीकी भस्म, त्रिकुटा, त्रिफला, लोहा-भस्म, बायबिड़ङ्ग, पाँचों नमक, चव्य, पीपरा-मूल, हाऊबेर, बच, कचूर, अम्बष्ठा, देवदारु, इलायची, बिधारा, निशोथ, चीता और दन्ती—सबको बराबर-बराबर ले लो। जो दवाएँ कूटने योग्य हैं, उन्हें कूट-छान लो। फिर गन्धक और पारेको अलग खरल करके, उसमें पिसा-छना चूर्ण और ताम्बे, काँसी आदिकी भस्में मिला दो और ऊपरसे हरीतकीका काढ़ा डाल-डालकर खरल करो। जब मसाला घुट जाय, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक-एक गोली शीतल जल या हरड़-भिगोये पानीके साथ निगलनेसे श्लीपद, गलगण्ड और सब तरहके अण्डवृद्धि रोग आराम हो जाते हैं।

मदनादि लेप।

मैनफल, नील कमल और समन्दरनोन—इन सबको पीसकर और "भैंसके मक्खन" में मिलाकर लेप करनेसे पित्तज श्लीपद या जलनवाला श्लीपद आराम हो जाता है।

सौरेश्वर घृत।

दशमूलका काढ़ा दो सेर लेकर सोलह सेर पानीमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, छान लो। काँजी ४ सेर, घी ४ सेर और दही ४ सेर इनको भी पास रख लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब काली तुलसी, देवदारु, त्रिकुटा, त्रिफला, सैंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, समन्दरनोन, काँचनोन, बायबिड़ङ्ग, चीता, चव्य, पीपरामूल, शुद्ध गूगल, हाऊबेर, बच, जवाखार, पाढ़, कचूर, इलायची और बिधारा—इन सबको दो-दो तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो।

फिर काढ़ा, काँजी, दही, लुगदी और घीको पकाकर छान लो। इससे श्लीपद, गण्डमाला, अपची, अण्डवृद्धि, कफ-वातोत्पन्न श्लीपद, मांसरक्ताश्रित श्लीपद, सूजन, अर्बुद और संग्रहणी आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह "सौरेश्वर घृत" जीवकनाथ आचार्यने कहा है।

कृष्णाद्य मोदक।

पीपर १ तोले, चीता २ तोले, दन्ती ४ तोले, हरड़ २० तोले और गुड़ ८ तोले—इन सबको एक साथ पीस और मिलाकर "शहद" में लड्डू बना लो। इन मोदकोंके सेवन करनेसे श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

दूसरा पिप्पल्यादि चूर्ण।

पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, सोंठ और पुनर्नवा—इनमेंसे प्रत्येक दवा ६४।६४ तोले लेकर पीस-छान लो। फिर सबकी बराबर ४४८ तोले "बिधारेका चूर्ण" भी मिला दो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण काँजी या और किसी अनुपानके साथ खानेसे श्लीपद, गोला, शूल, तिल्ली, भस्मक रोग, उदावर्त्त, आमवात, अजीर्ण और विशेषकर श्लीपद रोग नष्ट हो जाता है।

गोमूत्र हरीतकी।

हरड़को रैंडीके तेलमें भूँजकर, सात दिन तक, "गोमूत्रके साथ" पीनेसे श्लीपद रोग नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्तीसवाँ अध्याय

विद्रधि-वर्णन।

विद्रधिके सामान्य लक्षण।

असलमें विद्रधि एक तरहका फोड़ा है। वैद्य जिसे "विद्रधि" कहते हैं, साधारण लोग उसे ही "फोड़ा" कहते हैं। गूलरकी-सी सूरत-शकलकी, दाह, वेदना और अन्तमें पाकयुक्त सूजनको विद्रधि कहते हैं। कोई कहते हैं, गोल, ऊँची, कठोर और पीड़ायुक्त सूजन ही विद्रधि कहलाती है। कोई सर्पकी बाम्बीके समान ऊँची उठी हुई सूजनको विद्रधि कहते हैं। मतलब यह है कि, विद्रधि एक तरहकी सूजन है, जिसमें जलन और वेदना होती है और अन्तमें वह पककर फोड़ेकी तरह फूट जाती है। यह शरीरके भीतर भी होती है और बाहर भी। बाहरवाली यानी शरीरके ऊपर होनेवाली छै तरहकी होती है और शरीरके अन्दर होनेवाली दस तरहकी होती है।

विद्रधिके निदान-कारण।

अपने-अपने कारणोंसे कुपित हुए वातादि दोष अत्यन्त बढ़कर, हड्डियोंमें स्थित होकर, चमड़ा, खून, मांस और मेदको दूषित करके, धीरे-धीरे अत्यन्त दारुण और ऊपरको उठी हुई सूजन उत्पन्न करते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह सूजन गोल या फैली हुई होती है और इसमें बड़ी भारी वेदना होती है। इसीको "विद्रधि" कहते हैं।

विद्रधिके मुख्य दो भेद।

असलमें विद्रधि दो तरहकी होती है:—

(१) वाह्य विद्रधि, (२) अन्तर्विद्रधि।

वाह्य विद्रधि बाहरकी विद्रधिको कहते हैं। यह शरीरके ऊपर, शरीरके किसी भी भागमें होती है। अन्तर्विद्रधि शरीरके अन्दर दस स्थानोंमें होती है। वाह्य विद्रधि छै तरहकी और अन्तर्विद्रधि दस तरहकी होती है।

वाह्य विद्रधिके भेद।

वाह्य या शरीरके ऊपर होनेवाली विद्रधि छै तरहकी होती है:—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) सन्निपातज,
(५) आगन्तुक, (६) रक्तज।

वातज विद्रधिके लक्षण।

वातज विद्रधि काली, लाल, कभी छोटी, कभी मोटी, घटने-बढ़नेवाली और अत्यन्त वेदना सहित होती है। यह अनेक तरहसे पैदा होती और अनेक तरहसे पकती है।

खुलासा—इस विद्रधिका रंग काला या लाल होता है। इसमें अत्यन्त वेदना और ऊँचापन होता है।

पित्तज विद्रधिके लक्षण।

पित्तज विद्रधिका रंग पके हुए गूलरके जैसा या श्याम होता है। इसके साथ दाह और ज्वर होता है। यह जल्दी ही पैदा होती और जल्दी ही पकती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफज विद्रधिके लक्षण।

कफज विद्रधि मिट्टीके शकोरेके समान बड़ी होती है। इसका रंग पाण्डु होता है। यह छूनेमें शीतल और चिकनी होती है। इसमें पीड़ा कम होती है और यह देरमें पैदा होती है और देरमें ही पकती है।

राधके भेदसे पहचान।

वातज विद्रधिकी राध पतली, पित्तजकी पीली और कफजकी सफेद होती है। वातज अनेक तरहसे पकती है; पित्तज जल्दी पकती और कफज देरमें पकती है।

सन्निपातज विद्रधिके लक्षण।

सन्निपातज विद्रधि होनेसे अनेक तरहकी पीड़ाएँ होती हैं। उससे अनेक तरहकी राध बहती है। उसका आकार घण्टेके जैसा ऊपरसे पतला और नीचेसे मोटा होता है। वह कभी घटती, कभी बढ़ती और रह-रहकर पकती है। वह विद्रधि असाध्य होती है।

आगन्तुक विद्रधिके लक्षण।

यह विद्रधि पत्थर, लाठी या हथियारकी चोट लगनेसे अथवा अन्य किसी प्रकारसे घाव होकर होती है। चोट या घावकी गरमीसे "वायु" विस्तृत होकर, रक्त और पित्तको कुपित करती है। इस विद्रधिमें ज्वर, प्यास और दाह ये लक्षण होते हैं। बहुत करके इस विद्रधिमें पित्तज विद्रधिके लक्षण होते हैं।

रक्तज विद्रधिके लक्षण।

यह विद्रधि काले फोड़ोंसे व्याप्त और काले रंगकी होती है। इसमें तीव्र दाह, पीड़ा और ज्वर ये लक्षण होते हैं। इसमें पित्तज विद्रधिके लक्षण मिलते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इन छहों विद्रधियोंमें सन्निपातज विद्रधि असाध्य है, बाक़ी पाँचों साध्य हैं।

अन्तर्विद्रधिके लक्षण।

वातादि दोष अलग-अलग कुपित होकर या सब दोष एकत्र कुपित होकर, शरीरके भीतर, गोले और साँपकी बाम्बीके समान ऊँची अन्तर्विद्रधि उत्पन्न करते हैं।

अन्तर्विद्रधियोंके स्थान।

शरीरके भीतर होनेवाली विद्रधियाँ शरीरके नीचे लिखे स्थानोंमें होती हैं:—

(१) गुदा।	(२) वस्तिमुख-पेड़ू।
(३) नाभि।	(४) कूख।
(५) वंक्षण-पट्ठे।	(६) वृक्क।
(७) लीहा।	(८) यकृत।
(९) हृदय।	(१०) क्लोम-प्यासका स्थान।

नोट—भीतरी विद्रधियाँ ऊपर लिखे दस स्थानोंमें होती हैं, इसीसे दस तरहकी कहलाती हैं।

अन्तर्विद्रधियोंके लक्षण।

भीतरी विद्रधियोंके लक्षण, वातादि दोषोंके निमित्तसे, बाहरी विद्रधियोंके जैसे होते हैं; तो भी स्थानकी विशेषतासे विशेष लक्षण भी होते हैं। जैसे:—

(१) गुदामें विद्रधि होनेसे अधोवायु रुकती है।

(२) पेड़ूमें विद्रधि होनेसे बड़ी तकलीफसे ज़रा-ज़रा पेशाब होता है।

(३) नाभिमें विद्रधि होनेसे हिचकियाँ चलतीं और दर्दके साथ पेटमें गुड़गुड़ाहट होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) कोखमें विद्रधि होनेसे वायुका कोप होता है।

(५) पट्ठोंमें विद्रधि होनेसे पीठ और कमर एकदमसे जकड़ जाती हैं।

(६) वृक्कमें विद्रधि होनेसे पसलियाँ सुकड़ती हैं।

(७) लीहामें विद्रधि होनेसे श्वास रुकता है।

(८) हृदयमें विद्रधि होनेसे सारे अंग जकड़ जाते और खाँसी चलती है।

(९) यकृतमें विद्रधि होनेसे श्वास और हिचकीके रोग होते हैं।

(१०) क्लोम या प्यासकी जगहमें विद्रधि होनेसे प्यास बहुत लगती है।

भीतरी विद्रधियोंकी राध निकलनेकी राहें।

शरीरके भीतरकी विद्रधियाँ जब पकती हैं, तब उनकी राध नीचे लिखी राहोंसे निकलती है:—

(१) नाभिके ऊपर जो विद्रधि होती है, उसके पकनेसे राध मुँहकी राहसे निकलती है।

(२) नाभिके नीचे जो विद्रधि होती है, उसके पक जानेपर राध गुदामार्गसे बहती है।

(३) नाभिमें होनेवाली विद्रधि जब पकती है, तब उसकी राध मुँह और गुदा—दोनों राहोंसे निकलती है।

नोट—जिन विद्रधियोंका मवाद गुदाकी राहसे निकलता है, वे साध्य हैं और जिनका मवाद मुँहकी राहसे निकलता है, वे असाध्य हैं।

स्तन-विद्रधिके लक्षण।

वातसे विकृत हुई स्तनोंकी शिरायें—प्रसूता और गर्भिणी स्त्रियोंके स्तनोंमें—घन सूजन पैदा करती हैं, उस सूजनको ही "स्तन-विद्रधि" कहते हैं। यह "स्तन-विद्रधि" दूधवाले स्तनोंमें होती है। इसके लक्षण

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वाह्य या बाहरी विद्रधिके समान होते हैं। यह विद्रधि कन्याओंके नहीं होती, क्योंकि उनके स्तनोंकी नाड़ियोंके मुँह सूक्ष्म होते हैं।

साध्यासाध्य लक्षण।

हृदय, नाभि और पेड़ू—इन स्थानोंके सिवाय और स्थानोंमें पैदा हुई विद्रधि यदि बाहरकी ओर फूटती है, तो कदाचित रोगी बच जाता है। यदि हृदय, नाभि और पेड़ूमें पैदा हुई विद्रधि बाहर फूटती है, तो रोगी निश्चय ही मर जाता है।

सन्निपातज विद्रधिके सिवा और पाँचों विद्रधियाँ साध्य हैं; किन्तु सन्निपातज असाध्य है।

जिस विद्रधि रोगमें पेट फूल जाता है, पेशाब रुक जाता है तथा हिचकी, वमन, प्यास, शूल और श्वास ये उपद्रव होते हैं, वह विद्रधि मनुष्यको मार डालती है।

मर्म-स्थानमें पैदा हुई विद्रधि कच्ची हो चाहे पकी, छोटी हो चाहे बड़ी—हर हालतमें कष्टसाध्य है।

जो विद्रधि हृदय, नाभि और पेड़ूमें पैदा हुई हो और पक गई हो तथा जो त्रिदोषज हो और जिसमेंसे मुष्टि प्रमाण खून निकलता हो, वह विद्रधि असाध्य है।

गुल्म विद्रधिकी तरह क्यों नहीं पकता?

गुल्म वातादि दोषोंमें रहता है, इसलिये नहीं पकता; किन्तु विद्रधि मांस और खूनमें रहती है, इसीसे पक जाती है।

आप अपने घरकी लक्ष्मियोंके कर-कमलोंमें सचित्र "सुहागिनी" और सचित्र "द्रौपदी" अवश्य दीजिये। ये ग्रन्थ नहीं, सच्चे रत्न हैं। सजिल्द सुहागिनीका मूल्य ३॥) और द्रौपदीका ३।) दोनों एक साथ मँगानेसे कमीशन मिलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विद्रधि-चिकित्सा।

(फोड़ोंका इलाज)

नोट—सब तरहकी विद्रधियोंमें पहले जौंकें लगवानी चाहिये तथा हल्का जुलाब और हल्का भोजन देना चाहिये। पित्तकी विद्रधिको छोड़कर औरोंमें स्वेद दे सकते हैं।

विद्रधि और व्रण-शोथकी अपक्व अवस्थामें यानी उनके कच्चे होनेकी हालतमें खून निकालना चाहिये, हल्का जुलाब देना चाहिये तथा औषधि-प्रयोग और स्वेद-क्रियासे यानी गरम बालू, गरम ईंट या गरम लोहेसे सेककर उनको बैठाना चाहिये। जैसे,—सहँजनेकी जड़का लेप करने और स्वेद देनेसे विद्रधि बैठ जाता है।

अगर विद्रधि या व्रण-शोथ लेप वग़ैरः करनेसे न बैठें, तो उन्हें पकाकर खून और पीप या मवाद निकाल देना चाहिये, यानी पुल्टिस वग़ैरः बाँधकर उन्हें पकाना चाहिये। पक जानेपर, उन्हें पुल्टिस या लेपसे फोड़कर राध निकाल देनी चाहिये। राधके निकल जानेपर, उस जगह घावको भरनेवाली कोई मरहम लगा देनी चाहिये।

वातज विद्रधि नाशक नुसख़े।

(१) वातनाशक औषधियोंकी जड़के कल्क द्वारा घी या तेल पकाकर, वातज विद्रधिपर सुहाता-सुहाता लेप करनेसे विद्रधि नष्ट हो जाती है। लाल अरण्डकी जड़को पानीके साथ सिलपर पीसकर उसमें घी या तेल मिलाकर गरम करो; फिर उसका सुहाता-सुहाता लेप करो। इससे वात-विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(२) जौ, गेहूँ और मूँग—इनको घीमें पीसकर लेप करनेसे नहीं पकी हुई—कच्ची विद्रधि क्षण-मात्रमें लुप्त हो जाती है; यानी बैठ जाती है।

(३) जौ, सहँजनेकी जड़, गेहूँ और मूँग—इनको महीन पीसकर घीमें मिलाकर स्वेद देने या लेप करनेसे विद्रधि बैठ जाती है।

(४) केवल सहँजनेकी जड़का लेप और स्वेद करनेसे वातज विद्रधि बैठ जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) पुनर्नवा, देवदारु, बेलगिरी और दशमूलकी सब दवाएँ लेकर काढ़ा पका लो। उस काढ़ेमें "अरण्डी"का तेल या "शुद्ध गूगल" मिलाकर सेवन करनेसे वातकी विद्रधि नाश हो जाती है।

नोट—हम साँठ, सोंठ, देवदारु, हरड़ और दशमूलके काढ़ेमें "रैंडीका तेल" या "शुद्ध गूगल" मिलाकर पिलाते हैं। परीक्षित है।

पित्तज विद्रधि नाशक नुसखे।

(६) शारिवा, खस और मुलेठी—इनको दूधमें पीसकर और "मिश्री" मिलाकर लेप करनेसे पित्तज विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(७) मुलेठी, खस और चन्दन—इनको दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तज विद्रधि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—कोई मुलेठीकी जगह क्षीरकाकोली लेते हैं।

(८) सौ बारका धोया हुआ घी लगानेसे पित्त-विद्रधि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(९) त्रिफलेके काढ़ेमें एक तोले "निशोथका चूर्ण" या कल्क मिलाकर पीनेसे पित्त-विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(१०) गायके नवनीत-घीका लेप करनेसे पित्त-विद्रधि आराम हो जाती है।

(११) निशोथ और हरड़को एकत्र पीस-छानकर, उस चूर्णको "शहद" मिलाकर खानेसे पित्त-विद्रधि नष्ट हो जाती है।

(१२) पंचक्षीरी वृक्षोंकी छाल पीसकर और घीमें मिलाकर लेप करनेसे पित्त-विद्रधि नष्ट हो जाती है।

कफज विद्रधि नाशक नुसखे।

(१३) ईंट, रेता, लोह, गायका गोबर, भूसी और धूल—इनको "गोमूत्र"में मिलाकर गरम करो और सुहाता-सुहाता सेक करो। इससे कफज विद्रधि नष्ट हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) दशमूलके काढ़ेमें "तेल या घी" मिलाकर सुहाता-सुहाता परिषेक करने यानी तरड़ा देनेसे कफज विद्रधि बैठ जाती है।

(१५) त्रिफला, सहँजना, वरनाकी छाल और दशमूल—इनके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल या गोमूत्र" डालकर पीनेसे कफज विद्रधि नष्ट हो जाती है।

रक्तज और आगन्तुक विद्रधिकी चिकित्सा।

इन दोनोंकी चिकित्सा पित्त-विद्रधिके समान करनी चाहिये।

अन्तर्विद्रधिकी चिकित्सा।

(१६) हरड़ और सहँजनेका रस एकत्र मिलाकर पीनेसे अन्तर्विद्रधि आराम हो जाती है।

(१७) "नाराच घृत" पीनेसे अन्तर्विद्रधि नाश हो जाती है।

(१८) अरण्डीका तेल पीनेसे अन्तर्विद्रधि आराम हो जाती है।

(१९) कालाजीरा, इन्द्रायण और चिरचिरेके बीज—इन सबको जलमें पीसकर पीनेसे कोठेकी विद्रधि आराम हो जाती है।

(२०) सहँजनेकी जड़को पानीसे धोकर, पत्थरपर पीसकर, कपड़ेसे पानीमें छान लो। फिर इसमें "शहद" मिलाकर पीओ। इससे अन्तर्विद्रधि आराम हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(२१) सफेद पुनर्नवाकी जड़ और वरनाकी जड़ बराबर-बराबर लेकर पानीमें औटा लो। इस काढ़ेके पीनेसे अपक्व—कच्ची विद्रधि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) सहँजनेके काढ़ेमें "हींग और सैंधानोन" मिलाकर हर दिन, सवेरे ही, पीनेसे विद्रधि रोग बहुत जल्दी जाता रहता है। परीक्षित है।

(२३) हींग, सैंधानोन, कसीस और शुद्ध शिलाजीत—इनका चूर्ण "वरनाकी छालके काढ़ेमें" मिलाकर पीनेसे अन्तर्विद्रधि, अपक्व

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विद्रधि, अत्यन्त बढ़ी हुई विद्रधि और सब तरहकी भयानक विद्रधि आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(२४) हरड़, सैंधानोन और धायके फूल—इनका चूर्ण "ना-बराबर घी और शहद" में मिलाकर खानेसे बहुत सूजनवाली अन्तर्विद्रधि नाश हो जाती है।

सूचना—यहाँ तक जो चिकित्सा लिखी है वह बिना पकी—कच्ची विद्रधियोंकी लिखी है। विद्रधिके पक जानेपर, व्रण या घावकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये।

पकाने, फोड़ने और भरनेके उपाय।

नोट—अगर लेप वग़ैरः लगानेसे विद्रधि न बैठे, तो नीचे लिखे हुए उपायोंसे उसे पकाना, फोड़ना और घाव भरना चाहिये।

(२५) दन्ती, चीता, गोदन्त, कंजाकी छाल और कनेर—इनको "काँजी"में पीसकर सूजनयुक्त पकी हुई विद्रधिपर लेप करना चाहिये। इससे विद्रधि फूटकर मवाद निकल जाता है। परीक्षित है।

(२६) सनके बीज, मूलीके बीज, सहँजनेके बीज, तिल, सरसों, अलसी, जौ और गेहूँ—इनमेंसे जो मिले उसीकी पुल्टिस बनाकर विद्रधिपर बाँधनेसे विद्रधि पक जाती है।

(२७) करंज, भिलावा, दन्ती, चीता, कनेरकी जड़ और जङ्गली कबूतरकी बीट—इनको पीसकर लगानेसे विद्रधि फूटकर मवाद बहने लगता है।

(२८) परवलके पत्ते, नीमके पत्ते या बट वृक्ष आदिकी छालके काढ़ेसे घाव धोने चाहिए।

नोट—विद्रधि-चिकित्सा और व्रण-चिकित्सामें भेद नहीं है; इसलिए व्रण-चिकित्सामें लिखे हुए नुसख़े बुद्धिमान् विचार-पूर्वक यहाँ भी काममें ला सकता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विद्रधि नाशक उत्तमोत्तम योग।

प्रियंग्वाद्य तैल।

फूल प्रियंगू, धायके फूल, लोध, कायफल, हल्दी और दारुहल्दी—इनको समान-समान लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, कल्क या लुगदी बना लो। लुगदीसे चौगुना तिलीका "तेल" लो और तेलसे चौगुना ऊपरकी दवाओंका "काढ़ा" लो। फिर सबको मिलाकर तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलका नाम "प्रियंग्वाद्य तैल" है। यह तैल विद्रधिके व्रणों या घावोंको भर देता है।

वरुणाद्य घृत।

वरुण छाल, नील झाँटी, सहँजना, लाल सहँजना, जयन्ती, मेढ़ा-शृङ्गी, डहर करञ्ज, करञ्ज, मूर्वा, गणियारी, सफेद झाँटी, पीली झाँटी, तेलाकूचा, अकवन, बड़ी पीपर, चीता, शतावर, बेलगिरी, काकड़ासिंगी, कुशमूल, वृहती और कण्टकारी,—इन सब दवाओंको समान-समान लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना "घी" और घीसे चौगुना "दूध" लेकर घी पका लो। इस घीको ६ माशे सवेरे और ६ माशे शामको "गरम दूधमें" मिलाकर पीनेसे मन्दाग्नि, उत्कट सिरका दर्द, सब तरहकी विद्रधि, अन्तर्विद्रधि, उग्र विद्रधि और पाँच तरहके गुल्म रोग नाश हो जाते हैं। इसपर बहुत-सा जल और अन्न भी पच जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—वरुणादिगणकी औषधियोंसे मेदरोग, सिरका दर्द, गुल्म और अन्तर्विद्रधि—ये सब नाश होते हैं। इस घीसे भी वही सब रोग नाश होते हैं। अन्तर्विद्रधिपर यह घृत रामवाण है।

करञ्ज घृत।

करञ्जके पत्ते, वरुणके फल, चमेलीके पत्ते, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, मोम, मुलेठी, कुटकी, फूल प्रियंगू, कुशकी जड़ और जलबेंत—इनको समान-समान लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना "घी" और घीसे चौगुना "पानी" लेकर घी पका लो। इस घीके लगानेसे दुष्टव्रण शमन होते, नाड़ी-व्रण शुद्ध होते और तत्काल पैदा हुए व्रण भर जाते हैं।

सचित्र

नेपोलियन बोनापार्ट।

नेपोलियन जैसे जगत्विजयी वीरका नाम पृथ्वीपर किससे छिपा है? यह मामूली गृहस्थका लड़का होकर भी अपनी विद्या, बुद्धि, साहस, बल और वीरतासे फ्रान्सका बादशाह हो गया। इतना ही नहीं, इसने अङ्गरेज़ और जर्मनी प्रभृति सभी बादशाहतोंको अपनी उँगलीके इशारेपर नचाया। हरेक बालक, बूढ़े और जवानको इस महावीरकी जीवनी अवश्य देखनी चाहिये। इस ग्रन्थके देखनेसे आपको युद्धकी चालें और राजनीतिके दाव-पेंच मालूम होंगे; फिर नेपोलियनकी कही हुई अनेकों अनमोल वाणियाँ भी मालूम होंगी, जो समय-पर करोड़ों रुपयोंसे भी क़ीमती होंगी। आप न पढ़ें, तो भी अपने बच्चोंको तो इसे अवश्य पढ़ाइये। ऐसे-ऐसे महावीरोंकी जीवनियाँ पढ़नेसे ही बालक महावीर होते हैं। यह उपन्यास नहीं—कामकी चीज़ है। इसमें चित्र भी लबालब भरे हैं, जो सैकड़ों रुपये ख़र्च करके अमेरिका आदि देशोंसे मँगाये गये हैं। मूल्य बड़े साइज़की सचित्र पुस्तकका २॥), डाक ख़र्च ॥।)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

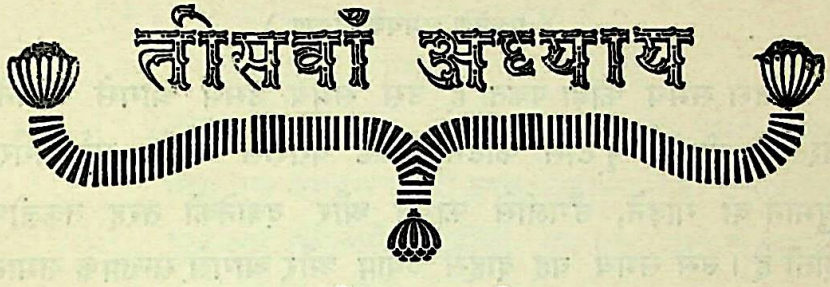

तीसवाँ अध्याय

व्रणरोग-वर्णन।

व्रणशोथका पूर्वरूप।

व्रणको बोलचालकी भाषामें "घाव या क्षत" कहते हैं और शोथको "सूजन" कहते हैं। जिस जगह व्रण होनेवाला होता है, वह जगह पहले फूलती है, इसीसे शरीरके किसी हिस्सेमें सूजन उत्पन्न होनेसे, उसे "व्रणका पूर्वरूप" कहते हैं।

वह सूजन वातज, पित्तज, कफज, सन्निपातज, रक्तज और आगन्तुक—इन भेदोंसे छै तरहकी होती है। इन छहोंके लक्षण पहले लिखे हुए शोथ रोगके समान होते हैं। चूँकि फोड़ेकी सूजन पहले कच्ची रहती है, फिर पकती और फूटती है, इसलिये पक्वापक्व यानी कच्ची-पक्की सूजनके लक्षण आगे लिखते हैं।

व्रण पाकके लक्षण।

वातज व्रणशोथ या फोड़ा रुक-रुककर पकता है; पित्तज जल्दी पकता है; कफज बहुत देरमें पकता है और रक्तज-आगन्तुक पित्तकी सूजनकी तरह बहुत जल्दी पकता है।

व्रण-शोथ या फोड़ा पकनेसे पहले थोड़ा गरम, कड़ा और बदनके-से रंगका होता है। उस समय उसमें वेदना भी कम होती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पच्यमान व्रण-शोथके लक्षण।

(पकनेके समयके लक्षण)

जिस समय फोड़ा पकता है उस समय उसमें आगसे जलाने, नश्तरसे चीरने, चूँटीसे काटने, डण्डे वग़ैरःसे मारने, सूई वग़ैरः चुभाने या गाड़ने, उँगलीसे फाड़ने और दबानेकी तरह तकलीफ होती है। उस समय वह दाहसे व्याप्त और आगसे सन्तप्तके समान होता है। उसका रंग शरीरके चमड़े जैसा न रहकर दूसरा हो जाता है। वह वायु भरे हुए चमड़ेके पुटकी तरह फूल उठता है। रोगी बिच्छूके काटनेकी तरह छटपटाता है; सोते, बैठते, उठते किसी तरह चैन नहीं पड़ता; हर समय घोर पीड़ा होती है; कहीं कल नहीं पड़ती। रोगी ज्वर, प्यास और अरुचि आदिसे पीड़ित रहता है।

खुलासा—जिस समय व्रण-शोथ या फोड़ा पकता है या पकावकी अवस्थामें होता है, उसका रंग बदल जाता है, बड़ी जलन और वेदना होती है, रोगी मारे तकलीफके छटपटाता है; पीड़ाके मारे ज्वर चढ़ आता है, प्यास बहुत लगती है और खाना-पीना अच्छा नहीं लगता। अगर ऐसे लक्षण हों तो समझना चाहिये कि, फोड़ा पक रहा है।

पक्व व्रण-शोथके लक्षण।

(फोड़ा पक जानेके लक्षण)

व्रण-शोथके पक जानेपर नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं:—

(१) दाह या जलन वग़ैरः तकलीफें कम हो जाती हैं।
(२) सूजनमें कुछ ललाई आ जाती है।
(३) सूजनकी ऊँचाई कम हो जाती है।
(४) सूजनमें सुकड़न-सी पड़ती और चमड़ी फटी-सी मालूम होती है।
(५) सूई चुभानेका-सा दर्द होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) बारम्बार खुजली चलती है।

(७) ज्वर आदि उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

(८) उँगलीसे दबाते समय गढ़ा पड़ जाता है।

(९) पखालको उँगलीसे दबानेपर, पखालका पानी जिस तरह एक जगहसे दूसरी जगह चला जाता है; उसी तरह सूजनको उँगलीसे दबानेपर राध एक जगहसे दूसरी जगह चली जाती है।

(१०) भूख लगती है।

गंभीर पाकके लक्षण।

कफसे उत्पन्न हुई सूजनमें रुधिर गंभीर रूपसे पकता है, तो भी पक जानेके लक्षण स्पष्ट होते हैं। जिस समय सूजन पकने लगती है, उस समय लाली और दाह आदि पीड़ा होकर, सूजनमें पक जानेकी अवस्था हो जाती है; यानी शीतलता हो जाती है, सूजनका रंग चमड़ेके रंगके समान हो जाता है, दर्द थोड़ा होता है और छूनेसे पत्थरके समान कठोरता बोध होती है। इस कारण वैद्य इसको निस्सन्देह रक्तपाक कहते हैं।

एक दोषसे पैदा हुई सूजनका भी पकनेके समय तीनों दोषोंसे सम्बन्ध।

वायुके बिना पीड़ा नहीं होती, पित्तके बिना पकाव नहीं होता और कफके बिना राध नहीं होती; इसलिये पकते समय, सब तरहके व्रण-शोथोंका तीनों दोषोंसे सम्बन्ध हो जाता है।

नोट—ऊपर लिखा जा चुका है कि, कफसे राध होती है; किन्तु कुछ विद्वान् कहते हैं कि, रुधिरसे राध होती है। उनका कहना है कि पित्त—वायु और कफको कम करके—ज़बर्दस्ती खूनको पकाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पके हुए फोड़ेसे राध न निकलनेका नतीजा।

जिस तरह सूखी घासमें पड़ी हुई आग, हवाकी मददसे, घासको जलाकर खाक कर देती है; उसी तरह पके हुए व्रण या फोड़ेमेंसे राध न निकालनेसे वह मांस, शिरा और स्नायुओंको खा जाती है।

वैद्यके गुण-दोष।

जो वैद्य अपक्व—कच्ची, पच्यमान—पकती हुई और अच्छी तरहसे पकी हुई सूजनको जानता है, वही पूर्ण वैद्य है। जो इन बातोंको नहीं जानते, वे चोर हैं; क्योंकि वे केवल धन हड़पना ही जानते हैं।

व्रणरोग-निदान।

(१) शारीरिक, और (२) आगन्तुक—इन भेदोंसे व्रण दो प्रकारका होता है। वातादि दोषोंके प्रकोपसे जो होता है, वह "शारीरिक" और शस्त्रादिकी चोटसे जो होता है, वह "आगन्तुक" कहलाता है।

व्रणोंके लक्षण।

वातज व्रण देखने और छूनेमें सख्त होता है। उसमेंसे मवाद थोड़ा निकलता है, पर पीड़ा बहुत होती है। उसमें सूई चुभानेका-सा दर्द होता है। वह फड़कता है और उसका रंग ललाई मायल काला होता है।

पित्तज व्रणमें प्यास, मोह, ज्वर और दाह ये उपद्रव होते हैं। वह पकता, फूटता और मवाद देता है तथा उसमें बदबू आती है।

कफज व्रण अत्यन्त लिबलिबा, भारी, चिकना, निश्चल, मन्द पीड़ायुक्त, पाण्डुवर्ण, कम मवाद देनेवाला और बहुत दिनोंमें पकने-वाला होता है।

रक्तज व्रण रुधिरसे पैदा होता और लाल रंगका होता है। उसमेंसे खून बहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

द्वन्द्वज व्रण एक दोष और रुधिरके सम्बन्धसे होता है एवं सन्निपातज दो दोष और रुधिरके सम्बन्धसे होता है।

दुष्ट व्रण वह होता है, जिसमेंसे बदबूदार मवाद और दूषित खून बहता है। यह ऊँचा, बहुत दिनोंका, अत्यन्त दुर्गन्धादि युक्त और शुद्ध व्रणके लक्षणोंके विपरीत लक्षणोंवाला होता है। खुलासा यह है कि, दुष्ट व्रणसे खून और बदबूदार पीप बहती है, घाव सड़ता और बदबू आती है।

शुद्ध व्रण—जो व्रण जीभके नीचेके भागके समान मुलायम, साफ, चिकना, थोड़ी पीड़ावाला, उत्तम व्यवस्थायुक्त और स्रावरहित होता है, उसे शुद्ध व्रण कहते हैं।

नोट—गन्ध होनेसे व्रण शुद्ध होता है, उससे उसमें नरमी होती है और फिर वह साफ होकर भरने लगता है, इसलिए व्रणमें गन्धका होना अच्छा है।

भरनेवाला व्रण—जिस व्रणका रंग कबूतरके रंगके समान हो, जिसमेंसे मवाद न निकले, जो स्थिर हो और जिसमें रवे-से मालूम हों, वह व्रण भरनेवाला है।

नोट—वातादि दोषोंके प्रकुपित होनेसे, कसरत वग़ैरः करनेसे, चोट वग़ैरः लगनेसे, अजीर्णसे, हर्ष, क्रोध और भयसे भरा हुआ व्रण भी फट जाता है।

साध्यासाध्य लक्षण।

जो व्रण चमड़े और मांसमें पैदा हुआ हो, जो मर्मस्थानमें न पैदा हुआ हो, जो जवान और बुद्धिमान पुरुषके हुआ हो, जो नया हो तथा हेमन्त, शिशिर और वसन्त यानी शीतकाल और वसन्तमें हुआ हो, वह सुखसाध्य होता है।

जिस व्रणमें सुखसाध्य व्रणके कुछेक लक्षण होते हैं, वह कष्टसाध्य होता है और जिसमें सुखसाध्य व्रणके लक्षण क़तई नहीं होते, वह असाध्य होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोढ़रोगी, विषरोगी, क्षयरोगी और मधुमेह रोगीके पैदा हुआ व्रण अत्यन्त कष्टसाध्य होता है।

जिस व्रणमेंसे चरबी, मेद, मज्जा और मस्तिष्क स्नेह बहते हैं अगर वह व्रण आगन्तुक होता है तो साध्य होता है और यदि वातादि दोषोंसे होता है, तो असाध्य होता है।

जिन व्रणोंमें शराब, अगर, घी, कमल, चम्पाके फूल और चन्दन आदिकी-सी सुगन्ध और दिव्य गन्ध आती है, उनके रोगी मर जाते हैं; क्योंकि ऐसे व्रण मरनेवालोंके ही होते हैं।

जो व्रण मर्मस्थानोंमें पैदा हुए हों और उनमें वेदना अधिक होती हो, जिन व्रणोंके भीतर जलन और ऊपर ठण्डक हो अथवा जिनमें बाहर जलन और भीतर ठण्डक हो—वे इलाज़ करने लायक़ नहीं।

जिस व्रणवालेका मांस और बल क्षीण हो गया हो, जो श्वास, खाँसी और अरुचिसे पीड़ित हो,—वह चिकित्सा करने योग्य नहीं।

जो व्रण मर्मस्थानोंमें पैदा हुए हों और जिनमेंसे राध-लोहू बहुत निकलते हों वे तथा जो अच्छे-से-अच्छा इलाज करनेपर भी आराम न होते हों, वे व्रण वैद्यके त्याग देने योग्य हैं।

व्रण-चिकित्सा।

"सुश्रुत"में व्रणपर साठ उपक्रम लिखे हैं, उन सबको लिखनेसे तो ग्रन्थ बहुत बढ़ जायगा; अतः हम मुख्य ग्यारह उपाय लिखते हैं:—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(क) लेप करना।
(ख) दवाओंके काढ़ोंके तरड़े देना। } बैठानेके लिए।
(ग) सेक करना।
(घ) खून वग़ैरः निकालना।
(ङ) पकाना।
(च) फोड़ना।
(छ) मवाद निकालना।
(ज) घावको साफ करना।
(झ) घावको आराम करना।
(ञ) घावको सुखाना।
(ट) घावकी जगहको शरीरके रंगसे मिला देना।

सूजन नाशक लेप।

जिस तरह जलते हुए मकानमें पानी डालनेसे आग शान्त हो जाती है;उसी तरह सूजनपर दवाओंका लेप करनेसे पीड़ा शान्त हो जाती है।

वातज व्रण-शोथमें चिकना, खट्टा और नमक मिला लेप करना चाहिये। पित्तजमें चिकना, शीतल और दूध-मिला लेप करना चाहिये। कफजमें सुहाता गरम "क्षार और गोमूत्र" मिला लेप करना चाहिये।

रातमें लेप नहीं करना चाहिये। अगर किया हुआ लेप गिर जाय, तो उसे उठाकर फिर नहीं करना चाहिये। अगर किया हुआ लेप सूख जाय, तो उसे तत्काल छुड़ा देना चाहिये एवं बासी लेप नहीं करना चाहिये।

अगर सूजन न पकी हो, गंभीर हो तथा रुधिर और पित्तसे पैदा हुई हो, तो वैद्य उसपर रातमें भी लेप कर सकता है।

(१) बिजौरेकी जड़, बालछड़, देवदारु, सोंठ, रास्ना और अरणी—इनको मिलाकर लेप करनेसे वातकी सूजन नाश हो जाती है।

(२) सिहोंड़ेकी छालको "काँजी"में पीसकर और "घी" मिलाकर लेप करनेसे वातज व्रण-शोथ नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) दूब, नरसलकी जड़, मुलेठी, चन्दन, पद्माख, खस, सुगन्धवाला और कमल—इन सबका लेप करनेसे पित्तकी सूजन नष्ट हो जाती है ।

(४) बड़, गूलर, पाखर और बैंत—इनकी छालोंको पीसकर और "घी"में मिलाकर लेप करनेसे पित्तज सूजन नाश हो जाती है ।

(५) बड़, गूलर, पीपल, पाखर, बैंत, बेल, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, मँजीठ, मुलेठी, जमीकन्द और गेरू—इन सबको एकत्र पीसकर और "सौ बार धुले हुए घी"में मिलाकर लेप करनेसे रुधिरमें प्रसन्नता होती तथा जलन, पकाव, पीड़ा, मवाद जाना और सूजन ये सब दूर हो जाते हैं । यह लेप पित्तकी सूजनपर सर्वश्रेष्ठ है ।

नोट—ऊपरके नं० ४ और नं० ५ लेप रक्तज और आगन्तुक सूजनपर भी हितकारी हैं ।

(६) मेढ़ासिंगी, वनतुलसी, मँजीठ, देवदारु, काली निशोथ और असगन्ध—इनका लेप कफकी सूजनको नाश करता है ।

(७) पीपर, पुरानी खल, सहँजनेकी छाल, रेती और हरड़—इनको गोमूत्रमें पीसकर और जरा गरम करके लेप करनेसे कफकी सूजन नाश हो जाती है ।

(८) पुनर्नवा, देवदारु, सहँजना, दशमूलकी दवाएँ और सोंठ—इनको पीसकर और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप करनेसे कफ-वात जनित शोथ नाश होती है ।

सूजनपर तरड़े ।

जिस तरह आगपर पानी डालनेसे आग शान्त होती है; उसी तरह व्रण-शोथको काढ़े वग़ैरःसे सींचने या उनके तरड़े देनेसे दोष रूपी अग्नि तत्काल शान्त हो जाती है ।

(१) वातनाशक काढ़े, तेल, मांस-रस, घी और काँजीको गरम करके वातज सूजनपर सींचना चाहिये ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) शीतल औषधियोंके रसों, दूध, घी, मद्य, खाँड, ईख-रस और पित्तनाशक काढ़ोंके तरड़े देनेसे पित्तज, क्षतज और रक्तज सूजन नाश हो जाती हैं।

(३) कफनाशक औषधियोंके शीतल काढ़ों, तेल, क्षार-जल और मूत्रके तरड़े देनेसे कफज सूजन नाश हो जाती है।

विस्लापन कर्म ।

कठिन सूजनपर विस्लापन कर्म किया जाता है। "सुश्रुत" में लिखा है कि, वैद्य सूजनपर अभ्यंग करके, स्वेद देकर, धीरे-धीरे बाँसकी नली, हाथके तलवे या अंगूठेसे उसे घिसे।

उपनाह स्वेद ।

अगर सूजन वेदनायुक्त, दारुण और कठिन हो, तो उसपर स्वेदन करना चाहिये। अगर सूजन कच्ची हो या पक गई हो, तो उसपर भी उपनाह स्वेद करना चाहिये। उपनाह स्वेदसे कच्ची सूजन शान्त हो जाती और पकनेवाली फौरन पक जाती है।

सब तरहके स्नेहपान, सब तरहके उपनाह स्वेद, प्रलेप और परिषेक या सेक—वातज व्रण-शोथमें प्रयोग करने चाहिये।

(१) सहँजना, पीपल, सैंधानोन, सोंठ, सनके बीज, कपासके बिनौले, अलसी, कुल्थी, तिल, जौ, सरसों, काली तुलसी, मूली और सोया—इनमेंसे सब या जितनी दवाएँ मिल सकें लेकर, खट्टे रसके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर उसे गरम करके धीरे-धीरे सूजनपर विधिपूर्व्वक स्वेद दो। इस तरह करनेसे वातज सूजन दूर हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं। इस उपनाह स्वेदको "शोभाञ्जनादि" कहते हैं।

(२) पुनर्नवा, देवदारु, सोंठ, सहँजना और सरसों—इनको खट्टे रसमें पीसकर सुहाता-सुहाता गरम लेप करनेसे सब तरहकी सूजन दूर हो जाती है। इस लेपको "पुनर्नवादि लेप" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रक्तमोक्षण—खून निकालना।

तत्काल पैदा हुई सूजनकी वेदना और पाक-शान्तिके लिए सूजनसे खून निकालना चाहिये। सारी क्रियाएँ एक ओर, और खून निकालना एक ओर है। सारी क्रियाएँ जितना काम करती हैं, उतना काम एक खून निकालनेसे हो जाता है। वेदनाकी जड़ खून है। खून न हो, तो वेदना ही न हो। विशेष करके सींगी लगवाकर, जौंक लगवाकर या पछने लगाकर खून निकालना चाहिये।

पकाना या पाचन करना।

जो सूजन लेप वग़ैरःसे शान्त न हो, उसपर पाचनीय पदार्थ बाँधने चाहिए।

सनके बीज, मूलीके बीज, सहँजनेके फल, तिल, सरसों, अलसी, सत्तू, सुराका बीज एवं और सब गरम पदार्थ पकानेके लिये प्रयोग करने चाहिये। इनमेंसे किसी भी चीज़को पानीके साथ सिलपर पीसकर टिकिया बाँधनेसे सूजन पक जाती है। जैसे,—अलसीको पीसकर और पानीमें घोलकर लेईकी तरह पकानेसे पुल्टिस बन जाती है। इसको सुहाती-सुहाती गरम बाँधनेसे फोड़ा वग़ैरः पक जाते हैं। गेहूँके आटेकी पुल्टिस बाँधनेसे भी फोड़ा पक जाता है।

भेदन करना या फोड़ना।

ज़िसमें भीतर राध भर रही हो, जिसका मुँह नहीं हुआ हो, जो भीतरसे ख़ाली हो, उसको और नाड़ीव्रणको नश्तर या दवाओंसे फोड़ना चाहिये।

जो व्रण शस्त्र या नश्तरसे चीरनेसे आराम होता दीखे, उसे स्थानानुसार शस्त्रसे चीरकर, उसमेंसे दोष निकाल देने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बालक, बूढ़े, चीर-फाड़ न सह सकनेवाले, क्षीण मनुष्य, डरपोक और स्त्री—अगर इनके मर्मस्थानोंमें व्रण पैदा हो, तो उसे दवाओंके लेपसे फोड़ना चाहिये—शस्त्रसे न चीरना चाहिये।

(१) करंज, भिलावे, जमालगोटा, चीता, कनेर, कबूतरकी बीट और गिद्धकी बीट—इनका लेप करनेसे व्रण फूट जाता है।

(२) चिरचिरा, सज्जीखार या जवाखार आदि खारोंके लेपसे व्रण फूट जाता है।

(३) हाथीके दाँतको पानीमें बारीक पीसकर, बूँद-भर लगा देनेसे अत्यन्त कठोर सूजन भी नष्ट हो जाती यानी फूट जाती है।

पीड़न या दबाकर मवाद निकालना।

चिकनी दवाओंकी छालों और जड़ोंको पीसकर लेप करनेसे सूजन दब जाती है। जौ, गेहूँ और उड़दको पीसकर और लूपरी बनाकर लगानेसे सूजन दब जाती है।

शोधन करना या साफ करना।

व्रणमेंसे राध निकल जानेपर "परवल और नीमके पत्तोंका काढ़ा" बनाकर, उस काढ़ेसे व्रणको धोना चाहिये। इस तरह धोनेसे व्रण साफ हो जाता है।

वातके व्रणको "दशमूलके काढ़े" से धोना चाहिये। पित्तके व्रणको "बड़ आदि दूधवाले वृक्षोंकी छालके काढ़े" से धोना चाहिये और कफज व्रणको "आरग्वधादि गणके काढ़े"से धोना चाहिये।

(१) पीपर, गूलर, पिलखन, बड़ और बैंत—इनकी छालोंके काढ़ेसे धोनेसे व्रणकी सूजन और उपदंशके घाव आराम हो जाते हैं।

(२) तिल, सैंधानोन, मुलेठी, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी और निशोथ—इनको पीसकर और "घी"में मिलाकर लेप करनेसे घाव शुद्ध हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) अकेली सारिवाकी जड़को पीसकर लेप करनेसे सब तरहके व्रण शुद्ध हो जाते हैं।

(४) नीमके पत्ते, तिल, दन्ती, निशोथ, सैंधानोन और शहद—इनका लेप व्रणको साफ करता और आराम भी करता है।

(५) नीमके पत्ते पीसकर लेप करनेसे व्रण साफ हो जाता और भर जाता है।

(६) नीमके पत्तोंकी सिलपर पिसी लुगदी व्रणके मुँहमें रखनेसे सन्धियों और मर्मस्थानोंमें पैदा हुए सूक्ष्म व्रण साफ हो जाते हैं।

(७) तिलोंको सिलपर पीसकर लगानेसे व्रण साफ होता और भरता है।

(८) हरड़, निशोथ, दन्ती, कलिहारी, दूना शहद, सैंधानोन, नीमके पत्ते, घी, दारुहल्दी और मुलेठी—इनको पीसकर लगानेसे व्रण साफ होता और भरता है।

रोपण यानी घाव भरना।

(१) जिस व्रणमेंसे सड़ा हुआ मांस निकल गया हो और व्रण भरता न हो, उसपर तिलोंका कल्क "शहद" मिलाकर लगाओ; व्रण भर जायगा।

नोट—तिलोंको सिलपर पीसकर लुगदी कर लो और उसमें "शहद" मिला लो। इसके बाद व्रणपर लगा दो।

(२) शहद और शराब मिलाकर लेप करनेसे घाव भर जाता है।

(३) असगन्ध, कुटकी, लोध, कायफल, मुलेठी, मँजीठ और धायके फूल—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर लगानेसे व्रण अच्छी तरहसे भर जाता है।

(४) काली तुलसीके पत्ते पीसकर लेप करनेसे गम्भीर व्रण भी भर जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) अर्जुन, गूलर, पीपल वृक्ष, जामुन, कायफल और लोध—इनकी छालोंका चूर्ण बनाकर व्रणोंपर बुरकनेसे निश्चय ही व्रण भर जाते हैं।

(६) फूल प्रियंगू, धायके फूल, मुलेठी और लाख—इनका महीन चूर्ण बुरकनेसे भयंकर व्रण भी भर जाता है।

(७) जौका आटा और मुलेठीका चूर्ण "घी और तेल"में मिलाकर सुहाता-सुहाता गरम लेप करनेसे व्रणकी जलन और पीड़ा आराम हो जाती है।

(८) करंज, नीम और निर्गुण्डी—इनका लेप करनेसे व्रणमें पड़े हुए कीड़े नाश हो जाते हैं।

(९) लहसनका लेप करनेसे व्रणके कीड़े नाश हो जाते हैं।

(१०) नीम और हींगका लेप करनेसे व्रणके कीड़े नाश हो जाते हैं।

(११) नीमके पत्ते, बच, हींग, घी, सैंधानोन और सरसों—इनकी धूनी देनेसे व्रणके कीड़े, खुजली और पीड़ा ये सब नष्ट हो जाते हैं।

(१२) कड़वे परवल, नीमकी अतर छाल, विजयसार, आमले, हरड़ और बहेड़ा—इनके काढ़ेमें "शुद्ध गूगल" मिलाकर, सवेरे ही पीनेसे, विसर्प, विस्फोटक और दुष्ट व्रण शान्त हो जाते हैं।

ऊपर लिखी व्रण-चिकित्साका खुलासा।

उधर हम व्रण आराम करनेकी ग्यारह तरकीबें लिख आये हैं। सभीका काम हरेक व्रणमें नहीं पड़ता। अगर व्रण कच्चा हो, तो उसे खून निकालकर, हल्का जुलाब देकर, दवाएँ लगा-खिलाकर और स्वेद करके यानी सेककर बैठाना चाहिये। जैसे—धतूरेकी जड़ और सैंधानोन एकत्र पीसकर और गरम करके लेप करने अथवा पंचक्षीरी वृक्षोंकी छाल "घी"में पीसकर लेप करनेसे व्रण-शोथ बैठ जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर खून निकालने, तरड़े देने, लेप करने और सेक करनेसे व्रण-शोथ न बैठे, तो उसे पकाकर पीप या राध निकालनी चाहिये। पकानेके लिए अलसी या गेहूँ आदिकी पुल्टिस बनाकर व्रणपर बाँधनी चाहिये।

जब व्रण पुल्टिस वग़ैरः बाँधनेसे पक जाय, तब उसे नश्तरसे चीरना चाहिये अथवा करञ्ज, भिलावे, दन्तीमूल, चीतेकी जड़ और जङ्गली कबूतरकी बीट पीसकर उसपर लगानी चाहिये। अथवा गायका दाँत घिसकर लगाना चाहिये। इन तरकीबोंसे पका हुआ व्रण फूट जायगा। अगर व्रण-शोथ बहुत ही सख़्त हो, तो हाथीदाँत पानीमें घिस-घिसकर लगाना चाहिये।

जब व्रण फूट जाय, तब उसके भीतरका मवाद मुँहपर इकट्ठा करके निकाल देना चाहिये। इस कामके लिए जौ, गेहूँ और उड़दके आटेका लेप करना चाहिये; पर लेप व्रण या फोड़ेके मुँहपर न करना चाहिये, क्योंकि मुँहसे ही मवाद बाहर निकलता है। ऊपर लिखा लेप लगानेसे सारा मवाद खिंचकर मुँहकी राहसे बाहर निकल जाता है। मवाद निकल जानेपर, जब क्षत या घाव हो जाय, उसको साफ करना चाहिये। इस कामके लिये परवलके पत्तों और नीमके पत्तोंका काढ़ा उत्तम है। इस काढ़ेसे घावको धोनेसे घाव शुद्ध और साफ हो जाता है। इधर-उधर लगा हुआ ख़राब मवाद निकल जाता है। अगर कीड़े पड़ गये हों, तो कीड़ोंको नाश करनेवाली दवा काममें लानी चाहिये। (देखो पृष्ठ ८४७ के नं० ८ से ११ तक)

जब घाव साफ हो जाय, उसपर घावको भरनेवाली या आराम करनेवाली दवा लगानी चाहिये। हल्दी, दारुहल्दी, सैंधानोन, नीमके पत्ते, मुलेठी, निशोथ और काले तिल—इनको पीसकर और "घी" में मिलाकर लेप करनेसे घाव शुद्ध हो जाते और भर आते हैं। यह बड़ा उत्तम परीक्षित नुसख़ा है। अथवा अनन्तमूलका काढ़ा पीना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चाहिये और उसीका लेप भी करना चाहिये। फूटे हुए फोड़े या व्रण अथवा घावपर "अनन्तमूलका लेप" अपूर्व्व चमत्कार दिखाता है। अथवा नीमके पत्ते, काले तिल, जमालगोटेकी जड़, निशोथ, सैंधानोन और शहद बराबर-बराबर लेकर, पीस-कूट और मिलाकर तथा उनकी टिकिया-सी बनाकर व्रणपर बाँधनी चाहिये। यह नुसखा भी घाव भरनेमें रामबाण है। विषमारके पत्तोंकी टिकिया बाँधनेसे तो सड़े-से-सड़े फोड़े आराम हो जाते हैं। अथवा करञ्जघृत, व्रणराक्षस तैल या जात्याद्य घृत वगैरःसे काम लेना चाहिये। इनसे घाव जल्दी ही आराम होकर सूख जाते हैं। इनके बनानेकी विधि पृष्ठ ८५४ में लिखी हैं।

जब घाव आराम होकर सूख जाय, उस जगह ऐसी दवा लगानी चाहिये, जिससे व्रण-स्थानका चमड़ा शरीरके चमड़ेसे रंगमें मिल जाय।

पथ्यापथ्य।

हाँ, केवल दवाएँ करने और पथ्यापथ्यका लिहाज न रखनेसे व्रण आराम नहीं हो सकते। जिस तरह और रोगोंमें पथ्य पालन और अपथ्य त्यागनकी जरूरत है; उसी तरह व्रण रोगमें भी है। व्रण रोगकी हालतमें,—परिश्रम करना, रातमें जागना, दिनमें सोना और मैथुन करना अतीव हानिकारक हैं। परिश्रम करनेसे सूजन आती है, रातमें जागनेसे लाली बढ़ती और सूजन आती है; दिनमें सोनेसे सूजन, लाली और पीड़ा तीनों बढ़ती हैं तथा स्त्री-प्रसंग करनेसे सूजन, लाली, पीड़ा और मृत्यु ये चारों होती हैं। कितने ही व्रण-रोगी या फोड़ेवाले अच्छे-से-अच्छा इलाज होनेपर भी, अज्ञानवश, उस समय मैथुन करनेसे जानसे चले गये। अतः चिकित्सकको लाजिम है, कि ये बातें अपने रोगीको बता दे। व्रण-रोगीको खट्टा दही, खट्टा साग, जलजीवोंका मांस, दूध और भारी अन्न भी हानिकारक हैं, अतः त्याज्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जांगल देशके पशुओंका मांस-रस, चौलाई, बथुआ, कच्ची मूली, बैंगन, परवल, करेले, अनार, आमले, मूँगका रस और चिकने, पतले और पुराने शालि चावलोंका किञ्चित् गरम भात—ये सब पथ्य हैं। तरकारी घीमें भूँजकर और सैंधानोन डालकर खानी चाहिये। इन पदार्थोंसे व्रण नष्ट हो जाता है।

सद्योव्रण-वर्णन।

सद्योव्रण या आगन्तुक व्रणके लक्षण।

अनेक तरहकी धारवाले और अनेक तरहके मुँहवाले शस्त्रोंके अनेक स्थानोंमें लग जानेसे नाना प्रकारकी आकृतिवाले व्रण हो जाते हैं। वे छिन्न, भिन्न, विद्ध, क्षत, पिच्चित और घृष्ट,—इन नामोंसे छै तरहके होते हैं।

छिन्नके लक्षण—जो व्रण तिरछा, सीधा अथवा लम्बा हो और जिसमें शरीरका एक अंग कटकर गिर जाय या न भी गिरे, वह "छिन्न व्रण" है।

भिन्नके लक्षण—बर्छी, भाले, तीर, तलवार, दाँव या सींगसे कोठेके आमाशयादिक छिद जायँ और उनमेंसे कुछ खून भी निकले, उसको "भिन्न व्रण" कहते हैं।

नोट—आमाशय, अन्नाशय, पक्वाशय, मूत्राशय, रक्ताशय, यकृत, हृदय, तिल्ली और मलाशय प्रभृति स्थानोंको "कोठा" कहते हैं। इस कोठेमें हथियार लग जानेसे खून भर जाता है; तब ज्वर और दाह होता है तथा गुदा, मुँह और नाकसे खून निकलता है। मूर्च्छा, श्वास, प्यास, अफारा, अरुचि, मल-मूत्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और अधोवायुकी रुकावट; पसीने अधिक आना, नेत्रोंमें लाली, मुँहमें लोहेकी-सी गन्ध, हृदय और पसलियोंमें दर्द—ये सब लक्षण होते हैं। ये साधारण लक्षण हैं।

आमाशयमें खून भर जानेसे खूनकी क़य होती हैं, पेट फूल जाता और भयानक शूल होता है। ये विशेष लक्षण हैं।

पक्वाशयमें खून भर जानेसे अत्यन्त पीड़ा और शरीरमें भारीपन होता है तथा कमरसे नीचेका शरीर शीतल हो जाता है। ये भी विशेष लक्षण हैं।

विद्ध व्रणके लक्षण—आमाशयको छोड़कर और किसी अङ्गमें बारीक नोकवाले सूई और काँटे आदिके छिद जानेसे वह अङ्ग ऊपरको ऊँचा आ जाता है। जब यह शल्य यानी सूई वग़ैरः निकल जाते हैं या ऊपरको आ जाते हैं, तब "विद्ध व्रण" कहते हैं।

नोट—जिस व्रणमें काँटा या सूई वग़ैरः गड़ी हुई चीज़ रह जाती है—नहीं निकलती है, उस व्रणका रंग कलाई मायल लाल होता है, सूजनके साथ बहुत-सी छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती हैं, उनसे बारम्बार रुधिर बहता है तथा उस व्रणका मांस गरम और बबूलेकी तरह ऊपरको उठा हुआ होता है।

क्षतके लक्षण—जो व्रण न अत्यन्त छिदा हो और न अत्यन्त कटा हो एवं दोनों लक्षणोंवाला हो तथा शरीरमें टेढ़ा-मेढ़ा हो, उसे "क्षत" कहते हैं।

पिच्चितके लक्षण—जो अङ्ग हड्डी समेत—चोट लगनेसे अथवा ऊपर भारी बोझ पड़नेसे—पिच जाय तथा उसमें मज्जा और खून भरा हो, उसे "पिच्चित व्रण" कहते हैं।

घृष्टके लक्षण—घिसनेसे, रगड़से, चोटसे अथवा और कारणोंसे अगर किसी अङ्गका चमड़ा छिल जाय और उस छिले हुए अङ्गसे आगके समान गरम खून निकले, उसे "घृष्ट व्रण" कहते हैं।

नोट—इनके सिवाय मर्म स्थानोंमें चोट लगनेसे भी व्रण होते हैं। उनकी चिकित्सा बड़ी कठिन है और प्रायः रोगी डाक्टरोंके पास जाते हैं, इससे हम उनके लक्षण प्रभृति ग्रन्थ बढ़नेके भयसे नहीं लिखते।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सद्योव्रण चिकित्सा।

(१) वैद्यको "आगन्तुक" व्रण समझकर, रक्तपित्त और दाहको नाश करनेवाली यानी खूनकी और पित्तकी गरमीको नाश करनेवाली "शीतल क्रिया" करनी चाहिये।

(२) तत्कालके व्रणके कुपित होनेपर—रोगीके बलाबलका विचार करके—वमन, विरेचन, लङ्घन, भोजन और रक्तमोक्षण—ये सब उपचार करने चाहिये। किसीने कहा है:—

क्रुद्धे सद्योव्रणे युंज्यादुर्द्धं चाधश्च शोधनम्।

अर्थात् सद्योव्रण कुपित हो जाय, तो ऊर्ध्व और अधः शोधन करना चाहिये; यानी वमन आदिसे ऊपरकी और विरेचन आदिसे नीचेकी शुद्धि करनी चाहिये।

"बङ्गसेन"में लिखा है, घिसने अथवा रगड़ खानेसे जो व्रण होता है, उसमेंसे रुधिर बहुत कम निकलता है, इसलिये पित्तके कुपित होनेसे वह शीघ्र ही पक जाता है, अतः उसमें उपरोक्त चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) अङ्ग छिन्न, भिन्न या विद्ध हो जाय और घावोंसे खून निकलने लगे, तो रुधिरके क्षय होनेसे "वायु" अत्यन्त पीड़ा करती है। मतलब यह है कि, खूनके बहुत बहनेसे "वायु" कुपित होकर अत्यन्त वेदना करती है। अगर ऐसा व्रण हो, तो रोगीको स्नेहपान कराना चाहिये और व्रणपर वातनाशक औषधियोंसे परिषेक, लेप, स्वेदन,—उपनाह स्वेद करना चाहिये और स्नेह वस्ति प्रदान करनी चाहिये। किन्तु सद्योव्रणमें ये क्रियाएँ सात दिन तक करनी चाहिये। सात दिन बाद शरीर व्रणके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(४) छिन्न, भिन्न और विद्ध व्रणको तत्काल रेशमसे बाँध देना चाहिये। इस तरह करनेसे रोगी सुखी होता है, उसे दुःख भोगना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं पड़ता। अथवा "अजवायन और नमक" की पोटली बनाकर, आगपर तवा रखकर, तवेपर पोटलीको तपा-तपाकर उससे व्रणको बारम्बार सेकना चाहिये। अथवा इकट्ठे हुए दूषित खूनको सींगी या तूम्बीसे निकलवा देना चाहिये।

(५) तत्काल पैदा हुए व्रणमें अगर शूल चलते हों, तो गुनगुने घीमें "मुलेठीका पिसा-छना चूर्ण" मिलाकर, उस घीको व्रणपर सींचना चाहिये; यानी उस घीके तरड़े देने चाहिये तथा कसैली, मीठी और शीतल दवाओंसे चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) अगर व्रणका खून आमाशयमें रुका हो, तो वमन करानी चाहिये और अगर पक्वाशयमें रुका हो, तो निस्सन्देह विरेचन कराना चाहिये।

(७) बंसलोचन, अरण्डकी जड़, गोखरू और पाषाणभेदके काढ़ेमें "हींग और सैंधानोन" मिलाकर पिलानेसे कोठेमें रुका हुआ खून निकल जाता है।

(८) तलवार आदिसे हुए घावमें तत्काल "गंगेरनकी जड़का रस" भर देनेसे वेदना दूर हो जाती है।

(९) आगन्तुक व्रण-रोगीको जौ, बेर और कुलथीका रस चिकनाई रहित भातके साथ खाना चाहिये अथवा "सैंधानोन" डालकर यवागू पीनी चाहिये।

(१०) हथियार वग़ैरः लगनेसे हुए घावपर खून बन्द करनेको, जलकी पट्टी या जलमें भीगा हुआ कपड़ा बाँध देनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है। अपामार्ग या चिरचिरेके पत्तोंका रस या दूबका रस सींचनेसे भी खून गिरना बन्द हो जाता है। "कपूर" मिला हुआ सौ बारका धोया घी घावमें भरकर पट्टी बाँध देनेसे घाव नहीं पकता और वेदना भी नहीं होती। इस घीसे घाव निश्चय ही भर जाता है। लाख रुपयेका नुसख़ा है। पर यह घी बिना पके घावमें ही लगाना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) कुत्तेकी जीभ सुखाकर पीस-छान लो। इस जीभके चूर्णको घावपर बुरकनेसे घाव फौरन भरने लगता है।

(१२) क्षत और विद्ध व्रण आराम करनेके लिए "चूकेका तेल" अत्युत्तम है।

(१३) मनुष्यके सिरकी खोपड़ीकी हड्डी "गोमूत्र"के साथ पीसकर घावपर लेप करनेसे वह घाव भी तत्काल भर जाता है, जो सैकड़ों दवाओंसे न भरा हो।

व्रण नाशक उत्तमोत्तम योग।

जात्यादि घृत।

चमेलीके पत्ते, नीमके पत्ते, परवलके पत्ते, कुटकी, दारुहल्दी, हल्दी, सारिवा, मँजीठ, हरड़, मोम, नीलाथोथा, मुलेठी और कंजाके बीज,—इनको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। अगर यह लुगदी एक पाव हो, तो एक सेर घी, चार सेर पानी और लुगदीको मिलाकर घी पका लो।

इस घीको घावपर लगानेसे छोटे मुँहवाले, मर्मस्थानमें होनेवाले, निरन्तर मवाद देनेवाले, गम्भीर, वेदनायुक्त और भीतरकी तरफ जानेवाले व्रण शुद्ध होते और भर जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—"भावप्रकाश"में घीके पक जानेके बाद "मोम" डालनेकी राय दी गई है। बहुत-से वैद्य इस घृतमें "हरड़"की जगह "खसकी जड़" लेते हैं।

जात्यादि तैल।

चमेलीके पत्ते, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते, कंजाके पत्ते, कुटकी, हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, कंजाके बीज, हरड़, पीपर, नील कमल, लोध, पद्माख, गौरीसर, मँजीठ, कूट, मोम और नीलाथोथा—इन सबको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक-एक तोले लेकर जलके साथ सिलपर पीस लो। जितनी यह लुगदी हो, उससे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर और तीनोंको मिलाकर पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतार-कर छान लो।

इस तैलके लगानेसे विषजनित व्रण, कच्छुकहारी, विसर्प, विषैले कीड़ेका काटा हुआ व्रण, तत्काल हथियारसे हुआ व्रण, जलकर हुआ घाव, विद्ध व्रण, नाखूनका घाव और दाँतका घाव—ये सब आराम हो जाते हैं। इस तैलसे दूषित मांस और पीप-राध निकलकर घाव भर जाता और सूख जाता है। यह तैल व्रण भरने और शोधनेके लिए परमोपयोगी है। परीक्षित है।

विपरीत मल्ल तैल।

सरफोंका, कलिहारी, चीता, हींग, लहसन, सँभालू, अतीस, कूट, सिन्दूर और मीठा विष—इन सबको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना "सरसोंका तेल" और तेलसे चौगुना पानी—तीनोंको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे दुष्टव्रण तथा अनेक दवाओंसे भी न आराम होनेवाले नाड़ीव्रण—नासूर आराम हो जाते हैं। यह तैल सभी तरहके व्रणोंपर लगाया जा सकता है।

दूर्वाद्य तैल।

कबीले या दारुहल्दीमेंसे किसी एककी सिलपर पिसी लुगदी पाव भर, एक सेर तिलका तेल और चार सेर दूबका स्वरस—इन तीनोंको मिला-कर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे घाव बहुत जल्दी भर जाते हैं।

तिक्ताद्य घृत।

कुटकी, मोम, हल्दी, मुलेठी, करंजके पत्ते और फल, परवलके पत्ते, नीमके पत्ते और चमेलीके पत्ते—इनको बराबर-बराबर लेकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी तथा लुगदी इन तीनोंको मिलाकर घी पका लो। इस घीसे व्रण बहुत जल्दी आराम हो जाते हैं।

व्रणराक्षस तैल।

पारा, गन्धक, हरताल, सिन्दूर, मैनसिल, लहसन, बच्छनाग विष और ताम्बेका बुरादा प्रत्येक दो-दो तोले तथा सरसोंका तेल एक पाव—इन सबको तैयार रखो।

पहले पारे और गन्धकको खरल करके कज्जली बना लो। फिर, ताम्बेको छोड़कर, हरताल वग़ैरः पाँच दवाओंको पीस लो। अब एक ताम्बेके बर्तनमें तेल और सब चीज़ें डालकर, उस बर्तनको छै दिन तक तेज़ धूपमें रखो। बस, व्रणराक्षस तैल तैयार हो जायगा।

इस तैलके लगानेसे कफ-विकारसे हुए दाद, खाज, चकत्ते, विचर्चिका, विस्फोट, मांसवृद्धि और नासूर वग़ैरः आराम हो जाते हैं। इन सभी रोगोंके लिये यह तैल रामवाण है। सुपरीक्षित है।

नोट—ताम्बेके बर्तन बनानेवालोंसे असल ताम्बेका बुरादा या छीलन ले आओ। पीसने-कूटनेसे इसका चूर्ण नहीं हो सकता, अतः इसे बर्तनमें ऐसे ही बिना कूटे डाल दो और हरताल वग़ैरः पाँच दवाओंको पीसकर डाल दो। धूप जितनी ही तेज़ होगी; तेल उतना ही अच्छा पकेगा।

अमृता गुग्गुल।

गिलोय, परवलकी जड़, त्रिफला, त्रिकुटा और बायबिड़ङ्ग—बराबर-बराबर लो तथा "शुद्ध गूगल" सबकी बराबर लो। पहले गिलोय आदिको पीस-छान लो। फिर चूर्णको शुद्ध गूगलमें मिलाकर खूब कूटो और ६।६ माशेकी गोलियाँ बना लो। हर दिन एक-एक गोली खानेसे सब तरहके व्रण, वातरक्त, गुल्म, उदर रोग और शोथ या सूजन वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नूल तैल।

खिरेंटी और चिरचिरेकी जड़को एकत्र मिलाकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदी—इन सबको मिलाकर तेल पका लो। शारीरिक और आगन्तुक प्रायः सब तरहके व्रण भरनेके लिए यह तैल रामवाण है।

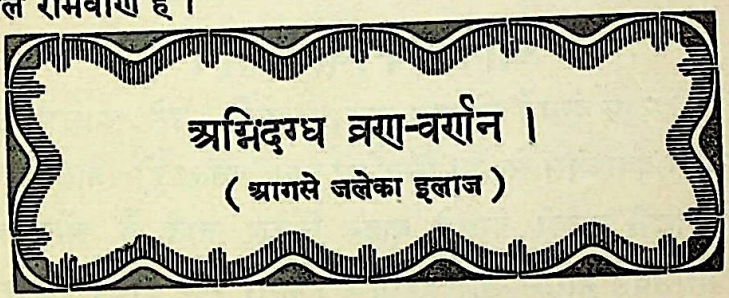

अग्निदग्ध व्रणके निदान-कारण।

आग चिकने और रूखे द्रव्योंके आश्रयसे शरीरके अङ्गोंको जलाती है। आगपर तपे हुए घी, तेल आदि स्नेह पदार्थ सूक्ष्म-मार्गी होनेके कारण चमड़े वग़ैरःमें घुसकर शीघ्र ही उनको जलाते हैं, इसलिये स्नेह-दग्ध होने यानी गरम घी, तेल आदिसे जलनेपर बड़ी भारी पीड़ा होती है।

अग्निदग्ध व्रण—आगसे जलकर हुआ घाव चार तरहका होता है:—

(१) प्लुष्ट, (२) दुर्दग्ध,
(३) सम्यग्दग्ध, (४) अतिदग्ध।

जिसमें चमड़ेका असली रंग बदलकर अत्यन्त दाह हो और फोड़ा ऊपरको न उठे, उसे "प्लुष्ट" कहते हैं।

जिसमें दारुण फफोले पड़ जायँ, चूसनेकी-सी पीड़ा और जलन हो, चमड़ेका रंग लाल हो जाय, पक जाय, दर्द हो और बहुत दिनोंमें आराम हो, उसे "दुर्दग्ध" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिसमें जलनेकी जगह ऊपरको न उठी हो, ताड़फलके समान रंग हो, जली हुई जगहमें अत्यन्त ऊँचाई और निचाई आदि दोष न हों तथा चमड़ेमें जले हुएके लक्षण दीखते हों, उसे "सम्यग्दग्ध" कहते हैं।

जिसमें मांस जलकर लटक पड़े; शरीर फट जाय; शिरा, स्नायु, सन्धि और हड्डियोंमें अत्यन्त हड़फूटन, ज्वर, दाह, प्यास और बेहोशी वग़ैरः उपद्रव हों, उसे "अतिदग्ध" कहते हैं।

अग्निदग्ध-चिकित्सा।

(१) प्लुष्ट दग्धमें जो अङ्ग जल गया हो, उसे आगसे तपाओ और गरम दवाओंसे सेको। सिकनेसे खून पतला हो जाता है, अतः उसकी गरमी अच्छी तरहसे बाहर निकल जाती है और वायुका गमन भी सबल मार्गसे खुला रहता है। अगर प्लुष्ट दग्धके ऊपर पानी डाला जाय, तो पानी स्वाभाविक रीतिसे शीतल होनेके कारण खून को जमा देता है; इससे उसकी गरमी बाहर नहीं निकलती और वायुकी गति रुक जाती है। वायुकी गति रुकनेसे भयंकर वेदना होती है। इसलिये प्लुष्ट व्रणवालेको गरम उपचारोंसे सुख होता है और शीतलसे सुख नहीं होता।

(२) दुर्दग्धमें शीतल और गरम दोनों क्रियाएँ करनी चाहिये। पहले शीतल और फिर गरम क्रिया करनी चाहिये। किन्तु दुर्दग्ध-पर अगर "घी" चुपड़ना हो, तो शीतल ही चुपड़ना चाहिये। इसी तरह लेप और परिषेक आदि भी शीतल ही करने चाहिए।

(३) अगर सम्यग्दग्ध व्रण हो, तो बंसलोचन, पाखर, लाल-चन्दन, पीला गेरू और गिलोय इनको पीसकर और घीमें मिलाकर लेप करना चाहिये।

(४) अगर अतिदग्ध व्रण हो, तो गले हुए और लटकते हुए मांसको निकालकर शीतल क्रिया करनी चाहिये। शालि चावल और चन्दन पीसकर लगाना चाहिये अथवा सेंदूकी छाल पीसकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और "घी"में मिलाकर लगानी चाहिये अथवा तेंदूके काढ़ेमें "घी" डालकर लेप करना चाहिये।

(५) कुबेर यानी तुन वृक्षकी लकड़ी एक मटकेमें भरकर आग लगा दो और मटकेका मुँह बन्द कर दो। जब वह लकड़ी बिल्कुल जल जाय, उसमेंसे थोड़ा-सा कोयला निकालकर पीसो और "घी" में मिलाकर जले हुए घावपर लगा दो। इससे दग्ध व्रण आराम हो जाता है।

(६) पीपलकी सूखी छाल पीसकर जले हुए स्थानपर बुरकनेसे आराम हो जाता है।

(७) कैंचुओंका तेल लगानेसे सब तरहके जले हुए व्रण आराम हो जाते हैं।

(८) सेमलकी जड़ पानीमें पीसकर लेप करनेसे दग्ध व्रण आराम हो जाता है।

(९) एलुआ पानीमें पीसकर लेप करनेसे दग्ध व्रण आराम हो जाता है।

(१०) जौकी राख और जवाखार—इनको "तेल"में मिलाकर लेप करनेसे आगसे जलनेसे हुआ घाव और उसकी जलन आराम हो जाती है।

(११) पुरानी थूहर जलाकर, उसकी राख पानीमें पीसकर लेप करनेसे तेलसे जलनेसे हुए फफोले आराम हो जाते हैं।

(१२) अगर आँखोंमें आक या थूहरका दूध गिर जाय, तो गायका घी आँखोंमें डालो।

(१३) बेलगिरी या लिसौढ़ेकी छाल, त्रिफला और दारुहल्दीके काढ़ेमें "गोरोचन" मिलाकर नेत्रोंमें डालनेसे नेत्रोंके व्रण—चाहे वे आक और थूहरके दूधसे हुए हों और चाहे आकसे—आराम हो जाते हैं। पहले इस काढ़ेको आँखोंमें सींचना चाहिये। इसके बाद गायका घी सींचना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) मोम, मुलेठी, लोध, राल, मँजीठ, चन्दन और मरोड़-फली—इनको पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। लुगदीसे चौगुना घी, घीसे चौगुना पानी और लुगदी—सबको मिलाकर घी पका लो। इस घीके लगानेसे सब तरहके अतिदग्ध व्रण आराम हो जाते हैं।

(१५) परवलके पत्तोंको पीसकर लुगदी कर लो और परवलके पत्तोंका ही काढ़ा पका लो। इस लुगदी और काढ़ेके साथ "कड़वा तेल" पका लो। इस तेलसे दग्ध व्रणकी पीड़ा, जलन, मवाद निकलना और फफोले—ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—लुगदीसे चौगुना कड़वा तेल और तेलसे चौगुना काढ़ा लेना।

(१६) कबीला, बायबिड़ङ्ग, तज और दारुहल्दी—इन दवाओंको पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको आगपर चढ़ाकर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे व्रणग्रन्थि आराम हो जाती है।

नोट—"वात और रुधिर" व्रणको स्रावरहित दुष्ट सूजन युक्त, ग्रन्थि सहित, तथा दाह और खुजली संयुक्त कर देते हैं। ऐसे व्रणको "व्रण ग्रन्थि" कहते हैं; यानी जिस व्रणसे मवाद नहीं आता तथा जिसमें सूजन, गाँठ, जलन और खुजली होती है, उसे "व्रणकी गाँठ" कहते हैं।

(१७) मोम, कौंच, जीरा, शहद और हरड़—इनको पीसकर और गायके "घी" में मिलाकर लगानेसे जला हुआ व्रण तत्काल आराम हो जाता है।

(१८) मोम, मुलेठी, लोध, राल, मँजीठ, चन्दन और मूर्वा—इनको समान-समान लेकर एकत्र पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदी, लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी इन सबको मिलाकर घी पका लो। इस "मधूच्छिष्टाद्य घृत" के लगानेसे व्रण तत्काल भर जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१९) पुरानी फिटकरी या पुराना चूना पानी में पीसकर और "दही"में मिलाकर लेप करनेसे तेलसे जलकर हुए घाव और फफोले आदि आराम हो जाते हैं।

नोट—आगसे जलकर हुए व्रणोंमें पित्तज विद्रधि और विसर्पपर लिखे हुए लेपादि प्रयोग कर सकते हैं।

(२०) जौ जलाकर राख कर लो। फिर इस राखको "अलसीके तेल"में मिलाकर लेप कर दो। इससे आगका जला हुआ घाव आराम हो जाता है।

(२१) बेरीके पत्ते या छालको घीमें पीसकर लेप करनेसे जला हुआ घाव आराम हो जाता है।

घरेलू चीज़ोंसे आगसे जले हुओंकी चिकित्सा।

साधारण दग्धके परीक्षित उपाय।

नोट—साधारण दग्धमें यानी मामूली तौरपर जलनेसे जली हुई जगह प्रायः लाल रंगकी होकर फूल जाती है अथवा जली हुई जगहमें थोड़ी देर तक अत्यन्त जलन मालूम होती है। फिर तत्काल ही उस जगह फफोले-से उठ आते हैं। अगर ऐसा हो, तो नीचे लिखे हुए उपाय करो:—

(१) आलू जले हुएकी बड़ी उत्तम दवा है। थोड़े-से आलुओंको पत्थरपर महीन पीसकर, जली हुई जगहपर लेप कर दो। लेप ऐसा करो, जिससे जली हुई जगह बिल्कुल ढक जावे, हवा न जाने पावे। आलूके लेपसे जली हुई जगहकी जलन फौरन शान्त हो जाती है और फफोले भी नहीं पड़ते। यदि यह उपाय जलते ही किया जाय, तो निश्चय ही बहुत आराम मिलता है। परीक्षित है।

(२) जली हुई जगहपर "शहद" का लेप कर देनेसे जलन फौरन बन्द हो जाती है; पर शहद असली होना चाहिये। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) एक तोले "सोडा" लेकर दो तोले जलमें घोल दो और जली हुई जगहपर उसका लेप कर दो। इससे जली हुई जगहमें फफोले भी नहीं पड़ते और सूजन तथा जलन फौरन शान्त हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४) अगर "सोडा" समयपर न मिले, तो "नारियलका तेल" ही उस जगह लगा दो।

(५) नारियलके तेलमें चूनेका नितरा हुआ पानी मिलाकर लगानेसे भी जलन मिट जाती है। अनेक लोग इस उपायसे काम लेते हैं और फायदा भी ज़रूर होता है।

(६) गिलेसरिन (Glycerine) नामकी अङ्गरेज़ी दवा जली हुई जगहपर लगा देनेसे फौरन लाभ होता है।

(७) एक बारीक कपड़ा तिलीके तेलमें भिगोकर और कुछ गरम करके जली हुई जगहपर बाँध देनेसे अवश्य लाभ होता है। परन्तु जले हुए अङ्गकी शीतल जल और शीतल हवासे विशेष रक्षा करनी चाहिये।

(८) तारपीनके तेलमें एक कपड़ा तर करके जली हुई जगहपर लगा देनेसे बहुत लाभ होता है। इस तेलसे पहले कुछ पीड़ा उल्टी बढ़ जाती है, पर थोड़ी देरमें वह क़तई मिट जाती है।

(९) बबूलका गोंद पानीके साथ पीसकर जली हुई जगहपर लगा देनेसे जलन एकदमसे शान्त हो जाती है और फफोले होनेका खटका नहीं रहता। यह उपाय भी जलते ही तत्काल करनेसे लाभ होता है।

(१०) कैंचुएकी मिट्टीको तेलमें पकाकर जली हुई जगहपर लेप करनेसे जलन और पीड़ा फौरन नाश हो जाती हैं।

(११) अगर जली हुई जगह छोटी न हो—बड़ी हो, तो उसपर गेहूँकी मैदा छिड़क या बिछाकर थोड़ी-सी रुई बाँध देनी चाहिये। इससे जली हुई जगहमें बाहरी हवा नहीं लगती और वेदना भी नहीं बढ़ती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) अगर शरीरके बहुत-से अङ्ग सामान्य रूपसे जल जायँ और शरीरके भीतर भयंकर दाह—जलन और पीड़ा हो, तो तत्काल—जलते ही—उन-उन अङ्गोंको गरम पानीसे आहिस्ते-आहिस्ते धोकर नरम कपड़ेसे पोंछ दो।

अथवा

जितना सहन हो सके उतने गरम पानीमें रोगीको घुसाकर स्नान कराओ। इस उपायसे जलन और पीड़ा बात-की-बातमें शान्त हो जाती है।

गरम जलसे शरीरको धोने और धीरे-धीरे कपड़ेसे पोंछनेके बाद गेहूँकी मैदा जली हुई जगहोंपर छिड़क या बिछा दो, ताकि हवा न जा सके। फिर उन जली हुई जगहोंको कम्बल, अलबान या फलालेनसे ढक दो, क्योंकि बहुत-से जले हुए स्थानोंको रुईसे बाँधना कठिन है।

(१३) अगर छोटे-छोटे बालकोंके पेट और बगल प्रभृति अङ्ग जगह-जगहसे मामूली तौरसे जल जायँ और उस समय कोई उपाय न सूझे, तो केवल रुईको तेलमें तर करके उन स्थानोंपर बाँध दो। अगर उन जगहोंमें फफोले उठ आवें, तो उनको सूई वग़ैरःसे फोड़कर उनके भीतरका पानी निकाल दो। इसके बाद उस जगह—

कत्था, जस्तका सफेदा और नौनी घी,—इन तीनोंको एकमें मिलाकर लगा दो। अथवा—

सौ बारका धोया हुआ घी उस जगहपर लगा दो। अथवा—

नारियलका तेल लगाकर, ऊपरसे जली हुई इमलीकी छालकी महीन-महीन राख बुरक दो। अथवा—

एक तोले कत्था, आधा तोले कपूर और ३ माशे सिन्दूर—तीनोंको पीस-छानकर सौ बारके धुले हुए छटाँक भर घीमें मिलाकर खूब मथो और उस जगह लगा दो। यह मरहम हमारी कम-से-कम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हज़ार बारकी आज़मूदा है। अगर यह जलते ही तत्काल लगा दी जाती है, तो जलन और पीड़ा फौरन शान्त हो जाती है और फफोले नहीं होते। अगर फफोलोंपर लगाई जाती है, तो वे फूटकर भर जाते हैं। अगर फूटने या फफोले फोड़नेके बाद लगाई जाती है, तो घाव भरकर पूरा आराम हो जाता है। सबसे बड़ी खूबी यह है कि, यह फौरन ठण्डक कर देती है। किसी तरहका घाव क्यों न हो, इससे अवश्य आराम हो जाता है।

गम्भीर दग्ध नाशक उपाय।

नोट—जब जली हुई जगहका थोड़ा या बहुत चमड़ा जलकर ख़राब हो जाता है, उसमें जगह-जगह, ऊपरकी तरफ, उभरे हुए नरम, मोटे, धूसर या बादामी रंगके दाग़ या चकत्ते पड़ जाते हैं और उन चकत्तोंके चारों तरफ छोटे-छोटे फफोले और लाली हो जाती है। वे ही धूसर रंगके दाग़ क्रमसे कुछ समयमें घाव बन जाते हैं और उनमेंसे बदबूदार पीप बहने लगती है, तब "गम्भीर दग्ध" कहते हैं। यह मामूली जलनेसे विशेष कष्टदायक और बुरा होता है।

(१) अगर गम्भीर दग्ध हो, तो सबसे पहले फफोलोंको अतीव सावधानीसे फोड़कर, उनका जल बाहर निकाल दो, परन्तु फफोलोंको नोंचो मत। जलनेसे जो चमड़ा ख़राब हो गया हो या अपनी जगहसे हट गया हो, तो उसे भी उखाड़ो और तोड़ो नहीं। अगर जली हुई जगहका चमड़ा लटकता हो, तो उसपर सम्हालकर मैदा वग़ैरःकी पुल्टिस बाँध दो। मवाद वग़ैरः साफ होनेपर, उस जगह ऊपर लिखी हुई कत्था और कपूरकी मरहम लगाओ। एकदमसे आराम हो जायगा।

(२) चूनेका नितरा हुआ पानी और नारियलका तेल समान-समान लेकर मिला लो और उस जली हुई जगहपर लगाओ। इससे अवश्यमेव लाभ होता है। सुपरीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) तारपीनका तेल १ भाग और अलसीका तेल ६ भाग मिलाकर लगाओ। ऊपरसे केलेका नर्म पत्ता ढककर, रूई रक्खो और बाँध दो। इस उपायसे अवश्य लाभ होगा।

नोट—कार्बोलिक तेल १ भाग और अलसीका तेल ६ भाग अथवा तारपीनका तेल १ भाग और नारियलका तेल ६ भाग अथवा कार्बोलिक तेल १ भाग और नारियलका तेल ६ भाग मिलाकर ऊपरकी तरह लगाने और पत्ता वग़ैरः बाँधनेसे भी लाभ होता है। अगर केलेका पत्ता न मिले, तो एक पतले कपड़ेको तेलमें भिगोकर व्रणपर रख दो और ऊपरसे रूई रखकर बाँध दो। परीक्षित है।

(४) अगर बहुत-से स्थान तेल या घी वग़ैरः चिकने और पतले पदार्थोंसे जल गये हों, तो चूनेका पानी और अलसीका तेल दोनोंको बहुत देर तक एकत्र घोटकर उस जगह लगाओ। मतलब यह है कि, अलसीके तेल और चूनेके पानीको मिलाकर खूब घोटो। घोटते-घोटते जब मरहम-सी हो जाय, उसे जली हुई जगहपर लगाओ। सुपरीक्षित है।

(५) इमलीकी लकड़ीको जलाकर कोयले करो और उन कोयलोंको महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर उस छने हुए चूर्णको "नारियलके तेल"में मिलाकर लगाओ। इससे गम्भीर दग्ध आराम हो जाता है।

(६) अगर ऊपरके पदार्थ न मिलें, तो केलेका गूदा निकालकर हाथोंसे मस लो और कीच-सा पतला करके जली हुई जगहपर रखकर फौरन बाँध दो। इसके बाँधनेसे भी हवा व्रणपर असर नहीं करती और जलन फौरन शान्त हो जाती है।

नोट—अगर हाथ या पाँवकी उँगलियाँ इस तरह बाँधनी हों, तो वे अलग-अलग बाँधनी चाहिये। दो उँगलियाँ एक साथ बाँधनेसे खोलते समय या उनको अलग करते समय बहुत तकलीफ होती है। जले हुए स्थानोंको २।३ दिन तक खोलना न चाहिये। खोलकर थोड़ी देर तक गरम जलमें भिगोनेसे उनकी पीड़ा कम हो जाती है। जब घाव साफ होकर लाल हो जाय, सूजन भी कम हो जाय, तब केवल एक कपड़ेको गरम जलमें भिगोकर सुहाता-सुहाता व्रण-स्थानपर लगा देना चाहिये और ऊपरसे पत्ता बाँध देना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जले हुए घावकी शुद्धि।

एक भाग सुहागेको १६ भाग जलमें मिलाकर घाव धोनेसे घाव शुद्ध हो जाता है।

सांघातिक दग्ध नाशक उपाय।

शरीरका एक स्थान या कई स्थान जब बहुत देर तक अत्यन्त तेज़ आगसे जलते रहते हैं, तब "सांघातिक दग्धावस्था" होती है। बालकों और घूँघटवाली बहुओंके कपड़ोंमें आग लगनेसे ऐसी घटनाएँ बहुत हुआ करती हैं।

(१) कपड़ेमें आग लगी देखते ही ये उपाय करोः—

(क) जलनेवालेके कपड़े फौरन निकालो।

(ख) अगर कपड़े न निकल सकें तो कम्बल, दरी और तोशक आदि भारी कपड़े, जलमें भिगोकर या सूखे ही, उस जलनेवालेपर डाल दो।

(ग) अगर कम्बल आदि भारी कपड़े न हों, तो राहकी धूल ही उसपर डालो अथवा जलनेवालेसे धूलमें लोटनेको कहो।

(घ) जलनेवालेको इधर-उधर भागने मत दो, क्योंकि भागनेसे कपड़ा ज़ोरसे जलने लगता है।

(ङ) अगर उस जगह हवा तेज़ चलती हो, तो घरके द्वार बन्द कर दो।

(च) आगके बुझ जानेपर जलनेवालेको चारपाईपर इस तरह लिटा दो कि, उसे कष्ट न हो और कपड़े भी इस तरह उतारो कि, फफोले न फूटें, अथवा जली हुई खाल न छिले। अच्छा हो, कैंचीसे काट-काटकर कपड़ोंको अलग कर दो। अगर कहीं कपड़ा चिपट गया हो, तो उसे ज़ोरसे खींचकर न निकालो। और जगहके कपड़े निकाल दो, पर जली हुई जगहके लिपटे हुए कपड़ेको छोड़ दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(छ) अगर पैरोंमें मोज़े या हाथोंमें दस्ताने हों, तो उन्हें तेलमें खूब भिगोकर उतारो।

(ज) कपड़े उतारकर रोगीके शरीरपर कम्बल या लिहाफ अथवा और कोई भारी कपड़ा ढक दो, ताकि उसके शरीरकी गरमीकी रक्षा हो।

(झ) जलनेकी पीड़ासे रोगी बेहोश न हो जाय, इसके लिये उसे थोड़ा-थोड़ा गरम दूध, चाय, काफी, द्राक्षासव या थोड़ी-थोड़ी ब्राण्डी दो।

(ञ) रोगीको शीतल पदार्थोंसे हर तरह बचाओ। भूलकर भी शीतल जल उसके पास मत रहने दो।

(ट) जब रोगीका चित्त शान्त हो जावे, जली हुई जगहके एक भागको पहले लिखे हुए अलसीके तेल और चूनेके पानी या नारियलके तेल और चूनेके पानीसे लेपित करो और बाँध दो। इसी तरह क्रमसे एक-एक अङ्गपर दवा लगाकर बाँधो। दूसरे या तीसरे दिन व्रणोंको धोओ, पर सब जले हुए अङ्गोंको एक साथ कभी न धोओ। एक साथ सब अङ्गोंके धोनेसे शीत पहुँचकर भयानक रोग पैदा होनेकी सम्भावना है।

(ठ) इन उपायोंके सिवा, रोगीकी पीड़ाको शान्त करनेवाली दवाएँ पहले लिखी विधिसे विचारकर दो।

नोट—अगर शरीरपर गरम माँड पड़ जावे, तो उस जगह फौरन ताज़ा मोबर लगा दो। थोड़ी देर बाद उसे धीरेसे छुड़ा लो और गरम पानीमें कपड़ा भिगो-भिगोकर उससे धोलो। इस तरह करनेसे कुछ समय बाद फफोले पड़ जायँगे। उन फफोलोंपर "अलसीका तेल और कार्बोलिक तेल" दोनों मिलाकर लगानेसे वे नष्ट हो जाते हैं। —"वैद्य"

अग्निदग्धपर यूनानी नुसखे।

अगर कोई मनुष्य आगसे जल जावे, तो नीचे लिखे हुए उपायोंमेंसे भी कोई-सा करोः—

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) इमलीकी छाल पीसकर और गायके घीमें मिलाकर मलो।

(२) बड़की कोंपलें गायके दहीमें पीसकर मलो।

(३) अरण्डके पत्तोंका स्वरस लगाओ।

(४) धायके फूल जलाकर और सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करो।

(५) अण्डेकी सफेदी मीठे तेलमें मिलाकर लगाओ।

(६) दवातकी देशी पुरानी चाऊकी साहूकारी स्याही लगाओ।

(७) अनारकी पत्तियाँ पीसकर लगाओ।

(८) सीपी घिसकर और अण्डेकी सफेदीमें मिलाकर लगाओ।

(९) पुराने छप्परकी घास सरसोंके तेलमें पीसकर लगाओ।

(१०) गेहूँ या जौका आटा पानीमें घोलकर लगाओ।

(११) बेरकी कोंपल दहीमें मिलाकर कई दफा लगाओ।

(१२) हींग पानीमें घोलकर जले हुएपर लगानेसे बहुत जल्दी आराम होता है।

(१३) झड़बेरीकी पत्तियाँ मीठे तेलमें मिलाकर लगाओ।

(१४) महँदीकी पत्तियाँ पानीमें पीसकर लगाओ। अथवा मक्खनमें मिलाकर लगाओ।

सूचना—ऊपरकी चौदहों दवाइयाँ आगसे जली हुई जगहपर लगानी चाहिये।

(१५) अगर जलनेसे शरीर सफेद हो जाय, तो "त्रिफला" पानीमें पीसकर उस जगह लगाओ। इससे कुछ दिनमें असली रंग आ जायगा।

(१६) जल जानेके बाद अगर दाग़ रह जाय, तो "जामुनकी पत्तियाँ" पीसकर उस जगह लगाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समस्त व्रण नाशक गरीबी नुसखे।

(१) नीमकी लकड़ी, चन्दनकी तरह, पानीके साथ घिसकर लगानेसे शरीरकी जलन, गरमी और पित्तकी फुन्सियाँ आराम हो जाती हैं।

(२) मेथीकी पुल्टिस फोड़ेपर बाँधनेसे फोड़ेकी सूजन और पीड़ा दूर हो जाती है।

(३) गिलेसरिन अढ़ाई तोले, पिसी-छनी आमलासार गन्धक चार माशे और उत्तम अर्क़ गुलाब आध पाव—सबको मिलाकर एक शीशीमें रख दो। इसके लगानेसे मुँहके व्रण, मुहासे और उनकी पीड़ा—ये सब नष्ट हो जाते हैं। जब दवा लगाओ, पहले शीशीको हिला लो, क्योंकि दवा नीचे बैठ जाती है। परीक्षित है।

(४) सेमलके कोमल कन्दको लाकर पानीमें धो लो। फिर ऊपरकी छाल खुरचकर फैंक दो और साफ कन्दको कूटो-पीसो। इस तरह इसमेंसे चिकना-चिकना रस निकलेगा। उस रसके लगानेसे फोड़े और बदकी जलन शान्त हो जाती और वे शीघ्र ही पक जाते हैं। परीक्षित है।

(५) कपूरभींडीकी जड़ शीतल जलमें घिसकर, छै-छै माशे दोनों समय, सवेरे-शाम—चाटो और इसीका व्रणपर लेप करो तथा इसी वृक्षकी जड़को चिलममें धरकर तमाखूकी तरह धूआँ पीओ। इन उपायोंसे व्रण नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६) कसालूकी गाँठको शीतल जलमें घिसो और कुछ बूँद बिना पके फोड़े, बद या गाँठपर लगाओ। जब यह लेप सूख जाय,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसी लेपपर फिर चन्द बूँदें लगा दो। इस तरह तीन-चार बार करनेसे ही फोड़ा और बद फूट जाते हैं और उनके भीतरका मवाद बह जाता है। परीक्षित है।

(७) कायफलकी छालको पानीमें औटाकर काढ़ा कर लो। इस काढ़ेसे व्रण या घाव धोनेसे घाव शुद्ध हो जाता है। परीक्षित है।

(८) मरोड़फलीकी जड़ पानीमें पीसकर लगानेसे फोड़े और घाव आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) गंगावतीका पत्ता हाथमें लगाकर घावपर जमा देनेसे घावसे खून गिरना तत्काल बन्द हो जाता और घाव भर जाता है। सद्योव्रणकी अच्छी दवा है।

(१०) पानड़ीके पत्तोंके रसमें बाग़की कपासकी जड़ घिसकर घावपर लेप करनेसे घाव भर जाता है। अथवा बाग़की कपासके फल और पानड़ीके पत्ते महीन पीसकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके घावपर जमा देनेसे घाव जल्दी ही भर आता है।

(११) सेमलकी रूई पानीके साथ पीसकर अग्निदग्ध या आगसे जले हुए स्थानपर लेप करनेसे अग्निदग्ध व्रण अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) व्रण-रोगमें लगानेकी दवाके साथ-साथ अगर "योगराज गूगल, किशोर गूगल, राखादि गूगल, कचनार गूगल या बिडंगाद्य गूगल"—इनमेंसे कोई गूगल खायी जावे, तो भयङ्कर व्रण और नाड़ी-व्रण-नासूर आराम हो जाते हैं।

(१३) सेमलकी छाल पानीके साथ पीसकर व्रणपर लेप करनेसे व्रण और स्फोटकादिकी जलन शान्त हो जाती है।

(१४) अगर व्रण फूटकर बहता हो, उससे ख़राब-ख़राब मवाद निकलता हो, तो कड़वे नीमके पत्ते सिलपर पीसकर, लुगदीमें "शहद" मिला लो और मिलानेके लिए फिर पीस लो और व्रणपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसका लेप कर दो। मवाद बन्द करनेके लिए यह रामवाण नुसख़ा है। सुपरीक्षित है।

नोट—कोई-कोई लिखते हैं, नीमके पत्तोंकी लुगदीमें थोड़ा-सा "शहद" मिलाकर आगपर गरम करो और इसे व्रणपर रखकर बाँधो। इस उपायसे भी व्रणसे ख़राब मवाद आना बन्द हो जाता है।

(१५) नीमके पत्ते, तिल और शहद—इनको एकत्र पीसकर व्रणपर लेप करनेसे व्रण शुद्ध होता है। परीक्षित है।

(१६) कड़वे नीमके पत्तोंको तेलमें तलकर उतार लो और फिर उसी तेलके साथ पीस लो। इस मरहमके लगानेसे आगन्तुक व्रण, व्रण और फुन्सियाँ नाश हो जाती हैं। बड़ी ही अच्छी मरहम है। परीक्षित है।

(१७) करंजके पत्ते, नीमके पत्ते और निर्गुण्डीके पत्तोंको पीसकर व्रणपर लेप करनेसे व्रणमें पड़े हुए कीड़े नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) नीमके सूखे पत्तोंका पिसा-छना चूर्ण "घी"में मिलाकर खानेसे घाव, व्रण, विस्फोटक, शीतपित्त—पित्ती और खुजली प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१९) नीमके पत्ते और आँवले लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णके खानेसे व्रण-घाव, विस्फोटक, पित्ती और अम्लपित्त रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२०) जिन फोड़ोंमें अत्यन्त दाह होता हो, उनपर नीमके पत्ते पीसकर लगा दो; दाह तत्काल शान्त हो जावेगा। परीक्षित है।

(२१) नीमके पत्तोंको घीमें भून लो। फिर इस घीमें मोम पिघलाकर मिला दो। इस तरह बड़ी उत्तम मरहम बन जायगी। पहले घावको नीमके औटाये पानीसे धोलो और फिर यह मरहम लगा दो। इस मरहमसे घाव बहुत जल्दी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—नीमके पत्तोंके रसमें "सोंठ और गेरू" पीसकर मिला दो। इसकी मालिश करनेसे पित्ती, चकत्ते और खुजली वग़ैरः रोग आराम हो जाते हैं।

(२२) करिहारीकी गाँठको पानीमें घिसकर व्रणपर लेप करनेसे व्रण, कण्ठमाला, अदीठ और बद वग़ैरः नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) काँकड़ वृक्षकी छाल पानीमें पीसकर लगानेसे व्रण नष्ट हो जाता है।

(२४) काकजंघाके पत्ते जलाकर घी या तेलमें पीस लो। इसके लगानेसे व्रण आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२५) अगर घावमें दर्द होता हो, तो प्याज़को चीरकर घीमें तलो और घावपर बाँधो; दर्द जाता रहेगा। परीक्षित है।

नोट—आगकी ज्वाला, लपट और लूसे बचना हो, तो एक प्याज़ पास रखो।

(२६) अगर आगकी लपट या लू लग गई हो, तो एक भुना हुआ प्याज़का गट्टा और एक कच्चा प्याज़का गट्टा लेकर पीसो। फिर इसमें दो माशे सफ़ेद जीरा और दो तोले मिश्री मिलाकर खाओ। अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(२७) अगर फोड़ेमें बहुत ही जलन होती हो, तो "काली अगर" पानीमें पीसकर फोड़ेपर लेप कर दो। परीक्षित है।

(२८) शारिवाकी जड़ें पानीमें पीसकर व्रणपर बाँधनेसे व्रण शुद्ध होता है। परीक्षित है।

(२९) बड़ी इन्द्रायणकी जड़ और कड़वे वृन्दावनकी जड़ पानीमें पीसकर बारम्बार लेप करनेसे अदीठ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३०) बेलके पेड़की लकड़ी पानीमें घिसकर फोड़ेपर लेप करनेसे फोड़ेकी जलन, लाली और सूजन नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३१) कपूर पानीमें पीस और घोलकर घाव धोनेसे घाव शुद्ध हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—नीमके पत्तोंका औटाया हुआ पानी घाव धोनेके लिए संसारमें सर्व-श्रेष्ठ दवा है। जिन घावोंमें कीड़े पड़ जाते हैं और जिनकी अवस्था बहुत ख़राब हो जाती है, वे भी नित्य नीमके जलसे धोने और नीमके पत्तोंकी लुगदी बाँधने अथवा नं० १६ और नं० २१ में लिखी दवाएँ लगानेसे आराम हो जाते हैं।

(३२) पैरा नामक घासकी राख घावपर छिड़कनेसे घाव सूख जाता है। इसी राखको "सिरके"में भिगोकर लगानेसे नासूर आराम हो जाता है।

नोट—पैरा एक तरहकी घास है। यह प्रायः नदी किनारे उगती है। इससे चटाइयाँ बनाई जाती हैं।

(३३) कनेरकी सूखी पत्तियोंका कपड़ेमें छना महीन चूर्ण घावपर छिड़कनेसे घाव सूख जाता है।

(३४) संगजराहत या सेलखड़ीका पिसा-छना चूर्ण घावपर बुरकनेसे घाव सूख जाता है।

(३५) स्त्रीके ऋतुकालके खूनमें तर कपड़ा जलाकर घावपर बुरकनेसे घाव सूख जाता है।

(३६) गधेका मांस खाल समेत जलाकर घावपर छिड़कनेसे दो दिनमें घाव भर आता है।

(३७) सिरसकी सूखी छालका कपड़-छन किया हुआ चूर्ण घावपर बुरकनेसे घाव भर आता है।

(३८) मुर्गीके परकी राख घावपर छिड़कनेसे घाव भर आता है।

(३९) कछुएका सिर जलाकर राख कर लो। पहले घावपर मीठा तेल लगाओ, फिर यह राख बुरको; ३ दिनमें घाव आराम हो जायगा।

(४०) भुनी फिटकरी छानकर घावपर डालनेसे घावसे सड़ा हुआ मांस निकल जाता और तकलीफ नहीं होती।

(४१) नागौरी असगन्ध महीन पीस-छानकर घावपर बुरकनेसे घाव भर जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४२) घिया तोरईं की पत्ती पीसकर घावपर बाँधनेसे घाव भर जाता है।

(४३) कंघीकी पत्ती पीसकर घावपर बाँधनेसे घाव भर जाता है। कहते हैं, साबत पत्ती बाँधनेसे जल्दी लाभ होता है।

(४४) सरुकी पत्तियोंकी राख घावपर छिड़कनेसे घाव भर जाता है।

(४५) हल्दीका पिसा-छना चूर्ण बुरकनेसे घाव सूख जाता है।

(४६) माजूफ़लकी राख घावपर बुरकनेसे घाव सूख जाता है।

(४७) कुन्दर पीस-छानकर बुरकनेसे घाव आराम हो जाता है।

(४८) कमल और बड़के पत्ते समान-समान लेकर जलाओ। फिर इस राखको तेलमें मिलाकर घावपर टपकाओ। इससे फैलनेवाले घावमें बड़ा लाभ होता है।

(४९) कपूर ३ माशे, भुने हुए नाजबोंके बीज ६ माशे, प्याज़का छिलका जला हुआ १ तोले और जले हुए बाल २ तोले—इन सबको पीस और मिलाकर छान लो। इस चूर्णसे घाव और फफोले बहुत जल्दी सूखते हैं। कहते हैं, इस काममें यह बुरका लासानी है।

अगर फोड़ा कच्चा हो, पका न हो, तो उसे पकाना चाहिये। कुछ आँवलोंको कढ़ाहीमें भूँज लो। फिर भुने हुए आँवलों और गेरूको पानीमें पीस लो। पीसते समय ज़रा-सी सज्जी भी मिला दो। फिर इसे ऐसा पतला कर लो कि, लेप हो सके। इसका दो-चार बार लेप करनेसे फोड़ा पक जाता अथवा बैठ जाता है।

नोट—आँवले और गेरू बराबर-बराबर लेना और सज्जी कोई एकका आठवाँ भाग लेना।

अथवा

गुड़ और काला सुहागा पानीमें पीसकर लगाना चाहिये। इससे भी फोड़ा पक जाता है।

अथवा

अलसीको सिलपर पीसकर और दूध मिलाकर पकाओ; जब शीरा-सा हो जाय, गरमागर्म फोड़ेपर बाँधो। तीन-तीन घण्टेमें ताज़ा पुल्टिस बाँधनेसे फोड़ा जल्दी ही पक जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अथवा

बड़े फोड़ेपर ग्वारपाठेका गूदा गरम कर करके बाँधो। इससे भी फोड़ा फूट जाता है।

बेरके पत्ते और तिलीका तेल औटाकर गरमागर्म फोड़ेपर बाँधो। इससे भी फोड़ा फूट जाता है।

फूट जानेपर।

शिंगरफ, सफेद कत्था, राल, कबीला बराबर-बराबर छै-छै माशे, मोम एक माशे और नीलाथोथा ४ रत्ती—इन सबको पीसकर छान लो और सौ बार धुले हुए घीमें मिलाकर एकदिल कर लो। इस मरहमको फोड़ेके फूटकर बह जानेके बाद लगानेसे घाव भर आता है। इस मरहमसे सब तरहके फोड़े आराम होते हैं।

खून बन्द करनेके हकीमी उपाय।

(१) महीन पिसी हुई हल्दी, अथवा कण्डेकी राख अथवा भुना सुहागा खून बहनेकी जगहपर बाँधनेसे खूनका गिरना बन्द हो जाता है।

(२) घोड़ेकी लीद बाँधनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(३) संगमरमरकी राख घावपर छिड़कनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(४) भुना तूतिया पीस-छानकर घावमें भर देनेसे खून बन्द हो जाता है।

(५) माजूफलकी राख घावपर बुरकनेसे घावसे खून आना बन्द हो जाता है।

(६) मूँगा महीन पीसकर छिड़कनेसे खून बन्द हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) ताज़ा काईका लेप करनेसे घावसे खून गिरना बन्द हो ज़ाता है।

(८) कुन्दर पीसकर घावपर बुरकनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

(९) रूई जलाकर बुरकनेसे खून गिरना बन्द हो जाता है।

समस्त व्रण नाशक यूनानी मरहमें।

(१) सफेद कत्था ६ माशे, आमलासार गन्धक ६ माशे, गन्दाबिरौज़ा १ तोले, फिटकरी ६ माशे, रसकपूर ३ माशे, गेरू ६ माशे, शीतलचीनी ६ माशे और सिन्दूर ६ माशे,—इन सबको पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो।

अब एक छटाँक घी और आधी छटाँक मोमको एक प्यालीमें रखकर आगपर पिघलाओ। जब वे पिघल जायँ, उनमें ऊपरका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और एकदिल कर लो।

इस मरहमके लगानेसे सब तरहके फोड़े-फुन्सी, घाव, चकत्ते, उपदंश या गरमीके घाव, फफोले और चेचकके घाव तथा विसर्प—ये सब नाश हो जाते हैं। अनेक बारकी परीक्षित है।

(२) राल ३॥ माशे, शिंगरफ १ माशे, मुर्दासंग १ माशे, छिले कौंचके बीज ३॥ माशे, सरसोंका तेल ३॥ तोले और नीमके पत्तोंकी सिलपर पिसी टिकिया—ये सब तैयार रखो।

पहले आगपर तेलको चढ़ाओ और उसमें "पिसे हुए कौंचके बीजों"को जलाओ। इसके बाद उसमें "नीमकी टिकिया" जलाओ। अब तेलको उतारकर छान लो और उसमें राल, शिंगरफ और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मुर्दासंग पीसकर मिला दो। इस मरहमसे सब तरहके घाव जल्दी भर जाते हैं।

(३) राल २० माशे, घी २० माशे और मोम ५ माशे लाकर, "घी और मोमको" आगपर गलाओ। गल जानेपर उनमें "राल" मिला दो; बस, मरहम बन गई। इस मरहमको पाँव धोकर पैरोंकी बिवाईमें भर दो। इस तरह दो-चार बार करनेसे बिवाई आराम हो जाती है।

(४) घी ३॥ तोले, तूतिया १ माशे, सफेद मोम २० माशे और सिन्दूर ५ माशे लाकर, पहले "घी और मोम"को आगपर गला लो। फिर उसमें "तूतिया और सिन्दूर" पीसकर मिला दो। इस मरहमसे सब तरहके घाव आराम हो जाते हैं।

नोट—जाड़ेमें घी ३॥ तोले और गरमीमें १॥॥ तोले लेना चाहिये।

(५) सरसोंका तेल २० माशे और मोम २० माशेको आगपर रखकर एक-दिल कर लो। फिर उसमें "जंगार ४ माशे और संग-जराहत—सेलखड़ी २० माशे" पीसकर मिला दो और एकदिल कर लो। इस मरहमसे उपदंश, नासूर और साधारण घाव सभी आराम हो जाते हैं।

(६) राल ६ माशे, हिरमजी मट्टी ६ माशे और सब्ज तूतिया २ रत्ती—इनको पीसकर इतने मीठे तेलमें मिलाकर खरल करो कि, गाढ़ी-गाढ़ी मरहम बन जाय। इस मरहमसे सब तरहके जख्म आराम हो जाते हैं। "इलाजुलगुर्बा"के कर्त्ता इसे अपनी आजमूदा मरहम कहते हैं।

(७) मोम १ तोले, राल १ तोले, सफेद कत्था १ तोले, कपूर ४ माशे और मीठा तेल ५ तोले तैयार करो। तेल और मोमको आग-पर रखकर एक-दिल करो। जब ये मिल जायँ, "राल" पीसकर मिला दो; जब तीन उफान आजायँ, "कत्था" पीसकर मिला दो। जब सब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मिलकर गाढ़े-से हो जायँ "कपूर" पीसकर मिला दो और उतार लो। इस मरहमसे आतशकके घाव और सब तरहके घाव आराम हो जाते हैं।

नोट—अगर इसको पुराने पीपवाले घावपर लगाओ, तो इसमें थोड़ी-सी "सुपारीकी राख" भी पीसकर मिला दो।

(८) भुनी फिटकरी २ माशे, सिन्दूर २ माशे, मुर्दासंग ४ माशे, तूतिया २ रत्ती, मोम २० माशे और घी ३॥ तोले तैयार रखो। पहले घी और मोमको आगपर गला लो और नीचे उतारकर उसमें फिटकरी आदि पीसकर मिला दो। इस मरहमसे सब तरहके घाव आराम हो जाते हैं।

(९) दस तोले पुरानी रूईकी राख, ५ तोले मोम, ५ तोले खुरासानी बच, गायका घी ८ तोले ४ माशे और तूतिया २ रत्ती तैयार करो। पहले "घी और मोम" को एक बर्तनमें डालकर गरम करो। फिर उसमें "रूईकी राख", इसके बाद "बच" और उसके भी बाद "तूतिया" भूनकर डाल दो। जब सब एक-दिल हो जायँ, उतार लो। कहते हैं, यह मरहम घाव भरनेमें सर्वश्रेष्ठ है।

(१०) तूतिया १ माशे, मुर्दासंग २ माशे, सफेद कत्था ४ माशे, राल ८ माशे, कमीला १६ माशे, मोम काफूरी ११ माशे और गायका घी ३२ माशे—मोम और घीको छोड़कर, सब दवाएँ पीस-छान लो। फिर घीको १०० बार पानीसे धो लो। अब मोमको आगपर पतला करके घीमें मिला दो और पिसी हुई दवाएँ भी मिला दो। इनको हाथसे खूब मथो; बस, मरहम तैयार हो जायगी। फोड़ेके ज़ख्म भरनेको यह मरहम बड़ी अच्छी है।

(११) कपूर ३॥ माशे, सफेद मोम २० माशे, मीठा तेल २० माशे और सफेदा ४० माशे—तैयार करो। पहले तेलको गरम करो; फिर उसमें "मोम" मिला दो। जब मोम गल जाय, उस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"कपूर और सफेदा" मिलाकर मीठी आँचसे पकाकर उतार लो। इस मरहमके लगानेसे घाव सूख जाते हैं।

(१२) संभालूके पत्ते ४ माशे, फर्राशके पत्ते ४ माशे, चमेलीके पत्ते ४ माशे, धतूरेके पत्ते ४ माशे और मीठा तेल आध सेर तैयार करो। सब पत्तोंको सिलपर पीसकर तेलमें मिला दो और आगपर पकाओ और चमचेसे चलाते जाओ। जब पत्ते जल जावें, उतारकर तेलको छान लो। कहते हैं, यह तैल घावके भरनेमें आश्चर्य-दायक है।

(१३) करंजुएके पत्ते २० माशे और नीमके पत्ते २० माशे—दोनोंको पीसकर टिकिया बना लो और पाव भर मीठे तेलमें भूनो। जब टिकिया काली हो जाय, उसमें एक माशे तूतिया पीसकर मिला दो और उतार लो। इस तैलसे घाव खूब जल्दी भरते हैं।

(१४) नीमकी पत्तियोंकी टिकिया आध पाव, कनेरकी पत्तियोंकी टिकिया पाव भर, बकायनकी पत्तियोंकी टिकिया बीस माशे, मोम सवा तेरह तोले—इन सबको एक सेर मीठे तेलमें डालकर जलाओ। जब सब चीजें जलकर काली हो जायँ, उतारकर छान लो। इस तैलको घावोंपर टपकानेसे हर तरहके घाव आराम हो जाते हैं।

(१५) नीमकी पत्तियोंकी टिकिया आध पावको पाव भर तिलके तेलमें जलाओ। जब वह काली हो जाय, तेलको छान लो। इस तैलसे घाव और कानका दर्द दोनों आराम होते हैं।

नोट—अगर घाव भरना हो, तो इस नीमके तैलमें एक तोले कमीला और कत्था पीसकर मिला दो। अगर घावसे पीप निकालनी हो, तो एक या दो रत्ती तूतिया भी पीसकर डाल दो।

(१६) सात भिलावे आध पाव तिलीके तेलमें जलाओ। जब भिलावे जल जायँ, तेलको छान लो। फिर उसमें ८ माशे संगजराहत या सेलखड़ी पीसकर मिला दो। इस तैलको मुर्गीके परसे जख्मोंपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगानेसे अनेक तरहके भयानक घाव, यहाँ तक कि जानवरोंके घाव आराम हो जाते हैं।

(१७) तीन तोले चार माशे कौंचके छिले बीज सिलपर पानीके साथ पीसकर टिकिया बना लो। फिर उस टिकियाको आध पाव मीठे तेलमें डालकर जलाओ; जब काली हो जाय, उतारकर छान लो। इस तैलसे घाव और नासूर आराम होते हैं।

(१८) कालीमिर्च ३॥ माशे, तूतिया १ चनेके बराबर, ५ कुचलेके दाने, कड़वा तेल १० तोले, नीमकी पत्तियोंकी टिकिया १ तोले, अजवायन २० माशे, कमीला ३ तोले ४ माशे—तैयार रखो।

पहले तेलको कड़ाहीमें डालकर आगपर रखो और नीमकी टिकिया डाल दो। जब टिकिया काली हो जाय, तेलको उतारकर छान लो। फिर तेलको आगपर चढ़ा दो और एक-एक चीज़ अलग-अलग डाल-डालकर जलाओ। इसके बाद तेलको उतारकर छान लो और शीशीमें भर दो। इस तैलमें रूईका फाहा भिगोकर घाव या नासूरपर रखनेसे क़ाबिल तारीफ़ फ़ायदा होता है।

(१९) मीठा तेल पाव भर आगपर चढ़ा दो। फिर उसमें साढ़े तीन-तीन तोले नीमकी कोंपल और अरण्डकी कोंपल डालकर जलाओ। जब पत्तियाँ जलकर काली हो जायँ, तेलको उतारकर छान लो। फिर इस तैलमें राल ३॥ तोले और कमीला १ तोले ८ माशे पीसकर मिला दो। इस तैलके घावपर टपकानेसे सब तरहके घाव यहाँ तक कि जानवरोंके घाव आराम हो जाते हैं।

नोट—अगर घावमें मरा हुआ मांस बहुत हो, तो तैलमें एक माशे भर तूतिया महीन पीसकर मिला दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इक्कीसवाँ अध्याय

नाड़ी व्रण-वर्णन।

(नासूरका बयान)

नाड़ी व्रणके निदान-कारण।

जो मूर्ख अपने पके हुए फोड़ेको कच्चा समझकर, उसका मुँह नहीं करता अथवा बहुत राधवाले पके हुए व्रणको कच्चा समझकर, उसे शोधन पदार्थोंसे शुद्ध नहीं करता और अहितकारी आहार-विहार सेवन करता है; उसकी वह बढ़ी हुई राध—चमड़ा, मांस, शिरा, स्नायु, सन्धि, हड्डी, कोठे और मर्मस्थानोंके छेदोंमें होकर—चमड़े और मांस वग़ैरःमें घुस जाती है। चूँकि वह भीतर-ही-भीतर बहुत दूर तक घुस जाती है, अतः वह सदैव बहा करती है। व्रणमेंसे बाँस प्रभृतिकी नलीकी तरह राध बहा करती है, इसीलिये इसे "नाड़ी-व्रण" या "नासूर" कहते हैं।

खुलासा—जिसमें बहुत-सा मवाद भरा हो, ऐसे पके हुए व्रणकी जो मूर्ख मनुष्य उपेक्षा करता है—पर्वा नहीं करता, उसके व्रणका मवाद चमड़ा, मांस, शिरा, स्नायु, सन्धि, हड्डी, कोठे और मर्मस्थलके छेदोंमें होकर, उनके भीतर घुस जाता है। फिर यह मवाद अपने निकलनेके लिए एक राह कर लेता है और उस राहमें होकर नाड़ी या नालीकी तरह ज़ोरसे बहा करता है; इसीसे इस तरहके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

व्रणको "नाड़ी व्रण" कहते हैं। और भी खुलासा—जो फोड़ा आराम होकर एक सूराखसे मवाद बहाया करता है, उसे "नाड़ी व्रण या नासूर" कहते हैं।

नाड़ी व्रणकी संख्या।

नाड़ी व्रण पाँच तरहका होता है:—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) सन्निपातज, और
(५) शल्यज।

वातज नाड़ी व्रणके लक्षण।

वातज नाड़ी व्रण रूखा, छोटे मुँहवाला, शूल और झाग सहित होता है। यह रातमें बहुत बहता है।

पित्तज नाड़ी व्रणके लक्षण।

पित्तज नाड़ी व्रण होनेसे प्यास, ज्वर और दाह होता है। इसमेंसे गरम और पीली राध बहती है। यह दिनमें बहुत बहता है।

कफज नाड़ी व्रणके लक्षण।

इस नाड़ी व्रणसे अत्यन्त गाढ़ी, सफेद और चिकनी राध बहती है। यह कठोर और खुजलीयुक्त होता है और रातमें ज़ियादा बहता है।

त्रिदोषज नाड़ी व्रणके लक्षण।

जिसमें दाह, ज्वर, श्वास, मूर्च्छा, मुँह सूखना और पहले कहे हुए वात-पित्तादिके सब लक्षण मिलते हैं; उसे "त्रिदोषज नाड़ी व्रण" कहते हैं। यह काल रात्रिके समान घोर और प्राणनाशक होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शल्यज नाड़ी व्रणके लक्षण।

पहले कहे हुए व्रणके स्थानमें काँटा वग़ैरः शल्य अनजानमें लग-कर रह जावें, तो थोड़े ही समयमें नाड़ी व्रण हो जाता है। उस नाड़ी व्रणसे झागदार, गरम और खून-मिली राध बहती और नित्य पीड़ा होती है। ऐसे व्रणको "शल्यज नाड़ी व्रण" कहते हैं।

साध्यासाध्य लक्षण।

त्रिदोषज नाड़ी व्रण तो असाध्य होता है, पर बाक़ी चार इलाज करनेसे आराम हो जाते हैं।

नासूरकी विशेष चिकित्सा।

वातज नाड़ी व्रणकी चिकित्सा।

(१) वातज नाड़ी व्रणपर पहले दवा-मिली पुल्टिस बाँधो। फिर विधिपूर्वक नश्तरसे चीरकर राध निकाल दो। इसके बाद उस व्रणमें "सैंधानोन और चिरचिरेके चावल" पीसकर भर दो और ऊपरसे बाँध दो। इस व्रणको "वृहत्पञ्चमूलके काढ़े"से धोना चाहिये।

(२) हींग, हल्दी, कुटकी, बच, गोजिया और पञ्चमूल—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर कल्क या लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। यह तैल व्रणको शुद्ध करता, भरता और सुखाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) सैंधानोन, चीता, आक, कालीमिर्च, भाँगरा, नागकेशर, हल्दी और दारुहल्दी—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे कफ-वातसे पैदा हुआ नाड़ी व्रण नाश हो जाता है। परीक्षित है।

पित्तज नाड़ी व्रणकी चिकित्सा।

(१) पहले दूध और घीके साथ गेहूँके आटेकी लूपरी या पुल्टिस बनाकर व्रणपर बाँधो। पीछे उसे चीरकर—तेल, जमालगोटे और मँजीठकी सिलपर पिसी लुगदी उसमें भर दो। इस व्रणको नित्य हल्दी, लाल चन्दन और नीमकी छालके काढ़ेसे धोना चाहिये।

(२) काली निशोथ, निशोथ, त्रिफला, हल्दी और लोध—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इस घीमें दूध मिलाकर पित्तज नाड़ी व्रणपर इसके तरड़े दो। इससे राध बहना बन्द हो जाता है।

कफज नाड़ी व्रणकी चिकित्सा।

(१) पहले कुलथी, सरसों, सत्तू और बेलगिरी मिलाकर पुल्टिस बनाओ और व्रणपर बाँधो। जब व्रण नरम हो जाय, उसे चीर दो। इसके बाद नीम, तिल, चीता, जमालगोटा, फिटकरी और सैंधेनोनको एकत्र पीसकर उसमें भर दो। इस व्रणको नित्य करञ्ज, नीम, चमेली, आक और पीलू—इनके स्वरसोंमेंसे किसी एकके स्वरससे धोया करो।

(२) सज्जी, सैंधानोन, दन्ती, चीता, सफेद आक, सिवार और चिरचिरेके बीज—इनको बराबर-बराबर लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलका नाम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"स्वर्जिकाद्य तैल" है। इस तैलके लगानेसे दुष्ट व्रण और कफ सम्बन्धी नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं।

(३) सैंधानोन, बहेड़ा, कालीमिर्च, चीता, करेला, हल्दी और दारुहल्दी—सबको समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे वायु सम्बन्धी नाड़ी व्रण, चाहे जितनी दूर तक पहुँचा हो, आराम हो जाता है।

शल्यज नाड़ी व्रण चिकित्सा।

(१) शल्यज व्रणको नश्तरसे चीरकर काँटा निकालो, फिर उसकी राहको साफ करो। इसके बाद उसपर शहद और घीमें पिसे हुए नीमके पत्तोंका लेप कर दो अथवा तिल पीसकर लेप कर दो। इन उपायोंसे व्रण सूख जायगा।

(२) जमालगोटा, खजूर, कैथ, बेलगिरी और बड़—इनके कच्चे फलोंका काढ़ा बनाओ। नागरमोथा, फूल प्रियंगू, धूप सरल, रोहिष तृण, मोचरस, नागकेशर, लोध और धायके फूल—इनको बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना जमालगोटा आदिका काढ़ा और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलका नाम "कुम्भीकाद्य तैल" है। इससे शल्य सम्बन्धी नाड़ी व्रण तथा अन्यान्य सब तरहके व्रण आराम हो जाते हैं।

अगर आप उत्तमोत्तम ग्रन्थ देखना चाहते हैं, तो "हाजीबाबा", "नेपोलियन बोनापार्ट", "सुहागिनी" और "काव्यवाटिका" देखिये, चारों ही सचित्र हैं। मूल्य क्रमशः ३), २॥), ३।) और ३)।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

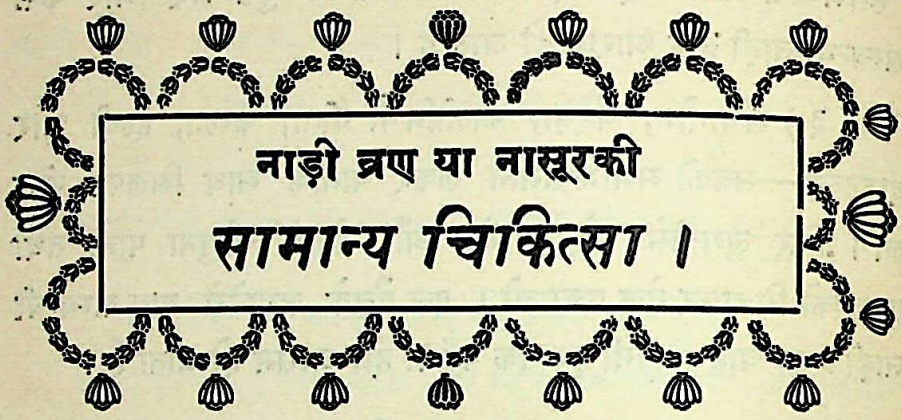

नाड़ी व्रण या नासूरकी
सामान्य चिकित्सा ।

(१) थूहरका दूध, आकका दूध और दारुहल्दी—इन तीनोंकी बत्ती बनाकर व्रणमें रखनेसे सब तरहके नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं।

(२) शहद और सैंधेनोनकी बत्ती बनाकर व्रणमें रखनेसे नाड़ी व्रण आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—शहद और सैंधेनोनको मिलाकर सूतपर लपेटनेसे भी बत्ती बनती है।

(३) दो तोले सिन्दूरकी सिलपर पिसी लुगदी, लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना कचूरका रस या काढ़ा—इनको मिलाकर तेल पका लो। इस तैल द्वारा तर करनेसे नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण और विसर्प—ये सब नाश हो जाते हैं।

(४) अमलताश, हल्दी और निशोथको "गोमूत्रके साथ" पीसकर और "शहद"में मिलाकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको व्रणमें रखनेसे नाड़ी व्रण शुद्ध होकर आराम हो जाता है।

(५) चमेली, आक, अमलताश, करंज, जमालगोटा, सैंधानोन, कालानोन, जवाखार और चीता—इनको समान-समान लेकर, "थूहरके दूध"में पीसकर और बत्ती बनाकर व्रणमें रखनेसे नाड़ी व्रण तत्काल नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) बहेड़े, आमकी गुठली, बड़के अंकुर, रेणुका, शंखाहूलीके बीज और सूअरकी विष्ठा—इनको जलाकर स्याही बना लो। इस स्याहीको तेलमें मिलाकर लगानेसे नाड़ी व्रण तत्काल नाश हो जाता है।

(७) सज्जी, सैंधानोन, दन्तीकी जड़, नीलीकी जड़ और नीलीके फल—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। यह तैल नाड़ी व्रणको नाश करता है।

(८) शुद्ध गूगल, त्रिफला और त्रिकुटा—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको घीमें मिलाकर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बनाओ। इन गोलियोंके हर दिन खाने और परहेजके साथ रहनेसे दुष्ट नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण, शूल, उदावर्त, भगन्दर, गुल्म और बवासीर रोग नाश हो जाते हैं। इस गूगलको गिलोयके स्वरस या काढ़ेके साथ खाना चाहिये। इसका नाम "सप्ताङ्ग गुग्गुल" है। परीक्षित है।

(९) थूहरके दूध और आकके दूधमें "दारुहल्दी" घिसकर बत्ती बना लो। फिर इस बत्तीको नासूरके सूराखमें भर दो। इस बत्तीसे सब तरहके नासूर आराम हो जाते हैं।

(१०) अमलताश, हल्दी और मँजीठ—समान-समान लेकर, "शहद" में पीसकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको नासूरके मुँहमें रखनेसे सब तरहके नासूर आराम हो जाते हैं।

(११) हंसराज, नीमके पत्ते और चमेलीके पत्तोंका रस तेलमें मिलाकर पका लो। इस तैलके लगानेसे नासूर आराम हो जाता है। पराया परीक्षित है।

नोट—तेल १ भाग और रस चार भाग लेकर पकाना। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लेना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नासूर नाशक यूनानी नुसखे।

(१) पुराना कम्बल जलाकर राख कर लो और तूतिया पीसकर छान लो। फिर दोनोंको बराबर-बराबर मिलाकर नासूरपर छिड़को; नासूर आराम हो जायगा।

(२) साँपकी काँचलीकी राख बड़के दूधमें मिला लो। फिर उसमें रूईका फाहा भिगोकर नासूरपर रखो और दस दिन बाद उसे उठा लो; अवश्य लाभ होगा।

(३) पाव भर सरसोंके तेलमें एक छिपकली जला लो और नीचे उतारकर छान लो। फिर उस तेलमें एक तोले गायके सुमकी राख और एक तोले जूतीके तलेकी राख मिला दो; जब एकदिल हो जायँ, तेलको रख दो। इस तैलकी चन्द बूँद रोज़ नासूरपर टपकानेसे नासूर आराम हो जाता है।

(४) गूलरके दूधमें फाहा तर करके नासूरपर लगातार कुछ दिनों तक रखनेसे नासूर आराम हो जाता है। इससे भगन्दरमें भी लाभ होता है।

(५) समन्दरशोखकी राख नासूरमें भरनेसे नासूर आराम हो जाता है।

(६) मदारके दूधमें रूई भिगोकर छायामें सुखा लो। फिर उस रूईकी बत्ती बनाकर एक दीपकमें रखो और सरसोंका तेल भर दो। बत्तीकी लौपर दूसरा दीपक अधर रखो, जिससे उसमें काजल जमा हो जाय। इस काजलको नासूरपर लगानेसे नासूर आराम हो जाता है।

(७) चिड़ियाकी बीट महीन पीसकर नासूरपर लेप करनेसे नासूर आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) मकड़ीका जाला साफ करके और "शराब"में भिगोकर नासूरपर रखनेसे नासूर आराम हो जाता है।

(९) करीलकी कोंपल १ माशे, मुर्दासंग १ रत्ती और बड़का दूध १ बूँद—इन सबको पानीके साथ पत्थरपर पीसकर नासूरपर लेप करो और ऊपरसे १ रत्ती "बड़का दूध" टपका दो। इससे नासूर आराम हो जाता है।

(१०) छोटी कटेरीका फल कूट-पीसकर रस निकाल लो। उस रसमें फाहा भिगोकर नासूरपर रखो। अवश्य लाभ होगा।

(११) जंगली गिरगट जिसकी गर्दन सुर्ख़ और सिर मोटा होता है, बहुधा वृक्षोंपर रहता है, लाकर मार डालो और दस तोले कड़वे तेलमें डालकर जला लो। फिर मरहम बनाकर रख लो। इसके नासूरपर हर दिन लगानेसे नासूर आराम होजाता है।

(१२) शुद्ध संखिया सफेद, लौंग, अजवायन, शुद्ध अफीम, जावित्री, शुद्ध कुचला, शुद्ध गन्धक आमलासार, शुद्ध बच्छनाग, कायफल, बंसलोचन, छोटी इलायची, बड़ी इलायची हरेक एक-एक तोले; शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल हरेक दो-दो तोले और घी साढ़े तीन पाव तैयार करो। फिर सब दवाओंको पीस-छानकर घीमें मिलाकर २४ घण्टों तक खरल करो। फिर एक साफ मलमलके कपड़ेपर इस घुटे हुए मसालेको लेप करके फलीता-सा बना लो। नीचे पानीका भरा कटोरा रख लो। फलीतेको जलाकर चिमटेसे पकड़ लो। फलीतेका मुँह कटोरेपर रहना चाहिये। जब फलीता जलने लगे, उसपर दूसरा आदमी घीकी धार छोड़ता जावे। जब फलीता जल जाय, घी न डाले। इस जले हुए फलीतेको खरलमें घोटकर मरहम बना लो। यह मरहम नासूर, भगन्दर और पीप पड़े हुए घावोंके लिए बेनज़ीर है।

कटोरेमें टपके हुए घीको किसी बर्तनमें निकाल लो। इसकी एक बूँद बताशे या मक्खन अथवा मलाई या दूध वग़ैरःके साथ खानेसे दमा, खाँसी, कोढ़, लिंगेन्द्रियकी कमज़ोरी, जिगरकी बीमारी, तिल्ली, पेचिश, संग्रहणी और हैज़ा वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं।

इस घीमें घीसे चौगुना मक्खन या घी मिलाकर लिंगेन्द्रियपर मालिश करनेसे शर्तिया फायदा होता है। यह तिला लिंगके दोष नाश करनेमें रामवाण है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

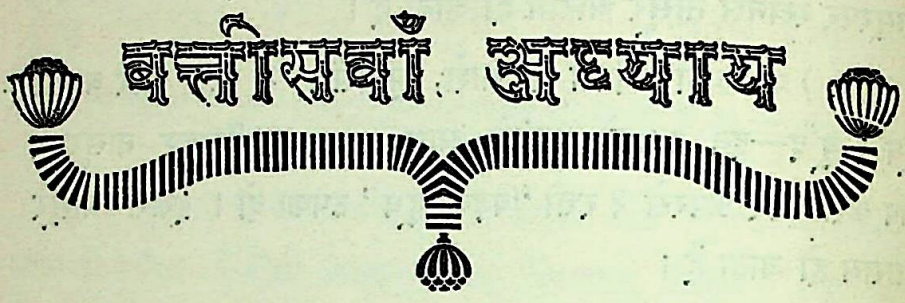

भग्न रोग-वर्णन ।

(हड्डी वग़ैरः टूटना)

भग्न रोगका निदान ।

पतन, पीड़न, व्याल अथवा विषादिक प्रयोग और अग्निदग्ध इत्यादि तथा अनेक प्रकारके अभिघातोंसे विविध प्रकारका सन्धि और अस्थि भग्न होता है ।

खुलासा—पेड़ या मन्दिर अथवा मकान वग़ैरःसे गिरने, किसी चीज़के नीचे दब जाने, सर्प वग़ैरःके डसने, विष वग़ैरः प्रयोग करने और आगसे जलने वग़ैरः वग़ैरः कारणोंसे सन्धि और हड्डी टूट जाती हैं । इसलिए यह रोग दो तरहका होता है:—

(१) काण्डभग्न और (२) सन्धिभग्न ।

काण्डभग्नके सामान्य लक्षण ।

काण्डभग्न हाड़के मुड़ जाने या टूट जाने आदिको कहते हैं । इस अवस्थामें रोगीको उठते, बैठते और खड़े होते किसी भी तरह चैन नहीं मिलता । भग्न या टूटे स्थानको दबानेसे आवाज़ होती है, शूल होता है और वहाँ हाथसे छुआ नहीं जाता ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्धिभग्नके सामान्य लक्षण।

पसारते समय, सिकोड़ते समय और इधर-उधर करते समय घोर पीड़ा हो एवं स्पर्श भी न सहा जाय, तो "सन्धिभग्न" समझना चाहिये। इसमें चारों ओर सूजन और रातमें वेदना होती है।

नोट—भग्न रोगके सम्बन्धमें प्राचीन ग्रन्थोंमें बहुत कुछ लिखा है, तथापि हम इस विषयपर अधिक लिखना व्यर्थ समझते हैं, क्योंकि आजकलकी डाक्टरी-शिक्षाके सामने वह सभी अपूर्ण है और केवल लिख देनेसे यह विद्या आ नहीं सकती। दूसरे, ऐसे रोगी वैद्योंसे इलाज भी नहीं कराते और वैद्य भी इस विषयमें कोरे होते हैं। अतः हम ग्रामीण भाइयोंके लिए, जो समयपर अस्पतालों तक नहीं पहुँच सकते, मामूली चोट वग़ैरःके चन्द उपाय लिखकर इस विषयको समाप्त करेंगे।

भग्न चिकित्सामें जानने योग्य बातें।

(१) पहली उम्रमें हुआ भग्न साध्य है। अल्प दोषवाले मनुष्यका भग्न भी साध्य है और शिशिर ऋतु या शीतकालमें हुआ भग्न साध्य है।

(२) पहली उम्रमें टूटे हुए हाड़ एक महीनेमें, दूसरीमें टूटे हुए दो महीनेमें और पिछली उम्रमें टूटे हुए तीन महीनेमें मज़बूत हो जाते हैं।

(३) भग्न-स्थान पक न जाय, इसका ख़याल अवश्य रखना चाहिये, क्योंकि अगर भग्न पक जाता है, तो शिराओं और स्नायुओंको ख़राब कर देता और कष्टसाध्य हो जाता है।

(४) गिर जाने या चोट वग़ैरः लगनेसे अगर अंग सूज जावे और घाव न हो, तो वैद्यको शीतल पदार्थ सींचना और गाढ़ा-गाढ़ा शीतल लेप करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) अगर भग्न व्रण सहित हो, तो उस व्रणको "घी और शहद" मिले हुए काढ़ोंसे धोना चाहिए। इसके बाद सब क्रियाएँ भग्नके समान करनी चाहिए। इस मौक़ेपर वातरोगमें कहे हुए घी-तैल आदि उपकारी हैं।

(६) जिसको सन्धिभग्न या काण्ड भग्न हुआ हो, उसे नमक, चरपरे पदार्थ, खारी पदार्थ, खट्टे पदार्थ, मैथुन, कसरत, दिनमें सोना, रातमें जागना, चिन्ता करना, धूपमें बैठना और रूखे अन्न खाना—ये सब छोड़ देने चाहिएँ।

इस रोगमें मांस-रस, चावल, गेहूँ, दूध, घी, मक्खन, बादाम और अंगूर आदि पदार्थ पथ्य हैं।

(७) जब अंगोंको फैलाते-पसारते समय ज़रा भी दर्द न हो, कोई अवयव छोटा न रह जाय, सूजन नामको भी न रहे और उठते-बैठते-चलते समय ज़रा भी दुःख न हो यानी ये सब काम सुखसे हों, तब समझो कि भग्न आराम हो गया—टूटा हुआ अंग ठीक हो गया।

भग्न रोग-चिकित्सा।

लगाने और बाँधने की दवाएँ।

(१) अगर हड्डी टूट गई हो, तो पहले शीतल जलके तरड़े दो, फिर कीचका लेप करो और कुशा रखकर पट्टी बाँध दो। अथवा गूलर, पीपल, ढाक, बाँस, कदम्ब, सर्ज, अर्जुन और बेत—इनकी छालों अथवा कुशाओंको रखकर मज़बूत पट्टी बाँध दो। जाड़ेके दिनोंमें सात-सात दिनमें पट्टी खोलो; गरमीमें तीन-तीन दिनमें पट्टी खोलो और साधारण समयमें पाँच-पाँच दिनमें बन्द खोलो। अथवा यथा दोषानुसार विचार करके कम या ज़ियादा दिनमें पट्टी खोलो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा यों समझिये कि, टूटे हुए स्थानको पहले शीतल जलसे सींचो, फिर झुकी हुई, दबी हुई या नीची हुई हड्डीको उठाओ और ऊँची हुई हड्डीको दबाकर अपनी जगहपर ले जाओ। फिर समान काठकी दो तख्ती दोनों तरफ रखकर, कपड़ेसे बाँध दो। न बन्धन बहुत ढीला बाँधो न कसकर। ढीला बन्धन बाँधनेसे संयोग स्थिर नहीं होता और कसकर बाँधनेसे चमड़े वग़ैरःमें सूजन, घाव और दर्द हो जाता है। बन्धन बाँधकर, बन्धनके ऊपर न्यग्रोधादिगणकी दवाओंके शीतल किये हुए काढ़ेको सींचो और बन्धनके कपड़ेको तर रखो। अगर ये दवाएँ न मिलें तो शीतल जलसे ही बन्धनके कपड़ेको तर रखो। अगर "नौसादर" हो, तो उसे पीसकर पानीमें भिगो दो और उसी पानीसे बन्धनको तर रखो। पट्टी खोलनेके सम्बन्धमें लिख ही आये हैं।

नोट—न्यग्रोधादिगणके कषायको शीतल करके, उसके तरड़े देनेसे इस रोगमें बड़ा लाभ होता है। क्योंकि न्यग्रोधादिगणकी दवाएँ भग्नस्थान यानी टूटी हुई जगहको जोड़नेमें परमोत्तम हैं।

बड़, गूलर, पीपर, पाखर, मुलेठी, आमड़ा, अर्जुन, कोषाम्र, पिण्डिशाक, तेजपात, बड़ी जामुन, छोटी जामुन, पियाल, महुआ, कुटकी, बेत, कदम्ब, बेर, लाल लोध, शल्लकी, लोध, सावर लोध, भिलावे, ढाक और मेढ़ासींगी—इनको न्यग्रोधादिगण कहते हैं। ये व्रणनाशक, मज्जरोधक, भग्नस्थान संयोजक—टूटेको जोड़नेवाली तथा रक्तपित्त, दाह, मेदरोग और योनिदोष निवारक हैं।

(३) हड्डीके मिल जानेपर बन्धन खोलकर मँजीठ और मुलेठी—इनको पानी या काँजीमें पीसकर पीड़ित या भग्न-स्थानपर लेप करनेसे अथवा १०८ बारके धुले हुए घीमें साँठी चावलोंका आटा मिलाकर लेप करनेसे चोट लगनेसे पैदा हुए रोग मय सूजनके तत्काल नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—कोई मुलेठीकी जगह "महुआ" लिखते हैं।

(४) इमलीके फलोंमें नमक पीसकर भग्न-स्थान (टूटे स्थान) पर लेप करनेसे चोटसे हुई पीड़ा, लाली और सूजन तत्काल दूर हो जाती और हड्डी जुड़ जाती है।

(५) अगर भग्न-स्थानमें दर्द हो, तो पंचमूलके काढ़ेमें दूध मिलाकर उससे भग्नको सींचो यानी दूध मिलाकर यह काढ़ा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उसपर डालो। अथवा दूधमें "पंचमूलकी दवाएँ" पकाकर, उसके तरड़े दो।

(६) अथवा विचार करके चूकेका तेल सुहाता-सुहाता सींचो। अथवा जो अन्न जलन नहीं करते उनकी पुल्टिस बाँधो।

नोट—यहाँ जो लेप लिखे हैं, वे सब हड्डी मिल जाने और पट्टी खोलनेपर करने चाहियें। पहला उपाय तख़्ती वग़ैरः रखकर बाँधना और न्यग्रोधादिगणकी दवाओंके काढ़े वग़ैरःसे सींचना है। जब बन्धनसे हड्डी ठिकाने बैठ जाय, तब बन्धन खोलकर लेप लगाने चाहियें।

(७) अगर भग्न रोग पुराना हो, आराम न होता हो, तो "नारायण तैल, माष तैल या कुब्ज प्रसारिणी तैल" की मालिश कराओ। इन तैलोंकी विधि इसी भागके पृष्ठ २६८—३०० में लिखी है।

(८) अम्बाड़ेकी जड़, इमलीके फल, इमलीके पत्ते, सहँजनेकी जड़, पुनर्नवाकी जड़, मानकन्द और सुपारीकी जड़—इनको कूट-पीसकर और माठे तथा काँजीमें पकाकर लेप करनेसे पीड़ा और सूजन दूर हो जातीं एवं टूटी हुई हड्डियाँ जुड़ जाती हैं।

(९) चावलोंके आटेमें नमक मिलाकर लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है।

(१०) इमली या आमके रसका लेप करनेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है।

(११) चमेलीकी जड़ पीसकर उसमें "शहद" मिलाओ और चोटकी जगह लेप करो। इससे टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है।

(१२) भुना हुआ सुहागा पीसकर लगानेसे टूटी हुई हड्डीमें लाभ होता है।

खाने-पीने की दवाएँ।

(१) लहसन, शहद, पीपरकी लाख, घी और मिश्री डेढ़-डेढ़ माशे समान-समान लेकर मिला लो और पीस लो। इसको ६ या ८

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

माशेकी मात्रामें नित्य चाटनेसे भग्नरोग आराम हो जाता और अपने स्थानसे हटी हुई हड्डी ठीक हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(२) बबूलकी छालका कपड़-छन किया हुआ चूर्ण तीन माशे—एक तोले घीमें मिलाकर चाटनेसे भग्नरोग आराम हो जाता है।

नोट—बबूलकी फलीका चूर्ण ३ माशे, ६ माशे शहदमें मिलाकर तीन दिन तक चाटनेसे टूटी हुई हड्डी जुड़ जाती है। परीक्षित है।

(३) पीली कौड़ीकी भस्म दो रत्ती "कच्चे दूध"में मिलाकर पीनेसे भग्नरोग आराम हो जाता है।

(४) हड़जोड़, पीपरकी लाख, गेहूँकी मैदा और अर्जुनकी छाल—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे छै-छै माशे चूर्ण नित्य दूध और घीमें मिलाकर खानेसे हड्डी जल्दी ही मिलती है। यह नुसखा सन्धिभग्न और अस्थिभग्न दोनोंपर ही उत्तम है।

(५) अर्जुनकी छाल और पीपरकी लाख—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर चूर्णके बराबर "शुद्ध गुग्गुल" मिलाकर खरलमें डालो और "घी" दे-देकर खूब कूटो। जब एकदिल हो जायँ, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके सवेरे-शाम खाने और दूध-घीका भोजन करनेसे टूटा हाड़ निस्सन्देह जुड़ जाता है। परीक्षित है।

(६) पृष्ठपर्णीकी जड़का चूर्ण मांसरसके साथ २१ दिन तक सेवन करनेसे अस्थिभग्न रोग नाश हो जाता है।

(७) तीन माशे मोमियाई दूधके साथ खानेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है। यह यूनानी दवा इस रोगमें सर्व्वोत्तम है।

छै माशे कच्ची फिटकरी, गायके कच्चे दूधके साथ खानेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है।

हारसिंगारका चूर्ण "घी"में मिलाकर खानेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीपरकी लाख, गेहूँकी मैदा और अर्जुनकी छाल—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमेंसे ३ या ४ माशे चूर्ण १ तोले भर घीमें पीसकर खाने और ऊपरसे गायका दूध पीनेसे टूटा हाड़ जुड़ जाता है।

आभा गुग्गुल।

बबूलकी फली, त्रिफला और त्रिकुटा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णकी बराबर "शुद्ध गूगल" मिलाकर रख लो। इसमेंसे तीन-तीन या छै-छै माशे रोज़ खानेसे सन्धिभग्न रोग आराम हो जाता है। इसका नाम "आभागुग्गुल" है। परीक्षित है।

लाक्षाद्य गुग्गुल।

लाख, हड़संघारी, अर्जुनकी छाल, असगन्ध, शुद्ध गूगल और बड़ी खिरेंटी—इनको समान-समान लेकर पीस-कूट लो। इसके एक तोला रोज़ खानेसे टूटा हुआ हाड़ जुड़कर वज्रके समान हो जाता है और पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

थोड़े भुने हुए गेहूँका आटा "शहद" के साथ खिलानेसे अस्थिभंग रोग आराम हो जाता है। कमर और जोड़ मुड़ जानेके लिए यह अच्छी दवा है। परीक्षित है।

चोट वग़ैरःपर हकीमी नुसख़े।

नोट—जब कोई चीज़ किसी अङ्गपर गिर पड़ती है, तो उसे "ज़रब" कहते हैं। जब अङ्ग आप ही किसी चीज़पर गिर पड़ता है, तो उसे "सकता" कहते हैं। अगर इनकी वजहसे सूजन या ज्वर हो, तो पहले सूजन और ज्वरका उपाय फ़स्द, पछने और नर्म करनेवाली चीज़ोंसे करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खानेकी दवाएँ।

(१) पीपलकी इक्कीस पत्तियाँ पीसकर "गुड़" में मिला लो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको सात दिन खानेसे चोट आराम हो जाती है।

(२) बारहसिंघेका सींग पानीमें घिसकर पीनेसे चोट आराम हो जाती है।

(३) कच्चा बैंगन "शक्कर" के साथ खाने और थोड़ी-सी सौंफकी जड़ पीसकर पीनेसे चोट आराम हो जाती है।

(४) चार माशे खड़िया मिट्टी आध पाव पानीमें घोल दो। जब मिट्टी नीचे बैठ जावे, पानीको नितार-छानकर पीओ। उससे चोटमें लाभ होता है।

(५) पिसा हुआ नोन ६ माशे और सफेद चीनी ६ माशे मिलाकर खानेसे चोटकी पीड़ा क़तई आराम हो जाती है।

(६) हजरल यहूद चार रत्तीसे एक माशे तक खानेसे चोट आराम हो जाती है। यह नुसख़ा मोमियाईकी बराबरी करता है।

(७) थोड़े-से गेहूँ जला लो। जले हुए गेहुँओंकी बराबर "गुड़" ले लो। फिर दोनोंको मिलाकर पीस लो और थोड़े-से घीमें मिला लो। इसकी मात्रा डेढ़ तोले तक है। इसे "हिन्दी मोमियाई" कहते हैं। इसे तीन दिन खानेसे आदमी तो आदमी जानवरोंकी चोट और पीड़ामें भी लाभ होता है।

(८) एक माशे फिटकरी पीसकर चार तोले घीमें भूनो। जब फिटकरी नीचे जम जावे, ऊपरका घी नितार लो। इस नितरे हुए घीमें शक्कर और मैदा मिलाकर हलवा बना लो। इस हलवेके खानेसे चोट आराम हो जाती है। पर इसके साथ ही एक काम और करना चाहिये। वह यह कि, इस हलवेमेंसे कुछ लेकर एक गोली बना लो और उसमें वह घीके नीचे जमी हुई फिटकरी रखकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चोटपर तीन दिन तक लगाओ। इस उपायसे चोट और शरीरमें जमा हुआ खून पिघलकर दर्द आराम हो जाता है। यह दवा मोमियाईसे भी उत्तम है।

लगानेकी दवाएँ।

(९) बचियारकी लकड़ी पानीमें घिसकर और गुनगुनी करके लगानेसे चोट आराम हो जाती है।

(१०) सहँजनेकी पत्तियाँ और मीठा तेल बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीसो और चोटपर लेप करके धूपमें बैठो। इससे चोट आराम हो जाती है।

(११) रैंडीकी गरी और काले तिल बराबर-बराबर लेकर अलग-अलग कूटो। फिर मीठे तेलमें दोनोंको मिलाकर चोटपर लेप करो। इससे चोट आराम होती और टूटा हुआ जोड़ अपनी असली हालतमें आ जाता है।

(१२) तिलकी खली कूटकर गरम पानीमें डाल दो। जब गल जावे, उसे महीन कपड़ेपर ल्हेसकर जोड़पर रख दो। इस उपायसे चोट और मोचमें अवश्य आराम मालूम होता है।

(१३) पुराने नारियलकी मीठी गरी कूटकर, उसमें चौगुनी महीन हल्दी मिला दो और कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, पोटलीको आगपर गरम करो और उससे घण्टे सवा घण्टे तक चोटपर सेक करो। फिर चोट और वरम या सूजनकी जगहपर इसे बाँध दो। इस तरह दो-तीन दिन करनेसे चोट आराम हो जायगी।

(१४) हल्दी पिसी हुई, मैदालकड़ी पिसी हुई और गेहूँकी मैदा—प्रत्येक आध-आध पाव; लोटन सज्जी २० माशे और मीठा तेल पाव भर—ये सब तैयार रखो।

पहले तेलको आगपर गरम करो। फिर उसमें "मैदा" डालकर भूनो। इसके बाद उसमें पिसी हुई "सज्जी" डाल दो। इसके भी बाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिसी हुई "मैदालकड़ी और अन्तमें हल्दी" भी डाल दो और थोड़ा पानी डालकर पकाओ। जब पानी जल जावे और लेई-सी हो जावे, गरम-गरम लेकर सेक करो। इसे लिपड़ी कहते हैं। चोटके लिए यह सबसे अच्छी दवा है।

(१५) अगर मोच आ गई हो, तो पहले जोड़को गुनगुने पानीसे धोओ। इसके बाद अण्डेकी ज़र्दी और गेरू दोनोंको मिलाकर और गुनगुना करके लेप करो। फिर जोड़को आगसे सेक दो, ताकि दवा सूख जावे। इस उपायसे मोच जल्दी आराम हो जाती है।

(१६) सिंगरफ एक भाग और फिटकरी दो भाग—दोनोंको कूट-पीस और मिलाकर तवेपर डालो। तवेके नीचे मन्दी आग जलाओ। जब नीचेकी दवाका हिस्सा भुनकर खिल जावे, तब उस टिकियाको उलट दो, ताकि इस तरफसे भी दवा भुन जावे। फिर इसको पीसकर रख लो। इसकी मात्रा १ रत्तीसे २ रत्ती तक है। यह दवा चोटका दर्द नाश करनेमें लासानी है। मोमियाईके बराबर काम देती है।

(१७) हल्दीकी डलियाँ यानी गाँठें गायके घीमें आठ रोज़ तक भिगो रखो, इसके बाद उन्हें सुखाकर और निहायत बारीक पीसकर शीशीमें रख दो। लकड़ीकी छोटी-छोटी पतली-पतली तख्तियाँ या बाँसकी चौड़ी फड़चटें और कपड़ेकी पट्टियाँ तैयार रखो। ज़रूरतके समय पहले हड्डीको मुनासिब तरीक़ेसे जोड़कर, ऊपरके हल्दीके चूर्णको घीमें पकाकर चोटपर खूब गाढ़ा-गाढ़ा लेप करो। फिर लकड़ीकी तख्ती या बाँसकी फड़चट लगाकर पट्टीसे बाँध दो। दो-चार दिन इसी तरह बाँधते रहो। उसी हल्दीके चूर्णको घीमें पकाकर तीन-तीन माशे रोज़ चटा दिया करो। खटाई और बादी पदार्थोंसे परहेज़ रखो। चाहे हड्डी टूट गई हो या चोटसे नाक वग़ैरः बैठ गई हो, इससे आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेंतीसवाँ अध्याय

भगन्दर रोग-वर्णन।

भगन्दरके लक्षण।

गुदाकी बाजूमें, दो अंगुलपर, एक फुन्सी होती है। उसमें बड़ी वेदना होती है। जब वह फूट जाती है, तब उसे "भगन्दर" कहते हैं।

"भावप्रकाश"में लिखा है, गुदाकी बग़लमें, दो अंगुलके बीचमें, पीड़ा करनेवाली और फटी हुई जो पिड़िका या फुन्सी होती है, उसे "भगन्दर" कहते हैं।

भोज महाशय कहते हैं, चूँकि यह गुदाको और मूत्राशयको, चारों ओरसे योनिकी तरह फोड़ देता है, इसलिये इस रोगको "भगन्दर" कहते हैं।

कोई कहते हैं—गुदाके इर्द-गिर्द, दो-दो अंगुलकी दूरीपर, फुन्सियाँ और गाँठें होती हैं, वे दर्द करती हैं, पकती हैं, फूटती हैं और बहती हैं, इसी रोगको "भगन्दर" कहते हैं। यूनानीवाले इस रोगको "बवासीर" कहते हैं।

यह भगन्दर जब अपथ्य सेवन करनेसे बिगड़ जाता है, तब उस जगह सूराख़ हो जाता है; फिर उस भगन्दरसे कभी मल और कभी मूत्र निकला करता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गुदासे दो अंगुलकी दूरीकी जगहमें नासूरकी तरह एक प्रकारका घाव हो जाता है। कुपित वातादि दोषोंसे, पहले गुदासे दो अंगुलकी दूरीपर, व्रण-शोथ पैदा होता है। जब वह पककर फैल जाता है, तब उसमेंसे लाल रंगके झाग और पीप वग़ैरः बहते हैं। घाव बढ़ जानेपर, उसमेंसे मल-मूत्रादि निकलते हैं। गुदा-प्रदेशमें किसी तरहका फोड़ा होकर पकनेपर, वह भी क्रमशः भगन्दर हो जाता है।

भगन्दरके पूर्वरूप।

जिसके भगन्दर होनेवाला होता है, उसकी कमर और हड्डियोंमें सूई चुभानेका-सा दर्द होता है तथा जलन, खुजली और वेदना वग़ैरः उपद्रव होते हैं।

वातज शतपोनक भगन्दरके लक्षण।

कसैले और रूखे पदार्थोंसे कुपित हुआ वायु, गुदा-प्रदेशमें, एक फुन्सी पैदा करता है। उस फुन्सीकी उपेक्षा करनेसे या जल्दी इलाज न करनेसे वह फुन्सी पक जाती है। उसमें घोर वेदना होती है। उस फुन्सीके फूटनेसे लाल झागदार पीप बहती है। फिर उसमें अनेक छेद हो जाते हैं। उन छेदोंमें होकर मूत्र, मल और वीर्य बहने लगते हैं। इस भगन्दरमें चलनीके समान अनेक छेद हो जाते हैं, इसलिये इसे "शतपोनक भगन्दर" कहते हैं।

नोट—संस्कृत भाषामें "शतपोनक" चलनीको कहते हैं। इस भगन्दरमें चलनीके समान छेद होते हैं, इसलिये इसे "शतपोनक" कहते हैं।

पित्तज उष्ट्रग्रीव भगन्दरके लक्षण।

अत्यन्त पित्तकारक पदार्थोंके सेवन करनेसे कुपित हुआ पित्त, गुदा-प्रदेशमें, लाल रंगकी फुन्सी पैदा करता है। वह फुन्सी शीघ्र ही पक जाती है। फूटनेपर उसमेंसे गरम बदबूदार पीप बहने लगती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

यह भगन्दर ऊँटकी-सी गर्दनवाला होता है, इसलिये इसे "उष्ट्रग्रीव या शिरोधर" कहते हैं।

नोट—इस भगन्दरकी फुन्सियोंका गला ऊँटकी गर्दनके समान होता है, इसीसे इसको "उष्ट्रग्रीव" कहते हैं।

श्लैष्मिक परिश्रावी भगन्दरके लक्षण।

कफके संयोगसे सफेद रंगकी सख्त फुन्सी होती है। उसमें खुजली बहुत चलती है। फूटनेपर उस फुन्सीसे गाढ़ी-गाढ़ी राध निरन्तर बहुत बहती है। इस भगन्दरमें पीड़ा कम होती है। इसे "परिश्रावी भगन्दर" कहते हैं, क्योंकि इससे राध बराबर बहती रहती है।

नोट—परिश्रावीका अर्थ है मवाद बहानेवाला। कफज भगन्दर होनेसे राध रात-दिन बहा करती है, इसीसे इसे "परिश्रावी" कहते हैं।

त्रिदोषज शम्बूकावर्त्त भगन्दरके लक्षण।

अनेक तरहके रंग, अनेक तरहकी पीड़ा और अनेक प्रकारके स्राव-वाली, गायके स्तनोंके समान फुन्सी पैदा होती है। उसका स्रावक मार्ग—मवाद बहानेकी राह शम्बूक या शङ्खके चक्करके समान होती है, इसीलिये उसे "शम्बूकावर्त्त भगन्दर" कहते हैं।

नोट—शम्बूक शङ्खको कहते हैं और आवर्त्त चक्करको कहते हैं। जिस फुन्सीकी मवाद निकालनेकी राह शङ्खके आवर्त्तके जैसी होती है, उसे "शम्बूकावर्त्त" कहते हैं।

शल्य सम्बन्धी उन्मार्गी भगन्दरके लक्षण।

गुदाके पास काँटा वग़ैरः लगनेसे या नाखून वग़ैरःसे खुजानेसे फोड़ा पैदा हो जाता है। वह बढ़ता और फूटता है। उसकी उपेक्षा करनेसे—उसका जल्दी ही इलाज न करनेसे—उसमें कीड़े पड़ जाते हैं। वे कीड़े चमड़े और मांस प्रभृतिको विदीर्ण करके,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अनेक मुँहवाले अनेक व्रण उत्पन्न कर देते हैं। ऐसे भगन्दरको शल्य सम्बन्धी "उन्मार्गी भगन्दर" कहते हैं।

नोट—इन व्रणोंकी तिरछी राहोंसे विष्ठा आदि निकला करते हैं, इसलिये इस भगन्दरको "उन्मार्गी" कहते हैं और शल्य सम्बन्धी इसलिये कहते हैं; क्योंकि यह शल्य यानी काँटे वग़ैर लगनेसे पैदा होता है।

साध्यासाध्यता।

सभी तरहके भगन्दर भयङ्कर और कष्टसाध्य हैं। इनमेंसे त्रिदोषज—शम्बूकावर्त और शल्यज—उन्मार्गी असाध्य हैं। जिस भगन्दर रोगीके भगन्दरसे वायु, मूत्र, विष्ठा, वीर्य और कीड़े निकलते हैं, वह तो मर ही जाता है।

भगन्दर-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) पकनेसे पहले ही भगन्दरका इलाज करना चाहिये, नहीं तो वह अत्यन्त कष्टसाध्य हो जाता है। वैद्यको चाहिये कि, उसकी गाँठ या फुन्सीको किसी हालतमें भी पकने न दे। ऐसा इलाज करे, जिससे वह बैठ जावे। फुन्सी या गाँठके कच्ची रहनेकी हालतमें "रक्तमोक्षण" यानी खून निकालना ही उसकी प्रधान चिकित्सा है।

(२) वमन, विरेचनादि, रक्तस्राव—खून निकालना, परिषेक—तरड़े और अनेक तरहके लेपोंसे इस रोगका इलाज फुन्सीके न पकनेकी हालतमें करना चाहिये। इन उपचारोंसे फुन्सी नहीं पकती।

(३) विद्रधि प्रभृति बैठानेके लिये जो उपाय लिखे गये हैं, वे सब भी इस मौक़ेपर काम दे सकते हैं।

(४) अगर फुन्सी या गाँठके बैठनेकी उम्मीद न हो, तो उसे व्रण-शोथ-चिकित्सामें कहे हुए उपायोंसे पकाकर, उसका मवाद

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

निकाल देना चाहिये अथवा नश्तरसे चीरकर मवाद निकाल देना चाहिये। जब वहाँ घाव हो जाय, उसका नासूरकी तरह इलाज करना चाहिये। जैसे—सैंहुड़के दूध, आकके दूध और दारुहल्दीकी बत्ती बनाकर घावमें रखनी चाहिये, ताकि घाव भर जाय। नासूर रोगमें जो तैल लिखे हैं, वे इस हालतमें भी काम दे सकते हैं।

(५) अगर भगन्दरका व्रण सूख भी गया हो, तो भी भगन्दर-वालेको एक साल तक दण्ड, कसरत, मैथुन, युद्ध और घोड़े-हाथीकी सवारी वग़ैरः तथा भारी अन्नके भोजनसे बचना चाहिये।

भगन्दर-चिकित्सा।

(१) भगन्दरकी बिना पकी फुन्सीपर सोंठ, गिलोय, पुनर्नवा, बड़के पत्ते और पानीके भीतर की ईंट—इन सबको पीसकर लेप करनेसे भगन्दरकी फुन्सी बैठ जाती है। परीक्षित है।

(२) पुनर्नवा, गिलोय, सोंठ, मुलेठी और बेरीके पत्ते—बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर और गरम करके गाँठपर बाँधनेसे गाँठ बैठ जाती है। परीक्षित है।

(३) ६ माशे अफीम, ६ माशे एलुआ और २ माशे मुनक्का—इनको पानीके साथ सिलपर पीसकर और टिकिया बनाकर गाँठपर बाँधनेसे भगन्दरकी गाँठ बैठ जाती है। परीक्षित है।

नोट—इन लेपोंको जहाँ तक भगन्दरकी फुन्सी हो, वहाँ ही तक करना चाहिये। अगर फुन्सी बैठे नहीं किन्तु पक जाय, तो पाटन, क्षार और अग्निदाह इत्यादि कर्म करके यथा दोष और यथा बल व्रणके समान चिकित्सा करनी चाहिये। अब आगे फुन्सीके फूटनेके बादकी चिकित्सा लिखी जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) तिल, बच, लोध, घरका धूआँसा, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी और हरड़,—इन सबको समान-समान लेकर और पानीके साथ महीन पीसकर लेप करनेसे भगन्दर शुद्ध होकर भर जाता है। परीक्षित है।

नोट—तिल, हरड़, दुगनी लोध, नीमके पत्ते, हल्दी, दारुहल्दी, खिरेंटी और घरका धुआँसा—इनका लेप भी उत्तम है।

(५) त्रिफलेके काढ़े या पानीसे घावको रोज़ धोकर, उस जगह त्रिफलेके ही काढ़ेमें बिल्लीकी हड्डी घिसकर लेप करनेसे भगन्दर और दुष्ट व्रण नाश हो जाते हैं।

(६) थूहरका दूध, आकका दूध और दारुहल्दी—इन तीनोंको पीसकर बत्ती बना लो और व्रणकी नाड़ीके भीतर रखो। इससे भगन्दरकी सूजन, शूल और पीप आना सब आराम होते हैं। सारे शरीरमें स्थित नासूरको भी यह बत्ती आराम कर देती है। परीक्षित है।

(७) कूट, तिल, पीपल, सैंधानोन, दाँतोंणी, निशोथ, तूतिया, हरड़, बहेड़ा, आँवला और हल्दी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और "शहद" मिलाकर लेप करो। इससे व्रण शुद्ध हो जाता है।

(८) गधेके खूनमें "अर्जुन वृक्षकी छाल" पकाकर लेप करनेसे भगन्दर रोग आराम हो जाता है।

(९) अड़ूसेकी पत्तियोंकी टिकिया बनाकर और उसपर सैंधानोन बुरककर बाँधनेसे भगन्दर आराम हो जाता है।

(१०) त्रिफला ३ तोले, शुद्ध गूगल ५ तोले और पीपर १ तोले—इनको पीस-कूटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे सूजन, वेदना, गुल्म, भगन्दर और बवासीर रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) चमेलीके पत्ते, बड़के पत्ते, गिलोय, सोंठ और सैंधानोन—इनको गाढ़ी छाछमें पीसकर लेप करनेसे भगन्दर आराम हो जाता है।

(१२) निशोथ, तिल, जमालगोटा, मँजीठ और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर "घी और शहद"में मिलाकर लेप करो। इससे भगन्दर अवश्य नाश हो जाता है।

(१३) हरड़, बहेड़ा, आँवला, शुद्ध भैंसागूगल और बायबिड़ङ्ग—इनका काढ़ा पीने और प्यास लगनेपर "खैरका रस मिला जल" पीनेसे भगन्दर अवश्य नाश हो जाता है।

(१४) न्यग्रोधादिगणकी दवाओंको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी मिलाकर तेल पका लो। यह तैल भगन्दरको नाश कर देता है।

नोट—इसी तरह घी पका सकते हो। "न्यग्रोधादिगण"की दवाएँ व्रणको साफ करनेवाली और भरनेवाली हैं, अतः इनके साथ पकाये हुए तैल और घी भगन्दरके घावको शुद्ध करने और भरनेमें परमोत्तम हैं।

(१५) तिल, मालकाँगनी, कूट, कलिहारी, कोइली, सोया, निशोथ और जमालगोटा—इनके काढ़े द्वारा धोनेसे भगन्दरका घाव शुद्ध हो जाता है।

(१६) बायबिड़ङ्ग, खैरसार, हरड़, बहेड़ा, आँवला और दो भाग पीपर—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद और तेल"में मिलाकर चाटनेसे कोढ़, प्रमेह, क्षय, भगन्दर और नाड़ीव्रण—ये सब आराम हो जाते हैं।

(१७) पुराना गुड़, नीलाथोथा, गन्दा बिरोजा और सरेश,—बराबर-बराबर लेकर थोड़े-से पानीमें घोटकर मरहम बना लो और उसे कपड़ेपर लगाकर ज़ख्म भगन्दरपर रख दो। दो-चार दफामें ही भगन्दर आराम हो जायगा। सुपरीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१८) मुर्दारसंग ३॥ माशे और कत्था ३॥ माशे दोनोंको पानीमें पीसकर १५ गोली बना लो। एक गोली रविवारके दिन दक्खनकी तरफ मुँह करके नाकसे छूकर पीठके पीछे फैंक दो। बाक़ी चौदह गोलियोंमेंसे एक सवेरे और एक शाम ताज़ा पानीके साथ खाओ। खानेको मूँगकी खिचड़ी खूब घी डालकर खाओ। अगर कसर रह जाय, तो तीन हफ्तेके बाद फिर इस दवाको खा सकते हो। मूँगकी दाल, मसूरकी दाल, आलू, बैंगन और गुड़से परहेज़ रखो। इस दवासे भगन्दर, सोज़ाक, आतशक और नासूर आराम हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

निस्पन्दन तैल।

चीता, आक, निशोथ, पाढ़, कठूमर, सफेद कनेर, थूहर, बच, कलिहारी, हरताल, सज्जी और मालकाँगनी,—इनको समान-समान लेकर, सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। लुगदीसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलसे भगन्दर साफ होता और भरता तथा उस स्थानका रंग शरीरके रंगके समान हो जाता है।

निशाद्य तैल।

हल्दी, आकका दूध, सैंधानोन, गूगल, कनेर और इन्द्रजौ—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे दूना तेल और तेलसे चौगुना पानी सबको मिलाकर पकाओ। तेल-मात्र रहनेपर छान लो। इस तैलकी मालिशसे भगन्दर नाश हो जाता है।

करवीराद्य तैल।

कनेर, हल्दी, जमालगोटा, कलिहारी, सैंधानोन, चीता, बिजौरा नीबू और इन्द्रजौ—इनको समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल, तेलसे चौगुना पानी और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे भगन्दर आराम हो जाता है।

नव कार्षिक गूगल।

तीन तोले त्रिफला, पाँच तोले शुद्ध गूगल और एक तोले पीपर—इनको पीस-कूटकर तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके खानेसे भगन्दर, सूजन, गुल्म और बवासीर रोग आराम हो जाते हैं।

विज्ञापन।

नेत्र-पीड़ा नाशक गोली—इन गोलियोंके बासी पानी या गुलाबजलमें घिसकर आँखोंमें आँजनेसे बालकोंकी आँखें दुखना, आँख सूज जाना, आँखें लाल हो जाना, कड़का मारना, थोड़े दिनका फूला, नाखूना आदि आराम होते हैं। सच तो यह है, इन गोलियोंके समान बालकोंके आँख दुखनेके रोगोंकी दवा भारतमें और नहीं है। प्रत्येक धर्मात्मा धनीको चाहिये, हमसे १०० गोलियाँ मँगाकर पास रखे और गली, मुहल्ले या गाँवके बालकोंकी आँखोंमें इनको बिना कुछ लिये आँजे। छोटे-छोटे बच्चोंके आशीर्वादसे जो पुण्य होगा, लिखकर बता नहीं सकते। ५ गोलीका मूल्य ॥=) है, पर १०० गोली एक साथ लेनेसे ७) में भेज देंगे। मँगाते समय इस पुस्तकके इस पेजका हवाला देना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

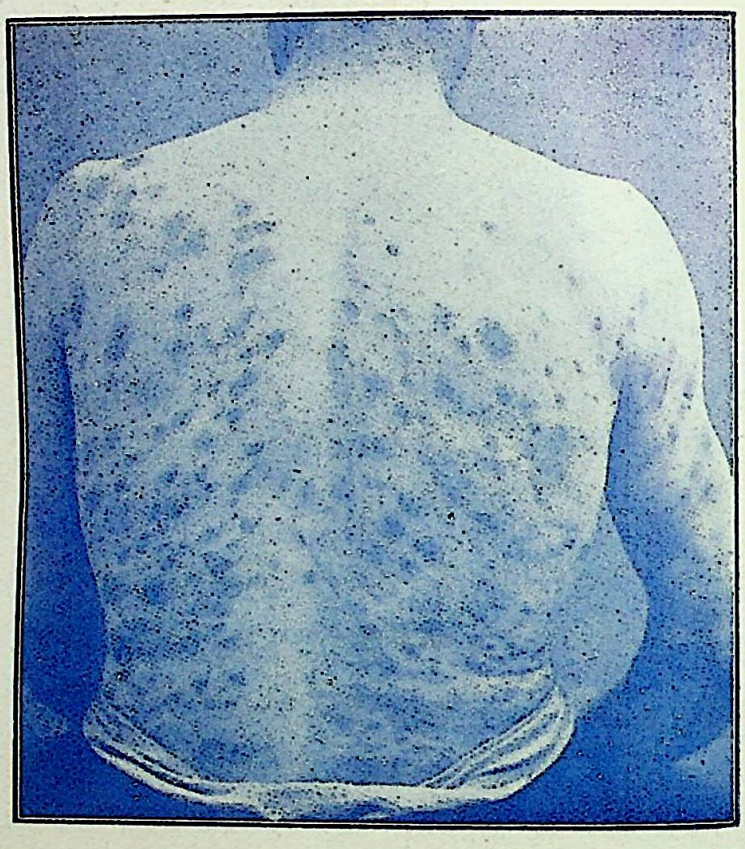

कोढ़ रोगी।

इस रोगीकी पीठमें कोढ़के छोटे-छोटे दाने निकले हुए हैं। इस कोढ़का आरम्भ काल कई महीनेसे एक साल तक समझा जाता है। उस समय पूरे लक्षण नहीं दीखते, कभी-कभी जाड़ा, ग्लानि, काम करनेकी अनिच्छा, ज्वर, दर्द, कमज़ोरी और नाकसे खून गिरना आदि लक्षण देखे जाते हैं। इसके बाद जहाँ कोढ़ होता है, वहाँकी स्पर्शशक्ति लुप्त हो जाती है। वहाँ सूई चुभानेसे भी पीड़ा नहीं होती। शेषमें छोटे-छोटे दाने या चकत्ते मिलकर बड़े-बड़े लाल-लाल चकत्ते हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चौंतीसवाँ अध्याय

कुष्ठरोग-वर्णन ।

(कोढ़ रोग)

कोढ़के निदान-कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे कोढ़ रोग होता है:—

(१) दूध और मछली वग़ैरः परस्पर विरुद्ध भोजन करनेसे ।

(२) दही और दूध वग़ैरः परस्पर विरुद्ध पदार्थ खाने-पीनेसे ।

(३) पतले, चिकने और भारी पदार्थ ज़ियादा खानेसे ।

(४) आती हुई वमन या क़यका वेग रोकनेसे ।

(५) मल-मूत्रादिके वेग रोकनेसे ।

(६) बहुत-सा खाकर दण्ड-कसरत वग़ैरः करनेसे ।

(७) बहुत खाकर धूप या आगके सामने रहनेसे ।

(८) सर्दी, गरमी, लंघन और आहारको अनुचित रीतिसे सेवन करनेसे ।

(९) पसीनोंमें तत्काल नहाने और शीतल जल पी लेनेसे ।

(१०) मिहनत करके तत्काल नहाने और ठण्डा पानी पीनेसे ।

(११) भयभीत होनेपर तत्काल नहाने और शीतल जल पीनेसे ।

(१२) अजीर्णमें खाने या भोजन-पर-भोजन करनेसे ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१३) वमन-विरेचनादि पञ्चकर्मके बिगड़नेसे।

(१४) नया अन्न, दही, मछली और खारे, खट्टे पदार्थ अधिक खानेसे।

(१५) उड़द, मूली, पकान्न, मिठाई और तिल ज़ियादा खानेसे।

(१६) दूध और गुड़ मिलाकर ज़ियादा खानेसे।

(१७) विदग्धादि अजीर्ण होनेपर मैथुन करनेसे।

(१८) दिनमें बहुत और बेक़ायदे सोनेसे।

(१९) गुरुजनों और ब्राह्मणोंका अपमान करनेसे।

कोढ़ होनेके विशेष कारण।

"भावप्रकाश"में कोढ़ होनेके वही कारण लिखे हैं, जो हम लिख आये हैं, पर कोढ़के और कारण हैं, जो बंगसेनने लिखे हैं:—

तिलतैल कुलित्थांश्च वल्मीकं लिङ्गमेव च।
माहिषं दधि वृन्ताकं सप्तैते कुष्ठ हेतवः॥

तिल, तेल, कुल्थी, वल्मीक रोग, लिङ्ग रोग (उपदंश वग़ैरः), भैंसका दही और बैंगन,—इन सात कारणोंसे भी कोढ़ होता है।

इन सबके सिवा, वातरक्त और पारेके विकारसे भी कोढ़ रोग होता है।

शास्त्र-विरुद्ध आहार-विहार करनेवालोंको आँखें खोलकर देखना चाहिये कि, उनकी मामूली ग़लतियोंसे, जिन्हें वे आयुर्वेद न पढ़नेके कारण ग़लती नहीं समझते, कैसा भयङ्कर रोग होता है; अतः वैद्यका धन्धा करनेवालोंको ही नहीं, बल्कि मनुष्य-मात्रको आयुर्वेद पढ़ना चाहिये। बिना आयुर्वेद पढ़े दीर्घायु और आरोग्यकी प्राप्ति हो नहीं सकती।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोढ़की सम्प्राप्ति और संख्या।

ऊपर लिखे हुए कारणोंसे वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष कुपित होते हैं। ये तीनों दोष कुपित होकर, रस, रुधिर, मांस और जलको दूषित करते या बिगाड़ते हैं। रस और रुधिर वग़ैरःके बिगड़नेसे "कोढ़" रोग होता है।

वात, पित्त और कफ—ये तीन दोष हैं और रस, रुधिर, मांस और लसीका—ये चार दूष्य हैं; यानी वात, पित्त और कफ दूषित करनेवाले हैं और रस, रुधिर, मांस और लसीका दूषित होनेवाले हैं। मतलब यह है कि, वात, पित्त, कफ, रस, रुधिर, मांस और लसीका—इन सातोंके दूषित होने या ख़राब होनेसे कोढ़ रोग होता है। ऊपर लिखे हुए सातों पदार्थोंके समुदायसे सात तरहका तथा इनके सिवाय और ग्यारह तरहका कोढ़ होता है। कुल १८ तरहके कोढ़ होते हैं। इनमेंसे सात बड़े कोढ़ और ग्यारह क्षुद्र या छोटे कोढ़ होते हैं।

सात महाकुष्ठोंके नाम।

सात महाकुष्ठों या बड़े कोढ़ोंके नाम ये हैं:—

(१) कपाल, (२) औदुम्बर,
(३) मण्डल, (४) सिध्म,
(५) काकणक, (६) पुंडरीक,
(७) ऋष्यजिह्वक।

नोट (१)—ये सातों कोढ़ उत्तरोत्तर धातुओंमें जल्दी-जल्दी घुसते हैं, उल्वण दोषसे पैदा होते हैं और इनकी चिकित्सा भी अनेक हैं।

नोट (२)—सुश्रुतने "सिध्म" कोढ़को क्षुद्र या छोटे कोढ़ोंमें गिना है, पर यहाँ यह महा या बड़े कोढ़ोंमें गिना गया है। इसकी यह वजह है कि, चरक ऋषिने सिध्मको बड़े कोढ़ोंमें गिना है। जो "सिध्म" धातुओंमें घुस जाता है, वह महा कुष्ठ या बड़ा कोढ़ कहलाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्यारह क्षुद्र कोढ़ोंके नाम।

ग्यारह क्षुद्र या छोटे कोढ़ोंके नाम ये हैं—

(१) एककुष्ठ,	(२) गजचर्म,
(३) चर्मदल,	(४) विचर्चिका,
(५) विपादिका	(६) पामा,
(७) कच्छू,	(८) दद्रु या दाद,
(९) विस्फोट,	(१०) किटिभ,
(११) अलसक,	(१२) शतारु।

नोट (१)—ऊपर क्षुद्र कुष्ठ "ग्यारह" लिखे हैं और दिखाये हैं "बारह", इसकी यह वजह है कि, विचर्चिका नामक कोढ़ जब पाँवमें होता है, तब उसे ही "विपादिका" कहते हैं। अगर इन दोनों कोढ़ोंको एक ही मान लें, तो कोढ़ोंकी संख्या ग्यारह ही रह जाती है।

नोट (२)—सुश्रुतने दद्रु या दादको बड़े कोढ़ोंमें माना है, पर चरकने छोटोंमें; इसीसे हमने भी दद्रुको छोटोंमें ही माना है। सुश्रुतने भी काले और मज़बूत जड़वाले दादको बड़े कोढ़ोंमें गिना है, अतः जो दद्रु कोढ़ काला और मज़बूत जड़वाला न हो, उसे छोटे कोढ़ोंमें ही समझना चाहिये।

कोढ़ोंके पूर्वरूप।

जिस जगह कोढ़ होनेवाला होता है, वह जगह अत्यन्त चिकनी या खरदरी मालूम होती है, वहाँ पसीने बहुत आते हैं या क़तई नहीं आते। उस जगहके चमड़ेका रंग बदल जाता है एवं दाद और खुजली होते हैं। चमड़ेमें छूनेसे मालूम नहीं होता। सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है। ददौरे या चकत्ते होते हैं। व्रणमें अधिक वेदना होती है। शीघ्र ही व्रण पैदा होता और बहुत दिनों तक रहता है। व्रणके भरनेके समय रूखापन होता है। थोड़ेसे कारणोंसे ही व्रणका कोप हो जाता है। रोमांच होते हैं, खून काला हो जाता है और बिना मिहनत किये थकान मालूम होती है। ये सब कोढ़के पूर्वरूप हैं।

नोट—जब दोष स्थिर हो जाते हैं, तब चमड़ा शिथिल हो जाता और चमड़ेका रंग बदल जाता है,—बस, इसे ही "कोढ़" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गाँठदार कोढ़का रोगी।

यह कोढ़ भूरे रंगका होता है। पहले थोड़ी-थोड़ी छोटी-छोटी गाँठें निकलती हैं; पीछे वे बड़ी हो जाती हैं। यह भी बरसों तक धीरे-धीरे बढ़ा करता है। यह कोढ़ तीन-तीन और चार-चार महीनों तक जिस हालतमें होता है; उसी हालतमें रहा आता है, इसके बाद फिर बढ़ने लगता है। बढ़ते समय ज्वर और वेदना होती है। कभी-कभी इसकी गाँठें बैठ जाती हैं, लेकिन बहुधा वे सख्त हो जाया करती हैं। अँगरेज़ीमें इसे लेपरोसी ट्यूबरक्यूलर वैराइटी Leprosy Tubercular variety कहते हैं। (पृष्ठ—६१४)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

किस दोषकी उल्वणतासे कौनसा कोढ़ उत्पन्न होता है?

(१) कपाल नामक कोढ़ वातकी उल्वणतासे होता है।

(२) औदुम्बर, मण्डल और विचर्चिका ये पित्तकी उल्वणतासे होते हैं।

(३) ऋक्षजिह्व कोढ़ वायु और कफकी उल्वणतासे होता है।

(४) गजचर्म, एककुष्ठ, किटिभ, सिध्म, अलसक और विपादिका—ये सब वायु और कफकी उल्वणतासे होते हैं।

(५) दद्रु, शतारु, पुण्डरीक, विस्फोट, पामा और चर्मदल कोढ़ पित्तकी और कफकी उल्वणतासे होते हैं।

(६) काकणक तीनों दोषोंकी उल्वणतासे होता और यही पकता है।

नक़शा।

नाम कोढ़	नाम प्रधान दोष
कपाल	वायु
औदुम्बर, मण्डल, विचर्चिका	पित्त
ऋक्षजिह्व, गजचर्म, एककुष्ठ, किटिभ, सिध्म, अलसक और विपादिका	वायु और कफ
दद्रु, शतारु, पुण्डरीक, विस्फोट, पामा और चर्मदल	पित्त और कफ
काकणक	वात, पित्त और कफ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोढ़ोंके लक्षण।

कपाल कुष्ठ।

कपाल कुष्ठका रंग कुछ काला और कुछ लाल होता है। यह खीपड़ेके जैसा, रूखा, छूनेमें खरदरा एवं पतली चमड़ीवाला होता है। इसमें नोचने या सूई गड़ानेके समान पीड़ा होती है। यह विषम अर्थात् दुःसाध्य होता है।

नोट—यह कपालके समान होता है, इसलिये इसे "कपाल" कहते हैं। कपालको हिन्दीमें "ठीकरा" कहते हैं।

औदुम्बरके लक्षण।

औदुम्बर कोढ़ गूलरके फलके रंगका होता है। व्याधिस्थानके रोएँ पिङ्गल वर्ण या पीले होते हैं। इसमें पीड़ा, जलन, लाली और खुजली होती है।

नोट—औदुम्बर गूलरको कहते हैं। यह कोढ़ औदुम्बरके समान होता है, इसीसे इसका नाम "औदुम्बर" है।

मण्डलके लक्षण।

मण्डल कोढ़ कुछ सफेद और कुछ लाल रंगका, चिकित्साके बिना नाश न होनेवाला, गीला, पसीनेयुक्त, मण्डलाकार और आपसमें मिला हुआ होता है। यह कष्टसाध्य होता है।

नोट—यह कोढ़ मण्डलाकार होता है; इसीलिये इसका नाम "मण्डल" कोढ़ है।

सिध्मके लक्षण।

सिध्म कोढ़ देखनेमें लौकीके फूलके जैसा होता है। रंग इसका सफेदी माइल लाल होता है। इसका चमड़ा पतला होता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

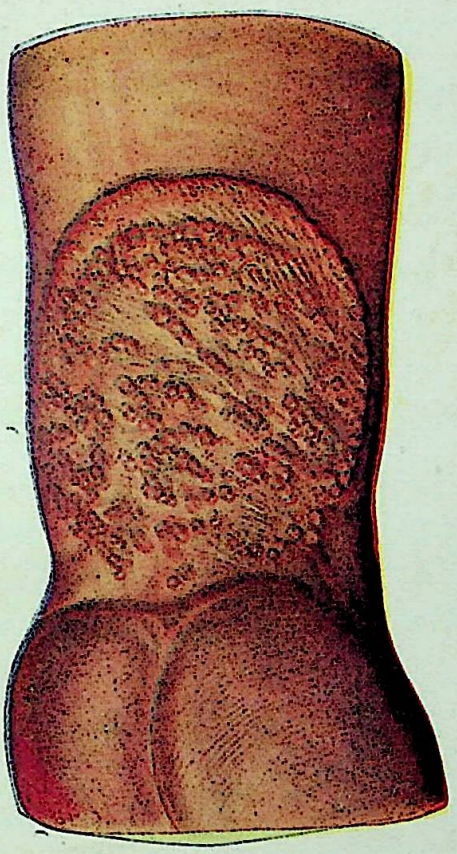

भैंसा दाद ।

इस दादमें सूजन आती और दाने पड़ते हैं, पीछे दानोंके भीतर पीप जाती है। यह दाद मण्डलाकार या गोल होता है; किनारोंपर बढ़ता और बीचसे कम होता है। खुजली खूब चलती है। खुजानेसे पीप निकलकर जम जाती और छिलके-से उतरते हैं। इस दादमें टिनिया सरकीनेटा (Tinea circinata) कीड़ा होता है। इसको नीमके गरम जलसे खूब धोकर दवा लगानी चाहिये, अन्यथा दादकी जड़ तक दवा नहीं पहुँचती। (पृष्ठ—२१७)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। इसको घिसने या रगड़नेसे इसमेंसे धूलके समान छोटे-छोटे परमाणु गिरते हैं। यह कोढ़ बहुत करके छातीमें होता है। किसी-किसी समय और जगह भी हो जाता है।

काकणकके लक्षण।

काकणक कोढ़ चिरमिटीकी तरह बीचमेंसे काला और आस-पाससे लाल होता है। यह पक जाता और इसमें तीव्र वेदना होती है तथा तीनों दोषोंके लक्षण पाये जाते हैं। यह असाध्य होता है।

नोट—यह कोढ़ चिरमिटीके समान लाल और काले मुँहवाला होता है।

पुण्डरीकके लक्षण।

पुण्डरीक कोढ़ सफेद कमलके पत्तेके समान सफेद, अन्तमें अत्यन्त लाल, ऊँचा और कफ-प्रधान होता है।

नोट—पुण्डरीक सफेद कमलको कहते हैं और यह कोढ़ सफेद कमलके पत्तेके समान होता है, इसीसे इसे "पुण्डरीक" कहते हैं। कोई कहते हैं कि, यह कोढ़ बीचमें लाल और किनारोंपर सफेद होता है। इसमें शक नहीं कि, इसका रङ्ग सफेदी माइल लाल होता है।

ऋक्षजिह्वके लक्षण।

यह कोढ़ कर्कश होता है। यह किनारोंपर लाल रंगका और बीचमें कलाई माइल लाल होता है। इसमें पीड़ा होती है और इसकी आकृति रीछकी जीभके समान होती है।

नोट—ऋक्षजिह्व = रीछकी जीभ। क्योंकि इस कोढ़की आकृति रीछकी जीभके जैसी होती है, इसीसे इसे "ऋक्षजिह्व" कहते हैं।

एककुष्ठके लक्षण।

जो कोढ़ पसीनोंसे रहित हो, बड़ा घेरदार और मछलीके चमड़ेके समान हो तथा चक्राकार और अभ्रकके पत्रोंके समान हो,—उसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

"एककुष्ठ" कहते हैं। यह कोढ़ क्षुद्र कोढ़ोंमें मुख्य होता है, इसीसे इसे "एककुष्ठ" कहते हैं।

गजचर्मके लक्षण ।

जो कोढ़ हाथीके चमड़ेके समान मोटा, कठोर, रूखा और काला होता है, उसे "गजचर्म" कहते हैं।

नोट—गजचर्मका अर्थ हिन्दीमें हाथीका चमड़ा है। जो कोढ़ हाथीके चमड़ेके समान होता है, उसे "गजचर्म" कहते हैं।

चर्मदलके लक्षण ।

जिसका रंग लाल हो, जिसमें शूल चलते हों, खुजली और फोड़े फैलकर जिसका चमड़ा फट जाय और जो किसी भी पदार्थका स्पर्श न सह सके, उसे "चर्मदल" कहते हैं।

विचर्चिकाके लक्षण ।

जिसमें खुजली समेत धूसर रंगकी स्रावयुक्त फुन्सियाँ हों, उसे "विचर्चिका" कहते हैं।

खुलासा—विचर्चिका रोगमें काली-सी या धूसर रंगकी छोटी-छोटी फुन्सियाँ होती हैं। उनमेंसे मवाद बहुत बहता और खुजली चलती है।

नोट—भोज कहता है, रुखाईकी वजहसे हाथोंकी खाल फट जाती है, उसे "विचर्चिका" कहते हैं। अगर पाँवकी चमड़ी फट जाती है, तो "विपादिका" कहते हैं। विचर्चिका और विपादिकाके स्थानोंमें भेद है, मगर स्वरूपमें कुछ भेद नहीं। उसमें हाथोंकी खाल फटती है और इसमें पैरोंकी खाल फटती है।

विपादिकाके लक्षण ।

हाथ-पाँव फट जायँ और तीव्र वेदना हो, उसे "विपादिका" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

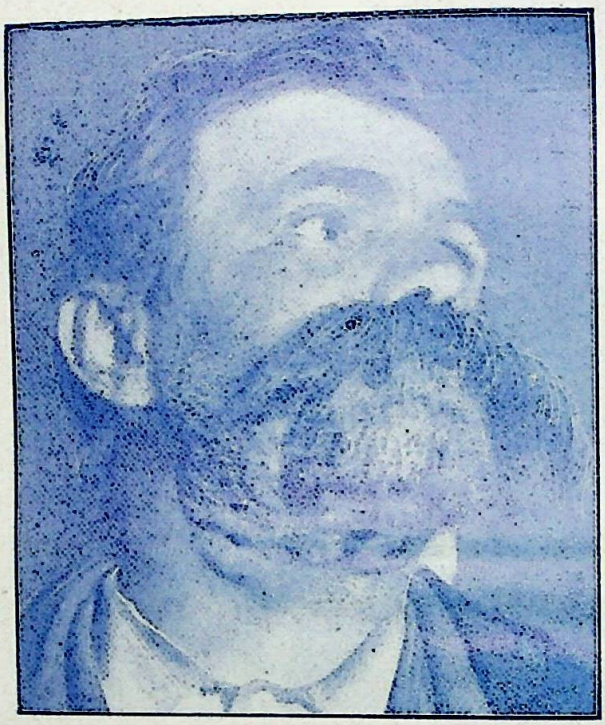

केशदद्रु रोगी।

इस रोगीकी दाढ़ी और गर्दन दादसे भर रही हैं। बाल ढीले हो-होकर झड़ गये हैं। इस दादमें एक प्रकारका कीड़ा होता है, जिसे अँगरेज़ीमें टिनिया साइकोसिस (Tinea Sycosis) कहते हैं। यह दाद चमड़ेके भीतर प्रवेश कर जाता है, यानी इसकी जड़ गहरी होती है। तीन महीने तक इसका ज़ोर रहता है।

(पृष्ठ-—६१७)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

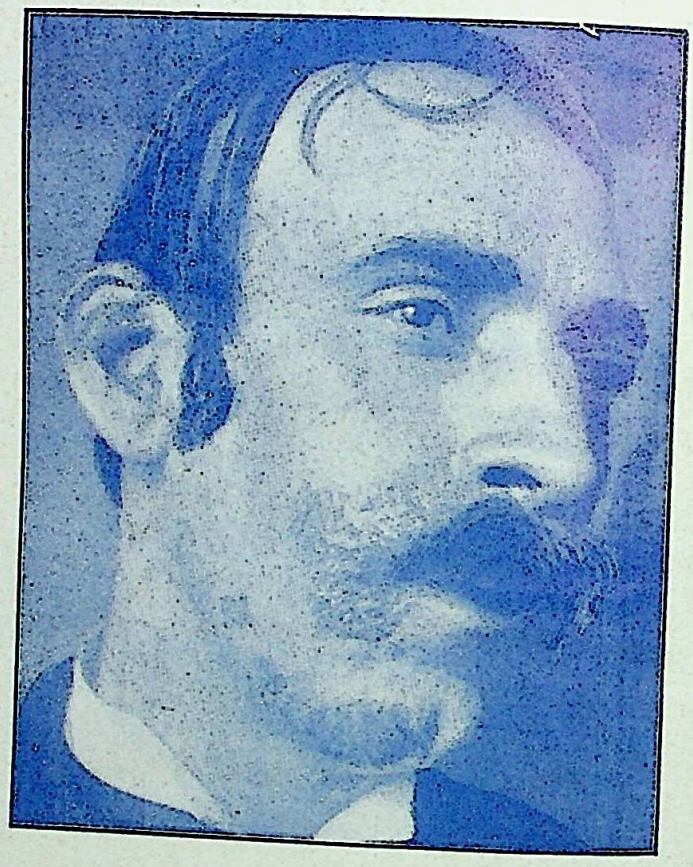

केशदद्रु रोगी ।

इस रोगीकी दाढ़ी वग़ैरःमें दस दिनसे दाद हुआ है । बाल ढीले होने लगे हैं । इस रोगीके दाहिनी तरफ़के ऊपरके होठों तक दाद फैल गया है । दाढ़ी और नीचे ऊपरके होंठ घेर लिये हैं । यह पहला स्टेज है । बढ़ते-बढ़ते यह दाद गर्दन तक पहुँचता है ।

(पृष्ठ—६२०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पामाके लक्षण।

पामा एक तरहकी खुजली है। इसमें छोटी-छोटी बहुत-सी फुन्सियाँ होती हैं। उनमेंसे मवाद निकलता, जलन होती और खुजली चलती है।

कच्छुके लक्षण।

अगर उसी पामाकी फुन्सियाँ बड़ी-बड़ी और तीव्र दाह सहित हों तथा हाथोंमें और विशेष करके कमर या कूलोंमें हों, तो उसे "कच्छु" कहते हैं।

दद्रु या दादके लक्षण।

जिसमें खुजली बहुत हो, लाल-लाल फुन्सियाँ हों, जो पैदा होते ही ऊँचा हो जाय और मण्डलके समान गोल हो, उसे "दाद" कहते हैं।

विस्फोटके लक्षण।

कलाई लिये, लाल और पतली चमड़ीवाले जो फोड़े होते हैं, उनको "विस्फोट" कहते हैं।

किटिभ कोढ़के लक्षण।

किटिभ कोढ़ काला, सूखा हुआ, व्रणके समान, छूनेमें खरदरा और रूखा होता है।

अलसकके लक्षण।

खुजलीयुक्त लाल रंगकी बड़ी-बड़ी फुन्सियोंसे व्याप्त कोढ़को "अलसक" कहते हैं।

खुलासा—अलसकमें खुजली बहुत चलती है और लाल रङ्गके फोड़े होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शतारुके लक्षण।

जिसका रंग लाल और काला हो, जिसमें दाह और शूल हों तथा जिसमें बहुत-से फोड़े हों, उसे "शतारु" कहते हैं।

सप्त धातुगत कोढ़ोंके लक्षण।

रसगत कोढ़के लक्षण।

अगर कोढ़ "रस" में चला जाता है, तो अंगोंमें विवर्णता और रूखापन होता है, चमड़ेका स्पर्शज्ञान नहीं रहता, रोमाञ्च हो आते हैं और पसीने बहुत आने लगते हैं।

नोट—कितने ही वैद्य कहते हैं कि, चमड़ेमें स्पर्शज्ञान न रहना, रोएँ खड़े हो जाना और बहुत पसीने आना—रुधिरमें पहुँचे हुए कोढ़के लक्षण हैं।

रुधिरगत कोढ़के लक्षण।

अगर कोढ़ "खून" में चला जाता है, तो खुजली बहुत चलती और राध ज़ियादा होती है।

मांसगत कोढ़के लक्षण।

अगर कोढ़ "मांस" में चला जाता है, तो मांस पुष्ट दीखता है, मुँह सूखता है, शरीर कठोर हो जाता है, फुड़ियाँ निकलती हैं, सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है, बड़े-बड़े फोड़े होते और स्थिरता होती है।

मेदगत कोढ़के लक्षण।

अगर कोढ़ "मेद" में घुस जाता है, तो मनुष्य लूला हो जाता है, चलने-फिरनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है, अंग भंग हो जाते हैं, घाव फैल जाते हैं और रुधिर तथा मांसमें गये हुए कोढ़ोंके जो लक्षण लिख आये हैं, वे सब होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अस्थि और मज्जागत कोढ़के लक्षण।

अगर कोढ़ "हड्डियों और मज्जा"में चला जाता है, तो नाक बैठ जाती है, नेत्र लाल हो जाते हैं, घावोंमें कीड़े पड़ जाते हैं, गला बैठ जाता और पीड़ा होती है।

शुक्रगत कोढ़के लक्षण।

कोढ़की बाहुल्यतासे जिन स्त्री-पुरुषोंका वीर्य दूषित हो जाता है, उन स्त्री-पुरुषोंके समागमसे पैदा हुई सन्तान कोढ़ी होती है।

नोट—जिस तरह शुद्ध वीर्यसे गर्भ रहता है, उसी तरह अशुद्ध वीर्यसे भी गर्भ रहता है। अगर अशुद्ध वीर्यसे गर्भ न रहता, तो बहरे, अन्धे, लँगड़े, लूले और नकटे कहाँसे पैदा होते? मतलब यह है कि, अशुद्ध वीर्य और रजसे सन्तान पैदा होती है, पर वह निर्दोष नहीं होती—सदोष होती है। वीर्य और रजमें घुसा हुआ कोढ़ सन्तानको कोढ़ी करता है; यानी कोढ़ीकी औलाद कोढ़ी होती है।

कोढ़में वातादि दोषोंकी उल्वणताके चिह्न।

वातकी उल्वणतावाला कोढ़ खरदरा, श्याम अथवा लाल, रूखा और वेदनायुक्त होता है।

पित्तकी उल्वणतावाला कोढ़ बदबूदार, अत्यन्त गीला, दाह, लाली और स्राव संयुक्त होता है।

कफकी उल्वणतावाला कोढ़ गीला, पुष्ट, चिकना, खुजलीयुक्त, शीतल और भारी होता है।

जिसमें ऊपर लिखे हुए लक्षणोंमेंसे दो प्रकारके लक्षण हों, उसे दो दोषोंकी उल्वणतावाला और जिसमें तीनों तरहके लक्षण हों, उसे तीनों दोषोंकी उल्वणतावाला समझो।

साध्यासाध्य लक्षण।

रस, रुधिर और मांसमें गया हुआ तथा वात और कफकी उल्वणतावाला कोढ़ साध्य है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मेदमें गया हुआ और दो दोषोंकी उल्वणतावाला कोढ़ याप्य है।

मज्जामें और हड्डियोंमें घुसा हुआ, दाहयुक्त, मन्दाग्निवाला और त्रिदोषकी उल्वणतावाला कोढ़ असाध्य है।

कीड़े पैदा करनेवाला बाहरका कोढ़ भी असाध्य होता है।

मज्जा और वीर्यमें गया हुआ कोढ़ असाध्य होता है।

जिस कोढ़में कीड़ें पड़ जायँ, जिसमें वमन, प्यास और मन्दाग्नि आदि उपद्रव हों और जो तीन दोषोंसे पैदा हुआ हो, वह असाध्य है।

जो कोढ़ फूटकर बहता हो, रोगीके नेत्र लाल हो गये हों, स्वर भंग हो गया हो—आवाज़ मारी गई हो और वमन विरेचनादि पञ्चकर्मोंसे लाभ न होता हो, वह रोगी मर जाता है। यह कोढ़के अरिष्ट लक्षण हैं।

श्वित्र कुष्ठके लक्षण ।

श्वित्र भी एक तरहका कोढ़ ही है, क्योंकि इसमें भी कोढ़की तरह चमड़ा बिगड़ जाता है; अतः श्वित्रके लक्षण नीचे लिखते हैं। जो निदान-कारण कोढ़के हैं, वे ही सब श्वित्रके हैं।

श्वित्रके दो भेद हैं:—(१) किलास, और (२) अरुण। जब श्वित्र रुधिरके आश्रयसे रहता है "किलास" कहाता है और जब वह मांसके आश्रयसे रहता है, "अरुण" कहाता है।

कुष्ठ और श्वित्रमें भेद ।

कोढ़ टपकता है, पर श्वित्र नहीं टपकता। कोढ़ वात, पित्त और कफ तीनों दोषोंके प्रकोपसे होता है; पर श्वित्र एक दोषसे होता है। कोढ़ रसादि समस्त धातुओंमें रहता है; पर श्वित्र रुधिर, मांस और मेदमें रहता है। बस, यही कोढ़ और श्वित्रमें भेद है।

दोष भेदसे लक्षण भेद ।

"चरक"में कहा है,—वातसे पैदा हुआ श्वित्र किसी क़दर लाल होता है और रुधिरमें रहता है। पित्तसे पैदा हुआ श्वित्र अन्तमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्वित्र या धवल कुष्ठ रोगी।

इस कोढ़के आरम्भमें, छोटे-छोटे गोल-गोल सफेद धब्बे होते हैं। बहुत करके यह कोढ़ हाथ, छाती और मुँहपर शुरू होता है। यह कोढ़ होनेसे चमड़ेका असली रंग चला जाता है। यह कोढ़ दूधके समान सफेद होता है, अतः गोरोंकी अपेक्षा कालोंमें जल्दी दीखता है। किसी-किसी सफेद दाग़में लाल आभा मारती है। यह कोढ़ गलता या चूता नहीं। अन्तमें इसके रोगीके बाल तक सफेद हो जाते हैं, पर झड़ते नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाल होता है और मांसमें रहता है। कफसे पैदा हुआ श्वित्र सफेद होता और मेदमें रहता है। वातजनित श्वित्रसे पित्तजनित और पित्तजनितसे कफजनित भारी होता है।

भोज कहता है,—श्वित्र दो तरहका होता है:—(१) दोषसे पैदा होनेवाला, और (२) व्रणसे होनेवाला।

"भावप्रकाश"में लिखा है, वातसे पैदा हुए श्वित्रमें रूखापन और लाली होती है तथा वह खूनमें रहता है। पित्तसे पैदा हुआ श्वित्र कमलके पत्तेकी तरह बीचमेंसे सफेद और अन्तमें लाल होता है। उसमें जलन होती है और वह रोमोंको नष्ट करता तथा मांसमें रहता है। कफसे पैदा हुआ श्वित्र सफेद, पुष्ट और भारी होता है। उसमें खुजली चलती और वह मेदमें रहता है।

श्वित्र चाहे दोषसे पैदा हुआ हो और चाहे व्रणसे—दोषोंके भेदानुसार उसका रंग ऊपरके ही माफ़िक़ होता है।

श्वित्रकी साध्यासाध्यता।

जो श्वित्र काले रोमोंवाला, पतला, रुधिरयुक्त और तत्कालका—नया हो तथा आगसे जलकर न हुआ हो, वह साध्य होता है। इसके सिवा और श्वित्र असाध्य होते हैं।

किसीने कहा है, निर्लोम स्थान—लिङ्ग, योनि, हाथ-पैरके तलवों और होठोंमें पैदा हुआ श्वित्र यदि नया हो तो भी इलाज करने लायक़ नहीं; पुरानेका तो कहना ही क्या?

कोढ़ संयोगसे भी होता है।

मैथुनादि संसर्गसे, शरीरसे शरीर लगनेसे, श्वासके मिलनेसे, एक पलँगपर सोनेसे, एक साथ भोजन करनेसे, कोढ़ीके पहने हुए

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कपड़े या माला पहननेसे और उसके लगाये हुए चन्दनादिमेंसे चन्दनादि लगानेसे निरोगी भी कोढ़ी हो जाता है।

खुलासा यह है कि, अगर निरोगी पुरुष कोढ़वालीसे मैथुन करता है तो कोढ़ी हो जाता है; इसी तरह निरोग स्त्री कोढ़ीसे समागम करती है, तो कोढ़ी हो जाती है। कोढ़ीके शरीरसे अगर निरोगका शरीर लग जाता है, तो निरोगी कोढ़ी हो जाता है। कोढ़ीका श्वास निरोगीके मुँहमें चला जाता है, तो वह कोढ़ी हो जाता है। इसी तरह अगर निरोगी स्त्री-पुरुष कोढ़ीके पलँगपर सोते हैं, उसके कपड़े या माला वग़ैरः पहनते हैं और एक साथ खाते हैं, तो कोढ़ी हो जाते हैं।

चन्द छुतहे रोगोंके नाम।

खुजली, कोढ़, उपदंश—आतशक, भूतोन्माद, व्रण, ज्वर, हैज़ा, यक्ष्मा, आँख दुखना, चेचक, जुकाम और इनके समान अन्यान्य रोग भी एक मनुष्यसे दूसरेके शरीरमें घुस जाते हैं। अतः ऐसे रोगियोंसे सदा बचना चाहिये।

जो मनुष्य कुष्ठ रोगमें मर जाता है, उसके दूसरे जन्ममें भी कोढ़ होता है, अतएव यह रोग बहुत ही बुरा है। इस रोगकी चिकित्सा खूब दिल लगाकर, बहुत समय तक करनी चाहिये, ताकि यह निर्मूल हो जाय। इसकी उपेक्षा भली नहीं।

कोढ़की चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) कोढ़के पूर्वरूप नज़र आते ही, इलाज करना चाहिये; क्योंकि जब इसके रूप पूरी तरहसे प्रकाशित हो जाते हैं, तब इलाज करना महा कठिन हो जाता है। उस समय यह प्रायः असाध्य ही हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

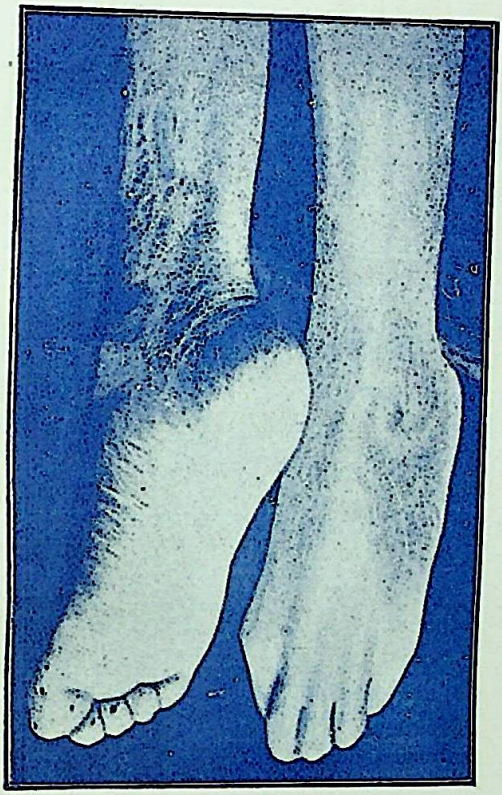

एक कोढ़ीके पाँव।

इस कोढ़ीके पैरोंका चमड़ा फट गया है। अँगूठोंमें छोटे-छोटे घाव हो गये हैं। ऐक्सटैन्सर पेशियोंका पक्षाघात हो गया है यानी उनमें हिलने-चलनेकी क्षमता नहीं रही है—बेकाम हो गई हैं और सूखती जाती हैं। आगे चलकर तमाम उँगलियाँ गिर जावेंगी। रोगी चल-फिर न सकेगा। यह कोढ़ हाथों, पैरों और मुँहपर ज़ियादा होता है। बरसों चलता और बढ़ता है तथा मवाद देता है। ऐसे कोढ़को अँगरेज़ीमें Leprosy with Paralysis & atrophy of extensor muscles कहते हैं।

(पृष्ठ—९२२)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) यह रोग अतिशय संक्रामक या छुतहा है, अतः कोढ़ीके साथ एक बिछौनेपर सोना, बैठना, उसका निःश्वास अपने अन्दर आने देना, उसके कपड़े पहनना, उसके साथ खाना और मैथुन करना प्रभृतिसे हरेक निरोग स्त्री-पुरुषको बचना चाहिये। अतः कोढ़ीको सबसे अलग निराले स्थानमें रखकर इलाज करना चाहिये और स्वयं वैद्यको भी इलाज करते हुए सब तरहसे सावधान रहकर इलाज करना चाहिये।

(३) वाताधिक्य कोढ़ीको पहले घी पिलाना चाहिये। कफाधिक्य कोढ़ीको वमन करानी चाहिये और पित्ताधिक्य कोढ़ीको रक्त-मोक्षण और विरेचन कराना चाहिये। महीनेमें दो बार वमन-विरेचन कराना, खून निकालना और घी पिलाना इस रोगमें परम हितकारी हैं।

हिकमतमें भी लिखा है—यह रोग सौदावी है, जब जड़ जमा लेता है आराम नहीं होता। आरम्भमें फ़स्द खोलना और मुसिल या जुलाब लेना हितकर है। हर महीने जुलाब लेना चाहिये और खेद, चिन्ता तथा रातमें जागनेसे परहेज़ करना चाहिये। कोढ़ीके लिए बकरीका दूध सर्वोत्तम पथ्य है।

(४) कोढ़ीको घी प्रभृति पिलाकर पहले चिकना करना चाहिये। इसके बाद पछने द्वारा, जौंक द्वारा, सींगी द्वारा, तोम्बी द्वारा या शिरा बेधकर—फ़स्द खोलकर खून निकालना चाहिये।

(५) कोढ़ रोगमें खून निकालनेपर, दोषोंका हरण हो जानेपर, वायुका कोप होता है, इसलिए उस वायुको शमन करनेके लिए घी वग़ैरः चिकनी चीज़ें पिलानी और रसायनादि सेवन करानी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अवस्था भेदसे चिकित्सा ।

सिध्म कोढ़ नाशक नुसखे ।

(१) कूट, मूलीके बीज, फूल प्रियंगू, सरसों, हल्दी और नाग-केशर—इन छै चीजोंको बराबर-बराबर लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे "सिध्म" कोढ़ आराम हो जाता है। इसका नाम "केशरषट्क लेप" है।

नोट—सिध्म कोढ़ विशेषकर छातीमें होता है और उसको रगड़नेसे धूल-सी झड़ती है। यह आकारमें लौकीके फूल-जैसा और सफेदी माइल लाल रंगका होता है। यह महा कुष्ठोंमें है।

(२) मूलीके बीज "अपामार्गके रस"में पीसकर लगानेसे सिध्म कोढ़ आराम हो जाता है।

(३) मूलीके बीज दहीमें पीसकर लेप करनेके सिध्म कोढ़ आराम हो जाता है।

(४) गन्धकका चूर्ण और जवाखारका चूर्ण सरसोंके तेलमें पीस-कर लगानेसे सिध्म कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) अमलताशके पत्ते काँजीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म, दद्रु और किटिभ कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(६) दारुहल्दी, मूलीके बीज, हरताल, देवदारु और नागरबेलके पान—ये पदार्थ एक-एक तोले और शंखका चूर्ण ३ माशे—इन सबको मिलाकर, पानीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म कोढ़ नाश हो जाता है। यह लेप सिध्मपर बहुत उत्तम है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गलित कोढ़ रोगी।

इस रोगीके चेहरे और नाक आदिपर कोढ़ हो गया है। हाथकी उँगलियाँ गल रही हैं। (पृष्ठ—६२५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) कूट, चकबड़, सैंधानोन, बायबिड़ङ्ग और सरसों—इनको काँजीमें पीसकर लेप करनेसे दाद, मण्डल कुष्ठ और सिध्म कोढ़ नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८) केलेका खार और हल्दीको पानीके साथ पीसकर लेप करनेसे सिध्म कोढ़ नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(९) कसौंदीकी जड़को काँजीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म और दाद नाश हो जाते हैं।

(१०) कूट, मूलीके बीज, फूल प्रियंगू, सरसों और धमासा—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करनेसे बहुत पुराना सिध्म कोढ़ भी नाश हो जाता है।

(११) कसौंदीके बीज, मूलीके बीज और गन्धक—इन तीनोंको एकत्र पीसकर लेप करनेसे सिध्म कोढ़ नाश हो जाता है।

(१२) मूलीके बीज, नीमके पत्ते, सफेद सरसों और घरका धूआँसा—इनको एकत्र जलमें पीसकर लेप करो। फिर साफ करके नौनी घी मलो और इसके बाद गरम जलसे धोओ। इस तरह ३ दिन करनेसे सिध्म कोढ़ नष्ट हो जाता है।

(१३) चिरचिरेके खारका पानी सात बार नितारकर, उसके साथ मालकाँगनीका तेल पकाओ। इस तेलकी मालिशसे सिध्म कोढ़ चला जाता है।

(१४) मूलीके बीज, सरसों, लाख, हल्दी, दारुहल्दी, चकबड़के बीज, सरल गोंद, त्रिकुटा, बायबिड़ङ्ग और कूट—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे दाद, सिध्म, किटिभ, पामा, कपाल और सब तरहके दुःसाध्य कोढ़ नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दाद नाशक नुसख़े।

(१) सिंघाड़े, काकड़ासिंगीकी जड़, हाऊबेर और भारंगीकी जड़—इनको एकत्र मिलाकर और पीसकर पीनेसे दाद अवश्य आराम हो जाते हैं।

(२) पमार, कूट, सैंधानोन, काँजी, सरसों और बायबिड़ङ्ग—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे दद्रु मण्डल—दाद, सिध्म कोढ़ और सब तरहके कोढ़ नाश हो जाते हैं।

(३) पमारके बीज, आँवले, राल और थूहर—इनको "काँजीमें" पीसकर लेप करनेसे दाद शीघ्र ही नाश हो जाते हैं।

(४) चकबड़ और हरड़को "काँजी"में पीसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(५) चकबड़के बीज "मूलीके रस"में पीसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(६) सहँजनेकी जड़की छाल पानीमें पीसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(७) चकबड़के बीज और ज़ीरा बराबर-बराबर लो और थोड़ी-सी सुदर्शनकी जड़ लो। इन सबको मिलाकर और पीसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(८) दूब, हरड़, सैंधानोन, चकबड़ और बनतुलसी—इनको एकत्र "काँजी और माठे"में पीसकर लेप करनेसे तीन दिन या तीन लेपमें दाद आराम हो जाते हैं।

(९) पूरब दिशाकी ओर उगे हुए ताड़के पत्ते सिलपर पीसकर दादपर घिसनेसे अत्यन्त दारुण दाद भी नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दद्रु रोगी।

देखिये, इस लड़केके गाल, नाककी बग़लमें, कानके नीचे, ठोड़ीपर, गर्दनमें और छातीमें गोल गोल दाद हो रहे हैं। ये दाद बालोंके नहीं हैं। ये बिना बालोंकी जगहमें ही होते हैं। ये छल्लेकी तरह गोल होते हैं, दिखाई देनेके हफ्ते या दो हफ्ते बाद इनका व्यास आध इंच तक होता है। इनका भीतरी या बीचका भाग ज़र्दी माइल लाल होता है और बाहरी भाग किसी क़दर उभरा हुआ होता है। इस दादमें टिनिया सरकीनेटा (Tinea Cercinata) नामका कीड़ा होता है।

(पृष्ठ—६२७)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पामा या कच्छू ।

स्रावयुक्त—मवाद देनेवाली, भयंकर दाह या जलन करनेवाली, छोटी-छोटी और खुजलीयुक्त बाहरकी फुन्सियोंको "पामा या पाँव" कहते हैं। अगर वही पामा तीव्र दाहयुक्त फोड़ोंसे व्याप्त हो तथा वह हाथों और कूल्होंमें पैदा हो, तो उसे "कच्छू" कहते हैं। अँगरेज़ोंमें इसी तरहकी खुजलीको "स्कैब" (Scab) कहते हैं। क्योंकि वह ऐकेरस स्कैबियायी नामके कीड़ोंकी वजहसे होती है। उसके लक्षण हमारी कच्छूसे बहुत मिलते हैं। हमारे यहाँ कच्छूका होना हाथों और कूल्होंपर बताया गया है। डाक्टरीमें लिखा है,—यह खुजली पहले हाथोंकी उँगलियोंमें होती है; उसके बाद कमर, पेड़ू, पैरों और लिंगेन्द्रिय वगैरःपर होती है। पहले पहल हाथोंपर, उँगलियोंके बीचमें, छोटी-छोटी लाल-लाल फुन्सियाँ होती हैं। पीछे वे पक जाती हैं और पीप या रसी भरकर सफेद हो जाती हैं। रोग-पीड़ित स्थानका चमड़ा फूल उठता है; जैसा कि इस चित्रमें दिखाया गया है। यह रोग संक्रामक, छुतहा या एकसे उड़कर दूसरेको लगने-वाला यानी कण्टेजियस (Contagious) है। ऐसी खुजलीवालेके बिस्तरपर बिना चादर बदले सोनेसे, उसका गमछा और तौलिया वग़ैरः काममें लानेसे यह रोग निरोगीको भी हो जाता है। हाथ मिलानेसे भी यह रोग हो जाता है।

(पृष्ठ—६२८)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

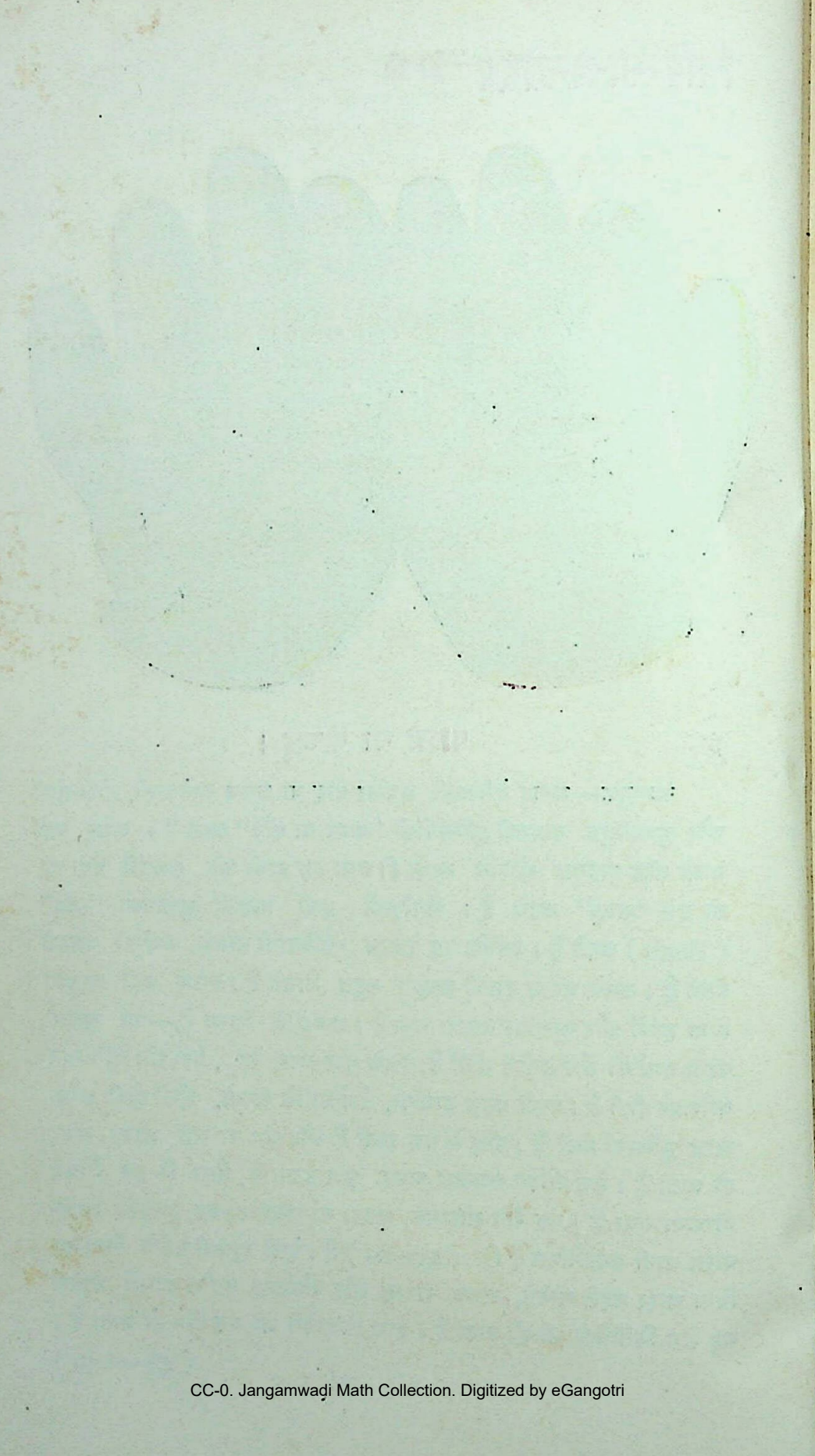

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) लाख, सरल गोंद, कूट, हल्दी, सफेद सरसों, त्रिकुटा, मूलीके बीज और पमारके बीज—इनको काँजीमें पीसकर उबटन करनेसे सिध्म, किटिभ और विशेषकर दद्रु कुष्ठ—दाद आराम हो जाते हैं।

(११) अमलताशके पत्ते माठेमें पीसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(१२) काकमाचीके पत्ते अथवा कनेरके पत्ते "माठा"में पीसकर लेप करनेसे दाद-खाज आराम हो जाते हैं।

कण्डू-पामा नाशक नुसख़े।

(१) गन्धकको सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करनेसे पामा नाश हो जाती है।

(२) आठ तोले गोमूत्रमें हल्दीका कल्क मिलाकर पीने और इच्छानुसार आहार-विहार करनेसे पामा नाश हो जाती है।

नोट—हल्दीको पानीमें सिलपर पीस लो और लुगदी बना लो। इस लुगदीको गोमूत्रमें मिलाकर पीओ।

(३) त्रिफला, गिलोय, परवल, नीम, अड़ूसा और खैरसार—इनका काढ़ा सवेरे ही पीनेसे कण्डू, पामा, विसर्प और किटिभ कोढ़ दूर हो जाते हैं।

(४) छोटी इलायची, हल्दी, बायबिड़ङ्ग, शतावरी, दन्ती, कूट, रसौत, बला और चीता—इनका लेप करनेसे पामा, दाद, सफेद कोढ़ और विचर्चिका रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) हल्दी, हरड़, बावची, करंजके बीज, बायबिड़ङ्ग, सैंधानोन और सरसों—इन सबका लेप करनेसे पामा, दाद और सफेद कोढ़ वग़ैरः आराम हो जाते हैं।

(६) स्नान करने, खाने, पीने, लेप करने और उबटन करनेमें "खैरके कषाय"का प्रयोग करनेसे पामा आदि चर्म-रोग नाश हो जाते हैं।

(७) सैंधानोन, गोबर और हल्दी—इनको शहदमें पीसकर लेप करनेसे कण्डू और पामा दोनों नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(८) सिन्दूर, गूगल, रसौत, मोम और नीलाथोथा—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। जितनी लुगदी हो उससे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी और लुगदीको मिलाकर पका लो और तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तैलके एक बार लगानेसे ही कण्डू, स्रावयुक्त पिटिका अथवा सूखी पिटिका जबर्दस्ती आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(९) चार तोले ज़ीरा पीसकर उसमें दो तोले सिन्दूर मिलाओ और पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना पानी सबको मिलाकर पका लो। इस "जीरकाद्य तैल"से पामा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) दूब, हल्दी और दारुहल्दी पीसकर लेप करनेसे पामा-खुजली आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(११) स्वर्णक्षीरी, चकबड़, बायबिड़ङ्ग, सिन्दूर, पारा, गन्धक और कूट—इन सबमेंसे पहले "पारे और गन्धक"को मिलाकर खरल करो। फिर और दवाओंको पीस-छानकर इसमें मिला दो। अब इस चूर्णको पहले "धतूरेके पत्तों"के रसमें पीसो। इसके बाद "नीमके पत्तोंके रस"में पीसो और अन्तमें "पानोंके रस"में पीसो। अब यह दवा तैयार हुई। इसके लेप करनेसे कण्डूयुक्त पामा, दाद और विचर्चिका रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) हल्दीको पानीके साथ सिलपर पीस लो। जितनी यह लुगदी हो, उससे चौगुना सरसोंका तेल लो। तेलसे चौगुना "आकके पत्तोंका रस" लो; अब लुगदी, तेल और रसको मिलाकर पकाओ। इस तैलके लगानेसे पामा, कण्डू और विचर्चिका रोग नाश हो जाते हैं। यह "रजन्यादि तैल" है। परीक्षित है।

(१३) महामरिचादि तैलके लगानेसे भी पामा और कण्डू आराम हो जाते हैं। परीक्षित है। विधि आगे पृष्ठमें लिखी है।

विपादिका-बिबाई नाशक नुसख़े।

(१) शहद, मोम, सैंधानोन, गुड़, गूगल, गेरू, घी, आकका दूध और राल—इनका लेप करनेसे बहुत दिनोंकी बिबाई और पैर फटना आराम होता है। परीक्षित है।

(२) राल, तिलीका तेल और शहद—इनको मिलाकर लेप करनेसे बिबाई नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३) चावलोंको नारियलके जलमें भिगो दो, जब वे अच्छी तरह फूल जायँ और उनमें बदबू आने लगे, तब पीस लो। इस लेपसे बहुत दिनोंकी विपादिका या बिबाई नाश हो जाती है।

(४) धतूरेके बीज लाकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। लुगदीसे चौगुना कड़वा तेल लो और तेलसे चौगुना "मानकन्दके क्षारका पानी" लो। फिर सबको मिलाकर तेल पका लो। इसका नाम "धत्तूर तैल" है। इससे विपादिका अवश्य नाश हो जाती है।

(५) जायफल पीसकर लेप करनेसे बिबाई नाश हो जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चर्मदल कोढ़ नाशक नुसखे ।

(१) राई, गुड़ और सैंधानोन—इनको अच्छी तरह पीसकर लेप करनेसे और ऊपरसे बिलावका चमड़ा बाँधनेसे चर्मदल कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) सफेद बचको पानीमें पीसकर लेप करनेसे चर्मदल कोढ़ आराम हो जाता है।

(३) इन्द्रजौ "गोमूत्र"में पीसकर लेप करनेसे चर्मदल कोढ़ आराम हो जाता है।

(४) आमकी गुठलीको थोड़े-से सैंधेनोनमें मिलाकर और ताम्बेके बर्तनमें घिसकर लगानेसे चर्मदल कोढ़ आराम हो जाता है।

कच्छु कोढ़ नाशक नुसख़े ।

(१) बापची, कसौंदी, चकबड़, हल्दी और सैंधानोन—इनको बराबर-बराबर लेकर "दहीके तोड़ और काँजी"में पीसकर लेप करनेसे कच्छु और अत्यन्त उग्र कण्डू नष्ट हो जाते हैं।

(२) अड़ूसेके नर्म पत्ते और हल्दीको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे तीन दिनमें कच्छु रोग चला जाता है।

(३) आठ तोले गोमूत्रमें हल्दीकी पिसी हुई लुगदी मिलाकर पीनेसे कच्छु और पामा आराम हो जाती हैं।

(४) गन्दाविरोज़ा, राल, लोध, कबीला, मैनशिल, अजवायन और गन्धक—इनमेंसे हरेक चार-चार तोले लेकर पीस लो और सेर भर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

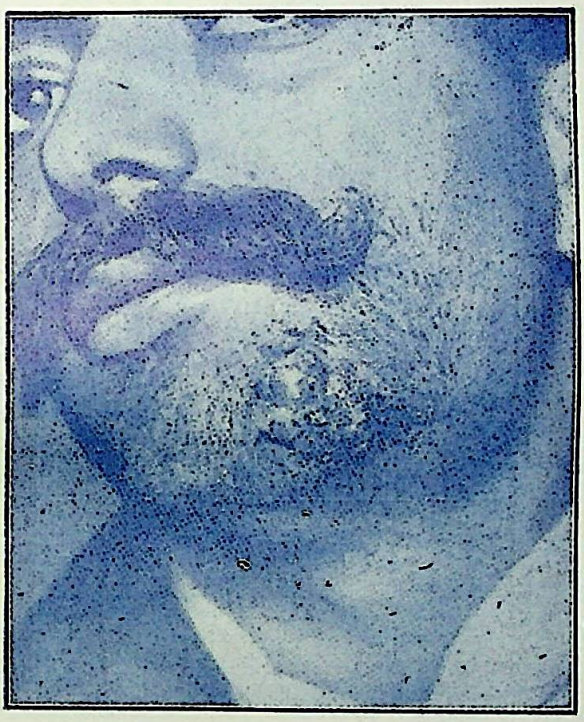

दाढ़ीका दाद ।

इस रोगीकी दाढ़ीमें जो दाद है, उसकी जड़ गहरी है। इस दादको पैदा हुए एक महीना हुआ है। यह गाँठदार या कई गुमड़ियोंसे बना हुआ दाद है। जहाँ यह हुआ है वहाँके बाल ढीले हो गये हैं और झड़ भी गये हैं। इसकी बाहरी शकल गोल छल्ले जैसी होती है, इसीसे यह पहचाना जाता है। बाज़-बाज़ औक़ात यह भूलसे फोड़ा या मुहलिक फोड़ा समझ लिया जाता है, जिसे अँगरेज़ीमें कारबंकिल और ऐबसैस (Carbuncle और abscess) कहते हैं।

(पृष्ठ—६२६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घीमें मिलाकर सूरजकी धूपमें पकाओ। इस घीकी मालिशसे कच्छु रोग चला जाता है।

(५) सिन्दूराद्य तैल और वृहत् सिन्दूराद्य तैलकी मालिश करनेसे कच्छु, पामा, कण्डू या सूखी-गीली खुजली आराम हो जाती हैं। बनानेकी विधि पृष्ठ ६३८ में लिखी है।

(६) गोबर, सैंधानोन, हल्दी और शहद—इनको एकत्र मिलाकर और महीन पीसकर लगानेसे कच्छु और पामा आराम हो जाती हैं।

(७) अर्क़ तैल या जीरकाद्य तैल लगानेसे कच्छु, पामा और विचर्चिका आदि रोग नाश हो जाते हैं। विधि ६२८ पृष्ठके नं० ६ में लिखी है।

विचर्चिका नाशक नुसख़े।

(१) थूहरके कांडमें सरसोंकी पिसी लुगदी भरकर कोयलेकी आगमें पकाओ और फिर उसका लेप करो। इससे विचर्चिका रोग अवश्य नाश हो जाता है।

(२) थूहरके कांडमें घरका धूआँसा और सैंधानोन भरकर पुट-पाक-विधिसे पकाओ। फिर उसमें तेल मिलाकर लेप करो। इससे विचर्चिका रोग नाश हो जाता है।

किटिभ कुष्ठ नाशक नुसख़े।

(१) पीपल, दुर्गन्ध करंज, हरड़, कूट, गोपित्त और चीता—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे किटिभ कोढ़ नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) चकबड़के बीजोंको थूहरके दूधमें भावना देकर गोमूत्रमें मिलाकर और कुछ देर धूपमें रखकर लेप करनेसे किटिभ कोढ़ आराम हो जाता है।

कोढ़ नाशक नुसख़े।

(३) सोमराजीके बीज, एक तोले भर—गरम जलके साथ पीने और दूध-घीका भोजन करनेसे सब तरहके कोढ़ आराम होते हैं।

(४) गिलोयका रस सेवन करनेसे भी कोढ़ नाश हो जाता है।

(५) हरड़, करंज, सरसों, हल्दी, बावची, सैंधानोन और बायबिड़ङ्ग—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे कुष्ठ रोग नष्ट हो जाता है।

(६) इलायची, कूट, बायबिड़ङ्ग, शतावर, चीता, बच, दन्ती और रसौत—इनको पीसकर लेप करनेसे कुष्ठ रोग आराम होता है।

(७) मैनशिल, इलायची, कालीमिर्च, तेल और आकका दूध—इनको एकत्र मिलाकर लेप करनेसे कुष्ठ रोग नाश होता है।

(८) करंजके बीज, चकबड़के बीज और कूट—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(९) आँवले, थूहर, राल और चकबड़—इनको काँजीमें पीसकर लेप करनेसे कच्छु, दाह, खुजली और कोढ़ आदि चमड़ेके सारे रोग नाश हो जाते हैं।

(१०) अरण्डके पत्ते "माठे"में पीसकर मालिश करनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(११) पमार, कूट, सैंधानोन, काँजी, सरसों और बायबिड़ङ्ग—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे सिध्म, दाद और सब तरहके कोढ़ नाश होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

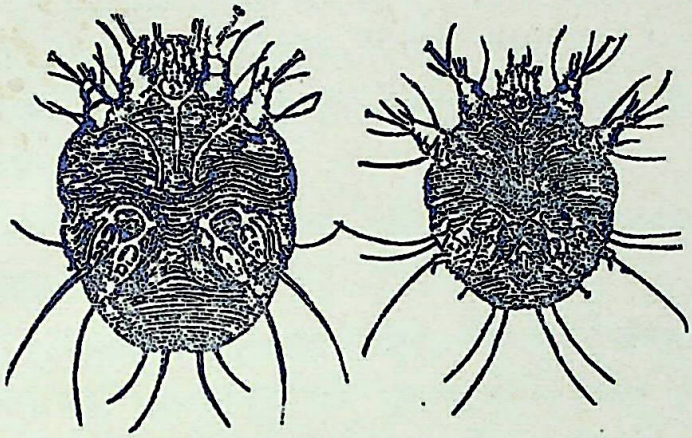

नं० १ नं० २

ऐकेरस स्कैबियायी ।

यही दोनों कीड़े स्कैब खुजलीके कारण हैं। इन्हें ऐकेरस स्कैबियायी और सरकपटीज़ स्कैबियायी कहते हैं। ऊपरके चित्र नं० १ मादीन है और नं० २ नर है। नर छोटा होता है और मादीन बड़ी। इनके धागेके जैसी लम्बी-लम्बी सूँड़ें होती हैं। मादीन चिचड़ीकी क़िस्मका कीड़ा है, जो चमड़े या पोस्तपर हमला करता है। नर चमड़े या जिल्दकी बुनावटके भीतर नहीं पाया जाता; लेकिन चमड़ेके खड्डोंमें पाया जाता है और रोगके लक्षण पैदा करनेमें ज़ाहिरा सीधा भाग नहीं लेता। हमने दोनोंकी ही सूरत-शकल ऊपर दिखाई है। मादीनकी लम्बाई क़रीब-क़रीब $\frac{१}{७०}$ इञ्च और चौड़ाई इससे तिहाई होती है। इनका शरीर बैज़ाबी या बादामी होता है। ऊपरी सितह मुहद्दब और नीचेकी चपटी होती है। इसके चार चंगुल आगे और चार पीछे होते हैं। आगेवाले हरेक चंगुलमें गिरिफ्तका अज़ा और बाल होते हैं और पीछेवालोंमें कड़े बाल होते हैं। नरमें यही भेद है कि, उसके दो अन्दरूनी पिछले चंगुलोंमें भी गिरिफ्तका अज़ा होता है।

इस प्रकारके कीड़ोंकी और भी जातियाँ होती हैं, जो चमड़ेमें घुस जाती हैं, अण्डे रखती हैं और सूराख या बिल कर लेती हैं। ये घोड़े, कुत्ते, भेड़ और सूअर आदि जानवरोंके चिपटती हैं। इन जानवरोंसे मनुष्योंपर चढ़ जाती हैं और जहाँ यह घुस जाती हैं वहीं उधर लिखी स्कैब या कच्छू पामांकी-सी फुन्सियाँ पैदा कर देती हैं। यद्यपि मनुष्यका चमड़ा इन कीड़ोंके लिए उत्तम स्थान नहीं, तो भी मनुष्यके चमड़ेमें प्रवेश करनेपर ये अपना काम करती हैं। इनसे हुआ रोग कोई तीन-चार हफ्तों तक रहता है। इलाज दोनों प्रकारकी खुजलियोंका एकही-सा किया जाता है। (पृष्ठ—६३०)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) पटोलपत्र, खैर, नीम, त्रिफला, काला बेंत, कुटकी और विजयसार—इनको समान-समान लेकर काढ़ा बनाकर पीनेसे कोढ़ रोग नाश हो जाता है।

(१३) कुड़ेकी छाल पीसकर "मिश्रीके शर्बत"के साथ पीनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(१४) विष, वरना, हल्दी, चीता, घरका धूआँसा, मैनफल कालीमिर्च, मूर्वा, आकका दूध और थूहरका दूध—सबको मिला और पीसकर लगानेसे सब तरहके कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(१५) भाँगके पत्ते शहद, घी और मिश्रीके साथ खानेसे सब तरहके कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(१६) तिल, घी, त्रिफला, शहद, त्रिकुटा, शुद्ध भिलावे और मिश्री—इन सातोंको मिलाकर खानेसे कोढ़ नाश होता, शरीर पुष्ट होता और अतीव कामेच्छा बढ़ती है।

नोट—शहद और घी कभी बराबर-बराबर न लेने चाहिये। कम ज़ियादा लेने चाहिये।

(१७) भूरिछरीला, कबीला, मुलेठी, सोरठकी मिट्टी, राल, कमल और मैनशिल—इनको पीसकर और नौनी घीमें मिलाकर लेप करनेसे अत्यन्त स्रवनेवाला या बहुत-सा मवाद देनेवाला कोढ़ भी आराम हो जाता है।

(१८) बापचीका चूर्ण एक तोला खाकर गरम पानी पीने और ३ घण्टे तक धूपमें बैठनेसे सब तरहके कोढ़ १५, २१, ३१ या ४१ दिनमें आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस दवाके सेवन करनेवालेको केवल दूध ही खाना-पीना चाहिये। दूधके सिवाय और सब पदार्थ त्याग देने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्वित्र कुष्ठ नाशक नुसखे ।

नोट—श्वित्र कुष्ठ रोगीका बारम्बार खून निकलवाकर दोष हरने चाहिये और खैरका काढ़ा तथा जौका भोजन देना चाहिये। तृप्त होनेपर कठूमरके रसमें गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिये और खानेको मंडके साथ यवागू देनी चाहिये। श्वित्र कुष्ठमें अगर अशुद्ध स्फोट हो जायँ, और उनमें कांटे पैदा हो जायँ, तो उनको अनेक तरहके लेपादिसे फोड़ डालना चाहिये और क्षार तथा अग्निसे चिकित्सा करनी चाहिये।

(१) कत्था और आँवलोंके काढ़ोंमें एक तोले बापचीके बीजोंका चूर्ण डालकर नित्य पीनेसे शंख, चन्द्र और कुन्दके समान सफेद श्वित्र कुष्ठ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कत्था और आँवले दोनों एक-एक तोले लेकर काढ़ा पकाओ। पकने-पर काढ़ेमें एक तोले बापचीके बीजोंका चूर्ण या शहद मिलाकर पीओ।

(२) बापचीके बीज १६ तोले, हरताल ४ तोले, मैनशिल ६ माशे, चौंटली ६ माशे और चीतेकी जड़ ६ माशे—इन सबको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे श्वित्र कोढ़ नाश होकर शरीरके रंगमें रंग मिल जाता है।

(३) काली कोइलीकी जड़ पीसकर लेप करनेसे एक हफ्ता या कुछ ज़ियादा दिनोंमें श्वित्र कुष्ठ नाश हो जाता है।

(४) हाथीदाँतके साथ मालतीका खार पीसकर लेप करनेसे श्वित्र कुष्ठ नाश हो जाता है।

(५) थूहर, आक, चमेली, दुर्गन्ध करंज और धतूरेके हरे पत्ते—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे श्वित्र कोढ़, दाद और व्रण आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) कुत्तेकी हड्डी, केलेकी भस्म और कव्वेकी विष्ठा—इन सबको एकत्र मिलाकर लेप करनेसे ४० दिनमें अत्यन्त उग्र श्वित्र कोढ़ भी आराम हो जाता है।

(७) चमेली, मैनशिल, बायबिड़ङ्ग, कसीस, गोरोचन, अमलताश और सैंधानोन—इनको एकत्र पीसकर लेप करनेसे श्वित्र कोढ़ आराम हो जाता है।

(८) लोहेका चून, काले तिल, रसौत, बापची और आँवले—इन सबको भाँगरेके रसमें पीसकर श्वित्र कोढ़पर घिसनेसे श्वित्र कोढ़ अवश्य आराम हो जाता है।

(९) नीले फूलका पियाबाँसा, पीले फूलका पियाबाँसा, सफेद फूलका पियाबाँसा, हुलहुल, रसौत, चीता और नीली—इन सबके फूलोंका स्वरस निकालकर, उसमें लोहेका चूर्ण और रसौत मिला दो और फिर उससे श्वित्र कोढ़को घिसो और अन्तमें इसीका लेप कर दो। इस उपायसे सफेद रोम या सफेद बाल शीघ्र ही नाश होकर काले रोम या बाल आ जाते हैं।

(१०) ब्राह्मी, लहसन, सैंधानोन और चीतेकी जड़—इन सबको एकत्र पीसकर और इन्हींके स्वरसमें मिलाकर लेप करनेसे रोम उत्पन्न हो जाते हैं।

(११) विष-तैलके लगानेसे श्वित्र कुष्ठ भी आराम हो जाता है। असलमें यह तैल कोढ़को आराम करता है।

(१२) सफेद फूलवाली अरणीकी जड़ रविवारको लाकर, दूधमें घिसकर एक तोले रोज पीनेसे सफेद कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१३) मैनशिल और चिरचिरेकी भस्म बराबर-बराबर लेकर और पानीमें पीसकर लेप करनेसे सफेद कोढ़ आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुष्ठ नाशक उत्तमोत्तम योग।

बृहन्मरिचादि तैल।

कालीमिर्च, निसोत, जमालगोटेकी जड़, आकका दूध, गोबरका रस, देवदारु, हल्दी, दारुहल्दी, जटामासी, कूट, चन्दन, इन्द्रायणकी जड़, कनेरकी जड़, हरताल, मैनशिल, चीता, कलिहारी, लाख, नागरमोथा, बायबिड़ङ्ग, पमारके बीज, सरसों, इन्द्रजौ, नीमकी छाल, सतौना, थूहर, गिलोय, अमलताश, करंज, नागरमोथा, खैरसार, बावची, बच और मालकाँगनी—ये सब चार-चार तोले और मीठा-तेलिया विष आठ तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो।

अब २५६ तोले सरसोंका तेल और १०२४ तोले गोमूत्र तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मिट्टी या लोहेकी कढ़ाहीमें मन्दाग्निसे तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलके लगानेसे कोढ़के व्रण नाश हो जाते हैं। यह तैल पामा, विचर्चिका, कण्डू, दाद, विस्फोटक, वलीपलित, छाया, नीलिका और व्यंग—इन सबको लगाने-मात्रसे आराम कर देता है। जिन जवान स्त्रियोंको इस तैलकी नास दे दी जाती है, उनके स्तन बुढ़ापेमें भी ढीले नहीं होते। कहते हैं, इस तैलसे १८ प्रकारके कोढ़ और ८० तरहके वातरोग नाश हो जाते हैं। शरीर वायुके समान वेगवाला हो जाता है। इतना तो हम आजमा नहीं सके, पर अनेक तरहके भयानक चर्म रोगोंपर हमने इसकी परीक्षा की और इसे ठीक पाया। कोढ़ी जगदीशका नाम लेकर इसे जरूर २।४ महीने लगातार मालिश करावें। परमात्माकी दयासे अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोढ़ीका पञ्जा ।

इसमें पैरेलिसिस या लकवा हुआ है, यानी हिलने-चलनेकी क्षमता नहीं रही है । ऐक्सटैनसर या प्रसारणी पेशीका स्पर्शज्ञान जाता रहा है, और कुछ पट्ठे सूख गये हैं । पञ्जा जकड़ गया है । इसको लेपर क्लॉ (Leper Claw) कहते हैं । इसको काटनेसे भी कुछ मालूम नहीं होगा, क्योंकि स्पर्शज्ञान जाता रहा है । यह कोढ़ गलता नहीं । (पृष्ठ—९३३)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मरिचादि तैल।

कालीमिर्च, हरताल, मैनशिल, मोथा, आकका दूध, कनेरकी जड़, निशोथ, गोबरका रस, इन्द्रायणकी जड़, कूट, हल्दी, दारु-हल्दी, देवदारु और लाल चन्दन—ये सब १-१ तोले और मीठा-तेलिया विष ४ तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर ६४ तोले कड़वा तेल, २५६ तोले गोमूत्र और ऊपरकी लुगदी—इन सबको लोहेकी कढ़ाहीमें मन्दाग्निसे पकाओ; जब तेल मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलकी मालिश करानेसे सब तरहके कोढ़ और दाद आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

सोमराजी तैल।

सोमराजीके बीज या बावची, हल्दी, दारुहल्दी, सफेद सरसों, अमलताशके पत्ते, कूट, डहर करंजके बीज और चकबड़के बीज या जड़—इन सबको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर एक सेर सरसोंका तेल, चार सेर पानी और लुगदीको मिलाकर तेल पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलके लगानेसे नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण, अठारह तरहके कोढ़, नीलिका, पिड़िका, झाँई, गम्भीर वातरक्त, कण्डू, न्यच्छ, कच्छु और पामादि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

विष तैल।

करंज, हल्दी, दारुहल्दी, आकका दूध, तगर, कनेर, बच, कूट, कोइली, लाल चन्दन, मालती, सतौना, मँजीठ और सिन्दुवार—इनको २-२ तोले लो और मीठा विष ४ तोले लो। सबको पीसकर लुगदी कर लो। फिर सरसोंका तेल ६४ तोले, गोमूत्र

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

२५६ तोले और इस लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेलके लगानेसे श्वित्र कुष्ठ, विस्फोटक, किटिभ, कृमि, लूता, विचर्चिका, कण्डू, कच्छु-विकार और विष-दूषित व्रण आराम हो जाते हैं। यह तेल सब तरहके व्रणोंको शुद्ध करता है।

श्वेत करवीराद्य तैल।

सफेद कनेरकी जड़ और मीठा विष—इनको आध-आध पाव लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल, तेलसे चौगुना गोमूत्र और इस लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलसे चर्मदल कोढ़, सिध्म कोढ़, पामा, विस्फोट और किटिभ कोढ़ नष्ट हो जाते हैं।

सिन्दूराद्य तैल।

सिन्दूर, गूगल, रसौत, मोम और नीलाथोथा—समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल, तेलसे चौगुना पानी और इस लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलसे कच्छु, पिड़िका और पामा आदि आराम हो जाते हैं। पामापर यह तैल खास तौरसे लाभदायक है। परीक्षित है।

महा सिन्दूराद्य तैल।

सिन्दूर, लाल चन्दन, जटामासी, बायबिड़ङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, फूल प्रियंगू, पद्माख, कूट, मँजीठ, खदिर काष्ठ, बच, चमेलीसे पत्ते, आकके पत्ते, निशोथ, नीमकी छाल, डहर करञ्जके बीज, मीठा विष, चुरक, लोध और चकबड़के बीज—इन सबको तीन-तीन तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। अगर यह तैयार लुगदी एक सेर हो, तो चार सेर सरसोंका तेल, सोलह सेर पानी और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

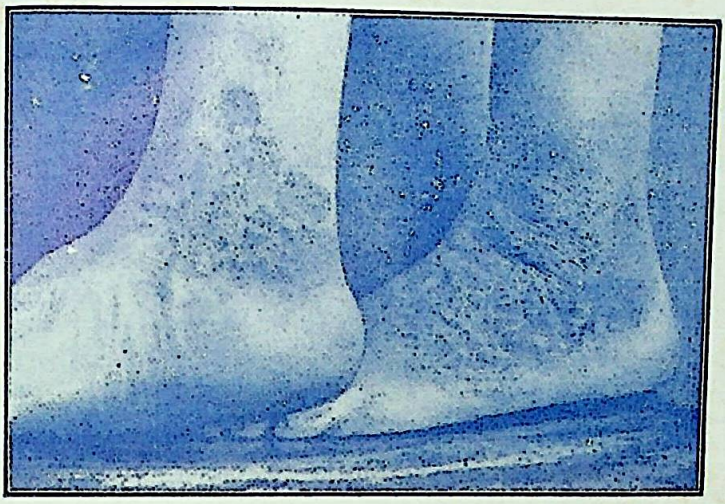

उकवत या ऐकज़ैमाका रोगी।

यह आदमी कोई पैंतीस बरसकी उम्रका है। इसके पैरोंमें उकवत रोग हुआ है। यह उकवत कई सालोंका पुराना है। इसका रंग गहरा मूरा है और इसमें अरगवानी रंगकी आभा भी मारती है। कोई कहते हैं, रोग पीड़ित स्थानका रंग लाल होता है और उसपर छोटे-छोटे दाने होते हैं। इसके दानेदार चकत्तोंको देखिये। इस रोगको हिन्दुस्तानीमें उकवत और अँगरेज़ीमें ऐकज़ैमा (Eczema) कहते हैं। यह भी एक प्रकारकी खुजली ही है, इसीसे इसे पसारीकी खुजली या Grocer's itch अथवा Eczema; नान-बाईकी खुजली या Bakers' itch अथवा Eczema और धोबनकी खुजली या Washerwomen's itch अथवा Eczema कहते हैं। यह रोग संगतराश, ईंट थिथनेवालों, लेई लगानेवालों, जिल्दसाज़ों, छापनेवालों, रंगरेज़ों, अत्तारों अजनों या ज़र्राहोंको होता रहता है। बहुत सर्दी विशेषकर सर्द हवामें रहनेसे यह रोग बढ़ता है और गरमी आते ही ग़ायब हो जाता है। पर इसका अपवाद भी है; यानी गरमीके मौसममें भी यह बहुत ही बुरी तरह बढ़ता है।

और भी—

इस रोगको अँगरेज़ीमें ऐकज़ैमा, बँगलामें काऊर, मारवाड़ीमें बीची कहते हैं। इसमें दादकी तरह गोल-गोल चकत्ते नहीं होते, पर खुजली चलती है। यह सूखा और गीला दोनों तरहका होता है। सूखे ऐकज़ैमामें भूसी-सी उड़ती है। यह रोग सारे शरीरमें कहीं भी हो सकता है, पर बहुत करके हाथ, पाँव और मस्तकमें होता है। सिरमें होनेसे बाल झड़ जाते हैं। गीले ऐकज़ैमासे पीप निकलती है। अँगरेज़ीमें गीले ऐकज़ैमाको वीपिंग ऐकज़ैमा (Weeping Eczema) कहते हैं।

(पृष्ठ—६३४)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे औटाओ। तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तैलकी मालिशसे सब तरहके कोढ़ नाश हो जाते हैं।

मञ्जिष्ठादि क्वाथ।

मँजीठ, सोमराजी, चकबड़के बीज, नीमकी छाल, हरड़, हल्दी, आँवला, अड़ूसेके पत्ते, शतावर, बरियारा, गुलसकरी, मुलेठी, गोखरू, परवलके पत्ते, खसकी जड़, गिलोय और लाल चन्दन—इन १७ दवाओंको दो-दो माशे लेकर यथाविधि काढ़ा पकाओ। इस काढ़ेके पीनेसे कोढ़, वातरक्त, खुजली और मण्डल-चकत्ते आदि चर्म रोग नाश हो जाते हैं।

पञ्चनिम्ब।

नीमके पत्ते, फल, फूल, जड़ और छाल,—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको दूध या गोमूत्रके साथ खानेसे कोढ़, विसर्प और बवासीर रोग आराम हो जाते हैं।

पञ्चनिम्बकावलेह।

नीमके फल, फूल, छाल, पत्ते और जड़—दो-दो तोले लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें भाँगरेके रसकी सात भावनाएँ दो।

हरड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, मिर्च, पीपर, ब्राह्मी, गोखरू, भिलावे, चीता, बायबिड़ङ्गका सार, वाराहीकन्द, लोहेका चूर्ण, हल्दी, दारुहल्दी, वापची, अमलताश, मिश्री, कूट, इन्द्रजौ और पाढ़—इन २१ दवाओंको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें खैरसार, विजय-सार और नीमके गाढ़े काढ़ेकी भावना दो और छायामें सुखाओ। इसके बाद क्रमानुसार भांगरेके रसकी सात भावना दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब हरड़ आदिके चूर्णका एक भाग और ऊपर कहे हुए पंचनिम्बके चूर्णके दो भाग एकमें मिला दो और छानकर रख दो।

पहले कोढ़ीको वमन-विरेचनसे शुद्ध कर लो। फिर यह चूर्ण शहद, पंचतिक्त घी, खैरसारका काढ़ा या गरम पानीके साथ खिलाओ। शुरूमें ६ माशेकी मात्रा दो, फिर धीरे-धीरे बढ़ाकर ४ तोले तककी मात्रा कर दो। इस अवलेहके पचनेपर चिकना, हल्का और हितकारी भोजन दो।

इस अवलेहको स्वयं विधाता ब्रह्माने मार्कण्डेयादि मुनियोंसे कहा था। इसके सेवन करनेसे विचर्चिका, औदुम्बर, पुण्डरीक, कपाल, दद्रु, किटिभ, अलसक, शतारु, विस्फोटक, विसर्प, गण्डमाला, भगन्दर, तीन तरहका श्वित्र, श्लीपद, वातरक्त, जड़ता, अन्धता, नाड़ी व्रण, मस्तक-पीड़ा, सब तरहके प्रमेह, सब तरहके प्रदर एवं सब तरहके स्थावर और जङ्गम विष—ये सब नाश हो जाते हैं।

इस अवलेहको शहदमें मिलाकर चाटनेसे बड़े-बड़े पेटवाले सिंहकी तरह पतले पेटवाले हो जाते हैं। इसके चाटनेवालेको अगर सर्प वग़ैरः काटें तो मर जावें। इसके सेवन करनेसे मनुष्य बहुत लम्बी उम्र तक जीता है। उसे रोग और बुढ़ापा नहीं सताता।

शास्त्रमें इतनी तारीफ लिखी है, सम्भव है, सच्ची हो। हम इतना कह सकते हैं, सब दवाएँ छोड़कर इसे एक मात्र सेवन करने और बृहन्मरिचादि तैल लगाने एवं नीमके नीचे सोने आदिसे अनेक रोगी चार-छै या बारह महीनेमें आराम हो गये। उनका शरीर निर्दोष हो गया। कदाचित् २।३ बरस खानेसे या सदा खानेसे शास्त्रमें लिखे सभी गुण हो सकें। चीज़ अमृत है, पर दस-बीस दिनमें नहीं, २।३ महीनेमें बड़ा चमत्कार दिखाती है। साधारण कोढ़ इससे १ महीनेमें ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोढ़ रोगी ।

इस रोगीकी पीठमें कोढ़का चकत्ता है । यह एक चौदह सालका लड़का है । इस कोढ़को अँगरेज़ीमें Leprosy of the Maculo-Anesthetic type कहते हैं । (पृष्ठ ६३५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सोमराज्युद्वर्त्तन।

बावचीके चूर्णमें अदरखका रस मिलाकर शरीरमें उबटन करनेसे उग्र और जमा हुआ कोढ़ भी नाश हो जाता है। अच्छा नुसखा है।

पथ्यादि लेप।

हरड़, करञ्ज, सरसों, हल्दी, बावची, सैंधानोन और बायबिड़ङ्ग—इनको गोमूत्रमें पीसकर लेप करनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

एकविंशतिक गुग्गुल।

चीता, हरड़, बहेड़ा, आँवला, सोंठ, पीपर, जीरा, कलौंजी, बच, सैंधानोन, अतीस, कूट, चव्य, इलायची, जवासा, बायबिड़ङ्ग, अजमोद, नागरमोथा और देवदारु—सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सब चूर्णके बराबर "शुद्ध गूगल" लेकर इसमें मिला दो और "घी" डाल-डालकर खूब कूटो। जब कुट जाय, दो-दो माशेकी गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंको हर दिन सवेरे, भोजनके समय, अपने अग्निबलानुसार, गरम दूध या गरम जलके साथ खानेसे १८ तरहके कोढ़, कृमि, दुष्ट व्रण, संग्रहणी, बवासीर, मुख-पीड़ा, गलग्रह, गृध्रसी, भग्न और गुल्म—ये सब नष्ट हो जाते हैं। जिस तरह विष्णु असुरोंको जीतते हैं, उसी तरह यह गूगल ऊपर कहे हुए और कोठेमें घुसे हुए रोगोंको जीतता है।

लघु मंजिष्ठादि क्वाथ।

मँजीठ, हरड़, बहेड़ा, आँवला, कुटकी, बच, देवदारु, हल्दी, कूट और नीम—इनका काढ़ा बनाकर नित्य पीनेसे सब तरहके कोढ़ नाश हो जाते हैं। इस काढ़ेका अभ्यास करनेसे वातरक्त, खुजली, पामा, रक्तमण्डल, लाल चकत्ते, दाद, विसर्प और विस्फोटक—इन सबका नाश होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बृहन्मंजिष्ठादि क्वाथ।

मँजीठ, कुड़ेकी छाल, गिलोय, नागरमोथा, बच, सोंठ, हल्दी, दारुहल्दी, कटेरीका पंचाङ्ग, नीम, परवल, कुटकी, भारङ्गी, बायबिड़ङ्ग, चीता, चुरनहार, देवदारु, भाँगरा, पीपर, त्रायमाण, पाढ़, शतावर, खैर, हरड़, बहेड़ा, आँवला, चिरायता, बकायन, विजयसार, अमलताश, फूल प्रियंगू, बापची, लाल चन्दन, वरुणा, जमालगोटा, सिंहोड़ा, पित्तपापड़ा, शारिवा, अतीस, धमासा, इन्द्रायण और सुगन्धवाला—इन सबका काढ़ा पीनेसे बहुत पुराने चर्म-विकार, अठारह तरहके कोढ़, वातरक्त, विसर्प, त्वचाकी जड़ता और आँखोंके रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस काढ़ेके सम्बन्धमें हमने "वातरक्त रोग चिकित्सा"में बहुत कुछ लिखा है, उसे भी देख लीजिये।

पञ्चतिक्त घृत।

नीम, परवल, कटाई, गिलोय और अड़ूसा—इनको छटाँक-छटाँक भर लेकर, दो सेर पानीमें काढ़ा करो। जब आध सेर पानी रह जाय, उतारकर कढ़ाहीमें छान लो। फिर उसमें आध सेर घी और आध सेर त्रिफलाकी सिलपर पिसी लुगदी मिलाकर पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, छान लो।

इसमेंसे एक या दो तोले घी पीनेसे ८० वातरोग, ४० पित्त रोग, २० कफ रोग और १८ कोढ़ आराम हो जाते हैं।

पंचतिक्त घृत गुग्गुल।

नीमकी छाल, गिलोय, अड़ूसेकी छाल, परवलके पत्ते और कंटकारी—आध-आध पाव और शुद्ध गूगल पोटलीमें बँधा हुआ ५ तोले—सबको सोलह सेर पानीमें डालकर औटाओ, जब चार सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो और गूगलकी पोटलीको अलग रख लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाढ़, बायबिड़ङ्ग, देवदारु, गजपीपर, जवाखार, सज्जीखार, सोंठ, हल्दी, सोवा, चव्य, कूट, लताफटकी, कालीमिर्च, इन्द्रजौ, जीरा, चीता, कुटकी, शुद्ध भिलावा, बच, पीपरामूल, मँजीठ, अतीस, त्रिफला और अजमोद—प्रत्येक छै-छै माशे लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

अब एक सेर घी, ऊपरका काढ़ा, पोटलीकी गूगल, ऊपरकी लुगदी—सबको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ, और घी मात्र रहनेपर उतार लो। इसमेंसे छै-छै माशे घी रोज खानेसे कोढ़, भगन्दर, नासूर और विष-दोष आराम हो जाते हैं।

तालकेश्वर रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, ताम्बा भस्म, लोहा भस्म, शुद्ध गूगल, चीता, शुद्ध शिलाजीत, शुद्ध कुचला, हरड़, बहेड़ा और आँवला—ये सब एक-एक माशे लो; अभ्रक भस्म चार माशे और करञ्जके बीज चार माशे लो।

पहले पारे और गन्धकको ३।४ घण्टे खरल करके कज्जली कर लो। फिर उसमें पीसने-कूटनेकी दवाएँ पीस-छानकर और भस्म यों ही मिला दो। जब सब मिल जायँ, तब इसे पहले "शहद" और पीछे "घी" डालकर खरल करो और घीके चिकने बासनमें रख दो। यह "गलित कुष्ठादि रस" है। इसकी मात्रा १ माशेसे ३ माशे तक है। इसपर लाल शालि चावलोंका भात, दूध और शहदका पथ्य देना चाहिये। जिसके कान, उँगली और नाक वग़ैरः गल गये हों, वह भी इससे कामदेवके समान शरीरवाला हो जाता है। इसपर मैथुन मना है। अगर कोढ़ने मज़बूत जड़ करली हो, तो इसपर जल और भातका पथ्य देना चाहिये।

सोमराजी घृत।

बाबची १६ तोले, खैरसार ४ तोले, परवलकी जड़ १ तोले, हरड़ १ तोले, बहेड़ा १ तोले, आँवला १ तोले, त्रायमाण १ तोले, धमासा

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

१ तोले और कुटकी १ तोले—इन सबको पानीके साथ महीन पीसकर इनमें ८ तोले "शुद्ध गूगल" मिला दो। फिर कल्कसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी तथा ऊपरकी लुगदी सबको मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इस घीसे श्वित्र कुष्ठ इस तरह नाश होता है, जिस तरह जलसे आग नष्ट होती है। यह अठारह प्रकारके कोढ़ोंकी उत्तम औषधि है। श्वित्र और कुष्ठ रोगियोंकी पीड़ा निवारण करनेके लिए प्राचीन समयमें ब्रह्माने इसे बनाया था।

कन्दर्पसार तैल।

छतिवनकी छाल, शीशमकी छाल, गोखरू, गिलोय, नीमकी छाल, शीशमकी छाल, घोड़ नीम, जयन्तीके पत्ते, तितलौकी, इन्द्रायण और हल्दी—प्रत्येक आध-आध पाव लेकर जौकुट कर लो और १६ सेर पानीमें डालकर काढ़ा पका लो; जब ४ सेर पानी रह जाय, छान लो। यह काढ़ा हुआ। इसके पास ही ४ सेर गोमूत्र, १ सेर सरसोंका तेल और १ सेर गोबरका रस रख दो।

अब अमलताशके पत्ते, भाँगरा, जयन्तीके पत्ते, धतूरेके पत्ते, हल्दी, भाँगकी पत्ती, चीतेके पत्ते, खजूरके पत्ते, आकके पत्ते और सेंहुड़के पत्ते—इन सबका एक-एक सेर रस तैयार करो।

माकाल, बच, ब्राह्मीके पत्ते, तितलौकी, चीता, घीग्वार, कुचला, परवलके पत्ते, हल्दी, नागरमोथा, पीपरामूल, अमलताशका गूदा, आकका दूध, कालकासुन्दाकी जड़, ईशमूल, आचमूल, मँजीठ, कड़वा परवल, इन्द्रायणकी जड़, विछौटीके पत्ते, करञ्जमूल, हापरमाली, मूर्व्वामूल, छतिवनकी छाल, सीसोंकी छाल, कुड़ेकी छाल, नीमकी छाल, घोड़ नीमकी छाल, गिलोय, हाकुच बीज, सोमराजी (दो भाग), चकबड़के बीज, धनिया, भीमराज, मुलेठी, जंगली सूरन, कुटकी, कचूर, दारुहल्दी, निशोथ, पद्माख, गँठेला, अगर, कूट, कपूर, कायफल, जटामासी, मूरामासी, इलायची, अड़ूसेकी छाल और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

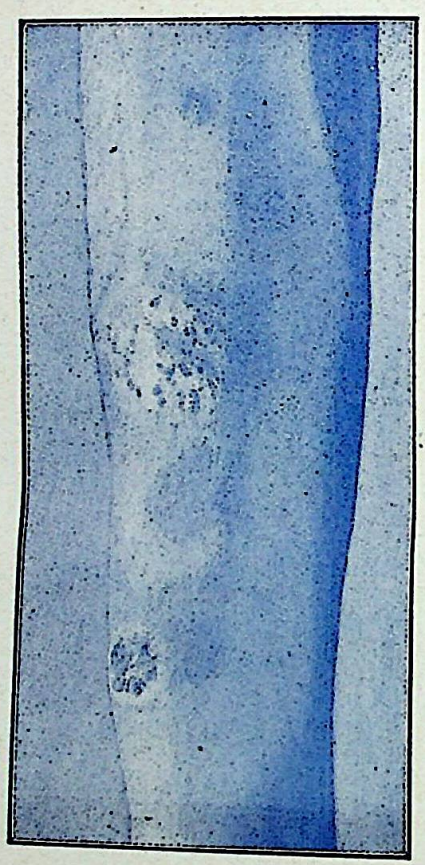

दद्रु रोगीकी भुजा।

इस रोगीकी बाँहपर दादके गोल-गोल तीन चकत्ते हैं। रोगी साईंस है। इस दादमें सोज़िश होती है। इसमें भी टिनिया सरकीनेटा कृमि होता है।

(पृष्ठ ६४५)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खसकी जड़—ये सब छै-छै माशे लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

अब एक कड़ाहीमें १ सेर सरसोंका तेल, ४ सेर काढ़ा, ४ सेर गोमूत्र, १ सेर गोवरका रस और ऊपरकी लुगदीको डालकर मन्दाग्निसे पकाओ और तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। यह तैल लगानेसे सब तरहके कोढ़, श्वित्र कुष्ठ और गण्डमाला प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं।

अमृत भल्लातक।

शुद्ध भिलावे दो सेर लेकर आठ सेर पानीमें औटाओ; जब दो सेर पानी रह जाय, छान लो।

अब ऊपरके काढ़ेमें दो सेर घी मिलाकर औटाओ; जब घी पक जाय, उसमें एक सेर चीनी मिला दो और सात दिन उठाकर रखदो।

इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसके सेवन करनेसे कोढ़ वग़ैरः रोग नाश होकर बल-वीर्य बढ़ते हैं।

दाद-नाशक हकीमी नुसख़े।

नोट—यह रोग सौदावी है; यह चमड़ेपर फैलता और ख़ूनसे पैदा होता है। जब तक मांसके भीतर न घुसा हो—यानी शुरूमें इसका इलाज आसानीसे हो सकता है। जब कि मांसके भीतर घुस जाता है, तब जौंक और पंछने लगाने एवं तेज़ दवाएँ सेवन करनेसे ही जाता है। यह भी कोढ़का एक भेद है, इसलिए इसके पैदा होनेपर लापरवाही करना भारी नादानी है।

(१) राल, गन्धक, सुहागा और खुरासानी अजवायन—इनको कूट-पीसकर और पानीके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दादको खुजाकर, इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(२) मुर्दारसङ्ग, गन्धक, नौसादर, सुहागा, माजूफल, कालीमिर्च, सफेद कत्था, अफीम और चीनिया गोंद कूट-छानकर पानीके साथ गोलियाँ बना लो। लगानेके समय, गोलीको नीबूके रसमें घिसकर लगाओ। इस दवासे दाद अवश्य जाता रहता है।

(३) मदारके फूल और पँवारके बीज कूट-छानकर खट्टे दहीमें मिला लो और दादपर लगाओ। इससे दाद आराम हो जाता है।

(४) इमलीके बीज नीबूके रसमें पीसकर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(५) सूखा सिंघाड़ा नीबूके रसमें पीसकर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(६) हारसिंगारकी पत्तियाँ पीसकर दादपर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(७) दादको खुजाकर, हर रोज़ दो बार, नीबूका रस मलनेसे दाद नाश हो जाते हैं।

(८) कलौंजी सिरकेमें पीसकर मलनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(९) कसौंदीकी जड़ नीबूके रसमें घिसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(१०) पलासपापड़ा और कत्था पीसकर लगानेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(११) आँवले, लाल चन्दन, चीनिया गोंद, राल, सुहागा और कत्था—समान-समान लेकर पानीमें पीस लो और दादको खुजाकर उसपर मलो। इससे दाद आराम हो जाते हैं। ग्रन्थकार इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गंज-दाद ।

इस रोगीकी खोपड़ीमें बड़े-छोटे दादोंके छै-सात चकत्ते हैं। ऐसे दादको गंज-दाद (Bald ringworm या Bald Tinea tonsurans) कहते हैं। ऐसे दादोंमें बहुधा दादकी जगहके अधिकांश या सारे ही बाल झड़ जाते हैं और वहाँ सफेद गोल चकत्ता-सा दीखने लगता है। जो बाल झड़नेसे बचे रहते हैं, वे रूखे और सूखे-से होते हैं एवं उनमें चमक नहीं होती। जहाँ यह दाद होता है, वहाँका चमड़ा रूपी भूसीदार या बफ़ादार हो जाता है।

(पृष्ठ--६४६)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१२) पँवारके बीज पानीमें भिगो दो। जब वे सड़ जावें, सिलपर पीसकर दाद या गीली-सूखी खुजलीपर लगाओ और गरम जलसे नहाओ। दाद और खुजली आराम हो जायँगे।

(१३) अमलताशकी पत्तियाँ पीसकर दादपर मलने या अमलताशकी कच्ची फलीकी गरी निकालकर और पानीमें पीसकर दादपर लगानेसे दाद नाश हो जाते हैं।

(१४) मूलीके बीज नीबूके रसमें खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके लगानेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(१५) कुचला सिरकेमें पीसकर दादपर लगानेसे दाद नाश हो जाते हैं।

(१६) सौ बार धोये हुए सवा तीन तोले घीमें २० माशे सज्जी पीस-छानकर मिला दो। इसका लेप करनेसे दाद आराम हो जाते हैं।

(१७) अंजीरका दूध मलनेसे दाद आराम हो जाता है।

(१८) चन्दन, सुहागा और अफीम तीनों बराबर-बराबर लेकर, नीबूके रसमें पीसकर, दादपर मलनेसे दाद आराम हो जाते हैं। दवा लगानेसे पहले दादको खुजा लेना जरूरी है।

(१९) मैनशिल पानीमें पीसकर लगानेसे दाद जाता रहता है।

(२०) दादपर सरेश मलो। जब तक दाद नाश न होगा, सरेश अपनी जगहसे न छुटेगी।

(२१) पारा सिरकेमें पीसकर लगानेसे दाद नाश हो जाता है।

(२२) महँदी सिरकेमें पीसकर लगानेसे दाद जाता रहता है।

(२३) नीमकी पत्तियाँ दहीमें पीसकर लगानेसे दाद जाता रहता है।

(२४) सिन्दूर, गन्धक, हल्दी, सुहागा और कालीमिर्च—इनको समान-समान लेकर और घीमें मिलाकर दिनमें चार-पाँच बार लगानेसे दाद चला जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२५) पँवारके बीज, आँवले और कत्था—इनको दहीके पानीमें पीसकर दादपर लगानेसे दाद नाश हो जाता है, पर दवा लगानेसे पहले दादको खुजा लेना जरूरी है।

तर और खुश्क खुजली नाशक नुसख़े।

नोट—खुजली चमड़ेके रोगोंमें गिनी जाती है। तर खुजली कफसे और सूखी वायुसे होती है। खुजली होनेपर, बैंगन, लालमिर्च, कड़वे तेल और नमकीन चीज़ोंसे परहेज़ करना चाहिए।

(१) दो तोले नीमकी कोंपल पानीमें पीस-छानकर पन्द्रह दिन तक पीनेसे खुजली जाती रहती है।

नोट—इसी तरह पीस-छानकर "सरफोंका" पीनेसे भी खुजली जाती रहती है।

(२) कड़वा चिरायता, शाहतरा और जङ्गी हरड़—तीनोंको मिलाकर तोले भर लो और रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही पीस-छानकर पीओ। इससे तर या गीली खुजली जाती रहती है।

(३) शुद्ध आमलासार गन्धक, आमाहल्दी और बावची—हरेक दस-दस माशे और शाहतरा २० माशे लेकर जौकुट करो और इसके तीन भाग कर लो। एक भाग रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उसका पानी छानकर पीलो। कपड़ेमें जो छानस या फोक रहे, उसे कड़वे तेलमें पीसकर बदनपर मलो और गरम पानीसे नहा डालो। इससे खुजली आराम हो जाती है।

(४) "मोजिज" नामक ग्रन्थमें लिखा है, कि सात छटाँक दूध और साढ़े तीन छटाँक सिकञ्जबीन मिलाकर पीनेसे खुश्क खुजली आराम हो जाती है। शेखुल रईस भी इसे अपना आजमूदा नुसखा कहते हैं। एक हकीम साहब कहते हैं कि, इतनी खूराक दिहातियोंके लिये उचित है। नाजुक-मिजाज अमीरोंकी तो भूख बन्द हो जायगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

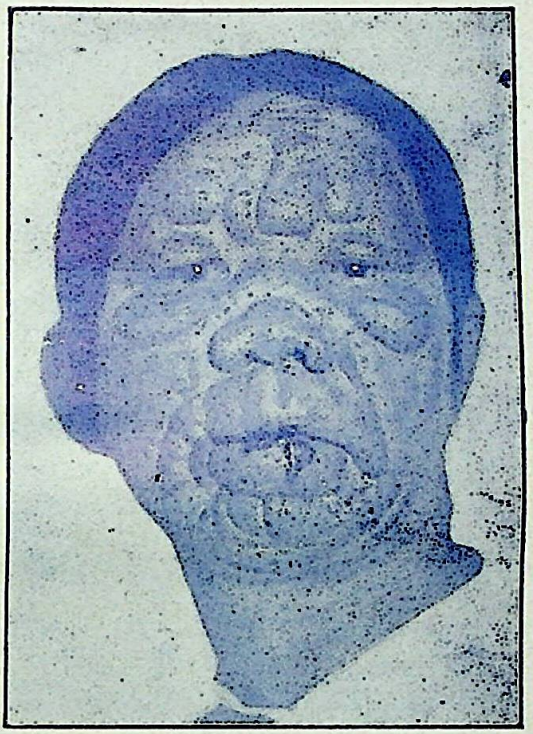

गाँठदार कोढ़का रोगी।

यह कोढ़ भी ग्रन्थिदार है। इसमें स्पर्शज्ञानका लोप हो जाता है, इसलिये रोग पीड़ित स्थानपर आग लगाने, काटने या सूई घुसानेसे भी कुछ मालूम नहीं होता। इसमें बहुत-सी ग्रन्थियोंके पैदा हो जाने और आपसमें मिल जानेसे सूरत बिल्कुल बिगड़ जाती है। अन्तमें नाक और होठ गल जाते हैं। ऊपरके चित्रको ग़ौरसे देखिये। अँगरेज़ीमें इसे Leprosy of the Tubercular Type कहते हैं। (पृष्ठ—६४७)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) सब्ज़ तूतिया ४ माशे, सूखी तम्बाखू ४ माशे, कमीला ८ माशे और सफेद चीनी १६ माशे—इनको पीसकर और कड़वे तेलमें मिलाकर लगानेसे तीन दिनमें खुजली आराम हो जाती है।

(६) पाव भर कड़वा तेल खूब औटाओ। फिर उसमें एक-एक करके मदारके २१ पत्ते डाल दो; जब पत्ते जलकर ख़ाक हो जायँ, तेलको नीचे उतार लो और उसमें थोड़ा-सा "मैनशिल" पीसकर मिला दो। इस तैलको तीन-चार दिन खुजलीपर मलनेसे खुजली नाश हो जाती है।

(७) तूतिया ३ माशे, पारा ३ माशे, कालीमिर्च ३ माशे, बन्दूक़की बारूद १० माशे और घी ४० माशे सबको पीस और मिलाकर खुजलीपर मलने और ३ घण्टे बाद बेसन मलकर गरम जलसे नहानेसे खुजली चली जाती है।

(८) सहँजनेकी जड़ कड़वे तेलमें डालकर आगपर जलाओ और तेलको छानकर मलो। इससे खुजली आराम हो जाती है।

(९) पीली हरतालका तेल दाद और खाजको नाश करता है। पीली हरताल एक भाग और मीठा तेल दो भाग ला रखो। पहले तेलको आगपर चढ़ा दो। जब तेल लाल हो जावे, उसमें थोड़ी-थोड़ी हरताल पीसकर डालो और लकड़ीके चिमटेसे हिलाते रहो। इस समय आगको मन्दी कर दो। जब तेलका रंग मोर-जैसा हो जाय और उसमें आग लग जाय, डेगचीका मुँह बन्द कर दो कि, जिससे लगी हुई आग बुझ जावे। इस तरह पाँच बार आग लगनेपर डेगचीको बन्द करो और खोलो। इसके बाद तेलको छानकर शीशीमें रख दो। इस तैलको खुजलीपर लगाकर धूपमें बैठने और गरम पानीसे नहानेसे खुजली आराम हो जाती है।

(१०) कनेरकी बीस पत्तियाँ पाव भर मीठे तेलमें जलाकर, तेल मलनेसे तर और खुश्क दोनों खुजली नाश हो जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) ज़मीनमें पड़े हुए बड़के सूखे पत्ते और सूखी ही थूहरकी लकड़ी तथा ख़शख़ाशके पोस्ते बराबर-बराबर लेकर आगमें जला लो। इनकी राखको कड़वे तेलमें मिलाकर मलने और थोड़ी देर धूपमें बैठकर गरम जलसे नहानेसे खुजली नाश हो जाती है।

(१२) कलमी शोरा कड़वे तेलमें मिलाकर मलनेसे खुजली जाती रहती है।

(१३) महँदी और गुल रोग़न सिरकेमें मिलाकर मलनेसे खुजली जाती रहती है।

(१४) साबुन पानीमें पीसकर शरीरपर लगाने और फिर नहानेसे खुजली जाती रहती है।

(१५) सुहागा, चमेलीका तेल, गुलाबके फूल और थोड़ा-सा कपूर—इनको नीबूके रसमें पीसकर शरीरपर मलनेसे खुजली चली जाती है।

(१६) छटाँक भर चमेलीके तेलमें एक तोला कपूर मिलाकर मालिश करनेसे सूखी खुजली चली जाती है।

(१७) हमारा "कृष्णविजय" तैल शरीरपर मलनेसे सूखी-गीली खाज-खुजली, फोड़े-फुन्सी, दाफड़-ददौरे आदि सारे खूनकी ख़राबीके रोग आराम हो जाते हैं। इससे आतशकके घाव और उसकी भयंकर सूजन भी आराम हो जाती है। "कपूरादि मरहम"के लगानेसे गीली खुजली, पकी हुई जलनेवाली फुन्सी, गरमीके घाव, मकड़ीका विष आदि सब तरहके घाव आराम होकर ठण्डक पड़ जाती है। तैलका दाम १) शीशी, मरहमका ।।) शीशी।

(१८) गन्धक ८ माशे, पारा २ माशे और भुना तूतिया २ माशे—इनको २१ बार धोये हुए गायके घीमें मिलाकर मलने और घण्टे भर बाद शीतल पानीसे नहानेसे खुजली चली जाती है।

(१९) अफीम १ तिलीके तेलमें जलाकर मलनेसे खुजली आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२०) सिन्दूर, आमलासार गन्धक, मुर्दारसंग और तूतिया—सबको बीस-बीस माशे लेकर पीस-छान लो। फिर पिसे-छने मसालेको चार तोले गायके घीमें मिलाकर मलनेसे खुजली आराम हो जाती है।

(२१) निवाये जलसे नित्य नहानेसे तर और खुश्क दोनों खुजली आराम हो जाती हैं।

(२२) सब्ज तूतिया १० माशे, आमलासार गन्धक १० माशे और कपूर १० माशे—इनको पीसकर, गायके १०० बार धुले हुए घीमें मिलाकर हर दिन मलने और एक घण्टे तक घाममें बैठकर नहानेसे खुजली आराम हो जाती है। यह नुसखा खुजलीपर रामबाण और परीक्षित है।

नोट—नहानेसे पहले गायका गोबर मल लिया जावे तो और भी उत्तम हो। नहानेके बाद कपूर मिला हुआ असल चमेलीका तेल खूब मलनेसे बड़ा आराम मालूम होता और खुजली जल्दी आराम होती है।

(२३) तूतिया ४ माशे, आमलासार गन्धक ८ माशे, कपूर ८ माशे और खुरासानी अजवायन ८ माशे—सबको पीस-छानकर धुले हुए घीमें मिलाकर खुजलीपर मलने, घण्टे भर धूपमें बैठने और गायका ताजा गोबर मलकर नहाने तथा नहानेके बाद "कपूर-मिला चमेलीका तेल" मलवानेसे भयंकर खुजली भी ३ दिनमें चली जाती है। परीक्षित है।

(२४) शुद्ध आमलासार गन्धक, शुद्ध पारा, हल्दी, दारुहल्दी, सफेद जीरा, कालाजीरा, कालीमिर्च, मैनशिल और सिन्दूर—हरेक ६।६ माशे और तूतिया २ माशे—इनमेंसे पारे और गंधकको पहले खरल करके कज्जली कर लो। फिर बाक़ी दवाएँ पीस-छानकर उसी कज्जलीमें मिला दो और शीशीमें रख दो।

अगर पककर फूटी और बिना फूटी हुई फुन्सियोंपर दवा लगानी हो, तो अन्दाजसे लेकर १०० बार धोये हुए घीमें मिला लो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और खुजलीकी जगह लेप कर दो। यदि सूखी खाज हो, तो इस दवाको सरसोंके तेलमें मिलाकर खूब मालिश कराओ। ३।४ घण्टे बाद गरम पानीसे नहा लो। अगर गीली खुजलीकी फुन्सियाँ कहीं-कहीं हों, तो नीमके काढ़ेसे उस जगहको धो-पोंछकर, घीमें इस दवाको मिलाकर दिनमें चार-छै बार गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर दो। परीक्षित है।

(२५) नौसादर, सुहागा, शुद्ध पारा, शुद्ध आमलासार गन्धक, कमीला, बावची, कालीमिर्च और कपूर—एक-एक तोले लो और नीलाथोथा ३ माशे लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करके कज्जली कर लो। फिर शेष दवाएँ पीस-छानकर उसमें मिलाओ। अब इस पिसी-छनी दवाको एक सौ आठ बार धोये हुए गायके घीमें मिलाकर मरहम बना लो। इस दवाको दिनमें दो बार लगाओ। फिर भैंसका गोबर मलकर नहा डालो। इस तरह तर और खुश्क दोनों तरहकी खुजली आराम हो जाती हैं। तीन-चार दिन इस मरहमके लगाने और खारे-खट्टे, चरपरे आदिसे परहेज करनेसे अवश्य लाभ होता है। सुपरीक्षित है।

(२६) काशगरी सफेदा ६ माशे, कपूर ६ माशे, सिन्दूर ६ माशे, कमीला ४ माशे और तूतिया भुना हुआ १ माशे—सबको पीसकर कपड़ेमें छान लो और छटाँक भर घीमें मिला लो। इस मरहमको खुजलीपर लगानेसे खुजली जाती रहती है। जब नहाना हो या दवा छुड़ानी हो, गरम पानी काममें लाओ। परीक्षित है।

(२७) नौसादर, नीलाथोथा, गूगल और आमलासार गन्धक बराबर-बराबर लेकर नीबूके रसमें पीस लो। इसके लगानेसे गजकर्ण, दाद और खुजली ये सब नाश हो जाते हैं।

नोट—खुश्क खुजलीमें केवल खुजली चलती है, पर तर खुजलीमें खुजानेसे पानी-सा निकलता है। गजकर्ण रोगको "धधरी" भी कहते हैं। यह भी खुजलीसे पैदा होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

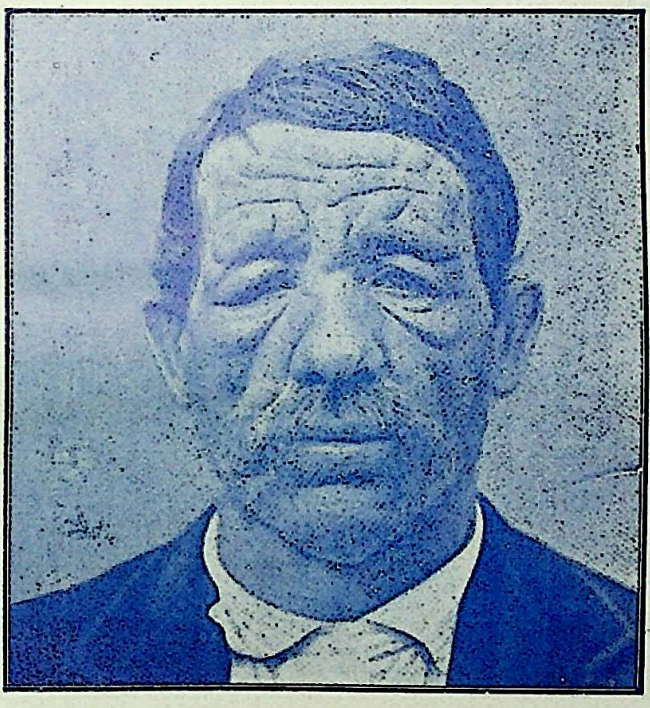

कोढ़ रोगी ।

यह कोढ़ बहुत करके कपाल, नाक और होठोंपर होता है। इसमें चमड़ा बहुत ही कठोर और मोटा हो जाता है। दाने और गाँठें मिलकर कोढ़का रूप धारण करती हैं। यह बरसों तक धीरे-धीरे बढ़ा करता है। इसमें घाव नहीं होते और मवाद भी नहीं चूता। (पृष्ठ—६५१)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कोढ़, दाद और खुजली प्रभृतिपर

मिश्रित नुसखे।

(१) काली हरड़ ४० माशे, चीता ४० माशे, कालीमिर्च २० माशे और शुद्ध बच्छनाग विष १० माशे—इन सबको कूट-छानकर गायके घीमें भून लो। फिर दवाके वज़नसे दूने "शहद"में मिलाकर माजून बना लो। मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक। इसके सेवन करनेसे कोढ़ नाश हो जाता है।

(२) हरतालका कुश्ता ४० दिन खानेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

नोट (१)—शुद्ध हरताल २० माशे, करंजुआ ४० माशे और फिटकरी ४० माशे तैयार करो। फिर एक शकोरेमें २० माशे करंजुएकी गिरी जौकुट करके बिछादो। फिर उसपर २० माशे फिटकरी कूटकर बिछा दो। फिटकरीपर हरताल रखदो। हरतालके ऊपर पहलेकी बाक़ी करंजुएकी गिरी बिछादो और उसके ऊपर फिटकरी बिछा दो। अब शकोरेपर दूसरा शकोरा रखकर और सात कपड़मिट्टी करके उसे सुखालो। फिर शकोरोंको सात सेर जंगली कण्डोंके बीचमें रखकर आग लगा दो। शीतल होनेपर शकोरोंको निकालकर खोलो और कुश्तेको शीशीमें रख दो। इसमेंसे एक, दो या चार चावल-भर कुश्ता पानमें रखकर खानेसे ४० या ५० दिनमें कोढ़ नाश हो जाता है।

नोट (२)—हमारे यहाँ रसमाणिक्य सेवन कराते हैं। यह भी हरतालसे तैयार होता और रंग में माणिक्य की तरह चमकता है। बंशपत्र हरतालको "भतुवेके रस और खट्टे दही"की सात भावनाएँ देकर, छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। फिर एक शकोरेमें हरतालको रखकर, ऊपरसे दूसरा शकोरा ढक दो। उनपर बेरके पत्तों और मिट्टीका लेप करके सुखा लो। फिर एक ख़ाली हाँडीपर इन शकोरोंको रखकर, हाँडीको चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचेसे आग दो। जब हाँडी लाल-सुर्ख़

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हो जाय, उसे नीचे उतार लो। शकोरोंमेंसे माणिकके समान चमकदार रस निकलेगा। इस रसकी मात्रा २ रत्तीकी है। एक मात्रा नाबराबर "घी और शहद"में मिलाकर खानेसे कोढ़ और वातरक्त आदि नाश हो जाते हैं।

हरतालके कुश्तेकी और तरकीब—२० माशे हरतालको "अण्डेकी सफेदी"में मिलाकर गोली बना लो। इस गोलीको एक शकोरेमें रखकर ऊपरसे दूसरा शकोरा ढक दो और कपड़मिट्टी करके सुखा लो। इसको १२ घण्टे तक कण्डोंमें पकानेसे उत्तम कुश्ता तैयार हो जाता है।

(३) पुराने नीमके फूल, पत्ते, छाल, फल और जड़ आध-आध सेर; कालीमिर्च, पीली हरड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आँवले और बावची पाव-पाव भर—इन सबको पीस-कूटकर छान लो। इस चूर्णकी मात्रा ३ माशेसे ६ माशे तक है। इसको "मँजीठके काढ़े"के साथ चार महीने तक सेवन करने और नीमके नीचे सोनेसे कोढ़ निश्चय ही आराम हो जाता है। मांस, नोन और गरम चीज़ोंसे परहेज़ रखना ज़रूरी है।

(४) शुद्ध संखिया ४ माशे, कुन्दर २ तोले, रेवन्दचीनी १ तोले और बबूलका गोंद ८ माशे—इन सबको नीबूके रसमें खरल करो। फिर इसमें "७ बहेड़ेके पत्ते और ८ माशे रससिन्दूर" मिला दो और घोटकर आधी-आधी रत्तीकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने और खटाईसे बचनेसे कोढ़ आराम हो जाता है। ग्रन्थकार इसे अपना आज़मूदा लिखता है। हमने नहीं आज़माया।

(५) चनेकी आध पाव भूसी सेर भर पानीमें रातको भिगो दो, और सवेरे ही मल-छानकर उनंचास ४९ दिन तक पीओ। मांस या गुड़-शक्कर खाओ*। दूध, दही, चावल प्रभृति सफेद चीज़ोंसे परहेज़ करो। इस तरह करनेसे कोढ़ जाता रहेगा। अगर कुछ अंश बाक़ी रह जाय, तो इसे कुछ दिन और पीओ।

(६) नीमका मद शरीर पर मलनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

* कह नहीं सकते, हिकमतकी रूसे कोढ़में मांस वग़ैरःका खाना कहाँ तक उचित है। आयुर्वेदमें तो मांस कोढ़को पैदा करनेवाला माना गया है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) सरफोंकेका अर्क़ पीनेसे कोढ़ जाता रहता है।

(८) नीमके फूलोंका अर्क़ पीनेसे कोढ़ आराम हो जाता है।

(९) विजयसारकी २० माशे लकड़ी कूटकर रातको पानीमें भिगो दो और सवेरे ही मल-छानकर पीओ। ४० दिनमें कोढ़ आराम हो जायगा।

(१०) १० माशे महँदीकी पत्तियाँ रातको पानीमें भिगोकर और सवेरे ही मल-छान और शक्कर मिलाकर ४० दिन पीनेसे कोढ़ चला जाता है।

(११) सिरसकी पत्तियाँ २० माशे और कालीमिर्च २ माशे—इन दोनोंको पानीमें पीसकर ४० दिन तक पीनेसे कोढ़ जाता रहता है।

(१२) बकुलकी छाल तीन तोले जौकुट करके पानीमें भिगो दो और सवेरे ही मल-छानकर पीओ। इससे कोढ़ चला जाता है।

(१३) नीमकी पत्तियोंका खार सेवन करनेसे कोढ़, दाद और खुजली चले जाते हैं।

(१४) कोढ़ उठते ही यानी शुरूमें, अफीम और पोस्ता खानेकी आदत डालनेसे कोढ़ रोग दबते देखा गया है।

(१५) झाऊकी जड़का काढ़ा पीनेसे कोढ़ अवश्य नाश हो जाता है। कहते हैं, इसमें लाल गन्धकके समान ताक़त है। साहब तज़किरे दाऊदी इस नुसख़ेको अपना आज़मूदा लिखते हैं।

(१६) नीमकी पत्ती १ तोले, का तिल ६ माशे, लाहौरी नोन ६ माशे और पुराना गुड़ २ तोले मिलाकर रख लो। इसमेंसे बलाबल-अनुसार ६ माशेसे १॥ तोले तक खानेसे कोढ़ और सफेद दाग़ जाते रहते हैं।

(१७) कड़वे नीमके पत्तोंको पानीमें पीस-छानकर पीनेसे कोढ़, वमन और उबकी आना आराम होता है।

(१८) केतकीके पत्तोंका रस मलनेसे कण्डू-खुजली आराम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होती है; पर इससे जलन होती है। अगर ज़ियादा जलन हो, तो गोबर लगाकर शीतल जलसे नहा डालो।

(१६) बिछवाकी जड़ तुलसीके पत्तोंके रसमें पीसकर लगानेसे दाद आराम हो जाता है।

(२०) खैरके पंचाङ्गका काढ़ा स्नान, पीने, खाने, उबटने और लेपके काममें लानेसे कोढ़ आराम हो जाता है। कोढ़के ऊपर "कत्था" घिसकर लगाना चाहिये।

(२१) खैरकी छाल और आँवलोंके काढ़ेमें "बावचीका चूर्ण" मिलाकर पीनेसे सफेद कोढ़ आराम हो जाता है।

(२२) कसौंदीके पत्ते काँजीमें पीसकर केवल दादपर लेप करनेसे अथवा कसौंदीकी जड़ घिसकर लगानेसे अथवा कसौंदीके पत्तोंका रस नीबूके रसमें मिलाकर लगानेसे दाद, कोढ़ और किटिभ कोढ़ आराम हो जाते हैं।

(२३) कुड़ेकी छालका पुटपाक-विधिसे निकाला हुआ रस पीनेसे खुजली, क्षय और वातगुल्म आराम हो जाते हैं।

(२४) सूखी हुई बड़ी इन्द्रायण जलाकर काली राख कर लो। फिर उसे तेलमें मिलाकर लगाओ। इससे खुजली आराम हो जाती है।

(२५) कड़वी कवठके बीज "गोमूत्र"में पीसकर लगानेसे अथवा पुराने नीमकी लकड़ी पानीमें पीसकर लगानेसे अथवा कड़वे नीमके बीज पानीमें पीसकर लगानेसे अथवा कड़वे नीमके पत्ते पीसकर घी या आँवलोंके साथ खाने और कालीमिर्च घीमें पीसकर शरीरपर लगानेसे अथवा कड़वे नीमकी अतरछालका काढ़ा पीनेसे खुजली, शीतपित्त, विस्फोट और रक्तपित्त नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२६) कड़वी कवठके बीजोंके तेलकी दस बूँद नित्य भोजनके बाद खाने और शरीरपर इसी तेलकी मालिश करनेसे ३ महीनेमें महाकुष्ठ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२७) आमलासार गन्धक, रूमी शिंगरफ और सफेदा काशगरी—सबको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इसे गायके घीमें मिलाकर लगाओ। इससे दाद और खुजली आदि चमड़ेके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२८) तूतियेका कपड़ेमें छना हुआ चूर्ण १ रत्ती, माजूफल ३० रत्ती, मोम १॥ तोले और शहद १॥ तोले—इन सबको एकत्र करके मरहम बना लो। इस मरहमके लगानेसे पुराने-से-पुराना दाद आराम हो जाता है।

(२९) बायबिड़ङ्ग, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपरोंके चूर्णमें एक या दो रत्ती "अभ्रक-भस्म" मिलाकर खानेसे कोढ़, क्षय, पीलिया, संग्रहणी, शूल, श्वास, प्रमेह, खाँसी और मन्दाग्नि आदि रोग नाश हो जाते हैं।

(३०) समन्दरफल या निर्गुण्डीके रसमें "बंग भस्म" खानेसे कोढ़ जाता रहता है।

(३१) कपूर, सुहागा, गन्धक और लोबानको "गुलाबजल"में घोटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लेप करनेसे चमड़ेके दोष नाश हो जाते हैं। खानेकी दवामें "गुलक़न्द-गुलाब" खाना चाहिये और गुलाबके फूलोंका जुलाब देना चाहिये। परीक्षित है।

(३२) बड़के पत्तोंकी राख "कड़वे तेल"में मिलाकर मलनेसे खुजली आराम हो जाती है।

(३३) नारियलका तेल ५ तोले, कपूर ६ माशे और तूतिया १॥ माशे—इन सबको मिलाकर लगानेसे खुजली जाती रहती है। परीक्षित है।

(३४) राल, गन्धक, भुना हुआ सुहागा और फिटकरी पीसकर और घीमें मिलाकर लगानेसे पुराना दाद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३५) अरण्डीके बीजोंकी मींगी पीसकर लगानेसे पैरोंकी बिबाई नाश हो जाती है।

(३६) कूट, मुलेठी, चन्दन और अरण्डके पत्तोंको दूधमें पीसकर लेप करनेसे दाद आराम हो जाता है।

(३७) नीमकी छाल और कड़वे परवलके पत्तोंका काढ़ा पीने और इसी काढ़ेसे नहानेसे कोढ़ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३८) नीमकी छालका काढ़ा पीनेसे, कोढ़में कीड़े पड़ गये हों तो भी वह आराम हो जाता है।

नोट—नीमकी छालके काढ़ेकी मात्रा ५ तोलेसे ८ तोले तक है। पत्तोंके चूर्णकी मात्रा १ माशेसे ४ माशे तक है। पंचाङ्गके चूर्णकी मात्रा भी १ माशेसे ४ माशे तक है। पत्तोंके स्वरसकी मात्रा १ तोलेसे १॥ तोले तक है। नीमकी छालके चूर्णकी मात्रा १ माशेसे ३ माशे तक है।

(३९) चीढ़की लकड़ीका पाताल-यन्त्र द्वारा तेल निकालकर खुजलीके ऊपर दिनमें दो-तीन बार लगानेसे खुजली जल्दी ही नाश हो जाती है। कोई परमानन्दजी वैश्य महोदय इसे अनेकों बारका अनुभूत कहते हैं।

(४०) आमलासार गन्धक १ तोला, जस्तका सफेदा १ तोला और मक्खन ७ तोला मिला-घोटकर लगानेसे खुजली जाती रहती है। परीक्षित है।

(४१) लोबिया गन्धक, सुहागा और पँवाड़के बीज—ये तीनों महीन पीसकर चूर्ण कर लो। फिर इसमें चकबड़के ही रसकी भावना देकर बेर-समान गोलियाँ बना लो। एक गोलीको नीबूके रसमें घोटकर दादपर लगाओ और दो घण्टे धूपमें बैठकर ताप लगाओ। एक दिनका अन्तर देकर दवा लगानेसे ३ दिनमें दाद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खोपड़ीका दाद।

(४२) मरक्यूरिक क्लोराइड २ ग्रेन और टिंकचर आयोडाइन १ औंस दोनोंको मिलाकर, दिनमें दो बार, दादपर चुपड़ो। दाद मिटनेके बाद भी, जिंक ऑकसाईडका मरहम या बोरिक एसिडका मरहम (5 Per cent) लगाते रहो। टिंचर आयोडाइनसे चमड़ी लाल हो गई हो, तो लालिमा मिटने तक उक्त मरहम लगानी चाहिये।

(४३) गन्धक १ तोला, सिन्दूर १ तोला, चौकिया सुहागा १ तोला और मुर्दाशंख ३ माशे—इन सबको बारीक पीसकर, कपड़ेमें छानकर और धुले हुए घी या नौनी घीमें खूब मिलाकर मालिश करनेसे सूखी या गीली खुजली आराम हो जाती है।

(४४) फिटकरीकी भस्म ६ माशे लेकर, १ छटाँक तेलमें मिला लो। फिर उस तेलमें एक कपड़ा भिगोकर उसकी मोटी बत्ती बना लो। लोहेकी शलाकामें इस बत्तीको बाँधकर जलाओ। जलते समय इस बत्तीमेंसे जो तेल टपके उसको एक पात्रमें ग्रहण करते जाओ। जब तेलकी कुछ बूँदें इकट्ठी हो जायँ, तब उन्हें फिर इसी बत्तीपर डालते जाओ। तेलका गिरना बन्द हो जानेपर, जली हुई बत्तीको पीसकर और उसमें ४ माशे "तूतियेकी भस्म" मिलाकर तिलके तेलके साथ शरीरपर मालिश करनेसे सब प्रकारकी खुजली दूर हो जाती है। परीक्षित है।

(४५) मोम, राल, गूगल, पुराना गुड़ और सैंधानमक—ये सब समान भाग और गायका घी सब औषधियोंसे दूना भाग, सबका एकत्र मलहम बनाकर लगानेसे बिबाई या हाथ-पाँवका फटना आराम हो जाता है।

(४६) पमारके बीज २ तोला, कत्था २ तोला, सरसों २ तोला, बावची २ तोला, हल्दी १ तोला और आमलासार गन्धक १ तोला—इन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सबको एकत्र नीबूके रसमें खरल करके दादके ऊपर लगानेसे पुराना दाद भी आराम हो जाता है।

(४७) हरताल तपकी, सम्बुल फ़ार सफेद, शुद्ध पारा, पीपलके पेड़की छाल हरेक एक तोला और मदारका दूध पाँच तोला तथा काला साँप एक नग तैयार करो। साँपको छोड़कर बाक़ी दवाओंको खरल करके जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। फिर साँपका पेट चीरकर उसमें इन गोलियोंको भर दो। फिर उस साँपको शकोरेमें रखकर ऊपरसे दूसरा शकोरा ढककर, कपड़मिट्टी कर दो। इसको दो मन कण्डोंकी आगमें पकाओ, पर आग महफूज़ जगहमें हो। जब स्वांग शीतल हो जाय, दवाको निकालकर रख लो। इसकी मात्रा १ चावल भरकी है। इसको "गायके घी"में मिलाकर खानेसे फालिज, पक्षाघात, कोढ़ या जुक़ाम और आतशक—उपदंश वग़ैरः रोग आराम हो जाते हैं। खानेको गेहूँकी रोटी या चनेकी रोटी बेनमककी देनी चाहिये।

(४८) एक छिपकली लेकर नित्य बकरीके गोश्त या खिचड़ीमें पकाओ और उसे निकालकर फैंक दो। फिर वही गोश्त या खिचड़ी मरीज़को खिलाओ। इसी तरह नित्य २१ दिन तक खिचड़ी या गोश्त पका-पकाकर खिलाते रहो; पर मरीज़को इसकी ख़बर न हो। इससे सफेद दाग़ और कण्ठमाला ये दोनों रोग आराम हो जाते हैं। कोढ़ या सफेद दाग़का तो यह शर्तिया इलाज है।

(४९) नीलाथोथा, सम्बुल फार सफेद, सुहागा, ज़रे नेख़—हरताल हरेक ६ माशे, तुख्म मूली—मूलीके बीज १ तोले और बावची १ तोले—इनको काग़ज़ी नीबूके अर्क़में दो दिन तक खरल करो और गोलियाँ बना लो। इनको हर दिन नीबूके अर्क़ या तेज़ सिरकेमें घिसकर सफेद दाग़ोंपर लगाओ। इससे बहुत जल्द कोढ़ आराम हो जाता है। मुजर्रिबुल मुजरिब है यानी सुपरीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शीतपित्त, उदर्द, कोठ और उत्कोठ।

निदान और सम्प्राप्ति।

शीतल हवाके लगनेसे बढ़े हुए कफ और वायु अपने कारणोंसे दूषित हुए पित्तके साथ मिलकर चमड़े और खून आदिमें फैलते हैं, उससे "शीतपित्त" आदि रोग होते हैं।

नोट—ठण्डी हवा लगनेसे, मच्छर काटनेके समान, शरीरमें लाल-लाल चकत्ते पड़ जाते हैं, उनमें खुजली चलती है, उन्हें ही "शीतपित्त" और बोल-चालमें "पित्ती उछलना" कहते हैं।

पूर्वरूप।

प्यास, अरुचि, उबकाई, शरीरमें ग्लानि, अंगोंमें भारीपन और नेत्रोंमें लाली—ये शीतपित्त आदिके पूर्वरूप हैं।

शीतपित्तके लक्षण।

ततैयाके काटनेके समान, खुजली और बहुत पीड़ायुक्त, वमन, ज्वर और दाह सहित चमड़ेमें जो चकत्ते-से हो जाते हैं, उन्हें "शीत-पित्त" कहते हैं। इस रोगमें "वायु"की अत्यन्त अधिकता रहती है।

उदर्दके लक्षण।

बीचमेंसे नीचे, ललाई लिये, खुजली सहित जो चकत्ते शिशिर ऋतु में होते हैं, उन्हें "उदर्द"कहते हैं। उदर्दमें"कफ"की अधिकता होती है।

कोठ और उत्कोठके लक्षण।

खुलकर क़य न होने, पित्त और कफके बढ़ने और उछलकर ऊपर आये हुए अन्नके रुकनेसे खुजली और लालीयुक्त जो बहुत-से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चकत्ते होते हैं, उन्हें "कोठ" कहते हैं। एक चकत्ता नष्ट होकर दूसरा चकत्ता उठता है, उसे "उत्कोठ" कहते हैं।

चिकित्सा।

नोट—शीतपित्त होनेसे जुलाब लेना, क़य करना, गरमागर्म सरसोंका तेल मलवाना और गरम जलसे नहाना सुखदायी है। इस रोगमें दस्त साफ़ रखना परमावश्यक है।

अगर "कोठ" हो जाय, तो पहले स्नेहन और स्वेदन क्रिया करके जुलाब वग़ैरःसे शरीर साफ करना चाहिये। अगर "उत्कोठ" पैदा हो, तो विरेचन आदिसे शरीर शुद्ध करके कोढ़की तरह इलाज करना चाहिये। कोठ रोगमें—कुष्ठ रोग और अम्लपित्तमें लिखी हुई चिकित्सा लाभदायक हैं।

(१) कड़वे परवलके पत्ते, नीमकी छाल और अड़ूसेकी छाल—इनका काढ़ा पिलाकर वमन कराने और हरड़, बहेड़ा, आँवला, शुद्ध गूगल और पीपर बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीसकर, छै-छै माशेकी मात्रामें खिलाकर विरेचन करानेसे शीतपित्तमें लाभ होता है।

(२) सरसोंके तेलकी मालिश करने और गरम जलसे नहानेसे शीतपित्त नाश हो जाता है।

(३) "शहद"में मिलाकर त्रिफला खानेसे शीतपित्त नाश हो जाता है।

(४) त्रिफला ३ भाग, शुद्ध गूगल ५ भाग और पीपर १ भाग—इनको मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "नवकार्षिक गूगल" कहते हैं। इनसे शीतपित्त, भगन्दर और बवासीर रोग नाश हो जाते हैं।

(५) पुराने गुड़में मिलाकर "अदरखका रस" पीनेसे शीतपित्त जाता रहता और मन्दाग्नि आराम हो जाती है।

(६) दो तोले गायके घीमें १॥ माशे कालीमिर्चका चूर्ण मिलाकर नित्य सवेरे ही खानेसे शीतपित्त आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) दूब और हल्दी एकत्र पीसकर लेप करनेसे शीतपित्त आराम हो जाता है।

(८) सफेद सरसों, हल्दी, चकबड़के बीज और काले तिल—एकत्र मिलाकर पीस लो और फिर सरसोंके तेलमें मिलाकर लेप करो। इससे शीतपित्त आराम हो जाता है।

(९) सोंठ, मिर्च और पीपरके साथ बराबरकी "मिश्री" खानेसे अथवा एक तोले गुड़के साथ एक तोले "आँवलोंका चूर्ण" खानेसे अथवा सोंठ, मिर्च, पीपर और जवाखारके साथ "अजवायन" खानेसे शीतपित्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) गुड़के साथ अजवायन खाने और पथ्य भोजन करनेसे सारे शरीरमें फैला हुआ उदर्द आराम हो जाता है।

(११) महातिक्त नामक घी पीकर खून निकलवानेसे भी उदर्द आराम हो जाता है।

(१२) नीमके पत्ते और आँवले एकत्र पीसकर और घीमें मिलाकर नित्य खानेसे विस्फोटक, खुजली, कृमि, शीतपित्त, उदर्द, कोढ़ और कफ—ये रोग नाश हो जाते हैं।

(१३) चिरौंजी और गेरू कड़वे तेलमें पीसकर मलनेसे पित्ती शान्त हो जाती है।

(१४) अजवायन और गेरूको सिरकेमें पीसकर लगानेसे पित्ती दूर हो जाती है।

(१५) घीमें सैंधानोन मिलाकर मालिश करनेसे शीतपित्त या पित्ती आराम हो जाती है।

(१६) रास्ना, देवदारु, त्रिफला, असगन्ध, शतावर, अजवायन और हींग—इनको एकत्र मिलाकर खानेसे उदर्द रोग जाता रहता है।

(१७) कुम्भेरके फल दूधमें पकाकर सेवन करने और हितकारी भोजन करनेसे कोढ़, दाद और शीतपित्तादि नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१८) कूट, हल्दी, तुलसी, परवलके पत्ते, नीमकी छाल, असगन्ध, देवदारु, सरसों, तुम्बरू, धनियाँ और चव्य—ये सब बराबर-बराबर लेकर और बारीक पीसकर छान लो। पहले शरीरमें तेलकी मालिश करो। इसके बाद ऊपरका चूर्ण "माठेमें मिलाकर" शरीरपर मलो। इससे कण्डू, पिटिका, शोष, कोढ़ और शोथ रोग नाश हो जाते हैं।

आर्द्रक खण्ड।

अदरख ६४ तोले, गायका घी ३२ तोले, गायका दूध १२८ तोले और चीनी ६४ तोले लेकर रखो। पीपर, पीपरामूल, कालीमिर्च, सोंठ, चीता, बायबिड़ङ्ग, नागरमोथा, नागकेशर, दालचीनी, इलायची, तेजपात और कचूर—हरेक चार-चार तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

अब सबको मिलाकर मन्दाग्निसे विधि-पूर्वक पका लो। यही "आर्द्रक खण्ड" है। इसकी मात्रा १ तोलेसे ४ तोले तक है। इसके खानेसे रक्तपित्त, श्वास, खाँसी, वातरक्त, गुल्म, उदावर्त्त, सूजन, दाद, खाज, पित्ती, कृमि और मन्दाग्नि आदि नाश होकर शरीरका बल बढ़ता, भूख लगती और बदन तैयार होता है।

हरिद्राखण्ड।

हल्दी ८ तोले, घी ६ तोले, गायका दूध ४ सेर और चीनी १॥ सेर—इन सबको मिलाकर पकाओ। जब पाक हो जाय, नीचे उतारकर उसमें त्रिकुटा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, बायबिड़ङ्ग, निशोथ, त्रिफला, नागकेशर, नागरमोथा और लोहाभस्म—इनका एक-एक तोले पिसा-छना चूर्ण मिला दो। इसकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। अनुपान गरम दूध है। इससे शीतपित्त, उदर्द, कोठ और पीलिया वग़ैरः नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

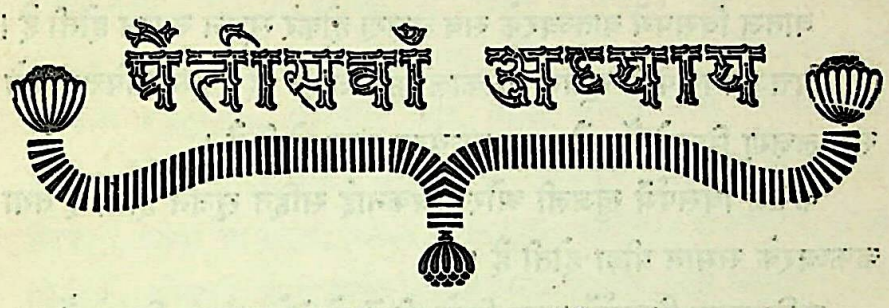

विसर्प रोग-वर्णन ।

विसर्पका निदान ।

खारी, खट्टे, तीखे और गरम आदि पदार्थोंके सेवन करनेसें दूषित हुए दोष—खून, मांस, चमड़ा, लसीका और धातुओंको दूषित करके, भयङ्कर विसर्प रोग उत्पन्न करते हैं।

खुलासा—इस रोगमें ज्वरके साथ अनेक तरहकी फुन्सियाँ होती हैं, जिनमें पीड़ा, दाह, खुजली और चेप निकलता है और वे सारे शरीरमें शीघ्र ही फैल जाती हैं।

विसर्प नामका कारण ।

यह रोग शरीरमें चारों ओर फैलता है, इसलिए इसे "विसर्प" कहते हैं।

विसर्पकी संख्या ।

विसर्प रोग सात तरहका होता है:—

(१) वातज, (२) पित्तज, (३) कफज,
(४) वात-पित्तज, (५) पित्त-कफज, (६) वातकफज,
(७) सन्निपातज।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विसर्पके लक्षण।

वातज विसर्पमें वातज्वरके सब लक्षण होकर सूजन उत्पन्न होती है।

पित्तज विसर्पकी सूजन तत्काल फैल जाती है। इसमें पित्तज्वरके सब लक्षण मिलते हैं और यह अत्यन्त लाल होती है।

कफज विसर्पमें खुजली और चिकनाई सहित सूजन होती है तथा कफज्वरके समान पीड़ा होती है।

सन्निपातज विसर्पमें ऊपर लिखे तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं।

वात-पित्तज आग्नेय विसर्प—इस विसर्पमें ज्वर, वमन, मूर्च्छा, अतिसार, प्यास, भ्रम, हड़फूटन, अग्निकी मन्दता, अँधेरा दीखना और अरुचि—ये लक्षण होते हैं तथा शरीर दहकते हुए अंगारोंके समान व्याप्त होता है। यह विसर्प शरीरके जिस-जिस भागमें फैलता है, वही-वही प्रदेश नीला या लाल अथवा बुझे हुए अंगारोंके समान हो जाता है। आगसे फूँकनेके समान फफोले हो जाते हैं। यह विसर्प शीघ्र गतिवाला है और यह तत्काल हृदय और उदरमें गति करता है; इस कारण इसे "वायुकी प्रबलतावाला" कहते हैं। यह विसर्प अङ्गको व्यथित करता, संज्ञाको नष्ट करता, निद्राकी प्रेरणा करता, श्वास और हिचकीको बढ़ाता है। इस हालतमें मनुष्यको सोते-बैठते-लेटते किसी तरह चैन नहीं पड़ता। वह दिन-रात तड़फता है। मन और शरीरको क्लेश होनेसे उसे दुर्बोध नींद आती है और उसी नींदसे वह मर जाता है। इसे "आग्नेय विसर्प" कहते हैं।

वात-कफज ग्रन्थि विसर्प—इस विसर्पमें लम्बी, गोल, मोटी, लाल और खरदरी गाँठोंकी क़तार या माला पैदा होती है। इन गाँठोंके होनेसे तीव्र वेदना, ज्वर, श्वास, खाँसी, अतिसार, शोष, हिचकी, वमन, भ्रम, मोह, विवर्णता, मूर्च्छा, अङ्ग टूटना और जठराग्निकी मन्दता होती है। यह विसर्प वात और कफके प्रकोपसे होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफ-पित्तज कर्दमक विसर्प—इस विसर्पमें मांस कीचड़के समान होकर गलने लगता है; इसीसे इसे "कर्दमक विसर्प" कहते हैं। इसके होनेसे ज्वर, जड़ता, निद्रा, तन्द्रा, सिर दर्द, हाथ-पाँव इधर-उधर पटकना, हड़-फूटन, मन्दाग्नि और आम सहित दस्त आना वग़ैरः उपद्रव होते हैं। यह पीली, लोहित या पाण्डुवर्ण पिड़िकासे व्याप्त, चिकना, काला या रूखा, मलिन, शोथयुक्त, अतिशय उष्णस्पर्श, क्लिन्न, विदीर्ण, कीचकी तरह काले रंगका और मुर्देकी तरह बदबूदार होता है। फिर क्रमशः मांस गलकर गिर जानेसे शिरा और स्नायु दिखाई देते हैं तथा साथ ही ऊपर लिखे ज्वर आदि उपद्रव होते हैं।

क्षतज विसर्प—इसमें हथियार, नाखून और दाँत वग़ैरःसे किसी जगह घाव हो जानेसे कुल्थीकी तरह काली या लाल रंगकी फुड़िया पैदा होती देखी गई है। यह भी एक तरहका पित्तज विसर्प है।

विसर्पके उपद्रव।

ज्वर, अतिसार, वमि, क्लान्ति, अरुचि, अपरिपाक और चमड़े तथा मांसका विदीर्ण होना—ये सब विसर्पके उपद्रव हैं।

साध्यासाध्य।

वातज, पित्तज और कफज विसर्प साध्य हैं; किन्तु मर्मस्थानोंमें होनेसे यह कष्टसाध्य हो जाता है। त्रिदोषज, क्षतज और वातपित्तज—आग्नेय विसर्प असाध्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विसर्प-चिकित्सा ।

नोट—सब तरहके विसर्पोंमें लंघन, फ़स्द, विरेचन, वमन, लेप और सेवन—इन उपचारोंसे चिकित्सा करनी चाहिये। कफाधिक्य होनेसे वमन और पित्तकी अधिकता होनेसे विरेचन देना चाहिये। परवलके पत्ते, नीम और इन्द्रजौ—इनके काढ़ेसे अथवा पीपल, मैनफल और इन्द्रजौके काढ़ेसे वमन करानी चाहिये। जुलाबके लिए त्रिफलाके काढ़ेमें २ माशे घी और ४ माशे निशोथका चूर्ण मिलाकर देना चाहिये। इससे ज्वर भी शान्त हो जाता है।

(१) वातज विसर्पमें रास्ना, नील कमल, देवदारु, लाल चन्दन, बच और मुलेठी—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और "घी' में पीसकर लेप करना चाहिये।

नोट—कोई मुलेठीकी जगह "बरियारा" लिखते हैं और घी-दूधमें पीसकर लेप करनेको कहते हैं।

(२) वातज विसर्पमें—गोबर, गोमूत्र और दूधको गरम करके लेप करनेसे लाभ हो जाता है।

(३) पित्तज विसर्पमें—मँजीठ, पद्माख, खसकी जड़, बड़, लाल, चन्दन, मुलेठी और नील कमल—इनको दूधमें पीसकर लेप करना चाहिये।

(४) पित्तज विसर्पमें—सिरस, जटामासी, नेत्रवाला, कूट, मुलेठी, हल्दी, दारुहल्दी, इलायची, तगर और चन्दन,—इन दस दवाओंको घीमें महीन पीसकर लेप करना चाहिये। इस लेपसे विसर्प, सूजन, दाह, ज्वर और कोढ़ ये रोग नाश होते हैं।

(५) कफज विसर्पमें—समंगा, त्रिफला, नेत्रवाला, खस, कनेरकी जड़ और अनन्तमूलका लेप करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) कफज विसर्पमें—हरड़, बहेड़ा, आँवला, पद्माख, खस, लजवन्ती, कनेरकी जड़, नरसलकी जड़ और लाल जवासा—इन सबका लेप लाभदायक है।

(७) पित्तज विसर्पमें—कसेरु, सिंघाड़े, पद्माख, गुन्द्रवटेर, सिवार, कमल और कीच—इनको पीसकर, घीमें मिलाकर, कपड़ेमें रखकर शीतल लेप करनेसे पित्तकी विसर्प नष्ट हो जाती है।

(८) आग्नेय नामक विसर्प—इस विसर्पमें वात और पित्तको शान्त करना चाहिये।

(९) ग्रन्थि नामक विसर्प—इस विसर्पमें वात और कफको शान्त करना उचित है।

(१०) कर्दमक नामक विसर्प—इस विसर्पमें पित्त और कफको शान्त करना चाहिये।

(११) सान्निपातिक विसर्प—इस विसर्पमें तीनों दोषोंको शान्त करना चाहिये।

(१२) सिरसकी छाल, मुलेठी, तगर, लाल चन्दन, इलायची, बालछड़, हल्दी, दारुहल्दी, कूट और सुगन्धवाला—इन दसोंको पीसकर और "घी"में मिलाकर लेप करनेसे विसर्प, कोढ़, ज्वर और सूजन—ये सब रोग नाश हो जाते हैं। इसे "दशाङ्ग लेप" कहते हैं।

(१३) पञ्चबल्कलोंका अथवा चन्दनका अथवा पद्माख, खस और मुलेठी—इनका जल सींचनेसे और इन्हींका गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे विसर्प नाश हो जाती है।

(१४) गायका मक्खन १०८ बार धोकर उसमें शुद्ध आमलासार गन्धक १ तोले, फिटकरी १ तोले और रसकपूर ६ माशे मिलाकर लगानेसे विसर्प आराम हो जाता है। विसर्पपर यह मरहम उत्तम और परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अमृतादि क्वाथ।

गिलोय, अड़ूसेके पत्ते, परवल, नीमकी छाल, त्रिफला, खैरसार और अमलताशका गूदा—इनको बराबर-बराबर लेकर काढ़ा करो। फिर काढ़ेमें काढ़ेसे चौथाई ६ माशे "शुद्ध गूगल" मिलाकर पीओ। इससे विष, विसर्प और अठारह प्रकारके कोढ़ नाश हो जाते हैं; बशर्तेकि धीरजके साथ, आराम न हो जाने तक, लगातार यह काढ़ा पिया जाय। इसे "नवकषाय गुग्गुल" भी कहते हैं।

भूनिम्बादि कषाय।

चिरायता, अड़ूसा, कुटकी, परवल, त्रिफला, नीम और चन्दन—इन सातोंको समान-समान लेकर काढ़ा करो। इस काढ़ेसे विसर्प, दाह, ज्वर, सूजन, खुजली, विस्फोटक, प्यास और वमन—ये सब नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

करञ्ज तैल।

डहर करंज, सतौना, कलिहारी, थूहरका दूध, आकका दूध, चीता, भाँगरा, हल्दी और वत्सनाभ विष—इनको समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ महीन पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र और लुगदीको आगपर चढ़ाकर तेल पका लो। इस तैलकी मालिशसे विसर्प, विस्फोट और विचर्चिका रोग नष्ट हो जाते हैं।

अमृतादि कषाय।

गिलोय, अड़ूसेकी जड़की छाल, परवलके पत्ते, नागरमोथा, छितवनकी छाल (सतौना), खदिरकाष्ठ, काले बैंतकी जड़, नीमका पत्ता, हल्दी और दारुहल्दी—इन दसों दवाओंका काढ़ा पीनेसे विसर्प, विषदोष, कोढ़, विस्फोट, कण्डू और मसूरिका रोग आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पञ्चतिक्तक घृत।

परवलके पत्ते, छितवनकी छाल—सतौना, नीमकी छाल, अड़ूसेकी छाल और गिलोय—इन पाँचोंको मिलाकर एक सेर लो और सोलह सेर पानीमें पकाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, छान लो।

फिर त्रिफलेको सिलपर पीसकर पाव भर कल्क या लुगदी तैयार कर लो। एक सेर घी, इस लुगदी और काढ़ेको मिलाकर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इसमेंसे छै-छै माशे घी सेवन करनेसे विसर्प, विस्फोट और कण्डू प्रभृति रोग जाते रहते हैं।

विसर्पान्तक तैल।

अरण्डकी जड़, कड़वी तूम्बी, नीम, बावची, चक्रमर्द, कड़वी तोरईके बीज, अंकोल और अरण्डके बीज—इन सबको महीन पीसकर, गोमूत्र, दही, दूध, तिलका तेल और बकरीका मूत्र—इनकी अलग-अलग भावना दो। फिर पाताल-यन्त्रसे तेल निकाल लो। यह तैल विसर्प और सफेद कोढ़को आराम करनेमें रामवाण है।

असली बङ्गेश्वर।

असली बङ्गसे मनुष्यका बल बढ़ता है, खाना पचता है, भूख खुलती है, भोजनपर रुचि होती है और चेहरेपर कान्ति और तेज छा जाता है। यह भस्म तासीरमें शीतल है। मनुष्यके शरीरको आरोग्य रखती है, धातुको गाढ़ा करती, जल्दी बूढ़ा नहीं होने देती और क्षय रोगको नाश करती है। अनुपान और विधि सहित हमारा बङ्गेश्वर सेवन करनेसे २० प्रकारके प्रमेह नाश होते हैं और इसके सेवन करनेवालोंका वीर्य्य स्वप्नमें भी नहीं गिर सकता। ज़ियादा क्या लिखें, स्त्री वश करनेवाली और कामनियोंका घमण्ड नाश करनेवाली इसके समान दूसरी चीज़ नहीं है। इसे बेखटके सेवन कीजिये। यह हमने स्वयं सेवन किया है और अनेक धनी-मानी लोगोंको खिलाया है; इसीलिये इतने ज़ोरसे लिखा है। बङ्गेश्वरका दाम ८) रुपया तोला। बङ्गका मूल्य २) है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्नीसवाँ अध्याय

स्नायु रोग-वर्णन ।

(नहरुआ या बाला)

निदान—कारण ।

हाथ-पाँव आदि शाखाओंमें कोपको प्राप्त हुआ दोष विसर्पके समान सूजन उत्पन्न करता है। फिर वह सूजन फूटकर घाव हो जाता है। उस घावमें कुपित हुए दोष मांसको सुखाकर, सूतके तारके समान "स्नायु" पैदा करते हैं, तब वह सूतके तारके समान पदार्थ धीरे-धीरे बाहर निकलता है। इसीको "स्नायुक" या "नहरुआ" कहते हैं।

ख़राब जल पीने और ख़राब अन्न खानेसे वायु बिगड़कर, पैरोंमें फफोला फोड़कर, उसके भीतर डोरा या तागा पैदा कर देता है। अगर दवासे वह धागा बाहर निकल आता है तब तो आराम हो जाता है; अगर टूट जाता है, तो मनुष्यको उस जगहसे लँगड़ा कर देता है। यह रोग मारवाड़ और मध्यप्रदेशके कई ज़िलोंमें बहुत होता है।

भावप्रकाशादिमें लिखा है कि, यह नहरुआ बिना पके ही यदि आधा टूट जाता है, तो बड़ा दुःख देता है। इसलिये इसे पकाकर बाहर निकालना चाहिये। इसके बाहर निकलकर गिर पड़नेसे सूजन शान्त हो जाती है। अगर यह थोड़ा भी बाक़ी रह जाता है, तो दूसरे स्थानपर फूट निकलता

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस रोगको "बाला" भी कहते हैं। इसकी चिकित्सा विसर्पके समान करनी चाहिये। देश, काल, दोष और बलके अनुसार स्नेह, स्वेद और लेप आदि करना उचित है।

हिकमतकी पुस्तकोंमें लिखा है कि, नारू होनेपर शरीरको मलसे साफ रखना चाहिये, नारूके गिर्द जौंकें लगवानी चाहिये और तेल औटाकर उसपर तरड़े देने चाहिये, ताकि वह सहजमें निकल आवे। उसका टूटना ख़राब है।

नहरुआ नाशक नुसखे।

(१) हींगको पीसकर शीतल जलके साथ पीनेसे स्नायु रोग शान्त हो जाता है।

(२) मैंडकको काँजीमें पकाकर उसका स्वेद या बफारा देनेसे नहरुएकी पीड़ा शान्त हो जाती है। मैंडकको काँजीमें पकाकर बाँधते भी हैं। परीक्षित है।

(३) बबूलके बीज पीसकर लेप करनेसे नहरुआ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) गायका घी पीनेसे नहरुआ आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) निर्गुण्डीका रस तीन दिन तक पीनेसे नहरुआ आराम हो जाता है।

नोट—पहले तीन दिन घी पीकर फिर तीन दिन तक निर्गुण्डीका रस पीनेसे स्नायुकी घोर पीड़ा भी शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(६) कलौंजीकी जड़को शीतल जलमें पीसकर पीनेसे नहरुआ अवश्य नष्ट हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) असगन्धकी लुगदी या काढ़े अथवा दोनोंके साथ घी पकाकर पीनेसे व्रण सहित उग्र नहरुआ आराम हो जाता है।

(८) अतीस, नागरमोथा, भारंगी, सोंठ, पीपर और बहेड़ा-इनका चूर्ण गुनगुने पानीके साथ पीनेसे नहरुआ शीघ्र ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(९) धतूरेका पत्ता बाँधनेसे नहरुआ शीघ्र ही बाहर निकल आता है।

(१०) मरे हुए घोड़ेकी दाढ़ पानीमें घिसकर लेप करनेसे नहरुएकी पीड़ा फौरन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(११) धतूरेके पत्तेपर घी चुपड़कर और गरम करके बाँधनेसे नहरुआ अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) खिरेंटीके पत्ते सिलपर पीसकर उनकी लुगदी बाँधनेसे नहरुआ नष्ट हो जाता है।

(१३) सहँजनेकी जड़ और पत्ते—सैंधेनोनके साथ काँजीमें पीसकर लगानेसे नहरुआ अवश्य नष्ट हो जाता है।

(१४) हींसकी जड़ जलमें पीसकर लेप करनेसे नहरुआ निकल जाता है, इसमें संशय नहीं।

(१५) अरण्डकी जड़का रस गायके घीमें मिलाकर पीनेसे नहरुआ नष्ट हो जाता है।

(१६) बालछड़की जड़ पानीके साथ पत्थरपर घिसकर लेप करनेसे नहरुएका डोरा बाहर निकल आता है।

(१७) कबूतरकी पर दो चावल भर गुड़में मिलाकर खानेसे नहरुआ बाहर निकल आता है।

(१८) बकायनके ७ दाने रोज निगल जानेसे नहरुआ बाहर निकल आता है।

(१९) चौलाईकी जड़ पीसकर बाँधनेसे नहरुआ जल्दी आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२०) पहले दिन १ माशे, दूसरे दिन २ माशे, तीसरे दिन ३ माशे—इस तरह बढ़ा-बढ़ाकर सात दिन तक एलुआ खाने और एलुएका ही लेप करनेसे नहरुआ नष्ट हो जाता है।

नारू नाशक हकीमी नुसखे।

(२१) नारू और सूजनपर गुनगुना तेल मलकर, मदारके पत्तोंसे सेको और फिर गुनगुने पत्ते बाँध दो; अवश्य नारू आराम हो जायगा।

(२२) सफेद विसखपरेकी जड़को विसखपरेके पत्तोंके रसमें पीसकर नारूपर बाँधो; नारू नष्ट हो जायगा।

नोट—कोई-कोई इसमें ज़रा-सी सोंठ भी मिलाते हैं।

(२३) जमालगोटा पानीमें पीसकर लेप करनेसे नारू आराम हो जाता है।

(२४) कलौंजी दहीमें पकाकर लेप करनेसे नारू नष्ट हो जाता है।

(२५) सूखा कैंचुआ खानेसे नारू शीघ्र ही सूख जाता है।

(२६) दस माशे सुहागा गुल रौग़नमें पीसकर खाने और चिकना भोजन करनेसे नारू नाश हो जाता है।

(२७) प्याज़की एक गाँठ, लहसनकी एक गाँठ, थोड़ा साबुन, एक भिलावा और १० माशे राई—इनको कूट-छानकर टिकिया बना लो और २४ घण्टे इसे नारूपर बाँधो। इस तरह करनेसे ३ दिनमें तागा निकल आवेगा।

(२८) राल २० माशे, साबुन ४ माशे और अफीम १० माशे—इनको कूट-पीसकर ७ तोले तिलीके तेलमें पकाकर, मरहमकी तरह पानपर लगाकर, बाँधने और सवेरे-शाम मरहम बदल देनेसे तीन दिनमें नारू नष्ट हो जाता है।

(२९) एलुआ खाने और लगानेसे नहरुआ नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३०) हरताल और नागरमोथा घिसकर लगानेसे नहरुआ दूर होता है।

(३१) कबूतरकी बीट और गुड़ दोनोंको मिलाकर लगानेसे नहरुआ नाश हो जाता है।

(३२) कड़वे नीमके पत्ते पीसकर लेप करनेसे नहरुआ नाश हो जाता है।

(३३) कचनारकी छालका कल्क या लुगदी लगानेसे कफज नहरुआ नाश हो जाता है।

कासगजकेसरी बटी।

ये गोलियाँ तर व खुश्क यानी सूखी और गीली दोनों प्रकारकी खाँसियोंमें रामवाणका काम करती हैं। एक दिन-रात सेवन करनेसे ही भयंकर खाँसीमें लाभ नज़र आने लगता है। इनके चूँसनेसे मुँहके छाले भी आराम हो जाते हैं। १०० गोलीकी शीशीका दाम ॥=)

शीतज्वरान्तक गोलियाँ।

ये गोलियाँ बहुत तेज़ हैं। इनके २।३ पारी सेवन करनेसे सब तरहके शीतपूर्व्वक ज्वर यानी पहले ठण्ड लगकर आनेवाले बुख़ार निस्सन्देह उड़ जाते हैं। रोज़-रोज़ आनेवाले, दिनमें दो बार चढ़ने-उतरनेवाले, इकतरा, तिजारी, चौथैया आदि कष्टसाध्य ज्वरोंको अक्सर हमने इन्हीं "शीतज्वरान्तक गोलियों"से एक ही दो पारीमें उड़ा दिया है। सिये तापों या जूड़ी ज्वरोंपर यह गोलियाँ कुनैनसे हज़ार दरजे अच्छी हैं। दाम ४० गोलीकी शीशीका १)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सैंतीसवाँ अध्याय

विस्फोटक-वर्णन।

(ज्वरमें फोड़े)

—:※※:—

विस्फोटकके निदान-कारण।

चरपरे, खट्टे, गरम, दाहकारक, रूखे और खारी पदार्थोंसे, अजीर्णसे, धूप सेवन करनेसे, ऋतुओंके फेर-फारसे और उन ऋतुओंमें आहार-विहारकी विपरीततासे चमड़ेमें कुपित हुए वातादि दोष—रुधिर, मांस और हड्डियोंको दूषित करके—ज्वर सहित भयङ्कर फोड़े उत्पन्न करते हैं।

नोट—पहले ज्वर आता है, फिर भयङ्कर फोड़े होते हैं। आगसे जले हुएके समान सब शरीरमें अथवा शरीरके किसी भागमें अनेक प्रकारके फफोले पड़ जाते हैं; यानी वे फोड़े कभी शरीरके एक स्थानमें होते हैं और कभी सारे शरीरमें फैल जाते हैं। उनमें जलन बहुत होती है। कभी वे जल्दी पकते हैं और कभी देरमें।

विस्फोटकके सामान्य लक्षण।

ज्वर समेत, रुधिर और पित्तसे पैदा हुआ, आगसे जलाये हुएके समान जो फोड़ा शरीरके किसी एक भागमें अथवा सारे शरीरमें होता है, उसे "विस्फोटक" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जिस तरह सब तरहकी पीड़ाओंमें "वायु"की प्रधानता होती है; उसी तरह सब तरहके विस्फोटकोंमें "रुधिर और पित्त"की प्रधानता होती है; पर रुधिर और पित्तसे वायुका सम्बन्ध भी होता है।

दोषभेदसे विस्फोटकोंके लक्षण।

वातज विस्फोट—मस्तकमें दर्द और फोड़ेमें सूई चुभानेकी-सी भयङ्कर पीड़ा, ज्वर, प्यास, सन्धि टूटना और कालापन ये वातज विस्फोटके लक्षण हैं।

पित्तज विस्फोट—ज्वर, दाह, वेदना, पकना, स्राव—राध निकलना, प्यास तथा पिलाई और ललाई ये पित्तज विस्फोटके लक्षण हैं।

कफज विस्फोट—वमन, अरुचि, जड़ता, खुजली, कठिनता, पाण्डुवर्णता, पीड़ा न होना और बहुत देरमें पकना ये कफज विस्फोटके लक्षण हैं।

कफ-पित्तज विस्फोट—खुजली, ज्वर, दाह और वमन, ये कफ-पित्तके विस्फोटमें होते हैं।

वात-पित्तज विस्फोट—इसमें तीव्र वेदना होती है।

वात-कफज विस्फोट—इसमें खुजली, जड़ता और भारीपन ये होते हैं।

त्रिदोषज विस्फोट—बीचमें नीचा, चारों ओर ऊँचा, कठिन, थोड़ा पकनेवाला, दाह, लाली, प्यास, मोह, वमन, मूर्च्छा, वेदना, ज्वर, बकवाद, कम्प और अत्यन्त बेहोशी सहित होता है यानी ये त्रिदोषज विस्फोटके लक्षण हैं।

रुधिरजन्य विस्फोट—खूनके कुपित होनेसे पैदा हुए फोड़े चिरमिटीके समान लाल, लाल मवाद देनेवाले और जलन करनेवाले होते हैं। ये विस्फोट सैकड़ों सिद्ध योगोंसे भी आराम नहीं होते।

भीतरी विस्फोट—जिस तरह बाहर आठ तरहके विस्फोट होते हैं, उसी तरह एक भीतर भी होता है। यह नवाँ है। इसके होनेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भीतर तेज दर्द और ज्वर भी होता है। इसका बाहर निकल आना अच्छा। वैद्यको समझ-बूझकर इसमें वात-सम्बन्धी विस्फोटके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

विस्फोटके उपद्रव।

प्यास, श्वास, मांसका सड़ना, दाह, हिचकी, मद, ज्वर, विसर्प और मर्मोंमें व्यथा—ये विस्फोटके उपद्रव हैं।

विस्फोटकोंके साध्यासाध्य लक्षण।

एक दोषज विस्फोट साध्य है, दो दोषज कष्टसाध्य है और सब दोषोंके लक्षणोंवाला अनेक उपद्रव सहित विस्फोट भयंकर और असाध्य है।

विस्फोट नाशक नुसखे।

नोट—इस रोगमें विसर्पके समान क्रिया करनी चाहिये। इसमें लङ्घन, वमन, विरेचन और पथ्य भोजन हितकारी हैं। मूँग, अरहर या मसूरका रस, जौ, शालि चावल, सोंठ, करेला और पित्तपापड़ा वगैरः पथ्य हैं।

(१) वृहत्पञ्चमूल, लघु पञ्चमूल, रास्ना, दारुहल्दी, खस, धमासा, गिलोय, धनियाँ और नागरमोथा—इनका काढ़ा पीनेसे वातज विसर्प नाश हो जाता है।

(२) दाख, कुम्भेर, खजूर, परवल, नीम, अड़ूसा, कुटकी, धानकी खील और धमासा—इनका काढ़ा "मिश्री" मिलाकर पीनेसे पित्तज विस्फोट नाश हो जाता है।

(३) चिरायता, बच, अड़ूसा, हरड़, बहेड़ा, आँवला, इन्द्रजौ, कुड़ा, नीम और कड़वे परवल—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे कफज विस्फोट आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) चिरायता, नीम, मुलेठी, नागरमोथा, अड़ूसा, कड़वे परवल, पित्तपापड़ा, खस, हरड़, बहेड़ा, आँवला, और इन्द्रजौ—इन १२ दवाओंका काढ़ा बनाकर पीनेसे सब तरहके विस्फोट आराम हो जाते हैं। इसे "द्वादशांग काथ" कहते हैं।

(५) इन्द्रजौको चावलोंके पानीमें पीसकर लेप करनेसे विस्फोट आराम हो जाते हैं।

(६) गिलोय, कड़वे परवल, चिरायता, अड़ूसा, नीम, पित्तपापड़ा, खैर और नागरमोथा—इनका काढ़ा विस्फोट ज्वरको नाश करता है।

(७) लाल चन्दन, नागकेशर, सारिवा, चौलाई, सिरसकी छाल और चमेली—इनका लेप विस्फोटकके दाहको नाश करता है।

(८) कमल, लाल चन्दन, लोध, खस और दोनों तरहके सारिवा, इनको पानीमें पीस-छानकर लेप करनेसे विस्फोटकी जलन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(९) पतिजियाकी मींगी पानीमें पीसकर लेप करनेसे काले फोड़े, विषैले फोड़े और उनकी वेदना तत्काल शान्त हो जाती है।

(१०) जियापोताका लेप करनेसे कोखकी गाँठ, गलेकी गाँठ, कानकी गाँठ और लाल फोड़े तत्काल शान्त हो जाते हैं।

(११) परवल, नीम गिलोय, त्रिफला, मूर्वा, हल्दी, कुटकी, जवासा, चन्दन, अड़ूसा, नागरमोथा और नीम—इनके काढ़ेसे चमड़ेके दोष, विस्फोटक, विसर्प, कण्डू, दाह, ज्वर और वमन ये रोग नाश हो जाते हैं।

विस्फोटकान्तक तैल।

कमल, मुलेठी, लोध, नागकेशर, वायबिड़ङ्ग, हल्दी, दारुहल्दी, तगर, कूट, इलायची, तेजपात, नीलाथोथा और राल—इनको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी मिलाकर घी पका लो। इस घीके लगानेसे विस्फोटक और विसर्प रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

विस्फोटकारि तैल।

कबीला, बेलगिरी, नीम, मोथा, प्रियंगू फूल, लोध, त्रिफला, खिरेंटी, कुड़ेकी छाल, राल, अगर, खैरसार, धायके फूल और चन्दन—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे विस्फोटक, गलगण्ड, कोढ़, विसर्प, नासूर और साँप, चूहे तथा अन्य ज़हरीले कीड़ोंके ज़हर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अकबरी चूर्ण।

यह अमृत-समान चूर्ण दिल्लीके बादशाह अकबरके लिये उस ज़मानेके हकीमोंने बनाया था। क़लममें ताक़त नहीं जो इस चूर्णके पूरे गुण लिख सके। यह चूर्ण खानेमें दिल-खुश और सुस्वाद है, अग्निको जगाता और भोजनको पचाता है। कैसा ही अधिक खाना खा लीजिये, फिर पेट ख़ाली-का-ख़ाली हो जायगा। अजीर्ण (बदहज़मी) को पेटमें जाते ही भस्म कर देता है। खट्टी डकारें आना, जी मिचलाना, उल्टी होना, पेट भारी रहना, पेटकी हवा न खुलना, पेट या पेड़ूका कड़ा रहना, पेटमें गोला-सा बना रहना, पाखाना साफ न होना आदि पेटके सारे रोगोंके नाश करनेमें रामबाण या विष्णु भगवान्का सुदर्शन चक्र है। दाम छोटी शीशीका ।।), बड़ीका १) है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अष्टाङ्गसंग्रह अष्टाङ्ग

शिरोरोग-वर्णन ।

(सिरके दर्दोंका बयान)

शिरोरोगके सामान्य लक्षण ।

मस्तकमें जो शूलके समान वेदना होती है, उसे "शिरोरोग" कहते हैं। बोलचालकी भाषामें शिरोरोगका अर्थ "सिरका दर्द" है।

शिरोरोगकी क़िस्में ।

शिरोरोग ग्यारह तरहका होता है:—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) सन्निपातज,
(५) रक्तज, (६) क्षयज,
(७) कृमिज, (८) सूर्यावर्त्त,
(९) अनन्तवात, (१०) शंखक,
(११) अर्द्धावभेदक।

वातज शिरोरोगके लक्षण ।

अगर बिना वजहके, अकस्मात्, सिरमें घोर दर्द हो और रातके समय वह दर्द बहुत ही बढ़ जाय तथा सिरको बाँधने, तेल आदि लगाने और सेकनेसे वह दर्द कम हो जाय—तो उसे "वातज शिरोरोग" समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पित्तज शिरोरोगके लक्षण।

अगर अंगारोंसे तपाये हुएकी तरह सिर गरम हो, नेत्रों और नाकके नथनोंसे गरम धूआँ-सा निकले या जलन हो और रातके समय सर्दीकी वजहसे दर्द शान्त हो जाय, तो उसे "पित्तज शिरोरोग" समझो।

नोट—पित्तज सिरदर्द रातके समय सर्दी पड़नेसे या शीतल क्रियाएँ करनेसे अवश्य शान्त होता है, यही इसकी मुख्य पहचान है। इस दर्दमें सिर लपलप करता है, मुँह और नाकसे आगकी-सी लपटें निकलती हैं और सिर आगकी तरह तपता है।

कफज शिरोरोगके लक्षण।

अगर सिर कफसे भरा-सा जान पड़े, भारी हो, जकड़ा-सा हो, छूनेसे शीतल मालूम हो, आँखोंके कोयों और मुखपर सूजन हो, तो "कफज शिरोरोग" समझो।

नोट—दोनों आँखोंका सूजी-सी हो जाना और छूनेसे सिर ठण्डा मालूम होना—ये इस दर्दकी मुख्य पहचान हैं। इस दर्दमें मन भी उदास रहता है।

सन्निपातज शिरोरोगके लक्षण।

अगर शिरोरोगमें वातज, पित्तज और कफज तीनों तरहके शिरोरोगोंके लक्षण दिखाई दें, तो उसे सन्निपातज या त्रिदोषज शिरोरोग समझो।

रक्तज शिरोरोगके लक्षण।

अगर पित्तज शिरोरोगके सब लक्षण हों तथा मस्तक किसी चीज़का स्पर्श न सह सके, यानी छूनेसे बहुत ही दुखता हो, तो उसे "रक्तज शिरोरोग" समझो।

नोट—मस्तक किसी चीज़का स्पर्श सहन नहीं कर सकता यानी छूनेसे सिरमें बहुत ही ज़ियादा दर्द होता है, यही रक्तज शिरोरोगमें विशेषता है। इसके सिवाय, पित्तज और रक्तज शिरोरोगमें कोई भेद नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षयज शिरोरोगके लक्षण।

सिरमें रहनेवाली चरबी, कफ और रक्तके अत्यन्त क्षय हो जानेसे क्षयज शिरोरोग होता है। सिरमें बहुत ज़ोरका दर्द हो, वह दर्द सेकनेसे, वमन करनेसे, धूआँ पीनेसे, नस्य लेनेसे और खून निकलवानेसे उल्टा बढ़े तो समझना चाहिये कि यह दर्द सिरकी चरबी, कफ और खूनके अत्यन्त कम हो जानेसे हुआ है। यह शिरोरोग कष्टसाध्य होता है।

इस शिरोरोगके होनेसे शरीर घूमता है, सिरमें सूई चुभानेके जैसा दर्द होता है, नेत्रोंकी पुतलियाँ बारम्बार फिरती हैं, मूर्च्छा और अङ्गमें ग्लानि होती है।

कृमिज शिरोरोगके लक्षण।

कृमिज शिरोरोग सिरमें कीड़े पैदा होनेसे होता है। इस सिरके रोगमें सिरमें सूई चुभानेकी-सी अत्यन्त वेदना होती है। कीड़ोंके मस्तकको भीतरसे खाकर खाली कर देनेकी वजहसे मस्तक भीतरसे फड़कता-सा जान पड़ता है, नाकमेंसे राध मिला हुआ खून और कीड़े गिरते हैं। यह भयङ्कर शिरोरोग कीड़ोंसे होता है।

खुलासा—इस रोगमें ज़ोरसे सिर-दर्द होता है, नाकसे पानी गिरता है और कभी-कभी खून-मिला या केवल पतला कफ गिरता है।

सूर्यावर्त्त शिरोरोगके लक्षण।

सूरज उदय होनेके साथ जिसकी आँखों और भौंओं तथा सिरमें मन्दी-मन्दी पीड़ा होने लगे; ज्यों-ज्यों सूरज आकाशमें चढ़ता जाय, त्यों-त्यों पीड़ा भी बढ़ती जाय; दोपहरके समय पीड़ा खूब बढ़ जाय; फिर दोपहर बाद ज्यों-ज्यों सूरज पच्छिमकी तरफ उतरता जाय, पीड़ा भी वैसे-ही-वैसे कम होती जाय; शामको जब सूरज छिप जाय, पीड़ा भी शान्त हो जाय; मतलब यह है कि, सूरजके निकलनेके समय पीड़ा आरम्भ हो, दोपहरको खूब बढ़ जाय और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सन्ध्या-समय शान्त हो जाय, उसे "सूर्यावर्त्त" शिरोरोग कहते हैं। किसी समय इस रोगकी पीड़ा सर्दीसे और किसी समय गरमीसे शान्त होती है। यह रोग तीनों दोषोंके कोपसे होता और बड़ी कठिनाईसे आराम होता है।

खुलासा—जो सिर-दर्द सूर्य्योदयके समय बढ़ने लगे, दोपहरको खूब बढ़ जाय और सूर्यके पच्छिमकी तरफ ढलनेके समयसे घटते-घटते सूर्यके अस्त होनेके साथ शान्त हो जाय, उसे "सूर्यावर्त्त शिरोरोग" कहते हैं।

अनन्तवात शिरोरोगके लक्षण।

दूषित हुए वात-पित्तादि तीनों दोष, गर्दनकी मन्या नाड़ीको अत्यन्त जकड़कर, अपने-अपने स्वभावके अनुसार, पीड़ा, जलन और भारीपन आदि तीव्र वेदना उत्पन्न करते हैं। यह वेदना तत्काल ही आँखोंमें, भौंओंमें और कनपटियोंमें—विशेषकर गण्डस्थलोंमें—स्थित हो जाती है। वहाँ स्थित होकर यह कम्प, हनुग्रह और नेत्र-पीड़ा करती है। इसको "अनन्तवात शिरोरोग" कहते हैं।

खुलासा—इस रोगमें नेत्र, गर्दन और सिरकी रगोंमें दर्द होता है। वातादि दोष गर्दनकी "मन्या नाड़ी"को पकड़कर रोग करते हैं, इसलिये पहले गर्दनके पीछे दर्द होता है; यानी वहाँसे दर्द शुरू होता है। फिर वह तत्काल ही ललाट, भौं और कनपटियोंमें आकर ठहर जाता है और कम्प, हनुग्रह एवं नाना प्रकारके आँखोंके रोग करता है। ऐसे सिरके दर्दको "अनन्तवात शिरोरोग" कहते हैं।

शंखक शिरोरोगके लक्षण।

पित्त, खून और वायु दूषित होकर, कनपटियोंमें अत्यन्त पीड़ा और भयङ्कर दाहयुक्त लाल सूजन पैदा करते हैं। यह सूजन विषके वेगकी तरह बहुत जल्दी बढ़कर मस्तक और गलेको जकड़ लेती है। यह शंखक रोग तीन ही दिनमें मनुष्यको मार डालता है। कभी-कभी उत्तम वैद्यकी चिकित्सासे तीन ही दिनमें रोगी बच भी जाता है। वैद्यको खूब समझ-बूझ और कह-सुनकर इलाज करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—यद्यपि यहाँ कनपटीमें सूजनको पैदा करनेवाले पित्त, रुधिर और वायु—ये तीन ही कहे हैं, लेकिन सुश्रुतने इनके साथ "कफ"को भी लिया है; अतः पित्त, खून, वायु और कफ चारोंको ही सूजन पैदा करनेवाला समझना चाहिये। कनपटीको संस्कृतमें "शंखदेश" कहते हैं और यह रोग शंखदेश यानी कनपटीमें ही होता है; इसलिये इसे "शंखक" कहते हैं। कनपटीमें तीव्र वेदना, तीव्र दाह और भयंकर लाल सूजन होना ही इस रोगकी साफ पहचान है। तीव्र पीड़ावाले रोगीका इलाज वैद्यको न करना चाहिये। अगर करना हो तो तीन दिन निकल जानेपर करना चाहिये।

अर्द्धावभेदकके लक्षण।

(आधासीसी-अधकपारी)

रूखा भोजन आदि करनेसे, भोजनपर भोजन करनेसे, बर्फ़ वग़ैरः शीतल चीज़ोंका सेवन करनेसे, पूर्वकी हवा सेवन करनेसे, मैथुन करनेसे, मल-मूत्रादिके वेग रोकनेसे, बहुत चलनेसे, बहुत बोझा ढोनेसे और दण्ड-कसरत करनेसे बलवान् "वायु" कुपित हो जाती है। फिर वह अकेली ही अपने-आप अथवा कफकी मदद लेकर, मस्तकके आधे हिस्सेको पकड़कर, गर्दन, भौं, कनपटी, कान, आँख और आधे कपालमें शस्त्राघात या वज्रपातके समान तीव्र वेदना करती है, इसीको "अर्द्धावभेदक" कहते हैं। इसीको बोलचालकी भाषामें "आधासीसी" या "अधकपारी" कहते हैं। जब यह रोग बहुत बढ़ जाता है, तब आँख या कानको नष्ट कर देता है। यह रोग बहुधा ज़ियादा उम्रवालोंको होता है, बालकोंको देखनेमें नहीं आता।

खुलासा—अपने कारणोंसे कुपित हुई "वायु" अथवा "कफ-मिली वायु" मस्तकके आधे भागमें जाकर, एक तरफकी मन्या, भौं, कनपटी, कान, आँख और ललाटके आधे भागमें अथवा सारे सिरके आधे भागमें भयानक पीड़ा करती है। इसीको "आधासीसीका दर्द" कहते हैं।

हमारा "शिर-शूलान्तक चूर्ण" हर तरहके दर्द सिरपर रामबाण है। इससे ठीक १५ मिनटमें दर्द सिर काफूर हो जाता है। "षड्बिन्दु तैल" सब तरहके सिर-दर्दोंपर प्रसिद्ध है और हमारे यहाँ मिलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और सिरके दर्दोंके लक्षण।

ज्वरादि-जनित शिरोरोगके लक्षण।

ज्वर और कितने ही दूसरे रोगोंमें सिरमें दर्द अवश्य होता है। द्वन्द्वज ज्वरोंमें प्रायः सिरमें बड़े ज़ोरका दर्द होता है। मलेरिया या विषम ज्वरमें तो सिरमें दर्द होना मामूली बात है। कभी-कभी मलेरियाका विष शरीरमें ठहर जानेसे सिरका दर्द भी स्थायी हो जाता है। पुराने ज्वरमें प्रायः सवेरे-शाम सिरमें दर्द हुआ करता है।

दस्तक़ब्ज़ और अजीर्णसे हुए सिर-दर्दके लक्षण।

दस्त साफ़ न होने और अजीर्णसे बहुधा सिरमें दर्द हो जाता है। इन दोनों रोगोंमें, आँतोंमें दूषित पदार्थ जमा होकर सिरमें दर्द करते हैं। अत्यन्त भारी और कठिनसे पचनेवाले भोजनसे भी कभी-कभी सिरमें बड़े ज़ोरका दर्द हो जाता है।

ज़ुकामके सिर-दर्दके लक्षण।

ज़ुकाम, खाँसी, सर्दी और क्षय वग़ैरः रोगोंमें सिरका दर्द बहुतायतसे होता है। कभी-कभी नये ज़ुकाममें, कफके गाढ़े हो जाने या सूख जानेसे, सिरमें भयङ्कर वेदना होती है और उससे अनेक रोग पैदा हो जाते हैं।

खाँसी और क्षयके सिर-दर्दके लक्षण।

खाँसीमें विशेषकर पुरानी खाँसीमें बड़े ज़ोरसे सिरमें दर्द होता है। क्षय रोगके शुरूमें, बहुत लोगोंको नियमित रूपसे सिर-दर्द होता है। जब क्षय अपना पूर्ण रूप धारण करता है, यह सिरका दर्द भी बढ़ जाता है। इसमें प्रायः सिर घूमता है, सिरमें सूई चुभानेका-सा दर्द होता और पसीने बहुत आते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपदंश आदिके सिरदर्दके लक्षण।

उपदंश और वातरक्त आदिका विष शरीरमें जमा हो जानेसे सिरमें दर्द बहुत समय तक बना रहता है। कभी-कभी उपदंशके सारे लक्षण दूर हो जानेपर भी, उपदंशका विष शरीरमें छिपा रहता है। उसकी वजहसे बहुत समय तक सिरमें दर्द बना रहता है।

स्नायुविक दुर्बलता-जनित सिर-दर्द।

स्नायुओंकी कमज़ोरीसे जो सिरमें दर्द होता है, वह मन्दा-मन्दा हुआ करता है और बहुत दिनों तक बना रहता है।

नेत्रादि रोगोंसे हुए सिरके दर्दके लक्षण।

नेत्र, दाँत, कान और नाक आदिके रोगोंमें सिरका दुखना मामूली बात है। नज़रकी कमज़ोरीसे कभी-कभी माथेमें ऐसा दर्द होता है कि, बहुत पता लगानेपर भी उसकी असली वजह मालूम नहीं होती। ऐसे शिरोरोगमें पहले दृष्टिकी परीक्षा करनी चाहिये।

मस्तिष्क सम्बन्धी सिर-दर्दके लक्षण।

मस्तिष्क सम्बन्धी विकारोंमें सिरका दर्द भयंकर रूपसे प्रकट होता है। मस्तिष्कके भीतर अर्बुद—फोड़ा होनेसे सिरमें असह्य वेदना होती है। रोगीको क़य होती हैं और धीरे-धीरे उसकी दृष्टि-शक्ति कम हो जाती है।

यकृत-दोषके सिर-दर्दके लक्षण।

यकृत या लिवरके दोषसे यकृतका काम ठीक-ठीक नहीं होता तब सिरमें दर्द होता है। इसमें विशेषकर पित्तके लक्षण होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गर्भाशय आदिके सिर-दर्दके लक्षण।

औरतोंके गर्भाशय या जरायुमें पीड़ा होनेसे सिर-दर्द बहुधा होता है। बहुत-सी औरतोंके ऋतुकालके समय घोर सिर-दर्द होता है।

प्राकृतिक नियम भंगसे हुए सिर-दर्दके लक्षण।

अनेक बार प्राकृतिक नियम न पालनेसे सिरमें दर्द हो जाता है। बे-समय और बेक़ायदे खाने, सोने, अत्यन्त लिखने-पढ़ने, ज़ियादा मिहनत या कसरत करने, रातमें जागने, ज़ियादा स्त्री-प्रसंग करने, ज़ियादा गरमी या ज़ियादा सर्दी खाने, रातमें दही वग़ैरः स्रोतोंको बन्द करनेवाले पदार्थोंको खाने, शराब पीने, चाय-काफी और तमाखू वग़ैरःको अत्यन्त ज़ियादा सेवन करने अथवा मैली और गन्दी हवामें रहने और किसी तरहकी मिहनत न करने वग़ैरः-वग़ैरः अनेकों कारणोंसे सिरमें पीड़ा हो जाती है।

शिरोरोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य—

नियम और चन्द परीक्षित नुसख़े।

(१) वातज शिरोरोगमें स्नेहन, स्वेदन और नस्य कर्म करना चाहिये। वातनाशक खाने-पीनेके पदार्थ और उपनाह सेवन करना चाहिये। जांगल देशके जानवरोंके मांसके द्वारा पिण्डोपनाह और स्वेदादि प्रदान करना चाहिये। दशमूलादि वातनाशक दवाओंके साथ पकाया हुआ दूध सिरपर सींचना चाहिये। यथा समय चिकने पदार्थोंके द्वारा धूम्रपान कराना चाहिये। वातज शिरोरोगमें "शिरोवस्ति" अतीव लाभदायक है। मामूली तौरसे सिरको कपड़ेसे बाँधना, वातनाशक गरम और चिकने पदार्थों द्वारा सिरको स्वेद देना और ऐसे ही पदार्थोंका सिरपर लेप करना, वातनाशक तेलोंकी मालिश कराना,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पौष्टिक भोजन करना, गरम जल पीना और गरम जलसे नहाना वग़ैरः-वग़ैरः आहार-विहार लाभदायक हैं।

(२) पित्तज शिरोरोगमें स्निग्ध या चिकनी औषधियोंके द्वारा विरेचन कराना चाहिये। "सौ बार धोया हुआ घी" सिरपर मलना चाहिये। बारम्बार शीतल जलमें सिर डुबोकर नहाना चाहिये। इस रोगमें शीतल लेप और शीतल तरड़े अतीव गुणकारी हैं। जैसे—सिरपर शीतल जलकी धारा छोड़ना; खस, चन्दन और कपूर आदि शीतल पदार्थोंका लेप करना; सिरपर नौनी घी रखना और कच्चे दूधकी मालिश करना वग़ैरः।

(३) कफज शिरोरोगमें रूखी, गरम और पाचन औषधियोंका लेप और स्वेद देना चाहिये तथा तीक्ष्ण अवपीड़न, तीक्ष्ण धूम्र-पान और तीक्ष्ण कवलका प्रयोग करना चाहिये। गरम जल पीना, गरम पानीसे नहाना, पसीने निकलवाना, थोड़ी-सी चाय या काफ़ी पीना, अगर और केशरका लेप करना, त्रिकुटेका लेप करना; सोंठ, कूट या कायफलको पानीमें पीसकर और गरम करके सिरपर लेप करना अथवा गरम भुने हुए चने या मूँग सूँघना—ये सब कफज शिरोरोगमें लाभदायक हैं। इस रोगमें तेलकी मालिश हानिकारक है।

(४) क्षयज शिरोरोगमें क्षयके नष्ट करनेको बृंहण विधि करनी चाहिये; यानी अधिक पौष्टिक और बलवर्द्धक पदार्थ सेवन करने चाहिए। जैसे घी, दूध और दाखोंके रसको एकत्र पकाकर और "मिश्री" मिलाकर पीनेसे क्षय रोगसे हुआ सिरका दर्द जाता रहता है।

(५) कृमिजन्य शिरोरोगमें, यानी माथेके भीतर कीड़े होनेसे जो सिरका दर्द होता है उसमें, कृमि-नाशक दवाएँ लेनी चाहिए। कृमिनाशक औषधियोंकी नस्य लेनी चाहिये और वैसी ही दवाएँ बिलममें रखकर तमाखूकी तरह पीनी चाहिए। जैसे त्रिकुटा, करञ्जके बीज और सहँजनेके बीज—इनको एकत्र बकरीके मूत्रमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीसकर नस्य देनेसे कृमि मर जाते हैं। केवल त्रिकुटेको महीन छानकर नस्य देनेसे अथवा बायबिड़ङ्गको गोमूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे अथवा बायबिड़ङ्गको चिलममें तमाखूकी जगह रखकर और ऊपरसे आग रखकर धूआँ पीनेसे कृमिज शिरोरोग नाश हो जाता है।

(६) सूर्यावर्त्त शिरोरोगमें नस्यादि कर्म लाभदायक हैं। जैसे—भाँगरेका रस और बकरीका दूध बराबर-बराबर लेकर एक पत्थरकी कूँड़ीमें भरकर धूपमें रख दो। जब वह गरम हो जाय, बारम्बार हिलाकर नस्य दो। गुड़ और घी आगपर गरम करके खाने अथवा गरम दूध और घी मिलाकर पीने अथवा घीसे तरान्तर घेवर या मालपूए वग़ैरः खानेसे सूर्यावर्त्त नाश हो जाता है। जंगली जीवोंके मांस द्वारा उपनाह कर्म करना भी सूर्यावर्त्तमें हितकारी है।

(७) अर्द्धावभेदक या आधासीसीके रोगमें पहले स्नेह और स्वेद प्रयोग करना चाहिये। फिर विरेचन-जुलाब, शरीर शुद्धि, धूम्रपान तथा चिकना और गरम भोजन देना चाहिये। इस रोगमें बायबिड़ङ्ग और काले तिल दूधमें पीसकर लेप करना, अथवा इन्हीं दोनोंको बराबर-बराबर लेकर और पीसकर नस्य लेना अथवा केशरको ज़रा-से घीमें भूनकर और बराबरकी मिश्री मिलाकर बकरीके गरम दूधके साथ पीना—अथवा केशरको ज़रा-से घीमें भूनकर बराबरकी मिश्री मिलाकर नस्य लेना—ये सब इस रोगमें परम हितकर हैं।

(८) शंखक शिरोरोगमें वही सब काम करने चाहिए जो सूर्यावर्त्तमें किये जाते हैं; केवल स्वेद कर्म न करना चाहिये। सूर्यावर्त्तमें स्वेद कर्म करना उचित है; पर शंखकमें अनुचित। सूर्यावर्त्तमें जो अवपीड़न नस्य लाभदायक हैं, वही सब शंखकमें भी लाभदायक हैं।

(९) अनन्तवात शिरोरोगमें भी सूर्यावर्त्तके जैसी चिकित्सा करनी चाहिये। इस रोगमें अनन्तवातकी शान्तिके लिए शिरावेध भी करना चाहिये; यानी फ़स्द खोलकर खून निकालना चाहिए। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोगमें वात-पित्त नाशक आहार देना चाहिये। शहद मिले हुए गूँजे, बालूशाही और घेवर वग़ैरः भी पथ्य हैं।

(१०) सिरके रोगमें विधिपूर्व्वक नस्य कर्म करना हितकारी है।

(११) अगर शिरोरोगमें कम्प और दाह होता हो, तो वातनाशक उपाय करने चाहिए।

(१२) अगर सिर घूमता हो, तो इसी भागके पृष्ठमें लिखे हुए नुसख़ोंसे काम लीजिये। दो तोले लाल रंगके जवासेके काढ़ेमें दो या तीन तोले "घी" मिलाकर पीनेसे सिर घूमना आराम हो जाता है। तीन माशे अदरख और छै माशे गुड़ मिलाकर सात दिन तक खानेसे सिर घूमना आराम हो जाता है।

(१३) अगर दस्तक़ब्ज़ या अजीर्णकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो साधारण दस्तावर दवा देकर दस्त कराने चाहिये अथवा "एनीमा" नामक अँगरेज़ी पिचकारीसे आँतें धोनी चाहिये। अथवा गरम पानीके साथ ५।७ सूखे अञ्जीर खाने चाहिये। इस रोगमें फलोंका ज़ियादा व्यवहार हितकारी है। देरमें पचनेवाले और भारी पदार्थ हानिकर हैं। हल्के और जल्दी पचनेवाले पदार्थ लाभदायक हैं।

नीचे हम चन्द क़ब्ज़-नाशक उपाय बतलाते हैं:—

(१) थोड़ा-सा गुलकन्द गुलाब या थोड़ी-सी दाखें बीज निकालकर—गरम दूध या गरम पानीके साथ खानी चाहिये। इनसे कोठेकी सख्ती दूर हो जाती है।

(२) अमलताशका गूदा, इमलीका गूदा, दाख, आलू बुखारा, सूखे झाड़ी बेर, सनाय और सौंफ दो-दो तोले लेकर, डेढ़ सेर पानी डालकर, मिट्टीके बर्त्तनमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो। फिर इस काढ़ेमें पाव भर "मिश्री" मिलाकर पकाओ; जब अवलेहके समान गाढ़ा होकर चिपकने लगे, उतारकर रख लो। साधारण क़ब्ज़में इसमेंसे ६ माशेसे २ तोले तक अवलेह रातको सोते समय चाटनेसे सवेरे ही दस्त खुलासा हो जाता है।

(३) मुलेठी २ तोले, सनाय १ तोले, सौंफ ६ माशे, शुद्ध आमलासार गन्धक ६ माशे और मिश्री ६ तोले—इन सबको पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

६ माशे तक चूर्ण गरम जलके साथ खानेसे दस्त खुलासा हो जाता है। बवासीर रोगीको इस चूर्णसे विशेष लाभ होता है।

(१४) अगर जुकामकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो छठे भागमें जुकामपर जो पसीने लानेवाले नुसख़े लिखे हैं, उनमेंसे कोई सेवन करना चाहिये। तुलसीकी पत्तियोंकी चाय बनाकर पीनेसे भी पसीने आकर जुकामसे हुआ दर्द-सिर आराम हो जाता है। अगर सिरमें पानी बहुत हो, तो भाड़में भुने हुए गरमागर्म चने कपड़ेकी पोटलीमें रखकर, उसी पोटलीसे सेक करनेसे पानी सूख जाता और बड़ा आनन्द मालूम होता है। अगर कफके गाढ़े हो जानेसे या सूख जानेसे सिरमें दर्द हो, तो मुनक्का, लिहसौड़े और गावजुबाँ आदि कफको पतला करनेवाली दवाएँ देनी चाहिये। ऐसे नुसख़े छठे भागमें, जहाँ जुकामका इलाज लिखा है, बहुत हैं। अगर पुराने जुकामसे सिरमें दर्द हो, तो त्रिफलेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीना चाहिये। अगर खाँसीके ज़ोरके मारे सिरमें दर्द हो, तो अड़ूसेके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीना चाहिये।

(१५) ज्वरादि दूसरे रोगोंमें जो सिरका दर्द होता है, वह मूल रोगके आराम होनेसे मिटता है। इसलिये ऐसी हालतमें असल रोगकी तरफ ज़ियादा ध्यान देना चाहिये।

अगर नये बुख़ारमें सिरमें दर्द हो, तो लाल चन्दनको पत्थरपर घिसो और ज़रा-सा कपूर मिलाकर सिरपर लगाओ। अथवा दालचीनी अथवा सौंफको पानीमें पीसकर सिरपर लेप करो।

अगर द्वन्द्वज ज्वरकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो पिपरमिण्टको ज़रा-से घीमें मिलाकर सिरपर मलो अथवा इलायची या सौंफ पानीके साथ पीसकर सिरपर लेप करो।

अगर ज्वरकी तेज़ीके समय सिरमें भयङ्कर दर्द हो, बाह और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रलाप आदि उपद्रव हों, तो आईस बैग (रबड़की थैली) सरपर रखो, पर ध्यान रहे सिरमें पानी न ठहरने पावे।

मलेरियाजनित सिरके दर्दमें गिलोयका काढ़ा पीनेसे लाभ होता है। सफेद चन्दन, कपूर और नेत्रवाला गायके दूध या पानीमें पीसकर सिरपर लगानेसे भी लाभ होता है।

नोट—ज्वरमें सिर-दर्द नाश करनेवाले नुसख़े चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भागके पृष्ठ ५३४—५३८ में देखिये।

(१६) उपदंश—आतशक या वातरक्तकी वजहसे जो सिरमें दर्द होता है, उसमें उपदंशके ज़हरको नाश करनेवाली और खूनको साफ करनेवाली दवाएँ देनी चाहिये। अनन्तमूल और उशवा प्रभृति रक्तशोधक दवाओंके सेवनसे खूनमेंसे विष दूर होकर सिरकी पीड़ा मिट जाती है। डाक्टरी मतसे "पोटास आयोडाइज्ड" ऐसे सिरके रोगोंकी उत्तम औषधि है।

(१७) मूत्रपिण्ड सम्बन्धी सिरके दर्दमें साधारण दस्तावर और पेशाब लानेवाली दवासे लाभ होता है।

(१८) यकृतके विकारसे हुए सिरके दर्दमें पाचक और दस्तावर दवाएँ लाभदायक हैं।

(१९) स्नायविक दुर्बलतासे हुए सिरके दर्दमें अधिक पुष्टिकारक पदार्थ खानेसे लाभ होता है। दो या तीन रत्ती "शुद्ध शिलाजीत" बराबर कुछ दिनों तक दूधके साथ खानेसे ऐसे रोगमें अवश्य लाभ होता है। आठ-दस बूँद "बड़का दूध" चीनीमें मिलाकर कुछ दिन खानेसे स्नायविक दुर्बलता नाश होकर दर्द-सिर भी आराम हो जाता है और कब्ज़ नहीं होता।

(२०) नेत्र, कान और दाँत आदिमें रोग होनेसे जो सिरमें दर्द होता है, वह उन रोगोंमें लाभ होनेसे ही आराम होता है, अतः मुख्य रोगके इलाजपर ही विशेष ध्यान देना चाहिये। अगर दृष्टि-दोष या नज़रकी कमज़ोरीसे सिरमें दर्द हो, तो चश्मा लगाना लाभदायक है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२१) हिस्टीरिया, मूर्च्छा या मृगी आदि मानसिक रोगोंकी वजहसे या और किसी तरह मनमें अत्यन्त दुःख होनेसे सिरमें दर्द हुआ हो; तो वह मानसिक चिकित्सासे ही अच्छा होगा; दवाओंसे ऐसे दर्द-सिरमें कोई फायदा नहीं होता है।

(२२) अगर मस्तिष्कके विकारकी वजहसे सिरमें दर्द हो, तो मस्तिष्कके उस विकारका इलाज करना चाहिये। अगर मस्तिष्ककी कमज़ोरीसे सिरमें दर्द हो, तो मस्तिष्क-शक्तिको बढ़ानेवाले पदार्थ देने चाहिये। अगर मस्तिष्कसे ज़ियादा काम लेने या दिमाग़ी मिहनत ज़ियादा करनेसे सिरमें दर्द हुआ हो, तो आराम करना चाहिये। अगर मस्तिष्कमें उपदंशकी वजहसे अर्बुद (फोड़ा या रसौली) पैदा हो जानेके कारण सिरमें दर्द हुआ हो, तो उपदंश नाशक दवाएँ देनी चाहिये। अगर अर्बुद किसी और वजहसे हुआ हो, तो होशियार डाक्टरसे चीर-फाड़ करानी चाहिये।

(२३) प्राकृतिक नियमोंके तोड़नेसे जो सिरमें दर्द होता है, वह नियम पालन करनेसे चला जाता है। अगर ज़ियादा मिहनत करने या रातमें जागनेसे सिरमें पीड़ा हो, तो आराम करना चाहिये। शीतल या निवाये जलसे सिरको धोना चाहिये। अगर सर्दीसे दर्द हो, तो सर्दीको कम करना चाहिये और गरमीसे हो, तो गरमीको कम करना चाहिये। सर्दीके सिर-दर्दका वही इलाज है जो कफज शिरोरोगका है। गरमीवालेका इलाज ठीक पित्तज शिरोरोगके जैसा है।

(२४) अगर औरतोंको जरायु सम्बन्धी सिर-दर्द हो, तो उन्हें गरम जलमें बिठाना चाहिये या गरम जलमें पैर डुबाये रखना चाहिये।

(२५) बदबूदार हवामें रहने या दुर्गन्धित चीज़की गन्ध नाकमें जानेसे सिरमें दर्द हो जाय, तो साफ़ खुली हवामें दस-बीस लम्बे साँस लेने चाहिये और उत्तम इत्र सूँघने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२६) अगर आलस्यसे या बेकाम पड़े रहनेसे सिरमें दर्द हो जाय, तो मिहनत करनी चाहिये।

(२७) बाज़ारू पेटेण्ट दवाएँ सिरके दर्दको तत्काल आराम तो कर देती हैं, पर दिलको कमज़ोर कर देती हैं; क्योंकि इनसे हृदयकी चाल मन्दी पड़ जाती है; अतः ऐसी दवाओंसे बचना चाहिये; क्योंकि इनसे एक रोग जाता है और चार आते हैं।

शिरोरोगकी—
विशेष चिकित्सा।

वातज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) वातज शिरोरोगमें दशमूल आदि वातनाशक औषधियोंके साथ पकाया हुआ दूध सिरपर सींचना चाहिये। रातके समय मूँग, उड़द और कुल्थीको घीमें भूनकर और मिर्चादि तीक्ष्ण वस्तु मिलाकर खाना चाहिये। वातज शिरोरोगमें स्नेहन, स्वेदन और मस्तकमें तेलादि मलना हितकारी है। गरम दूध पीना चाहिये।

(२) कूट और अरण्डकी जड़ काँजीमें पीसकर सिरपर लेप करनेसे सिरका दर्द तत्काल नाश हो जाता है।

नोट—कूट, अरण्डकी जड़ और सोंठको माठेमें पीसकर और गरम करके कपालपर लगानेसे वातज शिरोरोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(३) मुचकुन्दके फूल काँजीमें पीसकर लेप करनेसे वातज सिरदर्द फौरन आराम हो जाता है।

(४) रोगीके मस्तकको निश्चल रखकर, उसको चमड़ेसे अच्छी तरह बाँध दो। फिर उसमें वातनाशक गरम तेल भरकर तीन या छै घण्टों तक रहने दो; इसके बाद तेलको निकाल दो। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तरह करनेसे अनेक तरहके दर्द-सिर आराम हो जाते हैं। इसे "शिरोवस्ति" कहते हैं। इसकी खुलासा तरकीब अच्छी तरह समझाकर हम नीचे लिखते हैं:—

सिरपर पूरा आ जाय, ऐसा लम्बा और सोलह अंगुल ऊँचा चमड़ा लेकर, उससे मस्तकको बाँध दो और उसकी तथा मस्तककी सन्धोंमें उड़दका आटा पानीमें सानकर लगा दो, ताकि उसमें भरा हुआ तेल बहकर न निकल जाय। फिर रोगीको निश्चल बैठाकर सुहाता-सुहाता गरम तेल, मस्तकके ऊपर, उस चमड़ेमें भर दो। फिर जब तक दर्द आराम न हो जाय तब तक, अथवा ६ घण्टे तक या दो-तीन घण्टों तक, रोगीको इसी तरह निश्चल—बिना हिले-डोले बैठा रहने दो। यही "शिरोवस्ति" है। इससे वातज शिरोरोग, हनुग्रह, मन्यास्तम्भ, नेत्रकी पीड़ा, कानकी पीड़ा, अर्दित—आधा चेहरा टेढ़ा हो जाना और सिर काँपना—ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

यह वस्ति भोजन करनेसे पहले ही रोगीको देनी चाहिये। पाँच दिन तक, सात दिन तक और जो अनुकूल हो—फायदा मालूम हो तो इनसे भी अधिक दिनों तक यह क्रिया करनी चाहिये।

वेदना शान्त होनेपर, दर्द मिटनेपर अथवा ६ या २।३ घण्टेके बाद तेलको निकालकर वस्तिको खोल लेना चाहिये। फिर मस्तक, कपाल, मुख, गर्दन और खवोंको खूब मलना चाहिये। पीछे सुहाते-सुहाते गरम जलसे शरीरको धोकर पथ्य भोजन खानेको देना चाहिये। जंगली जीवोंका मांसरस या घी मिला लाल शालि चावलोंका भात भी पथ्य है। रातके समय मूँग, उड़द, कुल्थी अथवा अकेली कुल्थी पकाकर उसमें घी और तीक्ष्ण पदार्थ—मिर्च वग़ैरः मिलाकर खिलानी चाहिये और ऊपरसे गरम दूध पिलाना चाहिये।

(५) ककोड़ेकी गाँठ शहदमें घिसकर लेप करनेसे वातज सिरदर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) "श्वासकुठार रस"की नस्य देनेसे माथेका दर्द अवश्य नाश हो जाता है। इस वातजन्य शिरोरोगपर यह नस्य रामवाण है, अतः इसे जरूर व्यवहारमें लाना चाहिये।

(७) देवदारु, तगर, कूट, बालछड़ और सोंठ—इनको एकत्र काँजीमें पीसकर और तेलमें मिलाकर लेप करनेसे वातज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(८) सोंठ और केशर पीसकर लेप करने अथवा दालचीनीका लेप करनेसे वातज सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(९) लौंग नग ५, सोंठ २ रत्ती और केशर २ रत्ती—इनको पानीके साथ पीसकर दो तोले तेलमें मिलाकर पकाओ और गरम-गरम लेप करो। इससे वातज दर्द-सिर आराम हो जाता है।

पित्तज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) पित्तजन्य शिरोरोगमें, रोगीको स्निग्ध करके उत्तम विरेचन या जुलाब देना चाहिये। घी या दूधमें उपयुक्त मात्रा "निशोथके चूर्ण" की सेवन करानेसे दस्त हो जाते हैं और दर्दमें शान्ति आती है।

(२) सिरको बारम्बार शीतल जलमें डुबानेसे पित्तज दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(३) चन्दन, कमल, कमलकेशर, मृणाल, कमलकन्द और पद्माख—इनको समान-समान लेकर और दूधमें पीसकर सिरपर लेप करनेसे अथवा इन दवाओंको पानीमें औटाकर सिरपर तरड़ा देनेसे पित्तज सिर-दर्द शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(४) लाल चन्दन, खसकी जड़, मुलेठी, बरियारा, व्याघ्रनखी और नील कमल—इनको समान-समान लेकर और दूधमें पीसकर सिरपर लगानेसे पित्तज सिरका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) आँवले और नील कमल पानीमें पीसकर सिरपर लगानेसे पित्तज दर्द-सिर आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) चन्दनके जलसे शीतल किये पंखेकी हवा करनेसे तथा लाल कमल और सफेद कमल धारण करनेसे अथवा शीतल हवा खानेसे पित्तज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(७) सौ बार धोया हुआ घी सिरपर लगानेसे पित्तज सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(८) ज़रा-सा श्वासकुठार रस, कपूर, नयी केशर, मिश्री और बकरीका दूध—इन सबको बारीक घिसकर और ऊपरसे सफेद चन्दनका जलमें घिसा हुआ रस ज़रा-सा मिलाकर नास देनेसे घोर पित्तजन्य शिरोरोग नाश हो जाता है। कहते हैं, इस नुसख़ेसे सभी तरहके सिरके दर्द आराम हो जाते हैं।

नोट—शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गन्धक १ तोले, शुद्ध बत्सनाभ १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, शुद्ध मैनसिल १ तोले और कालीमिर्च ८ तोले—इन सबको कूट-पीसकर मिला लो। फिर इसमें २ तोले सोंठका पिसा-छना चूर्ण, २ तोले कालीमिर्चोंका पिसा-छना चूर्ण और २ तोले पीपरोंका पिसा-छना चूर्ण भी मिला दो। यह "श्वासकुठार रस" है। इसमेंसे १ या २ रत्ती रस पानमें रखकर खानेसे सब तरहके श्वास रोग नाश हो जाते हैं।

(९) कमलगट्टा, आँवला, हरड़, दूब, खस, नागरमोथा और कपूर—सबको समान-समान लेकर और पानीमें पीसकर लेप करनेसे पित्तसे हुआ सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) चन्दन, धनियाँ और गुलाबके फूल,—इनको महीन पीस लो। फिर इसमें "ईसबगोलका लुआब" मिला दो। इसको सिरपर लगानेसे पित्तज सिर-दर्द जाता रहता है।

(११) गुड़ और सोंठको एकत्र पीसकर नास देनेसे भी सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१२) चन्दन, खस, मुलेठी, खिरेंटी, नखी और कमल—इनको एकत्र दूधमें पीसकर लेप करनेसे पित्तज शिरोरोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१३) मिश्री, दाख और मुलेठी—इनको पीसकर नस्य देनेसे पित्तज सिरका रोग आराम हो जाता है ।

(१४) दालचीनी, तेजपात और मिश्री—इनको चावलोंके पानीमें पीसकर नस्य देनेसे पित्तज सिरका दर्द नाश हो जाता है ।

(१५) दूध और घी मिलाकर नास देनेसे पित्तज सिर-दर्द नाश हो जाता है ।

रक्तज शिरोरोगकी चिकित्सा ।

इस शिरोरोगमें, भोजन, लेपन और सेचन वग़ैरः सारे काम पित्तज शिरोरोगकी तरह करने चाहिये । इसमें रक्तमोक्षण या फ़स्द खोलनेकी विशेष जरूरत है । विद्वान् लिखते हैं कि, इस रोगमें सभी काम पित्तज शिरोरोगके समान करने चाहिये । एक बार शीतल क्रिया करनी चाहिये और एक बार गरम क्रिया करनी चाहिये; यानी शीतल और गरम मिले हुए कर्म करने चाहिये; विशेषकरके खून निकालना चाहिये ।

कफज शिरोरोगकी चिकित्सा ।

नोट—अगर कफसे शिरोरोग हुआ हो तो लंघन कराने चाहिये तथा गरमीसे पूर्ण, रूखे और गरम पदार्थोंसे स्वेदन करना चाहिये ।

(१) रेणुबीज, तगर, भूरिछरीला, नागरमोथा, इलायची, अगर, देवदारु, रास्ना, स्थौणेय—ग्रन्थिपर्णी और नेत्रवाला—इनको पीसकर और गरम करके अथवा ऐसी ही रूखी और गरम औषधियोंका मस्तक पर लेप करना चाहिये ।

(२) कायफलकी नास लेनेसे कफज शिरोरोग नाश हो जाता है ।

(३) पीपर, सोंठ, नागरमोथा, मुलेठी, सोया, नील कमल और कूट—इन सबको समान-समान लेकर और पानीमें पीसकर लेप करनेसे कफज सिर-दर्द आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) धूप सरल, अगर, करंज, देवदारु, रोहिषतृण और सैंधानोन—इन सबको एकत्र दूधमें पीसकर और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप करनेसे कफज सिरका दर्द नाश हो जाता है।

नोट—पीपर, मोथा, सोंठ, मुलेठी, शतावर, कमल और चीता—इनको पीसकर लेप करनेसे सिरका दर्द फौरन आराम हो जाता है।

वात-पित्तज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) लघु पंचमूल दूधमें औटाकर नास लेनेसे वात-पैत्तिक सिरदर्द आराम हो जाता है।

वात-कफज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) वृहत्पंचमूल दूधमें औटाकर नास लेनेसे वात-कफज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

त्रिदोषज शिरोरोगको चिकित्सा।

(१) दोनों पंचमूल दूधमें औटाकर नास लेनेसे त्रिदोषज दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(२) त्रिकुटा, कूट, हल्दी, गिलोय और असगन्ध—इनका काढ़ा नाकके द्वारा पीनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(३) सोंठका पिसा-छना चूर्ण २ माशे और दूध ८ तोले मिलाकर नास लेनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४) त्रिकुटा, पोहकरमूल, देवदारु, रास्ना, हल्दी और असगन्ध—इनका काढ़ा नाकके द्वारा पीनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) बेलगिरी और सोंठको दूधके साथ महीन पीसकर नस्य लेनेसे त्रिदोषज सिरका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY.
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc No. 3084
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) सोंठ और गुड़को एकत्र पीसकर सूँघनेसे त्रिदोषज सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(७) सैंधानोन और पीपर एकत्र पीसकर नास देनेसे त्रिदोषज दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(८) "षड्बिन्दु तैल" (विधि आगे लिखी है) की छै-छै बूँदे नाकमें टपकाने और उसको सूँघने-मलनेसे सब तरहका सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(९) अनन्तमूल, सोंठ और सफेद अपराजिता—इनको एकत्र पीसकर सिरपर लेप करनेसे त्रिदोष-जनित सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) अनारकी कलियोंको कूटकर, फिर उनमें उनसे आधी "चीनी" मिलाकर नास देनेसे तत्काल सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(११) करंज, सहँजनेके बीज, तेजपात, मिश्री और बच—इनको एकत्र पीसकर नस्य देनेसे तत्काल सब तरहके सिरके दर्द आराम हो जाते हैं।

कृमिज शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) त्रिकुटा, करंजके बीज और सहँजनेके बीज,—इनको एकत्र पीसकर और बकरीके मूत्रमें मिलाकर नस्य देनेसे कृमिजन्य शिरोरोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—इन चीज़ोंको गोमूत्रके साथ सिलपर पीसकर नास देनेसे भी कीड़ोंकी वजहसे हुआ सिरका रोग आराम हो जाता है।

(२) अपामार्ग तैलकी नास लेनेसे भी कृमिज शिरोरोग आराम हो जाता है। बनानेकी विधि आगे लिखी है।

नोट—कर्ण रोगमें लिखा हुआ अपामार्ग तैल और यह अपामार्ग तैल भिन्न-भिन्न हैं—एक नहीं। वह अपामार्गके क्षारसे बनता और यह अपामार्गके बीज,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

त्रिकुटा, हल्दी, नकछिकनीके पत्ते, हींग और बायबिड़ङ्गके कल्क, गोमूत्र और तिलीके तेलसे बनता है।

(३) कृमिजन्य शिरोरोगमें खूनकी नास देनेसे सिरके कीड़े नाश हो जाते हैं, अतः कृमिजन्य शिरोरोग भी नष्ट हो जाता है।

(४) तीक्ष्ण धूआँ और नस्यसे कीड़ोंको नाश करना चाहिये। बदबूदार मांसकी धूनी देनी चाहिये। अनेक तरहके कृमि नाशक खाने-पीनेके पदार्थ खाने-पीनेसे भी कृमि नष्ट होकर कृमिजन्य शिरोरोग आराम हो जाता है।

(५) छोटे सहँजनेके बीज और नीलाथोथा—इनको गोमूत्रमें एकत्र पीसकर अवपीड़न नस्य देनेसे कृमिज सिरका रोग आराम हो जाता है।

(६) "बिड़ङ्ग तैल"की नास देनेसे कृमिज शिरोरोग आराम हो जाता है। बनानेकी तरकीब आगे लिखी है।

(७) सोंठ, मिर्च, पीपर, बिजौरा और सहँजनेके बीज—इनको बकरीके दूधमें पीसकर नस्य देनेसे कीड़े मर जाते हैं।

(८) बायबिड़ङ्ग, सज्जी, दन्ती और हींग—इनको सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना सरसोंका तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र—सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलकी नस्य देनेसे कीड़े अवश्य ही मर जाते हैं। परीक्षित है।

(९) पीनस रोगमें कीड़े पड़ जानेसे भयानक सिर-दर्द होता है, दोनों भौं और कनपटी सूज जाती हैं, साँसके साथ सड़ी हुई सरसोंकी खलकी-सी बदबू आती है। उस दशामें कीड़े निकाले बिना पीनस और उससे हुआ सिरका दर्द आराम नहीं होता। अतः बाँसके कोमल कल्लेका रस १ छटाँक और तारपीनका तेल १ तोले—दोनोंको मिलाकर नस्य देनेसे सब कीड़े बाहर आ जाते हैं।

(१०) रीठेको पानीमें पीसकर, दो-चार बूँद नाकमें टपकानेसे माथेके कीड़े मर जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सूर्यावर्त्तकी चिकित्सा।

(१) नास लेने, घी और गुड़को मिलाकर पीने अथवा घेवर खानेसे सूर्यावर्त्त शिरोरोग यानी सूरजके साथ बढ़ने-घटनेवाला दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(२) सूर्यावर्त्त रोगमें शिरावेध करने, फ़स्द खोलने, दूध और घी मिलाकर नस्य देने एवं दूध और घी ही मिलाकर पिलाने और इन्हींमें मिलाकर दस्तावर दवा देनेसे सूर्यावर्त्त नाश हो जाता है।

(३) अदरखका स्वरस, बच और पीपल—इनकी अवपीड़न नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त शिरोरोग आराम हो जाता है।

(४) भाँगरेका स्वरस और बकरीका दूध—इन दोनोंको समान भाग लेकर, एकत्र मिलाकर और "धूप" में गरम करके नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त नष्ट हो जाता है। यह नुसख़ा इस रोगपर उत्तम है। परीक्षित है।

(५) अमलताशके पत्तोंका रस, चिरचिरेकी जड़का कल्क और नौनी घी—इनको एकत्र मिलाकर नास देनेसे सूर्यावर्त्त रोग आराम हो जाता है।

(६) दूधमें तिल पीसकर नास लेनेसे सूर्यावर्त्त रोग आराम हो जाता है।

(७) धनियाँ, चन्दन, कासनी और ईसबगोल,—इन सबको "पोस्तके पानी"में पीसकर लेप करनेसे सूर्यावर्त्त आराम हो जाता है।

(८) ईसबगोलका लुआब सिरपर मलनेसे सूर्यावर्त्त शिरोरोग आराम हो जाता है।

(९) गुल रौग़न और कपूर मिलाकर नाकमें दो-तीन बूँद मलनेसे सूर्यावर्त्त आराम हो जाता है।

नोट—हिकमतमें इस रोगको "असाबा" कहते हैं। यह रोग सूरजके साथ शुरू होता और दोपहर पीछे घटते-घटते शामको शान्त हो जाता है। यह रोग गरमीसे होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अर्द्धावभेदककी चिकित्सा।

(१) स्नेहन, स्वेदन, विरेचन, धूप और स्निग्ध तथा गरम भोजनसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द नाश हो जाता है।

(२) बायबिड़ङ्ग और काले तिल—बराबर-बराबर लेकर, दूधमें पीसकर लेप करने और इसीकी नस्य लेनेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द नाश हो जाता है।

(३) नाकके द्वारा केवल दूध या मिश्री-मिला दूध पीने अथवा नारियलका पानी पीने अथवा शीतल जल पीने अथवा घी पीनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक नामक शिरोरोग आराम हो जाते हैं। लोलिम्बराज महाशय भी कहते हैं:—

शिरसिते यदि शूलमतीव च।
दुषसि दुग्धमतः पिबनासया॥
परम चिन्तनशक्ति कमादरा दतितरा।
मनु भूतमिदंमया॥

"हे मनुष्य! अगर तेरे सिरमें बहुत ही ज़ोरका दर्द है, तो सवेरे ही उठकर नाकके द्वारा दूध पी, इससे शूल शान्त होगा। इस दवाकी शक्तिका पता नहीं—अचिन्त्य है, अतः किसी तरहका सन्देह मत कर, बड़े आदरसे इसे सेवन कर, यह दवा मेरी परीक्षा की हुई है।" आधासीसीपर सचमुच ही यह प्रयोग उत्तम है।

(४) तिलकी खलका रस, तेल, शहद और सैंधानोन—इन सबको मिलाकर लेप करनेसे अर्द्धावभेदक—आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है।

(५) शालपर्णीके पत्तोंको जलमें पीसकर नास देनेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है।

(६) चकबड़के बीज काँजीमें पीसकर लेप करनेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसी आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) जो सिरमें अत्यन्त घोर दर्द हो, तो सूरज निकलनेके समय, नाकके द्वारा, बराबरकी चीनी मिलाकर दूध पीओ । इससे अचिन्त्य शक्ति उत्पन्न होती और सब तरहके दर्द-सिर आराम होते हैं।

(८) शारिवा, कमल, मुलेठी और कूट—इनको एकत्र जलमें पीसकर सिरपर लेप करने अथवा घेवर खानेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक दोनों तरहके दर्द-सिर आराम हो जाते हैं।

(९) दशमूलके काढ़ेमें घी और सैंधानोन मिलाकर नस्य देनेसे अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त्त तथा सिरकी और तरहकी पीड़ाएँ नाश हो जाती हैं।

(१०) केशरको ज़रा-से घीमें भूनकर और उसमें बराबरकी मिश्री मिलाकर एवं बकरीके दूधमें पीसकर पीनेसे पित्तजन्य रोग, अर्द्धावभेदक, सूर्यावर्त्त और अन्य सिरकी पीड़ाएँ आराम हो जाती हैं।

(११) चिरचिरेके बीज, सोंठ, मिश्री और शहद—इन सबको एकत्र पीस और मिलाकर नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक सिरके दर्द आराम हो जाते हैं।

(१२) केशरको घीमें भूनकर और मिश्री मिलाकर नस्य देनेसे वातरक्तजन्य शिरोरोग तथा भौं, कनपटी—शंख, कान, नेत्र और सिरका दर्द, अर्द्धशूल, शंखक और अर्द्धावभेदक शिरोरोग नाश हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

(१३) सिरसकी जड़ और सिरसके फल अथवा सिरसकी छाल और मूलीके बीज अथवा बच और पीपल—इनमेंसे किसी एककी अवपीड़न नस्य देनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक रोग आराम हो जाते हैं।

(१४) ख़रगोशके सिरके रसमें "कालीमिर्चका चूर्ण" मिलाकर, भोजनसे पहले, सात दिन तक, खानेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१५) पीपर, मिर्च और हरड़—इनको काँजीमें पीसकर लेप करनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(१६) मुलेठी, शारिवा, बच और मिर्च—इनको समान-समान लेकर और काँजीमें पीसकर लेप करनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(१७) घीमें सैंधानोन महीन पीसकर नास लेनेसे आधासीसी आराम हो जाती है। तीन दिन बराबर सूँघनेसे यह रोग फिर नहीं होता। परीक्षित है।

(१८) मिश्री, केशर और दाख समान-समान लो और मक्खन चौथाई लो; फिर सबको मिलाकर नस्य दो। इससे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग आराम हो जाते हैं। यह नस्य वात-पित्तजन्य सिरके रोगोंमें हितकारी है।

नोट—अर्द्धावभेदक रोगमें सूर्यावर्त्त नाशक विधि भी की जा सकती है।

(१९) अनन्तमूल, नील कमल, कूट और मुलेठी—इनको काँजीमें पीसकर और "घी" मिलाकर लेप करनेसे सूर्यावर्त्त, अर्द्धावभेदक और अनन्तवात शिरोरोग आराम हो जाते हैं।

(२०) हुलहुलके बीज हुलहुलके रसमें पीसकर लेप करनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग नाश हो जाते हैं।

(२१) बायबिड़ङ्ग और काले तिल एकत्र पीसकर नास लेनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक शिरोरोग नाश हो जाते हैं।

(२२) चूल्हेकी जली मिट्टी और गोल मिर्च बराबर-बराबर लेकर और पीसकर नास लेनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(२३) निर्मलीको पानीमें घिसकर, उसकी चार बूँद नाकमें टपकानेसे अर्द्धावभेदक या आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है।

(२४) तिलके तेलमें कुछ "नमक" मिलाकर और गरम करके देनेसे आधासीसीका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शंखक शिरोरोगकी चिकित्सा।

नोट—सूर्यावर्त्त रोगमें स्वेदको छोड़कर जो चिकित्सा लिखी हैं, वही सब शंखक रोगमें भी करनी चाहिये।

(१) दूध और घी मिलाकर मुँह या नाक द्वारा पीने और इन्हींकी नस्य लेनेसे शंखक रोगमें लाभ होता है।

नोट—शंखक रोगमें सेवन करते समय इस नुसख़ेमें "मिश्री" अवश्य मिला लेनी चाहिये।

(२) शतावर, काले तिल, मुलेठी, नील कमल, दूब और पुनर्नवा—इनको एकत्र पीसकर तथा "घी और बच" मिलाकर नस्य देनेसे शंखक रोग नाश होता है।

(३) सफेद चन्दन, पुण्डरीक (पुण्डेरिया), मुलेठी, नील कमल, पद्माख, बैंत, दूब, लामज्जक तृण, दारुहल्दी, हल्दी, मँजीठ, रीठा और खस—इन सबको एकत्र मिलाकर और पीसकर लेप करनेसे शंखक रोग आराम हो जाता है।

(४) सूर्यावर्त्त नाशक अवपीड़न भी इस रोगमें हितकारी हैं।

(५) दारुहल्दी, हल्दी, मँजीठ, नीमके पत्ते, खसकी जड़ और पद्माख—इनको पानीमें पीसकर कनपटीपर लेप करनेसे शंखक रोग आराम होता है।

(६) मिश्री, दूध और जल—इनको मिलाकर तरड़े देने अथवा केवल शीतल जलके तरड़े देने, शीतल दूध सेवन करने और दूधवाले बड़ आदि वृक्षोंका कल्क खानेसे शंखक आराम होता है।

(७) नाकसे घी पीने और मस्तकपर बकरीका दूध या शीतल जलका तरड़ा देनेसे शंखक रोग नाश होता है।

(८) केशरको घीमें भूँजकर और मिश्री मिलाकर, सूर्योदयके समय, नस्य देनेसे शंखक, अनन्तवात, सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक आराम होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) रूखे पदार्थ या प्रयोगोंके सेवन करनेसे वायु कुपित होकर शिर कम्प करती है। उस दशामें गिलोय, खिरेंटी, रास्ना तथा अन्यान्य वातनाशक द्रव्य, तैल, घृतादि और सुगन्धित द्रव्य प्रयोग करने तथा इन्हींके द्वारा स्नेह, स्वेद, नस्य और तर्पण देनेसे लाभ होता है।

नोट—कफज, कृमिज और त्रिदोषज शिरोरोगोंके सिवा और सभी शिरोरोगोंमें "वायु" प्रधान रहता है। अतः इस बातको ध्यानमें रखकर इलाज करना चाहिये। कम्प और दाहकी पीड़ामें वातव्याधिके समान चिकित्सा करनी चाहिये। शिरोरोगमें विधिपूर्व्वक नस्य देना हितकारी है।

अनन्तवात शिरोरोगकी चिकित्सा।

(१) अनन्तवात शिरोरोगमें सूर्यावर्त्तके समान इलाज करना चाहिये। अनन्तवातकी शान्तिके लिये फ़स्द खोलना या नस बेधकर खून निकलवाना हितकारी है। रोगीको शहदमें लपेटे हुए घीसे तर गूँजे, बालूशाही, मालपुए और चूरमा आदि वात-पित्त नाशक आहार पथ्य और रोगनाशक हैं।

(२) हरड़, बहेड़ा, आँवला, हल्दी, गिलोय, चिरायता और नीम—इनके काढ़ेमें "गुड़" मिलाकर नास देनेसे क्षण-मात्रमें भौं, कनपटी, कान, आँख और आधे मस्तकका शूल ये सब नाश हो जाते हैं।

(३) केशरको घीमें भूनकर और मिश्री मिलाकर सूर्योदयके समय नस्य देनेसे वातरक्तजन्य शिरोरोग दूर होता है; तथा भौं, कनपटी, कान, आँख और सिरका दर्द, अर्धशूल, शंखक और आधासीसीका दर्द ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित नुसखा है।

नोट—केशरको घीमें भूनकर, बकरीके दूधमें पकाकर और मिश्री मिलाकर पीनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक आदि सिरके दर्द नाश हो जाते हैं। अगर ऊपरकी विधिसे नस्य दी जावे और इस विधिसे पकाकर दूध पिलाया जावे, तो निश्चय ही लाभ हो। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

समस्त शिरोरोग नाशक नसखे ।

(१) मुलेठी ६ रत्ती और मुलेठीसे चौथाई—डेढ़ रत्ती शुद्ध वत्सनाभ—इनको काजलके समान महीन पीसकर, नाकमें एक सरसोंके दाने बराबर डालनेसे सब तरहके दर्द-सिर आराम हो जाते हैं। भावमिश्र महोदय कहते हैं, इस नुसखेकी अनेक बड़े-बड़े वैद्योंने परीक्षा की है और हमने स्वयं भी आजमाइश की है।

(२) सीपका चूर्ण और नौसादरका चूर्ण एकत्र मिलाकर नास लेनेसे मस्तकका दर्द अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—इन दोनोंको थोड़े-से पानीमें खूब महीन करके सूँघनेसे जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(३) सौ बार धोये हुए गायके घीकी मालिश करनेसे सिरका दर्द जाता रहता है।

(४) दालचीनीका तेल लगानेसे सिर-दर्द, खासकर बादीका सिरदर्द, आराम हो जाता है।

(५) चन्दनका बढ़िया तेल मलनेसे भी दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(६) आध पाव खोयेकी पट्टी मस्तकपर बाँधनेसे सब तरहके सिरके दर्द नाश हो जाते हैं।

(७) रौग़न गुल, रौग़न बादाम, चमेलीका तेल अथवा काहूका तेल—इनमेंसे कोई एक तेल सिरपर लगानेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(८) फ़स्द खुलवाने या लङ्घन करनेसे भी सिरका दर्द आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९) बायबिड़ङ्ग और काले तिल बराबर-बराबर लेकर और पीसकर लेप करनेसे सिरका दर्द जाता रहता है।

(१०) जमालगोटा पानीमें घिसकर, सींकमें लगाकर, सिरपर लेप करने और एक ही मिनट बाद गीले कपड़ेसे पौंछ डालनेसे बीसियों सालका पुराना दर्द-सिर एक ही बार लगानेसे अच्छा हो जाता है। एक वैद्य मित्र इसे अपना परीक्षित नुसख़ा कहते हैं।

नोट—इस दवाको सिरमें एक मिनटसे ज़ियादा मत रखना—नहीं तो आबला या फफोला हो जायगा। अगर भूलसे फफोला हो जाय, तो कोई मरहम लगा देना।

(११) महुआ, मुलेठी, बायबिड़ङ्ग, भाँगरा और सोंठ—इनको समान-समान लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी लेकर सबको मिलाकर पका लो; और जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इस घीकी नस्य देनेसे सब तरहके सिरके दर्द, बाल गिरना और दाँत टूटना आदि अनेक रोग नाश हो जाते हैं। इससे दाँत मज़बूत होते, बल बढ़ता और गरुड़की-सी दृष्टि हो जाती है। इसका नाम "षड्बिन्दु घृत" है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई इस योगमें "महुआ" नहीं लेते, पर लेना अच्छा है।

(१२) कालाजीरा, नागरमोथा, सोंठ, मुलेठी, सौंफ, नील-कमल और असनपर्णी—इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे सिरका दर्द तत्काल आराम हो जाता है।

(१३) हरड़, बहेड़ा, आँवला, हल्दी, गिलोय, चिरायता, नीमकी छाल और गुड़—इनका काढ़ा सब तरहके सिरके रोगोंको नाश करता है।

(१४) केशरको घीमें भूँजकर और मिश्री मिलाकर नाकमें सूँघनेसे सब तरहके सिरके दर्द नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) कायफल, मिर्च, अरण्डकी जड़ और कूट—इन सबको बराबर-बराबर लेकर और सिलपर पानीके साथ पीसकर गरम

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर लो और फिर सिरपर लेप करो। इससे सब तरहके सिर-दर्द नाश हो जाते हैं।

(१६) नीचे लिखा हुआ छत्तीसका यन्त्र सवेरे ही, भोजपत्रपर लिखकर और काले डोरेमें लपेटकर सिरपर बाँधनेसे अनेक तरहके सिरके रोग नाश हो जाते हैं:—

छत्तीसका यन्त्र।

१५	८	१३
१०	१२	१४
११	१६	९

छत्तीसका यन्त्र।

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

नोट—चार खानेवाला यन्त्र ज़ियादा विश्वास योग्य है। तीन खानेवालेकी भी पाठक परीक्षा कर देखें। मूल ग्रन्थकारने चार खानेवाला ही लिखा है।

शिरोरोग नाशक उत्तमोत्तम योग।

चन्द्रकान्त रस।

रससिन्दूर, अभ्रक भस्म, ताम्बा भस्म, लोहा भस्म और शुद्ध गन्धक—बराबर-बराबर ६।६ माशे लेकर, "थूहरके दूध"के साथ एक दिन खरल करो और ३-३ रत्तीकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली "शहद"के साथ सेवन करनेसे सूर्यावर्त्त और अर्द्धावभेदक आदि शिरोरोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बिड़ङ्ग तैल।

बायबिड़ङ्ग, सज्जी, दन्ती और हींग—इनको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर आध सेर सरसोंका तेल, दो सेर गोमूत्र और लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलकी नस्यसे कृमिजन्य शिरोरोग (सिरमें कीड़े होनेकी वजहसे होनेवाला दर्द-सिर) आराम हो जाता है।

हरिद्राद्य तैल।

हल्दी, दारुहल्दी, पीपर, धूप सरल, देवदारु, बायबिड़ङ्ग, चीता, बेलगिरी, रोहिष तृणके पत्ते, गन्धक, काला नोन, दाख, मँजीठ, मुलेठी, खिरेंटी, बेंतकी जड़, पद्माख, खस और चन्दन—इनको चार-चार तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर एक सेर तिलीका तेल, यह लुगदी और दो सेर गायका दूध—सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलकी नस्य देनेसे कफज और त्रिदोषज शिरोरोग नष्ट हो जाते हैं। इनके सिवा उपजिह्वा, गण्डमाला, कंठशालूक, अर्बुद, विदारिका, मांसपाक, मुँह, सिर और गलेकी पीड़ा, दाँत चलना, हनुकम्प और अन्यान्य ऊर्द्ध जत्रु रोग नाश होते हैं।

नोट—इस तैलके बनानेमें नियमसे काम नहीं लिया गया, मूल ग्रन्थकारने ही स्वयं यह तोल लिख दी है। दूने दूधमें ही तेल पकानेको लिखा है।

कुमारी तैल।

घीग्वारका स्वरस ६४ तोले, धतूरेका स्वरस ६४ तोले, भाँगरेका स्वरस १२८ तोले, गायका दूध २५६ तोले तथा तिलका तेल ६४ तोले तैयार रखो।

मुलेठी, सुगन्धवाला, मँजीठ, नागरमोथा, नख, कपूर, भाँगरा, इलायची, हरड़, पद्माख, कूट, काला भाँगरा, अड़ूसा, तालीसपत्र, राल, तेजपात, बायबिड़ङ्ग, सोया, असगन्ध, अरण्ड, बड़ और नारियल—इन सबका एक-एक तोले कल्क बनाकर रख लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब लुगदी, तेल और ऊपरके सब स्वरसोंको मिलाकर तेल पका लो और खूब अच्छी तरह छानकर, किसी सुगन्धित किये हुए बर्तनमें भर दो और तीन दिन तक ज़मीनमें गाड़ रखो।

इस तैलकी मालिश करने और सिरमें डालनेसे अर्दित, मन्यास्तम्भ, शिरोरोग, तालुवेकी सूजन, नाककी सूजन, आँखोंकी सूजन, मूर्च्छा, हलीमक, हनुग्रह, बहरापन और कानका दर्द—ये सब रोग आराम होते हैं। यह तैल सूर्यावर्त्तपर ख़ास तौरसे चलता है।

नोट—घीग्वारको "कुमारी" भी कहते हैं। इस तैलमें घीग्वार या कुमारी प्रधान है, इसीसे इस तैलका नाम "कुमारी तैल" रखा गया है।

षड्बिन्दु तैल।

अरण्डकी जड़, तगर, सौंफ, जीवन्ती, रास्ना, सैंधानोन, जलभाँगरा, बायबिड़ङ्ग, मुलेठी और सोंठ—इन सबको दो-दो तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी या कल्क बना लो।

अब काले तिलोंका तेल आध सेर, बकरीका दूध दो सेर और भाँगरेका रस दो सेर तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "षड्बिन्दु तैल" है।

इस तैलकी नस्य देनेसे अथवा छै बूँद नाकमें डालनेसे सब तरहके सिरके रोग आराम हो जाते हैं। यह तैल गिरते हुए बाल, हिलते हुए दाँत और जिनकी जड़ उखड़ गई है, उन दाँतोंको मज़बूत करता है तथा गरुड़के समान दृष्टि कर देता है। इससे नेत्र और बाहुओंके बलकी वृद्धि होती है। परीक्षित है।

षट्बिन्दु घृत।

मुलेठी, बायबिड़ङ्ग, भाँगरा और सोंठ—इनको अढ़ाई-अढ़ाई तोले लेकर पानीके साथ पीस लो। फिर गायका घी आध सेर, लुगदी और दो सेर बकरीका दूध—सबको मिलाकर आगपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इस घीकी नस्य देनेसे सब तरहके सिरके रोग आराम हो जाते हैं। इनके सिवाय वे सब रोग भी आराम होते हैं, जो षड्बिन्दु तैलसे आराम होते हैं।

अपामार्ग तैल।

अपामार्गके बीज, त्रिकुटा, हल्दी, नकछिकनीके पत्ते, हींग और बायविड़ङ्ग—इन सबको तीन-तीन तोले ले लो और पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो। अब तिलीका तेल एक सेर और गोमूत्र चार सेर तथा ऊपरकी लुगदी—सबको मिलाकर तेल पकाओ। इस तैलकी नास लेनेसे सिरके कीड़े नाश हो जाते हैं।

शिरशूलान्तक रस।

शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक दो-दो तोले खरलमें डालो और घोटकर बिना चमककी कज्जली कर लो; फिर इसमें दो तोले "लोह-भस्म" भी मिला दो।

अब निशोथ २ तोले, शुद्ध गूगल ८ तोले, त्रिफलेका चूर्ण ४ तोले, कूट ६ माशे, मुलेठी ६ माशे, पीपर ६ माशे, सोंठ ६ माशे, गोखरू ६ माशे, बायविड़ङ्ग ६ माशे और दशमूल ६ माशे—इन सबको पीस-छानकर उसी कज्जलीमें मिला दो और ऊपरसे "दशमूलका काढ़ा" डाल-डालकर दिन भर खरल करो और रातको सुखा दो। सवेरे ही उसे "घी"के साथ फिर खरल करो और चार-चार माशेकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक या दो गोली "शहद" या "पानी" अथवा "बकरीके दूध"के साथ खानेसे सब तरहके सिरके रोग आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गरमी-सर्दीके दर्द-सिरपर नुसखे।

(१) खारीनोन तीन तोले चार माशे, गेहूँकी भूसी दो मुट्ठी, बेरकी पत्ती आध पाव, ख़तमीकी पत्ती आध पाव, मकोयके पत्ते आध पाव और ख़तमीके बीज ७ तोले—इन सबको दो सेर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, सुहाते-सुहाते गरम पानीसे पैरोंको धोओ। इसे "पाशोया" कहते हैं। इससे मादी या साजिज सिरका दर्द; यानी वातादि चारों दोषोंकी वजहसे हुआ या इनके बिना हुआ सिरका दर्द आराम हो जाता है।

नोट—अगर ऊपरकी चीज़ोंमेंसे सब चीज़ें न मिलें तो गेहूँकी भूसी और खारी नोनको पानीमें औटाकर पाँव धोनेसे भी लाभ होगा। सिरके दर्दमें पाशोया करना यानी दवाके पानीसे पैर धोना लाभदायक है। सेनाके पुत्र शेख़ अबूअली साहब लिखते हैं कि, मैं बहुधा सिर-दर्दवालोंके हाथ-पैरोंपर गरम पानीके तरड़े उस समय तक दिलाता रहता था जब तक कि यह न मालूम होता कि कोई चीज़ सिरसे पाँवोंकी तरफ़ उतर रही है। इस तरह करनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(२) पाँव दबाना और तलवे सुहलाना गरमीकी और सर्दीकी दोनों शिर-पीड़ाओंमें लाभदायक है। दवाओंके पानी या गरम पानीसे पाँव धोना और पैरके तलवोंपर झाँवे करना—जिस तरह सब तरहकी शिर-पीड़ाओंमें लाभदायक है; उसी तरह गरमीकी शिर-पीड़ामें शीतल जलमें नहाना लाभदायक है। यह बात हकीम अबूमाहरने लिखी है। सब तरहके सिरके रोगोंमें आरामसे रहना चाहिये। खाने-पीनेमें कमी करनी चाहिये। बहुत हिलना-जुलना मुनासिब नहीं है। दस्त-क़ब्ज़ करनेवाले हानिकर पदार्थ न खाने-पीने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) एक तगारमें पानी भरकर अपने सामने रख लो और अपने तईं चादरसे छिपा लो। फिर कुछ मिट्टीके ढेले आगमें लाल करो। फिर उनमेंसे एक-एक ढेला उस पानीमें डालो और सिर झुका-कर उसकी भाफका बफारा लो। इस तरह बफारे लेनेसे सिरका दर्द आराम हो जायगा।

(४) काकजंघा या मिस्सीके छोटे-छोटे टुकड़े करके औटाओ और सिरको बफारा दो। इसके बाद चन्दन दो भाग और रैंडी एक भाग पानीमें पीसकर सिरपर लेप करो। इससे सर्दी और गरमी दोनों तरहका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(५) भुने हुए और छिले हुए चने ३ तोले लेकर और महीन पीसकर ४ तोले बादामके तेलमें भूँज लो। फिर निशास्ता ३ तोले, सफेद खशखाशके बीज ३ तोले और मिश्री १६ माशे तथा बादामके तेलमें भूँजा हुआ चनोंका आटा—सबको मिलाकर गायके दूधमें डाल दो और मन्दाग्निसे पकाओ; जब हरीरा-सा बन जाय, उतार लो। दूसरी कढ़ाहीमें ३ तोले घी डालकर गरम करो; जब घी आ जावे, उसमें पकाया हुआ हरीरा डालकर चलाओ, जब एकदिल हो जाय, उतार लो। इस हरीरेके गरमागर्म खानेसे सब तरहका सिर-दर्द आराम होता और सिरमें खूब ताक़त आती है। कमज़ोर दिमाग़-वालोंको तो यह हरीरा अमृत ही है।

(६) सफेद चन्दन और तज बराबर-बराबर पानीमें घिसकर और कुछ गरम करके लगानेसे गरमी और सर्दी दोनों तरहका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(७) तरबूजके सफेद बीज और मुचकुन्दके फूल—दोनोंको पानीमें महीन पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे गरमी और सर्दीकी वजहसे हुआ दर्द-सिर आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—अगर दोनों चीज़ें न मिलें, तो किसी एकके लेपसे भी लाभ हो सकता है।

(८) दस, पन्द्रह या बीस ग्रेन ब्रोमाइड आफ पुटास आधी छटाँक पानीमें मिला लो और शीशीपर चार दाग़ लगा दो। एक-एक दाग़ दवा खानेसे सब तरहका सिर-दर्द आराम हो जाता है। यह दवा बहुत ही उत्तम है।

केवल गरमीके सिर-दर्दपर नुसख़े।

(१) धनियाँ ४ माशे और काहू ४ माशे—पानीमें पीस-छानकर और थोड़ी-सी "चीनी" मिलाकर तथा १ तोला "ईसबगोल" छिड़ककर पीनेसे गरमीका सिर-दर्द निश्चय ही आराम हो जाता है।

नोट—चीनीके बदले दो तोले शर्बत नीलोफर मिलाकर पीनेसे और भी ज़ियादा लाभ होता है।

(२) कपूर और चन्दन—गुलाबजलमें पीसकर नाकमें टपकानेसे पित्तका सरसाम और सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(३) कद्दू, काहू, हरा धनियाँ, हरी कासनी और मकोयकी पत्तियाँ—इन सबके रसोंकी ४।५ बूँद नाकमें टपकानेसे पैत्तिक सरसाम और गरमीसे हुआ दर्द-सिर आराम हो जाता है।

नोट—इनमेंसे दो-दोके रसकी या एक ही के रसकी बूँदें नाकमें टपकानेसे भी लाभ होता है।

(४) कपूर या चन्दन सूँघने अथवा दोनों मिलाकर सूँघने अथवा खीरा ककड़ी सूँघनेसे गरमीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(५) ईसबगोलका लुआब ख़तमीके फूलोंमें मिलाकर पतला-पतला लेप करने और इसी दवाके पीनेसे गरमीका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(६) ककड़ीके टुकड़े और कद्दूके ताज़ा छिलके सिरपर रखनेसे गरमीका दर्द-सिर जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(७) ख़तमीके बीज, धनियाँ और गेरू—इनको पानीमें पीसकर सिर और माथेपर लेप करनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(८) महँदीके फूल पानीमें पीसकर मलनेसे गरमीका सिरदर्द आराम हो जाता है।

(९) काहूके बीज पानीमें पीसकर माथेपर लगानेसे गरमीका सिर-दर्द जाता रहता है।

(१०) तिलके वृक्षकी पत्तियाँ पानी या सिरकेमें पीसकर सिरपर मलनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(११) खुरफेके पत्ते पानी या सिरकेमें पीसकर लगानेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१२) सफेद चन्दन पानीमें घिसकर सिरपर लगानेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है। अगर घिसते समय ज़रा-सा कपूर भी मिला लिया जाय तो और भी अच्छा।

(१३) तालाब या कुएँकी काई सिरपर मलनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१४) धनियाँ महीन पीसकर और अण्डेकी सफेदीमें मिलाकर मलनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१५) जौका आटा पानीमें घोलकर लगानेसे गरमीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(१६) ल्हिसौड़ेका लुआब सिरपर लगानेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१७) सालकी लकड़ी जिसे साज भी कहते हैं, पानीमें घिसकर लगानेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१८) गुल रौग़नमें अफीम पीसकर सिरपर मलनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१९) कासनीके बीज गुलाबजल या पानीमें पीसकर मलनेसे गरमीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२०) महँदीकी पत्तियाँ पीसकर सिर और माथेपर लगानेसे गरमीकी शिरपीड़ा आराम हो जाती है।

(२१) बकायनके पत्ते पीसकर सिरपर लगानेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(२२) शीतलचीनी अर्क़ गुलाबमें पीसकर सिरपर लगानेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(२३) अनारके पेड़की जड़ पानीमें पीसकर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(२४) दो तोले इमली पानीमें भिगोकर मल लो; फिर उसमें चीनी मिलाकर पीलो। इससे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(२५) छिले हुए जौ, कद्दूके टुकड़े, काहूके बीज, ईसबगोल, बनफ़शा, ख़तमीके बीज और नीलोफर—इनको जलमें औटाकर सिरपर तरड़ा देनेसे गरमीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

नोट—मुंजिज़ देनेके बाद अगर यह तरड़ा दिया जाय, तो अतीव लाभ हो।

(२६) बकरीका मक्खन सिरपर मलनेसे गरमी और खुश्की दोनोंमेंसे किसी कारणसे हुआ सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(२७) चूना घीमें मिलाकर मलनेसे गरमीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(२८) बनफशा १ तोले, नीलोफर १ तोले, कासनी ६ माशे, गुलाबके फूल ६ माशे, ख़तमी खुब्बाजी २ तोले, ल्हिसौड़े ३ दाने और उन्नाव ३ दाने—इन सबको आध सेर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, छान लो और ३ तोले "तुरंजबीन" मिलाकर रोगीको पिला दो। तीन दिनमें विकार और सिरकी पीड़ा अवश्य जाती रहेगी और पेट भी नरम और साफ हो जायगा।

सर्दीके सिर-दर्दपर हकीमी नुसख़े।

(१) कालीमिर्च, पीपल और लौंग—इन सबको या इनमेंसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दो-एकको "सौंफके अर्क़"में पीसकर नाकमें टपकानेसे सर्दीका दर्द-सिर और सब तरहके शीतके रोग नाश हो जाते हैं।

(२) जूफेकी पत्तियोंका कपड़ेमें छाना हुआ स्वरस नाकमें टपकानेसे सर्दी और कफका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(३) कटहलकी जड़ उबालकर, उसकी कुछ बूँदें नाकमें टपकानेसे सर्दीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(४) बायबिड़ङ्ग, सोंठ और गुड़—तीनोंको गरम जलमें पीसकर नाकमें टपकानेसे सर्दीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(५) चमेलीके फूल गुल रौग़नमें मलकर नाकमें टपकानेसे सिरकी तरी निकल आती और ब्रह्माण्ड साफ हो जाता है।

(६) सब तरहके गरम इत्र सूँघनेसे भेजेमें ताक़त आती है।

(७) सोंठको रैंडीके तेलमें घिसकर और गरम करके सिरपर लगानेसे सर्दीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(८) सहँजनेके पत्ते पानीमें पीसकर और गरम करके लगानेसे सर्दीका सिर-दर्द आराम हो जाता है।

(९) कलौंजी या काला जीरा पानीमें पीसकर मलनेसे सर्दीका सिर-दर्द नाश हो जाता है।

(१०) रैंडी, सोंठ और अजवायन—पानीमें पीसकर और गरम करके सिरपर लगानेसे सर्दीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(११) नरकचूर पानीमें पीसकर—पैरोंके तलवोंपर मँहदीकी तरह लगानेसे सर्दीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१२) निबौलियोंकी मींगी पीसकर सिरपर लगानेसे सर्दीकी सिर-पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१३) रैंडी और एलुआ पानीमें पीसकर और गुनगुने करके लेप करनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) एक बादामकी मींगी सरसोंके तेलमें पीसकर सिरपर मलनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१५) पीपरका महीन चूर्ण नाकमें फूँकनेसे सर्दीकी शिरपीड़ा आराम हो जाती है।

(१६) मोमथाईको रौग़न बनफशामें घोलकर नस्य देनेसे सर्दीका मस्तक-शूल आराम हो जाता है।

आधासीसी नाशक हकीमी नुसख़े।

(१७) सफेद कनेरकी पत्तियाँ छायामें सुखाकर महीन पीस-छान लो। जिस तरफ सिरमें दर्द हो उस तरफके नथनेमें, इसमेंसे दो चावल भर दवा फूँकनेसे खूब छींकें आतीं, नाकसे बहुत-सा पानी गिरता और सिरका दर्द आराम हो जाता है। यह नस्य सचमुच ही बड़ी अच्छी है।

(१८) लाहौरी साबुन थोड़े-से पानीमें घिसकर दोनों आँखोंमें या जिस तरफ दर्द है उस तरफकी आँखमें, सुरमेकी तरह, आँजनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(१९) एक तोले गुलक़न्द-बनफशा नित्य खानेसे सिरका दर्द, आधासीसी, हृदयके रोग और खाँसी ये सब आराम हो जाते हैं।

नोट—बनफशाके फूल १ भाग और क़न्द या मिश्री २ भाग मिलाकर मसलनेसे "गुलक़न्द बनफशा" तैयार हो जाता है।

(२०) गाजरकी पत्तियोंके ऊपर-नीचे घी चुपड़कर उन्हें तवेपर गरम करो और उनका स्वरस निचोड़ लो। इसमेंसे कुछ बूँदें कानमें टपकाने और दो-तीन बूँद नाकमें टपकानेसे बहुत छींक आतीं और आधासीसी आराम हो जाती है। यह नुसख़ा "मुजर्बात अकबरी"का है; अतः हकीम साहब या शाहंशाह अकबरका आज़मूदा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२१) जमालगोटा पानीमें पीस लो। जिस तरफ सिरमें दर्द न हो उस तरफ मलो। जब जलन होने लगे, थोड़े-से गरम पानीसे धो डालो। इस तरह करनेसे आधे सिरका दर्द अवश्य आराम हो जायगा।

नोट—एक मिनट बाद या जलन होते ही दवाको गरम जलसे धो डालना ज़रूरी है, देर करनेसे फफोला होनेका भय है। कहते हैं, इस उपायसे बीस-बीस सालके पुराने दर्द-सिर आराम हो गये।

(२२) जंगली कबूतरकी बीट और राई एक साथ पीसकर सिरपर लगानेसे पुरानी आधासीसी आराम हो जाती है।

(२३) मुर्ग़ीकी बीट और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर पीस लो। अगर दर्द सिरमें बाँई तरफ हो तो इस दवाको दाहनी तरफ लगाओ और यदि दर्द दाहनी ओर हो तो बाँयी तरफ लगाओ।

(२४) हरड़के बीज गरम जलमें पीसकर लगानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(२५) गुल-दुपहरियाके फूलकी पंखड़ियोंका स्वरस नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

नोट—यह मशहूर फूल है। दोपहरके समय खिलता है, इसीसे इसे "गुल-दोपहरिया" कहते हैं।

(२६) नाजबोंके पत्तोंके स्वरसकी चन्द बूँदें अगर दाहनी ओर दर्द हो तो नाकके बाँये नथनेमें और बाँयी ओर दर्द हो तो दाहने नथनेमें टपकानेसे आधासीसी जाती रहती है।

(२७) एक नग कालीमिर्च और उसके बराबर मक्खीका गू—पुत्रवाली स्त्रीके दूधमें पीसकर नाकमें टपकाने और आँखोंमें भी आँजनेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(२८) अरीठेके झाग गरम करके, अढ़ाई बूँदें दोनों नथनोंमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

नोट—अरीठेको पानीमें रगड़नेसे झाग आ जाते हैं। उन झागोंको आगपर गरम करके नाकके दोनों छेदोंमें टपकाओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२९) सिरसके बीज पानीके साथ पीसकर एक कपड़ेमें लुगदीको रख लो। जिस तरफ सिरमें दर्द हो, उस तरफके नथनेमें उसी पोटलीसे अढ़ाई बूँदें टपकाओ; अवश्य आधासीसी आराम हो जायगी।

(३०) नौसादर दो रत्ती और कालादाना दो रत्ती—दोनोंको पानीमें पीसकर और गायके घीमें मिलाकर नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(३१) थोड़ी-सी प्याज, महुएके बीज और चार कालीमिर्च पानीके साथ पीस लो। अगर दाहनी तरफ दर्द हो तो नाकके बाँये नथनेमें और जो बाँयी तरफ पीड़ा हो तो दाहने नथनेमें इस दवाकी चन्द बूँदें टपकाओ। इससे आधासीसी अवश्य आराम हो जायगी।

(३२) कालीमिर्च गायके घीमें पीसकर नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

(३३) समन्दरफलकी मींगी स्त्रीके दूधमें पीसकर नाकके नथनेमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है। अगर दर्द दाहनी ओर हो तो नाकके बाँये नथनेमें दवा टपकाओ और अगर बाँई तरफ दर्द हो तो दाहनी ओरके नथनेमें टपकाओ।

(३४) बन्दाल पानीमें भिगोकर और मल-छानकर दो बूँद नाकमें टपकानेसे सिरकी मलामत बहकर निकल जाती है। सिरके रोगोंके लिए बन्दाल सर्वश्रेष्ठ दवा है। बारीसे होनेवाले आधासीसीके दर्दपर भी यह नुसखा खूब काम करता है।

(३५) अगर अजीर्णसे आधासीसीका दर्द हो, तो १०। १५ जंगी हरड़ कूट-छानकर अन्दाजका "नमक" मिला दो। इस चूर्णको गरम या ताजा पानीके साथ फाँकनेसे पेट साफ होकर आधासीसी आराम हो जाती है। साथ ही सोंठ, अफीम और गोंदको पानीमें पीसकर सिरपर लेप भी करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३६) करंजके बीज गरम जलमें घिसकर थोड़ा-सा गुड़ मिलाओ और गरम करके नास लो। इस उपायसे आधासीसी जाती रहती है।

(३७) गङ्गावतीका रस दो-तीन दिन सिरपर लगाकर धूपमें बैठनेसे आधासीसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३८) चिरमिटीकी जड़ पानीमें पीसकर नास लेनेसे आधासीसी तत्काल आराम हो जाती है।

(३९) कड़वी तोरईंका थोड़ा-सा चूर्ण सावधानीसे नाकमें डालनेसे, पानी बहकर, आधासीसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४०) काग़ज़ी नीबूके रसकी २ बूँदें नाकमें टपकानेसे आधासीसी आराम हो जाती है।

शिरोरोग नाशक मिश्रित नुसख़े।

(१) केवड़ेके अर्क़में सफेद चन्दन घिसकर, एक काँचकी शीशीमें रखकर, ऊपरसे बारीक कपड़ा बाँध दो। इस शीशीको बारम्बार हिला-हिलाकर सूँघनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) सफेद चिरमिटीकी जड़ धोकर पानीमें घिसो और एक कपड़ेमें रखकर सात दिन तक नाकमें रस टपकाओ। इससे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है। रस रोज़ ताज़ा तैयार करना चाहिये।

(३) केशर और बादामको गायके दूधमें पीसकर नास लेनेसे मस्तकके रोग आराम हो जाते हैं।

(४) कुलींजनका चूर्ण सूँघनेसे छींक आतीं और मस्तक हल्का होकर सिरका दर्द मिट जाता है। परीक्षित है।

(५) कूट और अरण्डकी जड़ काँजीमें पीसकर लेप करनेसे मस्तक-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) गूगलको जलमें पीसकर सिरपर लगानेसे सिरका दर्द जाता रहता है।

(७) छुहारेकी गुठली पानीमें घिसकर सिरपर लगानेसे दर्द-सिर जाता रहता है।

(८) कानों और आँखोंके बीचमें, कनपटीपर, चूनेकी कली लगा देनेसे सर्दीका दर्द-सिर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(९) सोंठको दूधमें पकाकर सूँघनेसे किसी भी कारणसे पैदा हुआ सिरका दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) अफीमको गुले रौग़न या सिरकेमें घोलकर लेप करनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(११) चूनेको घीमें मिलाकर लेप करनेसे गरमीका दर्द-सिर जाता रहता है।

(१२) मोमयाईको रौग़न बनफ़शामें घोलकर सूँघनेसे सर्दीका दर्द-सिर चला जाता है।

(१३) अरीठा पानीमें पीसकर दो-चार बूँदें नाकमें टपकानेसे माथेके कीड़े निकल जाते और उनकी वजहसे हुआ दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१४) नीमकी छाल और आँवलोंका काढ़ा पीनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१५) आँवलोंका चूर्ण ना-बराबर घी और शहदमें मिलाकर चाटनेसे सिरका दर्द चला जाता है।

(१६) दूध या जलमें सोंठ पकाकर सूँघने और इसी का लेप करनेसे सिरका दर्द ख़ासकर आधे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(१७) कपूर और धनियाँ पानीमें पीसकर सिरपर लगानेसे अथवा कपूर और धनियाँ जलमें भिगोकर सूँघनेसे सिरका दर्द तत्काल आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१८) महँदीके बीज ३ माशे महीन पीस-छानकर ६ माशे शहदमें मिलाकर सवेरे ही चाटनेसे दिमाग़की कमज़ोरी दूर होकर आँखोंकी रोशनी बढ़ती है।

(१९) अर्क़ कपूर सिरपर मलनेसे दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(२०) कायफलका चूर्ण सूँघनेसे सिरका दर्द आराम हो जाता है।

(२१) बिनौलोंका तेल सिरमें लगानेसे मस्तक-शूल आराम होकर माथा शान्त हो जाता है। इस तेलको तीन या एक दिन लगानेसे ही लाभ होता है।

(२२) सफ़ेद प्याज़ कूटकर सूँघने और चन्दन-कपूर पानीमें पीसकर लेप करनेसे गरमीका दर्द-सिर आराम हो जाता है।

कानके भीतरकी चीज़ निकालनेके उपाय।

(१) गुनगुना तेल कानमें डालो और सिरको उसी तरफ झुकाकर, नकछिकनी और जुन्देबेदस्तर आदि छींक लानेवाली दवाओंको सूँघो। जब छींक आने लगे, नाक और मुँहको बन्द कर लो, ताकि छींकका और भीतरका ज़ोर कानकी तरफ़ फिर जाय और कानकी चीज़ बाहर निकल आवे। जब कानमें गिरी हुई चीज़ बाहर निकल आवेगी, उसकी वजहसे हुआ कान और सिरका दर्द आराम हो जायगा।

(२) अगर कानमें डाँस या मच्छर घुस गया हो, तो कसौंदीके पत्तोंका रस कानमें डालो; जानवर मरकर निकल जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उन्तालीसवाँ अध्याय

नेत्र रोग-वर्णन ।

(आँखोंके रोग)

नेत्र रोगोंके निदान-कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे नेत्र रोग होते हैं:—

(१) गरमी या धूपसे सन्तप्त होकर शीतल जलमें घुसनेसे ।
(२) दूरके पदार्थ देखनेसे ।
(३) नींद आनेपर या समयपर न सोनेसे ।
(४) दिनमें सोने या रातमें जागनेसे ।
(५) अग्नि आदिके अधिक सेवन करनेसे ।
(६) नेत्रोंमें धूल या धूआँ जानेसे ।
(७) वमनका वेग रोकने या बहुत वमन करनेसे ।
(८) पतले पदार्थ ज़ियादा खानेसे ।
(९) खट्टे रसोंको ज़ियादा सेवन करनेसे ।
(१०) मल-मूत्रादि और अधोवायुके वेगको रोकनेसे ।
(११) बहुत दिनों तक रोनेसे ।
(१२) शोकजन्य सन्तापसे ।
(१३) मस्तकमें चोट वग़ैरः लगनेसे ।
(१४) अत्यन्त तेज़ीसे चलनेवाली सवारीपर बैठनेसे ।
(१५) ऋतुचर्यामें लिखी विधियोंके विपरीत चलनेसे ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) काम-क्रोधादिकी वजहसे पैदा हुई पीड़ासे।

(१७) अत्यन्त मैथुन करनेसे।

(१८) आँसुओंका वेग रोकनेसे।

(१९) बहुत ही बारीक पदार्थ या आजकलके छापेके छोटे-छोटे अक्षर देखनेसे।

नोट—ऊपर लिखे हुए कारणोंसे नेत्रोंमें तरह-तरहके रोग होते हैं। बिजलीकी रोशनी या किरासिन तेलकी रोशनीमें पढ़ने-लिखनेसे आज-कल लोग बहुत ही जल्दी अन्धे हो जाते हैं। ज़रा-ज़रासे छोकरे चश्मेके बिना एक क़दम चल नहीं सकते और एक छोटी-सी चिट्ठी भी पढ़ नहीं सकते। मनुष्य-शरीरमें नेत्र सबसे उत्तम और मूल्यवान अङ्ग हैं। नेत्र हैं तो जहान है, अतः नेत्रोंकी रक्षा करना मनुष्यका सबसे ज़रूरी कर्त्तव्य है।

नेत्ररोगकी सम्प्राप्ति।

शिराओंमें रहनेवाले वातादि दोष बिगड़कर और ऊँचे भागोंमें जाकर, नेत्रोंके अवयवोंमें दारुण रोग उत्पन्न करते हैं।

दृष्टि-रोगोंके लक्षण।

दृष्टिके लक्षण।

नेत्रके काले डेलेके बीचमें मसूरकी दालके समान, क्षणमें पटबीजनेके समान और क्षणमें अग्निके प्रकाशके समान चिरस्थायी तेजोंसे सिद्ध जो चीज़ है, उसे ही "दृष्टि" कहते हैं।

नेत्रमें चार पटल।

नेत्रोंमें चार पटल हैं। उनमेंसे सबसे ऊपर रहनेवाला पहला पटल रुधिर और रसके आश्रयसे रहता है। दूसरा पटल मांसके, तीसरा मेदके और चौथा हड्डियोंके आश्रयसे रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पहले पटलमें दोष।

अगर पहले पटलमें दोष स्थित होता है, तो मनुष्य रूपोंको कुछ-कुछ अन्तरसे देखता है। अगर दोष थोड़ा होता है, तो किसी समय साफ भी देखता है।

नोट—पहले पटलको सबसे भीतरका पटल समझना चाहिये; बाहरका पटल नहीं। क्योंकि नेत्र-पटलके भीतरके दोष, अनुक्रमसे, ऊपरके पटलमें आते हैं, यह विदेहका मत है।

दूसरे पटलमें दोष।

अगर दूसरे पटलमें दोष होते हैं, तो मनुष्य अच्छी तरह नहीं देख सकता। उसे मक्खी, मच्छर और बाल वग़ैरः मकड़ीके जालेके समान दीखते हैं। मंडल, पताका और किरणें न होनेपर भी दीखती हैं। प्रकाशमान् वस्तुएँ कुण्डलवत् गोल और परछाईं वग़ैरः ऊँची-नीची या टेढ़ी प्रभृति अनेक तरहकी दीखती हैं। वर्षा और बादल न होनेपर भी दीखते हैं। यह मनुष्य अनेक उपाय करनेपर भी सूईके छेदको नहीं देख सकता।

तीसरे पटलमें दोष।

अगर तीसरे पटलमें दोष होते हैं, तो मनुष्य ऊँचेको देख सकता है, नीचेको नहीं देख सकता। ऊँचेके पदार्थ अत्यन्त बड़े होनेपर भी कपड़ेसे ढके हुएके समान दीखते हैं। यह मनुष्य नाक, कान आदि अवयवोंको विकृत देखता है। अगर दोष नेत्रोंके किसी हिस्सेमें होता है, तो पासकी चीज़ें नहीं दीखतीं। अगर दोष ऊपरके हिस्सेमें होता है, तो दूरकी चीज़ें नहीं दीखतीं। अगर दोष बग़लमें होता है, तो बग़लके पदार्थ नहीं दीखते। अगर दोष चारों तरफ होते हैं, तो ऊपर, नीचेके, अगल-बग़लके पदार्थ अलग-अलग होनेपर भी मिले हुए दीखते हैं। अगर दोष दृष्टिके बीचमें होता है, तो बड़े पदार्थ छोटे दीखते हैं। अगर दोष टेढ़े होते हैं, तो एक पदार्थके दो पदार्थ दीखते हैं। अगर दोष दृष्टिके दो भागोंमें होता है, तो एक चीज़की तीन चीज़ दीखती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर दोष अनियमित रूपसे होते हैं, तो एक चीज़की अनेक चीजें दीखती हैं।

चौथे पटलमें दोष।

अगर दोष दृष्टिके चौथे पटलमें होता है, तो अन्धकार दीखता है; इसलिए इसे "तिमिर" कहते हैं। इससे चारों ओरकी दृष्टि रुक जाती है। इस रोगको "लिंगनाश" भी कहते हैं। अँधेरेके जैसा यह भयङ्कर रोग अगर नया होता है, तो मनुष्यको आकाशमें चन्द्रमा, सूरज, बिजली और तारे आदि दीखते हैं। अगर पुराना हो जाता है, तो चन्द्रमा आदि प्रकाशित पदार्थ भी नहीं दीखते। इसे "नीलिका" और "काँच" भी कहते हैं। लिङ्ग "दृष्टिके तेज"को कहते हैं। जो रोग दृष्टिके तेजको नाश करता है, उसे "लिङ्गनाश" कहते हैं।

दृष्टिरोगोंके नाम और गिनती।

दृष्टि-रोग बारह तरहके होते हैं। उनमेंसे ६ लिङ्गनाश कहलाते हैं और बाक़ी ६ और हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१)

(१) वातज लिङ्गनाश,	(२) पित्तज लिङ्गनाश,
(३) कफज लिङ्गनाश,	(४) रक्तजन्य लिङ्गनाश,
(५) सन्निपातज लिङ्गनाश,	(६) परिम्लायी लिङ्गनाश।

(२)

(१) पित्त-विदग्ध दृष्टि,	(२) कफ-विदग्ध दृष्टि,
(३) धूमदर्शी,	(४) ह्रस्वजात्य,
(५) नकुलान्ध्य,	(६) गम्भीरिका।

नोट—"चरक"में दृष्टिके १४ रोग लिखे हैं। उसमें लिङ्ग-नाश भी दो तरहके माने हैं—(१) सनिमित्तिक लिङ्गनाश, (२) अनिमित्तिक लिङ्गनाश।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातज लिंगनाशके लक्षण।

इस रोगके होनेसे सब तरहके रूप भ्रमण करते हुए, मलिन, किसी क़दर लाल, गदले और विकृत तथा ठण्डे-तिरछे दीखते हैं।

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग लाल हो जाता है तथा नेत्र-मण्डल लाल, चञ्चल और सख्त होता है।

पित्तज लिंगनाशके लक्षण।

अगर मनुष्यको सूरज, पटबीजना, इन्द्रधनुष, बिजली वग़ैरः मोरकी पूँछके समान विचित्र, नीले और काले रंगके दीखें, तो जानना चाहिये कि, "पित्तजनित लिङ्गनाश" हुआ है।

नोट—इस दशामें नेत्र-मण्डल नीला, काँसीके समान अथवा सफेद या पीला होता है। सफेद और पीलापन व्याधिके प्रभावसे होता है।

कफज लिंगनाशके लक्षण।

अगर मनुष्यको पदार्थ चिकने, सफेद, पानीमें डुबोकर निकाले हुए-से और जालके समान दीखें, तो "कफजन्य लिङ्गनाश" समझो।

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग सफेद होता है और नेत्र-मण्डल मोटा, चिकना तथा शंख, कुन्द और चन्द्रमाके समान सफेद होता है।

सन्निपातज लिंगनाशके लक्षण।

अगर मनुष्यको अनेक तरहके या दो तरहके या सब तरहके रूप दिखाई देवें अथवा अनेक रङ्गवाले, कम और ज़ियादा अङ्गवाले या तेजोमय रूप दीखें, तो "सन्निपातज लिङ्गनाश" समझो।

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग विचित्र होता है और नेत्र-मण्डल भी विचित्र होता है।

रक्तज लिंगनाशके लक्षण।

अगर अनेक तरहका अन्धकार दीखे और रूप लाल, हरे, काले या पीले दीखें, तो "रक्तजन्य लिङ्गनाश" समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—इस दशामें नेत्रोंका रंग लाल होता है और मण्डल मूँगे या कमलकी पंखड़ीके समान होता है।

परिम्लायी लिंगनाशके लक्षण।

अगर समस्त दिशायें पीली दीखती हों, सूर्य उदय होता-सा दीखता हो और वृत्त पटबीजनों या आगसे व्याप्त दीखते हों, तो "परिम्लायी लिङ्गनाश" समझो। रुधिरसे मूर्च्छित हुआ "पित्त" परिम्लायी लिङ्ग-नाश करता है।

नोट—पित्तजन्य परिम्लायी लिङ्गनाश होनेसे नेत्रोंका रंग नीला हो जाता है। नेत्र-मण्डल ग्लानिको प्राप्त हुआ अथवा नीला होता है और कालान्तरमें दोषोंका क्षय होनेसे किसी समय पहलेके समान उत्तम हो जाता है।

सूचना—सब तरहके लिङ्गनाशोंमें वातादि दोषोंके व्यथा, दाह और भारीपन प्रभृति अपने-अपने लक्षण भी ज़रूर होते हैं। यद्यपि हमने यहाँ उनका जिक्र नहीं किया है।

पित्त-विदग्ध दृष्टिके लक्षण।

दुष्ट पित्तके दृष्टिके पहले और दूसरे पटलमें जानेसे अगर मनुष्यकी दृष्टि पीली हो जाती है, तो वह मनुष्य सब रूपोंको पीला देखता है, इसे "पित्त-विदग्ध दृष्टि" कहते हैं।

इसी तरह अगर दुष्ट पित्त तीसरे पटलमें चला जाता है, तो मनुष्यको दिनमें कुछ भी नहीं दीखता; मगर रातके समय, शीतके कारण, दृष्टिके अनुकूल और पित्तविहीन होनेसे, सब पदार्थ दीखते हैं।

कफ-विदग्ध दृष्टिके लक्षण।

अगर दुष्ट कफ दृष्टिके पहले और दूसरे पटलमें चला जाता है, तो मनुष्यको सब रूप सफेद दीखते हैं। इस रोगको "कफ-विदग्ध दृष्टि" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर यही कफ दृष्टिके तीनों पटलोंमें चला जाता है, तो "नक्तान्ध्य या रतौंधी" रोग करता है। दिनमें तो दृष्टिपर सूर्यकी कृपा होनेसे, कफका ज़ोर न रहनेसे, मनुष्यको सब पदार्थ दीखते हैं, पर रातको कफका ज़ोर होनेसे कुछ नहीं दीखता।

धूमदर्शीके लक्षण।

शोक, ज्वर, मिहनत और सिरमें धूप आदि लगनेसे दृष्टिको हानि पहुँचती है, तब सारे पदार्थ धुएँसे घिरे हुए दीखते हैं। इसीलिए इस रोगको "धूमदर्शी" कहते हैं, क्योंकि इसके होनेसे सर्वत्र धूआँ-ही-धूआँ दीखता है। यह रोग पित्तकी दुष्टतासे होता है।

ह्रस्वजात्यके लक्षण।

जिस नेत्र रोगके होनेसे, दिनमें कम दीखता है और बड़ी-बड़ी चीज़ें भी छोटी-छोटी दीखती हैं और रातके समय सारी चीज़ें जैसी-की-तैसी दीखती हैं, उसे मुनि लोग "ह्रस्वजात्य" कहते हैं।

नकुलांध्यके लक्षण।

अगर दृष्टि नौलेकी दृष्टिके समान चमकती है और दिनमें रूप अजब ढँगके दीखते हैं, तो "नकुलांध्य" रोग कहते हैं।

गम्भीरिकाके लक्षण।

अगर वातसे उपहत दृष्टि विकृत हो जाती है, सुकड़ जाती है, भीतरकी तरफ चली जाती है और उसमें गंभीर पीड़ा होती है, तो उसे "गम्भीरिका" कहते हैं।

सनिमित्त और अनिमित्त लिंगनाशके लक्षणादि।

सुश्रुतने दृष्टिके बारह रोग कहे हैं, पर चरकादि मुनियोंने सनिमित्त लिङ्गनाश और अनिमित्त लिङ्गनाश—ये दो रोग अधिक कहे हैं।

विषैले फूलोंकी गन्धवाली हवाके स्पर्शन रूप निमित्तसे मस्तकमें अभिताप होकर जो लिङ्गनाश होता है, उसे "सनिमित्तिक लिङ्गनाश" कहते हैं। गदाधर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वैद्यके मतसे यह रोग रक्ताभिष्यन्दके लक्षणोंसे और कार्त्तिक वैद्यके मतसे त्रिदोषज अभिष्यन्दके लक्षणोंसे जाना जाता है।

देव, ऋषि, गन्धर्व, बड़े सर्प और अन्यान्य प्रकाशमय पदार्थोंके देखनेसे दृष्टि उपहत हो जाती है। इसे "अनिमित्तिक लिङ्गनाश" कहते हैं। इस रोगके होनेसे नेत्र तेजवान दीखते हैं, दृष्टि श्याम और निर्मल होती है और उपघातके कारण फट जाती, सुकड़ जाती या कम हो जाती है।

कृष्ण मण्डलगत रोग।

(आँखके काले घेरेके रोग)

काले मण्डलके रोगोंके नाम।

आँखोंके काले मण्डलमें चार रोग होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) सव्रण शुक्र, (२) अव्रण शुक्र,
(३) पाकात्यय, (४) अजका।

सव्रण शुक्रके लक्षण।

अगर नेत्रके काले भागमें हुए शुक्र या फूलेमें गड्ढा-सा दीखे, वह सूईसे बिंधा हुआ मालूम हो, गोल और व्यथायुक्त हो तथा उससे निरन्तर गरम-गरम पानी बहता रहे, तो उसे "सव्रण शुक्र" कहते हैं।

नोट—जिसे संस्कृतमें "शुक्र" कहते हैं, उसे हिन्दीमें "फूला" कहते हैं। "सव्रण"का अर्थ है "घाव सहित", अतः सव्रण शुक्रका अर्थ है "घाव सहित फूला"। अगर सव्रण शुक्र या फूला दृष्टिके पास नहीं होता, एक चमड़ीमें होता है, उससे मवाद या पानी नहीं बहता, पीड़ा नहीं होती और गिन्तीमें एक होता है, तो किसी समय साध्य होता है। किन्तु यदि वह दृष्टिके पास होता है, दूसरी चमड़ीमें होता है, उसमें दर्द होता है, उससे पानी बहता है और एक जगहमें युग्म रूप यानी जोड़लेके जैसा होता है, तो हरगिज़ साध्य नहीं होता; यानी वह चिकित्सासे आराम नहीं होता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अव्रण शुक्रके लक्षण।

अगर अभिष्यन्द या आँखें दुखनेसे पैदा हुआ फूला आकाशके मेघके समान थोड़ा-थोड़ा प्रकाशमान और शंख, चन्द्रमा या कुन्दके फूलके समान सफेद होता है, तो उसे "अव्रण शुक्र" कहते हैं। यह फूला अत्यन्त साध्य होता है।

नोट (१)—यद्यपि नेत्रोंके सारे रोग अभिष्यन्द—आँखें आनेसे होते हैं, पर यह अव्रण शुक्र—फूला तो अभिष्यन्दसे ही होता है, इसीलिये "अभिष्यन्दसे पैदा हुआ" यह विशेषण दिया है।

(२)—अगर अव्रण शुक्र गम्भीर होता है यानी दो-तीन पटलोंमें घुसा हुआ होता है और बहुत पुराना होता है, तो कष्टसाध्य होता है। यद्यपि अव्रण शुक्र अत्यन्त साध्य होता है, तथापि अवस्था-भेदसे कष्टसाध्य भी हो जाता है।

जो अव्रण शुक्र मांस गिर जानेसे नीचा हो, ऊँचा हो, चंचल हो, शिराओंमें पैदा हुआ हो, देखने न दे और दो पटलोंमें पहुँच गया हो, अन्तमें लाल हो और बहुत दिनोंका हो, तो असाध्य है। उसका इलाज करना वृथा है।

अगर आँखोंसे गरम-गरम आँसू गिरते हों, फुन्सी पैदा होगई हों और अव्रण शुक्र—फूला मूँगेके-से आकारका हो, तो असाध्य है। अगर आँखका फूला तीतरके पंखके समान श्यामवर्ण हो गया हो, तो असाध्य है।

अक्षिपाकात्ययके लक्षण।

अगर दोषोंकी वजहसे, नेत्रोंके काले हिस्सेमें चारों ओर सफेदी फैल जावे, तो उसे "पाकात्यय" कहते हैं।

नोट—अगर यह पाकात्यय रोग तीनों दोषोंसे पैदा हुआ हो, तो असाध्य है। इसमें पाक भी होता है; यानी यह पकता भी है, क्योंकि सुश्रुत कहते हैं:—"शोकाश्रु पाकार्तियुते च नेत्रे।"

अजकाके लक्षण।

बकरीकी मैंगनीके समान, पीड़ावाली, किसी क़दर कलाई माइल लाल और चिकने आँसूवाली जो ऊँचाई नेत्रके काले भागमें होती है, उसे "अजकाजात" कहते हैं।

नोट—यह ऊँचाई मेदसे होती है, क्योंकि विदेहने इस ऊँचाईकी पैदायश तीसरे पटलमें कही है। तीसरा पटल मेदके आश्रय रहता ही है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नेत्रके सफेद भागमें होनेवाले रोग।

सफेद भागमें होनेवाले रोगोंके नाम।

नेत्रोंके सफेद हिस्सेमें नीचे लिखे हुए ग्यारह रोग होते हैः—

(१) प्रस्तार्यर्म, (२) शुक्लार्म,
(३) रक्तार्म, (४) अधिमांसार्म,
(५) स्नाय्वर्म, (६) शुक्ति,
(७) अर्जुन, (८) पिष्टक,
(९) शिराजाल, (१०) शिराज पिडिका,
(११) वलास ग्रथित।

प्रस्तार्यर्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें पतला, फैला हुआ, ललाई या सुर्खी माइल जो सफेद चिह्न होता है, उसे "प्रस्तार्यर्म" कहते हैं।

शुक्लार्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें, जो बहुत ही सफेद और नर्म चिह्न होता है, उसे "शुक्लार्म" कहते हैं।

रक्तार्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें, जो लाल और नर्म मांस बढ़ता है, उसे "रक्तार्म" कहते हैं।

अधिमांसार्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें विस्तीर्ण, नरम, गाढ़ा और किसी क़दर कलाई लिये जो मांस बढ़ता है, उसे "अधिमांसार्म" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्नाय्वर्मके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें जो कठिन, फैलनेवाला और स्रावरहित ऊँचा मांस होता है, उसे "स्नाय्वर्म" कहते हैं।

शुक्तिके लक्षण।

नेत्रके सफेद भागमें जो काले रंगका मांसके समान बिन्दु होता है अथवा सीप-सी होती है, उसे "शुक्ति" कहते हैं।

अर्जुनके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें खरगोशके खूनकी जैसी एक बूँद होती है, उसे "अर्जुन" कहते हैं।

पिष्टकके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें—कफ और वायुके प्रकोपसे—चूनेके समान सफेद और मैलसे भरे हुए आईनेकी तरह जो ऊँचा मांस होता है, उसे "पिष्टक" कहते हैं।

शिराजालके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें जालेके समान, कठिन शिराओंसे व्याप्त जो लाल शिराओंका समूह होता है, उसको "शिराजाल" कहते हैं।

शिराज पिडिकाके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें, काले भागके पास, शिराओंसे घिरी हुई जो सफेद फुन्सियाँ पैदा होती हैं, उन्हें "शिराज पिडिका" कहते हैं।

वलास ग्रथितके लक्षण।

आँखके सफेद भागमें—काँसीके समान सफेद, सख्त और जलकी बूँदके समान किसी क़दर ऊँची जो बूँद होती है, उसे "वलास ग्रथित" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्त्मज रोगोंका वर्णन ।

(पलकोंमें होनेवाले रोग)

आँखमें दो पलक होते हैं, उनमें नीचे लिखे हुए इक्कीस रोग होते हैं:—

(१) उत्संगिनी,	(२) कुम्भिका,	(३) पोथकी,
(४) वर्त्मशर्करा,	(५) अर्शोवर्त्म,	(६) शुष्कार्श,
(७) अञ्जन नामिका,	(८) बहलवर्त्म,	(९) वर्त्मबन्धक,
(१०) क्लिष्टवर्त्म,	(११) वर्त्मकर्दम,	(१२) श्याव वर्त्म,
(१३) प्रक्लिन्नवर्त्म,	(१४) अक्लिन्नवर्त्म,	(१५) वातहतवर्त्म,
(१६) वर्त्मार्बुद,	(१७) निमेष,	(१८) शोणितार्श,
(१९) लगण,	(२०) विसवर्त्म,	(२१) कुञ्चन ।

उत्संगिनीके लक्षण ।

नेत्रके नीचेके कोयेमें भीतर मुँहवाली, बाहरसे लाल, भीतरसे राधयुक्त, अपने-आप अनेक फुड़ियोंसे युक्त, स्थूल और खुजलीयुक्त जो फुड़िया खूनके कोपसे होती है, उसे "उत्संगिनी" कहते हैं ।

कुम्भिकाके लक्षण ।

पलकके अन्तमें, कुम्भिका नामक लताके बीजके समान जो ऊँची फुन्सी सन्निपातसे होती और फूटती है तथा फूट-फूटकर मवाद देती है, उसे "कुम्भिका" कहते हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—कुम्भिका लता सख्त ज़मीनमें होती है और उसके फल अनारके समान होते हैं।

पोथकीके लक्षण।

बहनेवाली, खुजली सहित, भारी, लाल सरसोंके समान और पीड़ायुक्त जो फुन्सी नेत्रके कोयेमें होती है, उसे "पोथकी" कहते हैं।

वर्त्मशर्कराके लक्षण।

बहुत छोटी-छोटी सघन फुन्सियोंसे चारों ओरसे घिरी हुई, तीक्ष्ण और मोटी फुन्सी पलकमें होती है, उसे "वर्त्मशर्करा" कहते हैं।

अर्शोवर्त्मके लक्षण।

पलकमें ककड़ीके बीजके समान, हल्की पीड़ावाली, चिकनी और तेज़ अनीवाली जो फुन्सी होती है, उसे "अर्शोवर्त्म" कहते हैं।

शुष्कार्शके लक्षण।

पलकके भीतर खरखरे, जकड़े हुए-से और दारुण बड़े-बड़े अंकुर होते हैं, उन्हें "शुष्कार्श" कहते हैं।

अंजननामिकाके लक्षण।

पलकमें जलन करनेवाली, भौंकने जैसी पीड़ा करनेवाली, लाल, नर्म और मन्दे-मन्दे दर्दवाली जो बारीक फुन्सियाँ होती हैं, उन्हें "अञ्जननामिका" कहते हैं।

बहलवर्त्मके लक्षण।

पलकके-से रंगकी सख्त फुन्सी जो पलकके चारों ओर फैल जाती है, उसे "बहलवर्त्म" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्त्मबन्धकके लक्षण।

जिस रोगसे आँखोंमें जल भरा रहता है, खुजली चलती है, सूई चुभानेका-सा दर्द होता है, पलक सूज जाते हैं और आँखें ठीक नहीं मिचतीं—उसे "वर्त्मबन्धक" कहते हैं।

क्लिष्टवर्त्मके लक्षण।

जिस रोगसे नेत्रके दोनों कोये नर्म रहें, उनमें थोड़ा-थोड़ा दर्द हो, वे सर्वदा लाल रहें और अकस्मात् लाल मवाद देने लग जावें, उसे "क्लिष्टवर्त्म" कहते हैं।

वर्त्मकर्दमके लक्षण।

ऊपर लिखे हुए क्लिष्टवर्त्मके लक्षण हों, पित्तसे मिला हुआ रुधिर जलन करता हो और इस कारण पलक भीजे जाते हों, जिसमें ये लक्षण हों, उसे "वर्त्मकर्दम" कहते हैं।

श्यामवर्त्मके लक्षण।

नेत्रोंके कोये बाहर-भीतरसे काले हों, सूजन हो, वेदना हो, खुजली चलती हो और वे भीगे रहते हों, तो "श्यामवर्त्म" रोग समझो।

प्रक्लिन्नवर्त्मके लक्षण।

कोयोंमें कुछ-कुछ दर्द होता हो, वे बाहरसे सूज हुए और अधिकतर कीचड़ सहित भीगे हुए हों, तो "प्रक्लिन्नवर्त्म" समझो।

अक्लिन्नवर्त्मके लक्षण।

धोनेसे या न धोनेसे अगर नेत्रोंके पलक बारम्बार चिपककर मिल जावें और पकें नहीं, तो "अक्लिन्नवर्त्म" समझो।

वाताहतवर्त्मके लक्षण।

जिसके पलकोंकी सन्धियाँ अलग-अलग हो जावें, पलक मिचें और खुलें नहीं तथा वेदना हो और न भी हो, तो "वाताहतवर्त्म" समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वर्त्मार्बुदके लक्षण ।

अगर पलकोंके भीतर विषम, थोड़ी पीड़ावाली, किसी क़दर लाल और जल्दी बढ़नेवाली सख़्त गाँठ हो, तो "वर्त्मार्बुद" कहते हैं ।

निमेषके लक्षण ।

जिस रोगमें पलकोंमें रहनेवाली वायु पलकोंके खोलने और बन्द करनेवाली नसोंमें जाकर पलकोंको चलायमान कर देती है, उस रोगको "निमेष" कहते हैं ।

शोणितार्शके लक्षण ।

पलकोंमें नर्म अंकुर बढ़ते हैं और जितने ही काटे जाते हैं उतने ही अधिक बढ़ते हैं । यह रोग रुधिरसे होता है । इसे "शोणितार्श" कहते हैं ।

लगणके लक्षण ।

नहीं पकनेवाली, सख़्त, मोटी, थोड़ी पीड़ावाली, खुजली सहित, चिकनी और बेरके समान जो गाँठ पलकमें होती है, उसे "लगण" कहते हैं ।

विसवर्त्मके लक्षण ।

तीनों दोष पलकोंमें बाहरकी ओर सूजन करते हैं और भीतरकी तरफ छेद उत्पन्न करते हैं तथा उनमेंसे कमलकी नालकी तरह नलका स्राव होता है । जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "विसवर्त्म" कहते हैं ।

कुंचनके लक्षण ।

जिस रोगमें वातादि दोषोंसे पलक सुकड़ जाते हैं और इस वजहसे आदमी देख नहीं सकता, उस रोगको "कुंचन" कहते हैं ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पक्ष्म रोग-वर्णन ।

(पलकोंके बालोंके रोग)

पलकोंके बालोंमें दो रोग होते हैं:—

(१) पक्ष्मकोप, और (२) पक्ष्मशात ।

पक्ष्मकोपके लक्षण ।

इस रोगके होनेसे, पलकोंके बाल आँखोंमें घुसते हैं, घुसकर नेत्रोंको बारम्बार घिसते हैं, घिस-घिसकर आँखोंके काले या सफेद भागमें सूजन पैदा करते हैं और जड़से उखड़-उखड़कर गिर जाते हैं। इस रोगको "पक्ष्मकोप" कहते हैं। यह रोग अतीव दारुण है।

पक्ष्मशातके लक्षण ।

पक्ष्माशयमें रहनेवाला पित्त पलकके बालोंको गिरा देता है तथा खुजली और दाह पैदा करता है। इस रोगको "पक्ष्मशात" कहते हैं।

सन्धिज रोग वर्णन ।

(दृष्टि-सन्धियोंमें होनेवाले रोग)

सन्धिज रोगोंके नाम ।

सन्धियोंमें नौ रोग होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) पूयालस, (२) उपनाह, (३) पित्तस्राव,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) कफस्राव, (५) सन्निपातस्राव, (६) रक्तस्राव,
(७) पर्वणी, (८) अलजी, (९) जतुमन्थी।

पूयालसके लक्षण।

पूयालस रोग दृष्टिकी सन्धियोंमें होता है। सन्धियोंमें सूजन होती है और उसमेंसे बदबूदार और गाढ़ी राध बहती है।

उपनाहके लक्षण।

दृष्टिकी सन्धिमें बड़ी, कम पकनेवाली, बहुत खुजलीवाली, सख्त, लाल और थोड़े दर्दवाली जो गाँठ होती है, उसे "उपनाह" कहते हैं।

पित्तज स्रावके लक्षण।

सन्धिके बीचमेंसे लाल और पीला मिला हुआ अथवा केवल पीला और गरम जल बहता है, उसे "पित्तज स्राव" कहते हैं।

नोट—दोष सम्पूर्ण सन्धियोंमें जाकर, आँसुओंकी राहसे अपने-अपने लक्षणोंवाला स्राव उत्पन्न करते हैं। कितने ही आचार्य इसे "नेत्रनाड़ी" भी कहते हैं। वायु सम्बन्धी स्राव नहीं होता, क्योंकि केवल वायुसे स्राव हो ही नहीं सकता।

कफज स्रावके लक्षण।

अगर सफेद, गाढ़ा और चिकना स्राव होता हो, तो "कफजस्राव" समझो।

सन्निपातज स्रावके लक्षण।

सन्धियोंमें पकनेवाली सूजन राध वहाती हो, तो "सन्निपातज स्राव" समझो।

रुधिरजन्य स्रावके लक्षण।

स्राव गरम हो और उसमें विशेष खून गिरता हो, तो "रुधिरजन्य स्राव" समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पर्वणी और अलजीके लक्षण।

नेत्रोंके काले भाग और सफेद भागकी सन्धियोंमें गोल, सूजन-वाली, लाल, बारीक, जलनेवाली और पकनेवाली जो फुन्सी पैदा होती है, उसे "पर्वणी" कहते हैं।

पहले प्रमेहमें लिखे अनुसार लाल, सफेद, फुन्सियोंसे व्याप्त दारुण फुन्सी काले और सफेद भागकी सन्धिमें पैदा होती है, उसे "अलजी" कहते हैं।

जतुग्रन्थिके लक्षण।

पलक और पलकके रोमोंकी सन्धियोंमें उत्पन्न होनेवाली, अनेक आकृतिवाली, कीड़े और खुजली उत्पन्न करनेवाली और नेत्रको बिगाड़-बिगाड़कर पलक और सफेद भागकी सन्धियोंमें जानेवाली ग्रन्थिको "जतुग्रन्थि" कहते हैं।

सारी आँखमें होनेवाले रोग।

सारी आँखमें होनेवाले रोगोंके नाम।

सारी आँखमें सत्रह रोग होते हैं:—

(१) वाताभिष्यन्द, (२) पित्ताभिष्यन्द,
(३) कफाभिष्यन्द, (४) रक्ताभिष्यन्द,
(५) वाताभिष्यन्दजन्य अधिमन्थ,
(६) पित्ताभिष्यन्दजन्य अधिमन्थ,
(७) कफाभिष्यन्दजन्य अधिमन्थ,
(८) रक्ताभिष्यन्दजन्य अधिमन्थ,
(९) सशोथ पाक, (१०) अशोथ पाक,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) हताधिमन्थ, (१२) वात पर्यय,
(१३) शुष्काक्षिपाक, (१४) अन्यतो वात,
(१५) अम्लाध्युषित, (१६) शिरोत्पात,
(१७) शिराहर्ष।

वाताभिष्यन्दके लक्षण।

तोड़ने या भौंकनेकी-सी पीड़ा हो, जड़ता हो, रोमाञ्च हो, खुजली चले, नेत्रोंमें रूखापन हो, सिरमें दर्द हो, नेत्र न चिपकें और शीतल आँसू आवें, तो "वाताभिष्यन्द" समझो।

पित्ताभिष्यन्दके लक्षण।

दाह हो, पकाव हो, शीतल पदार्थोंकी इच्छा हो, नेत्रोंसे धूआँ-सा निकलता हो, आँसू आते हों और नेत्र पीले हों, तो "पित्ताभिष्यन्द" समझो।

कफाभिष्यन्दके लक्षण।

गरम पदार्थोंकी इच्छा हो, भारीपन हो, नेत्रोंमें सूजन हो, खुजली बहुत चले, कीचड़ ज़ियादा आवे, आँखें चिपकें, शीतलता बहुत हो और बारम्बार चिकना स्राव होता हो; यानी चिकना-चिकना मवाद बहता हो, तो "कफाभिष्यन्द" समझो।

रक्ताभिष्यन्दके लक्षण।

आँसुओंमें लाली हो, नेत्रोंमें लाली हो, चारों ओर अत्यन्त लाल रेखाएँ हों और पित्ताभिष्यन्दके और लक्षण हों, तो समझो कि रुधिरके कोपसे अभिष्यन्द हुआ है; यानी खूनके कोपसे आँखें दुखनी आई हैं।

नोट—सारे नेत्रमें पीड़ा होने, आँख आने अथवा आँख दुखनी आनेको "अभिष्यन्द" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अधिमन्थके लक्षण।

जो लोग अभिष्यन्द रोग होनेपर—आँख दुखनी आनेपर उपचार या इलाज नहीं करते, उनका रोग बढ़कर, नेत्रोंमें तेज पीड़ा करनेवाला "अधिमन्थ" रोग हो जाता है। मतलब यह है कि, अभिष्यन्दसे ही अधिमन्थ होता है। अभिष्यन्द चार होते हैं, अतः अधिमन्थ भी चार ही होते हैं।

जो अधिमन्थ जिस अभिष्यन्दसे पैदा होता है, उसमें उसी अभिष्यन्दके सारे लक्षण पाये जाते हैं। इतनी ही विशेषता होती है कि, आधा माथा उखड़ा-सा मालूम होता है और अत्यन्त मथनेकी-सी पीड़ा होती है। मतलब यह है कि, अधिमन्थोंमें अभिष्यन्दोंके ही लक्षण होते हैं। माथेमें वेदना अधिक होती है और चारों अधिमन्थोंमें ही होती है। यह आधे सिरमें वेदना व्याधिके प्रभावसे होती है।

कफाभिष्यन्दसे पैदा होनेवाला अधिमन्थ सात रातके भीतर दृष्टिको नष्ट कर देता है। रक्ताभिष्यन्दसे होनेवाला पाँच रातके भीतर, वाताभिष्यन्दसे होनेवाला छै रातके भीतर और पित्ताभिष्यन्दसे होनेवाला तत्काल ही तीन रातके भीतर दृष्टिको नष्ट कर देता है। मतलब यह है कि, अयोग्य उपचार आदि किये जानेसे अधिमन्थ दृष्टिको नाश कर देता है; उचित उपचार किये जानेसे नहीं। खुलासाः—

कफाभिष्यन्दी अधिमन्थ सात रातमें दृष्टिको नाश करता है।

रक्ताभिष्यन्दी	,,	पाँच	,,	,,	,,
वाताभिष्यन्दी	,,	छै	,,	,,	,,
पित्ताभिष्यन्दी	,,	तीन	,,	,,	,,

सशोथपाक और अशोथपाकके लक्षण।

अगर नेत्रोंमें खुजली चलती हो, वे चिपकते हों, आँसुओंसे भरे हुए हों, पके हुए गूलरके फलकी तरह लाल और सूजनयुक्त तथा पके हुए हों, तो "सशोथपाक" हुआ समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ऊपर कहे हुए सशोथपाकके सभी लक्षण हों—केवल सूजन न हो, तो "अशोथपाक" हुआ समझो।

हताधिमन्थके लक्षण।

जब वाताभिष्यन्दसे पैदा हुआ अधिमन्थ, योग्य उपचारकी उपेक्षासे, ठीक इलाज न होनेसे, उग्र वेदना करके, आँखको बलात्कारसे सुखाकर नष्ट कर देता है, तब उसे "हताधिमन्थ" कहते हैं।

वातपर्ययके लक्षण।

जब वायु किसी समय भौंओंमें और किसी समय नेत्रोंमें बारम्बार घूमती और अनेक तरहकी वेदना करती है, तब "वातपर्यय" कहते हैं।

शुष्काक्षिपाकके लक्षण।

अगर नेत्रोंके पलक दारुण, सख्त और रूखे हो जावें, आँखें मिंची रहें, जलन हो, आँखोंसे साफ न दीखे और खोलते समय आँख अत्यन्त विकृत दीखे, तो "शुष्काक्षिपाक" समझो।

अन्यतोवातके लक्षण।

जब घाटी, कान, सिर, ठोड़ी, मन्या नाड़ी और पीठके बाँस आदि स्थानोंकी "वायु" भौंओं और नेत्रोंमें घोर वेदना करती है, तब "अन्यतोवात रोग" कहते हैं।

नोट—एक स्थानमें रहनेवाली वायु दूसरे स्थानमें जाकर वेदना करती है, इसीसे इस रोगको "अन्यतोवात" कहते हैं।

अम्लाध्युषितके लक्षण।

खट्टे रस वग़ैरः खानेसे जब नेत्र काले, लाल कोनेवाले, दाहयुक्त, सूजन और स्रावयुक्त होते हैं, तब "अम्लाध्युषित रोग" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शिरोत्पातके लक्षण।

वेदना रहित या वेदना सहित नेत्रकी शिरा लाल हो जाय और वह बारम्बार अधिकाधिक विकृत वर्णकी हो जाय, तो "शिरोत्पात रोग" समझो।

शिराहर्षके लक्षण।

अगर मूर्खतासे शिरोत्पात रोगका इलाज नहीं किया जाता, उपेक्षा या लापरवाही की जाती है, तो वही "शिराहर्ष" हो जाता है। शिराहर्ष होनेसे आँखें लाल हो जाती हैं, अत्यन्त स्राव होता है—पानी और कीचड़ आदि बहते हैं तथा आँखोंसे दिखाई नहीं देता।

निराम और साम नेत्रोंके लक्षण।

अगर आँखोंमें वेदना होती हो, लाली ज़ियादा हो, भौंकनेकी-सी पीड़ा हो, शूल चलते हों और आँसू गिरते हों, तो नेत्रको साम अर्थात् आम सहित समझो।

नोट—नेत्रोंके आम सहित होनेकी हालतमें अञ्जन, घृतपान, काढ़ा, भारी भोजन और स्नान मना है। इस हालतमें यानी नेत्रोंकी सामताकी हालतमें लंघन आदि करने चाहिये; क्योंकि लंघन, मधुर भोजन, कड़वा रस और लेप या भाफका सेक—ये नेत्ररोगके लिए सामान्य उपचार हैं।

अगर नेत्रोंमें वेदना मन्दी हो, उनमें खुजली कम चलती हो, सूजन घटी हो, आँसू कम आते हों और वर्ण या रंग निर्मल हो, तो निरामता समझो, यानी नेत्रोंको आम रहित समझो।

नोट—नेत्रोंके निराम होनेकी हालतमें अंजन, घृतपान, भारी भोजन, स्नान और काढ़ा वग़ैरः प्रयोग करनेमें हर्ज नहीं। अगर साम नेत्रोंमें अंजन आदि प्रयोग किये जायँ, तो हानिकी सम्भावना है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आयुर्वेदके मतसे नेत्ररोग—

चिकित्सा और याद रखने योग्य बातें।

(१) पाँवकी दो मोटी नसें सिरमें गई हैं और बहुत-सी नसें नेत्रोंमें पहुँची हैं, इसलिये पैरोंमें जो सेचन, लेपन और मर्दन किया जाता है, वह उन नसोंके द्वारा आँखोंमें पहुँच जाता है। मैलसे, गरमीसे, दबनेसे अथवा ऐसे ही और कामोंसे वे नसें बिगड़ जाती हैं। इसलिये नेत्रोंकी आरोग्यता चाहनेवालोंको पैर खूब धोकर साफ रखने चाहिये, पैरोंमें मालिश करानी चाहिये और सदा उत्तम सुखदायी जूते पहनने चाहिये।

(२) शालि चावल, मूँग, जौ, जांगल देशके पशुओंका मांस, पक्षियोंका मांस, बथुआ, चौलाई, परवल, ककोड़े, करेले और नये बैंगन—"घी"में पकाकर खानेसे नेत्रोंमें सुख होता है। मधुर और कड़वे रस भी नेत्रोंके लिए हितकारी हैं।

मनको एकाग्र करके पाँव धोना, आँखोंमें त्रिफलेके जलके छींटे मारना, पैरोंमें तेल लगाना, हरियाली देखना, पानीमें डुबकी लगाकर नेत्र खोलना, जूते पहनना, स्त्रीका दूध आँखोंमें डालना, हाँडीका घी, मूँग, लाल चावल, जौ, बन कुल्थीका यूष, नयी मूली, नया केला, सोंठ, भाँगरा, मकोय, घीग्वारका पाठा, दाख, धनियाँ, सैंधानोन, लोध, त्रिफला और शहद आदि तथा हल्के पदार्थ ये सब पथ्य हैं। हिकमतके मतसे नीलेथोथेका सुरमा लगाना तथा सौंफ और दोंना-मरुआ पानीमें घिसकर लगाना अच्छा है।

चरपरे, खट्टे, भारी, तीक्ष्ण और गरम पदार्थ, उड़द, लोबिया, मैथुन, शराब, सूखा मांस, खल, मछली, अंकुरवाले अनाज और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जलन करनेवाले खाने-पीनेके पदार्थ, क्रोध, शोक, रोना, मल-मूत्रादि वेग रोकना, दाँतुन करना, नहाना, रातमें भोजन करना, धूपमें फिरना, धूआँमें रहना, बहुत बकना, बारम्बार पानी पीना, महुआ, दही, पत्तोंके साग, तरबूज़, मांस और पान नेत्र-रोगियोंके लिये हानिकारक हैं।

हिकमतके मतसे धूआँ, धूल, गर्म हवा, बहुत ठण्डी हवा, बहुत रोना, बहुत चमकीली चीज़ोंका देखना, चित्त लेटकर सोना, शराब पीना, शराबके अलावः अन्य मादक या नशीली चीज़ोंको सेवन करना, गरिष्ट चीज़ खाना, गन्दना, लहसन, प्याज़ वग़ैरः तेज़ और दिमाग़की तरफ भाफके परमाणु उठानेवाली चीज़ें खाना, अजीर्ण होना, बहुत नहाना, बहुत फ़स्द खोलना, बहुत पछने लगाना, बहुत सोना, दिनमें सोना, बहुत जागना, टकटकी लगाना, बहुत नमक खाना, भरे पेटपर रातको खाना, बहुत मैथुन करना, बुरी और गाढ़ी शराब पीना; पहाड़ी तुलसी, सोया और पका हुआ जैतून काममें लेना, छोटे-छोटे नक़्शे देखना और बारीक अक्षर पढ़ना—ये सब नेत्रोंके लिये हानिकारक हैं।

नोट—सब नशे हानिकारक हैं, पर अफ़ीम हानिकारक नहीं है।

(३) नीचे लिखे हुए उपचारोंसे नेत्ररोगोंकी चिकित्सा की जाती है:—

(१) सेक—पानी वग़ैरःकी बारीक धार नेत्रोंमें डालना।

(२) आश्चोतन—पोटली प्रभृतिसे आँखोंमें दवा डालना।

(३) पिण्डी—नेत्रोंपर लूपड़ी वग़ैरः बाँधना।

(४) विडालक—बाँफनी बचाकर, आँखोंके बाहरी भागपर लेप करना।

(५) तर्पण—आँखोंमें दूध, घी या गरम जल भरना।

(६) पुटपाक—पकाया हुआ रस आँखोंमें डालना।

(७) अंजन—दोष पकनेके बाद, आँखोंमें अंजन आँजना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सेककी विधि।

(आँखोंमें दवाकी धार डालना)

रोगीकी आँखें बन्द कराकर, उनपर चार अंगुल ऊँचेसे, घी वग़ैरःकी पतली धार डालनी चाहिये। इसीको "सेक" कहते हैं।

अगर वात सम्बन्धी रोग हो, तो घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंकी पतली धार डालनी चाहिये। इसे "स्नेहन सेक" कहते हैं।

अगर पित्त या खूनकी पीड़ा हो, तो हरड़ प्रभृतिके रसकी धार आँखोंमें डालनी चाहिये। इसे "रोपण सेक" कहते हैं।

अगर कफकी पीड़ा हो, तो मलको उखाड़नेवाली सोंठ आदिके रसकी धार डालनी चाहिये। इसे "लेखन सेक" कहते हैं।

स्नेहन सेक ६०० मात्रा तक, रोपण सेक ४०० मात्रा तक और लेखन सेक ३०० मात्रा तक करना चाहिये। मनुष्य जितने समयमें आँखको मींचकर खोलता है, उतने समयको "एक मात्रा" कहते हैं।

सेक दिनमें ही करना चाहिये। अगर बहुत ही दुःखदायी रोग हो, तो रातको भी कर सकते हैं।

आश्चोतन-विधि।

(आँखोंमें दवा टपकाना)

रोगीकी आँखोंको दो उँगलियोंसे खोलकर उनमें काढ़े या शहद अथवा दूध-घी वग़ैरःकी बूँदें डालनी चाहिये। ये बूँदें पोटलीसे भी डाली जा सकती हैं और अन्य रीतिसे भी।

मल उखाड़नेके लिये आठ बूँदें, रोपणके लिये दस बूँदें और स्नेहके लिये बारह बूँदें आँखोंमें डालनी चाहिये।

जाड़ेके दिन हों, तो बूँद ज़रा गरम करके डालनी चाहिये और अगर गरमीका मौसम हो, तो शीतल बूँदें डालनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वायुकी पीड़ा हो, तो स्नेह यानी घी वग़ैरः चिकने पदार्थोंकी बूँदें डालनी चाहिये; पित्तकी पीड़ा हो, तो मीठी और शीतल बूँदें डालनी चाहिये; कफकी पीड़ा हो, तो तीक्ष्ण, गरम और रूखी बूँदें डालनी चाहिये।

किसी प्रकारके भी नेत्र दुखनेके रोगमें, आश्चोतन कर्म यानी यह बूँद डालनेका काम रातके समय न करना चाहिये।

पिण्डी-विधि।

(आँखोंपर टिकिया बाँधना)

योग्य दवाओंका कल्क बनाकर उन्हें पानीके साथ सिलपर पीसकर टिकिया बना लो। फिर उसे आँखोंपर रखकर पट्टी बाँध दो। इसीको "पिण्डी" कहते हैं।

वायुका अभिष्यन्द हो यानी वायुसे आँखें दुखती हों, तो चिकनी और गरम दवाओंकी टिकिया बाँधनी चाहिये। पित्तकी पीड़ा हो, तो शीतल दवाओंकी टिकिया बाँधनी चाहिये। कफकी पीड़ा हो, तो रूखी और गरम दवाओंकी टिकिया बाँधनी चाहिये।

विडालक-विधि।

(आँखोंपर लेप करना)

पलकोंके बाल बचाकर, आँखोंके बाहरी भागपर लेप करना चाहिये। यही "विडालक-विधि" है।

चौथाई अंगुल ऊँचा लेप कनिष्ट मात्रा है, तिहाई अंगुल ऊँचा लेप मध्यम मात्रा है और आधा अंगुल ऊँचा लेप उत्तम मात्रा है।

जब तक कल्क या पिसी हुई दवा न सूखे, तभी तक लेप करना ठीक है; सूखनेपर लेप गुणहीन या बेकाम हो जाता है और चमड़ीको भी ख़राब कर देता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तर्पण-विधि।

(आँखोंके भीतर दवा भरना)

जिस घरमें हवा, धूप और धूल न हो उस घरमें रोगीको चित्त लिटाकर, उसकी आँखोंके चारों तरफ, उड़दके सने हुए आटेके मण्डल या घेरे बनाओ। फिर रोगीकी दोनों आँखें बन्द कराकर, उस घेरेमें पतला घी अथवा मण्ड अथवा गरम जल अथवा सौ बारका धोया हुआ घी अथवा दूधसे निकाला हुआ घी उस समय तक भरो जब तक कि पलकोंके बाल न डूबें। जब वे घेरे भर जायँ, रोगीसे धीरे-धीरे आँखें खुलवाओ। यही "तर्पण-विधि" है।

नेत्रोंके रूखे हो जाने, सूख जाने, कुटिल हो जाने, गदले हो जाने, पलकोंके बाल गिर जाने, शिरोत्पात, आँखोंके मुश्किलसे थोड़ी खुलने, तिमिर, अर्जुन, शुक्र, अभिष्यन्द, अधिमन्थ, शुष्काक्षिपाक, सूजन और वात-विपर्यय रोगमें तर्पण करना चाहिये।

तर्पण करनेके बाद आँखोंमें भरी हुई चिकनाईको बाहर करके, आँखोंको सेके हुए जौके आटेसे साफ करना चाहिये। पीछे बढ़े हुए कफको घीके योगसे धूम्रपान कराकर दूर करना चाहिये। एक, पाँच या सात दिन तक तर्पण-क्रिया करनी चाहिये।

ठीक तर्पण होनेसे नींद सुखसे आती है, सुखसे आदमी जागता है, नेत्र साफ होते हैं, नेत्रोंकी ताक़त बढ़ती है, रोग शान्त होता है तथा नेत्र खोलने और बन्द करनेमें हल्कापन होता है।

अगर तर्पणका अतियोग या हीनयोग होता है, तो तकलीफें बढ़ जाती हैं। अतियोग होनेसे नेत्र भारी और गदले रहते हैं, बहुत चिपकते हैं, आँसू भर-भर आते हैं, खुजली चलती है, कीचड़ आती है और सूई चुभानेका-सा दर्द होता है। कम तर्पण होनेसे आँखोंसे पानी गिरता, सूजन और पीड़ा होती, रूखापन और सख्ती होती तथा कीचड़ बहुत आती है; अतः तर्पण खूब विचारकर क़ायदेसे करना चाहिये। अगर अतियोग हुआ हो, तो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रूखा उपचार करना चाहिये और अगर हीन या कम योग हुआ हो, तो स्निग्ध या चिकना उपचार करना चाहिये।

नोट—पलकोंके रोगमें १०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितनी देरी लगे, उतनी देर तक तर्पण करना चाहिये। स्वस्थता, कफ और सन्धियोंके रोगोंमें ५०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक; पित्तकी पीड़ामें ६०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक; काले भागमें रोग हो, तो ७०० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक; दृष्टिके रोगमें ८०० और अधिमंथ तथा वातज रोगमें १००० गुरु अक्षरोंके उच्चारणमें जितना समय लगे उतनी देर तक तर्पण करना चाहिये। बादल हो रहे हों उस दिन, अत्यन्त गरमी या सर्दीके समयमें तथा चिन्ता, भ्रम और उपद्रवोंके शान्त होनेसे पहले नेत्रोंको तर्पण न करना चाहिये।

पुटपाक-विधि।

(पकायी हुई दवाका रस आँखोंमें भरना)

उत्तम चिकना मांस आठ तोले लेकर, उसमें और दवाएँ चार तोले और पतला पदार्थ सोलह तोले भर डालकर सबको एकत्र पीसो और एक गोला बना लो। इस गोलेपर पत्ते लपेटकर डोरा बाँधो और मिट्टीसे लेहसकर सुखा लो। फिर उसे पुटपाककी तरह आगमें पकाओ; जब गोला लाल हो जाय, निकाल लो। गोलेको खोलकर उसमेंसे रस निचोड़ो और रोगीको चित्त सुलाकर उस रसको तर्पणकी विधिसे नित्य आँखोंमें डालो।

नोट—नेत्रोंका तर्पण करने या पुटपाक-विधिसे पकाया रस आँखोंमें भरनेके बाद रोगीको तेजस्वी पदार्थ, पवनका सञ्चार, आकाश और सूर्यकी धूप न दिखाओ।

अञ्जन-विधि।

(आँखोंमें अञ्जन आँजना)

दोष पकनेके बाद नेत्रोंमें अञ्जन आँजना चाहिये। जो चीज़ नेत्रोंमें आँजी जाती है, उसे ही अञ्जन कहते हैं। गोली, रस और चूर्ण—इस तरह अञ्जन तीन तरहका होता है। गोली रूपी अञ्जनसे रस रूपी अञ्जन कमज़ोर है और रस रूपीसे चूर्ण रूपी अञ्जन कमज़ोर है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अञ्जनके स्नेहन, रोपण और लेखन—इन नामोंसे तीन भेद हैं। क्षार, कड़वे और खट्टे रसवाले अञ्जनको "लेखन अञ्जन" कहते हैं। कषैले और कड़वे रसवाले चिकनाई मिले अञ्जनको "रोपण अञ्जन" कहते हैं। मधुर रसवाले चिकनाई मिले अञ्जनको "स्नेहन अञ्जन" कहते हैं।

अञ्जन आँजनेकी सलाई दोनों मुँहकी ओरसे सकुची हुई, चिकनी, आठ अंगुल लम्बी, पत्थर या धातुकी होनी चाहिये। स्नेहन अञ्जनके लिये सोने या चाँदीकी सलाई होनी चाहिये। लेखन अञ्जनके लिये ताम्बे, लोहे या पत्थरकी सलाई होनी चाहिये। रोपण अञ्जन नर्म होता है, अतः उसके लगानेके लिए उँगली ही काफी है।

काले भागके नीचे—आँखके कोये तक अञ्जन आँजना चाहिये। हेमन्त और शिशिर ऋतु यानी जाड़ेमें मध्याह्नके समय अञ्जन आँजना चाहिये। गरमी और शरद् ऋतुमें पूर्वाह्नके समय अथवा अपराह्नके समय अञ्जन आँजना चाहिये। बरसातके मौसममें, बादल न होने और गरमीका ज़ोर न होनेके समय अञ्जन लगाना चाहिये। बसन्तमें किसी समय अथवा सवेरे-शाम दोनों समय अञ्जन कर सकते हैं।

थके हुए, बहुत रो चुकनेवाले, डरे हुए, शराब पीये हुए, नये ज्वरवाले, अजीर्ण रोगी और जिसके मल-मूत्र आदि रुके हों—उनको अञ्जन न लगाना चाहिये।

नेत्ररोग नाशक नुसख़े।

सेक।

(१) अरण्डके पत्ते, अरण्डकी जड़ और अरण्डकी छाल—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

साथ बकरीका दूध पका लो। दिनके समय इस दूधको सुहाता-सुहाता गरम, पतली धारसे, नेत्रोंमें डालनेसे वाताभिष्यन्द या वायुसे आँखें दुखना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) हरड़, बहेड़ा, आँवला और पोस्तके डोडे—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी कर लो। फिर उस लुगदीमें ज़रा-सा अफीमका रस मिलाओ और उसे एक बारीक कपड़ेमें रखकर पोटली बना लो। इस पोटलीको आँखोंके ऊपर रखनेसे सब तरहके अभिष्यन्द या आँखें दुखनेके रोग तत्काल नष्ट हो जाते हैं। जगदुपकारार्थ दयालु मुनियोंने यह नुसखा कहा है।

नोट—भोजन करनेके बाद, दोनों हाथोंके गीले तलवे आपसमें रगड़कर आँखोंपर फेरनेसे तिमिर रोग या अँधेरा दीखनेका रोग आराम हो जाता है। काले तिलोंको पीसकर सिरपर मलने और फिर स्नान करनेसे नेत्र उत्तम हो जाते हैं और वायुकी पीड़ा शान्त हो जाती है। नित्य आँवले मलकर नहानेसे दृष्टिशक्ति या देखनेकी ताक़त बढ़ती है। त्रिफलेके काढ़ेसे आँखें धोनेसे नेत्ररोग आराम हो जाते हैं।

आश्चोतन।

(३) बेल आदि पंचमूल, कटेरी, अरण्ड और सहँजना—इनका काढ़ा बनाकर सुहाती-सुहाती बूँदें आँखोंमें डालनेसे वाताभिष्यन्द या बादीसे आँखें दुखनेका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बेलकी जड़, अरनीकी जड़, सोनापाठाकी जड़, गम्भारीकी जड़, पाटलाकी जड़, कटेरीकी जड़, अरण्डकी जड़ और सहँजनेकी जड़—इनका काढ़ा बनाना चाहिये।

(४) त्रिफलेके काढ़ेकी बूँदें आँखोंमें डालनेसे सब तरहके अभिष्यन्द यानी सब तरहकी नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५) औरतोंका दूध नेत्रोंमें टपकानेसे रक्तपित्त और वातकी नेत्र-पीड़ा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पिण्डी।

(६) अरण्डकी जड़, अरण्डके पत्ते और अरण्डकी छाल—इनको पानीके साथ पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको आँखोंपर रखकर पट्टी बाँधनेसे वायुकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(७) आँवलोंको पानीके साथ सिलकर पीसकर टिकिया बना लो और आँखोंपर रखकर पट्टी बाँधो। इससे पित्तकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(८) सहँजनेके पत्ते सिलपर पीसकर टिकिया बना लो और आँखोंपर रखकर पट्टी बाँधो। इससे कफकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(९) नीमके पत्तोंकी टिकिया आँखोंपर रखकर पट्टी बाँधनेसे पित्त और कफकी पीड़ा शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) सोंठ और नीमके पत्ते पानीके साथ सिलपर पीसो और ज़रा-सा "नोन" मिला दो। फिर इसे गरम करके सुहाती-सुहाती आँखोंपर रखकर पट्टी बाँधो। इस टिकियासे वायु और कफकी पीड़ा, सूजन, खुजली एवं और व्यथाएँ आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(११) त्रिफलाको पानीके साथ सिलपर पीसकर टिकिया बना लो और उसे आँखोंपर रखकर पट्टी बाँध दो। इससे तीनों दोषोंसे उत्पन्न हुई नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१२) हरड़, बहेड़े, आँवले और पोस्तके डोडे—इनको सिलपर पानीके साथ पीसकर, उसमें ज़रा-सा अफ़ीमका रस मिलाकर टिकिया बना लो और आँखोंपर रखकर पट्टी बाँध दो। इससे सब तरहका अभिष्यन्द या आँख दुखना आराम हो जाता है।

(१३) लोधको काँजीमें पीसकर घीमें भूनो; फिर टिकिया बनाकर नेत्रोंपर बाँधो। इससे रक्तज अभिष्यन्द या खूनके कोपसे नेत्र-पीड़ा होना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विडालक।

(१४) मुलेठी, पीला गेरू, सैंधानोन, दारुहल्दी और रसौत—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। इसका नेत्रके बाहर लेप करनेसे नेत्रोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं; खासकर नेत्र-पीड़ा और खुजली तो आराम हो ही जाती है। परीक्षित है।

(१५) रसौतका लेप करनेसे अथवा हरड़का लेप करनेसे अथवा बेलके पत्तोंका लेप करनेसे अथवा बच, हल्दी और सोंठका लेप करनेसे अथवा सोंठ और पीले गेरूका लेप करनेसे नेत्रके रोग नाश हो जाते हैं। लेप नेत्रोंके बाहर, पलकोंके बाल बचाकर करना चाहिये।

(१६) कालीमिर्चोंको भाँगरेके रसमें खरल करके लेप करनेसे अर्म-रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) नीबूके रसको लोहेके बासनमें डालकर, लोहेके दस्तेसे घिसकर, नेत्रोंके बाहर किसी क़दर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करनेसे नेत्रोंकी पीड़ा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१८) सैंधानोन और लोधको आगमें जलाकर, शहद और घीमें मिलाकर लेप करने अथवा अञ्जन करनेसे नेत्र-पीड़ा तत्काल आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१९) रसौत, हरड़ और सोंठको पानीमें पीसकर लेप करनेसे अथवा बच, हल्दी और सोंठको पानीमें पीसकर लेप करनेसे अथवा सोंठ और गेरूको पानीमें पीसकर लेप करनेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

तर्पण।

(२०) सौ बार धोये हुए घीको सुखोष्ण या सुहाते-सुहाते गरम पानीमें मिलाकर, उसमें आँखोंके पलकोंको डुबायें और जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तक डुबाये रख सकें रक्खें, फिर धीरे-धीरे नेत्र खोलें। जब तक शान्ति न हो, ऐसा ही करें। तर्पणमें मात्राका नियम नहीं है। रोगके अनुसार चाहे १०० बार चाहे हज़ार बार तर्पण करें।

नोट—धुन्ध, तिमिर, अर्जुन, शुक्र-फूला, अभिष्यन्द—आँखें दुखना तथा अधिमन्थ आदिमें तर्पण करना चाहिये।

दृष्टि प्रसादनी सलाई।

(२१) शुद्ध सीसेको आगमें बारम्बार तपा-तपाकर, त्रिफलेके रसमें, सोंठके रसमें, घीमें, भाँगरेके रसमें, गोमूत्रमें, शहदमें और बकरीके दूधमें बुझाओ और फिर सलाई बना लो। इस सलाईको आँखोंमें फेरनेसे नेत्र सम्बन्धी सारे रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—त्रिफलादि सातों चीज़ोंमें सात-सात बार या इक्कीस-इक्कीस बार बुझानेसे उत्तम सीसा तैयार होता है। फिर इस सीसेको साँचेमें ढालकर सलाई बना लेनी चाहिये। यह निश्चय ही बड़ी उत्तम सलाई है। परीक्षित है।

स्नेहनी बटिका।

(२२) हरड़ १ भाग और आँवले चार भाग—इनको लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर गोलियाँ बना लो। हर दिन, दो मटर समान गोली आँखोंमें आँजनेसे नेत्रोंका स्राव या पानी बहना, वायु और खूनकी पीड़ा—ये सब शान्त हो जाते हैं।

नोट—नेत्रोंके दोष पकनेपर अंजन करना चाहिये। अंजन सम्बन्धी नियम पढ़-समझकर अंजन करना उचित है।

रोपणी बटी।

(२३) रसौत, हल्दी, दारुहल्दी, मालतीके पत्ते और नीमके पत्ते—समान-समान लेकर, गायके गोबरके रसमें पीसकर गोलियाँ बना लो। डेढ़ मटर समान गोली आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी या रातमें न दीखनेका रोग नष्ट हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेखनी चन्द्रोदय बटिका।

(२४) शंखकी नाभि, बहेड़ेकी मींगी, हरड़, शुद्ध मैनसिल, पीपर, कालीमिर्च, कूट और बच—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, बकरीके दूधमें पीसकर, जौके समान लम्बी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे एक मटर समान गोली पानीमें घिसकर आँजनेसे तिमिर, मांस बढ़ना, काँच, पटल, पलकके भीतरकी गाँठ, रतौंधी और एक सालका फूला—ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

पुष्पहरी वर्त्ति।

(२५) करंजके बीजोंको ढाकके फूलोंके रसकी १०० भावना देकर पीसो और बत्ती बना लो। इन बत्तियोंको आँखोंमें आँजनेसे नेत्रोंकी फूली नाश हो जाती है।

स्नेहन रस क्रिया।

(२६) निर्मलीके फलको "शहद"में घिसकर, उसमें ज़रा-सा "भीमसेनी कपूर" मिलाओ। इस रसको आँखोंमें डालनेसे नेत्र साफ़ हो जाते हैं। परीक्षित है।

रोपण रस क्रिया।

(२७) रसौत, राल, चमेलीके फूल, मैनसिल, समन्दरफेन, सैंधा-नोन, पीला गेरू और कालीमिर्च—इन सबको समान-समान लेकर, शहदमें पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे प्रक्लिन्नवर्त्मका क्लेद तथा खुजली—ये सब नष्ट हो जाते हैं।

लेखन रस क्रिया।

(२८) भीमसेनी कपूरको बड़के दूधमें पीसकर आँजनेसे दो महीने तकका फूला तत्काल आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२९) शहद और घोड़ेकी लारमें कालीमिर्च पीसकर आँजनेसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बहुत नींदका आना उसी तरह नष्ट हो जाता है, जिस तरह सूरजके उदय होनेसे अँधेरेका नाश हो जाता है। परीक्षित है।

स्नेहन चूर्ण।

सफेद सुरमेको आगमें तपा-तपाकर सात बार त्रिफलेके काढ़ेमें और सात बार स्त्रीके दूधमें बुझाओ। फिर इसको महीन पीस-छान-कर नित्य नेत्रोंमें आँजो। यह सुरमा नेत्रोंके लिए अतीव हितकारी। इससे आँखोंके सब रोग नष्ट हो जाते हैं।

रोपण चूर्ण।

थोड़ा-सा खपरिया पीसकर पत्थरके खरलमें भिगो दो। फिर कुछ देर बाद उसका पानी निथारकर दूसरे बर्तनमें ले लो और नीचे जो खपरियाका मैल रह जाय, उसे फेंक दो।

फिर उस निथरे हुए जलको सुखा लो। सूखनेसे एक पपड़ी-सी जम जायगी। उस पपड़ीको पीसकर, उसमें त्रिफलेके काढ़ेकी तीन भावना दो। फिर उसमें पपड़ीका दसवाँ भाग "भीमसेनी कपूर" मिला दो। इस चूर्णको आँखोंमें आँजनेसे सब तरहके नेत्र-रोग नष्ट हो जाते हैं।

लेखन चूर्ण।

मुर्ग़ेके अण्डेका छिलका, मैनसिल, कचिया नमक, शंखका पैंदा, चन्दन और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर खूब महीन पीसो और अतीव बारीक कपड़ेमें छानो। इस चूर्णको नित्य आँखोंमें आँजनेसे फूला, जाला वग़ैरः नाश हो जाते हैं।

मुक्तादि महाञ्जन।

अबींध बढ़िया मोती, भीमसेनी कपूर, काँसीकी भस्म, सीसेकी भस्म, अभ्रक भस्म, शुद्ध तूतिया, ताम्बेकी भस्म और लोहेकी भस्म—इनको छै-छै रत्ती लेकर एकत्र पीस-छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कचिया नमक, मिर्च, पीपर, सैंधानोन, एलुआ, कंकोल मिर्च, हल्दी, मैनसिल, शंख-नाभि, मुर्गेके अण्डेका छिलका, बहेड़ा, केसर, हरड़, मुलेठी, रावटी पत्थर, चमेलीके फूल, तुलसीके नये फूल, सफेद सहँजनेके बीज, दुर्गन्ध करंजके बीज, नीम, कोह, नागरमोथा और रसौत—इनको भी छै-छै रत्ती लेकर पीसो और बारीक कपड़ेमें छान लो।

फिर दोनों तरहके छने हुए चूर्णोंको एकमें मिलाकर उत्तम असली शहदमें पीसो। यही "मुक्तादि महाञ्जन" है। इस अंजनके नेत्रोंमें आँजनेसे अत्यन्त बढ़े हुए नेत्र-रोग भी आराम हो जाते हैं। यह अञ्जन सब तरहके नेत्रोंके रोगोंमें चलता है।

नयन शोणाञ्जन।

पीपर, सैंधानमक, कालीमिर्च, रसौत, सुर्मा, समन्दरफेन, असली देशी मिश्री, सफेद पुनर्नवा, हल्दी, लाल चन्दन, मुलेठी, शुद्ध नीला-थोथा, हरड़, शुद्ध मैनसिल, नीमके पत्ते, लोध, फिटकरी, शंखकी नाभि और भीमसेनी कपूर—इन उन्नीस चीजोंको समान-समान लेकर महीन पीसो और मोटे कपड़ेमें छानो। फिर इसे लोहेके बर्तनमें डालकर, ऊपरसे उत्तम शहद और दूध डालते जाओ और ताम्बेके डण्डेसे ३ घण्टे तक खूब खरल करो। यही "नयन शोणाञ्जन" है। मुनियोंके कहे हुए इस अञ्जनसे नवीन तिमिर, पटल और फूला आराम हो जाते हैं।

चन्द्रोदय बटी।

हरड़, बच, कूट, पीपर, कालीमिर्च, बहेड़ेकी मींगी, शंखकी नाभि और शुद्ध मैनसिल—इन सबको बराबर-बराबर लेकर महीन पीसो और छान लो। फिर छने हुए चूर्णको गायके दूधके साथ बारीक पीसकर गोलियाँ बना लो। यही "चन्द्रोदय बटी" है। इन गोलियोंके आँखोंमें आँजनेसे तीन सालका फूला भी एक महीनेमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आराम हो जाता है। इतना ही नहीं, इनसे सब तरहकी मांसवृद्धि और रतौंधी भी महीने भरमें नष्ट हो जाती है।

चन्द्रप्रभा वर्त्ति।

हल्दी, नीमके पत्ते, पीपल, कालीमिर्च, बायबिड़ङ्ग, नागरमोथा और हरड़—इनको बकरीके मूत्रके साथ महीन पीसकर बत्तियाँ बनाओ और छायामें सुखा लो। साक्षात् सदाशिवकी बनाई यह चन्द्रप्रभा वर्त्ति "शहद"में घिसकर लगानेसे पटल या धुँधले दीखनेको दूर करती है और औरतके दूधमें घिसकर लगानेसे फूलेको नाश करती है।

कणा या मरिच प्रयोग।

कालीमिर्च या छोटी पीपर अथवा सोंठको शहदमें पीसकर आँजनेसे रतौंधी बहुत जल्दी आराम हो जाती है।

लोलिम्बराज महाशयने क्या खूब लिखा है:—

निराकरोति नक्तांध्यं सगोमयरसाकणा।
यथा रतेन रमणी रमणस्य महाबलम्॥

गोबरके रसमें पिसी हुई छोटी पीपर नेत्रोंमें आँजनेसे रतौंधीको इस तरह नष्ट करती है, जिस तरह स्त्री मैथुनसे पुरुषके महान् बलको नष्ट कर देती है।

त्रिफलाद्य घृत।

त्रिफलेका काढ़ा ६४ तोले, भाँगरेका रस ६४ तोले, अड़ूसेका रस ६४ तोले, शतावरका रस ६४ तोले, गिलोयका रस ६४ तोले, आँवलोंका रस ६४ तोले और बकरीका दूध ६४ तोले तैयार रखो।

पीपर, मिश्री, दाख, हरड़, बहेड़ा, आँवला, नीले कमल, दूनी मुलेठी, असगन्धकी जड़ और कटेरी—इनको एक-एक तोले और मुलेठीको दो तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। यह लुगदी प्रायः सोलह तोलेके होगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अब गायका ताज़ा घी ६४ तोले, ऊपरकी लुगदी तथा सातों रस और दूधादिको मिलाकर मीठी-मीठी आगसे पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "महा त्रिफलाद्य घृत" है।

इसकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। भोजनके पहले, भोजनके बीचमें और भोजनके बाद इस घीके पीनेसे सब तरहके नेत्ररोग नाश हो जाते हैं। यह घी खूनके बढ़ने, खूनके बिगड़ने, खूनके बहने, रतौंधी, तिमिर, काँच, नीलिका, पटल, अर्बुद, अभिष्यन्द—आँख दुखना, महा दारुण पद्मकोप और त्रिदोषसे पैदा हुए समस्त नेत्र-रोगोंमें अत्यन्त हितकारी है। परीक्षित है।

दूसरा त्रिफलाद्य घृत।

हरड़ १। सेर, बहेड़े २॥ सेर, आँवले ५ सेर, अड़ूसा ५ सेर और भाँगरा ५ सेर—इन सबको चौगुने यानी १ मन ३५ सेर पानीमें औटाओ; जब चौथाई यानी पौने उन्नीस सेर पानी रह जाय, मल-छान लो।

सफेद चीन, दूनी मुलेठी, दाख, कटेरी, दूनी असगन्धकी जड़, हरड़, बहेड़ा, आँवला, नागकेशर, पीपल, लाल चन्दन, नागरमोथा, त्रायमाण और लाल कमल—इनमेंसे असगन्ध और मुलेठीको आध-आध पाव और बाक़ी दवाओंको छटाँक-छटाँक भर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो।

अब चार सेर घी, चार सेर दूध, ऊपरकी लुगदी और उस काढ़ेको मिलाकर पकाओ; जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इसकी मात्रा भी ६ माशेसे २ तोले तक है। इस घीके पीनेसे तिमिर, काँच, रतौंधी, फूला, स्राव-पानी वग़ैरः बहना, खुजली, सूजन, गदलापन, बिन्दु, अर्म्म और पटल आदि नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। बहुत कहनेसे क्या? इस घीसे सारे ही नेत्ररोग नष्ट हो जाते हैं। सूरज

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

और आगके सामने देखनेसे जिसकी नज़र मारी गई हो, उसके लिये यह घी अमृत है। जिस तरह कपड़ेसे पोंछनेसे आईना साफ हो जाता है; उसी तरह इस घीके पीनेसे नेत्र निर्मल हो जाते हैं।

नोट—शास्त्रमें और हमारी इस विधिमें कल्क और घीके वज़नके सम्बन्धमें बहुत थोड़ा-सा भेद है। हमने जिस तरह इसे बनाकर लाभ उठाया है, उसी तरह लिख दिया है। परीक्षित है।

वासकादि क्वाथ।

अड़ूसेकी छाल, सोंठ, गिलोय, दारुहल्दी, लाल चन्दन, चीता, चिरायता, नीमकी छाल, कुटकी, कड़वे परवलके पत्ते, हरड़, बहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, हल्दी, पीपर और इन्द्रजौ—इनको अढ़ाई-अढ़ाई या तीन-तीन माशे लेकर, दो सेर पानीमें काढ़ा बनाओ और जब आध पाव पानी रह जाय, छानकर सवेरे ही पीओ। इस काढ़ेसे नेत्रके सब रोग, स्वरभंग, पीनस, श्वास और खाँसी वग़ैरः रोग आराम हो जाते हैं।

नागार्जुनाञ्जन।

त्रिफला, त्रिकुटा, सैंधानोन, मुलेठी, शुद्ध तूतिया, रसौत, पुण्डरिया, बायबिड़ङ्ग, लोध और ताम्बा-भस्म—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो। फिर एक खरलमें डालकर, ओसके जलके साथ घोटो और बत्तियाँ बना लो। इन बत्तियोंको दूधमें घिसकर आँजनेसे तिमिर रोग और आँखोंके सामने अँधेरा दीखना; किंशुकके फूलमें घिसकर आँजनेसे आँखकी फूली और दूधमें घिसकर आँजनेसे माड़ा दूर होता है।

त्रिफलादि घृत।

त्रिफला, त्रिकुटा और सैंधानोन समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदीसे चौगुना

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गायका घी और घीसे चौगुना पानी सबको मिलाकर घी पका लो। यह घी नेत्रोंको हितकारी, भेदनकर्त्ता, हृदयको हित, दीपन और कफ-नाशक है। यह घी भी पिया जाता है।

सुरमा आँख।

शुद्ध सीसा २ तोले, शुद्ध काला सुरमा २ तोले, शुद्ध पारा २ तोले, मिश्री २ तोले और समन्दरझाग २ तोले—तैयार रखो।

पहले सीसे और पारेकी कज्जली करो। फिर उसमें सुरमा, मिश्री और समन्दरझाग मिलाकर चार दिन तक बराबर खरल करो। शेषमें, दो तोले भीमसेनी कपूर मिलाकर एक दिन भर और खरल करो। बस, सुरमा तैयार हो गया। सवेरे-शाम इस सुरमेके आँखोंमें आँजनेसे आँखोंकी रोशनी बढ़ती और अनेक नेत्ररोग नाश हो जाते हैं। बहुत बढ़िया सुरमा है।

परमोत्तम सलाई।

एक सेर उत्तम सीसा लेकर आगपर तपाओ और गला-गलाकर १०० बार त्रिफलेके काढ़ेमें बुझाओ। ५० बार भाँगरेके रसमें बुझाओ। ५० बार सोंठके काढ़ेमें बुझाओ। ५० बार घीमें बुझाओ। २५ बार गोमूत्रमें बुझाओ। २५ बार शहदमें बुझाओ और २५ बार दूधमें बुझाओ। इस तरह त्रिफलाके काढ़े, सोंठके काढ़े, भाँगरेके रस, घी, गोमूत्र, शहद और दूध—इन सात चीज़ोंमें ३२५ बार बुझाओ। फिर इस सीसेकी सलाइयाँ बनवा लो।

इस सलाईको दिन-रातमें चार बार नित्य आँखोंमें खाली फेरनेसे आँखोंसे पानी आना बन्द हो जाता और कभी आँखें नहीं दुखतीं। जिसको कम दीखता है उसकी आँखोंकी रोशनी ठीक हो जाती है और बुढ़ापे तक कम नहीं होती।

हमने पहले एक दृष्टि प्रसादनी सलाई लिखी है, उससे भी यह सलाई उत्तम है। हर गृहस्थको बनाकर रखनी चाहिये। कम ख़र्च बाला-नशीन है। याद रखो; आँख नहीं तो जहान नह।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाजवाब अंजन।

लौंग ३ तोले, पीपर ३ तोले, कालीमिर्च ३ तोले, नीलाथोथा ३ तोले, आमाहल्दी ६ तोले, सिरसके बीज ६ तोले, फिटकरीके फूले ६ तोले, शुद्ध नौसादर ६ तोले, शोरा ६ तोले, समन्दरझाग ६ तोले, मूंजकी राख ६ तोले और सुरमा ६ तोले—तैयार करो।

सुरमेको महीन पीस और छानकर अलग रख लो। शोरेको महीन पीस-छानकर अलग रख लो। बाक़ी चीज़ोंको महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो और अलग रख लो। अब सबको एकत्र मिलाकर खरल करो और फिर छानकर शीशीमें रख दो। इसको रातके समय सलाईसे आँखोंमें लगानेसे जाला, धुन्ध और फूली वग़ैरः अनेक रोग आराम हो जाते हैं।

नेत्र-रोगोंकी विशेष चिकित्सा।

(हकीमी नुसख़े)

रमद, अभिष्यन्द या नेत्रपीड़ा नाशक नुसख़े।

(१) आँखें दुखनी आई हों, तो हल्दीमें रँगा हुआ पीला कपड़ा या नीला कपड़ा आँखोंके सामने रखो। ऐसे कपड़ोंसे दुखती आँखोंको बहुत लाभ होता है।

(२) भुनी हुई फिटकरी ४० माशे, कच्ची हल्दी ७ माशे और अफीम ५ माशे—इन सबको पीसकर एक लोहेकी कढ़ाहीमें डालो। ऊपरसे काग़ज़ी नीबूका पाव भर रस डालो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब गाढ़ा हो जाय, उतार लो और खरलमें घोटो। जब गोलियाँ बनाने योग्य हो जाय, गोलियाँ बनाकर सुखा लो। इनमेंसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

एक गोलीको पानीके साथ रगड़कर आँखोंके ऊपर पतला-पतला लेप करो और आँखोंके किनारोंकी तरफसे थोड़ा-थोड़ा भीतर भी लगाओ। कहते हैं, रमद या आँखें दुखनी आनेकी इससे अच्छी और दवा नहीं है।

(३) अगर आँखें दुखनी आवें, तो सरेरूकी फ़स्द लो और जौंकें लगवाओ; मिठाई और खटाईसे परहेज़ रखो। नेत्र दुखने आवें उसी समय; यानी यह रोग होते ही आँखोंपर शीतल जल मत लगाओ।

(४) घीग्वारका गूदा १ माशे और अफीम १ रत्ती—दोनोंको महीन पीसकर घीग्वारके गूदेमें रखो। इसके बाद सबको कपड़ेमें रखकर पोटली बना लो। उस पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरो और दो-एक बूँद इसमेंसे आँखोंके भीतर भी टपकाया करो। इस पोटलीसे नेत्र-पीड़ा या आँखें दुखनेका रोग आराम हो जाता है। कहते हैं, नेत्र दुखनेपर यह लासानी दवा है।

(५) लोध १ माशे, भुनी फिटकरी १ माशे, अफीम ४ रत्ती और इमलीकी पत्तियाँ ४ माशे—इन सबको पीसकर एक कपड़ेमें रख लो और पोटली बनाकर, हर समय, आँखोंपर फेरो। इस पोटलीसे नेत्र-पीड़ा या आँखें दुखनेका रोग आराम हो जाता है। आजमूदा है।

(६) इमलीकी पत्तियाँ, सिरसकी पत्तियाँ, हल्दी और फिटकरी—इन सबको दो-दो माशे लेकर कूट-पीस लो और पोटली बना लो। इस पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरनेसे और कुछ आँखोंके अन्दर टपकानेसे नेत्र-पीड़ा और समल वायु नाश हो जाती है।

(७) कपूर ३ भाग और पठानी लोध १ भाग—दोनोंको पीसकर और पोटली बनाकर एक घण्टे तक जलमें भिगो रखो। फिर इस पोटलीको नेत्रोंपर बारम्बार फेरो। इससे नेत्र-पीड़ा, रमद या अभिष्यन्द रोग आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) पीली हरड़की छाल, काबुली हरड़की छाल, आँवले, रसौत, गेरू, इमलीकी पत्तियाँ, अफीम, भुनी फिटकरी और सफेद जीरा—इन सबको एक-एक माशे लेकर पीस लो और कपड़ेके टुकड़ेमें रखकर पोटली बना लो। इस पोटलीको गुलाबजल या पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरनेसे नेत्र-पीड़ा या रमद नाश हो जाती है।

(९) काला जीरा, सफेद लोध और भुनी फिटकरी महीन पीसकर "घीग्वारके गूदे"में मिलाकर पोटली बना लो। इस पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरनेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(१०) अफीम १ माशे, भुनी फिटकरी २ माशे और इमलीकी पत्ती २० माशे—इन सबको महीन पीसकर पोटली बना लो। इस पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरने और इसका ज़रा-सा पानी आँखोंके भीतर टपकानेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(११) फिटकरी १ माशे और अलसी २ माशे—इन दोनोंको बिना पीसे—साबत पोटलीमें रखकर और पोटलीको पानीमें भिगो-भिगोकर आँखोंपर फेरनेसे आँखोंकी ललाई कम हो जाती है। यह पोटली ललाई काटनेमें उत्तम है।

(१२) जिस दिन आँखोंमें दर्द हो उसी दिन, धतूरेकी पत्तियोंको कुछ गरम करके रस निकाल लो। उस रसको कानमें टपकाओ। अगर दाहिनी आँखमें दर्द हो, तो बाँये कानमें टपकाओ। अगर बाँयी आँखमें दर्द हो, तो दाहिने कानमें टपकाओ। इस उपायसे नेत्रोंकी लालीमें फायदा होता है।

(१३) नीमकी कोंपलें पीसकर रस निकालो और उस रसको कुछ गरम करो। अगर दाहिनी आँखमें दर्द हो, तो बाँये कानमें और बाँयी आँखमें दर्द हो, तो दाहिने कानमें रस टपकाओ। अगर दोनों आँखोंमें पीड़ा हो, तो दोनों कानोंमें टपकाओ। बालकोंके रमद या आँखें दुखनेमें यह नुसख़ा बड़ा मुफीद है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) केवल घीग्वारके गूदेका रस सोते समय आँखोंमें टपकानेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(१५) लोहेके खरलमें लोहेके दस्तेसे नीबूका रस घोटो; जब काला हो जाय, आँखोंके चारों तरफ लेप करो। इससे नेत्र-पीड़ा नाश हो जाती है।

(१६) बड़का दूध आँखोंमें लगानेसे नेत्र-पीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

(१७) बाँसके पत्ते पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको तीन दिन तक आँखोंपर बाँधनेसे आँखोंकी सुर्खी जाती रहती है।

(१८) अनारकी पत्तियाँ पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको सोते समय आँखोंपर बाँधनेसे नेत्रोंकी लाली कट जाती है।

(१९) आँख दुखनी आते ही—अगर दाहिनी आँखमें दर्द हो, तो बाँये अँगूठेके नाखूनमें और अगर बाँयी आँखमें दर्द हो, तो दाहिने अँगूठेके नाखूनमें "मदारका दूध" भर दो। शुरूमें ही इस तरह करनेसे नेत्र-पीड़ासे बहुत तकलीफ उठानी नहीं पड़ती।

(२०) आमकी कैरी पीसकर आँखोंपर बाँधनेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(२१) कटाईके पत्ते पीसकर आँखोंपर बाँधने या उनका स्वरस आँखोंमें टपकानेसे नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है, इसमें शक नहीं। लगाते समय दर्द तो कुछ होता है, पर आराम जादूकी तरह होता है। परीक्षित है।

(२२) छिली हुई मुलेठी पानीमें पीसकर, फिर उसमें रूईके फाहे भिगोकर आँखोंपर रखनेसे आँखोंकी सुर्खी आराम हो जाती है।

(२३) त्रिफला जौकुट करके, रातके समय, पानीमें भिगो दो। सवेरे ही उस जलसे आँखें धोनेसे नेत्रोंका बुखार, खुजली और सुर्खी—ये नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२४) बीस मुण्डी निगल जानेसे एक साल तक और चालीस मुण्डी निगल जानेसे दो साल तक आँख दूखनेका भय नहीं रहता। मूल ग्रन्थकारका परीक्षित है।

(२५) बुधवारको, सूर्योदयके समय, अनारकी एक कली जो फूली न हो, वृक्षसे तोड़कर निगल जानेसे एक साल तक आँख दुखनेकी पीड़ा नहीं होती।

(२६) दारुहल्दी और रसौतको औरतके दूधमें पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे आँखोंकी खुजली और अभिष्यन्द—आँखें दुखनेका रोग ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२७) सरसोंका तेल काँसीके बासनमें डालकर, उस तेलमें सैंधेनोनकी डली घिसो और आँखोंमें आँजो। इससे दुखने आई हुई आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(२८) फिटकरी, सैंधानोन और रसौत—इन तीनोंको स्त्रीके दूधमें पीसकर आँखोंमें आँजनेसे दुखनी आँखें अच्छी हो जाती हैं।

(२९) स्त्रीके दूधमें रसौत घिसकर आँखोंमें आँजनेसे आँखोंका दुखना आराम हो जाता है।

(३०) माठा, बकरीका दूध, सैंधानोन और कड़वा तेल—इनको काँसीकी थालीमें रखकर और थोड़ा-सा "घी" मिलाकर घिसो। इसके आँजनेसे नेत्रोंकी घोर पीड़ा भी नाश हो जाती है।

(३१) अगर गरमीकी वजहसे आँखें दुखनी आई हों—पीड़ा होती हो और लाली बहुत हो; तो महँदीको पानीके साथ पीसकर गोली बना लो। उस गोलीको, रातको सोते समय, गुदापर बाँध दो। उससे गरमी शान्त होकर नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३२) अनारकी कोंपल पीसकर उनमें ज़रा-सी "फिटकरी" मिला दो और फिर पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको आँखोंपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रखकर पट्टी बाँध देनेसे गरमीकी वजहसे आँखें दुखना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३३) अगर गरमीसे आँखें लाल हों, तो रसौतको गुलाबजलमें घिसकर नेत्रोंपर लगाओ। इस उपायसे आँखोंकी ललाई कट जाती है। परीक्षित है।

(३४) रसौत, कचूर, हरड़ और थोड़ी-सी फिटकरी—इन सबको पानीमें महीन पीसकर आँखोंपर लेप करनेसे आँखें दुखना, सूजन और लाली वग़ैरः आराम हो जाते हैं।

(३५) भैंसके दूधमें रूईके फाहे भिगोकर आँखोंपर रखनेसे गरमीसे आँखें दुखना, लाली और सूजन वग़ैरः आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३६) अगर गरमीके कारण आँखोंपर सूजन, दर्द और ललाई हो या पानी बहता हो, तो इमलीके फल २ दाने और आलूबुखारा २ दाने पानीमें भिगोकर और मल-छानकर तथा ज़रा-सी "मिश्री" मिलाकर ७ दिन तक नित्य पिलाओ। इस दवासे नेत्र-पीड़ामें अवश्य लाभ हो जाता है। परीक्षित है।

(३७) अगर कफ या बलग़मके कोपसे आँखें दुखनी आई हों, तो माजूफल, केसर और अफीम इन तीनोंको पानीमें घिसकर और गरम करके आँखोंपर लगाओ।

नोट—बलग़मसे रोग होनेसे आँखोंसे पानी बहुत आता, तथा सूजन और लाली होती है।

(३८) अगर बलग़मके कोपसे आँखें सूज गयी हों, गीड़ आती हों, पानी बहता हो और ललाई हो, तो एक मुट्ठी "त्रिफला" जौकुट करके सेर भर पानीमें औटा लो। जब औट जाय, छान लो और उसमें थोड़ी-सी "फिटकरी" पीसकर मिला दो। इस गरमागर्म काढ़ेसे दिनमें तीन-चार बार आँखें धोनेसे ऊपरकी सारी शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं। परीक्षित हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३६) फिटकरी १ रत्ती, मिश्री १ माशे और अर्क़ गुलाब २ तोले—सबको एकत्र करके महीन पीसो और पतले कपड़ेमें रखकर दो बूँदें दुखती आँखोंमें नित्य टपकाओ। इससे आँखें अच्छी हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४०) रसौत, इमली और अनारदाना—तीनोंको दो-दो तोले लेकर रातके समय पानीमें भिगो दो। सवेरे ही छानकर, उसमें भुनी फिटकरी १ तोले और अफीम २ माशे मिलाकर लोहेके बर्तनमें डालकर पकाओ। जब एकदिल हो जाय, रख दो। इसमेंसे ३ माशे दवा लेकर पाँच तोले अर्क़ गुलाबमें मिलाओ और एक शीशीमें रख दो। इसमेंसे २।३ बूँद दवा सवेरे, दोपहर और शामको आँखोंमें टपकाओ। इससे आसोबचश्म—आँखें दुखना, आँखोंकी ललाई, आँखका ज़ख्म और दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं। यह दवा बालक और जवान सबको उत्तम है। एक सज्जन इसकी बड़ी तारीफ करते और अपना आज़मूदा नुसख़ा कहते हैं।

(४१) कपूर, तुख्मनील सैराई, शबेयमानी भुनी हुई, सुरमा अस्फहानी, कल्मी शोरा, नौसादर, काला सुरमा, बायबिड़ङ्ग और कुश्ता जस्त—हरेक छै-छै माशे लो; फिलफिल दराज़—पीपर, सिरसके पत्ते छायामें सूखे हुए, नीमके पत्ते, छोटी काली हरड़ और साफ किया हुआ चाकसू हरेक एक-एक माशे लो। सबको पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर सात दिन तक अर्क़ गुलाब या अर्क़ सौंफमें खरल करो। इसके बाद शीशीमें रख दो और सील या सर्दीसे बचाओ।

रातको सोते समय इसको बड़े आदमीकी आँखमें सलाईसे लगाओ और बच्चेकी आँखमें उँगलीसे लगाओ। ऊपरसे मलाई रखकर पट्टी बाँध दो। इस दवासे तीसरे दिन बच्चा आँखें खोल देता है। बड़ी उत्तम दवा है। खटाई, धूआँ, तेज़ रोशनी, तेल जलनेकी गन्ध और स्त्री-प्रसङ्गसे परहेज़ रखना ज़रूरी है। पराया

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परीक्षित है। इससे आँखोंकी ख़ारिश-खुजली, पड़वाल—आँखोंमें बाल घुसना, रमद—आँखें दुखना, ललाई और दूध पीनेवाले बालकके काँकड़े आराम हो जाते हैं। यह दवा सभी नेत्र-रोगोंपर मुफ़ीद है।

(४२) कुश्ता जस्त १ तोला, शबेयमानी बिरियान—भुनी हुई ३ माशे, रसौत २ माशे, करनफल १ माशे और कपूर १ माशे—इन सबको २ तोले अर्क़ बर्ग तमर हिन्दी सब्ज़ और दो तोले अर्क़ जंगली गोभीके पत्तोंमें खरल करके जौके आकारकी बत्तियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। ज़रूरतके समय, एक बत्तीको पानीमें घिसकर, जस्तेकी सलाईसे आँखोंमें लगाओ। इससे आँखें दुखनेका रोग फौरन आराम हो जाता है। पराया परीक्षित है।

(४३) शोरा कल्मी ४ तोले, फिटकरी कच्ची, और फिटकरी भुनी हुई,—हरेक डेढ़-डेढ़ तोले और मुश्क काफूरकी टिकिया ३ माशे—इन सबको कूट-पीसकर एक उमदा गुलाब-जलकी बोतलमें मिला दो और बोतलको पूरे १२ घण्टे धूपमें रक्खो। इस दवाकी एक या दो बूँद आँखोंमें रोज़ डालनेसे दो मिनटमें दर्द चश्म—आँखोंकी पीड़ा या आँखें दुखना आराम हो जाता है।

(४४) पीली हरड़का बक्कल, काबुली हरड़का बक्कल, स्याह हरड़का बक्कल, आँवले, उस्तखुद्दूस, बिसफाइज और बर्ग सना मकी हरेक २-२ तोले; मगज़ कशनीज़ ५ तोले, मगज़ बादाम १६ तोले और मिश्री ४० तोले—इन सबको कूट-पीसकर छान लो और रख लो। इसमेंसे एक तोले चूर्ण नित्य खानेसे सब तरहके इमराज़ चश्म या नेत्रके रोग आराम हो जाते हैं। यह सबल नाखूना और रमदकोहना—पुराने आँखें दुखनेके रोगपर तो रामबाण ही है। पराया परीक्षित है।

(४५) लोध, फिटकरी, मुर्दासंग, हल्दी, ज़ीरा हरेक एक-एक रत्ती, अफीम चने-समान, कालीमिर्च ४ दाने और तूतिया उड़दके दाने बराबर लेकर एकत्र पीस लो। फिर पोस्तके चार डोडे लेकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पानीमें भिगो दो। भीगनेपर उनको मल-छान लो और पानीको आगपर पकाओ। जब पानी पकने लगे, ऊपरकी पिसी हुई दवाओंकी पोटली बनाकर उसमें डाल दो। जब अर्क़ या पानी पोटलीमें जज्ब हो जाय, पोटलीको निकालकर उसका धूआँ आँखोंको लगाओ और सुहाती-सुहाती पोटलीसे आँखें सेंको। इस तरह करनेसे जोश चश्म—नेत्र दुखना, आँखोंका दर्द, कड़क, सोजिश आँख और फूल जानेकी वजहसे आँखोंका न खुलना ये सब शिकायतें रफा हो जाती हैं। पराया परीक्षित है।

(४६) फिटकरी भुनी हुई एक भाग, रसौत एक भाग और अफीम आधा भाग—इन सबको नीमके पत्तोंके पानीमें पीसकर आँखोंपर लेप करनेसे रमद या नेत्र दुखनेका रोग शीघ्र ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—नीमके पत्तोंका पानी जितना दरकार हो ले सकते हो; यानी जितने पानीमें लेप बन जाय, उतना काफी है।

(४७) नीमके नर्म पत्ते और जस्तका सफेदा दोनों एकत्र काँसीकी थालीमें तीन दिन तक घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे आँखोंकी गरमी, लाली और पीड़ा वग़ैरः नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४८) केशर, हरड़ और रसौतको अर्क़ गुलाबमें घिसकर आँखोंपर लेप करनेसे आँखोंकी पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४९) बेलके पत्ते पीसकर लुगदी-सी बना लो और गरम करके नेत्रोंपर बाँधो। इससे आँखें दुखना, लाली, कड़क और सूजन ये सब आराम हो जाते हैं।

(५०) आल, केशर और ज़रा-सा गोरोचन—इन तीनोंको एक काँच या पत्थरके साफ बर्तनमें शीतल जल डालकर भिगो दो। जब पानीका रंग लाल हो जाय, उस जलको बारम्बार नेत्र बन्द

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करके नेत्रोंके ऊपर लेप करो। इससे आँखें दुखना, लाली और पीड़ा वगैरः नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(५१) रसौत, लाल चन्दन, बड़ी हरड़, दारुहल्दी, फिटकरी और अफीम—इन सबको बारीक पीसकर, इमलीके पत्तोंके रसमें घोलकर, नेत्रोंके ऊपर पतला-पतला लेप करनेसे नेत्रोंका दुखना शीघ्र ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५२) कदम की छालके रसमें अफीम और फिटकरी डालकर नीबूके रसमें घोटो और गरम करके नेत्रोंपर लगाओ। इससे आँखोंका दुखना आराम हो जाता है।

(५३) सत्यानाशीके पत्ते या फूलका रस या चेप आँखोंमें लगानेसे आँख उठनेका रोग आराम हो जाता है।

(५४) प्याजका रस आँखोंमें डालनेसे आँखोंका उठना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५५) आँवलोंके पत्तोंके रसमें हरड़ और रसौत घिसकर लगानेसे नेत्र दुखना आराम हो जाता है।

(५६) बड़के पत्तोंमें घी चुपड़कर नेत्रोंपर बाँधनेसे नेत्रोंकी पीड़ा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(५७) घीग्वारका गूदा ४ तोले, अफीम २ माशे और फिटकरी २ माशे—सबकी पोटली बनाकर, दिन-रातमें कई बार आँखोंपर फेरनेसे नेत्र-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५८) हरड़, गेरू, सैंधानोन, दारुहल्दी और रसौत समान-समान लेकर और पानीमें पीसकर नेत्रोंपर लेप करो। इससे अभिष्यन्द या नेत्र-पीड़ाका रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रतौंधी नाशक हकीमी नुसख़े ।

(१) कालीमिर्च, कमीला और पीपर बराबर-बराबर लेकर और महीन पीस-छानकर नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(२) काली हरड़, सोंठ और कालीमिर्च—समान-समान लेकर पीस-छान लो और पानीके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(३) प्याज़का स्वरस आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(४) सिरसके पत्तोंका स्वरस आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है।

(५) समन्दरफ़ेनका गूदा बकरीके मूत्रमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(६) लाहौरी नोन महीन पीसकर पानीके साथ खरलमें घोटो और सलाइयाँ बनाकर सुखा लो। इन सलाइयोंके आँखोंमें फेरनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(७) दहीके तोड़में थूक मिलाकर आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(८) अदरखका स्वरस दो-तीन बूँद रोज़ आँखोंमें टपकाने या सोंठ पानीमें घिसकर आँखोंमें टपकानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(९) कालीमिर्च थूकमें घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) कसौंधीके फूलोंका पानी आँखोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(११) सहँजनेकी नरम डालीका स्वरस शहदमें मिलाकर आँखोंमें टपकानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(१२) सात तोले सिरसके बीज महीन पीसकर और आटेमें मिलाकर रोटी पकाओ। तीन दिन तक ऐसी रोटी खानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(१३) गधेका ताज़ा खून दो-तीन दिन नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(१४) मनुष्यके कानका मैल और पीली हरड़की छाल बराबर-बराबर लेकर पीसो और गोलियाँ बना लो। शामके समय पानीमें गोलीको घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(१५) हुक्केके नेचे परका कीट आँखोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(१६) उड़दकी दाल खाने, भेजेको तर रखने, शीतल जलमें गोते लगाने और उसमें आँखें खुली रखनेसे दिनौंधी आराम हो जाती है।

(१७) कड़वी तूम्बीका रस शहदमें मिलाकर आँजनेसे रतौंधी और फूला—ये दोनों नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) करेलेके पत्तोंके रसमें कालीमिर्च घिसकर नेत्रोंमें आँजनेसे तीन दिनमें रतौंधी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१९) अरीठेकी गुठली पानीमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२०) सफेद पुनर्नवाकी जड़ काँजीमें पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे अथवा गायके गोबरके रसमें पुनर्नवाकी जड़ और पीपर घिसकर आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२१) काला सुर्मा, हल्दी, जावित्री, रसौत और चमेलीकी कली—इनको समान-समान लेकर और महीन पीसकर नेत्रोंमें आँजनेसे रतौंधी जाती रहती है।

(२२) "शरह असबाब" नामक ग्रन्थमें लिखा है कि, पीपर और जंगली बच बकरीकी कलेजीमें गाड़कर भूनो। फिर उसमेंसे जो पानी-सा निकले, उसे आँखोंमें आँजो। इस उपायसे रतौंधी आराम हो जाती है। इस अपूर्व उपायकी तारीफ नहीं की जा सकती।

नोट—किसीने लिखा है,—बकरीकी कलेजीके चार भाग कर लो। एक भागमें पीपर महीन पीसकर बिछा दो। फिर उसे आगपर सेको। उसमेंसे पानी-सा निकलेगा, उसे आँखोंमें डालो। इस नुसख़ेकी हिकमतके ग्रन्थोंमें बड़ी तारीफ है।

(२३) साबुन १ माशे, पीपर नग ४ और कालीमिर्च नग २—इनको महीन पीसकर सलाईसे आँखोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

(२४) मर्दके कानके मैलमें "शहद" मिलाकर आँखोंमें लगानेसे रतौंधी आराम हो जाती है।

नोट—रतौंधीवालेको पुष्टिकर पदार्थ खाने चाहिये।

(२५) हल्दी, दारुहल्दी और अगस्तियाके पत्तोंका रस—इनको पीसकर अंजनकी तरह आँखोंमें आँजनेसे रतौंधी नष्ट हो जाती है।

(२६) दुद्धीका दूध आँखोंमें लगानेसे रतौंधी—रातमें न दीखना और दिनौंधी—दिनमें न दीखना आराम हो जाता है।

(२७) ढाकके पेड़की ताज़ा छाल लेकर पीस-कूट लो और रस निचोड़ो। इस रसके लगानेसे रतौंधी जाती रहती है। परीक्षित है।

नोट—रतौंधीको हिकमतमें "अशा" कहते हैं। जब दिनमें बादल होनेपर भी आदमीको नहीं दीखता, तब भी इस रोगको "अशा" कहते हैं; रातके समय रतौंधी-वालेकी आँखकी ज्योति बेकार हो जाती है। यहाँ तक कि उसे तारे भी नहीं दीखते। ज्योंही सूरज अस्त होने लगता है, आँखकी ज्योति कमज़ोर होने लगती है। बहुधा रतौंधीका रोग बड़ी-बड़ी और काली आँखोंवालोंको होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२८) कालीमिर्च, नकछिकनी, जुन्देबेदस्तर और एलुआ—इनको पीसकर नास लेनेसे छींक आती हैं। अगर दिमाग़को भाफके परमाणुओं और रतूबत या तरियोंसे साफ करना हो, तो इस नासको काममें लाना चाहिये। इससे छींकें आकर ख़राब माद्दा निकल जाता और रतौंधीमें लाभ होता है।

(२९) बकरीकी कलेजी, थोड़ी-सी सौंफ और पीपर—इन सबको एक हाँडीमें रखकर ऊपरसे अन्दाज़का पानी भर दो और आगपर पकाओ। पक जानेपर, रोगी इस हाँडीपर अपना सिर झुकाकर बफारा लेवे, तो रतौंधीमें खूब जल्दी लाभ हो। उत्तम नुसख़ा है।

(३०) जंगली बकरीकी कलेजी आगपर रखकर उसपर काली-मिर्च और सौंफ कूटकर बिछा दो। कलेजीमेंसे जो रतूबत निकलेगी उसे दोनों दवाएँ सोख लेंगी। आप उन दोनों दवाओंको कलेजीसे उतारकर सुखा लो और पीस-छानकर रख लो। इसे सुरमेकी तरह आँखोंमें लगानेसे रतौंधी फौरन चली जाती है।

मोतियाबिन्दु नाशक हकीमी नुसख़े।

(१) बच, हींग, सोंठ और सौंफ—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और शहदमें मिला लो। इसमेंसे तीन या चार माशे नित्य खानसे "मोतियाबिन्दु" बढ़ने नहीं पाता और आराम हो जाता है। यह बचकी माजून मोतियाबिन्दु होते ही खानी चाहिये।

(२) रोगके आरम्भमें—निर्मली शहदमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्दु नष्ट हो जाता है।

(३) नौसादरको खूब महीन पीसकर बारीक-से-बारीक कपड़ेमें छान लो। इसको सुरमेकी तरह नेत्रोंमें लगानेसे मोतियाबिन्दु आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) सफेद चिरमिटीका स्वरस काग़ज़ी नीबूके रसमें मिलाकर सवेरे ही नेत्रोंमें लगानेसे मोतियाबिन्दु आराम हो जाता है।

(५) इमलीके दस तोले पत्ते फूलकाँसीके कटोरेमें रखकर, नीमकी लकड़ीके दस्तेसे, जिसकी पैंदीमें पुरानी चालका पैसा जमा हो, खूब घोटो। जब पत्ते घुट जायँ और लुगदी-सी हो जाय, उसे पुत्र जननेवाली औरतके दूधमें दस दिन तक, सवेरेसे शाम तक, खरल करो। इसके लगानेसे मोतियाबिन्दु आराम हो जाता और बढ़ने नहीं पाता। इस रोगका यह आश्चर्यपूर्ण चमत्कारक इलाज है।

(६) सौंफका हरा पेड़ लाकर काँचके या चीनीके बासनमें रख दो। जब वह सूख जाय, पीसकर छान लो। इसको सुरमेकी तरह आँखमें लगानेसे मोतियाबिन्दु नाश हो जाता है।

(७) लड़केवाली औरतके दूधमें "भीमसेनी कपूर" पीसकर आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्दु आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८) हरड़की गुठलीका गूदा साफ़ जलके साथ नव्वे घण्टों तक खरल करके आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्दु नाश हो जाता है; पर यह दवा रोगके उठते ही फायदा करती है।

(९) दो काग़ज़ी नीबुओंका रस और ४ तोले गायका मक्खन मिलाकर खरल करो। फिर उसमें थोड़ा-सा पानी डालकर दो रात-दिन रक्खा रहने दो। इसके बाद उस घीको पानीसे धोओ और दो नीबुओंका रस डालकर फिर खरल करो तथा पानी डालकर दो रात-दिन रक्खा रहने दो और फिर पहलेकी तरह पानीसे धोओ। यह दो बार हुआ। आप इसी तरह पचीस बार दो नीबुओंका रस मिला-मिलाकर खरल करो और घीमें पानी डाल-डालकर दो रात-दिन रक्खा रहने दो। जब २५ बार यह क्रिया कर चुको, तब दवाको तैयार समझो। इसमेंसे सलखसके दो दाने बराबर घी आँखोंमें नित्य

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगानेसे मोतियाबिन्दु आराम हो जाता है; पर यह दवा भी रोगके उठते ही लगानेसे फायदा करती है। मूल ग्रन्थकारकी यह आज़मूदा है। उम्मीद है, अवश्य लाभ दिखावेगी। तकलीफ करनेसे ही अच्छी चीज़ बनती है।

(१०) नीमके बीज महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो। इस चूर्णको सुरमेकी तरह लगानेसे पानी उतरनेमें अवश्य लाभ होता है।

(११) मनुष्यके कानका मैल और हींग बराबर-बराबर लेकर पीस लो और शहदमें मिलाकर लगाया करो। इस उपायसे मोतिया-बिन्दु आराम हो जाता है।

नोट—मोतियाबिन्दुवालेको दूध और मछली हानिकारक हैं।

नेत्रों और पलकोंकी खुजली नाशक नुसख़े।

(१) माजूफल और जंगी हरड़ समान-समान लेकर पानीके साथ पीसकर आँखोंके ऊपर लेप करनेसे आँखों और पलकोंकी खुजली आराम हो जाती है।

(२) मनुष्यके सिरके बालोंको जलाकर राख कर लो। उस राखको महीन पीस-छानकर आँखोंमें लगानेसे आँखों और पलकोंकी खुजली आराम हो जाती है।

(३) अण्डेके छिलकेकी महीन पिसी-छनी राख आँखोंमें लगानेसे नेत्रों और पलकोंकी खुजली जाती रहती है।

(४) नीमके पत्ते एक कुल्हड़ेमें रखकर, उसका मुँह दीबलेसे बन्द कर दो और ऊपरसे कपड़-मिट्टी करके सुखा लो। फिर इस कुल्हड़ेको आगके भीतर रख दो और चार घण्टे बाद निकाल लो। कुल्हड़ेके भीतर पत्तियोंकी राख मिलेगी। उस राखको नीबूके रसमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खरल करके नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंकी खुजली आराम हो जाती है। कहते हैं, यह दवा बड़ी गुणकारी है।

(५) सीसेके एक टुकड़ेको बाँसके चौंगलेपर रगड़ो। रगड़नेसे जो स्याही-सी आवे, उसे उँगलीमें लेकर नेत्रोंमें लगानेसे आँखोंकी खुजली और जलन आराम हो जाती है। इसे "सीसेका मैल" कहते हैं।

नोट—नेत्ररोग-चिकित्सामें जहाँ-जहाँ "सीसा" या "शीशा" शब्द आवे, उसे शीशा धातु समझो, काँच नहीं। इसे ही अँगरेज़ीमें लीड (Lead) कहते हैं।

नेत्र-ज्योति बढ़ानेवाले नुसख़े।

नोट—इस रोगके होनेके बहुत कारण हैं; पर बहुधा बुढ़ापेमें भेजेकी कमज़ोरी और अग्निके मन्द होनेसे नेत्र-ज्योति कम हो जाती है। यद्यपि यह रोग असाध्य है, पर फिर भी इलाजसे न चूकना चाहिये, कि रोग बढ़ जावे।

(१) भेजेका मल शिरोविरेचन नस्य आदि सुँघाकर निकालने और भेजेको बलवान करनेवाली दवाएँ भेजेपर लगाने और पेटमें खिलानेसे यह रोग घट जाता है।

(२) सिरमें कंघी करनेसे बूढ़ोंको नेत्र-ज्योति बनी रहती है; अतः दिनमें कई बार कंघी करना चाहिये। शेख़ल रईस महाशय कहते हैं कि, साफ पानीमें तैरना और उसमें आँखें खोलना भी नेत्र-ज्योतिके लिये गुणकारी है। थोड़ी-थोड़ी क़सरत करना, नीचेके अङ्गोंको दबाना और मलना भी लाभदायक है। बहुत रोना, गर्दनके पीछे पछने लगाना, बहुत भूखा रहना, बहुत मैथुन करना और सोया तथा मसूर आदि क़ब्ज़ करनेवाले पदार्थ ज़ियादा खाना—ये सब नेत्र-ज्योतिके लिये हानिकारक हैं।

(३) मुण्डीका अर्क़ दो या तीन तोले रोज़ पीनेसे नेत्र-ज्योति क़ायम रहती और बढ़ती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) दो से चार तोले तक मुण्डीका शर्बत पीनेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती, दिमाग़में तरी आती और बुख़ारात निकल जाते हैं।

नोट—पाव भर मुण्डीके फूल डेढ़ सेर जलमें रातके समय भिगो दो; सवेरे ही उन्हें औटाओ; जब आध सेर पानी रह जाय, छान लो। इस पानीमें तीन पाव "मिश्री" मिलाकर पकाओ। पकते समय शीतल दूध और पानी मिलाकर छटाँक-छटाँक भर चार-पाँच दफा कोई दस-दस मिनटमें डालो। ऊपर जो मैलकी मलाई जमे उसे झरसे उतार-उतारकर फेंक दो। जब मैल न आवे और चाशनी शर्बतकी-सी गाढ़ी हो जाय, उतारकर कपड़ेमें छान लो और शीतल होनेपर बोतलमें भरकर काग लगा दो। यही "मुण्डीका शर्बत" है। यह निस्सन्देह नेत्र-ज्योतिके लिए लाख रुपयेकी दवा है।

(५) "तिब्ब दाराशिकोही" नामक ग्रन्थमें लिखा है—आध सेर सौंफको महीन कूट-पीसकर छान लो। फिर सौंफके चूर्णके बराबर ही "मिश्री" पीसकर उसमें मिला दो और किसी बर्तनमें रख दो। इसकी खूराक ८ माशेसे १६ माशे तक है। रातको सोते समय एक खूराक खाकर सो रहनेसे कुछ दिनोंमें नेत्र-ज्योति खूब बढ़ जाती है। यह नुसखा आज़मूदा है, फेल नहीं होता, पर महीने दो महीने लगातार सेवन करना चाहिये।

(६) सौंफका अर्क़ खींचते समय अर्क़के ऊपर कुछ चिकना-चिकना पदार्थ आ जाता है, उसे उठाकर शीशीमें रख लो। इस सौंफके इत्रको आँखोंमें नित्य आँजने और ऊपरका नं० ५ सौंफका चूर्ण सोते समय खाकर सो जाने और सवेरे ही "त्रिफलाके भिगोये पानी"से नेत्र और मुँह धोनेसे नेत्र-ज्योति बाज़ी बदकर बढ़ जाती है।

(७) चमेलीके फूलोंकी डंडी तोड़कर तोलो, जितने वह फूल हों उतनी ही "मिश्री" मिला दो और खरल करो। इस दवाके आँखोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ जाती है।

(८) हरड़की गुठलीकी मींगी १२ अदद, पीपर छोटी ५ अदद और कालीमिर्च ५ अदद, इन सबको "आँवलेके रस"के साथ खूब घोटो;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब काली-सी लुगदी हो जाय, छोटी-छोटी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली पानीमें रगड़कर नित्य कुछ दिनों तक आँखोंमें आँजनेसे नेत्र-ज्योति बढ़ जाती है। निस्सन्देह यह उत्तम दवा है।

(९) रीठेके बीजोंकी मींगी निकालकर खरलमें डालो और नीबूके रसके साथ खरल करके गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "थूक" में घिस-घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंके सारे दोष साफ हो जाते और ज्योति बढ़ती है।

(१०) जङ्गी हरड़के छिलके और मिश्री समान-समान लेकर पानीके साथ पीसो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती और आँखोंकी लाली कम हो जाती है।

(११) जो आदमी सोता उठकर, सवेरे ही नित्य, अपना थूक अपनी आँखोंमें आँजा करता है, उसकी आँखोंकी बीमारियाँ नाश हो जाती हैं और फिर नेत्रोंमें कोई रोग होने नहीं पाता।

(१२) निर्मली "पानी"में घिसकर आँखोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती है। इसीको "शहद"में घिसकर आँखोंमें लगानेसे मोतियाबिन्दु कट जाता है।

(१३) प्याजका स्वरस "शहद"में मिलाकर आँखोंमें आँजनेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती और उठता हुआ नया मोतियाबिन्दु नाश हो जाता है।

(१४) सोलह कालीमिर्च, साठ पीपर, पचास चमेलीकी कली और अस्सी तिलके फूल—इन सबको मिलाकर खरल करो और कपड़ेमें छानकर रख लो। इस सुरमेके लगातार लगानेसे नेत्र-ज्योति अवश्य बढ़ जाती है।

(१५) कालीमिर्च १ माशे, पीली हरड़का छिलका २ माशे और छिली हुई हल्दी ३ माशे—इन सबको गुलाब-जल या पानीमें खरल करके सुरमेकी तरह आँखोंमें लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) दो अख़रोट और तीन हरड़की मींगी लेकर जला लो। फिर इसमें चार कालीमिर्च मिलाकर खूब खरल करो और कपड़ेमें छान लो। इसको सुरमेकी तरह लगानेसे नेत्र-ज्योति बढ़ती है। यह "मोजिज़" नामक ग्रन्थका नुसख़ा है।

(१७) आँखोंमें सदा "रसौत" आँजना अतीव गुणकारी है।

(१८) नीमके फूल छायामें सुखाकर पीस लो। फिर इस चूर्णके बराबर "कल्मी शोरा" लेकर इसमें मिला दो और खूब खरल करो। खरल हो जानेपर महीन कपड़ेमें छानो और शीशीमें रख दो। इसको रातके समय, सोनेसे पहले, आँखोंमें आँजनेसे नेत्र-ज्योति खूब बढ़ती है। इससे सबल और नाखूना भी आराम हो जाते हैं।

सबल—माड़ा, फूला, नाखूना और जाला वग़ैरः नाशक नुसख़े।

सबल एक पर्दा है, जो आँखोंके रोगोंमें मलके भर जानेसे पैदा होता है। उसे बोलचालमें माड़ा और फूला कहते हैं। नाखूना आँखके बड़े कोयेकी ओर पैदा होता है। आँखोंकी सफेदीको बोल-चालकी भाषामें "जाला" कहते हैं। यह सफेदी वह है, जो आँखोंकी स्याहीपर पैदा होती है। इस रोगमें माथेकी रग खोलना या फ़स्द सरेरू लेना मुफीद है। इसके बाद नेत्रोंको साफ करनेवाली दवाएँ सेवन करनी चाहिये।

(१) सिरसके बीजोंकी मींगी और खिरनीके बीज समान-समान लेकर कूट-पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको खरलमें डालकर, सिरसके पत्तोंके स्वरसके साथ खरल करो और गोलियाँ बना लो। जब दरकार हो, गोलियोंको स्त्रीके दूधमें घिसकर नेत्रोंमें लगाओ। इससे सबल और आँसका गुल यानी फूला आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) जंगी हरड़, पलाशपापड़ा, लाहौरी नोन और लाल चन्दन—बराबर-बराबर लेकर कूट-छान लो और पानीके साथ खूब घोटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लगानेसे आँखकी फूली नाश हो जाती है।

(३) समन्दरफलकी मींगी, रीठेकी मींगी, खिरनीके बीज और काली हरड़के बीज बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर नीबूके रसके साथ घोटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे सबल-माड़ा और फूली तथा परवाल यानी पलकोंका मोटा होना, उनमें बाल चुभना और बाँफनी गिरना—ये सब आराम होते हैं।

(४) एक तोले लाल चन्दन और एक तोले भुनी हुई फिटकरीको पीस-छानकर, घीग्वारके लुआबके साथ खरल करो और गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली घिसकर आँखोंमें लगानेसे माड़ा, फूली, जाला और नाखूना आराम हो जाते हैं।

(५) बकरीके पित्तेमें शहद मिलाकर नेत्रोंमें लगानेसे नाखूना आराम हो जाता है। यह नुसख़ा हकीम बूअली सेनाका आज़माया हुआ है।

(६) नमक और चीनीको जीभपर लगाओ। जब इनसे जीभ खरदरी-सी हो जाय, तब जीभसे आँखके जालेको चाटो। इस उपायसे आँखोंका जाला नष्ट हो जाता है। मूल ग्रन्थकारका आज़मूदा नुसख़ा है—हमारा नहीं।

नोट—रोगी स्वयं अपनी जीभसे जालेको नहीं चाट सकता, अतः दूसरे आदमीको नमक और चीनी जीभपर लगाकर जालेको चाटना चाहिये।

(७) हल्दी २० माशे, आमाहल्दी २० माशे, दालचीनी २० माशे और नीमके पत्ते २ तोले—इनको कूट-पीसकर छानो और छै महीनेके बछड़ेके पेशाबमें पूरे छै घण्टे तक खरल करो और गोलियाँ बनाकर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छायामें सुखा लो। इन गोलियोंको गुलाब-जलमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे नाखूना आराम हो जाता है।

(८) बारहसिंघेके सींगको पहले पानीमें पीसो। फिर उसे काग़ज़ी नीवुओंके रसमें खूब खरल करो और कालीमिर्चके समान गोलियाँ बना लो। ज़रूरतके समय, इन गोलियोंको घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे आँखोंका जाला शीघ्र ही नाश हो जाता है।

(९) मिश्री २ तोले और लाहौरी नोन १ तोले—इन दोनोंको महीन पीसकर खूब बारीक कपड़ेमें छान लो। इसको सुरमेकी तरह आँखोंमें आँजनेसे आँखोंका जाला और मोतियाबिन्दु आराम हो जाता है।

(१०) कबूतरकी या मुर्ग़ीकी बीट काग़ज़ी नीबुओंके रसमें खरल करके—ताम्बेकी प्यालीमें ढककर रख दो। इसके आँखोंमें लगानेसे माड़ा और फूली या सबल रोग आराम हो जाते हैं।

(११) "तिब्ब फ़रीदी" का लेखक लिखता है कि, अबाबीलकी बीट शहदमें मिलाकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंका जाला दूर हो जाता है। वह इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहता है।

(१२) बारहसिंघेका सींग दूधमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंका जाला कट जाता है।

(१३) लाहौरी नोनकी सलाई दिनमें कई बार आँखोंमें फेरनेसे नाखूना और जाला नष्ट हो जाते हैं।

(१४) कबूतर या चिड़ियाकी बीट पीसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी फूली नष्ट हो जाती है।

(१५) मदारकी जड़ पानीमें घिसकर आँजनेसे नाखूना आराम हो जाता है।

(१६) कटाईकी जड़ नीबूके रसमें घिसकर लगानेसे नेत्र-पीड़ा और जाला आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१७) अरहरके पुराने पेड़की जड़ घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे फूली कट जाती है।

(१८) बड़के पेड़का दूध आँखोंमें भरनेसे आँखोंकी सफेदी या जाला आराम हो जाता है।

(१९) बैंगनकी जड़ पानीमें घिसकर नेत्रमें लगानेसे फूली कट जाती है।

(२०) कड़वी तोरईके बीजोंकी गिरी मीठे तेलमें पीसकर आँखमें लगानेसे फूली जाती रहती है।

(२१) समन्दरझाग पानीमें या बिनौलोंके तेलमें पीसकर आँखोंमें लगानेसे फूली कट जाती है।

(२२) लालेका फूल शहदमें पीसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी सफेदी या जाला नाश हो जाता है।

(२३) लड़केवाली स्त्रीके दूधमें "मिश्री" घिसकर आँखोंमें आँजनेसे बालकोंकी फूली कट जाती है।

(२४) सोंठ, फिटकरी और लाहौरी नोन—समान-समान लेकर कूट-छान लो और नेत्रमें लगाओ। इससे जाला नाश हो जाता है।

(२५) गधेका सुम जलाकर और महीन पीसकर आँखोंमें लगानेसे जाला कट जाता है।

(२६) प्याजका लाल पानी कुछ दिन लगातार आँखोंमें लगानेसे नाखूना आराम हो जाता है।

(२७) तेजपात महीन पीसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी अँधेरी, नाखूना और मोतियाबिन्दु ये सब आराम हो जाते हैं।

(२८) जङ्गार, समग़ अरबी—बबूलका गोंद और सफेदा काशगरी—बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ पीसकर बत्ती बना लो। इस बत्तीको पानीके साथ घिसकर आँखोंमें लगानेसे सबल-माड़ा, फूली, नाखूना और ख़ारिश या खुजली ये सब नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२९) चालीस माशे आँवले जौकुट करके दो घण्टे तक पानीमें औटाओ और छान लो। इस पानीको, दिनमें तीन बार, नित्य आँखोंमें टपकानेसे आँखकी फूली कट जाती है।

(३०) नौसादर और फिटकरी बराबर-बराबर लेकर पीसो और खूब बारीक कपड़ेमें छान लो। इसे सुरमेकी तरह आँखोंमें आँजनेसे फूली, माड़ा, सबल और रतौंधी आराम होती, तरी सूखती और ज्योति बढ़ती है।

(३१) आध सेर प्याज़को कूटकर उसका रस निकालो और उसमें एक कपड़ा तर करके छायामें सुखा लो। फिर उस कपड़ेकी बत्ती बनाकर बड़े शकोरेमें रखो और उसमें पाव भर मीठा तेल भर दो। बत्तीको जलाकर, उसकी लौपर, लौसे ऊँचा, एक और कोरा शकोरा ईंटोंपर औंधा रख दो। कोरे शकोरेमें जो काजल लगे, उसे उतारकर रख लो। इस काजलके आँजनेसे कुछ दिनोंमें फूली कट जाती है। कहते हैं, यह फूलेकी सर्व्वोत्तम दवा है।

(३२) पीली हरड़की छाल, बहेड़ेकी छाल, आँवले, नीमकी छाल, गिलोय, चिरायता, लाल चन्दन, शाहतरा, ख़स और मुण्डीके फूल—सबको एक-एक तोले लेकर काढ़ा बनाओ और शीतल होनेपर बीस माशे "शहद" मिलाकर पीओ। इस काढ़ेके पन्द्रह दिन पीनेसे जाला-फूली आदिमें बड़ा उपकार होता है।

नोट—दसों चीज़ोंको तीन-तीन माशे लेकर काढ़ा पकाओ और काढ़ेके शीतल होनेपर ३।४ माशे शहद मिलाकर पीलो। हमारी रायमें इस तरह अच्छा होगा।

(३३) बैंगनकी जड़ लाकर उत्तम गुलाबजलमें खरल करो और बेर समान गोलियाँ बनाकर छायामें सुखा लो। ज़रूरतके समय एक गोलीको अर्क़ गुलाब या पानीमें घिसकर आँजनेसे फूला कट जाता है। पराया परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३४) पीली हरड़का छिलका, बहेड़ेका छिलका, आँवलेका छिलका, काली हरड़, काबुली हरड़का छिलका, गुले सुर्ख, गुले उस्तखुद्दूस—हरेक ७ माशे लो। साफ धनियाँ ३ तोले, उमदा तुरञ्जबीन २॥ तोले, रौग़न बादाम साफ ४ तोले, चीनी सफेद १५ तोले और उत्तम शहद १५ तोले—इन सबका इतरीफल बना लो। मात्रा ७ माशेसे १ तोले तक। यह इतरीफल सिर और आँखोंके रोगोंपर बेनज़ीर है। पराया परीक्षित है!

(३५) पारा १ तोला, शुद्ध जस्त १ तोला, सिक्का १ तोला और शुद्ध राँगा १ तोला—इन चारोंको लोहेकी कढ़ाहीमें डालकर, ऊपरसे ताज़ा नीमकी छाल पाव भर डाल दो। फिर इन सबपर एक मिट्टीका प्याला औंधा रक्खो, जिससे ये सब ढक जावें। प्याले और कढ़ाहीकी सन्धोंको रूई मिली मुलतानी मिट्टीसे बन्द कर दो। अब कढ़ाहीको अँगीठीपर रखकर नीचेसे खूब कोयले जलाओ। थोड़ी देरमें छाल जलकर राख हो जायगी और पारा वग़ैरः चारों पदार्थ सुरमेके जैसे काले हो जायँगे। उस स्याह पदार्थको निकालकर, महँदीके पत्तोंके रस, अनारदानेके रस और खट्टी बूँदी यानी खटकलके रसमें ७ दिन तक घोटकर सुखा लो। फिर महीन मलमलके कपड़ेमें छानकर रख लो। इसके लगानेसे नज़रकी कमज़ोरी और आँखोंकी खुजली निश्चय ही आराम हो जाती है। पराया परीक्षित है।

(३६) शुद्ध काला सुरमा ५ तोले लेकर सौंफके पत्तोंके एक सेर अर्क़में घोटो और सूख जानेपर रख लो। यह सुरमा आँखोंमें ताक़त लानेमें अद्वितीय या बेनज़ीर है। इसको "सुरमा बादियानी" कहते हैं। पराया परीक्षित है।

(३७) नीमकी कोंपल २६ माशे, बकायनकी कोंपल २६ माशे, चूल्हेकी मिट्टी २ माशे, कल्मी शोरा २ माशे, फिटकरी २ माशे, कालीमिर्च ४ माशे और कपूर २ रत्ती—इनको शीशा धातुके बर्तनमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

डालकर नीमके डण्डेसे २४ घण्टे तक खरल करो। सूखनेपर छानकर रख लो। इसके लगानेसे जाला, फूला, नाखूना, मोतियाबिन्दु और नजला उतरना—ये सब आराम होते हैं। इसका नाम "सुरमा सब्ज" है। पराया सुपरीक्षित है।

(३८) विलायती साबुन, काली हरड़, कालीमिर्च, सोनामाखी, शबेयमानी, कल्मी शोरा, कपूर, मोतीकी सीप, तुख्म सरीह, काला सुरमा, अनारकी बिना खिली कली, बालछड़ और दालचीनी—इनमेंसे हरेक छै-छै माशे लो; सफ़ेद सुरमा १ तोले, अफीम ३ माशे, रसौत ३ माशे, पठानी लोध ३ माशे, गुले सुर्ख़ ३ माशे, केशर ३ माशे और दारुहल्दी ३ माशे इन सबको तैयार रखो। इनमें जो पीसने लायक़ हों उन्हें पीस-कूट लो। फिर सबको खरलमें डालकर नीचे लिखे हुए अर्क़ोंके साथ खरल करो और चिलगोज़े जैसी बत्तियाँ बना लोः—

(१) बकायनके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(२) कासनीके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(३) चमेलीके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(४) मकोयके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(५) बबूलके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(६) भाँगरेके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(७) कुकरौंधेके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(८) सद वर्गका अर्क़—६ माशे।
(९) अनारके पत्तोंका अर्क़—६ माशे।
(१०) नीमके फूलोंका अर्क़—६ माशे।
(११) चमेलीके फूलोंका अर्क़—६ माशे।
(१२) शीशमके फूलोंका अर्क़—६ माशे।
(१३) घीग्वारका अर्क़—६ माशे।
(१४) अर्क़ गुलाब—२ तोले।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इनमेंसे एक गोली लेकर, एक बूँद पानीके साथ पत्थरपर घिसो और आँखोंमें आँज दो। इन गोलियोंसे आँखोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं। पराया सुपरीक्षित है।

(३६) सिरसकी ताज़ा पत्तियाँ लाकर खूब घोटो और कपड़ेमें रखकर रस निचोड़ लो। फिर उसे छानकर तीन दिन तक एक चीनी या काँचके बासनमें रख दो। इसके बाद उसमेंसे निकालकर एक पुख्ता काँचकी शीशीमें रक्खो और इसमें चार या पाँच ग्रेन "एमोनिया क्लोराइड" (साफ की हुई नौसादर) डाल दो। यह आँखोंमें डालनेका "लोशन" है। इसमेंसे एक-एक बूँद सवेरे-शाम आँखोंमें डालो। अगर तकलीफ हो, तो सिर्फ एक समय ही डालो। अगर इतना भी न सहा जाय, तो एक दिन बीचमें देकर डालो। यह दवा आँखमें डालकर तीन घण्टे बाद शीतल जलसे आँखें धोलो। इससे फूला, जाला, धुन्ध और सुर्खी आराम होती हैं। पराया परीक्षित है।

(४०) देशी तूतिया ६ माशे, गायका घी ५ तोले, खट्टी बूटीका पानी ५ तोले और पीली कौड़ी नग १—इनको तैयार करो। पहले कौड़ी और तूतियाको जला लो, फिर सब दवाओंको ज़स्तकी खरलमें डालकर खरल करो। जब 'मरहम बन जाय और घुटते-घुटते घीकी चिकनाई न रहे, तब उसे ज़स्तकी सलाईसे आँखोंमें डालो। इस मरहमसे फूला नाश हो जाता है। पराया परीक्षित है।

(४१) कूजेकी मिश्री १ तोले, कल्मी शोरा १ तोले, रसौत १ तोले और शुद्ध नीलाथोथा २ माशे—इनको तैयार करो। पहले मिश्री और शोरेको खूब खरल करो। फिर इसमें नीलाथोथा मिला दो और खरल करो। अन्तमें रसौत भी मिला दो और इतना खरल करो कि, घुटते-घुटते सुरमा-सा हो जाय, शेषमें पानी डालकर घोटो और गोलियाँ बना लो। ज़रूरतके वक्त एक गोलीको पानीके साथ

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रगड़कर सलाईसे आँखोंमें आँजो। इन गोलियोंसे धुन्ध, फूला और जाला वग़ैरः आँखके रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४२) एकदमसे सफेद गधेका पेशाब आध पाव और फिटकरी दो तोलेको मिलाकर इतना खरल करो कि, पेशाब घुटते-घुटते सूखकर सुरमा-सा हो जावे। इस सुरमेके आँखोंमें आँजनेसे पुराने-से-पुराना फूला आराम हो जाता है। इस सुरमेके लगानेवालेको खटाईसे परहेज रखना चाहिये। दो-तीन बार परीक्षा की है। दो-दो और तीन-तीन सालके फूले आराम हो गये। पाँचमेंसे चार केसोंमें सफलता हुई। परीक्षित है।

(४३) परवालको मोचनेसे उखाड़कर वहाँ दो-तीन दफा मेंडकका खून लगाइये। हमेशाको आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(४४) सुरमा अस्फहानी २॥ तोले, जुन्दुल हिजर १॥ माशे, कालीमिर्च आठ अदद, नीलवृक्षके बीज ३ माशे, शीतलचीनी ३ माशे, रसौत ३ माशे, चाकसू साफ किया हुआ ३ माशे, जस्तका सफेदा ३ माशे, शुद्ध पारा ३ माशे, सिक्का ३ माशे, आगपर फुलाई हुई फिटकरी १ माशे, त्रिफला भुना हुआ १ माशे, कपूर १ माशे, कल्मी शोरा २ माशे, कच्ची हल्दी २ माशे, देशी अजवायन ३ माशे, सिरसके बीजोंकी मींगी साफ की हुई ३ माशे, छोटी इलायची ३ माशे, अबींध मोती ३ माशे, शुद्ध अफीम ३ माशे, ममीरा चीनी १॥ माशे, संग-बसरी १॥ माशे, ताम्बेकी भस्म १॥ माशे, तुलसीके पत्तोंका रस १ तोला और अर्क़ गुलाब पाव भर—इन सबको तैयार करो।

पहले पारे और सिक्केको आगपर रखकर पिघला लो। रसौत और अफीमको थोड़े-से गुलाब-जलमें घोटकर मिला लो। फिर बाक़ी दवाओंको पीस-छानकर एक खरलमें डालो। ऊपरसे आगपर पिघलाये हुए पारे और सिक्केको तथा हल की हुई रसौत और अफीम तथा तुलसीके पत्तोंके रसको डाल दो और खूब खरल करो। जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

घुटते-घुटते सूखा चूर्ण हो जाय, महीन कपड़ेमें छानकर शीशीमें भर दो। इसका नाम "मोतियोंका सुरमा" है। इसके आँखोंमें आँजनेसे आँखोंकी कमज़ोरी, फूला, जाला और नाखूना वग़ैरः प्रायः सभी नेत्ररोग आराम हो जाते हैं।

(४५) काला सुरमा १५ तोले, कफेदर्या, शबेयमानी बिरियाँ—भुनी हुई, कल्मी शोरा, जस्तका कुश्ता या सफेदा हरेक ६।६ माशे; नमक लाहौरी, नमक साँभर, नमक चूड़ी, कपूर, छोटी इलायचीके बीज, फिलफिल दराज़—छोटी पीपर, हरेक तीन-तीन माशे और फिलफिल स्याह १ माशे—लाकर रखो। पहले तीन दिन त्रिफलाके भिगोये पानीमें खरल करो और फिर एक दिन नीमके नर्म पत्तोंके रसमें खरल करके सुखा लो। इसका नाम "काफूरी सुरमा" है। इस सुरमेके आँखोंमें लगानेसे जाला, धुन्ध, सुर्ख़ी, नजला उतरना वग़ैरः आँखोंके रोग आराम हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

(४६) जङ्गली कबूतरकी बीट साफ करके खरलमें डालो और घोटते-घोटते सुरमेकी तरह बारीक कर लो। इसको आँखोंमें आँजनेसे धुन्ध, जाला, ख़ारिश—खुजली, आँखोंसे पानी जाना आदि नेत्ररोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

(४७) काला सुरमा २ तोले, नीलवृक्षके बीज ६ माशे, केलोमल ६ माशे, कालीमिर्च ३ माशे और केशर १ माशे—इनको पीस-छानकर महीन कपड़ेमें छान लो और शीशीमें रख दो। इसको आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी कमज़ोरी जाती रहती है।

ढलका नाशक नुसख़े।

नोट—बिना इच्छाके हर समय आँखोंसे जो पानी-सा या आँसू बहा करते हैं, उसे "ढलका" कहते हैं। इस रोगमें पहले मुंजिज़ देकर जुलाब देना चाहिये और इसके बाद और दवाएँ सेवन करानी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१) पीली हरड़के बीज २ भाग, बहेड़ेकी मींगी ३ भाग और आँवलोंके बीजोंकी गरी १ भाग—इनको पीस-छानकर पानीके साथ गोलियाँ बना लो। जरूरतके समय, इन्हें पानीके साथ पीसकर नेत्रोंमें लगाओ। इनसे आँखोंकी खुजली और ढलका आराम हो जाता है।

(२) जङ्गली हरड़, माजूफल, बालछड़ और पीली हरड़की छाल—बराबर-बराबर लेकर जलमें महीन पीसो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीके साथ पीसकर आँखोंके अन्दर और आँखोंके इर्द-गिर्द लगानेसे ढलका बन्द हो जाता है।

(३) घोड़ेका ऊपरका दाँत, पानीमें रगड़कर, आँखोंमें लगानेसे पानीका उतरना बन्द हो जाता है।

(४) आबनूसकी लकड़ी घिसकर आँखोंमें लगानेसे ढलका आराम हो जाता है।

(५) पीली हरड़की छाल और अञ्जरूत बराबर-बराबर लेकर और पीसकर नेत्रोंमें लगानेसे ढलका आराम हो जाता है।

(६) कुन्दरको जलाकर, गुलाब-जलमें मिला लो और उससे आँखें धोओ। इससे ढलका आराम हो जाता है।

कंजापन नाशक नुसख़े।

(१) अगर जन्मसे कंजापन हो, तो उसका इलाज नहीं हो सकता। फिर भी अत्यन्त काली स्त्री या हबशिनका दूध बालकको पिलानेसे कंजापन नाश होते देखा गया है।

(२) शेख़ल रईसने अपनी "क़ानून" नामकी पुस्तकमें लिखा है कि, इन्द्रायनके हरे फलमें सलाई चुभाकर आँखोंमें फेरनेसे कंजापन आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) गाजरका छिलका महीन पीसकर नेत्रोंमें लगानेसे कंजापन आराम हो जाता है।

अरब नामक आँखके नासूरकी चिकित्सा।

नोट—अरब एक नासूर है, जो नाककी तरफके आँखके कोयेमें होता है। उस जगह दबानेसे आलायश निकलती है।

(१) नासूरका मैल साफ करके मरहम लगानेसे आँखके कोयेका नासूर आराम हो जाता है।

(२) संग जराहत या सेलखड़ीके दो टुकड़ोंको रैंडीके तेलमें घिसो। जब गाढ़ा-गाढ़ा मसाला हो जावे, उसमें कपड़ेकी बत्ती खूब तर करके उसे नासूरमें रखो; अवश्य लाभ होगा।

(३) चिराग़की कीट कपड़ेमें लगाकर नासूरपर जमाओ, इससे आँखके कोयेका नासूर आराम हो जाता है।

(४) बथुएके पत्ते और तम्बाखूके फूल बराबर-बराबर लेकर, गायके घीमें खूब खरल करो। इस कज्जलीके आँखके नासूरमें लगानेसे नासूर भर जाता है।

(५) हुक्केके नेचेकी कीट और अफीम बराबर-बराबर लेकर पीसो और बत्ती बनाकर आँखके नासूरमें रखो; अवश्य लाभ होगा।

(६) समन्दरशोख पानीके साथ पीसकर बत्ती बनाओ और उसे आँखके नासूरमें रखो; अवश्य लाभ होगा।

(७) नीमके पत्ते और पेमन्दी बेरके पत्ते—महीन पीसकर और कपड़ेपर लेप करके आँखके नासूरपर लगाओ, नासूर भर जायगा।

(८) कत्था और एलुआ बराबर-बराबर लेकर पीसो और आँखके नासूरपर लगाओ, इससे नासूर भर जायगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) कुत्तेकी जीभ जलाकर और थूकमें मिलाकर नासूरपर लेप करो। आँखका नासूर भर जायगा।

(१०) गिलोय और हल्दी समान-समान लेकर सिलपर पीसो। फिर लुगदीसे चौगुना मीठा तेल और तेलसे चौगुना पानी मिलाकर तेल पका लो और पक जानेपर छान लो। इस तैलको नाकमें टपकानेसे आँखके कोयेका नासूर आराम हो जाता है।

(११) साफ शहद आगपर रखकर औटाओ, जब गाढ़ा होनेपर आवे, उसमें थोड़ा-सा "समन्दरझाग" पीसकर मिला दो और नीचे उतार लो। इसमें बत्ती डुबो-डुबोकर नासूरमें भरनेसे आँखका नासूर भर जाता है।

समस्त नेत्ररोगोंपर—
आयुर्वेदीय और यूनानी नुसख़े।

(१) बबूलके पत्तोंका काढ़ा औटाकर खूब गाढ़ा करो और उसमें "शहद" मिलाकर आँजो। इससे ढलका या स्राव इस तरह दूर होता है, जिस तरह सूरजसे अँधेरा। परीक्षित है।

(२) पुनर्नवेकी जड़को "दूध" में घिसकर आँजनेसे आँखोंकी खुजली जाती रहती है; "शहद" में घिसकर आँजनेसे पानी बहना दूर होता है; "घी" में घिसकर आँजनेसे फूला नाश होता है; "तेल" में घिसकर आँजनेसे तिमिर या धुन्ध दूर होता है और "काँजी" में घिसकर आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है। इस दवाको "देशी ममीरा" कहते हैं। इसके समान नेत्र-रोग नाशक दवा बहुत कम हैं। परीक्षित है।

(३) रसौतको औरतके दूधमें घिसकर लगानेसे आँखोंके सब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोग चले जाते हैं। यह दवा भी ममीरेका मुक़ाबला करती है; पर कुछ दिन लगातार सेवन करनेसे। परीक्षित है।

(४) आँखोंके भीतर घीकी दो बूँद या सरसोंके तेलकी दो बूँद या घीग्वारके स्वरसकी दो बूँद डालनेसे नेत्रोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं।

(५) काले तिल पीसकर सिरपर मलने, शरीरमें आँवलोंका उबटन लगाने और कानोंमें तेल डालनेसे नेत्र-रोग नहीं होते और दृष्टि बढ़ती है।

(६) जो मनुष्य त्रिफलेके काढ़ेसे नित्य आँख धोता है, उसके पास नेत्र-रोग भूलकर भी नहीं आते।

(७) बहेड़ेकी गुठलीको औरतके दूधमें पीसकर, सन्ध्या समय नित्य आँजनेसे शुक्र या फूला नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(८) आँखोंमें औरतका दूध भरनेसे अभिघातज या चोट लगनेसे हुए नेत्र-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) भू-आँवला, सैंधानोन, नागरमोथा और आँवलोंका स्वरस—इनको समान-समान लेकर, ताम्बेके बासनमें, ताम्बेके डण्डेसे घिसने और नेत्रोंपर लेप करनेसे सब तरहके नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१०) फिटकरी, चन्दन, सोंठ, सोना-गेरू और बच इनको पानीके साथ पीसकर, नेत्रोंके बाहर लेप करनेसे नेत्र-रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(११) पुराना घी आँखोंमें आँजनेसे नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं।

(१२) सहँजनेके पत्तोंके रसमें "शहद और सैंधानोन" मिलाकर आँखोंपर तरड़े देनेसे नेत्रोंका नया कोप दूर होता है।

(१३) आँवलोंके स्वरसको कपड़ेमें छानकर आँखोंमें भरनेसे नेत्रोंका नवीन कोप निस्सन्देह दूर होता है।

(१४) त्रिफलेके चूर्ण अथवा कल्क अथवा कषायमें घी या

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शहद मिलाकर सेवन करनेसे सब तरहके तिमिर या धुन्ध रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) साध्य अधिमन्थ रोगमें भौंके ऊपर आगसे दागना और शिरावेधन करना हित है।

(१६) नेत्रपाक रोगमें जौंकें लगवाना और जुलाब देना हितकारी है।

(१७) हल्दीके रस या काढ़ेमें निर्मलीका फल घिसकर आँजनेसे नेत्ररोग आराम हो जाते हैं।

(१८) जस्तेकी भस्म, फिटकरी और निर्मलीका फल—इन तीनोंको एक साथ घिसकर या पीसकर आँजनेसे नेत्ररोग आराम हो जाते हैं।

(१९) चमेलीके पत्तोंके रसमें शुद्ध सुरमा, हल्दी और दारुहल्दी मिलाकर आँजनेसे रतौंधी आराम हो जाती है। इतना ही नहीं, फूला, जाला और नेत्रोंका मैल भी दूर हो जाता है।

(२०) जिसकी आँखोंके पलकोंके बाल आँखोंमें घुस जाते हों या चुभते हों, उसे उनको सावधानीसे उखाड़ डालना चाहिये। इसके बाद कालीमिर्च, गुड़ और गेरू बराबर-बराबर लेकर उस जगह लेप करना चाहिये।

(२१) शुद्ध पारा, सीसेकी भस्म, खपरिया और मूँगा भस्म एक-एक माशे; मोती आधा माशे और ऊँटका दाँत, कुल्थी, जंगली कुल्थी एक-एक माशे लो। सबको पीस-छानकर खरलमें डालो और "बकरीके दूध"के साथ बहत्तर घण्टे तक खरल करो। इस दवाके आँखोंमें आँजनेसे महा बलवान नेत्र-वातरोग नाश हो जाता है।

(२२) कालीमिर्च, जस्त-भस्म, ताम्बा-भस्म, भुनी फिटकरी, अफीम और सीप-भस्म—सबको समान-समान लेकर, थोड़ा-सा "शुद्ध नीलाथोथा"भी मिला लो और सबको काँसीके बासनमें डालकर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गायके दूधके साथ तीन दिन तक घोटो। इस अञ्जनके आँजनेसे रतौंधी, जाला और काँच वग़ैरः नेत्ररोग आराम हो जाते हैं।

(२३) फिटकरी, बापची, हल्दी, लोध, अफीम, ज़ीरा और रसौत—इनको समान-समान लेकर पीस लो और पोटली बना लो। फिर त्रिफलेके काढ़ेमें इस पोटलीको भिगो-भिगोकर नेत्रोंके ऊपर रस निचोड़ो। इस पोटलीसे सब तरहके नेत्ररोग नाश होकर नेत्र निर्मल हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—बावची, बापची, सोमराजी, शशिलेखा ये सब एक ही चीज़के नाम हैं। बावचीके बीज ही दवाके काममें ज़ियादा आते हैं।

(२४) काला सुरमा, सैंधानोन, शंखका पैंदा, अफीम, शुद्ध मैनशिल, मिश्री, सोंठ, पीपर, कालीमिर्च और निर्मलीका फल—सबको समान-समान लेकर पीसो और खूब बारीक कपड़ेमें छान लो। इस चूर्णको घी और दूधमें मिलाकर आँजनेसे धुन्ध-तिमिर, फूला, जाला, रतौंधी तथा और नेत्र-पीड़ाएँ आराम हो जाती हैं।

(२५) जो मनुष्य त्रिफलाका चूर्ण ना-बराबर शहद और घीमें मिलाकर शामको खाता है और पथ्यसे रहता है, उसके आँखोंके सभी रोग इस तरह विदा हो जाते हैं, जिस तरह धनहीनके नौकर-चाकर विदा हो जाते हैं। परीक्षित है। इसीपर लोलिम्बराज महाशयने क्या खूब कहा है:—

इति निगदितमार्ये नेत्ररोगातुराणां
निशि समधुघृताग्र्यासेव्यमाना सुखाय।
अयि नवशिशुलीलालोलदृष्टे त्वमग्र्या
जनयसि वत कस्माद्वैपरीत्यं परन्तु॥

हे आर्ये! वैद्य लोग कहते हैं कि, शहद और घी मिलाकर अग्र्या (त्रिफला) के रातमें खानेसे नेत्ररोगवालोंको सुख होता है; परन्तु हे नवीन बालकोंकी लीलाके समान चञ्चल दृष्टिवाली स्त्री! तू भी अग्र्या (मुख्या) ही है, फिर तुझसे नेत्र-रोगियोंको दुःख क्यों होता है?

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा—त्रिफला सेवन करनेसे नेत्र-रोगवालोंको सुख होता है, पर स्त्री सेवन करनेसे नेत्र-रोगवालोंकी पीड़ा बढ़ती है। "अग्र्या" शब्दका अर्थ "त्रिफला और स्त्री" दोनों दिखाकर कविने चमत्कार दिखाया है।

(२६) भोजनके बाद हाथ धोकर, दोनों हथेलियोंको आपसमें रगड़कर, आँखोंके लगानेसे, थोड़े ही दिनमें वह आँखोंके लगा हुआ पानी तिमिर या धुन्धको नाश कर देता है। परीक्षित है।

(२७) शुद्ध सुरमा, सफेद मिर्च, पीपर, मुलेठी, बहेड़ेकी मींगी, शङ्खकी नाभि और शुद्ध मैनशिल—इन सबको बराबर-बराबर लेकर बकरीके दूधमें पीसकर गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। इन गोलियोंके आँखोंमें लगानेसे सब तरहके नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२८) त्रिफलेके काढ़ेसे नित्य आँखें धोनेसे सब तरहके नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२९) शीशेको शुद्ध करके आगपर गला लो। फिर शीशेके बराबर शुद्ध पारा लेकर उस गले हुए शीशेमें मिला दो। फिर इन दोनोंके बराबर शुद्ध सुरमा उनमें मिला दो और सबको महीन पीस लो। शेषमें, जितना यह चूर्ण हो, उसका दसवाँ हिस्सा "शुद्ध कपूर" या भीमसेनी कपूर मिला दो और शीशीमें रख दो। यह अञ्जन नेत्रोंके लिये अमृत है। इससे नेत्रोंके सभी विकार नाश हो जाते हैं।

(३०) बनकुल्थीको कपड़ेकी पोटलीमें बाँधकर "दोलायन्त्रकी विधि"से बकरीके मूत्रमें पकाओ। फिर उसके छिलके वग़ैरः निकाल-कर उसे पीस लो। शेषमें, उसमें सैंधानोन, बोल—गन्धरस और हल्दी पीसकर मिला दो। इस अञ्जनको रातके समय लगानेसे तीन दिनमें ही नेत्रोंका रुधिर-विकार नाश हो जाता है।

(३१) समन्दरफेनमें "मिश्री" मिलाकर पीस लो। यह अञ्जन अर्जुन-रोग यानी नेत्रोंकी सफेदीमें लाल लकीरको इस तरह दूर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करता है, जिस तरह नवीन विवाही छोटे-छोटे कुचोंवाली कामिनी अपनी छातियोंपरसे पतिके हाथको दूर करती है। कहा है:—

कुवलयनयनेर्जुनं कफोब्धेः सह सितया सुनिराचरी करोति।
प्रियकरमिव कामिनी नवोढ़ा लघुकुचशालिनि वक्षसि प्रयुक्तम्॥

(३२) सोनामक्खीको शहदमें घिसकर आँजनेसे फूला शीघ्र ही नष्ट हो जाता है।

(३३) अपनी लार नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढ़ती है। सदैव चन्द्रमाको देखनेसे भी नेत्रोंकी ज्योति बढ़ती है।

(३४) आँवले, बहेड़े और हरड़का अञ्जन बनाकर नेत्रोंमें लगानेसे नेत्रोंसे पानी गिरना बन्द हो जाता है।

(३५) अगर नेत्रोंमें नासूर हो गया हो, तो जौंकें लगवानी चाहिये। अथवा नीमके पञ्चाङ्गका लेप करना चाहिये।

(३६) कचिया नोनमें शहद मिलाकर लगानेसे नाखूना और धुन्ध अवश्य नाश हो जाते हैं।

(३७) अगर नेत्रमें बमनिया या बाफ लग जावे, तो कपूर और घी एकत्र घिसकर लगाना चाहिये। अथवा फिटकरी और खपरिया घिसकर नेत्रोंमें लगाने चाहिये।

(३८) हरड़ और तगरका लेप करनेसे वर्त्म या कोयोंके रोग नाश हो जाते हैं।

(३९) कपूरको शहदमें मिलाकर लेप करनेसे सब तरहके नेत्ररोग दूर हो जाते हैं।

(४०) विषसे शुद्ध किये हुए सीसेको रविवारके दिन खूब घिसो। इसका लेप करनेसे नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं।

(४१) बकायनके फलोंको पीसकर टिकिया बना लो। इस टिकियाको नेत्रोंपर बाँधनेसे पित्त-दोष शान्त हो जाते हैं।

(४२) तिलोंको पानीमें पीसकर लगानेसे पलकोंकी उड़ी हुई चाँफनी जम जाती हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४३) रसौत, हल्दी, दारुहल्दी, चमेलीके पत्ते और नीमके पत्ते—इनको गोबरके रसमें पीसकर बत्ती बना लो। इस बत्तीके नेत्रोंमें लगानेसे रतौंधी जाती रहती है।

(४४) आकके दूधमें रूई भिगोकर सुखा लो और बत्ती बना लो। उस बत्तीको घीमें तर करके जलाओ और काजल पारो; इस काजलको नित्य आँखोंमें लगानेसे सब तरहके नेत्ररोग नाश हो जाते हैं।

(४५) रसौतको पानीमें घिसकर लगानेसे पलकोंकी सूजन दूर हो जाती है।

(४६) धनियाँ और सफेद चन्दनको सिरकेमें पीसकर माथेपर लगानेसे आँखोंके सामने अँधेरी आना दूर होता है।

(४७) नीमके पत्ते और मकोयका स्वरस मिलाकर आँखोंके ऊपर लगानेसे आँखोंकी सुर्ख़ी जाती रहती है।

(४८) फिटकरीको गुलाबजलमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे फूला और जाला नष्ट हो जाते हैं।

नोट—फिटकरीको महीन पीसकर सूँघनेसे नकसीर बन्द हो जाती है।

(४९) छोटी हरड़ और सफेद मिश्री—इन दोनोंको स्त्रीके दूधमें घिसकर नेत्रोंमें लगानेसे नजलेके कारणसे पैदा हुई नज़रकी कमज़ोरीको लाभ होता है।

(५०) खपरिया और बड़ी हरड़का बक्कल दोनोंको काँसीकी थालीमें रखकर, काँसीकी कटोरीसे महीन रगड़कर आँखोंमें लगानेसे आँखोंका ढलका या पानी बहना आराम हो जाता है।

(५१) कुँदरू गोंदको गुलाबजलमें पीसकर आँखोंपर लेप करनेसे नाखूना आराम हो जाता है।

नोट—आँखोंके कोनोंमें, जहाँसे कीचड़ निकलती है, सुर्ख़ी-सी आ जाती है। वह सुर्ख़ी जाले जैसी मालूम होती है। उसे फारसीमें "नाखूना" कहते हैं।

(५२) अगर सबल रोगकी वजहसे आँखोंमें लाली हो; रोगी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धूपमें देख न सकता हो, किन्तु छायामें देख सकता हो; आँखोंसे पानी बहता हो या पलकें पानीसे तर रहती हों, तो कीकरका गोंद ७ माशे, सफेदा ७ माशे, जङ्गार ६ माशे और चाँदीका मैल ७ माशे—इन सबको पोदीनेके रसमें खरल करके चार बत्तियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। इन बत्तियोंको स्त्रीके दूधमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे ऊपरकी शिकायतें रफा हो जाती हैं।

(५३) सूँचलनोन, फिटकरी, केशर, संगबसरी और थोड़ा-सा सुरमा—सबको पीस-छानकर आँखोंमें आँजनेसे धूपमें न दीखना, छायामें दीखना, पानी बहना और लाली रहना ये सब नं० ५१ में लिखी हुई शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं।

(५४) त्रिफला रातको पानीमें भिगोकर सवेरे ही छान लो। फिर उसमें थोड़ी-सी "फिटकरी" पीसकर मिला दो। इस पानीके छींटे आँखोंमें मारकर आँख-मुँह धोनेसे आँखोंकी लाली कम हो जाती, पानी बहना बन्द हो जाता और धूपमें भी देखनेकी शक्ति हो जाती है। परीक्षित है।

(५५) तीन-चार बूँद जिंक लोशन आँखोंमें डालनेसे आँखोंकी लाली जाती रहती है। यह डाक्टरी नुसखा है। परीक्षित है।

(५६) अगर लालीके साथ पानी भी आँखोंसे आता हो और सूजन भी हो, तो सिलवर लोशन दो या तीन बूँद आँखोंमें डालना चाहिये। इससे लाली, पानी गिरना, पीड़ा और सूजन ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५७) शोरा, सोंठ, फिटकरी और सफेद सुरमा बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस दवाको दिनमें दो बार रोज़ आँखमें लगानेसे फूला आराम हो जाता है।

(५८) मुर्गीके अण्डेके छिलकोंकी भस्म कर लो। इसे खूब पीसकर और "शहद"में मिलाकर आँखोंमें लगानेसे फूला आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५९) गुल्लालाके फूलोंका रस स्त्रीके दूधमें मिलाकर आँखमें डालनेसे फूला आराम हो जाता है।

(६०) काशगरी सफेदा, कुन्दर गोंद और भिमड़ी—इन तीनोंको छै-छै माशे लो और साढ़े चार तोले गधीके दूधमें भिगो दो। जब दूध सूख जाय, दवाओंको खरल करो। खरल करते समय मुर्ग़ीके चार अण्डोंकी सफेदी मिला दो। घोटते-घोटते जब मसाला गोली बनाने लायक़ हो जाय, तब छोटे बेर समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको कन्या जननेवाली औरतके दूधमें घिस-घिसकर कुछ दिन लगातार आँखोंमें आँजनेसे लाली, घाव, धुन्ध, गुबार, जाला, फूला और खुजली आदि आँखोंके रोग आराम हो जाते हैं। एक हकीम साहब इस नुसख़ेकी बेहद तारीफ करते और अपना आज़मूदा कहते हैं।

नोट—अगर फूला चेचकमें पैदा होता है, तो असाध्य होता है। पर गरमी या खुश्की वग़ैरःसे पैदा होता है, तो साध्य होता है।

(६१) अगर आँखोंकी पलकोंके अन्दर बाल पैदा हो गये हों, उनकी वजहसे रोगी आँखें न खोल सकता हो, खोलते समय पीड़ा होती हो यानी "परवाल" हो गया हो, तो "फिटकरी" पानीमें घिस-घिसकर परवालोंके पैदा होनेकी जगहपर लगाओ। सात दिनमें आराम हो जायगा।

(६२) हरताल पानीमें पीसकर लगानेसे भी परवाल (जिसके लक्षण ऊपर नं० ६१ में लिखे हैं) आराम हो जाता है।

(६३) कुत्तेके दाहिने कानके चींचड़ (एक कीड़े) का खून लेकर परवालकी जगह लगानेसे परवाल रोग नाश हो जाता है।

(६४) चमगीदड़का खून परवालकी जगह लगानेसे भी परवाल आराम हो जाता है।

(६५) गेरू १ तोले और शोरा ४ तोले लेकर चार रोज़ तक खरल करो। फिर पाँचवें दिन, दिन भर काँसीके बर्तनमें काँसीकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कटोरीसे खरल करो। इस अञ्जनको सात दिन तक सलाईसे आँखोंमें लगाओ। आठवें दिनसे तीन दिन तक उत्तम शराबके फाये आँखोंपर रखो। इसके बाद चौथे दिनसे बारह दिन तक अर्क़ गुलाबके फाये आँखोंपर रखो। कोई चीज़ नज़र लगाकर मत देखो। इस दवाको जब करो, जाड़ेके मौसममें करो—गरमीमें नहीं। इस दवासे आँखोंसे पानी गिरना बन्द हो जाता है।

(६६) अगर ज़हर रोग हो यानी दिनमें न दीखता हो, पर रातको और बदलीके दिनोंमें दीखता हो, तो दिमाग़में भीतर और बाहर दोनों ओरसे तरी पहुँचाओ। जैसे—लड़कीवाली स्त्रीका दूध या बनफ़शेका तेल अथवा कद्दूका तेल नाकमें टपकाओ। रीवास नामक घासका पानी या शर्बत नीलोफ़र अथवा शर्बत बनफ़शा पिलाओ। शीतल जलमें डुबकी लगाकर पानीके भीतर आँखें खोलना भी इस मर्ज़में मुफ़ीद है।

नोट—ज़हर रोग रतौंधीके विरुद्ध होता है। इस रोगवालेको दिनमें कुछ नहीं दीखता। रातको और बदलीवाले दिन दीखता है। कहते हैं, आँखकी देखनेवाली रूह कम और पतली हो जाती है; सूरजकी गरमी उसे नष्ट कर देती है, इससे दिनमें आँखकी ज्योति अपना काम नहीं कर सकती; रातको या बादल होनेके समय, सर्दीकी वजहसे, रूह इकट्ठी होकर अपनी दशापर आ जाती है, तब दीखने लगता है। कोई हकीम कहते हैं, ज़हर एक तेज़ दोष है जो दिमाग़में आ जाता है और अपनी तेज़ीसे दिमाग़ी रूहको बिगाड़ देता है। फिर दिनकी गरमी उसकी गरमीको और भी बढ़ा देती है और इस तरह आँखके देखनेकी शक्तिका काम नष्ट कर देती है। इस रोगमें दिमाग़के भीतर और बाहर तरी पहुँचानी चाहिये और रूहके गाढ़ी करनेके लिए गाढ़ा खून पैदा करनेवाले भोजन देने चाहिये। जैसे—तवेकी पकी हुई रोटी और हरीरा वग़ैरः।

(६७) मच्छरकी शकलका दो पर वाला जानवर, जो मच्छरसे भी छोटा होता है, अक्सर आँखोंमें चला जाता है। यह पुतलीपर चिपट जाता है और आँखके डेलेको चूसता है। इससे आँखमें बड़ी तकलीफ और झल्लाहट होती है और आँख लाल हो जाती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है। अगर ऐसा मौक़ा हो, तो मुल्तानी मिट्टी खूब महीन पीसकर आँखोंमें भर दो और एक घण्टे तक पलक बन्द रखो, जिससे वह जानवर मिट्टीमें मिल जावे। फिर आँख खोलकर उसे कपड़े या रूईसे पोंछ-पोंछकर निकालो।

नोट—मुल्तानी मिट्टी तीन तरहकी होती है:—(१) सफेद, (२) हरियाली लिये हुए, और (३) लाली लिये हुए। यह पिछली सबसे अच्छी होती है।

(६८) अगर चोटकी वजहसे आँखोंमें लाली या सूजन पैदा हो जाय, तो फ़स्द खोलो और हल्के-हल्के मेवोंके पानीसे कोठेको नर्म करो। ज़रूरत हो तो गुद्दीमें पछने भी लगाओ। सफ़ाईके बाद, दर्द रोकनेके लिये, पीलापन लिये हुए अण्डेकी सफेदी गुल रौग़नमें मिलाकर आँखोंपर लगाओ। जब दर्द थम जाय और माद्दा दूसरी तरफ चला जाय, किन्तु आँखमें नीलापन बाक़ी रह जाय; तब धनियाँ, पोदीना, संगे फ़िल्फ़िल और हरताल इनको पानीमें पीसकर लेप करो। इससे नीलापन जाता रहेगा।

(६९) अगर पहलेसे आँखमें कोई तकलीफ न हो, यकायक छिलन-सी मालूम हो और आँसू आने लगें, तो समझो कि आँखमें कुछ पड़ गया है। अगर ऐसा हो, तो आँखको गरम जलसे धोओ—हाथसे हरगिज़ न मलो। आँखमें स्त्रीका दूध डालो। अगर धूआँ या धूल गिरी होगी, तो इस उपायसे आराम हो जायगा। अगर इस तरह आराम न हो, तो पलकको उलटकर आँखके भीतर, दोनों पलकोंकी जड़में ध्यानसे देखो। अगर कुछ दिखाई दे, तो सलाईके सिरेसे उसे उठा लो या एक रूईका फाहा आँखके भीतर रख दो और थोड़ी देर तक रहने दो, ताकि जो चीज़ भीतर हो उसमें लग जावे। फिर एक साथ उस फाहेको निकाल लो। अगर गिरनेवाली चीज़ बहुत ऊपर हो, पलकके भीतर न घुसी हो, तो कपड़ेसे सहजमें निकल आवेगी। अगर बहुत भीतर घुस गई हो, इन उपायोंसे न निकले, तो निशास्तेको महीन पीसकर आँखमें डालो और थोड़ी देर तक उसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वहीं रहने दो। इससे गिरनेवाली चीज़ अपनी जगहसे अलग होकर निशास्तेमें लग जायगी। उसे आप रूईसे पोंछकर निकाल सकते हैं। अगर काँच या गेहूँ वग़ैरःका तिनका घुस जाय और चिपट जाय, तो इस कामके लिये बने हुए औज़ारसे उसे निकालना चाहिये। गिरी हुई चीज़ निकालकर, स्त्रीका दूध या अण्डेकी सफेदी आँखमें डालनी चाहिये, ताकि कोई हानि न हो।

(७०) सुरमा, सैंधानोन, शंखकी नाभिकी भस्म, शुद्ध मैनशिल, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, निर्मलीके बीज, मिश्री और समन्दरफेन—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर उसे भेड़के दूधमें घिसकर आँखोंमें लगाओ। इससे धुन्ध, जाला और फूला आराम हो जाते हैं।

(७१) अदरखके रसकी दो-तीन बूँदें नेत्रोंमें टपकानेसे वात-कफकी नेत्र-पीड़ा आराम हो जाती है।

(७२) सैंधानोन, पीपर, भीमसेनी कपूर और पुरानी इमलीके बीज बराबर-बराबर लेकर "गुलाबजल" में खरल करो। इसके आँजनेसे कम दीखना, धुन्ध और जाला वग़ैरः आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७३) नीमके पत्ते और ज़रा-सी सोंठ थोड़े-से पानीमें पीसकर और ज़रा-सा सैंधानोन मिलाकर गरम करो। फिर आँखें बन्द करके आँखोंपर एक सफेद मलमलका कपड़ा बिछा दो और कपड़ेपर इस दवाका लेप कर दो। इससे नेत्रोंकी जलन और खुजली जाती रहती है।

(७४) अफीम और केशर गुलाब-जलमें घिसकर आँखोंपर लेप करनेसे नेत्रोंकी सुर्ख़ी चली जाती है। इन्हीं दोनोंको पानीमें घिसकर लेप करनेसे आँखोंके घाव आराम हो जाते हैं।

(७५) मुण्डीके पत्तोंको सैंधेनोन और घीके साथ पकाकर खानेसे आँखोंकी रोशनी बढ़ती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—जो लोग नेत्ररोगोंसे सदा दुखी रहते हैं और छोटी उम्रमें ही जिनकी आँखोंकी ज्योति कमज़ोर हो गई हो, उन्हें "मुण्डीका रस" नेत्रोंमें लगाना चाहिये और मुण्डी ही खानी चाहिये।

(७६) शहदमें मुण्डीका अवलेह बनाकर सेवन करनेसे कम दीखना और आँखसे पानी जाना आराम हो जाता है।

(७७) मुण्डीके पञ्चाङ्गको छायामें सुखाकर पीस लो। फिर उसमें उस चूर्णके बराबर-बराबर मिश्री और घी मिला दो। इसको ६ माशे सवेरे और ६ माशे शामको गायके दूधके साथ सेवन करो। दूध-भात आदि हल्के पदार्थ खाओ। इससे नेत्रोंकी दृष्टि तेज़ होती, दाँत मज़बूत होते और बाल सफेद नहीं होते।

(७८) शीशेकी भस्म, खपरिया, जस्तकी भस्म, शंख-नाभि, मूँगा, सीप और समन्दरफेन—प्रत्येक एक-एक तोले, सफेद मिर्च, कुलींजन, पीपर, अकरकरा, सिरसके बीज, चिरमिटी और पुनर्नवाकी जड़—प्रत्येक दो-दो तोले लो।

सबको एकत्र पीसकर, सात दिन तक, पुनर्नवेके रसमें खरल करो। फिर तीन दिन तक, घीग्वारके रसमें खरल करो और अन्तमें तीन दिन तक गोमूत्रमें खरल करो। यह अञ्जन आँखोंमें आँजनेसे तिमिर-धुन्ध, मोतियाबिन्दु और जाले वग़ैरःको नाश करता है। यह नुसखा पं० शिवदयालजी वैद्य, परतावगढ़का परीक्षित है।

(७९) एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म त्रिफलेके चूर्णमें अथवा ना-बराबर शहद और घीमें खानेसे नेत्र-रोग नष्ट हो जाते और धातु पुष्ट होती है। परीक्षित है।

(८०) खैरकी छालके काढ़ेमें एक या दो रत्ती बङ्गभस्म सेवन करनेसे चर्मपक्ष नामक पलकोंका रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८१) चिरमिटीकी जड़ बकरेके पेशाबमें घिसकर आँखोंमें आँजनेसे तिमिर-रोग आराम हो जाता है।

(८२) चिरमिटी पानीमें उबालकर, उसका पानी पलकोंपर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगानेसे आँखोंकी जलन, सूजन, अभिष्यन्द और पलकपर होनेवाले पूय—ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

(८३) गुलाब-जल आँखोंमें डालनेसे आँखोंकी जलन और उनकी कमज़ोरी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८४) सफेद पुनर्नवाकी जड़ घीमें पीसकर आँजनेसे आँखोंकी फूली कट जाती है। परीक्षित है।

(८५) इक्कीस बार गुलाब-जलकी भावना देकर सुर्मा आँजनेसे आँखोंकी गरमी जाती रहती है।

(८६) सफेद पुनर्नवाकी जड़ दूध या भाँगरेके रसमें घिसकर आँजनेसे आँखोंकी खुजली जाती है और शहदमें घिसकर आँजनेसे आँखोंसे पानी आना या ढलका आराम होता है। परीक्षित है।

(८७) नित्य सोते समय, काली तिलीका ताज़ा तेल आँखोंमें डालनेसे नेत्र-रोग नाश हो जाते हैं।

(८८) ब्राह्मीके पत्तोंका रस सिरमें लगानेसे आँखोंके सामने चक्कर आना मिटता है।

(८९) केशरको शहदमें घोटकर आँजनेसे आँखोंकी जलन आराम हो जाती है।

(९०) शुद्ध सुरमा एक छटाँक, बहेड़ेकी गिरी ६ माशे, बाय-बिड़ङ्ग ६ माशे, पीपरके चावल ६ माशे, सफेद मिर्च ४ माशे, सिरसके बीज ४ माशे, समन्दरफेन ४ माशे, साम्हरका नाखून ४ माशे, मोतीकी सीप ४ माशे, शुद्ध खपरिया ४ माशे और उड़ाया हुआ कपूर ४ माशे—सबको महीन पीस-छानकर, सात दिन तक त्रिफलेके काढ़ेमें, सात दिन तक मुण्डीके रसमें और सात दिन तक अर्क़ गुलाबमें क्रमसे खरल करो। फिर शीशीमें भर लो। इस सुरमेसे धुन्ध, जाला, फूला, मोतिया-बिन्दु आदि सब नेत्र-रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस सुरमेको रमद, अभिष्यन्द या दुखती आँखोंमें न लगाना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९१) मरे हुए गधेका एक दाँत लाकर एक मिट्टीके प्यालेमें रखो। ऊपरसे नीबूका रस इतना भर दो कि, उसपर छै अंगुल ऊपर आ जावे। फिर इस प्यालेपर ढक्कन देकर जोड़ बन्द कर दो और कपड़-मिट्टी करके सुखा लो। इसके बाद इसको पाँच मन थेपड़ी कण्डोंमें फूँक दो। जब आग शीतल हो जावे, निकालकर दवाको पीस-छान लो। इसको सुरमेकी तरह आँजनेसे जाला और फूला आराम हो जाते हैं।

अगर इसे और भी ताक़तवर बनाना हो, तो कुछ फिटकरीको घीग्वारके पत्तेमें रखकर भून लो। फिर ऊपरका सुरमा और यह फिटकरी बराबर-बराबर मिला लो और इनके बराबर मुर्ग़ेके अण्डेकी सफेदी और बड़का दूध मिला दो और खरल करके शीशीमें रख लो।

(९२) बन्दूक़की गोली नग एकको घीमें डालकर पिघलाओ और ऊपरसे "आमलासार गंधक" पिसी हुई थोड़ी-थोड़ी उस समय तक डालते रहो, जब तक कि उसकी रङ्गत काले सुरमेकी-सी न हो जावे। इसके बाद थोड़ी-सी "कालीमिर्च" महीन पीस-छानकर उसमें मिला दो। इस सुरमेको दिनमें कई दफ़ा, सलाईसे, लगानेसे आँखके सभी रोग आराम हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

(९३) अबींध मोती ४ रत्ती; केशर ४ रत्ती, संगबसरी ६ माशे, जस्तका कुश्ता ६ माशे, भुनी फिटकरी ६ माशे, पीपर नग १, काला सुरमा ६ तोले, बेख़ मिरजान १ माशे, सिरसके बीज १ माशे, रसौत २ माशे, छोटी इलायचीके बीज २ माशे, सोनेके वर्क़ दो नग और जिंक सलफास २ रत्ती—इन सबको दो दिन तक "त्रिफलाके भिगोये पानी"में खरल करो। इसके बाद दो दिन "अर्क़ गुलाब"में खरल करो। इस सुरमेसे धुन्ध, जाला, आँखकी खुजली, पानी बहना, नया मोतियाबिन्दु और आँखोंकी कमज़ोरी ये सब आराम हो जाते हैं। यह

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सुरमा आँखोंके रोगोंपर हदसे ज़ियादा मुफ़ीद है। हमारे एक मित्रने हाल ही में परीक्षा की है।

(९४) तूतिया ३ माशे, आँवलेके छिलके १ तोले, कालीमिर्च १ माशे, नीमकी कोंपल ६ माशे, समन्दरफल ६ माशे और कपूर ६ माशे—इन सबको जम्भीरी नीबूके रसमें घोटकर गोलियाँ बना लो। गोली पानीमें घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंके सभी रोग नाश हो जाते हैं। असलमें धुन्ध, जाला और कमज़ोरीके आँख-रोगोंपर यह नुसख़ा ज़ियादा मुफ़ीद है। पराया परीक्षित है।

(९५) छोटी हरड़, बहेड़ा, आँवला, दालचीनी, हरेक दो-दो तोले; कालीमिर्च, छोटी पीपर हरेक एक-एक तोले; सैंधानमक और साँभरनमक हरेक छै-छै माशे—इन सबको पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर एक दिन "काग़ज़ी नीबूके पत्तोंके रस"में और एक रोज़ "काली मकोयके पत्तोंके रस"में खरल करो। इसके बाद गोलियाँ बनाकर रख लो। इनको शहदमें घिसकर दोनों समय आँखोंमें आँजनेसे मामूली फूला—चाहे वह चेचककी वजहसे ही क्यों न हुआ हो—आराम हो जाता है। "अदरखके रस"में घिसकर आँजनेसे धुन्ध और "बासी पानी"में घिसकर आँजनेसे आँखोंकी कमज़ोरी आराम हो जाती है। पराया परीक्षित है।

(९६) किसी महीनेकी अन्धेरी रातकी अष्टमीको, आधी रातके समय, कमलकी जड़के अन्दरका गूदा लाकर पीस लो। इसे शामको माथेपर लगानेसे गहरी नींद आ जाती है।

(९७) बालोंकी राख १ माशे और हल्दी १ माशे "शहद"में मिलाकर आँखोंमें लगानेसे तारीकी चश्म या आँखोंका तिमिर आराम हो जाता है।

(९८) इमलीके पत्तोंके रसमें सफेद मिर्च चार दिन तक घोटकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको पानीमें घिसकर लगानेसे तारीकी चश्म—आँखोंका अन्धेरा आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(९९) शोधा हुआ काला सुर्मा १ तोले, बेख़ मिरजान ६ माशे और सोनेका मैल १ माशे—सब दवाओंको सिमाक़ पत्थरकी खरलमें "अर्क़ सौंफ सब्ज़" या "बरसाती पानी"के साथ खरल कर लो। यह सुरमा नेत्रोंकी कमज़ोरी, आँखोंसे पानी जाना, जाला और नजलेसे पानी उतरनेको मुफीद है। पराया परीक्षित है।

(१००) एक काले साँप और चार बिच्छुओंको एक घड़े भर गायके दूधमें डालकर, घड़ेका मुँह बन्द कर दो और उसे २१ दिन तक ज़मीनमें गाड़े रहो। इसके बाद उस घड़ेके दूधको बिलोकर घी निकालो। उस घीको एक मुर्ग़ेको खिलाओ। तीसरे दिन मुर्ग़ा जो बीट करे उसे उठाकर पीस लो और शीशीमें रख दो। इस बीटको सलाईसे आँखोंमें लगानेसे अन्धा भी सूझता हो जाता है।

(१०१) शुद्ध नीलाथोथा एक तोले लेकर चने समान टुकड़े कर लो। एक हाँडीमें तीन-चार पत्ते मकोयके बिछाकर, उनपर एक टुकड़ा नीलेथोथेका रख दो। इसपर पत्तोंकी तह लगाकर फिर नीलाथोथा रख दो। इस तरह तह-पर-तह लगाकर सारा नीलाथोथा रख दो। फिर हाँडीका मुँह बन्द करके उसे चूल्हेपर रख दो। हाँडीके नीचे चिराग़ जला दो। उस चिराग़में बत्ती एक अंगुल मोटी रखो और तेल पाव-भर भर दो। जब तेल जल जाय, हाँडीको उतार-कर उसमेंसे नीलाथोथा निकाल लो। फिर उसे पीसकर रख दो। इसके आँखोंमें लगानेसे धुन्ध और जाला वग़ैरः आराम हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

(१०२) कछुएकी खोपड़ीकी हड्डी "स्त्रीके दूधमें" घिसकर आँखमें लगानेसे गुले चश्म—आँखका फूला आराम हो जाता है।

(१०३) प्याज़के रसमें "मिश्री" मिलाकर रातके समय आँखोंमें लगानेसे या लाल चन्दन घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी गरमी नाश हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०४) केशर शीतल पानीमें घिसकर गुहेरीपर लगानेसे आँखकी गुहेरी नाश हो जाती है।

नोट—गुहेरी एक फुन्सी होती है।

(१०५) कपूरका महीन चूर्ण "बड़के दूध"में घिसकर आँखोंमें आँजनेसे बहुत उभरा हुआ फूला भी आराम हो जाता है।

(१०६) छोटी हरड़ और सफेद मिश्री "स्त्रीके दूध"में घिसकर आँखोंमें लगानेसे आँखोंकी कमजोरी जाती रहती है।

(१०७) खपरिया और बड़ी हरड़का बक्कल काँसीकी थालीमें काँसीकी कटोरीसे रगड़कर लगानेसे ढलका बन्द हो जाता है।

(१०८) फिटकरी और कपूरको "गुलाबजल"में घिसकर नेत्रोंमें डालनेसे नेत्रोंकी लाली, चमक और कड़क आदि रोग नाश हो जाते हैं। कोई लाला बुलाकीदास इसे अपना परीक्षित नुसखा कहते हैं।

(१०९) घीग्वारका गूदा ४ तोले, अफीम २ माशे और फिटकरी २ माशे—इन सबकी पोटली बनाकर, दिन-रातमें कई बार आँखोंमें फेरनेसे आँखोंकी लाली दूर हो जाती है।

आँखका वर्णन।

शरीरकी सभी इन्द्रियोंके अलग-अलग कार्य व प्रयोजन होते हैं; क्योंकि ये सब हमारे मस्तिष्कको, नाड़ियों द्वारा, अत्यन्त आवश्यकीय समाचार पहुँचाती रहती हैं। मस्तिष्क उसके भले-बुरेका विचार करके सुख-दुखका अनुभव करता है और किसी तरहकी विपत्ति सामने होनेपर विशेष रूपसे सावधान हो जाता है। इन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सब इन्द्रियोंको स्वस्थ और सबल रखकर कार्य करना ही हमारे जीवनके सुखका मूल आधार है।

यह किसीको बतलानेकी आवश्यकता नहीं कि, आँख अन्य सब इन्द्रियोंकी अपेक्षा अधिक मूल्यवान व आवश्यकीय है। इसके सिवा दूसरी किसी इन्द्रियके द्वारा हम अपने अथवा दूसरेके स्वास्थ्यके लिये किस बातका प्रयोजन है, क्या करना चाहिये और कहाँसे क्या मिल सकेगा इत्यादि नहीं बतला सकते। आँखोंको बन्द करनेसे हम वस्तुओंका अस्तित्व—शब्द, स्पर्श और गन्ध आदिके द्वारा नहीं जान सकते। आँखोंके खोलनेसे ही हमें उनके वास्तविक स्वरूपका ज्ञान होता है। सामने विपत्ति खड़ी देख हम लोग जल्दी उसके मिटानेके प्रयत्नमें लग जाते हैं। रेलगाड़ीका संचालक वा जहाज़का नाविक दूर ही से लाल और हरी पताका देखकर संकेत समझ लेता है और उसीके अनुसार गाड़ी या जहाज़ चलता है। देखनेकी शक्ति न होनेसे समय-समयपर कितनी ही विपत्तियाँ पैदा हो जाया करती हैं।

हम लोग जीवनके कितने ही सर्वोत्कृष्ट सुख आँखोंके द्वारा भोग सकते हैं। जिन लोगोंका शुभ चाहते हैं, उनके मुख और प्रसन्नता देखकर हम सुखी होते हैं। सीमा रहित नीलवर्ण आकाश, प्रशान्त समुद्र और अन्य सैकड़ों प्राकृतिक मनोहर दृश्यावली देखकर अपने नयनोंको सार्थक कर सकते हैं। आँख न होनेसे प्राणी जीवनके कितने सुखोंसे वंचित रहते हैं, इसका बतलाना कठिन है।

हम लोग प्रकाशके द्वारा देख सकते हैं। चक्षु-यन्त्र फोटोग्राफीके केमेरेकी भाँति है, परन्तु यह चौकोर न होकर वृत्ताकार होता है। केमेरेके सामने एक काँच लगा रहता है, उसे "लेन्स" (Lens) कहते हैं। जिस किसी भी चीज़की छाया इस काँचके अन्दर एक जगह गिरती है, वहाँ ही उसका चित्र खिंच जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रकाशके अधिक व न्यून होनेसे पदार्थका चित्र भी स्पष्ट व अस्पष्ट हो सकता है। इसीलिये प्रकाशके न्यूनाधिक करनेका उपाय केमेरेके सामने रहता है। केमेरेके भीतर भी काला रंग लगा रहता है।

ये सब बातें हमारी आँखोंके भीतर भी ज्यों-की-त्यों हैं। सामने काँच या लेन्स, भीतर एक काले पर्देसे ढका है। काँचके सामने ही एक गोल पर्दा है, इसीको "आइरिस" (Iris) कहते हैं। प्रकाशके अधिक होनेसे यह पर्दा संकुचित हो जाता है और अन्धकार होनेसे फैल जाता है। हमारे देशवासियोंका यह पर्दा काला या धूसर वर्णका होता है, किन्तु यूरोपवालोंकी आँखोंका यह पर्दा प्रायः नीला होता है। जो कुछ भी हो, परन्तु इस पर्देके बीचमें एक काला छोटा गोल बिन्दु दीखता है। यही आँखका झरोखा या कनीनिका है। आँखका अन्तर पटल काला होनेसे, यह झरोखा काला दिखाई देता है। जैसे घरके भीतरके प्रगाढ़ अन्धकारको एक छोटे-से छिद्र द्वारा देखें तो काला नजर आता है। दर्शन-शक्तिका वास्तविक यन्त्र आँखोंके पिछले भागोंमें होता है। इसी पर्देके ऊपर देखी हुई वस्तुका प्रतिविम्ब पड़ता है। इसी विचित्र यन्त्रके साथ सूक्ष्म-सूक्ष्म नाड़ियाँ लगी हैं, जो मस्तिष्कके साथ जुड़ी हुई हैं। आँखके सामने क्या वस्तु है, इसको इन्हीं नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क जान सकता है।

आँखें सिरके सामने न होकर शरीरके अन्य किसी स्थानमें होतीं तो देखनेमें इतनी सुविधा कभी न होती। दो आँखोंके होने ही से वस्तुकी प्रकृत आकृति और परिमाण आदि अच्छी तरह देख सकते हैं।

सामनेके भागको छोड़कर आँख चारों तरफसे अस्थियों द्वारा रक्षित है। इसीको "चक्षुकोटर" कहते हैं। आँख चारों ओर एक चर्बीके-से पदार्थसे ढकी होती है, जिससे उसे किसी प्रकारका आघात नहीं पहुँच सकता। नेत्रके चारों ओर छः मांसपेशियाँ लगी हैं,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इन्हींके आकुञ्चन और प्रसारणसे हम मस्तक घुमाकर ऊपर-नीचे इधर-उधर जिधर चाहें देख सकते हैं। आँख बन्द करनेकी आवश्यकता हो, तो हम लोग ऊपर-नीचेके पलक बन्द कर सकते हैं। पलकोंके ऊपर जो सूक्ष्म-सूक्ष्म रोम हैं, उनसे आँखमें धूल-मिट्टी आदि पदार्थ नहीं जा सकते। ऊपरके पलकके नीचे एक पानी निकलनेका यन्त्र है। इसको अश्रु-ग्रन्थि (Tear gland टीयर ग्लाण्ड) कहते हैं। इससे थोड़ा-थोड़ा जल निकलकर, आँखका सम्मुख भाग साफ रहता है॥ इस यन्त्रसे नाकके भीतर तक एक छोटी नाली है। जब हम लोग दुःखी होते हैं या रुदन करते हैं, तब इस अश्रु-ग्रन्थि-यन्त्रसे आँसू निकलते हैं, जिससे कुछ पानी नाकके भीतर भी आता है।

इस लेखमें आँखके विषयमें बहुत थोड़ा हाल लिखा गया है; किन्तु जितना लिखा है, उतना सबको ध्यानमें रखना चाहिये। इस बहुत ही आवश्यकीय इन्द्रियमें किसी प्रकार अनिष्ट होने देना उचित नहीं। आवश्यकतासे अधिक प्रकाशमें व मन्द दीपकके उजालेमें पढ़ना अच्छा नहीं। पढ़नेके समय मस्तक ऊपरको उठाये रखना चाहिये। टेबुलपर झुककर पढ़ना कदापि उचित नहीं। इससे हमारी आँखोंको नुक़सान होता है। ज़रूरत होनेसे पुस्तकको सुविधाके अनुसार आँखोंके पास रख सकते हैं। बहुतोंको सोकर पढ़नेका अभ्यास होता है, किन्तु इससे भी आँखोंको हानि हो सकती है। समाचार-पत्र या महीन अक्षरोंकी पुस्तकोंके पढ़नेसे चक्षुओंपर अनावश्यक ज़ोर पड़कर क्रमशः नेत्रोंकी शक्ति घटती जाती है।

आँखें किसी कारणसे मसल जायँ या दुःखित हों, तो उन्हें न छूकर, जहाँ तक बन सके ढके रखना चाहिये। इसी तरह जलन हो तो शुद्ध उष्ण जलसे धोना उचित है। शीतल और अशुद्ध जलसे या दूधसे कभी न धोना चाहिये। अच्छे चिकित्सकके पाससे आँख धोनेकी दवा या व्यवस्था लेनी आवश्यक है। नेत्र बहुत अमूल्य अवयव हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इनका किञ्चित्-मात्र अनिष्ट होनेसे उसी समय उसके प्रतिकारका उद्योग करना चाहिये।

हमारे शिक्षित बालक-बालिकाओंमें बहुतोंके नेत्रोंमें शक्तिकी कमी देखनेमें आती है। किसी-किसीमें तो आजन्म दृष्टि-शक्तिकी हीनता दीख पड़ती है। पढ़नेके समय पुस्तक आँखके बहुत नज़दीक लाये विना ठीक दिखाई नहीं देता, दूरकी चीज़ साफ़-साफ़ नज़र नहीं पड़ती, इसको मायोपिक (Myopic) कहते हैं। किसी बालककी नेत्र-शक्ति कम हो, तो उसके अभिभावकगणको उपेक्षा न करनी चाहिये। तत्काल डाक्टरको दिखानेसे, चश्मा आदिसे सहजमें आँख अच्छी हो सकती है। ध्यानमें रखना चाहिये कि, इन सब बातोंकी अवहेलना करनेसे, नेत्रोंका अस्वाभाविक परिचालन होनेसे, विशेष क्षति हो सकती है। आँखोंके बहुत-से संक्रामक रोग हैं। इसलिये घरमें एककी आँखमें दर्द हो, तो सबको सावधान रहना चाहिये। अशुद्ध हाथ कभी भी आँखोंमें न लगावें। दूसरे लोग जिस गमछेको काममें लावें या जिस जल-पात्रसे मुँह धोवें, उसको अपने काममें लाना उचित नहीं है।

("स्वास्थ्य समाचार")

अतिसार-गजकेशरी चूर्ण।

इस चूर्णके सेवन करनेसे आँव-खूनके दस्त, पतले दस्त यानी हर तरहका घोर अतिसार भी बात-की-बातमें आराम हो जाता है। आज़मूदा दवा है। हर गृहस्थको एक शीशी पास रखनी चाहिये, क्योंकि समयपर एक रुपयेमें वही काम हो सकता है, जो डाक्टरको बीस-पचीस रुपये देनेसे हो सकता है। दाम एक शीशीका १)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

चालीसवाँ अध्याय

कर्णरोग-वर्णन।

—:※※※:—

कर्णशूलके लक्षण।

कुपित हुई "वायु" जब दोषोंसे घिरकर कानोंमें उल्टी चालसे घूमती है, तब कानोंमें अत्यन्त शूल चलता है। उसे "कर्णशूल" कहते हैं। यह बड़ी मुश्किलसे आराम होता है।

नोट—कानकी हत्राके चारों ओर कानमें घूमनेसे बड़े ज़ोरका दर्द होता है और उसके साथ जो दोष होता है, उसी दोषके लक्षण प्रकाशित होते हैं। कानकी इस पीड़ाको "कर्णशूल" कहते हैं।

कर्णनादके लक्षण।

वायु कानके छेदमें स्थित होकर तरह-तरहकी भेरी, मृदङ्ग और शंख वग़ैरःकी-सी आवाज़ें सुनाती है। इस रोगको "कर्णनाद" कहते हैं। मतलब यह है कि, जब कानमें भेरी, मृदङ्ग और शंख वग़ैरःकी-सी नाना प्रकारकी आवाज़ें सुनाई देती हैं, तब "कर्णनाद" होना कहते हैं।

बाधिर्य या बहरेपनके लक्षण।

केवल "वायु" या "वायु और कफ" जब शब्द बहानेवाली नाड़ियोंको रोक देते हैं, तब "बाधिर्य या बहरापन" होता है। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोगके होनेसे मनुष्यकी सुननेकी शक्ति मारी जाती है—वह बहरा हो जाता है।

खुलासा—शब्द-वहा स्रोतों या नाड़ियोंमें जब "वायु या वायु और कफ" घुस जाते हैं और उनकी राहें रोक देते हैं, तब मनुष्य बहरा हो जाता है।

कर्णक्ष्वेड़के लक्षण।

पित्त आदिके साथ वायु कानमें घुसकर बंसीकी-सी आवाज़ पैदा करती है, उसे ही "कर्णक्ष्वेड़" कहते हैं।

नोट—कानमें बांसुरीकी-सी आवाज़ सुनाई देनेको "कर्णक्ष्वेड़" कहते हैं।

कर्णस्रावके लक्षण।

सिरमें चोट लगनेसे या जलमें गोता मारकर नहानेसे या कानमें विद्रधि-फोड़ेके पकनेसे—वायु कुपित होकर, कानोंसे राध, रसी या पानी-सा बहाती है। इसे ही "कर्णस्राव या कान बहना" कहते हैं।

खुलासा—सिरमें चोट लगने, जलमें गोता मारने या कानमें फोड़ा पक जानेसे कानमें पीप, रसी या पानी बहने लगता है, इसीको "कर्णस्राव" कहते हैं।

कर्ण-कण्डूके लक्षण।

कफ मिली वायु कानमें खुजली चलाती है। उस कानकी खुजलीको "कर्ण-कण्डू" कहते हैं।

नोट—कर्णकण्डू रोग होनेसे कानमें सदा खुजली चला करती है।

कर्णगूथके लक्षण।

पित्तकी गरमीसे कानका कफ सूखकर, मैलके रूपमें बदल जाता है। इसे "कर्णगूथ" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण-प्रतिनाहके लक्षण।

वही कर्णगूथ या कानका मैल—तेल वग़ैरः चिकनी चीज़ कानमें डालनेसे—पतला होकर, मुँह या नाकसे निकलने लगता है, तब "कर्ण-प्रतिनाह" कहते हैं। यह अर्द्धावभेदक या आधासीसीका रोग पैदा करता है।

कृमिकर्णके लक्षण।

कानमें मांस और खून आदिके सड़नेसे और कानमें मक्खीके बैठनेसे कीड़े पड़ जाते हैं। कानमें कीड़े पड़नेके रोगको "कृमिकर्ण" कहते हैं।

पूतिकर्णके लक्षण।

चाहे जिस कारणसे, कानसे दुर्गन्ध और पीप आदि निकलनेको "पूतिकर्ण" कहते हैं। मतलब यह है, इस रोगके होनेसे कानसे बदबूदार राध बहने लगती है।

कर्णपाकके लक्षण।

पित्तके कुपित होनेसे या कानके पकनेसे या कानमें पानी भर जानेसे "कर्णपाक" रोग होता है। इस रोगमें कान बहता और गीला रहता है।

कानमें पतंग आदि घुसनेके लक्षण।

पतंग, कनखजूरा, कनसलाई वग़ैरःके कानमें घुस जानेसे बेचैनी, बेकली और पीड़ा होती है। जब कानमें घुसनेवाला जीव कानके भीतर कुलमुलाता या चलता है, तब बड़ी भयानक पीड़ा होती है। जब वह चलनेसे रुक जाता है, तब पीड़ा भी कम हो जाती है।

द्विविध कर्ण-विद्रधिके लक्षण।

घाव हो जाने या चोट लग जानेसे कानमें विद्रधि—फोड़ा हो जाता है; उसी तरह वातादि दोषोंसे दूसरी तरहकी विद्रधि हो जाती

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

है, तब उसमेंसे लाल, पीला और नीला मवाद निकलता है। उसमें चीरने और चूसनेके जैसी पीड़ा होती है, धूआँ-सा निकलता और जलन होती है।

कर्णशोथ आदिके लक्षण।

कर्णशोथ, कर्ण-अर्बुद और कर्ण-अर्श—इनके लक्षण शोथ—सूजन, अर्बुद—गाँठ और अर्श—मस्सेके लक्षणोंके समान होते हैं।

वातज कर्णरोगके लक्षण।

चरकने चार तरहके कर्णरोग कहे हैं। उनमेंसे वातज कर्णरोगमें आवाज होती है, वेदना होती है, कानका मैल सूख जाता है, कान थोड़ा-थोड़ा बहता है और सुनाई नहीं देता।

पित्तज कर्णरोगके लक्षण।

पित्तज कर्णरोगमें लाल सूजन होती है, जलन होती है, कान फटा-सा हो जाता है और उसमेंसे पीला मवाद निकलता है।

कफज कर्णरोगके लक्षण।

इस कर्णरोगके होनेसे विपरीत सुनाई पड़ता है; यानी कहा कुछ जाता है और सुनाई कुछ देता है; कुछ-कुछ खुजली होती है; सख्त सूजन होती है; सफेद और चिकनी राध निकलती है एवं थोड़ी पीड़ा होती है।

सन्निपातज कर्णरोगके लक्षण।

त्रिदोषजमें तीनों दोषोंके लक्षण मिलते हैं, सब तरहका मवाद बहता है अथवा जौनसा दोष ज़ियादा होता है, उसी दोषके अनुसार उसी रंगका मवाद निकलता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परिपोटकके लक्षण।

बहुत समय तक कानोंमें कोई भारी गहना पहने रहनेसे अथवा और कोई चीज़ कानमें डालकर ऐसे ही छोड़ देनेसे, कोमलताके कारण, उसमें यकायक अत्यन्त सूजन आ जाती है, दर्द होता है और वह किंचित् फटा-सा हो जाता है। कलाई लिए लाल और जकड़ी-सी जो सूजन होती है, उसे "परिपोटक" कहते हैं। यह रोग वायुसे होता है।

उत्पातके लक्षण।

कानोंमें भारी ज़ेवर पहननेसे या किसी तरहकी चोट लगनेसे अथवा कानके रगड़ खानेसे "रक्तपित्त" कुपित हो जाते हैं। वे कानकी पालीमें हरी, नीली या लाल रंगकी सूजन पैदा करते हैं। उसमें जलन और पीड़ा होती है। उसे ही "उत्पात" कहते हैं।

उन्मन्थके लक्षण।

कानको ज़बर्दस्ती बढ़ानेसे कानकी पालीमें "वायु"का कोप होता है। वह "वायु" कफकी मददसे स्तब्धतायुक्त, थोड़े दर्दवाली और खुजलीयुक्त सूजन पैदा करती है। उस सूजनको "उन्मन्थ" कहते हैं। उन्मन्थ रोग "कफ और वायु"के कोपसे होता है।

दुःखवर्द्धनके लक्षण।

बेक़ायदे छिदे हुए कानको बेक़ायदे बढ़ानेसे एक प्रकारकी सूजन आ जाती है। उसमें खुजली चलती है, जलन होती है, दर्द होता है और वह पक भी जाती है। उसे "दुःखवर्द्धन" कहते हैं। दुःखवर्द्धन तीनों दोषोंसे होता है।

परिलेहीके लक्षण।

कफ, रुधिर और कीड़े कुपित होकर फैलती हुई खुजली और दाहयुक्त सरसों जैसी फुन्सियाँ पैदा करते हैं। यह रोग चारों

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तरफ फैलता-फैलता कानके छेद और कानकी पाली या लोरको मांस रहित कर डालता है। इसे "परिलेही" कहते हैं। यह रोग कफ, रुधिर और कृमि—इनके कोपसे होता है।

कर्णरोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) कर्णशूल, कर्णनाद, वाधिर्य्य-बहरापन और कर्णक्वेड़—इन चारों कर्णरोगोंकी एक-सी ही औषधि करनी चाहिये।

(२) कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमिकर्ण—इन सबकी समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) कर्ण-विद्रधि रोगोंमें विद्रधिमें, कही हुई साधारण चिकित्सा करनी चाहिये।

(४) कर्णपाककी चिकित्सा क्षत और विसर्पके समान करनी चाहिये।

(५) कानकी पाली सूखी जाती हो, तो वातज रोगोंके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) बालक और बूढ़ेकी बहुत दिनकी पैदा हुई बधिरता या बहरेपनका इलाज न करना चाहिये।

(७) कर्णकण्डू रोग या कानकी खुजलीमें स्नेह, स्वेद, वमन, धूमपान, शिरोविरेचन और समस्त कफनाशक विधि करनी चाहिये।

(८) कर्णगूथ रोग या कानमें मैल होनेकी हालतमें, पहले कानमें तेल डालना चाहिये। फिर शोधनेवाली दवा डालकर सलाईसे मैल निकाल देना चाहिये।

(९) कलिहारी, हुलहुल और त्रिकुटाको एकत्र पीसकर और कपड़ेमें रस निचोड़कर कानमें भरनेसे कानमें घुसी हुई जौंक, कृमि,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कीट, चींटी, कनसलाई, कनखजूरा और मस्तकके कीड़े गिर जाते हैं। यह उपाय इस कामके लिए सर्व्वोत्तम है। याद रखो।

(१०) कृमि-कर्ण या कानके कीड़े नष्ट करनेको कृमिनाशक चिकित्सा करनी चाहिये। बैंगनका धूआँ कानमें पहुँचाना या सरसोंका तेल कानमें डालना—इसमें परम हितकर है।

(११) कानमें तेल भरनेको "कर्ण पूरण" कहते हैं। कानमें तेल भरकर, कानको तब तक उसी तरह रखा रहने देना चाहिये जब तक दर्द आराम न हो जाय या १०० मात्रा काल न हो जाय। हाथको घुमाकर, दाहनी जाँघपर फेरकर, चुटकी बजानेमें जितना समय लगता है अथवा आँख खोलकर बन्द करनेमें जितना समय लगता है, उतने समयको "एक मात्रा" कहते हैं।

(१२) वातरोगमें जो चिकित्सा कही है, वही इस कर्ण-रोगमें भी करनी चाहिये। इस रोगमें शीतल जलसे नहाना, शीतल जल पीना और मैथुन कर्म करना त्याग देना चाहिये।

(१३) पित्तज कर्ण-रोगमें मिश्री मिले घी और चिकने पदार्थोंका विरेचन देना चाहिये। दाख और मुलेठी दूधमें औटाकर दूध पिलाना चाहिये। रक्तज कर्ण-रोगमें पित्तजके समान इलाज करना चाहिये तथा फ़स्द खुलवानी चाहिये। कफज कर्ण-रोगमें पीपलोंके कल्कके साथ पकाये हुए घीको दूधमें मिलाकर गरगरे करने चाहिये, स्वेद देना चाहिये और कफनाशक धूप देनी चाहिये। कफज कर्ण-रोगमें पहले वमनादिके द्वारा चिकित्सा करनी चाहिये।

(१४) कानका बहरापन नाश करनेके लिए "बिल्व तैल" और "अपामार्ग तैल" उत्तम हैं। कानका दर्द नाश करनेके लिए "एरण्डादि तैल" और "विषगर्भ तैल" उत्तम हैं। पूतिकर्ण या कानका बदबूदार मवाद दूर करनेमें "शम्बूक तैल" (घोंघेका तैल) और "गंधकाद्य तैल" उत्तम हैं। कानकी पाली पुष्ट करनेके लिए "शतावरी तैल" उत्तम है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१५) नीचे हम चन्द उपाय कानोंकी रक्षाके सम्बन्धमें लिखते हैं, पाठकोंको उनपर ध्यान रखना चाहियेः—

(क) दाँतका दर्द नाश करनेके लिए कानमें कोई दवा मत डालो।

(ख) कानमें पीप वग़ैरः बहती हो, तो रूई लगाकर कान बन्द मत करो।

(ग) कानकी भीतरी नलीमें कभी पुल्टिस मत बाँधो।

(घ) कानमें तेल-पानी वग़ैरः कोई चीज़ बिना गरम किये मत डालो।

(ङ) कानकी पीप धोनेको सिवाय गरम जलके और कोई चीज़ मत डालो।

(च) बालकके कानपर कभी तमाचा मत मारो। इससे फ़ौरन कानका पर्दा ख़राब हो जाता है।

(छ) अगर बहरापन हो, तो मस्तकके ऊपरके बाल मत कटाओ।

(ज) कानमें खुजली हो, तो सिर्फ उँगली डालकर कान खुजाओ; सींक, सलाई या तिनकेसे कान मत खुजाओ।

(झ) पाँवोंको कभी भीगे हुए या शीतल मत रखो, पीठके बाँसेको ठण्डी और खुली हवामें खोलकर न बैठो। इन कामोंसे सुननेकी ताक़त कम हो जाती है।

(ञ) कानमें कोई जीव गिर जाय, तो कानमें थोड़ा गरम पानी डालो। इससे कानका कीड़ा ऊपर आ जाता है; पीछे रूईकी फुरेरीसे उसे निकाल दो। तम्बाखू पीकर उसका धूआँ कानमें फूँकनेसे भी जीव मर जाता है।

(ट) कानमें बटन या कौड़ी वग़ैरः चली जाय, तो किसी डाक्टरसे निकलवा दो, खुद कान ख़राब मत करो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्ण-रोग चिकित्सा ।

नोट—कर्णशूल, कर्णनाद, बाधिर्य्य और कर्णस्वेण—इन चारों कानके रोगोंका इलाज एकसा ही किया जाता है ।

(१) कर्णशूल रोगीको चिकने और वातनाशक पदार्थोंके द्वारा जुलाब लेना चाहिये और भोजनके बाद घृत-पान और वस्तिकर्म करना चाहिये ।

(२) सुहाते-सुहाते गरम दूधमें "घी" मिलाकर तीन दिन तक पीनेसे कर्णशूल—कानका दर्द नाश हो जाता है ।

(३) पीपलके पत्तोंको सिलपर पीसकर और उस लुगदीमें तेल मिलाकर आगपर रखो । आगपर रखनेसे जो तेल निकले, उसे कानमें डालनेसे कर्णशूल या कानका दर्द आराम हो जाता है ।

(४) अदरख, मुलेठी, सैंधानोन और तेल—इनको एकत्र पकाओ और तेलको छान लो । इस तेलको सुहाता-सुहाता कानमें डालनेसे कर्णशूल या कानका दर्द आराम हो जाता है ।

(५) कैथ, बिजौरा नीबू, काँजी और अदरख—इनका रस निकाल कर और ज़रा गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है ।

(६) लहसन, अदरख, लाल सहँजनेकी जड़ और केलेकी जड़—इन सबका स्वरस निकालकर और ज़रा गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है ।

(७) काँजीको ज़रा गरम करके, उसमें समन्दरफैन या सीपका चूर्ण मिलाकर कानमें डालनेसे कानकी पीड़ा शान्त हो जाती है ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८) आकके अंकुरोंको काँजीके साथ पीसकर, उसमें तेल और सैंधानोन मिलाकर, सैंहुड़के डण्डेके भीतर भरकर, कपरौटी करो और पुटपाककी रीतिसे पकाओ। पक जानेपर, उसमेंसे रस निचोड़कर सुहाता-सुहाता कानमें डालो। इससे कानका दर्द मिट जाता है।

(९) आकके पीले-पीले पत्तोंपर घी चुपड़कर, उनको दीपककी लौ या आगपर सेको। फिर उन्हें पीसकर रस निचोड़ लो। इस रसके सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालनेसे कानका दर्द आनन-फानन आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) वृहत्पंचमूलकी आठ अंगुल लम्बी लकड़ीको कपड़ेसे लपेटकर बत्ती-सी बना लो। फिर इसे तेलमें तर करके चिराग़से जलाओ। नीचे एक प्याला रख दो। जलती बत्तीको चिमटेसे पकड़े रहो। जो तेल टपककर गिरे, उसे उठाकर रख लो। इस तेलको सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालनेसे कानका दर्द फौरनसे पहले आराम हो जाता है। इसको "दीपिका तैल" कहते हैं।

(११) देवदारु, कूट और धूप सरल—इन तीनोंको ऊपरकी तरह ही कपड़ेसे लपेटकर बत्ती-सी कर लो। फिर तेलमें भिगोकर दीपकसे जलाओ। जो तेल टपके, उसे सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालो। इस तैलसे भी कानका दर्द फौरन आराम हो जाता है।

(१२) बकरीके दूधमें सैंधानोन मिलाकर और ज़रा गरम करके कानमें डालनेसे तत्काल घोर शूल भी आराम हो जाता है। इससे कानमें आवाज़ होना और मवाद बहना भी बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(१३) रैंडीके पत्तोंको पुटपाककी विधिसे पकाकर उनका रस निचोड़ लो। इस रसमें बराबरका "अदरखका रस और शहद" मिला दो। फिर इस मिले हुए मसालेको तेलमें मिलाकर पकाओ। इस तैलमें ज़रा-सा सैंधानोन पीसकर मिला दो और सुहाता-सुहाता कानमें डालो। इससे कानका दर्द फौरन आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) बाँसकी छाल सिलपर पीस लो। फिर इसमें लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना भेड़ या बकरीका पेशाब मिला दो और आगपर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१५) अदरखका रस ६ माशे, शहद ३ माशे, सैंधानोन १ रत्ती और तिलका तेल ३ माशे—इन सबको मिलाकर कानमें भरनेसे कर्णमूल, कर्णनाद, बहरापन और कर्णक्वेड़—कानमें बांसरीकी-सी आवाज होना—ये रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६) लहसन, अदरख, सहँजनेकी छाल और करेला—इनमेंसे समयपर जो भी मिल जाय, उसी एकका रस निकालकर और गरम करके, सुहाता-सुहाता कानमें डालनेसे कानका दर्द नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) कर्णनाद, कर्णक्वेड़ और बहरेपनके रोगमें सरसोंका तेल या वात-रोगोंमें लिखा हुआ "महामाषादि तैल" या और कोई वात-नाशक तैल कानोंमें डालनेसे अवश्य लाभ होता है।

(१८) सोंठका काढ़ा बनाकर और उसमें "गुड़" मिलाकर नास लेनेसे कर्णनाद, कर्णक्वेड़ और बहरेपनमें लाभ होता है। एक सालके भीतरके बहरेपनपर यह नुसखा ख़ास तौरसे अच्छा है। परीक्षित है।

(१९) अदरखके रस या लहसनके रसमें सैंधानोन मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द फौरन आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) केलेका रस या काँजी इनमेंसे कोई एक गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द आदि कानके रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) गोमूत्र गरम करके कानमें भरनेसे कानका दर्द अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२२) राई, पीपल, हींग, सौंफ और मूलीको पानीके साथ सिलपर पीस लो। लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुनी काँजी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलको कानमें डालनेसे बहरापन, कर्णनाद और कानका दर्द ये सब नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) सोंठ, शहद और सैंधानोन—इनको समान-समान एक-एक तोले लेकर पीस लो। फिर बारह तोले तेल और ४८ तोले पानी तथा इस लुगदीको मिलाकर पकाओ। तेल-मात्र रहनेपर छान लो। इस तैलको सुहाता-सुहाता गरम कानमें डालनेसे कानकी घोर पीड़ा भी नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(२४) काकजंघाका रस कानमें टपकानेसे कर्णनाद या बहरापन आराम होता है।

(२५) सफेद आककी जड़को सिलपर पानीके साथ पीस लो। फिर इस लुगदीको, इस लुगदीसे चौगुने तेलको और तेलसे चौगुने पानीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके कानमें डालनेसे घोर कानका दर्द भी मिट जाता है। परीक्षित है।

(२६) बेलगिरीको गोमूत्रमें पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना दूध और पानी मिलाकर तेल पका लो। इस तैलकी ५।६ बूँद रोज़ कानोंमें टपकानेसे बहरापन जाता रहता है।

(२७) हींग, सैंधानोन और सोंठको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीको और इससे चौगुने तेलको तथा तेलसे चौगुने पानीको मिलाकर आगपर पका लो। इस तैलको कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२८) चिरचिरेकी भस्मके पानीमें चिरेचिरेकी लुगदी और तेल मिलाकर पका लो। इस तैलसे थोड़े दिनोंका बहरापन और कर्णनाद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—चिरचिरेकी सिलपर पिसी लुगदी एक छटाँक, तेल पाव भर और चिरचिरेकी भस्म घोला हुआ पानी एक सेर लो और तेल पका लो। इस तेलमें झाग बहुत आते हैं, अतः चतुराईसे तेल पकाओ।

(२९) तुलसीके पत्ते और खट्टे नीबूको एक साथ पीसकर रस निकालो। फिर उसे गरम करके, उसमें ज़रा-सा "दूध" मिला दो और कानमें डालो। इससे कानका दर्द चला जाता है।

(३०) आँवला १ भाग और हल्दी २ भाग पानीमें पीसकर लेप करनेसे कर्णशोथ या कानकी सूजन आराम हो जाती है।

(३१) बेलके फलका गूदा गोमूत्रके साथ पीस लो। फिर जितनी यह लुगदी हो, उससे चौगुना तिलीका तेल, तेलसे चौगुना बकरीका मूत्र और उतना ही पानी तथा लुगदीको आगपर चढ़ाकर तेल पका लो। इस तैलका नाम "बिल्व तैल" है। इस तैलको कानमें डालनेसे कानका बहरापन, कानमें आवाज़ होना और कानका दर्द तथा कानके कीड़े ये सब नष्ट हो जाते हैं। यह तैल ख़ास करके "बहरेपन"को आराम करता है।

(३२) बिजौरे नीबूके रसमें थोड़ा-सा "सज्जीका चूर्ण" मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द, कानकी जलन और कानका बहना फ़ौरन ही आराम हो जाता है।

(३३) चोवाको रूईकी फुरेरीमें लगाकर कानमें फेरनेसे कानकी फुन्सी और घोर-से-घोर कानका दर्द फेरनेके साथ ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—सुदर्शनके पत्तेपर तेल लगाकर और कुछ गरम करके रस निचोड़ लो। इसमेंसे सुहाता-सुहाता रस कानमें डालनेसे कानका दर्द मिट जाता है। यह हमारा नहीं और एक सज्जनका आज़मूदा नुसख़ा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३४) सफेद कत्था कपड़ेमें छानकर और गरम पानीमें मिलाकर पिचकारी द्वारा कानमें डालने और पीछे कान धो लेनेसे कुछ दिनमें बहरापन जाता रहता है।

(३५) संभालूके पत्तोंका स्वरस ज़रा गरम कर लो। फिर उसमें एक रत्ती "अफीम" मिलाकर कानमें टपकाओ। इससे कानकी पीड़ा तत्काल नाश हो जाती है।

(३६) कानमें गुले रौग़न डालनेसे कानकी खुश्की और दर्द आराम हो जाते हैं। पराया परीक्षित है।

(३७) देवदारु, बच, सोंठ, सैंधानोन और सौंफ—इनको बराबर बराबर लेकर बकरीके पेशाबमें पकाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द दवा डालते ही आराम हो जाता है। यह नुसख़ा वैद्य गोपालसिंहजी मिश्र महोदय सम्भलवालोंका परीक्षित है।

(३८) अदरखका रस गरम करके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(३९) न्यूयार्कके एक मशहूर डाक्टर लिखते हैं:—अगर कानका पर्दा फटा न हो, तो एण्ट्रोपाइन सल्फ चौथाई ग्रेन और कोकेन हाईड्रोक्लोर फिनोलिस ५ ग्रेन मिलाकर कानमें डालनेसे कानकी सब तरहकी पीड़ाएँ नाश हो जाती हैं।

(४०) तुलसीके पत्तोंको चिकदकर रस निकालो और उस रसकी ५।७ बूँदें कानमें टपकाओ। इससे कानका दर्द आराम हो जायगा।

(४१) किंजल्कके पत्तोंके रसमें भैंसका घी और सैंधानोन मिलाकर दिनमें चार-पाँच बार कानमें डालनेसे कर्णमूल आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्णरोग नाशक उत्तमोत्तम योग।

श्योनाक तैल।

श्योनाककी जड़को सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। लुग्दीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर यथा-विधि तेल पकाओ। इस तैलको कानमें भरनेसे त्रिदोषज कानका दर्द भी आराम हो जाता है।

हिंग्वादि तैल।

हींग, तुम्बरु, सोंठ और सरसों—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। इस लुगदीके वज़नसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर तेल पका लो। इस तैलके कानमें भरनेसे कानका दर्द मिट जाता है।

देवदार्वादि तैल।

देवदारु, बच, सोंठ, शतावर, कूट और सैंधानोन—बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना गोमूत्र लेकर तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके कानमें डालनेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

एरण्डादि तैल।

अरण्डीकी जड़, सहँजना, वरना और मूली—इन सबका एक सेर स्वरस या काढ़ा तैयार कर लो। दो सेर दूध लो। मुलेठी और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षीर-काकोली दो-दो तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो। एक पाव तेल ले लो। अब सबको मिलाकर तेल पका लो। जब रस जलकर तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलको नस्य, मालिश और कर्ण पूरणके काममें लेनेसे यानी कानमें भरनेसे कर्णनाद, बहरापन और कानका दर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

स्वर्जिका तैल।

सज्जी, सूखी मूली, हींग, पीपर, सोंठ और सौंफ—इनको बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुनी शूक्त नामक काँजी तथा लुगदीको आगपर चढ़ाकर तेल पका लो। इस तैलको कानमें डालनेसे कर्णनाद, कानका दर्द, बहरापन और कानसे मवाद आना ये सब आराम हो जाते हैं।

बिल्व तैल।

इस तैलको कानमें डालनेसे बहरापन आराम हो जाता है। बनानेकी विधि पृष्ठ ११३३ में देखिये।

अपामार्गक्षार तैल।

इस तैलके कानमें डालनेसे कर्णनाद, कानका दर्द और थोड़े दिनका बहरापन नाश हो जाता है। विधि पृष्ठ ११३२ में देखिये। इस तैलकी हमने हज़ारों बार परीक्षा की है।

नोट—पानका बीड़ा जिसमें सुपारी, कत्था, चूना और तमाखू भी हो, पानीके साथ सिलपर पीसकर और पानीमें घोलकर छान लो और आगपर पकाओ। फिर सुहाता-सुहाता कानमें भर दो। फिर एक-दो मिनटमें ही निकालकर कानको खूब पोंछ लो। इसके बाद ५ बूँद "अपामार्गक्षार तैल" कानमें डाल दो। रोगीको फौरन नींद आ जायगी और दर्द शान्त हो जायगा।

अगर कान बहता हो, रसी आती हो, तो ज़रा-सी फ़िटकरी पानीमें घोलकर, पिचकारीमें भरकर कानमें पहुँचाओ। चार-पाँच पिचकारी मारकर कानको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पोंछ लो और "अपामार्गक्षार तैल" पाँच बूँद कानमें डालू दो। कुछ दिन इस तरह करनेसे कानका बहना मिट जायगा। अगर दस दिनमें इस तरह लाभ न दीखे, तो फिटकरीको आगपर फुलाकर पीस लो। फिर उसे काग़ज़की भोंगलीमें भरकर बहनेवाले कानमें फूँको। परमात्मा चाहेगा तो पुराने-से-पुराना कान बहनेका रोग आराम हो जायगा। कान बहना बन्द होनेपर ५।६ दिन फिर केवल "अपामार्गक्षार तैल" पाँच बूँद कानमें टपकाना। कान एकदम निर्दोष हो जायगा।

भैरव रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, मीठा विष, सुहागेकी खील, कौड़ीकी भस्म और गोल मिर्चका चूर्ण—सबको समान-समान ले लो। पहले गन्धक और पारेको अलग खरल कर लो। फिर उस कज्जलीमें बाक़ी दवाएँ मिला दो और अदरखका रस दे-देकर दिनभर खरल करो। घुट जानेपर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली निगल-कर, ऊपरसे अदरखका रस पीनेसे कर्णशूल, कर्णनाद, बहरापन और मन्दाग्नि रोग नाश हो जाते हैं।

विषगर्भ तैल।

हरताल ८ तोले, सैंधानोन ४ तोले और मीठा विष २ तोले—इनको सिलपर पीसकर लुगदी बना लो।

आकके पत्तोंका स्वरस १ सेर, सँभालूके पत्तोंका स्वरस १ सेर, अमलताशादिका स्वरस १ सेर, सूर्यावर्त्तका रस १ सेर, चीतेका स्वरस १ सेर, थूहरका दूध १ सेर, हुलहुलका रस १ सेर और तिलका तेल १ सेर—इन सबको और ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलके कानमें डालनेसे घोर कर्णशूल यानी भयंकर कानका दर्द भी आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमिकर्णादिकी चिकित्सा।

नोट—कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमिकर्णमें एक समान इलाज करना चाहिये। दोषोंका बलाबल विचारकर शिरोविरेचन, धूप, कर्ण पूरण, प्रमार्जन और धावन—ये सब काम कर्णस्राव, पूतिकर्ण और कृमिकर्णमें करने चाहिये। अमलताश वग़ैरःके जलसे अथवा तुलसी प्रभृतिके जलसे कानको धोना चाहिये। अथवा इन्हीं दवाओंको पीसकर कानमें भरना चाहिये।

(१) बिजौरे नीबूके रसमें "सज्जीखार" मिलाकर कानमें डालनेसे कर्णस्राव—कान बहना, कानका दर्द और जलन—ये सब शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं, इसमें ज़रा भी शक नहीं। परीक्षित है।

(२) आमके, जामुनके, महुएके और बड़के छोटे-छोटे पत्तोंको समान-समान लेकर, सिलपर पीसकर, लुगदी कर लो। अब इस लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी—इन सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलको कानमें डालनेसे पूतिकर्ण यानी कानसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

(३) चमेलीके पत्तोंका एक सेर स्वरस और पाव भर तेल मिलाकर आगपर पकाओ। रस जलकर तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लो। इस तैलको कानमें डालनेसे पूतिकर्ण रोग यानी कानसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

(४) औरतके दूधमें रसौतको पीसकर उसमें "शहद" मिला दो और फिर कानमें डालो। इस उपायसे बहुत दिनोंसे बहता हुआ कान और पूतिकर्ण यानी कानमें फोड़ा वग़ैरः फूटनेसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—स्त्रीके दूध, घी और शहदमें "रसौत" पीसकर कानमें डालनेसे जल्दी लाभ होता है।

(५) सीपके जीवोंके मांसके साथ पकाया हुआ सरसोंका तेल कानमें डालनेसे कानका बहना तत्काल आराम हो जाता है।

(६) गंधक, मैनसिल और हल्दी—इन तीनोंको मिलाकर चार तोले लो और सिलपर पानीसे साथ पीस लो। बत्तीस तोले धतूरेके पत्तोंका स्वरस और बत्तीस तोले सरसोंका तेल तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ। जब रस जलकर तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलको कानमें डालनेसे बहुत दिनोंका बहता हुआ कान भी आराम हो जाता है।

(७) कानमें गूगलकी धूनी देनेसे कानकी दुर्गन्ध नष्ट हो जाती है। इस कामके लिए गूगल सबसे उत्तम है।

(८) किंजल्कके नरम फल और छालका रस मिलाकर कानमें डालनेसे कान बहना आराम हो जाता है।

(९) कौरैयाकी छालका चूर्ण कपड़ेमें छानकर कानमें डालो और ऊपरसे "मख़मली" वनस्पतिके पत्तोंका रस कानमें निचोड़ो। इससे कान बहना आराम हो जाता है।

(१०) बड़, गूलर, पाखर, पीपल और बैंतकी छालका चूर्ण, कैथका रस और शहद,—इन सबको मिलाकर कानमें डालनेसे पूर्ति-कर्ण यानी कानसे बदबूदार मवाद आना आराम हो जाता है।

(११) बैंगनका धूआँ कानमें पहुँचानेसे कृमिकर्ण रोग यानी कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(१२) सरसोंका तेल कानमें डालनेसे भी कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(१३) गायके मूत्रमें पिसी हुई हरतालका रस कानमें डालनेसे कृमिकर्ण या कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—कृमिकर्ण रोग नाश करनेको कृमियोंको नाश करनेवाली चिकित्सा करनी चाहिये।

(१४) हुलहुलके स्वरस, सँभालूके स्वरस और कलिहारीकी जड़के रसमें "त्रिकुटेका चूर्ण" मिलाकर कानमें डालनेसे कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) त्रिकुटेका चूर्ण कानमें डालनेसे कानके कीड़े मर जाते हैं।

(१६) सिन्दुवारका रस कानमें भरनेसे कानके कीड़े मर जाते हैं।

(१७) छै माशे रसौतको आधा सेर खूब गर्म जलमें डालकर और घोलकर वस्त्रमें छान लो। इस जलसे पिचकारी द्वारा कानको धोओ। इससे पीप वग़ैरः धुलकर कान साफ़ हो जाता है।

(१८) नीमके पत्तोंको जलमें पकाकर वस्त्रमें छान लो। फिर उस जलमें ज़रा-सा सैंधानोन डालकर, उसके द्वारा पिचकारीसे कान धोनेसे विशेष फायदा होता है।

(१९) खैर १ तोला, बबूलकी छाल २ तोला और जामुनकी छाल २ तोला—एक सेर जलमें पकाओ; जब आध सेर जल बाक़ी रह जाय, उतारकर छान लो। इसके द्वारा कान धोनेसे कानकी पीप दूर होती है।

(२०) अगर कानमें व्रण हो, तो धतूरेके पत्तोंका रस गरम करके कानके ऊपर लेप करो और नीमके पत्तोंका रस गरम करके कानके भीतर थोड़ा-थोड़ा २।३ बार डालो।

(२१) पंचकषायके चूर्णमें "कैथका रस और शहद" मिलाकर कानमें भरनेसे कर्णस्राव—कान बहना बन्द हो जाता है।

नोट—तेंदू, हरड़, लोध, मँजीठ और आँवले इन पाँचोंको "पंचकषाय" कहते हैं।

(२२) शाल वृक्षकी "छालका चूर्ण" बिजौरे नीबूके रसमें मिलाकर कानमें डालनेसे कर्णस्राव—कान बहना, कानका दर्द और कानकी जलन—ये सब आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२३) शाल वृक्षकी छालका चूर्ण "कपासके फलों" के रसमें मिलाकर और ऊपरसे "शहद" डालकर कानमें छोड़नेसे कर्णस्राव रोग आराम हो जाता है।

(२४) हाथीकी लीदसे पैदा हुए छत्रशाक (साँपकी छत्री) को पुटपाक-विधिसे पकाकर और उसका रस निचोड़कर, फिर उसमें "तेल और सैंधेनोनका चूर्ण" मिलाकर कानमें डालनेसे कर्णस्राव रोग आराम हो जाता है।

(२५) जामुन और आमके नये पत्ते, कैथ और कपासके ताजा फल—सबको समान-समान लेकर पीस-कूटकर रस निचोड़ लो। फिर उस रसमें "शहद" मिलाकर कानमें डालो। इससे कान बहना, कानमें कीड़े पड़ना वग़ैरः रोग आराम हो जाते हैं।

(२६) आगपर फुलाई हुई फिटकरीकी खीलोंको पीसकर और काग़ज़की भोंगलीमें भरकर कानमें फूँकनेसे पुराने-से-पुराना कर्णस्राव रोग नष्ट हो जाता है। कानका बहना बन्द करनेको यह सर्वोत्तम दवा है। तत्काल फायदा दिखाती है। परीक्षित है।

पूतिकर्णादिपर उत्तमोत्तम योग।

पञ्चबल्कल तैल।

बेलगिरी, गूलर, जामुन, कैथ और आम—इनकी छालोंको पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर सबको मिलाकर आगपर पकाओ। इस

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तैलके कानमें डालनेसे, बहरापन, कर्णपाक—कानमें घाव होना या पकना और कर्णस्राव ये सब नाश हो जाते हैं।

चतुष्पर्णी तैल।

आम, जामुन, महुआ और बड़के नर्म-नर्म पत्ते बराबर-बराबर लेकर सिलपर पीस लो। फिर इस लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर, सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलको कानमें डालनेसे कर्णस्राव और कानकी बदबू नाश हो जाती है।

चतुष्पल्लव तैल।

वरनाकी छाल, कैथके पत्ते, आमके पत्ते और जामुनके पत्ते—इनको बराबर-बराबर लेकर सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर और सबको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलको कानमें डालनेसे पूतिकर्ण यानी कानसे बदबू आना बन्द हो जाता है।

कुष्ठाद्य तैल।

कूट, हींग, बच, देवदारु, सोवा, सोंठ और सैंधानोन—इनको तीन-तीन तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। फिर तिलका तेल एक सेर और बकरीका मूत्र चार सेर तथा ऊपरकी लुगदीको मिलाकर आगपर पकाओ। जब मूत्र जलकर तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलको कानमें डालनेसे पूतिकर्ण—कानसे बदबूदार मवाद निकलना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

शम्बूक तैल।

घोंघेका मांस सरसोंके तेलमें औटाकर तेलको छानकर रख लो। इस तैलको कानमें डालनेसे कर्ण-नाड़ी शान्त हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गन्धकाद्य तैल।

गन्धक, मैनसिल और हल्दी—तीनों मिलाकर ४ तोले लो और सिलपर पीसकर लुगदी कर लो। फिर ३२ तोले सरसोंका तेल, ३२ तोले धतूरेका रस और ऊपरकी लुगदी सबको आगपर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। यह तैल बहुत पुरानी कर्णनाड़ीको भी आराम करता है।

कानकी पालीके रोगोंकी चिकित्सा।

(१) कानकी पाली सूखी जाती हो, तो वातज रोगोंकी-सी चिकित्सा करो। यत्नपूर्वक पालीको सेको और सेकनेके बाद "तिलका कल्क" लगाकर उसे बढ़ाओ।

(२) शतावर, असगन्ध, क्षीर-काकोली और रेंडीके बीज—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी और लुगदी इन सबको मिलाकर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तैलका नाम "शतावरी तैल" है। इस तैलको लगानेसे कानकी पाली सहजमें बढ़ जाती है।

(३) नयी मूसलीको पीसकर भैंसके नौनी घीमें मिला लो और सात दिन तक धानके ढेरमें गाड़े रहो। फिर निकालकर पालीपर लगाओ। इसके लगानेसे पाली बढ़ जाती है।

(४) कलियारीकी लुगदी, शतावरकी लुगदी, गोहकी चरबी और कंकपक्षीकी चरबी—इनको समान-समान लेकर और इन सबके वजनसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर सबको

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलके चुपड़नेसे उन्मन्थ रोग यानी पालीकी खुजली, सूजन और पीड़ा आराम हो जाती हैं।

(५) दुःखवर्द्धन रोग हुआ हो तो जामुनके, आमके और बेलके पत्तोंके काढ़ेसे उसे सींचो। फिर उसे अच्छी तरह तेलसे चिकना करो और जामुन, आम और बेलके पत्तोंका चूर्ण ही उसपर बुरको।

(६) अगर परिलेही रोग हुआ हो यानी खुजली और जलन करनेवाली सरसोंके समान फुन्सियाँ हो गई हों, तो बारम्बार गोबरसे सेक करो। फिर बकरीके मूत्रमें "कपूर" पीसकर लेप करो।

नोट—कोई-कोई बकरीके मूत्र और दहीमें कपूरको पीसते हैं।

(७) कालीसर, खिरेंटी, मुलेठी, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते, कमल, धान्याम्ल काँजी, मँजीठ और लोध—इनको बराबर-बराबर लेकर सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलका तेल और तेलसे चौगुना पानी तथा लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलकी मालिशसे कर्ण उत्पात रोग नाश हो जाता है।

कानके रोगोंपर हकीमी नुसख़े।

कानके घाव नाश करनेवाले नुसख़े।

(१) जब कानसे मैल निकलने लगे, जल्दी ही खुश्क औषधि सेवन न करनी चाहिये; क्योंकि उससे पीड़ा बढ़ जाती है। सबसे पहले किसी दवासे मैलको साफ करना चाहिये; इसके बाद खुश्क दवा डालनी चाहिये। कानमें शहद टपकानेसे अथवा शहदमें भिगोई बत्ती कानमें रखनेसे कानका मैल निकल आता है और पीड़ा भी जाती रहती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) नीमके पत्ते पानीमें औटाकर कानमें बफ़ारा लेनेसे भी कानका मैल निकल जाता है।

(३) प्याज़का रस "मुर्ग़ेके अण्डेकी सफेदी"में मिलाकर कानमें टपकानेसे कानका घाव आराम हो जाता है।

(४) नीमके तेलमें "शहद" मिलाकर, फिर उसमें कपड़ेकी बत्ती तर करके कानमें रखनेसे कानके घाव आराम हो जाते हैं।

(५) बकरीका दूध कानमें टपकानेसे कानके घाव आराम हो जाते हैं।

(६) लड़केके पेशाबमें अनारकी छाल औटाकर और छानकर कानमें टपकानेसे कानके घाव नष्ट हो जाते हैं।

(७) भुनी फिटकरी और मुरमक्की बराबर-बराबर लेकर "शहद" में मिला लो। फिर उसमें बत्ती तर करके कानमें रखो। इससे भी कानके घाव मिट जाते हैं।

(८) समन्दरफेनका चूर्ण काग़ज़की भोंगली द्वारा कानमें फूँकनेसे कानके घाव आराम हो जाते हैं।

(९) घोड़ा बच पानीमें पीसकर, कुछ गरम रहते हुए कानमें टपकानेसे कानकी आलायश निकल जाती है।

(१०) कानका मैल साफ़ करके, पीली कौड़ीकी राख कानमें फूँको और ऊपरसे नीबूके रसकी कुछ बूँदें टपका दो। इससे कानका घाव आराम हो जायगा।

(११) लोध महीन पीसकर कानमें बुरकनेसे कानके घाव भर जाते हैं।

(१२) लाल सागका स्वरस कानमें टपकानेसे कानके कीड़े नष्ट हो जाते और घाव भी भर जाता है।

(१३) एक जुगनू लाल रोग़नमें पीसकर कानमें टपकानेसे कानका घाव भर जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) घोंघा लाकर सरसोंके तेलमें भून लो। फिर तेलको छान लो। इस तैलके कानमें डालनेसे नासूर भी आराम हो जाता है।

(१५) अगर बालकके कानके पीछे घाव हो गया हो, तो तिलक लगानेकी रोलीको बालकके पेशाब या जलमें पीसकर घावपर लगाओ; यद्यपि इससे कुछ जलन होगी, पर फायदा बहुत होगा।

(१६) पोदीनेके पत्तोंके अर्कमें शफ़तालू मिलाकर कानमें डालनेसे कानके कीड़े दूर हो जाते हैं।

कानकी सूजन नाश करनेवाले नुसखे।

नोट—कानके भीतरकी सूजन बहुत भयंकर होती है। उस दशामें सरेरूकी फ़स्द खोलना उचित है।

(१) अगर कानके पीछे सूजन हो, तो मसी यानी चकसोनके पेड़की नई पत्तियाँ लाहौरी नमकके साथ पीसकर लेप करनेसे लाभ होता है।

(२) सुपारी, विषमारीकी जड़, करेलेके बीज, गेरू, काला जीरा और कुचला पानीमें पीसकर और कुछ गरम करके लेप करनेसे कानके पीछेकी सूजन नाश हो जाती है।

(३) लहसनकी जड़ पानीमें पीसकर और कुछ गरम करके कानके पीछेकी सूजनपर लगानेसे वह सूजन आराम हो जाती है।

(४) हुलहुलकी पत्तियाँ सिलपर पीसकर कपड़ेमें रस निचोड़ लो और कानमें चन्द बूँद टपकाओ। इस तरह कई दिन तक हुल-हुलकी पत्तियोंका रस कानमें डालनेसे सूजन अच्छी हो जाती और बहकर निकल जाती है।

(५) प्याज़का रस मेथी या अलसी या ईसबगोलके लुआबमें मिलाकर और आगपर पकाकर कानमें टपकानेसे कानकी सूजन बहकर निकल जाती और आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) आँवले १ भाग और हल्दी २ भाग पानीमें पीसकर लेप करनेसे कर्णशोथ या कानकी सूजन आराम हो जाती है।

कानके कीड़े नाश करनेवाले नुसख़े।

(१) एलुआ पानीमें पीसकर कानमें भर दो और देर तक भरा रहने दो। फिर कुछ देर बाद कानको इस तरह झुकाओ कि, पानी निकल जावे। इस तरह करनेसे गरमीकी वजहसे पैदा हुए कानके कीड़े मरकर निकल जाते हैं।

(२) मलीम नामक लकड़ीको महीन पीसकर कानमें डालनेसे कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३) सँभालूके पत्तोंका रस कानमें टपकानेसे कानके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(४) हल्दीकी एक गाँठ, दश माशे शहद, चार तोले नीमके पत्तोंका रस और एक तोले सरसोंका तेल मिलाकर आगपर पकाओ। जब दवाएँ जलकर तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलकी दो बूँद कानमें टपकानेसे कानके कीड़े मरकर आनन्द हो जाता है।

(५) दो माशे तिलीका तेल कानमें टपकानेसे कानके कीड़े मर जाते हैं और बाहरसे घुसा हुआ कीड़ा भी नष्ट हो जाता है।

(६) प्याजका रस कानमें टपकानेसे भी कानके कीड़े मर जाते हैं।

(७) तेज़ शराब कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता और मैल निकल जाता है।

(८) कानमें मच्छर वग़ैरः घुस जावे, तो कसौंदीके पत्तोंका रस कानमें टपकाओ। परीक्षित है।

कानकी खुजली नाश करनेवाले नुसख़े।

(१) तेल और सिरका मिलाकर औटाओ और छानकर कानमें टपकाओ। इससे कानकी खुजली दूर हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) चमेलीके तेलमें थोड़ा-सा एलुआ खूब खरल करके और गरम करके कानमें टपकानेसे कानकी खुजली आराम हो जाती है।

कानका पानी निकालनेके उपाय।

(१) अगर कानमें पानी रह जावे, तो छींको और खाँसो और सिरको उस तरफ झुका रखो जिस तरफके कानमें पानी भरा हो अथवा तिलका तेल कुछ गरम करके कानमें टपकाओ या हथेली कानपर रखकर, एक पैरसे खड़े हो जाओ और जिस तरफके कानमें पानी हो उस तरफ सिरको झुका दो।

ऊँचा सुननेके उपाय।

नोट—अगर ऊँचा सुननेका रोग थोड़े दिनोंसे हो, तो जुलाब दो। बहुत पुराना रोग नहीं जाता। जल्दी ही हुब अयारजका जुलाब देकर ब्रह्माण्डका मैल निकालो। इसके बाद कानमें दवा डालो।

(१) मदारके पीले पत्ते जिनमें छेद न हों आगपर गरम करके रस निकालो और कानमें टपकाओ। इस तरह १५ दिन तक रस टपकानेसे कम सुननेमें लाभ होता है।

(२) ऊँटका मूत्र गरम करके कानमें टपकानेसे बहरापन आराम हो जाता है।

(३) काली कलोर गायका मूत्र सवा सेर मन्दी आगसे औटाओ; जब आठ या दस तोले रह जाय, छानकर शीशीमें रख लो। इसमेंसे अढ़ाई बूँद रोज़ कानमें टपकानेसे बहरेपनमें लाभ हो जाता है।

(४) प्याज़का रस कुछ गरम करके कानमें टपकानेसे ऊँचा सुनने, कान भिन-भिन करने, कानमें दर्द होने और कानके बहने वग़ैरःमें अवश्य लाभ होता है।

(५) हरी इन्द्रायणका फल तिलीके तेलमें औटाकर छान लो और रख दो। इसमेंसे दो-तीन बूँद तेल कानमें डालनेसे कानके बहरेपन और भरभराहटमें लाभ होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६) दो कालीमिर्च पीसकर और काग़ज़की भोंगलीमें रखकर हर दिन एक बार कानमें फूँको और चिल्लानेकी आवाज़ तथा नक्कारे, नरसिंहे या तोपका शब्द कानमें पहुँचाओ। ये सब उपाय ऊँचा सुननेको श्रेष्ठ हैं।

(७) पपड़िया खैर सिरकेमें महीन पीसकर छान लो और कुछ गरम करके कानमें टपकाओ। इससे ऊँचे सुननेमें अवश्य लाभ होगा।

कानका दर्द नाश करनेवाले नुसखे।

नोट—जो शख्स कानके रोगोंसे बचा रहना चाहे, वह रातके समय सोते वक्त कानमें रूई रखकर सोवे। कानमें जो भी चीज़ टपकावे, गरम करके टपकावे।

(१) बकरीकी मैंगनी और अजवायन मनुष्यके मूत्रमें औटाकर बफारा लेनेसे सर्दीकी कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(२) नीमके पत्ते औटाकर कानमें बफारा लेनेसे कानका दर्द आराम हो जाता और घाव पीपसे साफ़ हो जाता है।

(३) मूलीके पत्तोंका स्वरस ३ भाग और तिलका तेल १ भाग मिलाकर औटाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलको कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुई कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(४) कूट, इस्पन्द, सोंठ बराबर-बराबर लेकर पीस लो और टिकिया बनाकर सरसोंके तेलमें पकाओ। जब टिकिया जल जाय, तेलको छान लो। इस तैलकी चन्द बूँद कानमें टपकानेसे सर्दीकी वजहसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(५) कूट, चिरायता, बायबिड़ङ्ग, असगन्ध, विधारा, हल्दी, आमाहल्दी, संभालूके पत्ते, अंजीरकी जड़, इस्पन्द, सुहागा, सोंठ और कालीमिर्च—चार-चार माशे लेकर कूटो और रातको आध सेर पानीमें भिगो दो। सवेरे दो सेर तेलमें मिलाकर औटाओ और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

छानकर रख लो। इस तैलके कानमें डालने और सिरपर लगानेसे सर्दीके कारणसे हुआ सिरका दर्द और कानका दर्द आराम हो जाता है।

(६) लहसनका स्वरस गरम करके सुहाता-सुहाता कानमें डालनेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द मिट जाता है।

(७) नीमकी पीली पत्ती अढ़ाई, अजवायन ४ रत्ती और हल्दी ४ रत्ती—इनको बालकके मूत्रमें पीसकर और ज़रा गरम करके दो-तीन बूँद कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(८) कालानोन गोमूत्रमें पीसकर और ज़रा गरम करके कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द नाश हो जाता है।

(९) दूध पीते बालकका पेशाब ज़रा गरम करके कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१०) एक रत्ती अफीम आगपर जलाकर अ.र गुल रौग़नमें महीन पीसकर कानमें टपकानेसे सर्दीसे हुआ कानका दर्द आराम हो जाता है।

(११) पपड़िया खैरमें कुछ गरम पानी मिलाकर कानमें टपकानेसे घोर कानका दर्द नाश हो जाता है।

(१२) भाँगकी पत्तियोंका रस निचोड़कर छान लो। फिर कुछ गरम करके कानमें टपकाओ। इससे सर्दी और गरमी दोनों तरहकी कर्ण-पीड़ा नाश हो जाती हैं।

(१३) भाँगको पीसकर मीठे तेलमें जलाओ और छानकर कानमें टपकाओ। इससे सर्दी-गरमी हर तरहसे हुई कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(१४) महावर रातको पानीमें भिगो दो। सवेरे ही छानकर ज़रा गरम करो और दो-तीन बूँद कानमें टपका दो। इससे सर्दी-गरमी हर तरहका कानका दर्द जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१५) सिरसकी या आमकी पत्तियोंका स्वरस कुछ गरम करके दो बूँद कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१६) थोड़ी-सी मक्खीकी विष्ठा जलमें महीन पीस और गरम करके कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१७) घीग्वारके पत्ते गरम करके, उनका रस दूसरे कानमें टपकानेसे कानका दर्द आराम हो जाता है।

(१८) खट्टे अनारका अर्क़ शहदमें मिलाकर कानमें डालनेसे पैत्तिक कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

(१९) खुरफेके पत्तोंका रस तेल मिलाकर कानमें डालनेसे कानकी पैत्तिक पीड़ा आराम हो जाती है।

(२०) प्याजके रसमें अण्डेकी सफेदी मिलाकर कानमें टपकानेसे पैत्तिक कानकी पीड़ा आराम हो जाती है।

अच्छी और सच्ची सलाह।

अगर आपकी धातु सूख गई है या मर गई है, प्रसंगेच्छा कम होती या होती ही नहीं अथवा जल्दी शिथिलता हो जाती है, तो आप शीतकाल या जाड़ेके मौसममें हमारी "मृगनाभ्यादि बटी" तीन महीने सेवन कीजिये और साथ ही "नारायण तैल"को नित्य बिला नागा मालिश कराइये। देखिये, क्या चमत्कार नज़र आता है। इन दोनों चीज़ोंसे हमने सैकड़ों पुरुषोंको, परमात्माकी दयासे, भला-चंगा और संसारका सुख भोगने योग्य बना दिया। ये चीज़ें कभी फेल नहीं होतीं। दाम १०० गोलीका २०) और तैलका दाम १२) रुपया सेर। एक महीनेको एक सेर तैल होना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इक्कतालीसवाँ अध्याय

नाकके रोगोंका वर्णन ।

नाम और संख्या ।

मनुष्यकी नाकमें चौबीस तरहके रोग होते हैं, जैसेः—

(१) पीनस	१
(२) पूतिनस्य	१
(३) नासापाक	१
(४) पूयशोणित	१
(५) क्षवथु	१
(६) भ्रंशथु	१
(७) दीप्ति	१
(८) प्रतिनाह	१
(९) प्रतिस्राव	१
(१०) नासाशोष	१
(११) प्रतिश्याय	५
(१२) अर्बुद	७
१३) अर्श	४

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) सूजन ४
(१५) रक्तपित्त ४

३४

नोट—यों तो नाकमें १५ प्रकारके रोग होते हैं, पर उनके भेद लेकर उनकी गिन्ती ३४ हो जाती है।

पीनसके लक्षण।

पीनस रोग होनेसे नीचे लिखे हुए चिह्न देखनेमें आते हैं:—

(१) श्वासके कारण सूखे हुए कफसे नाकका रुक जाना।
(२) फिर नाकका गीली या तर हो जाना अथवा गर्म हो जाना।
(३) नाकके बन्द हो जानेसे, उसे खुशबू-बदबूका ज्ञान न होना।
(४) जीभका दूषित होकर खट्टे-मीठे आदिको न जान सकना।

खुलासा—पीनस रोगमें प्रायः नाकमें घाव हो जाता है। लापरवाहीसे उसमें बहुत जल्दी कीड़े पड़ जाते हैं। फिर तो तत्कालके मांस-धोवनके समान निरन्तर एक तरहका रक्तस्राव होता रहता है। इससे दोनों भौं और कनपटियाँ सूज जाती हैं। सिरमें अत्यन्त पीड़ा होती है। जिस तरह सरसोंकी खल बहुत दिन तक भिगो रखनेसे एक तरहकी बदबू आती है, वैसी ही बदबू पीनसवालेके साँसमें आती है।

नोट—आयुर्वेदमें पीनसके यही लक्षण लिखे हैं, पर यह भी लिखा है कि वात-कफसे हुए पीनस रोगके और लक्षण, वात और कफसे हुए प्रतिश्यायके समान होते हैं। वातज प्रतिश्यायमें नाकसे पतला मवाद गिरता है; गला-तालु और होठ सूज जाते हैं, कनपटियोंमें दर्द होता है, स्वर नष्ट हो जाता है,—ये ही सब लक्षण वातज पीनसमें भी होते हैं; और ऊपर लिखे हुए लक्षण—नाकको बदबू-खुशबूका ज्ञान न होना, जीभको खट्टे-मीठे रसोंका ज्ञान न होना, नाकका रुकना, तर होना और गरम होना—वातज प्रतिश्यायमें अधिक होते हैं। अगर ये सब लक्षण हों, तो वातज पीनस समझनी चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इसी तरह कफज पीनसमें, पीनसके लक्षणोंके अलावः, कफज प्रतिश्यायके ये लक्षण भी होते हैं,—नाकसे सफेद, शीतल और ज़ियादा कफ निकलना, शरीरका रंग सफेद होना, नेत्रोंका सुन्न होना, सिरका भारी हो जाना; गले, तालु, होठ और माथेमें खुजलीकी अत्यन्त वेदना होना।

पीनसके हकीमी लक्षण।

पीनस रोग होनेसे मनुष्य नाकमें बोलता है और अक्सर खाना-पीना भी नाकसे निकल आता है।

कच्चे पीनसके लक्षण।

अगर पीनस-रोग कच्चा होता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं:—

(१) अरुचि, (२) सिरका भारीपन,
(३) स्वरक्षीणता, (४) बारम्बार थूकना,
(५) नाकसे मवाद आना।

पके पीनसके लक्षण।

अगर पीनस रोग पक जाता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं:—

(१) कफका गाढ़ा हो जाना।
(२) स्वरका शुद्ध होना या मुँहसे साफ़ आवाज़ निकलना।
(३) कफका रंग स्वाभाविक हो जाना।

पूतिनस्य रोगके लक्षण।

गले और तालूकी जड़में—दूषित पित्त, कफ और खूनसे—वायु दूषित हो जाता है, तब मुँह और नाकसे बदबूदार हवा निकलती है, इसको ही "पूतिनस्य" रोग कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नासापाकके लक्षण।

जब नाकमें रहनेवाला "पित्त" घाव कर देता है, नाक पक जाती है, तर रहती है और उसमेंसे बदबू आती है, तब कहते हैं कि "नासापाक" रोग हुआ है यानी नाक पक गई है।

पूयशोणितके लक्षण।

जब दोषोंके बिगड़नेसे अथवा ललाटमें किसी तरह चोट लगनेसे, नाकसे खून मिली पीप या राध आती है, तब उस रोगको "पूय-शोणित" कहते हैं।

क्षवथुके लक्षण।

जब दूषित हुए कफ और वायुसे नाकसे अधिक छींकें आती हैं, तब "क्षवथु" रोग होना कहते हैं।

थोड़ी छींकोंका आना तन्दुरुस्तीकी निशानी है। मामूली तौरपर छींक आनेसे दिमाग़ साफ रहता है, पर बहुत छींकोंका आना ख़राब है। इस विषयमें हमने प्रतिश्याय रोगके बयानमें बहुत-कुछ लिखा है। देखो चिकित्सा-चन्द्रोदय छठा भाग पृष्ठ १४०—१४१।

भ्रंशथुके लक्षण।

सिरके गरम होनेपर, जब नाकसे पहलेसे ही इकट्ठा हुआ दूषित, गाढ़ा और खारी कफ निकलता है, तब वैद्य लोग उसे "भ्रंशथु" रोग कहते हैं।

दीप्तिके लक्षण।

जब नाकमें बहुत ही ज़ियादा जलन होती है, धूएँके जैसी हवा निकलती है और आग जलनेके समान पीड़ा होती है, तब वैद्य लोग कहते हैं कि "दीप्ति" रोग हुआ है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रतिनाहके लक्षण।

जब वायुके साथ मिलकर कफ श्वास लेनेकी राहको रोक देता है, तब "प्रतिनाह" रोग होना कहते हैं।

स्रावके लक्षण।

जब नाकमेंसे पीला, सफेद, गाढ़ा अथवा पतला दोष चूता है, तब कहते हैं कि "स्राव" रोग हुआ है।

नासाशोषके लक्षण।

जब नाकमें रहनेवाला कफ—वायु और पित्तसे—अत्यन्त सूख जाता है, तब आदमी थोड़ा-थोड़ा ऊँचा-नीचा साँस लेता है। इसीको "नासाशोष" कहते हैं।

नाकके और रोगोंके लक्षण।

वातार्बुद, पित्तार्बुद, कफार्बुद, सन्निपातार्बुद, रक्तार्बुद, मांसार्बुद और मेदोर्बुद—इस तरह नाकमें सात तरहके अर्बुद होते हैं।

इसी तरह नाकमें वातशोथ, पित्तशोथ, कफशोथ और सन्निपात-शोथ—चार तरहकी सूजन होती है।

इसी तरह वातार्श, पित्तार्श, कफार्श और सन्निपातार्श—चार तरहके अर्श या मस्से होते हैं।

इसी तरह वातका, पित्तका, कफका और सन्निपातका—चार तरहका रक्तपित्त होता है।

अर्बुदके लक्षण अर्बुदके बयानमें, शोथके लक्षण शोथ-रोगके बयानमें, अर्शके लक्षण अर्शके बयानमें और रक्तपित्तके लक्षण रक्त-पित्तके बयानमें मिलेंगे।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाकके रोगोंकी चिकित्सा ।

(१) अगर आदमी पीनस रोगके उठते ही, तत्काल, गुड़, दही और कालीमिर्च खाना शुरू कर दे, तो उसे किसी तरहकी भी पीनसका भय न रहे और सुख मिले। परीक्षित है।

(२) चव्य, अम्लवेत, सोंठ, छोटी पीपर, इमली, तालीसपत्र, चीता, नागकेशर, तेजपात और छोटी इलायची—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णका नाम "चव्यादि चूर्ण" है। इसको "जीरा और पुराना गुड़" मिलाकर खानेसे खाँसी और कच्ची पीनस नाश होकर रुचि होती और अग्नि दीप्त होती है। परीक्षित है।

(३) कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, जवासा और अजवायन—इनको समान-समान लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्णकी एक-एक मात्रा खाकर, ऊपरसे "अदरखका रस" पीनेसे पीनस, स्वरभेद, तमक श्वास, हलीमक, सन्निपात, कफ, खाँसी, ज्वर और श्वास-रोग नाश हो जाते हैं। कफ-प्रकृतिवालोंको कफ या वात-कफसे हुए रोगोंमें यह चूर्ण खूब काम देता है। परीक्षित है।

(४) सोंठ, छोटी पीपर, छोटी इलायचीके बीज चार-चार माशे और पुराना गुड़ ८ तोले लेकर, कूट-पीस और छानकर गोलियाँ बना लो। इसमेंसे दो माशेकी गोली रोज रातको खानेसे पीनस-रोग जाता रहता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, चीता, तालीसपत्र, इमली, अम्लवेत, चव्य और सफेद जीरा—इनको एक-एक तोले लो और छोटी इलायची, तेजपात और दालचीनीको तीन-तीन माशे लो। इन सबको पीस-कूटकर कपड़ेमें छान लो। फिर इस चूर्णमें "पुराना गुड़" मिलाकर, खूब मसल लो और तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंका नाम "व्योषादि बटी" है। यह वैद्यककी मशहूर दवा है। इसके सेवनसे पीनस, श्वास और खाँसी नष्ट हो जाती है, रुचि होती है और स्वर उत्तम होता है। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर ऊपरसे "गरम पानी" पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—चव्यादि चूर्ण और व्योषादि बटीमें नाममात्रका भेद है।

(६) कटेरीकी जड़, दन्ती, बच, सहँजना, तुलसी, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और सैंधानोन—इनको बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ सिलपर महीन पीस लो और लुगदी बना लो। इस तैलकी नास लेनेसे "पूतिनस्य रोग" यानी नाक और मुँहसे बदबूदार हवा निकलना आराम होता है। इस तैलका नाम "व्याघ्री तैल" है। यह वैद्यकका मशहूर तैल है। अनेकों बारका परीक्षित है।

नोट—सहँजनेकी छाल लेनी चाहिये, दन्तीकी जड़ लेनी चाहिये। अगर लुगदी तोलमें तीन छटाँक या पाव भर हो, तो सरसोंका तेल १ सेर लेना और साफ पानी चार सेर लेना। सबको मिलाकर कढ़ाहीमें चढ़ा देना और तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लेना।

(७) सहँजनेके बीज, कटेरीके बीज, दन्तीके बीज—जमालगोटा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और सैंधानोन—इनको बराबर-बराबर लेकर सिलपर महीन पीसकर लुगदी बना लो। फिर "बेलके पत्तोंका रस" निकाल लो। शेषमें तेल, लुगदी और बेलके पत्तोंका रस मिलाकर कढ़ाहीमें चढ़ा दो और तेल पका लो। इस तैलका नाम "शिग्र तैल" है। इसकी नास देनेसे पूतिनस्य रोग यानी नाक और मुँहसे बदबूदार हवा आनेका रोग आराम हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—दवाओंकी लुगदी १ पाव हो, तो तेल १ सेर और बेलपत्रका रस ४ सेर लेना। तेल-मात्र रहनेपर उतारकर छान लेना।

(८) दूब-घासको लाकर सिलपर पीसो और कपड़ेमें निचोड़कर चार सेर रस निकालो। फिर १ सेर तेल और चार सेर रसको कढ़ाहीमें औटाओ; जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "दूर्वाद्य तैल" है। इस तैलकी नास लेनेसे नाकसे खून गिरना एवं नाकके और रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) चीतेकी जड़, चव्य, अजवायन, कटेरी, करंजके बीज, सैंधानोन और आकका दूध—सबको समान-समान लेकर महीन पीसो और लुगदी बना लो। अगर यह लुगदी १ पाव हो, तो एक सेर तिलीका तेल लो और ४ सेर गोमूत्र लो। सब मिलाकर आगपर पकाओ। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "चित्रकादि तैल" है। इस तैलकी नास लेनेसे नासार्श यानी नाककी बवासीर या मस्से आराम हो जाते हैं।

(१०) लाल कनेरके फूल, जाती पुष्प, अशन पुष्प और मल्लिकाके फूल दो-दो तोले लेकर सिलपर पीस लो और लुगदी बना लो। फिर लुगदीसे चौगुना तिलीका तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर कढ़ाहीमें डालकर, आगपर चढ़ा दो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इसका नाम "करवीराद्य तैल" है। इसकी नास लेनेसे नासार्श रोग या नाकके मस्से आराम हो जाते हैं।

(११) घी, गूगल और मोमकी धूनी देनेसे क्षवथु और भ्रंशथु रोग—बहुत छींक आना और नाकसे गाढ़ा और खारी कफ निकलना आराम होता है। परीक्षित है।

(१२) सोंठ, कूट, पीपर, बेल और दाख—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीसकर लुगदी बना लो। इन्हीं सब दवाओंका काढ़ा भी बना लो। फिर लुगदी, काढ़े और तेलको आगपर पकाओ। जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेल-मात्र रह जाय, उतार लो। इस तैलकी नास देनेसे ज़ियादा छींक आनेका "क्षवथु" रोग नाश हो जाता है।

नोट—लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना काढ़ा लेना चाहिये।

(१३) नीम और रसौतकी नास देने और माथेपर थोड़ा सेक करने यानी दूध और जल सींचनेसे दीप्ति रोग—नाकमें जलन होना, धुएँकी जैसी हवा निकलना और नाकमें आग-सी जलना—आराम होता है। नास देनेके बाद, माथेपर दूध और जल सींचना चाहिये और मूँगके यूषके साथ भोजन कराना चाहिये।

(१४) नासास्राव रोग हो यानी नाकसे पीला, सफेद, गाढ़ा या पतला मवाद गिरता हो, तो चीतेकी छाल और देवदारुका तेज़ धूआँ चिलम वग़ैरःसे पिलाओ और बकरेका मांस खिलाओ।

(१५) घरके धूएँका धूमसा, पीपर, देवदारु, दूध, करंज, सैंधा-नोन और चिरचिरेके बीज—इनको समान-समान लेकर सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर तेल पका लो। इस तैलकी नास लेनेसे नाक़के मस्से आराम हो जाते हैं।

(१६) अगर नासापाक रोग हो—नाक पक गई हो, तो शालवृक्ष, अर्जुनवृक्ष, गूलर और कुड़ेकी छालका काढ़ा बना लो और इस काढ़ेसे नाकको धोओ। इन्हीं चारों दवाओंको समान-समान लेकर पानीके साथ पीसकर लुगदी बना लो और इन्हीं चारोंका काढ़ा फिर बनाओ। लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना काढ़ा कढ़ाहीमें डालकर घी पका लो। इस घीके लगानेसे भी नासापाक रोगमें बहुत जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(१७) हरे धनियेकी पत्ती और सफेद चन्दनको पीसकर सूँघनेसे छींकोंका रोग मिट जाता है।

(१८) कुलींजनको पोटलीमें बाँधकर सूँघनेसे छींकोंका रोग मिट जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१६) अगर पीनसमें लापरवाही करनेसे कीड़े पड़ गये हों, तो बाँसके कोमल कल्लोंका रस १ छटाँक और तारपीनका तेल १ तोले दोनोंको मिलाकर नस्य देनेसे सब कीड़े बाहर निकल आते हैं।

नोट—पीनसके बहुत पुरानी होनेपर प्लीहा और मुँहमें घाव हो जाते हैं। इस अवस्थामें चिकनी सुपारी ८ नग, सफेद कत्था २ तोले, अरण्डीकी जड़की छाल २ तोले, कपूर ३ माशे, जायफल १ माशे, जावित्री १ माशे, छोटी इलायची १ माशे और बड़ी इलायची १ माशे—इनको एकत्र पानीमें पीसकर मुँहमें लगानेसे मुँहके घाव आराम हो जाते हैं।

कामदेव चूर्ण।

इस चूर्णके लगातार दो महीने खानेसे धातुक्षीणता और नई नामर्दी आराम होती तथा स्त्री-प्रसङ्गमें अपूर्व आनन्द आता है। जिनकी स्त्री-इच्छा घट गई हो, स्त्री-प्रसङ्गको मन न चाहता हो, वे इस चूर्णको चुपचाप मन लगाकर दो मास तक खावें। इसके सेवन करनेसे उन्हें संसारका आनन्द फिरसे मिल जायगा। आजकल लोगोंने जो विज्ञापन दे रखे हैं, उनके धोखेमें न फँसिये। वह कोरी धोखेबाज़ी है। जिन्हें एक अक्षर भी वैद्यकका नहीं आता, उन्होंने भोले लोगोंको ठगनेके लिये खूब चमकीले-भड़कीले विज्ञापन दे दिये हैं और आदमीको शेरसे कुश्ती करता दिखा दिया है। उनसे कहिये कि पहले आप शेरसे लड़कर हमें तमाशा दिखा दें, तब हम आपकी दवाके १०० गुने दाम देंगे। हमें धर्मका भय है, अतः मिथ्या लिखना बुरा समझते हैं। कोई भी धातु-पुष्टिकी दवा बिना साठ दिनके फायदा नहीं कर सकती, क्योंकि आजकी खाई दवाकी धातु ही ४० दिनमें बनती है। फिर दस-पाँच दिनमें धातुरोग कैसे चला जायगा? आप इस चूर्णको मँगाकर प्रेमसे खाइये, मनोरथ पूरा होगा। दाम एक शीशीका ३॥) रु०।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बयालीसवाँ अध्याय

मुखरोग-वर्णन ।

मुँहके रोगोंके स्थान ।

एक मुँहमें पैंसठ रोग होते हैं। वे मुखके सात आयतनोंमें रहते हैं। नीचे-ऊपरके दोनों ओष्ठ, दाँत, दन्तवेष्ट—मसूड़ा, तालू, कण्ठ और जीभ ये सात आयतन हैं। इन आयतनोंमें उपरोक्त रोग होते हैं।

खुलासा—दोनों होठ, दाँत, मसूड़े, तालू, गला और जीभ—इन सबको मिलाकर "मुख" कहते हैं। इन सबमें जो रोग होते हैं, उन्हें "मुखरोग" कहते हैं।

वातजनित ओष्ठरोगके लक्षण ।

वातजन्य ओष्ठ-रोग होनेसे दोनों होठ खरदरे, रूखे, कठोर और ऐंठे-से होते हैं तथा उनमें तेज दर्द होता है। ऐसा जान पड़ता है, मानों उनके दो टुकड़े हो जायँगे। वे ज़रा-ज़रा फट भी जाते हैं।

नोट—वातज ओष्ठरोगमें होठोंका रंग श्यामवर्ण हो जाता है और उनमें सूई चुभानेकी-सी पीड़ा होती है।

पित्तज ओष्ठरोगके लक्षण ।

पित्तके कोपसे दोनों होठ पीले हो जाते हैं; चारों ओर फुन्सियाँ हो जाती हैं तथा उनमें पीड़ा, दाह और पाक होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफज ओष्ठरोगके लक्षण।

कफज ओष्ठरोग होनेसे होठ शीतल, चिकने और भारी रहते हैं, उनमें खुजली चलती है और थोड़ा-थोड़ा दर्द होता है। उनपर शरीरके रंग जैसी फुन्सियाँ छा जाती हैं।

त्रिदोषज ओष्ठरोगके लक्षण।

एक साथ तीनों दोषोंका कोप होनेसे होठ कभी काले, कभी पीले, कभी सफेद और अनेक फुन्सियोंसे युक्त होते हैं।

रक्तज ओष्ठरोगके लक्षण।

खूनके कोपसे, दोनों होठ पके हुए खजूरके फलके रङ्गकी फुन्सियोंसे व्याप्त होते हैं। उनमेंसे खून बहता है और होठोंका रंग खूनकी तरह लाल होता है।

मांस-जनित ओष्ठरोगके लक्षण।

मांसके दूषित होनेसे होठ भारी, मोटे और मांसके गोलेकी तरह ऊँचे होते हैं। इस मांसज ओष्ठरोगमें आदमीके दोनों गलफुओंमें कीड़े पड़ जाते हैं।

मेदज ओष्ठरोगके लक्षण।

इस रोगके होनेसे दोनों होठ घी और मांडकी तरहके होते हैं। वे भारी होते हैं और उनमें खाज चलती है। उनमेंसे स्फटिक मणिके जैसा निर्मल मवाद बहता है। उनमें पैदा हुआ व्रण नरम होता है और भरता नहीं।

अभिघातज ओष्ठरोगके लक्षण।

अगर किसी तरहकी चोट लगनेसे ओष्ठ-रोग होता है, तो दोनों होठ चिर या फट जाते हैं, उनमें पीड़ा होती है, गाँठ पड़ जाती हैं और खुजली चलती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दंतवेष्ट रोगोंकी संख्या और नाम।

(मसूड़ोंके रोगोंके नाम)

मसूड़ोंमें सोलह तरहके रोग होते हैं। उनके नाम ये हैं:—

(१) शीताद, (२) दन्त पुप्पुट, (३) दन्तवेष्ट,
(४) शौषिर, (५) महाशौषिर, (६) परिदर,
(७) उपकुश, (८) वैदर्भ, (९) खल्लिवर्द्धन,
(१०) अधिमांस, (११) दन्तनाड़ी (पाँच), और
(१६) दन्त-विद्रधि।

शीतादके लक्षण।

शीताद रोग होनेसे अकस्मात् खून गिरकर, मसूड़ोंका मांस क्रमशः सड़कर, काला, क्लेदयुक्त और कोमल होकर गलता और गिरता है। एक मसूड़ा पककर दूसरेको पकाता है। यह रोग "कफ और खून" के कोपसे होता है।

दन्त पुप्पुटके लक्षण।

जिसके दो या तीन दाँतोंमें महा सूजन हो, उसको "दन्त पुप्पुट" कहते हैं।

दन्तवेष्टके लक्षण।

जिस रोगमें मसूड़ोंमेंसे खून या राध बहे और दाँत हिलें—उसे "दन्तवेष्ट" कहते हैं। यह रोग "दूषित खून" से होता है।

शौषिरके लक्षण।

कफरक्तके कुपित होनेसे दाँतोंकी जड़में पीड़ायुक्त सूजन होती है और उसमेंसे लार बहती है। उसे "शौषिर-रोग" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

महाशौषिरके लक्षण।

जिस रोगमें दाँत मसूड़ोंसे अलग होकर हिलने लगें और तालवा फट जाय, उस रोगको "महाशौषिर" कहते हैं। यह त्रिदोषज रोग है।

नोट—इस रोगमें मसूड़े पक जाते हैं और मुखमें अत्यन्त पीड़ा होती है। यह रोग आदमीको सात दिनमें मार देता है।

परिदरके लक्षण।

जिस रोगमें मसूड़ोंका मांस गल जाय और थूकते समय खून गिरे, उसे "परिदर" कहते हैं। यह रोग "पित्त, रुधिर और कफ"के कोपसे होता है।

उपकुशके लक्षण।

मसूड़ोंमें जलन और पाक हो तथा दाँत हिलने लगें; मसूड़ोंमें अत्यन्त वेदना होनेसे खून गिरने लगे, खूनके गिरनेसे मसूड़े तत्काल सूज जायँ और मुँहसे बदबू निकले—जिस रोगमें ये लक्षण हों, उसे "उपकुश" कहते हैं। यह रोग "पित्त और रुधिर"के कोपसे होता है।

वैदर्भके लक्षण।

जिस रोगमें मसूड़ोंके घिसनेसे अत्यन्त सूजन हो और दाँत हिलने लगें, उसे "वैदर्भ" कहते हैं। यह रोग लकड़ी आदिकी चोट लगनेसे होता है।

नोट—इस रोगमें दाह, पाक और वेदना ये लक्षण होते हैं।

खल्लिवर्द्धनके लक्षण।

"वायु"के कुपित होनेसे दाँतके ऊपर दाँत जमे, जमती समय उसमें दर्द हो और जब जम जाय, पीड़ा भी शान्त हो जाय। जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "खल्लिवर्द्धन" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—वायुके प्रकोपसे, प्रबल यातनाके साथ, जो एक-एक अधिक दाँत हनुकुहरसे निकलता है और निकल आनेपर दर्द नहीं रहता, उसे "खल्लिवर्द्धन" कहते हैं। यह दाँत अधिक उम्रमें निकलता है। इससे इसे "अक्किलका दाँत" भी कहते हैं।

करालके लक्षण।

दाँतोंमें स्थित वायु शनैः-शनैः दाँतोंको ऊँचा, नीचा, टेढ़ा-तिरछा कर देती है, इस रोगको "कराल" कहते हैं। यह रोग असाध्य है।

अधिमांसके लक्षण।

जिस रोगमें पीछेकी दाढ़के नीचे महा सूजन और घोर पीड़ा हो एवं ढेर-की-ढेर लार गिरे, उस रोगको "अधिमांस" कहते हैं। यह रोग "कफज" है।

पाँच तरहकी दन्त-नाड़ियोंके लक्षण।

जिस तरह नाड़ीव्रणमें वात, पित्त, कफ, सन्निपात और शल्यसे उत्पन्न हुई पाँच तरहकी नाड़ी कही हैं; उसी तरह पाँच नाड़ी दाँतोंके मसूड़ोंमें होती हैं। उनके लक्षण नाड़ीव्रणके अनुसार समझने चाहिए।

दन्तरोगोंके लक्षण।

दालनके लक्षण।

जिसके दाँतोंमें चीरनेकी-सी अत्यन्त पीड़ा हो, उसे "दालन" रोग कहते हैं। यह "वातज" रोग है।

कृमिदन्तके लक्षण।

वायुके कोपसे दाँतोंमें काले छेद हो जायँ, दाँत हिलने लगें, उनमेंसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

स्राव हो—मवाद निकले, अत्यन्त पीड़ा हो, सूजन हो और बिना कारण दर्द हो,—उस रोगको "कृमिदन्त" कहते हैं।

खुलासा—दाँतमें काला छेद होता है, दन्तमूलमें बड़े दर्दके साथ सूजन होती है, उसमेंसे लार बहती है और अकस्मात् दर्द बढ़ता है, उसे कृमिदन्त कहते हैं। यह "वात-पित्तज रोग" है।

भञ्जनकके लक्षण।

जिस रोगमें मुँह टेढ़ा हो जाय और दाँत टूट जाय, उसे "भञ्जनक" कहते हैं। यह "कफ-वातज" रोग है।

दन्तहर्षके लक्षण।

जिस रोगमें दाँत सर्दी, रूखापन, खटाई और वातादिके स्पर्शको न सह सकें, उसे "दन्त-हर्ष" कहते हैं। यह "पित्त और वात"के प्रकोपसे होता है।

दन्त-विद्रधिके लक्षण।

मसूड़ोंके दूषित होनेसे, मुँहके भीतर और बाहर दाह और वेदना-युक्त महा सूजन हो तथा उसके छेदनेसे राध और खून निकले, उसे "दन्त-विद्रधि" कहते हैं।

दन्तशर्कराके लक्षण।

जिस रोगमें कफ-वातसे दाँतोंमें मैल सूखकर रेतेके समान खरखर स्पर्श मालूम हो—उसे "दन्त-शर्करा" कहते हैं।

कपालिकाके लक्षण।

उसी दन्त-शर्करा रोगमें, अगर मैल समेत दाँतका भी कुछ अंश टूटकर ठिकरेकी तरह गिरे, तो उसे "कपालिका" कहते हैं। इस रोगमें दाँत सदैव टूट-टूटकर मैलके साथ गिरते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्यावदन्त के लक्षण।

दुष्ट रक्त और पित्तसे कोई दाँत जल जानेकी तरह काला या श्याम हो जाय, उसे "श्यावदन्त" कहते हैं।

नोट—इस रोगमें दाँत सर्वथा काले या नीले हो जाते हैं।

हनुमोक्षके लक्षण।

वातसे—हनुसन्धि यानी जावड़ेकी सन्धिमें चोट लगनेसे—दाँत हिलने लगे, इसको "हनुमोक्ष" कहते हैं। उसके लक्षण अर्दित या लकवेके समान होते हैं।

जिह्वाके लक्षण।

वातज जिह्वाके लक्षण।

वात रोग होनेसे जीभ कुछ फटी-सी होती है, उसे खट्टे-मीठे रसका ज्ञान नहीं होता और वह सागवानके पत्तेकी तरह खरदरी होती है।

पित्तज जिह्वाके लक्षण।

पित्तके कोपसे जीभ पीली होती है। उसमें जलन होती है और उसपर बड़े-बड़े लाल-लाल काँटे होते हैं।

कफज जिह्वाके लक्षण।

कफके प्रकोपसे जीभ भारी और मोटी होती है तथा उसमें सेमलके काँटोंके समान काँटे होते हैं।

अल्लासके लक्षण।

कफरक्तके कोपसे जीभके नीचे अत्यन्त कठोर सूजन होती है, उसको "अल्लास" कहते हैं। जब यह अधिक बढ़ जाती है, तब जीभ जकड़ जाती है और जड़में पकने लगती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उपजिह्वाके लक्षण।

दूषित कफ-रक्तसे, जीभके नीचे, जीभकी नोकके समान, सूजन उत्पन्न होती है, उसमें लार बहती, खुजली चलती और जलन होती है। इसे "उपजिह्वा" कहते हैं।

तालुरोग निदान।

तालुगत शुण्डीके लक्षण।

कफ और खूनके कोपसे, तालूकी जड़में, भरी हुई मशकके समान लम्बी एवं प्यास, खाँसी और श्वास पैदा करनेवाली जो सूजन उत्पन्न होती है, उसे वैद्य "गलशुण्डी" कहते हैं।

तुण्डिकेरीके लक्षण।

जिस रोगमें कफ और खूनके कोपसे, तालूमें, बन-कपासके फलकी तरह मोटी सूजन हो जाती है, उसमें सूई चुभाने सरीखी पीड़ा होती तथा दाह और पाक होता है, उसे "तुण्डिकेरी" कहते हैं।

अभ्रूषके लक्षण।

रुधिरके कोपसे, तालूमें मन्दी और लाल रंगकी सूजन हो जाती है, उसमें तीव्र पीड़ा होती और ज्वर चढ़ता है। जिस रोगमें ये लक्षण होते हैं, उसे "अभ्रूष" कहते हैं।

कच्छपके लक्षण।

कफके प्रकोपसे, तालुवेमें, कछुएके समान बीचमें ऊँची और चारों ओरसे नीची तथा कम दर्दवाली सूजन तत्काल उत्पन्न होती है, उसे वैद्य "कच्छप" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तालुबुर्द के लक्षण।

तालुएके बीचमें, रुधिरके प्रकोपसे, कमलकी केसरके समान, लम्बे मांसके अंकुरोंसे लिपटी हुई और पित्तके सम्पूर्ण लक्षणोंसे युक्त जो सूजन पैदा हो जाती है, उसे "तालुबुर्द" कहते हैं।

मांससंघातके लक्षण।

कफके प्रकोपसे, तालुएके भीतर पीड़ा रहित जो दुष्ट मांस एकत्रित हो जाता है, उसे "मांससंघात" कहते हैं।

तालुपुप्पुटके लक्षण।

कफके प्रकोपसे, तालुमें पीड़ा रहित, स्थिर और मेदयुक्त बेरीके फल समान जो गाँठ पैदा होती है, उसे "तालुपुप्पुट" कहते हैं।

तालुशोषके लक्षण।

वायुके प्रकोपसे, तालुमें अत्यन्त शोष हो अथवा तालु फटने लगे और अत्यन्त उग्र श्वास हो, उसे "तालुशोष" कहते हैं।

तालुपाकके लक्षण।

पित्तके प्रकोपसे तालु अत्यन्त भयङ्कर रूपसे पक जावे, तो "तालुपाक" कहते हैं।

गलरोग निदान।

रोहिणीके लक्षण।

गलेमें बढ़े हुए तीनों दोष दूषित होकर, मांस और खूनको दूषित करके गलेमें मांसके अंकुर पैदा करते हैं। उन अंकुरोंसे गला रुक जाता है। इस रोगको "रोहिणी" कहते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातजाके लक्षण।

जब जीभके चारों ओर अत्यन्त वेदनावाले और गलेको रोकने-वाले मांसके अंकुर होते हैं; उनके साथ वात सम्बन्धी स्तब्धता आदि उपद्रव भी होते हैं, तब "वातजा रोहिणी" कहते हैं।

पित्तजाके लक्षण।

जब गलेमें मांसके अंकुर तत्काल उत्पन्न हो जायँ, उनमें तत्काल दाह और पाक हो एवं तीव्र ज्वर हो, तब "पित्तजा रोहिणी" समझो।

कफजाके लक्षण।

गलेकी शिराओंको रोककर गलेमें मांसके अंकुर पैदा होते हैं और वह धीरे-धीरे पकते हैं तथा भारी और स्थिर होते हैं, तब "कफजा रोहिणी" कहते हैं।

त्रिदोषजाके लक्षण।

जब गलेमें उपरोक्त तीनों लक्षणोंवाले, गम्भीर रूपसे पकनेवाले और कठिनसे आराम होनेवाले मांसके अंकुर पैदा होते हैं, तब "त्रिदोषजा रोहिणी" कहते हैं।

रक्तजाके लक्षण।

रक्तजा रोहिणी छोटी-छोटी फुन्सियोंसे व्याप्त और पित्तजा रोहिणीके जैसे लक्षणोंवाली होती है। यह साध्य है।

रोहिणीके मारनेकी अवधि।

त्रिदोषजा रोहिणी तत्काल मार देती है, कफजा तीन दिनमें मार देती है, पित्तजा पाँच दिनमें मार देती है और वातजा सात दिनमें मार देती है।

कण्ठशालूकके लक्षण।

गलेमें काँटेके समान तथा धानकी अनीके समान वेदना उत्पन्न करनेवाली, खरखरी, कठोर, बेरकी गुठलीके समान, शस्त्र-साध्य जो

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

ग्रन्थि होती है उसे "कण्ठशालूक" कहते हैं। यह गाँठ कफके प्रकोपसे होती है और शस्त्रके चीरनेसे साध्य है।

अधजिह्वके लक्षण।

जीभके ऊपर, जीभकी अनीके समान जो सूजन होती है, उसको "अधजिह्व" कहते हैं। अगर वह सूजन पक जाय, तो उसकी चिकित्सा न करनी चाहिये। यह रोग रुधिर मिले कफके कोपसे होता है।

वलयके लक्षण।

"कुपित कफ" अन्नकी गतिको रोककर गलेमें लम्बी और ऊँची सूजन उत्पन्न करता है, उसे "वलय" कहते हैं। यह रोग किसी तरह भी आराम नहीं होता; अतः चिकित्सा करना वृथा है।

वलासके लक्षण।

वढ़े हुए कफ और वातसे, गलेमें श्वास और पीड़ा सहित, हृदयके मर्मस्थलको छेदनेवाली तथा व्यथा करनेवाली सूजन पैदा होती है, उसे "वलास" कहते हैं। उसे वैद्य दुस्तर कहते हैं।

एकवृन्दके लक्षण।

कफ और रक्तके प्रकोपसे गलेमें गोल और ऊँचे किनारोंकी सूजन उत्पन्न होती है। उसमें दाह और खुजली होती है। वह कुछ-कुछ पकती है और कुछेक नर्म एवं भारी होती है। उस रोगको "एक-वृन्द" कहते हैं।

वृन्दके लक्षण।

पित्तरक्तके प्रकोपसे, गलेमें ऊँची, गोल, दाह और तीव्र ज्वरयुक्त सूजन होती है, उसे "वृन्द" कहते हैं। अगर उसमें शूल चलें, तो उसे "वातात्मक" समझो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शतघ्नीके लक्षण।

जब गलेमें बत्तीके समान लम्बी, घन और कण्ठको रोकनेवाली सूजन हो, उस सूजनपर मांसके अंकुर बहुत हों; उसमें दाह, व्यथा आदि अनेक उपद्रव हों—तब "शतघ्नी" समझो। यह "शतघ्नी" तोपके समान प्राण-नाशक होती है; इसीसे इसे "शतघ्नी" कहते हैं। यह त्रिदोषज है।

गिलायुके लक्षण।

कफरक्तके प्रकोपसे, गलेमें आँवलेकी गुठलीके समान स्थिर और अल्प पीड़ावाली गाँठ पैदा हो जाती है। उसकी वजहसे गलेमें ग्रास अटकता जान पड़ता है। वह शस्त्र या चीर-फाड़से आराम हो सकती है। उसे "गिलायु" कहते हैं।

गल-विद्रधिके लक्षण।

तीनों दोषोंके कोपसे, सब गलेको घेरनेवाली और हर तरहकी पीड़ा करनेवाली सूजन पैदा होती है, उसे "कण्ठविद्रधि" कहते हैं। यह त्रिदोषज विद्रधिके समान होती है।

गलौघके लक्षण।

कफ और खूनके कोपसे, गलेमें, अन्न और जलको रोकनेवाली, उदानवायुकी गतिको हरनेवाली और तेज बुखार करनेवाली बड़ी सूजन पैदा होती है। उसे "गलौघ" कहते हैं।

स्वरघ्नके लक्षण।

जिस रोगमें वायु निकलनेके मार्ग कफसे भर जाते हैं, अतः रोगी निरन्तर बड़े कष्टसे साँस लेता है; आवाज मारी जाती है, कण्ठ सूखने लगता है, वह असमर्थ हो जाता है और तोड़नेका-सा दर्द होता है, उसे "स्वरघ्न" कहते हैं। यह वातज रोग है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मांसतानके लक्षण।

जो सूजन गलेमें क्रमसे फैलकर—अत्यन्त कष्टके साथ गलेको रोक दे, उसे "मांसतान" कहते । यह त्रिदोषसे होनेवाला प्राण-नाशक रोग है।

विदारीके लक्षण।

पित्तके प्रकोपसे, गलेमें दाह और तीव्र पीड़ा करनेवाली अत्यन्त लाल और बदबूदार तथा मांसको फाड़नेवाली सूजन पैदा होती है, उसे "विदारी" कहते हैं। मनुष्य जिस करवट अधिक सोता है, उसी बग़लमें यह रोग होता है।

सर्व मुखगत रोग-निदान।

वातज मुखपाकके लक्षण।

बादीके मुखपाकमें सारे मुँहमें छाले हो जाते हैं और उनमें नोचनेका-सा दर्द होता है।

पित्तज मुखपाकके लक्षण।

पित्तके मुखपाकमें लाल और पीले छाले होते हैं। उनमें जलन होती है।

कफज मुखपाकके लक्षण।

कफका मुखपाक होनेसे पीड़ा रहित, खुजली सहित, चमड़ेके-से रंगके छाले मुँहमें होते हैं। यह रोग सारे मुँहमें होता है, इसलिये इसे "सर्वसर" कहते हैं।

मुखके रोगोंमें असाध्य रोग।

होठके रोगोंमें—मांसजनित, रक्तजनित और त्रिदोषजनित असाध्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दन्तमूल या मसूड़ेके रोगोंमें—त्रिदोषज, नाड़ीव्रण और शौषिर असाध्य हैं।

दन्त-रोगोंमें—श्याव, दालन और भञ्जनक असाध्य हैं।

जिह्वा या जीभके रोगोंमें—अल्लास असाध्य है।

तालुके रोगोंमें—अर्बुद असाध्य है।

गलेके रोगोंमें—स्वरघ्न, वलयोवृन्द, वलास, विदारी, गलौघ, मांसतान, शतघ्नी और रोहिणी असाध्य हैं।

नोट—ये उन्नीस मुँहके रोग असाध्य हैं। इलाज करनेसे पहले वैद्यको कह देना चाहिये कि ये असाध्य हैं, पर इनको असाध्य समझकर त्याग न देना चाहिये, क्योंकि दवा करनेसे कभी-कभी ये आराम हो भी जाते हैं।

होठके रोगोंकी चिकित्सा।

नोट—मुँहके रोग, मसूड़ेके रोग और होठके रोगोंमें प्रायः कफ और खूनकी प्रधानता होती है, अतः इन रोगोंमें बारम्बार गरम और दुष्ट खून निकलवाना चाहिये।

वातज ओष्ठरोगमें—गरम स्नेह, गरम सेक, गरम लेप, घी पीना, मांसरस खाना, अभ्यञ्जन, स्वेदन और लेपन इत्यादि उपचार हितकारी हैं। वात नाशक दवाओं द्वारा तेल पकाकर मस्तिष्कमें नास देना तथा स्नेह, स्वेद और अभ्यंग इस रोगमें रसायनके समान गुणकारी होते हैं।

पित्तज ओष्ठरोगमें नस छेदकर खून निकलवाना, क्रय कराना, जुलाब देना, तिक्तक नामक घृत पिलाना अथवा तिक्त पदार्थ सेवन कराना, मांसरस खिलाना तथा शीतल लेप और शीतल सेचन यानी ठण्डे तरड़े—ये हित हैं।

रक्तजनित ओष्ठरोगमें जौंक लगवाकर खून निकलवाना चाहिये और पित्त-विदृधिके समान सारा इलाज करना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कफज ओष्ठरोगमें—खून निकलवानेके बाद शिरोविरेचन—सिर साफ करनेवाली नस्य देनी चाहिये, धूमपान कराना चाहिये, स्वेदन करना चाहिये और मुँहमें कवल धारण कराना चाहिये।

मेदजन्य ओष्ठरोगमें स्वेद, भेद, शोधन और अग्निका सन्ताप देना चाहिये और दूषित मांस निकाल देना चाहिये तथा लेप करना चाहिये।

क्षतज ओष्ठरोगमें यानी होठमें घाव हो जानेपर पहले स्वेदन करके पीछे अच्छी तरहसे दबाना चाहिये और सौ बारका धोया हुआ घी लगाना चाहिये। अगर होठमें क्लिन्नव्रण हो जाय, तो सारी विधि छोड़कर व्रणके समान इलाज करना चाहिये।

(१) वातज ओष्ठरोगमें—तेल या घीमें "मोम" मिलाकर मलना चाहिये।

(२) लोबान, राल, गूगल, देवदारु और मुलेठी बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट और छान लो। इस चूर्णको धीरे-धीरे होठोंपर घिसनेसे वातज ओष्ठरोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) तेल, घी, राल, मोम, रास्ना, गुड़, सैंधानोन और गेरू—सबको बराबर-बराबर लेकर पकाओ। जब पक जाय, रख लो। इसका होठोंपर लेप करनेसे होठोंका फटना और होठोंके घाव आराम हो जाते हैं।

(४) मोम, गुड़ और राल—इनको समान-समान लेकर तेल या घीमें पका लो। इसका लेप करनेसे होठका सूई चुभने समान दर्द, कठोरता और पीप-खून जाना बन्द हो जाता है।

(५) पित्तज ओष्ठरोगमें नस छेदकर खून निकलवाना, वमन-विरेचन कराना, तिक्तक घृत पिलाना, मांसरस खिलाना, शीतल लेप करना और शीतल तरड़े देना हितकारी है।

(६) रक्तज और पित्तज ओष्ठरोगमें जौंक लगवाना और पित्तज विद्रधिकी तरह चिकित्सा करनी चाहिये।

(७) कफज ओष्ठरोगमें शिरोविरेचन नस्य, धूमपान और मुखमें कवल रखना हितकारी है। इस रोगमें त्रिकुटा, सज्जीखार और

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जवाखारको समान-समान लेकर पीस लो और शहदमें मिलाकर—इस दवासे होठोंको घिसो।

(८) मेदज ओष्ठरोग होनेसे—आगके द्वारा होठोंको सेकना चाहिये तथा प्रियंगूफूल, त्रिफला और लोधका चूर्ण शहदमें मिलाकर होठोंपर घिसना चाहिये। अथवा त्रिफलेका पिसा-छना चूर्ण शहदमें मिलाकर होठोंपर लेप करना चाहिये।

(९) अगर होठोंपर घाव हो, तो धनियाँ, राल, गेरू और मोम अथवा राल, गेरू, धनियाँ, तेल, घी, सैंधानोन और मोम—इनको समान-समान लेकर और एकत्र मिलाकर घावपर लेप करनेसे होठका घाव आराम हो जाता है। इन्हीं दवाओंके साथ तेल या घी पकाकर लगानेसे भी घाव आराम हो जाता है।

(१०) सौ बारका धुला हुआ घी लगानेसे भी होठके घाव आराम हो जाते हैं। अगर इस धुले घीमें "कपूर" भी मिला लिया जाय, तो होठके रोगोंकी इसके समान और दवा नहीं है। परीक्षित है।

(११) त्रिदोषज ओष्ठरोगमें, जिस दोषका अधिक प्रकोप हो पहले उसीकी चिकित्सा करनी चाहिये, फिर दूसरे दोषोंकी चिकित्सा करनी चाहिये। अगर होठ पक जाय, तो व्रणरोगकी तरह इलाज करना चाहिये।

दन्तरक्षासे लाभ और उसके उपाय।

मनुष्य-शरीरमें दाँत कितने महत्वकी चीज है, इसे बहुत कम लोग जानते हैं। दाँत मनुष्यकी अवस्था स्थिर रखनेके लिये स्तम्भ-स्वरूप हैं। उज्ज्वल दाँतोंकी कतार मुँहमें कैसी सुन्दर लगती है! दाँतोंके बिना मुँहकी सारी शोभा नष्ट हो जाती है। पोपला मुँह बहुत ही भद्दा मालूम होता है। दन्तहीन मुँहसे शब्दोंका ठीक-ठीक

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उच्चारण नहीं हो सकता। भोजनके पचनेमें दाँत मुख्य रूपसे सहायता करते हैं। जिनके दाँत नहीं हैं, उनका भोजन पेटमें साबत-का-साबत चला जाता है। दाँतोंका काम बेचारी आँत कर नहीं सकतीं, अतः अजीर्ण और बदहज़मी आदि नाना प्रकारके रोग हो जाते हैं।

कह आये हैं कि, भोजन पचानेके काममें दाँत खास तौरसे मदद करते हैं। भोजनके कड़े पदार्थ, दाँतोंसे चबाये जानेपर, लारके साथ मिलकर पचने योग्य होते हैं। बचपनमें पाकस्थली और आँतोंकी क्रिया प्रायः प्रबल होती है, इसलिये उस समय जो चीज़ें कम भी चबाई जाती हैं, वे भी हज़म हो जाती हैं। लेकिन ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ती है, त्यों-त्यों पाकस्थली और आँतोंकी ताक़त कम होती जाती है, इसलिये इस समय भोजनको ज़ियादा चबानेकी ज़रूरत रहती है। भात, खीर, खिचड़ी, हलवा आदि नरम पदार्थ भी बिना थोड़ी देर चबाये न निगलने चाहिये। ये यद्यपि नर्म हैं, तो भी बिना चबाये और बिना लारसे मिले आसानीसे हज़म नहीं हो सकते। फिर रोटी, पूरी, खिचड़ी और फल वग़ैरः तो बिना चबाये किसी हालतमें भी पच नहीं सकते। आजकल अनेक अनजान और अज्ञानी यह समझते हैं कि, जो जल्दी-जल्दी खा लेता है, वह प्रशंसाका पात्र है। यह उनकी भयङ्कर नादानी और परले सिरेकी बेवकूफी है। जो ऐसा करते हैं, उन्हें ही दस्तक़ब्ज़ रहता है, भूख नहीं लगती, पेट भारी रहता है, खट्टी-खट्टी डकारें आया करती हैं, गला और कण्ठ जलते हैं एवं ज्वर और अम्लपित्त प्रभृति रोग सदा उनपर हावी रहते हैं। ऐसे लोग तरह-तरहके हाज़मेके चूर्ण खाते हैं; पर फल कुछ नहीं होता। अतः मनुष्य-मात्रको दाँतोंसे चबाकर और खूब रौंथकर भोजन पेटमें जाने देना चाहिये। गाय-बैल आदि पशु कहलाते हैं, पर वे भी जल्दी-जल्दी और बिना चबाये रोटियोंके टुकड़े-के-टुकड़े निगलनेवालोंसे अच्छी समझ रखते हैं। वे पहले भोजनको अपनी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

थैलीमें रख लेते हैं। फिर आरामसे बैठकर जुगाली किया करते हैं यानी उस भोजनको उस थैलीसे निकाल-निकालकर फिरसे चबाते और रौंथते हैं, तब आँतोंके हवाले करते हैं; पर अफसोस है, मनुष्य कहलानेवाले पशुओंसे भी गये बीते हैं, वे इस बातको नहीं समझते। वे दाँतोंका काम आँतोंसे लेना चाहते हैं। अगर सारे दाँत गिर जावें, तो भी मसूड़ोंसे ही चबाकर खाना खाना चाहिये। जिनके सारे दाँत गिर जाते हैं, वे किसी-न-किसी तरह मसूड़ोंसे चबानेका काम कर भी सकते हैं। हाँ, जिनके कुछ दाँत गिर जाते हैं और कुछ रह जाते हैं, उन्हें भोजनके चबानेमें सचमुच ही बड़ी दिक्कत होती है।

दाँतोंका मैला रहना ही दाँतोंके गिरनेका मुख्य कारण है। आजकल लोग दाँतोंकी सफाईकी तरफ कम ध्यान देते हैं, इसीसे आजकल दन्त-रोगोंकी विशेष शिकायत सुनी जाती है। नीचे लिखे हुए कारणोंसे दन्तरोग होते हैं:—

(१) दाँत साफ न करनेकी आदत।
(२) नित्य नियमसे दाँतुन न करना।
(३) दाँत कुरेदनेकी आदत।
(४) भोजनके बाद दाँतोंको साफ न करना।
(५) गरमागर्म भोजन करना।
(६) गरमागर्म चाय या काफी पीना।
(७) गरम भोजन करके अत्यन्त शीतल जल पीना।
(८) खटाई ज़ियादा खाना।
(९) मीठे पदार्थ अधिक खाना।
(१०) दिन भर बकरीकी तरह पान चबाना।
(११) तमाखू बार-बार खाना।
(१२) दन्तरोग पीड़ित माँ-बापसे पैदा होना।
(१३) और भी मिथ्याहार-विहार सेवन करना।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

आजकल पहलेकी तरह दाँतुन करनेकी चाल नहीं रही। आजकलके लोग दाँतुन करनेको फिजूल समय नष्ट करना समझते हैं। पहलेके लोग नीम या बबूल प्रभृतिकी दाँतुन किया करते थे—सवेरे उठते ही पाखाने जाकर दाँतुन करते थे, इसीसे उनके दाँत मोतीकी तरह चमकते और सत्तर-अस्सी बरसकी उम्र तक जैसे-के-तैसे बने रहते थे। इस उम्रमें वे धड़ाकेसे चने चबा सकते थे। आजकल २५ या ३० बरसकी उम्रमें ही दाँत जवाब दे देते हैं। अनेकोंको इस उम्रमें पत्थर वग़ैरःके दाँत लगवाने पड़ते हैं। पर ये मनुष्यके बनाये दाँत क्या ईश्वरदत्त दाँतोंकी बराबरी कर सकते हैं? हरगिज़ नहीं। जिन्हें संसारमें सुखसे जीना हो, सदा नीरोग रहना हो, उन्हें हज़ार काम छोड़कर और आलस्य त्यागकर नित्य सवेरे ही नीम प्रभृतिकी दाँतुन करनी चाहिये और कोई उत्तम दन्तमंजन मलना चाहिये। दाँतुन और मंजनकी आदत डालनेसे दाँत सदा साफ रहेंगे, भोजन अच्छी तरह पचेगा, मुँहमें बदबू न पैदा होगी और पास बैठनेवाले आपपर नाक-भौं न सिकोड़ेंगे। याद रखो, दाँतों और जीभपर जमा हुआ मैल ज़हरकी तासीर रखता है और खाने-पीनेके पदार्थोंके साथ पेटमें जाकर अनेक तरहके दुःखदायी रोग उत्पन्न करता है। बचपनमें ही माँ-बाप अगर दाँतुन करनेकी आदत डाल देते हैं, तो वही बच्चे बड़े होनेपर भी इस अच्छी आदतको नहीं छोड़ते। लेकिन जिनके माँ-बाप स्वयं दाँतुन नहीं करते और अपने बच्चोंको दाँतुन करना नहीं सिखाते, उनके बालक सदा दन्तपीड़ासे दुःखी होते और जल्दी ही पोपले होकर अपने माँ-बापकी त्रुटिपर नौ-नौ आँसू रोते हैं। हमारी खुदकी ऐसी ही दशा है। हमारे पिताने हमें दाँतुन करना नहीं सिखाया, इसलिये हमें इसकी आदत नहीं पड़ी। जब हमने पुस्तकोंमें दन्त-रक्षा-विषय देखा, यह आदत डालनी चाही, पर ठीक तौरसे आदत न पड़ी; सदा समयके अभावका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रोना रहा। और कामोंको हमें समय मिल जाता, पर इस परमावश्यक कामके लिए समय नहीं मिलता। इसका बुरा नतीजा हम भोग रहे हैं। जिनकी हालत हमारी-सी हो, उन्हें इन पंक्तियोंके पढ़ते ही दाँत साफ करनेकी आदत डालनी चाहिये; और काम पड़े रहें, पर इस काममें ग़फ़लत न करनी चाहिये। पाठकोंपर असर पड़े, इसलिये हमने अपनी मूर्खताकी बात निस्सङ्कोच भावसे पाठकोंके सामने रख दी है।

दाँत साफ करनेसे ही काम न चलेगा, दाँत कुरेदनेकी आदत भी बुरी है। बारम्बार दाँत कुरेदनेसे दाँतोंकी जड़ें ढीली पड़ जाती हैं। जो लोग दियासलाईकी सीकों या सोने-चाँदीकी कुरेदनियोंसे दाँत कुरेदा करते हैं, ध्यान दें। भोजन कर चुकते ही कुरेदनीसे दाँतोंमें घुसा हुआ अन्न निकाल देनेमें बुराई नहीं—अगर दाँतोंमें अन्नका कण अटक जाय, ग्वारकी फली वग़ैरःका छिलका इलझ जाय, तो उसे सींक या दाँत कुरेदनीसे निकालकर कुल्ले कर डालने चाहिये। हर समय दाँत कुरेदना अच्छा नहीं। भोजन करके जो दाँतोंमें घुसे हुए अन्न या फलके टुकड़ोंको नहीं निकालते और खूब अच्छी तरह कुल्ले करके दाँतोंको साफ नहीं करते, उनके दाढ़-दाँतोंमें खाये-पीये पदार्थ जमकर सड़ जाते हैं और फिर उनमें कीड़े पड़ जाते हैं। वे कीड़े दाँतोंको खा-खाकर पोले कर देते हैं और ऐसी तकलीफ देते हैं कि, बाज़-बाज़ औक़ात जानपर आ बनती है, मसूड़े सूज जाते हैं, चभके चलते हैं और सिरमें वेदना होने लगती है।

भोजन करके सुपारी, चूना, कत्था, लौंग, इलायची, दालचीनी, जायफल, जावित्री, धनियाँ, चिरमिटीकी पत्तियाँ और सौंफ आदि डालकर पान खाना बड़ा मुफीद है। ऐसे पान खानेसे वातादिक दोष शान्त रहते हैं, जीभ साफ हो जाती है, रुचि होती है, मन प्रसन्न होता और कीड़े वग़ैरः तो स्वप्नमें भी नहीं पड़ सकते। हमारी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बनाई "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखी हुई विधिसे पान खाना सदा हित है। शास्त्रमें पान खानेके जो समय नियत हैं, उन्हींपर पान चबाना चाहिये, बकरीकी तरह हरदम पान चबाना अहितकर है। पान-पर-पान खानेसे उल्टा दाँतोंको नुक़सान पहुँचता है। बारम्बार तमाखू खानेसे भी दाँत नष्ट होते हैं; अतः या तो तमाखू खानी ही न चाहिये और यदि खाये बिना न सरे—चैन न पड़े—पेट दूखे तो, दिनमें एक-दो बार ही तमाखू खाकर सन्तोष कर लेना चाहिये। तमाखूके तीक्ष्ण और गरम होनेकी वजहसे दाँतके बन्धन ढीले हो जाते हैं। आदत पड़ जानेसे मुखमें विरसता, भोजन न पचना और दस्त साफ न होना वग़ैरः शिकायतें पैदा हो जाती हैं। तमाखू पानमें रखकर खानेसे पित्त-रसके कारण पाखानेकी हाजत हो जाती है, पर तमाखूसे कोठेमें अत्यन्त खुश्की पहुँचनेकी वजहसे दस्त साफ नहीं होता। दाँतोंकी तकलीफोंसे बचनेके लिये बहुत लोग तमाखू खाने लगते हैं। दवाके तौरपर तमाखू खानेसे कभी-कभी लाभ हो सकता है; पर आदत डाल लेनेसे वह प्रकृतिमें मिलकर कुछ भी लाभ नहीं करती, वरन् दाँतों और पेटको हानि करती है।

भोजन भी गरमागर्म न करना चाहिये। गरम भोजनसे दाँतोंको तो नुक़सान पहुँचता ही है, इसके सिवा जठराग्निपर भी बुरा असर होता है। जो लोग तवेसे उतरती गरम रोटियाँ खाते, चायके भाफ उठते हुए प्याले डकारते और गरम रोटी या भात वग़ैरः खाकर शीतल जल पीते हैं अथवा मौसम गरमीमें सन्ध्या समय पूरी-परामठे खाकर बर्फ़का ठण्डा पानी पीते हैं उनके दाँत निश्चय ही तकलीफ़ देते और अन्तमें असमयमें ही विदा हो जाते हैं। उनके साथी उनकी रक्षाकी ओरसे लापरवाही दिखाते हैं; अतः वे भी मोह त्यागकर अपने साथीको छोड़ देते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दन्तरक्षा-विधि।

अगर दाँतोंको सुरक्षित, निर्दोष और मजबूत रखना चाहते हो, तो नीचेकी हिदायतोंपर अमल करोः—

(१) नित्य सवेरे नीम या बबूलकी दाँतुन करो।

(२) कोई मञ्जन मलकर कुल्ले करो।

(३) नित्य काली तिली या सरसोंके तेलके कुल्ले करो अथवा पिसा हुआ महीन सैंधानोन तेलमें मिलाकर, उससे दाँतोंको मलो। "चरक"में लिखा है, दाँतोंको नीरोग और मजबूत रखनेवाली संसारमें जितनी औषधियाँ हैं, उनमें "तेलके कुल्ले" सर्वोपरि हैं।

(४) अगर कोई मञ्जन न हो, तो कोयलोंको महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो और उसीसे दाँत मला करो। उससे दाँत खूब साफ रहते तथा सड़न और पीला-पीला मैल दूर हो जाता है।

(५) खड़ियासे दाँत मलना भी लाभदायक है।

(६) नमक या बालूसे दाँत मलनेसे भी दाँत साफ रहते हैं।

दन्तरोग-चिकित्सा।

(दाँतोंकी बीमारियोंका इलाज)

(१) सोंठ, सरसों, हरड़, बहेड़ा और आँवला—इनके काढ़ेके कुल्ले करनेसे शीताद-रोग आराम हो जाता है।

(२) हीरा कसीस, लोध, पीपर, मैनसिल, फूल-प्रियंगू और तेजबलको महीन पीसकर और "शहद" में मिलाकर लेप करनेसे शीतादसे सड़ा हुआ मांस निकल जाता है।

(३) फूल प्रियंगू, नागरमोथा और त्रिफला—इनको पानीमें पीसकर लेप करनेसे शीताद-रोग नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) पुण्डेरिया, मुलेठी, त्रिफला और कमल—इनको समान-समान लेकर पानीके साथ पीस लो। फिर इस लुगदीके साथ तेल या घी पका लो। इस तैलके लगानेसे शीताद रोग आराम हो जाता है।

(५) वातनाशक औषधियोंके द्वारा पकाया हुआ तेल शीतादमें काम देता है।

नोट—शीताद-रोग होनेसे अकस्मात् मसूड़ोंसे खून गिरने लगता है, फिर दन्तमांस क्रमशः सड़-सड़कर, दुर्गन्धित, क्लेदयुक्त, काला और नम हो जाता और मसूड़ा गिर पड़ता है।

(६) दन्तपुप्पुट रोग होनेसे तत्काल ही खून निकलवाना चाहिये तथा शिरोविरेचन नस्य देनी चाहिये और चिकना भोजन कराना चाहिये।

(७) तिल, चीता और सफेद सरसों—इनको एकत्र गरम जलमें पीसकर मुँहमें कवल धारण करना चाहिये। इससे दाँतोंकी सूजन नाश हो जाती है।

नोट—दो या तीन दाँतोंमें जो महा सूजन होती है, उसे "दन्तपुप्पुट" कहते हैं।

(८) दन्तवेष्ट रोगमें, दाँतोंसे खून गिरता हो, तो लोध, पतङ्ग, मुलेठी और लाखको महीन पीस-छानकर "शहद"में मिला लो और जख्मपर मलो।

(९) वटादि पञ्चक्षीरी वृक्षोंका काढ़ा बनाकर, उसमें शहद, घी और मिश्री मिलाओ और उस काढ़ेसे कुल्ले करो। दन्तवेष्ट रोग आराम हो जायगा।

(१०) मौलसरीकी छाल चबानेसे हिलते हुए दाँत जम जाते हैं।

(११) नागरमोथा, हरड़, त्रिकुटा, बायबिड़ङ्ग और नीमके पत्ते—इन सबको एकत्र गोमूत्रमें पीसकर गोली बना लो। इन गोलियोंको छायामें सुखाकर, रातको सोते समय, मुँहमें रखनेसे हिलते हुए दाँत स्थिर हो जाते हैं। हिलते हुए दाँतोंको जमानेवाली इससे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उत्तम और दवा नहीं है। इनसे दाँतोंके सब रोग आराम हो जाते हैं। इन गोलियोंको "भद्रमुस्तादि बटिका" कहते हैं। सुपरीक्षित है।

(१२) दशमूलके काढ़ेमें तेल या घी पकाकर और शहद मिलाकर दन्तधावनके लिए कवल धारण करना चाहिये। इससे दाँतोंके हिलने वग़ैरःमें लाभ होता है।

नोट—जिस रोगके होनेसे मसूड़ोंसे ख़ून या राध बहती है और दाँत हिलते हैं, उसे "दन्तवेष्ट" कहते हैं।

(१३) अगर शौषिर रोग हो—दाँतोंकी जड़में पीड़ायुक्त सूजन हो और लार बहती हो, तो दाँतोंमेंसे खून निकलवाकर लोध, नागरमोथा और रसौतका चूर्ण "शहद"में मिलाकर लेप करो तथा पञ्चक्षीरी वृक्षोंके काढ़ेके कुल्ले करो।

नोट—शौषिर रोग होनेसे दाँतोंकी जड़में सूजन और पीड़ा होती है तथा लार बहती है।

(१४) शहद, पीपर और घी—इनको एकत्र मिलाकर, मुँहमें रखनेसे दाँतोंकी पीड़ा और उनका हिलना फौरन ही नाश हो जाता है। सुपरीक्षित है।

(१५) हींग, कायफल, कशीश, सज्जी और कूटकी छाल—इनको पीसकर मुँह या दाँतोंके अन्दर रखनेसे दाँतोंका दर्द फौरन नाश हो जाता है।

(१६) शारिवा, कमल, मुलेठी, अनन्तमूल, अगर और चन्दन—इनको बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदी आध पाव हो, तो आध सेर घी और पाँच सेर गायका दूध तथा लुगदीको मिलाकर पकाओ। जब घी-मात्र रह जाय, छान लो। इस घीकी नास लेनेसे दाँतोंका दर्द अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—लुगदीसे चौगुना घी और घीसे दस गुना दूध लेनेका इस नुसख़ेमें विशेष नियम है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१७) अगर परिदर रोग हो—मसूड़ोंका मांस गल गया हो और थूकते समय खून गिरता हो, तो वमन और विरेचन दो। परिदर और उपकुशकी चिकित्सा "शीताद"की तरह करनी चाहिये।

(१८) कठूमरके पत्तोंसे घिसकर दाँतोंका खून निकालो तथा सैंधानोन, शहद और त्रिकुटेका चूर्ण मिलाकर धीरे-धीरे दाँतोंपर घिसो। इस नुसखेसे परिदर और उपकुश आराम हो जाते हैं।

(१९) पीपर, सफेद सरसों, फिटकरी और सोंठ—इनको पीसकर और गुनगुने पानीमें मिलाकर गरगरे या कुल्ले करनेसे उपकुश रोग आराम हो जाता है।

(२०) दोनों तरहकी पीपरोंको पीसकर और "शहद"में मिलाकर मुँहमें रखकर फिरानेसे परिदर और उपकुश रोग नाश हो जाते हैं।

(२१) पटोलपत्र, नीम और त्रिफला—इनके काढ़ेसे दाँत धोनेसे परिदर और उपकुश आराम हो जाते हैं।

नोट—मसूड़ोंका मांस गलने और थूकते समय खून गिरनेको "परिदर" कहते हैं। मसूड़ोंमें जलन हो और वे पक जायँ तथा दाँत हिलने लगें और मसूड़े सूज जायँ तथा थोड़ा-थोड़ा दर्द हो, तो "उपकुश" कहते हैं।

(२२) दन्त नाड़ीव्रण हो तो नाड़ीव्रणकी तरह इलाज करना चाहिये। जिस दाँतमें वह नाड़ी हो, उस दाँतको उखाड़ डालना चाहिये। ऐसे दाँत के न उखाड़नेसे नाड़ीकी गति हड्डीमें हो जाती है; पर ऊपरका दाँत उखाड़ना उचित नहीं है। ऊपरका दाँत उखाड़नेसे खून ज़ियादा बहने लगता है। इससे घोर रोग हो जाते हैं अथवा रोगी उस ओरकी आँखको खोकर काना हो जाता है; अतः ऊपरका हिलता हुआ दाँत भी न उखाड़ना चाहिये।

(२३) जावित्री, माजूफल और कुटकी—इनका काढ़ा मुँहमें रखनेसे दन्त-नाड़ी आराम हो जाती है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२४) लोध, खैर, मँजीठ और मुलेठी—इनको समान-समान लेकर और सिलपर पानीके साथ पीसकर लुगदी कर लो। फिर लुगदीसे चौगुना तेल और तेलसे चौगुना पानी लेकर तेल पका लो। इस तैलके लगानेसे दन्त-नाड़ी आराम हो जाती है।

(२५) चमेलीके पत्ते, मैनफल, गोखरू और खैर—इनके काढ़ेसे दाँत धोनेसे दन्त-नाड़ी आराम हो जाती है।

(२६) चमेलीके पत्ते, मैनफल, कटेरी, गोखरू, लोध, खैर, मँजीठ और मुलेठी—इनको समान-समान लेकर और नं० २४ की तरह तेल पकाकर लगानेसे दन्त-नाड़ी आराम हो जाती है।

(२७) दन्तहर्ष रोगमें स्नैहिक धूम-पान, स्नैहिक नस्य, पेया, रसदार यवागू, दूधकी मलाई, घी, शिरोवस्ति और वातनाशक क्रियाएँ हितकारी हैं।

(२८) वायुके कोपसे दाँतोंमें तोड़ने सरीखी पीड़ा और हर्ष हो, तो गरम तेल-घी, वातनाशक काढ़े और कवल—इनसे काम लो।

नोट—जिस रोगमें दाँत शीत, रूक्ष, खटाई और वात वग़ैरःके स्पर्शको न सह सकें वह "दन्तहर्ष" है।

(२९) अगर दन्त-शर्करा हो, तो दाँतोंकी जड़को न खोदो, किन्तु दन्त-शर्कराको नश्तरसे चीरकर निकाल डालो और फिर लाखका चूर्ण "शहद"में मिलाकर उस जगह घिसो।

नोट—दन्तहर्षमें जो इलाज लिख आये हैं, वही सब दन्त-शर्करामें भी कर सकते हो, देखो नं० २७।२८। कपालिका नामक दन्तरोग यद्यपि अत्यन्त कष्ट-साध्य है, तथापि उसकी चिकित्सा भी "दन्तहर्ष"के ही समान करनी चाहिये।

(३०) कृमि दन्त-रोगमें, हींग गरम करके लेप करो अथवा गरम हींगको दाँतके बीचमें या दाढ़के नीचे रखो। इससे दाँतका कीड़ा मर जायगा।

(३१) बड़ी कटेरी, भूमिकदम्ब, अरण्डकी जड़ और छोटी कटेरीका काढ़ा बनाकर, उसमें तेल मिलाओ और फिर उससे कुल्ले

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करो। इससे कृमि दन्तकी पीड़ा यानी दाँतोंमें कीड़ा होनेसे जो भयानक दर्द होता है, आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—भूमिकदम्ब = गोरखमुण्डी।

(३२) द्रोणपुष्पीका स्वरस, समन्दरफेन, शहद और तेल—इनको एकत्र मिलाकर कानमें डालनेसे दाँतोंके कीड़े नाश हो जाते हैं।

(३३) थूहरकी जड़ चबाकर दाँतके नीचे दबा रखनेसे कीड़ा गिर जाता है

(३४) बिजौरे नीबूकी जड़ और बावचीकी जड़ बराबर-बराबर लेकर पानीके साथ पीस लो और बत्ती बना लो। इस बत्तीको दाँतोंमें रखने और दाँतोंसे चबानेसे तत्काल ही कृमि दन्त आराम हो जाता है।

(३५) आक, थूहर अथवा सेंहुड़का दूध दाँतोंमें भरनेसे दाँतोंके कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(३६) दन्ती, सत्यानाशी कटेरी, कशीश, बायबिड़ङ्ग और इन्द्रजौ—सबको बराबर-बराबर लेकर और पीस-छानकर दाँतोंमें रखनेसे दाँतोंके कीड़े नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस चूर्णको थूहर और आकके दूधमें मिलाकर दाँतोंके छेदमें भरनेसे जल्दी ही लाभ हो जाता है।

(३७) केंकड़ेका पैर पीसकर दाँतमें लेप करनेसे नींदमें दाँत घिसना बन्द हो जाता है।

(३८) केंकड़ेका पैर गायके दूधमें औटाओ; जब वह खूब गाढ़ा हो जाय, उसे पैरमें लेप करके सोओ। इससे भी दाँत घिसना या सोतेमें दाँत कड़कड़ाना बन्द हो जाता है।

(३९) हनुमोक्षके लक्षण अर्दित-रोगके समान होते हैं और उसका इलाज भी अर्दितकी तरह ही होता है।

(४०) मालकाँगनी, लोध, कूट, दारुहल्दी, पाठा, समंगा, कुटकी, तेजपात और पीपरामूल,—इनका चूर्ण घीमें मिलाकर दाँतोंमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लगानेसे दाँतोंसे खून बहना, दाँतोंका दर्द, मांस गिरना या फटना वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४१) शहद या सरसोंका तेल अथवा काँजीके गरगरे—कुल्ले करनेसे मसूड़ोंके सब रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४२) दन्तवैदर्भ, अधिदन्त, अधमांस और शौषिर रोग शस्त्र-साध्य हैं अर्थात् ये चीर-फाड़से ही आराम हो सकते हैं—दवासे नहीं।

(४३) जाई या जाती अथवा चमेलीके पत्ते, पुनर्नवा, छोटी इलायची, कूट, बच, सोंठ, अजवायन और हरड़—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको मुँहमें रखनेसे वात, कीड़े, दाँतोंका दर्द, दुर्गन्धि दोष और दाँतोंका हिलना वग़ैरः सभी दाँतोंके रोग नाश होते हैं। यह नुसख़ा ख़ासकर दन्त-नाड़ीपर अच्छा है।

(४४) विसोंटेकी जड़की छाल, खैरसार, लोध, मँजीठ, कूट और कुटकी—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको दाँतोंपर घिसनेसे दाँतोंका मैल, दाँतोंका दर्द, दाँतोंके कीड़े और मसूड़े फूलना वग़ैरः दन्तरोग नाश हो जाते हैं। दाँतोंसे खून निकलनेपर तो रामवाण ही है। परीक्षित है।

दाँतोंके रोगोंपर हकीमी नुसख़े।

नोट—अगर दाँतोंमें पीड़ा हो तो गरम पानीसे कुल्ले करो। अगर गरम पानीके कुल्लोंसे आराम मालूम हो, तो सर्दीसे पीड़ा समझो। अगर गरम पानीके कुल्लोंसे पीड़ा न घटे या उल्टी बढ़े तो शीतल जलसे कुल्ले करो। अगर सर्द पानीके कुल्ले करनेसे आराम हो, तो गरमीसे दर्द समझो। दाँतोंमें गरमीसे दर्द है या सर्दीसे—इस बातके जाननेका यह सीधा और सच्चा उपाय है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर दाँतोंके हिलनेसे दर्द हो, मगर दाँत कम हिलते हों और बुढ़ापा न हो, तो उपाय करो। अगर दाँत बहुत हिलते हों, तो उन्हें उखाड़ डालो। जो मनुष्य सदा "नरकचूर" मुँहमें रखता है, उसको दाँतोंका रोग नहीं सताता; दाँत मज़बूत बने रहते हैं।

(१) हल्दी महीन पीसकर, कपड़ेमें रखकर दुखनेवाले दाँतके नीचे रखने और हल्दीको ही दाँतोंपर मलनेसे दाँतका दर्द आराम हो जाता है।

(२) अदरखके पतले कतलोंपर नमक लगाकर, पीड़ावाले दाँतके नीचे रखनेसे सर्दीसे होनेवाला दर्द आराम हो जाता है।

(३) कालीमिर्च और तुलसीकी पत्तियाँ पीसकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको दाँतके नीचे रखनेसे सर्दीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(४) विनौला गरम करके दाँतके नीचे दबाकर सो रहनेसे अथवा विनौलेके काढ़ेके कुल्ले करनेसे सर्दीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(५) मँजीठ लगानेसे सर्दीकी दन्त-पीड़ा नाश हो जाती है।

(६) अक्कीरके दूधमें रुई भिगोकर दाँतों तले दबानेसे दन्त-पीड़ा नष्ट हो जाती है।

(७) ईसबगोल सिरकेमें भिगोकर दाँतोंपर रखनेसे गरमीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(८) कपूरका टुकड़ा दाँतोंके नीचे रखनेसे पुराना दाँतोंका दर्द आराम हो जाता है। अगर दाँतको कीड़े खा गये हों, तो कीड़ेके किये हुए छेदमें कपूर रख दो। इससे कीड़े मर जायँगे और छेद न बढ़ेगा। यह कृमिदन्त रोगपर अकसीर है। परीक्षित है।

(९) अकरकरा १ भाग, नौसादर ५ भाग और अफीम ५ भाग—इनको पीसकर कीड़ेके खाये हुए छेदमें रखो। इससे कीड़े मर जायँगे और पीड़ा आराम हो जायगी।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१०) अदरखको कूटकर शहद और सिरकेमें मिला लो और कीड़ेके खाये दाँतके छेदमें रख दो। अवश्य लाभ होगा।

(११) मदारकी जड़की छाल एक माशे लेकर पानीमें भिगोकर दाँतोंमें रखनेसे दाँतोंका दर्द मिट जाता है।

(१२) ज्वारके दाने बराबर "नौसादर" रूईमें लपेटकर दाँतके नीचे रखनेसे लार बहेगी और पीड़ा आराम हो जायगी।

(१३) ज़रा-सी गन्धक सिरकेमें मिला लो। फिर उसमें रूई भिगोकर कीड़े खाये हुए दाँतमें रख दो। अवश्य लाभ होगा।

(१४) प्याज़ और कलौंजी—बराबर-बराबर लेकर, चिलममें रखकर, तमाखूकी जगह उसका धूआँ पीओ। इतना पीओ कि लार बहनेका तार न टूटे। ख़राब पानी निकल जानेसे दर्द और मसूड़ोंकी सूजन आराम हो जायगी।

(१५) अकरकरा और मस्तगी बराबर-बराबर लेकर थोड़े-से मोममें मिला लो और एक चने समान दाँतके नीचे रखो। इससे लार बहेगी और दन्तपीड़ा आराम हो जायगी।

(१६) छोटी कटेरीका फल चिलममें रखकर ऊपरसे आग रखो और हुक्केपर धरकर तमाखूकी तरह पीओ। जो धूआँ मुँहमें जाय, उसे वने जहाँ तक मुँहमें रोको। इससे कीड़ेके कारणसे हुआ दाँतका दर्द आराम हो जाता है।

(१७) सुहागा और मोम मिलाकर कीड़ेके खाये हुए दाँतके छेदमें रखनेसे दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(१८) छोटे बालकका गिरा हुआ दूधका दाँत जन्तरमें मढ़वाकर पास रखनेसे दाँतका दर्द मिट जाता है।

(१९) पीलूकी लकड़ीकी दाँतुन करनेसे दाँत पुष्ट होते हैं।

(२०) नीमकी दाँतुन करनेसे दाँतोंमें कीड़े नहीं पड़ते और गरमीसे दाँतोंमें दर्द नहीं होता।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२१) भुनी फिटकरी ४ माशे, भुने हुए करंजुए दो नग, भुना तूतिया ४ माशे और कालीमिर्च नग १२ सबको पीस-छान लो। इस चूर्णके दाँतोंपर मलनेसे दाँतोंकी पीड़ा शान्त हो जाती है।

(२२) तम्बाखू दो भाग और कालीमिर्च एक भाग लेकर पीस-छान लो। इसके दाँतोंपर मलनेसे सर्दीकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(२३) करंजुवा जलाकर राख कर लो और उसमें नमक मिला लो। इसके मलनेसे सब तरहकी दन्तपीड़ा आराम हो जाती है।

(२४) सज्जी और कालीमिर्च पीसकर मलनेसे सर्दीकी दन्तपीड़ा आराम होती है।

(२५) अकरकरा और कपूर—दोनों समान-समान लेकर पीस लो। फिर इस चूर्णको दाँतोंपर मलो। इससे हर तरहकी दन्तपीड़ा आराम होती है। गरमी या सर्दीकी परीक्षा करनेकी दरकार नहीं। जब तक आराम न हो, घण्टे-घण्टे या दो-दो घण्टेमें मलो और मुँह नीचा कर दो—ताकि पानी निकल जाय। यह नुसख़ा बेशक दन्त-पीड़ापर रामवाण है। सैकड़ों बार परीक्षा की है।

(२६) भुनी फिटकरी १ माशे, कत्था १॥ माशे और भुना तूतिया २ रत्ती—इनको पीस-छानकर रख लो। इस मञ्जनके दाँतोंमें मलनेसे दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

(२७) सब्ज़ तूतिया घीमें जलाया हुआ १० माशे, नीमकी पत्तियोंकी राख १० माशे और संग ज़राहत या सेलखड़ी २० माशे—सबको मिलाकर पीस लो। इस मञ्जनको दाँतोंपर मलनेसे दाँतोंके रोग नाश होकर दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

नोट—नीमकी पत्तियोंको एक कुल्हड़ेमें भरकर फूँक लो।

(२८) कत्था सफेद १ तोले, सेवतीके सूखे फूल तीन माशे, गुलेनार ३ माशे, मस्तगी ४ रत्ती, बड़ी इलायची ६ माशे, मिस्सी १ तोले, भुनी सुपारी १॥ तोले और भुना धनियाँ ६ माशे—इन

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सबको कुल्हड़ेमें रखकर आगपर भूनो। जब राख हो जाय, पीस-छान लो। इस मञ्जनके लगानेसे दाँतोंके दर्द वग़ैरः सब शिकायतें रफ़ा होकर दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

(२९) रेवन्दचीनी पीसकर उसमें बराबरकी "मिस्सी" मिला लो और दाँतोंपर मलो। इसके लगानेसे दन्त-पीड़ा फ़ौरन आराम हो जाती है।

(३०) भिलावे, सुपारी और माजूफल—तीनोंको एक कुल्हड़ेमें भरकर आगपर रख दो। जब राख हो जाय, पीस-छान लो। इस मञ्जनसे दाँत मज़बूत होते और लार बहकर दन्त-पीड़ा नाश हो जाती है।

(३१) फिटकरी ८ माशे और नमक ४ माशे पीस-छानकर दाँतों-पर मलनेसे दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

(३२) तूतियेको तवेपर रखकर आगपर चढ़ा दो और लोहेके दस्तेसे पीसो। फिर आगसे उतारकर सिलपर पीस लो। इससे दाँतोंका दर्द और दाँतोंका कीड़ा नष्ट हो जाता है।

(३३) जामुनकी लकड़ीकी राख दाँतोंपर मलनेसे दाँतोंसे खून आना बन्द हो जाता है।

(३४) मौलसरीकी लकड़ीकी राख मलनेसे भी दाँतोंसे खून आना बन्द हो जाता है।

(३५) संग ज़राहत या सेलखड़ी पीसकर दाँतोंपर मलनेसे दाँतोंसे खून आना बन्द हो जाता है।

(३६) कचनारकी लकड़ीकी राख मलनेसे मसूड़ोंसे खून आना बन्द हो जाता है।

(३७) राईको पीस-छानकर दाँतोंपर मलनेसे दन्त-पीड़ा नाश हो जाती है।

(३८) बारहसिंगेका सींग जलाकर पीस लो। इस राखके मलनेसे दाँत मज़बूत और खूब साफ़ होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—सींगको रेतीसे रेतकर या छोटे-छोटे टुकड़े करके एक कुल्हड़ेमें रखो और मुँह बन्द करके कपरौटी करो और कण्डोंमें रखकर आग लगा दो। पीछे निकालकर पीस-छान लो। इस राखको दाँतोंपर मलनेसे दाँत साफ़ होते और एक माशे इसी राखको ३ माशे "गरम घी" में मिलाकर खानेसे हृदयका घोर शूल एवं चूतड़का दर्द वग़ैरः प्रायः सभी शूल नाश हो जाते हैं।

(३६) मसूरको जलाकर पीस-छान लो। इस राखको मलनेसे दाँत खूब साफ हो जाते हैं।

(४०) सरेरूकी पत्तियोंकी राख मलनेसे दाँत साफ हो जाते हैं।

(४१) बड़की छाल पीसकर दाँतोंके नीचे रखनेसे दाँतोंका दर्द आराम हो जाता है।

(४२) सीपकी राख मलनेसे दाँत साफ हो जाते हैं।

(४३) बालछड़ पीस-छानकर मलनेसे मसूड़े और दाँत मज़बूत होते और मुँहमें सुगन्धि आती है।

(४४) सिरसका गोंद और कालीमिर्च पीसकर मलनेसे दाँतोंका दर्द मिटता और दाँत पुष्ट होते हैं।

(४५) चमेलीकी पत्ती एक मुट्ठी और इस्पन्द डेढ़ तोले लेकर सेर भर पानीमें औटाओ। जब पाव भर पानी रह जाय, छानकर कुल्ले करो। इस काढ़ेके कुल्लोंसे दाँतोंके कीड़े मर जाते और उनकी वजहसे हुई दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(४६) पीपलकी छाल और बड़की छाल चार-चार तोले लेकर कुचल लो और सेर भर पानीमें औटाओ। जब पाव भर पानी रह जाय, छानकर कुल्ले करो। इस काढ़ेसे दन्त-पीड़ा तत्काल आराम हो जाती है।

(४७) फिटकरी १ तोले और मोचरस ६ माशे दोनोंको कूटकर आध सेर पानीमें औटाओ; जब पाव भर पानी रह जाय, मल-छानकर कुल्ले करो। इससे दाँतोंका दर्द फौरन आराम होता और दाँत मज़बूत होते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४८) मकोय, ख़शख़ाशका पोस्ता, इस्पन्द और मँजीठ—एक-एक तोले लेकर सेर भर पानीमें औटाओ। जब आध सेर पानी रह जाय, मल-छान लो। गरमागर्म काढ़ेके कुल्ले करनेसे दाँतोंका वह दर्द आराम होता है जो नजले, वात, तरी एवं मसूड़ोंके ढीले होनेसे होता है।

(४९) मसूर, ख़शख़ाशके पोस्ते और अकरकरा—इनको एक-एक तोले लेकर सेर भर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, छान लो। इस काढ़ेके कुल्ले कई वार करनेसे दाँतोंका दर्द आराम हो जाता है।

(५०) फिटकरी और माजूफलको औटाकर कुल्ले करनेसे दाँतोंसे मैल या पीप आना बन्द हो जाता है।

(५१) काले चने भिगोकर औटा लो और गरमागर्म रहते कुल्ले करो। इससे मसूड़ोंकी सूजन उतर जाती है।

(५२) कटाईका पेड़ मय डाल, फल और फूलके लाकर कूटो और स्वरस निकाल लो। इस स्वरसके कुल्ले करनेसे दाँतोंका दर्द और दाँतोंके कीड़े जादूकी तरह नष्ट होते हैं। अगर कीड़ोंने दाँत खा-खाकर पोले ही कर डाले हों, तो चार दिन तक कुल्ले करनेसे एकदम आराम हो जायगा।

नोट—अगर कटाईका पञ्चांग ताज़ा न मिले, तो सूखेको ही पानीमें औटा लो और चौथाई पानी रहनेपर छानकर कुल्ले करो।

(५२ क) सरेरूके फूल औटाकर कुल्ले करने; पियाबाँसेकी पत्तियाँ औटाकर कुल्ले करने; मौलसरीकी छाल औटाकर कुल्ले करने; कचनारकी छाल औटाकर कुल्ले करने; सिरसकी छाल औटाकर कुल्ले करने अथवा रूसे या अड़ूसेकी पत्तियाँ औटाकर कुल्ले करनेसे कीड़ोंके खानेसे हुई घोर दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है। ये छै नुसख़े हैं। इनमेंसे किसी एकसे काम लेना चाहिये—छहोंसे नहीं। एकसे लाभ न हो, तब दूसरेसे काम ले सकते हो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५३) गरम पानीके कुल्ले करनेसे मसूड़ोंका दर्द जाता रहता है।

(५४) माजूफल पीसकर मलनेसे दाँतोंसे खून आना बन्द होता और मसूड़े मज़बूत हो जाते हैं।

(५५) इस्पन्द पीसकर और कुछ गरम पानीमें मिलाकर; जहाँ दर्द हो, गालोंपर लगाओ। इससे पीड़ामें शान्ति आती है।

(५६) खट्टी और कसैली चीज़ खानेसे दाँत खट्टे हो जाते हैं यानी आम जाते हैं। अगर ऐसा हो, तो गेहूँकी गरम रोटी दाँतोंके नीचे दबाओ; अवश्य लाभ होगा।

(५७) नारियलकी गरी, बादामकी गरी, पीला मोम और हींग—इनको बराबर-बराबर लेकर मिला लो और चबाओ। इससे दाँतोंका खट्टा होना या आमना मिट जाता है।

(५८) नमक पीसकर मलनेसे दाँतोंका खट्टापन फौरन मिटता है। दाँत आमनेमें "नमक"का मलना सबसे उत्तम है।

(५९) अगर दाँतोंमें छेद हो गये हों, तो नौसादर और अफीम कूटकर दाँतोंके छेदोंमें रखो अथवा मस्तगी पीसकर दाँतोंके छेदोंमें रखो और मस्तगीको ही पीसकर दाँतोंपर लगा दो।

(६०) पीली हरड़की छाल ८ माशे, मकोय ८ माशे, इस्पन्द ८ माशे, धनियाँ ८ माशे, ख़शख़ाशके पोस्ते नग दो और अजवायन ८ माशे—इन सबको आध सेर पानीमें औटाओ; जब आधा पानी रह जाय, मल-छानकर कुल्ले करो। इस काढ़ेके कुल्ले करनेसे दाँतोंमें छेद होना, दाँतोंका दर्द और मसूड़ोंकी सूजन या मसूड़े फूलना—ये सब आराम होते हैं।

(६१) गुल रौग़न मकोयके पत्तोंके स्वरसमें मिलाकर बालकके मसूड़ोंपर मलनेसे दाँत निकलनेकी पीड़ा कम हो जाती है और दाँत आसानीसे निकल आते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(६२) छछूँदरका होठ या संभालूकी जड़ बालकके गलेमें लटकानेसे दाँत खूब आरामसे निकलते हैं।

(६३) कपूर और बङ्गभस्म मिलाकर पानमें खानेसे मुखकी बदबू जाती रहती है।

(६४) अकरकरा, तज और मस्तगी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसको मलनेसे गरमीकी दन्तपीड़ा फौरन आराम हो जाती है।

नोट—सर्द पानी मुँहमें भरकर कुल्ले करो। अगर शीतल जलसे आराम मालूम हो, तो गरमीका दर्द समझो।

(६५) धनियाँ, गुलाबके फूल, चन्दन और कपूर समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसके मलनेसे भी गरमीकी दन्तपीड़ा और गरमीका सिर-दर्द दोनों ही फौरन आराम होते हैं। सिरपर लगाना हो, तो पानीमें पीसकर लगाना चाहिये। परीक्षित है।

(६६) कौड़ी, फिटकरी, सज्जी, नमक और अफीम सबको पीस-कर दाँतोंपर मलनेसे सर्दीकी दन्तपीड़ा आराम हो जाती है।

(६७) हींग और बायबिड़ङ्गको दाँतमें रखनेसे कीड़ोंके कारणसे हुआ दाँतका दर्द आराम हो जाता है।

(६८) बायबिड़ङ्गको चिलममें तमाखूकी जगह रखकर और ऊपरसे बिना धूएँकी आग रखकर चिलम पीनेसे मुँहसे लार बहती और दाँतका दर्द चाहे कीड़ोंकी वजहसे हो और चाहे गरमी-सर्दीसे हो आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६९) प्याजके बीज ३ माशे और अजवायन ६ माशे—इन दोनोंको तमाखूकी जगह चिलममें रखकर धूँआ पीनेसे दाँतके कीड़े मर जाते और दन्तपीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७०) कुचला और कालीमिर्च समान-समान लेकर आगपर सेंक लो। फिर पीस-छानकर दाँतोंपर मलो। इससे हर तरहकी

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दन्तपीड़ा नाश हो जाती है। दाढ़में कीड़ा लग जानेसे अक्सर मुँह सूज जाता है, इससे वह भी आराम हो जाता है।

(७१) दाँतोंमें दर्द शुरू होते ही पहले थोड़ा-सा नोन चबाकर कुल्ले करो। फिर कटाई या मौलसरी या कीकरकी दाँतुन करो। इन उपायोंसे दाँत पत्थरकी तरह मज़बूत हो जाते हैं।

(७२) बड़के अंकुरोंका या कालीमिर्चोंका या लौंगका काढ़ा बनाकर, उसकी चन्द बूँदें कानमें टपकानेसे दाँत और दाढ़की पीड़ा तत्काल बिजलीकी तरह आराम हो जाती है।

(७३) कीड़ोंके खाये हुए खोखले दाँत या दाढ़के अन्दर नौसादर और कपूरकी टिकिया या पोटली रखनेसे पीड़ा तत्काल दूर हो जाती है।

(७४) अफीम, तमाखू और नीमके पत्ते—इनको एकत्र पीसकर मूँग समान गोलियाँ बना लो। पोले दाढ़-दाँतमें गोली रखनेसे दाँत-दाढ़ोंके कीड़े मर जाते हैं।

नोट—जो तमाखूको पसन्द न करें, उसकी जगह हींग मिला सकते हैं।

(७५) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर और नागकेशर—इनको पीस-छान लो। फिर ज़रा-सा "कालानोन" पीस-छानकर मिला दो और इससे दाँतोंको मलो। इस मञ्जनसे दाँतोंकी पीड़ा और कीड़े नष्ट हो जाते हैं।

(७६) थूहरकी जड़ या अकरकरा या अजवायन या नीलवृक्षकी जड़—इनमेंसे किसी एकको पीसकर पोले दाँतोंमें रखनेसे दाँतोंके कीड़े नाश होकर पीड़ा आराम हो जाती है।

(७७) क्रियाजूटके पानीमें रूईकी फुरेरी भिगोकर दाँतके भीतर रखो। इससे दाँतोंकी पीड़ा फौरन आराम होती है।

(७८) अजवायनका फूल, कपूर और पिपरमिण्टका सत्त—इन तीनोंको समान-समान लेकर एक शीशीमें रखकर काग लगा दो। जब ये गलकर मिल जायँ, इसमें रूईकी फुरेरी भिगोकर दाँतमें रख

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दो या लगा दो—दाँतोंकी पीड़ा, कीड़ेकी तकलीफ और मसूड़े फूलनेकी पीड़ा ये सब तत्काल आराम होते हैं। यही "अमृतधारा" है। इस दवाके खानेसे पेटका दर्द, जी मिचलाना, क़य होना और ख़राब डकारें आना वग़ैरः भी आराम होते हैं। इसके लगानेसे बिच्छू, बर्र, ततैया और मधुमक्खीका ज़हर भी उतर जाता है।

(७६) बायबिड़ङ्गको तमाखूकी जगह चिलममें रखकर, ऊपरसे बिना धूएँका साफ अङ्गारा रखकर, तमाखूकी तरह पीनेसे ढेरों पानी निकलकर दन्तपीड़ा आराम हो जाती है।

(८०) पाँचों नमक, भुना हुआ नीलाथोथा, सोंठ, मिर्च, पीपर, पीपरामूल, हीराकसीस, माजूफल और बायबिड़ङ्ग—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस मञ्जनके लगानेसे सब तरहकी दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(८१) कबाबचीनी, लौंग, छोटी इलायची और बड़ी इलायची—एक-एक माशे और कस्तूरी एक रत्ती ले लो। कस्तूरीको छोड़कर बाक़ी दवाओंको पीस-छान लो और फिर कस्तूरी मिला लो। इसमेंसे थोड़ी-थोड़ी दवा मुँहमें रखनेसे मुँहकी बदबू चली जाती और सुगन्ध हो जाती है।

नोट—अगर मुँहमें बहुत ही बदबू आती हो, तो दस्त कराकर पेट साफ कर लो। इसके बाद ऊपरकी दवा मुँहमें रखाओ।

(८२) माजूफल और कुलफेके बीजोंको पानीमें घोलकर कुल्ले करनेसे मसूड़ोंसे खून जाना बन्द हो जाता है।

(८३) पीले फूलकी कटसरैया और अकरकरा कूटकर दाढ़के नीचे रखनेसे दाढ़का दर्द आराम हो जाता है।

(८४) कटसरैयाका रस और "शहद" मिलाकर दाँतोंमें लगानेसे मसूड़ोंसे खून जाना बन्द हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(८५) कटसरैयाके पत्ते चबाकर दाँतोंके नीचे रखनेसे दाँतोंका दर्द मिट जाता है।

(८६) खीरेतीकी लकड़ीकी दाँतुन करनेसे दाँत मज़बूत हो जाते और पीड़ा नाश हो जाती है। खीरेती मराठी नाम है।

(८७) कायफ़लकी छालको औटाकर कुल्ले करनेसे दाँत मज़बूत हो जाते हैं।

(८८) कड़वी तोरईके चूर्णका धूआँ चुरटकी तरह पीनेसे दाँतोंके कीड़े नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(८९) कपूर और अफीम मिलाकर दाढ़-दाँतमें रखनेसे दन्त-पीड़ा आराम हो जाती है।

(९०) कत्था २ तोले, माँया १ तोले, कपूर ३ माशे, चोक ४ तोले और बबूलकी छाल २ तोले—इन सबको पीसकर दाँतोंपर मलनेसे दाँतोंका दर्द जाता रहता है।

(९१) कड़वे बादामकी मींगी और जायफल मिलाकर चबानेसे दाँतोंके रह जानेमें लाभ होता है।

(९२) सोंठ और कुंदरु गोंद महीन पीसकर नाकमें फूँकनेसे दाँतोंका रह जाना आराम हो जाता है।

(९३) नीमकी जड़के काढ़ेमें ज़रा-सी फिटकरी डालकर कुल्ले करनेसे दाँतोंका दर्द जाता रहता है।

(९४) अर्क़ कपूर फुरेरीसे दाँतोंमें लगानेसे दाँतोंका दर्द मिट जाता है।

(९५) घी या तेलके कुल्ले करनेसे दाँत मज़बूत हो जाते हैं। "चरक" में तेलके कुल्ले दाँतोंके लिए सर्व्वश्रेष्ठ लिखे हैं।

अगर उत्तम-से-उत्तम उपन्यास पढ़नेका शौक़ है, तो सचित्र "हाजीबाबा" अवश्य देखिये। सजिल्दका मूल्य ३।।)

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

बालकोंके दाँत निकलनेके समयकी
तकलीफोंके उपाय !

(१) सिरसके बीजोंमें सूईसे छेद करो, फिर उनको धागेमें पिरोकर उनकी माला बच्चेके गलेमें इस तरह पहना दो कि, वह माला बालकके गलेको छूती रहे। इससे बालकोंके दाँत बड़ी आसानीसे निकल आते हैं। जो विलायती बिजलीके फीतेपर आशिक हैं, वे इस बिना कौड़ीकी दवाकी परीक्षा कर देखें। परीक्षित है।

(२) सीपियोंकी माला बालकके गलेमें पहनानेसे दाँत आसानीसे निकलते हैं।

(३) कपूरकी चकतियोंकी माला बालकके गलेमें डालनेसे दाँत बड़ी आसानीसे निकलते हैं।

(४) कौड़ीकी भस्म "शहद"में मिलाकर मसूड़ोंपर मलनेसे दाँत आसानीसे निकल आते हैं।

(५) सुहागेको "शहद"के साथ पीसकर मसूड़ोंपर मलनेसे बालकोंके दाँत आसानीसे निकल आते हैं।

(६) धायके फूल और पीपलोंके चूर्णको "शहद"में मिलाकर मसूड़ोंपर मलनेसे दाँत बिना कष्टके सहजमें निकल आते हैं।

(७) केवल कच्चे आँवले या कच्ची हल्दीके रसको मसूड़ोंपर मलनेसे दाँत सहजमें निकल आते हैं।

(८) तुम्बरूके बीज या कायफल बालकके गलेमें बाँधनेसे भी दाँत शीघ्र ही निकल आते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—अगर ऊपरके उपायोंसे कुछ भी लाभ न हो, तो एक धारसे मसूड़ेको ज़रा चीर दें अथवा नश्तरसे ज़रा चिरवा दें। ऐसा करनेसे दाँत सहजमें निकल आयेंगे।

(६) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, अजवायन, अजमोद, हल्दी, मुलेठी, देवदारु, दारुहल्दी, बायबिड़ङ्ग, इलायची, नागकेशर, नागरमोथा, कचूर, काकड़ासिंगी और विरियासंचरनोन—इन अठारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्णमें जितनी-जितनी दवाएँ ली हों, उतनी-उतनी अभ्रक भस्म, शंख भस्म, लोह भस्म और सोना माखीकी भस्म मिला दो। फिर पानीके साथ खरल करके दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो और छायामें सुखा लो। इनमेंसे एक-एक गोली जलके साथ घिस-घिसकर मसूड़ोंपर दिनमें दो-तीन बार नित्य लगाओ; सहजमें दाँत निकल आवेंगे।

दन्तरोगोंपर उत्तमोत्तम योग।

बकुलाद्य तैल।

मौलसरीके फल, लोध, वज्रवल्ली, पियाबांसा, अमलताशकी जड़, बबूलकी छाल, अश्वकर्ण, खैर और विजयसार—इनमेंसे प्रत्येकको साढ़े पाँच-पाँच छटाँक लेलो और सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

ऊपरकी नौ दवाओंको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो और लुगदी बना लो। फिर तिलीका तेल एक सेर, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, उतारकर छान लो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

इस तैलके मुँहमें धारण करने या गरगरे करने और नास लेनेसे हिलते हुए दाँत वज्रवत मजबूत हो जाते हैं।

सहचराद्य तैल।

नीले फूलका पियाबाँसा पाँच सेर लेकर पचीस सेर पानीमें औटाओ; जब पकते-पकते सवा छै सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो।

धमासा, खैर, दुर्गन्धित खैर, जामुनके पत्ते, आमके पत्ते, मुलेठी और कमल—हरेक चीज़ दो-दो तोले लेकर सिलपर पीस लो।

अब एक सेर तिलीका तेल, लुगदी और काढ़ेको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलके मुँहमें रखनेसे दाँत तत्काल जम जाते हैं।

मुस्तादि बटिका।

नागरमोथा, हरड़, सोंठ, मिर्च, पीपर, बायबिड़ङ्ग और नीमके पत्ते—इनको समान-समान लेकर गोमूत्रमें पीस लो और गोली बनाकर छायामें सुखा लो। यही "मुस्तादि बटिका" हैं। इन गोलियोंको मुँह में रखकर सो जानेसे हिलते हुए दाँत स्थिर हो जाते हैं। हिलते हुए दाँतोंको जमानेवाली इससे बढ़कर दवा नहीं है।

नोट—अगर सवेरे ही बकुलाद्य तैल या सहचराद्य तैलके गरगरे किये जायँ और रातको मुस्तादि बटिका मुखमें रखी जायँ, तो निस्सन्देह हिलते हुए दाँत जम जायँगे।

जात्यादि तैल।

चमेलीके पत्ते, धतूरेके पत्ते, कटेरीकी जड़ और गोखरूका पञ्चाङ्ग—इनका काढ़ा पका लो।

खैर, मँजीठ, लोध और मुलेठी—इन चारोंका भी काढ़ा बना लो। फिर इन दोनों काढ़ोंमें तिलका तेल मिलाकर औटाओ। जब

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलसे दाँतका नासूर आराम हो जाता है।

लाक्षाद्य तैल।

लाखका रस ६४ तोलें, दूध ६४ तोले और तिलका तेल ६४ तोले अलग रख दो।

लोध, कायफल, मँजीठ, कमलकेशर, पद्माख, लालचन्दनका चूरा, कमल और मुलेठी—इनमेंसे हरेकको आठ-आठ तोले लेकर, १०२४ तोले (यानी १२ सेर १३ छटाँक) पानीमें पकाओ; जब चौथाई यानी २५६ तोले पानी रह जाय, छान लो।

अब लोध और कायफल वगैरः आठों दवाओंको चार-चार तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीस लो।

शेषमें लाखका रस, दूध, काढ़ा, लुगदी और तेलको मिलाकर तेल पका लो। इस तैलको मुँहमें रखने या गरगरे—कुल्ले करनेसे दालन, दाँतोंका हिलना, दाँत गिरना, कपालिका, शीताद, पूतिवक्त्र, अरुचि और मुखकी विरसता—ये रोग तत्काल नाश हो जाते हैं और दाँत भी जम जाते हैं। दाँतोंके रोगोंपर "लाक्षादि तैल" मशहूर है।

नोट—चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भागमें जहाँ जीर्णज्वरका लाक्षादि तैल लिखा है, वहाँ लाखका रस बनानेकी तरकीब लिखी है। उसी तरह लाखका रस तैयार कर लेना चाहिये। देखो चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरा भाग पृष्ठ ३६४–३६५।

दन्तरोगान्तक चूर्ण।

चमेलीके सूखे पत्ते, पुनर्नवा, तिल, पीपर, झाँटीपत्र (कटसरैयाके पत्ते), नागरमोथा, बच, सोंठ, अजवायन और हरड़—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमें घी मिलाकर मुखमें रखनेसे दाँतोंका दर्द और बदबू नाश हो जाती है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दन्तरोग नाशक मञ्जन।

तमाखू, चिकनी सुपारी, पपरिया कत्था, तूतियाकी भस्म, काली-मिर्च और बड़ी हरड़—इनको समान-समान लेकर खूब महीन पीसकर कपड़ेमें छान लो। इस मञ्जनके नित्य लगानेसे दाँतोंके सब रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अपूर्व अनुभूत दन्त मञ्जन।

शुद्ध भिलावे आध पाव और साँभर नोन १ तोला लेकर दोनोंको एक मिट्टीके सरावेमें रखकर, ऊपरसे दूसरा सरावा ढक दो। फिर उन दोनों सरावोंके जोड़ोंको रूई मिली मुलतानी मिट्टीसे बन्द कर दो और चार-पाँच कपरौटी करके सुखा लो। इसके बाद पाँच सेर जंगली कण्डोंकी आगमें सरावोंको रखकर आग लगा दो। जब आग स्वयं बुझकर शीतल हो जाय, सरावोंको तोड़ डालो और भीतरसे भिलावोंको निकाल लो। भिलावोंमें जो नोन लग जावे, उसे छुड़ाकर फैंक दो। उन भिलावोंको महीन पीसकर नित्य दाँतोंको मला करो। अगर दाँत बहुत हिलते हों, तो मञ्जनको मलकर "बेरीकी जड़की छालके काढ़े"के कुल्ले करो अथवा गोंदनीकी छालके काढ़ेके कुल्ले करो। इस तरह दाँतोंका हिलना, खून आना और दाँतोंके समस्त रोग नाश हो जाते हैं। पराया परीक्षित है। हमने भी परीक्षा की है। वास्तवमें क़ाबिल तारीफ मञ्जन है।

दशनकान्ति चूर्ण।

सोंठ, हरड़, नागरमोथा, कत्था, कपूर, सुपारीकी राख, काली-मिर्च, लौंग और दालचीनी एक-एक तोले लो और सबके बराबर नौ तोले "सफेद खड़िया मिट्टी" लो। सबको पीस-छानकर रख लो। इस मञ्जनसे दाँत मलनेसे दाँतोंके और मुँहके अनेक रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पथ्यापथ्य।

दाँतके रोगीको खट्टे फल, शीतल जल, रूखा अन्न, दाँतुन करना और सख्त चीज़ खाना मना है।

अपूर्व दन्त मञ्जन।

वज्रदन्ती ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, जटामासी ४ तोले, मौलसरीके फल ४ तोले, सोना गेरू ४ तोले, अनारकी छाल ४ तोले, अकरकरा २ तोले, माजूफल ४ तोले, लोहचूर्ण २ तोले, सैंधानोन २ तोले, भुनी हुई फिटकरी १ तोले, रूमी मस्तगी १ तोले, छोटी हरड़ १ तोले, खैरीका गोंद १ तोले, कसीस ६ माशे, टाटरी ६ माशे और भुना तूतिया ६ माशे,—इन सबको पीस-छानकर रख लो। इस मञ्जनके लगानेसे दाँत हिलना, मैल जमना, मुँहकी बदबू, दाँतोंका दर्द और लार गिरना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

दन्त वज्र मञ्जन।

सुपारी १ तोला, हरे माजू १ तोला, भुनी फिटकरी १ तोला, सफेद कत्था १ तोला, नासपाल १ तोला, सेंजखड़ी ५ तोला, बड़ी इलायचीके बीज १ तोला, शीतलचीनी १ तोला, अकरकरा १ तोला, कपूर १ तोला और कालीमिर्च १ तोला,—लाकर रखो।

पहले कालीमिर्च पीसकर, उसमें कपूर पीसकर मिला दो। फिर इस चूर्णमें अकरकरा, शीतल मिर्च और इलायचीके बीज पीसकर मिला दो। इसके बाद बाकीकी दवाएँ पीसकर मिला दो और कपड़ेमें छानकर रख लो। जिनके दाँत हिलते हों, वे इसे रातमें मलकर ऊपरसे सरसोंका तेल मल लिया करें। दाँत पत्थरके समान हो जायँगे। यह मञ्जन दाँतोंके सभी रोगोंका शत्रु है। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जीभके रोगोंकी चिकित्सा।

(१) जीभके रोगोंमें पहले खून निकलवाना चाहिये; फिर गिलोय, पीपर और नीम—इनका कवल तीखे पदार्थोंके साथ मुँहमें रखना चाहिये।

नोट—गिलोय, पीपर और नीमका काढ़ा मुँहमें भरकर गरगरे करनेसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) शहदमें तेल मिलाकर मुँहमें कवल धारण करनेसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) परवलके पत्ते, कुटकी, त्रिकुटा, पाढ़, भारंगी और सैंधानोन—इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो और शहदमें मिलाकर जीभपर लेप करो। इस लेपसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) बायबिड़ङ्ग, पीपर और रसौतका काढ़ा पकाकर, उसीसे जीभको धोनेसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। इन्हीं तीनोंका चूर्ण बनाकर जीभपर लगाने और लार टपकानेसे लाभ होता है। परीक्षित है।

(५) वातज जिह्वा-रोगमें वातज ओष्ठ-रोगके समान चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) पित्तज जिह्वा-रोग हो, तो कर्कश पत्तेसे जीभ घिसकर खून निकालो। फिर शतावर, गिलोय, विदारीकन्द, सरिवन, पिठवन, असगन्ध, काकड़ासिंगी, बंसलोचन, पद्मकाष्ठ, पुण्डरिया, बरियारा,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पीला बरियारा, दाख, जीवन्ती और मुलेठी—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णसे जीभ घिसनेसे पित्तज जिह्वारोग आराम हो जाता है। इन्हीं दवाओंका काढ़ा बनाकर मुँहमें रखनेसे और चूर्ण जीभपर घिसनेसे खूब जल्दी लाभ होता हैं।

(७) कफज जिह्वारोग हो, तो कर्कश पत्तेसे जीभको घिसकर खून निकालो; फिर पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीतेकी जड़, सोंठ, गोलमिर्च, गजपीपर, सँभालूके बीज, बड़ी इलायची, अजवायन, इन्द्रजौ, आककी जड़, सफेद ज़ीरा, सरसों, घोड़नीमका फल, हींग, भारङ्गी, मूर्व्वामूल, अतीस, बच, बायबिड़ङ्ग और सैंधानोन—इनके काढ़ेके कुल्ले करो। अवश्य आराम होगा।

(८) बड़े नीबूकी केसरमें ज़रा-सा सेंहुड़का दूध मिलाकर चवानेसे जीभकी जड़ता नाश हो जाती है।

(९) उपजिह्वा रोग हो, तो कठोर पत्तेसे जीभको घिसकर खून निकालो। फिर उसपर जवाखार पीसकर घिसो। अथवा त्रिकुटा, जवाखार, बड़ी हरड़ और चीतेकी जड़—इन सबका चूर्ण बनाकर जीभपर घिसो। इनसे "उपजिह्वा रोग" अवश्य आराम हो जाता है।

नोट—त्रिकुटा, जवाखार, बड़ी हरड़ और चीतेकी छाल—इनको एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर पाव भर तेल, सेर भर पानी और इस लुगदीको मिलाकर तेल पका लो। जब तेल-मात्र रह जाय, छान लो। इस तैलके मुँहमें भरकर गरगरे या कुल्ले करनेसे "उपजिह्वा रोग" नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) अड़ूसेके काढ़ेमें—शहद, सैंधानोन, घरका घूआँसा, मालतीके पत्ते और कुल्थीका चूर्ण मिलाकर उससे जीभके काँटे घिसनेसे उपजिह्वा रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अड़ूसेके काढ़ेमें—शहद, घरका घूआँसा और मालतीके पत्तोंका चूर्ण मिलाकर जीभपर मलनेसे भी वही लाभ होता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) पीपरोंको महीन पीसकर, शहदमें मिलाकर, जीभपर मलने और लार गिरानेसे जीभके छाले वग़ैरः आराम हो जाते हैं।

(१२) हरा धनियाँ चबाने और थूकनेसे जीभके छाले वग़ैरः मिट जाते हैं।

(१३) पोदीनेकी पत्ती और मिश्री मिलाकर चबाने और थूकनेसे जीभके छाले मिट जाते हैं।

(१४) जीभके रोगोंमें खून निकालना सबसे अच्छा उपाय है।

(१५) सफेद सरसों और सैंधानोन—इनको पीसकर मुँहमें रखनेसे जीभके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६) गायके दहीके साथ, सूर्य्योदयसे पहले, पका हुआ केला खानेसे जीभकी फुन्सी मिट जाती हैं। परीक्षित है।

जीभके रोगोंपर हकीमी नुसख़े।

(१) राई, पीपर, सोंठ, नौसादर और अकरकरा—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको सिरकेमें मिलाकर या बिना सिरकेमें मिलाये जीभपर मलो। इससे जीभका भारीपन आराम हो जाता है।

नोट—इनमेंसे किसी एक चीज़को पीसकर मलनेसे भी लाभ होता है। जहाँ तक मिलें सभी दवाएँ लेनी चाहिए।

(२) अगर जीभ भारी हो गई हो और पित्तसे सूज गई हो, तो गुलाबके फूल और छिली हुई मसूर बराबर-बराबर लेकर पीस लो और मकोयकी पत्तियोंके रसमें मिलाकर जीभकी जड़पर मलो। अवश्य लाभ होगा।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(३) अगर जीभमें जलन होती हो, तो दहीको पानीमें घोलकर कुल्ले करो और सफेद कत्था पीस-छानकर जीभपर बारम्बार लगाओ। इन दोनों उपायोंसे जीभका जलना बन्द हो जायगा।

(४) बकायनकी छाल पीसकर उसके बराबर सफेद कत्था पीसकर मिला दो। इस चूर्णको जीभपर बारम्बार छिड़कनेसे जीभके दाने आराम हो जाते हैं। यह दवा जवान और बच्चोंके मुँह आनेपर उत्तम है।

नोट—जीभके दानोंको मुँह आना भी कहते हैं। अगर खूनके दोषसे दाने होते हैं, तो उनका रंग लाल होता है; पित्तकी अधिकतासे पीला; कफकी अधिकतासे सफेद और सौदावी या वायुकी अधिकतासे काला रंग होता है। सौदावी या जले हुए दोषसे रोग हो तो बहुत बुरा है। अगर बालकोंको सौदासे यह रोग हो तो मृत्युका चिह्न है।

(५) जला हुआ काग़ज़, बड़ी इलायचीके बीज, सफेद कत्था और भुनी फिटकरी—बराबर-बराबर लेकर पीस लो और थोड़ा-थोड़ा जीभपर छिड़को। इससे मुँह आने या जीभपर दाने होनेमें अवश्य लाभ होगा।

(६) मसूर जलाकर और उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर पीस लो। इसको जीभपर छिड़कनेसे मुँह आने या जीभके दानोंका रोग आराम हो जाता है।

(७) जला हुआ गावजुबाँ और उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर मुँहमें छिड़कनेसे मुँह आनेका रोग आराम हो जाता है।

(८) सफेद कत्था और कलमी शोरा दोनों बराबर-बराबर लेकर और पीसकर मुँह या जीभपर छिड़कनेसे जीभके दाने मिट जाते हैं।

(९) मिश्री पीसकर उसमें ज़रा-सा "कपूर" मिला लो। इसको जीभपर छिड़कनेसे बालकोंकी जीभके दाने आराम हो जाते हैं।

(१०) भुनी हुई फिटकरी और माजूफल बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इसको जीभपर छिड़कनेसे जीभके दाने आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(११) अगर कफसे लड़केका मुँह आया हो, तो बाज़ या जुर्राकी बीट दो रत्ती पीसकर मुँहमें छिड़को। अथवा छिले हुए जौ जलाकर उनकी राखमें बराबरका "सफेद कत्था" पीसकर मिला दो और जीभपर छिड़को।

(१२) अगर गरमीसे मुँह आया हो, तो गुलाबकी पत्ती और खुरफेकी पत्ती चबाओ; अथवा अमलताशकी पत्ती जीभपर मलो; अथवा शहतूतकी पत्ती चबाओ अथवा गोंदीकी छालमें कत्था लगाकर चाबो।

(१३) बबूलकी कोंपल पीसकर जीभपर मलने और बबूलकी कोंपल सिलपर पीसकर और पानीमें छानकर पीनेसे गरमी-सर्दी हर तरहका मुँह आना या जीभपर दाने हो जाना आराम होता है। यह नुसखा बहुत अच्छा है।

(१४) अगर गरमीसे मुँह आया हो, तो त्रिफला और सफेद कत्था पानीमें औटाकर कुल्ले करो। अथवा आँवले पानीमें भिगोकर उस पानीसे कुल्ले करो।

(१५) अगर सौदा या दग्धित दोष यानी वायुसे जीभपर दाने हुए हों—मुँह आया हो, तो महँदीकी पत्तियाँ चबाओ। अथवा अनारकी छाल, गोंदीकी छाल और सफेद कत्था पानीमें औटाकर कुल्ले करो। अथवा बबूलकी छाल और झड़बेरीकी छालको पानीमें औटाकर कुल्ले करो। यह नुसखा सर्वश्रेष्ठ है। इससे पारे, शिंगरफ और रसकपूरसे आया हुआ मुँह भी आराम हो जाता है।

(१६) अगर सौदा या वायुसे मुँह आया हो, तो अरहरकी दाल भिगोकर उस पानीसे कुल्ले करो। अथवा अरहर और मसूरकी दाल औटाओ और छान लो। फिर ज़रा-सा "कपूर" मिलाकर कुल्ले करो। अथवा महँदीकी पत्ती भिगोकर उस पानीसे कुल्ले करो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१७) अगर पारा और रसकपूर खानेसे मुँह आया हो, तो त्रिफला, मोचरस और खशखाशके पोस्ते औटाकर छान लो। फिर उस काढ़ेमें थोड़ा-सा रैंडीका तेल मिलाकर कुल्ले करो।

(१८) अगर जीभ फट गई हो, तो लसौढ़ा मुँहमें रखो। अथवा ईसबगोलके लुआबसे कुल्ले करो और कत्था मुँहमें हरदम रखो।

(१९) अगर खूनके दोषसे जीभ सूज गई हो, तो गीदड़-दाखके पत्तोंके काढ़ेके कुल्ले बारम्बार करो। अगर बलग़मकी वजहसे जीभ-पर सूजन हो, तो अकरकरा और सोंठ कूट-छानकर जीभपर मलो। परीक्षित है।

(२०) अगर गरमीसे जीभ सूजी हो, तो बनफशा और नीलो-फर भिगो दो। फिर उन्हें मल-छानकर और मिश्री मिलाकर पिलाओ। अथवा ईसबगोल भिगोकर उसके लुआबसे कुल्ले कराओ। अथवा बीदानेके लुआबसे कुल्ले कराओ। अथवा शीतलचीनी, कपूर और बंसलोचन एक-एक माशे कूट-पीसकर दिनमें चार-छै बार जीभपर छिड़को। इन उपायोंसे सूजन जाती रहेगी। परीक्षित है।

(२१) अगर खून-विकारसे जीभपर ज़ख्म हों, तो गीदड़-दाखके पानीसे कुल्ले कराओ अथवा गीदड़-दाख और पित्तपापड़ा—इनको पानीमें औटाकर कुल्ले कराओ।

तालुरोग चिकित्सा।

नोट—प्रायः सभी तालुरोग बिना नश्तरके आराम नहीं होते।

(१) कूट, कालीमिर्च, बच, सैंधानोन, पीपर, पाढ़ और केवटी मोथा—इनको पीस-छानकर रख लो। इस चूर्णको "शहद"में मिला-कर घिसनेसे तालुशुण्डी रोग नाश हो जाता है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(२) गलशुण्डी रोगमें हारसिंगारकी जड़ चबानेसे लाभ होता है।

(३) बच, अतीस, पाढ़, रास्ना, कुटकी और नीमकी छाल—इनका काढ़ा बनाकर कुल्ले करनेसे गलशुण्डी नाश हो जाती है।

(४) थूहरके दूधका लेप करनेसे गलशुण्डी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५) तालुपाक रोगमें पित्तनाशक क्रिया करनी चाहिये। तालुशोष रोगमें स्नेहन, स्वेदन तथा अन्यान्य वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

(६) निर्गुण्डीकी जड़ चबानेसे गलशुण्डी नाश हो जाती है।

(७) नीमके काढ़ेके कुल्ले करनेसे गलशुण्डी आराम हो जाती है।

गलरोग-चिकित्सा।

(१) मालकाँगनी, देवदारु, हल्दी, पाठा, रसौत, जवाखार और पीपर—इनको पीसकर "शहद"में मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मुखमें रखनेसे सब तरहके कण्ठ-रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२) हरड़के काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे गलेके रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) कुटकी, अतीस, देवदारु, पाठा, मोथा और इन्द्रजौ—गोमूत्रमें इनका काढ़ा बनाकर पीनेसे कण्ठके समस्त रोग आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

(४) दारुहल्दी, नीमकी छाल, रसौत और इन्द्रजौका काढ़ा पीनेसे गलेके रोग आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(५) दाख, कुटकी, त्रिकुटा, दारुहल्दी, त्रिफला, नागरमोथा, पाढ़, रसौत, मूर्वा और तेजबल इनका चूर्ण बनाकर और "शहद" में मिलाकर सेवन करनेसे गलेके रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—ऊपरके नं० २, ३, ४ और ५ जुसख़े वात, रुधिर दोष और कफको नष्ट करते हैं।

(६) केवड़ेकी बालके भीतरी फूल चिलममें धरकर धूआँ पीनेसे कण्ठके रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) कड़वी तोरई चिलममें तमाखूकी तरह रखकर धूआँ पीनेसे लार टपकती है और गला खुल जाता है तथा गलेकी सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

उत्तमोत्तम योग।

कालक चूर्ण।

घरका धुआँसा, जवाखार, पाढ़, त्रिकुटा, रसौत, तेजबल, त्रिफला, लोध और चीता इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद" में मिलाकर मुँहमें रखनेसे सब तरहके गलरोग, दाँत और मुँहके रोग नष्ट हो जाते हैं।

यवक्षारादि गुटिका।

जवाखार, तेजबल, पाढ़, रसौत, दारुहल्दी, हल्दी और पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर "शहद" में मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मुँहमें रखनेसे सब तरहके गल-रोग नष्ट हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षार गुटिका।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ, तालीशपत्र, इलायची, मिर्च, दालचीनी, ढाकका खार, मोखेका खार और जवाखार—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर सारे चूर्णके वज़नसे दूना पुराना गुड़ लेकर, उसमें चूर्ण मिलाकर खरल करो और बेर समान गोलियाँ बना लो। फिर सात दिन तक इन गोलियोंको मोखेकी भस्ममें रखो; इसके बाद निकाल लो। इन गोलियोंको मुँहमें रखनेसे सब तरहके कण्ठरोग नाश हो जाते हैं।

सितादि घृत।

मिश्री १ भाग, तमालपत्र १ भाग और कालीमिर्च २ भाग—इनको पानीके साथ सिलपर पीस लो। फिर लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना पानी लेकर घी पका लो। इस घीकी नास देनेसे गलग्रह रोग नष्ट होता है।

सर्वसर मुखरोग-चिकित्सा।

(१) चमेलीके पत्ते, गिलोय, दाख, जवासा, दारुहल्दी और त्रिफला—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर गरगरे-कुल्ले करनेसे मुखपाक रोग या मुँहके छाले और घाव आराम हो जाते हैं। सुपरीक्षित है।

(२) कालाज़ीरा, कूट और इन्द्रजौ—इन तीनोंका चूर्ण मुँहमें रखनेसे मुँह पकना, मुँहसे बदबू आना, बड़े-बड़े छाले होना और क़ै आना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) चमेलीके पत्ते सदैव चबाते रहनेसे मुँहके घाव, छाले और बदबू वग़ैरः आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(४) जामुन, आम और चमेलीके पत्ते, हरड़, आँवला, नीम और परवलके पत्ते—इनका काढ़ा मुँहमें धारण करनेसे मुँहके भीतरके सभी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५) जायफल, जावित्री, सफेद मरुआ, वनतुलसी, केसर और गुड़—इनको महीन पीसकर और गोली बनाकर मुँहमें रखनेसे मुँहकी बदबू जाती रहती है।

(६) कूट, एलुआ, मोथा, धनियाँ, इलायची और मुलेठी—इनको पीसकर मुँहमें रखने और फिरानेसे लहसन और शराबकी बदबू नाश हो जाती है।

(७) परवल, नीम, जामुन, आम और चमेलीके पत्ते—इन पाँचों पत्तोंका काढ़ा मुँहमें रखनेसे मुँहके रोग नाश हो जाते हैं।

(८) दारुहल्दीको पानीमें पकाओ। जब यह पकते-पकते अत्यन्त गाढ़ी हो जाय, तब इसमें "शहद" मिलाकर मुँहमें रखनेसे मुख-रोग, खून-विकार और नाड़ी-व्रण—नासूर थै आराम हो जाते हैं।

(९) पटोलपत्र, सोंठ, त्रिफला, इन्द्रायण, त्रायमाण, कुटकी, हल्दी, दारुहल्दी और गिलोय—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे सब तरहके मुखरोग नष्ट हो जाते हैं।

(१०) तिल, नील कमल, घी, मिश्री, दूध और शहद—इन सबको मिलाकर मुँहमें रखनेसे झुलसा हुआ मुँह अच्छा हो जाता है।

(११) बिजौरे नीबूके फलका छिलका एक बार भी खानेसे मुखकी दुर्गन्ध और वातजनित मुखपाक दूर हो जाता है।

(१२) हल्दी, नीमके पत्ते, मुलेठी और नील कमल—इनकी लुगदीके द्वारा तेल पकाकर मुँहमें रखनेसे मुखपाक रोग दूर हो जाता है।

(१३) अरहरके पत्ते और धनियाँ औटाकर कुल्ले करनेसे मुँहके छाले आराम हो जाते हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

(१४) कवाबचीनी और मिश्री दाढ़के नीचे रखकर चूसनेसे मुँहके घाव और छाले आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५) कवाबचीनी और कालीमिर्च—चबाकर दाढ़के नीचे रखने और पीक थूकनेसे मुँहका मीठापन जाता रहता है। परीक्षित है।

(१६) जीभपर थर जमती हो या लार गिरती हो, तो नित्य सोकर उठतें ही कचूरका गीला कन्द चबाकर थूको और फिर मुँह धोओ। इससे लार टपकना वग़ैरः आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) सफेद चिरमिटीके पत्ते, शीतलचीनी और मिश्री मुँहमें रखकर चूसनेसे अथवा सफेद चिरमिटीकी जड़ चबानेसे मुँहके घाव या फोड़े आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) पीली कटसरैयाके पत्ते, जामुनकी छाल और आँवलोंका काढ़ा बनाकर कुल्ले करनेसे मुँहके छाले आराम हो जाते हैं। मुँह आनेपर यह उत्तम नुसखा है।

(१९) एक तोले तूतिया तवेपर जलाकर उसे बहुत-से पानीमें घोल लो और कुल्ले करो। इससे किसी भी तरहसे हुए मुँहके छाले आराम हो जाते हैं। कुल्लोंसे अगर छालोंमें गरमी बहुत हो, तो पहले ईसबगोलके लुआबसे कुल्ले करने चाहिये। उसके बाद तूतियाके पानीसे कुल्ले करने चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूर्च्छा, भ्रम और संन्यास।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

दिनमें पुराने चावलोंका भात, मूँग, मसूर, चने या उड़दकी दाल, गूलर, सफेद पुराना कुम्हड़ा, बैंगन, केलेका फूल, मक्खन, माठा, दही, दाख, अनार, पके आम, पका पपीता, शरीफा—सीताफल, कच्चे नारियलकी गरी, बकरीका मांस, मागुर, शिंगी, खालिशा आदि मछलियोंका मांस देना चाहिये।

रातके समय—पूरी या रोटी, हलवा, दूध, घी, सूजी, मिठाई अथवा घीमें पकाई चीजें दे सकते हो।

सवेरे ही गायका धारोष्ण दूध, थोड़ी मिश्री मिलाकर पीना या कोई शर्बत जैसे शर्बत चन्दनादि। खीलोंका माँड, पुराने जौकी रोटी, लाल चावल, हाँडीका घी, मटरका रस, परवल, कच्ची चीनी, केलेकी फली, हल्का अनाज, चौलाई या पोईका साग, मरुभूमि या रेगिस्तानके पशु-पक्षियोंका मांस-रस या शोरबा, गायका दूध ये सब पथ्य या मुफ़ीद हैं। दूध-भात खाना भी अच्छा है।

शीतल पानीके छींटे मारना, ठण्डे जलमें नहाना, चन्दन, कपूर वग़ैरःका लेप, ताड़ वग़ैरःके पंखेकी हवा, गुलाबजल या अर्क़ केवड़ा मिला पानी पीना, नदी किनारेके मकानमें रहना, चन्द्रमाकी चाँदनीमें घूमना, लेटना, नदीके किनारेके कुएँका जल पीना, नदीकी ठण्डी बालूपर लेटना, ये सब पथ्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

होश करानेके लिए—अंजन लगाना, फ़स्द खोलना, क्षार या आगसे दाग़ना, बाल या रोएँ खींचना, दाँतोंसे काटना, नाक और मुखके छेद रोककर हवाका जाना-आना रोकना, जुलाब देना, वमन या क़ै कराना, लंघन कराना, ऐसी खाटपर सुलाना जिसपर सुखसे नींद न आवे, छायामें रखना, सौ बारका धोया घी मलना, दिल लगानेवाली कहानियाँ कहना—वग़ैरः पथ्य हैं।

अपथ्य या हानिकारक।

खटाई, रूखे पदार्थ, देरमें पचनेवाले पदार्थ, चिन्ता, भय या रंज करना, ग़ुस्सा करना, मिहनत करना, शराब पीना, धूपमें रहना, दिन-रात बैठे रहना, आग तापना, मर्ज़ीके ख़िलाफ़ काम करना, पाख़ाने-पेशाबकी हाजत रोकना, नींदके आनेपर न सोना, भूखके समय न खाना, प्यास लगनेपर पानी न पीना, घोड़े वग़ैरःकी सवारी करना, रातमें जागना, मैथुन करना, दाँतुन करना ये सब हानिकारक हैं। पान चबाना, पालक और मेथी खाना, विरुद्ध भोजन करना, पसीना लेना, कड़वा रस खाना तथा माठा पीना ये भी नुक़सानमन्द हैं।

मूर्च्छित या बेहोशीवालेको ऐसे बाग़ या मकानमें रखना चाहिये जहाँ ठण्डी-ठण्डी हवा आती हो, ख़ुशबू आती हो, फव्वारे चल रहे हों, ख़सकी टट्टी लगी हों; ख़ुशबूदार फूल सुँघाने चाहिए, कपड़े या ताड़के पंखोंसे हवा करनी चाहिये। गरमीसे बेहोशी हुई हो, तो सिरपर ठण्डा जल डालना चाहिये।

मदात्यय-रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

सोना, लंघन, मिहनत, एक सालके पुराने शाली या साँठी चावल, जौ, मूँग, उड़द, गेहूँ, मटर, हृदयको हितकारी शराब,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

दूध, मिश्री, चौलाई, परवल, बिजौरा नीबू, फालसे, खजूर, अनार, आँवले, मुनक्के, नारियलकी गरी, पुराना घी, शीतल हवा, जलका किनारा, कपूर, नदी किनारेका घर, चाँदकी चाँदनी, हीरा, मोती वग़ैरः पहनना, मित्रोंसे गपशप करना, प्यारी स्त्रीका आलिङ्गन, गाना-बजाना, ठंडे पानीसे नहाना, शीतल जल पीना, कपूर और चन्दनका लेप करना, हिरन, तीतर, लवा, मुर्ग़ा, मोर और ख़रगोशका मांस खाना—पथ्य हैं

वातज मदात्ययमें—गरम घी मिला भात, तीतर, बटेर, मोर, मुर्ग़ाका मांसरस—शोरबा, मछलीका रस, पूरी, खटाई और नमकसे बने पदार्थ, शीतल जल पीना, स्नान करना, ये सब पथ्य हैं।

पित्तज मदात्ययमें—शीतल भात, मिश्री मिला मूँगका रस, मांस-रस, ठंडी हवा खाना, शीतल जगहमें सोना, ठंडे जलसे नहाना, कपूर और चन्दनका लेप करना, तथा स्त्रीको आलिङ्गन करना, ये सब पथ्य हैं।

कफज मदात्ययमें—पहले लंघन कराना चाहिये, बिना घीका बकरेका मांस, खट्टे अनारका रस मिला जंगली जानवरोंका मांस-रस या शोरबा, अथवा ऐसे शोरबेके साथ रोटी या भात आदि खाना अच्छा है। पीनेको गरम जल देना उचित है, स्नान न कराना चाहिये, अथवा तीसरे-चौथे दिन गरम जलसे स्नान करा देना चाहिये। वही सब काम करने चाहिए जिनसे कफ शान्त हो। इस रोगमें जल्दी पचनेवाले पुष्टिकारक पदार्थ दें, अरारुट और शीतल पानी देना ठीक है।

अपथ्य।

मदात्ययमें—नशा लानेवाले पदार्थ न देने चाहिए, पसीने न देने चाहिए, काजल लगाना, नस्य सूँघना, दाँतुन करना और पान चबाना अपथ्य या हानिकर हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

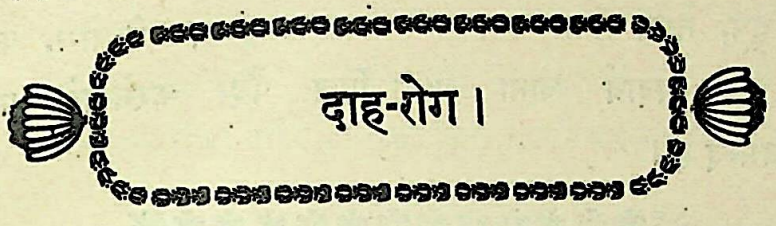

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

शाली चावल, साँठी चावल, चना, मूँग, मसूर, जौ, खीलोंका माँड, मिश्री, सौ बारका धुला घी, दूध, दूधसे निकला लोनी घी या मक्खन, मरुभूमि या रेगिस्तानके पशु-पक्षियोंका मांसरस, पुराना कुम्हड़ा—पेठा, केलेकी गहर, कटहल, परवल, दाख, आँवले, फालसे, मीठा अनार, खिजूर, धनियाँ, सौंफ, ताड़के कच्चे फल, सिंघाड़े, कसेरू, दूधकी खुर्चन, नारियलका दूध, नेत्रवाला, हरड़, चीनी या मिश्रीका शर्बत, ऊखका रस, मक्खन-मिश्री और दूध पथ्य हैं।

अनेक तरहके क़िस्से-कहानी सुनना, गाना-बजाना, फ़ोनोग्राफ बजाना, दिलको तस्कीन देनेवाली मीठी-मीठी बातें सुनना, खस और चन्दनका लेप करना, ठंडा जल, ठंडी हवा, नदी किनारेका घर, सुन्दरी मनमोहिनी स्त्रियोंपर हाथ फेरना, नदीकी ठंडी बालूपर घूमना—लेटना, चाँदकी चाँदनी में घूमना या लेटना, मीठे रस खाना-पीना, फव्वारेवाले मकानमें रहना, कमलके फूल, सफेद गीले कपड़े पहनना, शंखभस्म, लोहभस्म और चाँदीकी भस्म खिलाना इस दाह-रोगमें मुफ़ीद हैं। मतलब यह कि पित्तनाशक पदार्थ इस रोगमें पथ्य हैं। मूर्च्छारोगमें जो आहार-विहार पथ्य लिखे हैं वे सभी दाहमें भी पथ्य हैं।

अपथ्य।

विरुद्ध भोजन-पान, गुस्सा करना, पाखाना-पेशाब रोकना, घोड़े-हाथीकी सवारी करना, राह चलना, क्षार पदार्थ खाना, कसरत,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कुश्ती, धूप, माठा पीना, पान खाना, शहद, हींग, स्त्री-भोग, कड़वे, चरपरे, गरम पदार्थ खाना यानी पित्त पैदा करनेवाले पदार्थ नुक़सानमन्द हैं।

उन्माद-रोग।

पथ्य-हितकारी आहार-विहार।

त्रिदोषसे पैदा हुए उन्माद या पागलपनके रोगमें, स्नेहन, वमन, विरेचन कराना चाहिये, इसके बाद वस्तिकर्म कराना चाहिये। डराना, धमकाना, आँखोंमें अंजन आँजना, समझाना, तसल्ली देना, बाँध देना, खुश करना, धूप या धूनी देना, मारना, शरीरपर दवाओंका लेप करना, फ़स्द खोलकर खून निकालना, ठंडे पानीके तरड़े देना, धुआँ पिलाना, स्नान करना, नींद लेना, आरामसे बैठना, शरीरपर ठंडे लेप करना, ये सब पथ्य हैं। हमने उन्माद-चिकित्सामें जो धूनी, लेप, नस्य आदिके नुसख़े लिखे हैं वे सब परीक्षामें उपकारी साबित हुए हैं।

गेहूँ, लाल चावल, धारोष्ण दूध, ताज़ा घी, पुराना घी, मरुभूमि या रेगिस्तानके पशु-पक्षियोंका मांस-रस या शोरबा, पुराना पेठा, परवल, आम, बथुआ, चौलाई, नारियलकी गरी, दाख, हरड़, कट-हल, सुवर्ण-भस्म—ये सब त्रिदोषज उन्मादमें हितकारी हैं।

काम, शोक, भय, ग़ुस्से, लोभ और खुशीसे पैदा हुए उन्मादमें इन सबके विपरीत काम करने चाहिए। जैसे; कामसे हुए उन्मादमें अनिच्छासे काम ले, भयसे पैदा हुएमें निर्भयतासे काम ले, क्रोधसे पैदा हुएमें शान्तिसे, खुशीसे पैदा हुएमें शोकसे काम ले और लोभसे

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

हुएमें दानसे काम ले। अगर धन, पुत्र, स्त्री प्रभृतिके नाशसे उन्माद पैदा हुआ हो, तो उस उन्मादमें वैसी ही कोई दूसरी चीज़ देकर या समझा-बुझाकर अथवा तसल्ली देकर रोगीका चित्त शान्त करना चाहिये।

जिस आहार-विहारसे वायुकी शान्ति हो, शरीरमें रूखापन न रहे; चिकनाई आवे, पेट साफ रहे, वही सब उपाय करने चाहिए। ऐसे रोगीको पानीसे दूर रखना चाहिये। आगके पास न जाने देना चाहिये। ऊँचे स्थानपर न रखना चाहिये। इनसे उन्माद रोगीके जीवनको ख़तरा है। मूर्च्छा-रोगमें जो पथ्य और अपथ्य हैं वही सब इस रोगमें भी समझें।

अपथ्य।

शराव पीना, विरुद्ध भोजन, गरम भोजन, नींद, भूख, प्यास वग़ैरः वेगोंको रोकना, स्त्री-सम्भोग करना, खीरे, ककड़ी, तरबूज़, करेले और पत्तोंके साग अपथ्य हैं।

और सलाह।

जब रोग ज़ोरसे हो, तब उसे भीतरी मकानमें रखो। जिस समय रोगी आपको या दूसरोंको नुक़सान पहुँचावे तब उसके ऊपर एक ऐसा आदमी रख दो जो रोगीकी गाली-गलोज, मार-पीट तक सह ले, जिसके दिलमें दया हो, जो विचारवान हो। जिस घरमें रोगी रहे, उसमें खुशबूदार फूलोंके गमले रखो, अच्छी-अच्छी दिल खुश करनेवाली तस्वीरें लगा दो। रोगीसे वाद-विवाद या बहस मत करो। उसे जल्दी हज़म होनेवाले भोजन, पुष्टिकारक भोजन दो। अगर रोग नया हो, तो निवाये गरम जलसे स्नान कराओ। अगर रोग पुराना हो, तो शीतल जलसे स्नान कराओ। उसे गरम ऊनी कपड़े पहना दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपस्मार या मृगी-रोग।

पथ्य–हितकारी आहार-विहार।

वातज अपस्मारमें वस्तिकर्म करना चाहिये, पित्तजमें जुलाब देना चाहिये, कफजमें वमन करानी चाहिए। धूनी देना, फ़स्द खोलना, मंजन लगाना, नस्यकर्म, धमकाना, बाँधना, डराना, खुश करना, धूआँ पीना, कछुएका मांस, रेगिस्तान या मरुभूमिके पशु-पक्षियोंका मांस-रस या शोरबा, बच, परवल, पुराना पेठा, बथुआ; बेदाना अनार, ब्राह्मीकी पत्तियाँ, सहँजना, नारियलका दूध, दाख, आँवले, फालसे, तेलकी मालिश, गधे या घोड़ेका पेशाब और हरड़ ये सब पथ्य हैं। लाल चावलोंका भात, गेहूँ, मूँग और पुराना घी ये भी पथ्य हैं।

जब मिरगीका दौरा हो, तब रोगीको चित्त या सीधा सुला देना चाहिए। तकिया लगाकर सिरको ज़रा ऊँचा कर दो। कपड़ेके पंखेसे मुँहपर हवा करो। मिरगी-रोगी अपने ही दाँतोंसे जीभको काट खाते हैं, इसलिए उसके मुँहमें नरम लकड़ी या कपड़ेकी गद्दी रख दो। रोगीका दिल खुश रखो, सिरको ठण्डा और पाँवोंको गरम रखो, पेट साफ रखो, ढीले कपड़े पहनाओ, फँसनेवाले कपड़े मत पहनाओ। देरमें पचनेवाला और ज़ियादा खाना मत दो। उन्माद-रोगीकी तरह मिरगीवालेको भी नदी, तालाब या आगके पास मत जाने दो। शीतल जलसे स्नान कराओ।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपथ्य।

चिन्ता, शोक, डर, गुस्सा, स्त्री-प्रसङ्ग, रातमें जागना, बहुत मिहनत, शराब पीना, मांस खाना, गरम, चरपरे पदार्थ और भारी या देरमें हज़म होनेवाले पदार्थ, पत्तोंके साग, ककड़ी, खीरे, प्यास, नींद, भूखके वेग रोकना, आषाढ़में पैदा होनेवाले फल, ये सब अपथ्य—नुक़सानमन्द हैं।

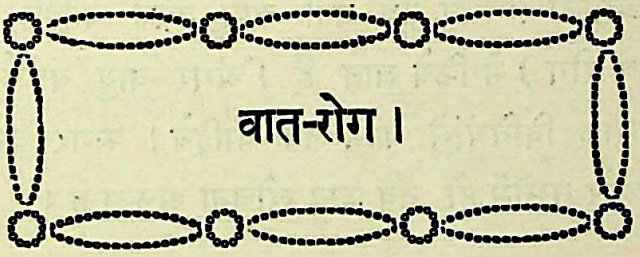

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

तेलकी मालिश, वस्तिकर्म, चिकनाई, पसीने, जलमें खेल-कूद करना या डुबकी लगाना, शरीर दबवाना, वायुनाशक दवाओंका सेवन, पूरवकी हवा न खाना, दागना, ज़मीनपर सोना, नहाना, सोना, नस्य लेना (नाकमें चढ़ाना), धूप खाना, घी, तेल, चर्बी, मीठा, खट्टा, नमकीन रस, नवीन तिल, गेहूँ, उड़द, एक सालके शाली चावल, साँठी चावल, कुल्थीका रस, शराब, परवल, सहँजना, बैंगन, लहसन, खट्टे-मीठे अनार, पके हुए ताड़के फल, आम, खसका जल, फालसे, जंभीरी नीबू, बेर, दाख, नारङ्गी, महुआ, प्रसारिणी, गोखरू, क्षीरकाकोली, नीम, गाय, भैंस, बकरीका दूध, नारियलका दूध, कड़वा तेल, गोमूत्र, मिश्री, पान, इमलीका फल तथा जलके जानवर हंस, सारस, चकवा, बगुला, मैंडक, गोह, नौला, सेह आदि जांगल देशके जीव; चिरौंटा, मुर्ग़ा, मोर, तीतर एवं कछुआ, रोहू मछली, घड़ियाल, मगर आदिका मांस पथ्य है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर वायु आमाशयमें कुपित हो जाय, तब चिकना और गरम भोजन, गरम लेपन, तथा वमन (क़ै) कराना अच्छा है।

अगर वायु पक्वाशयमें कुपित हो तब चिकनी चीज़का जुलाब देना चाहिये, अगर अफ़ारा आ जावे—पेट फूल जावे, तब गुदामें बत्ती लगाकर पाखाना कराना, लंघन कराना और अग्निदीपक औषधि देनी चाहिये।

अगर अष्ठीला रोग हो तब वही काम करने चाहिए जो गुल्म रोग (गोलेके रोग) में किये जाते हैं। अगर वायु वीर्य्यमें हो, तो क्षयरोग नाशक विधियोंसे काम लेना चाहिये। अगर वायु चमड़ा, मांस, खून और नसोंमें हो तब फ़स्द खोलना अच्छा है।

अपथ्य।

चिन्ता, फिक्र, रातमें जागना, मल-मूत्र आदि वेग रोकना, मिहनत, खाना, चना, मटर, काँगनी, कोदों और सोंखिया, मूँग, जौ, टैंटी, जामुन, कसेरू, सुपारी, कमलकी डंडी, रमासकी फली, ताड़फलकी गुठलीका गूदा, करेला, ताड़का कच्चा फल, सेम, पत्तोंके साग, गूलर, ठंडा पानी, गायका दूध, स्वभावके विपरीत अन्न, सूखा मांस, शहद, कसैले-कड़वे-चरपरे रस, स्त्री-संगम, हाथी-घोड़ेकी सवारी, घूमना, खाटपर सोना, अफारा और अर्दित (लकवा) रोगीको स्नान कराना, खराब जल पीना, दाँतुन करना अपथ्य हैं।

और हिदायतें।

वातरोगमें चिकने और पुष्टिकर पदार्थ हितकारी हैं। रोहू मछलीका सिर, मांस-रस—शोरबा आदि मुफ़ीद हैं। लकवा-रोगमें अथवा और वातरोगमें कफका कोप होनेसे या ज्वर भी होनेसे कदाचित गरम जलसे स्नान कराना चाहिये। सारी शीतल क्रियाएँ रोक देनी चाहिए।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वातरक्त-रोग ।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार ।

सीधा सोना, तेल वगैरःकी मालिश, लेप, स्थापन वस्ति, जुलाब, सूईसे छेदकर जौंक या सींगी लगाकर खून निकालना, सौ बारका धोया घी मलना, भेड़का दूध चुपड़ना, जौ, साँठी चावल, लाल चावल, गेहूँ, चना, मूँग, अरहर, मोंठ, मकोय, बेंतकी कोंपल, चौपतिया, वथुआ, करेला, चौलाई, पुराना पेठा, घी, अमलताशके पत्तोंका साग, परवल, दाख, सफेद चीनी, अरण्डी (रैंडी) का तेल, मक्खन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, अगर, देवदारु, शीशम, तिक्तरस—ये सब वातरक्तमें पथ्य हैं ।

दिनके समय पुराने चावलोंका भात, मूँग या चनेकी दाल, परवल, करेला, सफेद कुम्हड़ा, गूलर, परवलके पत्तोंका साग, ये अच्छे हैं ।

रातको पूरी या रोटी, करेला, परवल, गूलर, सफेद पेठेकी तरकारी, कम चीनी डाला पदार्थ, थोड़ा दूध, ये सब अच्छे हैं । सब तरहके साग-तरकारी घीमें छोंकने चाहिए । जलपानके लिये भिगोये चने पथ्य हैं ।

अपथ्य ।

भारी या देरमें पचनेवाले पदार्थ, नये चावलोंका भात, जिसका खट्टा पाक हो वह भोजन, मछली, मांस, शराब, सेम, मटर, गुड़, दही, अधिक दूध, तिल, उड़द, लाल कुम्हड़ा (काशीफल—कौला), लहसन, प्याज, आलू, ज़ियादा मीठा खाना, खटाई, लालमिर्च, मल-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्रका वेग रोकना, धूपमें या आगके पास बैठना, दिनमें सोना, कसरत, स्त्री-सम्भोग, गुस्सा, कुल्थी, चौला, स्वभाव-विरुद्ध भोजन (जैसे दूध और दही, दूध और मछली वग़ैरः), गन्ना, गज़क—रेवड़ी, काँजी, कड़वे, गरम, भारी, नमकीन पदार्थ एवं सत्तू आदि वातरक्तमें अपथ्य हैं।

उरुस्तम्भ-रोग।

पथ्य-हितकारी आहार-विहार।

दिनमें पुराने बासमती चावलका भात, मसूर, मूँग, चनेकी दाल, कुल्थी, परवल, गूलर, करेला, बैंगन, अदरख, लहसन वग़ैरःकी तरकारी, बकरी, कबूतर और मुर्ग़ेका मांस-रस—शोरबा, बर्दाश्त हो तो थोड़ा घी और माठा।

रातको रोटी या पूरी तथा ऊपर लिखी सब तरकारियाँ, सूजी-घी-चीनीका हलवा, मिठाई, जलपानके लिये खजूर, किशमिश, छुहारा आदि कफ नाशक और वात-विरोधी पदार्थ दो। गरम पानी औटाकर और हाँडीमें शीतल करके दो। स्नान न करना ही अच्छा, बहुत ही ज़रूरत हो, तो गरम जलसे नहाओ। अगर वायु-कोप ज़ियादा हो, तो नदीमें तैरना और सोतेकी ओर तैरकर चढ़ना तथा ऐसे आहार-विहार जो कफनाशक हों, परन्तु वातको कुपित करनेवाले न हों, उरुस्तम्भमें हितकारी हैं। सब तरहके बफ़ारे, कोदों, लाल चावल, जौ, कुल्थी, सहँजना, करेला, परवल, लहसन, चौपतिया, मकोय, बेंतकी कोंपल, नीमके पत्ते, बथुआ, बैंगन, अमलताशके पत्तोंका साग, गरम जल, तिलके पदार्थ, अरिष्ट, शहद, कड़वे, चरपरे, कषैले रस,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षार, गोमूत्र, ताक़त भर कसरत-कुश्ती-बैठक, साफ जलके तालाबमें तैरना—ये सब मुफीद या पथ्य हैं।

अपथ्य।

अहितकारी या हानिकारक आहार-विहार।

भारी, शीतल, पतले, चिकने, स्वभाव-विरुद्ध, अपनेको माफ़िक़ न आनेवाले पदार्थ नुक़सानमन्द होते हैं। जुलाब, स्नेहन, वमन, फ़स्द, वस्तिकर्म ये सब हितकारी नहीं हैं। ज़ियादा देरमें पचनेवाले, कफ बढ़ानेवाले, मछली, उड़द, गुड़, दही, पिट्ठीके पदार्थ, बहुत खाना और मल-मूत्रके वेग रोकना, दिनमें सोना, रातको जागना और ओसमें सोना या फिरना उरुस्तम्भमें अपथ्य हैं।

आमवात-रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

लंघन, स्नेह पीना, वस्तिकर्म (पिचकारी गुदामें लगाकर मल निकालना), गुदामें बत्ती लगाकर मल निकालना, लेप करना, जुलाब लेना, एक वर्षके पुराने चावल, पुरानी शराब, कुल्थी, जांगल देशके पशु-पक्षियोंके मांसका रस या शोरबा, वात और कफ नाशक आहार-विहार, रेंडीका तेल, माठा, लहसन, परवल, करेला, बैंगन, सहँजना, गरम जल (स्नान तो गरम जलसे भी नहीं करना), आकके फूल, गोखरू, विधारा, भिलावा, गोमूत्र, अदरख, कड़वे और चरपरे तथा अग्निको दीपन करनेवाले रस, रूई या फलालेनसे दर्दकी जगहको बाँधना; अगर आमवात-रोगमें ज्वर भी हो, तो चावल किसी हालतमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नहीं खाना, साबूदाना, अरारुट या बिना चुपड़ी रोटी खाना—ये सब पथ्य हैं।

अपथ्य।

दही, मछली, गुड़, दूध, पोई, उड़दकी पिट्ठीके बड़े, कचौरी, पूरबकी हवा, मैला पानी, अपनी प्रकृतिके विरुद्ध भोजन, मल-मूत्र, छींक वग़ैरःके वेगको रोकना, जागना, विषम, भारी और अभिष्यन्दी भोजन, ये सब हानिकर हैं।

शूल-रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

वमन कराना, पसीने देना, लंघन कराना, गुदामें दस्त करानेको बत्ती लगाना, जुलाब देना, सोना, पाचन चीज़ देना, एक वर्षके पुराने चावल, बाटी, माँड़, गरम दूध, जंगली पशु-पक्षियोंका मांस-रस, परवल, सहँजना, करेला, बैंगन, पके आम, दाख, कैथ, काला नमक, चिरौंजी, बथुआ तथा क्षार मिले हुए हल्के द्रव्योंके पूर्ण पथ्य हैं।

अगर शूल या दर्दका ज़ोर हो, तो खानेको रोटी-दाल वग़ैरः अन्न क़तई मत दो। दिनको दूध, बार्ली और साबूदाना दो, रातको धानोंकी खीलें दो।

अगर जी मिचलाता हो, ओकी आती हों, बुख़ार हो, जलन हो, गरमीके उपद्रव हों, तो जौकी लापसी बनाओ और उसमें शहद मिलाकर दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब शूल शान्त हो जावे, दर्द न रहे, तब पुराने चावलोंका भात, ज़मीकन्द या सूरण, परवल, बैंगन, गूलर, पुराना सफेद कुम्हड़ा (पेठा), करेले, केलेका फूल, सहँजनेका डंडा, मागुर, शिंगी, कवई वग़ैरः छोटी मछलियोंकी तरकारी, आँवले, कसेरू, दाख, पका पपीता, बेलका फल, नारियलकी गरी वग़ैरः फल, कच्चे नारियलका पानी, गरम दूध, धनियाँ, हल्दी, सैंधानोन, हींग मसाले तरकारीमें डालें।

जहाँ तक हो साग-तरकारी मत दो। केवल पुराने चावलोंका भात ही दो। रातको दूधका साबूदाना, दूध, धानकी खील, दूध-बार्ली, पेठेका मुरब्बा, गरीकी बरफ़ी, आँवलोंका मुरब्बा कलेवेके समय या दोपहर बाद भूख लगनेके समय दो। शूल-रोगमें भोजनके साथ जल मत पिलाओ—खानेके दो घण्टे बाद जल पिलाओ। अगर रोगीको बर्दाश्त हो; तो गरम या ठंडे जलसे स्नान करा दो।

अपथ्य।

स्वभाव-विरुद्ध अन्नपान, रातमें जागना, विषम पदार्थ खाना; रूखे, चटपटे, कसैले, ठंडे और भारी—देरमें हज़म होनेवाले पदार्थ, कसरत, कुश्ती, स्त्री-प्रसङ्ग, शराब, मूँग, उड़द वग़ैरः सब तरहकी दाल, नमक (सैंधानोन दे सकते हो), तिल, पाखाने-पेशाबकी हाजत रोकना, रंज, गुस्सा और पिट्ठीके पदार्थ हानिकर हैं। बहुत खाना, पत्तोंके साग, बड़ी मछली, दही, लालमिर्च, तेज़ धूपमें फिरना, मिहनत, गुस्सा, रंज, चिन्ता प्रभृति शूल-रोगमें मना हैं।

नोट—खाये हुए पदार्थोंके न पचने या पचनेके समय या कच्चे रहनेकी हालतमें जो यकायक दर्द उठ खड़ा होता है उसे "अन्नद्रव शूल" कहते हैं। इस शूलमें वमन या क़ै कराना अच्छा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

उदावर्त्त-रोग।

पथ्य–हितकारी आहार-विहार।

पसीने देना, जुलाब देना, गुदामें पिचकारी देना, गुदामें बत्ती चढ़ाना, पाखाना-पेशाब, अपानवायुका त्याग, अरंडीके तेलका जुलाब, शराब, छोटी मूली, अमलताश, निशोथ, हरड़के पत्ते, अदरख, बिजौरा नीबू, हरड़, लौंग, हींग, दाख, गोमूत्र, सब तरहके नमक—ये सब उदावर्त्त और आनाह रोगमें पथ्य हैं। उदावर्त्त और आनाह रोगमें हल्का जुलाब देकर दस्त कराना अथवा गुदामें बत्ती लगाकर दस्त कराना सदा हितकर है। गुदाकी हवा रोकनेसे पैदा हुए उदावर्त्तमें स्नेहन, पसीने, गुदामें पिचकारी देना, तथा वायु-नाशक उपाय करना अच्छा है।

पाखाना रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें गुदामें पिचकारी लगाना, गुदामें बत्ती लगाना, पसीने देना, तेलकी मालिश, डुबकी लगाकर नहाना तथा मल जिस तरह गुदासे निकले वही उपाय अच्छा है।

भूख रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें चिकना, थोड़ा, हल्का और गरम खाना अच्छा है।

मिहनत और श्वाससे पैदा हुए उदावर्त्तमें आराम करना और वातनाशक उपाय करना अच्छा है।

नींद रोकनेसे हुए उदावर्त्तमें दूध पीना, नींद भर सोना और शरीरको दबवाना मुफीद है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा—उदावर्त्त और आनाह रोगमें वायुको शान्त करनेवाले खान-पान हितकारी हैं। पुराने चावलोंका भात घी मिलाकर गरमागर्म खाना चाहिये। मिश्रीका शर्बत, कच्चे नारियलका पानी, पका पपीता, बेदाना अनार, ऊख-रस, सीताफल—शरीफा अच्छे हैं। मागुर, शिंगी, कवई आदि छोटी मछलियोंके मांसका शोरबा, बकरेके मांसका रस, जमीकन्द, परवल, बैंगन, गूलर, पुराना पेठा, सहँजनेका डण्डा, आँवले, कसेरू, दाख, बेल-फल, नारियलकी गरी, गरम दूध, धनियाँ, हल्दी, हींग, सैंधानोन वग़ैरः पथ्य हैं।

रातको भूख लगे तो वही गरम भात-घी पिला दो। अगर भूख ज़ोरसे न हो, तो दूधका साबूदाना, जौके आटेकी लापसी, दूध और चावलोंकी खीर, अथवा थोड़ा-सा हलुवा पथ्य है। तेलकी मालिश बर्दाश्त हो तो, गरम या शीतल जलसे स्नान, तीसरे पहरकी हवा खाना लाभदायक हैं।

मांस और दूध या दूध-मछली एक साथ कभी भी मत खाना; नये-नये रोग पैदा होंगे।

अपथ्य।

देरमें हज़म होनेवाले पदार्थ, गरम, रूखे भोजन, रातमें जागना, कसरत, पैदल चलना, रंज या गुस्सा आदि इस रोगमें बुरे हैं। वमन कराना, मल-मूत्र, डकार, खाँसी, छींक आदि वेगोंको रोकना, कमल-कन्द, जामुन, ककड़ी, तिलके पदार्थ, आलू, टैंटी, पिट्ठीके पदार्थ (कचौरी), बड़े, बड़ी; पेटमें गुड़गुड़ करनेवाले, स्वभाव विरुद्ध, कसैले और भारी पदार्थ त्याग दो।

डाक्टरोंका मत है कि, इस रोगमें ठण्डा पानी पीना, ठण्डे जलसे नहाना, वमन कराना, दूध-भात आदि हल्के पदार्थ खाना, लंघन, नाभिके पास घीमें पिसी हींगका लेप करना, बोतलमें गरम जल

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भरकर काग लगाकर पेटपर कपड़ा रखकर बोतल फेरना ये सब पथ्य हैं। पेटमें गुड़गुड़ करनेवाले और गरम पदार्थ अपथ्य हैं।

गुल्म-रोग।

पथ्य–हितकारी आहार-विहार।

स्नेह, पसीने देना, जुलाब देना, गुदामें पिचकारी देना, बाँहकी नसमें फ़स्द लगा खून निकालना, लंघन, गुदामें बत्ती लगाना, तेलकी मालिश, चिकनी चीज़ पिलाना—एक सालके पुराने चावल, लाल चावल, कुल्थीका यूष, जाङ्गल देशके पशु-पक्षियोंका मांस-रस, शराब, गायका दूध, बकरीका दूध, दाख, फालसे, खिजूर, अनार, आँवले, नारंगी, अम्लवेत, माठा, अरण्डीका तेल, लहसन, छोटी मूली, बथुआ, सहँजना, जवाखार, हरड़, हींग, बिजौरा नीबू, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, गोका मूत्र, चिकना–गरम–पुष्टिकारक–हलका पचनेवाला, जठराग्नि तेज़ करनेवाला और गुदाकी हवाको नीचेकी तरफ—लेजाकर निकालनेवाला आहार पथ्य है। असलमें जो-जो पदार्थ वायुको नाश करनेवाले हैं गुल्म-रोगमें हितकारी हैं। पित्तज और कफज गुल्ममें जिन पदार्थोंसे कफ और पित्त कुपित नहीं होते तथा वायु शान्त होती है वे हितकारी हैं।

दिनक समय पुराने चावलोंका भात, जमीकन्द, परवल, बैंगन, गूलर, करेला, केलेका फूल, सफेद कुम्हड़ा, सहँजना, मागुर, शिंगी, कवई आदि छोटी मछलियोंकी तरकारी, कसेरू, दाख, पपीता, नारियलकी गरी, सैंधानोन वग़ैरः पथ्य हैं। तीतर, मुर्ग़ा, बतख़ और छोटे पखेरुओंका मांस भी हितकारी है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

रातको पूरी या रोटी, हलवा और दूध दो। कच्चे नारियलका पानी, मिश्रीका शर्बत, पका पपीता, पके आम, शरीफा, पके फल खानेको दें। शीतल या गरम जलसे जैसा मौक़ा हो नहलावें। इस रोगमें पेट साफ रखना सबसे ज़ियादा मुफीद है।

अपथ्य।

राह चलना, बहुत मिहनत, रातमें जागना, धूप खाना, स्त्री-प्रसङ्ग, वात कुपित करनेवाले आहार-विहार—गुल्ममें अपथ्य या हानिकर हैं। कोई भी बादी करनेवाला अन्न खाना, स्वभाव विरुद्ध अन्न (जैसे दूध-मछली), सूखा मांस, मूली, मछली, मीठे फल, सूखा साग, गुड़-गुड़ करनेवाले पदार्थ, पाखाना-पेशाब, मिहनतसे उठा—साँस, आँसू, अधोवायु (गुदाकी हवा), वमन और जल पीना—अपथ्य हैं।

पाश्चात्य चिकित्सकोंका मत है कि, पुष्टिकारक, जल्दी पचनेवाला, हल्का और चिकना भोजन पथ्य है। रातको दस बजेसे पहले सो जाना और सवेरे जल्दी उठ बैठना अच्छा है।

हृद्रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

पसीने देना, दस्त कराना, वमन (क़य), लंघन, गुदामें पिचकारी, पुराने लाल चावल, मूँग और कुल्थीका यूष मिला हुआ, मुरब्बे, परवल, केलेकी फली, पुराना सफेद कुम्हड़ा, आम, अनार, अमलताशके पत्तोंका साग, नई मूली, रैंडीका तेल, सैंधा नमक, दाख, माठा, पुराना गुड़, सोंठ, अजवायन, लहसन, हरड़, कूट, धनियाँ, पीपल, अदरख, सौवीर काँजी, सिरका, शहद, शराब, कस्तूरी, चन्दन, इमलीका पना और पान—ये सब हृद्रोगमें पथ्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खुलासा—चिकने पुष्टिकारक और हल्के भोजन देने चाहिये। अगर साथमें ज्वर वग़ैरः रोग न हों तो वात-रोगकी तरह पथ्यापथ्य पालन करना । छातीमें दर्द हो, तो रक्तपित्त और खाँसीकी तरह पथ्यापथ्य वग़ैरःका प्रबन्ध करो।

अपथ्य ।

रूखा, वातवर्द्धक चीज़ें या भोजन, उपवास, मिहनत, रातमें जागना, आगके सामने या धूपमें बैठना और मैथुन करना नुक़सान-मन्द हैं। प्यास, वमन, मूत्र, अधोवायु (गुदाकी हवा), वीर्य, खाँसी, डकार, मिहनतसे उठा साँस, पाखाना और आँसुओंके वेगको रोकना, सह्याद्रि और विन्ध्याचल पहाड़ोंसे निकली कावेरी, ताप्ती, नर्वदा वग़ैरः नदियोंका जल काममें लाना, भेड़का दूध, दूषित जल, कसैला रस, विरुद्ध अन्न, गरम, भारी, चरपरा, खट्टा भोजन, पत्तोंका पुराना साग, जवाखार वग़ैरः खार, महुआ, दाँतुन, सींगी या नश्तरसे खून निकालना—ये सब हृदय-रोगमें हानिकारक हैं ।

पाश्चात्य चिकित्सक कहते हैं, मानसिक उत्तेजना, उत्तेजक पदार्थ चाय-काफ़ी वग़ैरः पीना हानिकर हैं । जल्दी पचनेवाले पुष्टिकारक भोजन, दिल खुश रखना, चित्तको शान्त रखना, शीतल जल, नियमसे हल्की कसरत हितकारी हैं ।

मूत्रकृच्छ्र ।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार ।

पुराने लाल चावल, गायका माठा, दूध, दही, जाँगल देशके पशु-पक्षियोंका मांस, मूँगका रस, मिश्री, पुराना सफ़ेद पेठा, परवल,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अदरख, गोखरू, ग्वारपाठा, खिजूर, सुपारी, नारियलकी गरी, ताड़के पेड़की कोंपल या ताड़फलकी गुठलीका गूदा, छोटी इलायची, शीतल भोजन, शीतल जल और शर्बत वग़ैरः पीनेके पदार्थ, बहता जल और नदीकी ठंडी रेत, ये सब मुफ़ीद हैं।

खुलासा—चिकना और पुष्टिकारक पदार्थ खावें। दिनमें पुराने चावलोंका भात, छोटी मछलीका शोरबा, बकरीके मांसका रस, बैंगन, परवल, गूलर, केलेका फूल, काग़ज़ी नीबू। रातको पूरी, रोटी, हलवा, दूध और थोड़ा मीठा। मक्खन, मिश्री, तरबूज, पका मीठा फल, बर्दाश्त हो तो दूध-पानीकी लस्सी या मिश्रीका शर्बत पीना और बड़े तालाब या नदीमें नहाना।

वातज मूत्रकृच्छ्रमें—तेलकी मालिश, निरूहणवस्ति (पिचकारी), तेल वग़ैरः पीना, स्नान, परिषेक हित हैं। पित्तजमें जलमें खेल-कूद करना, शीतल लेप, वस्ति (पिचकारी) और जुलाब हितकर हैं। कफजमें पसीने देना, दस्त कराना, वमन कराना, जवाख़ार, जौकी रोटी और चरपरे गरम पदार्थ हित हैं।

अपथ्य।

शराब, मिहनत, मैथुन, हाथी-घोड़ेकी सवारी, विरुद्ध भोजन, विषम भोजन, मछली, नमक, अदरख, तेलमें तले या भूँजे पदार्थ, तिलकी गज़क, रेवड़ी वग़ैरः, हींग, तिल, सरसोंका साग, पाखाना-पेशाबको रोकना, उड़द, टैंटी, करीलकी कोंपल, अत्यन्त चरपरे, जलन करनेवाले, रूखे और खट्टे भोजन—ये सब हानिकारक हैं।

खुलासा—रूखे, भारी, खट्टे पदार्थ, दही, गुड़, लालमिर्च, उड़दकी दाल, बहुत मछली, तेज़ शराब, चिन्ता और रातमें जागना हानिकारक हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

मूत्राघात ।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार ।

तेल मलवाना, स्नेहन कर्म, जुलाब, गुदामें पिचकारी, पसीने कराना, जलमें डुबकी लगाना, पुराने लाल चावल, जांगल देशके पशु-पक्षियोंका मांस-रस, शराब, माठा, दूध, दही, उड़दका यूष, पुराना पेठा, परवल, अदरख, हरड़, कच्चा नारियल, सुपारी और खिजूर—ये दोषानुसार हितकर हैं।

अपथ्य ।

अपने मिज़ाजके ख़िलाफ़ जो भी हो त्याग दो। कसरत, कुश्ती, राह चलना, रूखा, जलन करनेवाला अन्न हानिकारक हैं। स्त्री-प्रसंग, मल-मूत्र आदि वेग रोकना—टैंटी खाना और वमन कराना नुक़सानमन्द हैं।

पथरी-रोग ।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार ।

गुदामें पिचकारी देना, जुलाब, वमन, लंघन, पसीने दिलाना, जलमें खेल-कूद करना, जल पीना, जौ, कुल्थी, पुराने शालि चावल,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

शराब, जाङ्गल देशके पशु-पक्षियोंके अण्डोंका रस, पुराना पेठा, पानीके किनारे पैदा हुए साग, अदरख, पाषाणभेद, रेणुका, पृष्ठपर्णी पथ्य हैं। साफ़ हवामें मिहनत करना, नहाना, ठीक कपड़े पहनना, नीबूका रस और दूध वग़ैरः पथ्य हैं।

डाक्टरोंके मतसे—चीनी, मीठे पदार्थ, मक्खन, घी, चर्बी, ब्राण्डी वग़ैरः शराब, चाय, काफी, सब तरहके उत्तेजक पदार्थ हानिकर हैं। मांस नहीं खाना चाहिये।

प्रमेह-रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

लंघन, वमन, जुलाब, उबटन, प्रमेहकी शान्ति करनेवाले अग्नि-दीपक पदार्थ, काँगनी, जौ, बाँसी चावल, कोदों, सौंखिया, पुराने गेहूँ, शालि चावल, कलमी चावल, कुल्थी, मूँग, अरहर, चना—इनका रस, तिल, खील, पुरानी शराब, शहद, माठा, गधेका पेशाब, भैंसका पेशाब, लोटन कबूतर, ख़रगोश, तीतर, लवा, मोर, हिरन, बतख़, तोता वग़ैरः जंगली जानवरोंका मांस, सहँजना, परवल, करेला, कटेरी, गूलर, लहसन, केलेकी नवीन गहर, गोखरू, पत्तोंके साग, गिलोय, त्रिफला, कैथ, जामुन, कसेरू, कमल, कमलकन्द, कमलगट्टा, खिजूर, त्रिकुटा, खैर, तरबूज़, बहुत घूमना, सूरजकी धूप और कसरत-कुश्ती—ये सब पथ्य हैं।

अपथ्य।

पेशाब रोकना, धूम्रपान—बीड़ी-सिगरेट पीना, पसीने देना, फ़स्द खोलना, बहुत बैठे रहना, दिनमें सोना, नया अन्न, दही, अनूप देश (बंगाल) के पशु-पक्षियोंका मांसरस, चौला, मैथुन, काँजी, शराब,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिरका, तेल, दूध, घी, गुड़, पेठा, ईख, मैला जल, मीठे, खट्टे, नमकीन रस, अभिष्यन्दी पदार्थ—लगातार मांस खाना, ये सब हानिकर हैं।

नोट—थोड़ा मांसरस, थोड़ा दूध, मक्खन, बिना चीनी डाले पदार्थ, जलमें नीबूका रस मिलाकर पीना—ये पथ्य हैं।

सूचना—हमने पाँचवें भागमें प्रमेहके पथ्यापथ्य विस्तारसे लिखे हैं, वहीं देख लें।

बहुमूत्र-मूत्रातिसार-सोमरोग।

नोट—बहुमूत्र-मूत्रातिसार या सोमरोग एक ही रोगके तीन नाम हैं। मीठी चीज़ें, कफकारक पदार्थ, अधिक स्त्री-प्रसंग, रंज, शोक, हदसे ज़ियादा मिहनत, बहुत सोना, दिनमें सोना, बहुत ही चिन्ता, अथवा शरीरमें किसी ज़हरके पहुँचनेसे सारे शरीरका जलीय पदार्थ विकृत या अपने स्थानसे हटकर मूत्रकी थैलीमें जमा होता है। पीछे वही पानी पेशाबकी राहसे निकलता रहता है। उसके निकलनेके समय कोई तकलीफ नहीं होती। वह पानी साफ़, शीतल होता है, उसमें कोई गन्ध नहीं होती। इस रोगके होनेसे कमज़ोरी, मैथुन-शक्तिकी कमी, दिमाग़ी कमज़ोरी होती है। मुँह और नाक सूखते हैं और बहुत प्यास लगती है। अगर रोगी प्रलाप करे—आनतान बके, बेहोश हो जावे, पीठपर फोड़ा—अदीठ या कारबंकिल हो, तो रोगीकी मौत समझो।

पथ्य।

दिनमें पुराने चावलोंका भात, चना, मसूर, मूँगकी दालका रस, गूलर, परवल, सहँजना, कच्चा केला, नेनुआ, मक्खन निकाला दूध, आँवले, जामुन, कसेरू, पका केला, कागज़ी नीबू, पुरानी शराब, घोड़े-हाथीपर घूमना, कसरत करना हित है। अगर रोगका ज़ोर हो तो भात न खावें बल्कि जौके आटेकी रोटी खावें। अथवा मक्खन निकाला दूध पीवें। पानीको औटाकर और ठंडा कर पीवें। नहानेकी सामर्थ हो तो गरम निवाये जलसे नहावें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अपथ्य।

देरमें पचनेवाले भारी पदार्थ, कफ-कारक पदार्थ, दही, ज़ियादा दूध, मीठा, लाल कुम्हड़ा (काशीफल), लौकी, उड़द, लालमिर्च, ज़ियादा पानी पीना, ज़ियादा शराब पीना, दिनमें सोना, रातमें जागना, मैथुन, सुस्ती और बहुत सोना हानिकर है।

याद रखो—अपूर्व योग। जामुनकी गुठलीका सफूफ़ या गूलरके बीजोंका चूर्ण, आँवलोंका रस, गूलरका रस, खिजूरका रस खानेसे बहुमूत्र ज़रूर जाता है। पका केला, शतमूली (शतावर), विदारीकन्द बराबर-बराबर लेकर दूधके साथ खाना भी बहुमूत्रमें उत्तम है।

नोट—बहुमूत्र और मधुमेहका पथ्यापथ्य एक समान है।

शुक्र-तारल्य, ध्वजभंग।

नोट—सोजाक जिसे औपसर्गिक प्रमेह भी कहते हैं, अगर जड़से नहीं जाता तो शुक्रमेह, शुक्र-तारल्य, ध्वजभंग या नामर्दी रोग पैदा कर देता है। इसके सिवा हस्त-मैथुन, अति स्त्री-प्रसंग वग़ैरःसे वीर्य नाश करनेसे शुक्र-तारल्य या नामर्दी रोग होते हैं। शुक्र-तारल्यमें पाखाने-पेशाबके समय या थोड़ी भी कामेच्छा होनेसे, स्त्रीको देखने या याद करने-मात्रसे वीर्य निकल जाता है, स्वप्नदोष होते हैं। स्त्री-प्रसंग आरम्भ करते ही वीर्य गिर जाता है। मन्दाग्नि, कब्ज़, पतले दस्त, बदहज़मी, सिर घूमना, आँखके चारों तरफ काले दाग़ दीखना, एकान्त अच्छा लगना, ये लक्षण होते हैं।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

शुक्र-तारल्य रोगमें शुक्रकी रक्षा करो। तालमूली (सफेद या काली मूसली), सेमलकी मूसलीका रस, आँवलोंका रस, मुलेठीका चूर्ण, विदारी-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कन्दका रस या चूर्ण—ये वीर्यको बढ़ाते और शुक्र-तारल्य नाशक हैं। सब तरहका पुष्टिकर आहार-विहार इस रोगमें पथ्य है। पुराने चावलोंका भात, रोहू मछली, बकरा, मुर्ग़ा, कबूतर, बटेर,तीतर, चिरौंटा आदिका शोरबा, मूँग, मसूर, चनेकी दाल, आलू, परवल, गूलर,बैंगन, गोभी, शलग़म, गाजर, घीमें छौंकी तरकारी, बतख़का अंडा, बकरेके फोते—पथ्य हैं। रातको पूरी या रोटी तथा दूध और मिश्री एवं ऊपरकी तरकारी पथ्य हैं। ये तो सवेरे-शामके खाने हैं। बीचमें और भूख लगे या जलपान करना हो, तो सूजी या बेसनकी चीज़ें घी और चीनीकी बनी—जैसे खुरमा, हलवा वग़ैरः। बादाम, किशमिश, पिस्ता, खिजूर, अंगूर, पके आम, कटहल, पपीता आदि फल दो। सब तरहके पुष्टिकारक पदार्थ इस रोगमें हितकारी हैं, पर अग्निबल देखकर दें, ज़ियादासे अजीर्ण होगा।

अपथ्य।

अधिक नमक, लालमिर्च, खट्टा पदार्थ, धूप या आगका सेवन, रातमें जागना, बहुत शराब पीना, स्त्री-संभोग, अधिक मिहनत ये हानिकर हैं।

नोट—शुक्रमेह और ध्वजभङ्ग रोगका आहार-विहार यकसाँ है।

मेदोरोग—मुटापा।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

चिन्ता, मिहनत, स्त्री-संग, उबटन, लंघन, धूपमें बैठना, हाथी-घोड़ेपर चढ़ना, घूमना-चलना, जुलाब देना, वमन या क़ै कराना;

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पुराने बाँसी चावल, कोदों, सौंखिया, जौ, कुल्थी, चना, मसूर, मूँग, अरहर, शहद, खील, माठा, शराब, बैंगनका भुर्त्ता, त्रिफला, गूगल, लोहभस्म, त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपर), इलायची, सारे रूखे पदार्थ, तिलीका तेल, पत्तोंका साग, चन्दनका लेप, गरम जल, शिलाजीत, खानेसे पहले पानी पीना, दिनमें छोटी मछलीका शोरबा, गूलर, कच्चा केला, बैंगन, परवल, पुराना सफेद कुम्हड़ा, कागजी नीबू, रातको जौके आटेकी रोटी, ऊपर लिखी तरकारी, माठेमें थोड़ी मिश्री मिलाओ, गरम किया जल पीओ, स्नान मत करो। सवेरे उठकर चार-पाँच मील हवा खाने जाओ, कसरत-कुश्ती करो, पेटपर पेटी बाँधे रहो।

अपथ्य।

जितने भी कफ बढ़ानेवाले पदार्थ हैं, चिकने पदार्थ, दूध, दही, मक्खन, मांस, घीमें पके पदार्थ, पका केला, नारियल, मछली, कोई भी पुष्टिकर भोजन, सुखदायी बिछौनेपर सुखसे सोना, हमेशा बैठे रहना, आलस्य, बेफिक्री—मेदरोगमें हानिकर हैं। स्नान करना, रसायन द्रव्य सेवन, शालि चावल, गेहूँ, सुख मानना, दूध, ऊखके पदार्थ, उड़दके पदार्थ, पेट भरकर खाना, स्नेहन कर्म, फूलमाला पहनना, इत्र लगाना, मिठाई खाना, भोजनके पीछे जल पीना—ये सब त्याग दे जो मुटाई पसन्द नहीं करता।

कृश-रोगमें पथ्यापथ्य।

जो दुबला आदमी मोटा होना चाहे उसे चाहिये कि मेदोरोगमें जो पथ्य कहा है, उसे अपथ्य समझे और जो अपथ्य कहा है उसे पथ्य समझे। अश्वगन्धादि घृत, छागलाद्य घृत और अश्वगन्धादि तैल पथ्य हैं। घी, दूध, मांस, मछली, सुखसे सोना-रहना, दिनमें सोना, मिहनत न करना, बेफिक्री, हमेशा खुश दिल रहना और जियादा मांस या मांस-रस खाना अच्छा है।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नोट—असगन्ध एक सेर सिलपर पीसकर पानीके साथ लुगदी बना लो। असगन्धका काढ़ा छै सेर, दूध छै सेर, तिलीका तेल चार सेर—चारोंको कढ़ाहीमें मन्दाग्निसे पका लो; जब तेल-मात्र रहे, छान लो। यही अश्वगन्धादि तैल है। इसकी मालिशसे दुबला आदमी मोटा हो जाता है।

उदर-रोग—पेटके रोग ।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार ।

जुलाब देना, लंघन कराना, एक सालके पुराने लाल चावल, मूँग, कुल्थी, जौ, जांगल देशके पशु-पक्षियोंके मांस-रससे मिली पेया, शहद, महुएकी शराब, माठा, लहसन, अरण्डीका तेल, अदरख, परवल, करेला, सहँजना, हरड़, पान, इलायची, लोह-भस्म, बकरीका दूध, गायका दूध, ऊँटनीका दूध, भैंसका दूध, बकरी-गाय-भैंस-ऊँटनीका मूत्र, अग्नि-दीपक पदार्थ, कपड़ेकी पट्टी पेटपर बाँधना, अग्निकर्म, विष-प्रयोग पथ्य हैं।

खुलासा—उदर-रोगमें जहाँ तक हो हल्के और अग्नि बढ़ानेवाले भोजन दो। अगर रोगका ज़ोर हो तो मानमण्ड दो। अगर मानमण्ड न मिल सके, तो केवल दूध या दूध-साबूदाना पकाकर दो। ऐसा हल्का भोजन तब दो जबकि रोग बहुत ज़ोरमें हो। अगर रोगका ज़ोर कम हो, रोग घट रहा हो, तो दिनमें पुराने चावलोंका भात, परवल, बैंगन, गूलर, जमीकन्द, छोटी मूली, अदरख वग़ैरःकी तरकारी दो। दालोंमें मूँगकी दालका रस दो। रातको अगर भूख ज़ियादा हो तो एक-दो पतली रोटी दो। भूख कम हो तो दूधमें साबूदाना पका दो। पानी गरम करके ठण्डा कर दो और पिलाओ। सीहोदर हो तो बाईं बाँहके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगले भागकी धमनीमें नश्तर लगाकर खून निकाल दो। बद्धोदर, क्षतोदर और जलोदरमें नाभिके नीचे नश्तरसे चीरकर पानी वग़ैरः निकाल दो। वातोदरमें पहले ही घी पिलाओ, अभ्यंजन करो और अनुवासन वस्ति दो। जिस दोषसे उदर-रोग हुआ हो उसीके अनुसार इलाज करो और पथ्य दो। डाक्टरी मतसे दूध, साबूदाना, अरारुट, पतली रोटी दो। पानी बहुत ही थोड़ा-थोड़ा पिलाओ।

उदर-रोगमें अपथ्य।

स्नेहन, धूम्रपान—हुक्का, सिगरेट पीना, पानी पीना, फ़स्द खोलना, वमन या क़ै कराना, घोड़े आदि किसी सवारीपर चलना, दिनमें सोना, मिहनत या कसरत करना, पिट्ठीके पदार्थ—कचौरी, बड़े, मँगौड़ी आदि खाना, पत्तोंके साग, तिल, गरम, दाहकारी और नमकीन भोजन करना, अनूपदेश (जैसे बंगाल) के पशु-पक्षियोंका मांस खाना, मूँग, मोंठ वग़ैरः फलियोंसे पैदा हुआ अन्न खाना, दूषित और भारी जल, महेन्द्राचल पहाड़से निकली नदियोंका पानी ये अपथ्य हैं। बहुत घूमना, धूपमें फिरना, बहुत जल पीना, विष्टम्भी पदार्थोंका सेवन भी हानिकारक है।

शोथ-रोग—सूजन या वरम।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

संशोधन दवाएँ दो यानी जुलाब दो, लंघन, फ़स्द खोलना, पसीने देना, लेप करना, पुराने शालि चावल, पुराने जौ, पुराने गेहूँ, मूँग, अरहर, मसूर-इनका यूष, मूँग, कुल्थी, पुराना घी, माठा, शराब, शहद, आसव, चौलाकी फली, बैंगन, करेला, लाल और सफेद लहसन,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लाल सहँजना, ककड़ी, केलेकी कच्ची गहर, छोटी मूली, चौलाई, गाजर, पके आम, परवल, गिलोय, साँठ, चीता, फरफेंदुआ, खंभारी, नीम, अरण्डीका तेल, कुटकी, हरड़, खार (क्षार), भिलावा, गूगल, लोहभस्म, कड़वे, तीते और अग्निदीपक पदार्थ, गाय-बकरी और भैंसका मूत्र, कस्तूरी, शिलाजीत, सींगिया मछली, आँवले, माठा, घी, तेल, सौवीर काँजी, मक्खन, चन्दन, नागकेशर, जवाखार, कसैले रस, केशर; पैरोंकी सन्धिमें नाभिके दो अंगुल नीचे, मस्तकमें हाथकी जड़, छाती और काँखके बीचमें आगसे दागना (दोषोंके अनुसार)—पथ्य है। डाक्टरी मतसे पुरानी सूजनमें पुष्टिकारक पर जल्दी पचनेवाला पथ्य दो। प्यास दूर करनेको शीतल जल दो। पसीने निकालनेको गरम जलसे स्नान कराओ। नहानेसे पहले शरीरपर सरसोंका, जैतूनका या काडलिवर तेल मलो। वृक्क-रोगसे हुए सूजनमें मथा हुआ दूध पथ्य है।

अपथ्य।

खराब हवा या जल, पाखाना-पेशाब रोकना, विरुद्ध पदार्थ पीना, विषम भोजन, मिट्टी खाना, गाँवके जानवर और अनूपदेशके पक्षी वग़ैरः, सूखा साग, नवीन अन्न, गुड़के बने पदार्थ, मिट्टीके पदार्थ, दही, खिचड़ी, खट्टी चीजें, बिना पानी मिली शराब, धान, सूखा मांस, भारी पदार्थ, आत्माके अनुकूल न हो वह पदार्थ, दाह-कारक भोजन, मैथुन, फ़स्द खोलना, हुक्का, सिगार, वमनका वेग रोकना, पसीने देना, सेमकी फली, हींग, उड़द, बहुत जल पीना, तिलकी पिट्ठी, पान, सरसों, शराब, दिनमें सोना, तेज़ नमकके पदार्थ, नर्वदा और ताप्ती वग़ैरःका जल, सब खटाई, विरुद्ध भोजन,—ये सब अपथ्य हैं।

नोट—उदर-रोग और पाण्डु-रोगमें जो पथ्यापथ्य हैं वे ही सब इसमें भी पथ्यापथ्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

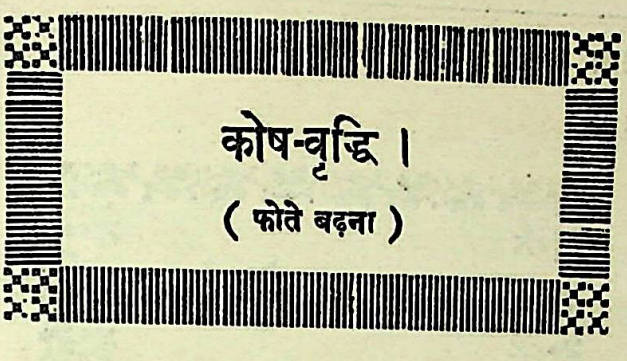

पथ्य—हितकारी आहार-विहार ।

दिनको पुराने बढ़िया महीन चावल, चना, मूँग, मसूर, अरहरकी दाल, परवल, बैंगन, आलू, गाजर, गूलर, करेला, सहँजनेका डंडा, अदरख, लहसनकी तरकारी, बीच-बीचमें थोड़ा बकरेका मांस, छोटी मछली, सब तरहके तिक्त और दस्तावर पदार्थ। रातको रोटी या पूरी, ऊपर लिखी तरकारी, थोड़ा दूध, औटाया जल शीतल कर पीना, गरम जलसे स्नान करना और हमेशा लँगोट बाँधे रहना। संशोधक दवाएँ, गुदामें पिचकारी लगाना, फ़स्द खोलना, लेप, लाल चावल, रैंडीका तेल, गोमूत्र, साँठ, गोखरू, पान, अरनी, हरड़, ज़मीकन्द, लहसन, गाजर, शहद, घड़ेका घी, गरम जल, माठा, पुरानी शराब, आमवात नाशक और अग्नि संदीपक खाने-पीनेके पदार्थ, वंक्षणमें अर्द्धचन्द्राकार दागना, अगर बाईं तरफका फोता बढ़ा हो, तो दाहिनी भुजाकी फ़स्द खोलो और दाहिनी तरफका फोता बढ़ा हो, तो बाईं बाँहकी फ़स्द खोलो।

फोते-रोगमें अपथ्य ।

विरुद्ध स्वभावके अन्नपान, क्रोध, हाथी-घोड़ेपर चढ़ना, अनूपदेशके पशु-पक्षियोंका मांस, दही, उड़द, दूध, पिट्ठीके पदार्थ, पोईका साग, भारी भोजन, वीर्यके वेगको रोकना,—नये चावलोंका भात, पका केला, बहुत मीठा भोजन, शीतल जल पीना, घूमना, दिनमें सोना,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पाखाना-पेशाब रोकना, बदहज़मीमें खाना, स्नान करना,—ये अपथ्य हैं।

गलगण्ड-रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

वमन (क़य), जुलाब, नस्य (नास सुँघाना), पसीने देना, हुक्का-तमाखू, सिगरेट पीना, फ़स्द खोलना, दागना, क्षार-कर्म, लेप करना, लंघन, पुराना घी पीना, पुराने लाल चावल, जौ, मूँग, परवल, लाल सहँजना, करेला, अग्नि संदीपक पदार्थ, गूगल, शिलाजीत, गलगण्ड-रोगमें जीभके नीचेकी नसको छेदना, पहुँचेके आधे भागमें एक-एक अंगुलके अन्तरसे तीन-तीन रेखा करो

ऊपर जो पथ्य कहा है वह गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, ग्रन्थी, अर्बुदमें दोष, काल, अवस्थाके अनुसार पथ्य समझो। हमेशा पुष्टिकारक और जल्दी पचनेवाले भोजन दो। इस रोगमें पथ्यापथ्यपर ख़ास तौरसे ध्यान रखो। साफ़ हवा, हल्की कसरत, स्नान, मौसमके माफ़िक गरम कपड़े पहनो। फोते बढ़नेके रोगमें जो पथ्यापथ्य हैं वही इस रोगमें भी हैं।

गलगण्डादिमें अपथ्य।

दूध, ईखके पदार्थ, पिट्ठीके पदार्थ, खट्टे-मीठे रस, भारी और अभिष्यन्दी भोजन,—पतले पदार्थ, खटाईवाले पदार्थ, ज़ियादा नमकीन पदार्थ, मीठे पदार्थ, चरबीवाले पदार्थ, ज़ियादा रसवाले फल इस गण्डमाला-रोगमें मना हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

श्लीपद या हाथीपाँव रोग।

पथ्य–हितकारी आहार-विहार।

वमन, लंघन, फ़स्द खोलना, पसीने देना, दस्त कराना, लेप करना, पुराने साँठी चावल, शालि चावल, जौ, कुल्थी, लहसन, परवल, रैंडीका तेल, गोमूत्र, कटु, तिक्त और अग्निदीपक पदार्थ पथ्य हैं।

श्लीपदमें अपथ्य।

पिट्ठीके बने पदार्थ, दूधके पदार्थ, गुड़, मीठा, लिबलिबे, भारी, अभिष्यन्दी पदार्थ, नर्वदा, ताप्ती आदि नदियोंका जल अपथ्य है।

विद्रधि-फोड़ा।

पथ्य–हितकारी आहार-विहार।

दिनको पुराने चावलोंका भात, मूँग, मसूरकी दाल, गूलर, कच्चा केला, परवल, बैंगन आदि घीमें छौंककर दो। अगर रोगीका बल घट गया हो तो बकरेके मांसका रस दो। रातको रोटी और ऊपरकी तरकारी दो। औटा जल शीतल कर पीनेको दो, कभी-कभी इच्छा हो तो उसी गरम जलसे निहला दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

जब फोड़ा न पका हो तब जुलाब दो, लेप करो, पसीने दो, जौंक, सींगी या तूम्बी लगाकर खून निकाल दो। कुल्थी, लाल चावल, घी, तेल, मूँगका रस, पुराना सौंखिया, कलमी चावल, लहसन, लाल सहँजना, रमासकी फली, करेला, साँठ, खंभारी, चीता, शहद, नदीकी शीतल बालू और चन्दन औटाकर शीतल किया हुआ जल, जो पदार्थ शोथ-रोगमें पथ्य लिखे हैं दो।

फोड़ेके पकनेपर नश्तरसे चीरकर मवाद निकाल दो।

विद्रधिमें अपथ्य।

जो शोथ-रोगमें अपथ्य लिखा है वही कच्ची विद्रधि—कच्चे फोड़ेमें अपथ्य है। सब तरहके कफकारी पदार्थ, भारी या देरमें पचनेवाले पदार्थ, दूध, दही, मछली, पिट्ठी, सब तरहकी मिठाई, दिनमें सोना, रातमें जागना, नहाना, मैथुन, राह चलना और कसरत मना है।

व्रण-शोथ—घावकी सूजन आदि।

पथ्य-हितकारी आहार-विहार।

वे काम करो जिनसे सूजन वहाँकी वहीं बैठ जावे, फस्द खोलो, फोड़ना, शोधना, भरना, जौ, पिट्ठीके बने पदार्थ, गेहूँ, जाङ्गल देशके पशु-पक्षियोंका मांस, कड़वा तेल, घी, शहद, मसूर, अरहर, मूँग—इनका रस, खाँड़, ककड़ी, खीरा, बैंगन, ककोड़ा, परवल, करेला, नीमके पत्ते, छोटी मूली, चौपतिया, बथुआ, चौलाई, कटहर, त्रिफला, केलेकी गहर, कुटकी, सैंधानोन, दाख, मीठा, तिक्त, कसैला रस, घावपर बुरका, लेप, धूप, पत्ते बाँधना, खसके पंखेकी हवा, तिलोंका

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

लेप, गरम किया ठण्डा जल, कपूर। घावकी ख़राब सूरत सुधारना—ये सब घावकी सूजन, घाव, हालका घाव और नासूरमें पथ्य हैं।

व्रण-शोथादिमें अपथ्य।

नया अनाज, तिल, मटर, उड़द, कुल्थी, खिचड़ी, शीतल जल, दूधके पदार्थ—दही, रबड़ी, खोया, मलाई वग़ैरः, गुड़, शक्कर, खाँड़, पत्तोंके साग, जाँगल देशके सिवा और सब जगहके पशु-पक्षियोंका मांस, जलन करनेवाला, पेटमें गुड़गुड़ करनेवाला, देरमें पचनेवाले पदार्थ, कड़वे, खट्टे, नमकीन, शीतल पदार्थ, स्त्री-संगम, मेहनत, ज़ोरसे बोलना, चिल्लाना, प्यारीको देखना, दिनमें सोना, रातमें जागना, बहुत घूमना, सदा बैठे रहना, पकने-फूटने मवाद निकलनेसे पहले ही भरनेके उपाय करना, नस्य कर्म, पान खाना, अजीर्ण करनेवाले भोजन, तेज़ हवा, तेज़ धूप, भारी बरसात, भारी धूल, भयंकर क्रोध, बहुत भय, बहुत क़ै करना, बहुत ख़ुशी, भारी रंज, विरुद्ध भोजन, तीखे, गरम और रूखे पदार्थ खाना, दबाना, खुजाना, लकड़ी या नाखून।

भग्न-रोग—हड्डी वग़ैरः टूटना।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

शीतल जलके तरड़े देना, कीच लपेटना, पट्टी बाँधना, चावल, गेहूँ, मूँग, मटर—इनका रस, मक्खन, घी, दूध, तेल, मांस-रस, शहद, परवल, लहसन, छोटी मूली, दाख, आँवले और लाख—ये सब भग्न-रोगमें हित हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

भग्न-रोगमें अपथ्य।

नमक, कटु पदार्थ, खार, खटाई, मैथुन, धूप, कसरत, शारीरिक मिहनत और रूखा अन्न मना है।

भगन्दर-रोग।

पथ्य-हितकारी आहार-विहार।

बिना पके भगन्दरमें संशोधन, जुलाब, लेप करना, फ़स्द् खोलना उचित है। पके भगन्दरमें यथारीति शस्त्र-कर्म, अग्नि-कर्म और क्षार-कर्म करने चाहिये।

सब तरहके शालि चावल, मूँग, जांगल पशु-पक्षियोंका मांस-रस, परवल, सहँजना, छोटी मूली, तिलीका तेल, सरसोंका तेल, तिक्त पदार्थ, घी और शहद—इन सबको दोषोंका विचार करके दो।

भगन्दरमें अपथ्य।

विपरीत स्वभावके अन्न और पान, विषम भोजन, धूपमें फिरना, कसरत, कुश्ती, मैथुन, लड़ाई, किसी जानवरकी पीठपर चढ़ना, भारी पदार्थ खाना—ये सब घाव भर जानेपर भी एक साल तक न करने चाहिये।

उपदंश—आतशक या गर्मी-रोग।

पथ्य-हितकारी आहार-विहार।

क़ै कराना, दस्त कराना, मर्दके लिङ्गके वीर्यकी नसको छेदना, जोंक लगाना, लेप करना, जौ, शालि चावल, मूँगका रस, जांगल देशके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

पशु-पक्षियोंका मांस-रस, करेला, सहँजना, परवल, नई मूली, तिक्त और कसैला रस, शहद, कुएँका जल, तिलीका तेल ये सब पथ्य हैं।

दिनको पुराने चावल, मूँग, मसूर, अरहर, चनेकी दाल, गूलर, बैंगन, परवल, पुराना सफेद कुम्हड़ा आदि घीमें छौंके गये। कभी-कभी बकरी, कबूतर या मुर्ग़ेका मांस खिलाना। रातको रोटी और ऊपरकी तरकारी दो। अगर इस रोगमें बुख़ार हो तो चावल मत दो, साबूदाना पका दो या रोटी दो। अगर ज्वर उतरा हो, तो पुष्टिकर और अनुत्तेजक पदार्थ दो। गरम कपड़े, साफ़ हवा खाना, आराम करना, गरम जलसे नहाना पथ्य है।

उपदंशमें अपथ्य।

मीठे पदार्थ, मछली और दूध, शीतल पदार्थ, स्नान, मैथुन, दिनमें सोना, मिहनत और कसरत आदि हानिकर हैं। घावको अशुद्ध मत रखो। पीप या मवाद आनेपर आलस्य बुरा है।

कुष्ठ या कोढ़-रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

हर पन्द्रह दिनमें क़ै कराना, हर महीने जुलाब देना, तीसरे महीने नस्य देना, छठे महीने फ़स्द खोलना, धूपमें रहना, लेप करना, पुराने जौ, गेहूँ, शालि चावल, मूँग, अरहर, मसूर, शहद, जाँगल देशके पशु-पक्षियोंका मांस-रस, ककड़ी, खीरे, परवल, कटेरीके फल, मकोय, नीमके पत्ते, हुलहुल, साँठ, मेढ़ासिंगी, पँवारके पत्ते, भिलावे, ताड़के पके फल, खैरसार, चीता, त्रिफला, जायफल, नागकेशर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

केशर, घी, घीया, कंजा, तिलीका तेल, निबौलीका तेल, हल्के अन्न, सरल, देवदारु, शीशम, अगरका तेल, गाय, गधा, ऊँटनी, घोड़ी, भैंसका मूत्र, कस्तूरी, गन्धक, तिक्त पदार्थ और क्षार-कर्म कोढ़-रोगमें पथ्य हैं।

नोट—वातरक्तमें जो पथ्यापथ्य लिखे हैं वे ही सब कोढ़-रोगमें भी पालन करो। यह रोग बहुत छुतहा है, एकसे दूसरेको फौरन लगता है। कोढ़ीके साथ एक बिस्तरपर सोना, बैठना, एक बर्तनमें खाना, शरीरमें इसका साँस लगाना, उसका पहना कपड़ा पहनना, उससे मैथुन करना बुरा है।

शीत-पित्त।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

इस रोगमें तिक्त-रसवाले पदार्थ खाना-पीना, कच्ची हल्दी, नीमके पत्ते खाना पथ्य है। गरम जलसे नहाना और गरम कपड़ेसे शरीर ढके रखना मुफ़ीद है। वातरक्तमें जो पथ्यापथ्य लिखे हैं वही इस रोगमें भी पालना।

वमन-विरेचन (जुलाब), लेप, फ़स्द खोलना, पुराने चावल, जांगल देशके पशु-पक्षियोंका मांस-रस, मूँगका रस, कुल्थीका रस, करेला, ककोड़ा, सहँजना, मूली, पोई, अनार, त्रिफला, शहद, कड़वा तेल, गरम जल, पित्त और कफ नाशक पदार्थ, कटु-तिक्त और कषैले रस, शीत-पित्त, उदर्द, कोढ़ या पित्ती निकलनेमें पथ्य हैं।

शीत-पित्तमें अपथ्य।

दूधकी रबड़ी, खोया, मलाई, ईखके बने गुड़, शक्कर, चीनी, मछली, अनूपदेशके जानवरोंका मांस, नई शराब, वमन या क़ैके

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

वेगको रोकना, पूरव या दक्खनकी हवा खाना, दिनमें सोना, नहाना, धूप खाना, चिकने, खट्टे, मीठे पदार्थ खाना, धूपमें रहना, मैथुन, भारी अन्न खाना—ये सब शीत-पित्त, कोढ़ और उदर्दमें जहर समान हैं।

अम्लपित्त-रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

ऊपरके अम्लपित्तमें पहले वमन या क़ै करानी चाहिये। नीचेवालेमें जुलाब देकर दस्त कराओ। अगर नीचे-ऊपर दोनों तरफ़से हो तो पहले भोजन कराना पीछे निरूहण वस्ति (पिचकारी) देना चाहिये। शालि चावल, जौ, गेहूँ, ये तीनों पुराने खिलावें। गरम करके ठण्डा किया जल पिलाओ, शक्कर, शहद, सत्तू, करेला, ककोड़ा, परवल, पुराना पेठा, केलेके फूल, बथुआ, कैथ, अनार, आँवले, सब तरहके तिक्त पदार्थ, सब तरहके कफ-पित्त नाशक खाने-पीनेके पदार्थ अम्ल-पित्तमें हितकारी हैं।

दिनमें बढ़िया पुराने चावल, कच्चा केला, बैंगन, परवल, गूलर, नीबू, नारियल, मिश्री, बताशे, सफेद पेठा और आँवलोंका मुरब्बा दें। रातको धानकी खील, दूध और साबूदाना दें।

अम्लपित्तमें अपथ्य।

नया अन्न, स्वभावसे विपरीत अनाज, पित्त-कोपकारक अन्न, मल-मूत्रके वेग रोकना, तिल, उड़द, भेड़का दूध, काँजी, नमकीन, खट्टा और कटु रस, भारी अन्न, दही, शराब ये सब अम्लपित्त-रोगी त्याग देवें।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

विसर्प-रोग ।

पथ्य–हितकारी आहार-विहार ।

जुलाब, वमन या क़ै, लेप, लंघन, फ़स्द खोलना, पुराने जौ, पुराने गेहूँ, पुराने साँठी चावल, काँगनी, मूँग, मसूर, चना, अरहर, जांगल देशके पशु-पक्षियोंका मांस-रस, मक्खन, घी, दाख, अनार, करेला, परवल, आँवले, खैर, नागकेशर, लाख, सिरस, चन्दन, तिलोंका लेप, हाऊबेर, मोथा, तिक्त पदार्थ,—इनमेंसे जिस दोषसे विसर्प हुआ हो उसी दोषके शान्त करनेवाले पदार्थ सेवन करावें ।

विसर्पमें अपथ्य ।

कसरत, कुश्ती, शारीरिक परिश्रम, दिनमें सोना, स्त्री-संगम, हवामें फिरना, क्रोध, शोक, वमनके वेग रोकना, साग खाना, विरुद्ध भोजन, दहीकी गाँठ, काँजी, नाना प्रकारके अचार, सब तरहके भारी खाने-पीनेके पदार्थ, लहसन, कुल्थी, उड़द, तिल, मांस, पसीने देना, जलन करनेवाले, नमकीन, खट्टे, कड़वे पदार्थ, शराब, धूप वग़ैरः विसर्पमें अपथ्य हैं ।

विस्फोटक-रोग ।

पथ्य–हितकारी आहार-विहार ।

जुलाब, क़ै कराना, लेप, लंघन, पुराने साँठी चावल, जौ, मूँग, मसूर, चना, मोंठ, गायका घी, करेला, आषाढ़ी फल, परवल, माल-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

काँगनी, नीमके पत्ते, चन्दन, सोंठ, सफेद चीनी, तिलोंका लेप, मोथा, बालछड़,—ये सब पथ्य हैं।

विस्फोटकमें अपथ्य।

पसीने देना, मैथुन, कसरत-कुश्ती या कोई तरहकी मिहनत, क्रोध, देरमें पचनेवाले भारी अन्न खाना, धूप खाना, वमनको रोकना, पत्तोंके साग, हवामें फिरना, दिनमें सोना, गाँव, अनूपदेश और जल-जीवोंका मांस, विरुद्ध भोजन, तिल, उड़द, कुल्थी, नमकीन, खट्टे और कटु पदार्थ, जलन करनेवाले, गरम और रूखे पदार्थ विस्फोटक रोगमें अपथ्य हैं।

नोट—वातरक्त और कोढ़रोगमें जो पथ्यापथ्य हैं वे ही सब विसर्प और विस्फोटकमें पथ्यापथ्य हैं।

मसूरिका-चेचक।

पथ्य-हितकारी आहार-विहार।

पहले लंघन, पीछे वमन, फिर जुलाब, फिर फ़स्द खोले; सफेद साँठी चावल खानेको दे, चना, मूँग, मसूर, जौ खिलावे, परवल, करेला, आषाढ़में होनेवाले फल, ककोड़ा, सहँजना, केला, नमक, दाख, अनार, सब तरहके पुष्टिकर खाने-पीनेके पदार्थ, बेर, मांस-रस, आँखोंके सेकनेको शंखके भीतरका पानी, अथवा कपूरका चूरा, मूँगका रस, जाँगल देशके पशुओंका मांस-रस, घी, निर्गुण्डीके पत्ते, अगर, कस्तूरी और यज्ञ धूपकी धूनी दे; आरने कंडोंकी राख धीरे-

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

धीरे मले; नीमके पत्ते और हल्दी महीन पीस-छानकर लेप करे और शेष काम वही करे जो "व्रण"में लिखे हैं।

रोगके आरम्भमें भूखके अनुसार दूध-साबूदाना, दूध-बारली; फिर भूख बढ़नेपर ज्वरमें जैसा करते हैं वैसा करे। बैंगन, कच्चा केला, परवल, गूलरकी तरकारी दे। बेदाना, किशमिश, नारङ्गी, अनार-रस फल दे। रहनेका घर साफ़-सुथरा रखे, पलङ्गपर नित्य साफ़ चादर बिछावे।

मसूरिका—चेचकमें अपथ्य।

मैथुन, पसीने देना, थकान करनेवाले काम, तेल मलना, भारी अन्न, गुस्सा करना, धूप खाना, मैला जल, बुरी हवा, विरुद्ध भोजन, चौला, आलूका साग, नमक, विषम भोजन, कड़वे-खट्टे पदार्थ, पाखाना-पेशाब रोकना,—ये माता-रोगमें अपथ्य हैं।

मुख-रोगमें पथ्य।

पसीने देना, जुलाब, वमन, कुल्ले या गरगरे करना, मुँहमें कवल रखना, खून निकालना, नस्य देना, धूम-पान, नश्तर, दागना, जौ, मूँग, कुल्थी, जाँगल जीवोंका मांस-रस, करेला, परवल, छोटी मूली, कपूरका पानी, पान, गरम जल, खैरसार, घी, कटु और तिक्त पदार्थ मुख-रोगमें पथ्य हैं। साधारणतया कफ नाशक पदार्थ मुख-रोगमें ज़ियादा मुफ़ीद हैं।

मुख-रोगमें अपथ्य।

दाँतुन करना, स्नान करना, खटाई खाना, मछली और अनूपदेशके पशु-पक्षियोंका मांस, दही, दूध, गुड़, उड़द, खटाई, रूखा अन्न,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

कड़ी चीज़ सुपारी वग़ैरः खाना, औंधे मुँह सोना, भारी और अभिष्यन्दी पदार्थ खाना, दिनमें सोना ये अपथ्य हैं।

कान-रोगमें पथ्य ।

पसीने देना, जुलाब, वमन, नस्य, धूआँ पीना, फस्द खोलना, गेहूँ, शालि चावल, जौ, पुराना घी, परवल, सहँजना, बैंगन, करेला, चौपतिया, ब्रह्मचर्य और मौन (चुप रहना) ये सब पथ्य हैं।

कर्ण-रोगमें अपथ्य ।

विरुद्ध अन्नपान, मल-मूत्रादिके वेग रोकना, बहुत बोलना, दाँतुन करना, सिरसे नहाना, शारीरिक परिश्रम, कफकारी और भारी चीज़ खाना, कानमें सींकसे खुजाना—ये सब अपथ्य हैं।

नोट—कर्णशूल और बहरापन आदि वात-प्रधान रोगोंमें वातव्याधिकी तरह और कर्णपाक, कर्णस्राव (कान बहना) आदि कफप्रधान रोगोंमें आमवातादिकी तरह पथ्यापथ्य पालना चाहिये।

नाकके रोगोंमें अपथ्य ।

विपरीत भोजन, दिनमें सोना, अभिष्यन्दी और भारी पदार्थोंका सेवन, स्नान, गुस्सा, पाखाना-पेशाब और अधोवायु (गुदाकी हवा) रोकना, सोच-फिक्र करना, पतले पदार्थ खाना-पीना, ज़मीनपर सोना—ये सब अपथ्य हैं। इनसे बचना चाहिये।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

नाकके रोगोंमें पथ्य ।

बिना हवाके (कम हवाके) मकानमें रहना, बड़ी पगड़ी पहनना, कुल्ले या गरगरे करना, लंघन, नस्य कर्म, धूआँ पीना, वमन करना, फ़स्द खोलना, तेज़ दवाओंको नाकमें डालकर ऊपर चढ़ाना, पसीने देना, सिरपर मालिश करना, पुराने जौ, पुराने शालि चावल, मूँग और कुल्थीका रस, गाँव और जांगल देशके पशु-पक्षियोंका मांस-रस, बैंगन, परवल, सहँजना, ककोड़ा, छोटी मूली, लहसन, दही, गरम जल, त्रिकुटा, कड़वे, खट्टे, नमकीन रस, चिकना, गरम, हल्का भोजन—ये सब नाकमें होनेवाले पीनसादिमें पथ्य हैं ।

नोट—पीनस, प्रतिश्याय (ज़ुकाम) वग़ैरः कफ-प्रधान नाकरोगमें कफ-नाशक पथ्य दो । अगर ज़रा भी कफका उपद्रव हो तो चावलोंका भात मत दो । रोटी वग़ैरः रूखे और हल्के भोजन दो । पूयरक्त, नासापाक वग़ैरः पित्तप्रधान नाकके रोगोंमें पित्तनाशक और रक्तपित्त शान्तिकारक पथ्य दो । नाक-रोगके साथ ज्वर हो, तो ज़ियादा रूखा पथ्य मत दो । अगर ज्वरका ज़ोर हो तो २।४ दिन हल्का ही पथ्य दो ।

नेत्र-रोगमें अपथ्य ।

गुस्सा, शोक, मैथुन, आँसू गिराना, अधोवायु—मल-मूत्र आदिके वेग रोकना, बारीक चीज़ें देखना, दाँत रगड़ना, स्नान करना, रातमें

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

खाना, धूपमें फिरना, धूल और धूआँ आँखोंमें जाने देना, विरुद्ध अन्न खाना, बहुत बकबक करना, वमन करना, जलपान करना, महुएके फूल, दही, पत्तोंके साग, तरबूज, खल, कुल्ला फूटा अन्न, मछली, शराब, जांगल देशके जीवोंका मांस-रस, पान खाना, खट्टा, नमकीन, जलन करनेवाला, चरपरा, कड़वा, गरम, भारी अन्न-पान खाना,—ये सब नेत्ररोगमें अपथ्य हैं। आँखें दुखती हों तो मछली, उड़द, दही, मांस, खट्टे साग, भारी अन्न-पान, दिनमें सोना, पढ़ना, स्त्री-सम्भोग करना, धूपमें घूमना इनसे रोगी जरूर बचे। कसरत, सूरजकी रोशनीमें घूमना-बैठना, तेज रोशनी देखना, मिहनत, सफ़र और धातुनाशक कर्म अपथ्य हैं।

नेत्र-रोगमें पथ्य।

आँखोंमें दवाओंका जल टपकाना, लंघन, अञ्जन लगाना, स्वेदन, जुलाब देना, प्रतिसारण, नस्यकर्म, खून निकालना, नश्तरसे काम लेना, घी पिलाना, सेक करना, मनको रोकना, पाँव धोकर ठण्डे रखना, मूँग, जौ, लाल चावल, घड़ेका घी, वन कुल्थीका यूष, पेया, विलेपी, लहसन, परवल, बैंगन, ककोड़ा, करेला, नया केला, नई मूली, साँठ, भाँगरा, मकोय, ग्वारपाठा, दाख, धनियाँ, सैंधानोन, लोध, त्रिफला, शहद, जूते पहनना, स्त्रीका दूध, चन्दन, कपूर, सब तरहके तिक्त और हल्के पदार्थ—ये नेत्र-रोगमें मुफीद हैं।

अगर आँखें दुखती हों तो हल्के, रूखे और कफ नाशक भोजन दो। अगर साथमें बुखार भी हो तो लंघन कराओ। अगर नज़र कमज़ोर हो और रतौंधी-रोग हो तो पुष्टिकारक, चिकने, वायुनाशक भोजन दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

सिरके रोग।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

कफज, त्रिदोषज और कीड़ोंके सिरदर्दके सिवाय और तरहके सिर-दर्दोंमें वायु प्रधान रहता है। जिन सिरदर्दोंमें वात प्रधान हो उनमें वात-रोगोंपर जो पथ्यापथ्य लिखे हैं उन्हें ही पालन करो। सिरमें कीड़े होनेसे सिर-दर्द हो तो, कृमिरोगकी तरह पथ्यापथ्य पालो। कफसे हुए सिर-दर्दमें रूखे और मीठे भोजन करो। ऐसे सिर-दर्दमें दिनमें सोना, स्नान करना, भारी पदार्थ खाना अथवा और कफ बढ़ानेवाले आहार-विहारोंसे बचना चाहिये।

और भी पथ्य।

पसीने देना, नस्य देना, धूआँ पिलाना, जुलाब देना, लेप करना, क़ै कराना, खून निकालना, लंघन कराना, दागना, पुराना घी, शालि चावल, साँठी चावल, यूष, दूध, जाँगल देशके जीवोंका मांस, सहँजना, दाख, बथुआ, करेला, आम, आँवले, अनार, बिजौरा नीबू, तेल, माठा, काँजी, नारियल, खस, चाँदनी, खुशबूदार पदार्थ, ग्वारपाठा, भाँगरा, कूट, हरड़ ये सब भी सिर-दर्दमें पथ्य हैं।

सिरके रोगोंमें अपथ्य।

छींक, जँभाई, मूत्र, आँसू, नींद, मल-मूत्र—अधोवायु आदिके वेग रोकना, मैला जल, विरुद्ध अन्न, नर्वदा, ताप्ती आदि सह्याद्रि और विन्ध्याचलकी नदियोंका पानी, दिनमें सोना, दाँतुन करना ये सब अपथ्य हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

प्रदर-रोगमें पथ्य।

रक्तपित्त रोगमें जो पथ्यापथ्य लिखा है दोषोंके अनुसार इस रोगमें भी वही पथ्यापथ्य है।

दिनमें पुराने चावलोंका भात, मूँग, मसूर और चनेकी दाल, कच्चा केला, करेला, परवल, गूलर, केलेके फूल, पुराना कुम्हड़ा, अगर पच सके तो बीच-बीचमें बकरीके मांसका रस दो। रातको रोटी वग़ैरः दो। अगर साथमें ज्वर भी हो तो हल्का खाना दूध-साबूदाना दो और स्नान मत कराओ। अगर बर्दाश्त हो तो तीन-चार दिनमें गरम जलसे स्नान करा दो। अगर मासिकधर्म रुका हो तो उड़द, दही, मछली, मांस, तिल वग़ैरः पथ्य हैं।

प्रदर-रोगमें अपथ्य।

भारी और कफकारी पदार्थ, बड़ी मछली, मिठाई, लालमिर्च, ज़ियादा नमक, दूध, आगके सामने रहना, धूपमें फिरना, रातको जागना, ओसमें सोना-बैठना, दिनमें सोना, ज़ियादा मिहनत, राह चलना, शराब पीना, ऊँचे आसनपर चढ़ना-उतरना, ज़ियादा मैथुन, पाखाना-पेशाब वग़ैरःके वेग रोकना, ज़ोरसे बोलना या गाना,—सब तरहके स्त्रियोंके रोगोंमें ये अपथ्य हैं।

गर्भवतीके पथ्यापथ्य।

हल्का, पुष्टिकर और अच्छा लगनेवाला आहार दो। बहुत मिहनत करना बुरा है। एकदम मिहनत न करना भी बुरा है। जिस काममें बहुत देर तक साँसका आना-जाना रोकना पड़े, बहुत ज़ोर

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

करना पड़े, ज़ोरसे काँखना पड़े, पेड़ूपर दबाव पड़े, ऐसे कामोंसे गर्भवती बचे। पैदल चलना, तेज़ सवारीपर दूर तक जाना पड़े, ऐसे काम भी बुरे हैं। डरना, रंज या चिन्ता अथवा रातमें जागना, मनमें दुःख करना सन्तानके हकमें बुरा है। व्रत-उपवास रखना, जागरण करना, दिनमें सोना, आगके सामने रहना, मैथुन करना, कड़ी खाटपर सोना, बोझ उठाना, ऊँची जगहपर चढ़ना, मल-मूत्रादिके वेग रोकना उचित नहीं है।

गर्भावस्थामें ज्वर या अतिसार प्रभृति जो रोग पैदा हो उसका पथ्यापथ्य भी उसी रोगके अनुसार करो। ज्वरमें लंघन कराते हैं, पर गर्भवतीको लंघन कराना हानिकारक है।

अगर पेटमें गर्भ सूख जावे, या गर्भवती सूखे तो घी, दूध, बकरी या मुर्ग़ेका मांस और हंसका अण्डा खिलाओ।

और भी पथ्य।

शालि या साँठी चावल, मूँग, गेहूँ, खील, सत्तू, घी, दूध, सिखरन, शहद, शक्कर, कटहर, केला, आँवले, दाख, आम, मीठे और शीतल पदार्थ, कस्तूरी, चन्दन, माला, कपूर, चन्दनादिका लेप, स्नान, चाँदनी, तेलकी मालिश, मुलायम पलंग, ठंडी हवा, मीठी बातें, दिल ख़ुश करनेवाले सामान, ये हितकर हैं।

गर्भवतीको अपथ्य।

पसीने देना, वमन, खार, लड़ाई-झगड़े, विषम भोजन, रातमें डोलना, डरानेवाली चीज़ें देखना, बहुत मैथुन, मिहनत, बोझ उठाना, भारी कपड़ा ओढ़ना, कुसमय सोना, तख़्त वग़ैरः सख़्त आसनपर सोना, उकरू बैठना, शोक, ग़ुस्सा, भय वग़ैरःके वेग रोकना, भूखा रहना, राह चलना, चरपरा, गरम, भारी, गुड़गुड़ाहट करनेवाला भोजन, गढ़े या कुएँमें उझककर देखना, शराब पीना, चित्त सोना, औरतके दिलके ख़िलाफ़ काम करना, हानिकर हैं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

गर्भवतीको आठवाँ महीना लगनेपर फ़स्द खोलना, गुदामें पिचकारी देना—ऐसे कामोंसे कच्चा गर्भ गिर जाता है या कूखमें सूख जाता है या मर जाता है। तीखे, खट्टे, कड़वे, चरपरे, कसैले पदार्थ खाना भी बुरा है। बादी करनेवाले पदार्थ खानेसे बालक कुबड़ा, अन्धा, जड़ या बौना हो जाता है। पित्तकारक पदार्थ खानेसे बच्चा गञ्जा और पीला होता है। कफकारक पदार्थोंसे कोढ़, सफेद कोढ़ या पीलिया वग़ैरः बालकको हो जाते हैं।

प्रसूतिकाको पथ्यापथ्य।

बच्चा होनेके बाद जच्चाको बहुत होशियारीसे रक्खो। बच्चा जननेके दिनसे तीन दिन तक दूध या दूधका साबूदाना दो। जितना हल्का पथ्य दोगे उतना ही अच्छा। चौथे-पाँचवें दिन दूध-भात भी दे सकते हो। इसके बाद धीरे-धीरे अच्छा पथ्य दो। पाँच दिन तक नहलाओ मत। बादमें गरम जलसे स्नान कराओ। आगकी अँगीठी रखना, सोंठ, कालीमिर्च, अदरख, काला जीरा, अजवायन और सोंठ देना अच्छा है। जच्चाको मैले कपड़े मत पहनाओ, न पलंगपर बिछाओ।

सूतिका-रोगमें पथ्यापथ्य।

सूतिका-रोगमें जो रोग हो उसीका पथ्यापथ्य पालन करो। मामूली तौरसे, पुराने चावल, मसूर या उड़दका रस, बैंगन, गूलर,

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

परवल, कच्चे केलेका साग, अनार, अग्नि संदीपक, वात-कफ नाशक आहार दो और वैसा ही इलाज करो।

भारी पदार्थ, मिहनत, मैथुन वग़ैरः हानिकर हैं।

सूतिकाको और पथ्य।

लंघन, हल्का पसीना, गर्भाशय और कोठेका शोधन, तेल मलना, तेल पीना, कड़वे, तीक्ष्ण और गरम पदार्थ सेवन करे, दीपन, पाचन पदार्थ खावे, पुराने शालि या साँठी चावल, कुल्थी, लहसन, बैंगन, छोटी मूली, परवल वग़ैरः पथ्य हैं।

स्तनरोगमें पथ्यापथ्य।

स्तन-रोग में विद्रधि-रोगकी तरह पथ्यापथ्य पालो। स्तनकी ख़राबीमें जिस दोषका कोप हो उसीके अनुसार पथ्यापथ्य पालन करो।

बाल-रोगमें पथ्यापथ्य।

दूध पीनेवाले बच्चेको जो रोग हो उसकी माँ या धायको उसी रोगका पथ्यापथ्य पालन करना चाहिये। बालकको किसी भी रोगमें लंघन मत कराओ। जहाँ उपवास ही कराना हो वहाँ हल्का और थोड़ा खाना दो। पतले दस्त वग़ैर हों तो गायका दूध न दो, किन्तु बकरीका दूध दो।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

क्षय, यक्ष्मा, थाइसिस या टी० बी०।

पथ्य—हितकारी आहार-विहार।

गेहूँके आटेकी रोटी (चोकर न निकालें तो अच्छा हो), पुराने चावलोंका भात, साँठी चावल, गेहूँका दलिया, मूँगकी दाल, अरहरकी दाल, परवल, गूलर, कच्चा बेल, बैंगन, बथुआ, धनियाँ, नरम मूली—इन सब सागोंको बकरीके घीसे छौंकें। अगर बकरीका घी न मिले तो मजबूरीसे गायका ही सही। तेलका छौंक भूलकर भी न दो।

मसालोंमें सब नमकोंसे सैंधानमक अच्छा है, अदरख, लौंग, इलायची, कालीमिर्च, सफ़ेद जीरा और थोड़ा गरम मसाला अच्छा है।

क्षयमें बकरीका दूध सबसे अच्छा होता है, अगर गधीका दूध हाथ आ सके तो और भी अच्छा। जिस दशामें कि रोगीके कफमें बदबू आती हो, उस दशामें गधीका दूध ही उत्तम पथ्य है। अगर गधी या बकरीका दूध न मिले तो गायका दूध क्षीरपाककी विधिसे मथकर देना हितकर है।

दूधके बराबर, दूधसे दूना या चौगुना जल डालकर दूध पकाओ। जब सारा जल, जल जावे, दूध-मात्र रह जावे, तब रोगीको पिलाओ। यही क्षीरपाक है। यह स्वादिष्ट, पाचक, ताक़त लानेवाला, तृप्तिकारक और रोगनाशक होता है। अगर दूधमें पानी डालकर रोगके अनुसार कुछ मुनासिब दवाएँ भी डाल दी जावें (जैसे पीपर आदि) तो और भी अच्छा हो। दवा न डालो तो धानकी खील, अरारुट या साबूदाना डालकर पका दो। थौड़ी मिश्री डाल देनेसे कोई हानि नहीं।

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

अगर रोगीको क़ै आती हों, बदहज़मी हो तो दूधमें चूनेका निथरा हुआ जल डालकर पिलाओ।

खानेके बाद, ताक़तके माफ़िक, आधा तोलेसे दो तोले तक "द्राक्षासव" दे सकते हो।

प्यास बहुत ही ज़ोरकी हो तो नारियलका जल दो। अगर रोगीका रोग घट रहा हो, उसकी पाचन-शक्ति ठीक हो तो उसे मक्खन, मिश्री, शहद (मक्खन २ भाग, शहद १ भाग) सोनेके वर्क़ मिलाकर दो। बड़ा ही उत्तम नुसख़ा है। रोगीका हाज़मा अच्छा हो तो मीठा दही, घीमें पके अन्न और मलाई-मिश्री तक दे सकते हो।

फलादि—अंगूर, आँवले, नीबू, पका कैथ, अनार, अनन्नास, पके आम, पका केला, दाख, किशमिश आदि फल और मेवे दे सकते हो। पके कैथके गूदेमें सूखा धनियाँ, सैंधानोन, कालीमिर्च डालकर बड़ी स्वादिष्ट चटनी बनती है। दो-चार पत्ती पोदीने और हरे धनियेकी भी डाल दो तो और भी अच्छा। आँवलोंका मुरब्बा गुठली निकाल, ज़रा-सा बंसलोचन और चाँदीका वर्क़ मिलाकर दो तो बड़ा लाभ हो।

मांस—अगर रोगीका मांस सूख गया हो, हाड़ोंका कङ्काल रह गया हो तो उसे ख़रगोश, हिरन, बकरा, तीतर आदिका मांस दो। अगर रोगी मांस न पचा सके तो उसे मांस-रस—शोरबा या झोल दो। अगर उड़नेवाले पक्षियोंका मांस देना हो तो नर-पक्षियोंका मांस या मांस-रस दो। अगर पशुओंका देना हो तो मादा जातिका मांस दो।

बन्दर, कबूतर, बकरी, हिरन—इनमेंसे किसी भी एक जानवरका ताज़ा मांस सुखाकर महीन कर लो और रख लो। ताज़ा मांस न मिले तब इस मांस-चूर्णको फाँककर बकरीका दूध पिला दो। इससे बहुत लाभ होगा।

समाप्त

JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY,
Jangamwadi Math, VARANASI,
Acc: No. 3080
CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc No. .....
1633 5331

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Jaipur Wadhwani Collection. Digitized by eGangotri